प्राप्तिस्थान—
आचार्य श्री आत्माराम जैन प्रकाशनालय,
जैनस्थानक, लुधियाना

प्रथम प्रवेश

वीरसम्वत् ... २४८६
वि० सं० ... २०१६
मूल्य ... आठ आना

मुद्रक—
राईज़ आर्ट इलैक्ट्रिक प्रेस,
गली लालूमल, लुधियाना।

धन्यवाद

"जैनागमों में परमात्मवाद" के प्रकाशन में समस्त व्यय करने की उदारता श्रीमती गौरां देवी जी कर रही हैं। माता श्री गौरां देवी जी यह प्रकाशन अपने पूज्य पतिदेव—

स्वर्गीय लाला नौहरियामल जी जैन

की पुण्यस्मृति में करवा रही हैं। लाला नौहरियामल जी धार्मिक विचारों के व्यक्ति थे। लाला जी को यह धार्मिक भावना जैनधर्मदिवाकर, आचार्यसम्राट्, पूज्य श्री आत्माराम जी महाराज जी के सुशिष्य युगस्रष्टा श्रद्धेय श्री स्वामी खजानचन्द्र जी महाराज के परमानुग्रह से प्राप्त हुई थी। श्रद्धेय महाराज जी की कृपा से ही लाला जी को जैनधर्म की उपलब्धि हुई थी। उन्हीं की कृपा से लाला जी सामायिक, नित्यनियम का सदा ध्यान रखा करते थे। धार्मिक, सामाजिक और साहित्यिक कार्यों में अपने धन का सदा उपयोग करते रहते थे। श्री रामप्रसाद जी, श्री गोवर्धनदास जी, श्री केदारनाथ जी, लाला जी के सुयोग्य पुत्र हैं। इन में जो धार्मिकता तथा सामाजिकता दृष्टिगोचर हो रही है, वह सब लाला जी के पुण्य-प्रताप का ही मधुर फल है।

माता श्री गौरां देवी जी बड़ी उदार प्रकृति की देवी हैं। धर्मध्यान की इन को अच्छी लग्न है। दानपुण्य में सदा अपने धन का सदुपयोग करती रहती हैं। दो वर्ष हुए, योगनिष्ठ श्रद्धेय श्री स्वामी फूलचन्द्र जी महाराज द्वारा लिखे "नयवाद" का प्रकाशन इन्होंने ही करवाया था। आचार्यसम्राट् पूज्य श्री

आत्माराम जी महाराज द्वारा विनिर्मित "जैनागमों में परमात्मवाद, का प्रकाशन भी आप ही करवा रही हैं। आप की इस उदारता के लिए मैं आप का धन्यवाद करता हूं। और आशा करता हूं कि भविष्य में भी आप इसी भांति साहित्यिक सत्कार्यों में अपने धन का सदुपयोग करती रहेंगी।

प्रार्थी—

मन्त्री—

आचार्य श्री आत्माराम जैन प्रकाशनालय,

जैनस्थानक, लुधियाना।

दिग्दर्शन

वैदिक-परम्परा में ईश्वर शब्द—

ईश्वर शब्द वैदिक दर्शन का अपना एक पारिभाषिक शब्द है। वैदिक दर्शन के अनुसार उस महाशक्ति का नाम ईश्वर है, जो इस जगत की निर्मात्री है, एक है, सर्वव्यापक और नित्य है। वैदिक दर्शन का विश्वास है कि संसार के कार्यचक्र को चलाने की बागडोर ईश्वर के हाथ में है, संसार के समस्त स्पन्दन उसी की प्रेरणा से हो रहे हैं।

वैदिक दर्शन कहता है कि ईश्वर सर्वशक्तिमान है, वह जो चाहे कर सकता है।*कर्तव्य को अकर्तव्य और अकर्तव्य को कर्तव्य बना देना उस के बाएं हाथ का काम है। सारा संसार उस की इच्छा का खेल है, उसकी इच्छा के बिना एक पत्ता भी नहीं कम्पित हो सकता। संसार का उत्थान और पतन उसी के इशारे पर हो रहा है।

वैदिक दर्शन की आस्था है कि अज्ञ होने के कारण जीव अपने सुख और दुःख का स्वयं स्वामी नहीं है, †इस का स्वर्ग या नरक जाना ईश्वर की इच्छा पर निर्भर है। मनुष्य कुछ नहीं कर सकता। उसे तो स्वयं को ईश्वर के हाथों में सौंप

---

* कर्तुमकर्तुमन्यथा कर्तुं समर्थ ईश्वरः।

† अज्ञो जन्तुरनीशोऽयमात्मनः सुखदुःखयोः।
ईश्वरप्रेरितो गच्छेत्, स्वर्गं वा श्वभ्रमेव वा॥

(महाभारत)

जैनदर्शन में मुक्तात्मा के अर्थ में ईश्वर शब्द का व्यवहार नहीं किया जाता है, तथा जैनदर्शन, वैदिकदर्शन द्वारा माने गए ईश्वर का ईश्वरत्व (जगत्कर्तृत्व आदि) भी स्वीकार नहीं करता है। जैनदर्शन का विश्वास है कि परमात्मा सत्यस्वरूप है, ज्ञानस्वरूप है, आनंदस्वरूप है, वीतराग है, सर्वज्ञ है, सर्वदर्शी है। परमात्मा का दृश्य या अदृश्य जगत में प्रत्यक्ष या परोक्ष कोई हस्तक्षेप नहीं है, वह जगत का निर्माता नहीं है, भाग्य का विधाता नहीं है, कर्म-फल का प्रदाता नहीं है, तथा अवतार लेकर वह संसार में आता भी नहीं है।

जैनदर्शन कहता है कि व्यक्ति की अपेक्षा से परमात्मा एक नहीं है, अनन्तजीव परमात्मपद प्राप्त कर चुके हैं। परमात्मा अनादि नहीं है। परमात्मा को अनादि न मानने का इतना ही अभिप्राय है, कि जीव कर्मों को क्षय करने के अनन्तर ही परमात्मपद पाता है। परमात्मा एक जीव की दृष्टि से सादि अनन्त है, अनादि काल से जीव मुक्त हो रहे हैं, और अनन्त काल तक जीव मुक्त होते रहेंगे इस दृष्टि से परमात्मा अनादि अनन्त भी है। परमात्मा आत्मप्रदेशों की दृष्टि से सर्वव्यापक नहीं है। उसके आत्मप्रदेश सीमित प्रदेश में अवस्थित हैं, किन्तु उसके ज्ञान से सारा संसार आभासित हो रहा है, इस दृष्टि से (ज्ञान की दृष्टि से) उसे सर्वव्यापक भी कह सकते हैं। संसार के धन्धे में उसका कोई हस्तक्षेप नहीं है। जीव को कर्म करने में किसी सर्वथा स्वतन्त्र है, परमात्मा जीव कर्म करने में किसी भी प्रकार की कोई प्रेरणा प्रदान नहीं करता है। उसे किसी कर्म के करने से वह निषिद्ध भी नहीं करता। जीव जो कर्म करता है, उसका फल जीव को स्वतः ही मिल जाता है। आत्म-प्रदेशों से सम्बन्धित कर्म-परमाणु ही कर्म-कर्ता जीव को स्वयं अपना फल दे डालते हैं। मदिरा मदिरासेवी व्यक्ति पर जैसे

स्वयं ही अपना प्रभाव डाल देती है, वैसे ही कर्म-परमाणु जीव को स्वतः ही अपने प्रभाव से प्रभावित कर डालते हैं। परमात्मा का उसके साथ प्रत्यक्ष या परोक्ष कोई सम्बन्ध नहीं है। कर्मफल पाने के लिए जीव को परमात्मा के द्वार नहीं खटखटाने पड़ते हैं। जीव सर्वथा स्वतंत्र है, किसी भी दृष्टि से वह परमात्मा के अधीन नहीं है। संक्षेप में कह सकते हैं—

राम किसी को मारे नहीं, मारे सो नहीं राम।
आप ही आप मर जायेगा, करके खोटा काम॥

जैनदर्शन की आस्था है कि जीव अपने भाग्य का स्वयं निर्माता है, स्वर्ग, नरक मनुष्य की सद्-असद् प्रवृत्तियों का परिणाम है। अपनी नय्या को पार करने वाला भी जीव स्वयं ही है और उसे डुबोने वाला भी वह स्वयं ही है। इस में परमात्मा का कोई सम्बन्ध नहीं है।

ऊपर की पंक्तियों में यह स्पष्ट हो गया है कि ईश्वर शब्द वैदिक दर्शन का अपना एक पारिभाषिक शब्द है, जैनदर्शन में उस के लिए कोई स्थान नहीं है। वैदिकदर्शन में ईश्वर शब्द की जो परिभाषा व्यक्त की गई है, जैनदर्शन उस पर कोई आस्था नहीं रखता है। जैनदर्शन तो सर्वोत्तम और सर्वथा निष्कर्म दशा को प्राप्त आत्मा को ही परमात्मा या सिद्ध या बुद्ध आदि शब्दों के द्वारा प्रकट करता है। ऐसी निष्कर्म आत्मा को वह वैदिक सम्मत ईश्वर के नाम से कभी व्यवहृत नहीं करता है।

ईश्वर शब्द की व्यापकता—

ईश्वर शब्द की ऐतिहासिक अर्थविचारणा पर विचार करते हुए मालूम होता है कि वैदिकदर्शन के यौवनकाल में

ईश्वर शब्द एक विशेष अर्थ में रूढ़ था। उस समय जगत्-कर्तृत्व आदि विविध शक्तियों की धारक महाशक्ति को ही ईश्वर के नाम से व्यवहृत किया जाता था, किन्तु अन्तिम कुछ शताब्दियों से ईश्वर शब्द सामान्यतया परमात्मा का निर्देशक वन गया है। ईश्वर शब्द का उच्चारण करते ही मनुष्य को सामान्य रूप से परमात्मा का वोध होता है। आज ईश्वर के उच्चारण करने पर जगत् की निर्मात्री, भाग्यविधात्री, कर्मफलप्रदात्री तथा अवतार-ग्रहित्री किसी शक्ति-विशेष का वोध नहीं होता है। ईश्वर एक है, सर्व-व्यापक है, नित्य है, आदि वातों का भी आज ईश्वर शब्द परिचायक नहीं रहा है। आज तो ईश्वर शब्द सीधा परमात्मा का निर्देश करवाता है। फिर चाहे कोई उसे किसी भी रूप में स्वीकार करता हो। ईश्वर शब्द सामान्य रूप से परमात्मा का निर्देशक होने के कारण ही आजसर्वप्रिय वन गया है। आत्मवादी सभी दर्शनों ने ईश्वर शब्द को अपना लिया है, आत्मवादी सभी दर्शन ईश्वर को आदरास्पद स्वीकार करते हैं। जैनदर्शन जो सदा अनीश्नरवादी कहा जाता रहा है और जिस ने ईश्वर शब्द को कभी अपनाया ही नहीं है। तथापि आज उस के अनुयायी सहर्ष ईश्वर का नाम लेते हैं, अपने को ईश्वरवादी कहने में जरा संकोच नहीं करते हैं। कारण स्पष्ट है कि ईश्वर शब्द आज वैदिकदर्शन का पारिभाषिक शब्द नहीं समझा जाता है। अव तो सामान्य रूप से वह परमात्मा का, सिद्ध का, बुद्ध का निर्देशक वन गया है। आज ईश्वर, परमात्मा, सिद्ध, वुद्ध, गाड (God), खुदा आदि सभी शब्द समानार्थक समझे जाते हैं। सैद्धान्तिक और साम्प्रदायिक दृष्टि से इन शब्दों के पीछे

किसी का कोई भी पारिभाषिक अभिमत रह रहा हो, किन्तु जनसाधारण इन समस्त शब्दों से सामान्यतया परमात्मा का ही बोध प्राप्त करता है।

ईश्वर के तीन रूप—

ऊपर की पक्तियों में स्पष्ट कर दिया गया है, वैदिकदर्शन के यौवनकाल में ईश्वर शब्द एक विशिष्ट और पारिभाषिक अर्थ का बोधक रहा है, किन्तु अन्तिम शताब्दियों में इस का वह रूप परिवर्तित हो गया है। अब तो यह सामान्यतया परमात्मा का निर्देशक है। आज सभी आत्मवादी दर्शन ईश्वर को मानते हैं। कोई आत्मवादी दर्शन ईश्वर की सत्ता से इन्कार नहीं करता है। सभी इसे सहर्ष स्वीकार करते हैं।

सामान्य रूप से सभी आत्मवादी दर्शन ईश्वर को मानते हैं, किन्तु सैद्धान्तिक और साम्प्रदायिक दृष्टि से ईश्वर-सम्बन्धी गुणों में वे थोड़ा-थोड़ा मतभेद रखते हैं। इसी मतभेद को ले कर आज ईश्वर के सम्बन्ध में तीन विचार-धाराएं उपलब्ध होती हैं। वे तीनों विचारधाराएं संक्षेप में इस प्रकार हैं—

१—ईश्वर एक है, अनादि है, सर्वव्यापक है, सच्चिदानन्द है, घट-घट का ज्ञाता है, सर्वशक्तिमान है, जगत् का निर्माता है, भाग्य का विधाता है, कर्मफल का प्रदाता है। संसार में जो कुछ होता है, वह सब ईश्वर के संकेत से होता है। ईश्वर पापियों का नाश करने के लिए तथा धार्मिक लोगों का उद्धार करने के लिए कभी न कभी, किसी न किसी रूप में संसार में जन्म लेता है, वैकुण्ठ से नीचे उतरता है और अपनी लीला दिखा कर वापिस वैकुण्ठ-धाम में जा विराजता है।

ईश्वर का यह एक रूप है, जिसे आज हमारे सनातनधर्मी

भाई मानते हैं। ईश्वर का दूसरा रूप नीचे की पंक्तियों में पढ़िए—

२—ईश्वर एक है, अनादि है, सर्वव्यापक है, सच्चिदानन्द है, घट-घट का ज्ञाता है, सर्वशक्तिमान है, संसार का निर्माता है। जीव कर्म करने में स्वतन्त्र है, उस में ईश्वर का कोई हस्तक्षेप नहीं है। जीव अच्छा या बुरा जैसा भी कर्म करना चाहे कर सकता है, यह उस की इच्छा की बात है, ईश्वर का उस पर कोई प्रतिबन्ध नहीं है किन्तु जीवों को उन के कर्मों का फल ईश्वर देता है। अपनी लीला दिखाने के लिए, पापियों का नाश करने के लिए और धर्मियों का उद्धार करने के लिए ईश्वर अवतार धारण नहीं करता है, भगवान से मनुष्य या पशु के रूप में जन्म नहीं लेता है।

ईश्वर का यह दूसरा रूप है, जिसे आज कल हमारे आर्य भाई मानते हैं। ईश्वर का तीसरा रूप भी समझ लीजिए—

३—ईश्वर एक ही नहीं है,ईश्वर अनेक भी हैं,अनादि ही नहीं है, सर्वव्यापक ही नहीं है, अनन्त शक्तिमान है,घट-घट का ज्ञाता है, द्रष्टा है,जगत का निर्माता नहीं,भाग्य का विधाता नहीं,कर्मफल का प्रदाता नहीं, अवतार लेकर संसार में आता नहीं, जीव कर्म करने में स्वतंत्र है, जीवकृत कर्म के साथ ईश्वर का प्रत्यक्ष या परोक्ष कोई सम्बन्ध नहीं है। जीव की उन्नति या अवनति में ईश्वर का कोई हस्तक्षेप नहीं है, अहिंसा, संयम और तप की त्रिवेणी में विशुद्ध मनसा, वाचा और कर्मणा गोते लगाने वाला व्यक्ति निष्कर्मता को प्राप्त करके ईश्वर बन जाता है। ईश्वर और जीव में केवल कर्म-गत अन्तर है। कर्म की दीवार यदि मध्य में से उठा दी जाए तो जीव में और ईश्वर में

स्वरूप कृत कोई अन्तर नहीं रहता है, जीव ईश्वर-स्वरूप ही बन जाता है।

यह ईश्वर का तीसरा रूप है, जिसे जैन लोग स्वीकार करते हैं। जैनों की ईश्वर-सम्बन्धी मान्यता के सम्बन्ध में पीछे भी वर्णन किया जा चुका है।

ईश्वर के सम्बन्ध में अन्य अनेकों रूप भी मिल जाते हैं। किन्तु मुख्य रूप से आज इन तीनों रूपों का ही अधिक प्रचार एवं प्रसार देखने में आता है। इसलिए यहां इन तीनों का ही संक्षिप्त परिचय कराया गया है।

जैनागमों में परमात्मवाद—

आरंभ में कहा जा चुका है कि जैनदर्शन में परमात्मा के अर्थ में ईश्वर शब्द का व्यवहार देखने नहीं आता है। परमात्मा के लिए जैनदर्शन में सिद्ध, बुद्ध आदि पदों का प्रयोग मिलता है। अब यहां कई एक प्रश्न हमारे सामने आते हैं कि जैनदर्शन में सिद्ध, बुद्ध आदि पदों का प्रयोग किस-किस रूप में पाया जाता है? और कहां-कहां पाया जाता है? तथा जैनदर्शन परमात्मा को एक कहता है या अनेक? सादि बतलाता है या अनादि? इन प्रश्नोंका तथा इस प्रकारके अन्य प्रश्नोंका समाधान प्राप्त करने के लिए हमें जैनागम-सागर का मन्थन करना होगा। जैनागमों का गंभीर चिन्तन, मनन, निदिध्यासन किए बिना उक्त प्रश्नों का समाधान प्राप्त होना कठिन है। पर यह काम बच्चों का खेल नहीं है। इस के लिए प्रतिभा चाहिए और जैनागमों का सम्यक्तया परिज्ञान होना चाहिए। जिस को जैनागमों का पर्याप्त बोध हो, उनके पूर्वापर सम्बन्धों की पूर्णतया जानकारी हो तथा उन में निराबाध गति से जो

विहरण कर सकता हो, ऐसा कोई आगम-मर्मज्ञ महापुरुष ही इन प्रश्नों का समाधान कर सकता है। जनसाधारण के वश का यह काम नहीं है।

जैन समाज में आगममहारथी महा-पुरुषों की कमी नहीं है। जैनागमों के मर्म को समझने वाले तथा उस के महासागर के तल का स्पर्श करने वाले समाज में आज भी अनेकों पूज्य मुनिराज हैं। किन्तु मालूम होता है कि इस सम्बन्ध में उन्होने कोई ध्यान नहीं दिया। यही कारण है कि आज तक किसी ऐसी पुस्तक की रचना नहीं हो सकी है, जिस में परमात्मसम्बन्धी आगम-पाठों का संकलन किया गया हो। वैसे ऐसी पुस्तक होनी अवश्य चाहिए। जैनागमों में जहां-जहां परमात्मा का वर्णन आता है, जिन शब्दों तथा जिस रूप में वह वर्णन किया गया है उस सब का संकलन किसी पुस्तक में अवश्य हो जाना चाहिए। तभी जैनागमों में वर्णित परमात्म-स्वरूप का जनसाधारण को बोध प्राप्त हो सकता है।

आगमों में यत्र-तत्र आए हुए परमात्मसम्बन्धी पाठों का संकलन होना चाहिए,ऐसा संकल्प तो जिज्ञासु पाठकों के हृदयों में वर्षों से चक्र लगा रहा है, किन्तु उसे पूरा करने का किसी ने प्रयास नहीं किया। मुझे हार्दिक हर्ष होता है, यह बताते हुए कि हमारे श्रद्धेय आचार्य-सम्राट् श्री ने इस दिशा में प्रयत्न करके उस संकल्प को आज पूरा कर दिया है। आचार्य श्री ने अपने अनवरत स्वाध्याय के बल पर आगमों से प्रायः वे सभी पाठ संकलित कर लिये हैं, जिन में परमात्मवाद को ले कर कुछ न कुछ कहा गया है, उसके स्वरूप को लेकर चिंतन किया गया है। उन पाठों का संकलित रूप ही आज हमारे सामने

"जैनागमों में परमात्मवाद" यह पुस्तिका है। इस पुस्तिका में परमात्मसम्बन्धी प्रायः सभी पाठों को संग्रहीत कर लिया गया है।

"जैनागमों में परमात्मवाद" में सर्वप्रथम शास्त्रीय पाठ हैं, फिर टिप्पणी में उसकी संस्कृत-च्छाया है। तदनन्तर उस पाठ की संस्कृत-व्याख्या है। तत्पश्चात् उसका हिन्दी में भावार्थ है। मूलपाठ देखने वाले को इस में मूलपाठ मिलेगा। जो संस्कृत भाषा के विद्वान मूलपाठ के गंभीर हार्द को संस्कृत भाषा में जानने की रुचि रखते हैं, उनके लिए मूलपाठ की संस्कृत-व्याख्या का इसमें संयोजन किया गया है। जो हिन्दी में उसे समझना चाहते हैं, उन के लिए हिन्दी भाषा में उन पाठों का अनुवाद कर दिया गया है। इस प्रकार इस पुस्तिका को प्रत्येक दृष्टि से उपयोगी और लोकप्रिय बनाने का स्तुत्य प्रयास किया गया है। इस का सभी श्रेय हमारे श्रद्धेय गुरुदेव जैन-धर्म-दिवाकर आचार्य-सम्राट् पूज्य श्री आत्माराम जी महाराज को ही है। इन्हीं के अनवरत परिश्रम का यह सुफल है। शारीरिक स्वास्थ्य ठीक न रहते हुए भी आचार्य श्री ने साहित्य-सेवा में अपना यह योगदान दिया है, इस के लिए साहित्यजगत आचार्य श्री का सदा के लिए ऋणी रहेगा।

ईश्वर-सम्बन्धी हिन्दी साहित्य में इस पुस्तक की अपनी विशिष्ट उपयोगिता है। जो व्यक्ति जानना चाहते हैं कि जैनागमों में परमात्मा के सम्बन्ध में कैसा निरूपण किया गया है? और किन-किन शब्दों में किया गया है? उनको इस पुस्तक में पर्याप्त सामग्री मिलेगी। और जो लोग यह कहते चले आ रहे हैं कि जैनदर्शन परमात्मा की सत्ता से इन्कार करता है,

या उसके सम्बन्ध में सर्वथा मौन है, उन लोगों को भी इस पुस्तक में समुचित समाधान मिल जायेगा, इस पुस्तक के अध्ययन से उन को पता चल जायेगा कि जैनधर्म परमात्मा की सत्ता को सहर्ष स्वीकार करता है; और प्रामाणिकता के साथ परमात्मा के स्वरूप का प्रतिपादन करता है। इस तरह यह पुस्तक साहित्य-जगत में महान उपकारक, हितावह प्रमाणित होगी, यह मैं दृढ़ता के साथ कह सकता हूं।

परमश्रद्धेय आचार्य सम्राट् श्री के हम आभारी हैं, जो शारीरिक दुर्बलता के रहते हुए भी साहित्य-सेवा के पुनीत कार्य को चालू रख रहे हैं। अबतक आचार्य श्री लगभग ६० पुस्तकें लिख चुके हैं। नेत्र-ज्योति की मंदता तथा एक कम अस्सी वर्षों की वयोवृद्ध अवस्था हो जाने पर आज भी श्रद्धेय आचार्य-देव इस पुनीत साहित्य-कार्य से विश्राम नहीं ले रहे हैं। अवसर निकालकर इस कार्य को करते ही रहते हैं। प्रस्तुत पुस्तिका भी आचार्य-देव की इसी लग्न का सुपरिणाम है। आचार्य-देव की इस साहित्यप्रियता, कृपालुता और दयालुता के लिए जितना भी उनका आभार प्रकट किया जाये उतना ही कम है।

जैनस्थानक, लुधियाना
कार्तिक शुक्ला १५ २०१६

—ज्ञानमुनि

जैनागमों में परमात्मवाद

* मङ्गलाचरणम् *

अमूर्तस्य चिदानन्द - रूपस्य परमात्मनः ।
निरञ्जनस्य सिद्धस्य, ध्यानं स्याद्रूपवर्जितम् ॥
इत्यजस्रं स्मरन् योगी, तत्स्वरूपावलम्बनः ।
तन्मयत्वमवाप्नोति, ग्राह्यग्राहकवर्जितम् ॥
अनन्यशरणीभूय, स तस्मिन् लीयते यथा ।
ध्यातृ - ध्यानोभयाभावे, ध्येयमैक्यं यथा व्रजेत् ॥
सोऽयं समरसीभावः, तदेकीकरणं मतम् ।
आत्मा यदपृथक्त्वेन, लीयते परमात्मनि ॥
अलक्ष्यं लक्ष्य-सम्बंधात्, स्थूलात्सूक्ष्मं विचिन्तयेत् ।
सालम्बाच्च निरालम्बं, तत्त्ववित् तत्त्वमंजसा ॥
एवं चतुर्विधध्यानामृतमग्नं मुनेर्मनः ।
साक्षात्कृतजगत्तत्त्वं, विधत्ते शुद्धिमात्मनः ॥

— योगशास्त्र, प्रकाश १०

परमात्मा का स्वरूप

मूल पाठ

*सव्वे सरा णियट्टन्ति, तक्का जत्थ न विज्जइ, मइ तत्थ न गाहिया, ओए, अप्पइट्ठाणस्स खेयन्ने, से न

---

* सर्वे स्वराः निवर्तन्ते, तर्को यत्र न विद्यते, मतिस्तत्र न ग्राहिका, ओजः, अप्रतिष्ठानस्य खेदज्ञः, स न दीर्घो, न ह्रस्वो, न वृत्तो, न

दीहे, न हस्से, न वट्टे, न तंसे, न चउरंसे, न परिमंडले, न किण्हे, न नीले, न लोहिए, न हालिद्दे, न सुकिल्ले, न सुरभिगन्धे, न दुरभिगन्धे, न तित्ते, न कडुए, न कसाए, न अंबिले, न महुरे, न कक्खडे, न मउए, न गरुए, न लहुए, न सीए, न उण्हे, न निद्धे, न लुक्खे, न काऊ, न रुहे, न संगे, न इत्थी, न पुरिसे, न अन्नहा, परिन्ने, सन्ने, उवमा न विज्जए, अरूवी सत्ता, अपयस्स पयं नत्थि ।

से न सद्दे, न रूवे, न गंधे, न रसे, न फासे ।

—आचारांगसूत्र प्रथमश्रुतस्कंध अध्याय ५ उद्देश ६ ।

संस्कृत—व्याख्या

"सर्वे" निरवशेषाः "स्वराः" ध्वनयस्तस्मान्निवर्तन्ते तद् वाच्य-वाचक-सम्बन्धे न प्रवर्तन्ते, तथाहि—शब्दाः प्रवर्त्तमानाः रूप-रस-गन्ध—स्पर्शानामन्यतमे विशेषे संकेत-काल-गृहीते तत्तुल्ये वा प्रवर्त्तेरन, नचैतत्तत्र शब्दादिनां प्रवृत्तिनिमित्तमस्ति, अतः शब्दानभिधेया मोक्षावस्थेति । न

त्र्यस्रो, न चतुरस्रो, न परिमण्डलो, न कृष्णो, न नीलो, न लोहितो, न हारिद्रो, न शुक्लो, न सुरभिगन्धो, न दुरभिगन्धो, न तिक्तो, न कटुको, न कषायो, नाम्लो, न मधुरो, न कर्कशो, न मृदुः, न गुरुः, न लघुः, न शीतो, नोष्णो, न स्निग्धो, न रूक्षो, न कायवान्, न रुहः, न संगः, न स्त्री, न पुरुषः, नान्यथा, परिज्ञः, संज्ञः, उपमा न विद्यते, अरूपिणी सत्ता, अपदस्य पदं नास्ति ।

स न शब्दः, न रूपः, न गन्धः, न रसः, न स्पर्शः ।

केवलं शब्दानभिधेया, उत्प्रेक्षणीयापि न संभवतीत्याह—संभवत्पदार्थ-विशेषास्तित्वाध्यवसाय ऊहस्तर्क: एवमेवं चैतत्स्यात्, स च यत्र न विद्यते ततः शब्दानां कुतः प्रवृत्तिः स्यात्, किमिति तत्र तर्काभाव इति चेदाह-मननं मतिः—मनसो व्यापारः पदार्थचिन्ता सौत्पत्तिक्यादिका चतुर्विधापि मतिस्तत्र न ग्राहिका, मोक्षावस्थाया सकल—विकल्पातीतत्वात्, तत्र च मोक्षे कर्मांशसमन्वितस्य गमनमाहोस्विन्निष्कर्मण: ?, न तत्र कर्मसम-न्वितस्य गमनमस्तीत्येतद्दर्शयितुमाह—"ओजः" एकोऽशेष—मलकलंकाकरहितः, किं च—न विद्यते प्रतिष्ठानमौदारिक-शरीरादे: कर्मणो वा यत्र सोऽप्रतिष्ठाणो मोक्षस्तस्य 'खेदज्ञो" निपुणो यदि वा अप्रतिष्ठा-नो नरकस्तत्र स्थित्यादिपरिज्ञानतया खेदज्ञो, लोक-नाडि-पर्यन्तपरिज्ञाना-वेदनेन च समस्तलोकखेदज्ञता आवेदिता भवति । सर्वस्वरनिवर्तनं च येनाभिप्रायेणोक्तवांस्तमभिप्रायमाविष्कुर्वन्नाह—'स' परमपदाभ्यासी लोकान्त-क्रोशषड्भागक्षेत्रावस्थानोऽनन्तज्ञानदर्शनोपयुक्ता संस्थानमाश्रित्य न दीर्घो, न ह्रस्वो, न वृत्तो, न त्र्यस्रो, न चतुरस्रो, न पारिमंडलो, वर्णमाश्रित्य न कृष्णो, न नीलो, न लोहितो, न हारिद्रो, न शुक्लो, गन्धमाश्रित्य—न सुरभिगन्धो, न दुरभिगन्धो, रसमाश्रित्य-न तिक्तो, न कटुको, न कषायो, नाम्लो न मधुरः, स्पर्शमाश्रित्य-न कर्कशो, न मृदुः, न लघुः, न गुरुः, न शीतो, नोष्णो, न स्निग्धो, न रूक्षो, 'न काउ' इत्यनेन लेश्या गृहीता यदि वा न कायवान्, यथा वेदान्तवादिनाम्—एक एव मुक्तात्मा तत्कायमपरे क्षीणक्लेशा अनुप्रविशन्ति, आदित्य—रश्मय इवांशुमन्तमिति, तथा न 'रुह' बीज—जन्मनि प्रादुर्भावे "च"—रोहतीति-रुहः न रुहोऽरुहः कर्मबीजाभावादपु-नर्भावीत्यर्थः, न पुनर्यथा शाक्यानां दर्शन—निकारतो मुक्तात्मनोऽपि पुनर्भवोपादानमिति, उक्तं च—

दग्धेंधनः पुनरुपैति भवं प्रमथ्य,
निर्वाणमप्यनवधारित-भीरुनिष्ठम् ।

मुक्तः स्वयं कृतभवश्च परार्थशूर,
स्त्वच्छासन-प्रतिहतेष्विह मोहराज्यम् ॥१॥

तथा च न विद्यते संगोऽमूर्त्तत्वाद्यस्य स तथा, तथा न स्त्री, न-पुरुषो, नान्यथेति—न नपुंसकाः केवलं सर्वैरात्मप्रदेशैः परि-समन्तात् विशेषतो जानातीति—परिज्ञः, तथा सामान्यतः सम्यग् जानाति—पश्यति इति संज्ञा, ज्ञानदर्शनयुक्त इत्यर्थः । यदि नाम स्वरूपतो न ज्ञायते, मुक्तात्मा तथाप्युपमाद्वारेणादित्यं गतिरिव ज्ञायत एवेति चेत् तन्न यत उपमीयते सादृश्यात् परिच्छिद्यते यया सोपमा-तुल्यता सा मुक्तात्मन-स्तज्ज्ञानसुखयोर्वा न विद्यते, लोकातिगत्वात्तेषां, कुत एतदिति चेदाह—तेषां मुक्तात्मनां या सत्ता सा अरूपिणी अरूपित्वं च दीर्घादिप्रतिषेधेन प्रतिपा-दितमेव । किं च न विद्यते पदम्—अवस्थाविशेषो यस्य सोऽपदः तस्य पद्यते-गम्यते येनार्थस्तत्पदम्—अभिधानं तच्च "नास्ति" न विद्यते वा-च्यविशेषाभावात् तथाहि—योऽभिधीयते सः शब्द-रूप-गन्ध-रसस्पर्शान्यतर-विशेषेणाभिधीयते तस्य च तदभाव इत्येतद्दर्शयितुमाह—यदि वा दीर्घ इत्यादिना रूपादिविशेष-निराकरणं कृतम्, इह तु तत्सामान्य-निराकरण कर्तुकामाह—स मुक्तात्मा न शब्दरूपः, न रूपात्मा, न गन्धः, न रसः, न स्पर्शः ।

हिन्दी भावार्थ—

मुक्तात्मा का स्वरूप बताने के लिए कोई भी शब्द समर्थ नहीं है । तर्क की वहां गति नहीं होती है । बुद्धि वहां तक जा नहीं सकती है । उसकी कल्पना नहीं की जा सकती है । वह मुक्तात्मा सकल कर्म रहित, सम्पूर्ण ज्ञानमय दशा में विराजमान है । वह न लम्बा है, न छोटा है, न गोल है, न त्रिकोण है, न चौरस है, न मण्डलाकार है, न काला है, न नीला है, न लाल है। वह पीला और सफैद भी नहीं है। सुगन्ध और दुर्गन्ध

वाला नहीं है। तीक्ष्ण और कटुक नहीं है। कसैला, खट्टा और मीठा नहीं है। वह न कठोर है, न सुकुमार है, न हल्का है, न भारी है, न शीत है, न उष्ण है, न स्निग्ध है, न रूक्ष है, न शरीरधारी है, न पुनर्जन्मा है, न आसक्त है, न स्त्री है, न पुरुष है, न नपुंसक है। वह ज्ञाता है, परिज्ञाता है, उसकी उपमा नहीं है। वह अरूपी है, अवर्णनीय है, शब्दों द्वारा उसका वर्णन नहीं किया जा सकता है।

मुक्तात्मा शब्द, रूप, रस, गन्ध और स्पर्श स्वरूप भी नहीं है।

मूल पाठ

* एक्कतीसं सिद्धाइगुणा पण्णत्ता, तंजहा—खीणे आभिणिबोहिय-णाणावरणे, खीणे सुयणाणावरणे, खीणे ओहियणाणावरणे, खीणे मणपज्जवणाणावरणे

---

* एकत्रिंशत् सिद्धादिगुणाः प्रज्ञप्ताः तद्यथा-क्षीणमाभिनिबोधिकज्ञानावरणं, क्षीणं श्रुतज्ञानावरणं, क्षीणमवधिज्ञानावरणं, क्षीणं मनःपर्यवज्ञानावरणं, क्षीणं केवलज्ञानावरणं, क्षीणं चक्षुर्दर्शनावरणं, क्षीणमचक्षुर्दर्शनावरणं, क्षीणमवधिदर्शनावरणं, क्षीणं केवलदर्शनावरणं, क्षीणा निद्रा, क्षीणा निद्रानिद्रा, क्षीणा प्रचला, क्षीणा प्रचलाप्रचला, क्षीणा स्त्यानर्द्धिः, क्षीणं सातावेदनीयं, क्षीणमसातावेदनीयं, क्षीणं दर्शनमोहनीयं, क्षीणं चारित्रमोहनीयं, क्षीणं नैरयिकायुष्कं, क्षीणं तिर्यगायुष्कं, क्षीणं मनुष्यायुष्कं, क्षीणं देवायुष्कं, क्षीणमुच्चगोत्रं, क्षीणं नीचगोत्रं, क्षीणं शुभनाम, क्षीणमशुभनाम, क्षीणो दानान्त-रायः, क्षीणो लाभान्तरायः, क्षीणो भोगान्तरायः, क्षीण उपभोगान्तरायः, क्षीणो वीर्यान्तरायः।

अतिम प्रगम्ति मे लिखा है—

॥ छ ॥ ग्रथाग्र १५७७५ ॥ छ ॥ छ ॥ छ ॥ छ ॥ श्री ॥

छ ॥ श्री कल्याणमस्तु ॥ शुभ भवतु ॥ छ ॥ श्री ॥ श्री ॥ छ ॥ छ ॥

प्रति मे अनेक स्थलो पर मस्कृत मे टिप्पण भी दिये हुए है।

(स) भगवती सूत्र (त्रिपाठी)

केगर भगवती नाम से ख्यात यह प्रति हमारे सघीय पुस्तकालय की है। इमके ६०२ पत्र तथा १२०४ पृष्ठ हैं। पत्र के मध्य मे मूल पाठ तथा ऊपर नीचे वृत्ति लिखी गई है। यह प्रति सुन्दर और काफी शुद्ध है। किसी पाठक ने मुद्रित प्रति को प्रमाण मानकर स्थान-स्थान पर हरताल लगाकर इसे शुद्ध करने का प्रयत्न किया है। जहां ऐसा किया गया है वहां प्राय शुद्ध पाठ अशुद्ध बन गया है। इसके प्रत्येक पृष्ठ मे मूल पाठ की ४ से १५ तक पक्तिया और प्रत्येक पक्ति मे ४५ से ५३ तक अक्षर हैं। प्रगस्ति मे लिखा है—

श्री भगवती सूत्र सम्पूर्णं ॥ छ ॥ श्री विवाहपन्नत्ती पचम अंग सम्मत्त ॥ शुभं भवतु। ग्रथाग्र १५६७५ उभयमीलने ग्र० ३४२६१ ॥ श्री ॥ लिषित यती डाहामल्ल श्री नागोरमध्ये स० १८४८ माह शु १५।

वृ (वृपा) मुद्रित

प्रकाशक —श्रीमती आगमोदय समिति।

सहयोगानुभूति

जैन-परम्परा मे वाचना का इतिहास बहुत प्राचीन है। आज मे १५०० वर्ष पूर्व तक आगम की चार वाचनाए हो चुकी हैं। देवर्द्धिगणी के बाद कोई सुनियोजित आगम-वाचना नही हुई। उनके वाचना-काल मे जो आगम लिखे गए थे, वे इस लम्बी अवधि मे बहुत ही अव्यवस्थित हो गए। उनकी पुनर्व्यवस्था के लिए आज फिर एक सुनियोजित वाचना की अपेक्षा थी। आचार्यश्री तुलसी ने सुनियोजित सामूहिक वाचना के लिए प्रयत्न भी किया था, परन्तु वह पूर्ण नहीं हो सका। अन्तत हम इसी निष्कर्ष पर पहुचे कि हमारी वाचना अनुसन्धानपूर्ण, तटस्थ-दृष्टि-समन्वित तथा सपरिश्रम होगी तो वह अपने-आप सामूहिक हो जाएगी। इसी निर्णय के आधार पर हमारा यह आगम-वाचना का कार्य प्रारम्भ हुआ।

हमारी इस वाचना के प्रमुख आचार्यश्री तुलसी हैं। वाचना का अर्थ अध्यापन है। हमारी इस प्रवृत्ति मे अध्यापन-कर्म के अनेक अग हैं—पाठ का अनुसधान, भाषान्तरण, समीक्षात्मक अध्ययन आदि-आदि। इन सभी प्रवृत्तियो मे आचार्यश्री का हमे सक्रिय योग, मार्ग-दर्शन और प्रोत्साहन प्राप्त है। यही हमारा इस गुरुतर कार्य मे प्रवृत्त होने का शक्ति-बीज है।

मैं आचार्यश्री के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित कर भार-मुक्त होऊ, उसकी अपेक्षा अच्छा है कि अग्रिम कार्य के लिए उनके आशीर्वाद का शक्ति-सवल [ृपा और अधिक भारी वनू ।

प्रस्तुत आगम के सम्पादन मे पाठ-सम्पादन के स्थायी सहयोगी मुनि सुदर्शनजी, मधुकरजी और हीरालालजी के अतिरिक्त मुनिश्री कानमल जी, छत्रमलजी, अमोलकचन्दजी, दिनकरजी,-पूनमचन्दजी, कन्हैयालालजी, राजकरणजी, ताराचन्दजी, वालचन्द्रजी, विजयराजजी, मणिलालजी, महेन्द्रकुमारजी (द्वितीय), सम्पतमलजी (डूगरगढ), शान्तिकुमारजी, मोहनलालजी (शार्दूल) और श्रीमन्नालाल जी वोरड का योग रहा है। पाठ-सम्पादन का कार्य स० २०२९ पौष कृष्णा ९ (२८ दिसम्बर १९७२) को सरदारशहर (राजस्थान) मे आरम्भ किया गया और वह स० २०३० फाल्गुन शुक्ला ११ (४ मार्च १९७४) को दिल्ली मे पूरा हुआ।

प्रति शोधन मे मुनि सुदर्शनजी, मधुकरजी, हीरालालजी और दुलहराजजी ने वहुत श्रम किया है। इसका ग्रन्थ-परिमाण मुनि मोहनलाल जी आमेट ने तैयार किया है।

कार्यनिष्पत्ति मे इनके योगका मूल्याकन करते हुए मैं इन सवके प्रति आभार व्यक्त करता हूँ।

आगमविद् और आगम-सपादन के कार्य मे सहयोगी स्व० श्री मदनचन्दजी गोठी को इस अवसर पर विस्मृत नही किया जा सकता। यदि वे आज होते तो भगवती के कार्य पर उन्हे परम हर्ष होता।

आगम के प्रवन्ध सम्पादक श्री श्रीचन्दजी रामपुरिया प्रारम्भ से ही आगम कार्य मे सलग्न रहे हैं। आगम साहित्य को जन-जन तक पहुँचाने के लिए वे कृत-सकल्प और प्रयत्नशील हैं। अपने सुव्यवस्थित वकालत कार्य से पूर्ण निवृत्त होकर अपना अधिकाश समय आगम-सेवा मे लगा रहे है। 'अगसुत्ताणि' के इस प्रकाशन मे इन्होने अपनी निष्ठा और तत्परता का परिचय दिया है।

'जैन विश्व भारती' के अध्यक्ष श्री खेमचन्द जी सेठिया, 'जैन विश्व भारती' तथा 'आदर्श साहित्य सघ' के कार्यकर्त्ताओ ने पाठ-सम्पादन मे प्रयुक्त सामग्री के सयोजन मे वडी तत्परता से कार्य किया है।

एक लक्ष्य के लिए समान गति से चलने वालो की समप्रवृत्ति मे योगदान की परम्परा का उल्लेख व्यवहारपूर्त्तिमात्र है। वास्तव मे यह हम सव का पवित्र कर्त्तव्य है और उसी का हम सवने पालन किया है।

अणुव्रत विहार
नई दिल्ली
१-१०-७४

मुनि नथमल

'ब' संज्ञक भगवई सूत्र का प्रथम पृष्ठ (तेरापंथी सभा हस्तलिखित संग्रहालय, सरदार शहर)।

'ब' संज्ञक भगवई सूत्र का अंतिम पृष्ठ (तेरापंथी सभा हस्तलिखित संग्रहालय, सरदारशहर)।

'अ' संज्ञक भगवई सूत्र का अंतिम पृष्ठ (गणेशदास गधैया हस्तलिखित संग्रहालय, सरदारशहर)।

'ता' संज्ञक ताडपत्रीय भगवई सूत्र का प्रथम पृष्ठ ([illegible])।

'ता' संज्ञक ताडपत्रीय भगवई सूत्र का अंतिम पृष्ठ (जेसलमेर जैन ज्ञान भंडार)।

भूमिका

नामकरण

प्रस्तुत आगम का नाम व्याख्याप्रज्ञप्ति है। प्रश्नोत्तर की शैली मे लिखा जाने वाला ग्रन्थ व्याख्याप्रज्ञप्ति कहलाता है। समवायाग और नन्दी के अनुसार प्रस्तुत आगम मे छत्तीस हजार प्रश्नो का व्याकरण है[1]। तत्त्वार्थवार्त्तिक, षट्खण्डागम और कसायपाहुड के अनुसार प्रस्तुत आगम मे साठ हजार प्रश्नो का व्याकरण है[2]।

प्रस्तुत आगम का वर्तमान आकार अन्य आगमो की अपेक्षा अधिक विशाल है। इसमे विषयवस्तु की विविधता है। सम्भवत विश्वविद्या की कोई भी ऐसी शाखा नही होगी जिसकी इसमे प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप मे चर्चा न हो। उक्त दृष्टिकोण से इस आगम के प्रति अत्यन्त श्रद्धा का भाव रहा। फलत इसके नाम के साथ 'भगवती' विशेषण जुड गया, जैसे—भगवती व्याख्या-प्रज्ञप्ति। अनेक शताब्दियो पूर्व 'भगवती' विशेषण न रहकर स्वतन्त्र नाम हो गया। वर्तमान मे व्याख्याप्रज्ञप्ति की अपेक्षा 'भगवती' नाम अधिक प्रचलित है।

विषय-वस्तु

प्रस्तुत आगम के विषय के सम्बन्ध मे अनेक सूचनाए मिलती है। समवायाग मे बताया गया है कि अनेको देवो, राजो और राजर्षियो ने भगवान् से विविध प्रकार के प्रश्न पूछे और भगवान् ने विस्तार से उनका उत्तर दिया। इसमे स्वसमय, परसमय, जीव, अजीव, लोक और अलोक व्याख्यात है[3]। आचार्य अकलक के अनुसार प्रस्तुत आगम में जीव है या नही है—इस प्रकार के अनेक प्रश्न निरूपित हैं[4]। आचार्य वीरसेन के अनुसार प्रस्तुत आगम में प्रश्नोत्तरो के साथ-साथ छियानवे हजार छिन्नच्छेद नयों[5] से ज्ञापनीय शुभ और अशुभ का वर्णन है[6]।

---

१ समवाओ, सूत्र ९३, नदी, सूत्र ८५।

२ तत्त्वार्थवार्त्तिक १।२०, षट्खण्डागम १, पृ० १०१, कसायपाहुड १, पृ० १२५।

३ समवाओ, सूत्र ९३।

४ तत्त्वार्थवार्तिक १।२०।

५ जिस व्याख्या पद्धति मे प्रत्येक श्लोक और सूत्र की स्वतन्त्र, दूसरे श्लोको और सूत्रो से निरपेक्ष व्याख्या की जाती है उस व्याख्यापद्धति का नाम छिन्नच्छेद नय है।

६ कसायपाहुड भाग १, पृ० १२५।

उक्त सूचनाओ से प्रस्तुत आगम का महत्व जाना जा सकता है। वर्तमान विज्ञान की अनेक शाखाओ ने अनेक नए रहस्यो का उद्घाटन किया है। हम प्रस्तुत आगम की गहराइयो मे जाते है तो हमे प्रतीत होता है कि इन रहस्यो का उद्घाटन ढाई हजार वर्ष पूर्व ही हो चुका था।

भगवान् महावीर ने जीवो के छह निकाय वतलाए। उनमे त्रस निकाय के जीव प्रत्यक्ष सिद्ध है। वनस्पति निकाय के जीव अव विज्ञान द्वारा भी सम्मत है। पृथ्वी, पानी, अग्नि और वायु—इन चार निकायो के जीव विज्ञान द्वारा स्वीकृत नही हुए। भगवान् महावीर ने पृथ्वी आदि जीवो का केवल अस्तित्व ही नही वतलाया, उनका जीवनमान, आहार, श्वास, चैतन्य-विकास सज्ञाए आदि पर भी पर्याप्त प्रकाश डाला है। पृथ्वीकायिक जीवो का न्यूनतम जीवनकाल अन्तर्-, मुहूर्त्त का और उत्कृष्ट जीवनकाल वाईस हजार वर्ष का होता है। वे श्वास निश्चित क्रम मे नही लेते—कभी कम समय मे और कभी अधिक समय से लेते हैं। उनमे आहार की इच्छा होती है। वे प्रतिक्षण आहार लेते है। उनमे स्पर्शनेन्द्रिय का चैतन्य स्पष्ट होता है। चैतन्य की अन्य धाराये अस्पष्ट होती हैं[1]।

मनुष्य जैसे श्वासकाल में प्राणवायु का ग्रहण करता है वैसे पृथ्वीकाय के जीव श्वासकाल मे केवल वायु को ही ग्रहण नही करते किन्तु पृथ्वी, पानी, अग्नि, वायु और वनस्पति—इन सभी के पुद्गलो को ग्रहण करते है[2]।

पृथ्वी की भाति पानी आदि के जीव भी श्वास लेते है, आहार आदि करते है। वर्तमान विज्ञान ने वनस्पति जीवो के विविध पक्षो का अध्ययन कर उनके रहस्यो को अनावृत किया है, किन्तु पृथ्वी आदि के जीवो पर पर्याप्त शोध नही की। वनस्पति क्रोध और प्रेम प्रदर्शित करती है। प्रेमपूर्ण व्यवहार से वह प्रफुल्लित होती है और घृणापूर्ण व्यवहार से वह मुरझा जाती है। विज्ञान के ये परीक्षण हमे महावीर के इस सिद्धान्त की ओर ले जाते हैं कि वनस्पति मे दस सज्ञाए होती है। वे सज्ञाए निम्न प्रकार हैं—आहार सज्ञा, भय सज्ञा, मैथुन सज्ञा, परिग्रह सज्ञा, क्रोध सज्ञा, मान सज्ञा, माया सज्ञा, लोभ सज्ञा, ओघ सज्ञा और लोक सज्ञा। इन सज्ञाओ का अस्तित्व होने पर वनस्पति अस्पष्ट रूप मे वही व्यवहार करती है जो स्पष्ट रूप मे मनुष्य करता है।

प्रस्तुत विषय की चर्चा एक उदाहरण के रूप में की गई है। इसका प्रयोजन इस तथ्य की ओर इगित करना है कि इस आगम मे ऐसे सैकडो विषय प्रतिपादित है जो सामान्य वुद्धि द्वारा ग्राह्य नही हैं। उनमे से कुछ विषय विज्ञान की नई शोधो द्वारा अव ग्राह्य हो चुके हैं और अनेक विपयो को परीक्षण के लिए पूर्व-मान्यता के रूप मे स्वीकार किया जा सकता है। सूक्ष्म जीवो की गतिविवियो के प्रत्यक्षत प्रमाणित होने पर केवल जीव-शास्त्रीय सिद्धान्तो का ही विकास नही होता, किन्तु अहिसा के सिद्धान्त को समझने का अवसर मिलता है और साथ-साथ सूक्ष्म जीवो के प्रति किए जाने वाले व्यवहार की समीक्षा का भी।

---

१ भगवई १।१।३२, पृ० ६।
२ भगवई ६।३४।२५३,२५४, पृ० ४६४।

भगवान् महावीर ने पाच मूल द्रव्यो का प्रतिपादन किया। वे पचास्तिकाय कहलाते है। उनमे धर्मास्तिकाय, अधर्मास्तिकाय और आकाशास्तिकाय—ये तीनो अमूर्त्त होने के कारण अदृश्य है। जीवास्तिकाय अमूर्त्त होने के कारण दृश्य नही है फिर भी शरीर के माध्यम से प्रकट होने वाली चैतन्य क्रिया के द्वारा वह दृश्य है। पुद्गलास्तिकाय [परमाणु और स्कन्ध] मूर्त्त होने के कारण दृश्य है। हमारे जगत् की विविधता जीव और पुद्गल के सयोग से निष्पन्न होती है। प्रस्तुत आगम मे जीव और पुद्गल का इतना विशद निरूपण है जितना प्राचीन धर्मग्रन्थो या दर्शनग्रन्थो मे सुलभ नही है।

प्रस्तुत आगम का पूर्ण आकार आज उपलब्ध नही है किन्तु जितना उपलब्ध है उसमे हजारो प्रश्नोत्तर चर्चित हैं। ऐतिहासिक दृष्टि से आजीवक सघ के आचार्य मखलिगोशाल, जमालि, शिवराजर्षि, स्कन्दक सन्यासी आदि प्रकरण वहुत महत्त्वपूर्ण हैं। तत्त्वचर्चा की दृष्टि से जयन्ती, मद्दुक श्रमणोपासक, रोह अनगार, सोमिल ब्राह्मण, भगवान् पार्श्व के शिष्य कालासवेसियपुत्त, तुगिया नगरी के श्रावक आदि प्रकरण पठनीय है। गणित की दृष्टि से पार्श्वापत्यीय गागेय अनगार के प्रश्नोत्तर वहुत मूल्यवान् है।

भगवान् महावीर के युग मे अनेक धर्म-सम्प्रदाय थे। साम्प्रदायिक कट्टरता बहुत कम थी। एक धर्म सघ के मुनि और परिव्राजक दूसरे धर्म सघ के मुनि और परिव्राजको के पास जाते, तत्त्व-चर्चा करते और जो कुछ उपादेय लगता वह मुक्तभाव से स्वीकार करते। प्रस्तुत आगम मे ऐसे अनेक प्रसग प्राप्त होते है जिनसे उस समय की धार्मिक उदारता का यथार्थ परिचय मिलता है। इस प्रकार अनेक दृष्टिकोणो मे प्रस्तुत आगम पढने मे रुचिकर, ज्ञानवर्धक, सयम और समता का प्रेरक है।

विभाग और अवान्तर विभाग

समवायाग और नन्दीसूत्र के अनुसार प्रस्तुत आगम के सौ से अधिक अध्ययन, दस हजार उद्देशक और दस हजार समुद्देशक हैं[1]। इसका वर्तमान आकार उक्त विवरण से भिन्न है। वर्तमान मे इसके एक सौ अडतीस शत या शतक और उन्नीस सौ पच्चीस उद्देशक मिलते हैं। प्रथम वत्तीस शतक स्वतन्त्र है। तेतीस से उनचालीस तक के सात शतक वारह-वारह शतको के समवाय हैं। चालीसवा शतक इक्कीस शतको का समवाय है। इकचालीसवा शतक स्वतन्त्र है। कुल मिलाकर एक सौ अडतीस शतक होते है। उनमे इकचालीस मुख्य और शेष अवान्तर शतक हैं।

शतको मे उद्देशक तथा अक्षर-परिमाण इस प्रकार है—

शतक	उद्देशक	अक्षर-परिमाण	शतक	उद्देशक	अक्षर-परिमाण
१	१०	३८८४१	४	१०	७५३
२	१०	२३८१८	५	१०	२५६९१
३	१०	३६७०२	६	१०	१८६५२

१ समवाओ, सूत्र ९३, नन्दी, सूत्र ८५।

शतक	उद्देशक	अक्षर-परिमाण	शतक	उद्देशक	अक्षर-परिमाण
७	१०	२४६३५	२५	१२	४५१०३
८	१०	४८५३४	२६	११	४४५५
९	३४	४५८५९	२७	११	१६०
१०	३४	६६०७	२८	११	६६४
११	०२	३२३३८	२९	११	१०२७
१२	१०	३२८०८	३०	११	४७६४
१३	१०	२११९४	३१	२८	२३४४
१४	१०	१६०३३	३२	२८	३६३
१५		३९८१२	३३ (१२)	१२४	३०८९
१६	१४	१५९३९	३४ (१२)	१२४	८९६४
१७	१७	८४१२	३५ (१२)	१३२	४१८१
१८	१०	२२४४३	३६ (१२)	१३२	७३१
१९	१०	८०२७	३७ (१२)	१३२	११५
२०	१०	१९८७१	३८ (१२)	१३२	८७
२१ (आठ वर्ग)	८०	१६३०	३९ (१२)	१३२	१३९
२२ (छह वर्ग)	६०	१०६८	४० (२१)	२३१	२७३४
२३ (पाच वर्ग)	५०	७१५	४१	१९६	३५१६
२४	२४	३९९२६	कुल १३८	कुल १९२३[1]	कुल ६१८२२४

भाषा और रचना-शैली

प्रस्तुत आगम की भाषा प्राकृत है। कहीं-कहीं शौरसेनी के प्रयोग भी मिलते है। इसमे देशी शब्दो का प्रयोग भी स्थान-स्थान पर मिलता है, जैसे—खत्त, डोगर (७।११७), टोल (७।११९), मग्गओ (७।१५२), वोदि (३।११२), चिक्खल्ल (८।३५७)।

इनकी भाषा बहुत सरल और सरस है। अनेक प्रकरण कथा-शैली मे लिखे गए है। जीवन-प्रसग, घटनाए और रूपक स्थान-स्थान पर उपलब्ध होते है। स्थान-स्थान पर कठिन विषयो को उदाहरणो द्वारा समझाया गया है।

प्रस्तुत आगम की रचना गद्य शैली मे हुई है। कहीं-कहीं स्वतन्त्र रूप से प्रश्नोत्तरो का क्रम चलता है और कहीं-कहीं किसी घटनाक्रम के बाद उनका क्रम चलता है। प्रतिपाद्य विषय का सकलन करने के लिए सग्रहणी गाथाओं के रूप मे कुछ पद्य भाग भी मिलता है।

---

१. बीसवें शतक के छठे उद्देशक में पृथ्वी, अप् और वायु—इन तीनो की उत्पत्ति का निरूपण है। एक परम्परा के अनुसार यह एक उद्देशक है, दूसरी परम्परा के मत में ये तीन उद्देशक हैं। इस परम्परा के अनुसार प्रस्तुत आगम के कुल उद्देशक १९२५ हैं।

कार्य-संपूर्ति

प्रस्तुत आगम के पाठ-शोधन मे लगभग सवा वर्ष लगा। इसमे अनेक मुनियो का योग रहा। उन सबको मैं आशीर्वाद देता हूँ कि उनकी कार्यजा शक्ति और अधिक विकसित हो।

इसके सम्पादन का बहुत कुछ श्रेय शिष्य मुनि नथमल को है, क्योंकि इस कार्य मे अहर्निश वे जिस मनोयोग से लगे हैं, उसी से यह कार्य सम्पन्न हो सका है। अन्यथा यह गुरुतर कार्य बड़ा दुरूह होता। इनकी वृत्ति मूलत. योगनिष्ठ होने से मन की एकाग्रता सहज बनी रहती है। सहज ही आगम का कार्य करते-करते अन्तर्‌रहस्य पकड़ने मे इनकी मेधा काफी पैनी हो गई है। विनय-शीलता श्रम-परायणता और गुरु के प्रति पूर्ण समर्पण भाव ने इनकी प्रगति मे बड़ा सहयोग दिया है। यह वृत्ति इनकी बचपन से ही है। जब से मेरे पास आए, मैने इनकी इस वृत्ति मे क्रमशः वर्धमानता ही पाई है। इनकी कार्य-क्षमता और कर्त्तव्य-परता ने मुझे बहुत सतोष दिया है।

मैने अपने सघ के ऐसे शिष्य साधु-साध्वियो के बल-बूते पर ही आगम के इस गुरुतर कार्य को उठाया है। अब मुझे विश्वास हो गया है कि मेरे शिष्य साधु-साध्वियो के निस्वार्थ, विनीत एव समर्पणात्मक सहयोग से इस वृहत् कार्य को असाधारण रूप से सम्पन्न कर सकूँगा।

भगवान् महावीर की पचीसवी निर्वाण शताब्दी के अवसर पर उनकी वाणी का सबसे बडा सकलन-ग्रन्थ जनता के समक्ष प्रस्तुत करते हुए मुझे अनिर्वचनीय आनन्द का अनुभव हो रहा है।

अणुव्रत विहार नई दिल्ली
२५००वा निर्वाण दिवस

आचार्य तुलसी

Preface

The Title

The title of the Āgama under review is 'Vyākhyā Prajñapti'. The work written in a dialogue-style is called 'Vyākhyā Prajñapati' According to 'Samawāyānga' and 'Nandi-Sūtra' the present Āgama has an exposition of thirtysix thousand queries[1] On the testimony of Tatwārtha-Vārtika, Śatkhandāgama and Kasaya-Pāhuda the present Āgama contained an exposition of sixty thousand queries[2]

The present Āgama is a volume much larger than other Āgamas It is multifarious in its contents. Probably, there is no branch of metaphysics, which has not been discussed in it, directly or indirectly From the aforesaid point of view, this Āgama was held in high esteem The adjective 'Bhagawati' was, therefore, added to it's title, i e 'Vāyākhyā Prajñapti' Many centuries before, the adjective 'Bhagawati' became a part and parcel of the title Now-a-days, the title 'Bhagawati' is more in vogue than 'Vyākhyā Prajnapti'

The Content

Different sources provide copicious information regarding the contents of the present Āgama 'Samawāyānga' tells us that many deities, kings and king-ascetics put different types of queries before the lord and he answered them in detail Swa-Samaya, Para-Samaya, Jeewa, Ajeewa, Loka and Aloka have been explained in detail[3] According to Āchārya Akalanka queries, such as whether the Jīwa exists or not, have been answered in this Āgama [4] According to Ācharya Veersena, alongwith the queries and answers, predictive śubha (auspicious) and asubha (in-auspicious)[5] have been described by ninetysix thousand Ćhinnaććheda Nayas[6]

---

1 Samawao, Sutra 93 , Nandi, Sutra 85

2 Tatwartha Vartika 1/20, Satkhanadagama 1, page 101, Kasaya-Pahuda-1, page 125

3 Samawao Sutra 93

4 Tatwartha' vartika 1/0

5 Kasayapahuda Pt I, p 125

6 The explaination-method, in which each sloka and sutra is explained independently without considering other slokas and sutras, is called 'chinnacchedanaya'

The importance of the present Āgama may well be understood by the aforesaid indications Different branches of modern science have recently brought to light many mysteries When we go into the depths of the present Āgama, we find that these mysteries had been revealed some 2500 years before

Lord Mahavira has enumerated six groups of living-beings (Jivas). The living beings of the Trasa-kāya(mobile beings)group are self-evident. The living beings of the floral group (Vanaspati nikāya) are supported by the modern Science also The four groups of living beings—the earth the water, the fire, and the air have not been accepted by the modern science. Lord Māhavira has not only cited the existence of the earth living-beings etc , but thrown enough light on their life-span, food habits, breathing, evolution of consciousness, perceptions etc also The minimum span of life of the living-beings of the earth group is of a Antar Muhrat only and the maximum of twenty two thousand years They do not have a particular order of breath period. Sometimes it is less and sometimes more They aspire every moment for food and take it The consciousness of the touch-organ is quite distinct in them The other currents of consciousness are indistinct.[1]

As man takes in oxygen in his breath-period, the living-beings of the earth group not only take in air, but the Pudgalas (matter) of all the earth, the water, the fire, the air and the flora[2]

Like the earth living-beings, the other living-beings of the water etc do breathe and take food etc Modern science has studied the different aspects of the floral living-beings and thrown light on their mysteries, but sufficient research has not been carried out on the earth living-beings Flora expresses anger and affection. The affectionate behaviour blooms it and the hateful behaviour fades it away. These scientific experiments lead us to the maxim of lord Mahavira that there is ten fold consciousness in the floral-world.

These ten folds are—Food consciousness, fear consciousness, co-habitation consciousness, hoarding consciousness, anger consciousness, ego consciousness, deceit consciousness, greed consciousness, 'Augha' consciousness and world consciousness Having these folds of consciousness the floral world behaves indistinctly the same way as man does distinctly.

---

1 Bhagawai, 1-1-32, page 9.

2 Bhagawai, 9-34-253, 254, page 464.

This topic has been mentioned as an example The object of it is to point out the fact that in this Āgama hundreds of such topics, that cannot be understood by common sense, have been expounded. A few of them have been so far understood with the help of the modern scientific research and many of them can be accepted as tenets for experiments.

The activities of the subtle living-beings (Sūkshma jīva) being perceivably proved, not only the biological doctrines are evolved, an opportunity to understand the doctrine of Ahimsā, and side by side to review the behaviour towards the subtle living-beings, is provided also

Lord Mahavira has expounded the five principal substances They are named as Panchāstikāya In them dharmāstikāya, adharmāstikāya and ākāsāstikāya, the three being formless are invisible Though Jīvāstikāya too, being formless, is invisible, it is indicated by the activities of consciousness seen through the body Pudgalāstikāya, being concrete, is visible The multiformity of our world is a result of the union of Jīva and Pudgala A clear ascertainment of Jīva and Pudgala is found in this Āgama to such a great extent as is not available in the old religious and philosophical works The full text of the Āgama is not available today, but whatever is available discusses thousands of queries From the historical point of view, the chapters on Ācharya Mankkhali Gosāla, Jamāli, Śivarājarṣi, Skanda Sanyāsi etc are of great importance From the angle of philosophical discussion Jayanti, Madduka Śramanopāsaka, Roha Anagāra, Somila Brāhmana, Lord Parśwa's disciple Kālās-vesiya-putta, śrāvakas of Tungīya City etc are the topics worth reading From the view point of Mathematics, discussions of Pārśwa-patyīya Gāngeya Anāgāra are of great value

In the age of Lord Mahavira, there were different religious cults Cultic bigots were almost un-heard Munis and Parivrājakas of one religious body went to engage themselves in philosophical discusssions with the Munīs and Parivrājakas of another religious body, and whatever was found to be acceptable, was accepted freely There are many contexts in this Āgama to throw light on the true free-mindedness of religion prevailing in that age In this way, with different view-points this Āgama is a work, interesting to read, inspring of self-control and equilibrium and promoter of knowledge

Divisions and Sections

According to Samawāyānga and Nandi Sūtra, this Āgama contains more than a hundred Adhyayanas,ten thousand Uddeśakas and ten thousand Samuddesakas[1] The present volume of it differs from the said account.

1. Samawao, Sutra 93, Nandi, Sutra 85,

Presently, there are one hundred and thirtyeight Śatas (Śatakas) and one thousand and ninehundred and twentyfive Uddeśakas. The first thirytwo Śatakas are independent ones The seven Śatakas, from thirtythree to thirty-nine, are unions of twelve śatakas each The fortieth śataka is a union of twentyone śatakas The forty-first śataka is independent In all, there are one hundred and thiryeight śatakas. In them, fortyone śatakas are cardinals and the rest are secondary ones.

The Uddesakas and syllables in the Śatakas are as follows .

Śataka	*Uddeśaka*	*Total syllables*
1	10	28841
2	10	23818
3	10	36702
4	10	753
5	10	25691
6	10	18652
7	10	24935
8	10	48435
9	34	45859
10	34	9907
11	12	32338
12	10	32808
13	10	21914
14	10	16033
15	—	39812
16	14	15939
17	17	8412
18	10	22443
19	10	8027
20	10	19871
21 (eight vargas)	80	1630
22 (six vargas)	60	1068
23 (five vargas)	50	715
24	24	39926
25	12	45103
26	11	4455

Sataka	*Uddesaka*	*Total syllables*
27	11	190
28	11	694
29	11	1027
30	11	4764
31	28	2344
32	28	363
33 (12 vargas)	124	3089
34 (,, ,,)	124	8964
35 (,, ,,)	132	4181
36 (,, ,,)	132	731
37 (,, ,,)	132	115
38 (,, ,,)	132	87
39 (,, ,,)	132	139
40 (29 ,,)	231	2734
41	196	3516
138	19231[1]	618224

The Language and the Style

The language of the present Āgama is Prākrit Here and there the usages of Saurseni are also found In some instances the use of Desi words (vernacular) is also found, like khatta (खत्त), Dongar (7/117 डोगर), Tola (7/119 टोल), Maggao (7/152 मग्गओ), Bondi (3/112 बोंदि), Cikkhalla (8/357 चिक्खल्ल).

The expression of it is very lucid and sweet Many topics have been dealt with in the style of fable narration Reminiscences, anecdots and allegories are found through out the work. The difficult topics have been explained by citing aporopriate examples in many places

The present Āgama has been written down in prose style Somewhere, the order is an independent discussion and sometimes it is an off-shoot of some incident Some verse-part is also available in the form of collected Gāthas to compile the ascertainable topic

1 In the twentieth Sataka of the sixth Uddesaka, the theory of the origin of the earth, the water, and the air, has been expounded According to one tradition, this is one Uddesaka, but the others hold it as comprised of three Uddesakas According to this tradition, the Agama under review has 1925 Uddesakas in all,

Accomplishment of the work

It took about a year and a quarter to redeem the text of the present Āgama In the accomplishment of this task, there has been the contribution of many Munis I bless them that their devotedness to the performances be ever more developed. On the occasion of this twentyfifth centinary of Lord Mahavira, I have a feeling of great pleasure in presenting to the people the biggest and most volumenous work pertaining to the life and teaching of the Lord.

Anuvrata Vihar

Delhi

Āchārya Tulasi

Editorial

Introduction to the work

The Āgama Sūtras have two main divisions, i e. the Anga-Pravista and the Anga-Vāhya The Anga-Pravista Sūtras are considered to be the nearest to the original and most authentic of all as they are composed by the principal diciples of Lord Mahāvira They are twelve in number 1 Āchārānga, 2 Sūtrakrtānga, 3 Sthānānga, 4 Samawāyānga, 5 Vyākhyā-Prajnapti, 6 Jnata Dharma-Kathā, 7 Upāsaka-Daśā, 8 Anta-krita-Daśā, 9 Anuttaro-papātika Daśā, 10 Praśna-Vyākarana, 11 Vipāka-Śruta, 12 Dristiwāda The twelfth Anga is, at present, not available

The eleven Angas, which are available, are being published in three volumes under the title of Anga-Suttani. The first volume has four Angas, i e, 1 Āchārānga, 2 Sūtrakritānga, 3. Sthānānga and 4. Samawāyānga. The second volume contains only the 'Vyākhyā Prajnapti' and the third contains the rest six Angas

The present work is the second volume of the Anga-Suttāni. It has the original text of the Vyākhyā-Prajnapti with its recentions A brief preface has been added in the beginning An elaborate preface and the word-index have not been added to it It is planned to publish them in two independent volumes Accordingly, the fourth volume will contain an elaborate preface to the eleven Angas and the fifth one will contain the word-index thereof

The present text and the method of editing

The text of the present Āgama has been redeemed on the basis of the seven manuscripts (two being palm-leaf manuscripts) and vritties (commentaries) According to the method of text redemption in vouge, we do not proceed on the basis of regarding only one manuscript as main, but redeem the original text with the help of Artha-mīmānsā (critical meaning), former and later contexts, preceding text (Poorwa-Pātha) and the text of other Āgama-Sūtras and the explanation in the Vritti (commentary) The original commentary of the Bhagwati is extinct at present The chūrni (commentary) was available but we could not get it. We have made use of the original Tīka and chūrni portions quoted by Abhayadeva Sūri in his vritti. The scribes, from time to time have abridged the text Many forms

of the abridgement are found In the manuscripts used in the text-redemption, there are four different versions The abridgement of the text found in them has been done in different ways (See, page 39) There have been mistakes also due to the difference in written forms of the letters In sūtra 1/365, the reading Pāosiyāya' has been substituted for 'Prādoṣikī Kriyā'. In some manuscripts the reading is 'Pā-u-siyāya' In the old script, it is difficult to differenciate 'O' from 'U'. This is why 'U' is abundantly found in the present manuscripts in place of 'O'. The manuscripts which were transcribed by the scholars efficient in the language, have 'O' but the copies, prepared by mere scribes have 'U' instead of 'O', The recensions such as 'Owāsantare' and 'Uwāsantare' have taken place due to this fact only. (See, page 66, Sūtra 1/392 ; page 77, Sūtra 1/444)

In Sūtra 8/242, the reading is 'Čhettehin'. But, as the transcribing went on, many gradual alterations, such as 'Bittehin', 'Čhattehin', 'Čittehin' occured 'Tada' became 'Taha' in Sūtra 8/301. There is an obridged 'Vaćna' (lesson) in same manucripts The commentator, too, received the abridged 'Vaćna'. So he wrote 'Anya Yūthik waktawyata' is to be understood by one himself. It has not been written down lest the work should get bulky[1]'. The commentator completed the abridged reading in the commentary. Some transcribers have included same part of the commentary in the original text And, thus the reading of the full text differed from that of the abridged text

In some specimens a mixture of the readings, abridged and full, has taken place In Sūtra 2/47, page 88, 'Khandayā' Pućchā' is the abridged text Some transcriber wrote its full text in the margin of the manuscript for his own understanding And, in the later transcriptions, the abridged and the full text were both included. (See, foot-note of Sūtra 5/122, page 209 , the first foot-note of Sūtra 2/118, page 112) In 11/59 the full and the abridged text 'Jahā O-wā-i-e' both have been written down. Such is the case in the chapter of Asoććā Kewalī' also In some manuscript, the quotation given in the commentary has also been included. (See, the second foot-note of Sūtra 2/75, page 99). In some instances, the secondary explanation, too, given by the commentator, was accepted as the original text in the later transcriptions. (See the first foot-note of the Sutra 5/51, page 194)

In the task of text-redemption, the text of other Āgamas also are taken as basis. In all the manuscripts, after the text 'Ćiyatante uragharappawesā' in Sutra 2/94, the text reads as 'Bahūhin Sīlawwaya-guna-weramanapaćća-

1 Iha Sutra Anya Yuthika waktawayam Swayamuecaranıyam, Gṛantha—gaurawa —bhayenalikhitatatwattasya taçcedam, Vṛittipatra 106,

khāna-pōs-hōwa-wasehın' Due to the ınconsıstency ın ıts meanıng there, the commentator had to wrıte 'Taıryuktā ıtı gamyam', but, on seeıng the Sutras 'owā-ıya' and 'Rāyapaśena-ıya', ıt ıs found that thıs readıng should not be there where ıt has been wrıtten down On the basıs of both the above-mentıoned Sūtras, the order of the text ın vıew ıs constructed thus—'O-saha-Bhesaȷȷenam Paḍılābhemānā bahūhın Sīlawwaya-gūṇa weramaṇa-Paććakhāna Posahowa-wāsehın ahāparıggahı-e-hın tawokamméhın appāṇam bhāwemānā wıharantı' In sūtra 2/1, ın all the specımens, the text ıs sārakallāṇa Jāwa kewa-ın' but 'Jāwa' serves no purpose here. On the basıs of 8/217 of the Bhagwatı as weīl as the first stenza of the Praȷnāpanā here the text ıs ascertaıned to be 'Jāwatı, ınstead of 'Jāwa'

In many ınstances, the meanıng does not change by an alteratıon of letter but dıfficulty arıses ın understandıng the meanıng and sometımes ıt changes too In Sūtra 6/90, the readıng ıs 'hawwın' ; and 'hetṭhın' as well as 'hıtthın' the two recensıons are also found. The commentator Abhayadeva Sūrı has gıven the meanıng as 'Sama' there (See the commentary-leaf 271). In the sthānānga Sūtra (143), on the same topıc, the readıng ıs as, 'hıtṭhın' Abhaya-deva Sūrı has gıveṇ ıts meanıng there as 'below the Brahma-loka'. (See the Sthānānga-vrıttı leaf 410)

In same places the varıent readıngs occur due to the mıs-understandıng of the transcrıber and dıfference ın characters ın scrıpts In Sūtra 9/195, the readıng ıs as 'Odharémānī-odharémaṇī'. In some specımens thıs readıng ıs found ın the form of 'uwadharemāṇīo-uwadharemānīo'. In one copy, thıs readıng ıs changed ınto 'uwarı-dhare-māṇīo-uwarı-dhare-maṇīo'.

A few examples of recensıons have been cıted here to show that manuscrıpts or only one partıcular copy cannot be taken as the basıs ın the redemptıon of the text It can be redeemed only on the basıs of varıous Āgamas, theır commentarıes and consıstency of theır meanıng.

The problem of abridgement and redemption of the text

It ıs a task to lay down authentıcally the method of abrıdgement adopted by Devardhıganı at the tıme of wrıtıng the Āgama Sūtras. And, it ıs a task because many Āgamadharas have abrıdged the Āgama-text ın later perıods Probably, same transcrıbers too, for the sake of convenıence of transcrıbıng, have abrıdged the text

In the abrıdged text of sūtra 13/25, the dewoddeśaka of the second Śataka has been referred to ındıcate the kınds of Bhawanpatı Dewas etc , but the full text ıs not there (2/117, page 111) and the sthānpada of the Praȷnāpnā has been referred to. Likewıse, ın the abrıdged text of Sūtra 16/33, the thırd

Śataka (Sūtra 27, page 130) has been referred to but the full text is not there. It is indicated there to refer to 'Rayapasena-ima' sutra.

The abridged text of Sūtra 16/71 refers to the chapter of 'Udrāyana (13/117, page 614) only not to find the full text there In the same way 16/121, 18/56 and 18/77 indicate regarding the full text, but it is not found at the places referred to

On the basis of these references, it is inferred that the texts, at the places referred to, were complete at the time of their abridgement. But after that, some Anuyogadhara Ācharya abridged those full texts also. The words 'Jāwa', 'Jahā' etc have been used for abridgement.

In some instances, the use of 'Jāwa' is more or less unnecessary. It is either due to negligence on the part of the transcriber or has been written as usual without discernment The transcribers have taken plenty of freedom in the use of 'Jāwa' If someone transcribed 'Pāwaphala Jāwa Kajjanti, the other has written it as 'Pāwaphala virvāga Jāwa Kajjati'. Along with the short readings even such as 'winda' (7/196), 'Payoga' (8/17) 'Sahassa' (16/103) the word 'Jāwa' has been added. The abridgements of the text, therefore, seem to have been done from time to time by the scribes.

The Āgama under review has two main Vaćnās, abridged and full. The length of the abridged version of the work is regarded to be a total of 15751 Anuṣtupa Ślokas The extent of the full version of the work is regarded to be a total of one lakh and a quarter Anuṣtupa Ślokas Abhayadeva Sūri has written his commentary on the basis of the abridged version of this Āgama In editing the text, we have, as far as needed, completed the texts introduced by the words 'Jāwa' etc , resulting the total length of the work to a measure of 19319 Anustupa Ślokas and 16 letters more.

Change of Word and Formative

1/49	Nigama	Niyama	(Tā)
1/224	Appiyā	Appitā	(Ka)
1/224	Etesin	Tetesin	(Ka, Tā, Ma)
1/237	Wai	Wati	(Tā)
1/239	Wai.	Wayī	(Tā)
1/245	Māyo	Māo	(Tā)
1/273	Poyantam	Podantam	(Ka, Tā, Ba, Ma, Sa)
1/276	Kajjai	Kijjai	(Ba, Sa)
1/281	Pāṇā-i-Wāya	Pāṇāyawāya	(Sa)

1/281	Nera-ı-yaṇam	Neratıyānam (A, Ba, Sa)
1/298/2	Uwa Ogé	Owa oge (Tā)
1/315	Ahe	Adhe (Tā)
1/354	Karejja	Karıjja (Ka) Karejjā (Sa)
1/357	Duhı-é	Dukkhı-e (Kā, Tā, Ma)
1/357	Dugga ndhe	Dugandhe (A, Ma, Sa)
1/363	Ārıyam	Yarıyam (Ka, Tā)
1/364	ća-u	ćatu (Tā)
1/365	Pa-O-sıā	Pāyosıā (A, ba)
1/370	Saya	Sata (Tā)
1/371	Sandhıjjamāṇe	Sandhejja. māṇe (Tā)
1/371	Nısıtthe	Nısatthe (Ka, Tā)
1/371	Kā-ı-ya-e	Kātıyā-e (Tā)
1/385	Pāṇā-ı-wāya	Pāṇāyawāyao (Ba, Sa)
1/389	Hṛıssı	Hussı (Ba); Hrıswı (Sa), Hassı (Ka)
1/415	Jahā	Jadh ā (A, Ba, Sa)
1/424	Sāmā-ı-yassa	Sāmātıyassa (Tā)
1/425	Ja-ı	Jatı (A, Ka, Ba, Ma, Sa)
1/434	Kıwanassa	Kıwınassa (Tā)
2/26	Māgahā	Māgadhā (Tā)
2/41	Vıyadda bhoī	Vıyaddabhotī (A, Tā, Bā, Ma, Sa)
2/57	Ṣāmā-i-yama-ı yāın	Sāmā-ı-mādīy-ātım (Ka, Ba) Sāmātıyamā-tıyāın (Sa)
2/66	Dhamayıo	Dhawaṇı (Ka, Tā, Ba, Ma)
2/66	Rayanīye	Ratnīye (Tā)
2/68	Ārūhe-ı	Ārūbhe-ı (Ka, Ma)
2/68	Khā-ıma-Sāımam	Khatımā-Sāti-mam (Ba, Sa)
2/68	Sayamewa	Ṣatmewa (Tā)
2/94	Awanguya o	Awanguta o (Ma)
2/94	Khā-ıma sā-ı-meṇam	Khātıma-Sātimeṇam (Ba, Sa)

3/4	Ayameyārūwe	Atametārūwe	(Tā)
3/21	Isāne	Nīsaṇe	(Tā)
3/25	Moya-o	Motāto	(Ka, Tā)
3/33	Khā-ıma Sā-imena	Khātim-Sāti-menam	(Ba,Sa)
3/112	Sayanıjjā o	Satanıjjā o	(Tā)
3/112	Nıwatım	Nıpatım	(Tā)
3/143	Weyati	Wedatı	(Tā)
3/148	Samaya o	Samata o	(Tā)
5/3	'Padına'	'Padına'	(Tā, Ma)
5/60	Ā-u-e	Ā-u-ge	(Tā)
5/79	Rayaharana māyā-e	Rataharana-māta-e	(Tā)
5/82	Weyāwaḍıyam	Wedāwadıyam	(Ba, ma)
5/110	Samayansı	Samatansı	(Tā)
5/139	'Lo-ı-ya'	'Lo-tı-ya'	(A, Sa)
6/63	Sakasā-ī-hın	Sakasādīhin	(Tā)
6/63	Sajogī	Sajotı	(Tā)
6/79	Nāgo	Nā-o	(Tā, ma)
6/90	Kanharātīo	Kanharāyīto	(Ba)
6/166	Kalagam	Kalatam	(Ka)
7/176	o Jaya o	o Jata o	(Ba)
7/213	Ayameyākūwe	Atametākūwe	(Tā)
8/248	Anuppadāyawwe	Anuppatātawwe	(Tā)
8/315	Goyam	Godam	(Ba)
8/347	Anādīyā o	Aṇātīta	(Tā)
8/420	Sātāṇayāe	Sādaṇatāe	(Ka, Ba, Ma)
8/431	Issarıyao	Dıssarıya o	(Ma)
8/431	Issarıya	Nısṣarıya	(Ma)
9/43	Sakasāi	Sakasādı	(A, Tā)
9/94	Ahı-o	Ahıto (Ka),	Adhıto (Tā)
9/174	Maya	Mada o (Tā)	Mata o (ba)
9/169	Sawaṇayāe	Samanayae	(A)
11/133	Dhūwa	Dhūma	(Tā)
11/134	Nīwa	Nīma	(Tā, Ba)
11/142	Pa-u-ma-Sara	Padumasara	(Tā)
16/113	Niyamam	Nıtamam	(Ba)
17/38	ćyaṇa	cyana	(Ta, Ba)

18/100	Mayımıććha o	Madımīććha o	(Ba)
19/85	Jatı ındıyānı	Jadındıyānı	(Tā)
30/22	Sajogī	Sajotī	(Kh)

Manuscripts used .

(A) Bhagawatı-vrıttı (Panćapathī) Manuscrıpt wıth orıgınal Text.

This manuscrıpt ıs from the Gadhaıya Lıbrary, Sardarshahr It contaıns 189 leaves and 278 pages Each leaf ıs 13½" ın length and 4¾" ın wıdth There are 1 to 23 lınes of the orıgınal text on each leaf and each lıne has 80—85 letters The copy has been prepared ın a beautıful and artıstıc manner. There ıs a 'Wāwaṛı' (hollow space) also ın the centre The year of the transcrıptıon has not been gıven It ıs estımatedly wrıtten ın the 15th-16th century.

(Ka) *Bhagwatı Text* (*Manuscrıpt*)

Thıs copy ıs from the Poonamchand Budhamal Dūdhorıa, Ćhapar lıbrary It has 333 leaves and 666 pages Each leaf ıs 10½" long and 4½". wıde There are 15 lınes on each leaf and each lıne has 52-55 letters. The copy ıs a beautıful and artıstıc one. There are ıntermıtant Pāıs (full-stops) ın red ınk and wāwaṛı (hollow space) It dates back probably to the 16th ceuntry.

(kha) *The text on the palm-leaf* (*Manuscrıpt*)

Thıs manuscrıpt has been receıved from Madan Chand jı Gothı, Sardar Shahr It belongs to Jaısalmer Lıbrary and ıs a photo-prınt of the orıgınal wrıtten on Tāla Patra It has 422 leaves and 844 pages Every page contaıns 3 to 6 lınes and there are 130-140 letters ın each lıne The concludıng eulogy has been wrıtten as || ćha || Mangalam Mahā śrī || || ćha ćha || ćha || Rā"

The year of the transcrıptıon has not been gıven but estımatedly ıt should be of the 12th century.

(Tā) *The text of the Palm-leaf* (*Manuscrıpt*)

Thıs manuscrıpt belongs to Jaısalmer Lıbrary and ıs a photo-prınt of the Scrıpt wrıtten on the Talpatra. Thıs, too, has been receıved from Madan Chand jı Gothı of Sardar Shahr. It has 348 leaves and 696 pages. Each leaf has 5 to 9 lınes and there are 130-140 letters ın each lıne The last leaf ıs ıllustrated. The concludıng eulogy reads as follows .—

|| ćha || Bhagwatı Samattā || ćha || || ćha || || ćha || Sambat 1235 Vıśākha-wad ekādasyām gurau aparāhṇe lekhaka -wana ćanḍena lıkhıtam"

(Ba) *The text of Bhagawati (Manuscript)*

This manuscript belongs to Terapanthi Sabha, Sardar Shahr. It has 478 leaves and 956 pages Each leaf is 10½" long and 4½" wide There are 13 lines on each leaf and each line contains 38-42 letters The copy has been attractively and artistically prepared. There are three 'Wawadīs' and red lines in it 'Hartal' (orpiment) has been used The concluding eulogy is not given in it and hence the year of script is unknown Estimatedly, it dates back to the 16th century

(Ma) *Bhagwati Sutra Text (Manuscript)*

This manuscript is from the Gadhaiyā Library, Sardar Shahr. It has 482 leaves and 964 pages Each leaf is 10¼" long and 4½" wide. Each leaf has 13 lines on it and there are 40-45 letters in each line. There are intermittant 'Pāis' (full stops) in red ink and Wāwadīs (hollow spaces).

The year of the script has not been given in the end but estimatedly it dates back to the 16th century The concluding eulogy reads as follows :—

ćha || Granthāgram 15775 || ćha || ćha || || ćha || Srī || ćha || Srī Kalyānamastu || Śubham Bhawatu || ćha || Śri || Śri || ćha || ćha ||

The script has notes in Sanskrit in many places.

(Sa) *Bhagwati Sutra (Tripathi)*

Known as Kesar Bhagwati, this manuscript is from the Terapanthi Bhandar, Ladnun. It has 602 leaves and 1204 pages The text is in the middle of the leaf while the 'vritti' has been given obove and below the text. This is a beautiful and sufficiently correct copy. Some reader, taking a printed copy as authentic has used 'Hartal' in many places and has tried to correct the text of this manuscript Wherever it has been done so, the correct text has become incorrect. Each leaf of it has 4 to 15 lines of the text on it and each line contains 45-53 letters

The concluding eulogy reads as follows :—

Srī Bhagwati Sūtram Sampūrṇam || ćha || Srī Vivāha Pannatti Pañćamam angam Sammattam || Śubham Bhavatu || Kalayanamastu. Granthāgram 15675 Ubhaya Milane Gran 34291 || Srī || Likhatayati Dāhāmallah Śrī Nāgore Madhye Sam. 1848 Māha Śu. 15 ||

Wri, (Wṛipā) Printed

Publisher : Śrīmatī Agamodaya Samiti.

ACKNOWLEDGEMENTS

The 'Vāćnā' has a very ancient history in the Jaina tradition There had been four 'Vāćnās' of the Āgamas to date in different periods in the last fifteen centuries There was no well planned Āgama-Vāćnā after Dewardhigani The Āgamas, written in his Vāćnā-time, have become very much disordered during the long past period A well planned 'Vaćnā' was the need of the day again to set them in order Āćārya Tulsī had tried for a well planned congreagational Vaćnā but it could not materialize Ultimately, we reached the conclusion that if our 'Vāćnā' is investigative, researching, full of a well balanced view and diligence, it will itself become congraegational. With this decision in view, our work on this Āgama-Vāćnā began

Āćārya Tulsī is the Head of this Vāćan Vāćān means to teach There are many aspects of teaching in our 'Vāćnā', i e , redemption of the text, translation, critical study etc etc. In all such activities, we have received active participation, able guidance and inspiration from the Āćarya. This is the source of strength below this great task.

Only the expression of gratitude to him will not suffice Better it is that I must achieve the grace of his blessings for future work and prove myself more worthy of my duties

In the editing of the present Āgama Muni Sudarśanji, Madhukarji, Hiralalji have given constant help to me in various ways Apart from their valuable assistance, we had co-operation from Muni Śri Kanmalji, Ćhatramalji, Amolakćandji, Dinkarji, Poonamćandji, Rajkaranji, Kanhaiyā Lalji, Tārāćandji, Balćandji, Vijairajji, Manilalji, Mahendra Kumarji (second) Sampatmalji (Doongargarh), Śantikumarji, Mohanlalji (Śārdūl) and Manna lalji Borad The work of editing the text was started on the 9th dark-moon day in the month of Paush in the year 2029 of the Vikrama Era (28th December, 1972), in Sardār Śhahr (Rajasthan) and was completed in Delhi on the 11th day of bright-moon in Phālguna in the year 2030 of the Vikrama Era (4th March, 1974).

Muni Sudarśanji, Madhukarji, Hīralalji and Dulaharajji took great pains in critically examining the press-copy. The counting of the total syllables of the work has been prepared by Muni Mohanlalji (Āmeṭ).

Valueing their contribution to the accomplishment of the work, I express my gratitude to them individually.

On this occasion, the erudite Āgama scholar and active participant in editing of the Āgama, late Śrī Madan ćandji Gothi is very much missed

Had he been alive, he would have been highly contented to see this work accomplished

The Managing editor of the Āgama Śrī Śrī Chānd ji Rampuriā has been devoted to the task of the Āgama from the beginning He has dedicated himself to the sternous work of making the Āgama Literature popular and handy to the public after giving up his well established practice of an advocate He has highly shown his faith and dedication in this publication of the'Āgama Suttani'

Sri Khem Chand ji Sethiā, President of the Jain Viśwa Bhārati and his co-workers and the staff of the Ādarśa Sahitya Sangha have worked diligently in collecting the material utilized in the edition of the text.

Accounting the order of contribution to the same activity of the persons marching towards one and the same goal is nothing more than a formality. Actually, it is a solemn duty of us all and this is what we all have performed.

Anuvrata Vihar
New Delhi

Muni Nathmal

भगवई विसयाणुक्कम

दुस्समदुस्समा-पद-११७, सवुडस्स किरिया-पद १२५, काम-भोग-पदं १२७, दुव्वलगरीरस्स भोगपरिच्चाय-पद १४६, अकामनिकरण-वेदणा-पद १५०, पकामनिकरण-वेदणा-पद १५३, मोक्ख-पद १५६, हत्थि-कुथु-जीव-समाणत्त-पद १५८, सुह-दुक्ख-पद १६०, दसविहसण्णा-पद १६१, नेरइयाण दसविहवेदणा-पद १६२, हत्थि-कुथूण अपच्चक्खाण-किरिया-पद १६३, अहाकम्मादि-पद १६५, असवुड-अणगारस्स विउव्वणा-पदं १६७, महासिलाकटगसगाम-पद १७३, रहमुसलसगाम-पद १८२, वरुण-नागनत्तुय-पद १९२, वरुणनागनत्तुय-मित्त-पद २०४, कालोदाइ-पभितीण पचत्थिकाए सदेह-पद २१२, कालोदाइस्स समाहाणपुव्व पव्वज्जा-पद २१७, कालोदाइस्स कम्मादिविसए परिण-पद २२२।

•

अट्ठमं सतं — सू० १-५०४ — पृ० ३१५-३९७

पोग्गलपरिणति-पद १, पयोगपरिणति-पद २, पज्जत्तापज्जत्तं पडुच्च पयोगपरिणति-पदं १८, सरीर पडुच्च पयोगपरिणति-पद २७, इदिय पडुच्च पयोगपरिणति-पदं ३२, सरीर इदिय च पडुच्च पयोगपरिणति-पद ३५, वण्णादि पडुच्च पयोगपरिणति-पद ३६, सरीर वण्णादिं च पडुच्च पयोगपरिणति-पद ३७, इदिय वण्णादिं च पडुच्च पयोगपरिणति-पद ३८, सरीर इदिय वण्णादिं च पडुच्च पयोगपरिणति-पदं ३९, मीसपरिणति-पद ४०, वीससापरिणति-पद ४२, एग दव्व पडुच्च पोग्गलपरिणति-पद ४३, पयोगपरिणति-पद ४४, मणपयोगपरिणति-पद ४५, वइपयोगपरिणति-पद ४८, कायपयोगपरिणति-पदं ४९, मीसपरिणति-पद ६५, वीससापरिणति-पद ६७, दोण्णि दव्वाइ पडुच्च पोग्गलपरिणति-पद ७३, तिण्णि दव्वाइ पडुच्च पोग्गलपरिणति-पद ७९, चत्तारि दव्वाइ पडुच्च पोग्गलपरिणति-पद ८२, आसीविस-पद ८६, छउमत्थ-केवलि-पद ९६, नाण-पद ९७, जीवाण नाणि-अण्णाणित्त-पद १०४, अतरालगति पडुच्च १११, इदियं पडुच्च—११५, काय पडुच्च—११८, सुहुम-वादर पडुच्च—१२०, पज्जत्तापज्जत्त पडुच्च—१२३, भवत्थ पडुच्च—१३१, भवसिद्धियाभवसिद्धिय पडुच्च—१३५, सण्णि-असण्णि पडुच्च—१३८, लद्धि-पद १३९, नाणलद्धि पडुच्च-नाणि-अण्णाणित्त-पद १४७, दसण पडुच्च—१५९, चरित्त पडुच्च—१६१, चरित्ताचरित्त पडुच्च—१६२, नाणाइ पडुच्च—१६४, वालाइवीरिय पडुच्च—१६४, इदियं पडुच्च—१६६, उवउत्ताण नाणि-अण्णाणित्त-पद १७२, जोग पडुच्च—१७६, लेस्स पडुच्च—१७७, कसाय पडुच्च—१७९, वेद पडुच्च—१८१, आहारग पडुच्च—१८२, नाणाण विसय-पद १८४, नाणीण सठिइ-पद १९२, नाणीण अतर-पद २००, नाणीण अप्पावहुयत्त-पद २०५, नाणपज्जव-पद २०८ नाणपज्जवाण अप्पावहुयत्त-पदं २१२, वणस्सइ-पद २१६, जीवपएसाण अतर-पद २२२, चरिम-अचरिम-पदं २२४, किरिया-पद २२८, आजीवियसदब्भे समणोवासय-पद २३०, समणोवासगकयस्स दाणस्स परिणाम-पद २४५, उवनिमतितपिंडादि परिभोगविहि-पद २४८, आलोयणाभिमुहस्स आराहय-पद २५१,

•

•

•

सत्ति-पदं ११३, सक्कस्स सत्ति-पद ११५, जभगदेव-पद ११७, सरूवि-सकम्मलस्सं-पद १२३, अत्ताणत्त-पोग्गल-पद १२६, इट्ठाणिट्ठादि-पोग्गल-पद १२६ देवाण भासासहस्स-पद १३०, सूरिय-पद १३२ समणाण तेयलेस्सा-पद १३६ केवलि-पद १३८ । •

पन्नरसमं सतं सू० १-१६० पृ०-६५४-७०६

गोसालग-पद १, भगवओ विहार-पद २०, पढम-मासखमण-पद २२, दोच्च-मासखमण-पद ३० तच्च-मासखमण-पद ३७, चउत्थ-मासखमण-पद ४४, गोसालस्स सिस्सरूवेण अगीकरण-पद ५३, तिलथभय-पद ५७, वेसियायण-वालतवस्सि-पद ६०, तिलथभय-निप्फत्तीए गोसालस्स अवक्कमण-पद ७२, गोसालस्स तेयलेस्सुप्पत्ति-पद ७६, गोसालस्स पुव्वकहा-उवसहार-पद ७७, गोसालस्स अमरिस-पद ७९, गोसालस्स आणदथेरसमवखे अवकोसपदसण-पद ८२, आणदथेरस्स भगवओ निवेदण-पद ९७, आणदथेरेण गोयमाइण अणुण्णवण-पद ९९, गोसालस्स भगवत पइ अक्कोसपुव्व ससिद्धतनिरूवण-पद १०१, भगवया गोसालग-वयणस्स पडियार-पद १०२, गोसालस्स पुणरवकोस-पद १०३, गोसालेण सव्वाणुभूतिस्स भासरासिकरण-पद १०४, गोसालेण सुनक्खत्तस्स परितावण-पद १०७, गोसालेण भगवओ वहाए तेयनिसिरण-पद ११०, सावत्थिए जणपवाद-पद ११५, गोसालेण समणाण पसिणवागरण-पद ११६, गोसालस्स सघभेद-पद ११९, गोसालस्स पडिगमण-पद १२०, गोसालेण नाणासिद्धत-परूवण-पदं १२१, अयपुल-आजीविओवासय-पद १२८, गोसालस्स अप्पणो नीहरण-निद्देस-पद] १३९, गोसालस्स परिणाम-परिवत्तणपुव्व कालधम्म-पद १४१, गोसालस्स नीहरण-पद १४२, भगवओ रोगायक पाउब्भवण-पद १४३, सीहस्स माणसियदुक्ख-पद १४७, भगवया सीहस्स आसासण-पद १४९, सीहेण रेवईए भेसज्जाणयण-पदं १५३, भगवओ आरोग्ग-पद १६२, सव्वाणुभूतिस्स उववाय-पद १६४, सुनक्खत्तस्स उववाय-पद १६५, गोसालस्स भवब्भमण-पद १६६ । •

सोलसम सतं सू० १-१३४ पृ० ७१०-७३७

वाउयाय-पद १, अगणिकाय-पद ५, कतिकिरिय-पद ६, अधिकरणी-अधिकरण-पद ८, जीवाण जरा-सोग-पद २८, सक्कस्स ओग्गह-अणुजाणणा-पद ३३, सक्क-सवधि-वागरण-पद ३५, चेय-अचेय-कड-कम्म-पद ४१, कम्म-पद ४४, असिया-छेदणे वेज्जस्स किरिया-पद ४७, नेरइयाण निज्जरा-पद ५१, सक्कस्स उक्खित्तपसिणवागरण-पद ५४, गगदत्तदेवस्स सदब्भे परिणममाण-परिणय-पद ५५, गगदत्तदेवस्स अप्पविसए पसिण-पद ५९, गंगदत्तदेवेण नट्टउवदसण-पद ६१, गगदत्तदेवस्स पुव्वभव-पद ६५, सुविण-पद ७६, भगवओ महासुमिण-दसण-पद ९१, सुविण-फल-पद ९२, गध-पोग्गल-पद १०६, लोगस्स चरिमते जीवाजीवादिमग्गणा-पद ११०, परमाणुपोग्गलस्स गति-पद ११६, किरिया-पद

संकेत निर्देशिका

● ० ये दोनों बिन्दु पाठपूर्ति के द्योतक हैं। पाठपूर्ति के प्रारंभ में भरा बिन्दु [●] और उसके समापन में रिक्त बिन्दु [०] रखा गया है। देखें—पृष्ठ ५ सूत्र ११।

(?) कोष्ठकवर्ती प्रश्नचिन्ह [?] आदर्शों में अप्राप्त किन्तु आवश्यक पाठ के अस्तित्व का सूचक है। देखें—पृष्ठ ७४ सूत्र ४३९।

[ ] आदर्शों में प्राप्त किन्तु प्रस्तुत प्रकरण में अनावश्यक व्याख्यांश पाठ को कोष्ठक में रखा गया है। देखें—पृष्ठ १०५ सूत्र ९७।

' ' यह दो या उससे अधिक शब्दों के स्थान में पाठान्तर होने का सूचक है। देखें—पृष्ठ ३। 'वण्णओ' व 'जाव' शब्द के टिप्पण में उसके पूर्ति-स्थल का निर्देश है। देखें—पृष्ठ ३ सूत्र ९ और पृष्ठ ७ सूत्र ७।

× क्रॉस (×) पाठ न होने का द्योतक है। देखें—पृष्ठ ३ टिप्पण १०।

० पाठ के पूर्व या अन्त में खाली बिन्दु (०) अपूर्ण पाठ का द्योतक है। देखें—पृष्ठ ३ टिप्पण २, पृष्ठ ४ टिप्पण ७।

'जहा' आदि पर टिप्पण में दिए गए सूत्रांक उसकी पूर्ति के सूचक हैं। देखें—पृष्ठ १६ टिप्पण ५।

अ, क, ख, ता, ब, म, स—देखें—सम्पादकीय में 'प्रति परिचय' शीर्षक।

क्व० क्वचित् प्रयुक्तादर्श।

सं० पा०	संक्षिप्त पाठ का सूचक है। देखें—पृष्ठ ५ टिप्पण १०।
वृपा	वृत्ति-सम्मत पाठान्तर। देखें—पृष्ठ १५ टिप्पण ४।
वृ	वृत्ति का सूचक है। देखें—पृष्ठ १५ टिप्पण ५।
पू०	पूर्णपाठार्थं द्रष्टव्यम्। देखें—पृष्ठ ४ टिप्पण १६।
पू० प०	पूरक-पाठ परिशिष्ट। देखें—पृष्ठ १२ टिप्पण ४।

अं०	अंतगडदसाओ	**दसा०**	दसासुयक्खधो
अ०	अणुओगदाराइं	**ना०**	नायाधम्मकहाओ
उत्त०	उत्तरज्झयणाणि	**प०**	पण्णवणा
उ०	उवंगा	**भ०**	भगवई
उवा०	उवासगदसाओ	**राय०**	रायपसेणइय
ओ०	ओवाइय	**व०**	ववहारो
जं०	जंबुद्दीवपण्णत्ती		
जी०	जीवाजीवाभिगम		
ठा०	ठाणं		

—०—

भगवई
विआहपण्णत्ती

पढमं सतं

पढमो उद्देसो

मंगल-पद

१ नमो[1] अरहंताणं[2],
नमो सिद्धाणं,
नमो आयरियाणं[3],
नमो उवज्झायाणं,
नमो सव्वसाहूणं[4] ॥

२ नमो बंभीए[5] लिवीए ॥

संगहणी-गाहा

रायगिह १-चलण २-दुक्खे, ३-कंखपओसे य ४-पगइ ५-पुढवीओ ।
६-जावंते ७-नेरइए, ८-बाले[6] ९-गुरुए य १०-चलणाओ ॥१॥

३ नमो सुयस्स ॥

उक्खेव-पदं

४ तेणं कालेणं तेणं समएणं रायगिहे नामं[7] नयरे होत्था—वण्णओ[8] ॥

५ तस्स णं रायगिहस्स नगरस्स बहिया[9] उत्तरपुरत्थिमे दिसीभागे गुणसिलए नामं चेइए होत्था ॥

६ 'सेणिए राया, चिल्लणा देवी'[10] ॥

---

१ णमो (क) ।
२. अरिहं° (अ, क, वृपा), अरुहं° (वृपा) ।
३ आरिआण (क) ।
४. लोए सव्व° (अ, क, ता, व, म, वृपा) ।
५. वंभीए (ता, व) ।
६ पाले (ता) ।
७. णाम (क) ।
८ ओ० सू० १ ।
९. वहिं (ता) ।
१० × (ता, व) ।

७ तेण कालेणं तेण समएण समणे भगवं महावीरे आइगरे तित्थगरे सहसबुद्धे[१] पुरिसुत्तमे[२] पुरिससीहे[३] पुरिसवरपोंडरीए[४] पुरिसवरगंधहत्थी[५] लोगुत्तमे[६] लोगनाहे[७] लोगपदीवे[८] लोगपज्जोयगरे[९] अभयदए चक्खुदए मग्गदए सरणदए[१०] धम्मदेसए[११] धम्मसारही धम्मवरचाउरंतचक्कवट्टी अप्पडिहयवरनाणदंसणधरे वियट्टछउमे जिणे जाणए बुद्धे बोहए मुत्ते[१२] मोयए सव्वण्णू सव्वदरिसी[१३] सिवमयलमरुय-मणंतमक्खयमव्वाबाह[१४] सिद्धिगतिनामधेयं ठाणं संपाविउकामे जाव[१५] •पुव्वाणु-पुव्वि चरमाणे गामाणुगामं दूइज्जमाणे सुहंसुहेणं विहरमाणे जेणेव रायगिहे नगरे जेणेव गुणसिलए चेइए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता अहापडिरूवं ओग्गहं ओगिण्हइ, ओगिण्हित्ता संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे विहरइ° ॥

८ परिसा निग्गया । धम्मो कहिओ । पडिगया परिसा[१६] ॥

९ तेणं कालेणं तेणं समएणं समणस्स भगवओ महावीरस्स जेट्ठे अंतेवासी इंदभूती नामं अणगारे 'गोयमसगोत्ते णं'[१७] सत्तुस्सेहे समचउरंससंठाणसंठिए वज्जरिसभ-नारायसंघयणे[१८] कणगपुलगनिघसपम्हगोरे उग्गतवे दित्ततवे तत्ततवे[१९] महातवे ओराले[२०] घोरे घोरगुणे घोरतवस्सी घोरबंभचेरवासी 'उच्छूढसरीरे संखित्तविउल-तेयलेस्से'[२१] चोद्दसपुव्वी चउनाणोवगए सव्वक्खरसन्निवाती समणस्स भगवओ महावीरस्स अदूरसामंते उड्ढंजाणू[२२] अहोसिरे झाणकोट्ठोवगए संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे विहरइ ॥

१० तते णं से भगवं गोयमे जायसड्ढे जायसंसए जायकोउहल्ले उप्पन्नसड्ढे उप्पन्न-संसए उप्पन्नकोउहल्ले संजायसड्ढे संजायसंसए संजायकोउहल्ले समुप्पन्नसड्ढे

---

१. सय° (अ) ।
२. पुरिसोत्तमे (अ), पुरुसुत्तमे (व) ।
३. पुरुससीहे (ता) सर्वत्र ।
४ पुरुसवरपुंडरीए (ता) ।
५ °हत्थीए (अ) ।
६ लोगोत्तमे (अ, व) ।
७. °नाहे लोगहिए (अ) ।
८ °पईवे (ता, क) ।
९ °करे (क) ।
१० °दए बोहिदए (अ, ता) ।
११ धम्मदए धम्मदेसए धम्मनायगे (अ), धम्मदए धम्मदेसए (क, ता, व), धम्म-दएत्ति पाठान्तरम् (वृ०) ।
१२ मुक्के (क) ।
१३. सव्वदसी (ता) ।
१४ °बाहमपुणरावत्तयं (अ, व); सिवमचल-मरुज° (क) ।
१५ सं० पा०—जाव समोसरणं । ओ० सू० १९-५१ ।
१६ पू०—ओ० सू० ५२-८१ ।
१७ गोयमे गोत्तेणं (अ, ता, व), गोयम-सगुत्ते णं (क), गोयमगोत्तेणं (म) ।
१८ °रिसह° (क, म) ।
१९ तत्ततवे घोरतवे (क) ।
२०. उराले (अ, ता, व, म, वृपा) ।
२१. °तेयलेसे (अ), °तेअलेस्से (क); °तेउलेस्से (म), मूलटीकाकृता तु 'उच्छूढ-सरीरसंखित्तविउलतेयलेस'त्ति कर्मधारयं कृत्वा व्याख्यातमिति (वृ) ।
२२ उड्ढजाणू (क, ता), उड्ढजाणु (म) ।

समुप्पन्नससए समुप्पन्नकोउहल्ले उट्ठाए उट्ठेति, उट्ठेत्ता जेणेव समणे भगव महावीरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता समण भगव महावीर तिक्खुत्तो आयाहिण-पयाहिण करेइ, करेत्ता वदइ नमसइ, वदित्ता नमसित्ता णच्चासन्ने णातिदूरे[1] सुस्सूसमाणे णमसमाणे अभिमुहे विणएण पजलियडे[2] पज्जुवासमाणे एव वयासी[3]—

चलमाण-पदं

११ से नूण भते ! चलमाणे चलिए ? उदीरिज्जमाणे उदीरिए ? वेदिज्जमाणे[4] वेदिए ? पहिज्जमाणे पहीणे[5] ? छिज्जमाणे[6] छिण्णे ? भिज्जमाणे भिण्णे ? 'दज्झमाणे दड्ढे'[7] ? मिज्जमाणे[8] मए[9] ? निज्जरिज्जमाणे निज्जिण्णे ?

हता गोयमा ! चलमाणे चलिए[10]। °उदीरिज्जमाणे उदीरिए। वेदिज्जमाणे वेदिए। पहिज्जमाणे पहीणे। छिज्जमाणे छिण्णे। भिज्जमाणे भिण्णे। दज्झमाणे दड्ढे। मिज्जमाणे मए।° निज्जरिज्जमाणे निज्जिण्णे ।।

१२ एए ण भते ! नव पदा[11] कि एगट्ठा नाणाघोसा नाणावजणा ? उदाहु नाणट्ठा नाणाघोसा नाणावजणा ?

गोयमा ! चलमाणे चलिए, उदीरिज्जमाणे उदीरिए, वेदिज्जमाणे वेदिए, पहिज्जमाणे पहीणे[12]—एए ण चत्तारि पदा एगट्ठा नाणाघोसा नाणावजणा उप्पण्णपक्खस्स ।

छिज्जमाणे छिण्णे, भिज्जमाणे भिण्णे, दज्झमाणे दड्ढे, मिज्जमाणे मए, निज्जरिज्जमाणे निज्जिण्णे—एए ण पच पदा नाणट्ठा नाणाघोसा नाणावजणा विगयपक्खस्स ।।

नेरइयाणं ठितिआदि-पद

१३ नेरइयाण भते ! केवइय[13] काल ठिती पण्णत्ता ?
गोयमा ! जहण्णेण दस वाससहस्साइ, उक्कोसेण तेत्तीस सागरोवमाइ ठिती पण्णत्ता ।।

---

१ णादिदूरे (क), णाइदूरे (ता, म)।
२ पजलिउडे (अ, क), पजलिपुडे (म)।
३ वयासि (ता), वदासी (म)।
४ विदिज्जमाणे (अ,व), वेतिज्जमाणे (क)।
५ पहिए (ता)।
६. छविज्जमाणे (अ)।
७ डज्झमाणे डड्ढे (ता)।
८ मेज्ज (अ, व), मिय (म)।
९ मडे (क), मिए (ता)।
१० स० पा०—चलिए जाव निज्जरिज्जमाणे।
११ पया (ता)।
१२ पहिए (अ, ता, ब, म)।
१३ केवईय (अ, क, ता), केवइ (व)।

१४ नेरइया ण भते ! केवइकालस्स आणमति वा ? पाणमति वा ? ऊससति वा ? णीससति वा ?
जहा उस्सासपदे[1] ॥

१५. नेरइया ण भते ! आहारट्ठी ?
हता गोयमा ! आहारट्ठी । जहा पण्णवणाए पढमए आहारुद्देसए[2] तहा भाणियव्व—

संगहणी-गाहा

ठिइ उस्सासाहारे, कि वाऽऽहारेति सव्वओ वावि ?
कतिभाग सव्वाणि व ? कीस व भुज्जो परिणमति ? ॥१॥

१६ नेरइयाण भते ! पुव्वाहारिया पोग्गला परिणया ?
आहारिया आहारिज्जमाणा पोग्गला परिणया ?
अणाहारिया आहारिज्जिस्समाणा[3] पोग्गला परिणया ?
अणाहारिया अणाहारिज्जिस्समाणा पोग्गला परिणया ?

गोयमा ! नेरइयाण पुव्वाहारिया पोग्गला परिणया ।
आहारिया आहारिज्जमाणा पोग्गला परिणया, परिणमति[4] य ।
अणाहारिया आहारिज्जिस्समाणा पोग्गला णो परिणया, परिणमिस्सति ।
अणाहारिया अणाहारिज्जिस्समाणा पोग्गला णो परिणया, णो परिणमिस्सति ॥

१७ नेरइयाण भते ! पुव्वाहारिया पोग्गला चिया ? पुच्छा—
जहा परिणया[5] तहा चियावि ॥

१८ एव—उवचिया, उदीरिया, वेइया, निज्जिण्णा ।

संगहणी-गाहा

परिणय 'चिया उवचिया'[6] उदीरिया[7] वेइया[8] य निज्जिण्णा ।
एक्केक्कम्मि पदम्मि,[9] चउव्विहा पोग्गला होंति[10] ॥१॥

---

१. प० ७ ।
२ प० २८।१ ।
३. आहारिज्जस्स० (क) ।
४ परिणमयति (ता) ।
५ भ० १।१६ ।
६ चिया य उवचिया (अ), चित उवचित (म)
७. उदीरिय (ता) ।
८ वेतिया (म) ।
९ पदमी (व) ।
१०. अतोग्रे 'ता' प्रतौ एतावानतिरिक्त: पाठो लभ्यते—
नेरइयाण भते ! पुव्वाहारिया पोग्गला निज्जिण्णा । तहेव ।

१६ नेरइया ण भते ! कइविहा पोग्गला भिज्जति ?
गोयमा ! कम्मदव्ववग्गणमहिकिच्च दुविहा पोग्गला भिज्जति, त जहा—अणू चेव, बादरा चेव ॥

२० नेरइया ण भते ! कइविहा पोग्गला चिज्जति ?
गोयमा ! आहारदव्ववग्गणमहिकिच्च[1] दुविहा पोग्गला चिज्जति, त जहा—अणू चेव, बादरा चेव ॥

२१ एव उवचिज्जति[2] ॥

२२ नेरइया ण भते ! कइविहे पोग्गले उदीरेति[3] ?
गोयमा ! कम्मदव्ववग्गणमहिकिच्च दुविहे पोग्गले उदीरेति, त जहा—अणू चेव, बादरा चेव ॥

२३ सेसावि एव चेव भाणियव्वा[4]—वेदेति, निज्जरेति ॥

२४ एव[5]—ओयट्टेसु[6], ओयट्टेति, ओयट्टिस्सति ।
सकामिसु, सकामेंति, सकामिस्सति ।
निहत्तिसु,[7] निहत्तेति, निहत्तिस्सति ।
निकाएसु, [8]निकायति, निकाइस्सति[8] ।

सगहणी-गाहा

भेदिया[9] चिया उवचिया, उदीरिया वेदिया य निज्जिण्णा ।
ओयट्टण सकामण, निहत्तण निकायणे तिविहकालो ॥१॥

२५ नेरइया ण भते ! जे पोग्गले तेयाकम्मत्ताए गेण्हति, ते किं तीतकालसमए गेण्हति ? पडुप्पन्नकालसमए गेण्हति ? अणागयकालसमए गेण्हति ?
गोयमा ! नो तीयकालसमए गेण्हति, पडुप्पन्नकालसमए गेण्हति, नो अणागयकालसमए गेण्हति ॥

२६ नेरइया ण भते ! जे पोग्गले तेयाकम्मत्ताए गहिए[10] उदीरेति, ते किं तीयकालसमयगहिए पोग्गले उदीरेति ? पडुप्पन्नकालसमए[11] घेप्पमाणे पोग्गले उदीरेति ? गहणसमयपुरक्खडे पोग्गले उदीरेति ?

---

१ °मभिकिच्च (अ, ब) ।
२ °ज्जति वि (ता) ।
३. उदीरति (क) ।
४. °यव्वा एव (अ, क, ता) ।
५ × (अ, क, व, म) ।
६ उय° (क, ता, म); अपवर्त्तनस्य चोपलक्षणत्वादुद्वर्त्तनमपीह दृश्यम् (वृ) ।
७. निव° (ता) सर्वत्र ।
८ अतोग्रे अ, क, व, म प्रतिपु एतावानतिरिक्त पाठो लभ्यते—
सव्वेसु वि कम्मदव्ववग्गणमहिकिच्च ।
९. भेतिय (क) ।
१० × (अ, व) ।
११. °समय (क, ता, व, म) ।

गोयमा ! तीयकालसमयगहिए पोग्गले उदीरेति, नो पडुप्पन्नकालसमए घेप्पमाणे पोग्गले उदीरेति, नो गहणसमयपुरक्खडे पोग्गले उदीरेति ॥

२७ एवं—वेदेति, निज्जरेति[1] ॥

२८ नेरइया णं भंते ! जीवाओ किं चलियं कम्मं बंधंति ? अचलियं कम्मं बंधंति ?

गोयमा ! नो चलियं कम्मं बंधंति, अचलियं कम्मं बंधंति ॥

२९ नेरइया णं भंते ! जीवाओ किं चलियं कम्मं उदीरेंति ? अचलियं कम्मं उदीरेंति ?

गोयमा ! नो चलियं कम्मं उदीरेंति, अचलियं कम्मं उदीरेंति ॥

३० एवं—वेदेंति, ओयट्टेंति, संकामेंति, निहत्तेंति[2], निकाएंति[3] ॥

३१. नेरइया णं भंते ! जीवाओ किं चलियं कम्मं निज्जरेंति ? अचलियं कम्मं निज्जरेंति ?

गोयमा ! चलियं कम्मं निज्जरेंति, नो अचलियं कम्मं निज्जरेंति ॥

संगहणी-गाहा

बंधोदयवेदोयट्टसंकमे[4] तह निहत्तणनिकाए ।
अचलिय-कम्मं तु भवे, चलियं जीवाउ निज्जरए[5] ॥१॥

३२ एवं[6] ठिई आहारो य भाणियव्वो । ठिती जहा—

---

१. निज्जरंति (ता, ब) ।

२. निवत्तेंति (ता) ।

३ अतोग्रे 'अ' प्रतौ एतावानतिरिक्तः पाठो लभ्यते—
सव्वेसु अचलियं नो चलियं ।
'ता' प्रतौ च—सव्वेसु नो चलियं अचलियं ।

४ °वट्ट° (अ), °व्वट्ट° (ता) ।

५ निज्जरिए (अ, ता, ब); निज्जरइ (क) ।

६ अत्र विस्तृता वाचनापि लभ्यते । तस्यां 'जहा नेरइयाणं' इत्यादि समर्पणपदानि लभ्यन्ते, किन्तु पूर्ववर्ति—नैरयिकपदे तानि न विद्यन्ते, तेन संक्षिप्तैव वाचना मूलपाठरूपेणादृता । विस्तृता चैवम्—
असुरकुमाराणं भंते ! केवइयं कालं ठिई पण्णत्ता ?
गोयमा ! जहण्णेणं दस वाससहस्साइं, उक्कोसेणं सातिरेगं सागरोवमं ॥
असुरकुमारा णं भंते ! केवइकालस्स आणमंति वा पाणमंति वा ? ऊससंति वा ? णीससंति वा ?
गोयमा ! जहण्णेणं सत्तण्हं थोवाणं, उक्कोसेणं साइरेगस्स पक्खस्स आणमंति वा, पाणमंति वा, ऊससंति वा, णीससंति वा,
असुरकुमाराणं भंते ! आहारट्ठी ?
हंता आहारट्ठी ।
असुरकुमाराणं भंते ! केवइकालस्स आहारट्ठे समुप्पज्जइ ?
गोयमा ! असुरकुमाराणं दुविहे आहारे पण्णत्ते, तं जहा—
आभोगनिव्वत्तिए य अणाभोगनिव्वत्तिए

ठितिपदे[1] तहा भाणियव्वा सव्वजीवाण। आहारो वि जहा पण्णवणाए पढमे आहारुद्देसए[2] तहा भाणियव्वो, एत्तो आढत्तो—नेरइया ण भते! आहारट्ठी? जाव

य। तत्थ ण जे से अणाभोगनिव्वत्तिए, से अणुसमय अविरहिए आहारट्ठे समुप्पज्जइ। तत्थ ण जे से आभोगनिव्वत्तिए, से जहण्णेण चउत्थभत्तस्स, उक्कोसेण साइरेगस्स वाससहस्सस्स आहारट्ठे समुप्पज्जइ।

असुरकुमारा ण भते! किमाहारमाहारेति?

गोयमा! दव्वओ अणतपएसियाइ दव्वाइ, खेत्तकालभावपण्णवणागमेण सेस जहा नेरइयाण जाव ते ण तेसि पोग्गला कीसत्ताए भुज्जो-भुज्जो परिणमति?

गोयमा! सोइदियत्ताए ५ सुरूवत्ताए सुवण्णत्ताए ४ इट्ठत्ताए ५ इच्छियत्ताए भिज्जियत्ताए उड्ढत्ताए, णो अहत्ताए सुहत्ताए, णो दुहत्ताए भुज्जो-भुज्जो परिणमति।

असुरकुमाराण पुव्वाहारिया पुग्गला परिणया? असुरकुमाराभिलावेण जहा नेरइयाण जाव नो अचलिय कम्म निज्जरति।

नागकुमाराण भते! केवइय काल ठिती पण्णत्ता?

गोयमा! जहण्णेण दस वाससहस्साइ, उक्कोसेण देसूणाइ दो पलिओवमाइ।

नागकुमारा ण भते! केवइकालस्स आणमति वा ४?

गोयमा! जहण्णेण सत्तण्ह थोवाण, उक्कोसेण मुहुत्तपुहुत्तस्स आणमति वा ४।

नागकुमारा ण भते! आहारट्ठी? हताआहारट्ठी।

नागकुमाराण भते! केवइकालस्स आहारट्ठे समुप्पज्जइ?

गोयमा! नागकुमाराण दुविहे आहारे पण्णत्ते, त जहा—आभोगनिव्वत्तिए य अणाभोगनिव्वत्तिए य। तत्थ ण जे से अणाभोगनिव्वत्तिए, से अणुसमयमविरहिए आहारट्ठे समुप्पज्जइ। तत्थ ण जे से आभोगनिव्वत्तिए, से जहण्णेण चउत्थभत्तस्स, उक्कोसेण दिवसपुहुत्तस्स आहारट्ठे समुप्पज्जइ। सेस जहा असुरकुमाराण जाव नो अचलिय कम्म निज्जरति।

एव सुवण्णकुमाराणवि जाव थणियकुमाराण ति।

पुढविकाइयाण भते! केवईय काल ठिई पण्णत्ता?

गोयमा! जहण्णेण अतोमुहुत्त, उक्कोसेण बावीस वाससहस्साइ।

पुढविकाइया केवइकालस्स आणमति वा ४?

गोयमा! वेमाताए आणमति वा ४।

पुढविकाइया ण आहारट्ठी?

हता आहारट्ठी।

पुढविकाइयाण केवइकालस्स आहारट्ठे समुप्पज्जइ?

गोयमा! अणुसमय अविरहिए आहारट्ठे समुप्पज्जइ।

पुढविकाइया किमाहारमाहारेति?

गोयमा! दव्वओ जहा नेरइयाण जाव निव्वाघाएण छद्दिसिं, वाघाय पडुच्च सिय तिदिसिं सिय चउद्दिसि सिय पचदिसिं। वण्णओ कालनीलपीतलोहियहालिद्दसुक्किल्लाणि, गधओ सुरभिगध २ रसओ तित्त ५ फासओ कक्खड ८ सेस तहेव। णाणत्त कइभाग आहारेति? कइभाग फासाएति?

गोयमा! असखिज्जइभाग आहारेति, अणतभाग फासाएति जाव ते ण तेसि पोग्गला कीसत्ताए भुज्जो-भुज्जो परिणमति?

गोयमा! फासिंदियवेमायत्ताए भुज्जो-भुज्जो परिणमति। सेस जहा नेरइयाण जाव नो अचलिय कम्म निज्जरति। एव जाव वणस्सइ-

[1] १. प० ४।

[2] २ प० २८।१।

दुक्खत्ताए भुज्जो-भुज्जो परिणमंति ॥

काइयाणं, नवरं ठिती वण्णेयव्वा जा जस्स, उस्सासो वेमायाए ।

बेइंदियाणं ठिई भाणियव्वा, ऊसासो वेमायाए ।

बेइंदियाणं आहारे पुच्छा, गोयमा ! आभोग-निव्वत्तिए य अणाभोगनिव्वत्तिए य तहेव । तत्थ णं जे से आभोगनिव्वत्तिए, से णं असंखेज्ज-समए अंतोमुहुत्तिए वेमायाए आहारट्ठे समुप्प-ज्जइ । सेसं तहेव जाव अणंतभागं आसाएंति ।

बेइंदिया णं भंते ! जे पोग्गले आहारत्ताए गेण्हंति ते किं सव्वे आहारेंति, णो सव्वे आहारेंति ?

गोयमा ! बेइंदियाणं दुविहे आहारे पण्णत्ते, तं जहा—लोमाहारे पक्खेवाहारे य । जे पोग्गले लोमाहारत्ताए गिण्हंति ते सव्वे अपरिसेसिए आहारेंति । जे पोग्गले पक्खेवाहारत्ताए गिण्हंति तेसिं णं पोग्गलाणं असंखिज्जइभागं आहारेंति, णेगाइं च णं भागसहस्साइं अणासाइज्जमाणाइं अफासिज्जमाणाइं विद्धंसमावज्जंति ।

एएसि णं भंते ! पोग्गलाणं अणासाइज्ज-माणाणं अफासाइज्जमाणाण य कयरे-कयरे अप्पा वा बहुया वा तुल्ला वा विसेसाहिया वा ?

गोयमा ! सव्वत्थोवा पोग्गला अणासाइज्ज-माणा, अफासाइज्जमाणा अणंतगुणा ।

बेइंदिया णं भंते ! जे पोग्गला आहारत्ताए गिण्हंति ते णं तेसिं पोग्गला कीसत्ताए भुज्जो-भुज्जो परिणमंति ?

गोयमा ! जिब्भिंदियफासिंदियवेमायत्ताए भुज्जो-भुज्जो परिणमंति ।

बेइंदियाणं भंते ! पुव्वाहारिया पुग्गला परि-णया ? तहेव जाव चलियं कम्मं निज्जरेंति ।

तेइंदियचउरिंदियाणं णाणत्तं ठिईए जाव णेगाइं च णं भागसहस्साइं अणाघाइज्जमाणाइं अणासाइज्जमाणाइं अफासाइज्जमाणाइं विद्धंस-मावज्जंति ।

एएसि णं भंते ! पोग्गलाणं अणाघाइज्जमा-णाइं ३ पुच्छा ।

गोयमा ! सव्वत्थोवा पोग्गला अणाघाइज्ज-माणा, अणासाइज्जमाणा अणंतगुणा, अफा-साइज्जमाणा अणंतगुणा । तेइंदियाणं घाणिंदिय-जिब्भिंदियफासिंदियवेमायत्ताए भुज्जो-भुज्जो परिणमंति ।

चउरिंदियाणं चक्खि(क्खु)दियघाणिंदिय-जिब्भिंदियफासिंदियवेमायत्ताए भुज्जो-भुज्जो परिणमंति ।

पंचिंदियतिरिक्खजोणियाणं ठिई भणिऊणं ऊसासो वेमायाए । आहारो अणाभोगनिव्वत्तिए अणुसमयं अविरहिओ । आभोगनिव्वत्तिओ जहण्णेणं अंतोमुहुत्तस्स, उक्कोसेणं छट्ठभत्तस्स । सेसं जहा चउरिंदियाणं जाव चलियं कम्मं निज्जरेंति ।

एवं मणुस्साणवि, नवरं आभोगनिव्वत्तिए जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं अट्ठमभत्तस्स, सोइंदियवेमायत्ताए भुज्जो-भुज्जो परिणमंति । सेसं जहा चउरिंदियाणं तहेव जाव निज्जरेंति ।

वाणमंतराणं ठिईए नाणत्तं, परिणमंति अवसेसं जहा नागकुमाराणं । एवं जोइसियाणवि, नवरं उस्सासो जहण्णेणं मुहुत्तपुहुत्तस्स, उक्को-सेणवि मुहुत्तपुहुत्तस्स । आहारो जहण्णेणं दिवस-पुहुत्तस्स, उक्कोसेणवि दिवसपुहुत्तस्स । सेसं तहेव ।

वेमाणियाणं ठिई भाणियव्वा ओहिया । ऊसासो जहण्णेणं मुहुत्तपुहुत्तस्स, उक्कोसेणं तेत्ती-साए पक्खाणं । आहारो आभोगनिव्वत्तिओ जहण्णेणं दिवसपुहुत्तस्स, उक्कोसेणं तेत्तीसाए वाससहस्साणं । सेसं चलियाइयं तहेव जाव निज्जरेंति (क, ता, वृ, प० २८।१) ।

आरंभ-अणारंभ-पदं

३३. जीवा ण भते ! कि आयारभा ? परारभा ? तदुभयारभा ? अणारभा ?
गोयमा ! अत्थेगइया जीवा आयारभा वि, परारभा वि, तदुभयारभा वि, णो अणारभा ॥
अत्थेगइया जीवा नो आयारभा, नो परारभा, नो तदुभयारभा, अणारभा ॥

३४ से केणट्ठेण भते ! एव वुच्चइ—अत्थेगइया जीवा आयारभा वि, [1]•परारभा वि, तदुभयारभा वि, णो अणारभा ? अत्थेगइया जीवा नो आयारभा, नो परारभा, नो तदुभयारभा, अणारभा° ?
गोयमा ! जीवा दुविहा पण्णत्ता, त जहा—ससारसमावण्णगा य, असंसार-समावण्णगा य ।
तत्थ ण जे ते असंसारसमावण्णगा, ते ण सिद्धा। सिद्धा ण नो आयारभा,[2] •नो परारभा, नो तदुभयरभा°, अणारभा ।
तत्थ ण जे ते ससारसमावण्णगा, ते दुविहा पण्णत्ता, त जहा—सजया य, असजया य ।
तत्थ ण जे ते सजया ते दुविहा पण्णत्ता, त जहा—पमत्तसजया य, अप्पमत्त-सजया य ।
तत्थ ण जे ते अप्पमत्तसजया, ते ण नो आयारभा, नो परारभा,[3] •नो तदु-भयारभा°, अणारभा ।
तत्थ ण जे ते पमत्तसजया, ते सुह जोग पडुच्च नो आयारभा[4], •नो परा-रभा, नो तदुभयारभा°, अणारभा । असुभ जोग पडुच्च आयारभा वि,[5] •परारभा वि, तदुभयारभा वि°, नो अणारभा ।
तत्थ ण जे ते असजया[6], ते अविरति पडुच्च आयारभा वि[7], •परारभा वि, तदुभयारभा वि°, नो अणारभा । से तेणट्ठेण[8] गोयमा ! एव वुच्चइ—अत्थेगइया जीवा[9] •आयारभा वि, परारभा वि, तदुभयारभा वि, नो अणारभा । अत्थेगइया जीवा नो आयारभा, नो परारभा, नो तदुभयारभा,° अणारभा ॥

३५ नेरइया ण भते ! कि आयारभा ? परारभा ? तदुभयारभा ? अणारभा ?

---

१ स० पा०—एव पडिउच्चारेतव्व ।
२ स० पा०—आयारभा जाव अणारभा ।
३. स० पा०—परारभा जाव अणारभा ।
४. स० पा०—आयारभा जाव अणारभा ।
५ स० पा०—वि जाव नो ।
६ अस्सजया (ता, व) ।
७ स० पा०—वि जाव नो ।
८ एणट्ठेण (अ, क), एतेणट्ठेण (ता,व, म) ।
९ स० पा०—जीवा जाव अणारभा ।

गोयमा ! •नेरइया आयारंभा वि[1], परारंभा वि, तदुभयारंभा वि,° नो अणारंभा ॥

३६ से केणट्ठेण ?
गोयमा ! अविरतिं पडुच्च। से तेणट्ठेण[2] •गोयमा ! एवं वुच्चइ—नेरइया आयारंभा वि, परारंभा वि, तदुभयारंभा वि,° नो अणारंभा[3] ॥

३७. एवं जाव[4] पंचिंदियतिरिक्खजोणिया। मणुस्सा जहा जीवा, नवरं—सिद्धविरहिया भाणियव्वा। वाणमंतरा जोइसिया वेमाणिया तहा नेरइया[5] ॥

३८. सलेस्सा जहा ओहिया[6]। कण्हलेसस्स[7], नीललेसस्स काउलेसस्स, जहा ओहिया जीवा, नवरं—पमत्ताप्पमत्ता न भाणियव्वा[8]। तेउलेसस्स, पम्हलेसस्स, सुक्कलेसस्स जहा ओहिया जीवा, नवरं—सिद्धा न भाणियव्वा ॥

---

१ स० पा०—वि जाव नो।

२ स० पा०—तेणट्ठेण जाव नो।

३ अणारंभा एवं असुरकुमारा वि जाव (ता)।

४. पू० प० २।

५ भ० १।३५, ३६।

६ भ० १।३३, ३४। 'सिद्धा न भाणियव्वा' इति अध्याहर्तव्यम्। 'सिद्धानामलेश्यत्वात्'—इति वृत्तिकार।

७ किण्ह° (अ)।

८ कण्हलेस्सा णं भंते ! जीवा किं आयारंभा ? परारंभा ? तदुभयारंभा ? अणारंभा ?
गोयमा ! अत्थेगइया कण्हलेस्सा जीवा आयारंभा वि, परारंभा वि, तदुभयारंभा वि, नो अणारंभा।
अत्थेगइया कण्हलेस्सा जीवा नो आयारंभा, नो परारंभा, नो तदुभयारंभा, अणारंभा।
से केणट्ठेण जाव अणारंभा ?
गोयमा ! कण्हलेस्सा जीवा दुविहा पण्णत्ता, तं जहा—संजया य असंजया य।
तत्थ णं जे ते संजया ते सुहं जोगं पडुच्च नो आयारंभा जाव अणारंभा।
असुभं जोगं पडुच्च आयारंभा वि जाव नो अणारंभा।
तत्थ णं जे ते असंजया ते अविरतिं पडुच्च आयारंभा वि जाव नो अणारंभा। से तेणट्ठेण जाव अणारंभा।
नीलकापोतलेश्यानां एष एव गमः।
तेउलेस्सा णं भंते ! जीवा किं आयारंभा जाव अणारंभा ?
गोयमा ! अत्थेगइया आयारंभा वि जाव नो अणारंभा, अत्थेगइया आयारंभा वि जाव नो अणारंभा, अत्थेगइया नो आयारंभा जाव नो अणारंभा।
से केणट्ठेणं ?
गोयमा ! दुविहा तेउलेस्सा पण्णत्ता, तं जहा—संजया य असंजया य।
तत्थ णं जे ते संजया ते दुविहा पण्णत्ता, तं जहा—पमत्तसंजया य, अप्पमत्तसंजया य।
तत्थ णं जे ते अप्पमत्तसंजया ते णं नो आयारंभा जाव अणारंभा।
तत्थ णं जे ते पमत्तसंजया ते सुहं जोगं पडुच्च नो आयारंभा जाव अणारंभा।
असुभं जोगं पडुच्च आयारंभा वि जाव नो अणारंभा।
तत्थ णं जे ते असंजया ते अविरतिं पडुच्च आयारंभा वि जाव नो अणारंभा। से तेणट्ठेण जाव अणारंभा।

नाणादीणं भवंतर-संकमण-पदं

३९ इहभविए भंते ! नाणे ? परभविए नाणे ? तदुभयभविए नाणे ?
गोयमा ! इहभविए वि नाणे, परभविए वि नाणे, तदुभयभविए वि नाणे ॥

४० [1]°इहभविए भंते ! दंसणे ? परभविए दंसणे ? तदुभयभविए दंसणे ?
गोयमा ! इहभविए वि दंसणे, परभविए वि दंसणे, तदुभयभविए वि दंसणे° ॥

४१ इहभविए भंते ! चरित्ते ? परभविए चरित्ते ? तदुभयभविए चरित्ते ?
गोयमा ! इहभविए चरित्ते, नो परभविए चरित्ते, नो तदुभयभविए चरित्ते ॥

४२ [2]°इहभविए भंते ! तवे ? परभविए तवे ? तदुभयभविए तवे ?
गोयमा ! इहभविए तवे, नो परभविए तवे, नो तदुभयभविए तवे ॥

४३. इहभविए भंते ! संजमे ? परभविए संजमे ? तदुभयभविए संजमे ?
गोयमा ! इहभविए संजमे, नो परभविए संजमे, नो तदुभयभविए संजमे° ॥

असंवुड-संवुड-अणगार-पदं

४४ असंवुडे[3] णं भंते ! अणगारे[4] सिज्झइ, बुज्झइ, मुच्चइ, परिनिव्वाइ, सव्व-दुक्खाणं अंतं करेइ ?

पद्मशुक्ललेश्यानां एष एव गमः ।

अभयदेवसूरिभिः भिन्नमतमनुसृत्य कृष्णलेश्यादिपाठो व्याख्यातः । कृष्णादिषु हि अप्रशस्त-भावलेश्यासु संयतत्वं नास्ति एतद्मतमनुसृत्य तैरेव पाठरचना कृता—
"कण्हलेस्सा णं भंते ! जीवा किं आयारंभा परारंभा तदुभयारंभा अणारंभा ?
गोयमा ! आयारंभा वि जाव नो अणारंभा ।
से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ ?
गोयमा ! अविरइं पडुच्च" एवं नील-कापोतलेश्यादंडकावपीति । किन्तु अभयदेव-सूरिणामेतद्मतं पर्यालोच्यमस्ति—

(१) सूत्रकारेण 'पमत्तापमत्ता न भाणियव्वा' इति निर्देशः कृतः किन्तु 'संजतासंजता न भाणियव्वा' इति न सूचितम् ।

(२) कषायकुशीलसंयताः षट्सु लेश्यासु भवन्ति । प्रस्तुतागमस्य २५ शतके षष्ठोद्देशे एतत् साक्षाल्लिखितमस्ति—कसायकुसीले पुच्छा । गोयमा ! सलेस्से होज्जा णो अलेस्से होज्जा । जदि सलेस्से होज्जा से णं भंते ! कतिसु लेसासु होज्जा । गोयमा ! छल्लेस्सासु होज्जा, तं जहा—कण्हलेस्साए जाव सुक्कलेस्साए ।

अस्य वृत्तौ अभयदेवसूरिणा एतद् व्याख्यातमस्ति—कषायकुशीलस्तु, षट्स्वपि सकषायमाश्रित्य (वृ) ।

(३) प्रज्ञापनासूत्रे कृष्णलेश्यजीवस्य मनःपर्यवज्ञानस्य अस्तित्वं प्रतिपादितम्—कण्हलेस्से णं भंते ! जीवे कतिसु णाणेसु होज्जा ? गोयमा ! दोसु वा तिसु वा चउसु वा णाणेसु हुज्जा (प० १७।३) । अस्यागमस्य वृत्तिकृता सहेतुकमिदं व्याख्यातम्—इह लेश्यानां प्रत्येकमसंख्येय-लोकाकाशप्रदेशप्रमाणानि अध्यवसाय-स्थानानि, तत्र कानिचिन्मंदानुभावान्यध्यव-सायस्थानानि, प्रमत्तसंयतस्यापि लभ्यन्ते, अतएव कृष्ण-नील-कापोतलेश्या प्रमत्तसंय-तस्यापि गीयन्ते (प्र०वृ) ।

(४) प्रथमशतकस्य १०१ सूत्रं द्रष्टव्यम् ।

१ सं० पा०—दंसणे वि एमेव ।
२ सं० पा०—एवं तवे संजमे ।
३ अस्संवुडे (ता) ।
४ अणगारे किं (अ, ब) ।

गोयमा ! णो इणट्ठे समट्ठे ।।

४५ से केणट्ठेण[1] •भते ! एव वुच्चइ—असवुडे ण अणगारे नो सिज्झइ, नो बुज्झइ, नो मुच्चइ, नो परिनिव्वाइ°, नो सव्वदुक्खाण अत करेइ ?
गोयमा ! असवुडे अणगारे आउयवज्जाओ सत्त कम्मपगडीओ सिढिलबंधणबद्धाओ धणियबंधणबद्धाओ पकरेइ, हस्सकालठिइयाओ[2] दीहकालठिइयाओ पकरेइ, मदाणुभावाओ[3] तिव्वाणुभावाओ पकरेइ, अप्पपएसग्गाओ[4] बहुप्पएसग्गाओ पकरेइ, आउय च ण कम्म सिय बधइ, सिय नो बंधइ, अस्सायावेयणिज्ज च ण कम्म भुज्जो-भुज्जो उवचिणाइ, अणाइय च ण अणवदग्ग[5] दीहमद्ध चाउरत[6] ससारकतार अणुपरियट्टइ । से तेणट्ठेण गोयमा ! असवुडे अणगारे नो सिज्झइ, नो बुज्झइ, नो मुच्चइ, नो परिनिव्वाइ, नो सव्वदुक्खाण अत करेइ ।।

४६ सवुडे ण भते ! अणगारे सिज्झइ, बुज्झइ, मुच्चइ, परिनिव्वाइ, सव्वदुक्खाण अत करेइ ?
हता ! सिज्झइ,[7] •बुज्झइ, मुच्चइ, परिनिव्वाइ, सव्वदुक्खाण° अत करेइ ।।

४७ से केणट्ठेण भते ! एव वुच्चइ—सवुडे ण अणगारे सिज्झइ, बुज्झइ, मुच्चइ, परिनिव्वाइ, सव्वदुक्खाण अत करेइ ?
गोयमा ! सवुडे अणगारे आउयवज्जाओ सत्त कम्मपगडीओ[8] धणियबंधणबद्धाओ सिढिलबंधणबद्धाओ पकरेइ, दीहकालट्ठिइयाओ हस्सकालट्ठिइयाओ पकरेइ, तिव्वाणुभावाओ मदाणुभावाओ पकरेइ, बहुप्पएसग्गाओ अप्पपएसग्गाओ पकरेइ, आउय च ण कम्म न बधइ, अस्सायावेयणिज्ज च ण कम्म नो भुज्जो-भुज्जो उवचिणाइ, अणादीय च ण अणवदग्ग दीहमद्ध चाउरत ससारकतार वीईवयइ[9] । से तेणट्ठेण गोयमा ! एव वुच्चइ—सवुडे अणगारे सिज्झइ[10], •बुज्झइ, मुच्चइ, परिनिव्वाइ, सव्वदुक्खाण° अत करेइ ।।

असंजयस्स वाणमंतरदेव-पदं

४८ जीवे ण भते ! अस्सजए अविरए अप्पडिहयपच्चक्खायपावकम्मे इओ चुए पेच्चा[11] देवे सिया ?
गोयमा ! अत्थेगइए देवे सिया, अत्थेगइए णो देवे सिया ।।

१ स० पा०—केणट्ठेण जाव नो ।
२ ह्रस्स° (ता), रहस्स° (स) ।
३. ° भागाओ (ता, म) ।
४ ° सयाओ (क) ।
५. अणवयग्ग (अ) ।
६ चाउरत (व, म, स) ।
७ स० पा०—सिज्झइ जाव अत ।
८ ° प्पग ° (स) ।
९ वीतीवतति (क, व, म) ।
१० स० पा०—सिज्झइ जाव अत ।
११ पिच्चा (अ, क, व) ।

४९ से केणट्ठेण[1] •भंते ! एवं वुच्चइ—अस्संजए अविरए अप्पडिहयपच्चक्खाय-पावकम्मे॰ इओ चुए पेच्चा अत्थेगइए देवे सिया, अत्थेगइए नो देवे सिया ?

गोयमा ! जे इमे जीवा गामागर-नगर-निगम[2]-रायहाणि-खेड-कब्बड-मडंब-दोणमुह-पट्टणासम-सण्णिवेसेसु अकामतण्हाए, अकामछुहाए, अकामबंभचेरवासेण, 'अकामसीतातव-दंस-मसग'[3]-अण्हाणग[4]-सेय-जल्ल-मल-पंक-परिदाहेण 'अप्पतरं वा भुज्जतरं'[5] वा कालं अप्पाणं परिकिलेसंति, परिकिलेसित्ता कालमासे कालं किच्चा अण्णयरेसु वाणमंतरेसु देवलोगेसु देवत्ताए उववत्तारो भवंति ॥

५०. केरिसा णं भंते ! तेसिं वाणमंतराणं देवाणं देवलोगा पण्णत्ता ?

गोयमा ! से जहानामए इहं[6] असोगवणे इ वा, सत्तवण्णवणे[7] इ वा, चंपयवणे इ वा, चूयवणे इ वा, तिलगवणे इ वा, लउयवणे[8] इ वा, नग्गोहवणे[9] इ वा, छत्तोहवणे[10] इ वा, असणवणे इ वा, सणवणे इ वा, अयसिवणे इ वा, कुसुंभवणे इ वा, सिद्धत्थवणे इ वा, बंधुजीवगवणे इ वा, णिच्चं[11] कुसुमिय-माइय-लवइय-थवइय-गुलुइय-गोच्छिय-जमलिय[12]-जुवलिय-विणमिय-पणमिय-सुविभत्तपिंडिमंजरि-वडेंसगधरे[13] सिरीए अतीव-अतीव उवसोभेमाणे-उवसोभेमाणे चिट्ठइ ।

एवामेव[14] तेसिं वाणमंतराणं देवाणं देवलोगा जहण्णेणं दसवाससहस्सट्ठितीएहिं, उक्कोसेणं पलिओवमट्ठितीएहिं, बहूहिं वाणमंतरेहिं देवेहि य देवीहि य आइण्णा वितिकिण्णा[15] उवत्थडा संथडा फुडा अवगाढगाढा सिरीए अतीव-अतीव उवसोभेमाणा-उवसोभेमाणा चिट्ठंति ।

एरिसगा णं गोयमा ! तेसिं वाणमंतराणं देवाणं देवलोगा पण्णत्ता, से तेणट्ठेणं गोयमा ! एवं वुच्चइ—जीवे णं अस्संजए[16] •अविरए अप्पडिहयपच्चक्खायपाव-कम्मे इओ चुए पेच्चा अत्थेगइए॰ देवे सिया ॥

---

१ सं॰ पा॰—केणट्ठेणं जाव इओ ।
२ नियम (ता) ।
३ वृत्तौ 'अकामसीतातव-दंस-मसग' इति पाठो नास्ति व्याख्यातः ।
४ अकामअण्हाणग (क, वृ) ।
५ ॰तरो वा भुज्जतरो (अ, ता, ब, म), 'अप्पतरो वा भुज्जतरो वा कालं' ति प्राकृतत्वेन विभक्तिविपरिणामादल्पतरं वा भूयस्तरं वा बहुतरं कालं यावत् (वृ) ।
६. इहं मणुस्सलोगंसि (अ, क, ब, म, स) ।
७ सत्ति॰ (म) ।
८ लाउय॰ (अ, क, ब, स), लोअ॰ (म) ।
९ × (अ, क, ता), प्रत्यंतरे—णिग्गोहवणे इ वा (अ), णिगोह॰ (स) ।
१० छत्तोअ॰ (क), छिन्नो॰ (ब); × (म), छन्नो (स) ।
११ × (अ, क, ता, ब) ।
१२ जमइय (अ) ।
१३ ॰पेडि॰ (क), ॰वेण्टमंजरि॰ (ता) ।
१४ एवमेव (ता, म) ।
१५ वितिण्णा (क, ब, वृपा), × (वृ) ।
१६ सं॰ पा॰— अस्संजए जाव देवे ।

५१—सेव भते ! सेव भते ! त्ति भगव गोयमे समण भगव महावीर वदति नमसति, वदित्ता नमसित्ता सजमेण तवसा अप्पाण भावेमाणे विहरति ॥

बीओ उद्देसो

५२ रायगिहे नगरे समोसरण । परिसा णिग्गया जाव[1] एव वयासी—

कम्म-वेयण-पदं

५३ जीवे ण भते ! सयकड दुक्ख वेदेइ ?
गोयमा ! अत्थेगइय वेदेइ, अत्थेगइय नो वेदेइ ॥

५४ से केणट्ठेण भते ! एव वुच्चइ—अत्थेगइय वेदेइ ? अत्थेगइय नो वेदेइ ?
गोयमा ! उदिण्ण वेदेइ, 'नो अणुदिण्ण'[2] वेदेइ । से तेणट्ठेण गोयमा ! एव वुच्चइ—अत्थेगइय वेदेइ, अत्थेगइय नो वेदेइ ॥

५५. एव[3]—जाव वेमाणिए ॥

५६. जीवा ण भते ! सयकड दुक्ख वेदेति ?
गोयमा ! अत्थेगइय वेदेति, अत्थेगइय नो वेदेति ॥

५७ से केणट्ठेण भते ! एव वुच्चइ—अत्थेगइय वेदेति ? अत्थेगइय नो वेदेति ?
गोयमा ! उदिण्ण वेदेति, नो अणुदिण्ण वेदेति । से तेणट्ठेण गोयमा ! एवं वुच्चइ—अत्थेगइय वेदेति, अत्थेगइय नो वेदेति ॥

५८ एव—जाव[4] वेमाणिया ॥

५९. जीवे ण भते ! सयकड आउय वेदेइ ?
गोयमा ! अत्थेगइय वेदेइ, अत्थेगइय नो वेदेइ । जहा[5] दुक्खेण दो दडगा तहा आउएण वि दो दडगा—एगत्त-पोहत्तिया[6] ॥

नेरइयादीणं समाहार-समसरीरादि-पदं

६०. नेरइया ण भते ! सव्वे समाहारा ? सव्वे समसरीरा ? सव्वे समुस्सास-नीसासा[7] ?
गोयमा ! नो इणट्ठे समट्ठे ॥

---

१. भ० १।८-१० ।
२ अणुदिण्णं नो (स) ।
३ एव चउव्वीसदडएण (स) ।
४ पू० प० २ ।
५ भ० १।५३-५८ ।
६ पोहत्तिया । एगत्तेण जाव वेमाणिया । पुहत्तेण तहेव (व, म, स) ।
७ °णिस्सासा (ता) ।

६१ से केणट्ठेण भते ! एव वुच्चइ—नेरइया नो सव्वे समाहारा ? नो सव्वे समसरीरा? नो सव्वे समुस्ससानीसासा ?
गोयमा ! नेरइया दुविहा पण्णत्ता, त जहा—महासरीरा य, अप्पसरीरा य। तत्थ ण जे ते महासरीरा ते वहुतराए पोग्गले आहारेति, बहुतराए पोग्गले परिणामेति[1], वहुतराए पोग्गले उस्ससति, वहुतराए पोग्गले नीससति, अभिक्खण आहारेति, अभिक्खण परिणामेति, अभिक्खण उस्ससति, अभिक्खणं नीससति। तत्थ ण जे ते अप्पसरीरा ते ण अप्पतराए पोग्गले आहारेति, अप्पतराए पोग्गले परिणामेंति, अप्पतराए पोग्गले उस्ससति, अप्पतराए पोग्गले नीससति, आहच्च आहारेति, आहच्च परिणामेति, आहच्च उस्ससति, आहच्च नीससति। से तेणट्ठेण गोयमा ! एव वुच्चइ—नेरइया नो सव्वे समाहारा, नो सव्वे समसरीरा, नो सव्वे समुस्सासनीसासा ॥

६२ नेरइया ण भते ! सव्वे समकम्मा ?
गोयमा ! नो इणट्ठे[2] समट्ठे ॥

६३ से केणट्ठेण भते ! एव वुच्चइ—नेरइया नो सव्वे समकम्मा ?
गोयमा ! नेरइया दुविहा पण्णत्ता, त जहा—पुव्वोववन्नगा य, पच्छोववन्नगा य। तत्थ ण जे ते पुव्वोववन्नगा ते ण अप्पकम्मतरागा। तत्थ ण जेते पच्छोववन्नगा ते ण महाकम्मतरागा। से तेणट्ठेण गोयमा ! एव वुच्चइ—नेरइया नो सव्वे समकम्मा ॥

६४ नेरइया ण भते ! सव्वे समवण्णा !
गोयमा ! नो इणट्ठे समट्ठे ॥

६५ से केणट्ठेण भते ! एव वुच्चइ—नेरइया नो सव्वे समवण्णा ?
गोयमा ! नेरइया दुविहा पण्णत्ता, त जहा—पुव्वोववन्नगा य, पच्छोववन्नगा य। तत्थ ण जे ते पुव्वोववन्नगा ते ण विसुद्धवण्णतरागा[3]। • तत्थ ण जे ते पच्छोववन्नगा ते ण अविसुद्धवण्णतरागा° । से तेणट्ठेण गोयमा ! एव वुच्चइ—नेरइया नो सव्वे समवण्णा ॥

६६ नेरइया ण भते ! सव्वे समलेस्सा ?
गोयमा ! नो इणट्ठे समट्ठे ॥

६७ से केणट्ठेण[4] •भते ! एव वुच्चइ—नेरइया° नो सव्वे समलेस्सा ?
गोयमा ! नेरइया दुविहा पण्णत्ता, त जहा—पुव्वोववन्नगा य, पच्छोववन्नगा य। तत्थ ण जे ते पुव्वोववन्नगा ते ण विसुद्धलेस्सतरागा। तत्थ ण जे ते पच्छोववन्नगा

---

१ परिणमति (ता)।
२ तिणट्ठे, (क म)।
३ स० पा०— °तरागा तहेव।
४ स० पा०—केणट्ठेण जाव नो।

ते ण अविसुद्धलेस्सतरागा। से तेणट्ठेण गोयमा ! एव वुच्चइ—नेरइया नो सव्वे समलेस्सा॥

६८. नेरइया ण भते ! सव्वे समवेयणा ?
गोयमा ! नो इणट्ठे समट्ठे॥

६९. से केणट्ठेण भते ! एव वुच्चइ—नेरइया नो सव्वे समवेयणा ?
गोयमा ! नेरइया दुविहा पण्णत्ता, त जहा—सण्णिभूया य, असण्णिभूया य। तत्थ ण जे ते सण्णिभूया ते ण महावेयणा। तत्थ ण जे ते असण्णिभूया ते ण अप्पवेयणतरागा। से तेणट्ठेण गोयमा ! एव वुच्चइ—नेरइया नो सव्वे समवेयणा॥

७० नेरइया ण भते ! सव्वे समकिरिया ?
गोयमा ! नो इणट्ठे समट्ठे॥

७१ से केणट्ठेण भते ! एव वुच्चइ—नेरइया नो सव्वे समकिरिया ?
गोयमा ! नेरइया तिविहा पण्णत्ता, त जहा—सम्मदिट्ठी[1], मिच्छदिट्ठी, सम्मामिच्छदिट्ठी[2]।
तत्थ ण जे ते सम्मदिट्ठी तेसि ण चत्तारि किरियाओ पण्णत्ताओ, त जहा—आरभिया, पारिग्गहिया[3], मायावत्तिया, अप्पच्चक्खाणकिरिया।
तत्थ ण जे ते मिच्छदिट्ठी तेसि ण पच किरियाओ कज्जति[4], त जहा—आरभिया[5], °पारिग्गहिया, मायावत्तिया, अप्पच्चक्खाणकिरिया°, मिच्छादसणवत्तिया। एव सम्मामिच्छदिट्ठीण पि। से तेणट्ठेण गोयमा ! एव वुच्चइ—नेरइया नो सव्वे समकिरिया॥

७२ नेरइया ण भते ! सव्वे समाउया ? सव्वे समोववन्नगा ?
गोयमा ! णो इणट्ठे समट्ठे॥

७३ से केणट्ठेण भते ! एव वुच्चइ—नेरइया नो सव्वे समाउया ? नो सव्वे समोववन्नगा ?
गोयमा ! नेरइया चउव्विहा पण्णत्ता, त जहा—(१) अत्थेगइया समाउया समोववन्नगा (२) अत्थेगइया समाउया विसमोववन्नगा (३) अत्थेगइया विसमाउया समोववन्नगा (४) अत्थेगइया विसमाउया विसमोववन्नगा। से तेणट्ठेण गोयमा ! एव वुच्चइ—नेरइया नो सव्वे समाउया, नो सव्वे समोववन्नगा॥

७४ असुरकुमारा ण भते ! सव्वे समाहारा[6] ? सव्वे समसरीरा ?

---

१ सम्मा° (अ)।
२ सम्मामिच्छा° (ता, म)।
३. परि° (व, म)।
४ किज्जति (अ, क, व)।
५ स० पा०—आरभिया जाव मिच्छा°।
६ ° हारगा (अ, ता, व, म)।

जहा[1] नेरइया तहा भाणियव्वा, नवर—कम्म-वण्ण-लेस्साओ परिवत्तेयव्वाओ[2] [पुव्वोववन्ना महाकम्मतरा, अविसुद्धवण्णतरा, अविसुद्धलेसतरा। पच्छोववन्ना पसत्था। सेस तहेव][3] ॥

७५ एव—जाव[4] थणियकुमारा[5] ॥

७६ पुढविकाइयाण[6] आहार-कम्म-वण्ण-लेस्सा जहा[7] णेरइयाण ॥

७७ पुढविकाइया[8] ण भते! सव्वे समवेदणा?
हता गोयमा! पुढविकाइया सव्वे समवेदणा ॥

७८ से केणट्ठेण भते! एव वुच्चइ—पुढविकाइया सव्वे समवेदणा?
गोयमा! पुढविकाइया सव्वे असण्णी[9] असण्णिभूत[10] अणिदाए वेदण वेदेंति। से तेणट्ठेण गोयमा! एव वुच्चइ—पुढविकाइया सव्वे समवेदणा ॥

७९ पुढविकाइया ण भते! सव्वे समकिरिया?
हता गोयमा! पुढविकाइया सव्वे समकिरिया ॥

८० से केणट्ठेण भते! एव वुच्चइ—पुढविकाइया सव्वे समकिरिया?
गोयमा! पुढविकाइया सव्वे मायीमिच्छदिट्ठी[11]। ताण णेयतियाओ[12] पच किरियाओ कज्जति, त जहा—आरभिया[13], •पारिग्गहिया, मायावत्तिया, अप्पच्चक्खाण-किरिया°, मिच्छादसणवत्तिया। से तेणट्ठेण गोयमा! एव वुच्चइ—पुढविकाइया सव्वे समकिरिया ॥

८१ समाउया, समोववन्नगा जहा[14] नेरइया तहा भाणियव्वा ॥

८२ जहा[15] पुढविकाइया तहा जाव[16] चउरिंदिया ॥

८३ पचिंदियतिरिक्खजोणिया जहा[17] णेरइया, नाणत्त किरियासु।

८४ पंचिंदियतिरिक्खजोणिया ण भते! सव्वे समकिरिया?
गोयमा! णो इणट्ठे समट्ठे ॥

---

१ भ० १।६०-७३।
२ परिवण्णेयव्वाओ (अ, क, व, स), परि-त्थल्लेयव्वाओ (ता), परित्थणेतव्वाओ (म), कर्मादीनि नारकापेक्षया विपर्ययेण वाच्यानि (वृ)।
३ अ, क, ता, स एषु चतुर्षु आदर्शेषु असौ कोष्ठकवर्ती पाठो नास्ति। व, म सकेतितयोरादर्शयोरसौ लभ्यते। असौ च व्याख्यांशोस्ति तेन कोष्ठके गृहीत।
४ पू० प० २।
५ ° कुमारा ण (अ, क, ता, व, म, स)।
६ ° कातिया (म)।
७ भ० १।६०-६७।
८ ° क्काइया (क, ता, स)।
९ असण्णी य (अ, व)।
१० असण्णीभूय (ता, स)।
११ मायामिच्छ° (अ), मायीमिच्छा° (ता), मायामिच्छा° (म)।
१२ णेएतियाओ (ता), णियइयाओ (स)।
१३ सं० पा०—आरंभिया जाव मिच्छा°।
१४ भ० १।७२, ७३।
१५ भ० १।७६-८१।
१६ पू० प० २।
१७ भ० १।६०-६६, ७२, ७३।

८५ से केणट्ठेण भंते ! एवं वुच्चइ—पंचिंदियतिरिक्खजोणिया नो सव्वे समकिरिया ?
गोयमा ! पंचिंदियतिरिक्खजोणिया तिविहा पण्णत्ता, तं जहा—सम्मदिट्ठी, मिच्छदिट्ठी, सम्मामिच्छदिट्ठी ।
तत्थ णं जे ते सम्मदिट्ठी ते दुविहा पण्णत्ता, तं जहा—असंजया य, संजयासंजया य ।
तत्थ णं जे ते संजयासंजया, तेसि णं तिण्णि किरियाओ कज्जंति, तं जहा—आरंभिया, पारिग्गहिया, मायावत्तिया ।
असंजयाणं चत्तारि । मिच्छदिट्ठीणं पंच । सम्मामिच्छदिट्ठीणं पंच ॥

मणुस्सादीणं समाहार-समसरीरादि-पदं

८६ [1]मणुस्सा णं भंते ! सव्वे समाहारा ? सव्वे समसरीरा ? सव्वे समुस्सासनीसासा ?
गोयमा ! नो इणट्ठे समट्ठे ॥

८७ से केणट्ठेण भंते ! एवं वुच्चइ—मणुस्सा नो सव्वे समाहारा ? नो सव्वे समसरीरा ? नो सव्वे समुस्सासनीसासा ?
गोयमा ! मणुस्सा दुविहा पण्णत्ता, तं जहा—महासरीरा य, अप्पसरीरा य । तत्थ णं जे ते महासरीरा ते बहुतराए पोग्गले आहारेंति, बहुतराए पोग्गले परिणामेंति, बहुतराए पोग्गले उस्ससंति, बहुतराए पोग्गले नीससंति; आहच्च आहारेंति, आहच्च परिणामेंति, आहच्च उस्ससंति, आहच्च नीससंति ।
तत्थ णं जे ते अप्पसरीरा ते णं अप्पतराए पोग्गले आहारेंति, अप्पतराए पोग्गले परिणामेंति, अप्पतराए पोग्गले उस्ससंति, अप्पतराए पोग्गले नीससंति, अभिक्खणं आहारेंति, अभिक्खणं परिणामेंति, अभिक्खणं उस्ससंति, अभिक्खणं नीससंति । से तेणट्ठेणं गोयमा ! एवं वुच्चइ—मणुस्सा नो सव्वे समाहारा, नो सव्वे समसरीरा, नो सव्वे समुस्सासनीसासा ।

८८ मणुस्सा णं भंते ! सव्वे समकम्मा ?
गोयमा ! नो इणट्ठे समट्ठे ॥

८९ से केणट्ठेण भंते ! एवं वुच्चइ—मणुस्सा नो सव्वे समकम्मा ?
गोयमा ! मणुस्सा दुविहा पण्णत्ता, तं जहा—पुव्वोववन्नगा य, पच्छोववन्नगा य । तत्थ णं जे ते पुव्वोववन्नगा ते णं अप्पकम्मतरागा । तत्थ णं जे ते पच्छोववन्नगा ते णं महाकम्मतरागा । से तेणट्ठेणं गोयमा ! एवं वुच्चइ—मणुस्सा नो सव्वे समकम्मा ॥

---

१ सं० पा०—मणुस्सा जहा णेरइया नाणत्तं जे महासरीरा ते बहुतराए पोग्गले आहारेंति आहच्च आहारेंति । जे अप्पसरीरा ते अप्पतराए पोग्गले आहारेंति अभिक्खणं आहारेंति सेसं जहा नेरइयाणं जाव वेयणा ।

९० मणुस्सा ण भते ! सव्वे समवण्णा ?
गोयमा ! नो इणट्ठे समट्ठे ॥

९१ से केणट्ठेण भते ! एव वुच्चइ—मणुस्सा नो सव्वे समवण्णा ?
गोयमा ! मणुस्सा दुविहा पण्णत्ता, त जहा—पुव्वोववन्नगा य, पच्छोववन्नगा य। तत्थ ण जे ते पुव्वोववन्नगा ते ण विसुद्धवण्णतरागा। तत्थ ण जे ते पच्छो-ववन्नगा ते ण अविसुद्धवण्णतरागा। से तेणट्ठेण गोयमा ! एव वुच्चइ—मणुस्सा नो सव्वे समवण्णा ॥

९२ मणुस्सा ण भते ! सव्वे समलेस्सा ?
गोयमा ! नो इणट्ठे समट्ठे ॥

९३ से केणट्ठेण भते ! एव वुच्चइ—मणुस्सा नो सव्वे समलेस्सा ?
गोयमा ! मणुस्सा दुविहा पण्णत्ता, त जहा–पुव्वोववन्नगा य, पच्छोववन्नगा य। तत्थ ण जे ते पुव्वोववन्नगा ते ण विसुद्धलेस्सतरागा। तत्थ ण जे ते पच्छो-ववन्नगा ते ण अविसुद्धलेस्सतरागा। से तेणट्ठेण गोयमा ! एव वुच्चइ—मणुस्सा नो सव्वे समलेस्सा ॥

९४ मणुस्सा ण भते ! सव्वे समवेयणा ?
गोयमा ! नो इणट्ठे समट्ठे ॥

९५. से केणट्ठेण भते ! एव वुच्चइ—मस्साणु नो सव्वे समवेयणा ?
गोयमा ! मणुस्सा दुविहा पण्णत्ता, त जहा—सण्णिभूया य, असण्णिभूया य। तत्थ ण जे ते सण्णिभूया ते ण महावेयणा। तत्थ ण जे ते असण्णिभूया ते ण अप्पवेयण-तरागा। से तेणट्ठेण गोयमा ! एव वुच्चइ—मणुस्सा नो सव्वे समवेयणा° ॥

९६ मणुस्सा ण भते ! सव्वे समकिरिया ?
गोयमा ! नो इणट्ठे समट्ठे ॥

९७ से केणट्ठेण भते ! एव वुच्चइ—मणुस्सा नो सव्वे समकिरिया ?
गोयमा ! मणुस्सा तिविहा पण्णत्ता, त जहा—सम्मदिट्ठी, मिच्छदिट्ठी, सम्मा-मिच्छदिट्ठी।
तत्थ ण जे ते सम्मदिट्ठी ते तिविहा पण्णत्ता, त जहा—सजया, अस्सजया, सजयासजया।
तत्थ ण जे ते सजया ते दुविहा पण्णत्ता, त जहा—सरागसजया य, वीतराग-सजया य।
तत्थ ण जे ते वीतरागसजया, ते ण अकिरिया।
तत्थ ण जे ते सरागसजया ते दुविहा पण्णत्ता, त जहा—पमत्तसजया य, अप्पमत्त-सजया य।
तत्थ ण जे ते अप्पमत्तसजया, तेसि ण एगा मायावत्तिया किरिया कज्जइ।

तत्थ ण जे ते पमत्तसजया, तेसि ण दो किरियाओ कज्जंति, त जहा—आरंभिया य, मायावत्तयिा य ।

तत्थ ण जे ते संजयासजया, तेसि ण आइल्लाओ[1] तिण्णि किरियाओ कज्जति, त जहा—आरभिया, पारिग्गहिया, मायावत्तिया ।

असंजयाण चत्तारि किरियाओ कज्जति—आरभिया पारिग्गहिया, मायावत्तिया, अप्पच्चक्खाणकिरिया ।

मिच्छदिट्ठीण पच—आरभिया, पारिग्गहिया, मायावत्तिया, अप्पच्चक्खाण-किरिया, मिच्छादसणवत्तिया ।

सम्मामिच्छदिट्ठीण पच ॥

९८. मणुस्सा[2] ण भते ! सव्वे समाउया ? सव्वेसमोववन्नगा ?

गोयमा ! नो इणट्ठे समट्ठे ॥

९९. से केणट्ठेणं भते ! एव वुच्चइ—मणुस्सा नो सव्वे समाउया ? नो सव्वे समोववन्नगा ?

गोयमा ! मणुस्सा चउव्विहा पण्णत्ता, त जहा—(१) अत्थेगइया समाउया समोववन्नगा । (२) अत्थेगइया समाउया विसमोववन्नगा । (३) अत्थेगइया विसमाउया समोववन्नगा । (४) अत्थेगइया विसमाउया विसमोववन्नगा । से तेणट्ठेण गोयमा ! एव वुच्चइ—मणुस्सा नो सव्वे समाउया, नो सव्वे समोववन्नगा ।

१०० वाणमतर[3]-जोतिस-वेमाणिया जहा[4] असुरकुमारा, नवर—वेयणाए णाणत्त-मायिमिच्छदिट्ठीउववन्नगा य अप्पवेयणतरा, अमायिसम्मदिट्ठिउववन्नगा य महावेयणतरा भाणियव्वा जोतिसवेमाणिया ॥

---

१ आदिमाओ (क, ता, म) ।

२ ८६ सूत्रस्य पादटिप्पणगते समर्पणपाठे 'सेस जहा नेरइयाण जाव वेयणा' इति उल्लेखोऽस्ति, अतोनन्तर क्रियासूत्र नैरयिकसूत्रालापकाद् भिन्नमस्ति तेन समर्पणपाठे तद् ग्रहण न कृतम् । समायुषः सूत्र क्रिया सूत्रात् अग्रे वर्तते, किन्तु तद् नैरयिकसूत्रालापकाद् भिन्न नास्ति तेन पूर्ववर्तिसमर्पणपाठेनैव तस्य ग्रहण कृतमिति सभाव्यते । तदस्माभि साक्षाल्लिखितम् ।

३ प्रज्ञापनाया (१७।१) अस्य रचना सुस्पष्टास्ति, यथा—वाणमतरा णं जहा असुरकुमारा ण ।

एव जोइसिय-वेमाणियाण वि । णवर ते वेदणाए दुविहा पण्णत्ता, त जहा—माइमिच्छद्दिट्ठिउववण्णगा य, अमाइसम्मद्दिट्ठीउववण्णगा य । तत्थ ण जे ते माइमिच्छद्दिट्ठोववण्णगा ते ण अप्पवेदणतरागा । तत्थ ण जे ते अमाइसम्मदिट्ठोववण्णगा ते ण महावेदणतरागा ।

४ भ० १।७४ ।

१०१. सलेस्सा ण भते ! नेरइया सव्वे समाहारगा ?
ओहियाण[1], सलेस्साण, सुक्कलेस्साण—एतेसि ण तिण्ह एक्को गमो ।
कण्हलेस्स[2]-नीललेस्साण पि एगो[3] गमो, नवर—वेदणाए मायिमिच्छदिट्ठीउववन्नगा य, अमायिसम्मदिट्ठीउववन्नगा य भाणियव्वा ।
मणुस्सा किरियासु सराग-वीयरागा पमत्तापमत्ता न भाणियव्वा ।
काउलेस्साण वि एसेव[4] गमो, नवर—नेरइइ जहा ओहिए दडए तहा भाणियव्वा।
तेउलेस्सा, पम्हलेस्सा 'जस्स अत्थि'[5] जहा ओहिओ दडओ तहा भाणियव्वा, नवर—मणुस्सा सराग-वीयरागा न भाणियव्वा ।

संगहणी-गाहा

दुक्खाउए उदिण्णे, आहारे कम्म-वण्ण-लेस्सा य ।
समवेयण-समकिरिया, समाउए चेव बोधव्वा[6] ।।१।।

लेस्सा-पदं

१०२. कइ ण भते ! लेस्साओ पण्णत्ताओ ?
गोयमा! छ लेस्साओ पण्णत्ताओ, त जहा—कण्हलेस्सा, नीललेस्सा, काउलेस्सा, तेउलेस्सा, पम्हलेस्सा, सुक्कलेस्सा । लेस्साण बीओ[7] उद्देसो भाणियव्वो जाव[8] इड्ढी ।।

जीवाणं भवपरिवट्टण-पदं

१०३ जीवस्स ण भते ! तीतद्धाए आदिट्ठस्स कइविहे ससारसचिट्ठणकाले पण्णत्ते ?
गोयमा ! चउव्विहे ससारसचिट्ठणकाले पण्णत्ते, त जहा—नेरइयससारसचिट्ठणकाले, तिरिक्खजोणियससारसचिट्ठणकाले, मणुस्सससारसचिट्ठणकाले, देवससारसचिट्ठणकाले[9] ।।
१०४ नेरइयसंसारचिट्ठणकाले[10] ण भते ! कतिविहे पण्णत्ते ?
गोयमा ! तिविहे पण्णत्ते, त जहा—सुन्नकाले, असुन्नकाले, मिस्सकाले ।।
१०५ तिरिक्खजोणियसंसार[11] •सचिट्ठणकाले ण भते ! कतिविहे पण्णत्ते• ?
गोयमा ! दुविहे पण्णत्ते, त जहा—असुन्नकाले य, मिस्सकाले य ।।

---

१ पू०—भ० १।६०-७३ ।
२ °लेस्सा (ता, म) ।
३ एसो (अ, ता, व) ।
४ एसोव (अ) ।
५ जस्सत्थि (क, ता, व) ।
६ वोद्धव्वा (क, ता, म) ।
७ वीयओ (अ, व, स), वितिओ (क) ।
८ प० १७।२ ।
९ ° काले प (अ, क, ता, व, म, स) ।
१० नेरइयाण° (अ, व, स) ।
११ °जोणिससार° (अ, क, ता, व, म), स० पा०— °ससारपुच्छा ।

१०६ [1]•मणुस्ससंसारसंचिट्ठणकाले णं भंते ! कतिविहे पण्णत्ते ?
गोयमा ! तिविहे पण्णत्ते, तं जहा—सुन्नकाले, असुन्नकाले, मिस्सकाले ।।

१०७ देवसंसारसंचिट्ठणकाले णं भंते ! कतिविहे पण्णत्ते ?
गोयमा ! तिविहे पण्णत्ते, तं जहा—सुन्नकाले, असुन्नकाले, मिस्सकाले° ।।

१०८ एतस्स णं भंते ! नेरइयसंसारसंचिट्ठणकालस्स—सुन्नकालस्स, असुन्नकालस्स, मीसकालस्स[2] य कयरे कयरेहिंतो अप्पे वा ? बहुए वा ? तुल्ले वा ? विसेसाहिए वा ?
गोयमा ! सव्वत्थोवे असुन्नकाले, मिस्सकाले अणंतगुणे, सुन्नकाले अणंतगुणे ।।

१०९ तिरिक्खजोणियाणं सव्वत्थोवे असुन्नकाले, मिस्सकाले अणंतगुणे ।।

११० मणुस्स-देवाण य[3] •सव्वत्थोवे असुन्नकाले, मिस्सकाले अणंतगुणे, सुन्नकाले अणंतगुणे ।।

१११ एयस्स णं भंते ! नेरइयसंसारसंचिट्ठणकालस्स[4], •तिरिक्खजोणियसंसारसंचिट्ठणकालस्स, मणुस्ससंसारसंचिट्ठणकालस्स, देवसंसारसंचिट्ठणकालस्स कयरे कयरेहिंतो अप्पे वा ? बहुए वा ? तुल्ले वा ?° विसेसाहिए वा ?
गोयमा ! सव्वत्थोवे मणुस्ससंसारसंचिट्ठणकाले, नेरइयसंसारसंचिट्ठणकाले असंखेज्जगुणे, देवसंसारसंचिट्ठणकाले असंखेज्जगुणे, तिरिक्खजोणियसंसारसंचिट्ठणकाले अणंतगुणे ।।

अंतकिरिया-पदं

११२ जीवे णं भंते ! अंतकिरियं करेज्जा ?
गोयमा ! अत्थेगइए करेज्जा, अत्थेगइए नो करेज्जा । अंतकिरियापयं[5] नेयव्वं ।

११३ अह भंते ! असंजयभवियदव्वदेवाणं, अविराहियसंजमाणं, विराहियसंजमाणं, अविराहियसंजमासंजमाणं, विराहियसंजमासंजमाणं, असण्णीणं, तावसाणं, कंदप्पियाणं, चरग-परिव्वायगाणं, किब्विसियाणं, तेरिच्छियाणं[6], आजीवियाणं आभिओगियाणं[7], सलिंगीणं दंसणवावण्णगाणं—एतेसि णं देवलोगेसु उववज्जमाणाणं कस्स कहिं उववाए पण्णत्ते ?
गोयमा ! असंजयभवियदव्वदेवाणं जहण्णेणं भवणवासीसु, उक्कोसेणं उवरिमगेवेज्जएसु । अविराहियसंजमाणं जहण्णेणं सोहम्मे कप्पे, उक्कोसेणं सव्वट्ठसिद्धे विमाणे । विराहियसंजमाणं जहण्णेणं भवणवासीसु, उक्कोसेणं सोहम्मे कप्पे ।

---

१ सं० पा०—मणुस्साण य देवाण य जहा नेरइयाणं ।
२ मीसा° (ता, ब, म) ।
३ सं० पा०—य जहा नेरइयाणं ।
४ सं० पा०—°कालस्स जाव देवसंसार जाव विसेसाहिए ।
५ प० २० ।
६ तेरच्छियाण (अ, ब, स) ।
७ आभियोगियाण (अ, ब, म), आभोगियाण (स) ।

अविराहियसजमासजमाण जहण्णेण सोहम्मे कप्पे, उक्कोसेण अच्चुए कप्पे। विराहियसजमासजमाण जहण्णेण भवणवासीसु, उक्कोसेण जोइसिएसु। असण्णीण जहण्णेण भवणवासीसु, उक्कोसेण वाणमतरेसु।

अवसेसा सव्वे जहण्णेण भवणवासीसु, उक्कोसेण[1] वोच्छामि—

तावसाण जोतिसिएसु, कदप्पियाण सोहम्मे कप्पे, चरग-परिव्वायगाण बभलोए कप्पे, किब्विसियाण लंतगे कप्पे, तेरिच्छियाण सहस्सारे कप्पे, आजीवियाण अच्चुए कप्पे, आभिओगियाण अच्चुए कप्पे, सलिगीण दसणवावन्नगाण उवरिमगेविज्जएसु ॥

असण्णि-आउय-पदं

११४ कतिविहे ण भते ! असण्णिआउए पण्णत्ते ?

गोयमा ! चउव्विहे असण्णिआउए पण्णत्ते, त जहा—नेरइयअसण्णिआउए[2], तिरिक्खजोणियअसण्णिआउए, मणुस्सअसण्णिआउए, देवअसण्णिआउए ॥

११५ असण्णी ण भते ! जीवे कि नेरइयाउय पकरेइ ? तिरिक्खजोणियाउय पकरेइ ? मणुस्साउय पकरेइ ? देवाउय पकरेइ ?

हता गोयमा ! नेरइयाउय पि पकरेइ, तिरिक्खजोणियाउय पि पकरेइ, मणुस्साउय पि पकरेइ, देवाउय पि पकरेइ।

नेरइयाउय पकरेमाणे जहण्णेण दस वाससहस्साइ, उक्कोसेण पलिओवमस्स असखेज्जइभाग पकरेइ।

तिरिक्खजोणियाउय पकरेमाणे जहण्णेण अतोमुहुत्त, उक्कोसेण पलिओवमस्स असंखेज्जइभाग पकरेइ।

मणुस्साउय[3] •पकरेमाणे जहण्णेण अतोमुहुत्त, उक्कोसेण पलिओवमस्स असखेज्जइभाग पकरेइ।

देवाउय पकरेमाणे जहण्णेण दस वाससहस्साइ, उक्कोसेण पलिओवमस्स असखेज्जइभाग पकरेइ° ॥

११६ एयस्स ण भते ! नेरइयअसण्णिआउयस्स, तिरिक्खजोणियअसण्णिआउयस्स, मणुस्सअसण्णिआउयस्स, देवअसण्णिआउयस्स कयरे[4] •कयरेहिंतो अप्पे वा ? बहुए वा ? तुल्ले वा° ? विसेसाहिए वा ?

गोयमा ! सव्वत्थोवे देवअसण्णिआउए, मणुस्सअसण्णिआउए असखेज्जगुणे[5], तिरिक्खजोणियअसण्णिआउए असखेज्जगुणे, नेरइयअसण्णिआउए असखेज्जगुणे।

११७ सेव भते ! सेव भते[6] !

---

१. उक्कोसग (क, ता, ब, म, स)।
२ नेरइयस्स ° (ता)।
३ स० पा०—मणुस्साउए वि एव चेव, देवा जहा नेरइया।
४ स० पा०—कयरे जाव विसेसाहिए वा।
५ सखेज्ज° (अ, क, ब, म)।
६ भ० १।५१।

तइओ उद्देसो

कंखामोहणिज्ज-पदं

११८ जीवाण भते ! कखामोहणिज्जे कम्मे कडे ?
हता कडे ।।

११९ से भते ! किं १ देसेण देसे कडे ? २ देसेण सव्वे कडे ? ३ सव्वेण देसे कडे ? ४ सव्वेण सव्वे कडे ?
गोयमा ! १ नो देसेण देसे कडे २ नो देसेण सव्वे कडे ३ नो सव्वेण देसे कडे ४. सव्वेण सव्वे कडे ।।

१२० नेरइयाण भते ! कखामोहणिज्जे कम्मे कडे ?
हता कडे[1] ।।

१२१. •से भते ! किं १. देसेण देसे कडे ? २ देसेण सव्वे कडे ? ३ सव्वेण देसे कडे ? ४ सव्वेण सव्वे कडे ?
गोयमा ! १ नो देसेणं देसे कडे २ नो देसेण सव्वे कडे ३ नो सव्वेण देसे कडे° ४ सव्वेण सव्वे कडे ।।

१२२. एवं जाव[2] वेमाणियाण दडओ भाणियव्वो ।।

१२३. जीवा ण भते ! कखामोहणिज्जं कम्म करिसु ?
हंता करिंसु ।।

१२४ त भते ! किं १ देसेणं देस करिंसु ? २ देसेण सव्व करिंसु ? ३. सव्वेण देस करिसु ? ४ सव्वेणं सव्व करिंसु ?
गोयमा ! १ नो देसेण देस करिंसु २ नो देसेण सव्वं करिंसु ३. नो सव्वेण देस करिंसु । ४ सव्वेण सव्व करिसु ।।

१२५ एएण अभिलावेण दडओ भाणियव्वो, जाव[3] वेमाणियाण ।।

१२६ एवं करेति । एत्थ वि दडओ जाव[4] वेमाणियाणं ।।

१२७ एव करिस्सति । एत्थ वि दडओ जाव[5] वेमाणियाण ।।

१२८ एव चिए, चिणिसु, चिणति, चिणिस्सति । उवचिए, उवचिणिसु, उवचिणति, उवचिणिस्सति । उदीरेसु, उदीरेति, उदीरिस्सति । वेदेसु, वेदेति, वेदिस्सति । निज्जरेसु, निज्जरेति, निज्जरिस्सति ।

संगहणी-गाहा

कड-चिय-उवचिय, उदीरिया वेदिया य निज्जिणणा ।
आदितिए चउभेदा, तियभेदा पच्छिमा तिण्णि ।।१।।

---

१ स० पा०—कडे जाव सव्वेण ।
२. पू० प० २ ।
३, ४, ५ पू० प० २ ।

१२९. जीवा ण भते ! कखामोहणिज्ज कम्मं वेदेति ?
हता वेदेति ॥

१३० कहण्ण[1] भते ! जीवा कखामोहणिज्ज कम्म वेदेति ?
गोयमा ! तेहि तेहि कारणेहि सकिया, कखिया, वितिगिछिया[2], भेदसमावन्ना, कलुससमावन्ना—एव खलु जीवा कखामोहणिज्ज कम्म वेदेति ॥

सद्धा-पद

१३१ से नूण भते ! तमेव सच्च णीसक, ज जिणेहि पवेइय ?
हता गोयमा ! तमेव सच्च णीसक, ज जिणेहि पवेइय ॥

१३२ से नूण भते ! एव मण धारेमाणे, एव पकरेमाणे, एव चिट्ठेमाणे, एव सवरेमाणे आणाए आराहए भवति ?
हता गोयमा ! एव मण धारेमाणे[3] •एव पकरेमाणे, एव चिट्ठेमाणे, एव सवरेमाणे आणाए आराहए° भवति ॥

अत्थि-नत्थि-पद

१३३ से नूण भते ! अत्थित्त अत्थित्ते परिणमइ ? नत्थित्त नत्थित्ते परिणमइ ?
हता गोयमा[4] ! •अत्थित्त अत्थित्ते परिणमइ । नत्थित्त नत्थित्ते° परिणमइ ।

१३४ 'ज ण'[5] भते ! अत्थित्त अत्थित्ते परिणमइ, नत्थित्त नत्थित्ते परिणमइ, त कि पयोगसा ? वीससा ?
गोयमा ! पयोगसा वि त [अत्थित्त अत्थित्ते परिणमइ, नत्थित्त नत्थित्ते परिणमइ][6] ।
वीससा वि त [अत्थित्त अत्थित्ते परिणमइ, नत्थित्त नत्थित्ते परिणमइ][7] ॥

१३५ जहा ते भते ! अत्थित्त अत्थित्ते परिणमइ, तहा ते नत्थित्त नत्थित्ते परिणमइ ? जहा ते नत्थित्त नत्थित्ते परिणमइ, तहा ते अत्थित्त अत्थित्ते परिणमइ ?
हता गोयमा ! जहा मे अत्थित्त अत्थित्ते परिणमइ, तहा मे नत्थित्त नत्थित्ते परिणमइ ।
जहा मे नत्थित्त नत्थित्ते परिणमइ, तहा मे अत्थित्त अत्थित्ते परिणमइ ॥

१३६. से नूण भते ! अत्थित्त अत्थित्ते गमणिज्ज ? [8]•नत्थित्त नत्थित्ते गमणिज्ज ?
हता गोयमा ! अत्थित्त अत्थित्ते गमणिज्ज । नत्थित्त नत्थित्ते गमणिज्ज ॥

---

१ कहण (क), कहण (ब, स) ।
२ वितिगछिया (अ, ब, स), वितिगिच्छिता (क), वितिकिंछिगा (म) ।
३ स० पा०—धारेमाणे जाव भवति ।
४ स० पा०—गोयमा जाव परिणमइ ।
५ त (अ, ब, स), × (ता) ।
६, ७ कोष्ठकवर्त्तिपाठ व्याख्याशोस्ति ।
८. स० पा०—जहा परिणमइ दो आलावगा तहा गमणिज्जेण वि दो आलावगा भाणियव्वा जाव तहा ।

१३७ ज ण भते ! अत्थित्त अत्थित्ते गमणिज्ज, नत्थित्त नत्थित्ते गमणिज्ज, त किं पयोगसा ? वीससा ?
गोयमा ! पयोगसा वि त [अत्थित्त अत्थित्ते गमणिज्ज, नत्थित्त नत्थित्ते गमणिज्ज] ।
वीससा वि त [अत्थित्त अत्थित्ते गमणिज्ज, नत्थित्त नत्थित्ते गमणिज्ज] ॥

१३८ जहा ते भते ! अत्थित्त अत्थित्ते गमणिज्ज, तहा ते नत्थित्त नत्थित्ते गमणिज्ज ? जहा ते नत्थित्त नत्थित्ते गमणिज्ज, तहा ते अत्थित्त अत्थित्ते गमणिज्ज ?
हता गोयमा ! जहा मे अत्थित्त अत्थित्ते गमणिज्ज, तहा मे नत्थित्त नत्थित्ते गमणिज्ज ।
जहा मे नत्थित्त नत्थित्ते गमणिज्ज°, तहा मे अत्थित्त अत्थित्ते गमणिज्ज ॥

भगवओ समता-पदं

१३९ जहा ते भते ! एत्थ गमणिज्ज, तहा ते इह गमणिज्ज ? जहा ते इह गमणिज्जं, तहा ते एत्थ गमणिज्ज ?
हता गोयमा ! जहा मे एत्थ गमणिज्ज[1], °तहा मे इह गमणिज्जं । जहा मे इह गमणिज्ज°, तहा मे एत्थ गमणिज्ज ॥

कखामोहणिज्जस्स बधादि-पद

१४० जीवा ण भते ! कखामोहणिज्ज कम्म वधति ?
हता वधति ॥

१४१ कहण्ण[2] भते ! जीवा कखामोहणिज्ज कम्म वधति ?
गोयमा ! पमादपच्चया, जोगनिमित्त[3] च ॥

१४२ से ण भते ! पमादे किंपवहे[4] ?
गोयमा ! जोगप्पवहे ॥

१४३. से ण भते ! जोए किंपवहे ?
गोयमा ! वीरियप्पवहे ॥

१४४. से णं भते ! वीरिए किंपवहे ?
गोयमा ! सरीरप्पवहे ॥

१४५ से ण भते ! सरीरे किंपवहे ?
गोयमा ! जीवप्पवहे ॥

१४६ एव सति अत्थि उट्ठाणेइ वा, कम्मेइ वा, वलेइ वा, वीरिएइ वा, पुरिसक्कार-परक्कमेइ वा ॥

---

१. स० पा०—गमणिज्ज जाव तहा ।
२. कह ण (अ) ।
३ °निमित्तय (क) ।
४ किंपभवे (क, वृपा) सर्वत्र ।

१४७ से नूण भंते ! अप्पणा चेव उदीरेति ? अप्पणा चेव गरहति ? अप्पणा चेव सवरेति[1] ?
हता गोयमा ! अप्पणा चेव[2] •उदीरेति। अप्पणा चेव गरहति। अप्पणा चेव संवरेति° ॥

१४८ 'ज ण'[3] भते ! अप्पणा चेव उदीरेति, अप्पणा चेव गरहति, अप्पणा चेव सवरेति, त कि—१. उदिण्ण उदीरेति ? २ अणुदिण्ण उदीरेति ? ३ अणुदिण्ण उदीरणाभविय कम्म उदीरेति ? ४. उदयाणतरपच्छाकड कम्म उदीरेति ?
गोयमा ! १. नो उदिण्ण उदीरेति। २ नो अणुदिण्णं उदीरेति। ३ अणुदिण्ण उदीरणाभवियं कम्म उदीरेति। ४ नो उदयाणतरपच्छाकड[4] कम्म उदीरेति ॥

१४९ ज ण भते ! अणुदिण्ण उदीरणाभविय कम्म उदीरेति, त कि उट्ठाणेण, कम्मेण, वलेण, वीरिएण, पुरिसवकार-परवक्कमेण अणुदिण्ण उदीरणाभविय कम्म उदीरेति ? उदाहु त अणुट्ठाणेण, अकम्मेण, अवलेण, अवीरिएण, अपुरिसवकार-परक्कमेण अणुदिण्ण उदीरणाभविय कम्म उदीरेति ?
गोयमा ! त उट्ठाणेण वि, कम्मेण वि, बलेण वि, वीरिएण वि, पुरिसक्कार-परक्कमेण वि अणुदिण्ण उदीरणाभविय कम्म उदीरेति। णो त अणुट्ठाणेण, अकम्मेण, अबलेण, अवीरिएण, अपुरिसक्कारपरक्कमेण अणुदिण्ण उदीरणा-भविय कम्म उदीरेति ॥

१५० एव सति अत्थि उट्ठाणेइ वा, कम्मेइ वा, बलेइ वा, वीरिएइ वा, पुरिसक्कार-परक्कमेइ वा ॥

१५१ से नूण भते ! अप्पणा चेव उवसामेइ ? अप्पणा चेव गरहइ ? अप्पणा चेव सवरेइ ?
हता गोयमा ! [5]•अप्पणा चेव उवसामेइ। अप्पणा चेव गरहइ। अप्पणा चेव सवरेइ ॥

---

१. सवरइ (अ, व, म, स)।
२ स० पा०—त चेव उच्चारेतव्व।
३ त (अ, क, ता, व, म, स), क्वचित्प्रयुक्त-प्रत्याधारेण स्वीकृतोऽसौ पाठ ।
४ उदयअणतर° (अ, क, ता, व, स)।
५ स० पा०—एत्थ वि तह चेव भाणियव्व, नवर अणुदिण्ण उवसामेइ सेसा पडिसेहे-यव्वा तिण्णि। ज त भते ! अणुदिण्ण उवसामेइ त कि उट्ठाणेण जाव पुरिसक्कार-परक्कमे इ वा। से नूण भते ! अप्पणा चेव वेदेइ अप्पणा चेव गरहइ एत्थ वि सच्चेव परिवाडी, नवर उदिण्ण वेदेइ नो अणुदिण्ण वेदेइ एव जाव पुरिसक्कार-परक्कमे इ वा। से नूण भते ! अप्पणा चेव निज्जरेइ अप्प° एत्थ वि सच्चेव परिवाडी, नवर उदयअणतरपच्छा-कड कम्म निज्जरेइ एव जाव परक्कमेइ वा।

१५२. जं णं भंते ! अप्पणा चेव उवसामेइ, अप्पणा चेव गरहति, अप्पणा चेव संवरेति, तं किं—१. उदिण्णं उवसामेइ ? २. अणुदिण्णं उवसामेइ ? ३. अणुदिण्णं उदीरणाभवियं कम्मं उवसामेइ ? ४. उदयाणंतरपच्छाकडं कम्मं उवसामेइ ?

गोयमा ! १. नो उदिण्णं उवसामेइ। २. अणुदिण्णं उवसामेइ। ३. नो अणुदिण्णं उदीरणाभवियं कम्मं उवसामेइ। ४. नो उदयाणंतरपच्छाकडं कम्मं उवसामेइ॥

१५३. जं णं भंते ! अणुदिण्णं उवसामेइ, तं किं उट्ठाणेणं, कम्मेणं, बलेणं, वीरिएणं, पुरिसक्कार-परक्कमेणं अणुदिण्णं उवसामेइ ? उदाहु तं अणुट्ठाणेणं, अकम्मेणं, अबलेणं, अवीरिएणं, अपुरिसक्कारपरक्कमेणं अणुदिण्णं उवसामेइ ?

गोयमा ! तं उट्ठाणेण वि, कम्मेण वि, बलेण वि, वीरिएण वि, पुरिसक्कार-परक्कमेण वि अणुदिण्णं उवसामेइ। णो तं अणुट्ठाणेणं, अकम्मेणं, अबलेणं, अवीरिएणं, अपुरिसक्कारपरक्कमेणं अणुदिण्णं उवसामेइ॥

१५४. एवं सति अत्थि उट्ठाणेइ वा, कम्मेइ वा, बलेइ वा, वीरिएइ वा, पुरिसक्कार-परक्कमेइ वा॥

१५५. से नूणं भंते ! अप्पणा चेव वेदेति ? अप्पणा चेव गरहति ?

हंता गोयमा ! अप्पणा चेव वेदेति। अप्पणा चेव गरहति॥

१५६. जं णं भंते ! अप्पणा चेव वेदेति, अप्पणा चेव गरहति तं किं—१. उदिण्णं वेदेति ? २. अणुदिण्णं वेदेति ? ३. अणुदिण्णं उदीरणाभवियं कम्मं वेदेति ? ४. उदयाणंतरपच्छाकडं कम्मं वेदेति ?

गोयमा ! १. उदिण्णं वेदेति। २. नो अणुदिण्णं वेदेति। ३. नो अणुदिण्णं उदीरणाभवियं कम्मं वेदेति। ४. नो उदयाणंतरपच्छाकडं कम्मं वेदेति॥

१५७. जं णं भंते ! उदिण्णं वेदेति तं किं उट्ठाणेणं, कम्मेणं, बलेणं, वीरिएणं, पुरिसक्कार-परक्कमेणं उदिण्णं वेदेति ? उदाहु तं अणुट्ठाणेणं, अकम्मेणं, अबलेणं, अवीरिएणं, अपुरिसक्कारपरक्कमेणं उदिण्णं वेदेति ?

गोयमा ! तं उट्ठाणेण वि, कम्मेण वि, बलेण वि, वीरिएण वि, पुरिसक्कार-परक्कमेण वि उदिण्णं वेदेति। नो तं अणुट्ठाणेणं, अकम्मेणं, अबलेणं, अवीरिएणं, अपुरिसक्कारपरक्कमेणं उदिण्णं वेदेति॥

१५८. एवं सति अत्थि उट्ठाणेइ वा, कम्मेइ वा, बलेइ वा, वीरिएइ वा, पुरिसक्कार-परक्कमेइ वा॥

१५९. से नूणं भंते ! अप्पणा चेव निज्जरेति ? अप्पणा चेव गरहति ?

हंता गोयमा ! अप्पणा चेव निज्जरेति। अप्पणा चेव गरहति॥

१६० ज ण भते ! अप्पणा चेव निज्जरेति, अप्पणा चेव गरहति, त कि—
१ उदिण्ण निज्जरेति ? २ अणुदिण्ण निज्जरेति ? ३. अणुदिण्ण उदीरणाभविय कम्म निज्जरेति ? ४. उदयाणतरपच्छाकड कम्म निज्जरेति ?
गोयमा ! १ नो उदिण्ण निज्जरेति। २. नो अणुदिण्ण निज्जरेति। ३. नो अणुदिण्ण उदीरणाभविय कम्म निज्जरेति। ४ उदयाणतरपच्छाकड कम्म निज्जरेति ।।

१६१ ज ण भते ! उदयाणतरपच्छाकड कम्म निज्जरेति त कि उट्ठाणेण, कम्मेण, बलेण, वीरिएण, पुरिसक्कार-परक्कमेण उदयाणतरपच्छाकड कम्म निज्जरेति ? उदाहु त अणुट्ठाणेण, अकम्मेण, अबलेण, अवीरिएण, अपुरिसक्कार-परक्कमेण उदयाणतरपच्छाकड कम्म निज्जरेति ?
गोयमा ! त उट्ठाणेण वि, कम्मेण वि, बलेण वि, वीरिएण वि, पुरिसक्कार-परक्कमेण वि उदयाणतरपच्छाकड कम्म निज्जरेति। णो त अणुट्ठाणेण, अकम्मेण, अबलेण, अवीरिएण, अपुरिसक्कारपरक्कमेण उदयाणतरपच्छाकड कम्म निज्जरेति ।।

१६२ एव सति अत्थि उट्ठाणेइ वा, कम्मेइ वा, बलेइ वा, वीरिएइ वा, पुरिसक्कार°-परक्कमेइ वा ।।

१६३ नेरइया ण भते ! कखामोहणिज्ज कम्म वेदेति ?
जहा[1] ओहिया जीवा तहा नेरइया जाव[2] थणियकुमारा ।।

१६४ पुढविक्काइया ण भते ! कखामोहणिज्जं कम्म वेदेति ?
हता वेदेति ।।

१६५ कहण्ण भते ! पुढविक्काइया कखामोहणिज्ज कम्म वेदेति ?
गोयमा ! तेसि ण जीवाण णो एव तक्का इ वा, सण्णा इ वा, पण्णा इ वा, मणे इ वा, वई ति वा—अम्हे ण कखामोहणिज्ज कम्म वेदेमो, वेदेति पुण ते ।।

१६६ से नूण भते ! तमेव सच्च नीसक, ज जिणेहि पवेइय ?
हता गोयमा ! तमेव सच्च नीसक, ज जिणेहि पवेइय।
सेस त चेव जाव[3] अत्थि उट्ठाणेइ वा, कम्मेइ वा, बलेइ वा, वीरिएइ वा, पुरिसक्कार-परक्कमेइ वा ।।

१६७ एव जाव[4] चउरिंदिया ।।

१६८ पचिंदियतिरिक्खजोणिया जाव[5] वेमाणिया जहा[6] ओहिया जीवा ।।

---

१. भ० १।१२६-१६२।
२ पू० प० २।
३ भ० १।१३२-१६२।
४ पू० प० २।
५ पू० प० २।
६. भ० १।१२६-१६२।

१६९ अत्थि णं भंते ! समणा वि निग्गंथा कंखामोहणिज्जं कम्मं वेएंति ?
'हंता अत्थि'[1] ॥

१७० कहण्णं भंते ! समणा निग्गंथा कंखामोहणिज्जं कम्मं वेदेंति ?
गोयमा ! तेहिं तेहिं नाणंतरेहिं, दंसणंतरेहिं[2], चरित्तंतरेहिं[3], लिंगंतरेहिं, पवयणंतरेहिं, पावयणंतरेहिं, कप्पंतरेहिं, मग्गंतरेहिं, मतंतरेहिं[4], भंगंतरेहिं, णयंतरेहिं, नियमंतरेहिं, पमाणंतरेहिं संकिता कंखिता वितिकिंच्छिता[5] भेदसमावन्ना कलुससमावन्ना—एवं खलु समणा निग्गंथा कंखामोहणिज्जं कम्मं वेदेंति ॥

१७१ से नूणं भंते ! तमेव सच्चं नीसंकं, जं जिणेहिं पवेदितं ?
हंता गोयमा ! तमेव सच्चं नीसंकं, जं जिणेहिं पवेदितं ॥

१७२ एवं जाव[6] अत्थि उट्ठाणेइ वा, कम्मेइ वा, बलेइ वा, वीरिएइ वा, पुरिसक्कार-परक्कमेइ वा ॥

१७३ सेवं भंते ! सेवं भंते[7] !

चउत्थो उद्देसो

कम्म-पदं

१७४ कति णं भंते ! कम्मप्पगडीओ पण्णत्ताओ ?
गोयमा ! अट्ठ कम्मप्पगडीओ पण्णत्ताओ, कम्मप्पगडीए पढमो उद्देसो नेयव्वो जाव[8]—अणुभागो समत्तो ।

संगहणी-गाहा

कति पगडी ? कह[9] बंधति ? कतिहिं व ठाणेहिं बंधती पगडी ?
कति वेदेति व पगडी ? अणुभागो कतिविहो कस्स ? ॥१॥

उवट्ठावण-अवक्कमण-पदं

१७५ जीवे णं भंते ! मोहणिज्जेणं कडेणं कम्मेणं उदिण्णेणं उवट्ठाएज्जा ?
हंता उवट्ठाएज्जा[10] ॥

---

१ हंतत्थि (ता) ।
२. दरिसणंतरेहिं (क) ।
३ चरित्तंतरेहिं तित्थंतरेहिं (क) ।
४. मतंतरेहिं (अ, ब), × (क) ।
५. वितिकिंछिया (ता) ।
६ भ० १।१३२-१६२ ।
७ भ० १।५१ ।
८ प० २३।१ ।
९ किह (अ, क, ता, म), कहिं (स) ।
१०. उवट्ठाएज्ज (क, ता) ।

१७६ से भते ! कि वीरियत्ताए उवट्ठाएज्जा ? अवीरियत्ताए उवट्ठाएज्जा ?
गोयमा ! वीरियत्ताए उवट्ठाएज्जा । णो अवीरियत्ताए उवट्ठाएज्जा ॥

१७७ जइ वीरियत्ताए उवट्ठाएज्जा, कि—वालवीरियत्ताए उवट्ठाएज्जा ? पडिय-वीरियत्ताए उवट्ठाएज्जा ? बालपडियवीरियत्ताए उवट्ठाएज्जा ?
गोयमा ! वालवीरियत्ताए उवट्ठाएज्जा । नो पडियवीरियत्ताए उवट्ठाएज्जा । नो वालपडियवीरियत्ताए उवट्ठाएज्जा ॥

१७८ जीवे ण भते ! मोहणिज्जेण कडेण कम्मेण उदिण्णेण अवक्कमेज्जा ?
हता अवक्कमेज्जा ॥

१७९ से भते[1] ! •कि वीरियत्ताए अवक्कमेज्जा ? अवीरियत्ताए अवक्कमेज्जा ?
गोयमा ! वीरियत्ताए अवक्कमेज्जा । नो अवीरियत्ताए अवक्कमेज्जा ॥

१८० जइ वीरियत्ताए अवक्कमेज्जा, कि—वालवीरियत्ताए अवक्कमेज्जा ? पडिय-वीरियत्ताए अवक्कमेज्जा ?° वालपडियवीरियत्ताए अवक्कमेज्जा ?
गोयमा ! 'वालवीरियत्ताए अवक्कमेज्जा । नो पडियवीरियत्ताए अवक्क-मेज्जा । सिय वालपडियवीरियत्ताए अवक्कमेज्जा'[2] ॥

१८१. [3]•जीवे ण भते ! मोहणिज्जेण कडेण कम्मेण उवसतेण उवट्ठाएज्जा ?
हता उवट्ठाएज्जा ॥

१८२. से भते ! कि वीरियत्ताए उवट्ठाएज्जा ? अवीरियत्ताए उवट्ठाएज्जा ?
गोयमा ! वीरियत्ताए उवट्ठाएज्जा । नो अवीरियत्ताए उवट्ठाएज्जा ॥

१८३ जइ वीरियत्ताए उवट्ठाएज्जा, कि—वालवीरियत्ताए उवट्ठाएज्जा ? पडिय-वीरियत्ताए उवट्ठाएज्जा ? वालपडियवीरियत्ताए उवट्ठाएज्जा ?
गोयमा ! 'नो वालवीरियत्ताए उवट्ठाएज्जा । पडियवीरियत्ताए उवट्ठाएज्जा । नो वालपडियवीरियत्ताए उवट्ठाएज्जा'[4] ॥

१८४. जीवे ण भते ! मोहणिज्जेण कडेण कम्मेण उवसतेण अवक्कमेज्जा ?
हता अवक्कमेज्जा ॥

१८५ से भते ! कि वीरियत्ताए अवक्कमेज्जा ? अवीरियत्ताए अवक्कमेज्जा ?
गोयमा ! वीरियत्ताए अवक्कमेज्जा । नो अवीरियत्ताए अवक्कमेज्जा ॥

---

१ स० पा०—भते जाव वालपडियवीरियत्ताए ।

२ वाचनान्तरे त्वेवम्—'वालवीरियत्ताए नो पडियवीरियत्ताए नो वालपडियवीरियत्ताए' (वृ) ।

३. स० पा०—जहा उदिण्णेण दो आलावगा तहा उवसतेण वि दो आलावगा भाणि-यव्वा, नवर उवट्ठाएज्जा पडियवीरियत्ताए अवक्कमेज्जा बालपडियवीरियत्ताए ।

४ वृद्धैस्तु काञ्चिद्वाचनामाश्रित्येद व्याख्यात—मोहनीयेनोपशान्तेन सता न मिथ्यादृष्टि-र्जायते, साधु श्रावको वा भवतीति (वृ) ।

१८६ जइ वीरियत्ताए अवक्कमेज्जा, कि—बालवीरियत्ताए अवक्कमेज्जा ? पडिय-वीरियत्ताए अवक्कमेज्जा ? बालपडियवीरियत्ताए अवक्कमेज्जा ?
गोयमा ! नो बालवीरियत्ताए अवक्कमेज्जा। नो पडियवीरियत्ताए अवक्क-मेज्जा। बालपडियवीरियत्ताए अवक्कमेज्जा° ॥

१८७ से भते ! कि आयाए अवक्कमइ ? अणायाए अवक्कमइ ?
गोयमा ! आयाए अवक्कमइ, नो अणायाए अवक्कमइ—मोहणिज्ज कम्म वेदेमाणे ॥

१८८. से कहमेय भते ! एव ?
गोयमा ! पुव्वि से एय एव रोयइ। इयाणि से एयं एव नो रोयइ—एवं खलु एय एव ॥

कम्ममोक्ख-पद

१८९. से नूण भते ! नेरइयस्स वा, तिरिक्खजोणियस्स वा, मणुस्सस्स[1] वा, देवस्स वा जे कडे पावे कम्मे, नत्थि ण[2] तस्स अवेदइत्ता[3] मोक्खो ?
हता गोयमा ! नेरइयस्स वा, तिरिक्खजोणियस्स वा, मणुस्सस्स वा, देवस्स वा[4] •जे कडे पावे कम्मे, नत्थि ण तस्स अवेदइत्ता° मोक्खो ॥

१९०. से केणट्ठेण भते ! एव वुच्चइ नेरइयस्स वा[5] •तिरिक्खजोणियस्स वा, मणु-स्सस्स वा, देवस्स वा जे कडे पावे कम्मे, नत्थि ण तस्स अवेदइत्ता° मोक्खो ?
एव खलु मए गोयमा ! दुविहे कम्मे पण्णत्ते, त जहा—पदेसकम्मे य, अणु-भागकम्मे य।
तत्थ णं ज ण[6] पदेसकम्म त नियमा वेदेइ। तत्थ ण ज ण अणुभागकम्म त[7] अत्थेगइय वेदेइ, अत्थेगइय णो वेदेइ।
णायमेय अरहया, सुयमेय अरहया, विण्णायमेय अरहया—इम कम्म अय जीवे अब्भोवगमियाए[8] वेदणाए वेदेस्सइ, इम कम्म अय जीवे उवक्कमियाए वेदणाए वेदेस्सइ।
अहाकम्म, अहानिकरण जहा जहा त भगवया दिट्ठ तहा तहा त विप्परि-णमिस्सतीति। से तेणट्ठेण गोयमा ! एव वुच्चइ—नेरइयस्स वा[9], •तिरिक्ख-जोणियस्स वा, मणुस्सस्स वा, देवस्स वा जे कडे पावे कम्मे, नत्थि ण तस्स अवेदइत्ता° मोक्खो ॥

---

१. मणूसस्स (क, ता); मणुसस्स (ब, म, स)।
२. × (अ, स)।
३ अवेदयत्ता (अ, ब), अवेइत्ता (म, स)।
४. स० पा०—वा जाव मोक्खो।
५. स० पा०—वा जाव मोक्खो।
६. त (अ, क, ता, ब, म, स)।
७. × (ता)।
८ अब्भोवमियाए (क)।
९. स० पा०—वा जाव मोक्खो।

गोग्गल-जीवाण तेकालियत्त-पदं

१९१ एस ण भते ! पोग्गले[1] तीत अणत सासय समय भुवीति वत्तव्वं सिया ?
हता गोयमा ! एस ण पोग्गले तीत अणत सासय समय भुवीति वत्तव्व सिया ॥

१९२ एस ण भते ! पोग्गले पडुप्पण्ण सासय समय भवतीति वत्तव्व सिया ?
हता गोयमा ! [2]•एस ण पोग्गले पडुप्पण्ण सासय समय भवतीति वत्तव्व सिया° ॥

१९३ एस ण भते ! पोग्गले अणागय अणत सासय समय भविस्सतीति वत्तव्वं सिया ?
हता गोयमा ! [3]•एस ण पोग्गले अणागय अणत सासय समय भविस्सतीति वत्तव्व सिया° ॥

१९४ [4]•एस ण भते ! खधे तीत अणत सासय समय भुवीति वत्तव्व सिया ?
हता गोयमा ! एस ण खधे तीत अणत सासय समय भुवीति वत्तव्व सिया ॥

१९५ एस ण भते ! खधे पडुप्पण्ण सासय समय भवतीति वत्तव्व सिया ?
हता गोयमा ! एस ण खधे पडुप्पण्ण सासय समय भवतीति वत्तव्व सिया ॥

१९६ एस ण भते ! खधे अणागय अणत सासय समय भविस्सतीति वत्तव्व सिया ?
हता गोयमा ! एस ण खधे अणागय अणत सासय समय भविस्सतीति वत्तव्व सिया ॥

१९७ एस ण भते ! जीवे तीत अणत सासय समय भुवीति वत्तव्व सिया ?
हता गोयमा ! एस ण जीवे तीत अणत सासय समय भुवीति वत्तव्व सिया ॥

१९८. एस ण भते ! जीवे पडुप्पण्ण सासय समय भवतीति वत्तव्व सिया ?
हता गोयमा ! एस ण जीवे पडुप्पण्ण सासय समय भवतीति वत्तव्व सिया ॥

१९९ एस ण भते ! जीवे अणागय अणतं सासय समय भविस्सतीति वत्तव्व सिया ?
हता गोयमा ! एस ण जीवे अणागय अणत सासय समय भविस्सतीति वत्तव्व सिया° ॥

मोक्ख-पदं

२०० छउमत्थे ण भते ! मणूसे[5] तीत अणत सासय समय—केवलेण सजमेण, केवलेण सवरेण, केवलेण बभचेरवासेण, केवलाहि पवयणमायाहिं[6] सिज्झिसु ?

---

१ पोग्गलेति परमाणुरुत्तरत्रस्कन्धग्रहणात् (वृ) ।
२ स० पा०—त चेव उच्चारेयव्व ।
३. स० पा०—त चेव उच्चारेयव्व ।
४, स० पा०—एव खधेण वि तिण्णि आलावगा । एव जीवेण वि तिण्णि आलावगा भाणियव्वा ।
५ मणुस्से (अ, म) ।
६ °मातार्हि (ता, म) ।

बुज्झिसु[1] ? •मुच्चिसु ? परिणिव्वाइसु° ? सव्वदुक्खाण अत करिसु ?
गोयमा ! णो इणट्ठे समट्ठे ।।

२०१ से केणट्ठेण भते ! एव वुच्चइ [2]•छउमत्थे ण मणुस्से तीत अणत सासयं समय —केवलेण सजमेण, केवलेण सवरेण, केवलेण बभचेरवासेण, केवलाहि पवयण-मायाहि नो सिज्झिसु ? नो बुज्झिसु ? नो मुच्चिसु ? नो परिनिव्वाइसु ? नो सव्वदुक्खाण° अत करिसु ?
गोयमा ! जे केइ अतकरा वा अतिमसरीरिया वा—सव्वदुक्खाणं अंत करेसु वा, करेति वा, करिस्सति वा—सव्वे ते उप्पण्णणाण-दसणधरा अरहा जिणा[3] केवली भवित्ता तओ पच्छा 'सिज्झति, बुज्झति, मुच्चति, परिनिव्वायति'[4], सव्वदुक्खाण अंत करेसु वा, करेति वा, करिस्सति वा । से तेणट्ठेणं गोयमा[5] ! •एव वुच्चइ छउमत्थे ण मणुस्से तीत अणत सासय समय—केवलेणं संजमेणं, केवलेणं सवरेण, केवलेण वंभचेरवासेणं, केवलाहि पवयणमायाहि नो सिज्झिसु, नो बुज्झिसु, नो मुच्चिसु, नो परिनिव्वाइसु, नो°सव्वदुक्खाण अत करिसु ।।

२०२. पडुप्पण्णे वि एवं[6] चेव, नवरं—सिज्झति भाणियव्व ।।

२०३. अणागए वि एवं[7] चेव, नवर—सिज्झिस्सति भाणियव्वं ।।

२०४. जहा[8] छउमत्थो तहा आहोहिओ वि, तहा परमाहोहिओ[9] वि । तिण्णि तिण्णि आलावगा भाणियव्वा ।।

२०५. केवली णं भते ! मणूसे तीत अणत सासय समय[10] •सिज्झिसु ? बुज्झिसु ? मुच्चिसु ? परिनिव्वाइसु ? सव्वदुक्खाणं अत करिसु ?
हता गोयमा ! केवली ण मणूसे तीत अणत सासय समय सिज्झिसु, बुज्झिसु, मुच्चिसु, परिनिव्वाइसु, सव्वदुक्खाण अत करिसु ।।

२०६. केवली णं भते ! मणूसे पडुप्पण्णं सासय समय सिज्झंति ? बुज्झति ? मुच्चति ? परिनिव्वायति ? सव्वदुक्खाण अत करेति ?
हता गोयमा ! केवली ण मणूसे पडुप्पण्ण सासय समय सिज्झति, बुज्झति, मुच्चति, परिनिव्वायति, सव्वदुक्खाण अत करेति ।।

---

१ स० पा०—बुज्झिसु जाव सव्व° ।
२. स० पा०—त चेव जाव अत ।
३. जिणे (अ, क, ता, ब, स) ।
४. 'सिज्झती' त्यादिषु चतुर्षु पदेषु वर्त्तमान-निर्देशस्य शेषोपलक्षणत्वात् 'सिज्झिसु सिज्झति सिज्झिस्सती' त्येवमतीतादिनिर्देशो द्रष्टव्य (वृ) ।
५. स० पा०—गोयमा जाव सव्व° ।
६. भ० १।२००, २०१ ।
७ भ० १।२००, २०१ ।
८. भ० १।२००-२०३ ।
९ परमोहिओ (अ, क ता, ब, म, वृपा) ।
१०. स० पा०—समय जाव अत हता सिज्झिसु जाव अते एते तिण्णि आलावगा भाणि-यव्वा । छउमत्थस्स जहा नवर सिज्झिसु सिज्झंति सिज्झिस्सति ।

०७ केवली ण भते ! मणूसे अणागय अणत सासय समयं सिज्झिस्सति ? बुज्झिस्सति ? मुच्चिस्सति ? परिनिव्वाइस्सति ? सव्वदुक्खाण अत करिस्सति ?
हता गोयमा ! केवली ण मणूसे अणागय अणत सासय समय सिज्झिस्सति, बुज्झिस्सति, मुच्चिस्सति, परिनिव्वाइस्सति, सव्वदुक्खाण अंत करिस्सति° ॥

०८ से नूण भते ! तीत अणत सासय समय, पडुप्पण्ण वा सासय समय, अणागय अणत वा सासय समय जे केइ अतकरा वा अतिमसरीरिया वा सव्वदुक्खाण अत करेसु वा, करेति वा, करिस्सति वा, सव्वे ते उप्पण्णणाण-दसणधरा अरहा जिणा केवली भवित्ता तओ पच्छा सिज्झति[1] ? °बुज्झति ? मुच्चति ? परिनिव्वायति ? सव्वदुक्खाण अत करेसु वा ? करेति वा ? करिस्सति वा?°
हता गोयमा ! तीत अणत सासय[2] °समय, पडुप्पण्ण वा सासय समय, अणागय अणत वा सासय समय जे केइ अतकरा वा अतिमसरीरिया वा सव्वदुक्खाण अत करेसु वा, करेति वा, करिस्सति वा, सव्वे ते उप्पण्णणाण-दसणधरा अरहा जिणा केवली भवित्ता तओ पच्छा सिज्झति, बुज्झति, मुच्चति, परिनिव्वायति, सव्वदुक्खाण अत करेसु वा, करेति वा°, करिस्सति वा ॥

२०९ से नूण भते ! उप्पण्णणाण-दसणधरे अरहा जिणे केवली, अलमत्थु त्ति वत्तव्व सिया ?
हता गोयमा ! उप्पण्णणाण-दसणधरे अरहा जिणे केवली अलमत्थु त्ति वत्तव्व सिया ॥

२१० सेव भते ! सेव भते[3] !

पंचमो उद्देसो

पुढवि-पदं

२११. कति ण भते ! पुढवीओ पण्णत्ताओ ?
गोयमा ! सत्त पुढवीओ पण्णत्ताओ, त जहा—रयणप्पभा[4], °सक्करप्पभा, वालुयप्पभा, पकप्पभा, धूमप्पभा, तमप्पभा°, तमतमा ॥

---

१. स० पा०—सिज्झति जाव अत करिस्सति ।
२. स० पा०—सासय जाव करिस्सति ।
३. भ० १।५१ । द्रष्टव्य १।२०१ सूत्रस्य पादटिप्पणम् ।
४. स० पा०—रयणप्पभा जाव तमतमा ।

२१२ इमीसे णं भंते ! रयणप्पभाए पुढवीए कति निरयावाससयसहस्सा पण्णत्ता ?
गोयमा ! तीसं निरयावाससयसहस्सा पण्णत्ता ।

संगहणी-गाहा

तीसा य पन्नवीसा, पन्नरस दसेव या सयसहस्सा ।
तिन्नेगं पचूण, पचेव अणुत्तरा निरया ॥१॥

आवास-पदं

२१३. केवइया णं भंते ! असुरकुमारावाससयसहस्सा पण्णत्ता ?
गोयमा ! चोयट्ठी असुरकुमारावाससयसहस्सा पण्णत्ता ।

संगहणी-गाहा

एवं—

चोयट्ठी[1] असुराणं, चउरासीई य होइ नागाणं ।
बावत्तरि सुवण्णाणं, वाउकुमाराणं छन्नउई ॥१॥
दीव-दिसा-उदहीणं, विज्जुकुमारिंद-थणियमग्गीणं ।
छण्हं पि जुयलयाणं[2], छावत्तरिमो सयसहस्सा ॥२॥

२१४ केवइया णं भंते ! पुढविक्काइयावाससयसहस्सा पण्णत्ता ?
गोयमा ! असंखेज्जा पुढविक्काइयावाससयसहस्सा पण्णत्ता जाव[3] असंखिज्जा जोइसियविमाणावाससयसहस्सा पण्णत्ता ॥

२१५ सोहम्मे णं भंते ! कप्पे कति विमाणावाससयसहस्सा पण्णत्ता ?
गोयमा ! बत्तीसं विमाणावाससयसहस्सा पण्णत्ता ।

संगहणी-गाहा

एवं—

बत्तीसट्ठावीसा, बारस-अट्ठ[4]-चउरो सयसहस्सा ।
पन्ना-चत्तालीसा, छच्च सहस्सा सहस्सारे ॥१॥
आणय-पाणयकप्पे, चत्तारि सयारणच्चुए तिण्णि ।
सत्त विमाणसयाइं, चउसु वि एएसु कप्पेसु ॥२॥
एक्कारसुत्तरं हेट्ठिमए[5] सत्तुत्तरं सयं च मज्झिमए ।
सयमेगं उवरिमए, पंचेव अणुत्तरविमाणा ॥३॥

नेरइयाणं नाणादसासु कोहोवउत्तादिभंग-पदं

१ पुढवी ट्ठिति-ओगाहण-सरीर-संघयणमेव संठाणे ।
लेस्सा दिट्ठी णाणे, जोगुवओगे य दस ठाणा[6] ॥४॥

---

१. चोवट्ठी (क); चोसट्ठी (म, स) ।
२ जुवलयाण (अ, क, ता, व) ।
३. पू० प० २ ।
४ अट्ठ य (क, ता, म) ।
५ हेट्ठिमेसु (क, ता, म), हेट्ठिमएसु (स) ।
६ ठाणे (अ, व) ।

२१६ इमीसे ण भते ! रयणप्पभाए पुढवीए तीसाए निरयावाससयसहस्सेसु एगमेगसि निरयावाससि नेरइयाण केवइया ठितिट्ठाणा पण्णत्ता ?

गोयमा ! असखेज्जा ठितिट्ठाणा पण्णत्ता, त जहा—जहण्णिया ठिती, समयाहिया जहण्णिया ठिती, दुसमयाहिया जहण्णिया ठिती जाव असखेज्ज-समयाहिया जहण्णिया ठिती। तप्पाउग्गुक्कोसिया ठिती ॥

२१७. इमीसे ण भते ! रयणप्पभाए पुढवीए तीसाए निरयावाससयसहस्सेसु एगमेगसि निरयावाससि जहण्णियाए ठितीए वट्टमाणा नेरइया किं—कोहोवउत्ता ? माणोवउत्ता ? मायोवउत्ता ? लोभोवउत्ता ?

गोयमा ! सव्वे वि ताव होज्जा १ कोहोवउत्ता। २ अहवा कोहोवउत्ता य, माणोवउत्ते य। ३ अहवा कोहोवउत्ता य, माणोवउत्ता य[1]। ४ अहवा कोहोवउत्ता य, मायोवउत्ते य। ५ अहवा कोहोवउत्ता य, मायोवउत्ता य[2]। ६ अहवा कोहोवउत्ता य, लोभोवउत्ते य। ७ अहवा कोहोवउत्ता य, लोभोवउत्ता य[3]। ८ अहवा कोहोवउत्ता य, माणोवउत्ते य, मायोवउत्ते य। ९ कोहोवउत्ता य, माणोवउत्ते य, मायोवउत्ता य। १० कोहोवउत्ता य, माणोवउत्ता य, मायोवउत्ते य। ११ कोहोवउत्ता य, माणोवउत्ता य, मायोवउत्ता य[4]। १२ कोहोवउत्ता य, माणोवउत्ते य, लोभोवउत्ते य। १३ कोहोवउत्ता य, माणोवउत्ते य, लोभोवउत्ता य। १४ कोहोवउत्ता य, माणोवउत्ता य, लोभोवउत्ते य। १५. कोहोवउत्ता य, माणोवउत्ता य, लोभोवउत्ता य। १६ कोहोवउत्ता य, मायोवउत्ता य, लोभोवउत्ते य। १७ कोहोवउत्ता य, मायोवउत्ते य, लोभोवउत्ता य। १८ कोहोवउत्ता य, मायोवउत्ता य, लोभोवउत्ते य। १९ कोहोवउत्ता य, मायोवउत्ता य, लोभोवउत्ता य। २०. कोहोवउत्ता य, माणोवउत्ते य,

---

१. 'म' प्रतौ—अतोग्रे एवं माया वि लोभो वि कोहेण भइयव्वो अथवा कोहोवउत्ता य माणोवउत्ते य मायोवउत्ते य पच्छा माणेण लोभेण य पच्छा मायाए लोभेण य पच्छा माणेण मायाए लोभेण य कोहो भणियव्वो ते कोह अमुचता कोह अमुचता एव सत्तावीस भगा णेयव्वा।

२ 'ता' प्रतौ—अतोग्रे एवं सत्तावीस भगा णेतव्वा।

३ 'क', 'व' प्रत्योः—अतोग्रे एव सत्तावीस भगा णेतव्वा।

४ 'अ' प्रतौ—अतोग्रे एव कोहे माणेण लोभेणं चत्तारि भगा ८ एव कोहेणं मायाए लोभेण चत्तारि भगा १२ अहवा कोहोवउत्ता माणोवउत्ते मायोवउत्ते लोभोवउत्ते १ अहवा कोहोवउत्ता माणोवउत्ते मायोवउत्ते लोभोवउत्ता २ अहवा कोहोवउत्ता माणोवउत्ते मायोवउत्ता लोभोवउत्ते ३ अहवा कोहोवउत्ता माणोवउत्ते मायोवउत्ता लोभोवउत्ता ४ अहवा कोहोवउत्ता माणोवउत्ता मायोवउत्ते लोभोवउत्ते ५ अहवा कोहोवउत्ता माणोवउत्ता मायोवउत्ते लोभोवउत्ता ६ अहवा कोहोवउत्ता माणोवउत्ता मायोवउत्ता लोभोवउत्ते य ७ अहवा कोहोवउत्ता माणोवउत्ता मायोवउत्ता लोभोवउत्ता ८ एव सत्तावीस भगा णेयव्वा।

मायोवउत्ते य, लोभोवउत्ते य। २१ कोहोवउत्ता य, माणोवउत्ते य, मायोवउत्ते य, लोभोवउत्ता य। २२ कोहोवउत्ता य, माणोवउत्ते य, मायोवउत्ता य, लोभोवउत्ते य। २३ कोहोवउत्ताय, माणोवउत्ते य, मायोवउत्ता य, लोभोवउत्ता य। २४ कोहोवउत्ता य, माणोवउत्ता य, मायोवउत्ते य, लोभोवउत्ताय। २५ कोहोवउत्ता य, माणोवउत्ता य, मायोवउत्ते य, लोभोवउत्ता य। २६ कोहोवउत्ता य, माणोवउत्ता य, मायोवउत्ता य, लोभोवउत्ते य। २७ कोहोवउत्ता य, माणोवउत्ता य, मायोवउत्ता य, लोभोवउत्ता य॥

२१८ इमीसे ण भते ! रयणप्पभाए पुढवीए तीसाए निरयावाससयसहस्सेगु एगमेगसि निरयावाससि समयाहियाए जहण्णट्ठितीए वट्टमाणा नेरइया कि—कोहोवउत्ता ? माणोवउत्ता ? मायोवउत्ता ? लोभोवउत्ता ?
गोयमा ! कोहोवउत्ते य, माणोवउत्ते य, मायोवउत्ते य, लोभोवउत्ते य। कोहोवउत्ता य, माणोवउत्ता य, मायोवउत्ता य, लोभोवउत्ता य। अहवा कोहोवउत्ते य, माणोवउत्ते य। अहवा कोहोवउत्ते य, माणोवउत्ता य। एव असीतिभगा[1] नेयव्वा।

---

१. १—(८)—१. कोहोवउत्ते २ माणोवउत्ते ३ मायोवउत्ते ४. लोभोवउत्ते ५ कोहोवउत्ता ६ माणोवउत्ता ७ मायोवउत्ता ८. लोभोवउत्ता।
२—(२४)—९. कोहोवउत्ते माणोवउत्ते १०. कोहोवउत्ते माणोवउत्ता ११ कोहोवउत्ता माणोवउत्ते १२ कोहोवउत्ता माणोवउत्ता १३. कोहोवउत्ते मायोवउत्ते १४ कोहोवउत्ते मायोवउत्ता १५ कोहोवउत्ता मायोवउत्ते १६ कोहोवउत्ता मायोवउत्ता १७. कोहोवउत्ते लोभोवउत्ते १८ कोहोवउत्ते लोभोवउत्ता १९. कोहोवउत्ता लोभोवउत्ते २०. कोहोवउत्ता लोभोवउत्ता २१ माणोवउत्ते मायोवउत्ते २२ माणोवउत्ते मायोवउत्ता २३. माणोवउत्ता मायोवउत्ते २४. माणोवउत्ता मायोवउत्ता २५. माणोवउत्ते लोभोवउत्ते २६ माणोवउत्ते लोभोवउत्ता २७. माणोवउत्ता लोभोवउत्ते २८ माणोवउत्ता लोभोवउत्ता २९ मायोवउत्ते लोभोवउत्ते ३० मायोवउत्ते लोभोवउत्ता ३१. मायोवउत्ता लोभोवउत्ते ३२ मायोवउत्ता लोभोवउत्ता।
३—(३२)—

३३ कोहोवउत्ते माणोवउत्ते मायोवउत्ते
३४ कोहोवउत्ते माणोवउत्ते मायोवउत्ता
३५ कोहोवउत्ते माणोवउत्ता मायोवउत्ते
३६ कोहोवउत्ते माणोवउत्ता मायोवउत्ता
३७ कोहोवउत्ता माणोवउत्ते मायोवउत्ते
३८ कोहोवउत्ता माणोवउत्ते मायोवउत्ता
३९. कोहोवउत्ता माणोवउत्ता मायोवउत्ते
४०. कोहोवउत्ता माणोवउत्ता मायोवउत्ता
४१ कोहोवउत्ते माणोवउत्ते लोभोवउत्ते
४२. कोहोवउत्ते माणोवउत्ते लोभोवउत्ता
४३ कोहोवउत्ते माणोवउत्ता लोभोवउत्ते
४४ कोहोवउत्ते माणोवउत्ता लोभोवउत्ता
४५ कोहोवउत्ता माणोवउत्ते लोभोवउत्ते
४६ कोहोवउत्ता माणोवउत्ते लोभोवउत्ता
४७. कोहोवउत्ता माणोवउत्ता लोभोवउत्ते

एव जाव सखेज्जसमयाहियाए ठितीए, असखेज्जसमयाहियाए ठितीए तप्पाउग्गुक्कोसियाए ठितीए सत्तावीस भगा भाणियव्वा[1] ।।

२१९. इमीसे ण भते ! रयणप्पभाए पुढवीए तीसाए निरयावाससयसहस्सेसु एगमेगंसि निरयावाससि नेरइयाण केवइया ओगाहणाठाणा पण्णत्ता ?
गोयमा ! असंखेज्जा ओगाहणाठाणा पण्णत्ता, त जहा—जहण्णिया ओगाहणा, पदेसाहिया जहण्णिया ओगाहणा, दुपदेसाहिया जहण्णिया ओगाहणा जाव असखेज्जपएसाहिया जहण्णिया ओगाहणा । तप्पाउग्गुक्कोसिया ओगाहणा ।।

२२० इमीसे ण भते ! रयणप्पभाए पुढवीए तीसाए निरयावाससयसहस्सेसु एगमेगसि निरयावाससि जहण्णियाए ओगाहणाए वट्टमाणा नेरइया कि कोहोवउत्ता ?
असीइभगा भाणियव्वा[2] जाव सखेज्जपदेसाहिया जहण्णिया ओगाहणा ।

असखेज्जपदेसाहियाए जहण्णियाए ओगाहणाए वट्टमाणाण, तप्पाउग्गुक्कोसि-

---

४८ कोहोवउत्ता माणोवउत्ता लोभोवउत्ता
४९ कोहोवउत्ते मायोवउत्ते लोभोवउत्ते
५०. कोहोवउत्ते मायोवउत्ते लोभोवउत्ता
५१ कोहोवउत्ते मायोवउत्ता लोभोवउत्ते
५२. कोहोवउत्ते मायोवउत्ता लोभोवउत्ता
५३ कोहोवउत्ता मायोवउत्ते लोभोवउत्ते
५४. कोहोवउत्ता मायोवउत्ते लोभोवउत्ता
५५ कोहोवउत्ता मायोवउत्ता लोभोवउत्ते
५६. कोहोवउत्ता मायोवउत्ता लोभोवउत्ता
५७. माणोवउत्ते मायोवउत्ते लोभोवउत्ते
५८ माणोवउत्ते मायोवउत्ते लोभोवउत्ता
५९ माणोवउत्ते मायोवउत्ता लोभोवउत्ते
६०. माणोवउत्ते मायोवउत्ता लोभोवउत्ता
६१. माणोवउत्ता मायोवउत्ते लोभोवउत्ते
६२. माणोवउत्ता मायोवउत्ते लोभोवउत्ता
६३. माणोवउत्ता मायोवउत्ता लोभोवउत्ते
६४. माणोवउत्ता मायोवउत्ता लोभोवउत्ता ।

४—(१६)—६५. कोहोवउत्ते माणोवउत्ते मायोवउत्ते लोभोवउत्ते ६६. कोहोवउत्ते माणोवउत्ते मायोवउत्ते लोभोवउत्ता ६७. कोहोवउत्ते माणोवउत्ते मायोवउत्ता लोभोवउत्ते ६८. कोहोवउत्ते माणोवउत्ते मायोवउत्ता लोभोवउत्ता ६९. कोहोवउत्ते माणोवउत्ता मायोवउत्ते लोभोवउत्ते ७०. कोहोवउत्ते माणोवउत्ता मायोवउत्ते लोभोवउत्ता ७१. कोहोवउत्ते माणोवउत्ता मायोवउत्ता लोभोवउत्ते ७२. कोहोवउत्ते माणोवउत्ता मायोवउत्ता लोभोवउत्ता ७३. कोहोवउत्ता माणोवउत्ते मायोवउत्ते लोभोवउत्ते ७४. कोहोवउत्ता माणोवउत्ते मायोवउत्ते लोभोवउत्ता ७५. कोहोवउत्ता माणोवउत्ते मायोवउत्ता लोभोवउत्ते ७६ कोहोवउत्ता माणोवउत्ते मायोवउत्ता लोभोवउत्ता ७७. कोहोवउत्ता माणवउत्ता मायोवउत्ते लोभोवउत्ते ७८ कोहोवउत्ता माणोवउत्ता मायोवउत्ते लोभोवउत्ता ७९ कोहोवउत्ता माणोवउत्ता मायोवउत्ता लोभोवउत्ते ८०. कोहोवउत्ता माणोवउत्ता मायोवउत्ता लोभोवउत्ता ।

१ भ० १।२१७ ।
२. भ० १।२१८ पादटिप्पण ।

याए ओगाहणाए वट्टमाणाणं[1] सत्तावीस भगा[2] ॥

२२१ इमीसे ण भते ! रयणप्पभाए पुढवीए[3] •तीसाए निरयावाससयसहस्सेसु° एग-मेगंसि निरयावाससि नेरइयाण कइ सरीरया पण्णत्ता ?
गोयमा ! तिण्णि सरीरया पण्णत्ता, त जहा—वेउव्विए, तेयए, कम्मए ॥

२२२. इमीसे ण भते ! रयणप्पभाए जाव[4] वेउव्वियसरीरे वट्टमाणा नेरइया कि कोहो-वउत्ता ? सत्तावीसं भगा[5] ॥

२२३ एएण गमेण तिण्णि सरीरया भाणियव्वा ॥

२२४. इमीसे ण भते ! रयणप्पभाए जाव[6] नेरइयाण सरीरया किसघयणा[7] पण्णत्ता ? गोयमा ! छण्ह सघयणाण असंघयणी नेवट्ठी, नेव छिरा[8], नेव ण्हारूणि। जे पोग्गला अणिट्ठा अकता अप्पिया[9] असुहा अमणुण्णा अमणामा एतेसि[10] सरीर-सघायत्ताए परिणमति ॥

२२५. इमीसे ण भते ? रयणप्पभाए जाव[11] छण्ह सघयणाण असघयणे वट्टमाणा नेर-इया किं कोहोवउत्ता ? सत्तावीस भंगा[12] ॥

२२६. इमीसे ण भते ? रयणप्पभाए जाव[13] नेरइयाण सरीरया किसठिया पण्णत्ता ?
गोयमा[14] ! दुविहा पण्णत्ता, त जहा—भवधारणिज्जा य, उत्तरवेउव्विया य। तत्थ ण जे ते भवधारणिज्जा ते हुडसठिया पण्णत्ता, तत्थ ण जे ते उत्तर-वेउव्विया ते वि हुडसठिया पण्णत्ता ॥

२२७ इमीसे ण भते ! रयणप्पभाए जाव[15] हुडसठाणे वट्टमाणा नेरइया कि कोहो-वउत्ता ? सत्तावीसं भगा[16] ॥

२२८. इमीसे ण भते ! रयणप्पभाए जाव[17] नेरइयाणं कति लेस्साओ पण्णत्ताओ ?
गोयमा ! एगा काउलेस्सा पण्णत्ता ॥

२२९. इमीसे णं भंते ! रयणप्पभाए जाव[18] काउलेस्साए वट्टमाणा नेरइया कि कोहो-वउत्ता ? सत्तावीसं भगा ॥[19]

---

१. वट्टमाणाए नेरइयाण दोसु वि (अ), वट्ट-माणाए जाव नेरइयाए दोसु वि (क, स), वट्टमाणाए दोसु वि (म)।
२. भ० १।२१७।
३. स० पा०—पुढवीए जाव एगमेगसि।
४. भ० १।२१७।
५ भ० १।२१७।
६. भ० १।२१६।
७. किसघयणी (क, ता, स)।
८. च्छिरा (ता, म, स)।
९ अप्पिता (क)।
१० तेतेसिं (क, ता, म)।
११ भ० १।२१७।
१२. भ० १।२१७।
१३. भ० १।२१६।
१४. 'नेरइयाण सरीरया' इति शेष.।
१५ भ० ।२१७।
१६. भ० १।२१७।
१७. भ० १।२१६।
१८. भ० १।२१७।
१९ भ० १।२१७

२३०. इमीसे ण भते ! रयणप्पभाए जाव[1] नेरइया कि सम्मदिट्ठी ? मिच्छदिट्ठी ? सम्मामिच्छदिट्ठी ?
तिण्णि वि ॥

२३१. इमीसे ण भते ! रयणप्पभाए जाव[2] सम्मदसणे वट्टमाणा नेरइया कि कोहोवउत्ता ? सत्तावीस भगा[3] ॥

२३२. एव मिच्छदसणे वि ॥

२३३ सम्मामिच्छदसणे असीतिभगा[4] ॥

२३४. इमीसे ण भते ! रयणप्पभाए जाव[5] नेरइया कि नाणी, अण्णाणी ?
गोयमा ! नाणी वि, अण्णाणी वि। तिण्णि[6] नाणाइ नियमा। तिण्णि अण्णाणाइ भयणाए ॥

२३५. इमीसे ण भते ! रयणप्पभाए जाव[7] आभिनिबोहियनाणे वट्टमाणा नेरइया कि कोहोवउत्ता ? सत्तावीसं भगा[8] ॥

२३६. एव तिण्णि नाणाइ, तिण्णि अण्णाणाइ भाणियव्वाइ ॥

२३७. इमीसे ण भते ! रयणप्पभाए जाव[9] नेरइया कि मणजोगी ? वइजोगी ? कायजोगी ?
तिण्णि वि ॥

२३८. इमीसे ण भते ! रयणप्पभाए जाव[10] मणजोए वट्टमाणा नेरइया कि कोहोवउत्ता ? सत्तावीस भगा[11] ॥

२३९. एव वइजोए ॥

२४०. एव कायजोए ॥

२४१. इमीसे ण भते ! रयणप्पभाए जाव[12] नेरइया कि सागारोवउत्ता ? अणागारोवउत्ता[13] ?
गोयमा ! सागारोवउत्ता वि, अणागारोवउत्ता वि ॥

२४२. इमीसे ण भते ! रयणप्पभाए जाव[14] सागारोवओगे वट्टमाणा नेरइया कि कोहोवउत्ता ? सत्तावीस भगा[15] ॥

---

१. भ० १।२१६।
२. भ० १।२२७।
३ भ० १।२१७।
४. भ० १।२१८ पादटिप्पण।
५. भ० १।२१६।
६. तिण्णि वि (ता)।
७. भ० १।२१७।
८. भ० १।२१७।
९. भ० १।२१६।
१०. भ० १।२१७।
११ भ० १।२१७।
१२ भ० १।२१६।
१३ अणगारोवउत्ता (अ), अणागारोवयुत्ता (ता)।
१४ भ० १।२१७।
१५. भ० १।२१७।

२४३. एव अणागारोवउत्ते वि सत्तावीस भंगा[1] ॥
२४४. एवं सत्त वि पुढवीओ[2] नेयव्वाओ, नाणत्त लेसासु ॥

संगहणी-गाहा

काऊ य दोसु, तइयाए मीसिया, नीलिया चउत्थीए ।
पचमियाए मीसा, कण्हा तत्तो परमकण्हा ॥१॥

असुरकुमारादीण नाणादसासु कोहोवउत्तादि भंग-पदं

२४५ चउसट्ठीए णं भंते ! असुरकुमारावाससयसहस्सेसु एगमेगंसि असुरकुमारावाससि असुरकुमाराणं केवइया ठितिट्ठाणा पण्णत्ता ?
गोयमा ! असंखेज्जा ठितिट्ठाणा पण्णत्ता । जहण्णिया ठिई जहा[3] नेरइया तहा, नवरं—पडिलोमा भगा भाणियव्वा ।
सव्वे वि ताव होज्ज लोभोवउत्ता ।
अहवा लोभोवउत्ता य, मायोवउत्ते य । अहवा लोभोवउत्ता य, मायोवउत्ता य । एएण गमेण नेयव्व जाव[4] थणियकुमारा, 'नवर—नाणत्त जाणियव्व'[5] ॥
२४६. असखेज्जेसु ण भते ! पुढविक्काइयावाससयसहस्सेसु एगमेगसि पुढविक्काइयावाससि पुढविक्काइयाण केवइया ठितिट्ठाणा पण्णत्ता ?
गोयमा ! असखेज्जा ठितिट्ठाणा पण्णत्ता तं जहा—जहण्णिया ठिई जाव[6] तप्पाउग्गुक्कोसिया ठिई ॥
२४७. असखेज्जेसु णं भते ! पुढविक्काइयावाससयसहस्सेसु एगमेगसि पुढविक्काइयावाससि जहण्णियाए ठितीए वट्टमाणा पुढविक्काइया कि कोहोवउत्ता ? माणोवउत्ता ? मायोवउत्ता ? लोभोवउत्ता ?
गोयमा ! कोहोवउत्ता वि, माणोवउत्ता वि, मायोवउत्ता वि, लोभोवउत्ता वि ।
एव पुढविक्काइयाण सव्वेसु वि ठाणेसु अभगय, नवर—तेउलेस्साए असीति-भगा[7] ॥
२४८ एव आउक्काइया वि ॥
२४९. तेउक्काइय—वाउक्काइयाण सव्वेसु वि ठाणेसु अभगय ॥
२५०. वणप्फइकाइया जहा[8] पुढविक्काइया ॥

---

१. भ० १।२१७ ।
२. भ० १।२११ ।
३. भ० १।२१६-२४३ ।
४. पू० प० २ ।
५ तच्च नारकाणामसुरकुमारादीना च सहनन-सस्थानलेश्यासूत्रेपु भवति (वृ) ।
६. भ० १।२१६ ।
७. भ० १।२१८ पादटिप्पण ।
८ भ० १।२४७ ।

२५१. बेइंदिय-तेइंदिय-चउरिंदियाण जेहिं ठाणेहिं नेरइयाण असीइभगा तेहिं ठाणेहि असीइ चेव, नवर—अब्भहिया सम्मत्ते। आभिणिबोहियनाणे, सुय-नाणे य एएहिं असीइभगा। जेहिं ठाणेहि नेरइयाण सत्तावीस भगा तेसु ठाणेसु सव्वेसु अभगय ।।

२५२. पंचिदियतिरिक्खजोणिया जहा नेरइया तहा भाणियव्वा[1], नवर—जेहिं सत्ता-वीस भगा तेहि अभगय कायव्व[2] ।।

२५३ मणुस्सा वि। जेहिं ठाणेहिं नेरइयाण असीतिभगा तेहि ठाणेहिं मणुस्साण वि असीतिभगा भाणियव्वा। जेसु सत्तावीसा तेसु अभगय, नवर—मणुस्साण अब्भहिय जहण्णियाए ठिईए, आहारए य असीतिभगा ।।

२५४. वाणमतर-जोतिस-वेमाणिया जहा भवणवासी, नवर—नाणत्त जाणियव्व ज जस्स जाव अणुत्तरा ।।

२५५. सेव भते ! सेव भते ! त्ति जाव[3] विहरइ ।।

छट्ठो उद्देसो

सूरिय-पद

२५६ जावइयाओ[4] ण भते ! ओवासतराओ उदयते सूरिए चक्खुप्फास हव्वमाग-च्छति, अत्थमते वि य ण सूरिए तावतियाओ चेव ओवासतराओ चक्खुप्फास हव्वमागच्छति ?

हंता गोयमा ! जावइयाओ ण ओवासतराओ उदयते सूरिए चक्खुप्फास हव्वमागच्छति, अत्थमते वि[5] •य ण सूरिए तावतियाओ चेव ओवासतराओ चक्खुप्फास° हव्वमागच्छति ।।

२५७. 'जावइय ण'[6], भते ! खेत्त उदयते सूरिए आयवेण सव्वओ समता ओभासेइ उज्जोएइ तवेइ पभासेइ, अत्थमते वि य ण सूरिए तावइय चेव खेत्त आयवेण सव्वओ समता ओभासेइ ? उज्जोएइ ? तवेइ ? पभासेइ ?

---

१. भ० १।२१६-२४३।
२. कायव्व जत्थ असीति तत्थ असीति चेव (अ)।
३. भ० १।५१।
४ जावइया (अ)।
५ स० पा०—वि जाव हव्व °।
६ जावइयाओ ण (अ), जावइयाण्ण (ता), जावइया ण (म, स), स्वीकृतपाठे 'ण' पदस्य योगे 'जावइय' पदस्य अनुस्वारलोपो जातः।

हता गोयमा ! जावतिय ण खेत्त[1] •उदयते सूरिए आयवेण सव्वओ समता ओभासेइ उज्जोइए तवेइ पभासेइ, अत्थमते वि य ण सूरिए तावइय चेव खेत्त आयवेण सव्वओ समता ओभासेइ उज्जोएइ तवेइ° पभासेइ ॥

२५८. त भते ! कि पुट्ठ ओभासेइ ? अपुट्ठ ओभासेइ[2] ?
•गोयमा ! पुट्ठ ओभासेइ, नो अपुट्ठ ॥

२५६. त भते ! कि ओगाढ ओभासेइ ? अणोगाढ ओभासेइ ?
गोयमा ! ओगाढ ओभासेइ, नो अणोगाढ ॥

२६०. त भते ! कि अणतरोगाढ ओभासेइ ? परपरोगाढ ओभासेइ ?
गोयमा ! अणतरोगाढ ओभासेइ, नो परपरोगाढ ॥

२६१. त भते ! कि अणु ओभासेइ ? बायर ओभासेइ ?
गोयमा ! अणु पि ओभासेइ, बायर पि ओभासेइ ॥

२६२. त भते ! कि उड्ढ ओभासेइ ? तिरियं ओभासेइ ? अहे ओभासेइ ?
गोयमा ! उड्ढ पि ओभासेइ, तिरिय पि ओभासेइ, अहे पि ओभासेइ ॥

२६३. त भते ! कि आइं ओभासेइ ? मज्झे ओभासेइ ? अते ओभासेइ ?
गोयमा ! आइ पि ओभासेइ, मज्झे पि ओभासेइ, अते पि ओभासेइ ॥

२६४. त भते ! कि सविसए ओभासेइ ? अविसए ओभासेइ ?
गोयमा ! सविसए ओभासेइ, नो अविसए ॥

२६५. त भते ! कि आणुपुव्वि ओभासेइ ? अणाणुपुव्वि ओभासेइ ?
गोयमा ! आणुपुव्वि ओभासेइ, नो अणाणुपुव्वि ॥

२६६. त भते ! कइदिसि ओभासेइ ?
गोयमा ! नियमा° छद्दिसि ओभासेइ ॥

२६७. एव—उज्जोवेइ तवेइ पभासेइ ॥

फुसणा-पदं

२६८ से नूणं भते ! सव्वति सव्वावति फुसमाणकालसमयसि जावतिय खेत्त फुसइ तावतिय फुसमाणे पुट्ठे त्ति वत्तव्व सिया ?
हता गोयमा ! सव्वति[3] •सव्वावति फुसमाणकालसमयसि जावतियं खेत्तं फुसइ तावतिय फुसमाणे पुट्ठे त्ति° वत्तव्व सिया ॥

२६९. त[4] भते ! कि पुट्ठं फुसइ ? अपुट्ठ फुसइ ?
गोयमा ! पुट्ठ फुसइ, नो अपुट्ठ जाव[5] नियमा छद्दिसि फुसइ ॥

---

१. स० पा०—खेत्त जाव पभासेइ ।
२. स० पा०—ओभासेइ जाव छद्दिसि ।
३. स० पा०—सव्वति जाव वत्तव्व ।
४. एतत् सूत्र वृत्तौ व्याख्यात नास्ति, प्रकरणानुसारि चापि न दृश्यते, किन्तु सर्वासु प्रतिपु उपलब्धमस्ति ।
५. भ० १।२५८-२६६ ।

२७०. लोयंते भते ! अलोयत फुसइ ? अलोयते वि लोयत फुसइ ?
हंता गोयमा ! लोयते अलोयत फुसइ, अलोयते वि लोयत फुसइ ॥

२७१ त भते ! कि पुट्ठ फुसइ ? अपुट्ठ फुसइ ?
गोयमा ! पुट्ठ फुसइ, नो अपुट्ठ जाव[1] नियमा छद्दिसि फुसइ ॥

२७२ दीवते भते ! सागरत फुसइ ? सागरते वि दीवत फुसइ ?
हता गोयमा ! दीवते सागरत फुसइ, सागरते वि दीवत फुसइ जाव[2] नियमा छद्दिसि फुसइ ॥

२७३ •[3]उदयते भते ! पोयत[4] फुसइ ? पोयते वि उदयत फुसइ ?
हता गोयमा ! उदयते पोयत फुसइ, पोयते उदयत फुसइ जाव[5] नियमा छद्दिसि फुसइ ॥

२७४. छिद्दते भते ! दूसतं फुसइ ? दूसते वि छिद्दत फुसइ ?
हता गोयमा ! छिद्दते दूसत फुसइ, दूसते वि छिद्दत फुसइ जाव[6] नियमा छद्दिसि फुसइ ॥

२७५ छायते भते ! आयवत फुसइ ? आयवते वि छायत फुसइ ?
हता गोयमा ! छायते आयवत फुसइ, आयवते वि छायत फुसइ जाव[7] नियमा॰ छद्दिसि फुसइ ॥

किरिया-पदं

२७६. अत्थि ण भते ! जीवाण पाणाइवाए ण किरिया कज्जइ ?
हता अत्थि ॥

२७७ सा भते ! किं पुट्ठा कज्जइ ? अपुट्ठा कज्जइ ?
गोयमा ! पुट्ठा कज्जइ, नो अपुट्ठा कज्जइ जाव[8] निव्वाघाएण छद्दिसि, वाघाय पडुच्च सिया तिदिसिं, सिया चउदिसि, सिया पचदिसि ॥

२७८ सा भते ! कि कडा कज्जइ ? अकडा कज्जइ ?
गोयमा ! कडा कज्जइ, नो अकडा कज्जइ ॥

२७९. सा भते ! किं अत्तकडा कज्जइ ? परकडा कज्जइ ? तदुभयकडा कज्जइ ?
गोयमा ! अत्तकडा कज्जइ, नो परकडा कज्जइ, नो तदुभयकडा कज्जइ ॥

२८०. सा भते किं 'आणुपुव्विं कडा'[9] कज्जइ ? अणाणुपुव्वि कडा कज्जइ ?
गोयमा ! आणुपुव्वि कडा कज्जइ, नो अणाणुपुव्वि कडा कज्जइ । जा य

---

१. भ० १।२५८-२६६ ।
२. भ० १।२५८-२६६ ।
३ स० पा०—एव एएण अभिलावेण उदयते पोयत छिद्दते दूसत छायते आयवत जाव नियमा ।
४. पोदत (क, ता, ब, म, स) ।
५, ६, ७ भ० १।२५८-२६६ ।
८ भ० १।२५९-२६६ ।
९. आणुपुव्विकडा (अ, क, ब) ।

कडा कज्जइ, जा य कज्जिस्सइ, सव्वा सा आणुपुव्वि कडा, नो अणाणुपुव्वि 'कडा ति[1]' वत्तव्व सिया ॥

२८१. अत्थि ण भते ! नेरइयाण पाणाइवायकिरिया कज्जइ ?
हता अत्थि ॥

२८२ सा भते ! कि पुट्ठा कज्जइ ? अपुट्ठा कज्जइ ?
गोयमा ! पुट्ठा कज्जइ, नो अपुट्ठा कज्जइ जाव[2] नियमा छद्दिसिं कज्जइ ॥

२८३. सा भते ! कि कडा कज्जइ ? अकडा कज्जइ ?
गोयमा ! कडा कज्जइ, नो अकडा कज्जइ ॥

२८४. त चेव जाव[3] नो अणाणुपुव्वि कडा ति वत्तव्व सिया ॥

२८५. जहा[4] नेरइया तहा एगिदियवज्जा भाणियव्वा जाव[5] वेमाणिया। एगिंदिया जहा[6] जीवा तहा भाणियव्वा ॥

२८६. जहा[7] पाणाइवाए तहा मुसावाए तहा अदिण्णादाणे, मेहुणे, परिग्गहे, कोहे,[8] •माणे, माया, लोभे, पेज्जे, दोसे, कलहे, अ०भक्खाणे, पेसुण्णे, परपरिवाए, अरतिरती, मायामोसे,° मिच्छादसणसल्ले—एव एए अट्ठारस। चउवीस दडगा भाणियव्वा ॥

२८७. सेव भते ! सेव भते ! त्ति भगवं गोयमे समणं भगवं महावीर वंदति जाव[9] विहरति ॥

रोहस्स पण्ह-पदं

२८८ तेण कालेण तेण समएणं समणस्स भगवओ महावीरस्स अतेवासी रोहे णामं अणगारे पगइभद्दए[10] पगइउवसते पगइपयणुकोहमाणमायालोभे[11] मिउमद्दव-सपन्ने[12] अल्लीणे[13] विणीए समणस्स भगवओ महावीरस्स अदूरसामते उड्डजाणू अहोसिरे झाणकोट्ठोवगए सजमेण तवसा अप्पाण भावेमाणे विहरइ ॥

---

१ कडा इति (क), कड त्ति (व, स)।
२ भ० १।२५९-२६६।
३. भ० १।२७९, २८०।
४ भ० १।२८१-२८४।
५. पू० प० २।
६. भ० १।२७६-२८०।
७. भ० १।२७६-२८५।
८. स० पा०—कोहे जाव मिच्छादसणसल्ले।
९ भ० १।५१।
१०. °भद्दए पगइमउए पगइविणीए (अ क, ता व, म, स, वृ)।
११ °माय ° (ता)।
१२. °सपुण्णे (स)।
१३ आलीणे भद्दए (अ, क, व), अल्लीणे भद्दए (ता, म, स, वृ)। आदर्शेषु वृत्तौ च 'पगइभद्दए' इत समादाय 'विणीए' एतदतानि सर्वाण्यपि पदानि वर्तन्ते, किन्तु औपपातिक (९१, ११९) सूत्रस्य सदर्भे 'पगइमउए पगइविणीए भद्दए' एतानि त्रीणि पदानि द्विरुक्तानि सन्ति, तानि पाठान्तरे गृहीतानि। द्रष्टव्य भ० २।७० सूत्रस्य पादटिप्पणम्।

२८६. ततेण से रोहे अणगारे[1] जायसड्ढे जाव[2] पज्जुवासमाणे एवं वदासी—

२६०. पुव्वि भते ! लोए, पच्छा अलोए ? पुव्वि अलोए, पच्छा लोए ?
रोहा ! लोए य अलोए य पुव्वि पेते, पच्छा पेते[3]—दो वेते सासया भावा, अणाणुपुव्वी एसा रोहा ॥

२६१. पुव्वि भते ! जीवा, पच्छा अजीवा ? पुव्वि अजीवा, पच्छा जीवा ?
[4]• रोहा ! जीवा य अजीवा य पुव्वि पेते, पच्छा पेते—दो वेते सासया भावा, अणाणुपुव्वी एसा रोहा !

२६२. पुव्वि भते ! भवसिद्धिया[5], पच्छा अभवसिद्धिया ? पुव्वि अभवसिद्धिया, पच्छा भवसिद्धिया ?
रोहा ! भवसिद्धिया य, अभवसिद्धिया य पुव्वि पेते, पच्छा पेते—दो वेते सासया भावा, अणाणुपुव्वी एसा रोहा !

२६३ पुव्वि भंते ! सिद्धि, पच्छा असिद्धी ? पुव्वि असिद्धी, पच्छा सिद्धी ?
रोहा ! सिद्धी य असिद्धी य पुव्वि पेते, पच्छा पेते—दो वेते सासया भावा, अणाणुपुव्वी एसा रोहा !

२६४ पुव्वि भते ! सिद्धा, पच्छा असिद्धा ? पुव्वि असिद्धा, पच्छा सिद्धा ?
रोहा ! सिद्धा य असिद्धा य पुव्वि पेते, पच्छा पेते—दो वेते सासया भावा, अणाणुपुव्वी एसा रोहा ! °

२६५ पुव्वि भते ! अडए, पच्छा कुक्कुडी ? पुव्वि कुक्कुडी, पच्छा अडए ?
रोहा ! से ण अडए कओ ?
भयव ! कुक्कुडीओ ।
सा ण कुक्कुडी कओ ?
भते ! अडयाओ ।
एवामेव रोहा ! से य अडए, सा य कुक्कुडी पुव्वि पेते, पच्छा पेते—'दो वेते'[6] सासया भावा, अणाणुपुव्वी एसा रोहा !

२६६. पुव्वि भते ! लोयते, पच्छा अलोयते ? पुव्वि अलोयते, पच्छा लोयते ?
रोहा ! लोयते य अलोयते य[7] •पुव्वि पेते, पच्छा पेते—दो वेते सासया भावा°, अणाणुपुव्वी एसा रोहा !

---

१ भगव अणगारे (क, ब), अणगारे भगव (ता) ।
२ भ० १।१० ।
३. वेते (ता) ।
४. स० पा०—जहेव लोए य अलोए य तहेव जीवा य अजीवा य । एव भवसिद्धिया य अभवसिद्धिया य सिद्धी असिद्धी सिद्धा असिद्धा ।
५ भवसिद्धीया (क, ता, स) ।
६ दुवेए (स) ।
७ स० पा०—य जाव अणाणुपुव्वी ।

२९७ पुव्वि भते ! लोयते, पच्छा सत्तमे ओवासंतरे ? [1]•पुव्वि सत्तमे ओवासंतरे, पच्छा लोयते ?०
रोहा ! लोयते य सत्तमे ओवासतरे य पव्वि पेते[2], •पच्छा पेते—दो वेते सासया भावा०, अणाणुपुव्वी एसा रोहा !

२९८. एव लोयते य सत्तमे य तणुवाए। एव घणवाए, घणोदही, सत्तमा पुढवी। एवं लोयते एक्केक्केण सजोएतव्वे इमेहिं ठाणेहि, त जहा—

संगहणी-गाहा

ओवास-वात-घणउदहि-पुढवि-दीवा य सागरा वासा।
नेरइयादि[3] अत्थिय, समया कम्माइ[4] लेस्साओ ॥१॥
दिट्ठी दसण-नाणे, सण्ण-सरीरा य जोग-उवओगे।
दव्व-पएसा-पज्जव, अद्धा कि पुव्वि लोयते ॥२॥

२९९. [5]•पुव्वि भते ! लोयते, पच्छा अतीतद्धा ? पुव्वि अतीतद्धा, पच्छा लोयते ?
रोहा ! लोयते य अतीतद्धा य पुव्वि पेते, पच्छा पेते—दो वेते सासया भावा, अणाणुपुव्वी एसा रोहा !

३००. पुव्वि भते ! लोयते, पच्छा अणागतद्धा ? पुव्वि अणागतद्धा, पच्छा लोयते ?
रोहा ! लोयते य अणागतद्धा य पुव्वि पेते, पच्छा पेते—दो वेते सासया भावा, अणाणुपुव्वी एसा रोहा !

३०१. पुव्वि भते ! लोयते, पच्छा सव्वद्धा ? पुव्वि सव्वद्धा, पच्छा लोयते ?
रोहा ! लोयते य सव्वद्धा य पुव्वि पेते, पच्छा पेते—दो वेते सासया भावा, अणाणुपुव्वी एसा रोहा !०

३०२. जहा[6] लोयतेण सजोइया सव्वे ठाणा एते, एव अलोयतेण वि सजोएतव्वा सव्वे ॥

३०३. पुव्वि भते ! सत्तमे ओवासतरे, पच्छा सत्तमे तणुवाए[7] ? •पुव्वि सत्तमे तणुवाए, पच्छा सत्तमे ओवासतरे ?
रोहा ! सत्तमे ओवासतरे य सत्तमे तणुवाए य पुव्वि पेते, पच्छा पेते—दो वेते सासया भावा, अणाणुपुव्वी एसा रोहा !०

३०४. एवं सत्तम ओवासतर सव्वेहिं सम सजोएतव्व जाव[8] सव्वद्धाए ॥

३०५. पुव्वि भते ! सत्तमे तणुवाए ? पच्छासत्तमे घणवाए[9] ? •पुव्वि सत्तमे घणवाए, पच्छा सत्तमे तणुवाए ?

---

१. स० पा०—पुच्छा।
२. स० पा०—पेते जाव अणाणुपुव्वी।
३. चउवीस दडगा।
४. कम्माइ (अ, क, व, म, स)।
५. स० पा०—पुव्वि भते ! लोयते पच्छा सव्वद्धा।
६ भ० १।२९७-३०१।
७ स० पा०—तणुवाए०।
८. भ० १।२९८-३०१।
९. स० पा० घणवाए०।

रोहा ! सत्तमे तणुवाए य सत्तमे घणवाए य पुव्वि पेते, पच्छा पेते—दो वेते सासया भावा, अणाणुपुव्वी एसा रोहा ! ०

३०६ एव[1] तहेव नेयव्व जाव[2] सव्वद्धा ॥

३०७ एव उवरिल्ल एक्केक्क सजोयतेण, जो जो हिट्ठिल्लो त त छड्डुतेण नेयव्व जाव[3] अतीत-अणागतद्धा, पच्छा सव्वद्धा जाव[4] अणाणुपुव्वी एसा रोहा !

३०८ सेव भते ! सेव भते ! त्ति जाव[5] विहरइ ॥

लोयट्ठिति-पदं

३०९ भतेति ! भगव गोयमे समण भगव महावीर जाव[6] एव वयासी—

३१०. कतिविहा ण भते ! लोयट्ठिती पण्णत्ता ?

गोयमा ! अट्ठविहा लोयट्ठिति पण्णत्ता, त जहा—१. आगासपइट्ठिए वाए। २ वायपइट्ठिए उदही। ३ उदहिपइट्ठिया पुढवी। ४ पुढविपइट्ठिया तस-थावरा पाणा। ५. अजीवा जीवपइट्ठिया। ६ जीवा कम्मपइट्ठिया। ७. अजीवा जीवसगहिया। ८. जीवा कम्मसगहिया ॥

३११. से केणट्ठेण भते ! एव वुच्चइ—अट्ठविहा लोयट्ठिती जाव[7] जीवा कम्मसगहिया ?

गोयमा ! से जहाणामए केइ पुरिसे वत्थिमाडोवेइ[8], वत्थिमाडोवेत्ता उप्पि सित बधइ, बधित्ता मज्झे[9] गठि बधइ, बधित्ता उवरिल्ल गठि मुयइ, मुइत्ता उवरिल्ल देस वामेइ, वामेत्ता उवरिल्ल देस 'आउयायस्स पूरेइ'[10], पूरेत्ता उप्पि सित बंधइ, बधित्ता मज्झिल्ल गठि मुयइ। से नूण गोयमा ! से आउयाए तस्स वाउयायस्स उप्पि उवरिमतले चिट्ठइ ?

हता चिट्ठइ[11]।

से तेणट्ठेण गोयमा ! एव वुच्चइ—अट्ठविहा लोयट्ठिती जाव जीवा कम्मसगहिया।

से जहा वा केइ पुरिसे वत्थिमाडोवेइ, वत्थिमाडोवेत्ता कडीए बधइ, बधित्ता अत्थाहमतारमपोरुसियसि[12] उदगसि ओगाहेज्जा। से नूण गोयमा ! से पुरिसे तस्स आउयायस्स उवरिमतले चिट्ठइ ?

हता चिट्ठइ।

एव वा अट्ठविहा लोयट्ठिई जाव जीवा कम्मसगहिया ॥

---

१. एव पि (क, ता, व, म, स)।
२ भ० १।२९८-३०१।
३. भ० १।२९८-३०१।
४. भ० १।३०१।
५. भ० १।५१।
६. भ० १।१०।
७ भ० १।३१०।
८ वत्थि० (क)।
९. मज्झिल (व)।
१० आउयाए सपूरेइ (अ)।
११. चेट्ठइ (अ), चेष्टति (व)।
१२. अत्थाहमपार० (वृपा)।

जीव-पोग्गल पदं

३१२. अत्थि ण भते ! जीवा य पोग्गला य अण्णमण्णबद्धा, अण्णमण्णपुट्ठा, अण्णमण्ण-मोगाढा, अण्णमण्णसिणेहपडिबद्धा, अण्णमण्णघडत्ताए चिट्ठति ?
हता अत्थि ॥

३१३. से केणट्ठेण भते[1] ! ● एव वुच्चइ—अत्थि ण जीवा य पोग्गला य अण्णमण्ण-बद्धा, अण्णमण्णपुट्ठा, अण्णमण्णमोगाढा, अण्णमण्णसिणेहपडिबद्धा, अण्णमण्ण-घडत्ताए° चिट्ठति ?
गोयमा ! से जहाणामए हरदे सिया पुण्णे पुण्णप्पमाणे वोलट्टमाणे वोसट्टमाणे समभरघडत्ताए चिट्ठइ ।
अहे ण केइ पुरिसे तसि हरदसि एगं मह[2] नाव सयासव[3] सयछिद्दं[4] ओगा-हेज्जा । से नूण गोयमा ! सा नावा तेहि आसवदारेहि आपूरमाणी-आपूरमाणी पुण्णा पुण्णप्पमाणा वोलट्टमाणा वोसट्टमाणा समभरघडत्ताए चिट्ठइ ?
हता चिट्ठइ ।
से तेणट्ठेण गोयमा ! एव वुच्चइ—अत्थि ण जीवा य[5] ●पोग्गला य अण्ण-मण्णबद्धा, अण्णमण्णपुट्ठा, अण्णमण्णमोगाढा, अण्णमण्णसिणेहपडिबद्धा, अण्ण-मण्णघडत्ताए° चिट्ठति ॥

सिणेहकाय-पदं

३१४. अत्थि ण भते ! सदा समित सुहुमे सिणेहकाए पवडइ ?
हता अत्थि ॥

३१५. से भंते ! किं उड्ढे पवडइ[6] ? अहे पवडइ ? तिरिए पवडइ ?
गोयमा ! उड्ढे वि पवडइ, अहे वि पवडइ, तिरिए वि पवडइ ॥

३१६ जहा से बायरे आउयाए अण्णमण्णसमाउत्ते चिर पि दीहकाल चिट्ठइ तहा ण से वि ?
णो इणट्ठे समट्ठे । से ण खिप्पामेव विद्धसमागच्छइ ।

३१७. सेव भते ! सेव भते ! त्ति[7] ॥

---

१. स० पा०—भते जाव चिट्ठति ।
२. महा (ता) ।
३. सदा° (अ, क, ता, व, स) ।
४. सदाछिड्ड (अ), सतछिड्ड (ता), सदछिड्ड (व) ।
५ स० पा०—य जाव चिट्ठति ।
६ पडइ (अ, व) ।
७ भ० १।५१ ।

सत्तमो उद्देसो

देस-सव्व-पदं

३१८. नेरइए ण भते ! नेरइएसु उववज्जमाणे, कि—१. देसेण देस उववज्जइ ? २ देसेण सव्व उववज्जइ ? ३ सव्वेण देस उववज्जइ ? ४ सव्वेण सव्व उववज्जइ ?
गोयमा ! १ नो देसेण देसं उववज्जइ। २. नो देसेणं सव्व उववज्जइ। ३ नो सव्वेणं देस उववज्जइ। ४ सव्वेण सव्व उववज्जइ ॥

३१९ जहा नेरइए, एव जाव[1] वेमाणिए ॥

३२०. नेरइए ण भते ! नेरइएसु उववज्जमाणे, कि—१. देसेण देस आहारेइ ? २ देसेण सव्व आहारेइ ? ३ सव्वेण देस आहारेइ ? ४ सव्वेण सव्व आहारेइ ?
गोयमा ! १. नो देसेण देस आहारेइ। २. नो देसेण सव्व आहारेइ। ३ सव्वेण वा देसं आहारेइ। ४. सव्वेण वा सव्व आहारेइ ॥

३२१ एव जाव[2] वेमाणिए[3] ॥

३२२. नेरइए ण भते ! नेरइएहिंतो[4] उव्वट्टमाणे, कि—१ देसेण देस उव्वट्टइ ? २ [5]•देसेण सव्व उव्वट्टइ ? ३ सव्वेण देस उव्वट्टइ ? ४ सव्वेण सव्व उव्वट्टइ ?
गोयमा ! १ नो देसेण देस उव्वट्टइ। २ नो देसेण सव्व उव्वट्टइ। ३ नो सव्वेण देस उव्वट्टइ। ४ सव्वेण सव्व उव्वट्टइ ॥

३२३. एव जाव वेमाणिए ॥

३२४. नेरइए ण भते ! नेरइएहितो उव्वट्टमाणे, कि—१ देसेण देस आहारेइ ? २ देसेण सव्व आहारेइ ? ३ सव्वेण देस आहारेइ ? ४ सव्वेण सव्व आहारेइ ?
गोयमा ! १ नो देसेण देस आहारेइ। २ नो देसेण सव्व आहारेइ। ३ सव्वेण वा देस आहारेइ। ४ सव्वेण वा सव्व आहारेइ ॥

---

१ पू० प० २।
२ पू० प० २।
३ वेमाणिया (म)।
४ नेरइएसु (ता, म)।
५. स० पा०—जहा उववज्जमाणे तहेव उव्वट्टमाणे वि दडगो भाणियव्वो। नेरइए ण भते ! नेरइएहिंतो उव्वट्टमाणे किं देसेण देस आहारेइ तहेव जाव सव्वेण वा देस आहारेइ। सव्वेण वा सव्व आहारेइ। एव जाव वेमाणिया। नेरइए ण भते ! नेरइएसु उववण्णे किं देसेण देस उववण्णे एसो वि तहेव जाव सव्वेण सव्व उववण्णे। जहा उववज्जमाणे उव्वट्टमाणे य चत्तारि दडगा तहा उववण्णेण उव्वट्टेण वि चत्तारि दंडगा भाणियव्वा—सव्वेण सव्व उववण्णे, सव्वेण वा देस आहारेइ, सव्वेण वा सव्व आहारेइ। एएण अभिलावेण उववण्णे वि उव्वट्टे वि नेयव्व।

३२५. एव जाव वेमाणिए ।।

३२६. नेरइए ण भते ! नेरइएसु उववण्णे, कि—१. देसेण देस उववण्णे ? २ देसेण सव्व उववण्णे ? ३ सव्वेण देस उववण्णे ? ४ सव्वेण सव्व उववण्णे ?
गोयमा ! १ नो देसेण देस उववण्णे । २ नो देसेणं सव्व उववण्णे । ३. नो सव्वेण देस उववण्णे । ४ सव्वेण सव्वं उववण्णे ।।

३२७ एव जाव वेमाणिए ।।

३२८ नेरइए ण भते ! नेरइएसु उववण्णे, किं—१ देसेण देस आहारेइ ? २ देसेण सव्व आहारेइ ? ३ सव्वेण देस आहारेइ ? ४ सव्वेण सव्व आहारेइ ?
गोयमा ! १ नो देसेण देस आहारेइ । २ नो देसेण सव्व आहारेइ । ३. सव्वेण वा देस आहारेइ । ४ सव्वेण वा सव्व आहारेइ ।।

३२९. एव जाव वेमाणिए ।।

३३०. नेरइए ण भते ! नेरइएहितो उव्वट्टे, कि–१ देसेण देसं उव्वट्टे ? २. देसेण सव्वं उव्वट्टे ? ३ सव्वेण देस उव्वट्टे ? ४ सव्वेण सव्व उव्वट्टे ?
गोयमा ! १ नो देसेण देस उव्वट्टे । २ नो देसेण सव्व उव्वट्टे । ३ नो सव्वेण देस उव्वट्टे । ४ सव्वेण सव्व उव्वट्टे ।।

३३१. एव जाव वेमाणिए ।।

३३२. नेरइए ण भते ! नेरइएहिंतो उव्वट्टे, कि—१ देसेण देस आहारेइ ? २ देसेण सव्व आहारेइ ? ३. सव्वेण देस आहारेइ ? ४ सव्वेण सव्व आहारेइ ?
गोयमा ! १ नो देसेण देस आहारेइ । २ नो देसेण सव्व आहारेइ । ३. सव्वेणं वा देस आहारेइ । ४ सव्वेण वा सव्व आहारेइ ।।

३३३. एवं जाव वेमाणिए ।।°[1]

३३४. नेरइए णं भते ! नेरइएसु उववज्जमाणे, कि–१ अद्धेणं अद्ध उववज्जइ ? २ अद्धेण सव्व उववज्जइ ? ३ सव्वेण अद्ध उववज्जइ ? ४ सव्वेण सव्व उववज्जइ ?
जहा पढमिल्लेण अट्ठ दडगा तहा अद्धेण वि अट्ठ दडगा भाणियव्वा, नवर—जहिं देसेण देस उववज्जइ, तहिं अद्धेण अद्ध उववज्जइ इति भाणियव्व, एय नाणत्त । एते सव्वे वि सोलस दडगा भाणियव्वा ।।

विग्गहगइ-पद

३३५. जोवे ण भते ! किं विग्गहगइसमावण्णए ? अविग्गहगइसमावण्णए ?
गोयमा ! सिय विग्गहगइसमावण्णए, सिय अविग्गहगइसमावण्णए ।।

---

१. अस्मिन्नालापके वृत्तिकृता पाठान्तरस्य उल्लेख कृतोस्ति—'पुस्तकान्तरे तूत्पादतदाहारदडकानन्तरमुत्पादे सत्युत्पन्नतदाहारदडकौ ततस्तूत्पादप्रतिपक्षत्वादुद्वर्त्तनाया उद्वर्त्तनातदाहारदडकौ उद्वर्तनाया चोद्वृत्त स्यादित्युद्वृत्ततदाहारदडकौ' (वृ) ।

३३६. एव जाव[1] वेमाणिए ।।

३३७. जीवा ण भते ! कि विग्गहगइसमावण्णया ? अविग्गहगइसमावण्णया ?
गोयमा ! विग्गहगइसमावण्णगा वि, अविग्गहगइसमावण्णगा वि ।।

३३८. नेरइया ण भते ! किं विग्गहगइसमावण्णगा ? अविग्गहगइसमावण्णगा ?
गोयमा ! सव्वे वि ताव होज्ज अविग्गहगइसमावण्णगा । अहवा अविग्गहगइसमावण्णगा, विग्गहगइसमावण्णगे य । अहवा अविग्गहगइसमावण्णगा य, विग्गहगइसमावण्णगा य । एव जीव—एगिदियवज्जो तियभगो ।

आयु-पदं

३३९. देवे ण भते ! महिड्ढिए[2] महज्जुइए महब्बले महायसे महेसक्खे[3] महाणुभावे अविउक्कतिय चयमाणे[4] किचिकाल[5] हिरिवत्तिय[6] दुगछावत्तिय परीसहवत्तिय[7] आहार नो आहारेइ । अहे ण आहारेइ आहारिज्जमाणे आहारिए, परिणामिज्जमाणे परिणामिए, पहीणे य आउए भवइ । जत्थ उववज्जइ त आउय पडिसवेदेइ, त जहा—तिरिक्खजोणियाउय वा, मणुस्साउय वा ?
हंता गोयमा ! देवेण महिड्ढिए[8] °महज्जुइए महब्बले महायसे महेसक्खे महाणुभावे अविउक्कतिय चयमाणे किचिकाल हिरिवत्तिय दुगछावत्तिय परीसहवत्तिय आहार नो आहारेइ । अहे ण आहारेइ आहारिज्जमाणे आहारिए, परिणामिज्जमाणे परिणामिए, पहीणे य आउए भवइ । जत्थ उववज्जइ त आउय पडिसवेदेइ, त जहा—तिरिक्खजोणियाउय वा° मणुस्साउय वा ।

गब्भ-पदं

३४०. जीवे ण भते ! गब्भ वक्कममाणे किं सइदिए वक्कमइ ? अणिदिए वक्कमइ ?
गोयमा ! सिय सइदिए वक्कमइ । सिय अणिदिए वक्कमइ ।।

३४१. से केणट्ठेण भते ! एव वुच्चइ—सिय सइदिए वक्कमइ ? सिय अणिंदिए वक्कमइ ?
गोयमा ! दव्विदियाइ पडुच्च अणिंदिए वक्कमइ । भाविंदियाइ पडुच्च सइदिए वक्कमइ । से तेणट्ठेण गोयमा ! एव वच्चइ—सिय सइदिए वक्कमइ । सिय अणिंदिए वक्कमइ ।।

---

१ पू० प० २ ।
२. महड्ढिए (क) ।
३ महासुक्खे (अ) , महासोक्खे (म, वृपा) ।
४. चय चयमाणे (अ, ता, ब, म, स, वृपा) ।
५. कच्चि° (ता) ।
६ हिरिवित्तिय (स) ।
७ परिस्सह ° (क, ता, स) ।
८ स० पा०—महिड्ढिए जाव मणुस्साउय ।

३४२. जीवे ण भंते ! गब्भं वक्कममाणे किं ससरीरी वक्कमइ, असरीरी वक्कमइ ?
गोयमा ! सिय ससरीरी वक्कमइ । सिय असरीरी वक्कमइ ॥

३४३. से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ—सिय ससरीरी वक्कमइ ? सिय असरीरी वक्कमइ ?
गोयमा ! ओरालिय-वेउव्विय-आहारयाइं[1] पडुच्च असरीरी वक्कमइ । तेया-कम्माइं पडुच्च ससरीरी वक्कमइ । से तेणट्ठेणं गोयमा ! एवं वुच्चइ-सिय ससरीरी वक्कमइ । सिय असरीरी वक्कमइ ॥

३४४. जीवे णं भंते ! गब्भं वक्कममाणे तप्पढमयाए किमाहारमाहारेइ ?
गोयमा ! माउओयं पिउसुक्कं—तं तदुभयसंसिट्ठं[2] तप्पढमयाए आहारमाहारेइ ॥

३४५. जीवे णं भंते ! गब्भगए समाणे किं आहारमाहारेइ ?
गोयमा ! जं से माया नाणाविहाओ रसविगतीओ[3] आहारमाहारेइ, तदेकदेसेणं ओयमाहारेइ ॥

३४६. जीवस्स णं भंते ! गब्भगयस्स समाणस्स अत्थि उच्चारे इ वा पासवणे इ वा खेले इ वा सिंघाणे इ वा 'वंते इ वा पित्ते इ वा'[4] ?
णो इणट्ठे समट्ठे ॥

३४७. से केणट्ठेणं ?
गोयमा ! जीवे णं गब्भगए समाणे जमाहारेइ तं चिणाइ, तं जहा—सोइंदियत्ताए,[5] •चक्खिदियत्ताए, घाणिंदियत्ताए, रसिंदियत्ताए°, फासिंदियत्ताए, अट्ठि-अट्ठिमिंज-केस-मंसु-रोम-नहत्ताए । से तेणट्ठेणं गोयमा ! एवं वुच्चइ—जीवस्स णं गब्भगयस्स समाणस्स णत्थि उच्चारे इ वा पासवणे इ वा खेले इ वा सिंघाणे इ वा वंते इ वा पित्ते इ वा ॥

३४८. जीवे णं भंते ! गब्भगए समाणे पभू मुहेणं कावलियं आहारमाहारित्तए ?
गोयमा ! णो इणट्ठे समट्ठे ॥

३४९. से केणट्ठेणं ?
गोयमा ! जीवे णं गब्भगए समाणे सव्वओ आहारेइ, सव्वओ परिणामेइ, सव्वओ उस्ससइ, सव्वओ निस्ससइ, अभिक्खणं आहारेइ, अभिक्खणं परिणामेइ, अभिक्खणं उस्ससइ, अभिक्खणं निस्ससइ, आहच्च आहारेइ, आहच्च परिणामेइ, आहच्च उस्ससइ, आहच्च निस्ससइ[6] ।

---

१. आहारादी (अ, व); आहाराइ (ता, स) ।
२. °संसिट्ठं कलुसं किब्बिसं (अ, क, म, स) ।
३. रसवतीओ (अ, क, व, म), रसवित्तीओ (ता) ।
४ × (अ, क, ता, व) एते पदे वृत्तावपि न व्याख्याते ।
५. सं०पा०—सोइंदियत्ताए जाव फासिंदियत्ताए ।
६ नीससति (अ, क, ता, म, स) ।

माउजीवरसहरणी, पुत्तजीवरसहरणी, माउजीवपडिबद्धा पुत्तजीवफुडा[1]—तम्हा आहारेइ, तम्हा परिणामेइ ।

अवरा वि य णं पुत्तजीवपडिबद्धा माउजीवफुडा[2]—तम्हा चिणाइ, तम्हा उवचिणाइ । से तेणट्ठेणं[3] •गोयमा ! एवं वुच्चइ—जीवे णं गब्भगए समाणे° नो पभू मुहेणं कावलियं आहारमाहारित्तए ॥

माइय-पेइय-अंग-पद

३५०. कइ णं भंते ! माइयंगा पण्णत्ता ?
गोयमा ! तओ माइयंगा पण्णत्ता, तं जहा—मंसे, सोणिए, मत्थुलुंगे[4] ॥

३५१. कइ णं भंते ! पेतियंगा[5] पण्णत्ता ?
गोयमा ! तओ पेतियंगा पण्णत्ता, तं जहा—अट्ठि, अट्ठिमिंजा, केस-मंसु-रोम-नहे ॥

३५२. अम्मापेइए[6] णं भंते ! सरीरए केवइयं कालं संचिट्ठइ ?
गोयमा ! जावइयं से कालं भवधारणिज्जे सरीरए अव्वावन्ने भवइ एवतियं कालं संचिट्ठइ, अहे णं समए-समए वोयसिज्जमाणे-वोयसिज्जमाणे चरिम-कालसमयंसि वोच्छिण्णे भवइ ॥

गब्भस्स नरगगमण-पद

३५३. जीवे णं भंते ! गब्भगए समाणे नेरइएसु उववज्जेज्जा ?
गोयमा ! अत्थेगइए उववज्जेज्जा, अत्थेगइए नो उववज्जेज्जा ॥

३५४ से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ—अत्थेगइए उववज्जेज्जा, अत्थेगइए नो उववज्जेज्जा ?
गोयमा ! से णं सण्णी पंचिदिए सव्वाहिं पज्जत्तीहिं पज्जत्तए वीरियलद्धीए वेउव्वियलद्धीए पराणीयं आगयं सोच्चा निसम्म[7] पएसे निच्छुभइ, निच्छुभित्ता वेउव्वियसमुग्घाएणं समोहण्णइ,[8] समोहणित्ता चाउरंगिणिं सेणं[9] विउव्वइ, विउव्वित्ता चाउरंगिणीए सेणाए पराणीएणं सद्धिं संगामं संगामेइ ।

से णं जीवे अत्थकामए रज्जकामए भोगकामए कामकामए, अत्थकंखिए रज्जकंखिए भोगकंखिए कामकंखिए, अत्थपिवासिए रज्जपिवासिए भोग-पिवासिए कामपिवासिए, तच्चित्ते तम्मणे तल्लेसे तदज्झवसिए तत्तिव्वज्झव-साणे तदट्ठोवउत्ते तदप्पियकरणे तब्भावणाभाविए, एयंसि णं अंतरंसि कालं

---

१. पुत्तजीव फुडा (वृ) ।
२. माउजीव फुडा (वृ) ।
३ सं० पा०—तेणट्ठेणं जाव नो ।
४ ° लुए (अ, क, स), ° लिंगे (म) ।
५. पितियंगा (अ, म, स) ।
६. ° पिइए (अ, म, स) ।
७ निसम्मा (ता) ।
८ समोहणइ (अ, स) ।
९ सेण्णं (क, ता, व, म, स) ।

करेज्ज नेरइएसु उववज्जइ । से तेणट्ठेण गोयमा[1] ! • एव वुच्चइ—अत्थेगइए उववज्जेज्जा°, अत्थेगइए नो उववज्जेज्जा ॥

गब्भस्स देवलोगगमण-पद

३५५. जीवे ण भते ! गब्भगए समाणे देवलोगेसु उववज्जेज्जा ?
गोयमा ! अत्थेगइए उववज्जेज्जा, अत्थेगइए नो उववज्जेज्जा ॥

३५६. से केणट्ठेण भते ! एव वुच्चइ—अत्थेगइए उववज्जेज्जा, अत्थेगइए नो उववज्जेज्जा ?
गोयमा ! से ण सण्णी पचिदिए सव्वाहि पज्जत्तीहि पज्जत्तए तहारूवस्स समणस्स वा माहणस्स वा अतिए एगमवि आरिय धम्मिय सुवयण सोच्चा निसम्म तओ भवइ सवेगजायसड्ढे[2] तिव्वधम्माणुरागरत्ते ।
से ण जीवे धम्मकामए पुण्णकामए सग्गकामए मोक्खकामए, धम्मकखिए पुण्णकखिए सग्गकखिए मोक्खकखिए, धम्मपिवासिए पुण्णपिवासिए सग्ग-पिवासिए मोक्खपिवासिए, तच्चित्ते तम्मणे तल्लेसे तदज्झवसिए तत्तिव्वज्झव-साणे तदट्ठोवउत्ते तदप्पियकरणे तब्भावणाभाविए, एयसि ण अतरसि काल करेज्ज देवलोगेसु उववज्जइ । से तेणट्ठेण गोयमा ! एव वुच्चइ—अत्थेगइए उववज्जेज्जा, अत्थेगइए नो उववज्जेज्जा ॥

३५७. जीवे ण भते ! गब्भगए समाणे उत्ताणए[3] वा पासल्लए[4] वा अबखुज्जए वा अच्छेज्ज वा ? चिट्ठेज्ज वा ? निसीएज्ज वा ? तुयट्टेज्ज वा ? माउए सुयमाणीए[5] सुवइ ? जागरमाणीए जागरइ ? सुहियाए सुहिए भवइ ? दुहियाए दुहिए भवइ ?
हता गोयमा ! जीवे ण गब्भगए समाणे[6] •उत्ताणए वा पासल्लए वा अवखुज्जए वा अच्छेज्ज वा चिट्ठेज्ज वा निसीएज्ज वा तुयट्टेज्ज वा । माउए सुयमाणीए सुवइ, जागरमाणीए जागरइ, सुहियाए सुहिए भवइ° दुहियाए दुहिए भवइ ।
अहे ण पसवणकालसमयसि सीसेण वा पाएहि वा आगच्छति सममागच्छति[7], तिरियमागच्छति विणिहायमावज्जति ।
वण्णवज्झाणि य से कम्माइ बद्धाइ पुट्ठाइ निहत्ताइ कडाइ पट्ठवियाइ अभिनिविट्ठाइ अभिसमण्णागयाइ उदिण्णाइ—नो उवसताइ भवति,

---

१. स० पा०—गोयमा जाव अत्थे° ।
२. ° जाइसड्ढे (व, स) ।
३ उत्ताणे (ता) ।
४. पोसल्लए (अ), पासिल्लए (क); पासल्लिए (ता, म) ।
५ सुवमाणीए (क, ता, म) ।
६ स० पा०—समाणे जाव दुहियाए ।
७ सममा° (अ, व, स, वृपा) ।

तओ भवइ दुरूवे दुवण्णे 'दुग्गधे दुरसे'[1] दुफासे अणिट्ठे अकते अप्पिए असुभे अमणुण्णे अमणामे हीणस्सरे दीणस्सरे अणिट्ठस्सरे अकतस्सरे अप्पियस्सरे असुभस्सरे अमणुण्णस्सरे अमणामस्सरे 'अणाएज्जवयणे पच्चायाए'[2] या वि भवइ।

वण्णवज्झाणि य से कम्माइ नो बद्धाइ[3] •नो पुट्ठाइ नो निहत्ताइ नो कडाइ नो पट्ठवियाइ नो अभिनिविट्ठाइ नो अभिसमण्णागयाइ नो उदिण्णाइ—उवसताइ भवति, तओ भवइ सुरूवे सुवण्णे सुगधे सुरसे सुफासे इट्ठे कते पिए सुभे मणुण्णे मणामे अहीणस्सरे अदीणस्सरे इट्ठस्सरे कतस्सरे पियस्सरे सुभस्सरे मणुण्णस्सरे मणामस्सरे° 'आदेज्जवयणे पच्चायाए'[4] या वि भवइ॥

३५८. सेव भते! सेव भते! त्ति[5]॥

अट्ठमो उद्देसो

बालस्स आउय-पद

३५९. एगतबाले ण भते! मणुस्से कि नेरइयाउय पकरेति? तिरिक्खाउय पकरेति? मणुस्साउय पकरेति? देवाउय पकरेति? नेरइयाउय किच्चा नेरइएसु उववज्जति? तिरियाउय किच्चा तिरिएसु उववज्जति? मणुस्साउय किच्चा मणुस्सेसु उववज्जति? देवाउय किच्चा देवलोगेसु उववज्जति?

गोयमा! एगतबाले ण मणुस्से नेरइयाउय पि पकरेति, तिरियाउय वि पकरेति, मणुस्साउय पि पकरेति, देवाउय पि पकरेति, नेरइयाउय किच्चा नेरइएसु उववज्जति, तिरियाउय किच्चा तिरिएसु उववज्जति, मणुस्साउय किच्चा मणुस्सेसु उववज्जति, देवाउय किच्चा देवलोगेसु उववज्जति॥

पडियस्स आउय-पदं

३६०. एगतपडिए ण भते! मणुस्से किं नेरइयाउय पकरेति[6]? •तिरिक्खाउय पकरेति? मणुस्साउय पकरेति? देवाउय पकरेति? नेरइयाउयं किच्चा

---

१ दुगधे (म)।

२. ° वयणपच्चाए (अ, क, ता, ब, म, स), स्थानाङ्गे (८।१०) 'पच्चायाए' इत्येव पाठोऽस्ति।

३ स० पा०—पसत्थ नेयव्व जाव आदेज्ज°।

४. ° वयणपच्चाए (क, ता)।

५ भ० १। ५१।

६. स० पा०—पकरेति जाव देवाउय।

नेरइएसु उववज्जति ? तिरियाउय किच्चा तिरिएसु उववज्जति ? मणुस्साउय किच्चा मणुस्सेसु उववज्जति ? °देवाउय किच्चा देवलोएसु उववज्जति ?
गोयमा ! एगतपडिए ण मणुस्से[1] आउयं सिय पकरेति, सिय णो पकरेति, जइ पकरेति णो नेरइयाउय पकरेति, णो तिरियाउय पकरेति, णो मणुस्साउय पकरेति, देवाउय पकरेति, णो नेरइयाउय किच्चा नेरइएसु उववज्जति, णो तिरियाउय किच्चा तिरिएसु उववज्जति, णो मणुस्साउय किच्चा मणुस्सेसु उववज्जति, देवाउय किच्चा देवेसु उववज्जति ॥

३६१. से केणट्ठेण जाव[2] देवाउय किच्चा देवेसु उववज्जति ?
गोयमा ! एगतपडियस्स ण मणुस्सस्स केवलमेव दो गतीओ पण्णायति, त जहा—अतकिरिया चेव, कप्पोववत्तिया चेव। से तेणट्ठेण गोयमा ! जाव देवाउय किच्चा देवेसु उववज्जति ॥

वालपडियस्स आउय-पद

३६२ वालपडिए ण भते ! मणुस्से कि नेरइयाउय पकरेति[3] ? °तिरिक्खाउय पकरेति ? मणुस्साउय पकरेति ? देवाउय पकरेति ? नेरइयाउय किच्चा नेरइएसु उववज्जति ? तिरियाउय किच्चा तिरिएसु उववज्जति ? मणुस्साउय किच्चा मणुस्सेसु उववज्जति ? देवाउय किच्चा देवेसु उववज्जति ?
गोयमा ! वालपडिए ण मणुस्से णो नेरइयाउय पकरेति, णो तिरिक्खाउय पकरेति, णो मणुस्साउय पकरेति, देवाउय पकरेति, णो नेरइयाउय किच्चा नेरइएसु उववज्जति, णो तिरियाउय किच्चा तिरिएसु उववज्जति, णो मणुस्साउय किच्चा मणुस्सेसु उववज्जति°, देवाउयं किच्चा देवेसु उववज्जति ॥

३६३. से केणट्ठेण जाव[4] देवाउय किच्चा देवेसु उववज्जति ?
गोयमा ! वालपडिए ण मणुस्से तहारूवस्स समणस्स वा माहणस्स वा अंतिए एगमवि आरिय[5] धम्मिय सुवयण सोच्चा निसम्म[6] देस उवरमइ, देस णो उवरमइ, देस पच्चक्खाइ, देस णो पच्चक्खाइ।
'से तेण'[7] देसोवरम-देसपच्चक्खाणेण णो नेरइयाउय पकरेति जाव[8] देवाउय किच्चा देवेसु उववज्जति। से तेणट्ठेण जाव देवाउय किच्चा देवेसु उववज्जति ॥

---

१. मणूसे (ता)।
२ भ० १।३६०।
३ स० पा०—पकरेति जाव देवाउय।
४. भ० १।३६२।
५ यारिय (क, ता)।
६ निसम्मा (अ, ता, व)।
७ सेएा ते (क), सेएा तेएा (ता, व)।
८ भ० १।३६०।

किरिया-पदं

३६४. पुरिसे ण भते ! कच्छसि वा दहसि वा उदगसि वा दवियसि वा वलयसि वा नूमसि वा गहणसि वा गहणविदुग्गसि वा पव्वयसि वा पव्वयविदुग्गसि वा वणसि वा वणविदुग्गसि वा मियवित्तीए[1] मियसकप्पे मियपणिहाणे मियवहाए गता एते मिय[2] त्ति काउ अण्णयरस्स मियस्स वहाए कूडपास उद्दाति[3], ततो ण भते ! से पुरिसे कतिकिरिए ?
गोयमा ! सिय[4] तिकिरिए, सिय चउकिरिए[5], सिय पचकिरिए ।।

३६५. से केणट्ठेण भते ! एव वुच्चइ—सिय तिकिरिए ? सिय चउकिरिए ? सिय पचकिरिए ?
गोयमा ! जे भविए उद्दवणयाए—णो बधणयाए, णो मारणयाए—ताव च ण से पुरिसे काइयाए, अहिगरणियाए, पाओसियाए[6]—तिहि किरियाहिं पुट्ठे ।
जे भविए उद्दवणताए वि, बधणताए वि—णो मारणताए—ताव च ण से पुरिसे काइयाए, अहिगरणियाए, पाओसियाए[7], पारितावणियाए—चउहिं किरियाहि पुट्ठे ।
जे भविए उद्दवणताए[8] वि, बधणताए वि, मारणताए वि, ताव च ण से पुरिसे काइयाए, अहिगरणियाए, पाओसियाए, पारितावणियाए, पाणातिवाय-किरियाए—पर्चाहि किरियाहि पुट्ठे । से तेणट्ठेण[9] •गोयमा ! एव वुच्चइ—सिय तिकिरिए, सिय चउकिरिए, सिय० पचकिरिए ।।

३६६. पुरिसे ण भते ! कच्छसि वा जाव[10] वणविदुग्गसि वा तणाइ ऊसविय-ऊसविय अगणिकाय निसिरइ—ताव च ण भते ! से पुरिसे कतिकिरिए ?
गोयमा ! सिय तिकिरिए, सिय चउकिरिए, सिय पचकिरिए ।।

३६७ से केणट्ठेण भते ! एव वुच्चइ—सिय तिकिरिए ? सिय चउकिरिए ? सिय पचकिरिए ?
गोयमा ! जे भविए उस्सवणयाए[11]—•णो निसिरणयाए, णो दहणयाए—ताव

---

१. मियवत्तिए (अ), मियवत्तीए (स) ।
२. मिए (अ, ता, व, म, स) ।
३ उड्डाइ (अ, क, ता, व, स) ।
४. जाव च ण से पुरिसे कच्छसि वा जाव कूडपास उड्डाइ ताव च ण से पुरिसे सिय (क, ता, म, स) ।
५. चतु० (ता) ।
६. पाउसियाए (अ, व, म) ।
७. पायोसियाए (व) ।
८ उद्दणयाए (ता) ।
९ स० पा०—तेणट्ठेण जाव पच० ।
१० भ० १।३६४ ।
११ स० पा०—उस्सवणयाए तिहिं, उस्सवणयाए वि निसिरणयाए वि नो दहणयाए चउहिं, जे भविए उस्सवणयाए वि निसिरणयाए वि दहणयाए वि ताव च ण से पुरिसे काइयाए जाव पर्चाहि ।

च णं से पुरिसे काइयाए, अहिगरणियाए, पाओसियाए—तिहिं किरियाहिं पुट्ठे।

जे भविए उस्सवणयाए वि, निसिरणयाए वि, णो दहणयाए—ताव च णं से पुरिसे काइयाए, अहिगरणियाए, पाओसियाए, पारितावणियाए—चउहिं किरियाहिं पुट्ठे।

जे भविए उस्सवणयाए वि, निसिरणयाए वि, दहणयाए वि, ताव च ण से पुरिसे काइयाए, अहिगरणियाए, पाओसियाए, पारितावणियाए, पाणातिवाय-किरियाए°—पचहिं किरियाहि पुट्ठे। से तेणट्ठेण गोयमा ! एव वुच्चइ—सिय तिकिरिए, सिय चउकिरिए, सिय पचकिरिए॥

३६८. पुरिसे ण भते ! कच्छसि वा जाव[1] वणविदुग्गसि वा मियवित्तीए मियसकप्पे मियपणिहाणे मियवहाए गता एते 'मिय त्ति'[2] काउ अण्णतरस्स मियस्स वहाए उसु निसिरति, ततो णं भते ! से पुरिसे कतिकिरिए ?

गोयमा ! सिय तिकिरिए, सिय चउकिरिए, सिय पचकिरिए।

३६९. से केणट्ठेण भते ! एव वुच्चइ—सिय तिकिरिए, सिय चउकिरिए, सिय पचकिरिए ?

गोयमा ! जे भविए निसिरणयाए—णो विद्धंसणयाए, णो मारणयाए—ताव च ण से पुरिसे काइयाए, अहिगरणियाए, पाओसियाए—तिहिं किरियाहिं पुट्ठे।

जे भविए निसिरणताए वि, विद्धसणताए वि—णो मारणयाए—ताव च ण से पुरिसे काइयाए, अहिगरणियाए, पाओसियाए, पारितावणियाए—चउहिं किरियाहिं पुट्ठे।

जे भविए निसिरणयाए वि, विद्धसणयाए वि, मारणताए वि—ताव च ण से पुरिसे[3] •काइयाए, अहिगरणियाए, पाओसियाए, पारितावणियाए, पाणाति-वायकिरियाए°—पचहिं किरियाहिं पुट्ठे। से तेणट्ठेण गोयमा ! एव वुच्चइ—सिय तिकिरिए, सिय चउकिरिए, सिय पंचकिरिए॥

३७०. पुरिसे ण भते ! कच्छसि वा जाव[4] वणविदुग्गसि वा ? मियवित्तीए मियसकप्पे मियपणिहाणे मियवहाए गता एते मिय त्ति काउ अण्णतरस्स मियस्स वहाए आयत-कण्णायतं उसु आयामेत्ता चिट्ठेज्जा, अण्णयरे[5] पुरिसे मग्गतो आगम्म सयपाणिणा[6] असिणा सीसं छिंदेज्जा, से य उसू ताए चेव पुव्वायामणयाए तं

---

१. भ० १।३६४।
२. मिए त्ति (अ); मिया ति (ता, म), मिये ति (व, स)।
३. स० पा०—पुरिसे जाव पचहिं।
४. भ० १।३६४।
५. अण्णे य से (क, ता, म)।
६. सत° (ता)।

मिय विधेज्जा, से ण भते ! पुरिसे कि मियवेरेण पुट्ठे ? पुरिसवेरेण पुट्ठे ?
गोयमा ! जे मिय मारेइ, से मियवेरेण पुट्ठे । जे पुरिस मारेइ, से पुरिसवेरेण पुट्ठे ॥

३७१. से केणट्ठेण भते ! एव वुच्चइ[1]—•जे मिय मारेइ, से मियवेरेण पुट्ठे ? जे पुरिस मारेइ, से° पुरिसवेरेण पुट्ठे ?
से नूण गोयमा ! कज्जमाणे कडे, सधिज्जमाणे[2] सधिते, निव्वत्तिज्जमाणे निव्वत्तिते, निसिरिज्जमाणे निसिट्ठे[3] त्ति वत्तव्व सिया ?
हंता भगव ! कज्जमाणे कडे[4], •सधिज्जमाणे सधिते, निव्वत्तिज्जमाणे निव्वत्तिते, निसिरिज्जमाणे° निसिट्ठे त्ति वत्तव्व सिया ।
से तेणट्ठेण गोयमा ! एव वुच्चइ—जे मिय मारेइ, से मियवेरेण पुट्ठे । जे पुरिस मारेइ, से पुरिसवेरेण पुट्ठे ।
अतो छण्ह मासाणं मरइ—काइयाए[5], •अहिगरणियाए, पाओसियाए, पारितावणियाए, पाणातिवायकिरियाए°—पचहि किरियाहि पुट्ठे । बाहिं छण्ह मासाण मरइ—काइयाए[6] •अहिगरणियाए, पाओसियाए° पारितावणियाए—चउहिं किरियाहिं पुट्ठे ॥

३७२ पुरिसे ण भते ! पुरिस सत्तीए समभिधसेज्जा, सयपाणिणा[7] वा से असिणा सीस छिंदेज्जा, ततो ण भते ! से पुरिसे कतिकिरिए ?
गोयमा ! जाव च ण से पुरिसे त पुरिस सत्तीए समभिधसेति[8], सयपाणिणा[9] वा से असिणा सीस छिदति—ताव च ण से पुरिसे काइयाए, अहिगरणियाए[10] •पाओसियाए, पारितावणियाए°, पाणातिवातकिरियाए—पचहिं किरियाहिं पुट्ठे ।
आसण्णवधएण य अणवकखणवत्तीए[11] ण पुरिसवेरेण पुट्ठे ॥

जय-पराजय-पदं

३७३. दो भते ! पुरिसा सरिसया[12] सरित्तया[13] सरिव्वया सरिसभडमत्तोवगरणा अण्णमण्णेण सद्धि सगाम सगामेति तत्थ ण एगे पुरिसे पराइणति, एगे पुरिसे परायिज्जति[14] । से कहमेय भते ! एव ?

---

१ स० पा०—वुच्चइ जाव पुरिस° ।
२ सधेज्जमाणे (ता) ।
३. निसट्ठे (क, ता) ।
४. स० पा०—कडे जाव निसिट्ठे ।
५ स० पा०—काइयाए जाव पचहिं ।
६. स० पा०—काइयाए जाव पारिया°, कातियाए (ता) ।
७ सपाणिणा (क, ता) ।
८ अभिधसेइ (अ, व, स) ।
९ सपाणिणा (क, ता) ।
१० स० पा०—अहिगरणियाए जाव पाणा° ।
११ अणवकखवत्तीए (अ, स) ।
१२. सरसया (व) ।
१३. सरिसत्तया (ता) ।
१४. पराइणिज्जइ (अ, ता, व); पराएज्जइ (स) ।

गोयमा ! सवीरिए परायिणति, अवीरिए परायिज्जति ।।

३७४ से केणट्ठेण[1] •भते ! एव वुच्चइ—सवीरिए परायिणति ? अवीरिए° परायिज्जति ?

गोयमा ! जस्स ण वीरियवज्झाइ कम्माइ नो वद्धाइ नो पुट्ठाइ[2] •नो निहत्ताइ नो कडाइ नो पट्ठवियाइ नो अभिनिविट्ठाइ° नो अभिसमण्णागयाइं नो उदिण्णाइ—उवसताइ भवति से ण परायिणति ।

जस्स ण वीरियवज्झाइ कम्माइ वद्धाइ[3]• पुट्ठाइ निहत्ताइ कडाइ पट्ठवियाइ अभिनिविट्ठाइ अभिसमण्णागयाइ° उदिण्णाइ णो उवसताइ भवति से ण पुरिसे परायिज्जति, से तेणट्ठेण । गोयमा ! एव वुच्चति—सवीरिए परायिणति, अवीरिए परायिज्जति ।।

वीरिय-पदं

३७५. जीवा ण भते ! कि सवीरिया ? अवीरिया ?

गोयमा ! सवीरिया वि, अवीरिया वि ।।

३७६ से केणट्ठेण भते ! एव वुच्चइ—जीवा सवीरिया वि ? अवीरिया वि ?

गोयमा ! जीवा दुविहा पण्णत्ता, त जहा—ससारसमावण्णगा य, असंसार समावण्णगा य ।

तत्थ ण[4] जे ते अससारसमावण्णगा ते ण सिद्धा । सिद्धा ण अवीरिया । तत्थ ण जे ते ससारसमावण्णगा[5] ते दुविहा पण्णत्ता, त जहा—सेलेसिपडिवण्णगा य, असेलेसिपडिवण्णगा य । तत्थ ण जे ते सेलेसिपडिवण्णगा ते ण लद्धिवीरिएण सवीरिया, करणवीरिएण अवीरिया । तत्थ ण जे ते असेलेसिपडिवण्णगा ते णं लद्धिवीरिएण सवीरिया, करणवीरिएण सवीरिया वि, अवीरिया वि । से तेणट्ठेण गोयमा ! एव वुच्चइ—जीवा दुविहा पण्णत्ता, त जहा—सवीरिया वि, अवीरिया वि ।।

३७७ नेरइया ण भते ! कि सवीरिया ? अवीरिया ?

गोयमा ! नेरइया लद्धिवीरिएण सवीरिया, करणवीरिएण सवीरिया य, अवीरिया य ।।

३७८. से केणट्ठेण भते ! एव वुच्चइ—नेरइया लद्धिवीरिएण सवीरिया ? करण-वीरिएण सवीरिया य ? अवीरिया य ?

गोयमा ! जेसि ण नेरइयाण अत्थि उट्ठाणे कम्मे वले वीरिए पुरिसक्कार-

---

१. म० पा०—केणट्ठेण जाव परायिज्जति ।
२. सं० पा०—पुट्ठाइ जाव नो ।
३. म० पा०—वद्धाइं जाव उदिण्णाइं ।
४. × (क, ता, व, म) ।
५. ° वण्णया (क, ता, म) ।

परक्कमे, ते ण नेरइया लद्धिवीरिएण वि सवीरिया, करणवीरिएण वि सवीरिया।

जेसि ण नेरइयाण णत्थि उट्ठाणे[1] •कम्मे वले वीरिए पुरिसक्कार°-परक्कमे, ते ण नेरइया लद्धिवीरिएण सवीरिया, करणवीरिएण अवीरिया। से तेणट्ठेण गोयमा ! एव वुच्चइ—नेरइया लद्धिवीरिएण सवीरिया। करण-वीरिएण सवीरिया य, अवीरिया य ।।

३७९ जहा नेरइया एव जाव[2] पचिंदियतिरिक्खजोणिया ।।

३८०. [3]•मणुस्सा ण भते ! किं सवीरिया ? अवीरिया ?

गोयमा ! सवीरिया वि, अवीरिया वि ।।

३८१ से केणट्ठेण भते ! एव वुच्चइ—मणुस्सा सवीरिया वि ? अवीरिया वि ?

गोयमा ! मणुस्सा दुविहा पण्णत्ता, त जहा—सेलेसिपडिवण्णगा य, असेलेसि-पडिवण्णगा य।

तत्थ ण जे ते सेलेसिपडिवण्णगा ते ण लद्धिवीरिएण सवीरिया, करण-वीरिएण अवीरिया। तत्थ ण जे ते असेलेसिपडिवण्णगा ते ण लद्धिवीरिएण सवीरिया, करणवीरिएण सवीरिया वि, अवीरिया वि। से तेणट्ठेण गोयमा ! एव वुच्चइ—मणुस्सा सवीरिया वि, अवीरिया वि° ।।

३८२. वाणमतर-जोतिस-वेमाणिया जहा[4] नेरइया ।।

३८३. सेव भते ! सेव भते ! त्ति जाव[5] विहरइ ।।

नवमो उद्देसो

गुरु-लघु-पदं

३८४ कहण्ण[6] भते ! जीवा गरुयत्त हव्वमागच्छति ?

गोयमा ! पाणाइवाएण मुसावाएण अदिण्णादाणेण मेहुणेण परिग्गहेण कोह-माण-माया-लोभ-पेज्ज-दोस-कलह-अब्भक्खाण-पेसुन्न- 'परपरिवाय-अरति-रति'[7]-मायामोस-मिच्छादसणसल्लेण—एव खलु गोयमा ! जीवा गरुयत्त[8] हव्वमागच्छति ।।

---

१ स० पा०—उट्ठाणे जाव परक्कमे।

२ पू० प० २।

३ स० पा०—मणुस्सा जहा ओहिया जीवा णवर सिद्धवज्जा भाणियव्वा।

४ भ० १।३७७, ३७८।

५ भ० १।५१।

६ कह ण (अ, व)।

७ रतिअरतिपरपरिवाय (अ, व, स)।

८ गुरुयत्त (व)।

३८५ कहण्ण भते ! जीवा लहुयत्त हव्वमागच्छति ?
गोयमा ! पाणाइवायवेरमणेण[1] •मुसावायवेरमणेण अदिण्णादाणवेरमणेणं मेहुणवेरमणेणं परिग्गहवेरमणेण 'कोह-माण-माया-लोभ-पेज्ज-दोस-कलह-अब्भक्खाण-पेसुन्न-परपरिवाय-अरतिरति-मायामोस°-मिच्छादसणसल्ल वेर-मणेण'[2]—एव खलु गोयमा ! जीवा लहुयत्त हव्वमागच्छति ॥

३८६ [3]•कहण्ण भते ! जीवा ससार आउलीकरेति ?
गोयमा ! पाणाइवाएण जाव[4] मिच्छादसणसल्लेण—एव खलु गोयमा ! जीवा संसार आउलीकरेति ॥

३८७. कहण्णं भते ! जीवा ससार परित्तीकरेति ?
गोयमा ! पाणाइवायवेरमणेण जाव[5] मिच्छादसणसल्लवेरमणेण – एवं खलु गोयमा ! जीवा ससार परित्तीकरेति ॥

३८८ कहण्ण भते ! जीवा ससार दीहीकरेति ?
गोयमा ! पाणाइवाएण जाव[6] मिच्छादसणसल्लेण—एव खलु गोयमा ! जीवा ससार दीहीकरेति ॥

३८९. कहण्ण भते जीवा ससार ह्रस्सीकरेति ?
गोयमा ! पाणाइवायवेरमणेण जाव[7] मिच्छादसणसल्लवेरमणेण—एव खलु गोयमा ! जीवा ससार ह्रस्सीकरेति ॥

३९० कहण्ण भते ! जीवा ससार अणुपरियट्टति ?
गोयमा ! पाणाइवाएण जाव[8] मिच्छादसणसल्लेण—एव खलु गोयमा ! जीवा संसार अणुपरियट्टति ॥

३९१ कहण्ण भते ! जीवा ससार वीतिवयति ?
गोयमा ! पाणाइवायवेरमणेण जाव[9] मिच्छादसणसल्लवेरमणेण—एव खलु गोयमा ! जीवा ससार वीतिवयति ॥

३९२. सत्तमे ण भते ! ओवासतरे[10] किं गरुए[11] ? लहुए ? गरुयलहुए ? अगरुयलहुए ?
गोयमा ! णो गरुए, णो लहुए, णो गरुयलहुए, अगरुयलहुए ॥

---

१. पाणायवाय° (व, स);
म° पा°—पाणाइवायवेरमणेण जाव मिच्छा° ।
२ स्थानाङ्गे १।११४-१२६ क्रोधादीनामग्रे 'विवेगे' इति पद प्रयुक्तमस्ति ।
३. स° पा°—एव ससार आउलीकरेंति एव परित्तीकरेति एव दीहीकरेति एवं ह्रस्सीकरेंति एव अणुपरियट्टेंति एवं वीईवयति पसत्था चत्तारि अपसत्था चत्तारि ।
४. भ° १।३८४ ।
५. भ° १।३८५ ।
६ भ° १।३८४ ।
७ भ° १।३८५ ।
८ भ° १।३८४ ।
९ भ° १।३८५ ।
१० उवासतरे (क, व, म, स) ।
११. गुरुए (अ) ।

३९३. सत्तमे ण भते ! तणुवाए कि गरुए ? लहुए ? गरुयलहुए ? अगरुयलहुए ?
गोयमा ! णो गरुए, णो लहुए, गरुयलहुए, णो अगरुयलहुए ।।

३९४. एव सत्तमे घणवाए, सत्तमे घणोदही, सत्तमा पुढवी ।।

३९५. ओवासतराइ सव्वाइ जहा[1] सत्तमे ओवासतरे ।।

३९६ 'जहा तणुवाए एव—ओवास-वाय-घणउदही, पुढवी दीवा य सागरा वासा'[2] ।।

३९७. नेरइया ण भते ! किं गरुया[3] ? •लहुया ? गरुयलहुया ?° अगरुयलहुया ?
गोयमा ! णो गरुया, णो लहुया, गरुयलहुया वि, अगरुयलहुया वि ।।

३९८ से केणट्ठेण भते ! एव वुच्चइ—नेरइया णो गरुया ? णो लहुया ? गरुयलहुया वि ? अगरुयलहुया वि ?
गोयमा ! विउव्विय-तेयाइ पडुच्च णो गरुया, णो लहुया, गरुयलहुया, णो अगरुयलहुया । जीव च कम्मग[4] च पडुच्च णो गरुया, णो लहुया, णो गरुयलहुया, अगरुयलहुया । से तेणट्ठेण गोयमा ! एव वुच्चइ—नेरइया णो गरुया, णो लहुया, गरुयलहुया वि, अगरुयलहुया वि ।।

३९९ एव जाव[5] वेमाणिया, नवर—नाणत्त जाणियव्व सरीरेहि ।।

४००. धम्मत्थिकाए[6] •ण भते ! कि गरुए ? लहुए ? गरुयलहुए ? अगरुयलहुए ?
गोयमा ! णो गरुए, णो लहुए, णो गरुयलहुए, अगरुयलहुए ।।

४०१ अहम्मत्थिकाए ण भते ! कि गरुए ? लहुए ? गरुयलहुए ? अगरुयलहुए ?
गोयमा ! णो गरुए, णो लहुए, णो गरुयलहुए, अगरुयलहुए ।।

४०२. आगासत्थिकाए ण भते ! कि गरुए ? लहुए ? गरुयलहुए ? अगरुयलहुए ?
गोयमा ! णो गरुए, णो लहुए, णो गरुयलहुए, अगरुयलहुए ।।

४०३ जीवत्थिकाए ण भते ! किं गरुए ? लहुए ? गरुयलहुए ? अगरुयलहुए ?
गोयमा ! णो गरुए, णो लहुए, णो गरुयलहुए, अगरुयलहुए° ।।

४०४ पोग्गलत्थिकाए ण भते ! किं गरुए ? लहुए ? गरुयलहुए ? अगरुयलहुए ?
गोयमा ! णो गरुए, णो लहुए, गरुयलहुए वि, अगरुयलहुए वि ।।

४०५ से केणट्ठेण भते ! एव वुच्चइ–णो गरुए ? णो लहुए ? गरुयलहुए वि ? अगरुयलहुए वि ?
गोयमा ! गरुयलहुयदव्वाइ पडुच्च णो गरुए, णो लहुए, गरुयलहुए, णो

---

१ भ० १।३९२ ।

२ 'एव गरुयलहुए' इति पाठ एकस्मिन् क्वचित् प्रयुक्ते आदर्शे लभ्यते । एतत् सग्रहगाथायाश्चरणद्वयमस्ति तेन पूर्वोक्तस्यापि 'ओवास' पदस्य पुनरुल्लेखोत्र जातोस्ति ।

३. स० पा०—गरुया जाव अगरुय° ।

४ कम्मक (क), कम्मगण (वृत्तौ लिखिते पाठसकेते) ।

५ पू० प० २ ।

६ स० पा०—धम्मत्थिकाए जाव जीवत्थिकाए चउत्थपएण ।

अगरुयलहुए । अगरुयलहुयदव्वाइ पडुच्च णो गरुए, णो लहुए, णो गरुयलहुए, अगरुयलहुए ।।

४०६ [1]समया ण भते ! कि गरुया ? लहुया ? गरुयलहुया ? अगरुयलहुया ?
गोयमा ! णो गरुया, णो लहुया, णो गरुयलहुया, अगरुयलहुया ।।

४०७ कम्माणि ण भते ! किं गरुयाइ ? लहुयाइ ? गरुयलहुयाइ ? अगरुयलहुयाइं ?
गोयमा ! णो गरुयाइ, णो लहुयाइ, णो गरुयलहुयाइ, अगरुयलहुयाइ° ।।

४०८. कण्हलेस्सा ण भते ! कि गरुया[2] ? लहुया ? गरुयलहुया ?° अगरुयलहुया ?
गोयमा ! णो गरुया, णो लहुया, गरुयलहुया वि, अगरुयलहुया वि ।।

४०९. से केणट्ठेण भते ! एव वुच्चइ—कण्हलेस्सा णो गरुया ? णो लहुया ? गरुयलहुया वि ? अगरुयलहुया वि ?
गोयमा ! दव्वलेस्स पडुच्च ततियपदेण,[3] भावलेस्स पडुच्च चउत्थपदेण[4] ।।

४१०. एव जाव[5] सुक्कलेसा ।।

४११. दिट्ठी-दसण-'णाण-अण्णाण'[6]-सण्णाओ चउत्थएण पदेण नेतव्वाओ ।।

४१२. हेट्ठिल्ला चत्तारि[7] सरीरा नेयव्वा[8] ततिएण पदेण । कम्मय[9] चउत्थएण पदेण ।।

४१३ मणजोगो, वइजोगो चउत्थएण पदेण, कायजोगो ततिएण पदेण ।।

४१४. सागारोवओगो, अणागारोवओगो चउत्थएण पदेण ।।

४१५ सव्वदव्वा, सव्वपएसा, सव्वपज्जवा जहा[10] पोग्गलत्थिकाओ[11] ।।

४१६. तोतद्धा, अणागतद्धा, सव्वद्धा चउत्थएण[12] पदेण ।।

पसत्थ-पदं

४१७ से नूण भते ! लाघविय अप्पिच्छा अमुच्छा अगेही अपडिवद्धया समणाण निग्गथाण पसत्थ ?
हता गोयमा ! लाघविय[13] •अप्पिच्छा अमुच्छा अगेही अपडिवद्धया समणाण निग्गथाण° पसत्थ ।।

४१८ से नूण भते ! अकोहत्त अमाणत्त अमायत्त अलोभत्त समणाण निग्गथाण पसत्थ ?

---

१ म० पा०—समया कम्माणि य चउत्थपदेण ।
२ स० पा०—गरुया जाव अगरुय° ।
३ गरुयलहुया ।
४ अगरुयलहुया ।
५. भ० १।१०२ ।
६ नाणण्णाण (ता) ।
७ ओरालियवेउव्वियआहारगतेया ।
८ नायव्वा (अ, व स) ।
९ कम्मया (क, म, स), कम्मइए (ता) ।
१०. जधा (अ, व, म) ।
११ भ० १।४०४ ।
१२ चउत्थेण (क, ता, व, म) ।
१३ स० पा०—लाघविय जाव पसत्थ ।

हता गोयमा ! अकोहत्त अमाणत्त[1] •अमायत्त अलोभत्त समणाण निग्गथाण° पसत्थ ॥

कखापदोस-पदं

४१६. से नूण भते ! कखापदोसे खीणे समणे निग्गथे अतकरे भवति, अतिमसरीरिए वा ?
वहुमोहे वि य ण पुव्वि विहरित्ता अह[2] पच्छा सवुडे काल करेइ ततो पच्छा सिज्झति[3] •वुज्झति मुच्चति परिनिव्वाति सव्वदुक्खाण° अत करेति ?
हता गोयमा ! कखापदोसे[4] खीणे[5] •समणे निग्गथे अतकरे भवति, अतिमसरीरिए वा ।
वहुमोहे वि य ण पुव्वि विहरित्ता अह पच्छा सवुडे काल करेइ ततो पच्छा सिज्झति बुज्झति मुच्चति परिनिव्वाति सव्वदुक्खाण° अत करेति ॥

इह-पर-भवियाउय-पदं

४२०. अण्णउत्थिया ण भते ! एवमाइक्खति, एव भासति, एव पण्णवेति, एव परूवेति—एव खलु एगे जीवे एगेण समएण दो आउयाइ पकरेति, त जहा—इहभवियाउय[6] च, परभवियाउय च ।
ज समय इहभवियाउय पकरेति, त समय परभवियाउय पकरेति ।
ज समय परभवियाउय पकरेति, त समय इहभवियाउय पकरेति ।
इहभवियाउयस्स पकरणयाए परभवियाउय पकरेति,
परभवियाउयस्स पकरणयाए इहभवियाउय पकरेति ।
एव खलु एगे जीवे एगेण समएण दो आउयाइ पकरेति, त जहा—इहभवियाउय च, परभवियाउय च ॥

४२१ से कहमेय[7] भते ! एव ?
गोयमा ! जण्ण ते अण्णउत्थिया एवमाइक्खति जाव[8] एव खलु एगे जीवे एगेण समएण दो आउयाइ पकरेति, त जहा—इहभवियाउय च, परभवियाउय च ।
जे ते एवमाहसु मिच्छ ते एवमाहसु । अह पुण गोयमा ! एवमाइक्खामि[9], •एव भासेमि, एव पण्णवेमि, एव° परूवेमि—एव खलु एगे जीवे एगेण समएण एग आउय पकरेति, त जहा— इहभवियाउय वा, परभवियाउय वा ।

---

१ स० पा०—अमाणत्त जाव पसत्थ ।
२ अहा (अ, ता, व, म) ।
३ स० पा०—सिज्झति जाव अत ।
४ कख° (अ, व, स) ।
५ स० पा०—खीणे जाव अत ।
६ °आउग (क) ।
७ °मेत (ता, म), °मेव (स) ।
८. भ० १।४२० ।
९ स० पा०—एवमाइक्खामि जाव परूवेमि ।

ज समय इहभवियाउय पकरेति, णो त समय परभवियाउय पकरेति ।
ज समय परभवियाउय पकरेति, णो त समय इहभवियाउयं पकरेति ।
इहभवियाउयस्स पकरणताए णो परभवियाउय पकरेति ।
परभवियाउयस्स पकरणताए णो इहभवियाउय पकरेति ।
एव खलु एगे जीवे एगेण समएण एग आउय पकरेति, त जहा—इहभवियाउय वा, परभवियाउय वा ॥

४२२. सेव भते ! सेव भते ! त्ति भगव गोयमे जाव[1] विहरति ॥

कालासवेसियपुत्त-पदं

४२३. तेण कालेण तेण समएण पासावच्चिज्जे कालासवेसियपुत्ते णाम अणगारे जेणेव थेरा भगवतो तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता थेरे भगवते[2] एव वयासी—
थेरा सामाइय न याणति, थेरा सामाइयस्स अट्ठ न याणति ।
थेरा पच्चक्खाण न याणति, थेरा पच्चक्खाणस्स अट्ठ न याणति ।
थेरा सजम न याणति, थेरा सजमस्स अट्ठ न याणति ।
थेरा सवर न याणति, थेरा सवरस्स अट्ठ न याणति ।
थेरा विवेग न याणति, थेरा विवेगस्स अट्ठ ण याणति ।
थेरा विउस्सग्ग न याणति, थेरा विउस्सग्गस्स अट्ठ न याणति ॥

४२४. तए ण थेरा भगवतो कालासवेसियपुत्त अणगार एव वदासी—
जाणामो ण अज्जो ! सामाइय, जाणामो ण अज्जो ! सामाइयस्स[3] अट्ठ[4] ।
•जाणामो ण अज्जो ! पच्चक्खाण, जाणामो ण अज्जो ! पच्चक्खाणस्स अट्ठ ।
जाणामो ण अज्जो ! सजम, जाणामो ण अज्जो ! सजमस्स अट्ठ ।
जाणामो ण अज्जो ! सवर, जाणामो ण अज्जो ! सवरस्स अट्ठ ।
जाणामो ण अज्जो ! विवेग, जाणामो ण अज्जो ! विवेगस्स अट्ठ ।
जाणामो ण अज्जो ! विउस्सग्ग°, जाणामो ण अज्जो ! विउस्सग्गस्स अट्ठ ॥

४२५. तते ण से कालासवेसियपुत्ते अणगारे ते थेरे भगवते एव वयासी—जइ[5] ण अज्जो ! तुब्भे जाणह सामाइय, तुब्भे जाणह सामाइयस्स अट्ठ जाव[6] जइ ण अज्जो ! तुब्भे जाणह विउस्सग्ग, तुब्भे जाणह विउस्सग्गस्स अट्ठ । के भे[7]

---

१ भ० १।५१ ।
२. भगव (अ, व) ।
३. सामातियस्स (ता) ।
४. स० पा०—अट्ठ जाव जाणामो ।
५ जति (अ, क, व, म) ।
६. भ० १।४२३ ।
७ ते (व, म) ।

अज्जो ! सामाइए ? के भे अज्जो ! सामाइयस्स अट्ठे ? जाव के भे अज्जो ! विउस्सग्गे ? के भे अज्जो ! विउस्सग्गस्स अट्ठे ?

४२६. तए ण थेरा भगवतो कालासवेसियपुत्त अणगार एव वयासी—
आया णे अज्जो ! सामाइए, आया णे अज्जो ! सामाइयस्स अट्ठे[1] ।
•आया णे अज्जो ! पच्चक्खाणे, आया णे अज्जो ! पच्चक्खाणस्स अट्ठे ।
आया णे अज्जो ! सजमे, आया णे अज्जो ! सजमस्स अट्ठे ।
आया णे अज्जो ! सवरे, आया णे अज्जो ! सवरस्स अट्ठे ।
आया णे अज्जो ! विवेगे, आया णे अज्जो ! विवेगस्स अट्ठे ।।
आया णे अज्जो ! विउस्सग्गे, आया णे अज्जो ! ° विउस्सग्गस्स अट्ठे ।।

४२७ तए णं से कालासवेसियपुत्ते अणगारे थेरे भगवते एव वदासी—
जइ भे अज्जो ! आया सामाइए, आया सामाइयस्स अट्ठे जाव[2] आया विउस्सग्गस्स अट्ठे—अवहट्टु कोह-माण-माया-लोभे किमट्ठ अज्जो ! गरहह[3] ?
कालासा[4] ! सजमट्ठयाए ।।

४२८. से भते ! कि गरहा सजमे ? अगरहा सजमे ?
कालासा ! गरहा सजमे, णो अगरहा सजमे । गरहा वि य ण सव्व दोस पविणेति, सव्व वालिय परिण्णाए । एव खु णे आया सजमे उवहिते भवति । एव खु णे आया सजमे उवचिए भवति । एव खु णे आया सजमे उवट्ठिते भवति ।।

४२९ एत्थ ण से कालासवेसियपुत्ते अणगारे सबुद्धे थेरे भगवते वदति नमसति, वदित्ता नमसित्ता एव वयासी—एएसि ण भते ! पयाण पुव्वि अण्णाणयाए असवणयाए अबोहीए[5] अणभिगमेण अदिट्ठाण अस्सुयाण अमुयाण[6] अविण्णायाण अव्वोकडाण[7] अव्वोच्छिण्णाण अणिज्जूढाण अणुवधारियाण एयमट्ठे नो सद्दहिए नो पत्तिइए नो रोइए ।

इदार्णि भते ! एतेसिं पयाण जाणयाए सवणयाए वोहीए अभिगमेण दिट्ठाण सुयाण मुयाण[8] विण्णायाण वोगडाण वोच्छिण्णाण णिज्जूढाण उवधारियाण[9] एयमट्ठ सद्दहामि पत्तियामि रोएमि । एवमेय से जहेय[10] तुब्भे वदह ।।

४३०. तए ण ते थेरा भगवतो कालासवेसियपुत्त अणगार एव वयासी—सद्दहाहि

---

१ स० पा०—अट्ठे जाव विउस्सग्गस्स ।
२. भ० १।४२३ ।
३ गरहह्ट्ठ (व) ।
४. कालास (स) ।
५. अबोहियाए (अ, स) ।
६ असुयाण (म), वृत्तौ 'अस्मृताना' इति व्याख्यातमस्ति ।
७. अव्वोगडाण (अ,व, स), अवोकडाण (क,म) ।
८ सुयाण (व), × (म) ।
९ अवधारियाण (म) ।
१०. जहेद (ता) ।

अज्जो ! पत्तियाहि अज्जो ! रोएहि अज्जो ! से जहेय अम्हे वदामो ॥

४३१ तए ण से कालासवेसियपुत्ते अणगारे थेरे भगवते वदइ नमसइ, वदित्ता नमसित्ता एव वदासी—इच्छामि ण भते ! तुब्भ अतिए चाउज्जामाओ धम्माओ पच-महव्वइय सपडिक्कमण धम्म उवसपज्जित्ता ण विहरित्तए ।

अहासुह देवाणुप्पिया ! मा पडिवध[1] ॥

४३२ तए ण से कालासवेसियपुत्ते अणगारे थेरे भगवते वदइ नमसइ, वदित्ता नमसित्ता चाउज्जामाओ धम्माओ पचमहव्वइय सपडिक्कमण धम्म उवसपज्जित्ता ण विहरति ॥

४३३. तए ण से कालासवेसियपुत्ते अणगारे बहूणि वासाणि सामण्णपरियाग पाउणइ, पाउणित्ता जस्सट्ठाए कीरइ नग्गभावे मुडभावे अण्हाणय अदतवणय[2] अच्छत्तय अणोवाहणय भूमिसेज्जा फलसेज्जा कट्ठसेज्जा केसलोओ बभचेरवासो परघरप्पवेसो लद्धावलद्धी उच्चावया गामकटगा बावीसं परिसहोवसग्गा अहियासिज्जति, तमट्ठ आराहेइ, आराहेत्ता चरमेहि उस्सास-नीसासेहिं सिद्धे बुद्धे मुक्के परिनिव्वुडे[3] सव्वदुक्खप्पहीणे ॥

अपच्चक्खाणकिरिया-पदं

४३४. भते त्ति ! भगव गोयमे समण भगव महावीर वदइ नमसइ, वदित्ता नमसित्ता एव वदासी—से नूण भते ! सेट्ठियस्स[4] य तणुयस्स य किवणस्स[5] य खत्तियस्स य 'समा चेव'[6] अपच्चक्खाणकिरिया कज्जइ ?

हता गोयमा ! सेट्ठियस्स[7] •य तणुयस्स य किवणस्स य खत्तियस्स य समा चेव° अपच्चक्खाणकिरिया कज्जइ ॥

४३५. से केणट्ठेण भते ! एव वुच्चइ—सेट्ठियस्स य तणुयस्स य किवणस्स य खत्तियस्स य समा चेव अपच्चक्खाणकिरिया कज्जइ ?

गोयमा ! अविरतिं पडुच्च । से तेणट्ठेण गोयमा ! एव वुच्चइ—सेट्ठियस्स य तणुयस्स[8] •य किवणस्स य खत्तियस्स य समा चेव अपच्चक्खाणकिरिया° कज्जइ ॥

आहाकम्म-पदं

४३६ 'आहाकम्मं ण'[9] भुजमाणे समणे निग्गथे किं बधइ ? किं पकरेइ ? किं चिणाइ ? किं उवचिणाइ ?

१. कुरुष्व इति गम्यम् (वृ) ।

२ अदतवण्णय (क), अदतधुवणय (ता, ब, स) ।

३. परिणिव्वुए (अ, ता, ब), परिणिव्वुते (क, म) ।

४ सेट्ठिम्स (ता, ब), सिट्ठिस्स (म) ।

५ किविणस्स (ता) ।

६ समच्चेव (ब, म) ।

७ स० पा०—सेट्ठियस्स जाव अपच्चक्खाण° ।

८. स० पा० —तणुयस्स जाव कज्जइ ।

९ आहाकम्मे ण (क), आहाकम्म ण (ता); आहाकम ण (ब), आहाकम्मणं (म) ।

गोयमा ! आहाकम्म ण भुजमाणे आउयवज्जाओ सत्त कम्मप्पगडीओ सिढिलबधणबद्धाओ धणियबधणबद्धाओ पकरेइ[1], •हस्सकालठिइयाओ दीहकाल-ठिइयाओ पकरेइ, मदाणुभावाओ तिव्वाणुभावाओ पकरेइ, अप्पपएसग्गाओ बहुप्पएसग्गाओ पकरेइ, आउय च ण कम्म सिय बधइ, सिय नो बधइ, अस्साया-वेयणिज्ज च ण कम्म भुज्जो-भुज्जो उवचिणाइ, अणाइय च ण अणवदग्ग दीहमद्ध चाउरत ससारकतार° अणुपरियट्टइ ।।

४३७ से केणट्ठेण भते ! एव वुच्चइ—आहाकम्म ण भुजमाणे आउयवज्जाओ सत्त कम्मप्पगडीओ सिढिलबधणबद्धाओ धणियबधणबद्धाओ पकरेइ जाव[2] चाउरत ससारकतार अणुपरियट्टइ ?

गोयमा ! आहाकम्म ण भुजमाणे आयाए धम्म अइक्कमइ, आयाए धम्म अइक्कममाणे पुढविकाय णावकखइ[3], •आउकाय णावकखइ, तेउकाय णावकखइ, वाउकाय णावकखइ, वणस्सइकाय णावकखइ°, तसकाय णाव-कखइ, जेसि पि य ण जीवाण सरीराइ आहारमाहारेइ ते वि जीवे णावकखइ। से तेणट्ठेण गोयमा ! एव वुच्चइ—आहाकम्म ण भुजमाणे आउयवज्जाओ सत्त कम्मपगडीओ सिढिलबधणबद्धाओ धणियबधणबद्धाओ पकरेइ जाव चाउरत ससारकतार अणुपरियट्टइ ।।

फासु-एसणिज्ज-पदं

४३८. फासु-एसणिज्ज ण भते ! भुजमाणे समणे निग्गथे कि बधइ ? कि पकरेइ ? किं चिणाइ ? किं उवचिणाइ ?

गोयमा ! फासु-एसणिज्ज ण भुजमाणे आउयवज्जाओ सत्त कम्मपयडीओ धणियबधणबद्धाओ सिढिलबधणबद्धाओ पकरेइ, •[4]दीहकालट्ठिइयाओ हस्सकालट्ठिइयाओ पकरेइ, तिव्वाणुभावाओ मदाणुभावाओ पकरेइ, बहुप्पएसग्गाओ अप्पपएसग्गाओ पकरेइ, आउय च ण कम्म सिय बधइ, सिय नो बधइ, अस्सायावेयणिज्ज च ण कम्म नो भुज्जो-भुज्जो उवचिणाइ, अणादीय च ण अणवदग्ग दीहमद्ध चाउरत ससारकतार° वीईवयइ ।।

४३९. से केणट्ठेण भते ! एव वुच्चइ—फासु-एसणिज्ज ण भुजमाणे आउयवज्जाओ सत्त कम्मपयडीओ धणियबधणबद्धाओ सिढिलबधणबद्धाओ पकरेइ जाव[5] चाउरत ससारकतार वीईवयइ ?

गोयमा ! फासु-एसणिज्ज ण भुजमाणे समणे निग्गथे आयाए धम्म

---

१ स० पा०—पकरेइ जाव अणुपरियट्टइ ।

२. भ० १।४३६ ।

३ स० पा०—णावकखइ जाव तसकाय ।

४. स० पा०—जहा सवुडे, नवर आउय च ण कम्म सिय बधइ सिय णो बंधइ सेस तहेव जाव वीईवयइ ।

५ भ० १।४३८ ।

नाइक्कमइ, आयाए धम्मं अणइक्कममाणे पुढविकायं[1] अवकंखइ जाव[2] तसकायं अवकंखइ, जेसि पि य णं जीवाणं सरीराइं (आहारं ?[3]) आहारेइ ते वि जीवे अवकंखइ। से तेणट्ठेणं गोयमा ! एवं वुच्चइ—फासु-एसणिज्जं णं भुंजमाणे आउयवज्जाओ सत्त कम्मपयडीओ धणियबंधणबद्धाओ सिढिलबंधणबद्धाओ पकरेइ जाव[4] चाउरंतं संसारकंतारं वीईवयइ ॥

४४०. से नूणं भंते ! अथिरे पलोट्टइ, नो थिरे पलोट्टइ ? अथिरे भज्जइ, नो थिरे भज्जइ ? सासए बालए, बालियत्तं असासयं ? सासए पंडिए, पंडियत्तं असासयं ?

हंता गोयमा ! अथिरे पलोट्टइ[5], •नो थिरे पलोट्टइ। अथिरे भज्जइ, नो थिरे भज्जइ। सासए बालए, बालियत्तं असासयं। सासए पंडिए°, पंडियत्तं असासयं ॥

४४१. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति जाव[6] विहरइ ॥

दसमो उद्देसो

परसमयवत्तव्वया-पद

४४२ अण्णउत्थिया णं भंते ! एवमाइक्खंति[7], •एवं भासंति, एवं पण्णवेंति, एवं° परूवेंति—

एवं खलु चलमाणे अचलिए[8]। •उदीरिज्जमाणे अणुदीरिए। वेदिज्जमाणे अवेदिए। पहिज्जमाणे अपहीणे। छिज्जमाणे अच्छिण्णे। भिज्जमाणे अभिण्णे। दज्झमाणे अदड्ढे। मिज्जमाणे अमए°। निज्जरिज्जमाणे अणिज्जिण्णे।

दो परमाणुपोग्गला एगयओ[9] न[10] साहण्णंति,

कम्हा दो परमाणुपोग्गला एगयओ न साहण्णंति ?

दोण्हं परमाणुपोग्गलाणं नत्थि सिणेहकाए, तम्हा दो परमाणुपोग्गला एगयओ न साहण्णंति।

---

१. पुढविक्काय (ता, म, स)।
२. भ० १।४३७।
३ द्रष्टव्य—भ० १।४३७ सूत्रम्।
४. भ० १।४३८।
५ सं० पा०—पलोट्टइ जाव पंडियत्तं।
६ भ० १।५१।
७. सं० पा०—एवमाइक्खंति जाव परूवेंति।
८ सं० पा०—अचलिए जाव निज्जरिज्जमाणे।
९. एगततो (क, म), एगतओ (ता)।
१० णो (ता)।

तिण्णि परमाणुपोग्गला एगयग्रो साहण्णंति,

कम्हा तिण्णि परमाणुपोग्गला एगयग्रो साहण्णंति ?

तिण्हं परमाणुपोग्गलाणं ग्रत्थि सिणेहकाए, तम्हा तिण्णि परमाणुपोग्गला एगयग्रो साहण्णंति ।

ते भिज्जमाणा 'दुहा वि'[1], तिहा[2] वि कज्जंति ।

दुहा कज्जमाणा[3] एगयग्रो दिवड्ढे परमाणुपोग्गले भवइ—एगयग्रो वि दिवड्ढे परमाणुपोग्गले भवइ ।

तिहा कज्जमाणा तिण्णि परमाणुपोग्गला भवंति । एवं[4] चत्तारि ।

पंच परमाणुपोग्गला एगयग्रो साहण्णंति, एगयग्रो साहणित्ता[5] दुक्खत्ताए कज्जंति । दुक्खे वि य णं से सासए सया समितं[6] उवचिज्जइ य, ग्रवचिज्जइ य ।

पुव्विं[7] भासा भासा । भासिज्जमाणी भासा ग्रभासा । भासासमयवितिक्कंतं च णं भासिया भासा ।

जा सा पुव्विं भासा भासा । भासिज्जमाणी भासा ग्रभासा । भासासमयवितिक्कंतं च णं भासिया भासा । सा किं भासग्रो भासा ? ग्रभासग्रो भासा ?

ग्रभासग्रो णं सा भासा । नो खलु सा भासग्रो भासा ।

पुव्विं किरिया दुक्खा । कज्जमाणी किरिया ग्रदुक्खा । किरियासमयवितिक्कंतं च णं कडा किरिया दुक्खा ।

जा सा पुव्विं किरिया दुक्खा । कज्जमाणी किरिया ग्रदुक्खा । किरियासमयवितिक्कंतं च णं कडा किरिया दुक्खा । सा किं करणग्रो दुक्खा ? ग्रकरणग्रो दुक्खा ?

ग्रकरणग्रो णं सा दुक्खा । नो खलु सा करणग्रो दुक्खा—सेवं वत्तव्वं सिया ।

ग्रकिच्चं दुक्खं, ग्रफुसं दुक्खं, ग्रकज्जमाणकडं दुक्खं, ग्रकट्टु-ग्रकट्टु पाण-भूय-जीव-सत्ता वेदणं वेदेंति—इति वत्तव्वं सिया ।।

ससमयवत्तव्वया-पदं

४४३—से कहमेयं भंते ! एवं ?

१ दुविहा (व) ।

२ तिविहा (व, स) ।

३ किज्जमाणा (व) ।

४ एवं जाव (अ, क, ता, व, म, स), अत्र 'जाव' पदं प्रवाहपतितमायातमिति संभाव्यते । किं च अनेनात्र किञ्चित् ग्राह्यं नास्ति ।

५ साहण्णित्ता (ता, व) ।

६ समियं (अ, स) ।

७ पुव्वं (क, म, स) ।

गोयमा ! जण्ण[1] ते अण्णउत्थिया एवमाइक्खंति जाव[2] वेदणं वेदेंति—इति वत्तव्वं सिया।

जे ते एवमाहंसु, मिच्छा[3] ते एवमाहंसु। अहं पुण गोयमा ! एवमाइक्खामि, एवं भासेमि, एवं पण्णवेमि, एवं परूवेमि—एवं खलु चलमाणे चलिए[4]। •उदीरिज्जमाणे उदीरिए। वेदिज्जमाणे वेदिए। पहिज्जमाणे पहीणे। छिज्जमाणे छिण्णे। भिज्जमाणे भिण्णे। दज्झमाणे दड्ढे। मिज्जमाणे मए°। निज्जरिज्जमाणे निज्जिण्णे।

दो परमाणुपोग्गला एगयओ साहण्णंति,

कम्हा दो परमाणुपोग्गला एगयओ साहण्णंति ?

दोण्हं परमाणुपोग्गलाणं अत्थि सिणेहकाए, तम्हा दो परमाणुपोग्गला एगयओ साहण्णंति।

ते भिज्जमाणा दुहा कज्जंति। दुहा कज्जमाणा एगयओ परमाणुपोग्गले—एगयओ परमाणुपोग्गले भवति।

तिण्णि परमाणुपोग्गला एगयओ साहण्णंति,

कम्हा तिण्णि परमाणुपोग्गला एगयओ साहण्णंति ?

तिण्हं परमाणुपोग्गलाणं अत्थि सिणेहकाए, तम्हा तिण्णि परमाणुपोग्गला एगयओ साहण्णंति।

ते भिज्जमाणा दुहा वि, तिहा वि कज्जंति। दुहा कज्जमाणा एगयओ परमाणुपोग्गले, एगयओ दुपएसिए खंधे भवति।

तिहा कज्जमाणा तिण्णि परमाणुपोग्गला भवंति। एवं[5] चत्तारि[6]।

पंच परमाणुपोग्गला एगयओ साहण्णंति। एगयओ साहण्णित्ता खंधत्ताए कज्जंति। खंधे वि य णं से असासए सया समियं उवचिज्जइ य, अवचिज्जइ य।

पुव्विं भासा अभासा, भासिज्जमाणी भासा भासा, भासासमयवितिक्कंतं च णं भासिया भासा अभासा।

---

१. जं णं (ता)।

२. भ० १।४४२।

३. मिच्छं (ता)।

४. सं० पा०—चलिए जाव निज्जरिज्जमाणे।

५. एवं जाव (अ, क, ता, ब, म, स); अत्र 'जाव' पदं प्रवाहपतितमायातमिति संभाव्यते। किं च अनेनात्र किञ्चित् ग्राह्यं नास्ति।

६. अस्य पाठस्य रचना एवं संभाव्यते—
चत्तारि परमाणुपोग्गला एगयओ साहण्णंति,
कम्हा चत्तारि परमाणुपोग्गला एगयओ साहण्णंति ?
चउण्हं परमाणुपोग्गलाणं अत्थि सिणेहकाए, तम्हा चत्तारि परमाणुपोग्गला एगयओ साहण्णंति।
ते भिज्जमाणा दुहा वि, तिहा वि, चउहा वि.

जा सा पुव्वि भासा अभासा। भासिज्जमाणी भासा भासा, भासासमय-वितिक्कत च ण भासिया भासा अभासा। सा कि भासओ भासा ? अभासओ भासा ?

भासओ ण भासा, नो खलु सा अभासओ भासा।

पुव्वि किरिया अदुक्खा।[1] •कज्जमाणी किरिया दुक्खा। किरियासमय-वितिक्कत च ण कज्जमाणी किरिया अदुक्खा।

जा सा पुव्वि किरिया अदुक्खा। कज्जमाणी किरिया दुक्खा। किरिया-समयवितिक्कत च ण कज्जमाणी किरिया अदुक्खा। सा कि करणओ दुक्खा ? अकरणओ दुक्खा ?०

करणओ ण सा दुक्खा। नो खलु सा अकरणओ दुक्खा—सेव वत्तव्व सिया। किच्च दुक्ख, फुस दुक्ख, कज्जमाणकड दुक्ख, कट्टु-कट्टु पाण-भूय-जीव-सत्ता वेदण वेदेति—इति वत्तव्व सिया॥

इरियावहिया-सपराइया-पद

४४४ अण्णउत्थिया ण भते ! एवमाइक्खति[2], •एव भासति, एव पण्णवेति, एव परूवेति०—एवं खलु एगे जीवे एगेण समएण दो किरियाओ पकरेति, तं जहा—इरियावहिय[3] च, सपराइय च।

ज समय इरियावहिय पकरेइ, त समय सपराइय पकरेइ।

•[4]ज समय सपराइय पकरेइ, त समय इरियावहिय पकरेइ।

इरियावहियाए पकरणयाए सपराइय पकरेइ।

सपराइयाए पकरणयाए इरियावहिय पकरेइ।

एव खलु एगे जीवे एगेण समएण दो किरियाओ पकरेति, त जहा—इरिया-वहिय च, सपराइय च॥

४४५. से कहमेय भते ! एव ?

गोयमा ! जण्ण ते अण्णउत्थिया एवमाइक्खति, एव भासति, एव पण्णवेति,

---

कज्जति। दुहा कज्जमाणा एगयओ दुपएसिए खधे—एगयओ वि दुपएसिए खधे। अहवा एगयओ तिपएसिए खधे—एगयओ परमाणु-पोग्गले भवइ।

तिहा कज्जमाणा एगयओ दुपएसिए खधे—एगयओ एगे-एगे परमाणुपोग्गले भवइ।

चउहा कज्जमाणा चत्तारि परमाणुपोग्गला भवति।

१ स० पा०—जहा भासा तहा भाणियव्वा किरिया वि जाव करणओ।

२ स० पा०—एवमाइक्खति जाव एव।

३ रिया० (अ, ता, व, म)।

४ स० पा०—परउत्थियवत्तव्व णेयव्व ससमय-वत्तव्वयाए णेयव्व जाव इरियावहिय, 'क', 'ता' सकेतितयोरादर्शयोर्वृत्तौ च सक्षिप्तपाठो लभ्यते। शेषादर्शेषु वृत्तिकृता विस्तार नीतः

एव परूवेति—एव खलु एगे जीवे एगेण समएण दो किरियाओ पकरेति, जाव[1] इरियावहियं च, सपराइय च ।
जे ते एवमाहसु । मिच्छा ते एवमाहसु । अह पुण गोयमा ! एवमाइक्खामि, एव भासेमि, एव पण्णवेमि, एवं परूवेमि—एव खलु एगे जीवे एगेण समएण एक्क किरिय पकरेइ, त जहा—इरियावहिय वा, सपराइय वा ।
ज समय इरियावहिय पकरेइ, नो त समय सपराइय पकरेइ ।
जं समय सपराइय पकरेइ नो त समय इरियावहिय पकरेइ ।
इरियावहियाए पकरणयाए नो सपराइय पकरेइ ।
सपराइयाए पकरणयाए नो इरियावहिय पकरेइ ।
एव खलु एगे जीवे एगेण समएण एग किरिय पकरेइ, त जहा°—इरियावहिय वा, सपराइय वा ॥

उपपात-पदं

४४६. निरयगई ण भते ! केवतिय काल विरहिया उववाएण पण्णत्ता ?
गोयमा ! जहण्णेण एक्कं समय, उक्कोसेण बारस मुहुत्ता ॥

३४७ एवं वक्कतीपय[2] भाणियव्व निरवसेस ॥

४४८ सेव भते ! सेव भते त्ति जाव[3] विहरइ ॥

———

पाठो दृश्यते । अत्र च १।४२०, ४२१ सूत्रानुसारेण म पूर्ति नीतोस्ति ।

१. भ० १।४४४ ।

२. प० ६ ।

३ भ० १।५१ ।

बीअं सतं

पढमो उद्देसो

संगहणी-गाहा

१ 'ऊसास खदए वि य, २ समुग्घाय ३,४ पुढविंदिय ५ अण्णउत्थि ६ भासा य ।
७ देवा य ८ चमरचचा, ९,१० समयक्खित्तत्थिकाय बीयसए'[1] ॥१॥

उक्खेव-पद

१ तेण कालेण तेण समएण रायगिहे णाम नयरे होत्था—वण्णओ[2]। सामी समोसढे । परिसा निग्गया । धम्मो कहिओ । पडिगया परिसा ॥

सासुस्सास-पद

२. तेण कालेण तेण समएण समणस्स भगवओ महावीरस्स जेट्ठे अंतेवासी जाव[3] पज्जुवासमाणे एवं वदासी—

जे इमे भंते ! बेइंदिया तेइंदिया चउरिंदिया पंचिंदिया जीवा, एएसि णं आणामं वा पाणामं वा उस्सासं वा निस्सासं वा जाणामो पासामो ।

जे इमे पुढविकाइया जाव[4] वणप्फइकाइया—एगिंदिया जीवा, एएसि णं आणामं वा पाणामं वा उस्सासं वा निस्सासं वा न याणामो न पासामो ।

एए णं भंते ! जीवा आणमंति वा ? पाणमंति वा ? ऊससंति वा ? नीससंति वा ?

हंता गोयमा ! एए वि णं जीवा आणमंति वा, पाणमंति वा, ऊससंति वा, नीससंति वा ॥

---

१ × (अ, ता, व, म, स) ।
२ ओ० सू० १ ।
३ भ० १।९, १० ।
४ भ० १।४३७ ।

३. किण्ण[1] भंते ! एते जीवा आणमति वा ? पाणमति वा ? ऊससति वा ? नीससति वा ?
गोयमा ! दव्वओ[2] अणंतपएसियाइं दव्वाइं, खेत्तओ असंखेज्जपएसोगाढाइं, कालओ अण्णयरठितियाइं[3], भावओ वण्णमंताइं गंधमंताइं रसमंताइं फासमंताइं आणमंति वा, पाणमंति वा, ऊससंति वा, नीससंति वा ॥

४. जाइं भावओ वण्णमंताइं आणमंति वा, पाणमंति वा ऊससंति वा, नीससंति वा ताइं किं एगवण्णाइं[4] •जाव[5] किं पंचवण्णाइं आणमंति वा ? पाणमंति वा ? ऊससंति वा ? नीससंति वा ?
गोयमा ! ठाणमग्गणं पडुच्च एगवण्णाइं पि जाव[6] पंचवण्णाइं पि आणमंति वा, पाणमंति वा, ऊससंति वा, नीससंति वा। विहाणमग्गणं पडुच्च कालवण्णाइं पि जाव सुक्किलाइं पि आणमंति वा, पणमंति वा, ऊससंति वा, नीससंति वा। आहारगमो नेयव्वो[7] जाव—

५. पुढविकाइया णं भंते ! कइदिसं आणमंति वा ? पाणमंति वा ? ऊससंति वा ? नीससंति वा ?
गोयमा ! निव्वाघाएणं छद्दिसिं, वाघायं पडुच्च सिय तिदिसिं सिय चउदिसिं सिय पंचदिसिं° ॥

६. किण्णं भंते ! नेरइया आणमंति वा ? पाणमंति वा ? ऊससंति वा ? नीससंति वा ?
तं चेव जाव[8] नियमा छद्दिसिं आणमंति वा, पाणमंति वा, ऊससंति वा, नीससंति वा ॥

७. जीव-एगिंदिया वाघाय-निव्वाघाया य भाणियव्वा[9]। सेसा नियमा छद्दिसिं ॥

८. वाउयाए णं भंते ! वाउयाए चेव आणमंति वा ? पाणमंति वा ? ऊससंति वा ? नीससंति वा ?
हंता गोयमा ! वाउयाए णं[10] •वाउयाए चेव आणमंति वा, पाणमंति वा, ऊससंति वा°, नीससंति वा ॥

वाउकायस्स कायट्ठिइ-पदं

९. वाउयाए णं भंते ! वाउयाए चेव अणेगसयसहस्सखुत्तो उद्दाइत्ता-उद्दाइत्ता तत्थेव भुज्जो-भुज्जो पच्चायाति ?

---

१. किं ण (ता)।
२. दव्वओ णं (अ, म, स)।
३. °ठितीयाइं (अ, क, ता, ब, म, स)।
४. म० पा०—एगवण्णाइं आणमंति वा पाण-मंति वा ऊससंति वा नीससंति वा आहार-गमो नेयव्वो जाव पंचदिसं।
५, ६, ७ प० २८।१।
८. प० २८।१।
९ प० २८।१।
१०. स० पा०—वाउयाए णं जाव नीससंति।

हता गोयमा[1] ! •वाउयाए ण वाउयाए चेव अणेगसयसहस्सखुत्तो उद्दाइत्ता-उद्दाइत्ता तत्थेव भुज्जो-भुज्जो° पच्चायाति ॥

१० से भते ! कि पुट्ठे उद्दाति ? अपुट्ठे उद्दाति ?
गोयमा ! पुट्ठे उद्दाति, नो अपुट्ठे उद्दाति ॥

११ से भते ! कि ससरीरी निक्खमइ ? असरीरी निक्खमइ ?
गोयमा ! सिय ससरीरी निक्खमइ, सिय असरीरी निक्खमइ ॥

१२ से केणट्ठेण भते ! एव वुच्चइ—सिय ससरीरी निक्खमइ, सिय असरीरी निक्खमइ ?
गोयमा ! वाउयायस्स ण चत्तारि सरीरया पण्णत्ता, त जहा—ओरालिए, वेउव्विए, तेयए, कम्मए । ओरालिय-वेउव्वियाइ विप्पजहाय तेयय-कम्मएहिं निक्खमइ । से तेणट्ठेण गोयमा ! एव वुच्चइ—सिय ससरीरी निक्खमइ, सिय असरीरी निक्खमइ ॥

मडाइ-नियंठ-पदं

१३ मडाई[2] ण भते ! नियठे नो निरुद्धभवे, नो निरुद्धभवपवचे[3], नो पहीणससारे, नो पहीणससारवेयणिज्जे, नो वोच्छिण्णससारे, नो वोच्छिण्णससारवेयणिज्जे, नो निट्ठियट्ठे, नो निट्ठियट्ठकरणिज्जे पुणरवि इत्थत्थ[4] हव्वमागच्छइ ?
हता गोयमा ! मडाई ण नियठे नो निरुद्धभवे, नो निरुद्धभवपवचे, नो पहीणससारे, नो पहीणससारवेयणिज्जे, नो वोच्छिण्णससारे, नो वोच्छिण्ण-ससारवेयणिज्जे, नो निट्ठियट्ठे, नो निट्ठियट्ठकरणिज्जे पुणरवि इत्थत्थ[4] हव्वमागच्छइ ॥

१४ से ण भते ! किं ति वत्तव्व सिया ?
गोयमा ! पाणे त्ति वत्तव्व सिया । भूए त्ति वत्तव्व सिया । जीवे त्ति वत्तव्व सिया । सत्ते त्ति वत्तव्व सिया । विण्णु[5] त्ति वत्तव्वं सिया । 'वेदे त्ति'[6] वत्तव्व सिया । पाणे भूए जीवे सत्ते विण्णू वेदे त्ति वत्तव्व सिया ॥

१५ से केणट्ठेण पाणे त्ति वत्तव्व सिया जाव वेदे त्ति वत्तव्व सिया ?
गोयमा ! जम्हा आणमइ वा, पाणमइ वा, उस्ससइ वा, नीससइ वा तम्हा पाणे त्ति वत्तव्व सिया ।
जम्हा भूते भवति भविस्सति य तम्हा भूए त्ति वत्तव्व सिया ।

---

१. स० पा०—गोयमा जाव पच्चायाति ।
२. मडादी (ता) ।
३. ° पवधे (व) ।
४ इत्थत्त (अ, ता, ब, स, वृपा), इत्तत्थं (क), वृत्तौ 'इत्यर्थं—एनमर्थम्' इति व्याख्यातमस्ति, तेन तत्रापि इत्तत्थमिति पाठः सभाव्यते ।
५. विन्नुय (व) ।
६ वेदाति (क, ता, व, म) ।

जम्हा जीवे जीवति[1], जीवत्त आउय च कम्म उवजीवति[2] तम्हा जीवे त्ति वत्तव्व सिया ।

जम्हा सत्ते सुभासुभेहि कम्मेहि तम्हा सत्ते त्ति वत्तव्व सिया ।

जम्हा 'तित्तकडुकसायबिलमहुरे रसे'[3] जाणइ तम्हा विण्णु त्ति वत्तव्व सिया ।

जम्हा वेदेति य सुह-दुक्ख तम्हा वेदे त्ति वत्तव्व सिया । से तेणट्ठेण[4] पाणे त्ति वत्तव्व सिया जाव वेदे त्ति वत्तव्वं सिया ॥

१६. मडाई ण भते ! नियठे निरुद्धभवे, निरुद्धभवपवचे[5], •पहीणससारे, पहीणससारवेयणिज्जे, वोच्छिण्णससारे, वोच्छिण्णससारवेयणिज्जे, निट्ठियट्ठे°, निट्ठियट्ठकरणिज्जे नो पुणरवि इत्थत्थ हव्वमागच्छइ ?

हता गोयमा ! मडाई ण नियठे[6] •निरुद्धभवे, निरुद्धभवपवंचे, पहीणससारे, पहीणससारवेयणिज्जे, वोच्छिण्णससारे, वोच्छिण्णससारवेयणिज्जे, निट्ठियट्ठे, निट्ठियट्ठकरणिज्जे° नो पुणरवि इत्थत्थ हव्वमागच्छइ ॥

१७. से ण भते ! किं ति वत्तव्व सिया ?

गोयमा ! सिद्धे त्ति वत्तव्व सिया । बुद्धे त्ति वत्तव्व सिया । मुत्ते त्ति वत्तव्वं सिया । पारगए त्ति वत्तव्व सिया । परपरगए त्ति वत्तव्व सिया । सिद्धे बुद्धे मुत्ते परिनिव्वुडे अतकडे[7] सव्वदुक्खप्पहीणे त्ति वत्तव्व सिया ॥

१८ सेव भते ! सेव भते ! त्ति भगव गोयमे समण भगव महावीर वदति नमसति, वदित्ता नमसित्ता सजमेण तवसा अप्पाण भावेमाणे विहरति ॥

१९ तए ण समणे भगव महावीरे रायगिहाओ नगराओ गुणसिलाओ चेइआओ पडिनिक्खमइ, पडिनिक्खमित्ता बहिया जणवयविहार विहरइ ॥

खदयकहा-पद

२०. तेण कालेण तेण समएण कयगला नाम नगरी होत्था—वण्णओ[8] ॥

२१ तीसे ण कयगलाए नयरीए बहिया उत्तरपुरत्थिमे दिसीभाए छत्तपलासए नाम चेइए होत्था—वण्णओ[9] ॥

२२ तए ण समणे भगव महावीरे उप्पन्ननाणदसणधरे[10] •अरहा जिणे केवली जेणेव कयगला नयरी जेणेव छत्तपलासए चेइए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता

---

१ जीवेति (क) ।
२. उवजीवेइ (ब) ।
३. °कटु° (ब), °महुररसे (ता, म) ।
४. तेणट्ठेण जाव (अ, क, ता, ब, म) ।
५. स० पा०—निरुद्धभवपवचे जाव निट्ठिय° ।
६. स० पा०—नियठे जाव नो ।
७ अतगडे (क) ।
८ ओ० सू० १ ।
९. ओ० सू० २-१३ ।
१०. स० पा०—उप्पन्ननाणदसणधरे जाव समोसरण ।

अहापडिरूव ओग्गह ओगिण्हइ, ओगिण्हित्ता सजमेण तवसा अप्पाण भावेमाणे विहरइ जाव[१०] समोसरण । परिसा निग्गच्छइ ।।

२३ तीसे ण कयगलाए नयरीए अदूरसामते सावत्थी नाम नयरी होत्था—वण्णओ[२] ।।

२४ तत्थ ण सावत्थीए नयरीए गद्दभालस्स[३] अतेवासी खदए[४] नाम कच्चायणसगोत्त परिव्वायगे परिवसइ[५]-रिव्वेद[६]-जजुव्वेद-सामवेद-अहव्वणवेद[७]-इतिहास-पचमाण निघटुछट्ठाण—चउण्ह वेदाण सगोवगाण सरहस्साण सारए धारए[८] पारए सडगवी सट्ठितत्तविसारए, सखाणे सिक्खा-कप्पे वागरणे छदे निरुत्ते जोतिसामयणे[९], अण्णेसु य बहूसु बभण्णएसु[१०] परिव्वायएसु य नयेसु सुपरिनिट्ठिए या वि होत्था ।।

२५ तत्थ ण सावत्थीए नयरीए पिगलए नाम नियठे वेसालियसावए[११] परिवसइ ।।

२६ तए ण से पिगलए नाम नियठे वेसालियसावए अण्णया कयाइ[१२] जेणेव खदए कच्चायणसगोत्ते तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता खदग कच्चायणसगोत्त इणमक्खेव पुच्छे—मागहा[१३] ।

१ कि सअते[१४] लोए ? अणते लोए ? २ सअते जीवे ? अणते जीवे ? ३ सअता सिद्धी ? अणता सिद्धी ? ४ सअते सिद्धे ? अणते सिद्धे ? ५ केण वा मरणेण मरमाणे जीवे वड्ढति वा, हायति वा ?—एतावताव[१५] आइक्खाहि वुच्चमाणे एव ।।

२७ तए ण से खदए कच्चायणसगोत्ते पिंगलएण नियठेण वेसालियसावएण इणमक्खेव पुच्छिए समाणे सकिए कखिए वितिगिच्छिए भेदसमावन्ने कलुससमावन्ने णो सचाएइ पिंगलयस्स नियठस्स वेसालियसावयस्स किंचि वि पमोक्खमक्खाइउं, तुसिणीए सचिट्ठइ ।।

२८ तए ण से पिगलए नियठे वेसालियसावए खदय कच्चायणसगोत्त दोच्च पि तच्च पि इणमक्खेव पुच्छे—मागहा ।

---

१ ओ० सू० १६-५१ ।
२ ओ० सू० १ ।
३. गद्दभालिस्स (व) ।
४. खडए (व) ।
५ वसइ (अ) ।
६ रिउव्वेद (अ, व, स), रिजुव्वेद (क) ।
७. अथव्वण० (अ), अत्थव्वेय (क), अथव्ववेद (ता, म), अहव्वेद (व) ।
८. वारए धारए (अ, क, म, स), वारए (व, वृ), धारए (वृपा) ।
९ जोतिसाअयणे (ता) ।
१०. बम्हण्णए (क) ।
११ वेसालीसावए (क, ता), वेसालियस्सावए (म) ।
१२ कयाए (स) ।
१३ मागधा (ता) ।
१४. सते (ता) ।
१५. एतावता (अ, क, व), एत्तावत्ताव (ता, म) ।

१ कि सअंते लोए[1] ? •अणंते लोए ? २ सअंते जीवे ? अणंते जीवे ? ३ सअंता सिद्धी ? अणंता सिद्धी ? ४. सअंते सिद्धे ? अणंते सिद्धे ?° ५ केण वा मरणेण मरमाणे जीवे वड्ढति वा, हायति वा ?—एतावताव आइक्खाहि वुच्चमाणे एवं ॥

२९ तए णं से खंदए कच्चायणसगोत्ते पिंगलएणं नियंठेणं वेसालियसावएणं दोच्चं पि तच्चं पि इणमक्खेवं पुच्छिए समाणे संकिए कंखिए वितिगिच्छिए[2] भेदसमावन्ने कलुससमावन्ने णो संचाएइ पिंगलस्स नियंठस्स वेसालियसावयस्स किंचि वि पमोक्खमक्खाइउं, तुसिणीए संचिट्ठइ ॥

३० तए णं सावत्थीए नयरीए सिंघाडग[3]-•तिग-चउक्क-चच्चर-चउम्मुह-महापह°-पहेसु महया जणसमद्दे[4] इ वा जणवूहे इ वा[5] •जणबोले इ वा जणकलकले इ वा जणुम्मी इ वा जणुक्कलिया इ वा जणसण्णिवाए इ वा बहुजणो अण्णमण्णस्स एवमाइक्खइ, एवं भासेइ, एवं पण्णवेइ, एवं परूवेइ—

एवं खलु देवाणुप्पिया ! समणे भगवं महावीरे आइगरे जाव[6] सिद्धिगतिनामधेयं ठाणं संपाविउकामे पुव्वाणुपुव्विं चरमाणे गामाणुगामं दूइज्जमाणे इहमागए इहसंपत्ते इहसमोसढे इहेव कयंगलाए नयरीए बहिया छत्तपलासए चेइए अहापडिरूवं ओग्गहं ओगिण्हित्ता संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे विहरइ ।

तं महप्फलं खलु भो देवाणुप्पिया ! तहारूवाणं अरहंताणं भगवंताणं नामगोयस्सवि सवणयाए, किमंग पुण अभिगमण-वंदण-नमंसण-पडिपुच्छण-पज्जुवासणयाए ? एगस्सवि आरियस्स धम्मियस्स सुवयणस्स सवणयाए, किमंग पुण विउलस्स अट्ठस्स गहणयाए ? तं गच्छामो णं देवाणुप्पिया ! समणं भगवं महावीरं वंदामो नमंसामो सक्कारेमो सम्माणेमो कल्लाणं मंगलं देवयं चेइयं पज्जुवासामो । एयं णे पेच्चभवे इहभवे य हियाए सुहाए खमाए निस्सेयसाए आणुगामियत्ताए भविस्सइ त्ति कट्टु बहवे उग्गा उग्गपुत्ता भोगा भोगपुत्ता एवं दुप्पडोयारेण—राइण्णा खत्तिया माहणा भडा जोहा पसत्थारो मल्लई लेच्छई लेच्छईपुत्ता, अण्णे य बहवे राईसर-तलवर-माडंबिय-कोडुंबिय-इब्भ-सेट्ठि-सेणावइ-सत्थवाहप्पभितओ जाव[7] महया उक्किट्ठसीहनाय-बोल-कलकलरवेणं पक्खुभियमहासमुद्दरवभूयं पिव करेमाणा सावत्थीए नयरीए मज्झंमज्झेणं° निग्गच्छंति ॥

३१ तए णं तस्स खंदयस्स कच्चायणसगोत्तस्स बहुजणस्स अंतिए एयमट्ठं सोच्चा निसम्म इमेयारूवे अज्झत्थिए चिंतिए पत्थिए मणोगए संकप्पे समुप्पज्जित्था—

---

१. सं० पा०—लोए जाव केण ।
२, ° गिंछिए (अ) ।
३ सं० पा०—सिंघाडग जाव पहेसु ।
४. ° सद्दे (अ, म, वृपा) ।
५. सं० पा०—जणवूहे इ वा परिसा निग्गच्छइ ।
६ भ० १।७ ।
७. ओ० सू० ५२ ।

'एव खलु समणे भगव महावीरे कयगलाए नयरीए बहिया छत्तपलासए चेइए सजमेण तवसा अप्पाण भावेमाणे विहरइ। त गच्छामि ण समण भगव महावीर वदामि नमसामि'[1]। सेय खलु मे समण भगव महावीर वदित्ता, नमसित्ता सक्कारेत्ता सम्माणेत्ता कल्लाण मगल देवय चेइय पज्जुवासित्ता इमाइ च ण एयारूवाइ अट्ठाइ हेऊइ पसिणाइ कारणाइ[2] वागरणाइं पुच्छित्तए त्ति कट्टु एव सपेहेइ, सपेहेत्ता जेणेव परिव्वायगावसहे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता तिदड च कुडिय च कंचणिय च करोडिय च भिसिय च केसरिय च छण्णालय[3] च अंकुसय च पवित्तय[4] च गणेत्तिय च छत्तय च वाहणाओ[5] य पाउयाओ[6] य धाउरत्ताओ य गेण्हइ, गेण्हित्ता परिव्वायावसहाओ पडिनिक्खमइ, पडिनिक्खमित्ता तिदड-कुडिय-कचणिय-करोडिय-भिसिय-केसरिय-छण्णालय-अकुसय-पवित्तय-गणेत्तियहत्थगए, छत्तोवाहणसजुत्ते[7], धाउरत्तवत्थपरिहिए सावत्थीए नयरीए मज्झमज्झेण निग्गच्छइ,निग्गच्छित्ता जेणेव कयगला नगरी, जेणेव छत्तपलासए चेइए, जेणेव समणे भगव महावीरे, तेणेव पहारेत्थ गमणाए ॥

३२ गोयमाइ[8] ! समणे भगव महावीरे भगव गोयम एव वयासी—
दच्छिसि ण गोयमा ! पुव्वसगइय।
क[9] भते ! ?
खदय नाम।
से काहे वा ? किह वा ? केवच्चिरेण वा ?

३३ एव खलु गोयमा ! तेण कालेण तेण समएण सावत्थी नाम नगरी होत्था—वण्णओ[10]। तत्थ ण सावत्थीए नयरीए गद्दभालस्स अतेवासी खदए नाम कच्चायणसगोत्ते परिव्वायए परिवसइ। त चेव जाव[11] जेणेव मम अतिए, तेणेव पहारेत्थ गमणाए। से अदूरागते[12] बहुसपत्ते अद्धाणपडिवण्णे अतरा पहे वट्टइ। 'अज्जेव ण दच्छिसि[13] गोयमा !

३४ भंत्तेति ! भगवं गोयमे समण भगव महावीर वदइ नमसइ, वदित्ता नमसित्ता एव वदासी—पहू ण भते ! खदए कच्चायणसगोत्ते देवाणुप्पियाण अतिए मु डे

---

१. × (क, ता, व)।
२. × (अ, व, म)।
३. छण्हालय (ता)।
४ पवित्तिय (क)।
५. पाहणाओ (ता)।
६ ओवाइय (सू० ११७) सूत्रे 'पाउयाओ' इति पदं नास्ति, प्रस्तुतप्रकरणे पि किंचिदग्रे 'छत्तोवाहणसजुत्ते' इत्यत्रापि तन्नास्ति।
७ ० वाणह० (क)।
८. ० दि (क, ता, म)।
९ क त (अ, क, ता)।
१० ओ० सू० १।
११ भ० २।२५-३१।
१२ अदूराइते (क), अदूरियाते (व)।
१३ दिच्छसि (अ, स), दच्छसि (म)।

भवित्ता[1] अगाराओ[2] अणगारियं पव्वइत्तए ?

हंता पभू ॥

३५ जावं च णं समणे भगवं महावीरे भगवओ गोयमस्स एयमट्ठं परिकहेइ, तावं च णं से खंदए कच्चायणसगोत्ते तं देसं हव्वमागए ॥

३६. तए णं भगवं गोयमे खंदयं कच्चायणसगोत्तं अदूरागतं[3] जाणित्ता खिप्पामेव अब्भुट्ठेति, अब्भुट्ठेत्ता खिप्पामेव पच्चुवगच्छइ,[4] जेणेव खंदए कच्चायणसगोत्ते तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता खंदयं कच्चायणसगोत्तं एवं वयासी—हे खंदया ! सागयं खंदया ! सुसागयं खंदया ! अणुरागयं[5] खंदया ! सागयमणुरागयं खंदया ! से नूणं तुमं खंदया ! सावत्थीए नयरीए पिंगलएणं नियंठेणं वेसालिय-सावएणं इणमक्खेवं पुच्छिए—मागहा ! किं सअंते लोगे ? अणंते लोगे ? एवं तं चेव जाव[6] जेणेव इहं, तेणेव हव्वमागए। से नूणं खंदया ! 'अट्ठे समट्ठे' ?[7]

हंता अत्थि ॥

३७ तए णं से खंदए कच्चायणसगोत्ते भगवं गोयमं एवं वयासी—'से केस णं गोयमा'[8] ! तहारूवे नाणी वा तवस्सी वा, जेणं तव एस अट्ठे मम ताव[9] रहस्स-कडे हव्वमक्खाए, जओ णं तुमं जाणसि ?

३८. तए णं से भगवं गोयमे खंदयं कच्चायणसगोत्तं एवं वयासी—एवं खलु खंदया ! मम धम्मायरिए धम्मोवदेसए समणे भगवं महावीरे उप्पण्णनाणदंसणधरे अरहा जिणे केवली तीयपच्चुप्पन्नमणागयवियाणए सव्वण्णू सव्वदरिसी जेणं मम एस अट्ठे तव ताव रहस्सकडे हव्वमक्खाए, जओ णं अहं जाणामि खंदया !

३९ तए णं से खंदए कच्चायणसगोत्ते भगवं गोयमं एवं वयासी—गच्छामो णं गोयमा ! तव धम्मायरियं धम्मोवदेसयं समणं भगवं महावीरं वंदामो नमंसामो[10] •सक्कारेमो सम्माणेमो कल्लाणं मंगलं देवयं चेइयं० पज्जुवासामो।

अहासुहं देवाणुप्पिया ! मा पडिबंधं ॥

४०. तए णं से भगवं गोयमे खंदएणं कच्चायणसगोत्तेणं सद्धिं जेणेव समणे भगवं महा-वीरे, तेणेव पहारेत्थ गमणाए ॥

४१. तेणं कालेणं तेणं समएणं समणे भगवं महावीरे वियट्टभोई[11] यावि होत्था ॥

---

१ भवित्ता णं (क, ता, व, स)।

२. आगाराओ (अ, क, व, स)।

३. अदूरआगयं (अ, व, स), अदूरमागतं (ता)।

४. पच्चुगच्छइ (अ, क, ता, म); पत्थुगच्छइ (व)।

५. रेफस्य आगमिकत्वात् (वृ)।

६, भ० २।२६-३५।

७-अत्थे समत्थे (क, वृ), अट्ठे समट्ठे (वृपा)।

८ से केणं गोयमा (अ, व), केस णं गोयमा से (ता)।

९. आय (ता)।

१० सं० पा०—नमंसामो जाव पज्जुवासामो।

११ वियट्टभोति (अ, ता, व, म, स)।

४२. तए णं समणस्स भगवओ महावीरस्स वियट्टभोइस्स[1] सरीरयं ओरालं सिंगारं कल्लाणं सिवं धन्नं मंगल्लं[2] अणलंकियविभूसियं लक्खण-वंजण-गुणोववेयं सिरीए अतीव-अतीव उवसोभेमाणं चिट्ठइ ॥

४३. तए णं से खंदए कच्चायणसगोत्ते समणस्स भगवओ महावीरस्स वियट्टभोइस्स सरीरयं ओरालं[3] •सिंगारं कल्लाणं सिवं धन्नं मंगल्लं अणलंकियविभूसियं लक्खण-वंजण-गुणोववेयं सिरीए° अतीव-अतीव उवसोभेमाणं पासइ, पासित्ता हट्ठतुट्ठचित्तमाणंदिए णंदिए[4] पीइमणे[5] परमसोमणस्सिए[6] हरिसवसविसप्पमाणहियए जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता समणं भगवं महावीरं तिक्खुत्तो आयाहिण-पयाहिणं करेइ[7], •करेत्ता वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता णच्चासन्ने नातिदूरे सुस्सूसमाणे णमंसमाणे अभिमुहे विणएणं पंजलियडे° पज्जुवासइ ॥

४४ खंदयाति ! समणे भगवं महावीरे खंदयं कच्चायणसगोत्तं एवं वयासी—से नूणं तुमं खंदया ! सावत्थीए नयरीए पिंगलएणं नियंठेणं वेसालियसावएणं इणमक्खेवं पुच्छिए—मागहा !

१ किं सअंते लोए ? अणंते लोए ? २ सअंते जीवे ? अणंते जीवे ? ३ सअंता सिद्धी ? अणंता सिद्धी ? ४ सअंते सिद्धे ? अणंते सिद्धे ? ५ केण वा मरणेणं मरमाणे जीवे वड्ढति वा, हायति वा ? एवं तं चेव जाव[8] जेणेव ममं अंतिए तेणेव हव्वमागए। से नूणं खंदया ! अट्ठे समट्ठे ?

हंता अत्थि ॥

४५ जे वि य ते खंदया ! अयमेयारूवे अज्झत्थिए चिंतिए पत्थिए मणोगए संकप्पे समुप्पज्जित्था—किं सअंते लोए ? अणंते लोए ?—तस्स वि य णं अयमट्ठे—एवं खलु मए खंदया ! चउव्विहे लोए पण्णत्ते, तं जहा—दव्वओ, खेत्तओ, कालओ, भावओ।

दव्वओ णं एगे लोए सअंते।

खेत्तओ णं लोए असंखेज्जाओ जोयणकोडाकोडीओ आयाम-विक्खंभेणं, असंखेज्जाओ जोयणकोडाकोडीओ परिक्खेवेणं पण्णत्ते, अत्थि पुण से अंते।

कालओ णं लोए न कयाइ न आसी, न कयाइ न भवइ, न कयाइ न भविस्सइ—भविंसु य, भवति य, भविस्सइ य—धुवे नियए[9] सासए अक्खए अव्वए अवट्ठिए निच्चे, नत्थि पुण से अंते।

१ वियट्टाभोगिस्स (ता, व, म)।
२. मंगल्लं सस्सिरीयं (क)।
३. सं० पा०—ओरालं जाव अतीव।
४. × (अ, क, व, म, स)।
५. पीतमणे (अ, स)।
६ परमसोमणसिए (अ, क, ता, व, म, स)।
७. सं० पा०—करेइ जाव पज्जुवासइ।
८. भ० २।२६-३५।
९. णितिए (अ, क, ता), णितए (व)।

भावओ ण लोए अणता वण्णपज्जवा, अणता गधपज्जवा, अणता रसपज्जवा, अणता फासपज्जवा, अणता सठाणपज्जवा, अणता गरुयलहुयपज्जवा, अणता अगरुयलहुयपज्जवा, नत्थि पुण से अते ।

सेत्त खदगा[1] ! दव्वओ लोए सअते, खेत्तओ लोए सअते, कालओ लोए अणते, भावओ लोए अणते ।।

४६. जे वि य ते खदया[2] ! •अयमेयारूवे अज्झत्थिए चितिए पत्थिए मणोगए सकप्पे समुप्पज्जित्था—

किं सअते जीवे ?° अणंते जीवे ?

तस्स वि य ण अयमट्ठे—एव खलु[3] •मए खदया ! चउव्विहे जीवे पण्णत्ते, त जहा—दव्वओ, खेत्तओ, कालओ, भावओ°।

दव्वओ ण एगे जीवे सअते ।

खेत्तओ ण जीवे असखेज्जपएसिए, असंखेज्जपएसोगाढे, अत्थि पुण अते ।

कालओ ण जीवे न कयाइ न आसी[4], •न कयाइ न भवइ, न कयाइ न भविस्सइ—भविसु य, भवति य, भविस्सइ य—धुवे नियए सासए अक्खए अव्वए अवट्ठिए° निच्चे, नत्थि पुण[5] से अते ।

भावओ ण जीवे अणता नाणपज्जवा, अणता दसणपज्जवा, अणता चारित्तपज्जवा, अणता गरुयलहुयपज्जवा, अणता अगरुयलहुयपज्जवा, नत्थि पुण से अते ।

सेत्त खदगा ! दव्वओ जीवे सअते, खेत्तओ जीवे सअंते, कालओ जीवे अणंते, भावओ जीवे अणते ।।

४७. जे वि य ते खदया[6] ! •अयमेयारूवे अज्झत्थिए चितिए पत्थिए मणोगए संकप्पे समुप्पज्जित्था—

किं सअता सिद्धी ? अणता सिद्धी ?

तस्स वि य ण अयमट्ठे । एव खलु मए खदया ! चउव्विहा सिद्धी पण्णत्ता, त जहा—दव्वओ, खेत्तओ, कालओ, भावओ° ।

दव्वओ ण एगा सिद्धी सअता ।

खेत्तओ ण सिद्धी पणयालीस जोयणसयसहस्साइं आयामविक्खभेण, एगा जोयणकोडी बायालीसं च सयसहस्साइ तीस च सहस्साइं दोण्णि य अउणापन्नजोयणसए किंचि विसेसाहिए परिक्खेवेण पण्णत्ता, अत्थि पुण से अते ।

---

१. × (क, व) ।

२. सं० पा०—खंदया जाव अणता ।

३. स० पा०—खलु जाव दव्वओ ।

४. स० पा०—आसी जाव निच्चे ।

५ पुणाइ (ता, ब, म) ।

६ स० पा०—खदया पुच्छा ।

कालओ ण सिद्धी न कयाइ न आसी[1], •न कयाइ न भवइ, न कयाइ न भविस्सइ —भविसु य, भवति य, भविस्सइ य—धुवा नियया सासया अक्खया अव्वया अवट्ठिया निच्चा, नत्थि पुण सा अता ।

भावओ ण सिद्धीए अणता वण्णपज्जवा, अणता गधपज्जवा, अणता रसपज्जवा, अणता फासपज्जवा, अणता सठाणपज्जवा, अणता गरुयलहुयपज्जवा, अणता अगरुयलहुयपज्जवा, नत्थि पुण सा अता ।

सेत्त खदया ! °दव्वओ सिद्धी सअता, खेत्तओ सिद्धी सअता, कालओ सिद्धी अणता, भावओ सिद्धी अणता ।।

४८ जे वि य ते खदया[2] ! •अयमेयारूवे अज्झत्थिए चिंतिए पत्थिए मणोगए सकप्पे समुप्पज्जित्था—

किं सअते सिद्धे ? अणते सिद्धे ?

तस्स वि य ण अयमट्ठे—एव खलु मए खदया ! चउव्विहे सिद्धे पण्णत्ते, त जहा—दव्वओ, खेत्तओ, कालओ, भावओ ।°

दव्वओ ण एगे सिद्धे सअते ।

खेत्तओ ण सिद्धे असखेज्जपएसिए, असखेज्जपएसोगाढे, अत्थि पुण से अते ।

कालओ ण सिद्धे सादीए, अपज्जवसिए, नत्थि पुण से अते ।

भावओ ण सिद्धे अणता नाणपज्जवा, अणता दसणपज्जवा, अणता[3] अगरुयलहुय-पज्जवा, नत्थिपु ण से अते ।

सेत्त खदया ! दव्वओ सिद्धे सअते, खेत्तओ सिद्धे सअते, कालओ सिद्धे अणते, भावओ सिद्धे अणते ।।

४९ जे वि य ते खदया ! इमेयारूवे अज्झत्थिए चिंतिए[4] •पत्थिए मणोगए सकप्पे° समुप्पज्जित्था—

केण वा मरणेण मरमाणे जीवे वड्ढति वा, हायति वा ?

तस्स वि य ण अयमट्ठे—एव खलु खदया ! मए दुविहे मरणे पण्णत्ते, त जहा—बालमरणे य, पडियमरणे य ।

से किं त बालमरणे ?

बालमरणे दुवालसविहे पण्णत्ते, त जहा—

१. बलयमरणे २ वसट्टमरणे ३ अतोसल्लमरणे ४ तब्भवमरणे ५. गिरिपडणे ६. तरुपडणे ७ जलप्पवेसे ८ जलणप्पवेसे ९ विसभक्खणे १०. सत्थोवाडणे

---

१ स० पा०—कालओ य भावओ य जहा लोयस्स तहा भाणियव्वा, तत्थ ।

२ स० पा० खदया जाव किं अणते सिद्धे त चेव जाव दव्वओ ।

३ जाव पज्जवा (अ, क, ता, ब, म, स) ।

४ स० पा०—चिंतिए जाव समुप्पज्जित्था ।

११ वेहाणसे १२ गद्धपट्ठे—इच्चेतेण खदया ! दुवालसविहेण वालमरणेण मरमाणे जीवे अणतेहिं नेरइयभवग्गहणेहिं अप्पाणसजोएइ, अणतेहिं तिरियभव-ग्गहणेहिं अप्पाण सजोएइ, अणतेहिं मणुयभवग्गहणेहिं अप्पाणं सजोएइ, अणतेहिं देवभवग्गहणेहिं अप्पाण सजोएइ, अणाइय च ण अणवदग्ग[1] चाउरत ससारकतार अणुपरियट्टइ । सेत्त मरमाणे वड्ढइ-वड्ढइ ।

सेत्त वालमरणे ।

से किं त पडियमरणे ?

पडियमरणे दुविहे पण्णत्ते, त जहा—पाओवगमणे[2] य, भत्तपच्चक्खाणे य ।

से कि त पाओवगमणे ?

पाओवगमणे दुविहे पण्णत्ते, त जहा—नीहारिमे य, अनीहारिमे य । नियमा अप्पडिकम्मे ।

सेत्त पाओवगमणे ।

से किं त भत्तपच्चक्खाणे ?

भत्तपच्चक्खाणे दुविहे पण्णत्ते, त जहा—नीहारिमे य, अनीहारिमे य । नियमा सपडिकम्मे ।

सेत्त भत्तपच्चक्खाणे ।

इच्चेतेण खदया ! दुविहेणं पडियमरणेण मरमाणे जीवे अणतेहिं नेरइय-भवग्गहणेहिं अप्पाण विसजोएइ[3], °अणतेहिं तिरियभवग्गहणेहिं अप्पाणं विस-जोएइ, अणंतेहिं मणुयभवग्गहणेहिं अप्पाण विसजोएइ, अणतेहिं देवभवग्गहणेहिं अप्पाण विसजोएइ, अणाइय च ण अणवदग्ग चाउरत ससारकतार° वीईवयइ । सेत्त मरमाणे हायइ-हायइ ।

सेत्त पडियमरणे ।

इच्चेएण खदया ! दुविहेण मरणेणमरमाणे जीवे वड्ढइ वा, हायइ वा ।।

५० एत्थ ण से खदए कच्चायणसगोत्ते सबुद्धे समण भगव महावीर वंदइ नमसइ, वदित्ता नमसित्ता एव वयासी—इच्छामि ण भते ! तुब्भ अतिए केवलिपण्णत्तं धम्मं निसामित्तए ।

अहासुह देवाणुप्पिया ! मा पडिवध ।।

५१. तए ण समणे भगव महावीरे खदयस्स कच्चायणसगोत्तस्स, तीसे य महइमहा-लियाए परिसाए धम्मं परिकहेइ । धम्मकहा भाणियव्वा[4] ।।

---

१. अणवयग्ग (अ, व); अणवइग्ग (म) ।
२ पाओय० (ता, म) ।
३. सं० पा—विसंजोएइ जाव वीईवयइ ।
४. ओ० सू० ७१-७७ ।

५२ तए ण से खदए कच्चायणसगोत्ते समणस्स भगवओ महावीरस्स अतिए धम्म सोच्चा निसम्म हट्ठतुट्ठ[1] •चित्तमाणदिऐ णदिऐ पीइमणे परमसोमणस्सिए हरिस-वसविसप्पमाण° हियए उट्ठाए उट्ठेइ, उट्ठेत्ता समण भगव महावीर तिक्खुत्तो आयाहिण-पयाहिण करेइ, करेत्ता वदइ नमसइ, वदित्ता नमसित्ता एव वयासी—
सद्दहामि ण भते ! निग्गथ पावयण,
पत्तियामि ण भते ! निग्गंथ पावयण,
रोएमि ण भंते ! निग्गथ पावयण,
अब्भुट्ठेमि ण भते ! निग्गथ पावयण ।
एवमेय भते ! तहमेय भते ! अवितहमेय भते ! असदिद्धमेय भते ! इच्छियमेय भते ! पडिच्छियमेय भते ! इच्छिय-पडिच्छियमेय भते !—
से जहेय तुब्भे वदह त्ति कट्टु समण भगव महावीर वदइ नमसइ, वदित्ता नमसित्ता उत्तरपुरत्थिम दिसीभाय अवक्कमइ, अवक्कमित्ता तिदड च कुडिय च जाव[2] धाउरत्ताओ य एगते एडेइ, एडेत्ता जेणेव समणे भगव महावीरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता समण भगव महावीर तिक्खुत्तो आयाहिण-पयाहिण करेइ, करेत्ता[3] •वदइ नमसइ, वदित्ता °नमसित्ता एव वयासी—आलित्ते ण भत्ते ! लोए, पलित्ते ण भते ! लोए, आलित्त-पलित्ते ण भते ! लोए जराए मरणेण य ।
से जहानामए केइ गाहावई अगारसि झियायमाणसि जे से तत्थ भडे भवइ अप्पभारे[4] मोल्लगरुए[5], त गहाय आयाए एगतमत अवक्कमइ । एस मे नित्थारिए समाणे पच्छा 'पुरा य'[6] हियाए सुहाए खमाए निस्सेयसाए आणुगामियत्ताए भविस्सइ ।
एवामेव देवाणुप्पिया ! मज्झ वि आया एगे भडे इट्ठे कते पिए मणुण्णे मणामे थेज्जे[7] वेस्सासिए सम्मए 'बहुमए अणुमए'[8] भडकरडगसमाणे, मा ण सीय, मा ण उण्ह, मा ण खुहा, मा ण पिवासा, मा ण चोरा, मा ण वाला, मा ण दसा, मा ण मसया, मा ण वाइय-पित्तिय-सेभिय-सन्निवाइय[9] विविहा रोगायका परीस-

१. स० पा०—हट्ठतुट्ठे जाव हियए, ° हिदये (क) ।
२ भ० २।३१ ।
३ स० पा०—करेत्ता जाव नमसित्ता ।
४. अप्पसारे (अ, क, ता, ब, स, वृ), एतत् परिवर्तन लिपिहेतुक सभाव्यते । वृत्तिकारेण परिवर्तित पाठो लब्ध., तथैव व्याख्यात । अथवा वृत्तावपि भारस्य साररूपेण परिवर्तन जात स्यात् । अर्थमीमासया भारपदस्यैवात्र सगतिर्वर्तते ।
५ ° गुरुए (क, स) ।
६. पुराए (अ, ता, व), पुरा (क, म) ।
७ घेज्जे (अ), पेज्जे (म) ।
८ अणुमए बहुमए (ता) ।
९ इह प्रथमाबहुवचनलोपो दृश्य (वृ) ।

होवसग्गा[1] फुसतु त्ति कट्टु एस मे[2] नित्थारिए समाणे परलोयस्स हियाए सुहाए खमाए नीसेसाए आणुगामियत्ताए भविस्सइ ।

त इच्छामि ण देवाणुप्पिया ! सयमेव पव्वाविय, सयमेव मुडाविय, सयमेव सेहाविय, सयमेव सिक्खाविय, सयमेव आयार-गोयर विणय-वेणइय-चरण-करण-जायामायावत्तिय[3] धम्ममाइक्खिय ॥

५३ तए ण समणे भगव महावीरे खदय कच्चायणसगोत्त सयमेव पव्वावेड,[4] °सयमेव मुडावेइ, सयमेव सेहावेड, सयमेव सिक्खावेइ, सयमेव आयार-गोयर विणय-वेणइय-चरण-करण-जायामायावत्तिय° धम्ममाइक्खइ[5]—एव देवाणुप्पिया ! गतव्व, एव चिट्ठियव्व, एव निसीइयव्व, एव तुयट्टियव्व, एव भुजियव्वं, एव भासियव्व, एव उट्ठाय-उट्ठाय पाणेहि भूएहि जीवेहि सत्तेहि सजमेण सजमियव्व, अस्सि च ण अट्ठे णो किचि वि[6] पमाइयव्व ॥

५४ तए ण से खदए कच्चायणसगोत्ते समणस्स भगवओ महावीरस्स इम एयारूवं धम्मिय उवएस सम्म सपडिवज्जइ—तमाणाए तह गच्छइ, तह चिट्ठइ, तह निसीयइ, तह तुयट्टइ, तह भुजइ, तह भासइ, तह उट्ठाय-उट्ठाय पाणेहि भूएहि जीवेहि सत्तेहि सजमेण सजमेइ, अस्सि च ण अट्ठे णो पमायइ ॥

५५ तए ण से खदए कच्चायणसगोत्ते अणगारे जाते—इरियासमिए भासासमिए एसणासमिए आयाणभडमत्तनिक्खेवणासमिए उच्चार-पासवण-खेल-सिघाण-जल्ल-पारिट्ठावणियासमिए मणसमिए वइसमिए कायसमिए मणगुत्ते वइगुत्ते[7] कायगुत्ते गुत्ते गुत्तिदिए गुत्तबभयारी चाई लज्जू[8] धन्ने खतिखमे जिइदिए सोहिए अनियाणे अप्पुस्सुए अवहिल्लेसे सुसामण्णरए दते इणमेव निग्गथ पावयण पुरओ काउ विहरइ ॥

५६ तए ण समणे भगव महावीरे कयगलाओ नयरीओ छत्तपलासाओ चेइयाओ पडिनिक्खमइ, पडिनिक्खमित्ता बहिया जणवयविहार विहरइ ॥

५७ तए ण से खदए अणगारे समणस्स भगवओ महावीरस्स तहारूवाण थेराण अतिए सामाइयमाइयाइ[9] एक्कारस अगाइ अहिज्जइ, अहिज्जित्ता जेणेव समणे भगव महावीरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता समण भगव महावीरं वदइ नमसइ, वदित्ता नमसित्ता एवं वदासी—इच्छामि ण भते ! तुब्भेहिं अब्भणुण्णाए समाणे मासिय भिक्खुपडिम उवसपज्जित्ता ण विहरित्तए ।

---

१. परिस्सहो° (ता, म) ।
२. × (अ, क, ता, व, म) ।
३ °वित्तिय धुव (क), °वित्तिय (ता,म,स) ।
४. स० पा०—पव्वावेइ जाव धम्म० ।
५ ° माइक्खाइ (अ, ता, व, स) ।
६ × (अ, व, स) ।
७ वय° (अ) ।
८ लज्ज (अ, व) ।
९ सामाइगमादियाति (क, व); सामातियमातियाइ (स) ।

अहासुहं देवाणुप्पिया ! मा पडिबंधं ॥

५८ तए णं से खंदए अणगारे समणेणं भगवया महावीरेणं अब्भणुण्णाए समाणे हट्ठे जाव[1] नमंसित्ता मासियं भिक्खुपडिमं उवसंपज्जित्ता णं विहरइ ॥

५९. तए णं से खंदए अणगारे मासियं भिक्खुपडिमं अहासुत्तं अहाकप्पं अहामग्गं अहातच्चं अहासम्मं सम्मं[2] काएणं फासेइ पालेइ सोभेइ तीरेइ पूरेइ किट्टेइ अणुपालेइ आणाए आराहेइ, सम्मं काएणं फासेत्ता[3] •पालेत्ता सोभेत्ता तीरेत्ता पूरेत्ता किट्टेत्ता अणुपालेत्ता आणाए° आराहेत्ता जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता समणं भगवं[4] •महावीरं वंदइ नमंसइ, वंदित्ता°नमंसित्ता एवं वयासी—इच्छामि णं भंते ! तुब्भेहिं अब्भणुण्णाए समाणे दोमासियं भिक्खुपडिमं उवसंपज्जित्ता णं विहरित्तए ।

अहासुहं देवाणुप्पिया ! मा पडिबंधं । तं चेव[5] ॥

६० एवं[6] तेमासियं, चउम्मासियं, पंचमासियं, छम्मासियं, सत्तमासियं, पढमसत्तरातिंदियं, दोच्चसत्तरातिंदियं, तच्चसत्तरातिंदियं, रातिंदियं[7], एगरातियं[8] ॥

६१ तए णं से खंदए अणगारे एगरातियं भिक्खुपडिमं अहासुत्तं जाव[9] आराहेत्ता जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता समणं भगवं महावीरं[10] •वंदइ नमंसइ, वंदित्ता° नमंसित्ता एवं वयासी—इच्छामि णं भंते ! तुब्भेहिं अब्भणुण्णाए समाणे गुणरयणसंवच्छरं[11] तवोकम्मं उवसंपज्जित्ता णं विहरित्तए ।

अहासुहं देवाणुप्पिया ! मा पडिबंधं ॥

६२ तए णं से खंदए अणगारे समणेणं भगवया महावीरेणं अब्भणुण्णाए समाणे हट्ठतुट्ठे जाव[12] नमंसित्ता गुणरयणसंवच्छरं तवोकम्मं उवसंपज्जित्ता णं विहरति, तं जहा—

पढमं मासं चउत्थंचउत्थेणं अणिक्खित्तेणं तवोकम्मेणं दिया ठाणुक्कुडुए सूराभिमुहे आयावणभूमीए आयावेमाणे, रत्तिं वीरासणेणं अवाउडेण य ।

दोच्चं मासं छट्ठंछट्ठेणं अणिक्खित्तेणं तवोकम्मेणं दिया ठाणुक्कुडुए सूराभिमुहे आयावणभूमीए आयावेमाणे, रत्तिं वीरासणेणं अवाउडेण य ।

---

१ भ० २।५२ ।

२ × (ता, म, वृ), समं (म, स), स्थानाङ्गे (७१३) 'अहासम्मं' इति पदं नास्ति, केवलं 'सम्मं' वर्तते ।

३ सं० पा०—फासेत्ता जाव आराहेत्ता ।

४. सं० पा०—भगवं जाव नमंसित्ता ।

५ भ० २।५८, ५९ । चेव एवं दोमासियं (अ, क, ता, ब, म, स) ।

६ भ० २।५८-५९ ।

७ अहोरातिंदियं (अ, ता, म, स) ।

८ एगरातिंदियं (अ, क, म, स) ।

९ भ० २।५९ ।

१० सं० पा०—महावीरं जाव नमंसित्ता ।

११ गुणरयणं (क, ता, म, स) ।

१२ भ० २।५२ ।

एव तच्च मास अट्ठमअट्ठमेण। चउत्थ मास दसमदसमेण। पंचमं मासं वारसमवारसमेण। छट्ठं मासं चउद्दसमचउद्दसमेण। सत्तम मास सोलसमसोलसमेण। अट्ठमं मास अट्ठारसमंअट्ठारसमेण। नवमं मास वीसइमवीसइमेण। दसम मास वावीसइमवावीसइमेण। एक्कारसमं मास चउवीसइमचउवीसइमेण। वारसम मास छव्वीसइमछव्वीसइमेण। तेरसम मास अट्ठावीसइमअट्ठावीसइमेण। चउद्दसम मास तिसइमतिसइमेण। पण्णरसम मासं वत्तीसइमंवत्तीसइमेण। सोलस मास चोत्तीसइमचोत्तीसइमेण अणिक्खित्तेणं तवोकम्मेणं दिया ठाणुक्कुडुए सूराभिमुहे आयावणभूमीए आयावेमाणे, रत्तिं वीरासणेणं अवाउडेण य ॥

६३ तए ण से खदए अणगारे गुणरयणसवच्छर तवोकम्म अहासुत्त अहाकप्प जाव[१] आराहेत्ता जेणेव समणे भगव महावीरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता समण भगव महावीर वदइ नमसइ, वदित्ता नमसित्ता बहूहि चउत्थ-छट्ठट्ठम-दसम-दुवालसेहि, मासद्धमासखमणेहि विचित्तेहि तवोकम्मेहि अप्पाण भावेमाणे विहरइ ।

६४ तए ण से खदए अणगारे तेण ओरालेण विउलेण पयत्तेणं पग्गहिएण कल्लाणेण सिवेण धन्नेण मगल्लेणं सस्सिरीएण उदग्गेण उदत्तेण उत्तमेण उदारेण महाणुभागेण तवोकम्मेण सुक्के लुक्खे[२] निम्मसे अट्ठि-चम्मावणद्धे किडिकिडियाभूए[३] किसे धमणिसतए जाए यावि होत्था। जीवजीवेण गच्छइ, जीवजीवेण चिट्ठइ, भासं भासित्ता वि गिलाइ, भास भासमाणे गिलाइ, भास भासिस्सामीति गिलाइ। से जहानामए कट्ठसगडिया इ वा, पत्तसगडिया इ वा, पत्त-'तिल-भडग-सगडिया'[४] इ वा, एरडकट्ठसगडिया इ वा, इगालसगडिया[५] इ वा—उण्हे दिण्णा सुक्का समाणी ससद्दं गच्छइ, ससद्द चिट्ठइ, एवामेव खदए[६] अणगारे ससद्द गच्छइ, ससद्द चिट्ठइ, उवचिए तवेण अवचिए मस-सोणिएण, हुयासणे विव भासरासिपडिच्छण्णे तवेण, तेएण, तव-तेयसिरीए अतीव-अतीव उवसोभेमाणे-उवसोभेमाणे चिट्ठइ ॥

६५. तेणं कालेण तेण समएण रायगिहे नगरे समोसरण जाव[७] परिसा पडिगया ॥

६६ तए ण तस्स खंदयस्स अणगारस्स अण्णया कयाइ पुव्वरत्तावरत्तकालसमयसि धम्मजागरिय जागरमाणस्स इमेयारूवे अज्झत्थिए चितिए[८] °पत्थिए मणोगए सकप्पे° समुप्पज्जित्था—

---

१. भ० २।५९।
२ भुक्खे (अ, म)।
३. ° किडिय° (अ, व)।
४, तिलसठगसगडिया (वृपा)।
५ इगालकट्ठसगडिया (अ, व)।
६ खदए वि (ता, म)।
७ ओ० सू० १६-८०।
८, स० पा—चितिए जाव समुप्पज्जित्था।

एव खलु अह इमेण एयारूवेण ओरालेण[1] •विउलेण पयत्तेण पग्गहिएण कल्लाणेण सिवेण धन्नेण मगल्लेण सस्सिरीएण उदग्गेण उदत्तेण उत्तमेण उदारेण महाणुभागेण तवोकम्मेण सुक्के लुक्खे निम्मसे अट्ठि-चम्मावणद्धे किडिकिडियाभूए° किसे धमणिसतए[2] जाए। जीवजीवेण गच्छामि, जीवजीवेण चिट्ठामि[3], •भास भासित्ता वि गिलामि, भास भासमाणे गिलामि, भास भासिस्सामीति गिलामि।

से जहानामए कट्ठसगडिया इ वा, पत्तसगडिया इ वा, पत्त-तिल-भडगसगडिया इ वा, एरडकट्ठसगडिया इ वा, इगालसगडिया इ वा—उण्हे दिण्णा सुक्का समाणी ससद्द गच्छइ, ससद्द चिट्ठइ°, एवामेव अह पि ससद्द गच्छामि, ससद्द चिट्ठामि।

त अत्थि ता मे उट्ठाणे कम्मे बले वीरिए पुरिसक्कार-परक्कमे त जावता मे अत्थि उट्ठाणे कम्मे बले वीरिए पुरिसक्कार-परक्कमे जाव य मे धम्मायरिए धम्मोवदेसए समणे भगव महावीरे जिणे सुहत्थी विहरइ, तावता मे सेय कल्ल पाउप्पभायाए रयणीए,[4] फुल्लुप्पलकमलकोमलुम्मिलियम्मि अहपडुरे[5] पभाए, रत्तासोयप्पकासे[6], किसुय-सुयमुह-गुजद्धरागसरिसे, कमलागरसडबोहए, उट्ठियम्मि सूरे सहस्सरस्सिम्मि दिणयरे तेयसा जलते समण भगव महावीर वदित्ता नमसित्ता[7] •णच्चासन्ने णातिदूरे सुस्सूसमाणे अभिमुहे विणएण पजलियडे° पज्जुवासित्ता समणेण भगवया महावीरेण अब्भणुण्णाए समाणे सयमेव पच महव्वयाणि आरोवेत्ता, समणा य समणीओ य खामेत्ता तहारूवेहि थेरेहि कडाईहि सद्धि विपुल पव्वय 'सणिय-सणिय'[8] दुरुहित्ता[9] मेहघणसनिगास[10] देवसन्निवात पुढवीसिलापट्टय पडिलेहित्ता, दब्भसथारग सथरित्ता दब्भसथारोवगयस्स सलेहणाभूसणाभूसियस्स भत्तपाणपडियाइक्खियस्स पाओवगयस्स काल अणवकखमाणस्स विहरित्तए त्ति कट्टु एव सपेहेइ, सपेहेत्ता कल्ल पाउप्पभायाए रयणीए जाव उट्ठियम्मि सूरे सहस्सरस्सिम्मि दिणयरे तेयसा जलते जेणेव समणे भगव महावीरे[11]•तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता समण भगव महावीर तिक्खुत्तो आयाहिण-पयाहिण करेइ, करेत्ता वदइ नमसइ, वदित्ता नमसित्ता णच्चासन्ने णातिदूरे सुस्सूसमाणे णमसमाणे अभिमुहे विणएण पजलियडे° पज्जुवासइ॥

---

१ उरालेण (क, ता, म, स), स० पा०— ओरालेण जाव किसे।

२ धवणि ° (क, ता, ब, म)।

३ स० पा०—चिट्ठामि जाव गिलामि जाव एवामेव।

४. रतणीए (ता)।

५. अहपडरे (अ, ता, व); अहापडुरे (स)।

६ ° प्पगासे (क), ° सकासे (ता)।

७ स० पा०—नमसित्ता जाव पज्जुवासित्ता।

८ सणित सणित (क)।

९ दुहित्ता (क, म), द्रूहित्ता (ता), रुहित्ता (व), दुरूहित्ता (स)।

१०. मेघ० (अ)।

११. स० पा०—महावीरे जाव पज्जुवासइ।

६७ खंदयाइ ! समणे भगवं महावीरे खंदयं अणगारं एवं वयासी—से नूणं तव खंदया ! पुव्वरत्तावरत्त[1]•कालसमयंसि धम्मजागरियं° जागरमाणस्स इमेयारूवे अज्झत्थिए[2] •चिंतिए पत्थिए मणोगए संकप्पे° समुप्पज्जित्था—एवं खलु अहं इमेणं एयारूवेणं तवेणं ओरालेणं विउलेणं तं चेव जाव[3] कालं अणवकंखमाणस्स विहरित्तए त्ति कट्टु एवं संपेहेसि, संपेहेत्ता कल्लं पाउप्पभायाए रयणीए जाव[4] उट्ठियम्मि सूरे सहस्सरस्सिम्मि दिणयरे तेयसा जलंते जेणेव मम अंतिए तेणेव हव्वमागए। से नूणं खंदया ! अट्ठे समट्ठे ?

हंता अत्थि।

अहासुहं देवाणुप्पिया ! मा पडिबंधं ॥

६८ तए णं से खंदए अणगारे समणेणं भगवया महावीरेणं अब्भणुण्णाए समाणे हट्ठ-तुट्ठ[5] •चित्तमाणंदिए णंदिए पीइमणे परमसोमणस्सिए हरिसवसविसप्पमाण°हियए उट्ठाए उट्ठेइ, उट्ठेत्ता समणं भगवं महावीरं तिक्खुत्तो आयाहिण-पयाहिणं करेइ[6], •करेत्ता वंदइ नमंसइ, वंदित्ता° नमंसित्ता सयमेव पंच महव्वयाइं आरुहेइ[7], आरुहेत्ता समणा य समणीओ य खामेइ, खामेत्ता तहारूवेहिं थेरेहिं कडाईहिं[8] सद्धिं विपुलं पव्वयं सणियं-सणियं दुरुहइ, दुरुहित्ता मेहघणसन्निगासं देव-सन्निवातं पुढविसिलापट्टयं[9] पडिलेहेइ, पडिलेहेत्ता उच्चारपासवणभूमिं पडिलेहेइ, पडिलेहेत्ता दब्भसंथारगं संथरइ, संथरित्ता पुरत्थाभिमुहे संपलियंकनिसण्णे करयलपरिग्गहियं दसनहं सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं कट्टु एवं वयासी—

नमोत्थु णं अरहंताणं भगवंताणं जाव[10] सिद्धिगतिनामधेयं ठाणं संपत्ताणं।

नमोत्थु णं समणस्स भगवओ महावीरस्स जाव[11] सिद्धिगतिनामधेयं ठाणं संपाविउकामस्स।

वंदामि णं भगवंतं तत्थगयं इहगए, पासउ मे[12] भगवं तत्थगए इहगयं ति कट्टु वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी—पुव्विं पि मए समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतिए सव्वे पाणाइवाए पच्चक्खाए जावज्जीवाए जाव[13] मिच्छादंसणसल्ले पच्चक्खाए जावज्जीवाए। इयाणिं पि य णं समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतिए

---

१ पुव्वरत्तावररत्त० (क); सं० पा०—पुव्वरत्तावरत्त जाव जागरमाणस्स।
२. सं० पा०—अज्झत्थिए जाव समुप्पज्जित्था।
३. भ० २।६६।
४ भ० २।६६।
५. सं० पा०—हट्ठतुट्ठ जाव हियए।
६. सं० पा०—करेइ जाव नमंसित्ता।
७ आरुभेइ (क, म)।
८ कडादीहिं (अ, व, स), कडायीहिं (ता, म)।
९ ° वट्टय (अ, क, म, स)।
१० ओ० सू० २१।
११. ओ० सू० २१।
१२. मे से (क, व, म, स)।
१३. भ० १।३८४।

सव्व पाणाइवाय पच्चक्खामि जावज्जीवाए जाव मिच्छादसणसल्ल पच्चक्खामि जावज्जीवाए। सव्व असण-पाण-खाइम-साइम—चउव्विह पि आहार पच्च-क्खामि जावज्जीवाए। ज पि य इम सरीर इट्ठ कत पिय जाव[1] मा ण वाइय-पित्तिय-सेंभिय-सन्निवाइय[2] विविहा रोगायका परीसहोवसग्गा फुसतु त्ति कट्टु एय पि ण चरिमेहि उस्सास-नीसासेहि वोसिरामि त्ति कट्टु सलेहणाभूसणाभूसिए भत्तपाणपडियाइक्खिए पाओवगए काल अणवकखमाणे विहरइ ।।

६९ तए ण से खदए अणगारे समणस्स भगवओ महावीरस्स तहारूवाण थेराण अतिए सामाइयमाइयाइ एक्कारस अगाइ अहिज्जित्ता, बहुपडिपुण्णाइ दुवालसवासाइ सामण्णपरियाग पाउणित्ता मासियाए सलेहणाए अत्ताण भूसित्ता, सट्ठि भत्ताइ अणसणाए छेदेत्ता आलोइय-पडिक्कते समाहिपत्ते आणुपुव्वीए कालगए ।।

७० तए ण ते थेरा भगवतो खदय अणगार कालगय जाणित्ता परिनिव्वाणवत्तिय काउसग्ग करेति, करेत्ता पत्त-चीवराणि गेण्हति, गेण्हित्ता विपुलाओ पव्वयाओ सणिय-सणिय पच्चोरुहति[3], पच्चोरुहित्ता जेणेव समणे भगव महावीरे तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता समण भगव महावीर वदति नमसति, वदित्ता नम-सित्ता एव वयासी— एव खलु देवाणुप्पियाण अतेवासी खदए नाम अणगारे 'पगइभद्दए पगइउवसते पगइपयणुकोहमाणमायालोभे मिउमद्दवसपन्ने अल्लीणे[4] विणीए'[5]। से ण देवाणुप्पिएहि अब्भणुण्णाए समाणे सयमेव पच महव्वयाणि आरुहेत्ता[6], समणा[7] य समणीओ य खामेत्ता, अम्हेहि सद्धि विपुल पव्वय[8] सणिय-सणिय दुरुहित्ता जाव[9] मासियाए सलेहणाए अत्ताण भूसित्ता, सट्ठि भत्ताइ अणसणाए छेदेत्ता आलोइय-पडिक्कते समाहिपत्ते आणुपुव्वीए कालगए। इमे य से आयारभडए ।।

७१ भतेति ! भगव गोयमे समण भगव महावीर वदइ नमसइ, वदित्ता नमसित्ता एव वयासी—एव खलु देवाणुप्पियाण अतेवासी खदए नाम अणगारे कालमासे काल किच्चा कहि गए ? कहि उववण्णे ?

गोयमाइ ! समणे भगव महावीरे भगव गोयम एव वदासी—एव खलु

१. भ० २।५२।
२ द्रष्टव्य २।५२ सूत्रस्य पादटिप्पणम्।
३ पच्चोसक्कति (स)।
४. अलीणे (क, ब)।
५. औपपातिके (६१, ११६) एतावान् एव पाठोस्ति। अत्र केषुचिदादर्शेषु 'पगइभद्दए पगइविणीए' इति पाठोप्यस्ति तथा 'मिउ-मद्दवसपन्ने भद्दए विणीए' इत्यपि वर्तते। इति द्विरुक्तमस्ति तेन औपपातिकपाठ एव समीचीनोस्ति।
६ आरोवेत्ता (अ, क, ता, ब, स), आरोहेत्ता (म)।
७ समणे (अ, ता, व, म)।
८ स० पा०—पव्वय त चेव निरवसेस जाव आणुपुव्वीए।
९. भ० २।६८, ६९।

गोयमा ! मम अंतेवासी खंदए नाम अणगारे पगइभद्दए[1] •पगइउवसंते पगइपयणुकोहमाणमायालोभे मिउमद्दवसंपण्णे अल्लीणे विणीए०, से णं मए अब्भणुण्णाए समाणे सयमेव पंच महव्वयाइं आरुहेत्ता[2] •जाव[3] मासियाए संलेहणाए अत्ताणं झूसित्ता, सट्ठिं भत्ताइं अणसणाए छेदेत्ता० आलोइय-पडिक्कंते समाहिपत्ते कालमासे कालं किच्चा अच्चुए कप्पे देवत्ताए उववण्णे ॥

७२ तत्थ णं अत्थेगइयाणं देवाणं बावीसं सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता। तत्थ णं खंदयस्स वि देवस्स बावीसं सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता ॥

७३ से णं भंते ! खंदए देवे ताओ देवलोयाओ आउक्खएणं भवक्खएणं ठिइक्खएणं अणंतरं चयं चइत्ता कहिं गच्छिहिति[4] ? कहिं उववज्जिहिति ?

गोयमा ! महाविदेहे वासे सिज्झिहिति बुज्झिहिति मुच्चिहिति परिणिव्वाहिति सव्वदुक्खाणं अंतं करेहिति ॥

बीओ उद्देसो

समुग्घाय-पदं

७४ कइ णं भंते ! समुग्घाया पण्णत्ता?

गोयमा ! सत्त समुग्घाया पण्णत्ता, तं जहा—१ वेदणासमुग्घाए २ कसायसमुग्घाए ३ मारणंतियसमुग्घाए ४ वेउव्वियसमुग्घाए ५ तेजससमुग्घाए ६ आहारगसमुग्घाए ७ केवलियसमुग्घाए। छाउमत्थियसमुग्घायवज्जं[5] समुग्घायपदं नेयव्वं[6] ॥

---

१. सं० पा०—पगइभद्दए जाव सेणं ।

२. सं० पा०—आरुहेत्ता तं चेव सव्वं अविसेसितं णेयव्वं जाव आलोइय० ।

३. भ० २।६८, ६९ ।

४. गमिहिति (अ, ब, स), गच्छिही (ता) ।

५. एवं समुग्घायपदं छाउमत्थियसमुग्घायवज्जं भाणियव्वं जाव—वेमाणियाणं । कसायसमुग्घाया, अप्पाबहुयं । अणगारस्स णं भंते ! भावियप्पणो केवलीसमुग्घाए जाव—सासतं, अणागयद्धं चिट्ठति ? समुग्घायपदं नेयव्वं (अ, ब) ।

६. सूत्रकृता प्रज्ञापनायां 'मणस्सा जहा जीवा, नवरं—मरणसमुग्घाएणं समोहया असंखेज्जगुणा' इत्येव पाठोत्र विवक्षितः, अतः परवर्ती छाद्मस्थिकसमुद्घातप्ररूपकपाठो नात्र अधिकृतोस्ति । द्रष्टव्यम्—प्रज्ञापना, पद ३६ ।

तइओ उद्देसो

पुढवि-पदं

७५ कइ णं भंते ! पुढवीओ पण्णत्ताओ ?
गोयमा ! सत्त पुढवीओ पण्णत्ताओ, त जहा—१ रयणप्पभा २ सक्कर-प्पभा ३ बालुयप्पभा ४ पकप्पभा ५ धूमप्पभा ६. तमप्पभा ७ तमतमा। जीवाभिगमे[1] नेरइयाण जो बितिओ उद्देसो सो नेयव्वो[2] जाव—

७६ 'किं सव्वे पाणा उववण्णपुव्वा ?'[3]
हता गोयमा ! असइ अदुवा अणतखुत्तो ॥

चउत्थो उद्देसो

इंदिय-पदं

७७ कइ ण भते ! इदिया पण्णत्ता ?
गोयमा ! पच इदिया पण्णत्ता, त जहा—१. सोइदिए २ चक्खिदिए ३ घाणिंदिए ४ रसिंदिए ५ फासिंदिए। पढमिल्लो इदियउद्देसओ[4] नेयव्वो[5] जाव[6]—

७८ अलोगे ण भते ! किणा फुडे ? कतिहिं वा काएहिं फुडे ?

---

१. जी० ३।२।

२. अतोग्रे 'क, ता, म' सकेतितादर्शेषु 'पुढवी ओगाहित्ता, निरया सठाणमेव बाहल्ल। जाव किं' एव पाठो वर्तते। शेषादर्शेषु 'बाहल्ल' इति पदस्याग्रे 'विक्खभ-परिक्खेवो, वण्णो गधो य फासो य जाव किं' एव पाठोस्ति। वृत्ति-कृता एका टिप्पणी कृतास्ति—सूत्रपुस्तकेषु च पूर्वार्द्धमेव लिखित, शेषाणा विवक्षितार्थाना यावच्छब्देन सूचितत्वात्। असौ गाथा जीवा-भिगमस्य नारकद्वितीयोद्देशकार्थसग्रहपरा वर्तते

३ अत्र सक्षिप्तपाठ। जीवाभिगमे (३।२) पूर्ण-पाठः एवमस्ति—
इमीसे ण भते ! रयणप्पभाए पुढवीए तीसाए निरयावाससयसहस्सेसु इक्कमिक्कसि निरया-वाससि सव्वे पाणा सव्वे भूया सव्वे जीवा सव्वे सत्ता पुढविकाइयत्ताए जाव वणस्सइ-काइयत्ताए, नेरइयत्ताए उववण्णपुव्वा ?

४. प० १५।१।

५ अतोग्रे सर्वादर्शेषु 'सठाण बाहल्ल पोहत्त जाव अलोगे' इति पाठोस्ति, इह च सूत्रपुस्त-केषु द्वारत्रयमेव लिखित, शेषास्तु तदर्था यावच्छब्देन सूचिता : (वृ)।

६. प० १५।१।

गोयमा ! नो धमत्थिकाएण फुडे जाव[1] नो आगासत्थिकाएण फुडे, आगा-सत्थिकायस्स देसेण फुडे आगासत्थिकायस्स पदेसेहि फुडे, नो पुढविकाइएण फुडे जाव[2] नो अद्धासमएण फुडे, एगे अजीवदव्वदेसे अगुरुलहुए अणतेहि अगुरुलहुयगु-णेहि संजुत्ते सव्वगासे अणतभागूणे ।।

पंचमो उद्देसो

परिचारणा-वेद-पदं

७६. अण्णउत्थिया ण भते ! एवमाइक्खति भासति पण्णवति परूवेति—

१ एव खलु नियठे कालगए समाणे देवब्भूएण[3] अप्पाणेणं से ण तत्थ नो अण्णे देवे, नो अण्णेसि देवाण देवीओ 'आभिजुजिय-अभिजुजिय'[4] परियारेइ, नो अप्पणिच्चियाओ[5] देवीओ अभिजुंजिय-अभिजुंजिय परियारेइ, अप्पणामेव अप्पाण विउव्विय-विउव्विय परियारेइ ।

२ एगे वि य णं जीवे एगेण समएणं दो वेदे वेदेइ, त जहा—इत्थिवेदं च, पुरिसवेदं च ।

[6]●ज समय इत्थिवेय वेएइ त समय पुरिसवेय वेएइ ।

जं समयं पुरिसवेयं वेएइ त समय इत्थिवेय वेएइ ।

इत्थिवेयस्स वेयणाए पुरिसवेय वेएइ, पुरिसवेयस्स वेयणाए इत्थिवेयं वेएइ ।

एव खलु एगे वि य ण जीवे एगेण समएण दो वेदे वेदेइ, त जहा°—इत्थिवेदं च, पुरिसवेद च ।।

८०. से कहमेय भते ! एव ?

गोयमा ! ज ण ते अण्णउत्थिया एवमाइक्खति जाव[7] इत्थिवेद च, पुरिसवेदं च । जे ते एवमाहसु, मिच्छ ते एवमाहसु । अह पुण गोयमा ! एवमाइ-क्खामि भासामि पण्णवेमि परूवेमि—

---

१. प० १५।१ ।

२. प० १५।१ ।

३. प्राकृतत्वात् भकारस्य द्वित्वम् ।

४. लहियंजिय (व) ।

५ अप्पणो ° (अ, क, ता, व), अप्पिणिच्चि-याओ (वृ), अप्पणिज्जियाओ (ठा० ३।६) ।

६. स० पा०—एव परउत्थियवत्तव्वया णेयव्वा जाव इत्थिवेद ।

७. भ० २।७६ ।

१ एव खलु णियठे कालगए समाणे अण्णयरेसु देवलोएसु देवत्ताए उववत्तारो भवति[1]—महिड्ढिएसु[2] •महज्जुतीएसु महाबलेसु महायसेसु महासोक्खेसु° महाणुभागेसु दूरगतीसु चिरट्ठितीएसु। से ण तत्थ देवे भवइ महिड्ढिए जाव[3] दस दिसाओ उज्जोएमाणे पभासेमाणे[4] •पासाइए दरिसणिज्जे अभिरूवे° पडिरूवे। से ण तत्थ अण्णे देवे, अण्णेसि देवाणं देवीओ अभिजुजिय-अभिजुजिय परियारेइ, अप्पणिच्चियाओ[5] देवीओ अभिजुजिय-अभिजुजिय परियारेइ, नो अप्पणामेव अप्पाण विउव्विय-विउव्विय परियारेइ।

२. एगे वि य ण जीवे एगेण समएण एग वेद वेदेइ, त जहा—इत्थिवेद वा, पुरिसवेदं वा।

ज समय इत्थिवेद वेदेइ नो त समय पुरिसवेद वेदेइ।

ज समय पुरिसवेद वेदेइ, नो त समय इत्थिवेद वेदेइ।

इत्थिवेदस्स उदएण नो पुरिसवेद वेदेइ, पुरिसवेदस्स उदएण नो इत्थिवेद वेदेइ।

एव खलु एगे जीवे एगेण समएण एग वेद वेदेइ, त जहा—इत्थीवेदं वा, पुरिसवेद वा।

इत्थी इत्थिवेदेण उदिण्णेण पुरिस पत्थेइ। पुरिसो पुरिसवेदेण उदिण्णेण इत्थि पत्थेइ। दो वि ते अण्णमण्ण पत्थेति, त जहा—इत्थी वा पुरिसं, पुरिसे वा इत्थि॥

गब्भ-पदं

८१ उदगब्भे[6] ण भते! उदगब्भे त्ति कालओ केवच्चिर होइ?
गोयमा! जहण्णेण एक समय, उक्कोसेण छम्मासा॥

८२ तिरिक्खजोणियगब्भे ण भते! तिरिक्खजोणियगब्भे त्ति कालओ केवच्चिर होइ?
गोयमा! जहण्णेण अतोमुहुत्त, उक्कोसेण अट्ठ सवच्छराइ॥

८३ मणुस्सीगब्भे ण भते! मणुस्सीगब्भे त्ति कालओ केवच्चिर होइ?
गोयमा! जहण्णेण अतोमुहुत्त, उक्कोसेण बारस सवच्छराइ॥

८४. कायभवत्थे ण भते! कायभवत्थे त्ति कालओ केवच्चिर होइ?
गोयमा! जहण्णेण अतोमुहुत्त, उक्कोसेण चउवीस सवच्छराइ॥

---

१ प्राकृतशैल्या उपपत्ता भवतीति दृश्यम् (वृ)।
२ स० पा०—महिड्ढिएसु जाव महाणुभागेसु।
३. ठा० ८।१०।
४ स० पा०—पभासेमाणे जाव पडिरूवे।
५. अप्पणच्चियाओ (अ, क, ता, व)।
६ उदगगब्भे (अ, व, स), दगगब्भे (वृपा)।

८५. मणुस्स-पचेदियतिरिक्खजोणियवीए ण भते ! जोणिब्भूए केवतिय कालं सचिट्ठइ ?
गोयमा ! जहण्णेण अतोमुहुत्त, उक्कोसेण बारस मुहुत्ता ॥

८६ एगजीवे ण भते ! एगभवग्गहणेण केवइयाणं पुत्तत्ताए हव्वामागच्छइ ?
गोयमा ! जहण्णेण इक्कस्स वा 'दोण्ह वा तिण्ह'[1] वा, उक्कोसेण सयपुहत्तस्स[2] जीवा ण पुत्तत्ताए हव्वमागच्छति ॥

८७. एगजीवस्स ण भते ! एगभवग्गहणेण[3] केवइया जीवा पुत्तत्ताए हव्वमागच्छति ?
गोयमा ! जहण्णेण एक्को वा दो वा तिण्णि वा, उक्कोसेण सयसहस्सपुहत्तं जीवा ण पुत्तत्ताए हव्वमागच्छति ॥

८८ से केणट्ठेण भते ! एव वुच्चइ[4]—•जहण्णेण एक्को वा दो वा तिण्णि वा, उक्कोसेण सयसहस्सपुहत्त जीवा ण पुत्तत्ताए° हव्वमागच्छति ?
गोयमा ! इत्थीए[5] पुरिसस्स य कम्मकडाए जोणीए मेहुणवत्तिए नाम सजोए समुप्पज्जइ। ते दुहओ सिणेह 'चिणति, चिणित्ता'[6] तत्थ णं जहण्णेण एक्को वा दो वा तिण्णि वा, उक्कोसेण सयसहस्सपुहत्त जीवा ण पुत्तत्ताए हव्वमागच्छति। से तेणट्ठेण[7] •गोयमा ! एवं वुच्चइ-जहण्णेण एक्को वा दो वा तिण्णि वा, उक्कोसेण सयसहस्सपुहत्त जीवा ण पुत्तत्ताए° हव्वामागच्छंति ॥

८९ मेहुणण्णं[8] भते ! सेवमाणस्स केरिसए[9] असजमे कज्जई ?
गोयमा ! से जहानामए केइ पुरिसे रूयनालियं[10] वा बूरनालियं[11] वा तत्तेणं कणएण समभिद्धसेज्जा, एरिसएण गोयमा ! मेहुण सेवमाणस्स असजमे कज्जइ ॥

९०. सेव भते ! सेव भते ! जाव[12] विहरइ ॥

९१. तए ण समणे भवग महावीरे रायगिहाओ नगराओ गुणसिलाओ चेइयाओ पडिनिक्खमइ, पडिनिक्खमित्ता बहिया जणवयविहार विहरइ ॥

तुगियानयरी-समणोवासय-पदं

९२. तेण कालेण तेण समएण तुगिया नाम नयरी होत्था—वण्णओ[12] ॥

९३. तीसे ण तुगियाए नयरीए बहिया उत्तरपुरत्थिमे दिसीभागे[13] पुप्फवतिए नामं चेइए होत्था—वण्णओ[14] ॥

---

१ दोण्ह वा तिण्ह (अ, स)।
२. पुहुत्तस्स (क, स)।
३. एगजीव० (स)।
४ स० पा०—वुच्चइ जाव हव्व०।
५. इत्थीए य (क, ता, व, म)।
६. संचिणति, सचिणित्ता (म)।
७ स० पा०—तेणट्ठेण जाव हव्व०।
८ मेहुण (अ); मेहुणेण (स)।
९. केरिसे (अ, ता, व, स)।
१०. रूवनालिय (क); रूयण्णालिय (ता); रूवणालिय (म)।
११. पूर० (ता, व)।
११ भ० १।५१।
१२ ओ० सू० १।
१३ दिसाभागे (क)।
१४ ओ० सू० २-१३।

९४ तत्थ ण तुगियाए नयरीए वहवे समणोवासया परिवसति—अड्ढा दित्ता वित्थिण्णविपुलभवण-सयणासण-जाणवाहणाइण्णा वहुधण-वहुजायरूव-रयया आयोगपयोगसपउत्ता विच्छड्डियविपुलभत्तपाणा वहुदासी-दास-गो-महिस-गवेलयप्पभूया वहुजणस्स अपरिभूया अभिगयजीवाजीवा उवलद्धपुण्ण-'पावा आसव'[1]-सवर-निज्जर[2]-किरियाहिकरणवध[3]-पमोक्खकुसला[4] असहेज्जा[5] देवासुर-नागसुवण्ण जक्खरक्खसकिन्नरकिपुरिसगरुलगधव्वमहोरगादिएहि[6] देवगणेहि निग्गथाओ पावयणाओ[7] अणतिक्कमणिज्जा, निग्गथे पावयणे निस्सकिया निक्कखिया निव्वितिगिच्छा[8] लद्धट्ठा[9] गहियट्ठा पुच्छियट्ठा अभिगयट्ठा विणिच्छियट्ठा अट्ठिमिजपेम्माणुरागरत्ता[10] अयमाउसो ! निग्गथे पावयणे अट्ठे अयं परमट्ठे सेसे अणट्ठे, ऊसियफलिहा अवगुयदुवारा[11] 'चियत्ततेउरघरप्पवेसा'[12] चाउद्दसट्ठमुद्दिट्ठपुण्णमासिणीसु[13] पडिपुण्ण पोसह सम्म अणुपालेमाणा, समणे निग्गथे फासु-एसणिज्जेण असण-पाण-'खाइम-साइमेण'[14] वत्थ-पडिग्गह-कवल-पायपुछणेण पीढ-फलग-सेज्जा-सथारएण 'ओसह-भेसज्जेण'[15] पडिलाभेमाणा वहूहि सीलव्वय-गुण-वेरमण-पच्चक्खाण-पोसहोववासेहि अहापरिग्गहिएहि[16] तवोकम्मेहि अप्पाण भावेमाणा विहरति ॥

---

१. पावासव (ता) ।

२ निज्जरा (अ) ।

३ °हिगरणकुसला (अ) ।

४. प्पमोक्ख° (क, ता, म, स), मोक्ख° (व) ।

५ असहेज्ज (अ, क, ता, व, म, स), असाहाय्यास्ते च ते देवादयश्चेति कर्मधारय अथवा व्यस्तमेवेदम् (वृ) ।

६ °महोरगादी° (अ, म, स) ।

७. पवयणाओ (व) ।

८. निव्वितिगिछिया (ता) ।

९ लद्धिट्ठा (व) ।

१० °प्पेमाणुराव° (ता) ।

११ अपगुय° (क), अवगुत ° (म) ।

१२. चियत्ततेउरपरघर °(ता) । अतोग्रे सर्वेपु आदर्शेषु 'वहूहि सीलव्वय-गुण-वेरामण-पच्चक्खाण—पोसहोववासेहिं' इति पाठो दृश्यते । वृत्तिकृतापि असौ अत्रैव व्याखात, वाक्यरचनायाः सम्वन्धयोजनार्थं च 'ऐर्युक्ता इति गम्यम्' इति उल्लिखितम् । किन्तु ओवाइय — रायपसेणइयसूत्रयोरवलोकनेन प्रतीयते असौ पाठ 'पडिलाभेमाणा' इति पदस्यानन्तर युज्यते । ओवाइयसूत्रे (१२०) 'पडिलाभेमाणे सीलव्वय-गुण-वेरमण-पच्चक्खाण-पोसहोववासेहिं अहापरिग्गहिएहिं तवोकम्मेहि अप्पाण भावेमाणे' । रायपसेणइयसूत्रे (६९८) 'पडिलाभेमाणे वहूहिं सीलव्वय-गुण-वेरमण-पच्चक्खाण-पोसहोववासेहिं अप्पाण भावेमाणे ।' अनयो पाठयोराधारेण अत्रापि असौ पाठ 'पडिलाभेमाणा' इति पदस्यानन्तर गृहीत ।

१३ चाउद्दसि° (ता) ।

१४ खातिम-सातिमेण (व, स) ।

१५ × (क) ।

१६ अहापडि° (स, वृ) ।

९५ तेण कालेण तेण समएण पासावच्चिज्जा थेरा भगवतो जातिसंपन्ना कुलसपन्ना बलसंपन्ना रूवसपन्ना विणयसपन्ना नाणसपन्ना दसणसपन्ना चरित्तसंपन्ना लज्जासपन्ना लाघवसपन्ना ओयसी तेयसी वच्चसी जससी जियकोहा जियमाणा जियमाया जियलोभा जियनिद्दा[1] जिइदिया[2] जियपरीसहा जीवियास[3]—मरण-भयविप्पमुक्का[4] •तवप्पहाणा गुणप्पहाणा करणप्पहाणा चरणप्पहाणा निग्गह-प्पहाणा निच्छयप्पहाणा मद्दवप्पहाणा अज्जवप्पहाणा लाघवप्पहाणा खतिप्पहाणा मुत्तिप्पहाणा विज्जाप्पहाणा मंतप्पहाणा वेयप्पहाणा बभप्पहाणा नयप्पहाणा नियमप्पहाणा सच्चप्पहाणा सोयप्पहाणा चारुपण्णा सोही अणियाणा अप्पुस्सुया अवहिल्लेसा सुसामण्णरया अच्छिद्दपसिणवागरणा °कुत्तियावणभूया बहुस्सुया बहुपरिवारा[5] पंचहिं अणगारसएहिं सद्धि सपरिवुडा अहाणुपुव्वि चरमाणा गामाणुगामं दूइज्जमाणा सुहसुहेण विहरमाणा जेणेव तुगिया नगरी जेणेव पुप्फवइए चेइए 'तेणेव उवागच्छति'[6], उवागच्छित्ता अहापडिरूव ओग्गहं ओगिण्हित्ता ण सजमेण तवसा अप्पाणं भावेमाणा विहरति ।।

९६. तए ण तुगियाए नयरीए सिंघाडग-तिग-चउक्क-चच्चर-चउम्मुह[7]-महापह-पहेसु जाव[8] एगदिसाभिमुहा निज्जायति ।।

९७. तए ण ते समणोवासया इमीसे कहाए लद्धट्ठा समाणा हट्ठतुट्ठ[9] •चित्तमाणदिया णंदिया पीइमणा परमसोमणस्सिया हरिसवसविसप्पमाणहियया अण्णमण्ण° सद्दावेंति, सद्दावेत्ता एव वयासी—एव खलु देवाणुप्पिया! पासावच्चिज्जा थेरा भगवतो जातिसपन्ना जाव[10] अहापडिरूव ओग्गह ओगिण्हित्ता ण सजमेण तवसा अप्पाण भावेमाणा विहरति ।

तं महाफल खलु देवाणुप्पिया! तहारूवाण थेराण भगवताण नामगोयस्स वि सवणयाए, किमग पुण अभिगमण-वदण-नमसण-पडिपुच्छण-पज्जुवासण-याए[11] ? °एगस्स वि आरियस्स धम्मियस्स सुवयणस्स सवणयाए, किमग पुण विउलस्य अट्ठस्स गहणयाए ? त गच्छामो णं देवाणुप्पिया! थेरे भगवते वंदामो नमसामो[12] °सक्कारेमो सम्माणेमो कल्लाणं मंगल देवय चेइय पज्जुवा-सामो। एय णे पेच्चभवे इहभवे य हियाए सुहाए खमाए निस्सेयसाए आणुगामि-

---

१ × (क)।
२. जितेंदिया (अ, क, व); जितिंदिया (म)।
३. जीवियासा (अ, ता, ब, स)।
४. स० पा०—मरणभयविप्पमुक्का जाव कुत्तिया°।
५. × (अ, व)।
६. तेणेवाग° (अ, क, व)।
७ × (अ, क, व, म, स)।
८ राय० सू० ६८७-६८९।
९ स० पा०—हट्ठतुट्ठ जाव सद्दावेंति।
१०. राय० सू० ६८६।
११ स० पा०—पज्जुवासणयाए जाव गहणयाए।
१२. स० पा०—नमसामो जाव पज्जुवासामो जाव भविस्सति।

यत्ताए° भविस्सति इति कट्टु अण्णमण्णस्स अतिए एयमट्ठ पडिसुणेति, पडिसुणेत्ता जेणेव सयाइ-सयाइ गिहाइ तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता ण्हाया कयबलिकम्मा कयकोउय-मगल-पायच्छित्ता सुद्धप्पावेसाइ मगल्लाइ 'वत्थाइ पवर परिहिया'[1] अप्पमहग्घाभरणालकियसरीरा सएहि-सएहिं गिहेहितो[2] पडिनिक्खमति, पडिनिक्खमित्ता एगयओ[3] 'मेलायति, मेलायित्ता'[4] पायविहार-चारेण तुगियाए नयरीए मज्झमज्झेण निग्गच्छति, निग्गच्छित्ता जेणेव पुप्फवतिए[5] चेइए तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता थेरे भगवते पचविहेण अभिगमेण अभिगच्छति, [त जहा—१ सच्चित्ताण दव्वाण विओसरणयाए २. अचित्ताण दव्वाण अविओसरणयाए ३ एगसाडिएण उत्तरासगकरणेण ४ चक्खुप्फासे अजलिप्पग्गहेण ५ मणसो एगत्तीकरणेण][6] जेणेव थेरा भगवतो तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता तिक्खुत्तो आयाहिण-पयाहिण करेति, करेत्ता[7] •वदति नमसति, वदित्ता नमसित्ता° तिविहाए पज्जुवासणाए पज्जुवासति ॥

९८ तए ण ते थेरा भगवतो तेसि समणोवासयाण तीसे 'महइमहालियाए महच्चपरिसाए चाउज्जाम धम्म परिकहेति, त जहा—
सव्वाओ पाणाइवायाओ वेरमण, सव्वाओ मुसावायाओ वेरमण,
सव्वाओ अदिण्णादाणाओ वेरमण, सव्वाओ बहिद्धादाणाओ वेरमण[8] ॥

९९. तए ण ते समणोवासया थेराण भगवताण अतिए धम्म सोच्चा निसम्म हट्ठतुट्ठा-जाव[9] हरिसवसविसप्पमाणहियया तिक्खुत्तो आयाहिण-पयाहिण करेति, 'करेत्ता एव'[10] वयासी—सजमेण भते ! किंफले ? तवे[11] किंफले ?

१००. तए ण ते थेरा भगवतो ते समणोवासए एव वयासी[12]—सजमे ण अज्जो ! अणण्हयफले, तवे वोदाणफले ॥

१०१. तए ण ते समणोवासया थेरे भगवते एव वयासी—जइ ण भते ! सजमे अणण्हयफले, तवे वोदाणफले । किंपत्तिय ण भते ! देवा देवलोएसु उववज्जति ?

---

१. पवराइं परिहिया (क), वत्थाइ पवराइ-परिहिय त्ति क्वचिद्दृश्यते, क्वचिच्च वत्थाइ पवर परिहिय त्ति (वृ) ।
२ गेहेहिंतो (म, स) ।
३. एगओ (ता) ।
४. मिलायति २ (अ, म) ।
५ पुप्फवतीए (अ, क, व, स) ।
६. कोष्ठकवर्ती पाठो व्याख्याश प्रतीयते ।
७ स० पा०—करेत्ता जाव तिविहाए ।
८ महइमहालियाए चाउज्जाम धम्म परिकहेति। जहा केसि सामिस्स, जाव समणोवासियत्ताए आणाए आराहए भवति जाव धम्मो कहिओ (अ, म, स), महइमहालियाए जाव धम्मो कहिओ (क, ता, व) ।
९ भ० २।४३ ।
१० करेत्ता जाव तिविहाए पज्जुवासणयाए पज्जुवासति २ एव (ता, म, स); करेत्ता जाव एव (क) ।
११. तवे ण भते ! (अ) ।
१२. वदिसु (क) ।

१०२ तत्थ ण कालियपुत्ते नाम थेरे ते समणोवासए एव वयासी—पुव्वतवेणं अज्जो ! देवा देवलोएसु उववज्जति ।
तत्थ ण मेहिले नाम थेरे ते समणोवासए एव वयासी—पुव्वसंजमेण अज्जो ! देवा देवलोएसु उववज्जंति ।
तत्थ ण आणदरक्खिए नाम थेरे ते समणोवासए एव वयासी—कम्मियाए अज्जो ! देवा देवलोएसु उववज्जति ।
तत्थ ण कासवे नाम थेरे ते समणोवासए एवं वयासी—सगियाए अज्जो ! देवा देवलोएसु उववज्जति ।
पुव्वतवेण, पुव्वसजमेण, कम्मियाए, सगियाए अज्जो ! देवा देवलोएसु उववज्जति । सच्चे ण एस[1] अट्ठे, नो चेव ण आयभाववत्तव्वयाए ।।

१०३ तए ण ते समणोवासया 'थेरेहिं भगवतेहि इमाइ एयारूवाइ वागरणाइ वागरिया समाणा हट्ठतुट्ठा'[2] थेरे भगवते वदति नमसति, पसिणाइ पुच्छंति, अट्ठाइ उवादियति, उवादिएत्ता[3] जामेव दिसि पाउब्भूया तामेव दिसि पडिगया ।।

१०४ 'तए ण ते थेरा अण्णया कयाइ तुगियाओ नयरीओ पुप्फवतियाओ चेइयाओ पडिनिग्गच्छति[4], वहिया जणवयविहार विहरति'[5] ।।

१०५. तेण कालेणं तेण समएण रायगिहे नाम नगरे होत्था—सामी समोसढे जाव[6] परिसा पडिगया ।।

१०६. तेण कालेणं तेण समएण समणस्स भगवओ महावीरस्स जेट्ठे अतेवासी इदभूई नामं अणगारे जाव[7] सखित्तविपुलतेयलेस्से छट्ठछट्ठेण अणिक्खित्तेण तवोकम्मेण सजमेण तवसा अप्पाण भावेमाणे विहरइ ।।

१०७ तए ण[8] भगव गोयमे छट्ठक्खमणपारणगसि[9] पढमाए पोरिसीए[10] सज्झाय करेइ, वीयाए पोरिसीए झाण झियाइ, तइयाए पोरिसीए अतुरियमचवलमसभते मुहपोत्तिय पडिलेहेइ, पडिलेहेत्ता भायणवत्थाइं[11] पडिलेहेइ,पडिलेहेत्ता भायणाइं पमज्जइ, पमज्जित्ता भायणाइ उग्गाहेइ, उग्गाहेत्ता जेणेव समणे भगव महावीरे

१ एसे (क, व, म) ।
२. × (क, ता, व) ।
३. उवादिएत्ता उट्ठाए उट्ठेन्ति उट्ठेत्ता थेरे भगवते तिक्खुत्तो वदति नमसति २ थेराणं भगवताण अंतियाओ पुप्फवतियाओ चेइयाओ पडिनिक्खमति (अ, म, स) ।
४. पडिनिक्खमति (अ) ।
५. × (ता, व) ।
६ भ० १।७, ८ ।
७ भ० १।९ ।
८. ण से (अ, क, ता, म, स); ण समणे (व) ।
९ ० गमि (ता) ।
१० पोरुसीए (क, ता, म) ।
११ भायणाइ वत्थाइ (अ, व, स) ।

तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता समण भगव महावीर वदइ नमसइ, वदित्ता नमसित्ता एव वयासी—इच्छामि ण भते ! तुब्भेहिं अब्भणुण्णाए समाणे छट्ठ-क्खमणपारणगसि रायगिहे नगरे उच्च-नीय-मज्झिमाइ कुलाइ घरसमुदाणस्स भिक्खायरियाए अडित्तए ।

अहासुह देवाणुप्पिया ! मा पडिबध ।।

१०८ तए ण भगव गोयमे समणेण भगवया महावीरेण अब्भणुण्णाए समाणे समणस्स भगवओ महावीरस्स अतियाओ गुणसिलाओ चेइयाओ पडिनिक्खमइ, पडि-निक्खमित्ता अतुरियमचवलमसभते जुगतरपलोयणाए दिट्ठीए पुरओ रिय 'सोहेमाणे-सोहेमाणे'[1] जेणेव रायगिहे नगरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता रायगिहे नगरे उच्च-नीय-मज्झिमाइ कुलाइ घरसमुदाणस्स भिक्खायरिय अडइ ।

१०९ तए ण[2] भगव गोयमे रायगिहे नगरे[3] •उच्च-नीय-मज्झिमाइ कुलाइ घरसमु-दाणस्स भिक्खायरियाए° अडमाणे बहुजणसद्द निसामेइ—एव खलु देवाणुप्पिया ! तुगियाए नयरीए बहिया पुप्फवइए चेइए पासावच्चिज्जा थेरा भगवतो समणोवासएहिं इमाइ एयारूवाइ वागरणाइ पुच्छिया—सजमे ण भते ! किंफले ? तवे किफले ?

तए ण ते थेरा भगवतो ते समणोवासए एव वयासी—सजमे ण अज्जो ! अणण्हयफले, तवे वोदाणफले त चेव जाव[4] पुव्वतवेण, पुव्वसजमेण, कम्मियाए, सगियाए अज्जो ! देवा देवलोएसु उववज्जति । सच्चे ण एस मट्ठे[5], नो चेव ण आयभाववत्तव्वयाए ।

से कहमेय मन्ने[6] एव ।।

११०. तए ण[7] भगव गोयमे इमीसे कहाए लद्धट्ठे समाणे जायसड्ढे जाव[8] समुप्पन्न-कोउहल्ले अहापज्जत्त समुदाण गेण्हइ, गेण्हित्ता रायगिहाओ नयराओ पडिनि-क्खमइ अतुरिय[9]•मचवलमसभते जुगतरपलोयणाए दिट्ठीए पुरओ रिय सोहेमाणे°-सोहेमाणे जेणेव गुणसिलए चेइए, जेणेव समणे भगव महावीरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता समणस्स भगवओ महावीरस्स अदूरसामते गमणा-गमणाए पडिक्कमइ, पडिक्कमित्ता एसणमणेसण आलोएइ, आलोएत्ता भत्त-पाण पडिदसेइ, पडिदसेत्ता समण भगव महावीर[10] •वदइ नमसइ, वदित्ता नमसित्ता° एव वदासी—एव खलु भते ! अह तुब्भेहि अब्भणुण्णाए समाणे राय-

---

१. सोहेमाणे (क, ता, व) ।
२. ण से (अ, क, व, म, स) ।
३. स० पा०—नयरे जाव अडमाणे ।
४. भ० २।१०१, १०२ ।
५ मट्ठे समट्ठे (क), अट्ठे (ता) ।
६. भते ! (अ, व) ।
७ ण से (अ, क, ता, व, म, स) ।
८. भ० १।१० ।
९. स० पा०—अतुरिय जाव सोहेमाणे ।
१० स० पा०—महावीर जाव एव ।

गिहे नयरे उच्च-नीय-मज्झिमाणि कुलाणि घरसमुदाणस्स भिक्खायरियाए अडमाणे बहुजणसद्दं निसामेमि—एवं खलु देवाणुप्पिया ! तुंगियाए नयरीए बहिया पुप्फवइए चेइए पासावच्चिज्जा थेरा भगवंतो समणोवासएहिं इमाइं एयारूवाइं वागरणाइं पुच्छिया—संजमे णं भंते ! किंफले ? तवे किंफले ? तं चेव जाव[1] सच्चे णं एस मट्ठे,[2] नो चेव णं आयभाववत्तव्वयाए।

तं[3] पभू णं भंते ! ते थेरा भगवंतो तेसिं समणोवासयाणं इमाइं एयारूवाइं वागरणाइं वागरेत्तए ? उदाहु अप्पभू ? समिया णं भंते ! ते थेरा भगवंतो तेसिं समणोवासयाणं इमाइं एयारूवाइं वागरणाइं वागरेत्तए ? उदाहु असमिया[4] ? आउज्जिया णं भंते ! ते थेरा भगवंतो तेसिं समणोवासयाणं इमाइं एयारूवाइं वागरणाइं वागरेत्तए ? उदाहु अणाउज्जिया ? पलि-उज्जिया णं भंते ! ते थेरा भगवंतो तेसिं समणोवासयाणं इमाइं एयारूवाइं वागरणाइं वागरेत्तए ? उदाहु अपलिउज्जिया ?—पुव्वतवेणं अज्जो ! देवा देवलोएसु उववज्जंति। पुव्वसंजमेणं, कम्मियाए, संगियाए अज्जो ! देवा देवलोएसु उववज्जंति। सच्चे णं एस मट्ठे, नो चेव णं आयभाववत्तव्वयाए।

पभू णं गोयमा ! ते थेरा भगवंतो तेसिं समणोवासयाणं इमाइं एयारूवाइं वागरणाइं वागरेत्तए, नो 'चेव णं'[5] अप्पभू। •[6]समिया णं गोयमा ! ते थेरा भगवंतो तेसिं समणोवासयाणं इमाइं एयारूवाइं वागरणाइं वागरेत्तए। आउज्जिया णं गोयमा ! ते थेरा भगवंतो तेसिं समणोवासयाणं इमाइं एया-रूवाइं वागरणाइं वागरेत्तए। पलिउज्जिया णं गोयमा ! ते थेरा भगवंतो तेसिं समणोवासयाणं इमाइं एयारूवाइं वागरणाइं वागरेत्तए—पुव्वतवेणं अज्जो ! देवा देवलोएसु उववज्जंति पुव्वसंजमेणं, कम्मियाए, संगियाए अज्जो ! देवा देवलोएसु उववज्जंति।° सच्चे णं एस मट्ठे, नो चेव णं आय-भाववत्तव्वयाए।

अहं पि णं गोयमा ! एवमाइक्खामि, भासामि, पण्णवेमि, परूवेमि—पुव्वतवेणं देवा देवलोएसु उववज्जंति। पुव्वसंजमेणं देवा देवलोएसु उववज्जंति। कम्मि-याए देवा देवलोएसु उववज्जंति। संगियाए देवा देवलोएसु उववज्जंति। पुव्वतवेणं, पुव्वसंजमेणं, कम्मियाए, संगियाए अज्जो ! देवा देवलोएसु उववज्जंति। सच्चे णं एस मट्ठे, नो चेव णं आयभाववत्तव्वयाए॥

---

१. भ० २।९९-१०२।
२. अट्ठे (ता)।
३ एय (ब)।
४. अस्समिया (क, ता, म)।
५ × (अ, क, व)।
६ स० पा०—तह चेव नेयव्वं अविसेसियं जाव पभू समियं आउज्जियपलिउज्जियं जाव सच्चे।

१११. तहारूव ण भते ! समण वा माहण वा पज्जुवासमाणस्स किफला पज्जुवासणा ?
गोयमा ! सवणफला ।
से ण भते ! सवणे किफले ?
नाणफले ।
से ण भते ! नाणे किफले ?
विण्णाणफले ।
से ण भते ! विण्णाणे किफले ?
पच्चक्खाणफले ।
से ण भते ! पच्चक्खाणे किफले ?
सजमफले ।
से ण भते ! सजमे किफले ?
अणण्हयफले ।
से ण भते ! अणण्हए किफले ।
तवफले ।
से ण भते ! तवे किफले ?
वोदाणफले ।
से ण भते ! वोदाणे किफले ?
अकिरियाफले ।
सा ण भते ! अकिरिया किफला ?
सिद्धिपज्जवसाणफला—पण्णत्ता गोयमा !

संगहणी-गाहा

सवणे नाणे य विण्णाणे, पच्चक्खाणे य सजमे ।
अणण्हए तवे चेव, वोदाणे अकिरिया सिद्धी ॥१॥

उण्हजलकुड-पदं

११२. अन्नउत्थिया ण भते ! एवमाइक्खति, भासति, पण्णवेति, परूवेति—एवं खलु रायगिहस्स नयरस्स वहिया वेभारस्स पव्वयस्स अहे, एत्थ ण मह एगे हरए[1] अघे[2] पण्णत्ते—अणेगाइ जोयणाइं आयाम-विक्खभेण, नाणादुमसडमडिउद्देसे, सस्सिरीए[3] •पासादीए दरिसणिज्जे अभिरूवे° पडिरूवे । तत्थ णं वहवे ओराला

१ ° हरगे (ता) ।
२ अप्पे (अ, क, व, म, स), क्वचित्तु हरए त्ति न दृश्यते 'अघ' इत्यस्य च स्थाने 'अप्पे' त्ति दृश्यते (वृ) ।
३ स० पा०—सस्सिरीए जाव पडिरूवे ।

बलाहया ससेयति समुच्छति वासति । तव्वइरित्ते य ण सया समिय उसिणे-उसिणे आउकाए अभिनिस्सवइ ।

११३. से कहमेयं भते ! एव ?
गोयमा ! ज ण ते अण्णउत्थिया एवमाइक्खति जाव जे ते एवमाइक्खति, मिच्छ ते एवमाइक्खति[1] । अह पुण गोयमा ! एवमाइक्खामि, भासामि, पण्णवेमि, परूवेमि—एव खलु रायगिहस्स नयरस्स बहिया वेभारस्स पव्वयस्स अदूरसामते, एत्थ ण महातवोवतीरप्पभवे नाम पासवणे पण्णत्ते—पच धणु-सयाइ आयाम-विक्खभेण, नाणादुमसडमडिउद्देसे सस्सिरीए पासादीए दरि-सणिज्जे अभिरूवे पडिरूवे । तत्थ ण बहवे उसिणजोणिया[2] जीवा य पोग्गला य उदगत्ताए[3] वक्कमति विउक्कमति चयंति उववज्जति[4] । तव्वइरित्ते वि य ण सया समिय उसिणे-उसिणे आउयाए अभिनिस्सवइ । एस ण गोयमा ! महातवोवतीरप्पभवे[5] पासवणे । एस णं गोयमा ! महातवोवतीरप्पभवस्स पासवणस्स अट्ठे पण्णत्ते ।।

११४ सेव भते ! सेव भते ! त्ति भगवं गोयमे समणं भगवं महावीर वदइ नमसइ ।।

छट्ठो उद्देसो

भासा-पदं

११५. से नूणं भंते ! मन्नामी ति ओहारिणी भासा ? एवं भासापद[6] भाणियव्व ।।

सत्तमो उद्देसो

ठाण-पदं

११६. कति[7] ण भते ! देवा पण्णत्ता ?
गोयमा ! चउव्विहा देवा पण्णत्ता, त जहा—भवणवइ-वाणमंतर-जोइस-वेमाणिया ।।

---

१ एवमाइक्खति जाव सव्व नेयव्व (अ, स), एवमाइक्खति जाव सव्व नेयव्व जाव (क, ता, म) ।

२. उसिणजोणीया (अ, ता, म, स); उसुण-जोणीया (व) ।

३. उदत्ताए (ता) ।

४. उवचयति (अ, व) ।

५. महातवोतीर° (क, ता, व, म) ।

६. प० ११ ।

७. कतिविहा (अ, ता, म) ।

११७. कहि ण भते ! भवणवासीण देवाण ठाणा पण्णत्ता ?
गोयमा ! इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए जहा ठाणपदे[1] देवाण वत्तव्वया सा भाणियव्वा[2]। उववाएण[3] लोयस्स असखेज्जइभागे एव सव्व भाणियव्व, जाव[4] सिद्धगडिया समत्ता।[5]
कप्पाण पइट्ठाण, बाहुल्लुच्चत्त मेव सठाण।
जीवाभिगमे जो[6] वेमाणिउद्देसो[7] सो[8] भाणियव्वो सव्वो ।।

अट्ठमो उद्देसो

चमरसभा-पदं

११८. कहि ण भते ! चमरस्स असुरिंदस्स असुरकुमाररण्णो[9] सभा सुहम्मा पण्णत्ता ?
गोयमा ! जबुद्दीवे[10] दीवे मंदरस्स पव्वयस्स दाहिणे ण तिरियमसखेज्जे[11] दीव-समुद्दे वीईवइत्ता[12] अरुणवरस्स दीवस्स बाहिरिल्लाओ वेइयताओ अरुणोदय[13] समुद्द बायालीस जोयणसयसहस्साइ[14] ओगाहित्ता, एत्थ ण चमरस्स असुरिंदस्स असुरकुमाररण्णो तिगिछिकूडे[15] नाम उप्पायपव्वए पण्णत्ते—सत्तरस-एक्कवीसे जोयणसए उड्ढ उच्चत्तेण चत्तारितीसे जोयणसए कोस च 'उव्वेहेण मूले दसबावीसे जोयणसए विक्खभेण, मज्झे चत्तारि चउवीसे जोयणसए विक्ख-भेण, [उवरिं सत्ततेवीसे जोयणसए विक्खभेण,] मूले तिण्णि जोयणसहस्साइं, दोण्णि य बत्तीसुत्तरे जोयणसए किंचि विसेसूणे परिक्खेवेण, मज्झे एग जोयण-सहस्स तिण्णि य इगयाले[16] जोयणसए किंचि विसेसूणे परिक्खेवेण, उवरिं दोण्णि

---

१ प० २।
२ भाणियव्वा नवर भवणा पण्णत्ता (अ, क, ता, व, म, स), नवर भवणा पण्णत्त त्ति क्वचिद् दृश्यते तस्य च फल न सम्यगव-गम्यते (वृ)।
३ उववादेण (अ, क, व, म)।
४. प० २।
५ सम्मत्ता (क, व, म, स)।
६ जाव (अ)।
७. वेमाणियुद्देसो (ता, व)।
८ × (अ, म, स)।
९ असुररण्णो (क, ता, व)।
१० जबूदीवे (म)।
११ °मसखेज्ज (ता, व, स)।
१२ वीति° (अ, क, ब, म)।
१३ अरुणोद (क, म)।
१४ जोयणसहस्साइ (अ, क, ता, म, स)।
१५ तिगिच्छि° (क), तिगिच्छ° (म)।
१६ इयाले (अ)।

य जोयणसहस्साइ, दोण्णि य छलसीए जोयणसए किंचि विसेसाहिए परिक्खेवेणं,[1] मूले वित्थडे, मज्झे सखित्ते, उप्पिं विसाले, वरवइरविग्गहिए[2] महामउंदसठाण-संठिए सव्वरयणामए अच्छे[3] °सण्हे लण्हे घट्ठे मट्ठे निरए निम्मले निप्पंके निक्क-कडच्छाए सप्पभे समिरिईए सउज्जोए पासादीएद रिसणिज्जे अभिरूवे° पडिरूवे। से ण एगाए पउमवरवेइयाए, वणसडेण य सव्वओ समता सपरिक्खित्ते। पउमवरवेइयाए वणसडस्स य वण्णओ[4] ॥

११९ तस्स ण तिगिंछिकूडस्स उप्पायपव्वयस्स उप्पिं वहुसम-रमणिज्जे भूमिभागे पण्णत्ते—वण्णओ[5] ॥

१२० तस्स ण वहुसम-रमणिज्जस्स भूमिभागस्स वहुमज्झदेसभागे, एत्थ णं महं एगे पासायवडेसए पण्णत्ते—अड्ढाइज्जाइ जोयणसयाइ उड्ढ उच्चत्तेणं, पणुवीस[6] जोयणसय विक्खभेण। पासायवण्णओ[7]। उल्लोयभूमिवण्णओ[8]। अट्ठजोयणाइं मणिपेढिया। चमरस्स सीहासण सपरिवार[9] भाणियव्व ॥

१२१ तस्स ण तिगिछिकूडस्स दाहिणे ण छक्कोडिसए पणवन्नं च कोडीओ पणतीसं च सयसहस्साइ पण्णास च सहस्साइ अरुणोदए समुद्दे तिरिय वीइवइत्ता अहे रयणप्पभाए पुढवीए चत्तालीस जोयणसहस्साइं, ओगाहित्ता, एत्थ ण चमरस्स असुरिंदस्स असुरकुमाररण्णो चमरचचा नाम रायहाणी पण्णत्ता एग जोयणसय-सहस्सं आयाम-विक्खभेण जबूदीवप्पमाणा।

---

१ उव्वेहेण गोथुभस्स आवासपव्वयस्स पमाणेण नेयव्व, नवर उवरिल्ल पमाण मज्झे भाणियव्व जाव (क, ता, व, वृ)। अ, म, स सकेतितादर्शेषु द्वयोवर्णयोर्मिश्रण दृश्यते।

२ ° विग्गहे (अ, व, स)।

३ स० पा०—अच्छे जाव पडिरूवे।

४ राय० सू० १८९-२०१।

५. राय० सू० २४-३१।

६ पण० (अ, स)।

७ राय० सू० २०४।

८ राय० सू० २४-३४, भ० वृत्ति।

९. तच्चैवम्—तस्स ण सिंहासणस्स अवरुत्तरे ण, उत्तरे ण, उत्तरपुरत्थिमे णं, एत्थ ण चमरस्स चउसट्ठी सामाणियसाहस्सीण, चउसट्ठी भद्दासणसाहस्सीओ पण्णत्ताओ, एव पुरत्थिमे णं पचण्ह अग्गमहिसीण सपरिवाराण पच भद्दासणाइ सपरिवाराइ, दाहिणपुरत्थिमे ण अब्भितरियाए परिसाए चउव्वीसाए देवसाहस्सीण चउव्वीस भद्दासणसाहस्सीओ, एव दाहिणे ण पच्चत्थिमे ण सत्तण्ह अणि-याहिवईण मज्झिमाए अट्ठावीस भद्दासण-साहस्सीओ, दाहिणपच्चत्थिमे ण वाहिराए वत्तीस भद्दासणसाहस्सीओ, सत्त भद्दा-सणाइ, चउद्दिस आयरक्खदेवाण चत्तारि भद्दासणसहस्सचउसट्ठीओ (वृ)।

ओवारियलेण सोलसजोयणसहस्साइ आयाम-विक्खभेण, पण्णास जोयणसहस्साइ पच य सत्ताणउए जोयणसए किंचि विसेसूणे परिक्खेवेण, सव्वप्पमाण वेमाणियप्पमाणस्स अद्ध नेयव्व[1] ॥

नवमो उद्देसो

समयखेत्त-पदं

१२२ किमिद भते ! समयखेत्ते त्ति पवुच्चति ?

गोयमा ! अड्ढाइज्जा दीवा, दो य समुद्दा, एस ण एवइए समयखेत्तेति पवुच्चति ॥

१२३ तत्थ णं अय जबुद्दीवे दीवे सव्वदीव-समुद्दाण सव्वब्भतरे । एव जीवाभिगम-वत्तव्वया नेयव्वा जाव[2] अब्भितर-पुक्खरद्ध जोइसविहूण[3] ॥

---

१ एतदेव वाचनान्तरे उक्तम्—'चत्तारि परिवाडीओ पासायवडेसगाण अद्धद्धहीणाओ (वृ), राय० सू० २०४-२०८ ।

२ जी० ३ ।

३ वाचनान्तरे तु 'जोइसअट्ठविहूण' ति इत्यादि बहु दृश्यते, तत्र 'जबुद्दीवे णं भते ! कइ चदा पभासिसु वा ३ ? कति सूरीया तविसु वा ३ ? कइ नक्खत्ता जोइ जोइसु वा ३ ? इत्यादिकानि प्रत्येक ज्योतिष्कसूत्राणि, तथा—से केणट्ठेण भते ! एव वुच्चइ जबुद्दीवे दीवे ?, गोयमा ! जबुद्दीवे ण दीवे मदरस्स पव्वयस्स उत्तरे ण लवणस्स दाहिणे ण जाव तत्थ २ बहवे जबूरुक्खा जबूवण्णा जाव उवसोहेमाणा चिट्ठति, से तेणट्ठेण गोयमा ! एव वुच्चइ जबुद्दीवे दीवे इत्यादीनि प्रत्येकमर्थसूत्राणि च सन्ति, ततश्चैतद्विहीन यथा भवत्येव जीवाभिगमवक्तव्यतया नेयं अस्योद्देशकस्य सूत्र 'जाव इमा गाह' त्ति सग्रहगाथा, सा च—"अरहत समय बायर, विज्जू थणिया वलाहगा अगणी । आगर निहि नइ उवराग निग्गमे वुड्ढिवयण च (वृ) ।

दसमो उद्देसो

अत्थिकाय-पदं

१२४ कति ण भंते ! अत्थिकाया पण्णत्ता ?
गोयमा ! पंच अत्थिकाया पण्णत्ता, तं जहा—धम्मत्थिकाए, अधम्मत्थिकाए, आगासत्थिकाए, जीवत्थिकाए, पोग्गलत्थिकाए ॥

१२५ धम्मत्थिकाए णं भंते ! कतिवण्णे ? कतिगंधे ? कतिरसे ? कतिफासे ?
गोयमा ! अवण्णे, अगंधे, अरसे, अफासे,
अरूवी, अजीवे, सासए, अवट्ठिए लोगदव्वे ।
से समासओ पंचविहे पण्णत्ते, तं जहा—दव्वओ, खेत्तओ, कालओ, भावओ, गुणओ ।
दव्वओ णं धम्मत्थिकाए एगे दव्वे,
खेत्तओ लोगप्पमाणमेत्ते,
कालओ न कयाइ न आसि, न कयाइ[1] °नत्थि, न कयाइ न भविस्सइ—भविसु य, भवति य, भविस्सइ य—धुवे, णियए, सासए, अक्खए, अव्वए, अवट्ठिए°, णिच्चे ।
भावओ अवण्णे, अगंधे, अरसे, अफासे ।
गुणओ गमणगुणे ॥

१२६ अधम्मत्थिकाए[2] °णं भंते ! कतिवण्णे ? कतिगंधे ? कतिरसे ? कतिफासे ?
गोयमा ! अवण्णे, अगंधे, अरसे, अफासे,
अरूवी, अजीवे, सासए, अवट्ठिए लोगदव्वे ।
से समासओ पंचविहे पण्णत्ते, तं जहा—दव्वओ, खेत्तओ, कालओ, भावओ, गुणओ ।
दव्वओ णं अधम्मत्थिकाए एगे दव्वे ।
खेत्तओ लोगप्पमाणमेत्ते ।
कालओ न कयाइ न आसि, न कयाइ नत्थि, न कयाइ न भविस्सइ—भविसु य, भवति य, भविस्सइ य—धुवे, णियए, सासए, अक्खए, अव्वए, अवट्ठिए, णिच्चे ।
भावओ अवण्णे, अगंधे, अरसे, अफासे ।
गुणओ ठाणगुणे° ॥

---

१. सं० पा०—कयाइ जाव णिच्चे ।

२. सं० पा०—अधम्मत्थिकाए एवं चेव नवरं गुणओ ठाणगुणे ।

१२७ आगासत्थिकाए[1] •ण भते ! कतिवण्णे ? कतिगधे ? कतिरसे ? कतिफासे ?
गोयमा ! अवण्णे, अगधे, अरसे, अफासे,
अरूवी, अजीवे, सासए, अवट्ठिए लोगदव्वे ।
से समासओ पचविहे पण्णत्ते, त जहा—दव्वओ, खेत्तओ, कालओ, भावओ, गुणओ ।
दव्वओ ण आगासत्थिकाए एगे दव्वे ।
खेत्तओ लोयालोयप्पमाणमेत्ते—अणते ।
कालओ न कयाइ न आसि, न कयाइ नत्थि, न कयाइ न भविस्सइ—भविंसु य, भवति य, भविस्सइ य—धुवे, णियए, सासए, अक्खए, अव्वए, अवट्ठिए, णिच्चे ।
भावओ अवण्णे, अगधे, अरसे, अफासे ।°
गुणओ अवगाहणागुणे ॥

१२८ जीवत्थिकाए ण भते ! कतिवण्णे ? कतिगधे ? कतिरसे ? कतिफासे ?
गोयमा ! अवण्णे[2], •अगधे, अरसे, अफासे°;
अरूवी, जीवे, सासए, अवट्ठिए लोगदव्वे ।
से समासओ पचविहे पण्णत्ते,—त जहा—दव्वओ[3], •खेत्तओ, कालओ, भावओ°, गुणओ ।
दव्वओ ण जीवत्थिकाए अणताइ जीवदव्वाइ ।
खेत्तओ लोगप्पमाणमेत्ते ।
कालओ न कयाइ न आसि[4], •न कयाइ नत्थि, न कयाइ न भविस्सइ—भविंसु य, भवति य, भविस्सइ य—धुवे, णियए, सासए, अक्खए, अव्वए, अवट्ठिए° णिच्चे ।
भावओ अवण्णे, अगधे, अरसे, अफासे ।
गुणओ उवओगगुणे ॥

१२९ पोग्गलत्थिकाए ण भते ! कतिवण्णे[5] ? •कतिगधे ? कतिरसे° ? कतिफासे ?
गोयमा ! पचवण्णे, पचरसे, दुगधे, अट्ठफासे,
रूवी, अजीवे, सासए, अवट्ठिए, लोगदव्वे ।

---

१ स० पा०—आगासत्थिकाए वि एव चेव नवर खेत्तओ ण आगासत्थिकाए लोयालोयप्पमाणमेत्ते अणते चेव जाव गुणओ ।
२. स० पा०—अवण्णे जाव अरूवी ।
३. स० पा०—दव्वओ जाव गुणओ ।
४. स० पा०—आसि जाव णिच्चे ।
५. स० पा०—कतिवण्णे जाव कतिफासे ।

से समासओ पंचविहे पण्णत्ते, तं जहा—दव्वओ, खेत्तओ, कालओ, भावओ गुणओ।

दव्वओ णं पोग्गलत्थिकाए अणंताइं दव्वाइं।

खेत्तओ लोयप्पमाणमेत्ते।

कालओ न कयाइ न आसि[1], •न कयाइ नत्थि, न कयाइ न भविस्सइ—भविंसु य, भवति य, भविस्सइ य—धुवे, णियए, सासए, अक्खए, अव्वए, अवट्ठिए°, णिच्चे।

भावओ वण्णमंते, गंधमंते, रसमंते, फासमंते।

गुणओ गहणगुणे॥

१३० एगे भंते! धम्मत्थिकायपदेसे धम्मत्थिकाएत्ति वत्तव्वं सिया?
गोयमा! णो इणट्ठे समट्ठे॥

१३१ एवं दोण्णि,[2] 'तिण्णि, चत्तारि'[3] पंच, छ, सत्त, अट्ठ, नव, दस, संखेज्जा, असंखेज्जा। भंते! धम्मत्थिकायपदेसा धम्मत्थिकाए त्ति वत्तव्वं सिया?
गोयमा! णो इणट्ठे समट्ठे॥

१३२ एगपदेसूणे वि य णं भंते! धम्मत्थिकाए धम्मत्थिकाए त्ति वत्तव्वं सिया?
गोयमा! णो इणट्ठे समट्ठे॥

१३३ से केणट्ठेणं भंते! एवं वुच्चइ—एगे धम्मत्थिकायपदेसे नो धम्मत्थिकाए त्ति वत्तव्वं सिया जाव एगपदेसूणे वि य णं धम्मत्थिकाए नो धम्मत्थिकाए त्ति वत्तव्वं सिया?

से नूणं गोयमा! खंडे चक्के? सगले चक्के?
भगवं! नो खंडे चक्के, सगले चक्के।
[4]•खंडे छत्ते? सगले छत्ते?
भगवं! नो खंडे छत्ते, सगले छत्ते।
खंडे चम्मे? सगले चम्मे?
भगवं! नो खंडे चम्मे, सगले चम्मे।
खंडे दंडे? सगले दंडे?
भगवं! नो खंडे दंडे, सगले दंडे।
खंडे दूसे? सगले दूसे?

---

१ स० पा०—आसि जाव णिच्चे।
२. दोण्णि वि (अ, स), दो (क)।
३. तिण्णि वि चत्तारि वि (अ, स)।
४ स० पा०—एवं छत्ते चम्मे दंडे दूसे आउहे मोदए।

भगवं ! नो खंडे दूसे, सगले दूसे ।
खडे आयुहे ? सगले आयुहे[1] ?
भगव ! नो खडे आयुहे, सगले आयुहे ।
खडे मोदए ? सगले मोदए[2] ?

भगव ! नो खडे मोदए, सगले मोदए ।° से तेणट्ठेण गोयमा ! एव वुच्चइ—एगे धम्मत्थिकायपदेसे नो धम्मत्थिकाए त्ति वत्तव्व सिया जाव एगपदेसूणे वि य ण धम्मत्थिकाए नो धम्मत्थिकाए त्ति वत्तव्व सिया ॥

१३४. से किंखाइ[3] ण भते ! धम्मत्थिकाए त्ति वत्तव्व सिया ?
गोयमा ! असखेज्जा धम्मत्थिकायपदेसा, ते सव्वे कसिणा पडिपुण्णा निरवसेसा एकग्गहणगहिया—एस ण गोयमा ! धम्मत्थिकाए त्ति वत्तव्व सिया ॥

१३५ एव अधम्मत्थिकाए वि । आगासत्थिकाय-जीवत्थिकाय-पोग्गलत्थिकाया वि एव चेव, नवर—तिण्ह पि पदेसा अणता भाणियव्वा । सेस त चेव ॥

जीवत्त-उवदंसण-पदं

१३६ जीवे ण भते ! सउट्ठाणे सकम्मे सबले सवीरिए सपुरिसक्कार-परक्कमे आयभावेण जीवभाव उवदसेतीति वत्तव्व सिया ?
हता गोयमा ! जीवे ण सउट्ठाणे[4] °सकम्मे सबले सवीरिए सपुरिसक्कार-परक्कमे आयभावेण जीवभाव° उवदसेतीति वत्तव्व सिया ॥

१३७ से केणट्ठेण[5] °भते ! एव वुच्चइ—जीवे ण सउट्ठाणे सकम्मे सबले सवीरिए सपुरिसक्कार-परक्कमे आयभावेण जीवभाव उवदसेतीति° वत्तव्व सिया ?
गोयमा ! जीवे ण अणताण आभिणिबोहियनाणपज्जवाण, अणताण सुयनाण-पज्जवाण, अणताण ओहिनाणपज्जवाण, अणताण मणपज्जवनाणपज्जवाण, अणताण केवलनाणपज्जवाण, अणताण मइअण्णाणपज्जवाण, अणताण सुयअण्णाणपज्जवाण, अणताण विभगनाणपज्जवाण, अणताण चक्खुदसण-पज्जवाण, अणताण अचक्खुदसणपज्जवाण, अणताण ओहिदसणपज्जवाण, अणताण केवलदसणपज्जवाण उवओग गच्छइ । उवओगलक्खणे ण जीवे । से एएणट्ठेण एव वुच्चइ—गोयमा ! जीवे ण सउट्ठाणे[6] °सकम्मे सबले सवीरिए सपुरिसक्कार-परक्कमे आयभावेण जीवभाव उवदसेतीति° वत्तव्व सिया ॥

---

१ आउहे (क, व) ।
२ मोयए (अ, क, व, स) ।
३ किंखाइए (ता) ।
४ स० पा०—सउट्ठाणे जाव उवदसेतीति ।
५ स० पा०—केणट्ठेण जाव वत्तव्व ।
६ स० पा०—सउट्ठाणे जाव वत्तव्व ।

आगास-पदं

१३८. कतिविहे ण भते ! आगासे पण्णत्ते ?
गोयमा ! दुविहे आगासे पण्णत्ते, तं जहा—लोयागासे[1] य अलोयागासे य ॥

१३९. लोयागासे ण भते ! किं जीवा ? जीवदेसा ? जीवप्पदेसा ? अजीवा ? अजीवदेसा ? अजीवप्पदेसा ?
गोयमा ! जीवा वि, जीवदेसा वि, जीवप्पदेसा वि; अजीवा वि, अजीवदेसा वि, अजीवप्पदेसा वि ।
जे जीवा ते नियमा एगिंदिया, वेइंदिया, तेइंदिया, चउरिंदिया, पंचिंदिया, अणिंदिया ।
जे जीवदेसा ते नियमा एगिंदियदेसा[2], •बेइंदियदेसा, तेइंदियदेसा, चउरिंदियदेसा, पंचिंदियदेसा°, अणिंदियदेसा ।
जे जीवप्पदेसा ते नियमा एगिंदियपदेसा[3], •वेइंदियपदेसा, तेइंदियपदेसा, चउरिंदियपदेसा, पंचिंदियपदेसा°, अणिंदियपदेसा ।
जे अजीवा ते दुविहा पण्णत्ता, तं जहा—रूवी य अरूवी य ।
जे रूवी ते चउव्विहा पण्णत्ता, तं जहा—खंधा, खंधदेसा, खंधपदेसा, परमाणुपोग्गला ।
जे अरूवी ते पंचविहा पण्णत्ता, तं जहा—धम्मत्थिकाए, नो धम्मत्थिकायस्स देसे, धम्मत्थिकायस्स पदेसा; अधम्मत्थिकाए, नो अधम्मत्थिकायस्स देसे, अधम्मत्थिकायस्स पदेसा, अद्धासमए ॥

१४०. अलोयागासे णं भंते ! किं जीवा[4] ? •जीवदेसा ? जीवप्पदेसा ? अजीवा ? अजीवदेसा ? अजीवप्पदेसा ?°
गोयमा ! नो जीवा[5], •नो जीवदेसा, नो जीवप्पदेसा; नो अजीवा, नो अजीवदेसा°, नो अजीवप्पदेसा, एगे अजीवदव्वदेसे अगरुयलहुए अणंतेहिं अगरुयलहुयगुणेहिं संजुत्ते सव्वागासे अणंतभागूणे ॥

अत्थिकाय-पदं

१४१. धम्मत्थिकाए णं भंते ! केमहालए पण्णत्ते ?
गोयमा ! लोए लोयमेत्ते लोयप्पमाणे लोयफुडे लोयं चेव फुसित्ता णं चिट्ठइ ॥

---

१. ° कासे (क, ता, म) ।
२. सं० पा०—एगिंदियदेसा जाव अणिंदियदेसा ।
३. सं० पा०—एगिंदियपदेसा जाव अणिंदियपदेसा ।
४. सं० पा०—जीवा पुच्छा तह चेव ।
५. सं० पा०—जीवा जाव नो ।

१४२ [1]•अधम्मत्थिकाए णं भंते ! केमहालए पण्णत्ते ?
गोयमा ! लोए लोयमेत्ते लोयप्पमाणे लोयफुडे लोयं चेव फुसित्ता णं चिट्ठइ ॥

१४३ लोयाकासे णं भंते ! केमहालए पण्णत्ते ?
गोयमा ! लोए लोयमेत्ते लोयप्पमाणे लोयफुडे लोयं चेव फुसित्ता णं चिट्ठइ ॥

१४४ जीवत्थिकाए णं भंते ! केमहालए पण्णत्ते ?
गोयमा ! लोए लोयमेत्ते लोयप्पमाणे लोयफुडे लोयं चेव फुसित्ता णं चिट्ठइ ॥

१४५ पोग्गलत्थिकाए णं भंते ! केमहालए पण्णत्ते ?
गोयमा ! लोए लोयमेत्ते लोयप्पमाणे लोयफुडे लोयं चेव फुसित्ता णं चिट्ठइ° ॥

फुसणा-पदं

१४६ अहोलोए णं भंते ! धम्मत्थिकायस्स केवइयं फुसति ?
गोयमा ! सातिरेगं अद्धं फुसति ॥

१४७ तिरियलोए णं भंते[2] ! •धम्मत्थिकायस्स केवइयं फुसति ?°
गोयमा ! असंखेज्जइभागं फुसति ॥

१४८ उड्ढलोए णं भंते[3] ! •धम्मत्थिकायस्स केवइयं फुसति ?°
गोयमा ! देसूणं अद्धं फुसति ॥

१४९ इमा णं भंते ! रयणप्पभापुढवी धम्मत्थिकायस्स किं संखेज्जइभागं फुसति ? असंखेज्जइभागं फुसति ? संखेज्जे भागे फुसति ? असंखेज्जे भागे फुसति ? सव्वं फुसति ?
गोयमा ! णो संखेज्जइभागं फुसति, असंखेज्जइभागं फुसति, णो संखेज्जे भागे फुसति, णो असंखेज्जे भागे फुसति, णो सव्वं फुसति ॥

१५०. इमीसे णं भंते ! रयणप्पभाए पुढवीए घणोदही धम्मत्थिकायस्स किं संखेज्ज-इभागं फुसति ? असंखेज्जइभागं फुसति ? संखेज्जे भागे फुसति ? असंखेज्जे भागे फुसति ? सव्वं फुसति ?
जहा रयणप्पभा तहा घणोदहि-घणवाय-तणुवाया वि ॥

१५१ इमीसे णं भंते ! रयणप्पभाए पुढवीए ओवासंतरे धम्मत्थिकायस्स किं संखज्जइभागं फुसति ? असंखेज्जइभागं फुसति ? संखेज्जे भागे फुसति ? असंखेज्जे भागे फुसति ? सव्वं फुसति ?
गोयमा ! संखेज्जइभागं फुसति, नो असंखेज्जइभागं फुसति, नो संखेज्जे भागे फुसति, नो असंखेज्जे भागे फुसति, नो सव्वं फुसति ।
ओवासंतराइं सव्वाइं ॥

---

१ सं० पा०—एवं अधम्मत्थिकाए लोयाकासे जीवत्थिकाए पोग्गलत्थिकाए पंच वि एक्काभिलावा ।
२ सं० पा०—भंते पुच्छा ।
३. सं० पा०—भंते पुच्छा ।

[illegible] ॥
[illegible] वि [illegible]
[illegible] ।

[illegible] ।

[illegible]

[illegible] ।
[illegible] ॥६॥

[illegible]

तइयं सतं

पढमो उद्देसो

संगहणी-गाहा

१ केरिसविउव्वणा २ चमर ३. किरिय ४,५. जाणित्थि ६ नगर ७ पाला य।
८. अहिवइ ९. इंदिय १०. परिसा, ततियम्मि सए[1] दसुद्देसा ॥१॥

उक्खेव-पदं

१. तेणं कालेणं तेणं समएणं मोया नामं नयरी होत्था— वण्णओ[2] ॥

२. तीसे णं मोयाए नयरीए बहिया उत्तरपुरत्थिमे दिसीभागे नंदणे नामं चेइए होत्था—वण्णओ[3] ॥

३. 'तेणं कालेणं तेणं समएणं'[4] सामी समोसढे। परिसा निग्गच्छइ, पडिगया परिसा ॥

देवविकुव्वणा-पदं

४. तेणं कालेणं तेणं समएणं समणस्स भगवओ महावीरस्स दोच्चे अंतेवासी अग्गिभूई नामं अणगारे गोयमे गोत्तेणं सत्तुस्सेहे जाव[5] पज्जुवासमाणे एवं वदासि—चमरे णं भंते! असुरिंदे असुरराया केमहिड्ढीए[6]? केमहज्जुतीए? केमहाबले? केमहायसे? केमहासोक्खे? केमहाणुभागे? केवइयं च णं पभू विकुव्वित्तए?

गोयमा! चमरे णं असुरिंदे असुरराया महिड्ढीए,[7] °महज्जुतीए, महाबले, महायसे, महासोक्खे°, महाणुभागे। से णं तत्थ चोत्तीसाए भवणावाससयसहस्साणं,[8] चउसट्ठीए सामाणियसाहस्सीणं, तायत्तीसाए[9] तावत्तीसगाणं[10],

---

१ सदे (ता)।
२ ओ० सू० १।
३. ओ० सू० २-१३।
४ × (ता)।
५ भ० १।९, १०।
६ केमहड्ढीए (क, म)।
७ स० पा०—महिड्ढीए जाव महाणुभागे।
८ भवण° (अ, क, ता, म)।
९ तावत्तीसाए (अ, ता, ब, म, स)।
१० स० पा०—तावत्तीसगाणं जाव विहरइ।

•चउण्ह लोगपालाण, पचण्ह अग्गमहिसीणं सपरिवाराण, चउसट्ठीणं आयरक्ख-देवसाहस्सीण, अण्णेसिं च वहूण चमरचचा रायहाणिवत्थव्वाण देवाण य देवीण य आहेवच्च पोरेवच्च सामित्त भट्टित्त आणा-ईसर-सेणावच्च कारेमाणे पालेमाणे महयाहयनट्टगीय-वाइय-तती-तल-ताल-तुडिय-घणमुइगपडुप्पवाइयर वेण दिव्वाइ भोगभोगाइ भुजेमाणे° विहरइ। एमहिड्ढीए,[1] •एमहज्जुतीए, एमहावले, एमहायसे, एमहासोक्खे,° एमहाणुभागे। एवतिय च ण पभू विकुव्वित्तए। से जहानामए—जुवती जुवाणे हत्थेण हत्थे गेण्हेज्जा, चक्कस्स वा नाभी अरगाउत्ता सिया, एवामेव गोयमा! चमरे असुरिंदे असुरराया वेउव्विय समुग्घाएण समोहण्णइ,[2] समोहणित्ता 'सखेज्जाइ जोयणाइ'[3] दड[4] निसिरइ, त जहा—रयणाण[5] •वयराण वेरुलियाण लोहियक्खाण मसारगल्लाण हसगब्भाण पुलगाण सोगधियाण जोईरसाण अजणाण अजणपुलगाण रययाण जायरूवाण अकाण फलिहाण° रिट्ठाण अहावायरे पोग्गले परिसाडेइ, परिसाडेत्ता अहासुहुमे पोग्गले परियायइ[6], परियाइत्ता दोच्च पि वेउव्वियसमुग्घाएण समोहण्णति। पभू ण गोयमा! चमरे असुरिंदे असुरराया केवलकप्प जवुद्दीव दीव वहूहिं असुरकुमारेहि देवेहिं देवीहि य आइण्ण वितिकिण्ण उवत्थड सथड फुड अवगाढावगाढ[7] करेत्तए।

अदुत्तर च ण गोयमा! पभू चमरे असुरिदे असुरराया तिरियमसखेज्जे दीव-समुद्दे वहूहि असुरकुमारेहि देवेहि देवीहि य आइण्णे वितिकिण्णे उवत्थडे सथडे फुडे अवगाढावगाढे[8] करेत्तए।

एस ण गोयमा! चमरस्स असुरिंदस्स असुररण्णो अयमेयारूवे[9] विसए विसयमेत्ते वुइए, णो चेव ण सपत्तीए विकुव्विसु वा विकुव्वति वा विकुव्विस्सति वा॥

५ जइ ण भते! चमरे असुरिंदे असुरराया एमहिड्ढीए जाव[10] एवइय च ण पभू विकुव्वित्तए, चमरस्स ण भते! असुरिंदस्स असुररण्णो सामाणिया देवा केमहिड्ढीया? जाव[11] केवइय च ण पभू विकुव्वित्तए?

---

१. स० पा०—एमहिड्ढीए जाव एमहाणुभागे।
२ समोहणइ (अ, ता, स)।
३. सखेज्जाणि जोयणाणि (अ, ब)।
४. उड्ढ दड (ता, म)।
५ स० पा०—रयणाण जाव रिट्ठाण। अस्य-पूर्ति —'रायपसेणइय' (१०) सूत्रेण कृता। भगवतीवृत्तौ तु एतत् पूर्त्तिरित्थमस्ति—वइराण वेरुलियाण लोहियक्खाण मसारगल्लाणं हसगब्भाण पुलयाणं सोगधियाण जोतीरसाण अकाण अंजणाण रयणाण जायरूवाण अजणपुलयाण फलिहाण।
६ परियाति (क)।
७ अरगाढावगाढ (अ, ता, ब)।
८ अरगाढावगाढे (अ, क, ता, ब)।
९ अतमेता° (ता)।
१० भ० ३।४।
११ भ० ३।४।

गोयमा ! चमरस्स असुरिंदस्स असुररण्णो सामाणिया देवा महिड्ढीया[1] •महज्जुतीया महाबला महायसा महासोक्खा° महाणुभागा। ते ण तत्थ साण-साण भवणाण, साण-साण सामाणियाण, साण-साण अग्गमहिसीण जाव[2] दिव्वाइ भोगभोगाइ भुजमाणा विहरति। एमहिड्ढीया जाव[3] एवइय च ण पभू विकुव्वित्तए। से जहानामए—जुवती जुवाणे हत्थेण हत्थे गेण्हेज्जा, चक्कस्स वा नाभी अरगाउत्ता सिया, एवामेव गोयमा ! चमरस्स असुरिंदस्स असुररण्णो एगमेगे सामाणियदेवे वेउव्वियसमुग्घाएण समोहण्णइ जाव[4] दोच्च पि वेउव्वियसमुग्घाएण समोहण्णइ।

पभू ण गोयमा ! चमरस्स असुरिंदस्स असुररण्णो एगमेगे सामाणियदेवे केवलकप्प जबुद्दीव दीव बहूहि असुरकुमारेहिं देवेहिं देवीहि य आइण्ण वितिकिण्ण उवत्थड सथड फुड अवगाढावगाढ करेत्तए।

अदुत्तर च ण गोयमा ! पभू चमरस्स असुरिंदस्स असुररण्णो एगमेगे सामाणियदेवे तिरियमसखेज्जे दीव-समुद्दे बहूहि असुरकुमारेहिं देवेहि देवीहि य आइण्णे वितिकिण्णे उवत्थडे सथडे फुडे अवगाढावगाढे करेत्तए।

एस ण गोयमा ! चमरस्स असुरिंदस्स असुररण्णो एगमेगस्स सामाणियदेवस्स अयमेयारूवे विसए विसयमेत्ते बुइए, नो चेव ण सपत्तोए विकुव्विसु वा विकुव्वति वा विकुव्विस्सति वा।

६ जइ ण भते ! चमरस्स असुरिंदस्स असुररण्णो सामाणियदेवा एमहिड्ढीया जाव[5] एवतिय च ण पभू विकुव्वित्तए, चमरस्स ण भते ! असुरिंदस्स असुररण्णो तावत्तीसया[6] देवा केमहिड्ढीया[7] ?

तावत्तीसया जहा सामाणिया तहा नेयव्वा। लोयपाला तहेव, नवर—सखेज्जा दीव-समुद्दा भाणियव्वा[8]।

७ जइ ण भते ! चमरस्स असुरिंदस्स असुररण्णो लोगपाला देवा एमहिड्ढीया जाव[9] एवतिय च ण पभू विकुव्वित्तए, चमरस्स ण असुरिंदस्स असुररण्णो अग्गमहिसीओ देवीओ केमहिड्ढियाओ जाव[10] केवइय च ण पभू विकुव्वित्तए ?

गोयमा ! चमरस्स ण असुरिंदस्स असुररण्णो अग्गमहिसीओ देवीओ महिड्ढियाओ

---

१ स० पा०—महिड्ढीया जाव महाणुभागा।
२. भ० ३।४।
३. भ० ३।४।
४. भ० ३।४।
५ भ० ३।४।
६ तायत्ती ° (क)।
७ महड्ढिया (स)।
८ भाणियव्वा बहूहिं असुरकुमारेहिं देवेहिं देवेहि य आइन्ने जाव विकुव्विस्सति वा (अ, व)।
९ भ० ३।४।
१० भ० ३।४।

जाव[1] महाणुभागाम्रो[2]। ताम्रो ण तत्थ साण-साण भवणाण, साण-साण सामाणिय-साहस्सीणं, साण-साण महत्तरियाण[3], साणं-साण परिसाण जाव[4] एमहिड्ढीयाम्रो। अण्ण जहा लोगपालाण अपरिसेस।

८ सेव भते ! सेव भते ! त्ति भगव दोच्चे[5] गोयमे समण भगव महावीर वदइ नमसइ, वदित्ता नमसित्ता जेणेव तच्चे गोयमे वायुभूती अणगारे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता तच्च गोयम वायुभूति अणगार एवं वदासि—एव खलु गोयमा ! चमरे असुरिंदे असुरराया एमहिड्ढीए त चेव एव सव्व अपुट्ठवागरण नेयव्वं अपरिसेसिय[6] जाव[7] अग्गमहिसीण वत्तव्वया समत्ता।

९ तेण से तच्चे गोयमे वायुभूती अणगारे दोच्चस्स गोयमस्स अग्गिभूतिस्स अणगारस्स एवमाइक्खमाणस्स भासमाणस्स पण्णवेमाणस्स परूवेमाणस्स एयमट्ठ नो सद्दहइ नो पत्तियइ नो रोएइ, एयमट्ठ असद्दहमाणे अपत्तियमाणे अरोएमाणे उट्ठाए उट्ठेइ, उट्ठेत्ता जेणेव समणे भगव महावीरे तेणेव उवागच्छइ जाव[8] पज्जुवासमाणे एव वयासी—एव खलु भते ! दोच्चे गोयमे अग्गिभूई अणगारे मम एवमाइक्खइ भासइ पण्णवेइ परूवेइ—एव खलु गोयमा ! चमरे असुरिंदे असुरराया महिड्ढीए[9] जाव[10] महाणुभागे। से ण तत्थ चोत्तीसाए भवणावाससयसहस्साणं त चेव सव्व अपरिसेस भाणियव्व जाव[11] अग्गमहिसीण[12] वत्तव्वया समत्ता।

१० से कहमेय भते ! एव ?

गोयमादि ! समणे भगव महावीरे तच्च गोयम वायुभूतिं अणगार एव वयासी—ज ण गोयमा ! तव दोच्चे गोयमे अग्गिभूई अणगारे एवमाइक्खइ भासइ पण्णवेइ परूवेइ—एव खलु गोयमा ! चमरे असुरिंदे असुरराया महिड्ढीए त चेव सव्व जाव[13] अग्गमहिसीओ। सच्चे ण एसमट्ठे। अहं पि ण गोयमा ! एवमाइक्खामि भासामि पण्णवेमि परूवेमि—एव खलु गोयमा ! चमरे असुरिंदे असुरराया महिड्ढीए[14] त चेव जाव[15] अग्गमहिसीओ। 'सच्चे ण एसमट्ठे'[16]।

---

१ भ० ३।४।
२ महाणुभावाओ (ता)।
३ मयहरिया० (अ, व)।
४. भ० ३।४।
५ × (क, ता, म)।
६. अपरिसेसं (अ, क, स)।
७. भ० ३।४-७।
८. भ० १।१०।
९. एमहिड्ढीए (अ, क, ता, व)।
१० भ० ३।४।
११ भ० ३।४-७।
१२ अग्गमहिसीओ (अ, क, ता, व)।
१३. भ० ३।४-७।
१४ महिड्ढीए सो चेव वितिओ गमो भाणियव्वो (अ, व, म, स)।
१५ भ० ३।४-७।
१६ सच्चमेसे अट्ठे (अ, क, ता, व)।

११ सेवं भते ! सेव भते ! त्ति तच्चे गोयमे वायुभूई अणगारे समण भगव महावीर वदइ नमसइ, वदित्ता नमसित्ता जेणेव दोच्चे गोयमे अग्गिभूई अणगारे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता दोच्च गोयम अग्गिभूइ अणगार वदइ नमसइ, वदित्ता नमसित्ता एयमट्ठ सम्म विणएण भुज्जो-भुज्जो खामेइ ॥

१२ 'तए ण से तच्चे गोयमे वायुभूति अणगारे दोच्चे ण गोयमेण अग्गिभूतिणा अणगारेण सद्धि जेणेव समणे भगव महावीरे तेणेव उवागच्छइ जाव[1] पज्जुवासमाणे एव वयासी'[2]—जइ ण भते ! चमरे असुरिंदे असुरराया एमहिड्ढीए जाव[3] एवतिय च ण पभू विकुव्वित्तए, बली ण भते ! वइरोयणिंदे वइरोयणराया केमहिड्ढीए ? जाव[4] केवइय च ण पभू विकुव्वित्तए ?

'गोयमा ! बली ण वइरोयणिदे वइरोयणराया महिड्ढीए जाव[5] महाणुभागे । जहा चमरस्स तहा बलिस्स वि नेयव्व, नवर—सातिरेग केवलकप्प जबुद्दीव दीव भाणियव्व, सेस त चेव निरवसेस नेयव्व, नवर—नाणत्त जाणियव्व भवणेहि सामाणिएहि य'[6] ॥

---

१ भ० १।१० ।

२. ततेण से दोच्चे गोतमे अग्गिभूती अणगारे तच्चेण गोतमेण वायुभूइणा अणगारेण एतमट्ठ सम्म विणएण भुज्जो-भुज्जो खामिए समाणे उट्ठाए उट्ठेइ, उट्ठेत्ता तच्चेण गोतमेण वायुभूतिणा अणगारेण सद्धि जेणेव समणे भगव महावीरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छिता समण भगव महावीर वदइ नमसइ, वदित्ता नमसित्ता एव वयासी (क, ता), अत्र प्रश्नकर्ता तृतीयो गोतमो वर्तते तेन प्रस्तुतवाचना समीचीना न दृश्यते ।

३ भ० ३।४ ।

४ भ० ३।४ ।

५ भ० ३।४ ।

६ गोयमा ! बली वइरोयणिदे वइरोयणराया महिड्ढीए, से ण तत्थ तीसाए भवणावाससयसहस्साण सट्ठीए सामाणियसाहस्सीण सेस जहा चमरस्स, नवर—चउण्ह सट्ठीण आयरक्खदेवसाहस्सीण अन्नेसिं जाव भुजमाणे विहरति । से जहानामए एव जहा चमरस्स तहा बलिस्स वि नेयव्व, नवर—सातिरेग केवलकप्प जबुद्दीव भाणियव्व सेस त चेव निरवसेस नेयव्व, नवर—णाणत्त जाणियव्व भवणेहिं सामाणिएहिं (अ), गोयमा ! जाव महिड्ढीए ।५। से ण तत्थ तीसाए भवणावाससतसहस्साण सट्ठीए सामाणियसाहस्सीण सेस जहा चमरस्स, नवर—चउण्ह सट्ठीण आतरक्खदेवसाहस्सीण अन्नेसिं च जाव भुजमाणे विहरइ । से जहानामए एव जहा चमरस्स, नवर—साइरेग जबुद्दीव जाव एगमेगाए अग्गमहिसीए देवीए इमे वुइए विसए जाव विउव्विस्सति वा (क), गोयमा ! जाव महिड्ढीए ।५। से ण तत्थ तीसाए भवणावाससतसहस्साण सट्ठीए सामाणियसाहस्सीण सेस जहा चमरस्स, नवर—चउण्ह सट्ठीण आतरक्खदेवसाहस्सीण अण्णेसिं च जाव भुजमाणे विहरइ । से जहानामए एव जहा चमरस्स, नवर साइरेग केवलकप्प जबुद्दीव

१३ सेव भते ? सेव भते ! त्ति तच्चे गोयमे 'वायुभूई अणगारे समण भगवं महावीरं वदति नमसति, वदित्ता नमसित्ता णच्चासण्णे[1] •णातिदूरे सुस्सूसमाणे णमसमाणे अभिमुहे विणएण पजलियडे° पज्जुवासइ'[2] ॥

१४ तते ण से दोच्चे गोयमे अग्गिभूई अणगारे समण भगव महावीर वदइ नमंसइ, वदित्ता नमसित्ता एव वयासी—जइ णं भते ! वली वइरोयणिंदे वइरोयणराया एमहिड्ढीए जाव[3] एवतिय च ण पभू विकुव्वित्तए, धरणे ण भते ! नागकुमारिंदे नागकुमारराया केमहिड्ढीए ? जाव[4] केवइय च णं पभू विकुव्वित्तए ?

गोयमा ! धरणे ण नागकुमारिंदे नागकुमारराया महिड्ढीए जाव[5] महाणुभागे। से ण तत्थ चोयालीसाए भवणावाससयसहस्साण, छण्हं सामाणियसाहस्सीण, तायत्तीसाए तावत्तीसगाण, चउण्ह लोगपालाणं, छण्ह अग्गमहिसीणं सपरिवाराण, तिण्ह परिसाणं, सत्तण्ह अणियाण, सत्तण्ह अणियाहिवईणं, चउव्वीसाए आयरक्खदेवसाहस्सीण अण्णेसि, च जाव[6] विहरइ। एवतिय च णं पभू विउव्वित्तए। से जहानामए जुवती जुवाणे जाव[7] पभू केवलकप्प जवुद्दीव दीव जाव तिरियं सखेज्जे दीव-समुद्दे वहूहिं नागकुमारीहिं जाव विकुव्विस्सति वा।

सामाणिया तावत्तीस-लोगपालग्गमहिसीओ य तहेव जहा[8] चमरस्स, नवरं—सखेज्जे दीव-समुद्दे भाणियव्वे ॥

१५ एव जाव[9] थणियकुमारा, वाणमतरा, जोईसिया वि, नवरं—दाहिणिल्ले सव्वे अग्गिभूई पुच्छइ, उत्तरिल्ले सव्वे वायुभूई पुच्छइ ॥

१६ भतेत्ति ! भगव दोच्चे गोयमे अग्गिभूई अणगारे समण भगव महावीरं वंदइ नमंसइ, वदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी—जइ णं भते ! जोइसिंदे जोइसराया एमहिड्ढीए जाव[10] एवतियं च ण पभू विकुव्वित्तए, सक्के ण भते ! देविंदे देवराया केमहिड्ढीए ? जाव[11] केवतिय च ण पभू विकुव्वित्तए ?

दीव भाणितव्व सेस तहेव जाव विउव्विस्सति वा।

जइण भते ! वली वइरोयणिंदे वइरोयणराया एवमहिड्ढीए जाव एवतिय च ण पभू विउव्वित्तए, वलिस्सण भते। वइरोयणस्स वइ° सामाणिया देवा केमहिड्ढीया एव सामाणिया तावत्तीसा तावत्तीसा लोगपालग्गमहिसीओ य जहा चमरस्स, नवर—मातिरेग जवुद्दीव जाव एगमेगाए अग्गमहिसीदेवीए इमे वतिए विसए जाव विउव्विस्सति वा (ता)।

१. स० पा०—णच्चासण्णे जाव पज्जुवासइ।
२. वायुभूई जाव विहरइ (अ, व, म, स)।
३ भ० ३।१२।
४. भ० ३।१२।
५ भ० ३।४।
६. भ० ३।४।
७. भ० ३।४।
८. भ० ३।५-७।
९ पू० प० २।
१०. भ० ३।४।
११. भ० ३।४।

गोयमा ! सक्के ण देविदे देवराया महिड्ढीए जाव[1] महाणुभागे। से णं बत्तीसाए विमाणावाससयसहस्साण, चउरासीए[2] सामाणियसाहस्सीणं,[3]•तायत्तीसाए तावत्ती-सगाण, चउण्हं लोगपालाण अट्ठण्ह अग्गमहिसीणं सपरिवाराणं, तिण्हं परिसाणं सत्तण्हं अणियाणं, सत्तण्हं अणियाहिवईण°, चउण्हं चउरासीण आयरक्खसाहस्सीण, अण्णेसि च जाव[4] विहरइ। एमहिड्ढए जाव[5] एवतिय च णं पभू विकुव्वित्तए, एवं जहेव[6] चमरस्स तहेव भाणियव्व, नवर—दो केवलकप्पे जबुद्दीवे दीवे, अवसेस तं चेव।

एस ण गोयमा ! सक्कस्स देविदस्स देवरण्णो इमेयारूवे विसए विसयमेत्ते[7] बुइए, नो चेव ण सपत्तीए विकुव्विसु वा विकुव्वति वा विकुव्विस्सति वा।।

१७ जइ णं भंते ! सक्के देविंदे देवराया एमहिड्ढीए जाव[8] एवतिय च ण पभू विकुव्वित्तए, एव खलु देवाणुप्पियाण अतेवासि तीसए नाम अणगारे पगइभद्दए[9] •पगइउवसते पगइपयणुकोहमाणमायालोभे मिउमद्दवसपन्ने अल्लीणे° विणीए छट्ठंछट्ठेण अणिक्खित्तेण तवोकम्मेण अप्पाण भावेमाणे बहुपडिपुण्णाइ अट्ठ सवच्छराइ सामण्णपरियाग पाउणित्ता, मासियाए[10] सलेहणाए अत्ताण भूसेत्ता, सट्ठि भत्ताइ अणसणाए छेदेत्ता आलोइय-पडिक्कते समाहिपत्ते कालमासे काल किच्चा सोहम्मे कप्पे सयसि विमाणसि उववायसभाए देवसयणिज्जसि देवदूसतरिए अगुलस्स असखेज्जइभागमेत्तीए[11] ओगाहणाए सक्कस्स देविदस्स देवरण्णो सामा-णियदेवत्ताए उववण्णे।

तए ण तीसए देवे अहुणोववण्णमेत्ते समाणे पचविहाए पज्जत्तीए पज्जत्तिभाव[12] गच्छइ [त जहा—आहारपज्जत्तीए, सरीरपज्जत्तीए, इदियपज्जत्तीए, आणापाणु-पज्जत्तीए, भासा-मणपज्जत्तीए[13]]

तए ण त तीसय देव पचविहाए पज्जत्तीए पज्जत्तिभाव[14] गय समाण सामाणिय-परिसोववण्णया देवा करयलपरिग्गहिय दसनह सिरसावत्त मत्थए अजलिं कट्टु जएण विजएण वद्धाविंति वद्धावित्ता एव वयासी—अहो ण देवाणुप्पिएहिं

---

१ भ० ३।४।
२ चउरासीतीए (क, ता, म)।
३ स० पा०—सामाणियसाहस्सीण जाव चउण्ह।
४ भ० ३।४।
५ भ० ३।४।
६ भ० ३।४-७।
७. विसयमेत्ते ण (म, स)।
८ भ० ३।४।
९ स० पा०—पगइभद्दए जाव विणीए।
१० मासिय (क, व)।
११ असखेज्जभाग° (अ, व), असखेज्जभागमे-त्ताए (स)।
१२ पज्जत्तभाव (ता)।
१३ असौ कोष्ठकवर्त्तिपाठो व्याख्याश प्रतीयते ?
१४ पज्जत्तभाव (अ, स)।

दिव्वा देविड्ढी दिव्वा देवज्जुई दिव्वे देवाणुभावे लद्धे पत्ते अभिसमण्णागए। जारिसिया[1] ण देवाणुप्पिएहिं दिव्वा देविड्ढी दिव्वा देवज्जुई दिव्वे देवाणुभावे लद्धे पत्ते अभिसमण्णागए, तारिसिया ण सक्केण वि देविंदेण देवरण्णा दिव्वा देविड्ढी जाव अभिसमण्णागए। जारिसिया ण सक्केण देविंदेणं देवरण्णा दिव्वा देविड्ढी जाव अभिसमण्णागए। जारिसिया ण देवाणुप्पिएहिं दिव्वा देविड्ढी जाव अभिसमण्णागए।

से ण भते। तीसए देवे केमहिड्ढीए जाव केवतिय च णं पभू विकुव्वित्तए? गोयमा! महिड्ढीए जाव[2] महाणुभागे। से ण तत्थ सयस्स विमाणस्स, चउण्हं सामाणियसाहस्सीण, चउण्ह अग्गमहिसीणं सपरिवाराणं, तिण्ह परिसाण, सत्तण्ह अणियाण, सत्तण्ह अणियाहिवईण, सोलसण्ह आयरक्खदेव-साहस्सीण, अण्णेसिं च बहूण वेमाणियाण देवाण, देवीण य जाव[3] विहरइ। एमहिड्ढीए जाव[4] एवतिय च ण पभू विकुव्वित्तए। से जहानामए जुवती जुवाणे हत्थेण हत्थे गेण्हेज्जा, जहेव सक्कस्स तहेव जाव[5] एस ण गोयमा! तीसयस्स देवस्स अयमेयारूवे विसए विसयमेत्ते बुइए, णो चेव ण संपत्तीए विकुव्विसु वा विकुव्वति वा विकुव्विस्सति वा॥

१८ जइ ण भंते! तीसए देवे महिड्ढीए जाव[6] एवइय च ण पभू विकुव्वित्तए, सक्कस्स ण भते! देविदस्स देवरण्णो अवसेसा सामाणिया देवा केमहिड्ढीया? तहेव सव्व जाव[7] एस ण गोयमा! सक्कस्स देविंदस्स देवरण्णो एगमेगस्स सामाणियस्स[8] देवस्स इमेयारूवे विसए विसयमेत्ते बुइए, नो चेव ण सपत्तीए विकुव्विसु वा विकुव्वति वा विकुव्विस्सति वा।

तावत्तीसय—लोगपालग्गमहिसी ण जहेव[9] चमरस्स, नवर—दो केवलकप्पे जबुद्दीवे दीवे, अण्ण त चेव॥

१९. सेव भते! सेव भते! त्ति दोच्चे गोयमे जाव[10] विहरइ॥

२० भतेति! भगव तच्चे गोयमे वायुभूई अणगारे समण भगव[11] °महावीर वदइ नमसइ, वदित्ता नमसित्ता° एव वदासी—जइ ण भते! सक्के देविंदे देवराया

---

१. जारिसाण (अ, व)।
२ भ० ३।४।
३. भ० ३।४।
४. भ० ३।४।
५. भ० ३।१६।
६. भ० ३।४।
७ भ० ३।१७।
८. सामाणिय (अ)।
९ भ० ३।६, ७।
१० भ० १।५१।
११. स० पा०—भगव जाव एव।

महिड्ढीए जाव[1] एवइय च णं पभू विकुव्वित्तए, ईसाणे णं भंते ! देविंदे देवराया केमहिड्ढीए ? एव तहेव[2], नवर—साहिए दो केवलकप्पे जबुद्दीवे दीवे, अवसेस तहेव॥

२१. जइ ण भते ! ईसाणे[3] देविंदे देवराया एमहिड्ढीए जाव[4] एवतिय च ण पभू विकुव्वित्तए, एव खलु देवाणुप्पियाण अतेवासी कुरुदत्तपुत्ते नाम अणगारे पगति-भद्दए जाव[5] विणीए अट्ठमअट्ठमेण अणिक्खित्तेण, पारणए आयबिलपरिग्गहिएण तवोकम्मेण उड्ढ वाहाओ पगिज्झिय-पगिज्झिय सूराभिमुहे आयावणभूमीए आयावेमाणे बहुपडिपुण्णे छम्मासे सामण्णपरियाग पाउणित्ता, अद्धमासियाए सलेहणाए अत्ताण झूसेत्ता,[6] तीस भत्ताइ अणसणाए छेदेत्ता आलोइय-पडिक्कते समाहिपत्ते कालमासे काल किच्चा ईसाणे कप्पे सयसि विमाणसि उववायसभाए देवसयणिज्जसि देवदूसतरिए अगुलस्स असखेज्जइभागमेत्तीए ओगाहणाए ईसाणस्स देविंदस्स देवरण्णो सामाणियदेवत्ताए उववण्णे। जा तीसए वत्तव्वया[7] सच्चेव[8] अपरिसेसा कुरुदत्तपुत्ते वि नवर—सातिरेगे दो केवलकप्पे जबुद्दीवे दीवे, अवसेस त चेव।

एव सामाणिय-तावत्तीसग-लोगपाल-अग्गमहिसीण जाव[9] एस ण गोयमा ! ईसाणस्स देविंदस्स देवरण्णो एगमेगाए अग्गमहिसीए देवीए अयमेयारूवे विसए विसय-मेत्ते बुइए, नो चेव ण सपत्तीए विकुव्विसु वा विकुव्वति वा विकुव्विस्सति वा।

२२ एव सणकुमारे वि,[10] नवर—चत्तारि केवलकप्पे जबुद्दीवे दीवे, अदुत्तर च ण तिरियमसखेज्जे।

एव[11] सामाणिय-तावत्तीसग-लोगपाल-अग्गमहिसीण[12]। असखेज्जे दीव-समुद्दे सव्वे विकुव्वति, सणकुमाराओ आरद्धा[13] उवरिल्ला लोगपाला[14] सव्वे वि असखेज्जे दीव-समुद्दे विकुव्वति॥

---

१ भ० ३।१६।
२ भ० ३।१६।
३ तीसाणे (ता)।
४ भ० ३।४।
५ भ० ३।१७।
६ झोसइत्ता (अ, व, स), झोसेत्ता (ता, म)।
७ भ० ३।१७।
८ सा० (ता)।
९ भ० ३।५-७।
१० भ० ३।१६।
११ भ० ३।५-७।
१२ यद्यपि सनत्कुमारे स्त्रीणामुत्पत्तिर्नास्ति तथापि या सौधर्मोत्पन्ना समयाधिकपल्योपमादिदशपल्योपमान्तस्थितयोऽपरिगृहीतदेव्यस्ता सनत्कुमारदेवाना भोगाय सपद्यन्ते इति कृत्वाग्रमहिष्य इत्युक्तम् (वृ), इत्यपि सभाव्यते 'अग्गमहिसीण' इति पाठ आदर्शेषु प्रवाहरूपेण आगतः, वृत्तिकृता सगत्यर्थं उक्तव्याख्या कृता।
१३ आरद्ध (अ)।
१४. लोगवाला (म)।

२३ एव माहिंदे वि, नवर—सातिरेगे चत्तारि केवलकप्पे जबुद्दीवे दीवे ।
एव वभलोए वि, नवर—अट्ठ केवलकप्पे ।
एव लतए वि, नवर—सातिरेगे अट्ठ केवलकप्पे ।
महासुक्के सोलस केवलकप्पे । सहस्सारे सातिरेगे सोलस ।
एव पाणए वि, नवर—बत्तीस केवलकप्पे ।
एव अच्चुए वि, नवर—सातिरेगे बत्तीस केवलकप्पे जबुद्दीवे दीवे, अण्ण त चेव ॥

२४ सेव भते ! सेव भते ! त्ति तच्चे गोयमे वायुभूई अणगारे समण भगव महावीर वदइ नमसइ जाव[1] विहरइ ॥

तामलिस्स ईसाणिद-पदं

२५ तए ण समणे भगव महावीरे अण्णया कयाइ मोयाओ[2] नयरीओ नदणाओ चेइयाओ पडिनिक्खमइ, पडिनिक्खमित्ता वहिया जणवयविहार विहरइ ॥

२६ तेण कालेण तेण समएण रायगिहे नाम नगरे होत्था—वण्णओ[3] जाव[4] परिसा पज्जुवासइ ॥

२७ तेण कालेण तेण समएण ईसाणे देविंदे देवराया[5] ईसाणे कप्पे ईसाणवडेसए विमाणे जहेव रायप्पसेणइज्जे जाव[6] दिव्व देविड्ढि दिव्व देवजुति दिव्व देवाणुभाग दिव्व वत्तीसइबद्ध नट्टविहिं उवदसित्ता जाव जामेव दिसि पाउब्भूए, तामेव दिसि पडिगए ।

२८. भतेति ! भगव गोयमे समण भगव महावीर वदइ नमसइ, वदित्ता नमसित्ता । एव वदासी—अहो ण भते ! ईसाणे देविंदे देवराया महिड्ढीए जाव[7] महाणुभागे । ईसाणस्स ण भते ! सा दिव्वा देविड्ढी दिव्वा देवज्जुती दिव्वे देवाणुभागे कहि गते ? कहि अणुपविट्ठे ?
गोयमा ! सरीर गते, सरीर अणुपविट्ठे ॥

२९ से केणट्ठेण भते ! एव वुच्चइ—सरीर गते ! सरीर अणुपविट्ठे ?
गोयमा ! से जहानामए कूडागारसाला सिया दुहओ लित्ता गुत्ता गुत्तदुवारा णिवाया णिवायगभीरा । तीसे ण[8] •कूडागारसालाए अदूरसामते, एत्थ ण महेगे जणसमूहे एग मह अब्भवद्दलग वा वासवद्दलग वा महावाय वा एज्जमाण

---

१ भ० १।५१ ।
२ मोतातो (क, ता) ।
३. ओ० सू० १ ।
४ ओ० सू० १९-५२ ।
५ देवराया सूलपाणी वसभवाहणे उत्तरड्ढलोगाहिवई अट्ठावीसविमाणावाससयसहस्साहिवई अरयवर वत्थधरे आलइयमालमउडे नवहेमचारुचित्तचचलकुडलविलिहिज्जमाणगडे जाव दस दिसाओ उज्जोवेमाणे पभासेमाणे (अ, म, स) ।
६. राय० सू० ७-१२० ।
७ भ० ३।४ ।
८ स० पा०—कूडागारसालदिट्ठतो भाणियव्वो ।

पासति, पासित्ता त कूडागारसाल अतो अणुपविसित्ता ण चिट्ठइ । से तेणट्ठेण गोयमा ! एव वुच्चति—सरीर गते, सरीर अणुपविट्ठे° ।।

३०. ईसाणेण भते ! देविदेण देवरण्णा सा दिव्वा देविड्ढो दिव्वा देवज्जुती दिव्वे देवाणुभागे किण्णा लद्धे ? किण्णा पत्ते ? किण्णा अभिसमण्णागए ? के वा एस आसि पुव्वभवे ? किनामए वा ? किगोत्ते वा ? कयरसि वा गामसि वा नगरसि वा जाव[1] सण्णिवेससि वा[2] ? कि वा दच्चा ? कि वा भोच्चा ? कि वा किच्चा ? कि वा समायरित्ता ? कस्स वा तहारूवस्स समणस्स वा माहणस्स वा अतिए एगमवि आरिय धम्मिय सुवयण सोच्चा निसम्म ? ज ण ईसाणेण देविदेण देवरण्णा सा दिव्वा देविड्ढी दिव्वा देवज्जुती दिव्वे देवाणुभागे लद्धे पत्ते अभिसमण्णागए ?

३१ एव खलु गोयमा ! तेण कालेण तेण समएण इहेव जबुद्दीवे दीवे भारहे वासे तामलित्ती[3] नाम नयरी होत्था—वण्णओ[4] ।।

३२ तत्थ ण तामलित्तीए नयरीए तामली नाम मोरियपुत्ते गाहावई होत्था—अड्ढे दित्ते जाव[5] वहुजणस्स अपरिभूए यावि होत्था ।।

३३ तए ण तस्स मोरियपुत्तस्स तामलिस्स गाहावइस्स अण्णया कयाइ पुव्वरत्तावरत्त-कालसमयसि कुटुबजागरिय जागरमाणस्स इमेयारूवे अज्झत्थिए[6] •चिंतिए पत्थिए मणोगए सकप्पे° समुप्पज्जित्था—अत्थि ता मे पुरा पोराणाण सुचिण्णाण सुपरक्कताण[7] सुभाण कल्लाणाण कडाण कम्माण कल्लाणफलवित्तिविसेसे, जेणाह हिरण्णेण वड्ढामि सुवण्णेण वड्ढामि, धणेण वड्ढामि, धण्णेण वड्ढामि, पुत्तेहिं वड्ढामि, पसूहि वड्ढामि, विपुलधण-कणग-रयण-मणि-मोत्तिय-सख-सिल-प्पवाल-रत्तरयण-सतसारसावएज्जेण अतीव-अतीव अभिवड्ढामि, त किं ण अह पुरा पोराणाण सुचिण्णाण[8] •सुपरक्कताण सुभाण कल्लाणाण° कडाण कम्माण 'एगतसो खय'[9] उवेहमाणे विहरामि ?

त जावताव[10] अह हिरण्णेण वड्ढामि जाव अतीव-अतीव अभिवड्ढामि, जाव च मे मित्त-नाति-नियग-सयण-सबधि-परियणो आढाति परियाणाइ सक्कारेइ सम्माणेइ कल्लाण मगल देवय विणएण चेइय पज्जुवासइ, तावता मे सेय कल्ल पाउप्पभायाए रयणीए जाव[11] उट्ठियम्मि सूरे सहस्सरस्सिम्मि दिणयरे तेयसा

---

१. भ० १।४६ ।
२ वा किं वा सोच्चा (क) ।
३ तामलत्ती (म) ।
४ ओ० सू० १ ।
५ भ० २।६४ ।
६. स० पा०—अज्झत्थिए जाव समुप्पज्जित्था ।
७ सुपरि° (अ, म), सुप्पर° (क, ता, स), सुप्परि° (व) ।
८. स० पा०—सुचिण्णाण जाव कडाण ।
९ °सोक्खय (अ, क, व, म, स) ।
१० जाव (व) ।
११. भ० २।६६ ।

जलते सयमेव दारुमय पडिग्गहग[1] करेत्ता विउल 'असण-पाण-खाइम-साइम'[2] उवक्खडावेत्ता, मित्त-नाइ नियग-सयण[3],-सवधि-परियण आमंतेत्ता, त मित्त-नाइ-नियग-सयण-संवधि-परियणं विउलेण असण-पाण-'खाइम-साइमेण'[4] वत्थ-गध-मल्लालकारेण य सक्कारेत्ता सम्माणेत्ता, तस्सेव मित्त-नाइ-नियग-सयण-संवधि-परियणस्स पुरओ जेट्ठपुत्त कुटुंवे[5] ठावेत्ता, त मित्त-नाइ-नियग-सयण-सवधि-परियण जेट्ठपुत्त च आपुच्छित्ता, सयमेव दारुमय पडिग्गहग गहाय मुडे भवित्ता पाणामाए[6] पव्वज्जाए पव्वइत्तए। पव्वइए वि य णं समाण इम एयारूव अभिग्गहं अभिगिण्हिस्सामि—कप्पइ मे जावज्जीवाए छट्ठंछट्ठेण अणिक्खित्तेण तवोकम्मेणं उड्ढ वाहाओ 'पगिज्झिय-पगिज्झिय'[7] सूराभिमुहस्स आयावणभूमीए आया-वेमाणस्स विहरित्तए, छट्ठस्स वि य ण पारणयसि[8] आयावणभूमीओ पच्चोरुभित्ता सयमेव दारुमय पडिग्गहग गहाय तामलित्तीए नयरीए उच्च-नीय-मज्झिमाइ कुलाइ घरसमुदाणस्स भिक्खायरियाए अडित्ता सुद्धोदण पडिग्गाहेत्ता तं तिस-त्तक्खुत्तो उदएण[9] पक्खालेत्ता तओ पच्छा आहार आहारित्तए त्ति कट्टु एवं सपेहेइ, सपेहेत्ता कल्ल पाउप्पभायाए रयणीए जाव[10] उट्ठियम्मि सूरे सहस्स-रस्सिम्मि दिणयरे तेयसा जलंते सयमेय दारुमयं पडिग्गहगं करेइ, करेत्ता विउल असण-पाण-खाइम-साइम उवक्खडावेइ, उवक्खडावेत्ता ततो पच्छा ण्हाए कयब-लिकम्मे कयकोउय-मगल-पायच्छित्ते सुद्धप्पावेसाइ मगल्लाइ वत्थाइं पवर परिहिए अप्पमहग्घाभरणालकियसरीरे[11] भोयणवेलाए भोयणमडवसि सुहासण-वरगए तेण[12] मित्त-नाइ-नियग-सयण-सवधि-परिजणेण सद्धि त विउल असण-पाण-खाइम-साइम आसादेमाणे वीसादेमाणे परिभाएमाणे परिभुजेमाणे विहरइ। जिमियभुत्तुत्तरागए वि य णं समाणे आयते चोक्खे परमसुइब्भूए त मित्त[13]-•नाइ-नियग-सयण-सवधि-°परियण विउलेण असण-पाण-खाइम-साइमेणं वत्थ-गंध-मल्लालकारेण य सक्कारेड सम्माणेइ, तस्सेव मित्त-नाइ[14]-•नियग-सयण-सवधि° परियणस्स पुरओ जेट्ठपुत्त कुटुवे ठावेइ, ठावेत्ता त मित्त-नाइ[15]-•नियग-सयण-

---

१. पडिग्गहय (अ, म, स)।
२. असण पाण खाइम साइम (अ, स)।
३ × (क, ता, व, म, स)।
४ खातिमसातिमेण (व, स);
५. कुडुवे (ता)।
६. पाणायामाए (व)।
७. पगज्झिय २ (स)।
८. पारणंसि (म)।
९ दएण (ता, म)।
१० भ० २।६६।
११ अप्पमहग्घालकारभूसितसरीरे (ता)।
१२ तए ण (अ, ता, व, म, स)।
१३ स० पा०—मित्त जाव परियण।
१४ स० पा०—नाइ जाव परियणस्स।
१५. स० पा०—नाइ जाव परियण।

सबंधि-०परियण जेट्ठपुत्त च आपुच्छइ, आपुच्छित्ता मुडे भवित्ता पाणामाए पव्वज्जाए पव्वइए। पव्वइए वि य ण समाणे इम एयारूव अभिग्गह अभिगिण्हइ —कप्पइ मे जावज्जीवाए छट्ठछट्ठेण जाव आहारित्तए त्ति कट्टु इम एयारूव अभिग्गह[1] अभिगिण्हित्ता जावज्जीवाए छट्ठछट्ठेण अणिक्खित्तेण तवोकम्मेण उड्ढ बाहाओ पगिज्झिय-पगिज्झिय सूराभिमुहे आयावणभूमीए आयावेमाणे विहरइ। छट्ठस्स वि य ण पारणयसि आयावणभूमीओ पच्चोरुभइ[2], पच्चोरुभित्ता सयमेव दारुमय पडिग्गहग गहाय तामलित्तीए नयरीए उच्च-नीय-मज्झिमाइ कुलाइ घरसमुदाणस्स भिक्खायरियाए अडइ, अडित्ता सुद्धोयण पडिग्गाहेइ, पडिग्गाहेत्ता तिसत्तक्खुत्तो उदएण पक्खालेइ, पक्खालेत्ता तओ पच्छा आहार आहारेइ ॥

३४ से केणट्ठेण भते ! एव वुच्चइ—पाणामा पव्वज्जा ?
गोयमा ! पाणामाए ण पव्वज्जाए पव्वइए समाणे ज जत्थ पासइ—इद वा खद वा रुद्द वा सिव वा वेसमण वा अज्ज वा कोट्टकिरिय[3] वा राय वा[4] •ईसर वा तलवर वा माडबिय वा कोडुबिय वा इब्भ वा सेट्ठि सेणावइ वा° सत्थवाह[5] वा काक वा साण वा पाण[6] वा—उच्च पासइ उच्च पणाम करेइ, नीय पासइ नीय पणाम करेइ, ज जहा पासइ तस्स तहा पणाम करेइ। से तेणट्ठेण गोयमा ! एव वुच्चइ पाणामा पव्वज्जा ॥

३५ तए ण से तामली मोरियपुत्ते तेण ओरालेण विपुलेण पयत्तेण पग्गहिएण बालतवोकम्मेण सुक्के लुक्खे[7] •निम्मसे अट्ठि-चम्मावणद्धे किडिकिडियाभूए किसे° धमणिसतए जाए यावि होत्था।

३६ तए ण तस्स तामलिस्स बालतवस्सिस्स अण्णया कयाइ पुव्वरत्तावरत्तकाल-समयसि अणिच्चजागरिय जागरमाणस्स इमेयारूवे अज्झत्थिए[8] •चिंतिए पत्थिए मणोगए सकप्पे°समुप्पज्जित्था—एव खलु अह इमेण ओरालेण विपुलेण[9] •पयत्तेण पग्गहिएण कल्लाणेण सिवेण धन्नेण मगल्लेण सस्सिरीएण° उदग्गेण उदत्तेण उत्तमेण महाणुभागेण तवोकम्मेण सुक्के लुक्खे जाव[10] धमणिसतए जाए, त अत्थि जा[11] मे उट्ठाणे कम्मे बले वीरिए पुरिसक्कार-परक्कमे तावता मे सेय

---

१ अभिग्गह अभिगिण्हइ (अ, क, ता, ब, म, स), 'उवगा' (३।४२) सूत्रे सोमिलस्य प्रव्रज्याप्रसगे एतत् पद नास्ति। अत्रापि तथैव युक्तमस्ति।
२ पच्चोरुहइ (अ, व)।
३ ° इरिय (ता)।
४. स० पा०—राय वा जाव सत्थवाह।
५ सत्थाह (ता)।
६ पाणग (अ)।
७. भुक्खे (अ, क, व, स), स० पा०—लुक्खे जाव धमणि०।
८ स० पा०—अज्झत्थिए जाव समुप्पज्जित्था।
९ स० पा०—विपुलेण जाव उदग्गेण।
१० भ० ३।३५।
११ × (अ), ता (ता), इ (व)।

कल्लं पाउप्पभायाए रयणीए जाव उट्ठियम्मि सूरे सहस्सरस्सिम्मि दिणयरे तेयसा जलंते तामलित्तीए नगरीए दिट्ठाभट्ठे य पासंडत्थे य गिहत्थे य पुव्वसंगतिए य[1] परियायसंगतिए य आपुच्छित्ता तामलित्तीए नगरीए मज्झंमज्झेणं निग्गच्छित्ता पादुग[2]-कुंडिय-मादीयं उवगरणं दारुमयं च पडिग्गहगं एगंते एडित्ता तामलित्तीए नगरीए उत्तरपुरत्थिमे दिसिभाए णियत्तणिय-मंडलं आलिहित्ता[3] संलेहणा झूसणा झूसियस्स भत्तपाणपडियाइक्खियस्स पाओवगयस्स कालं अणवकंखमाणस्स विहरित्तए त्ति कट्टु एवं संपेहेइ, संपेहेत्ता कल्लं पाउप्पभायाए रयणीए जाव उट्ठियम्मि सूरे सहस्सरस्सिम्मि दिणयरे तेयसा जलंते[4] ॰तामलित्तीए नगरीए दिट्ठाभट्ठे य पासंडत्थे य गिहत्थे य पुव्वसंगतिए य परियायसंगतिए य आपुच्छइ, आपुच्छित्ता तामलित्तीए नयरीए मज्झंमज्झेणं निग्गच्छइ, निग्गच्छित्ता पादुग-कुंडिय-मादीयं उवगरणं दारुमयं च पडिग्गहगं एगंते एडेइ, एडेत्ता तामलित्तीए नगरीए उत्तरपुरत्थिमे दिसिभाए णियत्तणिय-मंडलं आलिहइ, आलिहित्ता संलेहणाझूसणाझूसिए॰ भत्तपाणपडियाइक्खिए पाओवगमणं निवण्णे ॥

३७. तेणं कालेणं तेणं समएणं बलिचंचा रायहाणी अणिंदा अपुरोहिया या वि होत्था ॥

३८. तए णं ते बलिचंचारायहाणिवत्थव्वया बहवे असुरकुमारा देवा य देवीओ य तामलिं बालतवस्सिं ओहिणा आभोएंति, आभोएत्ता अण्णमण्णं सद्दावेंति, सद्दावेत्ता एवं वयासि—एवं खलु देवाणुप्पिया ! बलिचंचा रायहाणी अणिंदा अपुरोहिया, अम्हे य णं देवाणुप्पिया ! इंदाहीणा इंदाहिट्ठिया इंदाहीणकज्जा, अयं च णं देवाणुप्पिया ! तामली बालतवस्सी तामलित्तीए नगरीए बहिया उत्तरपुरत्थिमे दिसिभागे[5] नियत्तणिय-मंडलं आलिहित्ता संलेहणाझूसणाझूसिए भत्तपाणपडिया-इक्खिए पाओवगमणं निवण्णे, तं सेयं खलु देवाणुप्पिया ! अम्हं तामलिं बालतवस्सिं बलिचंचाए रायहाणीए ठितिपकप्पं पकरावेत्तए त्ति कट्टु अण्ण-मण्णस्स अंतिए एयमट्ठं पडिसुणेंति, पडिसुणेत्ता बलिचंचाए रायहाणीए मज्झंमज्झेणं निग्गच्छंति, निग्गच्छित्ता जेणेव रुयगिंदे[6] उप्पायपव्वए तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता वेउव्वियसमुग्घाएणं समोहण्णंति, समोहणित्ता जाव[7] उत्तरवेउव्वियाइं रूवाइं विकुव्वंति, विकुव्वित्ता ताए उक्किट्ठाए तुरियाए चवलाए चंडाए जइणाए छेयाए सीहाए सिग्घाए 'उद्धूयाए दिव्वाए'[8] देवगईए तिरियं असंखेज्जाणं दीवसमुद्दाणं मज्झंमज्झेणं 'वीईवयमाणा-वीईवयमाणा'[9]

---

१ य पच्छासंगतिए य (अ, म)।

२. पाउग (अ, क, ब, म)।

३. आलिभित्ता (ता)।

४ सं॰ पा॰—जलंते जाव आपुच्छइ २ ताम-लित्तीए एगंते एडेइ जाव भत्त॰।

५ दिसाभाए (क, ता)।

६. रुयंयिंदे (अ, ब), रुयइंदे (क, ता, म)।

७. राय॰ सू॰ १०।

८ दिव्वाए उद्धुयाए (अ, क, ता, ब, स, वृ)।

९ एते पदे 'रायपसेणइय'(१०)सूत्रात् पूरिते।

जेणेव जबुद्दीवे दीवे जेणेव भारहे वासे जेणेव तामलित्ती नगरी जेणेव तामली मोरियपुत्ते तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता तामलिस्स बालतवस्सिस्स उप्पि सपक्खि सपडिदिसि ठिच्चा दिव्व देविड्ढि दिव्व देवज्जुति दिव्व देवाणुभाग दिव्वं बत्तीसतिविह नट्टविहि उवदंसेति, उवदसेत्ता तामलि बालतवस्सि तिक्खुत्तो आयाहिण-पयाहिण करेति[1], करेत्ता वदंति नमसति, वदित्ता नमसित्ता एव वयासी—एव खलु देवाणुप्पिया ! अम्हे बलिचचारायहाणीवत्थव्वया बहवे असुर-कुमारा देवा य देवीओ य देवाणुप्पिय वदामो नमसामो[2] •सक्कारेमो सम्माणेमो कल्लाण मगल देवय चेइय° पज्जुवासामो। अम्हण्ण[3] देवाणुप्पिया ! बलिचचा रायहाणी अणिदा अपुरोहिया, अम्हे य ण देवाणुप्पिया ! इदाहीणा इदाहिट्ठिया इदाहीणकज्जा, त तुब्भे ण देवाणुप्पिया ! बलिचच रायहाणि आढाह[4] परियाणह सुमरह, अट्ठ बधह, निदाण पकरेह, ठितिपकप्प पकरेह, तए णं तुब्भे कालमासे काल किच्चा बलिचचाए[5] रायहाणीए उववज्जिस्सह, तए ण तुब्भे अम्ह इदा भविस्सह, तए ण तुब्भे अम्हेहि सद्धि दिव्वाइ भोगभोगाइ भुजमाणा विहरिस्सह ।।

३९. तए ण से तामली बालतवस्सी तेहि बलिचचारायहाणिवत्थव्वएहि बहूहि असुर-कुमारेहि देवेहि देवीहि य एव वुत्ते समाणे एयमट्ठ नो आढाइ, नो परियाणेइ[6], तुसिणीए सचिट्ठइ ।।

४०. तए णं ते बलिचचारायहाणिवत्थव्वया बहवे असुरकुमारा देवा य देवीओ य तामलि मोरियपुत्त दोच्च पि तच्च पि तिक्खुत्तो आयाहिण-पयाहिण करेति जाव[7] अम्ह च ण देवाणुप्पिया ! बलिचचा रायहाणी अणिदा[8] •अपुरोहिया, अम्हे य ण देवाणुप्पिया ! इदाहीणा इदाहिट्ठिआ इदाहीणकज्जा, त तुब्भे ण देवाणु-प्पिया ! बलिचच रायहाणि आढाह परियाणह सुमरह, अट्ठ बधह, निदाण पकरेह°, ठितिपकप्प पकरेह जाव दोच्च पि तच्च पि एव वुत्ते समाणे[9] •एयमट्ठ नो आढाइ, नो परियाणेइ°, तुसिणीए सचिट्ठइ ।।

४१. तए ण ते बलिचचारायहाणिवत्थव्वया बहवे असुरकुमारा देवा य देवीओ य तामलिणा बालतवस्सिणा अणाढाइज्जमाणा अपरियाणिज्जमाणा जामेव दिसि पाउब्भूया तामेव दिसि पडिगया ।।

४२ तेण कालेण तेण समएण ईसाणे कप्पे अणिदे अपुरोहिए या वि होत्था ।।

---

१. पकरेंति (अ, ता) ।
२ स० पा०—नमसामो जाव पज्जवासामो ।
३ अम्हाण (अ, स) ।
४. आढह (अ, स) ।
५ बलिचचा (अ, ब, म, स) ।
६ परियाणइ (अ, क, ता, म), परियाणाइ (ब) ।
७ भ० ३।३८ ।
८ स० पा०—अणिदा जाव ठिति० ।
९. स० पा०—समाणे जाव तुसिणीए ।

४३. तए ण से तामली बालतवस्सी बहुपडिपुण्णाइ सट्ठि वाससहस्साइ परियाग पाउणित्ता, दोमासियाए सलेहणाए अत्ताण झूसित्ता, सवीस भत्तसय अणसणाए छेदित्ता कालकासे काल किच्चा ईसाणे कप्पे ईसाणवडेसए विमाणे उववायसभाए देवसयणिज्जसि देवदूसतरिए[1] अगुलस्स असखेज्जइभागमेत्तीए ओगाहणाए ईसाणदेविंदविरहियकालसमयसि ईसाणदेविंदत्ताए[2] उववण्णे ॥

४४ तए ण से ईसाणे देविंदे देवराया अहुणोववण्णे पचविहाए पज्जत्तीए पज्जत्तिभाव गच्छइ, [त जहा—आहारपज्जत्तीए जाव[3] भासा-मणपज्जत्तीए][4] ॥

४५ तए ण ते बलिचचारायहाणिवत्थव्वया बहवे असुरकुमारा देवा य देवीओ य तामलि बालतवस्सि कालगत जाणित्ता, ईसाणे य कप्पे देविदत्ताए उववण्ण पासित्ता आसुरुत्ता रुट्ठा कुविया चडिक्किया मिसिमिसेमाणा बलिचचाए रायहाणीए मज्झमज्झेण निग्गच्छति, निग्गच्छित्ता ताए उक्किट्ठाए जाव[5] जेणेव भारहे वासे जेणेव तामलित्ती नयरी जेणेव तामलिस्स बालतवस्सिस्स सरीरए तेणेव उवागच्छति, वामे पाए[6] सुबेण[7] बधति, तिक्खुत्तो मुहे निट्ठुहति[8], तामलित्तीए नगरीए सिंघाडग-तिग-चउक्क-चच्चर-चउम्मुह-महापह-पहेसु 'आकड्ढ-विकड्ढि'[9] करेमाणा, महया-महया सद्देण उग्घोसेमाणा-उग्घोसेमाणा एव वयासि—केस[10] ण भो ! से तामली बालतवस्सी सयगहियलिंगे[11] पाणामाए पव्वज्जाए पव्वइए ? केस ण से ईसाणे कप्पे ईसाणे देविदे देवराया ?—ति कट्टु तामलिस्स बालतवस्सिस्स सरीरय हीलति[12] निंदति खिसति गरहति अवमण्णति तज्जेति तालेति परिवहेति पव्वहेति, आकड्ढ-विकड्ढि करेति, हीलेत्ता[13] •निदित्ता खिसित्ता गरहित्ता अवमण्णेत्ता तज्जेत्ता तालेत्ता परिवहेत्ता पव्वहेत्ता° आकड्ढ-विकड्ढि करेत्ता एगते एडति, एडित्ता जामेव दिसिं पाउब्भूया तामेव दिसि पडिगया ॥

४६. तए ण ते[14] ईसाणकप्पवासी[15] बहवे वेमाणिया देवा य देवीओ य बलिचंचारायहाणिवत्थव्वएहि बहूहिं असुरकुमारेहि देवेहि देवीहि य तामलिस्स बालतवस्सिस्स सरीरय हीलिज्जमाण निंदिज्जमाण[16] •खिसिज्जमाण गरहिज्जमाण अवमण्णिज्जमाण तज्जिज्जमाणं तालेज्जमाण परिवहिज्जमाण पव्वहिज्जमाण° आकड्ढ-

---

१ ° दूसतरियसि (अ); ° दूसतरिय (व) ।
२. ईसाणे ° (अ, ता) ।
३. भ० ३।१७ ।
४. असौ कोष्ठकवर्त्तिपाठो व्याख्याश प्रतीयते ।
५. भ० ३।३८ ।
६ पायसि (क) ।
७. सुदेण (अ) ।
८. उट्ठुहति (अ, व, म, स) ।
९ आकट्ट-विकट्टि (क, ब, म, स) ।
१०. से के (अ, ब) ।
११ सइगिहिय ° (क, ता, व) ।
१२ हीलयति (ता) ।
१३ स० पा०—हिलेत्ता जाव आकड्ढ ।
१४ × (अ, व) ।
१५ ईसाणसि (व) ।
१६ स० पा०—निंदिज्जमाण जाव आकड्ढ ।

विकड्ढि कीरमाण पासति, पासित्ता आसुरुत्ता[1] जाव[2] मिसिमिसेमाणा जेणेव ईसाणे देविदे देवराया तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता करयलपरिग्गहिय दसनह सिरसावत्त मत्थए अजलि कट्टु जएण विजएण वद्धावेति, वद्धावेत्ता एव वयासी—एव खलु देवाणुप्पिया ! बलिचचारायहाणिवत्थव्वया वहवे असुरकुमारा देवा य देवीओ य देवाणुप्पिए कालगए जाणित्ता ईसाणे य कप्पे इदत्ताए उववण्णे पासेत्ता आसुरुत्ता जाव एगते एडेति, एडेत्ता जामेव दिसि पाउब्भूया तामेव दिसि पडिगया ॥

४७ तए ण ईसाणे देविदे देवराया तेसि ईसाणकप्पवासीण बहूण वेमाणियाण देवाण य देवीण य अतिए एयमट्ठ सोच्चा निसम्म आसुरुत्ते जाव[3] मिसिमिसेमाणे तत्थेव सयणिज्जवरगए तिवलिय भिउडि निडाले साहट्टु बलिचचारायहाणि अहे सपक्खि सपडिदिसि समभिलोएइ ॥

४८. तए ण सा बलिचचा रायहाणी ईसाणेण देविंदेण देवरण्णा अहे सपक्खि सपडिदिसि समभिलोइया समाणी तेण दिव्वप्पभावेण इगालब्भूया मुम्मुरब्भूया छारियब्भूया तत्तकवेल्लकब्भूया तत्ता समजोइब्भूया जाया यावि होत्था ॥

४९. तए ण ते बलिचचारायहाणिवत्थव्वया बहवे असुरकुमारा देवा य देवीओ य त बलिचच[4] रायहाणि इगालब्भूय जाव[5] समजोइब्भूय पासति, पासित्ता भीआ तत्था[6] तसिआ[7] उव्विग्गा सजायभया सव्वओ समता आधावेति परिधावेति, आधावेत्ता परिधावेत्ता अण्णमण्णस्स काय समतुरगेमाणा-समतुरगेमाणा चिट्ठति ॥

५०. तए ण ते बलिचचारायहाणिवत्थव्वया बहवे असुरकुमारा देवा य देवीओ य ईसाण देविंद देवराय परिकुविय जाणित्ता ईसाणस्स देविदस्स देवरण्णो त दिव्व देविड्ढि दिव्व देवज्जुइ दिव्व देवाणुभाग दिव्व तेयलेस्स असहमाणा सव्वे सपक्खि सपडिदिस ठिच्चा करयलपरिग्गहिय दसनह सिरसावत्त मत्थए अजलि कट्टु जएण विजएण वद्धावेति, वद्धावेत्ता एव वयासी—अहो ! ण देवाणुप्पिएहिं दिव्वा देविड्ढी[8] •दिव्वा देवज्जुई दिव्वे देवाणुभावे लद्धे पत्ते° अभिसमण्णागए, त दिट्ठा ण देवाणुप्पियाणं दिव्वा देविड्ढी[9] •दिव्वा देवज्जुई दिव्वे देवाणुभावे° लद्धे पत्ते अभिसमण्णामाए, त खामेमो ण देवाणुप्पिया ! खमतु ण

---

१ आसुरत्ता (व, म) ।
२ भ० ३।४५ ।
३ भ० ३।४५ ।
४ वलिचचा (अ, क, व, म, स) ।
५ भ० ३।४८ ।
६ उत्तत्था (ता, स) ।
७ तेसिया (व), सुसिया (स), हस्तलिखितवृत्तौ क्वचित्तसियत्ति शुषितानदरसा, क्वचिच्च 'सुसियत्ति' शुषितानदरसा इति लभ्यते ।
८ स० पा०—देविड्ढी जाव अभिसमण्णागए ।
९. स० पा०—देविड्ढी जाव लद्धे ।

देवाणुप्पिया ! खतुमरिहति[1] ण देवाणुप्पिया ! णाइ[2] भुज्जो[3] एव करणयाए त्ति कट्टु एयमट्ठं सम्म विणएण भुज्जो-भुज्जो खामेति ।।

५१ तए ण से ईसाणे देविदे देवराया तेहिं वलिचचारायहाणिवत्थव्वएहिं बहूहिं असुरकुमारेहि देवेहि देवीहि य एयमट्ठ सम्म विणएण भुज्जो-भुज्जो खामिते समाणे त दिव्व देविड्ढि जाव[4] तेयलेस्स पडिसाहरइ । तप्पभिति च णं गोयमा ! ते वलिचचारायहाणिवत्थव्वया[5] वहवे असुरकुमारा देवा य देवीओ य ईसाण देविद देवराय आढति[6] •परियाणति सक्कारेति सम्माणेति कल्लाण मगल देवय विणएण चेइय° पज्जुवासति, ईसाणस्स य देविदस्स देवरण्णो आणा-उववाय-वयण-निद्देसे चिट्ठति ।

एव खलु गोयमा ! ईसाणेण देविदेण देवरण्णा सा दिव्वा देविड्ढी[7] •दिव्वा देवज्जुई दिव्वे देवाणुभावे लद्धे पत्ते° अभिसमण्णागए ।।

५२ ईसाणस्स भते ! देविदस्स देवरण्णो केवतिय[8] काल ठिई पण्णत्ता ?
गोयमा ! सातिरेगाइ दो सागरोवमाइ ठिई पण्णत्ता ।।

५३ ईसाणे ण भते ! देविदे देवराया ताओ देवलोगाओ आउक्खएण[9] •भवक्खएणं ठिइक्खएण अणतर चयं चइत्ता° कहिं गच्छिहिति ? कहि उववज्जिहिति ?
गोयमा ! महाविदेहे वासे सिज्झिहिति[10] •वुज्झिहिति मुच्चिहिति सव्वदुक्खाण° अत काहिति ।।

सक्कीसाण-पदं

५४. सक्कस्स णं भते ! देविदस्स देवरण्णो विमाणेहिंतो ईसाणस्स देविदस्स देवरण्णो विमाणा ईसिं उच्चतरा चेव ईसिं उन्नयतरा[11] चेव ? ईसाणस्स वा देविदस्स देवरण्णो विमाणेहिंतो सक्कस्स देविदस्स देवरण्णो विमाणा ईसिं णीयतरा चेव ईसिं निण्णतरा चेव ?
हता गोयमा ! सक्कस्स त चेव सव्व नेयव्व ।।

५५. से केणट्ठेण भते ! एव वुच्चइ—

---

१. खतुमरिहतु (अ, व), खमतुमरिहतु (ता, स) ।
२ णाइं (ता, स) ।
३ भुज्जो-भुज्जो (अ, क, स) ।
४. भ० ३।५० ।
५ ° वत्थव्वा (अ, ता, व, म, स) ।
६ आटायति (क, ता); स० पा०—आढति जाव पज्जुवासति ।
७ स० पा०—देविड्ढी जाव अभिसमण्णागए ।
८ केवइ (ता) ।
९ स० पा०—आउक्खएण जाव कहिं ।
१० स० पा०—सिज्झिहिति जाव अत ।
११ उन्नयरा (अ, ता, व, व, स) ।

गोयमा ! से जहानामए करयले सिया—देसे उच्चे, देसे उन्नए। देसे णीए, देसे निण्णे। से तेणट्ठेण गोयमा ! सक्कस्स देविदस्स देवरण्णो जाव[1] ईसिं निण्णतरा चेव ॥

५६. पभू ण भते ! सक्के देविदे देवराया ईसाणस्स देविदस्स देवरण्णो अतिय पाउब्भवित्तए ?
हता पभू ॥

५७ से भते ! कि आढामाणे[2] पभू ? अणाढामाणे[3] पभू ?
गोयमा ! आढामाणे पभू, नो अणाढामाणे पभू ॥

५८ पभू ण भते ! ईसाणे देविदे देवराया सक्कस्स देविदस्स देवरण्णो अतिय पाउब्भवित्तए ?
हता पभू ॥

५९ से भंते ! कि आढामाणे पभू ? अणाढामाणे पभू ?
गोयमा ! आढामाणे वि पभू, अणाढामाणे वि पभू ॥

६० पभू ण भते ! सक्के देविंदे देवराया ईसाण देविद देवराय सपक्खि[4] सपडिदिसिं समभिलोइत्तए ?
[5]●हता पभू ॥

६१ से भते ! कि आढामाणे पभू ? अणाढामाणे पभू ?
गोयमा ! आढामाणे पभू, नो अणाढामाणे पभू ॥

६२ पभू ण भते ! ईसाणे देविंदे देवराया सक्क देविद देवराय सपक्खि सपडिदिसि समभिलोइत्तए ?
हता पभू ॥

६३. से भते ! कि आढामाणे पभू ? अणाढामाणे पभू ?
गोयमा ! आढामाणे वि पभू, अणाढामाणे वि पभू° ॥

६४ पभू ण भते ! सक्के देविंदे देवराया ईसाणेण देविंदेण देवरण्णा सद्धि आलाव वा सलाव वा करेत्तए ?
हता पभू ॥

६५ [6]●से भते ! कि आढामाणे पभू ? अणाढामाणे पभू ?
गोयमा ! आढामाणे पभू, नो अणाढामाणे पभू ॥

---

१ भ० ३।५४।
२. आढामीणे (अ, क, ता, व, म), आढायमाणे (स)।
३ अणाढामीणे (अ, क, ता, व, म), अणाढायमाणे (स)।
४ सपक्ख (क, ता)।
५ स० पा०—जहा पादुब्भवणा तहा दो वि आलावगा णेयव्वा।
६ स० पा०—जहा पादुब्भवा।

६६ पभू ण भंते ! ईसाणे देविंदे देवराया सक्केण देविंदेण देवरण्णा सद्धि आलाव वा संलाव वा करेत्तए ?
हंता पभू ॥

६७ से भंते ! किं आढामाणे पभू ? अणाढामाणे पभू ?
गोयमा ! आढामाणे वि पभू, अणाढामाणे वि पभू° ॥

६८. अत्थि णं भंते ! तेसिं सक्कीसाणाणं देविंदाणं देवराईणं किच्चाइं करणिज्जाइं समुप्पज्जंति[1] ?
हंता अत्थि ॥

६९ से कहमिदाणिं पकरेंति ?
गोयमा ! ताहे चेव णं से सक्के देविंदे देवराया ईसाणस्स देविंदस्स देवरण्णो अंतियं पाउब्भवति, ईसाणे वा देविंदे देवराया सक्कस्स देविंदस्स देवरण्णो अंतियं पाउब्भवति इति भो ! सक्का ! देविंदा ! देवराया ! दाहिणड्ढलोगाहिवई ! इति भो ! ईसाणा ! देविंदा ! देवराया ! उत्तरड्ढलोगाहिवई ! इति भो ! इति भो ! त्ति ते अण्णमण्णस्स किच्चाइं करणिज्जाइं पच्चणुब्भवमाणा विहरंति ॥

७० अत्थि णं भंते ! तेसिं सक्कीसाणाणं देविंदाणं देवराईणं विवादा समुप्पज्जंति ?
हंता अत्थि ॥

७१. से कहमिदाणिं पकरेंति ?
गोयमा ! ताहे चेव णं ते सक्कीसाणा देविंदा देवरायाणो सणंकुमारं देविंदं देवरायं मणसीकरेंति । तए णं से सणंकुमारे देविंदे देवराया तेहिं सक्कीसाणेहिं देविंदेहिं देवराईहिं मणसीकए समाणे खिप्पामेव सक्कीसाणाणं देविंदाणं देवराईणं अंतियं पाउब्भवति, जं से वदइ तस्स आणा-उववाय-वयण-निद्देसे चिट्ठंति ।

सणंकुमार-पदं

७२ सणंकुमारे णं भंते ! देविंदे देवराया किं भवसिद्धिए ? अभवसिद्धिए ? सम्म-दिट्ठी ? मिच्छदिट्ठी ? परित्तसंसारिए ? अणंतसंसारिए ? सुलभबोहिए[2] ? दुल्लभबोहिए ? आराहए ? विराहए ? चरिमे ? अचरिमे ?
गोयमा ! सणंकुमारे णं देविंदे देवराया भवसिद्धिए[3], नो अभवसिद्धिए । [4]°सम्म-

---

१. × (अ, ब, क) ।
२. ° बोहीए (अ, ब, स) ।
३. भवसिद्धीए (ता) ।
४ सं० पा०—एवं स प सु आ च पसत्थं नेयव्वं ।

दिट्ठी, नो मिच्छदिट्ठी। परित्तसंसारिए, नो अणंतसंसारिए। सुलभबोहिए, नो दुल्लभबोहिए। आराहए, नो विराहए। चरिमे, नो अचरिमे° ॥

७३ से केणट्ठेण भते !
गोयमा ! सणकुमारे ण देविदे देवराया बहूण समणाण बहूण समणीण बहूण सावयाण बहूण सावियाण हियकामए सुहकामए पत्थकामए आणुकपिए निस्सेयसिए हिय-सुह-निस्सेसकामए। से तेणट्ठेण गोयमा ! सणकुमारे ण देविदे देवराया भवसिद्धिए[1], •नो अभवसिदिए। सम्मद्दिट्ठी, नो मिच्छदिट्ठी। परित्तससारिए, नो अणतससारिए। सुलभबोहिए, नो दुल्लभबोहिए। आराहए, नो विराहए। चरिमे°, नो अचरिमे ॥

७४ सणकुमारस्स ण भते ! देविदस्स देवरण्णो केवइय काल ठिती पण्णत्ता ?
गोयमा ! सत्त सागरोवमाणि ठिती पण्णत्ता ॥

७५ से ण भंते ! ताओ देवलोगाओ आउक्खएण[2] •भवक्खएण ठिइक्खएण अणतरं चय चइत्ता कहि गच्छिहिइ° ? कहिं उववज्जिहिइ ?
गोयमा ! महाविदेहे वासे सिज्झिहिति[3] •बुज्झिहिति मुच्चिहिति परिणिव्वाहिति सव्वदुक्खाण° अत करेहिति ॥

७६ सेव भते ! सेव भते ![4]

सगहणी-गाहा

छट्ठट्ठममासो, अद्धमासो वासाइ अट्ठ छम्मासा।
तीसग-कुरुदत्ताण, तव-भत्तपरिण्ण-परियाओ ॥१॥
उच्चत्त विमाणाण, पाउब्भव पेच्छणा य सलावे।
किच्च विवादुप्पत्ती, सणकुमारे य भवियत्त[5] ॥२॥

---

१ स० पा०—भवसिद्धिए जाव नो।
२ स० पा०—आउक्खएण जाव कहिं।
३. स० पा०—सिज्झिहिति जाव अत।
४ भ० १।५१।
५ भवियव्व (ता), अतोग्रे सर्वेष्वादर्शेषु 'मोया सम्मत्ता' इति पाठोस्ति, वृत्तिकृतापि व्याख्यातोसौ, किन्तु मोया-प्रकरण तामलि-तापसप्रकरणात् पूर्वमेव समाप्तम्, तेन नावश्यकोसौपाठ.।

बीओ उद्देसो

७७. तेण कालेण तेण समएण रायगिहे नाम नगरे होत्था जाव[1] परिसा पज्जुवासइ ।।

७८. तेण कालेण तेण समएण चमरे असुरिदे असुरराया चमरचचाए रायहाणीए, सभाए सुहम्माए, चमरसि सीहासणसि, चउसट्ठीए सामाणियसाहस्सीहि जाव[2] नट्टविहि उवदसेत्ता जामेव दिसि[3] पाउब्भूए तामेव दिसि पडिगए ।।

७९. भतेति ! भगव गोयमे समण भगव महावीर वंदइ नमसइ, वदित्ता नमसित्ता एव वयासी—अत्थि ण भते ! इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए अहे असुरकुमारा देवा परिवसति ?
गोयमा ! णो इणट्ठे समट्ठे ।

८० एव जाव[4] अहेसत्तमाए पुढवीए, सोहम्मस्स कप्पस्स अहे जाव[5] अत्थि ण भते ! ईसिप्पब्भाराए पुढवीए अहे असुरकुमारा देवा परिवसति ?
णो इणट्ठे समट्ठे ।।

८१. से कहि खाइ ण भते ! असुरकुमारा देवा परिवसति ?
गोयमा ! इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए असीतुत्तरजोयणसयसहस्सबाहल्लाए[6] एव असुरकुमारदेववत्तव्वया जाव[7] दिव्वाइ भोगभोगाइ भुजमाणा विहरति ।।

८२ अत्थि ण भते ! असुरकुमाराण देवाण अहे गतिविसए ?
हता अत्थि ।।

८३ केवतियण्ण[8] भते ! असुरकुमाराण देवाण अहे गतिविसए पण्णत्ते ?
गोयमा ? जाव अहेसत्तमाए पुढवीए । तच्च पुण पुढवि गया य गमिस्सति य ।।

८४ किंपत्तियण्ण[9] भते ! असुरकुमारा देवा तच्च पुढवि गया य गमिस्सति य ?
गोयमा ! पुव्ववेरियस्स वा वेदणउदीरणयाए, पुव्वसगतियस्स वा वेदणउवसामणयाए—एव खलु असुरकुमारा देवा तच्च पुढवि गया य गमिस्सति य ।।

८५ अत्थि ण भते ? असुरकुमाराण देवाण तिरिय गतिविसए पण्णत्ते ?
हता अत्थि ।।

८६. केवतियण्ण भते ! असुरकुमाराण देवाण तिरिय गतिविसए पण्णत्ते ?
गोयमा ! जाव असखेज्जा दीव-समुद्दा, नदिस्सरवर पुण दीव गया य गमिस्सति य ।।

८७. किपत्तियण्ण भते ! असुरकुमारा देवा नदिस्सरवर दीव गया य गमिस्सति य ?

---

१ ओ० सू० १९-५२ ।
२. राय० सू० ७-१२० ।
३. दिसं (ता, व, म, स) ।
४. अ० सू० २८७ ।
५ अ० सू० २८७ ।
६ असीउत्तर० (अ, व, म, स) ।
७. प० २ ।
८ केवतिय ण (स) ।
९. किंपत्तिय ण (अ, ता, ब, म) ।

गोयमा ! जे इमे अरहता भगवतो[1], एएसि ण जम्मणमहेसु वा, निक्खमणमहेसु वा, नाणुप्पायमहिमासु[2] वा, परिनिव्वाणमहिमासु वा—एव खलु असुरकुमारा देवा नदिस्सरवर दीव गया य गमिस्सति य ॥

८८ अत्थि ण भते असुरकुमाराण देवाण उड्ढ गतिविसिए ?
हता अत्थि ॥

८९. केवतियण्ण भते ! असुरकुमाराण देवाण उड्ढ गतिविसए ?
गोयमा ! 'जाव अच्चुतो'[3] कप्पो, सोहम्म पुण कप्प गया य गमिस्सति य ॥

९०. किपत्तियण्ण भते ! असुरकुमारा देवा सोहम्म कप्प गया य गमिस्सति य ?
गोयमा ! तेसि ण देवाण भवपच्चइए[4] वेराणुबधे, ते ण देवा विकुव्वेमाणा परियारेमाणा वा आयरक्खे देवे वित्तासेति[5] अहालहुसगाइ रयणाइ गहाय आया। एगतमत अवक्कमति ॥

९१. अत्थि ण भते ! तेसिं देवाण अहालहुसगाइ रयणाइ ?
हता अत्थि ॥

९२ से कहमिदाणि पकरेति ?
तओ से पच्छा काय पव्वहति ॥

९३ पभू ण भते ! असुरकुमारा देवा तत्थ गया चेव[6] समाणा ताहि अच्छराहिं सद्धि दिव्वाइ भोगभोगाइ भुजमाणा विहरित्तए ?
णो इणट्ठे समट्ठे । ते ण ततो पडिनियत्तति, ततो पडिनियत्तित्ता इहमागच्छति[7] । जइ ण ताओ अच्छराओ आढायति परियाणति, पभू ण ते असुरकुमारा देवा ताहिं अच्छराहि सद्धि दिव्वाइ भोगभोगाइ भुजमाणा विहरित्तए । अह ण ताओ अच्छराओ नो आढति,[8] नो परियाणति, नो ण पभू ते असुरकुमारा देवा ताहि अच्छराहिं सद्धि दिव्वाइ भोगभोगाइ भुजमाणा विहरित्तए । एव खलु गोयमा ! असुरकुमारा देवा सोहम्म कप्प गया य गमिस्सति य ॥

९४ केवइयकालस्स[9] ण भते ! असुरकुमारा देवा उड्ढ उप्पयति जाव सोहम्म कप्प गया य गमिस्सति य ?
गोयमा ! अणताहि 'ओसप्पिणीहिं, अणताहि उस्सप्पिणीहिं'[10] समतिक्कताहिं

---

१ भगवता (क, व, स) ।
२ नाणुप्पत्ति ० (क) ।
३ जावच्चुए (अ ता, व, म, स) ।
४ ०पच्चइय (अ, व, म, स) ।
५ तासेति २ (ता) ।
६. च्चेव (ता) ।
७ इह समागच्छति (अ, व) ।
८ आढायति (क, ता, म, स) ।
९. केवइकालस्स (अ, क, व, म, स) ।
१०. उस्सप्पिणीहिं अणताहि अवसप्पिणीहिं (अ, व, स) ।

अत्थि ण एस भावे लोयच्छेरयभूए समुप्पज्जइ, जं णं असुरकुमारा देवा उड्ढं उप्पयंति जाव सोहम्मो कप्पो ।।

९५ किं निस्साए ण भंते ! असुरकुमारा देवा उड्ढं उप्पयंति जाव सोहम्मो कप्पो ?
गोयमा ! से जहानामए इह सवरा[1] इ वा वब्बरा इ वा टंकणा[2] इ वा चुचुया[3] इ वा पल्हा[4] इ वा पुलिंदा इ वा एगं महं 'रण्णं वा'[5] गड्ढं वा दुग्गं वा दरिं वा विसमं वा पव्वयं वा नीसाए सुमहल्लमवि आसवलं वा हत्थिवलं वा जोहवलं वा धणुवलं वा आगलेंति, एवामेव असुरकुमारा वि देवा नण्णत्थ[6] अरहंते वा अरहंतचेतियाणि वा अणगारे वा भाविअप्पणो निस्साए उड्ढं उप्पयंति जाव सोहम्मो कप्पो ।।

९६ सव्वे वि ण भंते ! असुरकुमारा देवा उड्ढं उप्पयंति जाव सोहम्मो कप्पो ?
गोयमा ! णो इणट्ठे समट्ठे । महिड्ढिया ण असुरकुमारा देवा उड्ढं उप्पयंति जाव सोहम्मो कप्पो ।।

९७ एस वि य ण भंते ! चमरे असुरिंदे असुरराया उड्ढं उप्पइयपुव्वे जाव सोहम्मो कप्पो ?
हंता गोयमा ! एस वि य णं चमरे असुरिंदे असुरराया उड्ढं उप्पइयपुव्वे जाव सोहम्मो कप्पो ।।

९८. अहो ण भंते ! चमरे असुरिंदे असुरराया महिड्ढीए महज्जुईए[7] •जाव[8] महाणुभागे । चमरस्स ण भंते ! सा दिव्वा देविड्ढी दिव्वा देवज्जुती दिव्वे देवाणुभागे कहिं गते° ? कहिं अणुपविट्ठे ?
कूडागारसालादिट्ठंतो[9] भाणियव्वो[10] ।।

९९ चमरेण भंते ! असुरिंदेण असुररण्णा सा दिव्वा देविड्ढी •[11]दिव्वा देवज्जुती दिव्वे देवाणुभागे° किण्णा लद्धे ? पत्ते ? अभिसमण्णागए ?

१००. एवं खलु गोयमा ! तेणं कालेणं तेणं समएणं इहेव जंबुद्दीवे दीवे भारहे वासे विंझगिरिपायमूले बेभेले नामं सण्णिवेसे होत्था—वण्णओ[12] ।।

---

१ सव्वरा (अ, व) ।
२. ढकरणा (क) ।
३. भुभुया (अ), चूचुया (अ), (क, व), भुत्तुया (स) ।
४. पण्हाया (अ), पण्हवा (क, ता); पण्हा (व, स) ।
५. × (अ, क, व, म) ।
६. × (अ, ता, व) ।
७ स० पा०—महज्जुईए जाव कहिं ।
८ भ० ३।४ ।
९. ° सालदिट्ठंतो (क, ता, व, म) ।
१०. भ० ३।२९ ।
११. स० पा०—तं चेव ।
१२. ओ० सू० १; एतद्वर्णन 'नंदणवण-सन्निभप्पगासे' एतावदेव ग्राह्यम् ।

१०१. तत्थ णं वेभेले सण्णिवेसे पूरणे नाम गाहावई परिवसइ—अड्ढे दित्ते[1] •जाव[2] वहुजणस्स अपरिभूए या वि होत्था ॥

१०२ तए ण तस्स पूरणस्स गाहावइस्स अण्णया कयाइ पुव्वरत्तावरत्तकालसमयसि कुटुवजागरिय जागरमाणस्स इमेयारूवे अज्झत्थिए चितिए पत्थिए मणोगए सकप्पे समुप्पज्जित्था—अत्थि ता मे पुरा पोराणाण सुचिण्णाण सुपरक्कताण सुभाण कल्लाणाण कडाण कम्माण कल्लाणफलवित्तिविसेसे, जेणाह हिरण्णेण वड्ढामि, सुवण्णेण वड्ढामि, धणेण वड्ढामि, धण्णेण वड्ढामि, पुत्तेहिं वड्ढामि, पसूहि वड्ढामि, विपुलधण-कणग-रयण-मणि-मोत्तिय-सख-सिल-प्पवाल-रत्तरयण-सतसारसावएज्जेण अतीव-अतीव अभिवड्ढामि, त कि ण अह पुरा पोराणाण सुचिण्णाण जाव कडाण कम्माण एगतसो खय उवेहमाणे विहरामि ?

त जावताव अह हिरण्णेण वड्ढामि जाव अतीव-अतीव अभिवड्ढामि, जाव च मे मित्त-नाति-नियग-सयण-सबधि-परियणो आढाति परियाणाइ सक्कारेइ सम्माणेइ कल्लाण मगल देवय विणएण चेइय पज्जुवासइ, तावता मे सेय कल्ल पाउप्पभायाए रयणीए जाव[3] उट्ठियम्मि सूरे सहस्सरस्सिम्मि दिणयरे तेयसा जलते सयमेव चउप्पुडय दारुमय पडिग्गहग करेत्ता, विउल असण-पाण-खाइम-साइम उवक्खडावेत्ता, मित्त-नाइ-नियग-सयण-सबधि-परियण आमतेत्ता, त मित्त-नाइ-नियग-सयण-सबधि-परियण विउलेण असण-पाण-खाइम-साइमेण, वत्थ-गध-मल्लालकारेण य सक्कारेत्ता सम्माणेत्ता, तस्सेव मित्त-नाइ-नियग-सयण-सबधि-परियणस्स पुरओ जेट्ठपुत्त कुटुबे ठावेत्ता, त मित्त-नाइ-नियग-सयण-सबधि-परियण जेट्ठपुत्त च आपुच्छित्ता०, सयमेव चउप्पुडय दारुमय पडिग्गहग गहाय मुडे भवित्ता दाणामाए पव्वज्जाए पव्वइत्तए। पव्वइए वि य ण समाणे[4] •इम एयारूव अभिग्गह अभिगिण्हिस्सामि—कप्पइ मे जावज्जीवाए छट्ठछट्ठेण अणिक्खित्तेण तवोकम्मेण उड्ढ बाहाओ पगिज्झिय-पगिज्झिय सूराभिमुहस्स आयावणभूमीए आयावेमाणस्स विहरित्तए, छट्ठस्स वि य ण पारणसि० आयावणभूमीओ पच्चोरुभित्ता सयमेव चउप्पुडय दारुमय पडिग्गहग गहाय वेभेले सण्णिवेसे उच्च-नीय-मज्झिमाइ कुलाइ घरसमुदाणस्स भिक्खा-यरियाए अडित्ता ज मे पढमे पुडए पडइ, कप्पइ मे त पथे पहियाण दलइत्तए।

---

१. स० पा०—जहा तामलिस्स वत्तव्वया तहा नेतव्वा, नवर चउप्पुडय दारुमय पडिग्गहय करेत्ता जाव विउल असणपाणखाइमसाइम जाव सयमेव।

२. भ० २।६४।

३. भ० २।६६।

४ स० पा०—त चेव जाव आयावण०।

'ज मे' दोच्चे पुडए पडइ, कप्पइ मे त काग-सुणयाण[1] दलइत्तए। 'ज मे'[2] तच्चे पुडए पडइ, कप्पइ मे त मच्छ-कच्छभाण दलइत्तए। ज मे चउत्थे पुडए पडइ, कप्पइ मे त अप्पणा आहार आहारेत्तए—त्ति कट्टु एवं सपेहेइ, सपेहेत्ता कल्ल पाउप्पभायाए रयणीए त चेव निरवसेसं जाव जं से चउत्थे पुडए पडइ, तं अप्पणा आहार आहारेइ ॥

१०३ तए ण से पूरणे वालतवस्सी तेण ओरालेणं विउलेण पयत्तेण पग्गहिएण वालतवोकम्मेण[3] •सुक्के लुक्खे निम्मसे अट्ठि—चम्मावणद्धे किडिकिडियाभूए किसे धमणिसतए जाए यावि होत्था ॥

१०४. तए ण तस्स पूरणस्स वालतवस्सिस्स अण्णया कयाइ पुव्वरत्तावरत्तकालसमयसि अणिच्चजागरिय जागरमाणस्स इमेयारूवे अज्झत्थिए चिंतिए पत्थिए मणोगए सकप्पे समुप्पज्जित्था—एव खलु अहं इमेण ओरालेण विपुलेण पयत्तेण पग्गहिएण कल्लाणेण सिवेण धन्नेण मगल्लेण सस्सिरीएण उदग्गेण उदत्तेण उत्तमेण महाणुभागेण तवोकम्मेणं सुक्के लुक्खे जाव[4] धमणिसतए जाए, त अत्थि जा मे उट्ठाणे कम्मे वले वीरिए पुरिसक्कार-परक्कमे तावता मे सेय कल्ल पाउप्पभायाए रयणीए जाव[5] उट्ठियम्मि सूरे सहस्सरस्सिम्मि दिणयरे तेयसा जलते वेभेलस्स सण्णिवेसस्स दिट्ठाभट्ठे य पासडत्थे य गिहत्थे य पुव्वसगतिए य परियायसंगतिए य आपुच्छित्ता वेभेलस्स सण्णिवेसस्स मज्झमज्झेण निग्गच्छित्ता, पादुग-कुडिय-मादीय उवगरण चउप्पुडय दारुमय च पडिग्गहग एगते एडित्ता, वेभेलस्स सण्णिवेसस्स दाहिणपुरत्थिमे दिसीभागे अद्धनियत्तणिय-मडल आलिहित्ता संलेहणा-झूसणा-झूसियस्स भत्तपाणपडियाइक्खियस्स पाओवगयस्स काल अणवकखमाणस्स विहरित्तए त्ति कट्टु एव सपेहेइ, संपेहेत्ता कल्ल पाउप्पभायाए रयणीए जाव उट्ठियम्मि सूरे सहस्सरस्सिम्मि दिणयरे तेयसा जलते वेभेले सण्णिवेसे दिट्ठाभट्ठे य पासडत्थे य गिहत्थे य पुव्वसगतिए य परियायसंगतिए य आपुच्छइ, आपुच्छित्ता वेभेलस्स सण्णिवेसस्स मज्झमज्झेण निग्गच्छइ, निग्गच्छित्ता पादुग-कुडिय-मादीय उवगरण दारुमय च पडिग्गहग एगते एडेइ, एडेत्ता वेभेलस्स सण्णिवेसस्स दाहिणपुरत्थिमे दिसीभागे अद्धनियत्तणिय-मडल आलिहित्ता सलेहणा-झूसणाझूसिए भत्तपाणपडियाइक्खिए पाओवगमण निवण्णे ॥

१०५ तेणं कालेण तेण समएण अहं गोयमा! छउमत्थकालियाए एक्कारसवासपरियाए छट्ठछट्ठेण अणिक्खित्तेण तवोकम्मेण सजमेण तवसा अप्पाण भावेमाणे पुव्वाणु-

---

१. सुणकाण (क, ता), सुणगाण (म)।
२. जम्मे (ता)।
३. स० पा०—त चेव जाव वेभेलस्स।
४. भ० ३।३५।
५. भ० २।६६।

पुव्वि चरमाणे गामाणुगाम दूइज्जमाणे जेणेव सुसुमारपुरे नगरे जेणेव असोय-सडे[1] उज्जाणे जेणेव असोयवरपायवे जेणेव पुढवीसिलावट्टए तेणेव उवागच्छामि, उवागच्छित्ता असोगवरपायवस्स हेट्ठा पुढवीसिलावट्टयंसि अट्ठमभत्त पगिण्हामि,[2] दो वि पाए साहट्टु वग्घारियपाणी एगपोग्गलनिविट्ठदिट्ठी अणिमिसणयणे ईसिपब्भारगएण[3] काएणं, अहापणिहिएहि गत्तेहि, सव्विदिएहि गुत्तेहिं एगराइय महापडिम उवसपज्जेत्ता ण विहरामि ॥

१०६. तेण कालेण तेण समएण चमरचचा रायहाणी अणिदा अपुरोहिया या वि होत्था ॥

१०७. तए ण से पूरणे वालतवस्सी बहुपडिपूण्णाइ दुवालसवासाइ परियाग पाउणित्ता, मासियाए सलेहणाए अत्ताण भूसेत्ता, सट्ठि भत्ताइ अणसणाए छेदेत्ता, कालमासे काल किच्चा चमरचचाए रायहाणीए उववायसभाए जाव इदत्ताए उववण्णे ॥

१०८ तए ण से चमरे असुरिंदे असुरराया अहुणोववण्णे पचविहाए पज्जत्तीए पज्जत्ति-भाव[4] गच्छइ, [त जहा—आहारपज्जत्तीए जाव[5] भास-मणपज्जत्तीए[6]] ॥

१०९. तए ण से चमरे असुरिंदे असुरराया पचविहाए पज्जत्तीए पज्जत्तिभाव गए समाणे उड्ढ वीससाए ओहिणा आभोएइ जाव[7] सोहम्मो कप्पो, पासइ य तत्थ—

सक्क देविद देवराय, मघव पाकसासण ।
सयक्कतु[8] सहस्सक्ख, वज्जपाणिं पुरदर[9] ॥

•दाहिणड्ढलोगाहिवइ वत्तीसविमाणसयसहस्साहिवइ एरावणवाहण सुरिंदं अरयवरवत्थधर आलइयमालमउड नव-हेम-चारुचित्त-चचल-कुडल-विलिहिज्ज-माणगड भासुरवोदि पलववणमाल दिव्वेण वण्णेण जाव[10] दस दिसाओ उज्जोवेमाण पभासेमाण सोहम्मे कप्पे सोहम्मवडेसए विमाणे सभाए सुहम्माए सक्कसि सीहासणसि जाव[11] दिव्वाइ भोगभोगाइ भुजमाण पासइ, पासित्ता इमेयारूवे[12] अज्झत्थिए चिंतिए पत्थिए मणोगए सकप्पे समुप्पज्जित्था—केस ण एस अपत्थियपत्थए[13] दुरतपतलक्खणे हिरिसिरिपरिवज्जिए हीणपुण्णचाउद्दसे

---

१ असोयवणसडे (क, म, स) ।
२ परिगिण्हामि (स) ।
३. ईसिं० (क, स) ।
४ भ० ३।४३ ।
५ पज्जत्तभाव (व) ।
६ भ० ३।१७ ।
७. असौ कोष्ठकवर्ती पाठो व्याख्यात. प्रतीयते ।
८ सयक्कउ (क, ता) ।
९ स० पा०—पुरदर जाव दस ।
१०. उवा० २।४० ।
११ उवा० २।४०, भ० ३।१६ ।
१२. इमे एया० (क, ब) ।
१३. ०पत्थिए (व, म, स) ।

जं णं मम इमाए एयारूवाए दिव्वाए देविड्ढीए[1] •दिव्वाए देवज्जुतीए॰ 'दिव्वे देवाणुभावे लद्धे पत्ते अभिसमण्णागए'[2] उप्पिं अप्पुस्सुए दिव्वाइं भोगभोगाइं भुंजमाणे विहरइ—एवं संपेहेइ, संपेहेत्ता सामाणियपरिसोववण्णए देवे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी—केस णं एस देवाणुप्पिया! अपत्थियपत्थए जाव दिव्वाइं भोगभोगाइं भुंजमाणे विहरइ?

११०. तए णं ते सामाणियपरिसोववण्णगा देवा चमरेणं असुरिंदेणं असुररण्णा एवं वुत्ता समाणा हट्ठतुट्ठ[3]•चित्तमाणंदिया णंदिया पीइमणा परमसोमणस्सिया हरिसवस-विसप्पमाण॰हियया करयलपरिग्गहियं दसनहं सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं कट्टु जएणं विजएणं वद्धावेंति, वद्धावेत्ता एवं वयासी—एस णं देवाणुप्पिया! सक्के देविंदे देवराया जाव[4] दिव्वाइं भोगभोगाइं भुंजमाणे विहरइ॥

१११. तए णं से चमरे असुरिंदे असुरराया तेसिं सामाणियपरिसोववण्णगाणं देवाणं अंतिए एयमट्ठं सोच्चा निसम्म आसुरुत्ते[5] रुट्ठे कुविए चंडिक्किए मिसिमिसेमाणे ते सामाणियपरिसोववण्णगे देवे एवं वयासी—अण्णे खलु भो! से सक्के देविंदे देवराया, अण्णे खलु भो! से चमरे असुरिंदे असुरराया, महिड्ढीए खलु भो! से सक्के देविंदे देवराया, अप्पिड्ढीए खलु भो! से चमरे असुरिंदे असुरराया, तं इच्छामि णं देवाणुप्पिया! सक्कं देविंदं देवरायं सयमेव अच्चासाइत्तए[6] त्ति कट्टु उसिणे उसिणब्भूए जाए यावि होत्था॥

११२. तए णं से चमरे असुरिंदे असुरराया ओहिं पउंजइ[7], पउंजित्ता ममं ओहिणा आभोएइ[8], आभोएत्ता[9] इमेयारूवे अज्झत्थिए[10]•चिंतिए पत्थिए मणोगए संकप्पे॰समुप्पज्जित्था—एवं खलु समणे भगवं महावीरे जंबूदीवे दीवे भारहे वासे सुसुमारपुरे[11] नयरे असोगसंडे[12] उज्जाणे असोगवरपायवस्स अहे पुढविसिलावट्टयंसि अट्ठमभत्तं परिगिण्हित्ता एगराइयं महापडिमं उवसंपज्जित्ता णं विहरंति, तं सेयं खलु मे समणं भगवं महावीरं णीसाए सक्कं देविंदं देवरायं सयमेव अच्चासाइत्तए त्ति कट्टु एवं संपेहेइ, संपेहेत्ता सयणिज्जाओ[13] अब्भुट्ठेइ, अब्भुट्ठेत्ता देवदूसं परिहेइ, परिहेत्ता जेणेव सभा सुहम्मा जेणेव चोप्पाले पहरणकोसे

---

१. सं॰ पा॰—देवड्ढीए जाव दिव्वे।
२. एतान्यपि अत्र सप्तम्यन्तानि पदानि विद्यन्ते।
३. सं॰ पा॰—हट्ठतुट्ठ जाव हियया।
४. भ॰ ३।१०९।
५. आसुरत्ते (अ, व)।
६. अच्चासादेत्तए (अ, ता, व, म)।
७. पयुंजइ (ता)।
८. आलोएइ (व)।
९. अतोग्रे 'तस्स' इति पदमध्याहार्यम्।
१०. सं॰ पा॰—अज्झत्थिए जाव समुप्पज्जित्था।
११. सुसमारपुरे (स)।
१२. ॰ वणसंडे (अ, क, ता, व, म, स)।
१३. सत्तणिज्जाओ (ता)।

तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता फलिहरयण परामुसइ, एगे अबीए[1] फलिहरयणमायाए महया अमरिस वहमाणे चमरचचाए रायहाणीए मज्झमज्झेण-णिग्गच्छइ, णिगच्छित्ता जेणेव तिगिंछिकूडे[2] उप्पायपव्वए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता वेउव्वियसमुग्घाएण समोहण्णइ, समोहणित्ता जाव[3] उत्तरवेउव्विय[4] रूव विकुव्वइ, विकुव्वित्ता ताए उक्किट्ठाए तुरियाए चवलाए चडाए जइणाए छेयाए सीहाए सिग्घाए उद्धयाए दिव्वाए देवगईए तिरिय असखेज्जाण दीव-समुद्दाण मज्झमज्झेण वीईवयमाणे-वीईवयमाणे जेणेव जबुद्दीवे दीवे जेणेव भारहे वासे जेणेव सुसुमारपुरे नगरे जेणेव असोयसडे उज्जाणे जेणेव असोयवरपायवे जेणेव पुढविसिलावट्टए जेणेव मम अतिए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता मम तिक्खुत्तो आयाहिण-पयाहिण करेइ[5], •करेत्ता वदइ, नमसइ, वदित्ता॰ नमसित्ता एवं वयासी—इच्छामि ण भते ! तुब्भ नीसाए सक्क देविद देवराय सयमेव अच्चासाइत्तए त्ति कट्टु उत्तरपुरत्थिमं दिसीभाग अवक्कमेइ, अवक्कमेत्ता वेउव्वियसमुग्घाएण समोहण्णति, समोहणित्ता जाव[6] दोच्चं पि वेउव्वियसमुग्घाएण समोहण्णइ[7] एग मह घोरं घोरागार भीम भीमागार भासुर[8] भयाणीय गभीर उत्तासणय कालड्ढरत्त-मासरासिसकास[9] जोयणसययसाहस्सीय[10] महाबोदि विउव्वइ, विउव्वित्ता अप्फोडेइ[11] वग्गइ[12] गज्जइ, हयहेसिय करेइ, हत्थिगुलगुलाइय करेइ, रहघणघणाइय करेइ, पायदद्दरग करेइ, भूमिचवेडय दलयइ, सीहणाद नदइ, उच्छोलेइ पच्छोलेइ, तिवर्ति[13] छिदइ, वाम भुय ऊसवेइ, दाहिणहत्थपदेसिणीए अगुट्ठणहेण य वितिरिच्छ मुह विडवेइ, महया-महया सद्देण कलकलरव करेइ एगे अबीए[14] फलिहरयणमायाए उड्ढ वेहास उप्पइए—खोभते चेव[15] अहेलोय कपेमाणे व[16] मेइणीतल[17] साकड्ढते[18] व तिरियलोय, फोडेमाणे व अबरतल,

---

१. अवितिए (क, ता) ।
२. तिगिच्छि (ता, म), तिगिच्छ (व) ।
३ राय॰ सू॰ १० ।
४. ॰वेउव्वियरूव (म) ।
५ स॰ पा॰—करेइ जाव नमसित्ता ।
६ राय॰ सू॰ १० ।
७. समोहणइ (अ, स) ।
८ भामर (क, ता) ।
९. भासरासि ॰ (अ) ।
१०. जोतण ॰ (ता) ।
११ वहुलासु प्रतिपु क्रियानन्तर सर्वत्र क्त्वा-प्रत्ययस्स प्रयोगा दृश्यन्ते, यथा—अप्फोडेइ, अप्फोडेत्ता ।
१२ × (क, ता, व, म) ।
१३. तिपर्ति (ता) ।
१४ अव्वितिए (क, ता, ब) ।
१५ च्चेव (ता) ।
१६ तिव (ता), वा (ब, म) ।
१७. मेयणि॰ (अ); मेतिणी॰ (क, म); मेदिणी॰ (ता) ।
१८. आकड्ढते (अ, म, स), आसाकड्ढते (ब) ।

कत्थइ गज्जते, कत्थइ विज्जुयायते, कत्थइ वास वासमाणे[1], कत्थइ रयुग्घाय पकरेमाणे, कत्थइ तमुक्काय पकरेमाणे, वाणमतरे देवे वित्तासेमाणे-वित्तासेमाणे[2], जोइसिए देवे दुहा विभयमाणे-विभयमाणे, आयरक्खे देवे विपलायमाणे-विपलायमाणे[3], फलिहरयण अवरतलसि वियट्टमाणे-वियट्टमाणे, विउब्भाएमाणे-विउब्भाएमाणे[4] ताए उक्किट्ठाए[5] •तुरियाए चवलाए चडाए जइणाए छेयाए सीहाए सिग्घाए उद्धयाए दिव्वाए देवगईए° तिरियमसखेज्जाण दीव-समुद्दाण मज्झमज्झेणं वीईवयमाणे-वीईवयमाणे जेणेव सोहम्मे कप्पे, जेणेव सोहम्मवडेसए विमाणे, जेणेव सभा सुहम्मा तेणेव उवागच्छइ, एग पाय पउमवरवेइयाए करेइ, एग पाय सभाए सुहम्माए करेइ, फलिहरयणेण महया-महया सद्देण तिक्खुत्तो इदकील आउडेइ, आउडेत्ता एव वयासी—कहि ण भो[6] ! सक्के देविंदे देवराया ? कहि ण ताओ चउरासीइसामाणियसाहस्सीओ[7] ? •कहि ण ते तायत्तीसयतावत्तीसगा ? कहि ण ते चत्तारि लोगपाला ? कहि ण ताओ अट्ठ अग्गमहिसीओ सपरिवाराओ ? कहि ण ताओ तिण्णि परिसाओ ? कहि ण ते सत्त अणिया ? कहि ण ते सत्त अणियाहिवई ?° कहि ण ताओ चत्तारि चउरासीईओ आयरक्खदेवसाहस्सीओ ? कहि ण ताओ अणेगाओ अच्छराकोडीओ ? अज्ज हणामि, अज्ज महेमि, अज्ज वहेमि, अज्ज मम अवसाओ अच्छराओ वसमुवणमतु त्ति कट्टु त अणिट्ठ अकत अप्पिय असुभ अमणुण्ण अमणाम फरुस गिर निसिरइ ।

११३. तए ण से सक्के देविदे देवराया त अणिट्ठ[8] •अकत अप्पिय असुभ अमणुण्ण° अमणाम अस्सुयपुव्व फरुसं गिर सोच्चा निसम्म आसुरुत्ते[9] •रुट्ठे कुविए चडिक्किए° मिसिमिसेमाणे तिवलिय भिउडि निडाले साहट्टु चमर असुरिंद असुरराय एवं वदासि—हं भो ! चमरा ! असुरिदा ! असुरराया ! अपत्थियपत्थया[10] ! •दुरतपतलक्खणा ! हिरिसिरिपरिवज्जिया !° हीणपुण्णचाउद्दसा ! अज्ज न भवसि, नाहि[11] ते सुहमत्थीति कट्टु तत्थेव सीहासणवरगए वज्ज परामुसइ, परामुसित्ता त जलतं फुडत तडतडत[12] उक्कासहस्साइ विणि-

१. वासेमाणे (अ, क) ।
२. वित्तासमाणे (अ) ।
३. विपलासमाणे (अ) ।
४. विउब्भासेमाणे (ता) ।
५. स० पा०—उक्किट्ठाए जाव तिरिय० ।
६. से (क) ।
७. स० पा०—°सामाणियसाहस्सीओ जाव कहि ।
८. स० पा०—अणिट्ठं जाव अमणाम ।
९ स० पा०—आसुरुत्ते जाव मिसिमिसेमाणे ।
१० स० पा०—अपत्थियपत्थया जाव हीणपुण्ण°
११. नहि (व) ।
१२. तडवडत (ता), तडातडत (व) ।

म्मुयमाण-विणिम्मुयमाण, जालासहस्साइ पमुचमाण-पमुचमाण, इगालसहस्साइ पविक्खिरमाण-पविक्खिरमाण, फुलिगजालामालासहस्सेहि चक्खुविक्खेवदिट्ठिपडिघात पि पकरेमाण हुयवहअइरेगतेयदिप्पत जइणवेगं फुल्लकिसुयसमाण महब्भय भयकर चमरस्स असुरिदस्स असुरण्णो वहाए वज्ज निसिरइ ॥

११४. तए ण से चमरे असुरिंदे असुरराया त जलत जाव[1] भयकर वज्जमभिमुह आवयमाण पासइ, पासित्ता झियाइ पिहाइ, पिहाइ झियाइ, झियायित्ता पिहाइत्ता तहेव सभग्गमउडविडवे[2] सालबहत्थाभरणे उड्ढपाए अहोसिरे कक्खागयसेय पिव विणिम्मुयमाणे-विणिम्मुयमाणे ताए उक्किट्ठाए जाव[3] तिरियमसखेज्जाण दीव-समुद्दाण मज्झमज्झेण वीईवयमाणे-वीईवयमाणे जेणेव जबूदीवे दीवे जाव[4] जेणेव असोगवरपायवे जेणेव मम अतिए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता भीए भयगग्गरसरे 'भगव सरण' इति वुयमाणे मम दोण्ह वि पायाणं अतरसि झत्ति वेगेण समोवडिए[5] ॥

११५. तए ण तस्स सक्कस्स देविदस्स देवरण्णो इमेयारूवे अज्झत्थिए[6] •चितिए पत्थिए मणोगए सकप्पे० समुप्पज्जित्था—नो खलु पभू चमरे असुरिदे असुरराया, नों खलु समत्थे चमरे असुरिंदे असुरराया, नो खलु विसए चमरस्स असुरिंदस्स असुररण्णो अप्पणो निस्साए उड्ढ उप्पइत्ता जाव सोहम्मो कप्पो, नण्णत्थ अरहते[7] वा, अरहतचेइयाणि वा, अणगारे वा भाविअप्पाणो नीसाए उड्ढ उप्पयइ जाव सोहम्मो कप्पो, त महादुक्ख खलु तहारूवाण अरहताण भगवताण अणगाराण य अच्चासायणाए त्ति कट्टु ओहिं पउजइ, मम ओहिणा आभोएइ, आभोएत्ता हा ! हा ! अहो ! हतो अहमसि त्ति कट्टु ताए उक्किट्ठाए जाव[8] दिव्वाए देवगईए वज्जस्स वीहिं अणुगच्छमाणे-अणुगच्छमाणे तिरियमसखेज्जाण दीव-समुद्दाण मज्झमज्झेण जाव[9] जेणेव असोगवरपायवे, जेणेव मम अतिए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता मम चउरगुलमसपत्त वज्ज पडिसाहरइ, अवि याइ मे गोयमा ! मुट्ठिवाएण केसग्गे वीइत्था ॥

११६. तए ण से सक्के देविंदे देवराया वज्ज पडिसाहरित्ता मम तिक्खुत्तो आयाहिण-पयाहिण करेइ, करेत्ता वदइ नमसइ, वदित्ता नमसित्ता एव वयासि—एव खलु भते ! अह तुब्भ नीसाए चमरेण असुरिंदेण असुररण्णा सयमेव अच्चासाइए । तए ण मए परिकुविएण समाणेण चमरस्स असुरिंदस्स असुररण्णो वहाए

---

१. भ० ३।११२ ।
२. ०विडए (अ, क), ०पिडए (ब) ।
३. भ० ३।११२ ।
४. भ० ३।११२ ।
५. समोवइए (ता) ।
६. स० पा०—अज्झत्थिए जाव समुप्पज्जित्था ।
७ अरहत (क), अरहता (ता) ।
८. भ० ३।११२ ।
९. भ० ३।११२ ।

वज्जे निसट्ठे[1]। तए ण मम इमेयारूवे अज्झत्थिए •चितिए पत्थिए मणोगए सकप्पे॰समुप्पज्जित्था—नो खलु पभू चमरे असुरिंदे असुरराया[2], •नो खलु समत्थे चमरे असुरिंदे असुरराया, नो खलु विसए चमरस्स असुरिंदस्स असुररण्णो अप्पणो निस्साए उड्ढ उप्पइत्ता जाव सोहम्मो कप्पो, नण्णत्थ अरहते वा, अरहतचेइयाणि वा, अणगारे वा भाविअप्पाणो नीसाए उड्ढ उप्पयइ जाव सोहम्मो कप्पो, त महादुक्ख खलु तहारूवाण अरहताण भगवताण अणगाराण य अच्चासायणाए त्ति कट्टु॰ ओहि पउजामि, देवाणुप्पिए ओहिणा आभोएमि, आभोएत्ता हा! हा! अहो! हतो अहमसि त्ति कट्टु ताए उक्किट्ठाए जाव[4] जेणेव देवाणुप्पिए तेणेव उवागच्छामि, देवाणुप्पियाण चउरगुलमसपत्त वज्ज पडिसाहरामि, वज्जपडिसाहरणट्ठयाए ण इहमागए इह समोसढे इह सपत्ते इहेव अज्ज उवसपज्जित्ता ण विहरामि। त खामेमि ण देवाणुप्पिया! खमतु ण देवाणुप्पिया! खतुमरिहति[5] ण देवाणुप्पिया! नाइ[6] भुज्जो एव करणयाए[7] त्ति कट्टु मम वदइ नमसइ, वदित्ता नमसित्ता उत्तरपुरत्थिम दिसीभाग अवक्कमइ, वामेण पादेण तिक्खुत्तो भूमि विदलेइ[8], विदलेत्ता चमर असुरिंद असुरराय एव वदासि—मुक्को सि ण भो चमरा! असुरिंदा! असुरराया! समणस्स भगवओ महावीरस्स पभावेण—नाहि[9] ते[10] दाणि[11] ममातो[12] भयमत्थि त्ति कट्टु जामेव दिसि पाउब्भूए तामेव दिसि[13] पडिगए॥

११७. भतेति! भगव गोयमे समण भगव महावीर वदइ, नमसइ, वदित्ता नमसित्ता एव वदासी—देवे ण भते! महिड्ढीए जाव[14] महाणुभागे पुव्वामेव पोग्गल खिवित्ता पभू तमेव अणुपरियट्टित्ता ण गेण्हित्तए?

हता पभू॥

११८ से केणट्ठेण[15] •भते! एव वुच्चइ—देवे ण महिड्ढीए जाव[16] महाणुभागे पुव्वामेव पोग्गल खिवित्ता पभू तमेव अणुपरियट्टित्ता ण॰ गेण्हित्तए?

गोयमा! पोग्गले ण खित्ते[17] समाणे पुव्वामेव सिग्घगई[18] भवित्ता ततो पच्छा

---

१ निसिट्ठे (अ, स)।
२. स॰ पा॰—अज्झत्थिए जाव समुप्पजित्था।
३. स॰ पा॰—तहेव जाव ओहिं।
४. भ॰ ३।११५।
५. ॰मरुहतु (अ, स)।
६. नाइ (ता, व)।
७ पकरणयाए (वृ, स)।
८. दालेइ (अ, क, व, स), दलइ (म)।
९. णाहि (अ, क, ता), नहि (व)।
१०. भे (व)।
११. इदाणिं (क, म)।
१२. ममतो (अ, क)।
१३. दिस (ता, व, म)।
१४ भ॰ ३।४।
१५ स॰ पा॰—केणट्ठेण जाव गेण्हित्तए।
१६ भ॰ ३।४।
१७ खित्ते ण (अ), विखित्ते (स)।
१८ सिग्घागई (व)।

मदगती भवति, देवे ण महिड्ढीए जाव महाणुभागे पुव्वि पि पच्छा वि सीहे सीहगती चेव तुरिए तुरियगती चेव । से तेणट्ठेण जाव पभू गेण्हित्तए ।।

११६. जइ ण भते ! देवे[1] महिड्ढीए जाव[2] पभू तमेव अणुपरियट्टित्ता ण गेण्हित्तए, कम्हा ण भते ! 'सक्केण देविदेण देवरण्णा'[3] चमरे असुरिदे असुरराया नो सचाइए[4] साहत्थि गेण्हित्तए ?

गोयमा ! असुरकुमाराण देवाण अहे गइविसए 'सीहे-सीहे'[5] चेव तुरिए-तुरिए चेव, उड्ढ गइविसए अप्पे-अप्पे चेव मदे-मदे चेव । वेमाणियाण देवाण उड्ढ गइविसए सीहे-सीहे चेव । तुरिए-तुरिए चेव, अहे गइविसए अप्पे-अप्पे चेव मदे-मदे चेव ।

जावतिय खेत्त सक्के देविदे देवराया उड्ढ उप्पयइ एक्केण समएण, त वज्जे दोहिं, ज वज्जे दोहि, त चमरे तिहि । सव्वत्थोवे सक्कस्स देविदस्स देवरण्णो उड्ढलोयकडए, अहेलोयकडए[6] सखेज्जगुणे ।

जावतिय खेत्त चमरे असुरिदे असुरराया अहे ओवयइ एक्केण समएण, त सक्के दोहि, ज सक्के दोहि, त वज्जे तीहि । सव्वत्थोवे चमरस्स असुरिदस्स असुररण्णो अहेलोयकडए, उड्ढलोयकडए सखेज्जगुणे ।

एव खलु गोयमा ! सक्केण देविदेण देवरण्णा चमरे असुरिदे असुरराया नो सचाइए साहत्थि गेण्हित्तए ।।

१२०. सक्कस्स ण भते ! देविदस्स देवरण्णो उड्ढ अहे तिरिय च गइविसयस्स कयरे कयरेहितो अप्पे वा ? बहुए वा ? तुल्ले वा ? विसेसाहिए वा ?

गोयमा ! सव्वत्थोव खेत्त सक्के देविदे देवराया अहे ओवयइ एक्केण समएण तिरिय सखेज्जे भागे गच्छइ, उड्ढ सखेज्जे भागे गच्छइ ।।

१२१ चमरस्स ण भते ! असुरिदस्स असुररण्णो उड्ढ अहे तिरियं च गइविसयस्स कयरे कयरेहितो अप्पे वा ? बहुए वा ? तुल्ले वा ? विसेसाहिए वा ?

गोयमा ! सव्वत्थोव खेत्त चमरे असुरिदे असुरराया उड्ढ उप्पयइ एक्केण समएण, तिरिय सखेज्जे भागे गच्छइ, अहे सखेज्जे भागे गच्छइ ।।

१२२. [7]°वज्जस्स ण भते ! उड्ढ अहे तिरिय च गइविसयस्स कयरे कयरेहितो अप्पे वा ? बहुए वा ? तुल्ले वा ? विसेसाहिए वा ?

गोयमा ! सव्वत्थोव खेत्त वज्जे अहे ओवयइ एक्केण समएण, तिरिय विसेसाहिए भागे गच्छइ, उड्ढ विसेसाहिए भागे गच्छइ°।।

---

१ देविंदे (अ, ता, ब, स) ।

२ भ० ३।११८ ।

३. सक्के देविंदे देवराया (स) ।

४ सचाइति (अ), सचाएति(स) ।

५. सिग्घे-सिग्घे (अ, स) ।

६ अहो० (अ, ब) ।

७ स० पा०—वज्ज जहा सक्कस्स तहेव नवर विसेसाहिय कायव्व ।

१२३. सक्कस्स णं भंते ! देविंदस्स देवरण्णो ओवयणकालस्स य, उप्पयणकालस्स य कयरे कयरेहिंतो अप्पे वा ? बहुए वा ? तुल्ले वा ? विसेसाहिए वा ?
गोयमा ! सव्वत्थोवे सक्कस्स देविंदस्स देवरण्णो उप्पयणकाले, ओवयणकाले संखेज्जगुणे ॥

१२४. चमरस्स वि जहा सक्कस्स, नवरं—सव्वत्थोवे ओवयणकाले, उप्पयणकाले संखेज्जगुणे ॥

१२५. वज्जस्स पुच्छा।
गोयमा ! सव्वत्थोवे उप्पयणकाले, ओवयणकाले विसेसाहिए ॥

१२६. एयस्स णं भंते ! वज्जस्स, वज्जाहिवइस्स, चमरस्स य असुरिंदस्स असुररण्णो ओवयणकालस्स य, उप्पयणकालस्स य कयरे कयरेहिंतो अप्पे वा ? बहुए वा ? तुल्ले वा ? विसेसाहिए वा ?
गोयमा ! सक्कस्स य उप्पयणकाले, चमरस्स य ओवयणकाले—एए णं दोण्णि[1] वि तुल्ला सव्वत्थोवा। सक्कस्स य ओवयणकाले, वज्जस्स य उप्पयणकाले—एस णं दोण्ह वि तुल्ले संखेज्जगुणे। चमरस्स य उप्पयणकाले, वज्जस्स य ओवयणकाले—एस णं दोण्ह वि तुल्ले विसेसाहिए ॥

१२७. तए णं से चमरे असुरिंदे असुरराया वज्जभयविप्पमुक्के, सक्केणं देविंदेणं देवरण्णा महया अवमाणेणं अवमाणिए समाणे चमरचंचाए रायहाणीए सभाए सुहम्माए चमरंसि सीहासणंसि ओहयमणसंकप्पे चिंतासोयसागरसंपविट्ठे करयलपल्हत्थमुहे अट्टज्झाणोवगए भूमिगयदिट्ठीए झियाति ॥

१२८. तए णं चमरं असुरिंदं असुररायं सामाणियपरिसोववण्णया देवा ओहयमणसंकप्पं जाव[2] झियायमाणं पासंति, पासित्ता करयलपरिग्गहियं दसनहं सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं कट्टु जएणं विजएणं वद्धावेंति, वद्धावेत्ता एवं वयासी—किं णं देवाणुप्पिया ! ओहयमणसंकप्पा चिंतासोयसागरसंपविट्ठा करयलपल्हत्थमुहा अट्टज्झाणोवगया भूमिगयदिट्ठीया झियायह ?

१२९. तए णं से चमरे असुरिंदे असुरराया ते सामाणियपरिसोववण्णए देवे एवं वयासी—एवं खलु देवाणुप्पिया ! मए समणं भगवं महावीरं नीसाए सक्के देविंदे देवराया सयमेव अच्चासाइए। तए णं तेणं परिकुविएणं समाणेणं ममं वहाए वज्जे निसट्ठे[3]। तं भद्दण्णं[4] भवतु देवाणुप्पिया ! समणस्स भगवओ महावीरस्स जस्सम्हि[5] पभावेणं अकिट्ठे अव्वहिए अपरिताविए इहमागए इहं समोसढे

---

१. विण्णि (ता, म)।
२. भ० ३।१२७।
३. निसिट्ठे (अ, स)।
४. भद्दं णं (अ, स)।
५. जस्संसि (ता)।

इह सपत्ते इहेव अज्ज उवसपिज्जत्ता णं विहरामि । त गच्छामो ण देवाणुप्पिया ! समण भगव महावीर वदामो नमंसामो जाव[1] पज्जुवासामो त्ति कट्टु चउसट्ठीए सामाणियसाहस्सीहि जाव[2] सव्विड्ढीए जाव[3] जेणेव असोगवरपायवे, जेणेव मम अतिए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता मम तिक्खुत्तो आयाहिण-पयाहिण[4] •करेत्ता वदेता° नमसित्ता एव वयासि-एव खलु भते ! मए तुब्भ नीसाए सक्के देविदे देवराया सयमेव अच्चासाइए[5] । •तए ण तेण परिकुविएण समाणेण मम वहाए वज्जे निसट्ठे° । त भद्दण्ण भवतु देवाणुप्पियाण जस्सम्हि पभावेण अकिट्ठे[6] •अव्वहिए अपरिताविए इहमागए इह समोसढे इह संपत्ते इह अज्ज उवसपज्जित्ता ण° विहरामि । त खामेमि ण देवाणुप्पिया[7] ! • खमतु ण देवाणुप्पिया ! खतुमरिहति ण देवाणुप्पिया ! नाइ भुज्जो एव करणयाए त्ति कट्टु मम वदइ नमसइ, वदित्ता नमसित्ता° उत्तरपुरत्थिम दिसीभाग अवक्कमइ, अवक्कमित्ता जाव[8] बत्तीसइबद्ध[9] नट्टविहि उवदसेइ, उवदसेत्ता जामेव दिसि पाउब्भूए तामेव दिसि पडिगए ।।

१३०. एव खलु गोयमा ! चमरेण असुरिदेण असुररण्णा सा दिव्वा देविड्ढी[10] •दिव्वा देवज्जुती दिव्वे देवाणुभागे लद्धे पत्ते° अभिसमण्णागए । ठिई सागरोवम महाविदेहे वासे सिज्झिहिइ जाव[11] अत काहिइ ।।

१३१ किपत्तिय ण भते ! असुरकुमारा देवा उड्ढ उप्पयति जाव सोहम्मो कप्पो ? गोयमा ! तेसि ण देवाण अहुणोववण्णाण[12] वा चरिमभवत्थाण वा इमेयारूवे अज्झत्थिए[13] •चिंतिए पत्थिए मणोगए सकप्पे° समुप्पज्जइ—अहो ! ण अम्हेहिं दिव्वा देविड्ढी जाव[14] अभिसमण्णागए, जारिसिया ण अम्हेहि दिव्वा देविड्ढी जाव अभिसमण्णागए, तारिसिया ण सक्केण देविदेण देवरण्णा दिव्वा देविड्ढी जाव अभिसमण्णागए । जारिसिया ण सक्केण देविदेण देवरण्णा जाव अभिसमण्णागए, तारिसिया ण अम्हेहि वि जाव अभिसमण्णागए । त गच्छामो ण सक्कस्स देविदस्स देवरण्णो अतिय पाउब्भवामो पासामो ताव सक्कस्स देविदस्स देवरण्णो दिव्व देविड्ढि जाव अभिसमण्णागय, पासउ ताव अम्ह वि सक्के देविदे देवराया

---

१. भ० २।३० ।
२. भ० ३।४ ।
३ राय० सू० ५८ ।
४ स० पा०—पयाहिण जाव नमसित्ता ।
५ स० पा०—अच्चासाइए जाव त ।
६. स० पा०—अकिट्ठे जाव विहरामि ।
७. स० पा०—देवाणुप्पिया जाव उत्तर° ।
८ राय० सू० ६५-१२० ।
९ बत्तीसविहं (क) ।
१० स० पा०—देविड्ढी जाव अभि° ।
११ भ० २।७३ ।
१२. अहुणोववण्णगाण (अ, व) ।
१३ स० पा०—अज्झत्थिए जाव समुप्पज्जइ ।
१४ भ० ३।१३० ।

दिव्व देविड्ढि जाव अभिसमण्णागय। त जाणामो ताव सक्कस्स देविंदस्स देवरण्णो दिव्व देविड्ढि जाव अभिसमण्णागय, जाणउ ताव अम्हे वि सक्के देविंदे देवराया दिव्व देविड्ढि जाव अभिसमण्णागय।

एव खलु गोयमा ! असुरकुमारा देवा उड्ढ उप्पयति जाव सोहम्मो कप्पो ॥

१३२. सेव भते ! सेव भते ! त्ति[1] ॥

तइओ उद्देसो

किरिया-पद

१३३ तेण कालेण तेण समएण रायगिहे नाम नयरे होत्था जाव[2] परिसा पडिगया ॥

१३४ तेण कालेणं तेण समएण[3] •समणस्स भगवओ महावीरस्स° अतेवासी मण्डिअपुत्ते नाम अणगारे पगइभद्दए जाव[4] पज्जुवासमाणे एव वयासी—कइ णं भते ! किरियाओ पण्णत्ताओ ?

मडिअपुत्ता ! पच किरियाओ पण्णत्ताओ, त जहा—काइया, अहिगरणिआ, पाओसिआ[5], पारियावणिआ, पाणाइवायकिरिया ॥

१३५ काइया णं भते ! किरिया कइविहा पण्णत्ता ?

मडिअपुत्ता ! दुविहा पण्णत्ता, त जहा—अणुवरयकायकिरिया य, दुप्पउत्तकाय-किरिया[6] य ॥

१३६ अहिगरणिआ णं भते ! किरिया कइविहा पण्णत्ता ?

मडिअपुत्ता ! दुविहा पण्णत्ता, त जहा—सजोयणाहिगरणकिरिया[7] य, निवत्त-णाहिगरणकिरिया[8] य ॥

१३७ पाओसिआ[9] णं भते ! किरिया कइविहा पण्णत्ता ?

मडिअपुत्ता ! दुविहा पण्णत्ता, त जहा—जीवपाओसिआ य, अजीवपाओ-सिआ य ॥

---

१. भ० १।५१।
२. भ० १।४-८।
३. स० पा०—समएण जाव अतेवासी।
४. भ० १।२८८, २८९।
५. पायो° (क, ता)।
६. दुप्पयुत्त° (ता)।
७. °करण° (क, ता, स)।
८. °करण° (ता, व, स)।
९. पादोसिया (अ, क, व); पाओसिगा (ता)।

१३८ पारियावणिआ ण भते ! 'किरिया कइविहा पण्णत्ता'[1] ?
मडिअपुत्ता ! दुविहा पण्णत्ता, त जहा—सहत्थपारियावणिआय, परहत्थपारियावणिआ य ॥

१३९ पाणाइवायकिरिया ण भते ! 'किरिया कइविहा पण्णत्ता ?'[2]
मडिअपुत्ता ! दुविहा पण्णत्ता, त जहा—सहत्णपाणाइवायकिरिया य, परहत्थपाणाइवायकिरिया य ॥

किरिया-वेदणा-पदं

१४०. पुव्विं भते ! किरिया, पच्छा वेदणा ? पुव्वि वेदणा, पच्छा किरिया ?
मडिअपुत्ता ! पुव्विं किरिया, पच्छा वेदणा । णो पुव्विं वेदणा, पच्छा किरिया ॥

१४१ अत्थि ण भते ! समणाण निग्गथाण किरिया कज्जइ ?
हता अत्थि ॥

१४२ कहण्ण[3] भते ! समणाण निग्गथाण किरिया कज्जइ ?
मडिअपुत्ता ! पमायपच्चया, जोगनिमित्त च । एव खलु समणाण निग्गथाण किरिया कज्जइ ॥

अंतकिरिया-पदं

१४३. जीवे ण भते ! सया समित[4] एयति वेयति[5] 'चलति फदइ घट्टइ'[6] खुब्भइ उदीरइ त त भाव परिणमइ ?
हता मडिअपुत्ता ! जीवे ण सया समित एयति[7] •वेयति चलति फदइ घट्टइ खुब्भइ उदीरइ° त त भाव परिणमइ ॥

१४४. जाव च ण भते ! से जीवे सया समित[8] •एयति वेयति चलति फदइ घट्टइ खुब्भइ उदीरइ त त भाव° परिणमइ, ताव च ण तस्स जीवस्स अते अत किरिया भवइ ?
नो इणट्ठे[9] समट्ठे ॥

१४५. से केणट्ठेण भते ! एव वुच्चइ—जाव च ण से जीवे सया समित[10] •एयति वेयति चलति फदइ घट्टइ खुब्भइ उदीरइ त त भाव परिणमइ, ताव च ण तस्स जीवस्स° अते अतकिरिया न भवति ?
मडिअपुत्ता ! जाव च ण से जीवे सया समित[11] •एयति वेयति चलति फदइ

---

१ पुच्छा (व) ।
२ पुच्छा (ता, व) ।
३. कह ण (अ, क, व), कह ण (ता), कहि ण (स) ।
४ समिय (अ, ता, व, म, स) ।
५ वेदति (ता) ।
६ चलेइ फदेइ घट्टेइ (अ, व, स) ।
७. स० पा०—एयति जाव त ।
८. स० पा०—समित जाव परिणमइ ।
९. तिणट्ठे (अ, क, व, म, स) ।
१०. स० पा०—समित जाव अते ।
११. स० पा०—समित जाव परिणमइ ।

घट्टइ खुब्भइ उदीरइ त त भाव° परिणमइ, ताव च ण से जीवे—'आरभइ सारभइ समारभइ'[1], आरभे वट्टइ सारभे वट्टइ समारभे वट्टइ, 'आरभमाणे सारभमाणे समारभमाणे'[2], आरभे वट्टमाणे सारभे वट्टमाणे समारभे वट्टमाणे बहूण पाणाण भूयाण जीवाण सत्ताण दुक्खावणयाए[3] सोयावणयाए जूरावणयाए तिप्पावणयाए पिट्टावणयाए परियावणयाए वट्टइ ।।

से तेणट्ठेण मडिअपुत्ता ! एवं वुच्चइ—जाव च ण से जीवे सया समित एयति[4] •वेयति चलति फदइ घट्टइ खुब्भइ उदीरइ त त भाव° परिणमइ, ताव च ण तस्स जीवस्स अते अतकिरिया न भवति ।।

१४६ जीवे ण भते ! सया समित नो एयति[5] •नो वेयति नो चलति नो फंदइ नो घट्टइ नो खुब्भइ नो उदीरइ° नो त तं भाव परिणमइ ?

हता मडिअपुत्ता ! जीवे ण सया समित[6] •नो एयति नो वेयति नो चलति नो फदइ नो घट्टइ नो खुब्भइ नो उदीरइ° नो त त भाव परिणमइ ।।

१४७. जाव च ण भते ! से जीवे नो एयति[7] •नो वेयति नो चलति नो फंदइ नो घट्टइ नो खुब्भइ नो उदीरइ° नो त त भाव परिणमइ, ताव च ण तस्स जीवस्स अते अतकिरिया भवइ ?

हता[8] •मडिअपुत्ता ! जाव च ण से जीवे नो एयति नो वेयति नो चलति नो फदइ नो घट्टइ नो खुब्भइ नो उदीरइ नो त त भाव परिणमइ, ताव च ण तस्स जीवस्स अते अतकिरिया° भवइ ।।

१४८. से केणट्ठेण[9] •भते ! एव वुच्चइ—जाव च ण से जीवे नो एयति नो वेयति नो चलति नो फदइ नो घट्टइ नो खुब्भइ नो उदीरइ नो त त भाव परिणमइ, ताव च ण तस्स जीवस्स अंते अतकिरिया° भवइ ?

मडिअपुत्ता ! जाव च ण से जीवे सया समित नो एयति[10] •नो वेयति नो चलति नो फदइ नो घट्टइ नी खुब्भइ नो उदीरइ° नो त त भाव परिणमइ, ताव च ण से जीवे नो आरभइ नो सारभइ नो समारभइ, नो आरभे वट्टइ नो सारभे वट्टइ नो समारभे वट्टइ, अणारभमाणे असारभमाणे असमारभमाणे, आरभे अवट्टमाणे सारभे अवट्टमाणे समारभे अवट्टमाणे बहूण पाणाण भूयाणं

---

१. आरंभइ सारभइ समारभइ (अ, स) ।
२. आरभमाणे सारभमाणे समारभमाणे (अ, क, ता, स) ।
३ क्वचित्पठ्यते—'दुक्खणयाए' इत्यादि, तच्च व्यक्तमेव, यच्च तत्र 'किलामणयाए उद्दवणयाए, इत्यधिकमभिधीयते° (वृ) ।
४. स० पा०—एयति जाव परिमणइ ।
५. स० पा०—एयति जाव नो ।
६ स० पा०—समित जाव नो ।
७ स० पा०—एयति जाव नो ।
८. स० पा०—हता जाव भवइ ।
९ स० पा०—केणट्ठेण जाव भवइ ।
१०. स० पा०—एयति जाव नो ।

जीवाण सत्ताण अदुक्खावणयाए[1] •असोयावणयाए अजूरावणयाए अतिप्पावणयाए अपिट्टावणयाए॰ अपरियावणयाए वट्टइ ।

से जहानामए केइ पुरिसे सुक्क[2] तणहत्थय जायतेयसि पक्खिवेज्जा, से नूण मडिअपुत्ता ! से सुक्के तणहत्थए जायतेयसि पक्खित्ते समाणे खिप्पामेव मसमसाविज्जइ ?

हता मसमसाविज्जइ ।

से जहानामए केइ पुरिसे तत्तसि अयकवल्लसि उदयबिदु पक्खिवेज्जा, से नूण मडिअपुत्ता ! से उदयबिदू तत्तसि अयकवल्लसि पक्खित्ते समाणे खिप्पामेव विद्धसमागच्छइ ?

हता विद्धसमागच्छइ ।

से जहानामए हरए सिया पुण्णे पुण्णप्पमाणे वोलट्टमाणे वोसट्टमाणे समभरघडत्ताए चिट्ठति[3] । अहे ण केइ पुरिसे तसि हरयसि एग मह नाव सतासव सतच्छिद्द ओगाहेज्जा, से नूण मडिअपुत्ता ! सा नावा तेहि आसवदारेहिं[4] आपूरमाणी-आपूरमाणी पुण्णा पुण्णप्पमाणा वोलट्टमाणा वोसट्टमाणा समभरघडत्ताए चिट्ठति ?

हता चिट्ठति ।

अहे ण केइ पुरिसे तीसे नावाए सव्वओ समता आसवदाराइ पिहेइ, पिहेत्ता नावा-उस्सिचणएण उदय उस्सिचेज्जा से नूण मडिअपुत्ता ! सा नावा तसि उदयसि उस्सित्तसि समाणसि खिप्पामेव उदाइ[5] ?

हता उदाइ ।

एवामेव मडिअपुत्ता ! अत्तत्ता-सवुडस्स अणगारस्स इरियासमियस्स[6] •भासासमियस्स एसणासमियस्स आयाणभडमत्तनिक्खेवणासमियस्स उच्चारपासवण—खेल-सिंघाण-जल्ल-पारिट्ठावणियासमियस्स मणसमियस्स वइसमियस्स कायसमियस्स मणगुत्तस्स वइगुत्तस्स कायगुत्तस्स गुत्तस्स गुत्तिदियस्स॰ गुत्तबभयारिस्स, आउत्त गच्छमाणस्स चिट्ठमाणस्स[7] निसीयमाणस्स तुयट्टमाणस्स, आउत्त वत्थ-पडिग्गह-कवल-पायपुछण गेण्हमाणस्स निक्खिवमाणस्स जाव चक्खुपम्हनिवायमवि वेमाया[8] सुहुमा इरियावहिया[9] किरिया कज्जइ—सा पढमसमय-

१ स॰ पा॰—अदुक्खावणयाए जाव अपरियावणयाए ।

२. सुक्क (अ, व) ।

३ चिट्ठइ हता चिट्ठइ (ता, म, स) ।

४ ॰द्दारेहिं (ता, व, म) ।

५. तुदाति (ता), उद्दाइ (म), उड्ढ उदाइ (स)

६ रिया॰ (ता, व, म), स॰ पा॰—इरियासमितस्स जाव गुत्तबभयारिस्स ।

७ सर्वेष्वपि पदेषु 'आउत्त' इति पद गम्यम् ।

८ वेमाता (ता), सपेहाए (वृपा) ।

९ रिया॰ (अ, ता, व) ।

बद्धपुट्ठा[1], बितियसमयवेइया[2], ततियसमयनिज्जरिया[3]। सा बद्धा पुट्ठा उदीरिया वेइया निज्जिण्णा सेयकाले अकम्म वावि[4] भवति। से तेणट्ठेण मडिअपुत्ता! एव वुच्चइ—जाव च ण से जीवे सया समित नो एयति[5] •नो वेयति नो चलति नो फदइ नो घटइ नो खुब्भइ नो उदीरइ नो त त भाव परिणमइ, ताव च ण तस्स जीवस्स° अते अतकिरिया भवइ॥

पमत्तापमत्तद्धा-पदं

१४९. पमत्तसजयस्स ण भते! पमत्तसजमे वट्टमाणस्स सव्वा वि य ण पमत्तद्धा कालओ केवच्चिर[6] होइ?
मडिअपुत्ता! एग जीव पडुच्च जहण्णेण एक्क समयं, उक्कोसेण देसूणा पुव्वकोडी। नाणाजीवे पडुच्च सव्वद्धा॥

१५०. अप्पमत्तसजयस्स ण भते! अप्पमत्तसजमे वट्टमाणस्स सव्वा वि य ण अप्पमत्तद्धा कालओ केवच्चिर होइ?
मडिअपुत्ता! एग जीव पडुच्च जहण्णेण अतोमुहुत्तं, उक्कोसेण 'देसूणा पुव्वकोडी'[7] नाणाजीवे पडुच्च सव्वद्ध॥

१५१. सेव भते! सेव भते! त्ति भगव मडिअपुत्ते अणगारे समण भगव महावीर वदइ नमसइ, वदित्ता नमसित्ता सजमेण तवसा अप्पाण भावेमाणे विहरति॥

लवणसमुद्द-वुड्ढि-हाणि-पदं

१५२. भतेति! भगव गोयमे समण भगव महावीर वदइ नमसइ, वदित्ता नमसित्ता एव वयासी—कम्हा णं भते! लवणसमुद्दे चाउद्दसट्ठमुद्दिट्ठपुण्णमासिणीसु अतिरेगे वड्ढइ वा? हायइ वा?
लवणसमुद्दवत्तव्वया[8] नेयव्वा जाव[9] लोयट्ठिई, लोयाणुभावे॥

१५३. सेव भते! सेव भते? त्ति जाव[10] विहरति[11]॥

---

१. °समत° (ता)।
२. वीयसमयवेतिता (क), °वेदिता (ता), वीय° (व)।
३. टितिय° (व)।
४. चावि (ता)।
५ स° पा°—एयति जाव अते।
६. केवचिर (अ, क)।
७. पुव्वकोडी देसूणा (क, ता, व, म, स)।
८. जहा जीवाभिगमे लवण° (स)।
९ जी° ३ मन्दरोद्देशक।
१०. भ° १।५१।
११. विहरइ किरिया समत्ता (अ, क, ता, व, म, स)

चउत्थो उद्देसो

भाविअप्प-पदं

१५४ अणगारे ण भते ! भाविअप्पा देवं वेउव्वियसमुग्घाएण समोहय जाणरूवेणं जामाण[1] जाणइ-पासइ ?
गोयमा ! १ अत्थेगइए देव पासइ, नो जाण पासइ । २ अत्थेगइए जाण पासइ, नो देव पासइ । ३. अत्थेगइए देव पि पासइ, जाण पि पासइ । ४ अत्थेगइए नो देव पासइ, नो जाण पासइ ।।

१५५ अणगारे ण भते ! भाविअप्पा देविं वेउव्वियसमुग्घाएण समोहय जाणरूवेणं जामाणिं[2] जाणइ-पासइ ?
गोयमा ! १. [3]•अत्थेगइए देविं पासइ, नो जाण पासइ । २. अत्थेगइए जाण पासइ, नो देविं पासइ । ३ अत्थेगइए देविं पि पासइ, जाणं पि पासइ । ४. अत्थे गइए नो देविं पासइ, नो जाण पासइ° ।।

१५६ अणगारे ण भंते ! भाविअप्पा देवं सदेवीअ वेउव्वियसमुग्घाएण समोहय जाणरूवेण जामाण जाणइ-पासइ ?
[4]•गोयमा ! १ अत्थेगइए देव सदेवीअ पासइ, नो जाण पासइ । २ अत्थेगइए जाण पासइ, नो देव सदेवीअ पासइ । ३ अत्थेगइए देव सदेवीअ पि पासइ, जाण पि पासइ । ४ अत्थेगइए नो देव सदेवीअ पासइ, नो जाण पासइ° ।।

१५७ अणगारे ण भते ! भाविअप्पा रुक्खस्स किं अतो पासइ ? बाहिं पासइ ?
[5]•गोयमा ! १ अत्थेगइए रुक्खस्स अतो पासइ, नो बाहिं पासइ । २ अत्थेगइए रुक्खस्स बाहिं पासइ, नो अतो पासइ । ३ अत्थेगइए रुक्खस्स अतो पि पासइ, बाहिं पि पासइ । ४ अत्थेगइए रुक्खस्स नो अतो पासइ, नो बाहिं पासइ° ।।

१५८. [6]•अणगारे ण भते ! भाविअप्पा रुक्खस्स किं मूल पासइ ? कद पासइ ?
गोयमा ! १ अत्थेगइए रुक्खस्स मूल पासइ, नो कदं पासइ । २ अत्थेगइए रुक्खस्स कद पासइ, नो मूल पासइ । ३ अत्थेगइए रुक्खस्स मूल पि पासइ, कद पि पासइ । ४ अत्थेगइए रुक्खस्स नो मूल पासइ, नो कद पासइ° ।।

---

१. जायमाण (अ, क, व, स) ।
२ जाइमाणिं (अ, ब), जायमाणिं (क, स) ।
३. स० पा०—एव चेव ।
४. स० पा०—एतेण अभिलावेणं चत्तारि भंगा ।
५ स० पा०—चउभगो ।
६. स० पा०—एव किं मूल पासइ, कद पासइ ? चउभगो ।

१५९ मूल पासइ ? खध पासइ ? चउभंगो ।।
१६० एवं मूलेण[1] [जाव ?] वीज सजोएयव्वं ।।
१६१ एवं कदेण वि सम सजोएयव्व जाव वीय ।।
१६२. एव जाव पुप्फेण सम वीयं सजोएयव्व ।।
१६३ ग्रणगारे ण भते ! भाविग्रप्पा रुक्खस्स किं फल पासइ ? वीय पासइ ? चउभगो[2] ।।

वाउकाय-पदं

१६४ पभू ण भंते ! वाउकाए एग महं इत्थिरुव वा पुरिसरूवं वा [ग्रासरूवं वा[3] ?] हत्थिरूव वा जाणरूवं वा जुग्गरूवं वा गिल्लिरूव वा थिल्लिरूव[4] वा सीयरूव वा सदमाणियरुव वा विउव्वित्तए ?
गोयमा ! नो इणट्ठे समट्ठे । वाउकाए[5] ण विकुव्वमाणे एग मह पडागासठिय रूवं विकुव्वइ ।।
१६५. पभू ण भते ! वाउकाए एग मह पडागासठिय रूव विउव्वित्ता ग्रणेगाइ जोयणाइ गमित्तए ?
हता पभू ।।

---

१. एवमिति मूलकदसूत्राभिलापेन मूलेन सह कदादिपदानि वाच्यानि यावद्वीजपदम् । तत्र मूलम्, कद , स्कन्ध , त्वक्, शाखा, प्रवालम्, पत्रम्, पुष्पम्, फलम्, वीजम् चेति दश पदानि, एषा च पञ्चचत्वारिंशद् द्विकसयोगा भङ्गा –
१. मूल कद २. मूल स्कध
३. मूल त्वक् ४. मूल शाखा
५. मूल प्रवाल ६. मूल पत्र
७ मूल पुष्प ८. मूल फल
९. मूल वीज १०. कद स्कध
११. कद त्वक् १२. कद शाखा
१३ कद प्रवाल १४ कद पत्र
१५ कंद पुष्प १६. कद फल
१७ कद वीज १८. स्कध त्वक्
१९. स्कध शाखा २०. स्कध प्रवाल
२१. स्कध पत्र २२. स्कंध पुष्प
२३. स्कध फल २४. स्कंध बीज
२५. त्वक् शाखा २६. त्वक् प्रवाल
२७. त्वक् पत्र २८ त्वक् पुष्प
२९. त्वक् फल ३०. त्वक् वीज
३१. शाखा प्रवाल ३२. शाखा पत्र
३३. शाखा पुष्प ३४ शाखा फल
३५. शाखा वीज ३६. प्रवाल पत्र
३७. प्रवाल पुष्प ३८. प्रवाल फल
३९. प्रवाल वीज ४० पत्र पुष्प
४१ पत्र फल ४२ पत्र वीज
४३ पुष्प फल ४४ पुष्प वीज
४५ फल वीज (वृ) ।

२. चउभगो एवं (ना) ।

३ १७९ सूत्रे 'आसरूव' इति पाठो विद्यते वृत्तावपि तस्योल्लेखोस्ति, तेनात्रापि सभाव्यते ।

४ खिल्लि० (क) ।

५. वाउयाए (क, ता) ।

१६६ से भंते ! किं आइड्ढीए[1] गच्छइ ? परिड्ढीए गच्छइ ?
गोयमा ! आइड्ढीए गच्छइ, नो परिड्ढीए गच्छइ ॥

१६७. [2]•से भंते ! किं आयकम्मुणा गच्छइ ? परकम्मुणा गच्छइ ?
गोयमा ! आयकम्मुणा गच्छइ, नो परकम्मुणा गच्छइ ॥

१६८. से भंते ! किं आयप्पयोगेण गच्छइ ? परप्पयोगेण गच्छइ ?
गोयमा ! आयप्पयोगेण गच्छइ, नो परप्पयोगेण गच्छइ° ॥

१६९ से भंते ! किं ऊसिओदयं[3] गच्छइ ? पतोदयं गच्छइ ?
गोयमा ! ऊसिओदयं पि गच्छइ, पतोदयं पि गच्छइ ॥

१७०. से भंते ! किं एगओपडागं गच्छइ ? दुहओपडागं गच्छइ ?
गोयमा ! एगओपडागं गच्छइ, नो दुहओपडागं गच्छइ ॥

१७१. से भंते ! किं वाउकाए ? पडागा[4] ?
गोयमा ! वाउकाए णं से, नो खलु सा पडागा ॥

बलाहक-पदं

१७२ पभू णं भंते ! बलाहए एगं महं इत्थिरूवं वा जाव[5] संदमाणियरूवं वा परिणामेत्तए ?
हंता पभू ॥

१७३ पभू णं भंते ! बलाहए एगं महं इत्थिरूवं परिणामेत्ता अणेगाइं जोयणाइं गमित्तए ।
हंता पभू ॥

१७४. से भंते ! किं आइड्ढीए गच्छइ ? परिड्ढीए गच्छइ ?
गोयमा ! नो आइड्ढीए गच्छइ, परिड्ढीए गच्छइ ॥

१७५ [6]•से भंते ! किं आयकम्मुणा गच्छइ ? परकम्मुणा गच्छइ ?
गोयमा ! नो आयकम्मुणा गच्छइ, परकम्मुणा गच्छइ ॥

१७६. से भंते ! किं आयप्पयोगेण गच्छइ ? परप्पयोगेण गच्छइ ?
गोयमा ! नो आयप्पयोगेण गच्छइ, परप्पयोगेण गच्छइ ॥

१७७ से भंते ! किं ऊसिओदयं गच्छइ ? पतोदयं गच्छइ ?
गोयमा ! ऊसिओदयं पि गच्छइ, पतोदयं पि गच्छइ° ॥

---

१ आयड्ढीए (अ, ब, स), आतिड्ढीए (क, म)।
२ सं० पा०—जहा आयड्ढीए एवं अयकम्मुणा वि आयप्पयोगेण वि भाणियव्वं ।
३ ऊसिओदगं (म, स) ।
४ पडागं वा (ता) ।
५ भ० ३।१६४ ।
६ सं० पा०—एवं नो आयकम्मुणा, परकम्मुणा । नो आयप्पयोगेण, परप्पयोगेण । ऊसिओदयं वा गच्छइ पयोदयं वा गच्छइ ।

१७८. से भंते ! किं वलाहए ? इत्थी ?
गोयमा ! वलाहए णं से, नो खलु सा इत्थी ॥

१७९. एवं[1] पुरिसे, आसे, हत्थी ॥

१८०. पभू णं भंते ! वलाहए एगं महं जाणरूवं परिणामेत्ता अणेगाइं जोयणाइं गमित्तए ?
जहा[2] इत्थिरूवं तहा भाणियव्वं ॥

१८१. [3]•से भंते ! किं एगओचक्कवालं गच्छइ ? दुहओचक्कवालं गच्छइ ?
गोयमा ! एगओचक्कवालं पि गच्छइ, दुहओचक्कवालं पि गच्छइ• ॥

१८२. जुग्ग-गिल्लि-थिल्लि-सीया-संदमाणिया[4] तहेव[5] ॥

किलेसोववाय-पदं

१८३. जीवे णं भंते ! जे भविए नेरइएसु उववज्जित्तए,[6] से णं भंते ! किंलेस्सेसु उववज्जइ ?
गोयमा ! जल्लेस्साइं[7] दव्वाइं परियाइत्ता कालं करेइ, तल्लेस्सेसु उववज्जइ, तं जहा—कण्हलेस्सेसु वा, नीललेस्सेसु वा, काउलेस्सेसु वा। एवं जस्स जा लेस्सा सा तस्स भाणियव्वा। जाव[8]—

१८४. जीवे णं भंते ! जे भविए जोइसिएसु उववज्जित्तए[9]•, से णं भंते ! किंलेस्सेसु उववज्जइ• ?
गोयमा ! जल्लेसाइं दव्वाइं परियाइत्ता कालं करेइ तल्लेस्सेसु उववज्जइ, तं जहा—तेउलेस्सेसु ॥

१८५. जीवे णं भंते ! जे भविए वेमाणिएसु उववज्जित्तए, से णं भंते ! किंलेस्सेसु उववज्जइ ?
गोयमा ! जल्लेस्साइं दव्वाइं परियाइत्ता[10] कालं करेइ तल्लेस्सेसु उववज्जइ, तं जहा—तेउलेस्सेसु वा, पम्हलेस्सेसु वा, सुक्कलेसे वा ॥

---

१. भ० ३।१७३-१७८।
२. भ० ३।१७३-१७८।
३. सं० पा०—नवरं एगओ चक्कवालं पि दुहओचक्कवालं पि भाणियव्वं।
४. संदमाणिया णं (अ, व, स)।
५. भ० ३।१७३-१७८।
६. उववज्जइए (अ)।
७. जं लेसाइं (अ, स)।
८. जाव जीवेणं भंते जे भविए असुरकुमारेसु उववज्जइ से भंते किंलेसेसु असुरकुमारेसु उववज्जइ ? जल्लेसाइं दव्वाइं परियाइत्ता कालं करेइ तल्लेसेसु असुरकुमारेसु उववज्जइ। तं कण्हनीलकाउतेउलेसेसु वा एवं जहा नेरइयाणं नवरं अब्भहियं तेउलेसेसु वा एवं जस्स जा सा भाणियव्वा जाव (ता), पू० प० २।
९. सं० पा०—पुच्छा।
१०. परियाइतित्ता (अ, व, स)।

भाविअप्प-विकुव्वणा-पद

१८६. अणगारे ण भते ! भाविअप्पा बाहिरए पोग्गले अपरियाइत्ता पभू वेभार[1] पव्वय उल्लघेत्तए वा ? पल्लघेत्तए वा ?
गोयमा ! नो इणट्ठे समट्ठे ॥

१८७ अणगारे ण भते ! भाविअप्पा बाहिरए पोग्गले परियाइत्ता पभू वेभार पव्वय उल्लघेत्तए वा ? पल्लघेत्तए वा ?
हता पभू ॥

१८८. अणगारे ण भते ! भाविअप्पा बाहिरए पोग्गले अपरियाइत्ता जावइयाइ रायगिहे नगरे रूवाइ, एवइयाइ विकुव्वित्ता वेभार पव्वय अतो अणुप्पविसित्ता पभू सम वा विसम करेत्तए ? विसम वा सम करेत्तए ?
गोयमा ! नो इणट्ठे समट्ठे ॥

१८९ •[2]अणगारे ण भते ! भाविअप्पा बाहिरए पोग्गले परियाइत्ता जावइयाइ रायगिहे नगरे रूवाइ, एवइयाइ विकुव्वित्ता वेभार पव्वय अतो अणुप्पविसित्ता पभू सम वा विसम करेत्तए ? विसम वा सम करेत्तए ?
हता पभू° ॥

१९० से भते ! किं माई विकुव्वइ ? अमाई ? विकुव्वइ
गोयमा ! माई विकुव्वइ, नो अमाई विकुव्वइ ॥

१९१. से केणट्ठेण भते ! एव वुच्चइ[3]—•माई विकुव्वइ°, नो अमाई विकुव्वइ ?
गोयमा ! माई ण पणीय पाण-भोयण भोच्चा-भोच्चा वामेति । तस्स ण तेण पणीएण पाण-भोयणेण अट्ठि-अट्ठिमिजा बहलीभवति, पयणुए मस-सोणिए भवति । जे वि य से अहावायरा पोग्गला ते वि य से परिणमति, त जहा—सोइंदियत्ताए[4] •चक्खिदियत्ताए घाणिदियत्ताए रसिंदियत्ताए° फासिंदियत्ताए, अट्ठि-अट्ठिमिज-केस-मसु-रोम-नहत्ताए, सुक्कत्ताए, सोणियत्ताए ।
अमाई ण लूह पाण-भोयण भोच्चा-भोच्चा णो वामेइ । तस्स ण तेण लूहेण पाण-भोयणेण अट्ठि-अट्ठिमिजा पयणूभवति, बहले मस-सोणिए । जे वि य से अहाबायरा पोग्गला ते वि य से परिणमति, त जहा—उच्चारत्ताए पासवणत्ताए[5] •खेलत्ताए सिघाणत्ताए वतत्ताए पित्तत्ताए पूयत्ताए° सोणियत्ताए । से तेणट्ठेण[6] •भते ! एव वुच्चइ—माई विकुव्वइ°, नो अमाई विकुव्वइ ॥

---

१ वेब्भार (ता) ।
२ स० पा०—एव चेव वितिओ वि आलावगो नवर परियातिइत्ता पभू ।
३. स० पा०—वुच्चइ जाव नो ।
४ स० पा०—सोइदियत्ताए जाव फासिंदियत्ताए।
५ स० पा०—पासवणत्ताए जाव सोणियत्ताए।
६ स० पा०—तेणट्ठेण जाव नो ।

१६२. माई ण तस्स ठाणस्स अणालोइयपडिक्कते[1] काल करेइ, नत्थि तस्स आराहणा। अमाई ण तस्स ठाणस्स आलोइय-पडिक्कते काल करेइ, अत्थि तस्स आराहण ॥

१६३ सेव भते ! सेव भते ! त्ति[2] ॥

पंचमो उद्देसो

१६४ अणगारे ण भते ! भाविअप्पा बाहिरए पोग्गले अपरियाइत्ता पभू एग मह इत्थीरूव वा जाव[3] सदमाणियरूव वा विउव्वित्तए ?
नो इणट्ठे समट्ठे ॥

१६५ अणगारे ण भते ! भाविअप्पा बाहिरए पोग्गले परियाइत्ता पभू एग महं इत्थीरूव वा जाव[4] सदमाणियरूवं वा विउव्वित्तए ?
हता पभू ॥

१६६. अणगारे ण भते ! भाविअप्पा केवइआइ पभू इत्थिरूवाइ विउव्वित्तए ?
गोयमा ! से जहानामए—जुवइ जुवाणे हत्थेण हत्थसि गेण्हेज्जा, चक्कस्स वा नाभी अरगाउत्ता सिया, एवामेव अणगारे वि भाविअप्पा वेउव्वियससमुग्घाएण समोहण्णइ जाव[5] पभू ण गोयमा ! अणगारे ण भाविअप्पा केवलकप्प जंबुद्दीवं दीव बहूहि इत्थिरूवेहि आइण्ण वितिकिण्ण[6] •उवत्थड सथड फुड अवगाढावगाढ करेत्तए° । एस ण गोयमा ! अणगारस्स भाविअप्पणो अयमेयारूवे विसए, विसयमेत्ते बुइए, णो चेव ण सपत्तीए विउव्विसु वा, विउव्वति वा, विउव्विस्सति वा । एव परिवाडीए नेयव्व जाव[7] सदमाणिया ॥

१६७. से जहानामए केइ पुरिसे असिचम्मपाय[8] गहाय गच्छेज्जा, एवामेव अणगारे वि भाविअप्पा असिचम्मपायहत्थकिच्चगएण अप्पाणेण उड्ढं वेहास उप्पएज्जा ?
हता उप्पएज्जा ॥

---

१ अणालोतिय° (अ, व, स) ।
२. भ० १।५१ ।
३. भ० ३।१६४।
४. भ० ३।१६४।
५ भ० ३।४ ।
६ सं हा०—वितिकिण्ण जाव एस ।
७ भ० ३।१६४।
८. असि चम्म° (ता) ।

१९८. अणगारे ण भते ! भाविअप्पा केवइयाइं पभू असिचम्म (पाय ?) हत्थकिच्च-गयाइ रूवाइ विउव्वित्तए ?
गोयमा ! से जहानामए—जुवइ जुवाणे हत्थेण हत्थे गेण्हेज्जा, त चेव जाव[1] विउव्विसु वा, विउव्वति वा, विउव्विस्सति वा ।।

१९९ से जहानामए केइ पुरिसे एगओपडाग काउ गच्छेज्जा, एवामेव अणगारे वि भाविअप्पा एगओपडागाहत्थकिच्चगएण[2] अप्पाणेण उड्ढ वेहासं[3] उप्पएज्जा ?
हता[4] उप्पएज्जा ।।

२०० अणगारे ण भते ! भाविअप्पा केवइयाइ पभू एगओपडागाहत्थकिच्चगयाइ रूवाइ विकुव्वित्तए ?
एव चेव जाव[5] विकुव्विसु वा, विकुव्वतिवा वा, विकुव्विस्सति वा ।।

२०१ एव दुहओपडाग पि ।

२०२. से जहानामए केइ पुरिसे एगओजण्णोवइत काउ गच्छेज्जा, एवामेव अणगारे वि भाविअप्पा एगओजण्णोवइतकिच्चगएण अप्पाणेण उड्ढ वेहास उप्पएज्जा ?
हता उप्पएज्जा ।।

२०३ अणगारे ण भते ! भाविअप्पा केवइयाइ पभू एगओजण्णोवइतकिच्चगयाइ रूवाइ विकुव्वित्तए ?
त चेव जाव[6] विकुव्विसु वा, विकुव्वति वा, विकुव्विस्सति वा ।

२०४. एव दुहओजण्णोवइय पि ।।

२०५. से जहानामए केइ पुरिसे एगओपल्हत्थिय काउ चिट्ठेज्जा, एवामेव अणगारे वि भाविअप्पा एगओपल्हत्थिय किच्चगएण अप्पाणेण उड्ढ वेहास उप्पएज्जा ?
त चेव जाव[7] विकुव्विसु वा, विकुव्वति वा, विकुव्विस्सति वा ।।

२०६. एव दुहओपल्हत्थिय पि ।।

२०७. से जहानामए केइ पुरिसे एगओपलियक काउ चिट्ठेज्जा, एवामेव अणगारे वि भावियप्पा एगओपलियककिच्चगएण अप्पाणेण उड्ढ वेहास उप्पएज्जा ?
त चेव जाव[8] विकुव्विसु वा, विकुव्वति वा, विकुव्विस्सति वा ।।

२०८. एव दुहओपलियक पि ।।

---

१. भ० ३।१९६ ।
२. एगततोपडागा° (ता) ।
३. वेहायस (व) ।
४. हता गोयमा (अ, ता, व, स) ।
५ भ० ३।१९६ ।
६ भ० ३।१९६ ।
७ भ० ३।२०२, २०३ ।
८. भ० ३।२०२, २०३ ।

भाविअप्प-अभिजुंजणा-पदं

२०९ अणगारे णं भंते ! भाविअप्पा बाहिरए पोग्गले अपरियाइत्ता पभू एगं महं आसरूवं वा हत्थिरूवं वा सीहरूवं वा विग्घरूवं वा विगरूवं[1] वा दीवियरूवं वा अच्छरूवं वा तरच्छरूवं वा परासररूवं[2] वा अभिजुंजित्तए ?
नो इणट्ठे समट्ठे ।।

२१० अणगारे णं[3] •भंते ! भाविअप्पा बाहिरिए पोग्गले परियाइत्ता पभू एगं महं आसरूवं वा हत्थिरूवं वा सीहरूवं वा वग्घरूवं वा विगरूवं वा दीवियरूवं वा अच्छरूवं वा तरच्छरूवं वा परासररूवं वा अभिजुंजित्तए ?
हंता पभू° ।।

२११. अणगारे णं भंते ! भाविअप्पा (पभू ?) एगं महं आसरूवं वा अभिजुंजित्ता अणेगाइं जोयणाइं गमित्तए ?
हंता पभू ।।

२१२. से भंते ! किं आइड्ढीए गच्छइ ? परिड्ढीए गच्छइ ?
गोयमा ! आइड्ढीए गच्छइ, नो परिड्ढीए गच्छइ ।।

२१३. [4]•से भंते ! किं आयकम्मुणा गच्छइ ? परकम्मुणा गच्छइ ?
गोयमा ! आयकम्मुणा गच्छइ, नो परकम्मुणा गच्छइ ।।

२१४. से भंते! किं आयप्पयोगेण गच्छइ ? परप्पयोगेण गच्छइ ?
गोयमा ! आयप्पयोगेणं गच्छइ, नो परप्पयोगेण गच्छइ ।।

२१५. से भंते ! किं ऊसिओदयं गच्छइ ? पतोदयं गच्छइ ?
गोयमा ! ऊसिओदयं पि गच्छइ, पतोदयं पि गच्छइ° ।।

२१६ से णं भंते ! किं अणगारे ? आसे ?
गोयमा ! अणगारे णं से, नो खलु से आसे ।।

२१७. एवं जाव[5] परासररूवं वा ।।

२१८. से भंते ! किं 'मायी विकुव्वइ[6]', ? अमायी विकुव्वइ ?
गोयमा ! मायी विकुव्वइ, नो अमायी विकुव्वइ ।।

---

१. वग° (क, ता, व, म) ।

२ इह अन्यान्यपि शृगालादिपदानि वाचनान्तरे दृश्यन्ते (वृ) ।

३. स० पा०—एवं बाहिरए पोग्गले परियाइत्ता पभू ।

४. स० पा०—एवं आयकम्मुणा नो परकम्मुणा आयप्पयोगेण नो परप्पयोगेण उस्सिओदयं वा गच्छइ पयोदयं वा गच्छइ ।

५ भ० ३।२०९, २११-२१६ ।

६. भायी अभिजुंजइ" अधिकृतवाचनायां 'मायी विक्कुव्वइ' त्ति दृश्यते (वृ) ।

२१९ मायी णं भंते ! तस्स ठाणस्स अणालोइयपडिक्कते कालं करेइ, कहिं उववज्जइ ?
गोयमा ! अण्णयरेसु आभियोगिएसु[1] देवलोगेसु देवत्ताए उववज्जइ ।।

२२०. अमायी णं भंते ! तस्स ठाणस्स आलोइय-पडिक्कते कालं करेइ, कहिं उववज्जइ ?
गोयमा ! अण्णयरेसु अणाभियोगिएसु देवलोएसु देवत्ताए उववज्जइ ।।

२२१. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति[2] ।

संगहणी-गाहा

१ इत्थी असी पडागा, जण्णोवइए य होइ बोद्धव्वे[3] ।
पल्हत्थिय पलियंके, अभिओग विकुव्वणा मायी ।।

छट्ठो उद्देसो

भावियप्प-विकुव्वणा-पदं

२२२. अणगारे णं भंते ! भावियप्पा मायी मिच्छदिट्ठी वीरियलद्धीए वेउव्वियलद्धीए विभंगनाणलद्धीए वाणारसिं नगरिं समोहए, समोहणित्ता रायगिहे नगरे रूवाइं जाणइ-पासइ ?
हंता जाणइ-पासइ ।।

२२३. से भंते ! किं तहाभावं जाणइ-पासइ ? अण्णहाभावं जाणइ-पासइ ?
गोयमा ! नो तहाभावं जाणइ-पासइ, अण्णहाभावं जाणइ-पासइ ।।

२२४. से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ—नो तहाभावं जाणइ-पासइ ? अण्णहाभावं जाणइ-पासइ ?
गोयमा ! तस्स णं एवं भवइ—एवं खलु अहं रायगिहे नगरे समोहए, समोहणित्ता वाणारसीए नगरीए रूवाइं जाणामि-पासामि । 'सेस दंसण-विवच्चासे'[4] भवइ । से तेणट्ठेणं[5] °गोयमा ! एवं वुच्चइ—नो तहाभावं जाणइ-पासइ, अण्णहाभावं जाणइ°-पासइ ।।

---

१ आभियोगेसु (अ, ब, स), आभिओग्गिएसु (ता) ।
२ भ० १।५१ ।
३. बोधव्वे (अ, क, म, स) ।
४ से से दसणे विवच्चासे (अ, ब, स, वृ), से से दसणे विवरीए विवच्चासे (वृपा) ।
५ सं० पा०—तेणट्ठेणं जाव पासइ ।

२२५. अणगारे ण भते ! भावियप्पा मायी मिच्छदिट्ठी[1] •वीरियलद्धीए वेउव्वियलद्धीए विभगनाणलद्धीए° रायगिहे नगरे समोहए, समोहणित्ता वाणारसीए नयरीए रूवाइ जाणइ-पासइ ?
हंता जाणइ-पासइ ॥

२२६. [2]•से भते ! कि तहाभावं जाणइ-पासइ ? अण्णहाभाव जाणइ-पासइ ?
गोयमा ! नो तहाभाव जाणइ-पासइ, अण्णहाभावं जाणइ-पासइ ॥

२२७. से केणट्ठेणं भते ! एव वुच्चइ—नो तहाभाव जाणइ-पासइ ? अण्णहाभावं जाणइ-पासइ ?
गोयमा !° तस्स ण एव भवइ—एव खलु अह वाणारसीए नयरीए समोहए, समोहणित्ता रायगिहे नगरे रूवाइ जाणामि-पासामि । सेस दसण-विवच्चासे भवति । से तेणट्ठेण[3] •गोयमा ! एव वुच्चइ—नो तहाभाव जाणइ-पासइ°, अण्णहाभाव जाणइ-पासइ ॥

२२८. अणगारे ण भते ! भावियप्पा मायी मिच्छदिट्ठी वीरियलद्धीए वेउव्वियलद्धीए विभगनाणलद्धीए वाणारसिं नगरिं, रायगिह च नगर, अतरा[4] एग मह जणवयग्ग समोहए, समोहणित्ता वाणारसिं नगरिं रायगिह च नगरं अतरा[6] एग मह जणवयग्गं जाणति-पासति ?
हता जाणति-पासति ।

२२९. से भते ! किं तहाभाव जाणइ-पासइ ? अण्णहाभाव जाणइ-पासइ ?
गोयमा ! नो तहाभाव जाणइ-पासइ, अण्णहाभाव जाणइ-पासइ ॥

२३०. से केणट्ठेण[7] •भते ! एव वुच्चइ—नो तहाभाव जाणइ-पासइ ? अण्णहाभावं जाणइ°-पासइ ?
गोयमा ! तस्स खलु एव भवति—एस खलु वाणारसी नगरी, एस खलु रायगिहे नगरे, एस खलु अतरा एगे मह जणवयग्गे, नो खलु एस मह वीरियलद्धी वेउव्वियलद्धी विभगनाणलद्धी इड्ढि जुती जसे बले वीरिए पुरिसक्कार-परक्कमे लद्धे पत्ते अभिसमण्णागए 'सेस दसण-विवच्चासे'[8] भवति । से तेणट्ठेण[9] •गोयमा ! एव वुच्चइ—नो तहाभावं जाणइ-पासइ, अण्णहाभावं जाणइ°-पासइ ॥

---

१. स० पा०—मिच्छदिट्ठी जाव रायगिहे ।
२. स० पा०—त चेव जाव तम्म ।
३. स० पा०—तेणट्ठेण जाव अण्णहाभाव ।
४. अतरा य (क, ता, ब) ।
५. जणवयवग्गं (क, म, स, वृ), अत्र स्वीकृत: पाठ: समीचीन: प्रतिभाति । वृत्तिकृत: सम्मुखवर्तिषु आदर्शेषु 'जणवयवग्ग' इति पाठ आसीत् तेन तथा व्याख्यातोसौ लभ्यते ।
६. त० च अंतरा (क, ता, ब, म) ।
७. स० पा०—केणट्ठेण जाव पासइ ।
८. से से दसणे विवच्चासे (अ, क, ब, स) ।
९. स० पा०—तेणट्ठेण जाव पासइ ।

२३१. अणगारे ण भते ! भाविअप्पा अमायी सम्मदिट्ठी वीरियलद्धीए वेउव्वियलद्धीए ओहिनाणलद्धीए रायगिह नगर समोहए, समोहणित्ता वाणारसीए नयरीए रूवाइ जाणइ-पासइ ?
हता जाणइ-पासइ ।।

२३२. से भते ! कि तहाभाव[1] जाणइ-पासइ ? अण्णहाभाव जाणइ-पासइ ?
गोयमा ! तहाभाव जाणइ-पासइ, नो अण्णहाभाव जाणइ-पासइ ।।

२३३ से केणट्ठेण भते ! एव वुच्चइ—तहाभाव जाणइ-पासइ, नो अण्णहाभावं जाणइ-पासइ ?
गोयमा ! तस्स ण एव भवइ—एव खलु अह रायगिहे नयरे समोहए, समोहणित्ता वाणारसीए नयरीए रूवाइ जाणामि-पासामि । सेस दंसण-अविवच्चासे भवति । से तेणट्ठेण[2] •गोयमा ! एव वुच्चइ—तहाभाव जाणइ-पासइ, नो अण्णहाभाव जाणइ-पासइ ।।

२३४. अणगारे ण भते ! भाविअप्पा अमायी सम्मदिट्ठी वीरियलद्धीए वेउव्वियलद्धीए ओहिनाणलद्धीए वाणारसि नगरि समोहए, समोहणित्ता रायगिहे नगरे रूवाइ जाणइ-पासइ ?
हता जाणइ-पासइ ।।

२३५. से भते ! कि तहाभाव जाणइ-पासइ ? अण्णहाभाव जाणइ-पासइ ?
गोयमा ! तहाभाव जाणइ-पासइ, नो अण्णहाभाव जाणइ-पासइ ।।

२३६ से केणट्ठेण भते ! एव वुच्चइ—तहाभाव जाणइ-पासइ ? नो अण्णहाभाव जाणइ-पासइ ?
गोयमा ! तस्स ण एव भवइ—एव खलु अह वाणारसि नगरि समोहए, समोहणित्ता रायगिहे नगरे रूवाइ जाणामि-पासामि । सेस दसण-अविवच्चासे भवति । से तेणट्ठेण गोयमा ! एव वुच्चइ—तहाभाव जाणइ-पासइ, नो अण्णहाभाव जाणइ-पासइ° ।।

२३७. अणगारे ण भते ! भाविअप्पा अमायी सम्मदिट्ठी वीरियलद्धीए वेउव्वियलद्धीए ओहिनाणलद्धीए रायगिह नगर, वाणारसि च नगरि, अतरा एग मह जणवयग्ग[3] समोहए, समोहणित्ता रायगिह नगर, वाणारसि च नगरि, अतरा[4] एग मह जणवयग्ग जाणइ-पासइ ?
हता जाणइ-पासइ ।।

---

१. तहारूव (क) ।
२. स० पा०—वितिओ वि आलावगो एव चेव नवर वाणारसीए समोहणा णेयव्वा । रायगिहे नगरे रूवाइ जाणइ पासइ ।
३. जणवयवग्ग (क, म, स), जणवदग्ग (ता) ।
४. त च अतरा (क, ता, ब, म) ।

२३८. से भंते ! किं तहाभावं जाणइ-पासइ ? अण्णहाभावं जाणइ-पासइ ?
गोयमा ! तहाभावं जाणइ-पासइ, नो अण्णहाभावं जाणइ-पासइ ॥

२३९. से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ—तहाभावं जाणइ-पासइ ? नो अण्णहाभावं जाणइ-पासइ ?
गोयमा ! तस्स णं एवं भवति—नो खलु एस रायगिहे नगरे, नो खलु एस वाणारसी नगरी, नो खलु एस अंतरा एगे जणवयग्गे, एस खलु ममं वीरियलद्धी वेउव्वियलद्धी ओहिनाणलद्धी इड्ढी जुती जसे बले वीरिए पुरिसक्कार-परक्कमे लद्धे पत्ते अभिसमण्णागए। सेसं दंसण-अविवच्चासे भवइ। से तेणट्ठेणं गोयमा ! एवं वुच्चइ—तहाभावं जाणइ-पासइ, नो अण्णहाभावं जाणइ-पासइ ॥

२४०. अणगारे णं भंते ! भावियप्पा बाहिरए पोग्गले अपरियाइत्ता पभू एगं महं गामरूवं वा नगररूवं वा जाव[1] सण्णिवेसरूवं वा विउव्वित्तए ?
नो तिणट्ठे समट्ठे ॥

२४१. [2]•अणगारे णं भंते ! भावियप्पा बाहिरए पोग्गले परियाइत्ता पभू एगं महं गामरूवं वा नगररूवं वा जाव सण्णिवेसरूवं वा विउव्वित्तए ?
हंता पभू° ॥

२४२. अणगारे णं भंते ! भावियप्पा केवइयाइं पभू गामरूवाइं विकुव्वित्तए ?
गोयमा ! से जहानामए—जुवतिं जुवाणे हत्थेणं हत्थे गेण्हेज्जा तं चेव जाव[3] विकुव्विसु वा, विकुव्वति वा, विकुव्विस्सति वा ॥

२४३. एवं जाव[4] सण्णिवेसरूवं वा ॥

आयरक्ख-पदं

२४४ चमरस्स णं भंते ! असुरिंदस्स असुररण्णो कइ आयरक्खदेवसाहस्सीओ पण्णत्ताओ ?
गोयमा ! चत्तारि चउसट्ठीओ आयरक्खदेवसाहस्सीओ पण्णत्ताओ। ते णं आयरक्खा—वण्णओ[5] ॥

२४५. एवं सव्वेसिं इंदाणं जस्स जत्तिया आयरक्खा ते भाणियव्वा[6] ॥

२४६. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति[7] ॥

———

१ भ० ३।४९।
२. सं० पा०—एवं बित्तिओ वि आलावगो नवरं बाहिरए पोग्गले परियाइत्ता पभु।
३. भ० ३।१८६।
४. भ० ३।४९।
५. राय० सू० ६६४, वण्णओ जहा रायपसेणइज्जे (व, म), अयं च पुस्तकान्तरे साक्षाद् दृश्यत एव (वृ)।
६ प० २।
७. भ० १।५१।

सत्तमो उद्देसो

लोगपाल-पदं

२४७. रायगिहे नगरे जाव पज्जुवासमाणे एव वयासी—सक्कस्स ण भते ! देविदस्स देवरण्णो कति लोगपाला पण्णत्ता ?
गोयमा ! चत्तारि लोगपाला पण्णत्ता, त जहा—सोमे जमे वरुणे वेसमणे ।।

२४८. एएसि ण भते ! चउण्हं लोगपालाण कति विमाणा पण्णत्ता ?
गोयमा ! चत्तारि विमाणा पण्णत्ता, त जहा—सभप्पभे वरसिट्ठे सयजले वग्गू ।।

२४९. कहि ण भते ! सक्कस्स देविदस्स देवरण्णो सोमस्स महारण्णो सभप्पभे नाम महाविमाणे पण्णत्ते ?
गोयमा ! जवुद्दीवे दीवे मदरस्स पव्वयस्स दाहिणे ण इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए वहुसमरमणिज्जाओ भूमिभागाओ उड्ढ चदिम-सूरिय[1]-गहगण[2]-नक्खत्त तारारूवाण वहूइ जोयणाइ जाव[3] पच वडेसया पण्णत्ता, त जहा—असोगवडेसए, सत्तवण्णवडेसए, चपयवडेसए, चूयवडेसए[4], मज्झे सोहम्मवडेसए ।।

सोम-पद

२५० तस्स ण सोहम्मवडेसयस्स महाविमाणस्स पुरत्थिमे ण सोहम्मे कप्पे असखेज्जाइ जोयणाइ वीइवइत्ता, एत्थ ण सक्कस्स देविदस्स देवरण्णो सोमस्स महारण्णो सभप्पभे नाम महाविमाणे पण्णत्ते—अद्धतेरसजोयणसयसहस्साइ[5] आयाम-विक्खभेण, उयालीस[6] जोयणसयसहस्साइ बावन्न च सहस्साइ अट्ठ य[7] अडयाले जोयणसए किंचि विसेसाहिए परिक्खेवेण पण्णत्ते । जा सूरियाभविमाणस्स वत्तव्वया सा अपरिसेसा भाणियव्वा जाव[8] अभिसेओ, नवर—सोमो देवो ।।

२५१ सभप्पभस्स ण महाविमाणस्स अहे, सपक्खि, सपडिदिसि असखेज्जाइ जोयणसहस्साइ[9] ओगाहित्ता, एत्थ ण सक्कस्स देविदस्स देवरण्णो सोमस्स महारण्णो

---

१ सूरिम (क, ता, म) ।
२ गह (ता) ।
३ राय० सू० १२४, १२५ ।
४ भूय० (व, म, स) ।
५. अड्ढ? (ता) ।
६. ऊया० (क, ता, व) ।
७. × (अ, स) ।
८ राय० सू० १२६-१८० ।
९. जोयणसयसहस्साइ (क, व) ।

सोमा नाम रायहाणी पण्णत्ता—एग जोयणसयसहस्स आयाम-विक्खभेणं जंबु-द्दीवप्पमाणा। वेमाणियाण पमाणस्स अद्ध नेयव्व[1] जाव[2] ओवारियलेण[3] सोलस जोयणसहस्साइं आयाम-विक्खभेण, पण्णास जोयणसहस्साइं पच य सत्ताणउए जोयणसते किंचि विसेसूणे परिक्खेवेण पण्णत्त। पासायाण चत्तारि परिवाडीओ नेयव्वाओ, सेसा नत्थि॥

२५२. सक्कस्स ण देविदस्स देवरण्णो सोमस्स महारण्णो इमे देवा आणा-उववाय-वयण-निद्देसे चिट्ठति, त जहा—सोमकाइया इ वा, सोमदेवयकाइया इ वा, विज्जुकुमारा, विज्जुकुमारीओ, अग्गिकुमारा, अग्गिकुमारीओ, वायकुमारा[4], वायकुमारीओ[5], चदा, सूरा, गहा णक्खत्ता, तारारूवा—जे यावण्णे तहप्पगारा सव्वे ते तब्भत्तिया, तप्पक्खिया, तब्भारिया सक्कस्स देविदस्स देवरण्णो सोमस्स महारण्णो आणा-उववाय-वयण-निद्देसे चिट्ठति॥

२५३ जबुद्दीवे दीवे मदरस्स पव्वयस्स दाहिणे ण जाइ इमाइ समुप्पज्जति, तं जहा—गहदडा इ वा, गहमुसला इ वा, गहगज्जिया इ वा, गहजुद्धा[6] इ वा, गहसिघाडगा इ वा, गहावसव्वा इ वा, 'अब्भा इ वा'[7] अब्भरुक्खा इ वा, सझा इ वा, गधव्वनगरा इ वा, उक्कापाया इ वा, दिसिदाहा इ वा, गज्जिया इ वा, विज्जुया इ वा, पसुवुट्ठी इ वा जूवे इ वा, जक्खालित्तए त्ति वा, धूमिया इ वा, महिया इ वा, रयुग्घाए त्ति वा, चदोवरागा इ वा सूरोवरागा इ वा, चदपरिवेसा[8] इ वा, सूरपरिवेसा[9] इ वा, पडिचदा इ वा, पडिसूरा इ वा, इदधणू इ वा, उदगमच्छा[10] इ वा, कपिहसिया इ वा, अमोहा इ वा, पाईणवाया इ वा, पईणवाया इ वा[11], •दाहिणवाया इ वा, उदीणवाया इ वा, उड्ढवाया इ वा, अहोवाया इ वा, तिरियवाया इ वा, विदिसीवाया इ वा, वाउब्भामा इ वा, वाउक्कलिया इ वा, वायमडलिया इ वा, उक्कलियावाया इ वा, मडलियावाया इ वा, गुजावाया इ वा, झझावाया इ वा°, सवट्टयवाया इ वा, गामदाहा इ वा, जाव[12] सण्णिवेसदाहा इ वा, पाणक्खया, जणक्खया, धणक्खया, कुलक्खया, वसणब्भूया मणारिया[13]—जे यावण्णे तहप्पगारा ण ते सक्कस्स देवि-

---

१ राय० सू० २०४-२०८।
२ भ० २।१२१।
३. उवगारियलेण (अ, स)।
४. वायु° (क), वाउ° (ता)।
५ वायु° (क); वाउ° (ता)।
६. एव गहजुद्धा (अ, क, ता, व, म, स)।
७. × (अ, ता, म, स)।
८. °परिएसा (व, म)।
९. °परिएसा (व, म)।
१० उदगमच्छगे (व, म)।
११. स० पा०—पईणवाया इ वा जाव सवट्टयवाया।
१२. भ० १।४९।
१३. मकारोलाक्षणिक।

दस्स देवरण्णो सोमस्स महारण्णो अण्णाया अदिट्ठा असुया अमुया[1] अविण्णाया, तेसिं वा सोमकाइयाणं देवाणं ।।

२५४ सक्कस्स ण देविंदस्स देवरण्णो सोमस्स महारण्णो इमे देवा अहावच्चा अभिण्णाया[2] होत्था, तं जहा—इंगालए वियालए लोहियक्खे सण्णिच्चरे[3] चदे सूरे सूक्के बुहे वहस्सई राहू ।।

२५५. सक्कस्स णं देविंदस्स देवरण्णो सोमस्स महारण्णो सतिभाग[4] पलिओवम ठिई पण्णत्ता । अहावच्चाभिण्णायाण[5] देवाणं एग पलिओवम ठिई पण्णत्ता । एमहिड्ढीए जाव[6] महाणुभागे सोमे महाराया ।।

यम-पदं

२५६ कहि णं भते ! सक्कस्स देविंदस्स देवरण्णो जमस्स महारण्णो वरसिट्ठे नाम महाविमाणे पण्णत्ते ?

गोयमा ! सोहम्मवडेसयस्स[7] महाविमाणस्स दाहिणे ण सोहम्मे कप्पे असखेज्जाइ जोयणसहस्साइ वीईवइत्ता, एत्थ ण सक्कस्स देविंदस्स देवरण्णो जमस्स महारण्णो वरसिट्ठे नाम महाविमाणे[8] पण्णत्ते—अद्धतेरसजोयणसय-सहस्साइ—जहा सोमस्स विमाण तहा जाव[9] अभिसेओ। रायहाणी तहेव जाव[10] पासायपतीओ ।

२५७ सक्कस्स ण देविंदस्स देवरण्णो जमस्स महारण्णो इमे देवा आणा[11]-•उववाय-वयण-निद्देसे° चिट्ठति, तं जहा—जमकाइया इ वा, जमदेवयकाइया[12] इ वा, पेतकाइया इ वा, पेतदेवयकाइया इ वा, असुरकुमारा, असुरकुमारीओ, कदप्पा, निरयपाला[13], अभियोगा[14]—जे यावण्णे तहप्पगारा[15] सव्वे ते तब्भत्तिगा, तप्पक्खिया तब्भारिया सक्कस्स देविंदस्स देवरण्णो जमस्स महारण्णो आणा[16]-•उववाय-वयण-निद्देसे° चिट्ठति ।।

---

१ असुया (अ, क, म); अस्मृतपदस्य असुय अमुय इतिरूपद्वय भवति । वृत्तिकृता असुयत्ति अस्मृता इति व्याख्यातम् ।
२ अहाभिण्णाता (क, ता)
३ सणिचरे (अ), सण्णिच्छरे (क, ब, म); सणिचरे (ता) ।
४ सइभाग (ता), सत्तिभाग (ब, म) ।
५ अहापच्चभिण्णायाण (क), अहापच्चभिण्णाताण (ता) ।
६ भ० ३।४ ।
७. सोहम्मवडसयस्स (स) ।
८. विमाणो (क ता, ब) ।
९ भ० ३।२५० ।
१० भ० ३।२५१ ।
११ स० पा०—आणा जाव चिट्ठति ।
१२ जमदेवतक्काइया (ता), जमदेवकाइया (म, स) ।
१३ निरयवाला (अ) ।
१४ आभियोग्गा (ता, ब) ।
१५ तप्पगारा (ता, ब) ।
१६ स० पा०—आणा जाव चिट्ठति ।

२५८. जंबुद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स दाहिणे णं जाइं इमाइं समुप्पज्जंति, तं जहा—डिंबा इ वा, डमरा इ वा, कलहा इ वा, बोला इ वा, खारा इ वा, महाजुद्धा इ वा, महासंगामा इ वा, महासत्थनिवडणा इ वा, महापुरिसनिवडणा[1] इ वा, महारुहिरनिवडणा इ वा, दुब्भूया इ वा, कुलरोगा इ वा, गामरोगा इ वा, मंडलरोगा इ वा, नगररोगा इ वा, सीसवेयणा इ वा, अच्छिवेयणा इ वा कण्णवेयणा इ वा, नहवेयणा इ वा, दंतवेयणा इ वा, इंदग्गहा इ वा, खंदग्गहा इ वा, कुमारग्गहा इ वा, जक्खग्गहा इ वा, भूयग्गहा[2] इ वा, एगाहिया इ वा, बेहिया इ वा, तेहिया इ वा, चाउत्थया[3] इ वा, उव्वेयगा इ वा, कासा इ वा, 'सासाइवा, सोसा'[4] इ वा, जरा इ वा, दाहा इ वा, कच्छकोहा इ वा, अजीरगा इ वा, पंडुरोगा इ वा, अरिसा[5] इ वा, भगंदला[6] इ वा, हिययसूला इ वा, मत्थयसूला इ वा, जोणिसूला इ वा, पासंसूला इ वा, कुच्छिसूला इ वा, गाममारी इ वा, नगरमारी इ वा, खेडमारी इ वा, कब्बड-मारी इ वा, दोणमुहमारी इ वा, मडबमारी इ वा, पट्टणमारी इ वा, आसममारी इ वा, संवाहमारी इ वा, सण्णिवेसमारी इ वा, पाणक्खया, जणक्खया, धणक्खया, कुलक्खया, 'वसणब्भूया मणारिया'[7] जे यावण्णे[8] तहप्पगारा ण ते सक्कस्स देविंदस्स देवरण्णो जमस्स महारण्णो अण्णाया अदिट्ठा असुया अमुया अविण्णाया, तेसिं वा जमकाइयाणं देवाणं ॥

२५९ सक्कस्स देविंदस्स देवरण्णो जमस्स महारण्णो इमे देवा अहावच्चा अभिण्णाया[9] होत्था, तं जहा—

संगहणी-गाहा

अंबे अंबरिसे चेव, सामे सबले त्ति यावरे।
रुद्दोवरुद्दे काले य, महाकाले त्ति यावरे ॥१॥
'असिपत्ते धणू कुंभे'[10], वालुए[11] वेतरणी[12] त्ति य।
खरस्सरे महाघोसे, एते[13] पण्णरसाहिया ॥२॥

---

१. एवं महापुरिस° (अ, क, ता, ब, म स)।
२. भूमग्गहा (ता)।
३ चतुत्थया (ता, म)।
४. खासा इ वा सासा (अ)।
५. अरसा (अ), हरिसा ब, म)।
६. भगदरा (ता)।
७. ° भूयमणारिया (अ, क ता); °भूतामणारिया (ब)।
८ जे या वि अन्ने (ब, म)।
९. अहाभिण्णाया (क, ता)।
१० असी य असिपत्ते कुंभे (क, वृ), असिपत्त धणू कुंभे (वृपा)।
११. वालू (अ, ता, ब, म, स)।
१२ वेदरणी (ब, म)।
१३ एमेए (क, ब, वृ)।

२६०. सक्कस्स ण देविंदस्स देवरण्णो जमस्स महारण्णो सतिभागं पलिश्र ठिई पण्णत्ता, श्रहावच्चाभिण्णायाण देवाण एग पलिश्रोवम ठिई पण्णत्ता। एमहिड्ढीए जाव[1] महाणुभागे जमे महाराया ॥

वरुण-पदं

२६१ कहि ण भते ! सक्कस्स देविंदस्स देवरण्णो वरुणस्स महारण्णो सयजले नाम महाविमाणे पण्णत्ते ?
गोयमा ! तस्स ण सोहम्मवडेसयस्स महाविमाणस्स पच्चत्थिमे ण जहा सोमस्स तहा विमाण-रायधाणीश्रो भाणियव्वा जाव[2] पासादवडेसया, नवर—नाम-नाणत्त ॥

२६२ सक्कस्स ण देविंदस्स देवरण्णो वरुणस्स महारण्णो[3] •इमे देवा श्राणाउववाय-वयण-निद्देसे° चिट्ठति, त जहा—वरुणकाइया इ वा, वरुणदेवयकाइया इ वा, नागकुमारा, नागकुमारीश्रो, उदहिकुमारा, उदहिकुमारीश्रो, थणियकुमारा, थणियकुमारीश्रो—जे यावण्णे तहप्पगारा सव्वे ते तब्भत्तिया[4], •तप्पक्खिया, तब्भारिया सक्कस्स देविंदस्स देवरण्णो वरुणस्स महारण्णो श्राणा-उववाय-वयण-निद्देसे° चिट्ठति ॥

२६३ जंबुद्दीवे दीवे मदरस्स पव्वयस्स दाहिणे ण जाइ इमाइ समुप्पज्जति, त जहा—श्रइवासा इ वा, मदवासा इ वा, सुवुट्ठी इ वा, दुवुट्ठी[5] इ वा, उदब्भेदा[6] इ वा, उदप्पीला[7] इ वा, श्रोवाहा[8] इ वा, पवाहा इ वा, गामवाहा इ वा, जाव[9] सण्णिवेसवाहा इ वा, पाणक्खया[10], •जणक्खया, धणक्खया, कुलक्खया, वसणब्भूया मणारिया जेयावण्णे तहप्पगारा ण ते सक्कस्स देविदस्स देवरण्णो वरुणस्स महारण्णो श्रण्णाया श्रदिट्ठा श्रसुया श्रमुया श्रविण्णाया°, तेसिं वा वरुणकाइयाण देवाण ॥

२६४. सक्कस्स ण देविंदस्स देवरण्णो वरुणस्स महारण्णो इमे देवा श्रहावच्चाभिण्णाया होत्था, त जहा—

कक्कोडए कद्दमए, श्रजणे सखवालए पुडे।
पलासे मोए जए, दहिमुहे[11] श्रयपुले कायरिए ॥

---

१. भ० ३।४।
२ भ० ३।२५०, २५१।
३ स० पा०—महारण्णो जाव चिट्ठति।
४. स० पा०—तब्भत्तिया जाव चिट्ठति।
५. मदवुट्ठी (अ, क, ता, ब, म)।
६. दउब्भेदा (क, ब)।
७ दउप्पीला (क, ब)।
८ उदवाहा (अ, क)।
९ भ० ३।२५८।
१० स० पा०—पाणक्खया जाव तेसिं।
११ ओहिमुहे (क); उदधिमुहे (ता)।

२६५. सक्कस्स ण देविंदस्स देवरण्णो वरुणस्स महारण्णो देसूणाइ दो पलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता। अहावच्चाभिण्णायाण देवाण एग पलिओवम ठिई पण्णत्ता। एमहिड्ढीए जाव[1] महाणुभागे वरुणे महाराया ॥

वेसमण-पदं

२६६. कहि ण भते ! सक्कस्स देविदस्स देवरण्णो वेसमणस्स महारण्णो वग्गू नाम महाविमाणे पण्णत्ते ?
गोयमा ! तस्स ण सोहम्मवडेसयस्स महाविमाणस्स उत्तरे ण जहा सोमस्स विमाण-रायहाणि-वत्तव्वया तहा नेयव्वा जाव[2] पासादवडेसया ॥

२६७ सक्कस्स ण देविदस्स देवरण्णो वेसमणस्स महारण्णो इमे देवा आणा-उववाय-वयण-निद्देसे चिट्ठति, त जहा—वेसमणकाइया इ वा, वेसमणदेवयकाइया इ वा, सुवण्णकुमारा, सुवण्णकुमारीओ, 'दीवकुमारा, दीवकुमारीओ,'[3] दिसाकुमारा, दिसाकुमारीओ, वाणमतरा, वाणमतरीओ—जे यावण्णे तहप्पगारा सव्वे ते तब्भत्तिया[4] •तप्पक्खिया तब्भारिया सक्कस्स देविंदस्स देवरण्णो वेसमणस्स महारण्णो आणा-उववाय-वयण-निद्देसे° चिट्ठति ॥

२६८. जबुद्दीवे दीवे मदरस्स पव्वयस्स दाहिणे ण जाइ इमाइ समुप्पजति, त जहा—अयागरा इ वा, तउयागरा इ वा, तबागरा इ वा, 'सीसागरा इ वा, हिरण्णागरा इ वा'[5] सुवण्णागरा इ वा, रयणागरा इ वा, वइरागरा इ वा, वसुहारा इ वा, हिरण्णवासा इ वा, सुवण्णवासा इ वा, रयणवासा इ वा, वइरवासा इ वा, आभरणवासा इ वा, पत्तवासा इ वा, पुप्फवासा इ वा, फलवासा इ वा, वीय-वासा इ वा, मल्लवासा इ वा, वण्णवासा इ वा, चुण्णवासा इ वा, गधवासा इ वा, वत्थवासा इ वा, हिरण्णवुट्ठी इ वा, सुवण्णवुट्ठी इ वा, रयणवुट्ठी इ वा, वइरवुट्ठी इ वा, आभरणवुट्ठी इ वा, पत्तवुट्ठी इ वा, पुप्फवुट्ठी इ वा, फलवुट्ठी इ वा, वीयवुट्ठी इ वा, मल्लवुट्ठी इ वा, वण्णवुट्ठी इ वा, चुण्णवुट्ठी इ वा, गधवुट्ठी इ वा, वत्थवुट्ठी इ वा, भायणवुट्ठी इ वा, खीरवुट्ठी इ वा, सुकाला[6] इ वा, दुक्काला इ वा, अप्पग्घा इ वा, महग्घा इ वा, सुभिक्खा इ वा, दुब्भिक्खा इ वा, कयविक्कया इ वा, सण्णिही इ वा, सण्णिचया इ वा, निही इ वा, निहाणाइ वा—चिरपोराणाइ वा, पहीणसामियाइ वा, पहीणसेतुयाइ वा, पहीणमग्गाइ[7] वा, पहीणगोत्तागाराइ वा, उच्छण्णसामियाइ वा, उच्छण्णसेतुयाइ वा, (उच्छण्णमग्गा इ वा ?) उच्छणगोत्तागारा इ वा, सिंघाडग-तिग-चउक्क-

१. भ० ३।४।
२. भ० ३।२५०, २५१।
३. × (क, ता, म)।
४. स० पा०—तब्भत्तिया जाव चिट्ठति।
५. एव सिसाग हिरण्ण° (ता)।
६ सुयाला (ता)।
७ × (क, ता, व, म)।

चच्चर-चउम्मुह-महापह-पहेसु वा' नगरनिद्धमणेसु[1] वा, सुसाण-गिरि-कदर-सति-सेलोवट्ठाण--भवणगिहेसु संनिक्खित्ताइ[2] चिट्ठति, न ताइ सक्कस्स देविंदस्स देवरण्णो वेसमणस्स महारण्णो 'अण्णायाइ अदिट्ठाइ असुयाइ अमुयाइ अविण्णयाइ'[3] तेसिं वा वेसमणकाइयाण देवाण ॥

२६९ सक्कस्स देविंदस्स देवरण्णो वेसमणस्स महारण्णो इमे देवा अहावच्चाभिण्णाया होत्था, त जहा—पुण्णभद्दे माणिभद्दे सालिभद्दे सुमणभद्दे चक्करक्खे पुण्णरक्खे सव्वाणे सव्वजसे सव्वकामे[4] समिद्धे अमोहे असगे[5] ॥

२७०. सक्कस्स ण देविंदस्स देवरण्णो वेसमणस्स महारण्णो दो पलिओवमाइ ठिई पण्णत्ता। अहावच्चाभिण्णायाण देवाण एग पलिओवम ठिई पण्णत्ता। एमहिड्ढीए जाव[6] महाणुभागे वेसमणे महाराया ॥

२७१ सेव भते! सेव भते! त्ति[7] ॥

अट्ठमो उद्देसो

२७२ रायगिहे नगरे जाव[8] पज्जुवासमाणे एव वयासी—असुरकुमाराण भते! देवाणं कइ देवा आहेवच्च जाव[9] विहरति?
गोयमा! दस देवा आहेवच्च जाव विहरति, त जहा—चमरे असुरिंदे असुरराया, सोमे, जमे, वरुणे, वेसमणे, वली वइरोयणिंदे वइरोयणराया, सोमे, जमे, वेसमणे[10], वरुणे ॥

---

१. °द्धवणेसु (वृ)।
२. सनिक्खित्ता (अ, ता)।
३ अन्नाया अदिट्ठा असुया असुया अविण्णाया (अ, क, ता, व)।
४. सव्वकाम (अ, ता, म)।
५ असमे (अ), असते (क, स)।
६ भ० ३।४।
७ भ० १।५१।
८ भ० १।४-१०।
९ भ० ३।४।
१०. स्थानागे ४।१२२ सूत्रे 'दाक्षिणात्यलोकपालेषु यौ तृतीयचतुर्थो तौ ओदीच्येषु चतुर्थतृतीयौ स्त। प्रस्तुतसूत्रादर्शेषु वृत्तौ च नैष क्रमो लभ्यते। वृत्तिकृता अस्य क्रमस्य पाठान्तररूपेणोल्लेखः कृत.—इह च पुस्तकान्तरेऽयमर्थो दृश्यते—दाक्षिणात्येषु लोकपालेषु प्रतिसूत्र यौ तृतीयचतुर्थौ तावौदीच्येषु चतुर्थतृतीयाविति। किन्तु वैमानिकदेवेषु वृत्तिकृता तृतीयचतुर्थयोर्व्यत्यय स्वीकृत — सनत्कुमारादीन्द्रयुग्मेषु पूर्वेन्द्रापेक्षयोत्तरेन्द्रसम्बन्धिना लोकपालाना तृतीयचतुर्थयो र्व्यत्ययो वाच्य (वृ)। असौ क्रम पूर्वक्रमाद् भिन्नोस्ति। अस्माभि सर्वत्र स्थानाङ्गानुसारी एक एव क्रम. स्वीकृत.।

२७३ नागकुमाराण भते ![1] •देवाण कइ देवा आहेवच्च जाव[2] विहरंति ?०
गोयमा ! दस देवा आहेवच्च जाव विहरति, त जहा—धरणे ण नागकुमारिंदे नागकुमारराया, कालवाले, कोलवाले, सेलवाले, संखवाले, भूयाणंदे नागकुमारिंदे नागकुमारराया, कालवाले, कोलवाले, 'सखवाले, सेलवाले'[3] ॥

२७४ जहा नागकुमारिंदाण एताए वत्तव्वयाए नीय एव इमाण नेयव्व—
सुवण्णकुमाराण—वेणुदेवे, वेणुदाली, चित्ते, विचित्ते, चित्तपक्खे, विचित्तपक्खे।
विज्जुकुमाराण—हरिकत-हरिस्सह-पभ-सुप्पभ-पभकत-सुप्पभकता।
अग्गिकुमाराण—अग्गिसिह-अग्गिमाणव-तेउ-तेउसिह[4]-तेउकत-तेउप्पभा।
दीवकुमाराण—पुण्ण-विसिट्ठ[5]-रूय-रूयस-रुयकत-रुयप्पभा।
उदहीकुमाराण—जलकत-जलप्पभ-जल-जलरुय[6]-जलकत-जलप्पभा।
दिसाकुमाराण—अमितगति, अमितवाहण-तुरियगति-खिप्पगति-सीहगति-सीहविक्कमगती।
वाउकुमाराण—वेलव-पभजण-काल-महाकाल-अजण-रिट्ठा।
थणियकुमाराणं—घोस-महाघोस-आवत्त-वियावत्त-नदियावत्त-महानदियत्ता।
एव भाणियव्व जहा[7] असुरकुमारा[8] ॥

२७५ पिसायकुमाराण[9] •भते ! देवाण कइ देवा आहेवच्च जाव[10] विहरंति ?०
गोयमा ! दो देवा आहेवच्चं जाव विहरति, त जहा—

संगहणी-गाहा

काले य महाकाले, सुरूव-पडिरूव-पुण्णभद्दे य।
अमरवई माणिभद्दे, भीमे य तहा महाभीमे ॥१॥
किन्नर-किंपुरिसे खलु, सप्पुरिसे खलु तहा महापुरिसे।
अइकाय-महाकाए, गीयरई चेव गीयजसे ॥२॥

एते वाणमतराण देवाण ॥

---

१. स० पा०—पुच्छा।
२ भ० ३।४।
३. सेलवाले सखवाले (अ, क, म)।
४. तेउसीह (अ)।
५. वसिट्ठ (ता, व); विसट्ठ (स)।
६. जलरूय (अ), जलरते (ठा० ४।१२२)।
७. भ० ३।२७२।
८ अतोग्रे आदर्शेषु वृत्तौ च साकेतिक पाठो वर्तते। वृत्तिकृता तस्योल्लेख एव कृत— सो १ का २ चि ३ प्प ४ ते ५ रु ६ ज ७ तु ८ का ९ आ १० इत्यनेनाक्षरदशकेन दाक्षिणभवनपतीन्द्राणा प्रथमलोकपालनामानि सूचितानि, वाचनान्तरे त्वेतान्येव गाथाया, साचेयम्—सोमे य १ महाकाले २ चित्त ३ प्पभ ४ तेउ ५ तह रुए चेव ६। जल तह ७ तुरिय गई य ८ काले ९ आउत्त १० पढमा उ॥ एव द्वितीयादयोप्ययभ्यूह्या (वृ)।
९ स० पा०—पुच्छा।
१०. भ० ३।४।

२७६. जोइसियाण देवाण दो देवा आहेवच्च जाव[1] विहरति, त जहा—चदे य, सूरे य ।।

२७७. सोहम्मीसाणेसु ण भते ! कप्पेसु कइ देवा आहेवच्च जाव[2] विहरति ?
गोयमा ! दस देवा आहेवच्च जाव विहरति, त जहा—सक्के देविंदे देवराया, सोमे, जमे, वरुणे, वेसमणे। ईसाणे देविंदे देवराया, सोमे, जमे, 'वेसमणे, वरुणे'[3]।
एसा वत्तव्वया सव्वेसु वि कप्पेसु एए चेव भाणियव्वा। जे य इदा ते य भाणियव्वा ।।

२७८ सेव भते ! सेव भते ! त्ति[4] ।।

नवमो उद्देसो

२७९. रायगिहे जाव[5] एव वयासी—कइविहे ण भते ! इदियविसए पण्णत्ते ?
गोयमा ! पचविहे इंदियविसए[6] पण्णत्ते, त जहा—सोतिंदियविसए चक्खिदियविसए घाणिंदियविसए रसिंदियविसए फासिंदियविसए। जीवाभिगमे जोइसियउद्देसओ नेयव्वो अपरिसेसो ।।

---

१ भ० ३।४।
२ भ० ३।४।
३ वरुणे वेसमणे (क, व, म, स)।
४ भ० १।५१।
५ भ० १।४-१०।
६ वाचनान्तरे च—'इदियविसए उच्चावय—सुब्भिणो' त्ति दृश्यते, तत्र इन्द्रियविषयसूत्र दर्शितमेव, उच्चावयसूत्र त्वेवम्—'से नूण भते ! उच्चावएहिं सद्दपरिणामेहिं परिणममाणा पोग्गला परिणमतीति वत्तव्व सिया ? हता गोयमा !' इत्यादि, 'सुब्भिणो त्ति, इद सूत्र पुनरेवम्—'से नूण भते ! सुब्भिसद्दपोग्गला दुब्भिसद्दत्ताए परिणमति ? हता गोयमा !' इत्यादि।

दसमो उद्देसो

२८० रायगिहे जाव[1] एवं वयासी—चमरस्स णं भंते ! असुरिंदस्स असुररण्णो कइ परिसाओ पण्णत्ताओ ?
गोयमा ! तओ परिसाओ पण्णत्ताओ, तं जहा—समिया, चंडा, जाया। एवं जहाणुपुव्वीए 'जाव अच्चुओ[2]' कप्पो ॥

२८१ सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति[3] ॥

---

१. भ० १।४-१०।

२. जावच्चुओ (अ, क, व), ठा० ३।१४३-१६०; जी० ३।

३. भ० १।५१।

चउत्थं सतं

१, २, ३, ४ उद्देसो

संगहणी-गाहा

चत्तारि विमाणेहिं, चत्तारि य होंति रायहाणीहिं।
नेरइए लेस्साहि य, दस उद्देसा चउत्थसए ॥१॥

१ रायगिहे नगरे जाव[1] एवं वयासी—ईसाणस्स णं भंते! देविंदस्स देवरण्णो कइ लोगपाला पण्णत्ता?
गोयमा! चत्तारि लोगपाला पण्णत्ता, तं जहा—सोमे, जमे, 'वेसमणे, वरुणे[2]' ॥

२ एएसि णं भंते! लोगपालाणं कइ विमाणा पण्णत्ता?
गोयमा! चत्तारि विमाणा पण्णत्ता, तं जहा—सुमणे, सव्वओभद्दे, वग्गू, सुवग्गू ॥

३ कहि णं भंते! ईसाणस्स देविंदस्स देवरण्णो सोमस्स महारण्णो सुमणे नामं महाविमाणे पण्णत्ते?
गोयमा! जंबुद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स उत्तरे णं इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए जाव[3] ईसाणे नामं कप्पे पण्णत्ते। तत्थ णं जाव[4] पंच वडेंसया पण्णत्ता, तं जहा—अंकवडेंसए, फलिहवडेंसए, रयणवडेंसए, जायरूववडेंसए, मज्झे[5] ईसाणवडेंसए ॥

---

१. भ० १।४-१०।
२ वरुणे वेसमणे (ब)।
३ प० २।
४ प० २।
५ मज्झे तत्थ (अ), मज्झे यत्थ (क, ता, म)।

४. तस्स णं ईसाणवडेंसयस्स महाविमाणस्स पुरत्थिमे ण तिरियमसंखेज्जाइ जोयणसहस्साइ वीईवइत्ता, एत्थ ण ईसाणस्स देविंदस्स देवरण्णो सोमस्स महारण्णो सुमणे नाम महाविमाणे पण्णत्ते अद्धतेरसजोयसणसयहस्साइ, जहा सक्कस्स वत्तव्वया तइयसए तहा ईसाणस्स वि जाव[1] अच्चणिया समत्ता ।।

५. चउण्ह वि लोगपालाण विमाणे-विमाणे उद्देसओ, चऊसु वि विमाणेसु चत्तारि उद्देसा अपरिसेसा, नवर—ठिईए नाणत्त—

संगहणी-गाहा

आदि दुय तिभागूणा, पलिया धणयस्स होंति दो चेव ।
दो सतिभागा वरुणे, पलियमहावच्चदेवाण ।।१।।

५, ६, ७, ८ उद्देसो

६ रायहाणीसु वि चत्तारि उद्देसा भाणियव्वा जाव एमहिड्ढीए जाव[2] वरुणे महाराया ।।

नवमो उद्देसो

७. नेरइए ण भते ! नेरइएसु उववज्जइ ? अनेरइए[3] नेरइएसु उववज्जइ ? पण्णवणाए लेस्सापए तइओ उद्देसओ भाणियव्वो जाव नाणाइं ।।

---

१. भ० ३।२५०-२७१ ।
२. भ० ३।२५०-२७१ ।
३. अनेरइए ण भते ! (अ, स) ।

दसमो उद्देसो

८. से नूण भते ! कण्हलेस्सा नीललेस्स पप्प तारूवत्ताए, तावण्णत्ताए, तागधत्ताए, तारसत्ताए, ताफासत्ताए भुज्जो-भुज्जो परिणमति ?
हता गोयमा ! कण्हलेसा नीललेस पप्प तारूवत्ताए, तावण्णत्ताए, तागधत्ताए, तारसत्ताए, ताफासत्ताए भुज्जो-भुज्जो परिणमति। एव चउत्थो उद्देसओ पण्णवणाए चेव लेस्सापदे नेयव्वो जाव[1]—

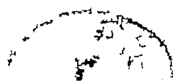
संगहणी-गाहा

परिणाम-वण्ण-रस-गध-सुद्ध-अपसत्थ-सकिलिट्ठुण्हा ।
गइ-परिणाम-पएसोगाह-वग्गणायणमप्पबहु ॥१॥

९. सेव भते ! सेव भते ! त्ति[2] ॥

---

१ जावेत्यादि परिणामेत्यादि द्वारगाथोक्तद्वार-परिसमाप्तिं यावदित्यर्थ. (वृ) ।
२ भ० १।५१ ।



पंचमं सतं

पढमो उद्देसो

संगहणी-गाहा

१ चप-रवि २ अनिल ३ गठिय ४ सद्दे ५-६ छउमाउ ७[1] एयण ८ नियठं ।
९ रायगिह १० चपा-चदिमा य दस पचमम्मि सए ॥१॥

जंबुद्दीवे सूरिय-वत्तव्वया-पदं

१. तेण कालेणं तेण समएण चपा नामं नगरी होत्था—वण्णओ[2] ॥

२. तीसे ण चपाए नगरीए पुण्णभद्दे नामं चेइए होत्था—वण्णओ[3] । सामी समोसढे जाव[4] परिसा पडिगया ॥

३. तेणं कालेण तेण समएणं समणस्स भगवओ महावीरस्स जेट्ठे अतेवासी इंदभूई नाम अणगारे गोयमे गोत्तेण जाव[5] एव वयासी—जवुद्दीवे ण भते ! दीवे सूरिया उदीण-पाईणमुग्गच्छ[6] पाईण-दाहिणमागच्छति, पाईण-दाहिणमुग्गच्छ दाहिण-पडीणमागच्छंति[7], दाहिण-पडीणमुग्गच्छ पडीण-उदीणमागच्छति[8], पडीण-उदीण-मुग्गच्छ उदीचि-पाईणमागच्छति ?
हता गोयमा ! जंवुद्दीवे ण दीवे सूरिया उदीण-पाईणमुग्गच्छ जाव उदीचि-पाईणमागच्छति ॥

---

१. व्मायु (अ, स) ।
२. ओ० सू० १ ।
३. ओ० सू० २।१३ ।
४. भ० १।७, ८ ।
५. भ० १।९, १० ।
६. पादीण० (अ, ता) ।
७ ०पदीण० (ता, म) ।
८. उदीचि० (क, ता, व, म) ।

जंबुद्दीवे दिवसराई-वत्तव्वया-पद

४. जया ण भते ! जवुद्दीवे दीवे मदरस्स पव्वयस्स दाहिणड्ढे दिवसे भवइ, तया ण उत्तरड्ढेवि दिवसे भवइ, जया ण उत्तरड्ढे[1] दिवसे भवइ, तया ण जंबुद्दीवे दीवे मदरस्स पव्वयस्स पुरत्थिम[2]-पच्चत्थिमे णं राई भवइ ?
हंता गोयमा ! जया ण जवुद्दीवे दीवे दाहिणड्ढे[3] दिवसे जाव पुरत्थिम-पच्चत्थिमे ण राई भवइ ।।

५. जयाण भते ! जंबूदीवे दीवे मदरस्स पव्वयस्स पुरत्थिमे ण दिवसे भवइ, तया ण पच्चत्थिमे ण वि दिवसे भवइ, जया ण पच्चत्थिमे ण दिवसे भवइ, तया ण जबूदीवे दीवे मदरस्स पव्वयस्स उत्तर-दाहिणे ण राई भवइ ?
हंता गोयमा ! जया ण जवूदीवे दीवे मदरस्स पव्वयस्स पुरत्थिमे ण दिवसे जाव उत्तर-दाहिणे ण राई भवइ ।।

६ जया ण भते ! जवुद्दीवे दीवे मदरस्स पव्वयस्स दाहिणड्ढे उक्कोसए अट्ठारस-मुहुत्ते दिवसे भवइ, तया ण उत्तरड्ढे वि उक्कोसए अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे भवइ, जया ण उत्तरड्ढे उक्कोसए अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे भवइ, तया ण जबुद्दीवे दीवे मदरस्स पव्वयस्स पुरत्थिम-पच्चत्थिमे ण जहण्णिया दुवालसमुहुत्ता राई भवइ ?
हंता गोयमा ! जया ण जवुद्दीवे दीवे दाहिणड्ढे उक्कोसए अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे जाव दुवालसमुहुत्ता राई भवइ ।।

७ जया ण भते ! जवुद्दीवे दीवे मदरस्स पव्वयस्स पुरत्थिमे उक्कोसए अट्ठारस-मुहुत्ते दिवसे भवइ, तया ण पच्चत्थिमे वि उक्कोसेण अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे भवइ, जया ण पच्चत्थिमे ण उक्कोसए अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे भवइ, तया ण जवुद्दीवे दीवे उत्तर[4]-•दाहिणे ण जहण्णिया दुवालसमुहुत्ता° राई भवइ ?
हंता गोयमा ! जाव भवइ ।।

८ जया ण भते ! जवुद्दीवे दीवे दाहिणड्ढे अट्ठारसमुहुत्ताणतरे दिवसे भवइ, तया ण उत्तरड्ढे वि अट्ठारसमुहुत्ताणतरे दिवसे भवइ, जया ण उत्तरड्ढे अट्ठारस-मुहुत्ताणतरे दिवसे भवइ, तया ण जबुद्दीवे दीवे मदरस्स पव्वयस्स पुरत्थिम-पच्चत्थिमे ण साइरेगा दुवालसमुहुत्ता राई भवइ ?
हंता गोयमा ! जया ण जवुद्दीवे जाव राई भवइ ।।

---

१. उत्तरड्ढेवि (अ, ता, स) ।
२ पुरत्थिमेण (अ, ता) ।
३. दाहिणड्ढे वि (ता) ।
४. स० पा०—उत्तर जाव राई ।

९ जया ण भते ! जबुद्दीवे दीवे मदरस्स पव्वयस्स पुरत्थिमे ण अट्ठारसमुहुत्ताणतरे दिवसे भवइ, तया ण पच्चत्थिमे वि अट्ठारसमुहुत्ताणतरे दिवसे भवइ; जया ण पच्चत्थिमे अट्ठारसमुहुत्ताणतरे दिवसे भवइ, तदा ण जबुदीवे दीवे मदरस्स पव्वयस्स उत्तर-दाहिणे ण साइरेगा दुवालसमुहुत्ता राई भवइ ?

हता गोयमा ! जाव भवइ ॥

१० एव एएण कमेण ओसारेयव्व—सत्तरसमुहुत्ते दिवसे, तेरसमुहुत्ता राई। सत्तर-समुहुत्ताणतरे दिवसे, साइरेगा तेरसमुहुत्ता राई।

सोलसमुहुत्ते दिवसे, चोद्दसमुहुत्ता राई। सोलसमुहुत्ताणतरे दिवसे, साइरेगा चउद्दसमुहुत्ता राई।

पण्णरसमुहुत्ते दिवसे, पण्णरसमुहुत्ता राई। पण्णरसमुहुत्ताणतरे दिवसे, साइ-रेगा पण्णरसमुहुत्ता राई।

चोद्दसमुहुत्ते दिवसे, सोलसमुहुत्ता राई। चोद्दसमुहुत्ताणतरे दिवसे, साइरेगा सोलसमुहुत्ता राई।

तेरसमुहुत्ते दिवसे, सत्तरसमुहुत्ता राई। तेरसमुहुत्ताणतरे दिवसे, साइरेगा सत्तरसमुहुत्ता राई ॥

११ जया ण जबुद्दीवे दीवे मदरस्स पव्वयस्स दाहिणड्ढे जहण्णए दुवालसमुहुत्ते दिवसे भवइ, तया ण उत्तरड्ढे वि , जया ण उत्तरड्ढे, तया ण जबुद्दीवे दीवे मदरस्स पव्वयस्स पुरत्थिम-पच्चत्थिमे ण उक्कोसिया अट्ठारसमुहुत्ता राई भवइ ?

हता गोयमा ! एव चेव उच्चारेयव्व जाव राई भवइ ॥

१२ जया ण भते ! जबुद्दीवे दीवे मदरस्स पव्वयस्स पुरत्थिमे ण जहण्णए दुवालस-मुहुत्ते दिवसे भवइ, तया ण पच्चत्थिमे ण वि , जया ण पच्चत्थिमे[1], तया ण जबुद्दीवे दीवे मदरस्स पव्वयस्स उत्तर-दाहिणे ण उक्कोसिया अट्ठारसमुहुत्ता राई भवइ ?

हता गोयमा ! जाव राई भवइ ॥

जबुद्दीवे उउ-वत्तव्वया-पदं

१३ जया ण भते ! जबुद्दीवे दीवे दाहिणड्ढे वासाण पढमे समए पडिवज्जइ, तया ण उत्तरड्ढे वि वासाण पढमे समए पडिवज्जइ; जया ण उत्तरड्ढे[2] वासाण पढमे समए पडिवज्जइ, तया ण जबुद्दीवे दीवे मदरस्स पव्वयस्स पुरत्थिम—पच्चत्थिमे ण अणंतरपुरक्खडे समयसि वासाण पढमे समए पडिवज्जइ ?

---

१ पच्चत्थिमे ण वि (अ, क, ता, व, म, स)। २. उत्तरड्ढे वि (स)।

हंता गोयमा ! जया ण जवुद्दीवे दीवे दाहिणड्ढे वासाण पढमे समए पडिवज्जइ, तह चेव जाव पडिवज्जइ ॥

१४. जया ण भते ! जंवुद्दीवे दीवे मदरस्स पव्वयस्स पुरत्थिमे ण वासाण पढमे समए पडिवज्जइ, तया णं पच्चत्थिमे ण वि वासाण पढमे समए पडिवज्जइ, जया ण पच्चत्थिमे ण वासाण पढमे समए पडिवज्जइ, तया ण[1] °जबुद्दीवे दीवे° मदरस्स पव्वयस्स उत्तर-दाहिणे ण अणतरपच्छाकडसमयसि वासाण पढमे समए पडिवन्ने भवइ ?

हता गोयमा ! जया ण जवुद्दीवे दीवे मदरस्स पव्वयस्स पुरत्थिमे ण एव चेव उच्चारेयव्व जाव पडिवन्ने भवइ ॥

१५ एव जहा समएण अभिलावो भणिओ वासाण तहा आवलियाएवि भाणियव्वो । आणापाणूणवि[2], थोवेणवि, लवेणवि, मुहुत्तेणवि, अहोरत्तेणवि, पक्खेणवि, मासेणवि, उऊणवि । एएसि सव्वेसि जहा समयस्स अभिलावो तहा भाणियव्वो ॥

१६ जया ण भते ! जवुद्दीवे दीवे मदरस्स पव्वयस्स दाहिणड्ढे हेमताण पढमे समए पडिवज्जइ, जहेव वासाण अभिलावो तहेव हेमताण वि, गिम्हाण वि भाणियव्वो जाव[3] उऊए । एवं तिण्णि वि । एएसिं तीस आलावगा भाणियव्वा ॥

जंबुद्दीवे अयणादि-वत्तव्वया-पदं

१७. जया ण भते ! जवुद्दीवे दीवे मदरस्स पव्वयस्स दाहिणड्ढे पढमे अयणे पडिवज्जइ, तया ण उत्तरड्ढे वि पढमे अयणे पडिवज्जइ, जहा समएण अभिलावो तहेव अयणेण वि भाणियव्वो जाव[4] अणतरपच्छाकडसमयसि पढमे अयणे पडिवन्ने भवइ ॥

१८ जहा अयणेण अभिलावो तहा सवच्छरेण वि भाणियव्वो । जुएण वि, वाससएण वि, वाससहस्सेण वि, वाससयसहस्सेण वि, पुव्वगेण वि, पुव्वेण वि, तुडियगेण वि, तुडिएण वि—एव पुव्वगे, पुव्वे, तुडियगे, तुडिए, अडडगे, अडडे, अववगे, अववे[5], हूहूयगे, हूहूए, उप्पलगे, उप्पले, पउमगे, पउमे, नलिणगे, नलिणे, अत्थणिउरगे, अत्थणिउरे, अउयगे, अउए, णउयगे, णउए, पउयगे पउए, चूलियगे, चूलिया, सीसपहेलियगे सीसपहेलिया—पलिओवमेण, सागरोवमेण वि भाणियव्वो ॥

---

१. स० पा०—तयाण जाव मदरस्स ।
२ °पाणूएण (व) ।
३ भ० ५।१३-१५ ।
४ भ० ५।१३, १४ ।
५ अपपे (व, म) ।

१६. जया ण भते ! जबुद्दीवे दीवे मदरस्स पव्वयस्स दाहिणड्ढे पढमा ओसप्पिणी पडिवज्जइ, तया ण उत्तरड्ढे वि पढमा ओसप्पिणी पडिवज्जइ, जया ण उत्तरड्ढे पढमा ओसप्पिणी पडिवज्जइ, तया ण जंबुद्दीवे दीवे मदरस्स पव्वयस्स पुरत्थिम–पच्चत्थिमे ण नेवत्थि ओसप्पिणी, नेवत्थि उस्सप्पिणी, अवट्ठिए ण तत्थ काले पण्णत्ते समणाउसो ?
हता गोयमा ! त चेव उच्चारेयव्व जाव समणाउसो ।।

२०. जहा ओसप्पिणीए आलावओ भणिओ एव उस्सप्पिणीए वि भाणियव्वो ।।

लवणसमुद्दादिसु सूरियादि-वत्तव्वय-पदं

२१. लवणे ण भते ! समुद्दे सूरिया उदीण[1]-पाईणमुग्गच्छ पाईण-दाहिणमागच्छति, जच्चेव जबुद्दीवस्स वत्तव्वया भणिया सच्चेव सव्वा अपरिसेसिया लवणसमुद्दस्स वि भाणियव्वा[2], नवर—अभिलावो इमो जाणियव्वो ।।

२२. जया ण भते ! लवणसमुद्दे[3] दाहिणड्ढे दिवसे भवइ, त चेव जाव[4] तदा ण लवणसमुद्दे पुरत्थिम-पच्चत्थिमे ण राई भवति ।।

२३ एएण अभिलावेण नेयव्व जाव[5] जया ण भते ! लयणसमुद्दे दाहिणड्ढे पढमा ओसप्पिणी पडिवज्जइ, तया ण उत्तरड्ढे वि पढमा ओसप्पिणी पडिवज्जइ, जया ण उत्तरड्ढे पढमा ओसप्पिणी पडिवज्जइ, तया ण लवणसमुद्दे पुरत्थिम–पच्चत्थिमे ण नेवत्थि ओसप्पिणी[6], •नेवत्थि उस्सप्पिणी अवट्ठिएणं तत्थ काले पण्णत्ते° समणाउसो ?
हता गोयमा ! जाव समणाउसो[7] ।।

२४. धायइसडे ण भते ! दीवे सूरिया उदीण-पाईणमुग्गच्छ पाईण-दाहिणमागच्छति, जहेव जबुद्दीवस्स वत्तव्वया भणिया सच्चेव धायइसडस्स वि भाणियव्वा, नवर—इमेण अभिलावेण सव्वे आलावगा भाणियव्वा[8] ।।

२५ जया णं भते ! धायइसडे दीवे दाहिणड्ढे दिवसे भवइ, तदा णं उत्तरड्ढे वि, जया ण उत्तरड्ढे, तया ण धायइसडे दीवे मदराण पव्वयाण पुरत्थिम–पच्चत्थिमे ण राई भवइ ?
हता गोयमा ! एव चेव जाव राई भवइ ।।

---

१. उदीचि (अ) ।
२. भ० ५।३ ।
३. लवणे समुद्दे (क, व, स) ।
४. भ० ५।४ ।
५. भ० ५।५-१८ ।
६ स० पा०—ओसप्पिणी जाव समणाउसो ।
७ अतोग्रे 'जहा ओसप्पिणीए आलावओ भणिओ एव उस्सप्पिणीए वि भाणियव्वो' इति ५।२० सूत्र अध्याहार्यम् ।
८. भ० ५।३ ।

२६. जया ण भते ! धायइसडे दीवे मदराण पव्वयाणं पुरत्थिमे ण दिवसे भवइ, तया ण पच्चत्थिमे ण वि; जया ण पच्चत्थिमे ण दिवसे भवइ, तया णं धायइसडे दीवे मदराण पव्वयाण उत्तर-दाहिणे ण राई भवइ ?
हता गोयमा ! जाव भवइ ॥

२७. एव एएण अभिलावेणं नेयव्वं जाव[1] जया ण भते ! दाहिणड्ढे पढमा ओसप्पिणी, तया ण उत्तरड्ढे वि, जया ण उत्तरड्ढे वि, तया ण धायइसडे दीवे मदराणं पव्वयाणं पुरत्थिम-पच्चत्थिमे ण नत्थि ओसप्पिणी जाव[2] समणाउसो ?
हता गोयमा ! जाव समणाउसो[3] ॥

२८ जहा लवणसमुद्दस्स वत्तव्वया[4] तहा कालोदस्स वि भाणियव्वा, नवर—कालोदस्स नाम भाणियव्वं ॥

२९. अब्भितरपुक्खरद्धे ण भते ! सूरिया उदीण-पाईणमुग्गच्छ पाईण-दाहिणमागच्छति, जहेव धायइसंडस्स वत्तव्वया[5] तहेव अब्भितरपुक्खरद्धस्स वि भाणियव्वा, नवर—अभिलावो जाणियव्वो जाव तया ण अब्भितरपुक्खरद्धे मदराण पुरत्थिम-पच्चत्थिमे ण नेवत्थि ओसप्पिणी, नेवत्थि उस्सप्पिणी, अवट्ठिए ण तत्थ काले पण्णत्ते समणाउसो ॥

३०. सेव भते ! सेव भते ! त्ति[6] ॥

बीओ उद्देसो

वाउ-पदं

३१ रायगिहे नगरे जाव[7] एव वयासी—अत्थि ण भते ! ईसि पुरेवाया[8] पत्था[9] वाया मदा वाया 'महावाया वायति ?'[10]
हता अत्थि ॥

---

१ भ० ५।५-१८ ।
२. भ० ५।१९ ।
३. अतोग्रे 'जहा ओसप्पिणीए आलावओ भणिओ एव उस्सप्पिणीए वि भाणियव्वो' इति ५।२० सूत्र अध्याहार्यम् ।
४ भ० ५।२१-२३ ।
५ भ० ५।२४-२७ ।
६ भ० १।५१ ।
७ भ० १।४-१० ।
८ सत्रेहवाता (वृ) ।
९. पच्छा (अ, क, ता, स) ।
१०. महावाता वाता वातति (क, ता) सर्वत्र ।

३२. अत्थि ण भते ! पुरत्थिमे ण ईसिं पुरेवाया पत्था वाया मदा वाया महावाया वायति ?
हंता अत्थि ।।

३३. एव पच्चत्थिमे ण, दाहिणे ण, उत्तरे ण, उत्तर-पुरत्थिमे ण, 'दाहिणपच्चत्थिमे ण, दाहिण-पुरत्थिमे ण'[१] 'उत्तर-पच्चत्थिमे ण ।।

३४. जया ण भते ! पुरत्थिमे ण ईसि पुरेवाया पत्था वाया मदा वाया महावाया वायति, तया ण पच्चत्थिमे ण वि ईसि पुरेवाया पत्था वाया मदा वाया महावाया वायति, जया ण पच्चत्थिमे णं ईसिं पुरेवाया पत्था वाया मदा वाया महावाया वायति, तया ण पुरत्थिमे ण वि ?
हता गोयमा ! जया णं पुरत्थिमे ण ईसि पुरेवाया पत्था वाया मदा वाया महावाया वायति, तया ण पच्चत्थिमे ण वि ईसिं पुरेवाया पत्था वाया मदा वाया महावाया वायति, जया ण पच्चत्थिमे ण ईसि पुरेवाया पत्था वाया मदा वाया महावाया वायति, तया ण पुरत्थिमे ण वि ईसिं पुरेवाया पत्था वाया मदा वाया महावाया वायति ।।

३५. एव दिसासु, विदिसासु[२] ।।

३६. अत्थि ण भते ! दीविच्चया[३] ईसिं पुरेवाया[४] ?
हता अत्थि ।।

३७. अत्थि ण भते ! सामुद्दया ईसि पुरेवाया[५] ?
हता अत्थि ।।

३८. जया णं भते ! दीविच्चया ईसिं पुरेवाया[६], तया ण सामुद्दया वि ईसिं पुरेवाया[७], जया ण सामुद्दया ईसिं पुरेवाया[८], तया ण दीविच्चया वि ईसिं पुरेवाया[९] ?
णो इणट्ठे समट्ठे ।।

३९. से केणट्ठेण भते ! एव वुच्चइ—जया ण दीविच्चया ईसि पुरेवाया[१०], णो ण तया सामुद्दया ईसिं पुरेवाया[११], जया ण सामुद्दया ईसिं पुरेवाया[१२], णो ण तया दीविच्चया ईसिं पुरेवाया[१३] ?
गोयमा ! तेसि ण वायाण अण्णमण्णविवच्चासेण लवणसमुद्दे वेलं नाइक्कमइ । से तेणट्ठेण जाव णो ण तया दीविच्चया ईसिं पुरेवाया पत्था वाया मदा वाया महावाया वायति ।।

---

१. दाहिणपुरत्थिमे ण दाहिणपच्चत्थिमे ण (स)
२ एव विदिसासु (क, ता) ।
३. दीविच्चता (व) ।
३, ४, ५, ६, ७, ८, ९, १०, ११, १२. पू० भ० ५।३१ ।

४०. अत्थि णं भंते ! ईसिं पुरेवाया पत्था वाया मदा वाया महावाया वायंति ?
हता अत्थि ॥

४१ कया ण भते ! ईसि पुरेवाया जाव[1] वायति ?
गोयमा ! जया ण वाउयाए अहारिय रियति[2], तया ण ईसिं पुरेवाया जाव वायति ॥

४२. अत्थि ण भते ! ईसिं पुरेवाया[3] ?
हता अत्थि ॥

४३ कया ण भते ! ईसि पुरेवाया[4] ?
गोयमा ! जया ण वाउयाए उत्तरकिरिय रियइ, तया ण ईसि पुरेवाया जाव[5] वायति ॥

४४ अत्थि ण भते ! ईसिं पुरेवाया[6] ?
हता अत्थि ॥

४५. कया ण भते ! ईसि पुरेवाया पत्था वाया[7] ?
गोयमा ! जया ण वाउकुमारा, वाउकुमारीओ वा अप्पणो[8] परस्स वा तदुभयस्स वा अट्ठाए वाउकाय उदीरेति तया ण ईसिं पुरेवाया जाव[9] वायति[10] ॥

४६ वाउयाए ण भते ! वाउयाय चेव आणमति वा ? पाणमति वा ? ऊससति वा ? नीससति वा ?
[11]●हता गोयमा ! वाउयाए ण वाउयाए चेव आणमति वा, पाणमति वा, ऊससति वा, नीससति वा ॥

४७ वाउयाए ण भते ! वाउयाए चेव अणेगसयसहस्सखुत्तो उद्दाइत्ता-उद्दाइत्ता तत्थेव भुज्जो-भुज्जो पच्चायाति ?
हता गोयमा ! वाउयाए ण वाउयाए चेव अणेगसयसहस्सखुत्तो उद्दाइत्ता-उद्दाइत्ता तत्थेव भुज्जो-भुज्जो पच्चायाति ॥

४८ से भते ! किं पुट्ठे उद्दाति ? अपुट्ठे उद्दाति ?
गोयमा ! पुट्ठे उद्दाति, नो अपुट्ठे उद्दाति ॥

---

१ भ० ५।४० ।
२ रियति (अ, क, स) ।
३,४ पू० भ० ५।४० ।
५ भ० ५।४० ।
६,७ पू० भ० ५।४० ।
८ अप्पणो वा (क, ता, व) ।
९ भ० ५।४० ।
१०. इह चैकसूत्रेणैव वायुवानकारणत्रयस्य वक्तु शक्यत्वे यत्सूत्रत्रयकरण तद्विचित्रत्वात्सूत्रगतेरिति मन्तव्य, वाचनान्तरे त्वाद्य कारण महावातवर्जिताना, द्वितीय तु मन्दवातवर्जिताना, तृतीय तु चतुर्णामप्युक्तमिति [वृ] ।
११ स० पा०—जहा खदए तहा चत्तारि आलावगा नेयव्वा अणेगसयसहस्स पुट्ठे उद्दाइ ससरीरी निक्खमइ ।

४९. से भंते ! किं ससरीरी निक्खमइ ? असरीरी निक्खमइ ?
गोयमा ! सिय ससरीरी निक्खमइ, सिय असरीरी निक्खमइ ।।

५० से केणट्ठेण भंते ! एवं वुच्चइ—सिय ससरीरी निक्खमइ ? सिय असरीरी निक्खमइ ?
गोयमा ! वाउयायस्स णं चत्तारि सरीरया पण्णत्ता, तं जहा—ओरालिए वेउव्विए तेयए कम्मए । ओरालिय-वेउव्वियाइं विप्पजहाय तेयय-कम्मएहिं निक्खमइ । से तेणट्ठेणं गोयमा ! एवं वुच्चइ—सिय ससरीरी निक्खमइ, सिय असरीरी निक्खमइ० ।।

ओदणादीणं किंसरीरत्त-पदं

५१ अह णं भंते ! ओदणे, कुम्मासे, सुरा—एए णं किंसरीरा ति वत्तव्वं सिया ?
गोयमा ! ओदणे, कुम्मासे, सुराए य जे घणे दव्वे—एए णं पुव्वभावपण्णवणं पडुच्च वणस्सइजीवसरीरा । तओ पच्छा सत्थातीया, सत्थपरिणामिया, अगणि-ज्झामिया, अगणिझूसिया[1], अगणिपरिणामिया अगणिजीवसरीरा ति वत्तव्वं सिया । सुराए य जे दवे दव्वे—एए णं पुव्वभावपण्णवणं पडुच्च आउजीव-सरीरा । तओ पच्छा सत्थातीया जाव अगणिजीवसरीरा[2] ति वत्तव्वं सिया ।।

५२ अह णं भंते ! अये, तंबे, तउए, सीसए, उवले, कसट्टिया—एए णं किंसरीरा ति वत्तव्वं सिया ?
गोयमा ? अये, तंबे, तउए, सीसए, उवले, कसट्टिया—एए णं पुव्वभावपण्णवणं पडुच्च पुढवीजीवसरीरा । तओ पच्छा सत्थातीया जाव[3] अगणिजीवसरीरा ति वत्तव्वं सिया ।।

५३ अह णं भंते ! अट्ठी, अट्ठिज्झामे, चम्मे, चम्मज्झामे, रोमे, रोमज्झामे, सिंगे, सिंगज्झामे, खुरे, खुरज्झामे, नखे, नखज्झामे—एए णं किंसरीरा ति वत्तव्वं सिया ?
गोयमा ! अट्ठी, चम्मे, रोमे, सिंगे, खुरे, नखे—एए णं तसपाणजीवसरीरा । अट्ठिज्झामे, चम्मज्झामे, रोमज्झामे, 'सिंगज्झामे, खुरज्झामे, नखज्झामे'[4]—एए णं पुव्वभावपण्णवणं पडुच्च तसपाणजीवसरीरा । तओ पच्छा सत्थातीया जाव[5] 'अगणिजीवसरीरा ति'[6] वत्तव्वं सिया ।।

---

१. ०झूसिया अगणिसेविया (अ, स) । वृत्तौ अगणिझूसिया इति पदस्य अग्निना सेवितानि वा इति वैकल्पिकोर्थः आसीत् स एव केषुचित् उत्तरवर्त्यादर्शेषु मूलपाठरूपेण स्वीकृतोभूत् ।
२. अगणिकायसरीरा (स) ।
३ भ० ५।५१ ।
४ सिंग-खुर-नखज्झामे (अ, ता, स) ।
५ भ० ५।५१ ।
६ अगणि त्ति (अ, स) ।

५४. अह ण भते ! इगाले, छारिए, भुसे[1], गोमए—एए णं किंसरीरा ति वत्तव्वं सिया ?
गोयमा ! इगाले, छारिए, भुसे, गोमए—एए ण पुव्वभावपण्णवण पडुच्च एगिंदियजीवसरीरप्पयोगपरिणामिया वि जाव[2] पचिंदियजीवसरीरप्पयोग-परिणामिया[3] वि । तस्रो पच्छा सत्थातीया जाव[4] अगणिजीवसरीरा ति वत्तव्व सिया ॥

लवणसमुद्द-पदं

५५. लवणे ण भते ! समुद्दे केवइय चक्कवालविक्खभेण पण्णत्ते ?
एव नेयव्व जाव[5] लोगट्ठिई, लोगाणुभावे ॥
५६. सेव भते ! सेव भते ! त्ति भगव गोयमे जाव[6] विहरइ ॥

तइस्रो उद्देसो

आउ-पकरण-पडिसंवेदण-पदं

५७ अण्णउत्थिया ण भते ! एवमाइक्खति भासति पण्णवेति परूवेति[7]—से जहा-नामए जालगंठिया सिया—आणुपुव्विगढिया[8] अणतरगढिया परपरगढिया अण्णमण्णगढिया, अण्णमण्णगरुयत्ताए अण्णमण्णभारियत्ताए अण्णमण्णगरुय-सभारियत्ताए अण्णमण्णघडत्ताए चिट्ठइ, एवामेव बहूण जीवाण बहूसु आजाति-सहस्सेसु[9] बहूइ आउयसहस्साइ आणुपुव्विगढियाइ जाव चिट्ठति ।
एगे वि य ण जीवे एगेण समएण दो आउयाइ पडिसवेदेइ[10], त जहा—इह-भवियाउय च, परभवियाउय च ।
ज समय इहभवियाउय पडिसवेदेइ, तं समय परभवियाउय पडिसवेदेइ[11] ।
•ज समय परभवियाउय पडिसवेदेइ, त समय इहभवियाउय पडिसवेदेइ ।

---

१ तुसे (क) ।
२ भ० २।१३९ ।
३ °परिणता (म) ।
४ भ० ५।५१ ।
५. जी० ३ मदरोद्देशक ।
६. भ० १।५१ ।
७ एव परूवेंति (क, व, स)।
८ आणुपुव्वि° (व, स) ।
९ आयति° (क), आयाति° (व) ।
१० पडिसवेदयति (अ, क, व, म) ।
११. स० पा०—पडिसवेदेइ जाव से ।

इहभवियाउयस्स पडिसवेदणयाए परभवियाउयं पडिसवेदेइ,
परभवियाउयस्स पडिसवेदणयाए इहभवियाउय पडिसवेदेइ ।
एवं खलु एगे जीवे एगेण समएण दो आउयाइ पडिसवेदेइ, त जहा—इहभविया-उय च, परभवियाउय च° ॥

५८ से कहमेय भंते ! एवं ?
गोयमा ! जण्ण त अण्णउत्थिया त चेव जाव परभवियाउय च । जे ते एव-माहसु त मिच्छा, अह पुण गोयमा ! एवमाइक्खामि भासामि पण्णवेमि परू-वेमि—से जहानामए जालगठिया सिया[1]—°आणुपुव्विगढिया अणतरगढिया परपरगढिया अण्णमण्णगढिया, अण्णमण्णगरुयत्ताए अण्णमण्णभारियत्ताए अण्णमण्णगरुय-संभारियत्ताए° अण्णमण्णघडत्ताए चिट्ठति, एवामेव एगमेगस्स जीवस्स वहूहि आजातिसहस्सेहिं वहूइ आउयसहस्साइ आणुपुव्विगढियाइ जाव चिट्ठति ।
एगे वि य ण जीवे एगेण समएण एगं आउय पडिसवेदेइ, त जहा—इहभवि-याउय वा, परभवियाउय वा ।
ज समय इहभवियाउय पडिसवेदेइ, नो त समयं परभवियाउय पडिसवेदेइ ।
ज समय परभवियाउय पडिसवेदेइ, नो त समय इहभवियाउय पडिसवेदेइ ।
इहभवियाउयस्स पडिसवेदणाए, नो परभवियाउय पडिसवेदेइ ।
परभवियाउयस्स पडिसवेदणाए, नो इहभवियाउय पडिसवेदेइ ।
एव खलु एगे जीवे एगेण समएण एग आउय पडिसवेदेइ, त जहा—इहभ-वियाउय वा, परभवियाउय वा ॥

साउयसंकमण-पदं

५६ जीवे ण भते ! जे भविए नेरइएसु उववज्जित्तए, से ण भते ! कि साउए सकमइ ? निराउए सकमइ ?
गोयमा ! साउए सकमइ, नो निराउए संकमइ ॥

६०. से ण भते ! आउए[2] कहिं कडे ? कहिं समाइण्णे ?
गोयमा ! पुरिमे भवे कडे, पुरिमे भवे समाइण्णे ॥

६१. एव जाव[3] वेमाणियाणं दडओ ॥

६२. से नूण भते ! जे 'ज भविए जोणिं'[4] उववज्जित्तए, से तमाउय-पकरेइ, त

१. म० पा०—सिया जाव अण्णमण्णघडत्ताए ।
२. आउगे (ता) ।
३. पू० प० २ ।
४ विभक्तिपरिणामाद् यो यस्या योनावुत्पत्तु योग्य इत्यर्थ. (व) ।

जहा—नेरइयाउयं वा[1] ? •तिरिक्खजोणियाउयं वा ? मणुस्साउयं वा ?° देवाउयं वा ?

हंता गोयमा ! जे जं भविए जोणिं उववज्जित्तए, से तमाउयं पकरेइ, तं जहा—नेरइयाउयं वा, तिरिक्खजोणियाउयं वा, मणुस्साउयं वा देवाउयं वा। नेरइयाउयं पकरेमाणे सत्तविहं पकरेइ, तं जहा—रयणप्पभापुढविनेरइयाउयं वा[2], •सक्करप्पभापुढविनेरइयाउयं वा, वालुयप्पभापुढविनेरइयाउयं वा, पंकप्पभापुढविनेरइयाउयं वा, धूमप्पभापुढविनेरइयाउयं वा, तमप्पभापुढविनेरइयाउयं वा°, अहेसत्तमापुढविनेरइयाउयं वा।

तिरिक्खजोणियाउयं पकरेमाणे पंचविहं पकरेइ, तं जहा—एगिंदियतिरिक्खजोणियाउयं वा[3], •बेइंदियतिरिक्खजोणियाउयं वा, तेइंदियतिरिक्खजोणियाउयं वा, चउरिंदियतिरिक्खजोणियाउयं वा, पंचिंदियतिरिक्खजोणियाउयं वा°।

मणुस्साउयं दुविहं[4] •पकरेइ, तं जहा—सम्मुच्छिममणुस्साउयं वा, गब्भवक्कंतियमणुस्साउयं वा°।

देवाउयं चउव्विहं[5] •पकरेइ, तं जहा—भवणवासिदेवाउयं वा, वाणमंतरदेवाउयं वा, जोइसियदेवाउयं वा, वेमाणियदेवाउयं वा°॥

६३ सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति[6]॥

चउत्थो उद्देसो

छउमत्थ-केवलीणं सद्दसवण-पदं

६४ छउमत्थे णं भंते ! मणुस्से आउडिज्जमाणाइं सद्दाइं सुणेइ, तं जहा—संखसद्दाणि वा, सिंगसद्दाणि वा, संखियसद्दाणि वा, खरमुहीसद्दाणि वा, पोयासद्दाणि वा, पिरिपिरियासद्दाणि[7] वा, पणवसद्दाणि वा, पडहसद्दाणि वा, भंभासद्दाणि वा, होरंभसद्दाणि वा, भेरिसद्दाणि वा, झल्लरीसद्दाणि वा, दुंदुभिसद्दाणि वा, तताणि वा, वितताणि वा, घणाणि वा, झुसिराणि[8] वा ?

---

१ सं० पा०—नेरइयाउयं वा जाव देवाउयं।
२ सं० पा०—रयणप्पभापुढविणेरइयाउयं वा जाव अहेसत्तमा°।
३ सं० पा०—भेदो सव्वो भाणियव्वो।
४ सं० पा०—मणुस्साउयं दुविहं।
५ सं० पा०—देवाउयं चउव्विहं।
६ भ० १।५१।
७ परि° (अ, स)।
८ सुसिराणि (क)।

हंता गोयमा ! छउमत्थे णं मणुस्से आउडिज्जमाणाइं सद्दाइं सुणेइ, तं जहा—संखसद्दाणि वा जाव झुसिराणि वा ।

ताइं भंते ! किं पुट्ठाइं सुणेइ ? अपुट्ठाइं सुणेइ ?

गोयमा ! पुट्ठाइं सुणेइ, नो अपुट्ठाइं सुणेइ[1] ।

•जाइं भंते ! पुट्ठाइं सुणेइ ताइं किं ओगाढाइं सुणेइ ? अणोगाढाइं सुणेइ ?

गोयमा ! ओगाढाइं सुणेइ, नो अणोगाढाइं सुणेइ ।

जाइं भंते ! ओगाढाइं सुणेइ ताइं किं अणंतरोगाढाइं सुणेइ ? परंपरोगाढाइं सुणेइ ?

गोयमा ! अणंतरोगाढाइं सुणेइ, नो परंपरोगाढाइं सुणेइ ।

जाइं भंते ! अणंतरोगाढाइं सुणेइ ताइं किं अणूइं सुणेइ ? बादराइं सुणेइ ?

गोयमा ! अणूइं पि सुणेइ, बादराइं पि सुणेइ ।

जाइं भंते ! अणूइं पि सुणेइ बादराइं पि सुणेइ ताइं किं उड्ढं सुणेइ ? अहे सुणेइ ? तिरियं सुणेइ ?

गोयमा ! उड्ढं पि सुणेइ, अहे वि सुणेइ, तिरियं पि सुणेइ ।

जाइं भंते ! उड्ढं पि सुणेइ अहे वि सुणेइ तिरियं पि सुणेइ ताइं किं आइं सुणेइ ? मज्झे सुणेइ ? पज्जवसाणे सुणेइ ?

गोयमा ! आइं पि सुणेइ, मज्झे पि सुणेइ, पज्जवसाणे वि सुणेइ ।

जाइं भंते ! आइं पि सुणेइ मज्झे वि सुणेइ पज्जवसाणे वि सुणेइ ताइं किं सविसए सुणेइ ? अविसए सुणेइ ?

गोयमा ! सविसए सुणेइ, नो अविसए सुणेइ ।

जाइं भंते ! सविसए सुणेइ ताइं किं आणुपुव्विं सुणेइ ? अणाणुपुव्विं सुणेइ ?

गोयमा ! आणुपुव्विं सुणेइ, नो अणाणुपुव्विं सुणेइ ।

जाइं भंते ! आणुपुव्विं सुणेइ ताइं किं तिदिसिं सुणेइ जाव छद्दिसिं सुणेइ ?

गोयमा ! ° नियमा छद्दिसिं सुणेइ ।।

६५ छउमत्थे णं भंते ! मणूसे किं आरगयाइं सद्दाइं सुणेइ ? पारगयाइं सद्दाइं सुणेइ ?

गोयमा ! आरगयाइं सद्दाइं सुणेइ, नो पारगयाइं सद्दाइं सुणेइ ।।

६६. जहा णं भंते ! छउमत्थे मणूसे आरगयाइं सद्दाइं सुणेइ, नो पारगयाइं सद्दाइं सुणेइ, तहा णं[2] केवली किं आरगयाइं सद्दाइं सुणेइ ? पारगयाइं सद्दाइं सुणेइ ?

गोयमा ! केवली णं आरगयं वा, पारगयं वा सव्वदूर-मूलमणंतियं सद्दं जाणइ-पासइ ।।

---

१. सं० पा०—सुणेइ जाव नियमा । २ णं भंते ! (स) ।

६७ से केणट्ठेण[1] •भंते ! एवं वुच्चइ—केवली णं आरगयं वा, पारगयं वा सव्वदूर-मूलमणंतियं सद्दं जाणइ°-पासइ ?
गोयमा ! केवली णं पुरत्थिमे णं मियं पि जाणइ, अमियं पि जाणइ। एवं दाहिणे णं, पच्चत्थिमे णं, उत्तरे णं, उड्ढं, अहे मियं पि जाणइ, अमियं पि जाणइ।

सव्वं जाणइ केवली, सव्वं पासइ केवली।
सव्वओ जाणइ केवली, सव्वओ पासइ केवली।
सव्वकालं जाणइ केवली, सव्वकालं पासइ केवली।
सव्वभावे जाणइ केवली, सव्वभावे पासइ केवली।
अणंते नाणे केवलिस्स, अणंते दंसणे केवलिस्स।
निव्वुडे नाणे केवलिस्स, निव्वुडे दंसणे केवलिस्स[2]। से तेणट्ठेणं[3] •गोयमा ! एवं वुच्चइ—केवली णं आरगयं वा, पारगयं वा सव्वदूर-मूलमणंतियं सद्दं जाणइ°-पासइ॥

छउमत्थ-केवलीणं हास-पदं

६८ छउमत्थे णं भंते ! मणुस्से हसेज्ज वा ? उस्सुयाएज्ज वा ?
हंता हसेज्ज वा, उस्सुयाएज्ज वा॥

६९ जहा णं भंते ! छउमत्थे मणुस्से हसेज्ज वा, उस्सुयाएज्ज वा, तहा णं केवली वि हसेज्ज वा ? उस्सुयाएज्ज वा ?
गोयमा ! णो इणट्ठे समट्ठे॥

७० से केणट्ठेणं[4] •भंते ! एवं वुच्चइ—जहा णं छउमत्थे मणुस्से हसेज्ज वा, उस्सुयाएज्ज वा°, नो णं तहा केवली हसेज्ज वा ? उस्सुयाएज्ज वा ?
गोयमा ! जं णं जीवा चरित्तमोहणिज्जस्स कम्मस्स उदएणं हसंति वा, उस्सुयायंति वा। से णं केवलिस्स नत्थि। से तेणट्ठेणं[5] •गोयमा ! एवं वुच्चइ—जहा णं छउमत्थे मणुस्से हसेज्ज वा, उस्सुयाएज्ज वा°, नो णं तहा केवली हसेज्ज वा, उस्सुयाएज्ज वा॥

७१ जीवे णं भंते ! हसमाणे वा, उस्सुयमाणे वा कइ[6] कम्मपगडीओ बंधइ ?
गोयमा ! सत्तविहबंधए वा, अट्ठविहबंधए वा। एवं जाव[7] वेमाणिए[8]। पोहत्तएहिं जीवेगिंदियवज्जो तियभंगो॥

---

१. सं० पा०—तं चेव केवली णं आरगयं वा पारगयं वा जाव पासइ।
२. वाचनान्तरे तु 'निव्वुडे वितिमिरे विसुद्धे' त्ति विशेषणत्रयं ज्ञानदर्शनयोरधीयते (वृ)।
३. सं० पा०—तेणट्ठेणं जाव पासइ।
४. सं० पा०—केणट्ठेणं जाव नो।
५. सं० पा०—तेणट्ठेणं जाव नो।
६. कति (क, व, म)।
७. पू० प० २।
८. वेमाणिए नेरइया णं भंते ! हसमाणा कइ°

छउमत्थ-केवलीणं निद्दा-पदं

७२ छउमत्थे णं भंते ! मणुस्से निद्दाएज्ज वा ? पयलाएज्ज वा ?
हंता निद्दाएज्ज वा, पयलाएज्ज वा ॥

७३. [1]•जहा णं भंते ! छउमत्थे मणुस्से निद्दाएज्ज वा, पयलाएज्ज वा, तहा णं केवली वि निद्दाएज्ज वा ? पयलाएज्जा वा ?
गोयमा ! णो इणट्ठे समट्ठे ॥

७४ से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ—जहा णं छउमत्थे मणुस्से निद्दाएज्ज वा, पयलाएज्ज वा, नो णं तहा केवली निद्दाएज्ज वा ? पयलाएज्ज वा ?
गोयमा ! जं णं जीवा दरिसणावरणिज्जस्स कम्मस्स उदएणं निद्दायति वा, पयलायति[2] वा । से णं केवलिस्स नत्थि । से तेणट्ठेणं गोयमा ! एवं वुच्चइ—जहा णं छउमत्थे मणुस्से निद्दाएज्ज वा, पयलाएज्ज वा, नो णं तहा केवली निद्दाएज्ज वा, पयलाएज्ज वा° ॥

७५ जीवे णं भंते ! निद्दायमाणे वा, पयलायमाणे वा कइ कम्मप्पगडीओ बंधइ ?
गोयमा ! सत्तविहबंधए वा, अट्ठविहबंधए वा । एवं जाव[3] वेमाणिए । पोहत्ति-एसु जीवेगिंदियवज्जो तियभंगो ॥

गब्भसाहरण-पदं

७६ 'से नूणं भंते ! हरि-नेगमेसी'[4] सक्कदूए इत्थीगब्भं संहरमाणे किं गब्भाओ गब्भं साहरइ ? गब्भाओ जोणिं साहरइ ? जोणीओ गब्भं साहरइ ? जोणीओ जोणिं साहरइ ?
गोयमा ! नो गब्भाओ गब्भं साहरइ, नो गब्भाओ जोणिं साहरइ, नो जोणीओ जोणिं साहरइ, परामुसिय-परामुसिय अव्वाबाहेणं अव्वाबाहं जोणीओ गब्भं साहरइ ॥

७७ पभू णं भंते ! हरि-नेगमेसी सक्कदूए[5] इत्थीगब्भं नहसिरंसि वा, रोमकूवंसि वा साहरित्तए वा ? नीहरित्तए वा ?

गोयमा ! सव्वे वि ताव होज्ज सत्तविहबंधगा । अहवा सत्तविहबंधगा य अट्ठविहबंधगे य । अहवा सत्तविहबंधगा य अट्ठविहबंधगा य (क, ब, म, स) ।

१. सं० पा०—जहा हसेज्ज वा तहा नवरं दरिसणावरणिज्जस्स कम्मस्स उदएणं निद्दायति वा पयलायति वा, से णं केवलिस्स नत्थि अण्णं तं चेव ।

२. पयलाइति (स) ।

३ पू० प० २ ।

४ हरी णं भंते ! हरिणेगमेसी (अ, क, ता), हरी णं भंते ! हरिणेगमेसी (स), 'हरी णं भंते ! हरिणेगमेसी' इति द्वयर्थक पद द्वयो र्वाचनायो समिश्रणेन जातम् ।

५ सक्कस्स णं दूते (ब, स), सक्कस्स दूए (म) ।

हंता पभू, नो चेव णं तस्स गब्भस्स किंचि[1] आबाहं वा विबाहं वा उप्पाएज्जा, छविच्छेदं पुण करेज्जा। एसुहुमं[2] च णं साहरेज्ज वा, नीहरेज्ज वा॥

अइमुत्तग-पदं

७८ तेणं कालेणं तेणं समएणं समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतेवासी अइमुत्ते[3] नामं कुमार-समणे पगइभद्दए[4] •पगइउवसंते पगइपयणुकोहमाणमायालोभे मिउमद्दवसपन्ने अल्लीणे॰ विणीए॥

७९ तए णं से अइमुत्ते कुमार-समणे अण्णया कयाइ महावुट्ठिकायंसि निवयमाणंसि कक्खपडिग्गह-रयहरणमायाए[5] बहिया संपट्ठिए विहाराए॥

८०. तए णं से अइमुत्ते कुमार-समणे वाहयं वहमाणं पासइ, पासित्ता मट्टियाए पालिं बंधइ, बंधित्ता 'णाविया मे, णाविया मे' नाविओ विव णावमयं पडिग्गहगं उदगंसि[6] पव्वाहमाणे-पव्वाहमाणे अभिरमइ। तं च थेरा अद्दक्खु[7]। जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता एवं वदासी—

एवं खलु देवाणुप्पियाणं अंतेवासी अइमुत्ते नामं कुमार-समणे, से णं भंते! अइमुत्ते कुमार-समणे कतिहिं भवग्गहणेहिं सिज्झिहिति[8] •बुज्झिहिति मुच्चिहिति परिणिव्वाहिति सव्वदुक्खाणं॰ अंतं करेहिति?

८१ अज्जोति! समणे भगवं महावीरे ते थेरे एवं वयासी—एवं खलु अज्जो! ममं अंतेवासी अइमुत्ते नामं कुमार-समणे पगइभद्दए जाव[9] विणीए, से णं अइमुत्ते कुमार-समणे इमेणं चेव भवग्गहणेणं सिज्झिहिति जाव[10] अंतं करेहिति। तं मा णं अज्जो! तुब्भे अइमुत्तं कुमार-समणं हीलेह निंदह खिंसह गरहह अवमण्णह[11]। तुब्भे णं देवाणुप्पिया! अइमुत्तं कुमार-समणं अगिलाए संगिण्हह, अगिलाए उवगिण्हह, अगिलाए भत्तेणं पाणेणं विणएणं वेयावडियं करेह। अइमुत्ते णं कुमार-समणे अंतकरे चेव, अंतिमसरीरिए चेव॥

८२ तए णं ते थेरा भगवतो समणेणं भगवया महावीरेणं एवं वुत्ता समाणा समणं भगवं महावीरं वंदंति नमंसंति, अइमुत्तं कुमार-समणं अगिलाए संगिण्हंति[12], •अगिलाए उवगिण्हंति, अगिलाए भत्तेणं पाणेणं विणएणं॰ वेयावडियं[13] करेंति॥

---

१ किंचि वि (स)।
२ तेसुहुमं (ता)।
३ अतिमुत्ते (क, ब, म)।
४ सं॰ पा॰—पगइभद्दए जाव विणीए।
५ रतहरणमाताए (ता)।
६ उदगंसि कट्टु (क, ता, ब, म, स)।
७ अदक्खु (ता, म)।
८ सं॰ पा॰—सिज्झिहिति जाव अंतं।
९ भ॰ ५।७८।
१० भ॰ २।७३।
११. अवमण्णह परिभवह (वृपा)।
१२. सं॰ पा॰—संगिण्हंति जाव वेयावडियं।
१३. वेदावडियं (ब, म)।

महासुक्कागयदेव-पण्ह-पदं

८३. तेण कालेण तेण समएण महासुक्काओ कप्पाओ, महासामाणाओ[1] विमाणाओ दो देवा महिड्ढिया जाव[2] महाणुभागा समणस्स भगवओ महावीरस्स अतियं पाउब्भूया। तए ण ते देवा समण भगव महावीर[3] वदति नमसति, मणसा चेव इम एयारूव वागरण पुच्छति—

८४ कति ण भते[4]! देवाणुप्पियाण अतेवासीसयाइ सिज्झिहिति जाव[5] अत करेहिति? तए ण समणे भगव महावीरे तेहिं देवेहिं मणसा पुट्ठे तेसि देवाण मणसा चेव इम एयारूव वागरण वागरेइ—एव खलु देवाणुप्पिया! मम सत्त अतेवासी-सयाइ सिज्झिहिति जाव अत करेहिति।

तए ण ते देवा समणेण भगवया महावीरेण मणसा पुट्ठेण मणसा चेव इम एयारूव वागरण वागरिया समाणा हट्ठतुट्ठ[6] •चित्तमाणदिया णदिया पीइमणा परमसोमणस्सिया हरिसवसविसप्पमाण°हियया समण भगव महावीर वदति नमसति, वंदित्ता नमसित्ता मणसा चेव सुस्सूसमाणा नमसमाणा अभिमुहा[7] •विणएण पजलियडा° पज्जुवासति॥

८५ तेणं कालेणं तेण समएण समणस्स भगवओ महावीरस्स जेट्ठे अतेवासी इदभूई नाम अणगारे जाव[8] अदूरसामंते उड्ढजाणू[9] •अहोसिरे झाणकोट्ठोवगए सजमेण तवसा अप्पाण भावेमाणे° विहरइ। तए ण तस्स भगवओ गोयमस्स झाणत-रियाए वट्टमाणस्स इमेयारूवे अज्झत्थिए[10] •चितिए पत्थिए मणोगए सकप्पे° समुप्पज्जित्था—एव खलु दो देवा महिड्ढिया जाव[11] महाणुभागा समणस्स भग-वओ महावीरस्स अतिय पाउब्भूया[12], त नो खलु अह ते देवे[13] जाणामि कयराओ कप्पाओ वा सग्गाओ वा विमाणाओ वा कस्स वा अत्थस्स अट्ठाए इह हव्वमा-गया? त गच्छामि ण समण भगव महावीर वदामि नमसामि जाव[14] पज्जु-वासामि, इमाइ च ण एयारूवाइ वागरणाइ पुच्छिस्सामि त्ति कट्टु एवं सपेहेइ,

---

१ महासमाणाओ (अ, व, म), महासग्गाओ (स)। एकस्मिन्नादर्शे 'महासग्गाओ' इति पाठो लभ्यते, किन्तु समवायागसूत्रस्य सप्त-दशसमवायस्य (१८) सदर्भे 'महासामाणाओ' इत्येव पाठ समीचीनोस्ति।

२ भ० ३।४।

३ महावीरं मणसा चेव (अ, स), महावीर मणसा (व, म)।

४ × (क, ता, व, म)।

५. भ० २।७३।

६ स० पा०—हट्ठतुट्ठ जाव हियया।

७ स० पा०—अभिमुहा जाव पज्जुवासति।

८ भ० १।९।

९ स० पा०—उड्ढजाणू जाव विहरइ।

१० स० पा०—अज्झत्थिए जाव समुप्पज्जित्था।

११ भ० ३।४।

१२. पाउब्भूता (क, व, म)।

१३ देवा (ता, व)।

१४ भ० २।३०।

संपेहेत्ता उट्ठाए उट्ठेइ, उट्ठेत्ता जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छइ जाव[1] पज्जुवासइ ।।

८६. गोयमादि ! समणे भगव महावीरे भगव गोयम एव वयासी—से नूण तव गोयमा ! झाणतरियाए वट्टमाणस्स इमेयारूवे अज्झत्थिए जाव[2] जेणेव मम अतिए तेणेव हव्वमागए, से नूण गोयमा ! अट्ठे[3] समट्ठे[4] ?
हता अत्थि । त गच्छाहि ण गोयमा ! एए चेव देवा इमाइ एयारूवाइ वागरणाइ वागरेहिति ।।

८७ तए ण भगव गोयमे समणेण भगवया महावीरेण अब्भणुण्णाए समाणे समण भगव महावीर वदइ नमसइ, जेणेव ते देवा तेणेव पहारेत्थ गमणाए ।।

८८ तए ण ते देवा भगव गोयम एज्जमाण[5] पासति, पासित्ता हट्ठ[6]•तुट्ठचित्तमाणदिया णदिया पीइमणा परमसोमणस्सिया हरिसवसविसप्पमाण°हियया खिप्पामेव अब्भुट्ठेति, अब्भुट्ठेत्ता खिप्पामेव अब्भुवगच्छति[7] जेणेव भगव गोयमे तेणेव उवागच्छति जाव[8] नमसित्ता एवं वयासी—एव खलु भते ! अम्हे महासुक्काओ कप्पाओ महासामाणाओ[9] विमाणाओ दो देवा महिड्ढिया जाव[10] महाणुभागा समणस्स भगवओ महावीरस्स अतिय पाउब्भूया । तए ण अम्हे समण भगव महावीर वदामो नमसामो, वदित्ता नमसित्ता मणसा चेव इमाइ एयारूवाइ वागरणाइ पुच्छामो—कइ ण भते ! देवाणुप्पियाण अतेवासीसयाइ सिज्झिहिति जाव[11] अत करेहिति ? तए ण समणे भगव महावीरे अम्हेहि मणसा पुट्ठे अम्ह[12] मणसा चेव इम एयारूव वागरण वागरेइ—एव खलु देवाणुप्पिया ! मम सत्त अतेवासीसयाइ जाव अत करेहिति । तए ण अम्हे समणेण भगवया महावीरेण मणसा चेव पुट्ठेण मणसा चेव इम एयारूव वागरण वागरिया समाणा समण भगव महावीर वदामो नमसामो जाव[13] पज्जुवासामो त्ति कट्टु भगव गोयम वदति नमसति, वदित्ता नमसित्ता जामेव दिस पाउब्भूया तामेव दिसि पडिगया ।।

देवाणं नोसंजयवत्तव्वया-पदं

८९. भतेति ! भगव गोयमे समण भगव महावीर वदति नमसति जाव[14] एव वयासी —देवा ण भते ! सजया ति वत्तव्व सिया ?

---

१. भ० १।१० ।
२. भ० ५।८५ ।
३ अत्थे (अ, क, ता, स) ।
४. समत्थे (अ) ।
५ इज्जमाण (व) ।
६. स० पा०—हट्ठ जाव हियया ।
७. पच्चुवगच्छति २ (अ, क, ता, स) ।
८. भ० १।१० ।
९ महासग्गाओ (स) ।
१०. भ० ३।४ ।
११. भ० २।७३ ।
१२. अम्हे (क, म) ।
१३. भ० २।३० ।
१४. भ० १।१० ।

गोयमा ! णो तिणट्ठे समट्ठे । अब्भक्खाणमेय देवाणं[1] ।।

९० देवा ण भते ! असजता[2] ति वत्तव्व सिया ?
गोयमा ! णो तिणट्ठे समट्ठे । निट्ठुरवयणमेय देवाणं[3] ।।

९१ देवा ण भते ! णो सजयासजया ति वत्तव्व सिया ?
गोयमा ! णो तिणट्ठे समट्ठे । असब्भूयमेय देवाण ।।

९२ से कि खाइ ण भते ! देवा ति वत्तव्व सिया ?
गोयमा ! देवा ण नोसजया ति वत्तव्व सिया ।।

देवभाषा-पदं

९३ देवा ण भते ! कयराए भासाए भासति ? कयरा व भासा भासिज्जमाणी विसिस्सति ? गोयमा ! देवा ण अद्धमागहाए भासाए भासति । सा वि य ण अद्धमागहा भासा भासिज्जमाणी विसिस्सति ।।

छउमत्थ-केवलीणं नाणभेद-पदं

९४ केवली ण भते ! अतकर वा, अतिमसरीरिय[4] वा जाणइ-पासइ ?
हता[5] जाणइ-पासइ ।।

९५ जहा ण भते ! केवली अतकर वा, अतिमसरीरिय वा जाणइ-पासइ, तहा[6] ण छउमत्थे[7] वि अतकर वा, अतिमसरीरिय वा जाणइ-पासइ ?
गोयमा ! णो इणट्ठे समट्ठे । सोच्चा जाणइ-पासइ, पमाणतो वा ।।

९६ से किं त सोच्चा ?
सोच्चा ण केवलिस्स वा, केवलिसावगस्स[8] वा, केवलिसावियाए वा, केवलि-उवासगस्स वा, केवलिउवासियाए वा, तप्पक्खियस्स वा तप्पक्खियसावगस्स वा, तप्पक्खियसावियाए वा तप्पक्खियउवासगस्स वा तप्पक्खियउवासियाए वा । से त सोच्चा ।।

९७ से किं त पमाणे ?
पमाणे चउव्विहे पण्णत्ते, त जहा—पच्चक्खे अणुमाणे ओवम्मे आगमे, जहा अणुओगदारे तहा नेयव्व पमाण जाव[9] तेण पर सुत्तस्स वि अत्थस्स वि नो अत्तागमे, नो अणतरागमे, परपरागमे ।।

---

१ × (स) ।
२ अस्सजता (अ, क, ता, व, म) ।
३ × (स) ।
४ °सारीरिय (अ, क, व, स) ।
५ गोयमा (क, म), हता गोयमा (स) ।
६ तधा (अ, स) ।
७ छदुमत्थे (ता) ।
८ °सावयस्स (क, व, म, स) ।
९ अ० सू० ५१६-५५१ ।

९८ केवली ण भते ! चरिमकम्म वा, चरिमणिज्जर वा जाणइ-पासइ?
हता[1] जाणइ पासइ ॥

९९ जहा ण भते ! केवली चरिमकम्म वा, चरिमणिज्जर वा जाणइ-पासइ, तहा ण छउमत्थे वि चरिमकम्म वा, चरिमणिज्जर वा जाणइ-पासइ ?
गोयमा ! णो इणट्ठे समट्ठे। सोचा जाणइ-पासइ, पमाणतो वा। जहा ण अतकरेण[2] आलावगो[3] तहा चरिमकम्मेण वि अपरिसेसिओ नेयव्वो ॥

केवलीणं पणीय-मण-वइ-पदं

१००. केवली ण भते ! पणीय मण वा, वइ वा धारेज्जा ?
हता धारेज्जा ॥

१०१ जण्ण[4] भते ! केवली पणीय मण वा, वइ वा धारेज्जा, तण्ण[5] वेमाणिया देवा जाणति-पासति ?
गोयमा ! अत्थेगतिया जाणति-पासति, अत्थेगतिया ण जाणति, ण पासति ॥

१०२. से केणट्ठेण[6] °भते ! एव वुच्चइ—अत्थेगतिया जाणति-पासति, अत्थेगतिया ण जाणति°, ण पासति ?
गोयमा ! वेमाणिया देवा दुविहा पण्णत्ता, त जहा—माइमिच्छादिट्ठीउववण्णागा य, अमाइसम्मदिट्ठीउववण्णगा य। तत्थ ण जे ते माइमिच्छादिट्ठीउववण्णगा ते ण जाणति ण पासति। 'तत्थ ण जे ते अमाइसम्मदिट्ठीउववण्णगा ते ण जाणति-पासति।
से केणट्ठेण ? गोयमा ! अमाइसम्मदिट्ठी दुविहा पण्णत्ता, त जहा—अणतरोववण्णगा य, परपरोवण्णगा य। तत्थ ण जे ते अणतरोववण्णगा ते ण जाणति, ण पासति। तत्थ ण जे ते परपरोववण्णगा ते ण जाणति-पासति।
से केणट्ठेण ? गोयमा ! परपरोववण्णगा दुविहा पण्णत्ता, त जहा—अपज्जत्तगा य, पज्जत्तगा य। तत्थ ण जे ते अपज्जत्तगा ते ण जाणति, ण पासति। तत्थ ण जे ते पज्जत्तगा ते ण जाणति-पासति।
से केणट्ठेण ? गोयमा ! पज्जत्तगा दुविहा पण्णत्ता, त जहा—अणुवउत्ता य उवउत्ता य। तत्थ ण जे ते अणुवउत्ता ते ण जाणति, ण पासति। तत्थ ण जे ते उवउत्ता ते ण जाणति-पासति। से तेणट्ठेण गोयमा ! एव वुच्चइ—अत्थेगतिया जाणति-पासति, अत्थेगतिया ण जाणति, ण पासति'[7] ॥

---

१ गोयमा (अ, म), हता गोयमा (स)।
२ अतकरेण वा (म, स)।
३. भ० ५।९६, ९७।
४ ज ण (ता), जहा ण (म, स)।
५ त ण (क, ता, व, म)।
६ स० पा०—केणट्ठेण जाव ण।
७ एव अणतर परपर पज्जत्त अपज्जत्ता य उवउत्ता अणुवउत्ता। तत्थ ण जे ते उवउत्ता

अणुत्तरोववाइयाणं केवलिणा आलाव-पदं

१०३ पभू णं भंते ! अणुत्तरोववाइया देवा तत्थगया चेव समाणा इहगएणं केवलिणा सद्धिं आलावं वा, संलावं वा करेत्तए ?
हंता पभू ।।

१०४ से केणट्ठेणं[1] •भंते ! एवं वुच्चइ—पभू णं अणुत्तरोववाइया देवा तत्थगया चेव समाणा इहगएणं केवलिणा सद्धिं आलावं वा, संलावं वा° करेत्तए ?
गोयमा ! जण्णं अणुत्तरोववाइया देवा तत्थगया चेव समाणा अट्ठं वा हेउं वा पसिणं वा कारणं वा वागरणं वा पुच्छंति, तण्णं इहगए केवली अट्ठं वा[2] •हेउं वा पसिणं वा कारणं वा° वागरणं वा वागरेइ । से तेणट्ठेणं गोयमा ! एवं वुच्चइ—पभू णं अणुत्तरोववाइया देवा तत्थगया चेव समाणा इहगएणं केवलिणा सद्धिं आलावं वा, संलावं वा करेत्तए ।।

१०५. जण्णं भंते ! इहगए केवली अट्ठं वा[2] •हेउं वा पसिणं वा कारणं वा वागरणं वा° वागरेइ, तण्णं अणुत्तरोववाइया देवा तत्थगया चेव समाणा जाणंति-पासंति ?
हंता जाणंति-पासंति ।।

१०६. से केणट्ठेणं[3] •भंते ! एवं वुच्चइ—जण्णं इहगए केवली अट्ठं वा हेउं वा पसिणं वा कारणं वा वागरणं वा वागरेइ, तण्णं अणुत्तरोववाइया देवा तत्थगया चेव समाणा जाणंति°-पासंति ?
गोयमा ! तेसि णं देवाणं अणंताओ मणोदव्ववग्गणाओ लद्धाओ पत्ताओ अभिसमण्णागयाओ भवंति । से तेणट्ठेणं[4] •गोयमा ! एवं वुच्चइ—जण्णं इहगए केवली अट्ठं वा हेउं वा पसिणं वा कारणं वा वागरणं वा वागरेइ, तण्णं अणुत्तरोववाइया देवा तत्थगया चेव समाणा जाणंति°-पासंति ।।

१०७ अणुत्तरोववाइया णं भंते ! देवा किं उदिण्णमोहा ? उवसंतमोहा ? खीणमोहा? गोयमा ! नो उदिण्णमोहा, उवसंतमोहा, नो खीणमोहा ।।

केवलीणं इंदियनाण-निसेध-पदं

१०८ केवली णं भंते ! आयाणेहिं जाणइ-पासइ ?
गोयमा ! नो तिणट्ठे समट्ठे ।।

ते जाणंति पासंति से तेणट्ठेणं तं चेव (अ, क, ता, व, म, वृ), वाचानान्तरेत्विदं सूत्रं साक्षादेवउपलभ्यते (वृ) ।

१. स० पा०—केणट्ठेणं जाव पभू णं अणुत्तरोववाइया देवा जाव करेत्तए ।

२ स० पा०—अट्ठं वा जाव वागरणं ।

३. स० पा०—अट्ठं वा जाव वागरेइ ।

४ स० पा०—केणट्ठेणं जाव पासंति ।

५ स० पा०—तेणट्ठेणं जण्णं इहगए केवली जाव पासंति ।

१०९. से केणट्ठेण[1] •भते ! एव वुच्चइ°—केवली णं आयाणेहिं ण जाणइ, ण पासइ ? गोयमा ! केवली ण पुरत्थिमे ण मियं पि जाणइ, अमिय पि जाणइ[2]। •एव दाहिणे ण, पच्चत्थिमे ण, उत्तरे ण, उड्ढ, अहे मिय पि जाणइ, अमिय पि जाणइ।
सव्व जाणइ केवली, सव्व पासइ केवली।
सव्वओ जाणइ केवली, सव्वओ पासइ केवली।
सव्वकाल जाणइ केवली, सव्वकाल पासइ केवली।
सव्वभावे जाणइ केवली, सव्वभावे पासइ केवली।
अणते नाणे केवलिस्स, अणते दसणे केवलिस्स।
निव्वुडे नाणे केवलिस्स निव्वुडे दसणे केवलिस्स। से तेणट्ठेण गोयमा ! एव वुच्चइ—केवली ण आयाणेहि ण जाणइ, ण पासइ° ॥

केवलीणं जोगचंचलया-पदं

११० केवली ण भते ! अस्सि समयसि[3] जेसु आगासपदेसेसु हत्थ वा पाय वा बाह वा ऊरु° वा ओगाहित्ता ण चिट्ठति, पभू ण केवली सेयकालसि वि तेसु चेव आगासपदेसेसु हत्थ वा[4] •पाय वा बाह वा ऊरु वा° ओगाहित्ताण चिट्ठित्तए ? गोयमा ! णो तिणट्ठे समट्ठे ॥

१११ से केणट्ठेण भते[5] ! •एव वुच्चइ°—केवली ण अस्सि समयसि जेसु आगासपदेसेसु[6] •हत्थ वा पाय वा बाह वा ऊरु वा ओगाहित्ताण° चिट्ठति, णो ण पभू केवली सेयकालसि वि तेसु चेव आगासपदेसेसु हत्थ वा[7] •पाय वा बाह वा ऊरु वा ओगाहित्ता ण° चिट्ठित्तए ?
गोयमा ! केवलिस्स ण वीरिय-सजोग-सद्दव्वयाए चलाइ उवकरणाइ भवति। चलोवकरणट्ठयाए य ण केवली अस्सि[8] समयसि जेसु आगासपदेसेसु हत्थ वा[9] •पाय वा बाह वा ऊरु वा ओगाहित्ता ण° चिट्ठति, णो ण पभू केवली सेयकालसि वि तेसु चेव[10] •आगासपदेसेसु हत्थ वा पाय वा बाह वा ऊरु वा ओगाहित्ताण° चिट्ठित्तए। से तेणट्ठेण[11] •गोयमा ! एव वुच्चइ—केवली ण अस्सि समयसि जेसु आगासपदेसेसु हत्थ वा पाय वा बाह वा ऊरु वा ओगा-

---

१ स० पा०—केणट्ठेण जाव केवली।
२ स० पा०—जाणइ जाव निव्वुडे दसणे केवलिस्स से तेणट्ठेण।
३ समतसि (ता)।
४ स० पा०—हत्थ वा जाव ओगाहित्ता।
५ स० पा०—भते जाव केवली।
६. स० पा०—आगासपदेसेसु जाव चिट्ठति।
७ स० पा०—हत्थ वा जाव चिट्ठित्तए।
८. जसि (अ)।
९ स० पा०—हत्थ वा जाव चिट्ठति।
१०. स० पा०—चेव जाव चिट्ठित्तए।
११ स० पा०—तेणट्ठेण जाव वुच्चइ। केवली ण अस्सि समयसि जाव चिट्ठित्तए।

हित्ता ण चिट्ठति, णो ण पभू केवली सेयकालंसि वि तेसु चेव आगासपदेसेसु हत्थ वा पाय वा बाह वा ऊरु वा ओगाहित्ता ण° चिट्ठित्तए ॥

चोद्दसपुव्वीणं सामत्थ-पदं

११२. पभू ण भते ! चोद्दसपुव्वी घडाओ घडसहस्स, पडाओ पडसहस्स, कडाओ कडसहस्स, रहाओ रहसहस्स, छत्ताओ छत्तसहस्स, दडाओ दडसहस्स अभिनिव्वट्टेत्ता उवदसेत्तए ?
हता पभू ॥

११३. से केणट्ठेण पभू चोद्दसपुव्वी जाव[1] उवदसेत्तए ?
गोयमा ! चोद्दसपुव्विस्स ण अणताइ दव्वाइ उक्कारियाभेएण[2] भिज्जमाणाइ लद्धाइ पत्ताइ अभिसमण्णागयाइ भवति ।
से तेणट्ठेण[3] •गोयमा ! एव वुच्चइ—पभू ण चोद्दसपुव्वी घडाओ घडसहस्स, पडाओ पडसहस्स, कडाओ कडसहस्स, रहाओ रहसहस्स, छत्ताओ छत्तसहस्स, दडाओ दडसहस्स अभिनिव्वट्टेत्ता° उवदसेत्तए ॥

११४ सेव भते ! सेव भते ! त्ति[4] ॥

पंचमो उद्देसो

मोक्ख-पद

११५ छउमत्थे ण भते ! मणूसे तीयमणत सासय समय केवलेण सजमेण, केवलेण सवरेण, केवलेण बभचेरवासेण, केवलाहि पवयणमायाहि सिज्झिसु ? वुज्झिसु ? मुच्चिसु ? परिणिव्वाइसु ? सव्वदुक्खाण अत करिसु ?
गोयमा ! णो इणट्ठे समट्ठे । जहा पढमसए चउत्थुद्देसे आलावगा तहा नेयव्वा जाव[5] अलमत्थु त्ति वत्तव्व सिया ॥

एवंभूय-अणेवभूय-वेदणा-पदं

११६ अण्णउत्थिया ण भते ! एवमाइक्खति जाव[6] परूवेति—सव्वे पाणा सव्वे भूया सव्वे जीवा सव्वे सत्ता एव भूय वेदण वेदेति ॥

---

१. भ० ५।११२ ।
२. प्रज्ञापनासूत्रे भाषापदे 'उक्करियाभेए' इति पद लभ्यते, तत्रापि केषुचिदादर्शेषु उक्कारियाभेए इत्यपि पाठो लभ्यते ।
३ स० पा०—तेणट्ठेण जाव उवदसेत्तए ।
४ भ० १।५१ ।
५. भ० १।२०१-२०६ ।
६. भ० १।४२० ।

११७ से कहमेयं भते ! एवं ?
गोयमा ! जण्णं ते अण्णउत्थिया एवमाइक्खति जाव[1] सव्वे सत्ता एवभूयं वेदण वेदेति। जे ते एवमाहसु, मिच्छं[2] ते एवमाहसु। अह पुण गोयमा ! एवमाइक्खामि जाव[3] परूवेमि—अत्थेगइया पाणा भूया जीवा सत्ता एवभूय वेदेण वेदेति, अत्थेगइया पाणा भूया जीवा सत्ता अणेवभूय वेदण वेदेति ॥

११८. से केणट्ठेण भते ! एव वुच्चइ—अत्थेगइया[4] •पाणा भूया जीवा सत्ता एवभूय वेदण वेदेति, अत्थेगइया पाणा भूया जीवा सत्ता अणेवभूय वेदण वेदेति° ?
गोयमा ! जे ण पाणा भूया जीवा सत्ता जहा कडा कम्मा तहा वेदण वेदेति, ते ण पाणा भूया जीवा सत्ता एवभूय वेदेण वेदेति।
जे ण पाणा भूया जीवा सत्ता जहा कडा कम्मा नो तहा वेदण वेदेति, ते ण पाणा भूया जीवा सत्ता अणेवभूय वेदण वेदेति। से तेणट्ठेण[5] •गोयमा ! एव वुच्चइ—अत्थेगइया पाणा भूया जीवा सत्ता एवभूय वेदण वेदेति, अत्थेगइया पाणा भूया जीवा सत्ता अणेवभूय वेदण वेदेति° ॥

११९ नेरइया णं भते ! किं एवभूय वेदण वेदेति ? अणेवभूय वेदण वेदेति ?
गोयमा ! नेरइया ण एवभूय पि वेदण वेदेति, अणेवभूय पि वेदण वेदेति ॥

१२० से केणट्ठेण[6] •भते ! एव वुच्चइ—नेरइया ण एवभूय पि वेदण वेदेति, अणेवभूय पि वेदण वेदेति° ?
गोयमा ? जे ण नेरइया जहा कडा कम्मा तहा वेदणं वेदेति, ते ण नेरइया एवभूय वेदण वेदेति।
जे ण नेरइया जहा कडा कम्मा नो तहा वेदण वेदेति, तेण नेरइया अणेवभय वेदणं वेदेसि। से तेणट्ठेण ॥

१२१ एव जाव[7] वेमाणिया ॥

कुलगरादि-पदं

१२२. ससारमडल नेयव्व[8] ॥

१२३. सेव भते ! सेव भते ! त्ति जाव[3] विहरइ ॥

---

१ भ० ५।११६।
२ मिच्छा (अ, क, व, म, स)।
३. भ० १।४२१।
४ स० पा०—त चेव उच्चारेयव्वं।
५ स० पा०—तहेव।]
६. स० पा०—त चेव।
७ पू० प० २।
८ नेयव्व। जबूदीवे ण भते ! इह भारहे वासे इमीसे ओसप्पिणीए समाए कइ कुलगरा होत्था ?
गोयमा ! सत्त। एव तित्थयरमायरो, पियरो, पढमा सिस्सिणीओ, चक्कवट्टिमायरो, इत्थि-

छट्ठो उद्देसो

अप्पायु-दीहायु-पदं

१२४. कहण्ण[1] भंते ! जीवा अप्पाउयत्ताए कम्मं पकरेंति ?
गोयमा[2] ! पाणे अइवाएत्ता, मुसं वइत्ता, तहारूवं समणं वा माहणं वा अफासु-एणं अणेसणिज्जेणं असण-पाण-खाइम-साइमेणं पडिलाभेत्ता[3]—एवं खलु जीवा अप्पाउयत्ताए कम्मं पकरेंति ?

१२५. कहण्ण भंते ! जीवा दीहाउयत्ताए कम्मं पकरेंति ?
गोयमा ! नो पाणे अइवाएत्ता[4], नो मुसं वइत्ता, तहारूवं समणं वा माहणं वा फासुएणं[5] एसणिज्जेणं असण-पाण-खाइम-साइमेणं पडिलाभेत्ता—एवं खलु जीवा दीहाउयत्ताए कम्मं पकरेंति ॥

असुभसुभ-दीहायु-पदं

१२६ कहण्णं भंते ! जीवा असुभदीहाउयत्ताए कम्मं पकरेंति ?
गोयमा ! पाणे अइवाएत्ता, मुसं वइत्ता, तहारूवं समणं वा माहणं वा हीलित्ता[6] निंदित्ता खिंसित्ता गरहित्ता अवमण्णित्ता 'अण्णयरेणं अमणुण्णेणं अपीतिकारएणं'[7] असण-पाण-खाइम-साइमेणं पडिलाभेत्ता—एवं खलु जीवा असुभदीहा-उयत्ताए कम्मं पकरेंति ॥

१२७. कहण्णं भंते ? जीवा सुभदीहाउयत्ताए कम्मं पकरेंति ?
गोयमा ! नो पाणे अइवाएत्ता, नो मुसं वइत्ता, तहारूवं समणं वा माहणं वा वंदित्ता नमंसित्ता जाव[8] पज्जुवासित्ता 'अण्णयरेणं मणुण्णेणं पीतिकारएणं'[9] असण-पाण-खाइम-साइमेणं पडिलाभेत्ता—एवं खलु जीवा सुभदीहाउयत्ताए कम्मं पकरेंति ॥

रयण, वलदेवा, वासुदेवा, वासुदेवमायरो, पियरो, एएसिं पडिसत्तू जहा समवाए नाम-परिवाडीए तहा नेयव्वा (अ, क, व, स); एपु आदर्शेपु द्वयोर्वाचनयो सम्मिश्रण जातम्। वृत्तिकृता अस्य वाचनान्तरस्य उल्लेखोपि कृतोस्ति यथा—अथ चेह स्थाने वाचनान्तरे कुलकर तीर्थकरादि वक्तव्यता दृश्यते, ततश्च 'संसारमडल' शब्देन पारिभाषिकसञ्ज्ञया सेह सूचितेति सभाव्यते (वृ)। पइण्णगसमवाय २१८-२४७।

१. भ० १।५१।

२ कह ण (अ, ता, म), कहि ण (क), । कह ण (व)।

३ गोयमा तिहिं ठाणेहिं त (व, स) सर्वत्र, द्रष्टव्य—ठा० ३।१७-२०।

४ °हेत्ता (म)।

५ अतिवतित्ता (अ, म)।

६ फासु (अ, क, ता, म, स)।

७ हीलेत्ता (क, ता, व, म)।

८. वाचनान्तरे तु अफासुएण अणेसणिज्जेण ति दृश्यते (वृ)।

९. भ० २।३०।

१० वाचनान्रे तु फासुएण इत्यादि दृश्यते (वृ)।

कयविक्कए किरिया-पदं

१२८. गाहावइस्स ण भंते ! भड विक्किणमाणस्स केइ भड अवहरेज्जा, तस्स ण भते ! 'भड अणुगवेसमाणस्स'[1] कि आरभिया किरिया कज्जइ ? पारिग्गहिया[2] किरिया कज्जइ ? मायावत्तिया किरिया कज्जइ ? अपच्चक्खाणकिरिया कज्जइ ? मिच्छादसणवत्तिया किरिया कज्जइ ?
गोयमा ! आरभिया किरिया कज्जइ, पारिग्गहिया किरिया कज्जइ, मायावत्तिया किरिया कज्जइ, अपच्चक्खाणकिरिया कज्जइ, मिच्छादसणकिरिया सिय कज्जइ, सिय नो कज्जइ ।
अह से भडे अभिसमण्णागए भवइ, तओ से पच्छा सव्वाओ ताओ पयणुईभवति ।।

१२९. गाहावइस्स ण भते ! भड विक्किणमाणस्स कइए[3] भड साइज्जेजा, भडे य से अणुवणीए सिया ।
गाहावइस्स ण भते ! ताओ भडाओ किं आरभिया किरिया कज्जइ ? जाव[4] मिच्छादसणकिरिया कज्जइ ?
कइयस्स वा ताओ भडाओ किं आरभिया किरिया कज्जइ ? जाव मिच्छादसणकिरिया कज्जइ ?
गोयमा ! गाहावइस्स ताओ भडाओ आरभिया किरिया कज्जइ 'जाव[5] अपच्चक्खाणकिरिया कज्जइ । मिच्छादसणकिरिया'[6] सिय कज्जइ, सिय नो कज्जइ ।
कइयस्स ण ताओ सव्वाओ पयणुईभवति ।।

१३० गाहावइस्स ण भते ! भड विक्किणमाणस्स[7] •कइए भड साइज्जेजा°, भडे से उवणीए सिया ।
कइयस्स ण भते ! ताओ भडाओ किं आरभिया किरिया कज्जइ ? जाव[8] मिच्छादसणकिरिया कज्जइ ?
गाहावइस्स वा ताओ भडाओ किं आरभिया किरिया कज्जइ जाव मिच्छादसण किरिया कज्जइ ?
गोयमा ! कइयस्स ताओ भडाओ हेट्ठिल्लाओ चत्तारि किरियाओ कज्जति । मिच्छादसणकिरिया भयणाए ।
गाहावइस्स ण ताओ सव्वाओ पयणुईभवति ।

---

१. त भडय गवेस° (व, म) ।
२. परि° (अ, स) ।
३. कतिए (क, ता, व, म, स) ।
४. भ० ५।१२८ ।
५ भ० ५।१२८ ।
६ जाव अपच्चक्खाण मिच्छादसणवत्तिया° (अ, स), जाव मिच्छादसणवत्तिया° (क, ता, म), जाव मिच्छादसण° (ब) ।
७. स० पा०—विक्किणमाणस्स जाव भडे ।
८. भ० ५।१२८ ।

१३१. गाहावइस्स ण भते ! भड[1] •विक्किणमाणस्स कइए भड साइज्जेज्जा, धणे य से अणुवणीए सिया ?

कइयस्स णं भते ! ताओ धणाओ कि आरभिया किरिया कज्जइ ? जाव[2] मिच्छा-दसणकिरिया कज्जइ ?

गाहावइस्स वा ताओ धणाओ कि आरभिया किरिया कज्जइ ? जाव मिच्छा-दसणकिरिया कज्जइ ?

गोयमा ! कइयस्स ताओ धणाओ हेट्ठिल्लाओ चत्तारि किरियाओ कज्जति । मिच्छादसणकिरिया भयणाए ।

गाहावइस्स ण ताओ सव्वाओ पयणुईभवति ।।

१३२ गाहावइस्स ण भते ! भड विक्किणमाणस्स कइए भड साइज्जेजा, धणे से उवणीए सिया ।

गाहावइस्स ण भते ! ताओ धणाओ किं आरभिया किरिया कज्जइ ? जाव[3] मिच्छादसणकिरिया कज्जइ ?

कइयस्स वा ताओ धणाओ कि आरभिया किरिया कज्जइ ? जाव मिच्छादसण-किरिया कज्जइ ?

गोयमा ! गाहावइस्स ताओ धणाओ आरभिया किरिया कज्जइ जाव अपच्च-क्खाणकिरिया कज्जइ । मिच्छादंसणकिरिया सिय कज्जइ, सिय नो कज्जइ ।

कइयस्स ण ताओ सव्वाओ पयणुईभवति° ।।

अगणिकाए महाकम्मादि पदं

१३३ अगणिकाए ण भते ! अहुणोज्जलिए[4] समाणे महाकम्मतराए चेव[5], महाकिरिया-तराए चेव, महासवतराए[6] चेव, महावेदणतराए चेव भवइ । अहे ण समए-समए 'वोक्कसिज्जमाणे-वोक्कसिज्जमाणे'[7] चरिमकालसमयसि इगालब्भूए मुम्मुरब्भूए छारियब्भूए[8], तओ पच्छा अप्पकम्मतराए चेव, अप्पकिरियतराए

---

१. स० पा०—भंड जाव धणे य से अणुवणीए सिया ? एयं पि जहा भंडे उवणीए तहा नेयव्वं ।
चउत्थो आलावगो—'धणे य से उवणीए सिया' जहा पढमो आलावगो—'भंडे य से अणुवणीए सिया', तहा नेयव्वो ।
पढम-चउत्थाणं एक्को गमो, बिनिय-तइयाण एक्को गमो ।

२. भ० ५।१२८ ।

३ भ० ५।१२८ ।

४ अहणुज्जलिए (ता), अहुणुज्जलिए (व) ।

५. च्चेव (ता) ।

६ महस्सव० (अ, ता, व) ।

७. वोयसिज्जमाणे २ वोच्छिज्जमाणे २ (अ,स), वोकसिज्जमाणे २ वोच्छिज्जमाणे २ (ता), वोयसिज्जमाणे २ (म) ।

८. छारब्भूए (अ) ।

चेव, अप्पासवतराए चेव, अप्पवेयणतराए चेव भवइ ?
हता गोयमा ! अगणिकाए ण अहुणोज्जलिए समाणे त चेव ॥

धणुपक्खेवे किरिया-पदं

१३४ पुरिसे ण भते ! धणु परामुसइ, परामुसित्ता उसु परामुसइ,[1] परामुसित्ता ठाण[2] ठाइ, ठिच्चा आयतकण्णातय[3] उसु करेति, उड्ढ वेहास उसु उव्विहइ।
तए[4] ण से उसू[5] उड्ढ वेहास[6] उव्विहिए समाणे जाइ तत्थ पाणाइ भूयाइ जीवाइ सत्ताइ अभिहणइ वत्तेति लेसेति[7] सघाएइ सघट्टेति परितावेइ किलामेइ[8], ठाणाओ ठाण सकामेइ, जीवियाओ ववरोवेइ। तए ण भते ! से पुरिसे कति-किरिए ?
गोयमा ! जाव च ण से पुरिसे धणु परामुसइ[9], °उसु परामुसइ, ठाण ठाइ, आयतकण्णातय उसु करेति, उड्ढ वेहास उसु° उव्विहइ, ताव च ण से पुरिसे काइयाए[10] °अहिगरणियाए, पाओसियाए, पारियावणियाए°, पाणाइवाय-किरियाए—पचहि किरियाहि पुट्ठे। जेसि पि य ण जीवाण सरीरेहिं धणू निव्वत्तिए ते वि य ण जीवा काइयाए जाव पचहि किरियाहि पुट्ठा[11]। एव धणुपट्ठे[12] पचहि किरियाहि, जीवा पचहि, ण्हारू पचहि, उसू पचहि—सरे, पत्तणे, फले, ण्हारू पचहि ॥

१३५ अहे[13] ण से उसू अप्पणो गुरुयत्ताए, भारियत्ताए, गुरुसभारियत्ताए अहे वीससाए पच्चोवयमाणे जाइ तत्थ पाणाइ जाव[14] जीवियाओ ववरोवेइ ताव च ण से पुरिसे कतिकिरिए ?
गोयमा ! जाव च ण से उसू अप्पणो गुरुयत्ताए जाव जीवियाओ ववरोवेइ ताव च ण से पुरिसे काइयाए जाव[15] चउहि किरियाहि पुट्ठे। जेसि पि य ण जीवाण सरीरेहि धणू निव्वत्तिए ते वि जीवा चउहि किरियाहि, धणुपट्ठे[16] चउहि,

---

१ परामसइ (व, म)।
२ वेसाह ठाण (उ० १।२२)।
३ °कण्णाइय (अ, स), कण्णायय (म, उ० १।२२)।
४ ततो (क, ता, व, स)।
५. उसु (स)।
६ वेहासे (ता)।
७ लेस्सेति (अ, व, स)।
८. किलोमेह उद्दवेह (भ० ८।२८७)।
९ स० पा०—परामुसइ जाव उव्विहइ।
१० स० पा०—काइयाए जाव पाणाइवाय°।
११. पुट्ठे (अ, ता, ब, म, स), पट्ठो (क)। अत्र जीवा इति कर्तृपद बहुवचनान्तमस्ति तेन 'पुट्ठा' इति पद स्वीकृतम्।
१२ धणू° (अ, ता, स), धणूपिट्ठे (ब)।
१३. अधे (ता)।
१४ भ० ५।१३४।
१५ भ० ५।१३४।
१६ °पुट्ठे (अ, म, स)।

जीवा चउहि, ण्हारू चउहि, उसू पचहि—सरे, पत्तणे, फले, ण्हारू पचहि। जे वि य से जीवा अहे पच्चोवयमाणस्स उवग्गहे[1] वट्टति ते वि य ण जीवा काइयाए जाव पचहि किरियाहि पुट्ठा ॥

अण्णउत्थिय-पदं

१३६ अण्णउत्थिया ण भते! एवमातिक्खति जाव[2] परूवेति—से जहानामए जुवति जुवाणे हत्थेण हत्थे गेण्हेज्जा, चक्कस्स वा नाभी अरगाउत्ता सिया, एवामेव जाव चत्तारि पच जोयणसयाइ बहुसमाइण्णे मणुयलोए[3] मणुस्सेहि ॥

१३७ से कहमेय भते! एव ?

गोयमा! जण्ण ते अण्णउत्थिया एवमातिक्खति जाव[4] बहुसमाइण्णे मणुयलोए मणुस्सेहिं। जे ते एवमाहसु, 'मिच्छ ते एवमाहसु'[5]। अह पुण गोयमा! एव-माइक्खामि[6] •जाव[7] परूवेमि—से जहानामए जुवति जुवाणे हत्थेण हत्थे गेण्हेज्जा, चक्कस्स वा नाभी अरगाउत्ता सिया°, एमामेव जाव चत्तारि पच जोयणस-याइ बहुसमाइण्णे निरयलोए नेरइएहि ॥

नेरइयविउव्वणा-पदं

१३८. नेरइया ण भते! कि एगत्त पभू विउव्वित्तए? पुहत्त[8] पभू विउव्वित्तए?

गोयमा! एगत्त पि पहू विउव्वित्तए, पुहत्तपि पहू विउव्वित्तए। जहा जीवा-भिगमे आलावगो तहा नेयव्वो जाव[9] विउव्वित्ता अण्णमण्णस्स काय अभिहण-माणा-अभिहणमाणा वेयण उदीरेति—उज्जल विउल पगाढ कक्कस कडुय फरुस निट्ठुर चड तिव्व दुक्ख दुग्ग दुरहियास ॥

आहाकम्मादिआहारे आराहणादि-पदं

१३९. आहाकम्म 'अणवज्जे' त्ति मण पहारेत्ता भवति, से ण तस्स ठाणस्स अणालोइय-पडिक्कते[10] काल करेइ—नत्थि तस्स आराहणा। से ण तस्स ठाणस्स आलोइय-पडिक्कते काल करेइ—अत्थि तस्स आराहणा ॥

१४० एएण गमेण नेयव्व—कीयगड[11], ठविय[12], रइय[13], कतारभत्त 'दुब्भिक्खभत्त, वद्दलियाभत्त'[14], गिलाणभत्त, सेज्जायरपिड, रायपिड[15] ॥

---

१ ओवग्गहे (अ)।
२. भ० १।४२०।
३ मणुस्स° (ता)।
४. भ० ५।१३६।
५ मिच्छा (अ, क, व, म, स)।
६. स० पा०—एवमाइक्खामि जाव एवामेव।
७ भ० १।४२१।
८ पहुत्त (ता)।
९. जी० ३, नेरइय-उद्देसो २।
१०. °लोतिय° (अ, स)।
११ कीयकड (क, व), उद्देसिय कीयकड (ता)
१२. ठवियक (क, ता), ठवितकडं (व)।
१३ रतियक (क, ब), रइयक (ता)।
१४. °वत्त वद्दलियावत्त (व)।
१५. × (क)।

१४१ आहाकम्म 'अणवज्जे' त्ति[1] सयमेव परिभुजित्ता भवति, से ण तस्स ठाणस्स[2] •अणालोइयपडिक्कते काल करेइ—नत्थि तस्स आराहणा। से ण तस्स ठाणस्स आलोइय-पडिक्कते काल करेइ°—अत्थि तस्स आराहणा ।।

१४२ एय पि तेह चेव जाव[3] रायपिड ।।

१४३ आहाकम्म[4] 'अणवज्जे' त्ति अण्णमण्णस्स अणुप्पदावइत्ता भवइ, से ण तस्स[5] •ठाणस्स अणालोइयपडिक्कते काल करेइ—नत्थि तस्स आराहणा। से ण तस्स ठाणस्स आलोइय-पडिक्कते काल करेइ—अत्थि तस्स आराहणा° ।।

१४४ एय पि तह चेव जाव[6] रायपिंड ।।

१४५ आहाकम्म ण 'अणवज्जे' त्ति वहुजणमज्झे पण्णवइत्ता भवति, से ण तस्स[7] •ठाणस्स अणालोइयपडिक्कते काल करेइ—नत्थि तस्स आराहणा। से ण तस्स ठाणस्स आलोइय-पडिक्कते काल करेइ°—अत्थि तस्स आराहणा ।।

१४६ एय पि तह चेव जाव[8] रायपिड ।।

आयरिय-उवज्झायस्स सिद्धि-पदं

१४७. आयरिय- उवज्झाए ण भते ! सविसयसि गण अगिलाए सगिण्हमाणे, अगिलाए उवगिण्हमाणे कइहि भवग्गहणेहि सिज्झति जाव[9] सव्वदुक्खाण अत करेति ?

गोयमा ! अत्थेगतिए तेणेव भवग्गहणेण सिज्झति, अत्थेगतिए दोच्चेण भवग्गहणेण सिज्झति, तच्च पुण भवग्गहण नाइक्कमति ।।

अब्भक्खाणिस्स कम्मबंध-पदं

१४८. जे ण भते ! पर अलिएण असब्भूएण अब्भक्खाणेण[10] अब्भक्खाति[11], तस्स ण कहप्पगारा कम्मा कज्जति ?

गोयमा ! जे ण पर अलिएण, असतएण[12] अब्भक्खाणेण अब्भक्खाति, तस्स ण तहप्पगारा चेव कम्मा कज्जति। जत्थेव ण अभिसमागच्छति तत्थेव ण पडिसवेदेति, तओ से पच्छा वेदेति ।।

१४९ सेव भते ! सेव भते ! त्ति[13] ।।

---

१. त्ति वहुजणस्स मज्झे भासित्ता (अ, स)।
२ स० पा०—ठाणस्स जाव अत्थि।
३ भ० ५।१४०।
४ अहाकम्म (अ)।
५ स० पा०—तस्स°।
६ भ० ५।१४०।
७. स० पा०—तस्स जाव अत्थि।
८ भ० ५।१४०।
९ भ० १।४४।
१० × (अ)।
११ अब्भाइक्खइ (क, ता, व)।
१२ असतवयणेण (म, स)।
१३ भ० १।५१।

सत्तमो उद्देसो

परमाणु-खंधाणं एयणादि-पदं

१५०. परमाणुपोग्गले णं भंते ! एयति वेयति[1] °चलति फंदइ घट्टइ खुब्भइ उदीरइ°, तं तं भावं परिणमति ?
गोयमा ! सिय एयति वेयति जाव तं तं भावं परिणमति; सिय नो एयति जाव नो तं तं भावं परिणमति ॥

१५१. दुप्पएसिए णं भंते ! खंधे एयति जाव[2] तं तं भावं परिणमति ?
गोयमा ! सिय एयति जाव तं तं भावं परिणमति । सिय नो एयति जाव नो तं तं भावं परिणमति । सिय देसे एयति, देसे नो एयति ॥

१५२. तिप्पएसिए णं भंते ! खंधे एयति ?
गोयमा ! सिय एयति, सिय नो एयति । सिय देसे एयति, नो देसे एयति । सिय देसे एयति, नो देसा एयंति । सिय देसा एयंति, नो देसे एयति ॥

१५३. चउप्पएसिए णं भंते ! खंधे एयति ?
गोयमा ! सिय एयति, सिय नो एयति । सिय देसे एयति, नो देसे एयति । सिय देसे एयति, नो देसा एयंति । सिय देसा एयंति, नो देसे एयति । सिय देसा एयंति, नो देसा एयंति ।
जहा चउप्पएसिओ तहा पंचपएसिओ, तहा जाव अणंतपएसिओ ॥

परमाणु-खंधाणं छेदादि-पदं

१५४. परमाणुपोग्गले णं भंते ! असिधारं वा खुरधारं वा ओगाहेज्जा ?
हंता ओगाहेज्जा[3] ।
से णं भंते ! तत्थ छिज्जेज्ज वा भिज्जेज्ज वा ?
गोयमा नो तिणट्ठे समट्ठे, नो खलु तत्थ सत्थं कमइ ॥

१५५. एवं जाव असंखेज्जपएसिओ ॥

१५६. अणंतपएसिए णं भंते ! खंधे असिधारं वा खुरधारं वा ओगाहेज्जा ?
हंता ओगाहेज्जा ।
से णं भंते ! तत्थ छिज्जेज्ज वा भिज्जेज्ज वा ?
गोयमा ! अत्थेगइए छिज्जेज्ज वा भिज्जेज्ज वा, अत्थेगइए नो छिज्जेज्ज वा नो भिज्जेज्ज वा ॥

---

१. सं० पा०—वेयति जाव तं ।
२. भ० ५।१५० ।
३. ओगाहिज्ज (क, व, म, स) ।

१५७. [1]परमाणुपोग्गले ण भते ? अगणिकायस्स मज्झमज्झेण वीइवएज्जा ?
हता वीइवएज्जा ।
से ण भते ! तत्थ झियाएज्जा ?
गोयमा ! नो इणट्ठे समट्ठे, नो खलु तत्थ सत्थ कमइ ।
से ण भते ! पुक्खलसवट्टगस्स महामेहस्स मज्झमज्झेण वीइवएज्जा ?
हता वीइवएज्जा ।
से ण भते ! तत्थ उल्ले सिया ?
गोयमा ! नो इणट्ठे समट्ठे, नो खलु तत्थ सत्थ कमइ ।
से ण भते ! गगाए महाणदीए पडिसोय हव्वमागच्छेज्जा ?
हता हव्वमागच्छेज्जा ।
से ण भते ! तत्थ विणिहायमावज्जेज्जा ?
गोयमा ! नो इणट्ठे समट्ठे, नो खलु तत्थ सत्थ कमइ ।
से ण भते ! उदगावत्त वा उदगबिदु वा ओगाहेज्जा ?
हता ओगाहेज्जा ।
से ण भते ! तत्थ परियावज्जेज्जा ?
गोयमा ! नो इणट्ठे समट्ठे, नो खलु तत्थ सत्थ कमइ ।।

१५८. एव जाव असखेज्जपएसिओ ।।

१५९ अणतपएसिए ण भते ! खधे अगणिकायस्स मज्झमज्झेण वीइवएज्जा ?
हता वीइवएज्जा ।
से ण भते ! तत्थ झियाएज्जा ?
गोयमा ! अत्थेगइए झियाएज्जा, अत्थेगइए नो झियाएज्जा ।
से ण भते ! पुक्खलसवट्टगस्स महामेहस्स मज्झमज्झेण वीइवएज्जा ।
हता वीइवएज्जा ।
से ण भते ! तत्थ उल्ले सिया ?
गोयमा ! अत्थेगइए उल्ले सिया, अत्थेगइए नो उल्ले सिया ।
से ण भते ! गगाए महानईए पडिसोय हव्वमागच्छेज्जा ?
हता हव्वमागच्छेज्जा ।
से ण भते ! तत्थ विणिहायमावज्जेज्जा ?

---

१. स० पा०—एव अगणिकायस्स मज्झमज्झेण तहिं नवर झियाएज्ज भाणियव्व । एव पुक्खलसवट्टगस्स महामेहस्स मज्झमज्झेण तहिं उल्ले सिया । एव गगाए महाणदीए पडिसोय हव्वमागच्छेज्जा तहिं विणिहायमावज्जेज्जा । उदगावत्त वा उदगबिदु वा ओगाहेज्जा । से ण तत्थ परियावज्जेज्जा ।

गोयमा ! अत्थेगइए विणिहायमावज्जेज्जा, अत्थेगइए नो विणिहाय-मावज्जेज्जा।

से णं भंते ! उदगावत्तं वा उदगबिंदु वा ओगाहेज्जा ?

हंता ओगाहेज्जा।

से णं भंते ! तत्थ परियावज्जेज्जा ?

गोयमा ! अत्थेगइए परियावज्जेज्जा, अत्थेगइए नो परियावज्जेज्जा° ॥

परमाणु-खंधाणं सअड्ढसमज्झादि-पदं

१६० परमाणुपोग्गले णं भंते ! किं सअड्ढे[1] समज्झे सपएसे ? उदाहु अणड्ढे अमज्झे अपएसे ?

गोयमा ! अणड्ढे अमज्झे अपएसे, नो सअड्ढे नो समज्झे नो सपएसे ॥

१६१. दुप्पएसिए णं भंते ! खंधे किं सअड्ढे समज्झे सपएसे ? उदाहु[2] अणड्ढे अमज्झे अपएसे ?

गोयमा ! सअड्ढे अमज्झे सपएसे, नो अणड्ढे नो समज्झे नो अपएसे ॥

१६२ तिप्पएसिए णं भंते ! खंधे पुच्छा।

गोयमा ! अणड्ढे समज्झे सपएसे, नो सअड्ढे नो अमज्झे नो अपएसे ॥

१६३ जहा दुप्पएसिओ तहा जे समा ते भाणियव्वा, जे विसमा ते जहा तिप्पएसिओ तहा भाणियव्वा ॥

१६४. संखेज्जपएसिए णं भंते ! खंधे किं सअड्ढे ? पुच्छा।

गोयमा ! सिय सअड्ढे अमज्झे सपएसे, सिय अणड्ढे समज्झे सपएसे। जहा संखेज्जपएसिओ तहा असंखेज्जपएसिओ वि, अणंतपएसिओ वि ॥

परमाणु-खंधाणं परोप्परं फुसणा-पदं

१६५ परमाणुपोग्गले णं भंते ! परमाणुपोग्गलं फुसमाणे किं—

१ देसेणं देसं फुसइ २ देसेहिं देसे फुसइ ३ देसेणं सव्वं फुसइ ४ देसेहिं देसं फुसइ ५ देसेहिं देसे फुसइ ६ देसेहिं सव्वं फुसइ ७ सव्वेणं देसं फुसइ ८. सव्वेणं देसे फुसइ ९ सव्वेणं सव्वं फुसइ[3] ?

गोयमा ! १ नो देसेणं देसं फुसइ २ नो देसेणं देसे फुसइ ३. नो देसेणं सव्वं फुसइ ४ नो देसेहिं देसं फुसइ ५ नो देसेहिं देसे फुसइ ६ नो देसेहिं सव्वं

---

१. सअद्धे (व)।
२ उआहु (व)।
३. (१) देशेन देशम् (२) देशेन देशान् (३) देशेन सर्वम् (४) देशैः देशम् (५) देशैः देशान् (६) देशैः सर्वम् (७) सर्वेण देशम्। (८) सर्वेण देशान् (९) सर्वेण सर्वम्।

फुसइ ७. नो सव्वेण देस फुसइ ८ नो सव्वेण देसे फुसइ ९ सव्वेण सव्व फुसइ ।।

१६६ परमाणुपोग्गले[1] दुप्पएसिय फुसमाणे सत्तम-णवमेहि फुसइ ।
परमाणुपोग्गले तिप्पएसिय फुसमाणे निपच्छिमएहि[2] तिहि फुसइ ।
जहा परमाणुपोग्गले तिप्पएसिय फुसाविओ एव फुसावेयव्वो जाव अणत-पएसिओ ।।

१६७ दुप्पएसिए ण भते ! खधे परमाणुपोग्गल फुसमाणे कि देसेण देस फुसइ ? पुच्छा ।
ततिय-नवमेहि फुसइ ।
दुप्पएसिओ दुप्पएसिय फुसमाणे पढम-ततिय-सत्तम-नवमेहि फुसइ ।
दुप्पएसिओ तिप्पएसिय फुसमाणे आदिल्लएहि य, पच्छिल्लएहि य तिहि[3] फुसइ, मज्झिमएहि तिहि विपडिसेहेयव्व ।
दुप्पएसिओ जहा तिप्पएसिय फुसाविओ एव फुसावेयव्वो जाव अणतपएसिय ।।

१६८ तिपएसिए ण भते ! खधे परमाणुपोग्गल फुसमाणे पुच्छा ।
ततिय-छट्ठ-नवमेहि फुसइ ।
तिपएसिओ दुपएसिय फुसमाणे पढमएण, ततिएण, चउत्थ-छट्ठ-सत्तम-नवमेहि फुसइ ।
तिपएसिओ तिपएसिय फुसमाणे सव्वेसु वि ठाणेसु फुसइ ।
जहा तिपएसिओ तिपएसिय फुसाविओ एव तिप्पएसिओ जाव अणतपएसिएण सजोएयव्वो ।
जहा तिपएसिओ एव जाव अणतपएसिओ भाणियव्वो ।।

परमाणु-खंधाणं संठिइ-पदं

१६९. परमाणुपोग्गले ण भते ! कालओ केवच्चिर होइ ?
गोयमा ! जहण्णेण एग समय, उक्कोसेण असखेज्ज काल । एव जाव अणतपएसिओ ।।

१७० एगपएसोगाढे ण भते ! पोग्गले सेए[4] तम्मि वा ठाणे वा, अण्णम्मि वा ठाणे कालओ केवच्चिर होइ ?
गोयमा ! जहण्णेण एग समय, उक्कोसेण आवलियाए असखेज्जइभाग । एव जाव असखेज्जपएसोगाढे ।।

---

१ एव पर० (क, ता) ।
२ अन्त्यै ।
३. × (क, ता) ।
४. सेते (ता) ।

१७१. एगपएसोगाढे ण भते ! पोग्गले निरेए कालओ केवच्चिर होइ ?
गोयमा ! जहण्णेण एग समय, उक्कोसेण असखेज्ज काल । एव जाव असखेज्ज-पएसोगाढे ।।

१७२ एगगुणकालए ण भते ! पोग्गले कालओ केवच्चिर होइ ?
गोयमा ! जहण्णेण एग समय, उक्कोसेण असखेज्ज काल । एव जाव अणत-गुणकालए ।
एव वण्ण-गध-रस-फास जाव[1] अणतगुणलुक्खे । एव सुहुमपरिणए पोग्गले, एव वादरपरिणए पोग्गले ।।

१७३ सद्दपरिणए ण भते ! पोग्गले कालओ केवच्चिर होइ ?
गोयमा ! जहण्णेण एग समय, उक्कोसेण आवलियाए असखेज्जइभाग ।।

१७४ असद्दपरिणए[2] °ण भते ! पोग्गले कालओ केवच्चिर होइ ?
गोयमा ! जहण्णेण एग समय, उक्कोसेण असखेज्ज काल° ।।

परमाणु-खंधाण अंतरकाल-पदं

१७५ परमाणुपोग्गलस्स ण भते ! अतर कालओ केवच्चिर होइ ?
गोयमा ! जहण्णेण एग समय, उक्कोसेण असखेज्ज काल ।।

१७६ दुप्पएसियस्स ण भते ! खधस्स अतर कालओ केवच्चिर होइ ?
गोयमा ! जहण्णेण एग समय, उक्कोसेण अणत काल । एव जाव अणतपएसिओ ।।

१७७ एगपएसोगाढस्स ण भते ! पोग्गलस्स सेयस्स अतर कालओ केवच्चिर होइ ?
गोयमा ! जहण्णेण एग समय, उक्कोसेण असखेज्ज काल । एव जाव असखेज्ज-पएसोगाढे ।।

१७८. एगपएसोगाढस्स ण भते । पोग्गलस्स निरेयस्स अतर कालओ केवच्चिर होइ ?
गोयमा ! जहण्णेण एग समय, उक्कोसेण आवलियाए असखेज्जइभाग । एव जाव असखेज्जपएसोगाढे ।
वण्ण-गध-रस-फास-सुहुमपरिणय-बायरपरिणयाण—एतेसि 'ज चेव'[3] सचिट्ठणा त चेव अतर पि भाणियव्व[4] ।।

१७९ सद्दपरिणयस्स ण भते ! पोग्गलस्स अतर कालओ केवच्चिर होइ ?
गोयमा ! जहण्णेण एग समय, उक्कोसेण असखेज्ज काल ।।

१८०. असद्दपरिणयस्स ण भते ! पोग्गलस्स अतर कालओ केवच्चिर होइ ?
गोयमा ! जहण्णेण एग समय, उक्कोसेण आवलियाए असखेज्जइभाग ।।

---

१ पु० १ ।
२ सं० पा०—असद्दपरिणए जहा एगगुण-कालए ।
३. जच्चेव (अ, क, ता, ब, म) ।
४. भ० ५।१७२ ।

परमाणु-खंधाणं परोप्परं अप्पाबहुयत्त-पदं

१८१ एयस्स ण भते ! दव्वट्ठाणाउयस्स, खेत्तट्ठाणाउयस्स, ओगाहणट्ठाणाउयस्स, भावट्ठाणाउयस्स कयरे कयरेहिंतो[1] °अप्पा वा ? बहुया वा ? तुल्ला वा ?° विसेसाहिया वा ?
गोयमा ! सव्वत्थोवे खेत्तट्ठाणाउए, ओगाहणट्ठाणाउए, असखेज्जगुणे, दव्व-ट्ठाणाउए असखेज्जगुणे, भावट्ठाणाउए असखेज्जगुणे ।

संगहणी-गाहा

खेत्तोगाहणदव्वे, भावट्ठाणाउय च अप्प-बहु ।
खेत्ते सव्वत्थोवे, सेसा ठाणा असखेज्जगुणा ।।१।।

जीवाणं सारंभ सपरिग्गह-पदं

१८२ नेरइया ण भते ! किं सारभा सपरिग्गहा ? उदाहु अणारभा अपरिग्गहा ?
गोयमा ! नेरइया सारभा सपरिग्गहा, नो अणारभा अपरिग्गहा ।

१८३ से केणट्ठेण[2] °भते ! एव वुच्चइ—नेरइया सारभा सपरिग्गहा, नो अणारभा° अपरिग्गहा[3] ?
गोयमा ! नेरइया ण पुढविकाय समारभति[4], °आउकाय समारभति, तेउकाय समारभति, वाउकाय समारभति, वणस्सइकाय समारभति° तसकाय समारभति, सरीरा परिग्गहिया भवति, कम्मा परिग्गहिया भवति, सचित्ताचित्त-मीसयाइ दव्वाइ परिग्गहियाइ भवति । से तेणट्ठेण[5] °गोयमा ! एव वुच्चइ—नेरइया सारभा सपरिग्गहा, नो अणारभा अपरिग्गहा°।।

१८४ असुरकुमारा ण भते ! कि सारभा ? पुच्छा ।
गोयमा ! असुरकुमारा सारभा सपरिग्गहा, नो अणारभा अपरिग्गहा ।।

१८५ से केणट्ठेण ? गोयमा ! असुरकुमारा ण पुढविकाय समारभति जाव[6] तसकाय समारभति, सरीरा परिग्गहिया भवति, कम्मा परिग्गहिया भवति, भवणा परिग्गहिया भवति, देवा देवीओ मणुस्सा मणुस्सीओ तिरिक्खजोणिया तिरि-क्खजोणिणीओ परिग्गहिया भवति, आसण-सयण-भड-मत्तोवगरणा परिग्गहिया भवति, सचित्ताचित्त-मीसयाइ[7] दव्वाइ परिग्गहियाइ भवति । से तेणट्ठेण[8]

---

१ स० पा०—कयरेहिंतो जाव विसेसाहिया ।
२. स० पा०—केणट्ठेण जाव अपरिग्गहा ।
३ नो अपरि° (ता) ।
४ स० पा०—समारभति जाव तसकाय ।
५ स० पा०—त चेव ।
६ भ० ५।१८३ ।
७ मिस्सियाइ (व), मीसजाइ (क) ।
८ स० पा०—तहेव ।

•गोयमा ! एवं वुच्चइ—असुरकुमारा सारंभा सपरिग्गहा, नो अणारंभा अपरिग्गहा° ।।

१८६. एवं जाव[1] थणियकुमारा । एगिंदिया जहा[2] नेरइया ।।

१८७ बेइंदिया णं भंते ! किं सारंभा सपरिग्गहा ? उदाहु अणारंभा अपरिग्गहा ?
तं चेव[3] बेइंदिया णं पुढविकायं समारंभंति जाव[4] तसकायं समारंभंति, सरीरा परिग्गहिया भवंति, कम्मा परिग्गहिया भवंति, बाहिरा[5] भंड-मत्तोवगरणा परिग्गहिया भवंति, 'सचित्ताचित्त-मीसयाइं दव्वाइं परिग्गहियाइं भवंति'[6] ।।

१८८ एवं जाव[7] चउरिंदिया ।।

१८९ पंचिंदियतिरिक्खजोणिया णं भंते ! किं सारंभा सपरिग्गहा ? उदाहु अणारंभा अपरिग्गहा ?
तं चेव जाव[8] कम्मा परिग्गहिया भवंति, टंका कूडा सेला सिहरी पब्भारा परिग्गहिया भवंति, जल-थल-बिल-गुह-लेणा परिग्गहिया भवंति, उज्झर-निज्झर चिल्लल-पल्लल[9]-वप्पिणा परिग्गहिया भवंति, अगड-तडाग[10]-दह-नईओ वावी-पुक्खरिणीदीहिया गुंजालिया सरा सरपंतियाओ सरसरपंतियाओ बिलपंतियाओ परिग्गहियाओ भवंति, आरामुज्जाण[11]-काणणा वणा वणसंडा वणराईओ[12] परिग्गहियाओ भवंति, देवउल-सभ-पव-थूभ-खाइय-परिखाओ परिग्गहियाओ भवंति, पागार-अट्टालग-चरिय-दार-गोपुरा परिग्गहिया भवंति, पासाद-घर-सरण-लेण-आवणा परिग्गहिया भवंति, सिंघाडग-तिग-चउक्क-चच्चर-चउम्मुह-महापह-पहा परिग्गहिया भवंति, सगड-रह-जाण-जुग्ग-गिल्लि-थिल्लि-सीय-संदमाणियाओ परिग्गहियाओ भवंति, लोही-लोहकडाह-कडुच्छया परिग्गहिया भवंति, भवणा परिग्गहिया भवंति, देवा देवीओ मणुस्सा मणुस्सीओ तिरिक्खजोणिया तिरिक्खजोणिणीओ परिग्गहिया भवंति, आसण-सयण-खंभ-भंड-सचित्ताचित्त-मीसयाइं दव्वाइं परिग्गहियाइं भवंति । से तेणट्ठेणं ।।

१९० जहा तिरिक्खजोणिया तहा मणुस्सा वि भाणियव्वा । वाणमंतर-जोइस-वेमाणिया जहा भवणवासी तहा नेयव्वा[13] ।।

---

१. पू० प० २ ।
२ भ० ५।१८२, १८३ ।
३. ४. भ० ५।१८३ ।
५ बाहिरिया (अ, क, व, म, स) ।
६ × (अ) ।
७. भ० २।१३८ ।
८ भ० ५।१८३ ।
९ पिल्लव (व) ।
१०. तलाग (क, ता, व, म) ।
११ °मुज्जाणा (क, व, स) ।
१२ वणरातीओ (अ, ता, स) ।
१३ भ० ५।१८४, १८५ ।

हेउ-पदं

१९१ पंच[1] हेऊ पण्णत्ता, तं जहा—हेउ जाणइ, हेउ पासइ, हेउ बुज्झइ, हेउ अभिसमागच्छइ, हेउ छउमत्थमरण मरइ ॥

१९२. पच हेऊ पण्णत्ता, त जहा—हेउणा जाणइ जाव[2] हेउणा छउमत्थमरण मरइ ॥

१९३ पच हेऊ पण्हत्ता, त जहा—हेउ ण जाणइ जाव[3] हेउ अण्णाणमरण मरइ ॥

१९४ पच हेऊ पण्णत्ता, त जहा—हेउणा ण जाणइ जाव[4] हेउणा अण्णाणमरण मरइ ॥

१९५ पच अहेऊ पण्णत्ता, त जहा—अहेउ जाणइ जाव[5] अहेउ केवलिमरण मरइ ॥

१९६ पच अहेऊ पण्णत्ता, त जहा—अहेउणा जाणइ जाव[6] अहेउणा केवलिमरण मरइ ॥

१९७ पच अहेऊ पण्णत्ता, त जहा—अहेउ न जाणइ जाव[7] अहेउ छउमत्थमरण मरइ ॥

१९८ पच अहेऊ पण्णत्ता, त जहा—अहेउणा न जाणइ जाव[8] अहेउणा छउमत्थमरण मरइ ॥

१९९ सेव भते ! सेव भते ! त्ति[9] ॥

अट्ठमो उद्देसो

नियठिपुत्त-नारयपुत्त-पदं

२०० तेण कालेण तेण समएण जाव[10] परिसा पडिगया ॥

२०१ तेण कालेण तेण समएण समणस्स भगवओ महावीरस्स अतेवासी नारयपुत्ते नाम अणगारे पगइभद्दए जाव[11] विहरति ।
तेण कालेण तेण समएण समणस्स भगवओ महावीरस्स अतेवासी नियठिपुत्ते नाम अणगारे पगइभद्दए जाव विहरति ।

---

१ स्थानाङ्गस्य पचमस्थाने (७५-८२) एतानि अष्टसूत्राणि क्रमभेदेन तथा किञ्चित् पाठभेदेन लभ्यन्ते ।
२ भ० ५।१९१ ।
३ भ० ५।१९१ ।
४ भ० ५।१९१ ।
५ भ० ५।१९१ ।
६ भ० ५।१९१ ।
७ भ० ५।१९१ ।
८ भ० ५।१९१ ।
९ भ० १।५१ ।
१० भ० १।४-८ ।
११ भ० १।२८८ ।

तए णं से नियठिपुत्ते अणगारे जेणामेव नारयपुत्ते अणगारे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता नारयपुत्त अणगार एव वयासी—सव्वपोग्गला ते अज्जो ! किं सअड्ढा समज्झा सपएसा ? उदाहु अणड्ढा अमज्झा अपएसा ?
अज्जो ! त्ति नारयपुत्ते अणगारे नियठिपुत्त अणगार एव वयासी—सव्वपोग्गला मे अज्जो ! सअड्ढा समज्झा सपएसा, नो अणड्ढा अमज्झा अपएसा ।

२०२ तए ण से नियठिपुत्ते अणगारे नारयपुत्त अणगार एवं वयासी—जइ ण ते अज्जो ! सव्वपोग्गला सअड्ढा समज्झा सपएसा, नो अणड्ढा अमज्झा अपएसा, किं—
दव्वादेसेण अज्जो ! सव्वपोग्गला सअड्ढा समज्झा सपएसा, नो अणड्ढा अमज्झा अपएसा ?
खेत्तादेसेण अज्जो ! सव्वपोग्गला सअड्ढा [1]॰समज्झा सपएसा, नो अणड्ढा अमज्झा अपएसा ?॰
कालादेसेण [2]॰अज्जो ! सव्वपोग्गला सअड्ढा समज्झा सपएसा, नो अणड्ढा अमज्झा अपएसा ?॰
भावादेसेण [3]॰अज्जो ! सव्वपोग्गला सअड्ढा समज्झा सपएसा, नो अणड्ढा अमज्झा अपएसा ?॰
तए ण से नारयपुत्ते अणगारे नियठिपुत्त अणगार एव वयासी—दव्वादेसेण वि मे अज्जो ! सव्वपोग्गला सअड्ढा समज्झा सपएसा, नो अणड्ढा अमज्झा अपएसा,
'खेत्तादेसेण वि, कालादेसेण वि, भावादेसेण वि'[4] ।।

२०३ तए ण से नियठिपुत्ते अणगारे नारयपुत्त अणगार एव वयासी—जइणं अज्जो ! दव्वादेसेण सव्वपोग्गला सअड्ढा समज्झा सपएसा, नो अणड्ढा अमज्झा अपएसा, एव ते परमाणुपोग्गल्ले वि सअड्ढे समज्झे सपएसे, नो अणड्ढे अमज्झे अपएसे ।
जइ ण अज्जो खेत्तादेसेण वि सव्वपोग्गला सअड्ढा समज्झा सपएसा, एवं ते एगपएसोगाढे वि पोग्गले सअड्ढे समज्झे सपएसे ।
जइ ण अज्जो ! कालादेसेण सव्वपोग्गला सअड्ढा समज्झा सपएसा, एव ते एगसमयट्ठितीए वि पोग्गले सअड्ढे समज्झे सपएसे[5] ।

---

१ सं० पा०—तह चेव ।
२ स० पा०—तं चेव ।
३ स० पा०—तहेव ।
४ एव खेत्तकालभावादेसेण वि नेतव्व (ता) ।
५ सपएसे ३ त चेव (अ, क, ता, स) ।

जइ णं अज्जो ! भावादेसेणं सव्वपोग्गला सअड्ढा समज्झा सपएसा, एवं ते एगगुणकालए वि पोग्गले सअड्ढे समज्झे सपएसे[1]।

अह ते एव न भवति तो ज वयसि 'दव्वादेसेण वि सव्वपोग्गला सअड्ढा समज्झा सपएसा, नो अणड्ढा अमज्झा अपएसा, एव खेत्तादेसेण वि, कालादेसेण वि, भावादेसेण वि' त ण मिच्छा ।।

२०४ तए णं से नारयपुत्ते अणगारे नियठिपुत्त अणगार एव वयासी—नो खलु एव[2] देवाणुप्पिया ! एयमट्ठ जाणामो-पासामो । जइ ण देवाणुप्पिया नो गिलायति परिकहित्तए, त इच्छामि ण देवाणुप्पियाण अतिए एयमट्ठ सोच्चा निसम्म जाणित्तए ।।

२०५. तए ण से नियठिपुत्ते अणगारे नारयपुत्त अणगार एव वयासी—दव्वादेसेण वि मे अज्जो ! सव्वे पोग्गला सपएसा वि, अप्पएसा वि—अणता ।

खेत्तादेसेण वि[3] •मे अज्जो ! सव्वे पोग्गला सपएसा वि, अप्पएसा वि—अणता ।

कालादेसेण वि मे अज्जो ! सव्वे पोग्गला सपएसा वि, अप्पएसा वि—अणता ।

भावादेसेण वि मे अज्जो ! सव्वे पोग्गला सपएसा वि, अप्पएसा वि—अणता ।°

जे दव्वओ अपएसे से खेत्तओ नियमा अपएसे, कालओ सिय सपएसे सिय-अपएसे, भावओ सिय सपएसे सिय अपएसे ।

जे खेत्तओ अपएसे से दव्वओ सिय सपएसे सिय अपएसे, कालओ भयणाए, भावओ भयणाए ।

जहा खेत्तओ एव कालओ, भावओ ।

जे दव्वओ सपएसे से खेत्तओ सिय सपएसे सिय अपएसे । एव कालओ, भावओ वि ।

जे खेत्तओ सपएसे से दव्वओ नियमा सपएसे, कालओ भयणाए, भावओ भयणाए ।

जहा दव्वओ तहा कालओ, भावओ वि ।।

२०६ एएसि ण भते ! पोग्गलाण दव्वादेसेण, खेत्तादेसेण, कालादेसेण, भावादेसेण सपएसाण अपएसाण य कयरे कयरेहिंतो[4] •अप्पा वा ? बहुया वा ? तुल्ला वा ?° विसेसाहिया वा ?

नारयपुत्ता ! सव्वत्थोवा पोग्गला भावादेसेण अपएसा, कालादेसेण अपएसा असखेज्जगुणा, दव्वादेसेण अपएसा असखेज्जगुणा, खेत्तादेसेण अपएसा असखे-

---

१. सपएसे ३ त चेव (अ, क, ता, स) ।

२ एय (अ, क, ता, ब), × (स) ।

३ स० पा० खेत्तादेसेण वि एव चेव कालदेसेण वि भावादेसेण वि एव चेव ।

४ स० पा०—कयरेहिंतो जाव विसेसाहिया ।

ज्जगुणा, खेत्तादेसेणं चेव सपएसा असंखेज्जगुणा, दव्वादेसेण सपएसा विसेसाहिया, कालादेसेणं सपएसा विसेसाहिया, भावादेसेण सपएसा विसेसाहिया ॥

२०७ तए ण से नारयपुत्ते अणगारे नियठिपुत्त अणगार वदइ नमसइ, वदित्ता नमसित्ता एयमट्ठं सम्म विणएण भज्जो-भुज्जो खामेति, खामेत्ता सजमेण तवसा अप्पाण भावेमाणे विहरइ ॥

जीवाणं-वुड्ढि-हाणि-अवट्ठिइ-पदं

२०८. भतेत्ति ! भगव गोयमे समण[1] ॰भगव महावीर वदइ नमसइ, वदित्ता नमसित्ता॰ एव वयासी—जीवा ण भते ! कि वड्ढति ? हायति ? अवट्ठिया ?
गोयमा ! जीवा नो वड्ढति, नो हायति, अवट्ठिया ॥

२०९ नेरइया ण भते ! कि वड्ढति ? हायति ? अवट्ठिया ?
गोयमा ! नेरइया वड्ढंति वि, हायति वि, अवट्ठिया वि ॥

२१०. जहा नेरइया एव जाव[2] वेमाणिया ॥

२११. सिद्धा णं भते ! पुच्छा।
गोयमा ! सिद्धा वड्ढति, नो हायति, अवट्ठिया वि ॥

११२ जीवा ण भते ! केवतिय काल अवट्ठिया ?
गोयमा ! सव्वद्ध ॥

२१३. नेरइया णं भते ! केवतिय काल वड्ढति ?
गोयमा ! जहण्णेण एग समयं, उक्कोसेण आवलियाए असखेज्जइभागं ॥

२१४ एव हायति वि[3] ॥

२१५ नेरइया ण भते ! केवतिय काल अवट्ठिया ?
गोयमा ! जहण्णेण एग समय, उक्कोसेण चउवीस मुहुत्ता ॥

२१६ एव 'सत्तसु वि'[4] पुढवीसु 'वड्ढति, हायति' भाणियव्व, नवरं—अवट्ठिएसु इम नाणत्त, त जहा—रयणप्पभाए पुढवीए अडयालीस मुहुत्ता, सक्करप्पभाए चोद्दस राइदिया[5], वालुयप्पभाए मास, पकप्पभाए दो मासा, धूमप्पभाए चत्तारि मासा, तमाए अट्ठ मासा, तमतमाए बारस मासा ॥

२१७ असुरकुमारा वि वड्ढति, हायति जहा नेरइया। अवट्ठिया जहण्णेण एक्क समय, उक्कोसेण अट्ठचत्तालीस[6] मुहुत्ता ॥

२१८ एव दसविहा वि ॥

---

१. स० पा०—समण जाव एव।
२. पू० प० २।
३. वा (अ, क, ता, स)।
४. सत्त (ता)।
५ राइदियाइ (अ, क, व, म), राइदिया ण (स)।
६ अडतालीस (ता)।

२१९ एगिंदिया वड्ढति वि, हायति वि अवट्ठिया वि। एएहि तिहि वि जहण्णेण एक्कं समय, उक्कोसेण आवलियाए असखेज्जइभाग[1] ॥

२२०. वेइंदिया[2] 'वड्ढति, हायति' तहेव, अवट्ठिया जहण्णेण एक्क समय, उक्कोसेण दो अंतोमुहुत्ता ॥

२२१. एवं जाव[3] चउरिंदिया ॥

२२२ अवसेसा सव्वे 'वड्ढति, हायति' तहेव, अवट्ठियाण नाणत्त इम, त जहा— समुच्छिमपंचिदियतिरिक्खजोणियाण दो अतोमुहुत्ता, गब्भवक्कतियाण चउव्वीस मुहुत्ता, समुच्छिममणुस्साण अट्ठचत्तालीस मुहुत्ता, गब्भवक्कतियमणुस्साण चउवीस मुहुत्ता, वाणमतर-जोतिसिय[4]-सोहम्मीसाणेसु अट्ठचत्तालीस मुहुत्ता, सणकुमारे अट्ठारस राइदियाइ चत्तालीस य मुहुत्ता, माहिदे चउवीस रइदियाइ वीस य मुहुत्ता, बभलोए पचचत्तालीस राइदियाइ, लतए नउइ[5] राइदियाइ, महासुक्के सट्ठि[6] राइदियसय, सहस्सारे दो राइदियसयाइ, आणय-पाणयाणं सखेज्जा मासा, आरणच्चुयाण सखेज्जाइ वासाइ, एव गेवेज्जदेवाण[7], विजय-वेजयत-जयत-अपराजियाण असखेज्जाइ वाससहस्साइ, सव्वट्ठसिद्धे पलिओवमस्स सखेज्जइभागो।

एवं भाणियव्व —'वड्ढति, हायति जहण्णेण एक्क समय, उक्कोसेण आवलियाए असखेज्जइभाग, अवट्ठियाण ज भणिय'[8] ॥

२२३ सिद्धा ण भते! केवइय काल वड्ढति ?

गोयमा ! जहण्णेणं एक्क समय, उक्कोसेण अट्ठ समया ॥

२२४. केवइय काल अवट्ठिया ?

गोयमा ! जहण्णेण एक्क समय, उक्कोसेण छम्मासा ॥

जीवाणं सोवचय-सावचयादि-पदं

२२५. जीवा ण भते ! कि सोवचया ? सावचया ? सोवचय-सावचया ? निरुवचय-निरवचया ?

गोयमा ! जीवा नो सोवचया, नो सावचया, नो सोवचय-सावचया, निरुवचय-निरवचया।

एगिंदिया ततियपदे, सेसा जीवा चउहि वि[9] पदेहिं भाणियव्वा ॥

---

१ असखेज्जभाग (क, ब, म)।
२ वेतिंदिया (अ, स)।
३ भ० २।१३८।
४ जोतिस (अ, क, स)।
५ नउय (अ, स)।
६ सट्ठ (ता, ब)।
७ गेवेज्जग° (ता)।
८ एतद् निगमनवाक्य तेन पूर्वोक्तस्य पुनरुक्तमस्ति।
९. × (अ, क, स) :

२२६. सिद्धा णं भंते ! पुच्छा ।
गोयमा ! सिद्धा सोवचया, नो सावचया, नो सोवचय-सावचया, निरुवचय-निरवचया ॥

२२७ जीवा ण भते ! केवतिय काल निरुवचय-निरवचया ?
गोयमा ! सव्वद्ध ॥

२२८ नेरइया ण भते ! केवतिय काल सोवचया ?
गोयमा ! जहण्णेण एक्क समय, उक्कोसेण आवलियाए असखेज्जइभाग ॥

२२९ केवतिय काल सावचया ?
एव चेव ॥

२३० केवतियं काल सोवचय-सावचया ?
एव चेव ॥

२३१ केवतिय काल निरुवचय-निरवचया ?
गोयमा ! जहण्णेण एक्क समय, उक्कोसेण बारस मुहुत्ता ।
एगिंदिया सव्वे सोवचय-सावचया सव्वद्ध । सेसा सव्वे सोवचया वि, सावचया वि, सोवचय-सावचया वि[1], जहण्णेण एक्क समय, उक्कोसेण आवलियाए असखेज्जइभागं । अवट्ठिएहिं वक्कतिकालो भाणियव्वो ॥

२३२ सिद्धा ण भते ! केवतिय काल सोवचया ?
गोयमा ! जहण्णेण एग समय, उक्कोसेण अट्ठ समया ॥

२३३ केवतिय काल निरुवचय-निरवचया ?
जहण्णेण एक्क समय, उक्कोसेण छ मासा ॥

२३४ सेव भते ! सेव भते ! त्ति[2] ॥

---

१. वि निरुवचय-निरवचया वि (क, व, स) । २ भ० १।५१ ।

नवमो उद्देसो

किमिदंरायगिह-पदं

२३५ तेण कालेण तेण समएण जाव[1] एव वयासी—किमिद[2] भते ! नगर रायगिह ति पवुच्चइ ? कि पुढवी नगर रायगिह ति पवुच्चइ ? कि आऊ नगर रायगिह ति पवुच्चइ[3] ? •कि तेऊ वाऊ वणस्सई नगर रायगिह ति पवुच्चइ ? कि टका कूडा सेला सिहरी पब्भारा नगर राहगिह ति पवुच्चइ ? कि जल-थल-बिल-गुह-लेणा नगर रायगिह ति पवुच्चइ ? कि उज्झर-निज्झर-चिल्लल-पल्लल-वप्पिणा नगर रायगिह ति पवुच्चइ ? कि अगड-तडाग दह-नईओ वावी-पुक्खरिणी-दीहिया गुजालिया सरा सरपतियाओ सरसरपतियाओ बिलपतियाओ नगर रायगिह ति पवुच्चइ ? कि आरामुज्जाण-काणणा वणा वणसडा वणराईओ नगर रायगिह ति पवुच्चइ ? कि देवउल-सभ-पव-थूभ-खाइय-परिखाओ नगर रायगिह ति पवुच्चइ ? कि पागार-अट्टालग-चरिय-दार-गोपुरा नगर रायगिह ति पवुच्चइ ? कि पासाद-घर-सरण-लेण-आवणा नगर रायगिह ति पवुच्चइ ? कि सिघाडग-तिग-चउक्क-चच्चर-चउम्मुह-महापह-पहा नगर रायगिह ति पवुच्चइ ? कि सगड-रह-जाण-जुग्ग-गिल्लि-थिल्लि-सीय-सदमाणियाओ नगर रायगिह ति पवुच्चइ ? कि लोही-लोहकडाह-कडुच्छया नगर रायगिह ति पवुच्चइ ? कि भवणा नगर रायगिह ति पवुच्चइ ? कि देवा देवीओ मणुस्सा मणुस्सीओ तिरिक्खजोणिया तिरिक्खजोणिणीओ नगर रायगिह ति पवुच्चइ ? कि सयण-खभ-भड°-सचित्ताचित्त-मीसयाइ दव्वाइ नगर रायगिह ति पवुच्चइ ?

गोयमा ! पुढवि वि नगर रायगिह ति पवुच्चइ जाव सचित्ताचित्त-मीसयाइ दव्वाइ नगर रायगिह ति पवुच्चइ ।।

२३६ से केणट्ठेण ? गोयमा ! पुढवी जीवा इ य, अजीवा इ य नगर रायगिह ति पवुच्चइ जाव सचित्ताचित्त-मीसयाइ दव्वाइ जीवा इ य, अजीवा इ य नगर रायगिह ति पवुच्चइ । से तेणट्ठेण त चेव ।।

उज्जोय-अंधयार-पदं

२३७ से नूण भते ! दिया उज्जोए ? राइ अधयारे ?

हता गोयमा[4] ! •दिया उज्जोए, राइ° अधयारे ।।

---

१ भ० १।४-१० ।

२ किमिय (क), किमित (ब, म) ।

३ स० पा०—पवुच्चइ जाव वणस्सई ? जहा—एयणुद्देसए पचिदियतिरिक्खजोणियाण वत्तव्वया तहा भाणियव्वा जाव सचित्ताचित्त ।

४ स० पा०—गोयमा जाव अधयारे ।

२३८. से केणट्ठेण ? गोयमा ! दिया सुभा पोग्गला सुभे पोग्गलपरिणामे, राइं[1] असुभा पोग्गला असुभे पोग्गलपरिणामे । से तेणट्ठेण ।।

२३९ नेरइयाण भते ! कि उज्जोए ? अधयारे ?
गोयमा ! नेरइयाण नो उज्जोए, अधयारे ।।

२४०. से केणट्ठेण ?
गोयमा ! नेरइयाण असुभा पोग्गला असुभे पोग्गलपरिणामे । से तेणट्ठेण ।।

२४१ असुरकुमाराण भते ! कि उज्जोए ? अधयारे ?
गोयमा ! असुरकुमाराण उज्जोए, नो अधयारे ।।

२४२ से केणट्ठेण ? गोयमा ! असुरकुमाराण सुभा पोग्गला सुभे पोग्गलपरिणामे । से तेणट्ठेण । जाव[2] थणियकुमाराणं[3] ।।

२४३ पुढविक्काइया जाव[4] तेइंदिया 'जहा नेरइया'[5] ।।

२४४ चउरिंदियाण भते ! कि उज्जोए ? अधयारे ?
गोयमा ! उज्जोए वि, अधयारे वि ।।

२४५. से केणट्ठेण ? गोयमा ! चउरिंदियाण सुभासुभा य पोग्गला सुभासुभे य पोग्गलपरिणामे । से तेणट्ठेण ।।

२४६ एव जाव[6] मणुस्साण ।।

२४७. वाणमतर-जोइस वेमाणिया जहा असुरकुमारा[7] ।।

मणुस्सखेत्ते समयादि-पद[8]

२४८. अत्थि णं भते ! नेरइयाण तत्थगयाणं एव पण्णायए, त जहा—समया इ वा, आवलिया इ वा जाव[8] ओसप्पिणी इ वा, उस्सप्पिणी इ वा ?
णो तिणट्ठे समट्ठे ।।

२४९. से केणट्ठेण[9] °भते ! एव वुच्चइ—नेरइयाणं तत्थगयाण नो एव पण्णायए, त जहा°—समया इ वा, आवलिया इ वा जाव[10] ओसप्पिणी इ वा, उस्सप्पिणी इ वा ?
गोयमा ! इह तेसिं माण, इह तेसि पमाण, इह तेसि एव पण्णायए, त जहा—समया इ वा जाव उस्सप्पिणी इ वा । से तेणट्ठेण जाव नो एव पण्णायए, त जहा—समया इ वा जाव उस्सप्पिणी इ वा ।।

---

१ रत्ति (ता, व, म) ।
२. जाव एव वुच्चइ जाव (अ, क, ता, व, म, स)
३. थणियाण (क, ता, व, म, स) ।
४. पू० प० २ ।
५ नेरइया जहा (क, ता, व, म); भ० ५।२३९, २४० ।
६ पू० प० २ ।
७. भ० ५।२४१, २४२ ।
८ ठा० २।३८७-३८९ ।
९ स० पा०—केणट्ठेण जाव समया ।
१०. ठा० २।३८७-३८९ ।

२५० एवं जाव[1] पंचिदियतिरिक्खजोणियाण ।।

२५१ अत्थि ण भते ! मणुस्साण इहगयाण एव पण्णायते[2], त जहा—समया इ वा जाव[3] उस्सप्पिणी इ वा ?

हता अत्थि ।।

२५२ से केणट्ठेण ? गोयमा ! इह तेसि माण, इह तेसि पमाण, इह चेव तेसि एव पण्णायते, त जहा—समया इ वा जाव[4] उस्सप्पिणी इ वा । से तेणट्ठेण ।।

२५३ वाणमतर-जोइस-वेमाणियाण जहा नेरइयाण[5] ।।

पासावच्चिज्ज-पद

२५४ तेण कालेण तेण समएण पासावच्चिज्जा थेरा भगवतो जेणेव समणे भगव महावीरे तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता समणस्स भगवओ महावीरस्स अदूर-सामते ठिच्चा एव वयासी—से नूण भते ! असखेज्जे लोए अणता राइदिया उप्पज्जिसु वा, उप्पज्जति वा, उप्पज्जिस्सति वा ? विगच्छिसु[6] वा, विगच्छति वा, विगच्छिस्सति वा ? परित्ता राइदिया उप्पज्जिसु वा, उप्पज्जति वा, उप्पज्जि-स्सति वा ? विगच्छिसु वा, विगच्छति वा, विगच्छिस्सति वा ?

हता अज्जो ! असखेज्जे लोए अणता राइदिया त चेव ।।

२५५ से केणट्ठेण जाव विगच्छिस्सति वा ?

से नूण भे अज्जो ! पासेण अरहया पुरिसादाणिएण सासए लोए बुइए—अणा-दीए अणवदग्गे परित्ते परिवुडे हेट्ठा विच्छिण्णे, मज्झे सखित्ते, उप्पि विसाले, अहे पलियकसठिए, मज्झे वरवइरविग्गहिए, उप्पि उद्धमुइगाकारसठिए । तेसिं च ण सासयसि लोगसि अणादियसि अणवदग्गसि परित्तसि परिवुडसि हेट्ठा विच्छिण्णसि, मज्झे सखित्तसि, उप्पि विसालसि, अहे पलियकसठियसि, मज्झे वरवइरविग्गहियसि, उप्पिउद्धमुइगाकारसठियसि अणता जीवघणा उप्पज्जित्ता-उप्पज्जित्ता निलीयति, परित्ता जीवघणा उप्पज्जित्ता-उप्पज्जित्ता निलीयति । से भूए[7] उप्पण्णे विगएपरिणए, अजीवेहि लोक्कइ पलोक्कइ, जे लोक्कइ से लोए ?

हता भगव ! से तेणट्ठेण अज्जो ! एव वुच्चइ—असखेज्जे लोए अणता राइदिया त चेव ।

---

१ पू० प० २ ।

२ पण्णायति (अ, क, व, म), पण्णायइ ता ।

३ ठा० २।३८७-३८६ ।

४ ठा० २।३८७-३८६ ।

५ भ० ५।२४८-२४६ ।

६ विगिच्छिसु (अ, ता, म) ।

७ नूण (स) ।

तप्पभिइं च णं ते पासावच्चेज्जा थेरा भगवंतो समणं भगवं महावीरं पच्चभि-जाणंति सव्वण्णू सव्वदरिसी ॥

२५६ तए णं ते थेरा भगवतो समण भगव महावीर वदति नमसति, वंदित्ता नमसित्ता एव वयासी—इच्छामि ण भते ! तुब्भ अतिए चाउज्जामाओ धम्माओ पच-महव्वइय सपडिक्कमण धम्म उवसपज्जित्ता ण विहरित्तए ।
अहासुह देवाणुप्पिया ! मा पडिबध ॥

२५७ तए ण ते पासावच्चिज्जा थेरा भगवतो चाउज्जामाओ धम्माओ पचमहव्वइय सपडिक्कमण धम्म उवसपज्जित्ताण विहरति जाव[1] चरिमेहि उस्सास-निस्सा-सेहि सिद्धा[2] °बुद्धा मुक्का परिनिव्वुडा° सव्वदुक्खप्पहीणा । अत्थेगतिया देवलोएसु[3] उववण्णा ॥

देवलोय-पदं

२५८ कइविहा ण भते ! देवलोगा पण्णत्ता ?
गोयमा ! चउव्विहा देवलोगा पण्णत्ता, त जहा—भवणवासी 'वाणमंतर-जोतिसिय-वेमाणियभेदेण'[4] ।
भवणवासी दसविहा, वाणमतरा अट्ठविहा, जोतिसिया पचविहा वेमाणिया दुविहा ।

संगहणी-गाहा

किमिद रायगिह ति य, उज्जोए अधयार-समए य ।
पासतिवासिपुच्छा, रातिंदिय देवलोगा य ॥१॥

२५९. सेव भंते ! सेव भते ! त्ति[5] ॥

दसमो उद्देसो

२६० तेण कालेण तेण समएण चपा नामं नगरी, जहा पढमिल्लो उद्देसओ[6] तहा नेयव्वो एसो वि, नवरं—चदिमा भाणियव्वा ॥

---

१. भ० १।४३३ ।
२. स० पा०—सिद्धा जाव सव्व० ।
३ देवा देवलोएसु (अ, क, ता, व, म) ।
४. वाणमतरा जोइसिया वेमाणिया भेदेण (अ, ता, म) ।
५. भ० १।५१ ।
६. अस्यैव शतकस्य ।

छट्ठं सतं

पढमो उद्देसो

संगहणी-गाहा

१. वेदण २ आहार ३. महस्सवे य ४. सपदेश ५ तमुए[1] ६ भविए।
७ साली ८ पुढवी ९ 'कम्म १० अण्णउत्थि'[2] दस छट्ठगम्मि सए ॥१॥

पसत्थनिज्जराए सेयत्त-पदं

१ से नूण भंते ! जे महावेदणे से महानिज्जरे ? जे महानिज्जरे से महावेदणे ? महावेदणस्स य अप्पवेदणस्स य से सेए जे पसत्थनिज्जराए ?
हंता गोयमा ! जे महावेदणे[3] •से महानिज्जरे, जे महानिज्जरे से महावेदणे, महावेदणस्स य अप्पवेदणस्स य से सेए जे पसत्थनिज्जराए° ॥

२ छट्ठ-सत्तमासु णं भंते ! पुढवीसु नेरइया महावेदणा ?
हंता महावेदणा ॥

३ ते णं भंते ! समणेहितो निग्गंथेहितो महानिज्जरतरा ?
गोयमा ! नो इणट्ठे समट्ठे ॥

४ से केणं खाइ अट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ—जे महावेदणे[4] •से महानिज्जरे ? जे महानिज्जरे से महावेदणे ? महावेदणस्स य अप्पवेदणस्स य से सेए जे° पसत्थ-निज्जराए ?
गोयमा ! से जहानामए दुवे वत्था सिया—एगे वत्थे कद्दमरागरत्ते, एगे वत्थे खंजणरागरत्ते। एएसि णं गोयमा ! दोण्ह वत्थाणं कयरे वत्थे दुद्धोयतराए चेव, दुवामतराए चेव, दुपरिकम्मतराए चेव; कयरे वा वत्थे सुद्धोयतराए चेव,

---

१ तमुयाए (क्व०)।
२ कम्मण्णउत्थि (क, ता, व, म)।
३. स० पा०—एवं चेव।
४. स० पा०—महावेदणे जाव पसत्थनिज्जराए

सुवामतराए चेव, सुपरिकम्मतराए चेव; जे वा से वत्थे कद्दमरागरत्ते ? जे वा से वत्थे खजणरागरत्ते ?

भगव ! तत्थ ण जे से[1] कद्दमरागरत्ते, से ण वत्थे[2] दुद्धोयतराए चेव, दुवामतराए चेव, दुप्परिकम्मतराए चेव, एवामेव गोयमा ! नेरइयाण पावाइ कम्माइ गाढी-कयाइ, चिक्कणीकयाइ[3], सिलिट्ठीकयाइ[4], खिलीभूताइ[5] भवति । सपगाढ पि य ण ते वेदण वेदेमाणा नो महानिज्जरा, नो महापज्जवसाणा भवति ।

से जहा वा केइ पुरिसे अहिगरणि आउडेमाणे[6] महया-महया सद्देण, महया-महया घोसेण, महया-महया परपराघाएण नो सचाएइ तीसे अहिगरणीए केइ अहा-वायरे पोग्गले परिसाडित्तए, एवामेव गोयमा ! नेरइयाण पावाइ कम्माइ गाढीकयाइ[7], •चिक्कणीकयाइ, सिलिट्ठीकयाइ, खिलीभूताइ भवति । सपगाढं पि य ण ते वेदण वेदेमाणा नो महानिज्जरा,° नो महापज्जवसाणा[8] भवति ।

भगव ! तत्थ जे से[9] खजणरागरत्ते, से ण वत्थे सुद्धोयतराए चेव, सुवामतराए चेव, सुपरिकम्मतराए चेव, एवामेव गोयमा ! समणाण निग्गथाण अहाबायराइ कम्माइ सिढिलीकयाइ, निट्ठियाइ कयाइ[10], विप्परिणामियाइ खिप्पामेव विद्ध-त्थाइ भवति । जावतिय तावतिय पि ण ते वेदण वेदेमाणा महानिज्जरा, महापज्जवसाणा भवति ।

से जहानामए केइ पुरिसे सुक्क तणहत्थय जायतेयसि पक्खिवेज्जा, से नूण गोयमा !

से मुक्के तणहत्थए जायतेयसि पक्खित्ते समाणे खिप्पामेव मसमसाविज्जति ?

हता मसमसाविज्जति ।

एवामेव गोयमा ! समणाणं निग्गथाण अहाबायराइ कम्माइ[11], •सिढिलीकयाइ, निट्ठियाइ कयाइ, विप्परिणामियाइ खिप्पामेव विद्धत्थाइ भवति । जावतिय तावतिय पि ण ते वेदण वेदेमाणा महानिज्जरा,° महापज्जवसाणा भवति ।

से जहानामए केइ पुरिसे तत्तसि अयकवल्लसि उदगबिंदु[12] •पक्खिवेज्जा, से नूण गोयमा ! से उदगबिंदु तत्तसि अयकवल्लसि पक्खित्ते समाणे खिप्पामेव विद्धसमागच्छइ ?°

हता विद्धसमागच्छइ ।

---

१. से वत्थे (क, व, म) ।
२. भते (व, म) ।
३. × (अ) ।
४. सिढिलीकयाइ (म, स) ।
५ खिलीकयाइं (अ, स) ।
६. आकोडेमाणे (अ, क, ता, व, म, स) ।
७. स० पा०—गाढीकयाइ जाव नो ।
८. °साणाइ (अ, स) ।
९ से वत्थे (अ, क, ता, व, म, स) ।
१० कडाइ (अ, क, ता, व, म, स) ।
११ स० पा०—कम्माइ जाव महा° ।
१२. स० पा०—उदगविदु जाव हता ।

एवामेव गोयमा ! समणाण निग्गथाण[1] °अहाबायराइ कम्माइ, सिढिलीकयाइ, निट्ठियाइ कयाइ, विप्परिणामियाइ खिप्पामेव विद्धत्थाइ भवति। जावतिय तावतिय पि ण ते वेदण वेदेमाणा महानिज्जरा,° महापज्जवसाणा भवति। से तेणट्ठेण जे महावेदणे से महानिज्जरे[2] °जे महानिज्जरे से महावेदणे, महावेदणस्स य अप्पवेदणस्स य से सेए जे पसत्थ° निज्जराए ॥

करण-पद

५. कतिविहे ण भते ! करणे पण्णत्ते ?
गोयमा ! चउव्विहे करणे पण्णत्ते, त जहा—मणकरणे, वइकरणे, कायकरणे कम्मकरणे ॥

६ नेरइयाण भते ! कतिविहे करणे पण्णत्ते ?
गोयमा ! चउव्विहे पण्णत्ते, त जहा—मणकरणे, वइकरणे, कायकरणे, कम्मकरणे ॥

७. एव पचिंदियाण सव्वेसि चउव्विहे करणे पण्णत्ते ।
एगिदियाण दुविहे—कायकरणे य, कम्मकरणे य ।
विगलिदियाण तिविहे—वइकरणे, कायकरणे, कम्मकरणे ।

८ नेरइयाण भते ! कि करणओ असाय वेदण वेदेति ? अकरणओ असाय वेदण वेदेति ?
गोयमा ! नेरइया ण करणओ असाय वेदण वेदेति, नो अकरणओ असाय वेदण वेदेति ॥

९ से केणट्ठेण ? गोयमा ! नेरइया ण चउव्विहे करणे पण्णत्ते, त जहा—मणकरणे वइकरणे, कायकरणे, कम्मकरणे। इच्चेएण चउव्विहेण असुभेण करणेण नेरइया करणओ अस्साय वेदण वेदेति, नो अकरणओ। से तेणट्ठेण ॥

१० असुरकुमारा ण कि करणओ ? अकरणओ ?
गोयमा ! करणओ, नो अकरणओ ॥

११ से केणट्ठेण ? गोयमा ! असुरकुमाराण चउव्विहे करणे पण्णत्ते, त जहा—मणकरणे, वइकरणे, कायकरणे, कम्मकरणे। इच्चेएण सुभेण करणेण असुरकुमारा करणओ सात वेदण वेदेति, नो अकरणओ ॥

१२. एवं जाव[3] थणियकुमारा ॥

---

१. स० पा०—निग्गथाण जाव महा° ।
२. स० पा०—महानिज्जरे जाव निज्जराए ।
३. पू० प० २ ।

१३ पुढवीकाइयाणं एवामेव पुच्छा, नवरं—इच्चेएणं सुभासुभेणं[1] करणेणं पुढविक्का-इया करणओ वेमायाए वेदण वेदेति, नो अकरणओ ॥

१४ ओरालियसरीरा सव्वे सुभासुभेण वेमायाए[2]।
देवा सुभेण साय ॥

महावेदणा-महानिज्जरा-चउभंग-पदं

१५ जीवा ण भते ! कि महावेदणा महानिज्जरा ? महावेदणा अप्पनिज्जरा ? अप्पवेदणा महानिज्जरा ? अप्पवेदणा अप्पनिज्जरा ?
गोयमा ! अत्थेगतिया जीवा महावेदणा महानिज्जरा, अत्थेगतिया जीवा महा-वेदणा अप्पनिज्जरा, अत्थेगतिया जीवा अप्पवेदणा महानिज्जरा, अत्थेगतिया जीवा अप्पवेदणा अप्पनिजरा ॥

१६. से केणट्ठेण ?
गोयमा ! पडिमापडिवन्नए अणगारे महावेदणे महानिज्जरे। छट्ठ-सत्तमासु[3] पुढवीसु नेरइया महावेदणा अप्पनिज्जरा। सेलेसि पडिवन्नए अणगारे अप्पवेदणे महानिज्जरे। अणुत्तरोववाइया देवा अप्पवेदणा अप्पनिज्जरा ॥

१७. सेवं भते ! सेव भते ! त्ति[4]।

संगहणी-गाहा

महावेदणे य वत्थे, कद्दम-खजणकए य अहिगरणी।
तणहत्थे य कवल्ले, करण-महावेदणा जीवा[5] ॥१॥

---

१ असुभेण (म)।

२. विविधमात्रया कदाचित् साताम्, कदाचित् असातामित्यर्थ (वृ)।

३. सत्तमीसु (क, ता, व, म)।

४. भ० १।५१।

५. अतोग्रे 'सेवं भते ! सेव भते ! त्ति' पाठ सर्वेषु आदर्शेषु अस्ति, किन्तु सग्रहणी-गाथाया अनतर अस्य कि प्रयोजन न ज्ञायते।

बीओ उद्देसो

१८ रायगिह नगरं जाव[1] एव वयासी—आहारुद्देसओ जो पण्णवणाए[2] सो सव्वो निरवसेसो नेयव्वो ।।

१६ सेव भते ! सेव भते ! त्ति[3] ।।

तइओ उद्देसो

सगहणी-गाहा

१. वहुकम्म २ वत्थपोग्गल-पयोगसा-वीससा य ३ सादीए ।
४ कम्मट्ठिति ५ त्थि ६ सजय ७ सम्मदिट्ठी य ८ सन्नी य ।।१।।
६ भविए १० दसण ११ पज्जत्त १२ भासय १३ परित्ते १४ नाण १५ जोगेय ।
१६, १७ उवओगाहारग १८ सुहुम १९. चरिमबधे य २० अप्पबहुं ।।२।।

महाकम्मादीण पोग्गलबंधादि-पदं

२० से नूण भते ! 'महाकम्मस्स, महाकिरियस्स, महासवस्स'[4], [5]महावेदणस्स सव्वओ पोग्गला वज्झति, सव्वओ पोग्गला चिज्जति, सव्वओ पोग्गला उवचिज्जति, सया समिय पोग्गला वज्झति, सया समिय पोग्गला चिज्जति, सया समिय पोग्गला उवचिज्जति, सया समिय च ण तस्स आया दुरूवत्ताए दुवण्णत्ताए दुगधत्ताए दुरसत्ताए दुफासत्ताए, अणिट्ठत्ताए अकतत्ताए अप्पियत्ताए असुभत्ताए अमणुण्णत्ताए अमणामत्ताए अणिच्छियत्ताए अभिज्झियत्ताए अहत्ताए—नो उड्ढत्ताए, दुक्खत्ताए—नो सुहत्ताए भुज्जो-भुज्जो परिणमति ?
हता गोयमा ! महाकम्मस्स त चेव ।।

२१ से केणट्ठेण ? गोयमा ! से जहानामए वत्थस्स अहयस्स वा, धोयस्स वा, ततुग्गयस्स वा आणुपुव्वीए परिभुज्जमाणस्स सव्वओ पोग्गला बज्झति, सव्वओ पोग्गला चिज्जति जाव[6] परिणमति से तेणट्ठेण ।।

---

१ भ० १।४-१० ।
२ प० २८ ।
३ भ० १।५१ ।
४. महस्सवस्स (ता, म) ।
५ महाकम्मस्स महासवस्स महाकिरियस्स (अ), महासवस्स, महाकम्मस्स महाकिरियस्स (क, ता, म, स) ।
६ भ० ६।२० ।

अप्पकम्मादीणं पोग्गलभेदादि-पदं

२२ से नूण भते ! अप्पकम्मस्स, अप्पकिरियस्स, अप्पासवस्स, अप्पवेदणस्स सव्वओ पोग्गला भिज्जति, सव्वओ पोग्गला छिज्जति, सव्वओ पोग्गला विद्धसति, सव्वओ पोग्गला परिविद्धसति, सया समिय पोग्गला भिज्जति, सया समियं पोग्गला छिज्जति, सया समिय पोग्गला विद्धस्सति, सया समिय पोग्गला परिविद्धस्सति, सया समिय च ण तस्स आया सुरूवत्ताए[1] °सुवण्णत्ताए सुगंधत्ताए सुरसत्ताए सुफासत्ताए इट्ठत्ताए कतत्ताए पियत्ताए सुभत्ताए मणुण्णत्ताए मणामत्ताए इच्छियत्ताए अणभिज्झियत्ताए उड्ढत्ताए—नो अहत्ताए°, सुहत्ताए —नो दुक्खत्ताए भुज्जो-भुज्जो परिणमति ?

हता गोयमा ! जाव परिणमति ॥

२३ से केणट्ठेण ? गोयमा ! से जहानामए वत्थस्स जल्लियस्स वा, पकियस्स वा, मइल्लियस्स वा, रइल्लियस्स[2] वा आणुपुव्वीए परिकम्मिज्जमाणस्स सुद्धेणं वारिणा धोव्वेमाणस्स[3] सव्वओ पोग्गला भिज्जति जाव[4] परिणमति। से तेणट्ठेण ॥

कम्मोवचय-पदं

२४ वत्थस्स णं भते ! पोग्गलोवचए कि पयोगसा ? वीससा ?

गोयमा ! पयोगसा वि, वीससा वि ॥

२५. जहा ण भंते ! वत्थस्स णं पोग्गलोवचए पयोगसा वि, वीससा वि, तहा णं 'जीवाणं कम्मोवचए'[5] कि पयोगसा ? वीससा ?

गोयमा ! पयोगसा[6], नो वीससा ॥

२६ से केणट्ठेण ? गोयमा ! जीवाण तिविहे पयोगे पण्णत्ते, तं जहा—मणप्पयोगे, वइप्पयोगे, कायप्पयोगे। इच्चेएण तिविहेण पयोगेण जीवाणं कम्मोवचए पयोगसा, नो वीससा।

एव सव्वेसि पचिदियाण तिविहे पयोगे भाणियव्वे।

पुढवीकाइयाण एगविहेण पयोगेण, एव जाव[7] वणस्सइकाइयाण।

विगलिदियाणं दुविहे पयोगे पण्णत्ते, त जहा—वइपयोगे,[8] कायपयोगे य।

---

१. स० पा०—पसत्थ नेयव्व जाव सुहत्ताए।
२ रतिल्लियस्स (व, म, स)।
३. धोव्व° (अ, क, व, म)।
४. भ० ६।२२।
५ भते ! जीवस्स पुग्गलोवचए (व)।
६. पओगसा (स)।
७. भ० १।४३७।
८. वय° (क, व, म, स)।

इच्चेएणं दुविहेण पयोगेण कम्मोवचए पयोगसा, नो वीससा। से तेणट्ठेण[1] •गोयमा! एव वुच्चइ—जीवाण कम्मोवचए पयोगसा°, नो वीससा। 'एव जस्स जो पयोगो जाव वेमाणियाण'[2]॥

कम्मोवचयस्स सादि-अनादित्त-पद

२७. वत्थस्स णं भते! पोग्गलोवचए कि सादीए सपज्जवसिए? सादीए अपज्जवसिए? अणादीए सपज्जवसिए? अणादीए अपज्जवसिए?
गोयमा! वत्थस्स ण पोग्गलोवचए सादीए सपज्जवसिए, नो सादीए अपज्जवसिए, नो अणादीए सपज्जवसिए, नो अणादीए अपज्जवसिए॥

२८ जहा ण भते! वत्थस्स पोग्गलोवचए सादीए सपज्जवसिए, नो सादीए अपज्जवसिए, नो अणादीए सपज्जवसिए, नो अणादीए अपज्जवसिए, तहा ण जीवाण कम्मोवचए पुच्छा।
गोयमा! अत्थेगतियाण जीवाण कम्मोवचए सादीए सपज्जवसिए, अत्थेगतियाण अणादीए सपज्जवसिए, अत्थेगतियाण अणादीए अपज्जवसिए, नो चेव ण जीवाण कम्मोवचए सादीए अपज्जवसिए॥

२९ से केणट्ठेण? गोयमा! इरियावहियबधयस्स[3] कम्मोवचए सादीए सपज्जवसिए, भवसिद्धियस्स कम्मोवचए अणादीए सपज्जवसिए, अभवसिद्धियस्स कम्मोवचए अणादीए अपज्जवसिए। से तेणट्ठेण॥

जीवाणं सादि-अनादित्त-पद

३० वत्थे ण भते! किं सादीए सपज्जवसिए—चउभगो?
गोयमा! वत्थे सादीए सपज्जवसिए, अवसेसा 'तिण्णि वि'[4] पडिसेहेयव्वा॥

३१ जहा ण भते! वत्थे सादीए सपज्जवसिए, नो सादीए अपज्जवसिए, नो अणादीए सपज्जवसिए, नो अणादीए अपज्जवसिए, तहा ण जीवा किं सादीया सपज्जवसिया? चउभगो—पुच्छा।
गोयमा! अत्थेगतिया सादीया सपज्जवसिया—चत्तारि वि भाणियव्वा॥

३२ से केणट्ठेण? गोयमा! नेरतिय-तिरिक्खजोणिय-मणुस्स-देवा गतिरागतिं पडुच्च सादीया सपज्जवसिया, सिद्धा गति पडुच्च सादीया अपज्जवसिया, भवसिद्धिया लद्धि पडुच्च अणादीया सपज्जवसिया, अभवसिद्धिया ससार पडुच्च अणादीया अपज्जवसिया। से तेणट्ठेण॥

---

१ स० पा०—तेणट्ठेण जाव नो।
२ एतद् द्विरुक्तमिव आभाति।
३ रिया° (अ, ता, व, म)।
४. × (अ), तिण्णि (क, ता, व, म)।

कम्मपगडी बंध विवेयण-पदं

३३ कति ण भते ! कम्मप्पगडीओ पण्णताओ ?
गोयमा ! अट्ठ कम्मप्पगडीओ पण्णत्ताओ, त जहा—१. नाणावरणिज्ज २. दरिसणावरणिज्जं[1] •३ वेदणिज्ज ४. मोहणिज्ज ५ आउग ६. नाम ७. गोय° ८ अतराइय ।।

३४ नाणावरणिज्जस्स ण भंते ! कम्मस्स केवतियं काल बधट्ठिती पण्णत्ता ?
गोयमा ! जहण्णेणं अतोमुहुत्त, उक्कोसेण तीस सागरोवमकोडाकोडीओ, तिण्णि य वाससहस्साइं अबाहा, अबाहूणिया कम्मट्ठिती—कम्मनिसेओ ।
[2]•दरिसणावरणिज्ज जहण्णेण अतोमुहुत्त, उक्कोसेण तीस सागरोवमकोडाकोडीओ, तिण्णि य वाससहस्साइ अबाहा, अबाहूणिया कम्मट्ठिती—कम्मनिसेओ° ।
वेदणिज्ज जहण्णेण दो समया, उक्कोसेण[3] •तीसं सागरोवमकोडाकोडीओ, तिण्णि य वाससहस्साइं अबाहा, अबाहूणिया कम्मट्ठिती—कम्मनिसेओ° ।
मोहणिज्ज जहण्णेण अतोमुहुत्त, उक्कोसेणं सत्तरिसागरोवमकोडाकोडीओ, सत्त य वाससहस्साणि अबाहा, अबाहूणिया कम्मट्ठिती—कम्मनिसेओ ।
आउग, जहण्णेण अतोमुहुत्त, उक्कोसेण तेत्तीस सागरोवमाणि पुव्वकोडितिभागमब्भहियाणि, कम्मट्ठिती—कम्मनिसेओ ।
नाम-गोयाण जहण्णेण अट्ठ मुहुत्ता, उक्कोसेण वीस सागरोवमकोडाकोडीओ, दोण्णि य वाससहस्साणि अबाहा, अबाहूणिया कम्मट्ठिती—कम्मनिसेओ ।
अतराइय[4] •जहण्णेण अतोमुहुत्त, उक्कोसेण तीस सागरोवमकोडाकोडीओ, तिण्णि य वाससहस्साइ अबाहा, अबाहूणिया कम्मट्ठिती—कम्मनिसेओ° ।।

३५ नाणावरणिज्ज[5] ण भते ! कम्म किं इत्थी बधइ ? पुरिसो बधइ ? नपुसओ बधइ ? नोइत्थी नोपुरिसो नोनपुसओ बधइ ?
गोयमा ! इत्थी वि बधइ, पुरिसो वि बधइ, नपुसओ वि बधइ । नोइत्थी नोपुरिसो नोनपुसओ सिय बधइ सिय नो बधइ ।
एव आउगवज्जाओ सत्त कम्मप्पगडीओ ।।

३६ आउग ण भते ! कम्म किं इत्थी बधइ ? पुरिसो बधइ ? नपुसओ बधइ ? 'नोइत्थी नोपुरिसो नोनपुसओ बधइ ?'[6]

---

१. दसरण° (व), स० पा०—दरिसणावरणिज्ज जाव अतराइय ।
२. स० पा०—एव दरिसणावरणिज्ज पि ।
३ स० पा०—जहा नाणावरणिज्ज ।
४ स० पा०—जहा नाणावरणिज्ज ।
५ नाणावरणिज्जे (अ, स) ।
६ पुच्छा (अ, क, ता, व, म, स) ।

गोयमा ! इत्थी सिय बधइ, सिय नो बधइ ।[1] •पुरिसो सिय बधइ, सिय नो बधइ । नपुसओ सिय बधइ, सिय नो बधइ ।° नोइत्थी नोपुरिसो नोनपुसओ न बधइ ।।

३७ नाणावरणिज्ज ण भते ! कम्म किं सजए बधइ ? असजए बधइ ? सजयासजए बधइ ? नोसजए नोअसंजए नोसजयासजए बधइ ?
गोयमा ! सजए सिय बधइ, सिय नो बधइ । असजए बधइ, सजयासजए वि बधइ । नोसजए नोअस्सजए नो सजयासजए न बधइ ।
एव आउगवज्जाओ सत्त वि । आउगे हेट्ठिल्ला तिण्णि भयणाए, उवरिल्ले न बधइ ।।

३८ नाणावरणिज्ज ण भते ! कम्म कि सम्मदिट्ठी बधइ ? मिच्छदिट्ठी[2] बधइ ? सम्मामिच्छदिट्ठी बधइ ?
गोयमा ! सम्मदिट्ठी सिय बधइ, सिय नो बधइ । मिच्छदिट्ठी बधइ, सम्मामिच्छदिट्ठी बधइ ।
एव आउगवज्जाओ सत्त वि । आउगे हेट्ठिल्ला दो भयणाए, सम्मामिच्छदिट्ठी न बधइ ।।

३९ नाणावरणिज्ज ण भते ! कम्म किं सण्णी बधइ ? असण्णी बधइ ? नोसण्णी नोअसण्णी बधइ ?
गोयमा ! सण्णी सिय बधइ, सिय नो बधइ । असण्णी बधइ । नोसण्णी नोअसण्णी न बधइ ।
एव वेदणिज्जाउगवज्जाओ छ कम्मप्पगडीओ । वेदणिज्ज हेट्ठिल्ला दो बधति, उवरिल्ले भयणाए । आउग हेट्ठिल्ला दो भयणाए, उवरिल्ले न बधइ ।।

४० नाणावरणिज्ज ण भते ! कम्म किं भवसिद्धिए बधइ ? अभवसिद्धिए बधइ ? नोभवसिद्धिए नोअभवसिद्धिए बधइ ?
गोयमा ! भवसिद्धिए भयणाए, अभवसिद्धिए बधइ । नोभवसिद्धिए नोअभवसिद्धिए न बधइ ।
एव आउगवज्जाओ सत्त वि । आउग हेट्ठिल्ला दो भयणाए । उवरिल्ले न बधइ ।।

४१ नाणावरणिज्ज ण भते ! कम्म किं चक्खुदसणी बधइ ? अचक्खुदसणी बधइ ? ओहिदसणी बधइ ? केवलदसणी बधइ ?
गोयमा ! हेट्ठिल्ला तिण्णि भयणाए, उवरिल्ले न बधइ ।
एवं वेदणिज्जवज्जाओ सत्त वि । वेदणिज्ज हेट्ठिल्ला तिण्णि बधति, केवलदसणी भयणाए ।।

---

१. स० पा०—एव तिण्णि वि भाणियव्वा । २. मिच्छा° (क) ।

४२. नाणावरणिज्ज ण भते ! कम्म कि पज्जत्तए बधइ ? अपज्जत्तए बधइ ? नोपज्जत्तए नोअपज्जत्तए बधइ ?
गोयमा ! पज्जत्तए भयणाए, अपज्जत्तए बधइ। नोपज्जत्तए नोअपज्जत्तए न बधइ।
एव आउगवज्जाओ सत्त वि। आउग हेट्ठिल्ला दो भयणाए, उवरिल्ले न बधइ॥

४३. नाणावरणिज्ज ण भते ! कम्म कि भासए बधइ ? अभासए बधइ ?
गोयमा ! दो वि भयणाए।
एव वेदणिज्जवज्जाओ सत्त वि। वेदणिज्ज भासए बधइ, अभासए भयणाए॥

४४ नाणावरणिज्ज ण भते ! कम्म किं परित्ते बधइ ? अपरित्ते बधइ ? नोपरित्ते नोअपरित्ते बधइ ? गोयमा ! परित्ते भयणाए, अपरित्ते बधइ। नोपरित्ते नोअपरित्ते न बधइ। एव आउगवज्जाओ सत्त कम्मप्पगडीओ। आउय[1] परित्ते वि, अपरित्ते वि भयणाए, नोपरित्ते नोअपरित्ते न बधइ॥

४५ नाणावरणिज्ज ण भते ! कम्म कि आभिणिवोहियनाणी बधइ ? सुयनाणी बधइ ? ओहिनाणी बधइ ? मणपज्जवनाणी बधइ ? केवलनाणी बधइ ?
गोयमा ! हेट्ठिल्ला चत्तारि भयणाए। केवलनाणी न बधइ।
एव वेदणिज्जवज्जाओ सत्त वि। वेदणिज्ज हेट्ठिल्ला चत्तारि बधति, केवलनाणी भयणाए॥

४६. नाणावरणिज्ज ण भते ! कम्म किं मइअण्णाणी बधइ ? सुयअण्णाणी बधइ ? विभगनाणी बधइ ?
गोयमा ! आउगवज्जाओ सत्तवि बधति, आउग भयणाए॥

४७. नाणावरणिज्ज ण भते ! कम्म कि मणजोगी बधइ ? वइजोगी[2] बधइ ? कायजोगी बधइ ? अजोगी बधइ ?
गोयमा ! हेट्ठिल्ला तिण्णि भयणाए, अजोगी न बधइ।
एव वेदणिज्जवज्जाओ सत्त वि। वेदणिज्ज हेट्ठिल्ला बंधति, अजोगी न बधइ॥

४८ नाणावरणिज्ज ण भते ! कम्म कि सागारोवउत्ते[3] बधइ ? अणागारोवउत्ते बधइ ?
गोयमा ! अट्ठसु वि भयणाए॥

४९ नाणावरणिज्ज ण भते ! कम्म किं आहारए बधइ ? अणाहारए बधइ ?
गोयमा ! दो वि भयणाए।
एव वेदणिज्जाउगवज्जाण छण्ह। वेदणिज्ज आहारए बधइ, अणाहारए भयणाए। आउए आहारए भयणाए, अणाहारए न बधइ॥

---

१. आउए (अ, ब, स)।
२. वय° (म, स)।
३. सागारोवयुत्ते (अ, स)।

५०. नाणावरणिज्ज ण भंते ! कम्म किं सुहुमे वधइ ? वादरे वंधइ ? नोसुहुमे नोवादरे वधइ ?
गोयमा ! सुहुमे वधइ, बादरे भयणाए। नोसुहुमे नोबादरे न बधइ।
एव आउगवज्जाओ सत्त वि। आउग सुहुमे वादरे भयणाए। नोसुहुमे नोबादरे न वधइ ॥

५१ नाणावरणिज्ज ण भते ! कम्म किं चरिमे वधइ ? अचरिमे वधइ ?
गोयमा ! अट्ठ वि भयणाए ॥

वेदगावेदगाण जीवाण अप्पाबहुयत्त-पदं

५२ एएसि ण भते ! जीवाण इत्थीवेदगाण पुरिसवेदगाण, नपुसगवेदगाण, अवेदगाण य कयरे कयरेहिंतो[1] •अप्पा वा ? वहुया वा ? तुल्ला वा ? विसेसाहिया वा ?॰
गोयमा ! सव्वत्थोवा जीवा पुरिसवेदगा, इत्थिवेदगा सखेज्जगुणा, अवेदगा अणतगुणा, नपुसगवेदगा अणतगुणा।
एएसिं सव्वेसि पदाण[2] अप्प-वहुगाइ उच्चारेयव्वाइं जाव[3] सव्वत्थोवा जीवा अचरिमा, चरिमा अणतगुणा ॥

५३ सेव भते ! सेव भते ! त्ति[4] ॥

चउत्थो उद्देसो

कालादेसेणं सपदेस-अपदेस-पदं

५४. जीवे ण भते ! कालादेसेण कि सपदेसे ? अपदेसे ?
गोयमा ! नियमा सपदेसे ॥

५५ नेरइए णं भते ! कालादेसेण कि सपदेसे ? अपदेसे ?
गोयमा ! सिय सपदेसे, सिय अपदेसे ॥

५६ एव जाव[5] सिद्धे ॥

५७ जीवा ण भते ! कालादेसेण किं सपदेसा ? अपदेसा ?
गोयमा ! नियमा सपदेसा ॥

---

१. स० पा०—कयरेहिंतो जाव विसेसाहिया।
२ भ० ६।३७-५१।
३. प० ३।
४ भ० १।५१।
५ पू० प० २।

५८. नेरइया ण भते ! कालादेसेण किं सपदेसा ? अपदेसा ?
गोयमा ! १ सव्वे वि ताव होज्जा सपदेसा २ अहवा सपदेसा य अपदेसे य ३ अहवा सपदेसा य अपदेसा य ॥

५६. एव जाव[1] थणियकुमारा ॥

६० पुढविकाइया ण भते ! कि सपदेसा ? अपदेसा ?
गोयमा ! सपदेसा वि, अपदेसा वि ॥

६१ एव जाव[2] वणप्फइकाइया[3] ॥

६२ सेसा जहा[4] नेरइया तहा जाव[5] सिद्धा ॥

६३ आहारगाण जीवेगिंदियवज्जो तियभगो । अणाहारगाणं जीवेगिदियवज्जा[6] छब्भगा एव भाणियव्वा—१ सपदेसा वा २ अपदेसा वा ३ अहवा सपदेसे य अपदेसे य ४. अहवा सपदेसे य अपदेसा य ५ अहवा सपदेसा य अपदेसे य ६ अहवा सपदेसा य अपदेसा य । सिद्धेहि तियभगो ।
भवसिद्धिया, अभवसिद्धिया जहा[7] ओहिया । नोभवसिद्धिय-नोअभवसिद्धिय-जीव-सिद्धेहिं तियभगो ।
सण्णीहिं जीवादिओ तियभगो । असण्णीहि एगिंदियवज्जो तियभगो । नेरइयदेव-मणुएहिं छब्भगो । नोसण्णि-नोअसण्णि-जीव-मणुय-सिद्धेहि तियभगो ।
सलेसा जहा ओहिया । कण्हलेस्सा, नीललेस्सा, काउलेस्सा जहा आहारओ, नवर—जस्स अत्थि एयाओ । तेउलेस्साए जीवादिओ तियभगो, नवर—पुढविक्काइएसु, आउवणप्फतीसु छब्भगा । पम्हलेस्स-सुक्कलेस्साए जीवादिओ तियभगो । अलेसेहिं जीव-सिद्धेहि तियभगो । मणुएसु छब्भगा ।
सम्मद्दिट्ठीहिं जीवादिओ तियभगो । विगलिदिएसु छब्भगा । मिच्छदिट्ठीहि एगिंदियवज्जो तियभगो । सम्मामिच्छदिट्ठीहि छब्भगा । सजएहि जीवादिओ तियभगो । अस्सजएहिं[8] एगिंदियवज्जो तियभगो । सजयासजएहिं तियभगो जीवादिओ । नोसजय-नोअसजय-नोसजयासजय-जीव-सिद्धेहि तियभगो ।
सकसाईहिं[9] जीवादिओ तियभगो । एगिंदिएसु अभगक । कोहकसाईहि जीवेगिंदियवज्जो तियभगो । देवेहि छब्भगा । माणकसाई-मायाकसाईहि जीवेगिं-

---

१. पू० प० २ ।
२. पू० प० २ ।
३. वणस्सइ० (क) ।
४ भ० ६।५५, ५८ ।
५ पू० प० २ ।
६. जीवपदे एकेन्द्रियपदे च सपएसा य अप्पएसा य इत्येवरूप. एक एव भगक:, बहूना विग्रहगत्यापन्नानां सप्रदेशानामप्रदेशाना च लाभात् (वृ) ।
७ भ० ६।५४, ५७ ।
८. असजएहिं (क, म) ।
९ सकसादीहिं (ता) ।

दियवज्जो तियभगो। नेरइय-देवेहि छब्भगा। लोभकसाईहि जीवेगिंदियवज्जो तियभगो। नेरइएसु छब्भगा अकसाई-जीव-मणुएहि, सिद्धेहि तियभगो।

ओहियनाणे, आभिणिबोहियनाणे, सुयनाणे जीवादिओ तियभगो। विगलिंदिएहिं छब्भगा। ओहिनाणे 'मणपज्जवनाणे केवलनाणे'[1] जीवादिओ तियभगो। ओहिए अण्णाणे, मइअण्णाणे, सुयअण्णाणे, एगिदियवज्जो तियभगो। विभगनाणे जीवादिओ तियभगो।

सजोगी[2] जहा ओहिओ, मणजोगी, वइजोगी, कायजोगी जीवादिओ तियभगो, नवरं—कायजोगी एगिंदिया, तेसु अभगयं[3]। अजोगी जहा अलेस्सा।

सागारोवउत्त-अणागारोवउत्तेहिं जीवेगिंदियवज्जो तियभगो।

सवेदगा जहा सकसाई। इत्थिवेदग-पुरिसवेदग-नपुंसगवेदगेसु जीवादिओ तियभगो, नवरं—नपुंसगवेदे एगिंदिएसु अभगयं। अवेदगा जहा अकसाई।

ससरीरी जहा ओहिओ। ओरालिय-वेउव्वियसरीराणं जीवेगिंदियवज्जो तियभगो। आहारगसरीरे जीव-मणुएसु छब्भगा, तेयग-कम्मगाइं[4] जहा ओहिया। असरीरेहि जीव-सिद्धेहि तियभगो।

आहारपज्जत्तीए, सरीरपज्जत्तीए, इंदियपज्जत्तीए, आणापाणपज्जत्तीए[5] जीवेगिंदियवज्जो तियभगो, भासा[6]-मणपज्जत्तीए जहा सण्णी। आहार-अपज्जत्तीए जहा अणाहारगा, सरीर-अपज्जत्तीए, इंदिय-अपज्जत्तीए, आणापाण-अपज्जत्तीए जीवेगिंदियवज्जो तियभगो, नेरइय-देव-मणुएहिं छब्भगा, भासा-मणअपज्जत्तीए जीवादिओ तियभगो, नेरइय-देव-मणुएहि छब्भगा।

संगहणी-गाहा

सपदेसाहारग-भविय-सण्णि-लेसा-दिट्ठि-संजय-कसाए।
नाणे जोगुवओगे, वेदे य सरीर-पज्जत्ती॥१॥

पच्चक्खाणादि-पदं

६४ जीवा णं भंते! किं पच्चक्खाणी? अपच्चक्खाणी? पच्चक्खाणापच्चक्खाणी? गोयमा! जीवा पच्चक्खाणी वि, अपच्चक्खाणी वि, पच्चक्खाणापच्चक्खाणी वि॥

---

१ मणकेवलनाणे (अ, क, ता, म, स)।
२ सजोति (ता)।
३ अभगग (ता)।
४. कम्माइ (अ, ता, म), कम्मगाण (स)।
५. आणापाणु° (क, ता, ब, म)।
६ भास (अ, क, ता, व)।

६५. सव्वजीवाण एव पुच्छा ।
गोयमा ! नेरइया अपच्चक्खाणी जाव[1] चउरिंदिया [सेसा दो पडिसेहेयव्वा[2]] । पचिदियतिरिक्खजोणिया नो पच्चक्खाणी, अपच्चक्खाणी वि, पच्चक्खाणापच्चक्खाणी वि । मणूसा तिण्णि वि । सेसा जहा नेरइया ॥

६६ जीवा ण भते ! कि पच्चक्खाणं जाणति ? अपच्चक्खाण जाणति ? पच्चक्खाणापच्चक्खाण जाणति ?
गोयमा ! जे पचिदिया ते तिण्णि वि जाणति, अवसेसा 'पच्चक्खाण न जाणति'[3], अपच्चक्खाण न जाणति, पच्चक्खाणापच्चक्खाण न जाणति ॥

६७ जीवा ण भते ! कि पच्चक्खाण कुव्वति ? अपच्चक्खाण कुव्वति ? पच्चक्खाणापच्चक्खाण कुव्वति ?
जहा ओहिओ तहा कुव्वणा ॥

६८. जीवा ण भते ! कि पच्चक्खाणनिव्वत्तियाउया ? अपच्चक्खाणनिव्वत्तियाउया ? पच्चक्खाणापच्चक्खाणनिव्वत्तियाउया ?
गोयमा ! जीवा य, वेमाणिया य पच्चक्खाणनिव्वत्तियाउया, तिण्णि वि । अवसेसा अपच्चक्खाणनिव्वत्तियाउया ।

संगहणी-गाहा

१. पच्चक्खाण २ जाणइ, ३ कुव्वइ तिण्णेव ४ आउनिव्वत्ती ।
सपएसुद्देसम्मि य, एमेए दडगा चउरो ॥१॥

६९ सेव भते ! सेव भते ! त्ति[4] ॥

पंचमो उद्देसो

तमुक्काय-पद

७०. किमिय भते ! तमुक्काए त्ति पव्वुच्चति ? कि पुढवी[5] तमुक्काए त्ति पव्वुच्चति ? आऊ[6] तमुक्काए त्ति पव्वुच्चति ?
गोयमा ! नो पुढवि तमुक्काए त्ति पव्वुच्चति, आऊ तमुक्काए त्ति पव्वुच्चति ॥

---

१. पू० प० २ ।
२ असौ कोष्ठकवर्तिपाठो व्याख्यांश प्रतीयते ।
३. अपच्चक्खाण जाणंति (ता, म) ।
४. भ० १।५१ ।
५ पुढवि (अ, क, ता, स) ।
६ आउ (अ, क, व, म, स) ।

७१. से केणट्ठेण ? गोयमा ! पुढविकाए ण अत्थेगइए सुभे देस पकासेइ, अत्थेगइए[1] देस नो पकासेइ । से तेणट्ठेण ॥

७२ तमुक्काए[2] ण भते ! कहिं समुट्ठिए ? कहिं सनिट्ठिए[3] ?
गोयमा ! जबूदीवस्स दीवस्स वहिया तिरियमसखेज्जे दीव-समुद्दे वीईवइत्ता, अरुणवरस्स दीवस्स वाहिरिल्लाओ वेइयताओ अरुणोदय समुद्द बायालीस जोयणसहस्साणि ओगाहित्ता उवरिल्लाओ जलताओ एगपएसियाए सेढीए—एत्थ[4] ण तमुक्काए समुट्ठिए । सत्तरस-एक्कवीसे जोयणसए उड्ढ उप्पइत्ता तओ पच्छा तिरिय पवित्थरमाणे-पवित्थरमाणे सोहम्मीसाण-सणकुमार-माहिदे चत्तारि वि कप्पे आवरित्ता ण उड्ढ पि य ण जाव[5] बभलोगे कप्पे रिट्ठविमाणपत्थड सपत्ते—एत्थ ण तमुक्काए सनिट्ठिए[6] ॥

७३ तमुक्काए ण भते ! किसठिए पण्णत्ते ?
गोयमा ! अहे मल्लग-मूलसठिए, उप्पि कुक्कुडग[7]-पजरगसठिए पण्णत्ते ॥

७४ तमुक्काए ण भते ! केवतिय विक्खभेण, केवतिय परिक्खेवेण पण्णत्ते ?
गोयमा ! दुविहे पण्णत्ते, त जहा——सखेज्जवित्थडे य, असखेज्जवित्थडे य ।
तत्थ ण जे से सखेज्जवित्थडे, से ण सखेज्जाइ जोयणसहस्साइ विक्खभेण, असखेज्जाइ जोयणसहस्साइ परिक्खेवेण पण्णत्ते ।
तत्थ ण जे से असखेज्जवित्थडे, से ण असखेज्जाइं जोयणसहस्साइ विक्खभेण, असखेज्जाइ जोयणसहस्साइ परिक्खेवेण पण्णत्ते ॥

७५ तमुक्काए ण भते ! केमहालए पण्णत्ते ?
गोयमा ! अयण्ण[8] जबुद्दीवे दीवे सव्वदीव-समुद्दाण सव्वब्भतराए जाव[9] एग जोयणसयसहस्स आयाम-विक्खभेण, तिण्णि जोयणसयसहस्साइ सोलससहस्साइ दोण्णि य सत्तावीसे जोयणसए तिण्णि य कोसे अट्ठावीस च धणुसय तेरस अगुलाइ अद्धगुलग च किंचिविसेसाहिए परिक्खेवेण पण्णत्ते । देवे ण महिड्ढीए जाव[10] महाणुभावे इणामेव-इणामेवत्ति कट्टु केवलकप्प जबूदीव दीव तिहिंअच्छ-रानिवाएहि तिसत्तक्खुत्तो अणुपरियट्टित्ता ण हव्वमागच्छिज्जा, से ण देवे ताए उक्किट्ठाए तुरियाए जाव[11] दिव्वाए देवगईए वीईवयमाणे-वीईवयमाणे जाव

---

१ × (क, ता) ।
२ तमुकाए (अ, क, ता, व, म) ।
३ सण्णिट्ठिए (ता) ।
४ तत्थ (अ, स) ।
५ × (अ) ।
६ सनिविट्ठिए (अ, स), सनिहिते (क) ।
७ कुकुडग (म, स) ।
८ अय ण (क, म), अय ण (ता, स) ।
९ ठा० १।२४८ ।
१० भ० ३।४ ।
११ भ० ३।३८ ।

एकाह वा, दुयाह वा, तियाह वा, उक्कोसेण छम्मासे वीईवएज्जा, अत्थेगतिय तमुक्काय वीईवएज्जा अत्थेगतिय तमुक्काय नो वीईवएज्जा। एमहालए ण गोयमा ! तमुक्काए पण्णत्ते ॥

७६. अत्थि ण भते ! तमुक्काए गेहा इ वा ? गेहावणा इ वा ?
णो तिणट्ठे समट्ठे ॥

७७. अत्थि ण भते ! तमुक्काए गामा इ वा ? जाव[1] सण्णिवेसा इ वा ?
णो तिणट्ठे समट्ठे ॥

७८ अत्थि ण भते ! तमुक्काए ओराला वलाहया ससेयति ? सम्मुच्छति ? वास वासति ?
हता अत्थि ॥

७९ त भते ! किं देवो पकरेति ? असुरो पकरेति ? नागो पकरेति ?
गोयमा ! देवो वि पकरेति, असुरो वि पकरेति, नागो[2] वि पकरेति ॥

८०. अत्थि ण भते ! तमुक्काए वादरे थणियसद्दे ? वादरे विज्जुयारे[3] ?
हंता अत्थि ॥

८१ त भते ! कि देवो पकरेति ? असुरो पकरेति ? नागो पकरेति ?
तिण्णि वि पकरेति ॥

८२. अत्थि ण भते ! तमुक्काए वादरे पुढविकाए ? वादरे अगणिकाए ?
णो तिणट्ठे समट्ठे, नण्णत्थ विग्गहगतिसमावन्नएणं ॥

८३ अत्थि ण भते ! तमुक्काए चदिम-सूरिय-गहगण-नक्खत्त-तारारूवा ?
णो तिणट्ठे समट्ठे, पलियस्सओ पुण अत्थि ॥

८४. अत्थि ण भते ! तमुक्काए चदाभा ति वा ? सूराभा ति वा ?
णो तिणट्ठे समट्ठे, 'कादूसणिया पुण'[4] सा ॥

८५ तमुक्काए ण भते ! केरिसए वण्णएण पण्णत्ते ?
गोयमा ! काले कालोभासे गभीरे[5] लोमहरिसजणणे भीमे उत्तासणए परमकिण्हे वण्णेणं पण्णत्ते। देवे वि ण अत्थेगतिए जे ण तप्पढमयाए पासित्ता ण खुभाएज्जा[6], अहेण अभिसमागच्छेज्जा तओ पच्छा[7] सीहं-सीहं तुरियं-तुरियं खिप्पामेव वीतीवएज्जा ॥

८६. तमुक्कायस्स ण भते ? कति नामधेज्जा पण्णत्ता ?

---

१. भ० १।४९।
२ नाओ (ता, म)।
३ विज्जयाए (अ), विज्जुए (क, ता, व, म)।
४. काउसणिया पुण (ता)।
५. गभीर (अ, क, ता, व, स, वृ)।
६. खोभाएज्ज (क, ता, म), खभाएज्जा (स)।
७. एतत् पद वृत्तौ नास्ति व्याख्यातम्।

गोयमा ! तेरस नामधेज्जा पण्णत्ता, त जहा—तमे इ वा, तमुक्काए इ वा, अधकारे इ वा, महधकारे इवा, लोगधकारे इ वा, लोगतमिसे[1] इ वा, देवधकारे इ वा, देवतमिसे[2] इ वा, देवरण्णे[3] इ वा, देववूहे[4] इ वा, देवफलिहे[5] इ वा, देवपडिक्खोभे इ वा, अरुणोदए इ वा समुद्दे[6] ॥

८७ तमुक्काए ण भते ! किं पुढविपरिणामे ? आउपरिणामे ? जीवपरिणामे ? पोग्गलपरिणामे ?
गोयमा ! नो पुढविपरिणामे, आउपरिणामे वि, जीवपरिणामे वि, पोग्गलपरिणामे वि ॥

८८ तमुक्काए ण भते ! सव्वे पाणा भूया जीवा सत्ता पुढवीकाइयत्ताए जाव[7] तसकाइयत्ताए उववन्नपुव्वा ?
हता गोयमा ! असति[8] अदुवा अणतक्खत्तो, नो चेव ण बादरपुढविकाइयत्ताए, बादरअगणिकाइयत्ताए वा ।

कण्हराइ-पदं

८९. कइ ण भते ! कण्हरातीओ पण्णत्ताओ[9] ?
गोयमा ! अट्ठ कण्हरातीओ पण्णत्ताओ ॥

९०. कहि ण भते ! एयाओ अट्ठ कण्हरातीओ[10] पण्णत्ताओ ?
गोयमा ! उप्पि सणकुमार-माहिदाण कप्पाण, हव्वि[11] बभलोए कप्पे 'रिट्ठे विमाणपत्थडे'[12], एत्थ ण अक्खाडग-समचउरस-सठाणसठियाओ अट्ठ कण्हरातीओ पण्णत्ताओ, त जहा—पुरत्थिमे ण दो, पच्चत्थिमे ण दो, दाहिणे ण दो, उत्तरे ण दो । पुरत्थिमब्भतरा[13] कण्हराती दाहिण-बाहिर कण्हरातिं पुट्ठा, दाहिणब्भतरा कण्हराती पच्चत्थिम-बाहिर कण्हराति पुट्ठा, पच्चत्थिमब्भतरा कण्हराती उत्तर-बाहिर कण्हरातिं पुट्ठा, उत्तरब्भतरा[14] कण्हराती पुरत्थिम-बाहिर कण्हराति पुट्ठा ।

---

१ °तिमिसे (क, ता, म) ।
२ देवतिमिसे (अ, क, ता, स) ।
३. देवारण्णे (क, ता, ब) ।
४ देवपूहे (ता) ।
५ °पलिहे (ता) ।
६ समुद्देति वा (अ, स) ।
७ भ० १।४३७ ।
८ असइ-असइ (ता) ।
९ द्रष्टव्य—ठा० ८।४३-४७ ।
१० °रायीतो (ब) ।
११ हेट्ठि (अ, क, व, म), हिट्ठिं (स), स्थानाङ्ग-सूत्रे (८।४३, वृत्तिपत्र ४१०) अभयदेव-सूरिणा 'हेट्ठि ति अधस्तात्' ब्रह्मलोकस्य इति व्याख्यातम् । अत्र च (वृत्तिपत्र २७१) 'हव्वि त्ति सम' इति व्याख्यातम् ।
१२ रिट्ठविमाण° (ठा० ८।४३) ।
१३ पुरत्थिमब्भितरा (क) ।
१४ उत्तरमब्भतरा (ब, स) ।

दो पुरत्थिम-पच्चत्थिमाओ बाहिराओ कण्हरातीओ छलसाओ, दो उत्तर-दाहिणाओ बाहिराओ कण्हरातीओ तसाओ, दो पुरत्थिम-पच्चत्थिमाओ अब्भतराओ कण्हरातीओ चउरसाओ, दो उत्तर-दाहिणाओ अब्भतराओ कण्हरातीओ चउरसाओ ।

संगहणी-गाहा

पुव्वावरा छलसा, तसा पुण दाहिणुत्तरा बज्झा ।
अब्भतर चउरसा, सव्वा वि य कण्हरातीओ ॥१॥

९१ कण्हरातीओ ण भते ! केवतिय आयामेण ? केवतिय विक्खभेण ? केवतिय परिक्खेवेण पण्णत्ताओ ?
गोयमा ! असखेज्जाइ जोयणसहस्साइ आयामेण, सखेज्जाइ जोयणसहस्साइ विक्खभेण, असखेज्जाइ जोयणसहस्साइ परिक्खेवेण पण्णत्ताओ ॥

९२ कण्हरातीओ ण भते ! केमहालियाओ पण्णत्ताओ ?
गोयमा ! अय ण जबुद्दीवे दीवे[1] •जाव[2] देवे ण महिड्ढीए जाव[3] महाणुभावे इणामेव-इणामेव त्ति कट्टु केवलकप्प जबूदीव दीव तिहि अच्छरानिवाएहि तिसत्तक्खुत्तो अणुपरियट्टित्ता ण हव्वमागच्छिज्जा, से ण देवे ताए उक्किट्ठाए तुरियाए जाव[4] दिव्वाए देवगईए वीईवयमाणे-वीईवयमाणे जाव एकाह वा, दुयाह वा, तियाह वा, उक्कोसेण° अद्धमास वीईवएज्जा, अत्थेगइए कण्हराति वीईवएज्जा । अत्थेगइए कण्हराति णो वीईवएज्जा, एमहालियाओ ण गोयमा ! कण्हरातीओ पण्णत्ताओ ॥

९३ अत्थि ण भते ! कण्हरातीसु गेहा इ वा ? गेहावणा इ वा ?
णो इणट्ठे समट्ठे ॥

९४ अत्थि ण भते ! कण्हरातीसु गामा इ वा ? जाव[5] सण्णिवेसा इ वा ?
णो इणट्ठे समट्ठे ॥

९५. अत्थि ण भते ! कण्हरातीसु ओराला वलाहया ससेयति ? सम्मुच्छति ? वास वासति ?
हता अत्थि ॥

९६ त भते ! किं देवो पकरेति ? असुरो पकरेति ? नागो पकरेति ?
गोयमा ! देवो पकरेति, नो असुरो, नो नागो पकरेति ॥

---

१ म० पा०—दीवे जाव अद्धमासं ।
२. भ० ६।७५ ।
३. भ० ३।४ ।
४. भ०३।३८ ।
५ भ० १।४९ .

९७ अत्थि ण भते ! कण्हरातीसु बादरे थणियसद्दे ? बादरे विज्जुयारे ?
[1]•हता अत्थि ।।

९८ त भते ! किं देवो पकरेति ? असुरो पकरेति ? नागो पकरेति ?
गोयमा ! देवो पकरेति, नो असुरो, नो नागो पकरेति° ।।

९९ अत्थि ण भते ! कण्हरातीसु बादरे आउकाए ? बादरे अगणिकाए ? बादरे वणप्फइकाए ?
णो तिणट्ठे समट्ठे, नण्णत्थ विग्गहगतिसमावन्नएण ।।

१०० अत्थि ण भते ! कण्हरातीसु चदिम-सूरिय-गहगण-नक्खत्त-तारारूवा ?
णो तिणट्ठे समट्ठे ।।

१०१ अत्थि ण भते ! कण्हरातीसु चदाभा ति वा ? सुराभा ति वा ?
णो तिणट्ठे समट्ठे ।।

१०२ कण्हरातीओ ण भते ! केरिसियाओ वण्णेण पण्णत्ताओ ?
गोयमा ! कालाओ[2] •कालोभासाओ गभीराओ लोमहरिसजणणाओ भीमाओ उत्तासणाओ परमकिण्हाओ वण्णेण पण्णत्ताओ। देवे वि ण अत्थेगतिए जे ण तप्पढमयाए पासित्ता ण खुभाएज्जा, अहेण अभिसमागच्छेज्जा तओ पच्छा सीह-सीह तुरिय-तुरिय° खिप्पामेव वीतीवएज्जा ।।

१०३ कण्हराती ण भते ! कति[3] नामधेज्जा पण्णत्ता ?
गोयमा ! अट्ठ नामधेज्जा पण्णत्ता, त जहा—कण्हराती इ वा, मेहराती इ वा, मघा इ वा, माघवई इ वा, वायफलिहा इ वा, वायपलिक्खोभा इ वा, देवफलिहा इ वा, देवपलिक्खोभा इ वा ।।

१०४ कण्हरातीओ ण भते ! कि पुढवीपरिणामाओ ? आउपरिणामाओ ? जीवपरिणामाओ ? पोग्गलपरिणामाओ ?
गोयमा ! पुढविपरिणामाओ, नो आउपरिणामाओ, जीवपरिणामाओ वि, पोग्गलपरिणामाओ वि ।।

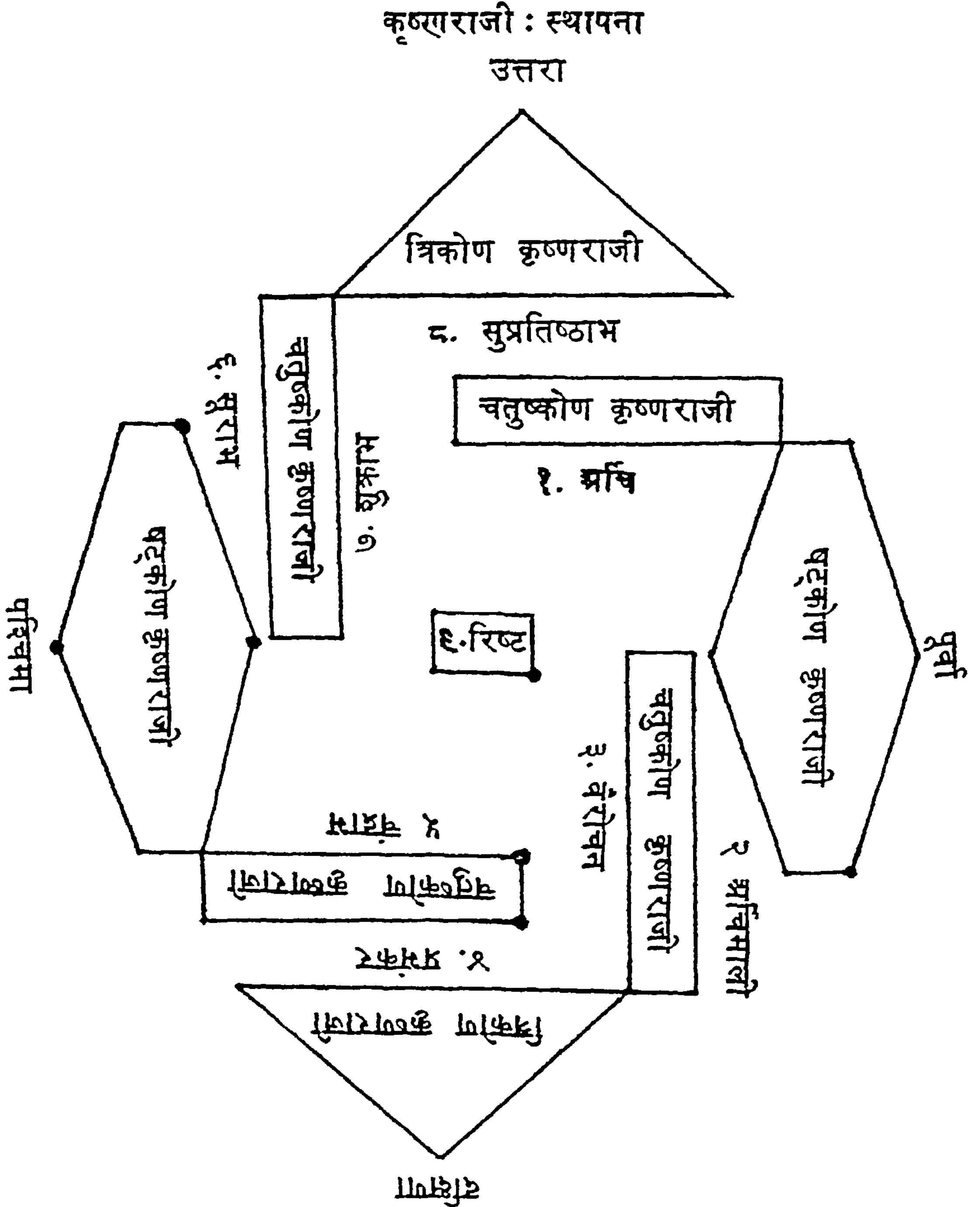
१०५. कण्हरातीसु ण भते ! सव्वे पाणा भूया जीवा सत्ता पुढवीकाइयत्ताए जाव[4] तसकाइयत्ताए उववण्णपुव्वा ?
हता गोयमा ! असइ अदुवा अणतक्खुत्तो, नो चेव ण बादरआउकाइयत्ताए, बादरअगणिकाइयत्ताए, बादरवणप्फइकाइयत्ताए वा ।।

---

१. स० पा०—जहा ओराला तहा ।
२ स० पा०—कालाओ जाव खिप्पामेव ।
३ केवइया (ता) ।
४ भ० १।४३७ ।

लोगंतियदेव-पदं

१०६ एएसि णं अट्ठण्हं कण्हराईणं अट्ठसु ओवासंतरेसु अट्ठ लोगंतिगविमाणा पण्णत्ता, तं जहा—१ अच्ची २. अच्चिमाली ३ वइरोयणे ४ पभंकरे[1] ५. चंदाभे ६ सूराभे ७ सुक्काभे[2] ८ सुपइट्ठाभे, 'मज्झे रिट्ठाभे'[3] ॥



१. वभकरे (ता) ।
२. सुकाभे (ता) ।
३. इह चावकाशान्तरवर्तिषु अष्टासु अर्चि प्रभ-

तिषु विमानेषु वाच्येषु यत् कृष्णराजीनां मध्यमभागवर्ति रिष्ट विमानं नवमं उक्तं तद्विमानप्रस्तावात् ...

१०७ कहि ण भते ! अच्चि-विमाणे पण्णत्ते ?
गोयमा ! उत्तर-पुरत्थिमे ण ॥

१०८ कहि ण भते ! अच्चिमाली विमाणे पण्णत्ते ?
गोयमा ! पुरत्थिमे ण । एव परिवाडीए नेयव्व जाव—

१०९ कहि ण भते ! रिट्ठे विमाणे पण्णत्ते ?
गोयमा ! बहुमज्झदेसभाए ॥

११० एएसु ण अट्ठसु लोगतियविमाणेसु अट्ठविहा लोगतिया देवा परिवसति, तं जहा—

संगहणी-गाहा

सारस्सयमाइच्चा, वण्ही वरुणा य गद्दतोया य ।
तुसिया अव्वावाहा, अग्गिच्चा चेव रिट्ठा य ॥१॥

१११ कहि ण भते ! सारस्सया देवा परिवसति ?
गोयमा ! अच्चिम्मि विमाणे परिवसति ॥

११२ कहि ण भते ! आइच्चा देवा परिवसति ?
गोयमा ! अच्चिमालिम्मि विमाणे । एव नेयव्व जहाणुपुव्वीए जाव—

११३. कहि ण भते ! रिट्ठा देवा परिवसति ?
गोयमा ! रिट्ठम्मि विमाणे ॥

११४ सारस्सयमाइच्चाण भते । देवाण कति देवा, कति देवसया पण्णत्ता ?
गोयमा ! सत्त देवा, सत्त देवसया परिवारो[1] पण्णत्तो ।
वण्ही—वरुणाण देवाण चउद्दस देवा, चउद्दस देवसहस्सा परिवारो पण्णत्तो ।
गद्दतोय—तुसियाण देवाण सत्त देवा, सत्त देवसहस्सा परिवारो पण्णत्तो ।
अवसेसाण नव देवा, नव देवसया परिवारो पण्णत्तो ।

संगहणी-गाहा

पढम-जुगलम्मि सत्तओ, सयाणि बीयम्मि चउद्दससहस्सा ।
तइए सत्तसहस्सा, नव चेव सयाणि सेसेसु ॥१॥

११५. लोगतिगविमाणा ण भते ! किपइट्ठिया पण्णत्ता ?
गोयमा ! वाउपइट्ठिया पण्णत्ता । एव नेयव्व विमाणाण पइट्ठाण, बाहुल्लुच्चत्तमेव सठाण, बभलोयवत्तव्वया नेयव्वा[2] जाव[3]—

---

१ × (अ, क, ता, ब, म) ।
२. नेयव्वा जहा जीवाभिगमे देवुद्देसए (अ, स)
३ जी० ३ ।

११६. लोयतियविमाणेसु ण भंते । सव्वे पाणा भूया जीवा सत्ता पुढविकाइयत्ताए, आउकाइयत्ताए, तेउकाइयत्ताए, वाउकाइयत्ताए, वणप्फइकाइयत्ताए, देवत्ताए, देवित्ताए उववण्णपुव्वा ?
हता गोयमा ! असइ अदुवा अणतक्खुत्तो, नो चेव ण देवित्ताए[1] ॥

११७. 'लोगतिय देवाण'[2] भते ! केवइय काल ठिती पण्णत्ता ?
गोयमा ! अट्ठ सागरोवमाइ ठिती पण्णत्ता ॥

११८ लोगतियविमाणेहिंतो ण भते ! केवतिय अवाहाए[3] लोगते पण्णत्ते ?
गोयमा ! असखेज्जाइ जोयणसहस्साइ अवाहाए लोगते पण्णत्ते ॥

११९ सेव भते ! सेव भते ! त्ति[4] ॥

छट्ठो उद्देसो

नेरइयादीणं आवास-पद

१२०. कति ण भंते ! पुढवीओ पण्णत्ताओ ?
गोयमा ! सत्त पुढवीओ पण्णत्ताओ, त जहा—रयणप्पभा जाव[5] अहेसत्तमा[6] । रयणप्पभाईण आवासा भाणियव्वा जाव[7] अहेसत्तमाए । एव जत्तिया[8] आवासा ते भाणियव्वा जाव[9]—

१२१ कति ण भते ! अणुत्तरविमाणा पण्णत्ता ?
गोयमा ! पच अणुत्तरविमाणा पण्णत्ता, त जहा—विजए[10], °वेजयते, जयते, अपराजिए° सव्वट्ठसिद्धे ॥

मारणंतियसमुग्घाय-पदं

१२२ जीवे ण भते ! मारणतियसमुग्घाएण समोहए, समोहणित्ता जे भविए इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए तीसाए निरयावाससयसहस्सेसु अण्णयरसि निरयावासंसि

---

१. देवत्ताए (म, स) ।
२ लोगतियविमाणेसु ण (अ, क, ता, व, म) ।
३ आवाहाए (ता) ।
४. भ० १।५१ ।
५ भ० १।२११ ।
६. तमतमा (अ, स) ।
७. भ० १।२१२ ।
८. जे जत्तिया (अ, क, व, म, स) ।
९. भ० १।२१३-२१५ ।
१०. स० पा०—विजए जाव सव्वट्ठसिद्धे ।

नेरइयत्ताए उववज्जित्तए, से ण भते ! तत्थगए चेव आहारेज्ज वा ? परिणामेज्ज वा ? सरीर वा बधेज्जा ?

गोयमा ! अत्थेगतिए तत्थगए चेव आहारेज्ज वा, परिणामेज्ज वा, सरीर वा बधेज्जा, अत्थेगतिए तओ पडिनियत्तति[1], ततो पडिनियत्तित्ता इहमागच्छइ, आगच्छित्ता दोच्च पि मारणतियसमुग्घाएण समोहण्णइ, समोहणित्ता इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए तीसाए निरयावाससयसहस्सेसु अण्णयरसि निरयावासंसि नेरइयत्ताए उववज्जित्तए, तओ पच्छा आहारेज्ज वा, परिणामेज्ज वा, सरीर वा बधेज्जा । एव जाव[2] अहेसत्तमा पुढवी ।।

१२३ जीवे ण भते ! मारणतियसमुग्घाएण समोहए, समोहणित्ता जे भविए चउसट्ठीए असरकुमारावाससयसहस्सेसु अण्णयरसि असुरकुमारावाससि असुरकुमारत्ताए उववज्जित्तए, जहा नेरइया तहा भाणियव्वा जाव[3] थणियकुमारा ।।

१२४ जीवे ण भते ! मारणतियसमुग्घाएण समोहए, समोहणित्ता जे भविए असखेज्जेसु पुढविकाइयावाससयसहस्सेसु अण्णयरसि पुढविकाइयावाससि पुढविकाइयत्ताए उववज्जित्तए, से ण भते ! मदरस्स पव्वयस्स पुरत्थिमे ण केवइय गच्छेज्जा ? केवइय पाउणेज्जा ?

गोयमा ! लोयत गच्छेज्जा, लोयत पाउणेज्जा ।।

१२५ से ण भते ! तत्थगए चेव आहारेज्ज वा ? परिणामेज्ज वा ? सरीर वा बधेज्जा ?

गोयमा ! अत्थेगतिए तत्थगए चेव आहारेज्ज वा, परिणामेज्ज वा, सरीर वा बधेज्जा, अत्थेगतिए तओ पडिनियत्तइ, पडिनियत्तित्ता इहमागच्छइ[4], दोच्च पि मारणतियसमुग्घाएण समोहण्णइ, समोहणित्ता मदरस्स पव्वयस्स पुरत्थिमे ण अगुलस्स असखेज्जइभागमेत्त वा, सखेज्जइभागमेत्त वा, वालग्ग वा, वालग्गपुहत्त[5] वा, एव लिक्ख-जूय-जव-अगुल जाव[6] जोयणकोडि वा, जोयणकोडाकोडि वा सखेज्जेसु वा असखेज्जेसु वा जोयणसहस्सेसु, लोगते वा एगपएसिय सेढि मोत्तूण असखेज्जेसु पुढविकाइयावाससयसहस्सेसु अण्णयरसि पुढविकाइयावाससि पुढविकाइयत्ताए उववज्जेत्ता, तओ पच्छा आहारेज्ज वा, परिणामेज्ज वा, सरीर वा बधेज्जा ।

जहा पुरत्थिमे ण मदरस्स पव्वयस्स आलावओ भणिओ, एव दाहिणे ण, पच्चत्थिमे ण, उत्तरे ण, उड्ढे, अहे ।

---

१. नियत्तेति (अ, स) ।
२ भ० १।२११ ।
३ पू० प० २ ।
४ इह हव्वमा० (स) ।
५ ०पुहुत्त (म) ।
६ वृ; अ० सू० ४०० ।

जहा पुढविकाइया तहा एगिंदियाणं सव्वेसिं एक्केक्कस्स छ आलावगा भाणियव्वा।

१२६ जीवे णं भंते ! मारणंतियसमुग्घाएणं समोहण्णइ, समोहणित्ता जे भविए असंखेज्जेसु बेइंदियावाससयसहस्सेसु अण्णयरंसि बेइंदियावासंसि बेइंदियत्ताए उववज्जित्तए, से णं भंते ! तत्थगए चेव आहारेज्ज वा? परिणामेज्ज वा? सरीरं वा बंधेज्जा?

जहा नेरइया[1], एवं जाव[2] अणुत्तरोववाइया॥

१२७ जीवे णं भंते ! मारणंतियसमुग्घाएणं समोहए, समोहणित्ता जे भविए पंचसु अणुत्तरेसु महतिमहालएसु महाविमाणेसु अण्णयरंसि अणुत्तरविमाणंसि अणुत्तरोववाइयदेवत्ताए उववज्जित्तए, से णं भंते ! तत्थगए चेव आहारेज्ज वा? परिणामेज्ज वा? सरीरं वा बंधेज्जा?

तं चेव जाव[3] आहारेज्ज वा, परिणामेज्ज वा, सरीरं वा बंधेज्जा।

१२८ सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति[4]॥

सत्तमो उद्देसो

धन्नाणं जोणि-ठिइ-पदं

१२९ अह भंते ! सालीणं, वीहीणं, गोधूमाणं, जवाणं, जवजवाणं—एएसि णं धन्नाणं कोट्ठाउत्ताणं पल्लाउत्ताणं मंचाउत्ताणं मालाउत्ताणं ओलित्ताणं[5] लित्ताणं पिहियाणं मुद्दियाणं लंछियाणं केवतियं कालं जोणी संचिट्ठइ?

गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं तिण्णि संवच्छराइं। तेण परं जोणी पमिलायइ, तेण परं जोणी पविद्धंसइ[6], तेण परं बीए अबीए भवति, तेण परं जोणीवोच्छेदे पण्णत्ते समणाउसो !

१३०. अह भंते ! कल[7]-मसूर-तिल-मुग्ग-मास-निप्फाव[8]-कुलत्थ-आलिसंदग-सतीण[9]-पलिमंथगमाईणं[10]—एएसि णं धन्नाणं कोट्ठाउत्ताणं पल्लाउत्ताणं मंचाउत्ताणं

---

१. भ० ६।१२२।
२ भ० १।२१४, २१५।
३. भ० ६।१२२।
४. भ० १।५१।
५. उल्लित्ताण (स)।
६ विद्धंसेइ (अ, क, स)।
७. कलाव (अ); कलाय (व, स), कालाव (म)
८ निप्पाव (ता, स)।
९. सतीण (अ, व, स)।
१०. तिलिमिंथग० (ता)।

मालाउत्ताण ओलित्ताण लित्ताण पिहियाणं मुद्दियाण लछियाणं केवतिय कालं जोणी सचिट्ठइ ?

[1]●गोयमा ! जहण्णेण अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेण पच सवच्छराइ। तेण पर जोणी पमिलायइ, तेण पर जोणी पविद्धसइ, तेण पर बीए अबीए भवति, तेण पर जोणीवोच्छेदे पण्णत्ते समणाउसो● !

१३१ अह भते ! अयसि-कुसुभग-कोद्दव-कगु-वरग[2]-रालग-कोद्दूसग[3]-सण-सरिसव-मूलाबीयमाईण[4]—एएसि ण धन्नाण कोट्ठाउत्ताण पल्लाउत्ताणं मचाउत्ताण मालाउत्ताण ओलित्ताण लित्ताण पिहियाण मुद्दियाण लछियाण केवतिय काल जोणी सचिट्ठइ ?

[5]●गोयमा ! जहण्णेण अंतोमुहुत्त, उक्कोसेण सत्त सवच्छराइ। तेण परं जोणी पमिलायइ, तेण पर जोणी पविद्धसइ, तेण पर बीए अबीए भवति, तेण परं जोणीवोच्छेदे पण्णत्ते समणाउसो[5]● !

गणना-काल-पदं

१३२ एगमेगस्स ण भते ! मुहुत्तस्स केवतिया ऊसासद्धा वियाहिया ?

गोयमा ! असखेज्जाण समयाण समुदय-समिति-समागमेण सा एगा 'आवलिय त्ति'[7] पवुच्चइ, सखेज्जा आवलिया ऊसासो, सखेज्जा आवलिया निस्सासो—

गाहा—

हट्ठस्स अणवगल्लस्स, निरुवकिट्ठस्स[8] जतुणो।
एगे ऊसास-नीसासे, एस पाणु त्ति वुच्चइ ॥१॥
सत्त पाणूइं[9] से थोवे, सत्त थोवाइ से लवे।
लवाण सत्तहत्तरिए[10], एस मुहुत्ते वियाहिए ॥२॥
तिण्णि सहस्सा सत्त य, सयाइ तेवत्तरिं च ऊसासा।
एस मुहुत्तो दिट्ठो, सव्वेहिं अणतनाणीहि ॥३॥

---

१ स० पा०—जहा सालीण तहा एयाणि वि नवर पच सवच्छराइ सेस त चेव।
२ वरट्ट (ठा० ७।९०)।
३ कोडुसग (व)।
४ मूलग० (अ, क, स)।
५ सं० पा०—एयाणि वि तहेव नवर सत्त सवच्छराइ।
६ तुलना—ठा० ३।१२५, ५।२०९, ७।९०।
७ आवलिया ति (क, ता, व)।
८ णिरवकट्ठस्स (ता)।
९. पाणूणि (अ, स)।
१० सत्तस० (क, व)।

एएणं मुहुत्तपमाणेणं तीसमुहुत्ता अहोरत्तो, पण्णरस अहोरत्ता पक्खो, दो पक्खा मासो, दो मासा उडू[1], तिण्णि उडू अयणे, दो[2] अयणा संवच्छरे, 'पंच संवच्छराइं'[3] जुगे, वीस जुगाइं वाससयं, दस वाससयाइं वाससहस्सं, सयं वाससहस्साणं वाससयसहस्सं, चउरासीइं वाससयसहस्साणि से एगे पुव्वंगे, चउरासीइं पुव्वंगा सयसहस्साइं से एगे पुव्वे, एवं तुडियंगे, तुडिए, अडडंगे, अडडे, अववंगे, अववे[4], हूहूयंगे[5], हूहूए, उप्पलंगे, उप्पले, पउमंगे, पउमे, नलिणंगे, नलिणे, अत्थनिउरंगे, अत्थनिउरे[6], अउयंगे, अउए[7], 'नउयंगे, नउए, पउयंगे, पउए[8] चूलियंगे, चूलिया, सीसपहेलियंगे, सीसपहेलिया। एताव ताव गणिए, एताव ताव गणियस्स विसए, तेण परं ओवमिए[9] ॥

ओवमिय-काल-पदं

१३३ से किं तं ओवमिए ?
ओवमिए दुविहे पण्णत्ते, तं जहा—पलिओवमे य, सागरोवमे य ॥

१३४ 'से किं तं पलिओवमे ? से किं तं सागरोवमे ?'[10]

गाहा—

सत्थेण सुतिक्खेण वि, छेत्तुं भेत्तुं व[11] जं किर न सक्का।
तं परमाणुं सिद्धा, वदंति आदिं पमाणाणं ॥१॥

अणंताणं परमाणुपोग्गलाणं समुदय-समिति-समागमेणं सा एगा उस्सण्हसण्हिया इ वा, सण्हसण्हिया इ वा, उड्ढरेणू[12] इ वा, तसरेणू इ वा, रहरेणू इ वा, वालग्गे[13] इ वा, लिक्खा इ वा, जूया इ वा, जवमज्झे इ वा, अंगुले इ वा। अट्ठ उस्सण्हसण्हियाओ सा एगा सण्हसण्हिया, अट्ठ सण्हसण्हियाओ सा एगा उड्ढरेणू, अट्ठ उड्ढरेणूओ सा एगा तसरेणू, अट्ठ तसरेणूओ सा एगा रहरेणू, अट्ठ रहरेणूओ से एगे देवकुरु-उत्तरकुरुगाणं मणुस्साणं वालग्गे, 'एवं हरिवास-रम्मग-हेमवय-एरन्नवयाणं, पुव्वविदेहाणं मणुस्साणं अट्ठ वालग्गा सा एगा

---

१ उद्द (ता, व)।
२ वे (ता, व)।
३ पचसवच्छरिए (अ, क, ता, व, म, स)।
४ अपपे (व, स)।
५ हूहूय (अ, क, स)।
६ °निपूरे (क, ता, व)।
७ अनुए (अ, न), अपुए (क), अज्जुए (व)।
८ पदुए २, नउए २ (अ, ता, स), पज्जुए य° (क), पज्जुए य नज्जुए य (व)।
९ उवमिए (अ, क, व, म, स)। तुलना—अ० सू० ४१७।
१०. से किं त पलिओवमे सागरोवमे २ (अ, स), से किं त पलितोवमे २ (क, ता)।
११. च (अ, क, व, म, स, वृ)।
१२ उद्ध० (अ, क, ता, व, म)।
१३. वालग्गा (स)।

लिक्खा"[1], अट्ठ लिक्खाओ सा एगा जूया, अट्ठ जूयाओ से एगे जवमज्झे, अट्ठ जवमज्झा से एगे अगुले ।

एएण अगुलपमाणेणं छ अगुलाणि पादो, बारस अगुलाइ विहत्थी[2], चउवीस अगुलाइ रयणी, अडयालीस अगुलाइ कुच्छी, छन्नउतिं[3] अगुलाणि से एगे दडे इ वा, धणू इ वा, जूए इ वा, नालिया इ वा, अक्खे इ वा, मुसले इ वा ।

एएण धणुप्पमाणेण दो धणुसहस्साइ गाउय, चत्तारि गाउयाइ जोयण ।

एएण जोयणप्पमाणेण जे पल्ले जोयण आयाम-विक्खभेण, जोयण उड्ढ उच्चत्तेण, त तिउण[4], सविसेस परिरएण—से ण एगाहिय-बेहिय-तेहिय[5], उक्कोस सत्तरत्तप्परूढाण समट्ठे[6] सनिचिए भरिए[7] वालग्गकोडीण ।

ते ण वालग्गे नो अग्गी दहेज्जा, नो वातो हरेज्जा, नो कुच्छेज्जा[8], नो परिविद्धसेज्जा, नो पूतित्ताए हव्वमागच्छेज्जा ।

तओ ण वाससए-वाससए गते[10]एगमेग वालग्ग अवहाय[11]जावतिएण कालेणसे पल्ले खीणे निरए निम्मले निट्ठिए निल्लेवे अवहडे विसुद्धे भवइ । से त्त पलिओवमे ।

गाहा—

२ एएसिं पल्लाण, कोडाकोडी हवेज्ज दसगुणिया ।
त सागरोवमस्स उ, एक्कस्स भवे परिमाण ॥

---

१ प्रस्तुतपाठे भरतैरवतयोर्मनुष्याणामुल्लेखो नास्ति, अनुयोगद्वारसूत्रे विद्यते । तस्य पूर्णपाठ इत्थमस्ति—
अट्ठ देवकुरु-उत्तरकुरुगाण मणुस्साण वालग्गा हरिवास-रम्मगवासाण मणुस्साण से एगे वालग्गे ।
अट्ठ हरिवास-रम्मगवासाणम णुस्साण वालग्गा हेमवय-हेरण्णवयाण मणुस्साण से एगे वालग्गे ।
अट्ठ हेमवय-हेरण्णवयाण मणुस्साण वालग्गा पुव्वविदेह-अवर विदेहाण मणुस्साण से एगे वालग्गे ।
अट्ठ पुव्वविदेह-अवरविदेहाण मणुस्साण वालग्गा भरहेरवयाणं मणुस्साण से एगे वालग्गे ।
अट्ठ भरहेरवयाण मणुस्साण वालग्गा सा एगा लिक्खा (अ० सू० ३६६) ।

२. वितत्थी (अ) ।
३ छण्हउइ (ता) ।
४ तिओण (अ) ।
५ षष्ठीवहुवचनलोपाद् एकाहिकद्व्याहिकत्र्याहिकाणाम् (वृ) ।
६ ससट्ठे (अ, म) ।
७ हरिए (ता) ।
८ कुत्थेज्जा (अ, व, म) ।
६ तए (अ, क) ।
१०. × (अ, ता, म, स) ।
११. अवहाय २ (ता) ।

एएण सागरोवमपमाणेण चत्तारि सागरोवमकोडाकोडीओ कालो सुसम-सुसमा १ तिण्णि सागरोवमकोडाकोडीओ कालो सुसमा २ दो[1] सागरोवमकोडाकोडीओ कालो सुसम-दूसमा[2] ३. एगा सागरोवमकोडाकोडी बायालीसाए वाससहस्सेहिं ऊणिया कालो दूसम-सुसमा ४. एक्कवीस वाससहस्साइं कालो दूसमा ५ एक्कवीस वाससहस्साइं कालो दूसम-दूसमा ६ ।

पुणरवि उस्सप्पिणीए एक्कवीस वाससहस्साइं कालो दूसम-दूसमा १. एक्कवीस वाससहस्साइं कालो दूसमा[3] २. •एगा सागरोवमकोडाकोडी बायालीसाए वाससहस्सेहिं ऊणिया कालो दूसम-सुसमा ३ दो सागरोवमकोडाकोडीओ कालो सुसम-दूसमा ४ तिण्णि सागरोवमकोडाकोडीओ कालो सुसमा° ५. चत्तारि सागरोवमकोडाकोडीओ कालो सुसम-सुसमा ६ ।

दस सागरोवमकोडाकोडीओ कालो ओसप्पिणी, दस सागरोवमकोडाकोडीओ कालो उस्सप्पिणी, वीसं सागरोवमकोडाकोडीओ कालो ओसप्पिणी उस्सप्पिणी य ॥

सुसम-सुसमाए भरहवास-पदं

१३५. जंबुद्दीवे णं भंते ! दीवे इमीसे ओसप्पिणीए सुसम-सुसमाए समाए उत्तिमट्ठ-पत्ताए[4], भरहस्स वासस्स केरिसए आगारभाव-पडोयारे[5] होत्था ?
गोयमा ! बहुसमरमणिज्जे भूमिभागे होत्था, से जहानामए— आलिंगपुक्खरे ति वा, एवं उत्तरकुरुवत्तव्वया नेयव्वा जाव[6] तत्थ णं बहवे भारया मणुस्सा मणुस्सीओ य आसयंति सयंति चिट्ठंति निसीयंति तुयट्टंति हसंति रमंति ललंति । तीसे णं समाए भारहे वासे तत्थ-तत्थ देसे-देसे तहिं-तहिं बहवे उद्दाला कोद्दाला जाव[7] कुस-विकुस-विसुद्धरुक्खमूला जाव[8] छव्विहा मणुस्सा अणुसज्जित्था, तं जहा—पम्हगंधा, मियगंधा, अममा, तेतली[9], सहा, सणिंचारी ॥

१३६. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति[10] ॥

---

१ दुण्णि (क) ।
२. दुसमा (ता, स) ।
३. स० पा०—दूसमा जाव चत्तारि ।
४. उत्तमट्ठ० (स) ।
५. पडोगारे (ता, व, म) ।
६ जी० ३, जं० २ ।
७ जी० ३, जं० २ ।
८. जी० ३; जं० २ ।
९. तेयतली (व) ।
१०. भ० १।५१ ।

अट्ठमो उद्देसो

पुढवी-आदिसु गेहादिपुच्छा-पद

१३७ कति ण भते ! पुढवीओ पण्णत्ताओ ?
गोयमा ! अट्ठ पुढवीओ पण्णत्ताओ, त जहा—रयणप्पभा जाव[1] ईसीपब्भारा ।।

१३८ अत्थि ण भते ! इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए अहे गेहा इ वा ? गेहावणा इ वा ?
गोयमा ! णो इणट्ठे समट्ठे ।।

१३९ अत्थि ण भते ! इमीसे रयणप्पभाए अहे गामा इ वा ? जाव[2] सण्णिवेसा इ वा ?
णो इणट्ठे समट्ठे ।।

१४० अत्थि ण भते ! इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए अहे ओराला बलाहया ससेयति ? संमुच्छति ? वास वासति ?
हता अत्थि । तिण्णि वि पकरेति—देवो वि पकरेति, असुरो वि पकरेति, नागो वि पकरेति[3] ।।

१४१ अत्थि ण भंते ! इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए बादरे थणियसद्दे ?
हता अत्थि । तिण्णि वि पकरेति[4] ।।

१४२. अत्थि ण भते । इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए अहे बादरे अगणिकाए ?
गोयमा ! णो इणट्ठे समट्ठे, नन्नत्थ विग्गहगतिसमावन्नएण ।।

१४३ अत्थि ण भते ! इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए अहे चदिम[5]-•सूरिय-गहगण-नक्खत्त॰ ताराख्वा ?
णो इणट्ठे समट्ठे ।।

१४४ अत्थि ण भते ! इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए अहे चदाभा ति वा ? सूराभा ति वा ?
णो इणट्ठे समट्ठे ।
एव दोच्चाए पुढवीए भाणियव्व, एव तच्चाए वि भाणियव्व, नवर—देवो वि पकरेति, असुरो वि पकरेति, नो नागो पकरेति । चउत्थीए वि एव, नवर—देवो एक्को पकरेति, नो असुरो, नो नागो । एव हेट्ठिल्लासु सव्वासु देवो[6] पकरेति ।

---

१ ठा० ८।१०८ ।
२ भ० १।४९ ।
३. द्रष्टव्यम्—भ० ६।७९ ।
४ द्रष्टव्यम्—भ० ६।८१ ।
५ स० पा०—चदिम जाव ताराख्वा ।
६ देवो एक्को (अ, क, व, म, स) ।

१४५. अत्थि णं भंते ! सोहम्मीसाणाणं कप्पाणं अहे गेहा इ वा ? गेहावणा इ वा ?
णो इणट्ठे समट्ठे ॥

१४६. अत्थि णं भंते ! ओराला बलाहया[1] ?
हंता अत्थि ।
देवो पकरेति, असुरो वि पकरेति, नो नाओ ।
एवं थणियसद्दे वि ॥

१४७. अत्थि णं भंते ! बादरे पुढवीकाए ? बादरे अगणिकाए ?
णो इणट्ठे समट्ठे, नन्नत्थ विग्गहगतिसमावन्नएणं ॥

१४८. अत्थि णं भंते ! चंदिम-सूरिय-गहगण-नक्खत्त-तारारूवा ?
णो इणट्ठे समट्ठे ॥

१४९. अत्थि णं भंते ! गामा इ वा ? जाव[2] सण्णिवेसा इ वा ?
णो इणट्ठे समट्ठे ॥

१५०. अत्थि णं भंते ! चंदाभा ति वा ? सूराभा ति वा ?
गोयमा ! णो इणट्ठे समट्ठे ।
एवं सणंकुमार-माहिंदेसु, नवरं—देवो एगो पकरेति । एवं बंभलोए वि । एवं बंभलोगस्स[3] उवरिं सव्वेहिं देवो पकरेति । पुच्छियव्वो य बादरे आउकाए, बादरे अगणिकाए, बादरे वणस्सइकाए । अण्णं तं चेव ।

संगहणी-गाहा

तमुकाए कप्पपणए, अगणी पुढवी य अगणि-पुढवीसु ।
आऊ तेऊ वणस्सई, कप्पुवरिमकण्हराईसु ॥१॥

आउयबंध-पदं

१५१. कतिविहे णं भंते ! आउयबंधे पण्णत्ते ?
गोयमा ! छव्विहे आउयबंधे पण्णत्ते, तं जहा—जातिनामनिहत्ताउए, गतिनामनिहत्ताउए, ठितिनामनिहत्ताउए, ओगाहणानामनिहत्ताउए, पएसनामनिहत्ताउए, अणुभागनामनिहत्ताउए । दंडओ जाव[4] वेमाणियाणं ॥

१५२. जीवा णं भंते ! किं जातिनामनिहत्ता ? गतिनामनिहत्ता[5] ? •ठितिनामनिहत्ता ? ओगाहणानामनिहत्ता ? पएसनामनिहत्ता ?० अणुभागनामनिहत्ता ?
गोयमा ! जातिनामनिहत्ता वि जाव अणुभागनामनिहत्ता वि । दंडओ जाव[6] वेमाणियाणं ॥

---

१. पू०—भ० ६।७८ ।
२. भ० १।४९ ।
३. बम्ह० (क, ब) ।
४. पू० प० २ ।
५. सं० पा०—गतिनामनिहत्ता जाव अणुभाग० ।
६. पू० प० २ ।

१५३. जीवा ण भते ! किं जातिनामनिहत्ताउया ? जाव[1] अणुभागनामनिहत्ताउया ? गोयमा ! जातिनामनिहत्ताउया वि जाव अणुभागनामनिहत्ताउया वि । दडओ जाव[2] वेमाणियाण ॥

१५४. एव एए दुवालस दडगा भाणियव्वा—
जीवा ण भते ! कि १ जातिनामनिहत्ता ? २ जातिनामनिहत्ताउया ?
जीवा ण भते ! किं ३ जातिनामनिउत्ता ? ४ जातिनामनिउत्ताउया ?
जीवा ण भते ! किं ५ जातिगोयनिहत्ता ? ६ जातिगोयनिहत्ताउया ?
जीवा ण भते ! कि ७ जातिगोयनिउत्ता ? ८ जातिगोयनिउत्ताउया ?
जीवा ण भते ! कि ९ जातिनामगोयनिहत्ता ? १०. जातिनामगोयनिहाउत्तया ?
जीवा ण भते ! कि ११ जातिनामगोयनिउत्ता ?
१२ जातिनामगोयनिउत्ताउया ?
जाव[3] ७२ अणुभागनामगोयनिउत्ताउया ?

---

१ भ० ६।१५१ । २ पू० प० २ ।

३. एतत् पद त्रयोदशभगात् द्वासप्ततितमपर्यन्ताना भगाना सग्राहकमस्ति—

जीवा ण भते ! किं १३ गतिनामनिहत्ता ? १४ गतिनामनिहत्ताउया ?
जीवा णं भते ! किं १५ गतिनामनिउत्ता ? १६ गतिनामनिउत्ताउया ?
जीवा ण भते ! किं १७. गतिगोयनिहत्ता ? १८ गतिगोयनिहत्ताउया ?
जीवा ण भते ! किं १९ गतिगोयनिउत्ता ? २० गतिगोयनिउत्ताउया ?
जीवा ण भते ! किं २१ गतिनामगोयनिहत्ता ? २२ गतिनामगोयनिहत्ताउया ?
जीवा ण भते ! किं २३ गतिनामगोयनिउत्ता ? २४ गतिनामगोयनिउत्ताउया ?
जीवा ण भते ! किं २५ ठितिनामनिहत्ता ? २६ ठितिनामनिहत्ताउया ?
जीवा ण भते ! किं २७ ठितिनामनिउत्ता ? २८. ठितिनामनिउत्ताउया ?
जीवा ण भते ! किं २९ ठितिगोयनिहत्ता ? ३० ठितिगोयनिहत्ताउया ?
जीवा ण भते ! किं ३१. ठितिगोयनिउत्ता ? ३२ ठितिगोयनिउत्ताउया ?
जीवा ण भते ! किं ३३ ठितिनामगोयनिहत्ता ? ३४ ठितिनामगोयनिहत्ताउया ?
जीवा ण भते ! किं ३५ ठितिनामगोयनिउत्ता ? ३६ ठितिनामगोयनिउत्ताउया ?
जीवा ण भते ! किं ३७ ओगाहणानामनिहत्ता ? ३८ ओगाहणानामनिहत्ताउया ?
जीवा ण भते ! किं ३९ ओगाहणानामनिउत्ता ? ४० ओगाहणानामनिउत्ताउया ?
जीवा ण भते ! कि ४१ ओगाहणागोयनिहत्ता ? ४२ ओगाहणागोयनिहत्ताउया ?
जीवा ण भते ! किं ४३ ओगाहणागोयनिउत्ता? ४४ ओगाहणागोयनिउत्ताउया ?
जीवा ण भते ! किं ४५ ओगाहणानामगोयनिहत्ता ? ४६ ओगाहणानामगोयनिहत्ताउया ?
जीवा ण भते ! किं ४७ ओगाहणानामगोयनिउत्ता ? ४८ ओगाहणानामगोयनिउत्ताउया ?
जीवा ण भते ! किं ४९. पएसनामनिहत्ता ? ५० पएसनामनिहत्ताउया ?

गोयमा ! जातिनामगोयनिउत्ताउया वि जाव अणुभागनामगोयनिउत्ताउया वि । दंडओ जाव[1] वेमाणियाणं ॥

लवणादिसमुद्द-पदं

१५५. लवणे णं भंते ! समुद्दे किं उस्सिओदए[2] ? पत्थडोदए ? खुभियजले ? अखुभियजले ?

गोयमा ! लवणे णं समुद्दे उस्सिओदए, नो पत्थडोदए, खुभियजले, नो अखुभियजले ॥

१५६. [3]•जहा णं भंते ! लवणसमुद्दे उस्सिओदए, नो पत्थडोदए; खुभियजले, नो अखुभियजले, तहा णं बाहिरगा समुद्दा किं उस्सिओदगा ? पत्थडोदगा ? खुभियजला ? अखुभियजला ?

गोयमा ! बाहिरगा समुद्दा नो उस्सिओदगा, पत्थडोदगा, नो खुभियजला, अखुभियजला पुण्णा पुण्णप्पमाणा वोलट्टमाणा वोसट्टमाणा समभरघडत्ताए चिट्ठंति ॥

१५७. अत्थि णं भंते ! लवणसमुद्दे बहवे ओराला बलाहया संसेयंति ? संमुच्छंति ? वासं वासंति ?

हंता अत्थि ॥

१५८. जहा णं भंते ! लवणसमुद्दे बहवे ओराला बलाहया संसेयंति, संमुच्छंति, वासं वासंति, तहा णं बाहिरगेसु वि समुद्देसु बहवे ओराला बलाहया संसेयंति ? संमुच्छंति ? वासं वासंति ?

जीवा णं भंते ! किं ५१ पएसनामनिउत्ता ? ५२ पएसनामनिउत्ताउया ?
जीवा णं भंते ! किं ५३ पएसगोयनिहत्ता ? ५४ पएसगोयनिहत्ताउया ?
जीवा णं भंते ! किं ५५ पएसगोयनिउत्ता ? ५६ पएसगोयनिउत्ताउया ?
जीवा णं भंते ! किं ५७. पएसनामगोयनिहत्ता ? ५८ पएसनामगोयनिहत्ताउया ?
जीवा णं भंते ! किं ५९ पएसनामगोयनिउत्ता ? ६० पएसनामगोयनिउत्ताउया ?
जीवा णं भंते ! किं ६१. अणुभागनामनिहत्ता ? ६२ अणुभागनामनिहत्ताउया ?
जीवा णं भंते ! किं ६३. अणुभागनामनिउत्ता ? ६४. अणुभागनामनिउत्ताउया ?
जीवा णं भंते ! किं ६५ अणुभागगोयनिहत्ता ? ६६ अणुभागगोयनिहत्ताउया ?
जीवा णं भंते ! किं ६७. अणुभागगोयनिउत्ता ? ६८. अणुभागगोयनिउत्ताउया ?
जीवा णं भंते ! किं ६९ अणुभागनामगोयनिहत्ता ? ७०. अणुभागनामगोयनिहत्ताउया ?
जीवा णं भंते ! किं ७१ अणुभागनामगोयनिउत्ता ? ७२. अणुभागनामगोयनिउत्ताउया ?

१. पू० प० २ ।

२. उसिओदए (क, म, स) ।

३. सं० पा०—एत्तो आढत्तं जहा जीवाभिगमे जाव से ।

नो इणट्ठे समट्ठे ॥

१५९. से केणट्ठेण भते ! एव वुच्चइ—वाहिरगा ण समुद्दा पुण्णा जाव[1] समभरघडत्ताए चिट्ठति ?

गोयमा ! बाहिरगेसु ण समुद्देसु बहवे उदगजोणिया जीवा य पोग्गला य उदगत्ताए वक्कमति, विउक्कमति, चयति, उवचयति° । से तेणट्ठेण गोयमा ! एव वुच्चइ—बाहिरया ण समुद्दा[2] पुण्णा पुण्णप्पमाणा वोलट्टमाणा वोसट्टमाणा समभरघडत्ताए चिट्ठति, सठाणओ एगविहिविहाणा, वित्थारओ अणेगविहिविहाणा, दुगुणा, दुगुणप्पमाणा[3] जाव[4] अस्सि तिरियलोए असखेज्जा दीव-समुद्दा सयभूरमणपज्जवसाणा पण्णत्ता समणाउसो !

१६०. दीव-समुद्दा ण भते ! केवतिया नामधेज्जेहि पण्णत्ता ।

गोयमा ! जावतिया लोए सुभा नामा, सुभा रूवा, सुभा गधा, सुभा रसा, सुभा फासा, एवतिया ण दीव-समुद्दा नामधेज्जेहि पण्णत्ता । एव नेयव्वा सुभा नामा, उद्धारो, परिणामो, सव्वजीवाण (उप्पाओ[5] ?) ॥

१६१ सेव भते ! सेव भते ! त्ति[6] ॥

नवमो उद्देसो

कम्मप्पगडिबंध-पदं

१६२ जीवे ण भते ! नाणावरणिज्ज कम्म बधमाणे कति कम्मप्पगडीओ बधति ?

गोयमा ! सत्तविहबधए वा, अट्ठविहबधए वा, छव्विहबधए वा । बधुद्देसो पण्णवणाए नेयव्वो[7] ॥

---

१ भ० ६।१५६ ।

२ दीव-समुद्दा (अ, क, ता, ब, म, स), जीवाभिगमे तृतीयप्रतिपत्तौ 'समुद्दा इत्येवपदमस्ति, तदेवाऽत्र प्रासगिकम् ।

३ °माणाओ (अ, क, ता, ब, म, स) ।

४ अस्य पूरकपाठ जीवाभिगमस्य तृतीयप्रतिपत्तौ लभ्यते । स चैवमस्ति—'पडुप्पाएमाणा-पडुप्पाएमाणा पवित्थरमाणा-पवित्थरमाणा ओभासमाणवीइया बहुउप्पलपउमकुमुयणलिणसुभगसोगंधियपोडरीयमहापोडरीयसयपत्तसहस्सपत्तफुल्लकेसरोवचिया पत्तेय-पत्तेय पउमवरवेइयापरिक्खित्ता पत्तेय-पत्तेय वणसडपरिक्खित्ता ।

५ सव्वजीवाण ति—सर्वे जीवाना द्वीप-समुद्रेषूत्पादो नेतव्य—इति सूचित वृत्तिकृता । तदनुसृत्यात्र 'सव्वजीवाण उप्पाओ' इतिपाठो युज्यते ।

६ भ० १।५१ ।

७ प० २४ ।

महिड्ढीयदेव-विकुव्वणा-पद

१६३. देवे ण भते ! महिड्ढीए जाव[1] महाणुभागे बाहिरए पोग्गले अपरियाइत्ता[2] पभू एगवण्णं एगरूव विउव्वित्तए ?
गोयमा ! नो इणट्ठे समट्ठे ॥

१६४ देवे ण भते । बाहिरए पोग्गले परियाइत्ता पभू एगवण्ण एगरूव विउव्वित्तए ?
हता पभू ॥

१६५ से ण भते ! कि इहगए पोग्गले परियाइत्ता विउव्वति ? तत्थगए पोग्गले परियाइत्ता विउव्वति ? अण्णत्थगए पोग्गले परियाइत्ता विउव्वति ?
गोयमा ! नो इहगए पोग्गले परियाइत्ता विउव्वति, तत्थगए पोग्गले परियाइत्ता विउव्वति, नो अण्णत्थगए पोग्गले परियाइत्ता विउव्वति ।
एव एएण गमेण जाव[3] १ एगवण्णं एगरूव २. एगवण्ण अणेगरूव ३ अणेगवण्ण एगरूव ४ अणेगवण्ण अणेगरूव—चउभगो ॥

१६६ देवे ण भते ! महिड्ढीए जाव[4] महाणुभागे बाहिरए पोग्गले अपरियाइत्ता पभू कालग[5] पोग्गल नीलगपोग्गलत्ताए[6] परिणामेत्तए ? नीलग पोग्गल वा कालगपोग्गलत्ताए परिणामेत्तए ?
गोयमा ! नो इणट्ठे समट्ठे । परियाइत्ता पभू ॥

१६७ से ण भते ! कि इहगए पोग्गले[7] •परियाइत्ता परिणामेति ? तत्थगए पोग्गले परियाइत्ता परिणामेति ? अण्णत्थगए पोग्गले परियाइत्ता परिणामेति ?
गोयमा ! नो इहगए पोग्गले परियाइत्ता परिणामेति, तत्थगए पोग्गले परियाइत्ता परिणामेति, नो अण्णत्थगए पोग्गले परियाइत्ता परिणामेति ।
एव एएण गमेण जाव[8] १ एगवण्ण एगरूव २ एगवण्णं अणेगरूवं ३. अणेगवण्ण एगरूव ४ अणेगवण्ण अणेगरूव—चउभगो° ।
एव कालगपोग्गल लोहियपोग्गलत्ताए । एव कालएण जाव सुक्किल । एवं नीलएण जाव सुक्किल । एव 'लोहिएण जाव सुक्किल'[9] । एव हालिद्दएणं जाव सुक्किल । एवं[10] एयाए परिवाडीए गध-रस फासा[11] ।

---

१ भ० ३।४।
२. अपरियादिइत्ता (अ, ता, व, म) ।
३. भ० ६।१६३, १६४ ।
४ भ० ३।४ ।
५. कालत (क) ।
६. णीलपोग्ग० (अ, क, ता) ।
७. स० पा०—त चेव नवर परिणामेति त्ति भाणियव्व ।
८. भ० ६।१६३, १६४ ।
९ लोहियपोग्गल जाव सुक्किलत्ताए (अ, स), लोहियपोग्गल जाव सुक्किल (म) ।
१०. त एव (अ, क, ता, व, म) ।
११ कक्खडफासपोग्गल मउय-फासपोग्गलत्ताए, एव दो दो गरुयलहुय-सीयउसिण-णिद्धलुक्ख-वण्णाई सव्वत्थ परिणामेइ । आलावगा दो दो पोग्गले अपरियाइत्ता, परियाइत्ता(अ,व,म,स) ।

अविसुद्धलेसादि देवाणं जाणणा-पासणा-पदं

१६८ १ अविसुद्धलेसे णं भंते ! देवे असमोहएणं[1] अप्पाणेणं अविसुद्धलेसं देवं, देविं, अण्णयरं[2] जाणइ-पासइ ?
णो तिणट्ठे समट्ठे[3]।
एवं—२ अविसुद्धलेसे देवे असमोहएणं अप्पाणेणं विसुद्धलेसं देवं ३ अविसुद्धलेसे देवे समोहएणं अप्पाणेणं अविसुद्धलेसं देवं ४ अविसुद्धलेसे देवे समोहएणं अप्पाणेणं विसुद्धलेसं देवं ५ अविसुद्धलेसे देवे समोहयासमोहएणं अप्पाणेणं अविसुद्धलेसं देवं ६ अविसुद्धलेसे देवे समोहयासमोहएणं अप्पाणेणं विसुद्धलेसं देवं ७ विसुद्धलेसे देवे असमोहएणं अप्पाणेणं अविसुद्धलेसं देवं ८ विसुद्धलेसे देवे असमोहएणं अप्पाणेणं विसुद्धलेसं देवं ॥

१६९ ९ विसुद्धलेसे णं भंते ! देवे समोहएणं अप्पाणेणं अविसुद्धलेसं देवं जाणइ-पासइ ?
हंता जाणइ-पासइ ।
एवं—१०. विसुद्धलेसे देवे समोहएणं अप्पाणेणं विसुद्धलेसं देवं ११. विसुद्धलेसे देवे समोहयासमोहएणं अप्पाणेणं अविसुद्धलेसं देवं १२. विसुद्धलेसे देवे समोहयासमोहएणं अप्पाणेणं विसुद्धलेसं देवं ॥

१७० सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति[4] ॥

---

१ असमो० (अ, ता, म, स) ।

२. अणगारं (क, व) ।

३. समट्ठे एवं हेट्ठिल्लएहिं अट्ठहिं न जाणइ न पासइ उवरिल्लएहिं चउहिं जाणइ-पासइ (क, ता, वृ), स्वीकृतपाठस्य वृत्तिकृता वाचनान्तरत्वेन उल्लेखः कृतोस्ति—वाचनान्तरे तु सर्वमेवेदं साक्षाद् दृश्यते (वृ) । 'अ, व, म, स' संकेतितादर्शेषु द्वयोर्वाचनयोमिश्रणं दृश्यते । तत्र द्वादशभंगानन्तरं 'एवं हेट्ठिल्लएहिं' इत्यादि पाठोस्ति ।

४ भ० १।५१ ।

दसमो उद्देसो

सुह-दुह-उवदंसण-पदं

१७१ अण्णउत्थिया ण भते ! एवमाइक्खति जाव[1] परूवेति जावतिया रायगिहे नयरे जीवा, एवइयाण जीवाण नो चक्किया केइ सुह वा दुह वा जाव कोलट्ठिगमायमवि, निप्फावमायमवि, कलमायमवि, मासमायमवि, मुग्गमायमवि, जूयामायमवि[2], लिक्खामायमवि अभिनिवट्टेत्ता[3] उवदसेत्तए ॥

१७२ से कहमेय भते ! एव ?
गोयमा ! ज ण ते अण्णउत्थिया एवमाइक्खति जाव[4] मिच्छ ते एवमाहसु, अह पुण गोयमा ! एवमाइक्खामि जाव[5] परूवेमि सव्वलोए वि य ण सव्वजीवाण नो चक्किया केइ सुह वा[6] •दुह वा जाव कोलट्ठिगमायमवि, निप्फावमायमवि, कलमायमवि, मासमायमवि, मुग्गमायमवि, जूयामायमवि, लिक्खामायमवि अभिनिवट्टेत्ता° उवदसेत्तए ॥

१७३ से केणट्ठण ? गोयमा ! अयण्ण जबुद्दीवे दीवे जाव[7] विसेसाहिए परिक्खेवेण पण्णत्ते । देवे ण महिड्ढीए जाव[8] महाणुभागे एग मह सविलेवण गधसमुग्गग गहाय त अवद्दालेति, अवद्दालेत्ता जाव इणामेव कट्टु केवलकप्प जबुद्दीव दीव तिहिं अच्छरानिवाएहि तिसत्तखुत्तो अणुपरियट्टित्ता ण हव्वमागच्छेज्जा । से नूण गोयमा ! से केवलकप्पे जबुद्दीवे दीवे तेहिं[9] घाणपोग्गलेहि फुडे ?
हता फुडे ।
चक्किया ण गोयमा ! केइ[10] तेसि घाणपोग्गलाण कोलट्ठिमायमवि[11], •निप्फावमायमवि, कलमायमवि, मासमायमवि, मुग्गमायमवि, जूयामायमवि, लिक्खामायमवि अभिनिवट्टेत्ता° उवदसेत्तए ?
नो तिणट्ठे समट्ठे । से तेणट्ठेण गोयमा ! एव वुच्चइ—नो चक्किया केइ सुह वा जाव उवदसेत्तए ।

जीव-चेयणा-पदं

१७४. जीवे ण भते ! जीवे ? जीवे जीवे ?
गोयमा ! जीवे ताव नियमा जीवे, जीवे वि नियमा जीवे ॥

---

१ भ० १।४२० ।
२ जूय० (क, व); ऊया० (ता) ।
३ ° त्तेत्ता (ता) ।
४ भ० १।४२१ ।
५ भ० १।४२१ ।
६ स० पा०—त चेव जाव उवदसेत्तए ।
७. भ० ६।७५ ।
८ भ० ३।४ ।
९. तिहिं (अ, स) ।
१० केयति (स) ।
११ स० पा०—कोलट्ठिमायमवि जाव उवदसेत्तए

१७५ जीवे णं भंते ! नेरइए ? नेरइए जीवे ?
गोयमा ! नेरइए ताव नियमा जीवे, जीवे पुण सिय नेरइए, सिय अनेरइए ॥

१७६ जीवे ण भते ! असुरकुमारे ? असुरकुमारे जीवे ?
गोयमा ! असुरकुमारे ताव नियमा जीवे, जीवे पुण सिय असुरकुमारे, सिय नोअसुरकुमारे ॥

१७७ एव दडओ भाणियव्वो[1] जाव[2] वेमाणियाण ॥

१७८ जीवति भते ! जीवे ? जीवे जीवति ?
गोयमा ! जीवति ताव नियमा जीवे, जीवे पुण सिय जीवति, सिय नो जीवति ॥

१७९ जीवति भते ! नेरइए ? नेरइए जीवति ?
गोयमा ! नेरइए ताव नियमा जीवति, जीवति पुण सिय नेरइए, सिय अनेरइए ॥

१८० एव दडओ नेयव्वो जाव[3] वेमाणियाण ॥

१८१ भवसिद्धिए ण भते ! नेरइए ? नेरइए भवसिद्धिए ?
गोयमा ! भवसिद्धिए सिय नेरइए, सिय अनेरइए । नेरइए वि य सिय भवसिद्धीए, सिय अभवसिद्धीए ॥

१८२ एव दडओ जाव[4] वेमाणियाण ॥

वेदणा-पदं

१८३ अण्णउत्थिया ण भते ! एवमाइक्खति जाव[5] परूवेति—एव खलु सव्वे पाणा भूया जीवा सत्ता एगतदुक्ख वेदण वेदेति ॥

१८४ से कहमेय भते ! एव ?
गोयमा ! ज ण ते अण्णउत्थिया जाव[6] मिच्छ ते एवमाहसु, अह पुण गोयमा ! एवमाइक्खामि जाव[7] परूवेमि—अत्थेगइया पाणा भूया जीवा सत्ता एगतदुक्ख वेदण वेदेति, आहच्च साय । अत्थेगइया पाणा भूया जीवा सत्ता एगतसाय वेदण वेदेति, आहच्च अस्साय[8] । अत्थेगइया पाणा भूया जीवा सत्ता वेमायाए वेदण वेदेति—आहच्च सायमसाय ॥

१८५ से केणट्ठेण ?
गोयमा ! नेरइया एगतदुक्ख वेदण वेदेति, आहच्च साय । भवणवइ-वाणमतर-जोइस-वेमाणिया एगतसाय वेदण वेदेति, आहच्च अस्साय । पुढविक्काइया जाव[9] मणुस्सा वेमायाए वेदण वेदेति—आहच्च सायमसाय । से तेणट्ठेण ॥

---

१ नेतव्वो (क, ता, ब) ।
२ पू० प० २ ।
३ पू० प० २ ।
४ पू० प० २ ।
५. भ० १।४२० ।
६ भ० १।४२१ ।
७ भ० १।४२१ ।
८ असाय वेदण वेदेंति (अ, ता, म, स) ।
६. पू० प० २ ।

नेरइयादीणं आहार-पदं

१८६ नेरइया ण भंते ! जे पोग्गले अत्तमायाए आहारेति त किं आयसरीरखेत्तोगाढे पोग्गले अत्तमायाए आहारेति ? अणतरखेत्तोगाढे पोग्गले अत्तमायाए आहारेति ? परपरखेत्तोगाढे पोग्गले अत्तमायाए आहारेति ?
गोयमा ! आयसरीरखेत्तोगाढे पोग्गले अत्तमायाए आहारेति, नो अणतरखेत्तोगाढे पोग्गले अत्तमायाए आहारेति, नो परपरखेत्तोगाढे पोग्गले अत्तमायाए आहारेति ।
जहा नेरइया तहा जाव[1] वेमाणियाण दडओ ।।

केवलिस्सनाण-पदं

१८७ केवली ण भते ! आयाणेहिं जाणइ-पासइ ?
गोयमा ! नो इणट्ठे समट्ठे ।।

१८८. से केणट्ठेणं ?
गोयमा ! केवली णं पुरत्थिमे ण मिय पि जाणइ, अमिय पि जाणइ जाव[2] निव्वुडे दसणे केवलिस्स । से तेणट्ठेण ।

संगहणी-गाहा

जीवाण य सुह दुक्ख, जीवे जीवति तहेव भविया य ।
एगतदुक्ख वेयण-अत्तमायाय केवली ।।१।।

१८९ सेव भते ! सेव भते ! त्ति[3] ।।

---

१. पू० प० २ ।
२. भ० ५।६७ ।
३ भ० १।५१ ।

सत्तमं सतं

पढमो उद्देसो

संगहणी-गाहा

१. आहार २. विरति ३. थावर, ४. जीवा ५ पक्खी य ६. आउ ७ अणगारे।
८ छउमत्थ ९ असवुड, १०. अण्णउत्थि दस सत्तमम्मि सए ॥ १ ॥

अणाहारग-पदं

१. तेण कालेण तेण समएणं जाव[1] एव वदासी—जीवे ण भते ! क[2] समयमणाहारए भवइ ?
गोयमा ! पढमे समए सिय आहारए सिय अणाहारए, बितिए समए सिय आहारए सिय अणाहारए, ततिए समए सिय आहारए सिय अणाहारए, चउत्थे समए नियमा आहारए। एव दंडओ—जीवा य एगिंदिया य चउत्थे समए[3], सेसा ततिए समए[4] ॥

सव्वप्पाहारग-पदं

२ जीवे ण भते ! क समय सव्वप्पाहारए भवति ?
गोयमा ! पढमसमयोववन्नए वा चरिमसमयभवत्थे[5] वा, एत्थ ण जीवे सव्वप्पाहारए भवति। दडओ भाणियव्वो जाव[6] वेमाणियाण ॥

---

१. भ० १।४-१०।
२. किं (अ)।
३ 'नियमा आहारए' इति शेषम्।
४ 'नियमा आहारए' इति शेषम्।
५ °समए° (स)।
६. पू० प० २।

लोगसंठाण-पदं

३ किंसंठिए णं भंते ! लोए पण्णत्ते ?
गोयमा ! सुपइट्ठगसंठिए लोए पण्णत्ते—हेट्ठा विच्छिण्णे[1], •मज्झे संखित्ते, उप्पिं विसाले ; अहे पलियंकसंठिए, मज्झे वरवइरविग्गहिए°, उप्पिं उद्धमुइंगाकारसंठिए ।
तंसि[2] च णं सासयंसि लोगंसि हेट्ठा विच्छिण्णंसि जाव उप्पिं उद्धमुइंगाकारसंठियंसि उप्पण्णनाण-दंसणधरे अरहा जिणे केवली जीवे वि जाणइ-पासइ, अजीवे वि जाणइ-पासइ, तओ पच्छा सिज्झइ[3] •बुज्झइ मुच्चइ परिनिव्वाइ सव्वदुक्खाणं° अंतं करेइ ॥

समणोवासगस्स किरिया-पदं

४. समणोवासगस्स णं भंते ! सामाइयकडस्स समणोवस्सए[4] अच्छमाणस्स[5] तस्स णं भंते ! किं रियावहिया[6] किरिया कज्जइ ? संपराइया किरिया कज्जइ ?
गोयमा ! नो रियावहिया किरिया कज्जइ, संपराइया किरिया कज्जइ ॥
५ से केणट्ठेणं[7] •भंते ! एवं वुच्चइ—नो रियावहिया किरिया कज्जइ ?° संपराइया किरिया कज्जइ ?
गोयमा ! समणोवासयस्स णं सामाइयकडस्स समणोवस्सए अच्छमाणस्स आया अहिगरणी भवइ, आयाहिगरणवत्तियं च णं तस्स नो रियावहिया किरिया कज्जइ, संपराइया किरिया कज्जइ । से तेणट्ठेणं ॥

समणोवासगस्स अणाउट्टिहिंसा-पदं

६ समणोवासगस्स णं भंते ! पुव्वामेव तसपाणसमारंभे पच्चक्खाए भवइ, पुढविसमारंभे अपच्चक्खाए भवइ । से य पुढविं खणमाणे अण्णयरं तसं पाणं विहिंसेज्जा, से णं भंते ! तं वयं अतिचरति ?
नो इणट्ठे समट्ठे, नो खलु से तस्स अतिवायाए आउट्टति ॥
७. समणोवासगस्स णं भंते ! पुव्वामेव वणप्फइसमारंभे पच्चक्खाए । से य पुढविं खणमाणे अण्णयरस्स रुक्खस्स मूलं छिंदेज्जा, से णं भंते ! तं वयं अतिचरति ?
नो इणट्ठे समट्ठे, नो खलु से तस्स अतिवायाए आउट्टति ॥

---

१. सं० पा०—विच्छिण्णे जाव उप्पिं ।
२ तंसिं (अ); तंसि तेसिं (ता); तस्सिं (म) ।
३ सं० पा०—सिज्झइ जाव अंतं ।
४. समणोवासए (क, स) ।
५ अत्थ° (अ, व, म, स) ।
६. इरिया° (क, ता) ।
७ सं० पा०—केणट्ठेणं जाव संपराइया ।

समणपडिलाभेण लाभ-पदं

८ समणोवासए णं भंते ! तहारूवं समणं वा माहणं वा फासु-एसणिज्जेणं असण-पाण-'खाइम-साइमेणं'[1] पडिलाभेमाणे किं लब्भइ ?
गोयमा ! समणोवासए णं तहारूवं समणं वा[2] •माहणं वा फासु-एसणिज्जेणं असण-पाण-खाइम-साइमेणं° पडिलाभेमाणे तहारूवस्स समणस्स वा माहणस्स वा समाहिं उप्पाएति, समाहिकारए णं तामेव[3] समाहिं पडिलभइ ।।

९ समणोवासए णं भंते ! तहारूवं समणं वा[4] •माहणं वा फासु-एसणिज्जेणं असण-पाण-खाइम-साइमेणं° पडिलाभेमाणे किं चयति ?
गोयमा ! जीवियं चयति, दुच्चयं[5] चयति, दुक्करं करेति, दुल्लहं लहइ, बोहिं बुज्झइ, तओ पच्छा सिज्झति जाव[6] अंतं करेति ।।

अकम्मस्स गति-पदं

१०. अत्थि णं भंते ! अकम्मस्स गती पण्णायति ?
हंता अत्थि ।।

११. कहण्णं भंते ! अकम्मस्स गती पण्णायति ?
गोयमा ! निस्संगयाए, निरंगणयाए, गतिपरिणामेणं, बंधणछेदणयाए[7], निरिंधणयाए, पुव्वप्पओगेणं अकम्मस्स गती पण्णायति ।।

१२ कहण्णं भंते ! निस्संगयाए, निरंगणयाए, गतिपरिणामेणं अकम्मस्स गती पण्णायति ?
से जहानामए केइ पुरिसे सुक्कं तुंबं निच्छिड्डं निरुवहयं आणुपुव्वीए परिकम्मेमाणे-परिकम्मेमाणे दब्भेहि य कुसेहि य वेढेइ, वेढेत्ता अट्ठहिं मट्टियालेवेहिं लिंपइ, लिंपित्ता उण्हे दलयति, भूतिं-भूतिं सुक्कं समाणं अत्थाहमतारमपोरिसियंसि[8] उदगंसि पक्खिवेज्जा, से नूणं गोयमा ! से तुंबे तेसिं अट्ठण्हं मट्टियालेवाणं गुरुयत्ताए भारियत्ताए गुरुसभारियत्ताए सलिलतलमतिवइत्ता अहे धरणितलपइट्ठाणे भवइ ?
हंता भवइ ।
अहे णं से तुंबे तेसिं अट्ठण्हं मट्टियालेवाणं परिक्खएणं धरणितलमतिवइत्ता उप्पिं सलिलतलपइट्ठाणे भवइ ?

---

१. खातिम-सातिमेण (अ, ब, स) ।
२. सं० पा०—समणं वा जाव पडिलाभे° ।
३. तमेव (क्व०) ।
४ सं० पा०—समणं वा जाव पडिलाभे° ।
५ दुचयं (स) ।
६ भ० ७।३ ।
७ बंधवोच्छेदणताए (ता) ।
८. इह मकारौ प्राकृतप्रभवौ (वृ) ।

हंता भवइ।

एवं खलु गोयमा! निस्सगयाए, निरंगणयाए, गतिपरिणामेणं अकम्मस्स गती पण्णायति॥

१३ कहण्ण भंते! बंधणछेदणयाए अकम्मस्स गती पण्णायति[1]?

गोयमा! से जहानामए कलसिंबलिया इ वा, मुग्गसिंबलिया इ वा, माससिंबलिया इ वा, सिंबलिसिंबलिया[2] इ वा, एरंडमिंजिया इ वा उण्हे दिन्ना[3] सुक्का समाणी फुडित्ता णं एगंतमंतं गच्छइ। एवं खलु गोयमा! बंधणछेदणयाए अकम्मस्स गती पण्णायति॥

१४ कहण्ण भंते! निरिंधणयाए अकम्मस्स गती पण्णायति?

गोयमा से जहानामए धूमस्स इंधणविप्पमुक्कस्स उड्ढं वीससाए निव्वाघाएणं गती पवत्तति। एवं खलु गोयमा! निरिंधणयाए अकम्मस्स गती पण्णायति॥

१५. कहण्ण भंते! पुव्वप्पओगेणं अकम्मस्स गती पण्णायति?

गोयमा! से जहानामए कंडस्स कोदंडविप्पमुक्कस्स लक्खाभिमुही निव्वाघाएणं गती पवत्तइ। एवं खलु गोयमा! पुव्वप्पओगेणं अकम्मस्स गती पण्णायति। एवं खलु गोयमा! निस्सगयाए[4], निरंगणयाए[5], °गतिपरिणामेणं, बंधणछेदणयाए, निरिंधणयाए°, पुव्वप्पओगेणं अकम्मस्स गती पण्णायति॥

दुक्खिस्स दुक्खफासादि-पदं

१६ दुक्खी भंते! दुक्खेणं फुडे? अदुक्खी दुक्खेणं फुडे?

गोयमा! दुक्खी दुक्खेणं फुडे, नो अदुक्खी दुक्खेणं फुडे॥

१७ दुक्खी भंते! नेरइए दुक्खेणं फुडे? अदुक्खी नेरइए दुक्खेणं फुडे?

गोयमा! दुक्खी नेरइए दुक्खेणं फुडे, नो अदुक्खी नेरइए दुक्खेणं फुडे॥

१८. एवं दंडओ जाव[6] वेमाणियाणं॥

१९ एवं पंच दंडगा नेयव्वा—१. दुक्खी दुक्खेणं फुडे २ दुक्खी दुक्खं परियायइ ३. दुक्खी दुक्खं उदीरेइ ४ दुक्खी दुक्खं वेदेति ५. दुक्खी दुक्खं निज्जरेति॥

इरियावहिय-संपराइय-किरिया-पदं

२० अणगारस्स णं भंते! अणाउत्तं गच्छमाणस्स वा, चिट्ठमाणस्स[7] वा, निसीयमाणस्स वा, तुयट्टमाणस्स वा, अणाउत्तं वत्थं पडिग्गहं कंबलं पायपुंछणं गेण्ह-

---

१ पण्णत्ता (अ, क, ता, व, म, स)।

२ सेंबलिसेंबलिया (ता)।

३ दित्ता (म)।

४. नीसंगयाए (अ, क, व, म, स)।

५ सं० पा०—निरंगणयाए जाव पुव्व°।

६ पू० प० २।

७. सर्वेष्वपि पदेषु 'अणाउत्तं' इति पदं गम्यम्।

माणस्स वा, निक्खिवमाणस्स वा तस्स णं भंते ! किं[1] रियावहिया किरिया कज्जइ ? संपराइया किरिया कज्जइ ?

गोयमा ! नो रियावहिया किरिया कज्जइ, सपराइया किरिया कज्जइ ।।

२१ से केणट्ठेण ?

गोयमा ! जस्स ण कोह-माण-माया-लोभा वोच्छिण्णा[2] भवति तस्स ण रियावहिया किरिया कज्जइ[3], जस्स ण कोह-माण-माया-लोभा अवोच्छिण्णा भवति तस्स ण सपराइया किरिया कज्जइ[4]। अहासुत्त रीयमाणस्स रियावहिया किरिया कज्जइ, उस्सुत्त रीयमाणस्स सपराइया किरिया कज्जइ । से ण उस्सुत्तमेव रीयती[5] । से तेणट्ठेणे ।।

सइंगालादिदोसदुट्ठ-पाणभोयण-पदं

२२ अह भते ! सइगालस्स, सधूमस्स, सजोयणादोसदुट्ठस्स पाण-भोयणस्स के अट्ठे पण्णत्ते ?

गोयमा ! जे ण निग्गथे वा निग्गथी वा फासु-एसणिज्ज असण-पाण-खाइम-साइम पडिग्गाहेत्ता मुच्छिए गिद्धे गढिए अज्झोववन्ने आहारमाहारेइ, एस ण गोयमा ! सइगाले पाण-भोयणे ।

जे ण निग्गथे वा निग्गथी वा फासु-एसणिज्ज असण-पाण-खाइम-साइम पडिग्गाहेत्ता महयाअप्पत्तिय कोहकिलाम करेमाणे आहारमाहारेइ, एस ण गोयमा ! सधूमे पाण-भोयणे ।

जे ण निग्गथे वा[6] •निग्गथी वा फासु-एसणिज्ज असण-पाण-खाइम-साइम° पडिग्गाहेत्ता गुणुप्पायणहेउ[7] अण्णदव्वेणं सद्धिं सजोएत्ता आहारमाहारेइ, एस ण गोयमा ! सजोयणादोसदुट्ठे पाण-भोयणे ।

एस ण गोयमा ! सइगालस्स, सधूमस्स, संजोयणादोसदुट्ठस्स पाण-भोयणस्स अट्ठे पण्णत्ते ।।

२३ अह भते ! वीतिगालस्स, वीयधूमस्स, सजोयणादोसविप्पमुक्कस्स पाण-भोयणस्स के अट्ठे पण्णत्ते ?

गोयमा ! जे ण निग्गथे वा[8] •निग्गथी वा फासु-एसणिज्जं असण-पाण खाइम-

---

१. × (क, ता, व) ।

२. विच्छिण्णा (व) ।

३. कज्जइ नो सपराइया किरिया कज्जइ (म) ।

४ कज्जइ नो इरियावहिया किरिया कज्जइ (म, स) ।

५ रियति (अ, क, व, म, स) ।

६. स० पा०—निग्गथे वा जाव पडिग्गाहेत्ता ।

७. गुणप्पयाण° (अ, स), गुणुप्पायणा° (ता)

८ स० पा०—निग्गथे वा जाव पडिग्गाहेत्ता ।

साइमं°पडिग्गाहेत्ता अमुच्छिए[1] •अगिद्धे अगढिए अणज्झोववन्ने आहारमा°-हारेइ, एस णं गोयमा ! वीतिगाले पाण-भोयणे ।

जे ण निग्गथे वा[2] •निग्गथी वा फासु-एसणिज्ज असण पाण खाइम-साइम° पडिग्गाहेत्ता णो महयाअप्पत्तियं[3] •कोहकिलाम करेमाणे आहारमा°हारेइ, एस ण गोयमा ! वीयधूमे पाण-भोयणे ।

जे ण निग्गथे वा[4] •निग्गथी वा फासु-एसणिज्ज असण-पाण-खाइम-साइम° पडिग्गाहेत्ता जहा लद्ध तहा आहारमाहारेइ, एस णं गोयमा ! सजोयणादोस-विप्पमुक्के पाण-भोयणे ।

एस ण गोयमा ! वीतिंगालस्स, वीयधूमस्स, सजोयणादोसविप्पमुक्कस्स पाण-भोयणस्स अट्ठे पण्णत्ते ।।

२४. अह भते ! खेत्तातिक्कतस्स, कालातिक्कतस्स, मग्गातिक्कतस्स, पमाणातिक्कं-तस्स पाण-भोयणस्स के अट्ठे पण्णत्ते ?

गोयमा ! जे ण निग्गथे वा निग्गथी वा फासु-एसणिज्जं असण-पाण-खाइम-साइम अणुग्गए सूरिए पडिग्गाहेत्ता उग्गए सूरिए आहारमाहारेइ, एस णं गोयमा ! खेत्तातिक्कते[5] पाण-भोयणे ।

जे णं निग्गथे वा[6] •निग्गथी वा फासु-एसणिज्ज असण-पाण-खाइम°-साइम पढमाए पोरिसीए पडिग्गाहेत्ता पच्छिम पोरिसि उवाइणावेत्ता[7] आहारमाहारेइ एस ण गोयमा ! कालातिक्कते पाण-भोयणे ।

जे ण निग्गथे वा[8] •निग्गथी वा फासु-एसणिज्जं असण-पाण-खाइम°-साइम पडिग्गाहेत्ता पर अद्धजोयणमेराए वीइक्कमावेत्ता[9] आहारमाहारेइ, एस ण गोयमा ! मग्गातिक्कते पाण-भोयणे ।

जे ण निग्गथे[10] वा निग्गथी वा फासु-एसणिज्ज[11] •असण-पाण-खाइम°साइम पडिग्गाहेत्ता पर बत्तीसाए कुक्कुडिअडगपमाणमेत्ताणं कवलाण आहारमाहारेइ, एस ण गोयमा ! पमाणातिक्कते पाण-भोयणे ।

अट्ठ कुक्कुडिअडगपमाणमेत्ते कवले आहारमाहारेमाणे अप्पाहारे[12], दुवालस कुक्कुडिअडगपमाणमेत्ते कवले आहारमाहारेमाणे अवड्ढोमोयरिए[13], सोलस

---

१ स० पा०—अमुच्छिए जाव आहारेइ ।

२ स० पा०—निग्गथे वा जाव पडिग्गाहेत्ता ।

३. स० पा०—महयाअप्पत्तिय जाव आहारेइ ।

४. स० पा०—निग्गथे वा जाव पडिग्गाहेत्ता ।

५ क्षेत्र—सूर्यसवन्धितापक्षेत्र दिनमित्यर्थ. । तद-तिक्रान्त यत् तत् क्षेत्रातिक्रान्तम् (वृ) ।

६ सं० पा०—निग्गथे वा जाव साइम ।

७ उवायणा° (अ, म) ।

८ स० पा०—निग्गथे वा जाव साइम ।

९ वीइक्कमावइत्ता (स) ।

१० निग्गथो (क, ता, स) ।

११ स० पा०—एसणिज्जं जाव साइम ।

१२ साधुर्भवतीति गम्यम् ।

१३ अवड्ढोमोयरिया (अ, ता) ।

कुक्कुडिअंडगपमाणमेत्ते कवले आहारमाहारेमाणे दुभागप्पत्ते, चउव्वीस कुक्कुडिअंडगपमाण[1]•मेत्ते कवले° आहारमाहारेमाणे ओमोदरिए[2], बत्तीस कुक्कुडिअंडगपमाणमेत्ते कवले आहारमाहारेमाणे पमाणपत्ते, एत्तो एक्केण वि घासेण ऊणगं आहारमाहारेमाणे समणे निग्गंथे नो पकामरसभोईति वत्तव्वं सिया। एस णं गोयमा! खेत्तातिक्कतस्स, कालातिक्कतस्स, मग्गातिक्कतस्स, पमाणातिक्कतस्स पाण-भोयणस्स अट्ठे पण्णत्ते ॥

२५. अह भंते! सत्थातीतस्स, सत्थपरिणामियस्स[3], एसियस्स, वेसियस्स, सामुदाणियस्स पाण-भोयणस्स के अट्ठे पण्णत्ते?
गोयमा! जे णं निग्गंथे वा निग्गंथी वा निक्खित्तसत्थमुसले ववगयमाला-वण्णग-विलेवणे ववगय-चुय-चइय-चत्तदेहं, जीवविप्पजढं, अकयं, अकारियं, असकप्पियं, अणाहूयं, अकीयकडं, अणुद्दिट्ठं, नवकोडीपरिसुद्धं, दसदोसविप्पमुक्कं, उग्गमुप्पायणेसणासुपरिसुद्धं, वीतिंगालं, वीतधूमं, सजोयणादोसविप्पमुक्कं, असुरसुरं[4], अचवचवं, अदुयं, अविलंबियं, अपरिसाडिं, अक्खोवंजण-वणाणुलेवणभूयं, संजमजायामायावत्तियं, संजमभारवहणट्ठयाए बिलमिव पन्नगभूएणं अप्पाणेणं आहारमाहारेइ, एस णं गोयमा! सत्थातीतस्स, सत्थपरिणामियस्स[5] •एसियस्स, वेसियस्स, सामुदाणियस्स° पाण-भोयणस्स अट्ठे[6] पण्णत्ते ॥

२६. सेवं भंते! सेवं भंते! त्ति[7] ॥

बीओ उद्देसो

सुपच्चक्खाण-दुपच्चक्खाण-पदं

२७. से नूणं भंते! सव्वपाणेहिं, सव्वभूएहिं, सव्वजीवेहिं, सव्वसत्तेहिं पच्चक्खायमिति वदमाणस्स सुपच्चक्खायं भवति? दुपच्चक्खायं भवति?
गोयमा! सव्वपाणेहिं जाव सव्वसत्तेहिं पच्चक्खायमिति वदमाणस्स सिय सुपच्चक्खायं भवति, सिय दुपच्चक्खायं भवति ॥

---

१. स० पा०—°पमाणे जाव आहार° ।
२. ओमोदरिया (अ, ता, स), ओमोदरियाए (व)।
३. °पारि° (ता) ।
४. असुरुसुर (ता) ।
५ स० पा०—सत्थपरिणामियस्स जाव पाण ।
६ अयमट्ठे (अ) ।
७ भ० १।५१ ।

२८ से केणट्ठेण भंते ! एवं वुच्चइ—सव्वपाणेहिं जाव[1] सव्वसत्तेहिं[2] •पच्चक्खायमिति वदमाणस्स सिय सुपच्चक्खायं भवति° ? सिय दुपच्चक्खायं भवति ?
गोयमा ! जस्स णं सव्वपाणेहिं जाव सव्वसत्तेहिं पच्चक्खायमिति वदमाणस्स णो एवं अभिसमन्नागयं भवति—इमे जीवा, इमे अजीवा, इमे तसा, इमे थावरा, तस्स णं सव्वपाणेहिं जाव सव्वसत्तेहिं पच्चक्खायमिति वदमाणस्स नो सुपच्चक्खायं भवति, दुपच्चक्खायं भवति।
एवं खलु से दुपच्चक्खाई सव्वपाणेहिं जाव सव्वसत्तेहिं पच्चक्खायमिति वदमाणे नो सच्चं भासं भासइ, मोसं भासं भासइ। एवं खलु से मुसावाई सव्वपाणेहिं जाव सव्वसत्तेहिं तिविहं तिविहेणं असंजय-विरय-पडिहय-पच्चक्खायपावकम्मे, सकिरिए, असंवुडे, एगंतदंडे, एगंतबाले यावि भवति।
जस्स णं सव्वपाणेहिं जाव सव्वसत्तेहिं पच्चक्खायमिति वदमाणस्स एवं अभिसमन्नागयं भवति—इमे जीवा, इमे अजीवा, इमे तसा, इमे थावरा, तस्स णं सव्वपाणेहिं जाव सव्वसत्तेहिं पच्चक्खायमिति वदमाणस्स सुपच्चक्खायं भवति, नो दुपच्चक्खायं भवति।
एवं खलु से सुपच्चक्खाई सव्वपाणेहिं जाव सव्वसत्तेहिं पच्चक्खायमिति वदमाणे सच्चं भासं भासइ, नो मोसं भासं भासइ। एवं खलु से सच्चवादी सव्वपाणेहिं जाव सव्वसत्तेहिं तिविहं तिविहेणं संजय-विरय-पडिहय-पच्चक्खायपावकम्मे, अकिरिए, संवुडे, एगंतपंडिए यावि भवति। से तेणट्ठेणं गोयमा ! एवं वुच्चइ[3]—•सव्वपाणेहिं जाव सव्वसत्तेहिं पच्चक्खायमिति वदमाणस्स सिय सुपच्चक्खायं भवति°, सिय दुपच्चक्खायं भवति॥

पच्चक्खाण-पदं

२९. कतिविहे णं भंते ! पच्चक्खाणे पण्णत्ते ?
गोयमा ! दुविहे पच्चक्खाणे पण्णत्ते, तं जहा—मूलगुणपच्चक्खाणे य, उत्तरगुणपच्चक्खाणे य॥

३० मूलगुणपच्चक्खाणे णं भंते ! कतिविहे पण्णत्ते ?
गोयमा ! दुविहे पण्णत्ते, तं जहा—सव्वमूलगुणपच्चक्खाणे य, देसमूलगुणपच्चक्खाणे य॥

३१. सव्वमूलगुणपच्चक्खाणे णं भंते ! कतिविहे पण्णत्ते ?
गोयमा ! पंचविहे पण्णत्ते, तं जहा—सव्वाओ पाणाइवायाओ वेरमणं[4],

१ भ० ७।२७।
२ सं० पा०—सव्वसत्तेहिं जाव सिय।
३ सं० पा०—वुच्चइ जाव सिय।
४ सं० पा०—वेरमणं जाव सव्वाओ।

•सव्वाओ मुसावायाओ वेरमण, सव्वाओ अदिण्णादाणाओ वेरमण, सव्वाओ मेहुणाओ वेरमण°, सव्वाओ परिग्गहाओ वेरमण ॥

३२. देसमूलगुणपच्चक्खाणे ण भते ! कतिविहे पण्णत्ते ?
गोयमा ! पचविहे पण्णत्ते, त जहा—थूलाओ पाणाइवायाओ वेरमण[1], •थूलाओ मुसावायाओ वेरमण, थूलाओ अदिण्णादाणाओ वेरमण, थूलाओ मेहुणाओ वेरमण°, थूलाओ परिग्गहाओ वेरमण ॥

३३ उत्तरगुणपच्चक्खाणे ण भते ! कतिविहे पण्णत्ते ?
गोयमा ! दुविहे पण्णत्ते, त जहा—सव्वुत्तरगुणपच्चक्खाणे य, देसुत्तरगुणपच्चक्खाणे य ॥

३४. सव्वुत्तरगुणपच्चक्खाणे ण भंते ! कतिविहे पण्णत्ते ?
गोयमा ! दसविहे पण्णत्ते, त जहा—

गाहा—

१, २. अणागयमइक्कत ३ कोडीसहिय ४. नियटिय चेव ।
५, ६. सागारमणागार ७ परिमाणकड ८. निरवसेस ।
९ सकेय[2] चेव १०. अद्धाए, पच्चक्खाण भवे दसहा ॥१॥

३५ देसुत्तरगुणपच्चक्खाणे ण भते ! कतिविहे पण्णत्ते ?
गोयमा ! सत्तविहे पण्णत्ते, त जहा—१ दिसिव्वय[3] २. उवभोगपरिभोगपरिमाण ३ अणत्थदडवेरमण[4] ४. सामाइय ५ देसावगासिय ६. पोसहोववासो ७ अतिहिसविभागो[5] । अपच्छिममारणतियसलेहणाभूसणाराहणता[6] ॥

पच्चक्खाणि-अपच्चक्खाणि-पदं

३६ जीवा ण भते ! किं मूलगुणपच्चक्खाणी ? उत्तरगुणपच्चक्खाणी ? अपच्चक्खाणी ?
गोयमा ! जीवा मूलगुणपच्चक्खाणी वि, उत्तरगुणपच्चक्खाणी वि, अपच्चक्खाणी वि ॥

३७ नेरइया ण भते ! किं मूलगुणपच्चक्खाणी ? पुच्छा ।
गोयमा ! नेरइया नो मूलगुणपच्चक्खाणी, नो उत्तरगुणपच्चक्खाणी, अपच्चक्खाणी ॥

---

१ स० पा०—वेरमण जाव थूलाओ ।
२ साएत (ता, म), साकेय (स, वृ), सकेयग (ठा० १०।१०१) केत चिन्ह सहकेतेन वर्तते सकेतम्—दीर्घता च प्राकृतत्त्वात् (वृ) ।
३ दिसुव्वत (ता) ।
४ अणट्ठा° (ता) ।
५ अहासविभाग (म) ।
६ सलेखनामविगणय्य सप्त देशोत्तरगुणा इत्युक्तम्, अस्याश्चैतेषु पाठो देशोत्तरगुणधारिणाऽपीयमन्ते विधातव्येत्यस्यार्थस्य ख्यापनार्थं (वृ) ।

३८. एव जाव[1] चउरिंदिया ।।

३९. पंचिंदियतिरिक्खजोणिया मणुस्सा य जहा जीवा, वाणमतर-जोइसिय-वेमाणिया जहा नेरइया ।।

४०. एएसि ण भते ! जीवाणं मूलगुणपच्चक्खाणीण, उत्तरगुणपच्चक्खाणीणं, अपच्चक्खाणीण य कयरे कयरेहिंतो[2] •अप्पा वा ? वहुया वा ? तुल्ला वा ? ° विसेसाहिया वा ?

गोयमा ! सव्वत्थोवा जीवा मूलगुणपच्चक्खाणी, उत्तरगुणपच्चक्खाणी असखेज्जगुणा, अपच्चक्खाणी अणतगुणा ।।

४१. एएसि ण भते ! पचिंदियतिरिक्खजोणियाण पुच्छा ।

गोयमा ! सव्वत्थोवा[3] पचिंदियतिरिक्खजोणिया मूलगुणपच्चक्खाणी, उत्तरगुणपच्चक्खाणी असखेज्जगुणा, अपच्चक्खाणी असखेज्जगुणा ।।

४२ एएसि ण भते ! मणुस्साण मूलगुणपच्चक्खाणीण पुच्छा ।

गोयमा ! सव्वत्थोवा मणुस्सा मूलगुणपच्चक्खाणी, उत्तरगुणपच्चक्खाणी सखेज्जगुणा, अपच्चक्खाणी असखेज्जगुणा ।।

४३ जीवा ण भते ! कि सव्वमूलगुणपच्चक्खाणी ? देसमूलगुणपच्चक्खाणी ? अपच्चक्खाणी ?

गोयमा ! जीवा सव्वमूलगुणपच्चक्खाणी वि, देसमूलगुणपच्चक्खाणी वि, अपच्चक्खाणी वि ।।

४४. नेरइयाण पुच्छा ।

गोयमा ! नेरइया नो सव्वमूलगुणपच्चक्खाणी, नो देसमूलगुणपच्चक्खाणी, अपच्चक्खाणी ।।

४५. एव जाव[4] चउरिंदिया ।।

४६. पचिंदियतिरिक्खजोणियाण पुच्छा ।

गोयमा ! पचिंदियतिरिक्खजोणिया नो सव्वमूलगुणपच्चक्खाणी, देसमूलगुणपच्चक्खाणी[5], अपच्चक्खाणी वि ।।

४७. [6]•मणुस्साण भते ! कि सव्वमूलगुणपच्चक्खाणी ? देसमूलगुणपच्चक्खाणी ? अपच्चक्खाणी ?

गोयमा ! मणुस्सा सव्वमूलगुणपच्चक्खाणी वि, देसमूलगुणपच्चक्खाणी वि, अपच्चक्खाणी वि° ।।

---

१. पू० प० २ ।
२. स० पा०—कयरेहिंतो जाव विसेसाहिया ।
३. सव्वत्थोवा जीवा (अ) ।
४ पू० प० २ ।
५ ° पच्चक्खाणी वि (क, ता, म, स) ।
६. स० पा०—मणुस्सा जहा जीवा ।

४८ वाणमतर-जोइस-वेमाणिया जहा नेरइया ॥

४९ एएसि ण भते ! जीवाण सव्वमूलगुणपच्चक्खाणीणं, देसमूलगुणपच्चक्खाणीण, अपच्चक्खाणीण य कयरे कयरेहितो[1] •अप्पा वा ? बहुया वा ? तुल्ला वा ? विसेसाहिया वा ?
गोयमा ! सव्वत्थोवा जीवा सव्वमूलगुणपच्चक्खाणी, देसमूलगुणपच्चक्खाणी असखेज्जगुणा, अपच्चक्खाणी अणतगुणा ॥

५०. [2]•एएसि ण भते ! पचिदियतिरिक्खजोणियाण पुच्छा ।
गोयमा ! सव्वत्थोवा पचिदियतिरिक्खजोणिया देसमूलगुणपच्चक्खाणी, अप्पच्चक्खाणी असखेज्जगुणा ॥

५१. एएसि ण भते ! मणुस्साण सव्वमूलगुणपच्चक्खाणीण पुच्छा ।
गोयमा ! सव्वत्थोवा मणुस्सा सव्वमूलगुणपच्चक्खाणी, देसमूलगुणपच्चक्खाणी सखेज्जगुणा, अपच्चक्खाणी असखेज्जगुणा° ॥

५२. जीवा ण भते ! किं सव्वुत्तरगुणपच्चक्खाणी ? देसुत्तरगुणपच्चक्खाणी ? अपच्चक्खाणी ?
गोयमा ! जीवा सव्वुत्तरगुणपच्चक्खाणी वि,[3] •देसुत्तरगुणपच्चक्खाणी वि, अपच्चक्खाणी वि° ।
पचिदियतिरिक्खजोणिया मणुस्सा य एव चेव । सेसा अपच्चक्खाणी जाव[4] वेमाणिया ॥

५३. एएसि ण भते ! जीवाण सव्वुत्तरगुणपच्चक्खाणीण अप्पाबहुगाणि तिण्णि वि जहा पढमे दडए जाव[5] मणुस्साण ॥

५४ जीवा ण भते ! कि सजया ? असजया ? सजयासजया ?
गोयमा ! जीवा सजया वि,[6] •असजया वि, सजयासजया वि ।° एव जहेव पण्णवणाए तहेव भाणियव्व जाव[7] वेमाणिया । अप्पाबहुगं तहेव तिण्ह वि भाणियव्वं[8] ॥

५५. जीवा ण भते ! किं पच्चक्खाणी ? अपच्चक्खाणी ? पच्चक्खाणा-पच्चक्खाणी ?

---

१. स० पा०—कयरेहिंतो जाव विसेसाहिया ।
२. स० पा०—एव अप्पाबहुगाणि तिण्णि वि जहा पढमिल्ले दडए, नवर—सव्वत्थोवा पचिदियतिरिक्खजोणिया देसमूलगुणपच्चक्खाणी, अपच्चक्खाणी असखेज्जगुणा ।
३. स० पा०—तिण्णि वि।
४ पू० प० २ ।
५ भ० ७।४०-४२ ।
६ स० पा०—तिण्णि वि ।
७ प० ३२ ।
८ भ० ७।४०-४२ ।

गोयमा ! जीवा पच्चक्खाणी वि,[१] •अपच्चक्खाणी वि, पच्चक्खाणा-पच्चक्खाणी वि ॥

५६. एव मणुस्साण वि[२]। पचिंदियतिरिक्खजोणिया आदिल्लविरहिया। सेसा सव्वे अपच्चक्खाणी जाव[३] वेमाणिया ॥

५७. एएसि ण भंते ! जीवाण पच्चक्खाणीण[४] •अपच्चक्खाणीण पच्चक्खाणा-पच्चक्खाणीण य कयरे कयरेहितो अप्पा वा ? वहुया वा ? तुल्ला वा° ? विसेसाहिया वा ?
गोयमा ! सव्वत्थोवा जीवा पच्चक्खाणी, पच्चक्खाणापच्चक्खाणी असखेज्ज-गुणा, अपच्चक्खाणी अणतगुणा।
पचिंदियतिरिक्खजोणिया सव्वत्थोवा पच्चक्खाणापच्चक्खाणी, अपच्चक्खाणी असखेज्जगुणा। मणुस्सा सव्वत्थोवा पच्चक्खाणी, पच्चक्खाणापच्चक्खाणी सखेज्जगुणा, अपच्चक्खाणी असंखेज्जगुणा[५] ॥

सासय-असासय-पदं

५८ जीवा ण भते ! कि सासया ? असासया ?
गोयमा ! जीवा सिय सासया, सिय असासया ॥

५९. से केणट्ठेण भते ! एव वुच्चइ—जीवा सिय सासया ? सिय असासया ?
गोयमा ! दव्वट्ठयाए सासया, भावट्ठयाए असासया। से तेणट्ठेण गोयमा ! एव वुच्चइ[६]—•जीवा सिय सासया°, सिय असासया ॥

६० नेरइया ण भते ! कि सासया ? असासया ?
एव जहा जीवा तहा नेरइया वि। एव जाव[७] वेमाणिया सिय सासया, सिय असासया ॥

६१. सेव भते ! सेवं भते ! त्ति[८] ॥

---

१. स० पा०—तिण्णि वि।
२. वि तिण्णि वि (अ, स)।
३. पू० प० २।
४. स० पा०—पच्चक्खाणीण जाव विसेसाहिया
५. तुलना—भ० ६।६४।
६. स० पा०—वुच्चइ जाव सिय।
७. पू० प० २।
८. भ० १।५१।

तइओ उद्देसो

वणस्सइ-आहार-पदं

६२. वणस्सइक्काइया ण भते ! क[1] काल सव्वप्पाहारगा वा, सव्वमहाहारगा वा भवति ?
गोयमा ! पाउस-वरिसारत्तेसु ण एत्थ ण वणस्सइकाइया सव्वमहाहारगा भवति, तदाणतर[2] च ण सरदे[3], तदाणतर च ण हेमते, तदाणतर च ण वसते, तदाणतर च ण गिम्हे । गिम्हासु णं वणस्सइकाइया सव्वप्पाहारगा भवति ॥

६३ जइ ण भते ! गिम्हासु वणस्सइकाइया सव्वप्पाहारगा भवति, कम्हा ण भते ! गिम्हासु वहवे वणस्सइकाइया पत्तिया, पुप्फिया, फलिया, हरियगरेरिज्जमाणा, सिरीए अतीव-अतीव उवसोभेमाणा-उवसोभेमाणा चिट्ठति ?
गोयमा ! गिम्हासु ण वहवे उसिणजोणिया जीवा य, पोग्गला य वणस्सइ-काइयत्ताए वक्कमति, चयति[4], उववज्जति । एव खलु गोयमा ! गिम्हासु वहवे वणस्सइकाइया पत्तिया, पुप्फिया[5], •फलिया, हरियगरेरिज्जमाणा, सिरीए अतीव-अतीव उवसोभेमाणा-उवसोभेमाणा° चिट्ठति ॥

६४. से नूण भते ! मूला मूलजीवफुडा, कदा कदजीवफुडा[6], •खधा खधजीवफुडा, तया तयाजीवफुडा, साला सालजीवफुडा, पवाला पवालजीवफुडा, पत्ता पत्त-जीवफुडा, पुप्फा पुप्फजीवफुडा, फला फलजीवफुडा°, वीया वीयजीवफुडा ?
हता गोयमा ! मूला मूलजीवफुडा जाव वीया वीयजीवफुडा ॥

६५. जइ ण भते ! मूला मूलजीवफुडा जाव[7] बीया वीयजीवफुडा, कम्हा णं भते ! वणस्सइकाइया आहारेति ? कम्हा परिणामेति ?
गोयमा ! मूला मूलजीवफुडा पुढवीजीवपडिबद्धा तम्हा आहारेति, तम्हा परिणामेति । कदा कदजीवफुडा मूलजीवपडिबद्धा, तम्हा आहारेति, तम्हा परिणामेति । एव जाव बीया बीयजीवफुडा फलजीवपडिबद्धा तम्हा आहारेति, तम्हा परिणामेति ॥

---

१. किं (क, म) ।
२ तद° (व) ।
३ सरए (अ) ।
४. विउक्कमति [(अ, क); विउक्कमति चयति (स) ।
५. स० पा०—पुप्फिया जाव चिट्ठति ।
६. स० पा०—कदजीवफुडा जाव बीया ।
७. भ० ७।६४ ।

अणंतकाय-पदं

६६ अह भंते ! आलुए, मूलए, सिंगबेरे, हिरिलि, सिरिलि, सिस्सिरिलि[1], किट्टिया[2], छिरिया, छीरविरालिया[3], कण्हकंदे, वज्जकंदे, सूरणकंदे, खेलूडे[4] भद्दमोत्था[5], पिंडहलिद्दा[6], लोही, णीहू, थीहू, थिभगा[7], अस्सकण्णी, सीहकण्णी, सिउंढी[8], मुसंढी, जेयावण्णे तहप्पगारा सव्वे ते अणंतजीवा विविहसत्ता[9] ?
हंता गोयमा ! आलुए, मूलए जाव अणंतजीवा विविहसत्ता ॥

अप्पकम्म-महाकम्म-पदं

६७ सिय भंते ! कण्हलेसे नेरइए अप्पकम्मतराए ? नीललेसे नेरइए महाकम्मतराए ?
हंता सिय[10] ॥

६८ से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ—कण्हलेसे नेरइए अप्पकम्मतराए ? नीललेसे नेरइए महाकम्मतराए ?
गोयमा ! ठिंति पडुच्च । से तेणट्ठेण गोयमा ! जाव महाकम्मतराए ॥

६९ सिय भंते ! नीललेसे नेरइए अप्पकम्मतराए ? काउलेसे नेरइए महाकम्मतराए ?
हंता सिय ॥

७० से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ—नीललेसे नेरइए अप्पकम्मतराए ? काउलेसे नेरइए महाकम्मतराए ?
गोयमा ! ठिंति पडुच्च । से तेणट्ठेण गोयमा ! जाव महाकम्मतराए ॥

७१. एवं असुरकुमारे वि, नवरं—तेउलेसा अब्भहिया । एवं जाव[11] वेमाणिया । जस्स जइ लेस्साओ तस्स तत्तिया भाणियव्वाओ । जोइसियस्स न भण्णइ जाव—

७२. सिय भंते ! पम्हलेस्से वेमाणिए अप्पकम्मतराए ? सुक्कलेस्से वेमाणिए महाकम्मतराए ?
हंता सिय ॥

७३. से केणट्ठेण ?[12] °गोयमा ! ठिंति पडुच्च । से तेणट्ठेण गोयमा ! ° जाव महाकम्मतराए ॥

---

१. सिस्सेरिलि (ता) ।
२. किट्टिया (अ, ता) ।
३. छीरि° (अ) ।
४. खल्लूडे (अ), खल्लुए (ता) ।
५. भद्दमोत्था (अ, म, स) ।
६. भिंड° (क) ।
७ विभगा (अ), थिरुगा (म, स) ।
८ सीहढी (अ), सीदडी (क), सदिट्ठी (ब); सीदवी (म), सादठी (स) ।
९ विचित्तविहिसत्ता (वृपा) ।
१० सिया (अ, ब) ।
११. पू० प० २ ।
१२ स० पा०—सेसं जहा नेरइयस्स ।

वेदणा-निज्जरा-पदं

७४. से नूण भते ! जा वेदणा सा निज्जरा ? जा निज्जरा सा वेदणा ?
गोयमा ! णो इणट्ठे समट्ठे ॥

७५ से केणट्ठेण भते ! एव वुच्चइ—जा वेदणा न सा निज्जरा ? जा निज्जरा न सा वेदणा ?
गोयमा ! कम्मं[1] वेदणा, नोकम्म निज्जरा । से तेणट्ठेण गोयमा[2] ! •एव वुच्चइ—जा वेदणा न सा निज्जरा, जा निज्जरा° न सा वेदणा ॥

७६ नेरइया ण भते ! जा वेदणा सा निज्जरा ? जा निज्जरा सा वेदणा ?
गोयमा ! णो इणट्ठे समट्ठे ॥

७७ से केणट्ठेण भते ! एव वुच्चइ—नेरइयाण जा वेदणा न सा निज्जरा ? जा निज्जरा न सा वेदणा ?
गोयमा ! नेरइयाणं कम्म वेदणा, नोकम्म निज्जरा । से तेणट्ठेण गोयमा[3] ! •एव वुच्चइ—नेरइयाणं जा वेदणा न सा निज्जरा, जा निज्जरा° न सा वेदणा ॥

७८. एव जाव[4] वेमाणियाण ॥

७९. से नूण भते ! ज वेदेसु त निज्जरेसु ? ज निज्जरेसु त वेदेसु ?
णो इणट्ठे समट्ठे ॥

८०. से केणट्ठेण भते ! एव वुच्चइ—ज वेदेसु नो त निज्जरेसु ? ज निज्जरेसु नो त वेदेसु ?
गोयमा ! कम्म वेदेसु, नोकम्म निज्जरेसु । से तेणट्ठेण गोयमा ! जाव नो त वेदेसु ॥

८१. एव[5] नेरइया वि, एव जाव वेमाणिया ॥

८२. से नूण भते ! ज वेदेति त निज्जरेति ? ज निज्जरेति त वेदेति ?
गोयमा ! णो इणट्ठे समट्ठे ॥

८३ से केणट्ठेण भते ! एव वुच्चइ—जाव नो त वेदेति ?
गोयमा ! कम्म वेदेति, नोकम्म निज्जरेंति । से तेणट्ठेण गोयमा ! जाव नो त वेदेंति ॥

८४ एवं नेरइया वि जाव वेमाणिया ॥

८५. से नूण भते ! ज वेदिस्सति त निज्जरिस्संति ? ज निज्जरिस्सति त वेदिस्सति ?
गोयमा ! णो इणट्ठे समट्ठे ॥

---

१ कम्म (अ, क, म) ।
२. स० पा०—गोयमा जाव न ।
३ स० पा०—गोयमा जाव न ।
४. पू० प० २ ।
५ नेरइया ण भते ! ज वेदेंसु त निज्जरेसु एव (अ, क, ता, ब, म, स) ।

८६. से केणट्ठेणं जाव नो तं वेदिस्संति ?
गोयमा ! कम्मं वेदिस्संति, नोकम्म निज्जरिस्संति । से तेणट्ठेणं जाव नो त निज्जरिस्संति ।।
८७. एव नेरइया वि जाव वेमाणिया ।।
८८. से नूण भंते ! जे वेदणासमए से निज्जरासमए ? जे निज्जरासमए से वेदणासमए ?
णो इणट्ठे समट्ठे ।।
८९ से केणट्ठेण भते ! एव वुच्चइ—जे वेदणासमए न से निज्जरासमए ? जे निज्जरासमए न से वेदणासमए ?
गोयमा ! ज समयं वेदेति नो त समय निज्जरेति, ज समय निज्जरेति नो तं समय वेदेति—अण्णम्मि समए वेदेति, अण्णम्मि समए निज्जरेति । अण्णे से वेदणासमए, अण्णे से निज्जरासमए । से तेणट्ठेण जाव न से वेदणासमए, न से निज्जरासमए ।।
९०. नेरइया णं भते ! जे वेदणासमए से निज्जरासमए ? जे निज्जरासमए से वेदणासमए ?
गोयमा ! णो इणट्ठे समट्ठे ।।
९१. से केणट्ठेण भते ! एव वुच्चइ—नेरइया ण जे वेदणासमए न से निज्जरासमए ? जे निज्जरासमए न से वेदणासमए ?
गोयमा ! नेरइया ण ज समय वेदेति नो त समय निज्जरेति, ज समय निज्जरेति नो त समय वेदेति—अण्णम्मि समए वेदेति, अण्णम्मि समए निज्जरेति । अण्णे से वेदणासमए, अण्णे से निज्जरासमए । से तेणट्ठेण जाव न से वेदणासमए ।।
९२ एव जाव वेमाणियाण ।।

सासय-असासय-पदं

९३ नेरइया ण भते ! कि सासया ? असासया ?
गोयमा ! सिय सासया, सिय असासया ।।
९४ से केणट्ठेण भते ! एव वुच्चइ—नेरइया सिय सासया ? सिय असासया ?
गोयमा ! अव्वोच्छित्तिनयट्ठयाए सासया, वोच्छित्तिनयट्ठयाए असासया । से तेणट्ठेण जाव सिय सासया, सिय असासया ।।
९५. एव जाव वेमाणिया जाव सिय असासया ।।
९६. सेवं भते ! सेव भते ! त्ति[1] ।।

---

१ भ० १।५१ ।

चउत्थो उद्देसो

संसारत्थजीव-पद

९७. रायगिहे नयरे जाव[1] एव वयासि—कतिविहा ण भते! ससारसमावन्नगा जीवा पण्णत्ता ?
गोयमा! छव्विहा ससारसमावन्नगा जीवा पण्णत्ता, त जहा—पुढविकाइया जाव तसकाइया। एव जहा जीवाभिगमे जाव[2] एगे जीवे एगेण समएण एग किरिय पकरेइ, त जहा—सम्मत्तकिरियं वा, मिच्छत्तकिरिय वा[3] ॥

९८. सेव भते! सेव भते! त्ति[4] ॥

पंचमो उद्देसो

जोणीसगह-पदं

९९. रायगिहे जाव एव वयासी—खहयरपंचिदियतिरिक्खजोणियाण भते! कतिविहे जोणीसगहे पण्णत्ते ?
गोयमा! तिविहे जोणीसगहे पण्णत्ते, त जहा—अडया, पोयया, समुच्छिमा। एव जहा जीवाभिगमे जाव[5] नो चेव ण ते विमाणे वीतीवएज्जा, एमहालया ण गोयमा! ते विमाणा पण्णत्ता[6] ॥

१००. सेवं भते! सेव भते! त्ति[7] ॥

---

१ भ० १।४-१०।
२. जी० ३।
३ अतोग्रे एका सग्रहगाथा लभ्यते—
जीवा छव्विह पुढवी,
जीवाण ठिती भवट्ठिती काये।
निल्लेवण अणगारे,
किरिया सम्मत्त-मिच्छत्ता ॥
(अ, ता, व, म, स, वृपा)।
४. भ० १।५१।
५ जी० ३।
६ अतोग्रे एका सग्रहगाथा लभ्यते—
जोणीसगह-लेसा,
दिट्ठी नाणे य जोग-उवओगे।
उववाय-ट्ठिति-समुग्घाय-चवण-जाती-कुल-
वीहीओ ॥ (वृपा)।
७ भ० १।५१।

छट्ठो उद्देसो

आउयपकरण-वेयणा-पदं

१०१. रायगिहे जाव[1] एवं वयासी—जीवे ण भते ! जे भविए नेरइएसु उववज्जित्तए[2], से ण भते ! किं इहगए नेरइयाउय पकरेइ ? उववज्जमाणे नेरइयाउय पकरेइ ? उववन्ने नेरइयाउय पकरेइ ?
गोयमा ! इहगए नेरइयाउयं पकरेइ, नो उववज्जमाणे नेरइयाउय पकरेइ, नो उववन्ने नेरइयाउय पकरेइ। एव असुरकुमारेसु वि, एव जाव[3] वेमाणिएसु ॥

१०२ जीवे ण भते ! जे भविए नेरइएसु उववज्जित्तए, से ण भते ! किं इहगए नेरइयाउय पडिसवेदेइ ? उववज्जमाणे नेरइयाउय पडिसवेदेइ ? उववन्ने नेरइयाउय पडिसवेदेइ ?
गोयमा ! नो इहगए नेरइयाउय पडिसवेदेइ, उववज्जमाणे नेरइयाउय पडिसवेदेइ, उववन्ने वि नेरइयाउय पडिसवेदेइ। एव जाव वेमाणिएसु ॥

१०३ जीवे ण भते ! जे भविए नेरइएसु उववज्जित्तए, से ण भते ! किं इहगए महावेदणे ? उववज्जमाणे महावेदणे ? उववन्ने महावेदणे ?
गोयमा ! इहगए सिय महावेदणे सिय अप्पवेदणे, उववज्जमाणे सिय महावेदणे सिय अप्पवेदणे, अहे ण उववन्ने भवइ तओ पच्छा एगतदुक्ख वेदण वेदेति, आहच्च साय ॥

१०४ जीवे ण भते ! जे भविए असुरकुमारेसु उववज्जित्तए, पुच्छा।
गोयमा। इहगए सिय महावेदणे सिय अप्पवेदणे, उववज्जमाणे सिय महावेदणे सिय अप्पवेदणे, अहे ण उववन्ने भवइ तओ पच्छा एगतसात वेदण वेदेति, आहच्च असाय[4]। एव जाव[5] थणियकुमारेसु ॥

१०५ जीवे ण भते ! जे भविए पुढविक्काइएसु उववज्जित्तए, पुच्छा।
गोयमा ! इहगए सिय महावेदणे सिय अप्पवेदणे, एव उववज्जमाणे वि, अहे ण उववन्ने भवइ तओ पच्छा वेमायाए वेदण वेदेति। एव जाव[6] मणुस्सेसु। वाणमतर-जोइसिय-वेमाणिएसु जहा असुरकुमारेसु ॥

१०६ जीवा ण भते ! किं आभोगनिव्वत्तियाउया ? अणाभोगनिव्वत्तियाउया ?
गोयमा ! नो आभोगनिव्वत्तियाउया, अणाभोगनिव्वत्तियाउया। एवं नेरइया वि, एव जाव[7] वेमाणिया ॥

---

१. भ० १।४-१०।
२. उववज्जति (व)।
३. पू० प० २।
४. अस्साय (अ, स)।
५ पू० प० २।
६. पू० प० २।
७ पू० प० २।

कक्कस-अकक्कसवेयणीय-पदं

१०७. अत्थि ण भते ! जीवाण कक्कसवेयणिज्जा कम्मा कज्जति ?
हता अत्थि ॥

१०८. कहण्ण भते ! जीवाण कक्कसवेयणिज्जा कम्मा कज्जति ?
गोयमा ! पाणाइवाएण जाव[1] मिच्छादसणसल्लेण —एव खलु गोयमा ! जीवाण कक्कसवेयणिज्जा कम्मा कज्जति ॥

१०९. अत्थि ण भते ! नेरइया ण कक्कसवेयणिज्जा कम्मा कज्जति ?
एव चेव । एव जाव[2] वेमाणियाण ॥

११०. अत्थि ण भते ! जीवाण अकक्कसवेयणिज्जा कम्मा कज्जति ?
हता अत्थि ॥

१११. कहण्ण भते ! जीवाण अकक्कसवेयणिज्जा कम्मा कज्जति ?
गोयमा ! पाणाइवायवेरमणेण जाव[1] परिग्गहवेरमणेण, कोहविवेगेण जाव[3] मिच्छादसणसल्लविवेगेण—एव खलु गोयमा ! जीवाण अकक्कसवेयणिज्जा कम्मा कज्जति ॥

११२. अत्थि ण भते ! नेरइयाण अकक्कसवेयणिज्जा कम्मा कज्जति ?
णो इणट्ठे समट्ठे । एव जाव वेमाणियाण, नवर—मणुस्साण जहा जीवाण ॥

सायासाय-वेयणीय-पदं

११३. अत्थि ण भते ! जीवाण सातावेयणिज्जा कम्मा कज्जति ?
हता अत्थि ॥

११४ कहण्ण भते ! जीवाण सातावेयणिज्जा कम्मा कज्जति ?
गोयमा ! पाणाणुकपयाए, भूयाणुकपयाए, जीवाणुकपयाए, सत्ताणुकपयाए, बहूण पाणाण[5] •भूयाण जीवाण° सत्ताण अदुक्खणयाए असोयणयाए अजूरणयाए अतिप्पणयाए अपिट्टणयाए अपरियावणयाए—एव खलु गोयमा ! जीवाण सातावेयणिज्जा कम्मा कज्जति । एव नेरइयाण वि, एव जाव वेमाणियाण ॥

११५. अत्थि ण भते ! जीवाण असातावेयणिज्जा कम्मा कज्जति ?
हता अत्थि ॥

११६ कहण्ण भते ! जीवाण असातावेयणिज्जा कम्मा कज्जति ?
गोयमा ! परदुक्खणयाए, परसोयणयाए, परजूरणयाए, परतिप्पणयाए, पर-

---

१. भ० १।३८४ ।
२ पू० प० २ ।
३ भ० १।३८५ ।
४ ठा० १।११५-१२५ ।
५ स० पा०—पाणाण जाव सत्ताण ।

पिट्टणयाए, परपरियावणयाए, वहूण पाणाणं[1] •भूयाण जीवाणं° सत्ताण दुक्ख-णयाए, सोयणयाए[2], •जूरणयाए, तिप्पणयाए, पिट्टणयाए°, परियावणयाए—एव खलु गोयमा ! जीवाण असातावेयणिज्जा कम्मा कज्जंति । एव नेरइयाण वि, एव जाव वेमाणियाण ॥

दुस्समदुस्समा-पदं

११७ जवुद्दीवे ण भते ! दीवे[3] इमीसे ओसप्पिणीए दुस्सम-दुस्समाए समाए उत्तम-कट्ठपत्ताए भरहस्स वासस्स केरिसए आगारभावपडोयारे भविस्सइ ?

गोयमा ! कालो भविस्सइ हाहाभूए, भभब्भूए[4] कोलाहलभूए[5] । समाणुभावेण[6] य ण खर-फरुस-धूलिमइला दुव्विसहा वाउला भयकरा वाया सवट्टगा य वाहिंति । इह अभिक्ख धूमाहिंति य दिसा समता रउस्सला[7] रेणुकलुस-तमपडल-निरालोगा । समयलुक्खयाए य ण अहिय चदा सीय मोच्छति[8] । अहिय[9] सूरिया तवइस्सति । अदुत्तर च ण अभिक्खणं वहवे अरसमेहा विरसमेहा खारमेहा खत्तमेहा[10] अग्गिमेहा विज्जुमेहा विसमेहा असणिमेहा—अपिवणिज्जोदगा,[11] वाहिरोगवेदणोदीरणा-परिणामसलिला, अमणुण्णपाणियगा चडानिलपहय-तिक्खधारा-निवायपउर वास वासिहिति, जेण भारहे वासे गामागर-नगर-खेड-कव्बड-मडब-दोणमुह-पट्टणासमगय[12] जणवयं, चउप्पयगवेलए, खहयरे य पक्खि-सघे, गामारण्ण-पयारनिरए तसे य पाणे, वहुप्पगारे रुक्ख-गुच्छ-गुम्म-लय-वल्लि-तण-पव्वग-हरितोसहि-पवालकुरमादीए य तण-वणस्सइकाइए विद्धसेहिंति, पव्वय-गिरि-डोगरुत्थल[13]-भट्ठिमादीए वेयड्ढगिरिवज्जे विरावेहिति,सलिलविल-गड्ड-दुग्गविसमनिण्णुन्नयाइ च गगा-सिंधुवज्जाइ समीकरेहिति ॥

११८ तीसे ण भते ! समाए भरहस्स वासस्स भूमीए केरिसए आगारभाव-पडोयारे भविस्सति ?

गोयमा ! भूमी भविस्सति इगालब्भूया मुम्मुरब्भूया छारियभूया तत्तकवेल्लय-ब्भूया[14] तत्तसमजोतिभूया[15] धूलिवहुला रेणुवहुला पंकवहुला पणगवहुला चलणि-

---

१. स० पा०—पाणाण जाव सत्ताण ।
२ स० पा०—सोयणयाए जाव परियावणयाए ।
३ दीवे भारहे वासे (अ, क, व, म, स) ।
४. भभाभूए (अ, क, म); भभेभूए (व) ।
५. कोलाहलग° (क, व, म) ।
६ समयाणु° (स, वृ) ।
७. रयोसला (क, ता, व, म), रओसला (स) ।
८. मोच्छिति (अ, क, ता, व, म, स) ।
९ अहित (क, व, म) ।
१० खट्टमेहा (म), खत्तमेहा (वृपा) ।
११ अजवणिज्जोदगा (अ, व, स, वृपा), अप्पि-वणिज्जोदया (क, म); अवणिज्जोदगा (ता)
१२ °समा० (व, स) ।
१३. डोगरथल (अ, क, ता, वृपा) ।
१४ कवल्लय° (क), कवल्लग° (ता) ।
१५ प्रस्तुतागमस्य ३।४८ सूत्रे तथा स्थानागस्य

बहुला[1] बहूण धरणिगोयराणं सत्ताण दुन्निक्कमा[2] यावि भविस्सति ।

११९ तीसे णं भंते ! समाए भरहे[3] वासे मणुयाण केरिसए आगारभाव-पडोयारे भविस्सइ ?

गोयमा ! मणुया भविस्सति दुरूवा दुवण्णा[4] दुग्गधा दुरसा दुफासा अणिट्ठा अकंता[5] •अप्पिया असुभा अमणुण्णा° अमणामा हीणस्सरा दीणस्सरा[6] अणिट्ठस्सरा •अकतस्सरा अप्पियस्सरा असुभस्सरा अमणुण्णस्सरा° अमणामस्सरा अणादेज्जवयणपच्चायाया, निल्लज्जा, कूड-कवड-कलह-वह-बध-वेरनिरया, मज्जायातिक्कमप्पहाणा, अकज्जनिच्चुज्जता, गुरुनियोग-विणयरहिया य, विकलरूवा, परूढनह-केस-मसु-रोमा, काला, खर-फरुस-झामवण्णा, फुट्टसिरा, कविल-पलियकेसा, बहुण्हारुसपिणद्ध[7]-दुद्दसणिज्जरूवा, सकुडितवलीतरगपरिवेढियग-मगा, जरापरिणतव्व थेरगनरा, पविरलपरिसडियदतसेढी, उब्भडघडामुहा[8] विसमणयणा, वकनासा, वक[9]-वलीविगय-भेसणमुहा, कच्छु-कसराभिभूया, खरतिक्खनखकडूइय[10]-विक्खयतणू[11], दद्दु-किडिभ-सिब्भ[12]-फुडियफरुसच्छवी, चित्तलगा, टोलगति[13]-विसमसधिबधण-उक्कुडुअट्ठिगविभत्त-दुब्बला कुसघयण-कुप्पमाण-कुसठिया, कुरूवा, कुट्ठाणासण-कुसेज्ज-कुभोइणो, असुइणो, अणेगवाहि-परिपीलियगमंगा, खलत-विब्भलगती[14], निरुच्छाहा, सत्तपरिवज्जिया, विगयचेट्ठ-नट्ठतेया, अभिक्खण सीय-उण्ह-खर-फरुसवायविज्झडियमलिणपसुरउग्गुडिय-गमगा[15], बहुकोह-माण-माया, बहुलोभा, असुह-दुक्खभागी, उस्सण्ण धम्मसण्ण-सम्मत्तपरिभट्ठा, उक्कोसेण रयणिप्पमाणमेत्ता, सोलस-वीसतिवासपरमाउसो, 'पुत्तनत्तुपरिवाल-पणयबहुला'[16] गगा-सिधूओ महानदीओ, वेयड्ढ च पव्वय

(८।१०) सूत्रे 'तत्त' पद पृथग् गृहीत, वृत्तावपि च तथैव व्याख्यातमस्ति । जबूद्वीपप्रज्ञप्ति (२ वक्षस्कार) वृत्तौ अत्र च 'तत्त' पद समस्त गृहीतमस्ति, व्याख्यातमपि च तथैव ।

१. चलनप्रमाण कर्दमश्चलनी (वृ) ।

२ दोन्निक्कमा (अ, स) ।

३ भारहे (अ, क, स) ।

४. दुव्वण्णा (ता, व, म) ।

५. स० पा०—अकता जाव अमणामा ।

६ स० पा०—अणिट्ठस्सरा जाव अमणामस्सरा

७ °ण्हारुणि° (अ, व, स), °ण्हारुणिसविणद्ध (ता) ।

८. °घडमुहा (अ, म), °घडोमुहा (क, व); °घाडामुहा (ता वृपा), घडग=घडा । अत्र एकपदे सन्धिर्जात ।

९ वग (क, ता, व, म, वृपा) ।

१० °कदूइय (ता, व, स) ।

११ विक्कय (अ, क) ।

१२ सिंभ (ता, स) ।

१३ टोलागति (ता, व, म, वृपा) ।

१४ वभल (अ), वेंभल (क, ता) ।

१५ °रयपुडियगमगा (अ) ।

१६. °परियार° (अ); °परियाल° (व, स), °परिपालणबहुला (क, वृपा) ।

निस्साए वात्तवरि[1] निग्रोदा[2] वीय वीयमेत्ता[3] विलवासिणो भविस्सति ।।

१२० ते ण भते ! मणुया क आहार आहारेहिति ?
गोयमा ! तेण कालेण तेण समएण गगा-सिधूओ महानदीओ रहपहवित्थराओ अक्खसोयप्पमाणमेत्त जल वोज्झिहिति, से वि य ण जले वहुमच्छकच्छभाइण्णे, णो चेव ण आउबहुले भविस्सति । तए ण ते मणुया सूरुग्गमणमुहुत्तसि य सूरत्थमणमुहुत्तसि य विलेहितो निद्धाहिति, निद्धाइत्ता मच्छ-कच्छभे थलाइ गाहेहिति, गाहेत्ता सीतातवतत्तएहि मच्छ-कच्छएहि एक्कवीस वाससहस्साइ वित्ति कप्पेमाणा विहरिस्सति ।।

१२१ ते ण भते ! मणुया निस्सीला निग्गुणा निम्मेरा निप्पच्चक्खाणपोसहोववासा, उस्सण्ण[4] मसाहारा मच्छाहारा खोद्दाहारा कुणिमाहारा कालमासे काल किच्चा कहि गच्छिहिति ? कहि उववज्जिहिति ?
गोयमा ! उस्सण्ण नरग-तिरिक्खजोणिएसु उववज्जिहिति ।।

१२२ ते ण भते ! सीहा, वग्घा, वगा, दीविया, अच्छा, तरच्छा, परस्सरा निस्सीला तहेव जाव[5] कहि उववज्जिहिति ?
गोयमा ! उस्सण्ण नरग-तिरिक्खजोणिएसु उववज्जिहिति ।।

१२३ ते ण भते ! ढका, कका, विलका[6], मद्दुगा, सिही निस्सीला तहेव जाव[7] कहि उववज्जिहिति ?
गोयमा ! उस्सण्ण नरग-तिरिक्खजोणिएसु उववज्जिहिति ।।

१२४ सेव भते ! सेवं भते ! त्ति[8] ।।

सत्तमो उद्देसो

सवुडस्स किरिया-पदं

१२५ सवुडस्स ण भते ! अणगारस्स आउत्त गच्छमाणस्स[9], •आउत्त चिट्ठमाणस्स, आउत्त निसीयमाणस्स°, आउत्त तुयट्टमाणस्स, आउत्त वत्थ पडिग्गह कवल

---

१ वाहत्तरि (ता, व) ।
२ नियोया (ता) ।
३ वीयामेत्ता (अ, क, व, म, स) ।
४. ओस्सण्ण (अ, स) ।
५. भ० ७।१२१ ।
६ पिलका (अ) ।
७ भ० ७।१२१ ।
८ भ० १।५१ ।
९ स० पा०—गच्छमाणस्स जाव आउत्त ।

पादपुंछण गेण्हमाणस्स वा निक्खिवमाणस्स वा, तस्स ण भंते ! किं इरिया-वहिया[1] किरिया कज्जइ ? संपराइया किरिया कज्जइ ?
गोयमा ! संवुडस्स ण अणगारस्स आउत्तं गच्छमाणस्स जाव तस्स ण इरियावहिया किरिया कज्जइ, नो संपराइया किरिया कज्जइ ।।

१२६ से केणट्ठेण भंते ! एवं वुच्चइ—संवुडस्स ण अणगारस्स आउत्तं गच्छमाणस्स जाव नो संपराइया, किरिया कज्जइ ?
गोयमा ! जस्स ण कोह-माण-माया-लोभा वोच्छिण्णा भवंति, तस्स ण इरियावहिया किरिया कज्जइ[2], •जस्स ण कोह-माण-माया-लोभा अवोच्छिण्णा भवंति, तस्स ण संपराइया किरिया कज्जइ । अहासुत्तं रीयमाणस्स इरिया-वहिया किरिया कज्जइ°, उस्सुत्तं रीयमाणस्स संपराइया किरिया कज्जइ । से ण अहासुत्तमेव रीयइ । से तेणट्ठेण गोयमा ! एवं वुच्चइ—संवुडस्स ण अणगारस्स आउत्तं गच्छमाणस्स जाव नो संपराइया किरिया कज्जइ[3] ।।

काम-भोग-पदं

१२७. रूवी भंते ! कामा ? अरूवी कामा ?
गोयमा ! रूवी कामा, नो अरूवी कामा ।।

१२८ सचित्ता भंते ! कामा ? अचित्ता कामा ?
गोयमा ! सचित्ता वि कामा, अचित्ता वि कामा ।।

१२९ जीवा भंते ! कामा ? अजीवा कामा ?
गोयमा ! जीवा वि कामा, अजीवा वि कामा ।।

१३० जीवाणं भंते ! कामा ? अजीवाणं कामा ?
गोयमा ! जीवाणं कामा, नो अजीवाणं कामा ।।

१३१ कतिविहा ण भंते ! कामा पण्णत्ता ?
गोयमा ! दुविहा कामा पण्णत्ता, त जहा—सद्दा य, रूवा य ।।

१३२ रूवी[4] भंते ! भोगा ? अरूवी भोगा ?
गोयमा ! रूवी भोगा, नो अरूवी भोगा ।।

१३३ सचित्ता भंते ! भोगा ? अचित्ता भोगा ?
गोयमा ! सचित्ता वि भोगा, अचित्ता वि भोगा ।।

१३४ जीवा भंते ! भोगा[5] ? •अजीवा भोगा ?°
गोयमा ! जीवा वि भोगा, अजीवा वि भोगा ।।

---

१ रिया० (ब) ।
२ स० पा०—तहेव जाव उस्सुत्तं ।
३ तुलना—भ० ७।२०, २१ ।
४ रूविं (अ, क, ता, ब, म, स) ।
५ स० पा०—भोगा पुच्छा ।

१३५ जीवाण भंते ! भोगा ? अजीवाणं भोगा ?
गोयमा ! जीवाण भोगा, नो अजीवाण भोगा ॥

१३६. कतिविहा ण भंते ! भोगा पण्णता ?
गोयमा ! तिविहा भोगा पण्णत्ता, तं जहा—गधा, रसा, फासा ॥

१३७ कतिविहा ण भते ! काम-भोगा पण्णत्ता ?
गोयमा ! पचविहा काम-भोगा पण्णता, त जहा—सद्दा, रूवा, गधा, रसा, फासा ॥

१३८. जीवा ण भते ! किं कामी ? भोगी ?
गोयमा ! जीवा कामी वि, भोगी वि ॥

१३९. से केणट्ठेण भते ! एव वुच्चइ—जीवा कामी वि ? भोगी वि ?
गोयमा ! सोइदिय-चक्खिदियाइ पडुच्च कामी, घाणिदिय-जिब्भिदिय-फासिदियाइ पडुच्च भोगी। से तेणट्ठेण गोयमा[1] ! •एव वुच्चइ-जीवा कामी वि•, भोगी वि ॥

१४०. नेरइया ण भते ! कि कामी ? भोगी ?
एव चेव जाव[2] थणियकुमारा ॥

१४१ पुढविकाइयाण—पुच्छा ।
गोयमा ! पुढविकाइया नो कामी, भोगी ॥

१४२. से केणट्ठेण जाव भोगी ?
गोयमा ! फासिदिय पडुच्च । से तेणट्ठेण जाव भोगी । एवं जाव वणस्सइ-काइया । बेइदिया एव चेव, नवर—जिब्भिदियफासिदियाइ पडुच्च । तेइदिया वि एव चेव, नवर—घाणिदिय-जिब्भिदिय-फासिदियाइ पडुच्च ॥

१४३. चउरिंदियाण—पुच्छा ।
गोयमा ! चउरिंदिया कामी वि, भोगी वि ॥

१४४. से केणट्ठेण जाव भोगी वि ?
गोयमा ! चक्खिदियं पडुच्च कामी, घाणिदिय-जिब्भिदिय-फासिदियाइ पडुच्च भोगी । से तेणट्ठेण जाव भोगी वि । अवसेसा जहा जीवा जाव वेमाणिया ॥

१४५ एएसि ण भते ! जीवाण 'कामभोगीण, नोकामीण, नोभोगीण, भोगीण'[3] य कयरे कयरेहिंतो[4] •अप्पा वा ? बहुया वा ? तुल्ला वा ? विसेसाहिया वा ?

---

१. स० पा०—गोयमा जाव भोगी ।
२. × (अ), एव जाव (क, ब, म, स); पू० प० २ ।
३ कामीण भोगीण नोकामीण नोभोगीण य (क, ता) ।
४. स० पा०—कयरेहिंतो जाव विसेसाहिया ।

गोयमा ! सव्वत्थोवा जीवा कामभोगी, नोकामी नोभोगी अणतगुणा, भोगी अणतगुणा[१] ।।

दुब्बलसरीरस्स भोगपरिच्चाय-पदं

१४६. छउमत्थे ण भते ! मणूसे जे[२] भविए अण्णयरेसु देवलोएसु देवत्ताए उववज्जित्तए, से नूण भते ! से खीणभोगी नो पभू उट्ठाणेण, कम्मेण, बलेण, वीरिएण, पुरिसक्कार-परक्कमेण विउलाइ भोगभोगाइ भुजमाणे विहरित्तए ? से नूण भते ! एयमट्ठ एवं वयह[३] ?
गोयमा ! णो तिणट्ठे समट्ठे । पभू ण से उट्ठाणेण वि, कम्मेण वि, बलेण वि, वीरिएण वि, पुरिसक्कार-परक्कमेण वि अण्णयराइ विपुलाइ भोगभोगाइ भुजमाणे विहरित्तए, तम्हा भोगी, भोगे परिच्चयमाणे महानिज्जरे, महापज्जवसाणे भवइ ।।

१४७ आहोहिए[४] ण भते ! मणूसे जे भविए अण्णयरेसु देवलोएसु[५] •देवत्ताए उववज्जित्तए, से नूण भते ! से खीणभोगी नो पभू उट्ठाणेण, कम्मेण, बलेण, वीरिएण, पुरिसक्कार-परक्कमेण विउलाइ भोगभोगाइ भुजमाणे विहरित्तए ? से नूण भते ! एयमट्ठ एव वयह ?
गोयमा ! णो तिणट्ठे समट्ठे । पभू ण से उट्ठाणेण वि, कम्मेण वि, बलेण वि, वीरिएण वि, पुरिसक्कार-परक्कमेण वि अण्णयराइ विपुलाइ भोगभोगाइ भुजमाणे विहरित्तए, तम्हा भोगी, भोगे परिच्चयमाणे महानिज्जरे°, महापज्जवसाणे भवइ ।।

१४८ परमाहोहिए ण भते ! मणूसे जे भविए तेणेव[६] भवग्गहणेण सिज्झित्तए जाव[७] अत करेत्तए, से नूण भते ! से खीणभोगी[८] •नो पभू उट्ठाणेण, कम्मेण, बलेण वीरिएण पुरिसक्कार-परक्कमेण विउलाइ भोगभोगाइ भुजमाणे विहरित्तए ? से नूण भते ! एयमट्ठ एव वयह ?
गोयमा ! णो तिणट्ठे समट्ठे । पभू ण से उट्ठाणेण वि, कम्मेण वि, बलेण वि, वीरिएण वि, पुरिसक्कार-परक्कमेण वि अण्णयराइ विपुलाइ भोगभोगाइ भुजमाणे विहरित्तए, तम्हा भोगी, भोगे परिच्चयमाणे महानिज्जरे, महापज्जवसाणे भवइ° ।।

---

१ मणत० (ता) ।
२ मणुस्से (ता) ।
३ वदहा (ता, ब) ।
४ अहोहिएण (ता, ब) ।
५ स० पा०—एव चेव जहा छउमत्थे जाव महा° ।
६ तेण चेव (क, ता, ब, म) ।
७. भ० १।४४ ।
८ स० पा०—सेस जहा छउमत्थस्स ।

१४९. केवली णं भंते ! मणूसे जे भविए तेणेव भवग्गहणेणं[1] •सिज्झित्तए जाव[2] अंतं करेत्तए, से नूणं भंते ! से खीणभोगी नो पभू उट्ठाणेणं, कम्मेणं, बलेणं, वीरिएणं, पुरिसक्कार-परक्कमेणं विउलाइं भोगभोगाइं भुंजमाणे विहरित्तए ? से नूणं भंते ! एयमट्ठं एवं वयह ?
गोयमा ! णो तिणट्ठे समट्ठे । पभू णं से उट्ठाणेण वि, कम्मेण वि, बलेण वि, वीरिएण वि पुरिसक्कार-परक्कमेण वि अण्णयराइं विपुलाइं भोगभोगाइं भुंजमाणे विहरित्तए, तम्हा भोगी, भोगे परिच्चयमाणे महानिज्जरे°, महा-पज्जवसाणे भवति ।।

अकामनिकरण-वेदणा-पदं

१५०. जे इमे भंते ! असण्णिणो पाणा, तं जहा—पुढविकाइया जाव[3] वणस्सइकाइया, छट्ठा य एगतिया तसा—एए णं अंधा, मूढा, तमपविट्ठा, तमपडल-मोहजाल-पडिच्छन्ना अकामनिकरणं वेदणं वेदेंतीति वत्तव्वं सिया ?
हंता गोयमा ! जे इमे असण्णिणो पाणा जाव वेदणं वेदेंतीति वत्तव्वं सिया ।
१५१. अत्थि णं भंते ! पभू वि अकामनिकरणं वेदणं वेदेति ?
हंता ! अत्थि ।।
१५२. कहण्णं भंते ! पभू वि अकामनिकरणं वेदणं वेदेति ?
गोयमा ! जे णं नो पभू विणा पदीवेणं अंधकारंसि रूवाइं पासित्तए, जे णं नो पभू पुरओ रूवाइं अणिज्झाइत्ता णं पासित्तए, जे णं नो पभू मग्गओ रूवाइं अणवयक्खित्ता णं पासित्तए, जे णं नो पभू पासओ रूवाइं अणवलोएत्ता णं पासित्तए, जे णं नो पभू उड्ढं रूवाइं अणालोएत्ता णं पासित्तए, जे णं नो पभू अहे रूवाइं अणालोएत्ता णं पासित्तए, एस णं गोयमा ! पभू वि अकामनिकरणं वेदणं वेदेति ।।

पकामनिकरण-वेदणा-पदं

१५३. अत्थि णं भंते ! पभू वि पकामनिकरणं वेदणं वेदेति ?
हंता अत्थि ।।
१५२. कहण्णं भंते ! पभू वि पकामनिकरणं वेदणं वेदेति ?
गोयमा ! जे णं नो पभू समुद्दस्स पारं गमित्तए, जे णं नो पभू समुद्दस्स पार-गयाइं रूवाइं पासित्तए, जे णं नो पभू देवलोगं गमित्तए, जे णं नो पभू देव-

---

१. सं० पा०—एवं चेव जहा परमाहोहिए जाव महा° ।
२. भ० १।४४ ।
३. भ० १।४३७ ।

लोगगयाइ रूवाइ पासित्तए, एस ण गोयमा ! पभू वि पकामनिकरण वेदण वेदेति ॥
१५५. सेव भते ! सेव भते ! त्ति[1] ॥

अट्ठमो उद्देसो

मोक्ख-पदं

१५६ छउमत्थे ण भते ! मणूसे तीयमणत सासय समय केवलेण सजमेण, [2]•केवलेण सवरेण, केवलेण बभचेरवासेण, केवलाहि पवयणमायाहि सिज्झिसु ? बुज्झिसु ? मुच्चिसु ? परिणिव्वाइसु ? सव्वदुक्खाण अत करिसु ?
गोयमा ! नो इणट्ठे समट्ठे जाव[3]—
१५७ से नूण भते ! उप्पण्णणाण-दसणधरे अरहा जिणे केवली अलमत्थु त्ति वत्तव्व सिया ?
हता गोयमा ! उप्पण्णणाण-दसणधरे अरहा जिणे केवली अलमत्थु त्ति वत्तव्व सिया[4]° ॥

हत्थि-कुथु-जीव-समाणत्त-पद

१५८ से नूण भते ! हत्थिस्स य कुथुस्स य समे चेव जीवे ?
हता गोयमा ! हत्थिस्स य कुथुस्स य समे चेव जीवे ।
[5]•से नूण भते ! हत्थीओ कुथू अप्पकम्मतराए चेव अप्पकिरियतराए चेव अप्पासवतराए चेव एव अप्पाहारतराए चेव अप्पनीहारतराए चेव अप्पुस्सास-तराए चेव अप्पनीसासतराए चेव अप्पिड्ढितराए चेव अप्पमहतराए चेव अप्पज्जुइतराए चेव ?
कुथूओ हत्थी महाकम्मतराए चेव महाकिरियतराए चेव महासवतराए चेव महाहारतराए चेव महानीहारतराए चेव महाउस्सासतराए चेव महानीसास-तराए चेव महिड्ढितराए चेव महामहतराए चेव महज्जुइतराए चेव ?

---

१ भ० १।५१ ।
२ स० पा०—एव जहा पढमसए चउत्थे उद्देसए तहा भाणियव्व जाव अलमत्थु ।
३ भ० १।२०१-२०८ ।
४ तुलना—भ० १।२००-२०६, ५।११५ ।
५ स० पा०—एव जहा रायपसेणइज्जे जाव खुड्डिय ।

हता गोयमा हत्थीओ कुथू अप्पकम्मतराए चेव कुथूओ वा हत्थी महाकम्म-तराए चेव,
हत्थीओ कुथू अप्पकिरियतराए चेव कुथूओ वा हत्थी महाकिरियतराए चेव,
हत्थीओ कुथू अप्पासवतराए चेव कुथूओ वा हत्थी महासवतराए चेव,
एव आहार-नीहार-उस्सास-नीसास-इड्ढि-महज्जुइएहि हत्थीओ कुथू अप्पतराए चेव कुथूओ वा हत्थी महातराए चेव ॥

१५९ से केणट्ठेण भते ! एव वुच्चइ—हत्थिस्स य कुथुस्स य समे चेव जीवे ?
गोयमा ! से जहानामए कूडागारसाला सिया—दुहओ लित्ता गुत्ता गुत्तदुवारा निवाया निवायगभीरा। अह ण केइ पुरिसे जोइ व दीव व गहाय त कूडागारसाल अतो-अतो अणुपविसइ, तीसे कूडागारसालाए सव्वतो समता घण-निचिय-निरतर-निच्छिड्डाइ दुवार-वयणाइ पिहेति, तीसे कूडागारसालाए वहुमज्झदेसभाए त पईव पलीवेज्जा।
तए ण से पईवे त कूडागारसाल अतो-अतो ओभासइ उज्जोवेइ तवति पभासेइ, नो चेव ण वाहि।
अह ण से पुरिसे तं पईव इड्डरएण पिहेज्जा, तए णं से पईवे त इड्डरय अतो अतो ओभासेइ उज्जोवेइ तवति पभासेइ, नो चेव ण इड्डरगस्स वाहिं, नो चेव ण कूडागारसाल, नो चेव ण कूडागारसालाए वाहि।
एव—गोकिलिजेण पच्छियापिडएण गडमाणियाए आढएण अद्धाढएण पत्थएण अद्धपत्थएण कुलवेण अद्धकुलवेण चाउब्भाइयाए अट्ठभाइयाए सोलसियाए वत्तीसियाए चउसट्ठियाए।
अह ण पुरिसे त पईव दीवचपएण पिहेज्जा। तए ण से पदीवे दीवचपगस्स अतो-अतो ओभासति उज्जोवेइ तवति पभासेइ, नो चेव ण दीवचपगस्स बाहिं, नो चेव ण चउसट्ठियाए वाहि, नो चेव ण कूडागारसालं, नो चेव ण कूडागार-सालाए वाहि।
एवामेव गोयमा ! जीवे वि ज जारिसय पुव्वकम्मनिवद्ध वोदि निव्वत्तेइ त असखेज्जेहि जीवपदेसेहि सचित्तीकरेइ—खुड्डिय वा महालिय वा।° से तेणट्ठेण गोयमा[1] ! •एव वुच्चइ—हत्थिस्स य कुथुस्स य° समे चेव जीवे[2] ॥

सुह-दुक्ख-पदं

१६०. नेरइयाण भते ! पावे कम्मे जे य कडे, जे य कज्जइ, जे य कज्जिस्सइ सव्वे से दुक्खे, जे निज्जिण्णे से सुहे ?

---

१. म० पा०—गोयमा जाव समे।

२ एतच्च सर्वमपि वाचनान्तरे साक्षाल्लिखितमेव दृश्यते (वृ)।

हता गोयमा ! नेरइयाण पावे कम्मे[1] •जे य कडे, जे य कज्जइ, जे य कज्जिस्सइ सव्वे से दुक्खे, जे निज्जिण्णे से° सुहे। एवं जाव[2] वेमाणियाण ॥

दसविहसण्णा-पदं

१६१ कति ण भते ! सण्णाओ पण्णत्ताओ ?
गोयमा ! दस सण्णाओ पण्णत्ताओ, त जहा—आहारसण्णा, भयसण्णा, मेहुणसण्णा, परिग्गहसण्णा, कोहसण्णा, माणसण्णा, मायासण्णा, लोभसण्णा, लोगसण्णा, ओहसण्णा। एव जाव वेमाणियाण ॥

नेरइयाणं दसविहवेदणा-पदं

१६२ नेरइया दसविह वेयण पच्चणुभवमाणा विहरति, त जहा—सीय, उसिण, खुह, पिवास, कडु, परज्झ, जर, दाह, भय, सोग ॥

हत्थि-कुथूणं अपच्चक्खाणकिरिया-पद

१६३. से नूण भते ! हत्थिस्स य कुथुस्स य समा चेव अपच्चक्खाणकिरिया कज्जइ ?
हता गोयमा ! हत्थिस्स य कथुस्स य[3] •समा चेव अपच्चक्खाणकिरिया° कज्जइ ॥

१६४. से केणट्ठेण भते ! एव वुच्चइ[4]—•हत्थिस्स य कुथुस्स य समा चेव अपच्चक्खाणकिरिया° कज्जइ ?
गोयमा ! अविरतिं पडुच्च। से तेणट्ठेण[5] •गोयमा ! एव वुच्चइ—हत्थिस्स य कुथुस्स य समा चेव अपच्चक्खाणकिरिया° कज्जइ।

अहाकम्मादि-पदं

१६५ अहाकम्म ण भते ! भुजमाणे कि बधइ ? कि पकरेइ ? कि चिणाइ ? किं उवचिणाइ ?
[6]•गोयमा ! अहाकम्म ण भुजमाणे आउयवज्जाओ सत्त कम्मप्पगडीओ सिढिलबधणबद्धाओ धणियबधणबद्धाओ पकरेइ°[7] जाव सासए पडिए, पडियत्त असासय।

१६६ सेव भते ! सेव भते ! त्ति[8] ॥

---

१ स० पा०—कम्मे जाव सुहे।
२ पू० प० २।
३ स० पा०—कुथुस्स य जाव कज्जइ।
४ स० पा०—वुच्चइ जाव कज्जइ।
५ स० पा०—तेणट्ठेण जाव कज्जइ।
६ स० पा—एव जहा पढमे सए नवमे उद्देसए तहा भाणियव्व।
७ भ० १।४३६-४४०।
८ भ० १।५१।

नवमो उद्देसो

असंवुड-अणगारस्स विउव्वणा-पद

१६७ असवुडे ण भते ! अणगारे वाहिरए पोग्गले अपरियाइत्ता पभू एगवण्ण एगरूव विउव्वित्तए ?
णो इणट्ठे समट्ठे ।।

१६८. असवुडे ण भते ! अणगारे वाहिरए पोग्गले परियाइत्ता पभू एगवण्ण एगरूव[1] •विउव्वित्तए ?°
हता पभू ।।

१६९. से ण भते ! कि इहगए पोग्गले परियाइत्ता विकुव्वइ ? तत्थगए पोग्गले परियाइत्ता विकुव्वइ ? अण्णत्थगए पोग्गले परियाइत्ता विकुव्वइ ?
गोयमा ! इहगए पोग्गले परियाइत्ता विकुव्वइ, नो तत्थगए पोग्गले परियाइत्ता विकुव्वइ, नो अण्णत्थगए पोग्गले[2] •परियाइत्ता° विकुव्वइ ।
एव २ एगवण्ण अणेगरूव[3] ३ •अणेगवण्ण एगरूव ४ अणेगवण्णं अणेगरूव— चउभगो ।।

१७० असवुडे ण भते ! अणगारे वाहिरए पोग्गले अपरियाइत्ता पभू कालग पोग्गलं नीलगपोग्गलत्ताए परिणामेत्तए ? नीलग पोग्गल वा कालगपोग्गलत्ताए परिणामेत्तए ?
गोयमा ! नो इणट्ठे समट्ठे । परियाइत्ता पभू जाव[4]—

१७१. असवुडे ण भते ! अणगारे वाहिरए पोग्गले अपरियाइत्ता पभू निद्धपोग्गल लुक्खपोग्गलत्ताए परिणामेत्तए ? लुक्खपोग्गल वा निद्धपोग्गलत्ताए परिणामेत्तए ?
गोयमा ! नो इणट्ठे समट्ठे । परियाइत्ता पभू ।।

१७२ से ण भते कि इहगए पोग्गले परियाइत्ता परिणामेति ? तत्थगए पोग्गले परियाइत्ता परिणामेति ? अण्णत्थगए पोग्गले परियाइत्ता परिणामेति ?
गोयमा ! इहगए पोग्गले परियाइत्ता परिणामेति, नो तत्थगए पोग्गले परियाइत्ता परिणामेति, नो अण्णत्थगए पोग्गले परियाइत्ता परिणामेति° ।।

---

१. स० पा०—एगरूव जाव हता ।
२. म० पा०—पोग्गले जाव विकुव्वइ ।
३. म० पा०—चउभगो जहा छट्ठमए नवमे उद्देसए तहा इह वि भाणियव्व, नवर अणगारे इहगय च इहगते चेव पोग्गले परियाइत्ता विकुव्वइ, सेस त चेव जाव लुक्खपोग्गल निद्धपोग्गलत्ताए परिणामेत्तए । हता पभू । से भते ! किं इहगए पोग्गले परियाइत्ता जाव नो अण्णत्थगए पोग्गले परियाइत्ता विकुव्वइ ।
४. भ० ६।१६३-१६७ ।

महासिलाकंटयसंगाम-पदं

१७३ नायमेय अरहया, सुयमेय अरहया, विण्णायमेय अरहया—महासिलाकटए सगामे । महासिलाकटए ण भते [1] सगामे वट्टमाणे के जइत्था ? के पराजइत्था [1] ? गोयमा ! वज्जी, विदेहपुत्ते जइत्था [2], नव मल्लई, नव लेच्छई—कासी-कोसलगा अट्ठारस वि गणरायाणो पराजइत्था ।।

१७४ तए ण से कोणिए राया महासिलाकटग सगाम उवट्ठिय जाणित्ता कोडुबिय-पुरिसे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एव वयासी—खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया ! उदाइ [3] हत्थिराय पडिकप्पेह, हय-गय-रह-पवरजोहकलिय चाउरगिणि सेण सण्णाहेह, सण्णाहेत्ता मम एयमाणत्तिय खिप्पामेव पच्चप्पिणह ।।

१७५ तए ण ते कोडुवियपुरिसा कोणिएण रण्णा एव वुत्ता समाणा हट्ठतुट्ठचित्तमाणदिया जाव [4] मत्थए अजलि कट्टु एव सामी ! तहत्ति आणाए विणएण वयण पडिसुणति, पडिसुणित्ता खिप्पामेव छेयायरियोवएस-मति-कप्पणा-विकप्पेहि सुनिउणेहि [5] उज्जलणेवत्थ-हव्व-परिवच्छिय सुसज्ज जाव [6] भीम सगामिय अओज्झ [7] उदाइ हत्थिराय पडिकप्पेति, हय-गय [8]-•रह-पवरजोहकलिय चाउरगिणि सेण° सण्णाहेति, सण्णाहेत्ता जेणेव कूणिए राया तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता करयल [9]•परिग्गहिय दसनह सिरसावत्त मत्थए अजलि कट्टु° कूणियस्स रण्णो तमाणत्तिय पच्चप्पिणति ।।

१७६. तए ण से कूणिए राया जेणेव मज्जणघर तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता मज्जणघर अणुप्पविसइ, अणुप्पविसित्ता ण्हाए कयबलिकम्मे कयकोउय-मगल-पायच्छित्ते सव्वालकारविभूसिए सण्णद्ध-बद्ध-वम्मियकवए उप्पीलियसरासण-पट्टिए [10] पिणद्धगेवेज्ज [11]-विमलवरवद्धचिधपट्टे गहियाउहप्पहरणे सकोरेटमल्ल-दामेण छत्तेण धरिज्जमाणेण चउचामरवालवीजियगे [12] मगलजयसद्दकयालोए [13] जाव [14] जेणेव उदाई हत्थिराया तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता उदाइ हत्थिराय दुरूढे ।।

---

१ पराजितत्था (ता) ।
२ जदित्था (क, ता) ।
३ उदायिं (क, ता, व, म); उदातिं (स) ।
४ भ० ३।११० ।
५ सुणिउणेहिं एव जहा ओववाइए जाव (अ, क, ता, व, म, स) । वाचनान्तरे त्विद-साक्षाल्लिखितमेव दृश्यते (वृ) ।
६ ओ० सू० ५७ ।
७ अउज्झ (व, स) ।
८ स० पा०—गय जाव सण्णाहेति ।
९ स० पा०—करयल जाव कूणियस्स ।
१०. °पट्टीए (अ, क, व, म, स) ।
११ पिणिद्ध० (ता, म, स) ।
१२ °वीतियगे (अ, स), °वीतितगे (क, व) ।
१३ जत° (व), °कयलोए एव जहा उववाइए (अ, क, ता, व, म, स) ।
१४ ओ० सू० ६३ ।

१७७. तए ण से कूणिए राया[1] हारोत्थय-सुकय-रइयवच्छे[2] जाव[3] सेयवरचामराहिं उद्धुव्वमाणीहिं-उद्धुव्वमाणीहिं हय-गय-रह-पवरजोहकलियाए चाउरंगिणीए सेणाए सद्धि संपरिवुडे महयाभडचडगरविंदपरिक्खित्ते जेणेव महासिलाकटए सगामे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता महासिलाकटग सगाम ओयाए । पुरओ य से सक्के देविदे देवराया एग मह अभेज्जकवय वइरपडिरूवग विउव्वित्ता ण चिट्ठइ । एव खलु दो इदा सगाम सगामेंति, त जहा—देविंदे य, मणुइदे य । 'एगहत्थिणा वि ण पभू कूणिए राया जइत्तए'[4], एगहत्थिणा वि ण पभू कूणिए राया पराजिणित्तए ॥

१७८ तए ण से कूणिए राया महासिलाकटग सगाम सगामेमाणे नव मल्लई, नव लेच्छई—कासी-कोसलगा अट्ठारस वि गणरायाणो हय-महिय-पवरवीर-घाइय-विवडियचिंध-द्धयपडागे किच्छपाणगए[5] दिसोदिसिं पडिसेहित्था ॥

१७९ से केणट्ठेण भते ! एव वुच्चइ—महासिलाकटए सगामे ?
गोयमा ! महासिलाकटए ण सगामे वट्टमाणे जे तत्थ आसे वा हत्थी वा जोहे वा सारही वा तणेण वा कट्ठेण वा पत्तेण वा सक्कराए वा अभिहम्मति, सव्वे से जाणेइ महासिलाए अह[6] अभिहए । से तेणट्ठेण गोयमा ! एव वुच्चइ—महासिलाकटए सगामे ॥

१८०. महासिलाकटए ण भंते ! सगामे वट्टमाणे कति जणसयसाहस्सीओ वहियाओ ?
गोयमा ! चउरासीइ जणसयसाहस्सीओ वहियाओ ॥

१८१ ते ण भते ! मणुया निस्सीला[7] °निग्गुणा निम्मेरा° निप्पच्चक्खाणपोसहोववासा रुट्ठा परिकुविया समरवहिया अणुवसता कालमासे काल किच्चा कहिं गया ? कहिं उववण्णा ?
गोयमा ! उस्सण्ण नरग-तिरिक्खजोणिएसु उववण्णा ॥

रहमुसलसंगाम-पद

१८२ नायमेय अरहया, सुवमेय अरहया, विण्णायमेय अरहया—रहमुसले सगामे[8] ।
रहमुसले ण भते ! सगामे वट्टमाणे के जइत्था ? के पराजइत्था ?
गोयमा ! वज्जी, विदेहपुत्ते, चमरे असुरिंदे असुरकुमारराया जइत्था; नव मल्लई, नव लेच्छई पराजइत्था ॥

---

१ णरिंदे (क, ता, व, म)।
२ °वच्छे एव जहा उववाइए (अ, क, ता, ब, म, स) ।
३ ओ० सू० ६५ ।
४. × (अ, व, म, स) ।
५. किच्छोवगयपाणे (ना० १।८।१६६) ।
६. ह (क, व, म) ।
७ म० पा०—निस्सीला जाव निप्पच्चक्खाण ।
८ सगामे रह २ (ता) ।

१८३. तए णं से कूणिए राया रहमुसल सगाम उवट्ठिय[1] •जाणित्ता कोडुबियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एव वयासी—खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया ! भूयाणद हत्थिरायं पडिकप्पेह, हय-गय-रह-पवरजोहकलिय चाउरगिणि सेण सण्णाहेह, सण्णाहेत्ता मम एयमाणत्तिय खिप्पामेव पच्चप्पिणह ।।

१८४ तए ण ते कोडुवियपुरिसा कोणिएणं रण्णा एव वुत्ता समाणा हट्ठतुट्ठचित्तमाणदिया जाव[2] मत्थए अजलि कट्टु एव सामी ! तहत्ति आणाए विणएण वयण पडिसुणति, पडिसुणित्ता खिप्पामेव छेयायरियोवएस-मति-कप्पणा-विकप्पेहि सुनिउणेहि उज्जलणेवत्थ-हव्वपरिवच्छिय सुसज्ज जाव[3] भीम सगामिय अओज्झ भूयाणद हत्थिराय पडिकप्पेति, हय-गय-रह-पवरजोहकलिय चाउरगिणि सेण सण्णाहेति, सण्णाहेत्ता जेणेव कूणिए राया तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता करयलपरिग्गहिय दसनह सिरसावत्त मत्थए अजलि कट्टु कूणियस्स रण्णो तमाणत्तिय पच्चप्पिणति ।।

१८५ तए ण से कूणिए राया जेणेव मज्जणघर तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता मज्जणघर अणुप्पविसइ, अणुप्पविसित्ता ण्हाए कयवलिकम्मे कयकोउय-मगल-पायच्छित्ते सव्वालकारविभूसिए सण्णद्ध-वद्ध-वम्मियकवए उप्पीलियसरासण-पट्टिए पिणद्धगेवेज्ज-विमलवरवद्धचिंधपट्टे गहियाउहप्पहरणे सकोरेंटमल्लदामेण छत्तेण धरिज्जमाणेण चउचामरवालवीजियगे, मगलजयसद्दकयालोए जाव[4] जेणेव भूयाणदे हत्थिराया तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता भूयाणद हत्थिराय दुरूढे ।।

१८६ तए ण से कूणिए राया हारोत्थय-सुकय-रइयवच्छे जाव[5] सेयवरचामराहिं उद्धुव्वमाणीहि-उद्धुव्वमाणीहिं हय-गय-रह-पवरजोहकलियाए चाउरगिणीए सेणाए सद्धि सपरिवुडे महयाभडचडगरविंदपरिक्खित्ते जेणेव रहमुसले सगामे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता रहमुसल सगाम ओयाए। पुरओ य से सक्के देविंदे देवराया एग मह अभेज्जकवय वइरपडिरूवग विउव्वित्ता ण चिट्ठइ• । मग्गओ य से चमरे असुरिंदे असुरकुमारराया[6] एग मह आयस किढिणपडिरूवग[7] विउव्वित्ता ण चिट्ठइ । एव खलु तओ इदा सगाम सगामेंति, त जहा—देविंदे य, मणुइदे य, असुरिदे य । एगहत्थिणा वि ण पभू कूणिए राया जइत्तए[8],

---

१ स० पा०—सेस जहा महासिलाकटए नवर भूयाणदे हत्थिराया जाव रहमुसल सगाम ओयाए। पुरओ य से सक्के देविंदे देवराया एव तहेव जाव चिट्ठइ ।

२ ३।११० ।

३ ओ० सू० ५७ ।

४. ओ० सू० ६३ ।

५. ओ सू० ६५ ।

६. असुरराया (अ, स) ।

७ कढिण० (अ), किड्ढिण० (क, स) ।

८ स० पा०—तहेव जाव दिसोदिसिं ।

•एगहत्थिणा वि ण पभू कूणिए राया पराजिणित्तए ।।

१८७ तए ण से कूणिए राया रहमुसल सगाम सगामेमाणे नव मल्लई, नव लेच्छई—कासी-कोसलगा अट्ठारस वि गणरायाणो हय-महिय-पवरवीर-घाइय-विवडियचिंध-द्धयपडागे किच्छपाणगए° दिसोदिसिं पडिसेहित्था ।।

१८८ से केणट्ठेण भते ! एव वुच्चइ—रहमुसले सगामे ?
गोयमा ! रहमुसले ण सगामे वट्टमाणे एगे रहे अणासए, असारहिए, अणारोहए, समुसले महया जणक्खय, जणवह, जणप्पमद्द, जणसवट्टकप्प रुहिरकद्दम करेमाणे सव्वओ समता परिधावित्था । से तेणट्ठेण[1] •गोयमा ! एव वुच्चइ°—रहमुसले सगामे ।।

१८९ रहमुसले ण भते ! सगामे वट्टमाणे कति जणसयसाहस्सीओ वहियाओ ?
गोयमा ! छण्णउति जणसयसाहस्सीओ वहियाओ ।।

१९० ते ण भते ! मणुया निस्सीला[2] •निग्गुणा निम्मेरा निप्पच्चक्खाणपोसहोववासा रुट्ठा परिकुविया समरवहिया अणुवसता कालमासे काल किच्चा कहिं गया ? कहिं° उववन्ना ?
गोयमा ! तत्थ ण दससाहस्सीओ एगाए मच्छियाए[3] कुच्छिसि उववन्नाओ । एगे देवलोगेसु उववन्ने । एगे सुकुले पच्चायाए । अवसेसा उस्सण्ण नरग-तिरिक्खजोणिएसु उववन्ना ।।

१९१ कम्हा ण भते ! सक्के देविंदे देवराया, चमरे य असुरिंदे असुरकुमारराया कूणियस्स रण्णो साहेज्ज[4] दलइत्था ?
गोयमा ! सक्के देविंदे देवराया पुव्वसगतिए, चमरे असुरिंदे असुरकुमारराया परियायसगतिए । एव खलु गोयमा ! सक्के देविंदे देवराया, चमरे य असुरिंदे असुरकुमारराया कूणियस्स रण्णो साहेज्ज दलइत्था ।।

वरुण-नागनत्तुय-पद

१९२ बहुजणे ण भते ! अण्णमण्णस्स एवमाइक्खइ जाव[5] परूवेइ—एव खलु बहवे मणुस्सा अण्णयरेसु उच्चावएसु सगामेसु 'अभिमुहा चेव पहया'[6] समाणा कालमासे काल किच्चा अण्णयरेसु देवलोएसु देवत्ताए उववत्तारो भवति ।।

१९३ से कहमेय भते ! एव ?
गोयमा ! जण्ण से बहुजणे अण्णमण्णस्स एवमाइक्खइ[7] •जाव[8] परूवेइ—एवं

---

१ स० पा०—तेणट्ठेण जाव रह° ।
२ स० पा०—निस्सीला जाव उववन्ना ।
३ मच्छीए (म) ।
४. साहिज्ज (क), साहज्ज (ता, म) ।
५. भ० १।४२० ।
६ अभिहता चेव पहता (क, स), अभिहया (ता)
७ स० पा०—एवमाइक्खइ जाव उववत्तारो ।
८ भ० १।४२० ।

खलु वहवे मणुस्सा अण्णयरेसु उच्चावएसु सगामेसु अभिमुहा चेव पहया समाणा कालमासे काल किच्चा अण्णयरेसु देवलोएसु देवत्ताए° उववत्तारो भवति, जे ते एवमाहसु मिच्छं ते एवमाहसु। अह पुण गोयमा! एवमाइक्खामि जाव[1] परूवेमि—एव खलु गोयमा! तेण कालेण तेण समएण वेसाली नाम नगरी होत्था—वण्णओ[2]। तत्थ णं वेसालीए नगरीए वरुणे नाम नागनत्तुए परिवसइ—अड्ढे जाव[3] अपरिभूए, समणोवासए, अभिगयजीवाजीवे जाव[4] समणे निग्गथे फासु-एसणिज्जेण असण-पाण-खाइम-साइमेण वत्थ-पडिग्गह-कवल-पायपुछणेण पीढ-फलग-सेज्जा-सथारएण 'ओसह-भेसज्जेण'[5] पडिलाभेमाणे छट्ठछट्ठेण अणिखित्तेण तवोकम्मेण अप्पाण भावेमाणे विहरति॥

१९४ तए ण से वरुणे नागनत्तुए अण्णया कयाइ रायाभिओगेण[6], गणाभिओगेण, वलाभिओगेण रहमुसले सगामे आणत्ते समाणे छट्ठभत्तिए अट्ठमभत्त अणुवट्टेति, अणुवट्टेत्ता कोडुबियपुरिसे[7] सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एव वयासी—खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया! चाउग्घट आसरह जुत्तामेव[8] उवट्ठावेह[9], हय-गय-रह-पवर[10]-•जोहकलिय चाउरगिणि सेण सण्णाहेह°, सण्णाहेत्ता मम एयमाणत्तिय पच्चप्पिणह॥

१९५ तए ण ते कोडुबियपुरिसा जाव[11] पडिसुणेत्ता खिप्पामेव सच्छत्त सज्झय जाव[12] चाउग्घट आसरह जुत्तामेव उवट्ठावेति, हय-गय-रह[13]-•पवरजोहकलिय चाउरगिणि सेण° सण्णाहेति, सण्णाहेत्ता जेणेव वरुणे नागनत्तुए तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता जाव[14] तमाणत्तिय पच्चप्पिणति॥

१९६ तए ण से वरुणे नागनत्तुए जेणेव मज्जणघरे तेणेव उवागच्छति, [15]•उवागच्छित्ता मज्जणघर अणुप्पविसइ, अणुप्पविसित्ता ण्हाए कयवलिकम्मे कयकोउय-मगल-पायच्छित्ते सव्वालकारविभूसिए सण्णद्ध-वद्ध-वम्मियकवए[16] सकोरेटमल्ल[17]-

---

१ भ० १।४२१।
२ ओ० सू० १।
३ भ० २।९४।
४ भ० २।९४।
५ वृत्तौ उद्धृते पाठे एतन्नास्ति। भ० २।९४ सूत्रादसौ पाठ पूरितस्तत्रापि 'क' प्रतौ एतत नास्ति।
६ रायाहियोगेण (अ, स), रायनियोगेण (ता)
७. कोदुविय° (ता), कोटुविय° (स)।
८ युक्तमेव रथसामग्र्या इति गम्यम् (वृ)।
९ उवट्ठवेह (अ)।
१० स० पा०—पवर जाव सण्णाहेत्ता।
११ भ० ७।१७५।
१२ राय० सू० ६८१, वाचनान्तरे तु साक्षादेव दृश्यते (वृ)।
१३ स० पा०—रह जाव सण्णाहेति।
१४ भ० ७।१७५।
१५ स० पा०—जहा कूणिओ जाव पायच्छित्ते।
१६ पू० भ० ७।१७६।
१७ स० पा०—सकोरेटमल्ल जाव धरिज्ज°।

•दामेण छत्तेण° धरिज्जमाणेण, अणेगगणनायग[1]-•दडनायग-राईसर-तलवर-माडविय-कोडुविय-इब्भ-सेट्ठि-सेणावइ-सत्थवाह°-दूय-सधिपालसद्धि[2] सपरिवुडे मज्जणघराओ पडिनिक्खमति, पडिनिक्खमित्ता जेणेव बाहिरिया उवट्ठाणसाला, जेणेव चाउग्घटे आसरहे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता चाउग्घंट आसरह दुरुहइ[3], दुरुहित्ता हय-गय-रह[4]-•पवरजोहकलियाए चाउरगिणीए सेणाए सद्धि° सपरिवुडे, महयाभडचडगरविंदपरिक्खित्ते जेणेव रहमुसले सगामे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता रहमुसल सगाम ओयाए ॥

१९७ तए ण से वरुणे नागनत्तुए रहमुसल सगाम ओयाए समाणे अयमेयारूव अभिग्गह अभिगेण्हइ—कप्पति मे रहमुसल सगाम सगामेमाणस्स जे पुव्वि पहणइ से पडिहणित्तए[6], अवसेसे नो कप्पतीति, अयमेयारूव अभिग्गह अभिगेण्हइ अभिगेण्हेत्ता रहमुसल सगाम सगामेति ॥

१९८ तए ण तस्स वरुणस्स नागनत्तुयस्स रहमुसल सगाम सगामेमाणस्स एगे पुरिसे सरिसए 'सरित्तए सरिव्वए'[7] सरिसभडमत्तोवगरणे रहेण पडिरह हव्वमागए ॥

१९९ तए ण से पुरिसे वरुण नागनत्तुय एव वदासी—पहण भो वरुणा ! नागनत्तुया ! पहण भो वरुणा ! नागनत्तुया !

२००. तए ण से वरुणे नागनत्तुए त पुरिस एव वदासी—नो खलु मे कप्पइ देवाणुप्पिया ! पुव्वि अहयस्स पहणित्तए, तुम चेव ण पुव्वि पहणाहि ॥

२०१ तए ण से पुरिसे वरुणेण नागनत्तुएण एव वुत्ते समाणे आसुरुत्ते[8] •रुट्ठे कुविए चडिक्किए° मिसिमिसेमाणे धणु परामुसइ, परामुसित्ता उसु परामुसइ, परामुसित्ता ठाण ठाति, ठिच्चा आययकण्णायय उसु करेइ, करेत्ता वरुण नागनत्तुय गाढप्पहारीकरेइ ॥

२०२ तए ण से वरुणे नागनत्तुए तेण पुरिसेण गाढप्पहारीकए समाणे आसुरुत्ते[9] •रुट्ठे कुविए चडिक्किए° मिसिमिसेमाणे धणु परामुसइ, परामुसित्ता उसु परामुसइ, परामुसित्ता आययकण्णायय उसु करेइ, करेत्ता त पुरिस एगाहच्च कूडाहच्च जीवियाओ ववरोवेइ ॥

२०३ तए ण से वरुणे नागनत्तुए तेण पुरिसेण गाढप्पहारीकए समाणे अत्थामे अबले अवीरिए अपुरिसक्कारपरक्कमे अधारणिज्जमिति कट्टु तुरए निगिण्हइ, निगिण्हित्ता रह परावत्तेइ, परावत्तेत्ता रहमुसलाओ सगामाओ पडिनिक्खमति,

---

१. स० पा०—अणेगगणनायग जाव दूय ।
२ सधिवाल० (अ, क, व, म), सधिवालग० (ता) ।
३ द्रुहेति (क), द्रुहति (ता, व) ।
४. स० पा०—रह जाव सपरिवुडे ।
५. °गर जाव परिक्खित्ते (अ, क, ता, ब, म, स)
६. पडिपह० (ता) ।
७. सरिसत्तए सरिसव्वए (क) ।
८ स० पा०—आसुरुत्ते जाव मिसि° ।
९ स० पा०—आसुरुत्ते जाव मिसि० ।

पडिनिक्खमित्ता एगतमत[1] अवक्कमइ, अवक्कमित्ता तुरए निगिण्हइ, निगिण्हित्ता रह ठवेइ, ठवेत्ता रहाओ पच्चोरुहइ, पच्चोरुहित्ता तुरए मोएइ, मोएत्ता तुरए विसज्जेइ, विसज्जेत्ता दब्भसथारग सथरइ, सथरित्ता दब्भसथारग दुरुहइ, दुरुहित्ता पुरत्थाभिमुहे सपलियकनिसण्णे करयल[2]•परिग्गहिय दसनह सिरसावत्त मत्थए अजलि° कट्टु एव वयासी—नमोत्थु ण अरहताण भगवताण जाव[3] सिद्धिगतिनामधेय ठाण सपत्ताण, नमोत्थु ण समणस्स भगवओ महावीरस्स आदिगरस्स जाव[4] सिद्धिगतिनामधेय ठाण सपाविउकामस्स मम धम्मायरियस्स धम्मोवदेसगस्स, वदामि ण भगवत तत्थगय इहगए, पासउ[5] मे से भगव तत्थगए[6]•इहगय ति कट्टु° वदइ नमसइ, वदित्ता नमसित्ता एव वयासी—पुव्विं पि ण मए समणस्स भगवओ महावीरस्स अतिए थूलए पाणाइवाए पच्चक्खाए जावज्जीवाए, एव जाव[7] थूलए परिग्गहे पच्चक्खाए जावज्जीवाए, इयाणि पि ण अह तस्सेव भगवओ महावीरस्स अतिए सव्व पाणाइवाय पच्चक्खामि जावज्जीवाए•[8] जाव[9] मिच्छादसणसल्ल पच्चक्खामि जावज्जीवाए। सव्व असण-पाण-खाइम-साइम—चउव्विह पि आहार पच्चक्खामि जावज्जीवाए। ज पि य इम सरीर इट्ठ कत पिय जाव[10] मा ण वाइय-पित्तिय-सेभिय-सण्णिवाइय विविहा रोगायका परीसहोवसग्गा फुसतु त्ति कट्टु° एय पि ण चरिमेहि ऊसास-नीसासेहिं वोसिरिस्सामि त्ति कट्टु सण्णाहपट्ट मुयइ, मुइत्ता सल्लुद्धरण करेइ, करेत्ता आलोइय-पडिक्कते समाहिपत्ते आणुपुव्वीए[11] कालगए ॥

वरुणनागनत्तुय-मित्त-पद

२०४ तए ण तस्स वरुणस्स नागनत्तुयस्स एगे पियबालवयसए रहमुसल सगाम सगामेमाणे एगेण पुरिसेण गाढप्पहारीकए समाणे अत्थामे[12] •अबले अवीरिए अपुरिसक्कारपरक्कमे° अधारणिज्जमिति कट्टु वरुण नागनत्तुय रहमुसलाओ सगामाओ पडिनिक्खममाण पासइ, पासित्ता तुरए निगिण्हइ, निगिण्हित्ता जहा वरुणे जाव[13] तुरए विसज्जेति, पडसथारग दुरुहइ, दुरुहित्ता पुरत्थाभिमुहे[14]

---

१ एगत (क)।
२ स० पा०—करयल जाव कट्टु।
३ ओ० सू० २१।
४. ओ० सू० २१।
५. पासइ (ता)।
६. स० पा०—तत्थगए जाव वदइ।
७. भ० ७।३२।
८ स० पा०—एव जहा खदओ जाव एव।
९ भ० १।३८४।
१०. भ० २।५२।
११ पुव्विं (ता)।
१२ स० पा०—अत्थामे जाव अधारणिज्जमिति
१३. भ० ७।२०३।
१४. स० पा०—पुरत्थाभिमुहे जाव अजलि।

•सपलियकनिसण्णे करयलपरिग्गहियं दसनहं सिरसावत्तं मत्थए° अंजलिं कट्टु एवं वयासी—जाइं णं भंते ! मम पियबालवयंसस्स वरुणस्स नागनत्तुयस्स सीलाइं वयाइं गुणाइं वेरमणाइं पच्चक्खाण-पोसहोववासाइं, ताइं णं 'मम पि'[1] भवंतु त्ति कट्टु सण्णाहपट्टं मुयइ[2], मुइत्ता सल्लुद्धरणं करेइ, करेत्ता आणुपुव्वीए कालगए ॥

२०५ तए णं तं वरुणं नागनत्तुयं कालगयं जाणित्ता अहासन्निहिएहिं वाणमंतरेहिं देवेहिं दिव्वे सुरभिगंधोदगवासे वुट्ठे, दसद्धवण्णे कुसुमे निवातिए[3], दिव्वे य गीय-गंधव्वनिनादे कए यावि होत्था ॥

२०६ तए णं तस्स वरुणस्स नागनत्तुयस्स तं दिव्वं देविड्ढिं दिव्वं देवज्जुतिं दिव्वं देवाणुभागं सुणित्ता य पासित्ता य बहुजणो अण्णमण्णस्स एवमाइक्खइ जाव[4] परूवेइ—एवं खलु देवाणुप्पिया ! बहवे मणुस्सा[5] •अण्णयरेसु उच्चावएसु संगामेसु अभिमुहा चेव पहया समाणा कालमासे कालं किच्चा अण्णयरेसु देवलोएसु देवत्ताए° उववत्तारो भवंति ॥

२०७ वरुणे णं भंते ! नागनत्तुए कालमासे कालं किच्चा कहिं गए ? कहिं उववन्ने ? गोयमा ! सोहम्मे कप्पे, अरुणाभे विमाणे देवत्ताए उववन्ने । तत्थ णं अत्थेगतियाणं देवाणं चत्तारि पलिओवमाइं ठिती पण्णत्ता । तत्थ णं वरुणस्स वि देवस्स चत्तारि पलिओवमाइं ठिती पण्णत्ता ॥

२०८ से णं भंते ! वरुणे देवे ताओ देवलोगाओ आउक्खएणं, भवक्खएणं, ठिइक्खएणं[6] •अणंतरं चयं चइत्ता कहिं गच्छिहिति ? कहिं उववज्जिहिति ?
गोयमा ! महाविदेहे वासे सिज्झिहिति बुज्झिहिति मुच्चिहिति परिणिव्वाहिति सव्वदुक्खाणं° अंतं करेहिति ॥

२०९ वरुणस्स णं भंते ! नागनत्तुयस्स पियबालवयंसए कालमासे कालं किच्चा कहिं गए ? कहिं उववन्ने ?
गोयमा ! सुकुले पच्चायाते ॥

२१० से णं भंते ! तओहिंतो अणंतरं उव्वट्टित्ता कहिं गच्छिहिति ? कहिं उववज्जिहिति ?
गोयमा ! महाविदेहे वासे सिज्झिहिति जाव[7] अंतं काहिति ॥

२११ सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति[8] ॥

---

१. मम वि (ब) ।
२. ओमुयति (अ, क, ता, ब) ।
३. निवाडिते (अ, क, ता) ।
४ भ० १।४२० ।
५ सं० पा०—मणुस्सा जाव उववत्तारो ।
६ सं० पा०—ठिइक्खएणं जाव महाविदेहे वासे सिज्झिहिति जाव अंतं ।
७. भ० ७।२०८ ।
८ भ० १।५१ ।

दसमो उद्देसो

कालोदाइ-पभितीण पचत्थिकाए संदेह-पद

२१२ तेण कालेण तेण समएण रायगिहे नाम नगरे होत्था—वण्णओ[1]। गुणसिलए चेइए—वण्णओ जाव[2] पुढविसिलापट्टओ। तस्स ण गुणसिलयस्स चेइयस्स अदूरसामते वहवे अण्णउत्थिया परिवसति, त जहा—कालोदाई, सेलोदाई, सेवालोदाई[3], उदए, नामुदए[4], नम्मुदए, अण्णवालए, सेलवालए[5], सखवालए, सुहत्थी गाहावई।।

२१३ तए ण तेसि अण्णउत्थियाण अण्णया कयाइ[6] एगयओ सहियाण[7] समुवागयाण सण्णिविट्ठाण सण्णिसण्णाण अयमेयारूवे[8] मिहोकहासमुल्लावे समुप्पज्जित्था—एव खलु समणे नायपुत्ते पच अत्थिकाए पण्णवेति, त जहा—धम्मत्थिकाय जाव पोग्गलत्थिकाय[9]।

तत्थ ण समणे नायपुत्ते चत्तारि अत्थिकाए अजीवकाए पण्णवेति, त जहा—धम्मत्थिकाय, अधम्मत्थिकाय, 'आगासत्थिकाय, पोग्गलत्थिकाय'[10]। एग च ण समणे नायपुत्ते जीवत्थिकाय अरूविकाय जीवकाय पण्णवेति।

तत्थ ण समणे नायपुत्ते चत्तारि अत्थिकाए अरूविकाए पण्णवेति, त जहा—धम्मत्थिकाय, अधम्मत्थिकाय, आगासत्थिकाय, जीवत्थिकायं। एग च ण समणे नायपुत्ते पोग्गलत्थिकाय रूविकाय अजीवकाय पण्णवेति। से कहमेय मण्णे एव?

२१४ तेण कालेण तेण समएणं समणे भगव महावीरे जाव[11] गुणसिलए चेइए समोसढे जाव[12] परिसा पडिगया।।

---

१ ओ० सू० १।
२. ओ० सू० २-१३।
३ सेवलो° (ता)।
४ णामुए (ता), णोमुदए (व)।
५ × (अ, ता, म)।
६ कयाई (क), कदायी (ता, व, म), कयाइ (स)।
७ × (क, ता, व, म, स)।
८. अतमेतारूवे (ता)।
९. आगासत्थिकाय (अ, क, ता, व, म, स), भ० ७।२११८ सूत्रे कालोदायिना प्रतिपादितस्य भगवत सिद्धान्तस्य भगवता स्ववचनेन स्वीकृति क्रियते। तत्र 'त सच्चे ण एसमट्ठे कालोदाई! अह पचत्थिकाय पण्णवेमि, त जहा—धम्मत्थिकाय जाव पोग्गलत्थिकाय' एतदनुसारेण एष पाठो युक्तोस्ति, तेन एतदनुसारेणासौ स्वीकृत।
१० पोग्गलत्थिकाय आगासत्थिकाय (ता)।
११. भ० १।७।
१२. भ० १।८।

२१५ तेण कालेण तेण समएण समणस्स भगवओ महावीरस्स जेट्ठे अंतेवासी इदभूई नाम अणगारे 'गोयमे गोत्तेण'[1] जाव[2] भिक्खायरियाए अडमाणे अहापज्जतं भत्त-पाण पडिग्गाहित्ता रायगिहाओ[3] •नगराओ पडिनिक्खमइ, अतुरियमचवलमसभत[4] जुगतरपलोयणाए दिट्ठीए पुरओ° रियं सोहेमाणे-सोहेमाणे तेसिं अण्णउत्थियाण अदूरसामतेण वीईवयति ॥

२१६ तए ण ते अण्णउत्थिया भगव गोयम अदूरसामतेण वीईवयमाण पासति, पासित्ता अण्णमण्ण सद्दावेति, सद्दावेत्ता एव वयासी—एव खलु देवाणुप्पिया ! अम्हं इमा कहा अविप्पकडा[5], अय च ण गोयमे अम्ह अदूरसामंतेण वीईवयइ, त सेय खलु देवाणुप्पिया ! अम्ह गोयम एयमट्ठ पुच्छित्तए त्ति कट्टु अण्णमण्णस्स अतिए एयमट्ठ पडिसुणंति, पडिसुणित्ता जेणेव भगव गोयमे तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता भगव गोयम एव वयासी—एव खलु गोयमा ! तव धम्मायरिए धम्मोवदेसए समणे नायपुत्ते पच अत्थिकाए पण्णवेति, त जहा—धमत्थिकाय जाव पोग्गलत्थिकाय[6]। त चेव जाव[7] रूविकाय अजीवकाय पण्णवेति। से कहमेय गोयमा ! एव ?

कालोदाइस्स समाहाणपुव्वं पव्वज्जा-पद

२१७ तए ण से भगव गोयमे ते अण्णउत्थिए एव वयासी—नो खलु वय देवाणुप्पिया ! अत्थिभाव नत्थि त्ति वदामो, नत्थिभावं अत्थि त्ति वदामो। अम्हे ण देवाणुप्पिया ! सव्व अत्थिभाव अत्थि त्ति वदामो, सव्वं नत्थिभाव नत्थि त्ति वदामो। त चेयसा[8] खलु तुब्भे देवाणुप्पिया ! एयमट्ठ सयमेव पच्चुवेक्खह त्ति कट्टु ते अण्णउत्थिए एव वदासी[9], वदित्ता जेणेव गुणसिलए चेइए, जेणेव समणे भगव महावीरे तेणेव उवागच्छइ जाव[10] भत्त-पाण पडिदसेति, पडिदसेत्ता समण भगव महावीर वंदइ नमसइ, वदित्ता नमसित्ता नच्चासण्णे जाव[11] पज्जुवासति ॥

२१८ तेण कालेण तेण समएण समणे भगवं महावीरे महाकहापडिवण्णे या वि होत्था। कालोदाई य तं देस हव्वमागए। कालोदाईति ! समणे भगव महावीरे कालोदाइ

---

१. गोयमगोत्ते ण (अ, ता)।
२. एव जहा वितियसते णियठुद्देसए जाव (अ, क, ता, व, म, स); भ० २।१०६-१०६।
३ स० पा०—रायगिहाओ जाव अतुरियमचवलमसभंत जाव रियं।
४. भ० २।११० सूत्रे '°मसभते' इति पाठ स्वीकृतोस्ति।
५. अविउप्पकडा (अ, क, व, म, वृपा)।
६. आगासत्थिकाय (अ, क, व, म, स)।
७ भ० ७।२१३।
८ वेदसा (अ, ता, म, वृपा)।
९ वदति (ता, व, म)।
१० एवं जहा नियठुद्देसए जाव (अ, क, ता, व, म, स), भ० २।११०।
११ भ० ३।१३।

एव वयासी—से नूण भे कालोदाई ! अण्णया कयाइ एगयओ सहियाण समुवागयाण सण्णिविट्ठाण सण्णिसण्णाण अयमेयारूवे मिहोकहासमुल्लावे समुप्पज्जित्था—एव खलु समणे नायपुत्ते पच अत्थिकाए पण्णवेति तहेव जाव[1] से कहमेय मण्णे एव ? से नूण कालोदाई ! अत्थे समत्थे ?

हता अत्थि । त सच्चे ण एसमट्ठे कालोदाई ! अह पचत्थिकाय पण्णवेमि, त जहा—धम्मत्थिकाय जाव पोग्गलत्थिकाय ।

तत्थ ण अह चत्तारि अत्थिकाए अजीवकाए[2] पण्णवेमि, [3]°तं जहा—धम्मत्थिकाय, अधम्मत्थिकायं, आगासत्थिकाय, पोग्गलत्थिकाय । एग च ण अह जीवत्थिकाय अरूवीकाय जीवकाय पण्णवेमि ।

तत्थ ण अह चत्तारि अत्थिाए अरूवीकाए पण्णवेमि, त जहा—धम्मत्थिकाय, अधम्मत्थिकाय, आगासत्थिकाय, जीवत्थिकाय ।° एग च ण अह पोग्गलत्थिकाय रूविकाय पण्णवेमि ।।

२१९ तए ण से कालोदाई समण भगव महावीर एव वदासी—एयसि ण भते ! धम्मत्थिकायसि, अधम्मत्थिकायसि, आगासत्थिकायसि अरूविकायसि अजीवकायसि चक्किया केइ आसइत्तए वा ? सइत्तए वा ? चिट्ठइत्तए[4] वा ? निसीइत्तए वा ? तुयट्टित्तए वा ?

णो तिणट्ठे समट्ठे । कालोदाई ! एगसि ण पोग्गलत्थिकायसि रूविकायसि अजीवकायंसि चक्किया केइ आसइत्तए वा, सइत्तए वा[5], °चिट्ठइत्तए वा, निसीइत्तए वा°, तुयट्टित्तए वा ।।

२२० एयसि ण भते ! पोग्गलत्थिकायसि रूविकायसि अजीवकायसि जीवाण पावा कम्मा पावफलविवागसजुत्ता कज्जति ?

णो तिणट्ठे समट्ठे । कालोदाई ! एयसि ण जीवत्थिकायसि अरूविकायसि जीवाण पावा कम्मा पावफलविवागसजुत्ता कज्जति । एत्थ ण से कालोदाई सबुद्धे समण भगव महावीर वदइ नमसइ, वदित्ता नमसित्ता एव वयासी—इच्छामि ण भते ! तुब्भ अतिय धम्म निसामेत्तए । एव जहा खदए तहेव पव्वइए, तहेव एक्कारस अगाइ अहिज्जइ जाव[6] विचित्तेहिं तवोकम्मेहि अप्पाण भावेमाणे विहरइ ।।

२२१. तए ण समणे भगव महावीरे अण्णया कयाइ रायगिहाओ नगराओ, गुणसिलाओ चेइयाओ पडिनिक्खमति, पडिनिक्खमित्ता वहिया जणवयविहार विहरइ ।।

---

१. भ० ७।२१३ ।
२ अजीवताए (क), अजीवत्थिकाए (स) ।
३. स० पा०—तहेव जाव एग ।
४ चिट्टित्तए (अ, व, ता) ।
५ स० पा०—सइत्तए वा जाव तुयट्टित्तए ।
६ भ० २।५०-६३ ।

कालोदाइस्स कम्मादिविसए पसिण-पद

२२२. तेण कालेण तेण समएण रायगिहे नाम नगरे, गुणसिलए चेइए। तए ण समणे भगव महावीरे अण्णया कयाइ जाव[1] समोसढे, परिसा जाव[2] पडिगया ।।

२२३. तए णं से कालोदाई अणगारे अण्णया कयाइ जेणेव समणे भगव महावीरे तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता समण भगव महावीर वदइ नमसइ, वदित्ता नमसित्ता एव वयासी—अत्थि ण भते! जीवाण पावा कम्मा पावफलविवागसजुत्ता कज्जति?
हता अत्थि ।।

२२४. कहण्ण भते! जीवाणं पावा कम्मा पावफलविवागसजुत्ता कज्जति?
कालोदाई! से जहानामए केइ पुरिसे मणुण्ण थालीपागसुद्ध अट्ठारसवजणाकुल विससमिस्स भोयण भुजेज्जा, तस्स ण भोयणस्स आवाए भद्दए भवइ, तओ पच्छा परिणममाणे-परिणममाणे दुरूवत्ताए, दुवण्णत्ताए, दुगधत्ताए जाव[3] दुक्खत्ताए—नो सुहत्ताए भुज्जो-भुज्जो परिणमति। एवामेव कालोदाई! जीवाण पाणाइवाए जाव[4] मिच्छादसणसल्ले, तस्स[5] ण आवाए भद्दए भवइ, तओ पच्छा 'विपरिणममाणे-विपरिणममाणे'[6] दुरूवत्ताए दुवण्णत्ताए दुगधत्ताए जाव दुक्खत्ताए—नो सुहत्ताए भुज्जो-भुज्जो परिणमति। एवं खलु कालोदाई! जीवाण पावा कम्मा 'पावफलविवागसजुत्ता कज्जति'[7]।

२२५. अत्थि ण भते! जीवाण कल्लाणा कम्मा कल्लाणफलविवागसजुत्ता कज्जति?
हता अत्थि ।।

२२६. कहण्णं भंते! जीवाण कल्लाणा कम्मा[8] °कल्लाणफलविवागसंजुत्ता° कज्जति?
कालोदाई! से जहानामए केइ पुरिसे मणुण्ण थालीपागसुद्ध अट्ठारसवजणाकुल ओसहमिस्स भोयण भुजेज्जा, तस्स ण भोयणस्स आवाए नो भद्दए भवइ, तओ पच्छा परिणममाणे-परिणममाणे सुरूवत्ताए सुवण्णत्ताए जाव[9] सुहत्ताए—नो दुक्खत्ताए भुज्जो-भुज्जो परिणमति। एवामेव कालोदाई! जीवाण पाणाइवायवेरमणे जाव[10] परिग्गहवेरमणे कोहविवेगे जाव[11] मिच्छादसणसल्लविवेगे, तस्स

---

१. भ० १।७।
२. भ० १।८।
३. जहा महस्सवए जाव (अ, क, ता, व, म, स), भ० ६।२०।
४. भ० १।३८४।
५ तस्य प्राणातिपातादे· (वृ)।
६ परिणममाणे-परिणममाणे (अ, क, ता, म)।
७. फलविवाग जाव कज्जति (अ), फल जाव कज्जति (क, ता)।
८ स० पा०—कम्मा जाव कज्जति।
९ भ० ६।२२।
१०. भ० १।३८५।
११ ठा० १।११५-१२५।

ण आवाए नो भद्दए भवइ, तओ पच्छा परिणममाणे-परिणममाणे सुरूवत्ताए सुवण्णत्ताए जाव सुहत्ताए—नो दुक्खत्ताए भुज्जो-भुज्जो परिणमइ। एवं खलु कालोदाई! जीवाण कल्लाणा कम्मा[1] •कल्लाणफलविवागसंजुत्ता° कज्जंति॥

२२७. दो भंते! पुरिसा सरिसया[2] •सरित्तया सरिव्वया° सरिसभंडमत्तोवगरणा अण्णमण्णेण सद्धिं अगणिकायं समारभंति। तत्थ णं एगे पुरिसे अगणिकायं उज्जालेइ, एगे पुरिसे अगणिकायं निव्वावेइ। एएसि णं भंते! दोण्हं पुरिसाणं कयरे पुरिसे महाकम्मतराए चेव? महाकिरियतराए चेव? महासवतराए चेव? महावेयणतराए चेव? कयरे वा पुरिसे अप्पकम्मतराए चेव[3]? •अप्पकिरियतराए चेव? अप्पासवतराए चेव?° अप्पवेयणतराए चेव? जे वा से पुरिसे अगणिकायं उज्जालेइ, जे वा से पुरिसे अगणिकायं निव्वावेइ?

कालोदाई! तत्थ णं जे से पुरिसे अगणिकायं उज्जालेइ, से णं पुरिसे महाकम्मतराए चेव[4], •महाकिरियतराए चेव, महासवतराए चेव°, महावेयणतराए चेव। तत्थ णं जे से पुरिसे अगणिकायं निव्वावेइ, से णं पुरिसे अप्पकम्मतराए चेव[5], •अप्पकिरियतराए चेव अप्पासवतराए चेव°, अप्पवेयणतराए चेव॥

२२८. से केणट्ठेणं भंते! एवं वुच्चइ—तत्थ णं जे से पुरिसे[6] •अगणिकायं उज्जालेइ, से णं पुरिसे महाकम्मतराए चेव? महाकिरियतराए चेव? महासवतराए चेव? महावेयणतराए चेव? तत्थ णं जे से पुरिसे अगणिकायं निव्वावेइ, से णं पुरिसे अप्पकम्मतराए चेव? अप्पकिरियतराए चेव? अप्पासवतराए चेव°? अप्पवेयणतराए चेव?

कालोदाई! तत्थ णं जे से पुरिसे अगणिकायं उज्जालेइ, से णं पुरिसे बहुतरागं पुढविक्कायं समारभंति, बहुतरागं आउक्कायं समारभंति, अप्पतरागं तेउक्कायं समारभंति, बहुतरागं वाउकायं समारभंति, बहुतरागं वणस्सइकायं समारभंति, बहुतरागं तसकायं समारभंति।

तत्थ णं जे से पुरिसे अगणिकायं निव्वावेइ, से णं पुरिसे अप्पतरागं पुढविकायं समारभंति, अप्पतरागं आउक्कायं समारभंति, बहुतरागं तेउक्कायं समारभंति, अप्पतरागं वाउकायं समारभंति, अप्पतरागं वणस्सइकायं समारभंति, अप्पतरागं तसकायं समारभंति। से तेणट्ठेणं कालोदायी![7] •एवं वुच्चइ—तत्थ णं जे से पुरिसे अगणिकायं उज्जालेइ, से णं पुरिसे महाकम्मतराए चेव, महा-

---

१. स० पा०—कम्मा जाव कज्जंति।
२. स० पा०—सरिसया जाव सरिसभंड°।
३ स० पा०—चेव जाव अप्पवेयण°।
४ स० पा०—चेव जाव महावेयण°।
५ स० पा०—चेव जाव अप्पवेयण°।
६ स० पा०—पुरिसे जाव अप्पवेयण°।
७ स० पा०—कालोदायी जाव अप्पवेयण°।

किरियतराए चेव, महासवतराए चेव, महावेयणतराए चेव। तत्थ णं जे से पुरिसे अगणिकायं निव्वावेइ, से णं पुरिसे अप्पकम्मतराए चेव, अप्पकिरियतराए चेव, अप्पासवतराए चेव°, अप्पवेयणतराए चेव ॥

२२९. अत्थि णं भंते ! अच्चित्ता वि पोग्गला ओभासंति ? उज्जोवेंति ? तवेंति ? पभासेंति ?
हंता अत्थि ॥

२३०. कयरे णं भंते ! ते अच्चित्ता वि पोग्गला ओभासंति[1] ? •उज्जोवेंति ? तवेंति? ° पभासेंति ?
कालोदाई ! कुद्धस्स[2] अणगारस्स तेय-लेस्सा निसट्ठा समाणी दूरं गता दूरं निपतति, देसं गता देसं निपतति, जहिं-जहिं च णं सा निपतति तहिं-तहिं च णं ते अचित्ता वि पोग्गला ओभासंति[3], •उज्जोवेंति, तवेंति°, पभासेंति। एतेणं कालोदाई ! ते अचित्ता वि पोग्गला ओभासंति[4], •उज्जोवेंति, तवेंति°, पभासेंति ॥

२३१. तए णं से कालोदाई अणगारे समणं भगवं महावीरं वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता बहूहिं चउत्थ-छट्ठट्ठम[5]-•दसम-दुवालसेहिं, मासद्धमासखमणेहिं विचित्तेहिं तवोकम्मेहिं° अप्पाणं भावेमाणे विहरइ ॥

२३२ [6]•तए णं से कालोदाई ! अणगारे जाव[7] चरमेहिं उस्सास-नीसासेहिं सिद्धे बुद्धे मुक्के परिनिव्वुडे° सव्वदुक्खप्पहीणे ॥

२३३ सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति[8] ॥

---

१ स० पा०—ओभासंति जाव पभासेंति।
२. विभक्तिपरिणामात्क्रुद्धेन (वृ)।
३. स० पा०—ओभासंति जाव पभासेंति।
४ स० पा०—ओभासंति जाव पभासेंति।
५ स० पा०—छट्ठट्ठम जाव अप्पाणं।
६. स० पा०—जहा पढमसए कालासवेसियपुत्ते जाव सव्वदुक्ख°।
७. भ० १।४३३।
८. भ० १।५१।

अट्ठमं सतं

पढमो उद्देसो

संगहणी-गाहा

१ पोग्गल २ आसीविस ३ रुक्ख ४ किरिय ५ आजीव ६, ७. फासुकमदत्ते ।
८ पडिणीय ९ बंध १० आराहणा य दस अट्ठमम्मि सते ॥१॥

पोग्गलपरिणति-पद

१. रायगिहे जाव[1] एवं वदासी—कतिविहा णं भंते ! पोग्गला पण्णत्ता ?
गोयमा ! तिविहा पोग्गला पण्णत्ता, तं जहा—पयोगपरिणया, मीसापरिणया[2], वीससापरिणया ॥

(१) पयोगपरिणति-पद

२. पयोगपरिणया णं भंते ! पोग्गला कतिविहा पण्णत्ता ?
गोयमा ! पंचविहा पण्णत्ता, तं जहा—एगिंदियपयोगपरिणया[3], ०बेइंदियपयोग-परिणया, तेइंदियपयोगपरिणया, चउरिंदियपयोगपरिणया०, पंचिंदियपयोग-परिणया ॥

३. एगिंदियपयोगपरिणया णं भंते ! पोग्गला कतिविहा पण्णत्ता ?
गोयमा ! पंचविहा पण्णत्ता, तं जहा—पुढविकाइयएगिंदियपयोगपरिणया[4], ०आउकाइयएगिंदियपयोगपरिणया, तेउकाइयएगिंदियपयोगपरिणया, वाउ-काइयएगिंदियपयोगपरिणया०, वणस्सइकाइयएगिंदियपयोगपरिणया ॥

---

१ भ० १।४-१० ।
२ मीससा० (अ, स), मीस० (क, ब, म) ।
३ सं० पा०—एगिंदियपयोगपरिणया जाव पंचिंदिय० ।
४ सं० पा०—पुढविकाइयएगिंदियपयोगपरिणया जाव वणस्सइ० ।

४ पुढविकाइयएगिंदियपयोगपरिणया ण भते ! पोग्गला कतिविहा पण्णत्ता ?
गोयमा ! दुविहा पण्णत्ता, त जहा—सुहुमपुढविकाइयएगिंदियपयोगपरिणया, वादरपुढविकाइयएगिंदियपयोगपरिणया य। आउकाइयएगिंदियपयोगपरिणया एव चेव। एव दुयओ[1] भेदो जाव वणस्सइकाइया य ।।

५. वेइदियपयोगपरिणयाण पुच्छा।
गोयमा ! अणेगविहा पण्णत्ता। एव तेइदिय-चउरिदियपयोगपरिणया वि ।।

६. पचिदियपयोगपरिणयाण पुच्छा।
गोयमा ! चउव्विहा पण्णत्ता, त जहा—नेरइयपचिदियपयोगपरिणया, तिरिक्ख-मणुस्स-देवपचिदियपयोगपरिणया ।।

७ नेरइयपचिदियपयोगपरिणयाण पुच्छा।
गोयमा ! सत्तविहा पण्णत्ता, त जहा—रयणप्पभपुढविनेरइयपचिदियपयोगपरिणया[2] वि जाव[3] अहेसत्तमपुढविनेरइयपचिदियपयोगपरिणया वि ।।

८. तिरिक्खजोणियपचिदियपयोगपरिणयाण पुच्छा।
गोयमा ! तिविहा पण्णत्ता, त जहा—जलचरतिरिक्खजोणियपचिदियपयोगपरिणया, थलचरतिरिक्खजोणियपचिदियपयोगपरिणया, खहचरतिरिक्खजोणियपचिदियपयोगपरिणया ।।

९. जलचरतिरिक्खजोणियपचिदियपयोगपरिणयाण पुच्छा।
गोयमा ! दुविहा पण्णत्ता, त जहा—समुच्छिमजलचरतिरिक्खजोणियपचिदियपयोगपरिणया, गब्भवक्कतियजलचरतिरिक्खजोणियपचिदियपयोगपरिणया ।।

१०. थलचरतिरिक्खजोणियपचिदियपयोगपरिणयाण पुच्छा।
गोयमा ! दुविहा पण्णत्ता, त जहा—चउप्पयथलचरतिरिक्खजोणियपचिदियपयोगपरिणया, परिसप्पथलचरतिरिक्खजोणियपचिदियपयोगपरिणया ।।

११ चउप्पयथलचरतिरिक्खजोणियपचिदियपयोगपरिणयाण पुच्छा।
गोयमा ! दुविहा पण्णत्ता, त जहा—समुच्छिमचउप्पयथलचरतिरिक्खजोणियपचिदियपयोगपरिणया, गब्भवक्कतियचउप्पयथलचरतिरिक्खजोणियपचिदियपयोगपरिणया ।।

१२. एव एएण अभिलावेण परिसप्पा दुविहा पण्णत्ता, त जहा—उरपरिसप्पा य भुयपरिसप्पा य। उरपरिसप्पा दुविहा पण्णत्ता, त जहा—समुच्छिमा य गब्भवक्कतिया य। एव भुयपरिसप्पा वि। एव खहयरा वि ।।

१३. मणुस्सपचिदियपयोगपरिणयाण पुच्छा।

---

१ दुपओ (क, व, स, वृपा)।
२. रयणप्पभा° (अ, स)।
३ भ० २।७७।

गोयमा ! दुविहा पण्णत्ता, तं जहा—समुच्छिममणुस्सपचिदियपयोगपरिणया, गब्भवक्कतियमणुस्सपंचिदियपयोगपरिणया ॥

१४ देवपंचिदियपयोगपरिणयाण पुच्छा ।
गोयमा ! चउव्विहा पण्णत्ता, त जहा—भवणवासिदेवपचिदियपयोगपरिणया, एव जाव[1] वेमाणिया ॥

१५ भवणवासिदेवपंचिदियपयोगपरिणयाण पुच्छा ।
गोयमा ! दसविहा पण्णत्ता, त जहा—असुरकुमारदेवपंचिदियपयोगपरिणया जाव[2] थणियकुमारदेवपचिदियपयोगपरिणया ॥

१६ एव एएण अभिलावेण अट्ठविहा वाणमतरा—पिसाया जाव[3] गधव्वा । जोतिसिया पचविहा पण्णत्ता, त जहा—चदविमाणजोतिसिया जाव[4] ताराविमाणजोतिसियदेवपंचिदियपयोगपरिणया । वेमाणिया दुविहा पण्णत्ता, त जहा—कप्पोवगवेमाणिया कप्पातीतगवेमाणिया । कप्पोवगवेमाणिया दुवालसविहा पण्णत्ता, त जहा—सोहम्मकप्पोवगवेमाणिया जाव[5] अच्चुयकप्पोवगवेमाणिया । कप्पातीतगवेमाणिया दुविहा पण्णत्ता, त जहा—गेवेज्जगकप्पातीतगवेमाणिया, अणुत्तरोववातियकप्पातीतगवेमाणिया । गेवेज्जगकप्पातीतगवेमाणिया नवविहा पण्णत्ता, त जहा—हेट्ठिमहेट्ठिमगेवेज्जगकप्पातीतगवेमाणिया जाव[6] उवरिमउवरिमगेवेज्जगकप्पातीतगवेमाणिया ॥

१७ अणुत्तरोववातियकप्पातीतगवेमाणियदेवपंचिदियपयोगपरिणया ण भते ! पोग्गला कतिविहा पण्णत्ता ?
गोयमा ! पचविहा पण्णत्ता, त जहा—विजयअणुत्तरोववातिय[7] •कप्पातीतगवेमाणियदेवपचिदियपयोग ॰परिणया जाव[8] सव्वट्ठसिद्धअणुत्तरोववातियकप्पातीतगवेमाणियदेवपचिदियपयोगपरिणया[9] ॥

(२) पज्जत्तापज्जत्त पडुच्च पयोगपरिणति-पदं

१८ सुहुमपुढविकाइयएगिंदियपयोगपरिणया ण भते ! पोग्गला कतिविहा पण्णत्ता ?
गोयमा ! दुविहा पण्णत्ता, त जहा[10]—पज्जत्तासुहुमपुढविकाइय[11] •एगिंदियपयोग॰

---

१ भ० २।११६ ।
२ पू० प० २ ।
३ ठा० ८।११६ ।
४ ठा० ५।५२ ।
५ अ० सू० २८७ ।
६. ठा० ६।३८ ।
७ स०पा०—विजयअणुत्तरोववतिय जाव परिणया
८. भ० ६।१२१ ।
९ ॰जाव परिणया (अ, क, ता, ब, म, स) ।
१० अतोग्रे 'केति अपज्जत्तग पढम भणति पच्छा पज्जत्तग' इति पाठोऽस्ति । वृत्तौ नासौ व्याख्यातोऽस्ति । असौ मतभेदसूचक पाठो वृत्त्युत्तरकाल मूले प्रक्षिप्तोभूदितिसभाव्यते ।
११ स० पा०—पज्जत्तासुहुमपुढविकाइय जाव परिणया, एगपदे सन्धिरत्र, तेन 'पज्जत्तग' इति परिपदस्य 'पज्जत्ता' इति रूप जातम् ।

परिणया य, अपज्जत्तासुहुमपुढविकाइय[1]•एगिंदियपयोग°परिणया य।
वादरपुढविकाइयएगिंदियपयोगपरिणया एव चेव, एव जाव वणस्सइकाइया।
एक्केका दुविहा सुहुमा य, वादरा य, पज्जत्तगा अपज्जत्तगा य भाणियव्वा ॥

१९ वेइंदियपयोगपरिणयाण पुच्छा।
गोयमा! दुविहा पण्णत्ता, त जहा—पज्जत्तगवेइंदियपयोगपरिणया य, अपज्जत्तग जाव परिणया य। एव तेइंदिया वि, एव चउरिंदिया वि ॥

२० रयणप्पभपुढविनेरइयपयोगपरिणयाण पुच्छा।
गोयमा! दुविहा पण्णत्ता, त जहा—पज्जत्तगरयणप्पभ जाव परिणया य, अपज्जत्तग जाव परिणया य। एव जाव अहेसत्तमा ॥

२१. समुच्छिमजलचरतिरिक्ख—पुच्छा।
गोयमा! दुविहा पण्णत्ता, त जहा—पज्जत्तग अपज्जत्तग। एव गब्भवक्कतिया वि। समुच्छिमचउप्पयथलचरा एव चेव। एव गब्भवक्कतिया वि। एव जाव समुच्छिमखहयरगब्भवक्कतिया य। एक्केक्के पज्जत्तगा अपज्जत्तगा य भाणियव्वा ॥

२२ समुच्छिममणुस्सपचिंदिय—पुच्छा।
गोयमा! एगविहा पण्णत्ता—अपज्जत्तगा चेव ॥

२३ गब्भवक्कंतियमणुस्सपचिंदिय पुच्छा।
गोयमा! दुविहा पण्णत्ता, त जहा—पज्जत्तगगब्भवक्कतिया वि, अपज्जत्तगगब्भवक्कतिया वि ॥

२४. असुरकुमारभवणवासिदेवाण पुच्छा।
गोयमा! दुविहा पण्णत्ता, त जहा—पज्जत्तगअसुरकुमार, अपज्जत्तगअसुरकुमार। एव जाव[2] थणियकुमारा पज्जत्तगा अपज्जत्तगा य ॥

२५ एव एतेण अभिलावेण दुयएण भेदेण पिसाया जाव[3] गधव्वा। चदा जाव[4] ताराविमाणा। सोहम्मकप्पोवगा जाव[5] च्चुतो। हेट्ठिमहेट्ठिम-गेवेज्जकप्पातीत जाव[6] उवरिमउवरिमगेवेज्ज। विजयअणुत्तरोववाइय जाव[7] अपराजिय।

२६ सव्वट्ठसिद्धकप्पातीत—पुच्छा।
गोयमा! दुविहा पण्णत्ता, त जहा—पज्जत्तासव्वट्ठसिद्धअणुत्तरोववाइय, अपज्जत्तासव्वट्ठ जाव परिणया वि ॥

---

१ स० पा०—°पुढविकाइय जाव परिणया।
२ पू० प० ३।
३ ठा० ८।११६।
४. ठा० ५।५२।
५ अ० सू० २८७।
६. ठा० ६।३८।
७ भ० ६।१२१।

(३) सरीरं पडुच्च पयोगपरिणति-पद

२७. जे अपज्जत्तासुहुमपुढविकाइयएगिंदियपयोगपरिणया ते ओरालिय-तेया-कम्मा-सरीरप्पयोगपरिणया[1]। जे पज्जत्तासुहुम जाव परिणया ते ओरालिय-तेया-कम्मासरीरप्पयोगपरिणया। एव जाव चउरिंदिया पज्जत्ता, नवर—जे पज्ज-त्तावादरवाउकाइयएगिंदियप्पयोगपरिणया ते ओरालिय-वेउव्विय-तेया-कम्मा-सरीरप्पयोगपरिणया[2]। सेस त चेव ॥

२८ जे अपज्जत्तरयणप्पभापुढविनेरइयपंचिंदियपयोगपरिणया ते वेउव्विय-तेया-कम्मासरीरप्पयोगपरिणया। एव पज्जत्तगा वि। एव जाव अहेसत्तमा ॥

२९. जे अपज्जत्तासमुच्छिमजलचर जाव परिणया ते ओरालिय-तेया-कम्मासरीर जाव परिणया। एव पज्जत्तगा वि। गब्भवक्कतियअपज्जत्ता एव चेव। पज्जत्तगा ण एव चेव, नवर—सरीरगाणि चत्तारि जहा वादरवाउकाइयाण पज्जत्तगाण। एव जहा जलचरेसु चत्तारि आलावग भणिया एव चउप्पया[3]-उरपरिसप्प-भुयपरिसप्प खहयरेसु वि चत्तारि आलावगा भाणियव्वा ॥

३० जे समुच्छिममणुस्सपंचिंदियपयोगपरिणया ते ओरालिय-तेया-कम्मासरीर-प्पयोगपरिणया[4]। एव गब्भवक्कतिया वि। अपज्जत्तगा वि, पज्जत्तगा वि एव चेव, नवर—सरीरगाणि पच भाणियव्वाणि ॥

३१ जे अपज्जत्ताअसुरकुमारभवणवासि जहा नेरइया तहेव। एव पज्जत्तगा वि। एव दुयएण भेदेण जाव थणियकुमारा। एव पिसाया जाव गधव्वा। चदा जाव ताराविमाणा। सोहम्मकप्पो जावच्चुओ। हेट्ठिमहेट्ठिमगेवेज्जग जाव उवरिम-उवरिमगेवेज्जग। विजयअणुत्तरोववाइय जाव सव्वट्ठसिद्धअणुत्तरोववाइय। एक्केक्के दुयओ भेदो भाणियव्वो जाव जे पज्जत्तासव्वट्ठसिद्धअणुत्तरोववाइय[5]-°कप्पातीतगवेमाणियदेवपंचिंदियपयोग°परिणया ते वेउव्विय-तेया-कम्मा-सरीरप्पयोगपरिणया ॥

(४) इंदिय पडुच्च पयोगपरिणति-पद

३२ जे अपज्जत्तासुहुमपुढविकाइयएगिंदियपयोगपरिणया ते फासिंदियपयोगपरिणया जे पज्जत्तासुहुमपुढविकाइय एव चेव। जे अपज्जत्ताबादरपुढविकाइय एव चेव। एव पज्जत्तगा वि। एव चउक्कएण भेदेण जाव वणस्सतिकाइया ॥

---

१ कम्म° (अ, व, म), कम्मग° (स), अत्रापि स्वीकृतपाठे एकपदे सन्धि ।

२ °जाव परिणया (अ, क, ता, व, म, स)।

३. चतुष्पद (क, व)।

४ °जाव परिणया (अ, क, ता, ब, म, स)।

५ अपज्जत्ता° (अ, क, ता, ब, म, स), स० पा०—°वाइय जाव परिणया।

३३. जे अपज्जत्तावेइंदियपयोगपरिणया ते जिब्भिदिय-फासिंदियपयोगपरिणया, जे पज्जत्तावेइंदिय एव चेव। एव जाव चउरिंदिया, नवर—एक्केक्क इदियं वड्ढेयव्व ॥

३४. जे[1] अपज्जत्तरयणप्पभपुढविनेरइयपंचिंदियपयोगपरिणया ते सोइंदिय-चक्खिंदिय-घाणिंदिय-जिब्भिंदिय-फासिंदियपयोगपरिणया। एवं पज्जत्तगा वि। एव सव्वे भाणियव्वा तिरिक्खजोणिय-मणुस्स-देवा जाव जे पज्जत्तासव्वट्ठसिद्धअणुत्तरोववाइय[2] •कप्पातीतगवेमाणियदेवपंचिंदियपयोग° परिणया ते सोइंदिय-चक्खिंदिय[3] •घाणिंदिय-जिब्भिंदिय-फासिंदियपयोग° परिणया ॥

(५) सरीरं इंदियं च पडुच्च पयोगपरिणति-पद

३५ जे अपज्जत्तासुहुमपुढविकाइयएगिंदियओरालिय-तेया-कम्मासरीरप्पयोगपरिणया ते फासिंदियपयोगपरिणया। जे पज्जत्तासुहुम° एव चेव। वादरअपज्जत्ता एव चेव। एव पज्जत्तगा वि।

एव एतेणं अभिलावेण जस्स जति इंदियाणि सरीराणि य तस्स ताणि भाणियव्वाणि जाव जे पज्जत्तासव्वट्ठसिद्धअणुत्तरोववाइय[4] •कप्पातीतगवेमाणिय° देवपंचिंदियवेउव्विय-तेया-कम्मासरीरप्पयोगपरिणया ते सोइंदिय-चक्खिंदिय जाव फासिंदियप्पयोगपरिणया ॥

(६) वण्णादि पडुच्च पयोगपरिणति-पद

३६ जे अपज्जत्तासुहुमपुढविक्काइयएगिंदियपयोगपरिणया ते वण्णओ कालवण्णपरिणया वि, नील-लोहिय[5]-हालिद्द-सुक्किलवण्णपरिणया वि, गधओ सुब्भिगधपरिणया वि, दुब्भिगधपरिणया वि; रसओ तित्तरसपरिणया वि, कडुयरसपरिणया वि, कसायरसपरिणया वि, अबिलरसपरिणया वि, महुररसपरिणया वि, फासओ कक्खडफासपरिणया वि[6], •मउयफासपरिणया वि, गरुयफासपरिणया वि, लहुयफासपरिणया वि, सीतफासपरिणया वि, उसिणफासपरिणया वि, णिद्धफासपरिणया वि°, लुक्खफासपरिणया वि, सठाणओ परिमडलसठाणपरिणया वि, वट्ट-तस-चउरस-आयत-सठाणपरिणया वि।

जे पज्जत्तासुहुमपुढवि० एव चेव। एव जहाणुपुव्वीए नेयव्व जाव जे पज्जत्तासव्वट्ठसिद्धअणुत्तरोववाइय जाव परिणया ते वण्णओ कालवण्णपरिणया वि जाव आयतसठाणपरिणया वि ॥

---

१. जाव (क, ता, व)।

२. स० पा०—°वाइय जाव परिणया।

३ स० पा०—चक्खिदिय जाव परिणया।

४. अपज्जत्ता० (अ, क, व, स), स० पा०—°वाइय जाव देव०।

५ लोहिग (ता, व, म)।

६ स० पा०—वि जाव लुक्ख०।

(७) सरीरं वण्णादिं च पडुच्च पयोगपरिणति-पदं

३७ जे अपज्जत्तासुहुमपुढविक्काइयएगिंदियओरालिय-तेया-कम्मासरीरपयोगपरिणया ते वण्णओ कालवण्णपरिणया वि जाव आयतसठाणपरिणया वि ।
जे पज्जत्तासुहुमपुढविक्काइय एव चेव । एव जहाणुपुव्वीए नेयव्व, जस्स जइ सरीराणि जाव जे पज्जत्तासव्वट्ठसिद्धअणुत्तरोववाइयकप्पातीतगवेमाणियदेवपचिंदियवेउव्विय-तेया-कम्मासरीरपयोगपरिणया' ते वण्णओ कालवण्णपरिणया वि जाव आयतसठाणपरिणया वि ।।

(८) इंदिय वण्णादिं च पडुच्च पयोगपरिणति-पदं

३८ जे अपज्जत्तासुहुमपुढविक्काइयएगिंदियफासिंदियपयोगपरिणया ते वण्णओ कालवण्णपरिणया वि जाव आयतसठाणपरिणया वि ।
जे पज्जत्तासुहुमपुढविक्काइय एव चेव । एव जहाणुपुव्वीए जस्स जति इदियाणि तस्स तति भाणियव्वाणि जाव जे पज्जत्तासव्वट्ठसिद्धअणुत्तरोववाइय[2]-•कप्पातीतगवेमाणिय° देवपचिंदियसोतिंदिय जाव फासिदियपयोगपरिणया ते वण्णओ कालवण्णपरिणया वि जाव आयतसठाणपरिणया वि ।।

(९) सरीरं इंदियं वण्णादिं च पडुच्च पयोगपरिणति-पदं

३९ जे अपज्जत्तासुहुमपुढविक्काइयएगिंदियओरालिय-तेया-कम्मा-फासिंदियपयोगपरिणया ते वण्णओ कालवण्णपरिणया वि जाव आयतसठाणपरिणया वि ।
जे पज्जत्तासुहुमपुढविक्काइय एव चेव । एव जहाणुपुव्वीए जस्स जति सरीराणि इदियाणि य तस्स तति भाणियव्वाणि जाव जे पज्जत्तासव्वट्ठसिद्धअणुत्तरोववाइयकप्पातीतगवेमाणियदेवपचिंदियवेउव्विय-तेया-कम्मा-सोइदिय जाव फासिदियपयोगपरिणया ते वण्णओ कालवण्णपरिणया वि जाव आयतसठाण परिणया वि । 'एते नव दडगा'[3] ।।

मीसपरिणति-पदं

४० मीसापरिणया[4] ण भते ! पोग्गला कतिविहा पण्णत्ता ?
गोयमा ! पचविहा पण्णत्ता, त जहा—एगिंदियमीसापरिणया जाव पचिंदियमीसापरिणया ।।

४१ एगिंदियमीसापरिणया ण भते ! पोग्गला कतिविहा पण्णत्ता ?
एव जहा पयोगपरिणएहि नव दडगा भणिया, एव मीसापरिणएहिं वि नव

---

१ °जाव परिणया (अ, क, ता, ब, म, स) ।
२ स० पा०—°वाइय जाव देव° ।
३ एव नव दडगा भणिया (अ, स) ।
४. मीस° (अ) ।

दंडगा भाणियव्वा, तहेव सव्व निरवसेस, नवर—अभिलावो 'मीसापरिणया' भाणियव्व, सेस त चेव जाव[1] जे पज्जत्तासव्वट्ठसिद्धअणुत्तरोववाइय जाव आयतसठाणपरिणया वि ॥

वीससापरिणति-पदं

४२ वीससापरिणया ण भते ! पोग्गला कतिविहा पण्णत्ता ?

गोयमा ! पचविहा पण्णत्ता, त जहा—वण्णपरिणया, गधपरिणया, रसपरिणया, फासपरिणया, सठाणपरिणया ।

जे वण्णपरिणया ते पचविहा पण्णत्ता, त जहा—कालवण्णपरिणया जाव[2] सुक्किलवण्णपरिणया ।

जे गधपरिणया ते दुविहा पण्णत्ता, त जहा—सुब्भिगधपरिणया[3], दुब्भिगधपरिणया[4] ।

जे रसपरिणया ते पचविहा पण्णत्ता, त जहा—तित्तरसपरिणया जाव[5] महुररसपरिणया ।

जे फासपरिणया ते अट्ठविहा पण्णत्ता, त जहा—कक्खडफासपरिणया जाव[6] लुक्खफासपरिणया ।

जे सठाणपरिणया ते पचविहा पण्णत्ता, त जहा—परिमडलसठाणपरिणया जाव[7] आयतसठाणपरिणया ।

जे वण्णओ कालवण्णपरिणया ते गधओ सुब्भिगधपरिणया वि, दुब्भिगधपरिणया वि ।

एव जहा पण्णवणाए तहेव निरवसेस जाव[8] जे सठाणओ आयतसठाणपरिणया ते वण्णओ कालवण्णपरिणया वि जाव लुक्खफासपरिणया वि ॥

एगं दव्व पडुच्च पोग्गलपरिणति-पदं

४३. एगे भते ! दव्वे कि पयोगपरिणए ? मीसापरिणए ? वीससापरिणए ?

गोयमा ! पयोगपरिणए वा, मीसापरिणए वा, वीससापरिणए वा ॥

पयोगपरिणति-पद

४४ जइ पयोगपरिणए कि मणपयोगपरिणए[9] ? वइपयोगपरिणए[10] ? कायपयोग परिणए[11] ?

---

१. भ० ८।३-३६ ।
२. भ० ८।३६ ।
३ सुगधपरिणया वि(अ, स), सुरभि ° (ता, व) ।
४. दुगधपरिणया वि(अ, स), दुरभि ° (ता, व) ।
५ भ० ८।३६ ।
६. भ० ८।३६ ।
७. भ० ८।३६ ।
८ प० १ ।
९ मरणप्प ° (ता, म) ।
१०. वयप ° (क), वयप्प ° (व, म) ।
११. कायप्प ° (अ, क, ता, व, म, स) ।

गोयमा ! मणपयोगपरिणए वा, वइपयोगपरिणए वा, कायपयोगपरिणए वा ॥

मणपयोगपरिणति-पद

४५ जइ मणपयोगपरिणए किं सच्चमणपयोगपरिणए ? मोसमणपयोगपरिणए ? सच्चामोसमणपयोगपरिणए ? असच्चामोसमणपयोगपरिणए ?
गोयमा ! सच्चमणपयोगपरिणए वा, मोसमणपयोगपरिणए वा, सच्चामोसमणपयोगपरिणए वा, असच्चामोसमणपयोगपरिणए वा ॥

४६. जइ सच्चमणपयोगपरिणए किं आरभसच्चमणपयोगपरिणए ? अणारभसच्चमणपयोगपरिणए ? सारंभसच्चमणपयोगपरिणए ? असारंभसच्चमणपयोगपरिणए ? समारभसच्चमणपयोगपरिणए ? असमारभसच्चमणपयोगपरिणए ?
गोयमा ! आरभसच्चमणपयोगपरिणए वा जाव असमारभसच्चमणपयोगपरिणए वा ॥

४७. जइ मोसमणपयोगपरिणए किं आरभमोसमणपयोगपरिणए ?
एव जहा सच्चेण तहा मोसेण वि । एव सच्चामोसमणपयोगेण वि । एवं असच्चामोसमणपयोगेण वि ॥

वइपयोगपरिणति-पद

४८. जइ वइपयोगपरिणए किं सच्चवइपयोगपरिणए ? मोसवइपयोगपरिणए ?
एव जहा मणपयोगपरिणए तहा वइपयोगपरिणए वि जाव असमारभवइपयोगपरिणए वा ॥

कायपयोगपरिणति-पद

४९ जइ कायपयोगपरिणए किं ओरालियसरीरकायपयोगपरिणए ? ओरालियमीसासरीरकायपयोगपरिणए ? वेउव्वियसरीरकायपयोगपरिणए ? वेउव्वियमीसासरीरकायपयोगपरिणए ? आहारगसरीरकायपयोगपरिणए ? आहारगमीसासरीरकायपयोगपरिणए ? कम्मासरीरकायपयोगपरिणए ?
गोयमा ! ओरालियसरीरकायपयोगपरिणए वा जाव कम्मासरीरकायपयोगपरिणए वा ॥

५० जइ ओरालियसरीरकायपयोगपरिणए किं एगिंदियओरालियसरीरकायपयोगपरिणए ? जाव[1] पंचिंदियओरालिय[2]•सरीरकायपयोग॰परिणए ?

---

१ एव जाव (अ, स)।

२ स० पा०—पंचिंदियओरालिय जाव परिणए।

गोयमा ! एगिंदियओरालियसरीरकायपयोगपरिणए वा जाव[1] पंचिंदियओरालियसरीरकायपयोगपरिणए वा ॥

५१. जइ एगिंदियओरालियसरीरकायपयोगपरिणए किं पुढविक्काइयएगिंदिय[2]•ओरालियसरीरकायपयोग°परिणए ? जाव वणस्सइकाइयएगिंदियओरालियसरीरकायपयोगपरिणए ?
गोयमा ! पुढविक्काइयएगिंदिय[3]•ओरालियसरीरकायपयोग°परिणए वा जाव वणस्सइकाइयएगिंदिय[4]•ओरालियसरीरकायपयोग°परिणए वा ॥

५२ जइ पुढविक्काइयएगिंदियओरालियसरीरकायपयोगपरिणए[5] किं सुहुमपुढविक्काइय जाव परिणए ? बादरपुढविक्काइय जाव परिणए ?
गोयमा ! सुहुमपुढविकाइयएगिंदिय जाव परिणए वा, बादरपुढविक्काइय जाव परिणए वा ॥

५३ जइ सुहुमपुढविक्काइय जाव परिणए किं पज्जत्तासुहुमपुढविक्काइय जाव परिणए ? अपज्जत्तासुहुमपुढविक्काइय जाव परिणए ?
गोयमा ! पज्जत्तासुहुमपुढविक्काइय जाव परिणए वा, अपज्जत्तासुहुमपुढविक्काइय जाव परिणए वा । एवं बादरा वि । एवं जाव वणस्सइकाइयाणं चउक्कओ भेदो । बेइंदिय-तेइंदिय-चउरिंदियाणं दुयओ भेदो—पज्जत्तगा य अपज्जत्तगा य ॥

५४ जइ पंचिंदियओरालियसरीरकायपयोगपरिणए किं तिरिक्खजोणियपंचिंदियओरालियसरीरकायपयोगपरिणए ? मणुस्सपंचिंदिय जाव परिणए ?
गोयमा ! तिरिक्खजोणिय जाव परिणए वा, मणुस्सपंचिंदिय जाव परिणए वा ॥

५५. जइ तिरिक्खजोणिय जाव परिणए किं जलचरतिरिक्खजोणिय जाव परिणए ? थलचर-खहचर जाव परिणए ?
एवं चउक्कओ भेदो जाव खहचराणं ॥

५६. जइ मणुस्सपंचिंदिय जाव परिणए किं समुच्छिममणुस्सपंचिंदिय जाव परिणए ? गब्भवक्कंतियमणुस्स जाव परिणए ?
गोयमा ! दोसु वि ॥

५७ जइ गब्भवक्कंतियमणुस्स जाव परिणए किं पज्जत्तागब्भवक्कंतिय जाव परिणए ? अपज्जत्तागब्भवक्कंतिय जाव परिणए ?

---

१. बेइंदिय जाव परिणए वा (अ, क, ब, म, स), बेइंदिय जाव (ता) ।
२ स० पा०—°एगिंदिय जाव परिणए ।
३. स० पा०—°एगिंदिय जाव परिणए ।
४ स० पा०—°एगिंदिय जाव परिणए ।
५ °सरीर जाव परिणए (अ,क, ता, ब,म, स) ।

गोयमा ! पज्जत्तागब्भवक्कतिय जाव परिणए वा, अपज्जत्तागब्भवक्कतिय जाव परिणए वा ।।

५८. जइ ओरालियमीसासरीरकायपयोगपरिणए किं एगिंदियओरालियमीसासरीरकायपयोगपरिणए ? बेइंदिय जाव परिणए ? जाव पचिंदियओरालिय जाव परिणए ?

गोयमा ! एगिंदियओरालियमीसासरीरकायपयोगपरिणए एव जहा ओरालियसरीरकायपयोगपरिणएण आलावगो भणिओ तहा ओरालियमीसासरीरकायपयोगपरिणएण वि आलावगो भाणियव्वो, नवर—बादरवाउक्काइय-गब्भवक्कतियपचिंदियतिरिक्खजोणीय-गब्भवक्कतियमणुस्साण[1]—एएसिण पज्जत्तापज्जत्तगाण, सेसाण अपज्जत्तगाण ।।

५९. जइ वेउव्वियसरीरकायपयोगपरिणए कि एगिंदियवेउव्वियसरीरकायपयोगपरिणए ? पचिंदियवेउव्वियसरीर जाव परिणए ?

गोयमा ! एगिंदिय जाव परिणए वा, पचिंदिय जाव परिणए वा ।।

६० जइ एगिंदिय जाव परिणए कि वाउक्काइयएगिंदिय जाव परिणए ? अवाउक्काइयएगिंदिय जाव परिणए ?

गोयमा ! वाउक्काइयएगिंदिय जाव परिणए, नो अवाउक्काइयएगिंदिय जाव परिणए। एव एएण अभिलावेण जहा ओगाहणसठाणे[2] वेउव्वियसरीर भणिय तहा इह वि भाणियव्व जाव पज्जत्तासव्वट्ठसिद्धअणुत्तरोववाइयकप्पातीतावेमाणियदेवपचिंदियवेउव्वियसरीरकायपयोगपरिणए वा, अपज्जत्तासव्वट्ठसिद्धअणत्तरोववाइय जाव परिणए वा ।।

६१ जइ वेउव्वियमीसासरीरकायपयोगपरिणए कि एगिंदियमीसासरीरकायपयोगपरिणए ? जाव पचिंदियमीसासरीरकायपयोगपरिणए ?

एव जहा वेउव्विय तहा वेउव्वियमीसग पि, नवर—देव-नेरइयाण अपज्जत्तगाण, सेसाण पज्जत्तगाण[3] जाव नो पज्जत्तासव्वट्ठसिद्धअणुत्तरोववाइय जाव परिणए, अपज्जत्तासव्वट्ठसिद्धअणुत्तरोववाइयदेवपचिंदियवेउव्वियमीसासरीरकायपयोगपरिणए ।।

६२. जइ आहारगसरीरकायपयोगपरिणए कि मणुस्साहारगसरीरकायपयोगपरिणए? अमणुस्साहारग जाव परिणए ?

एव जहा ओगाहणसठाणे जाव इड्ढिपत्तपमत्तसजयसम्मदिट्ठिपज्जत्तगसखेज्जवासाउय जाव परिणए, नो अणिड्ढिपत्तपमत्तसजयसम्मदिट्ठिपज्जत्तसखेज्जवासाउय जाव परिणए ।।

---

१ °मणुस्साण य (अ, क, ता, ब) ।

२. एतन्नामके प्रज्ञापनाया एकविंशतितमे पदे ।

३ पज्जत्तगाण तहेव (अ, स), अत्र द्वयोर्मिश्रणम्, तहेव (क, ता, म) ।

६३ जइ आहारगमीसासरीरकायपयोगपरिणए किं मणुस्साहारगमीसासरीरकायपयोगपरिणए ?
एव जहा आहारग तहेव मीसग पि निरवसेस भाणियव्व ।।

६४. जइ कम्मासरीरकायपयोगपरिणए किं एगिंदियकम्मासरीरकायपयोगपरिणए ? जाव पचिदियकम्मासरीरकायपयोगपरिणए ?
गोयमा ! एगिंदियकम्मासरीरकायपयोगपरिणए, एवं जहा ओगाहणसठाणे कम्मगस्स भेदो तहेव इह वि जाव पज्जत्तासव्वट्ठसिद्धअणुत्तरोववाइय[1] °कप्पातीतगवेमाणिय° देवपचिदियकम्मासरीरकायपयोगपरिणए वा, अपज्जत्तासव्वट्ठसिद्धअणुत्तरोववाइय जाव परिणए वा ।।

मीसपरिणति-पद

६५. जइ मीसापरिणए किं मणमीसापरिणए ? वइमीसापरिणए[2] ? कायमीसापरिणए ?
गोयमा ! मणमीसापरिणए वा, वइमीसापरिणए वा, कायमीसापरिणए वा ।।

६६. जइ मणमीसापरिणए कि सच्चमणमीसापरिणए ? मोसमणमीसापरिणए ?
जहा पयोगपरिणए तहा मीसापरिणए वि भाणियव्व निरवसेस जाव पज्जत्तासव्वट्ठसिद्धअणुत्तरोववाइय जाव देवपचिंदियकम्मासरीरगमीसापरिणए वा, अपज्जत्तासव्वट्ठसिद्धअणुत्तरोववाइय जाव कम्मासरीरमीसापरिणए वा ।।

वीससापरिणति-पद

६७. जइ वीससापरिणए कि वण्णपरिणए ? गधपरिणए ? रसपरिणए ? फासपरिणए ? सठाणपरिणए ?
गोयमा ! वण्णपरिणए वा, गधपरिणए वा रसपरिणए वा, फासपरिणए वा, सठाणपरिणए वा ।।

६८ जइ वण्णपरिणए किं कालवण्णपरिणए जाव[3] सुक्किलवण्णपरिणए ?
गोयमा ! कालवण्णपरिणए वा जाव सुक्किलवण्णपरिणए वा ।।

६९ जइ गधपरिणए किं सुब्भिगधपरिणए ? दुब्भिगधपरिणए ?
गोयमा ! सुब्भिगधपरिणए वा, दुब्भिगधपरिणए वा ।।

७०. जइ रसपरिणए किं तित्तरसपरिणए ? पुच्छा ।
गोयमा ! तित्तरसपरिणए वा जाव महुररसपरिणए वा ।।

७१. जइ फासपरिणए कि कक्खडफासपरिणए जाव लुक्खफासपरिणए ?
गोयमा ! कक्खडफासपरिणए जाव लुक्खफासपरिणए ।।

---

१. स० पा०—°वाइय जाव देव° ।
२. वय° (अ, स); वति° (क) ।
३. नील जाव (अ, क, ता, व, म, स) ।

७२ जइ सठाणपरिणए—पुच्छा ।
गोयमा ! परिमडलसठाणपरिणए वा जाव आयतसठाणपरिणए वा ।।

दोण्णि दव्वाइं पडुच्च पोग्गलपरिणति-पद

७३ दो भते दव्वा ! किं पयोगपरिणया ? मीसापरिणया ? वीससापरिणया ?
गोयमा ! १ पयोगपरिणया वा २ मीसापरिणया वा ३. वीससापरिणया वा ४. अहवेगे पयोगपरिणए, एगे मीसापरिणए ५. अहवेगे पयोगपरिणए, एगे वीससापरिणए ६ अहवेगे मीसापरिणए, एगे वीससापरिणए ।।

७४ जइ पयोगपरिणया किं मणपयोगपरिणया ? वइपयोगपरिणया ? कायपयोग-परिणया ?
गोयमा ! १ मणपयोगपरिणया वा २ वइपयोगपरिणया वा ३ कायपयोग-परिणया वा ४ अहवेगे मणपयोगपरिणए, एगे वइपयोगपरिणए ५ अहवेगे मणपयोगपरिणए, एगे कायपयोगपरिणए ६ अहवेगे वइपयोगपरिणए, एगे कायपयोगपरिणए ।।

७५ जइ मणपयोगपरिणया किं सच्चमणपयोगपरिणया ? असच्चमणपयोगपरिणया ? सच्चमोसमणपयोगपरिणया ? असच्चमोसमणपयोगपरिणया ?
गोयमा ! १ सच्चमणपयोगपरिणया वा जाव असच्चमोसमणपयोगपरिणया वा ५. अहवेगे सच्चमणपयोगपरिणए, एगे मोसमणपयोगपरिणए ६ अहवेगे सच्चमणपयोगपरिणए, एगे सच्चमोसमणपयोगपरिणए ७ अहवेगे सच्चमण-पयोगपरिणए, एगे असच्चमोसमणपयोगपरिणए ८ अहवेगे मोसमणपयोग-परिणए, एगे सच्चमोसमणपयोगपरिणए ९ अहवेगे मोसमणपयोगपरिणए, एगे असच्चमोसमणपयोगपरिणए १० अहवेगे सच्चमोसमणपयोगपरिणए, एगे असच्चमोसमणपयोगपरिणए ।।

७६ जइ सच्चमणपयोगपरिणया किं आरभसच्चमणपयोगपरिणया ? जाव[1] असमा-रभसच्चमणपयोगपरिणया ?
गोयमा ! आरभसच्चमणपयोगपरिणया वा जाव असमारभसच्चमणपयोगपरि-णया वा, अहवेगे आरभसच्चमणपयोगपरिणए, एगे अणारभसच्चमणपयोग-परिणए । एव एएण गमेण दुयासजोएण[2] नेयव्व, सव्वे सजोगा जत्थ जत्तिया उट्ठेति ते भाणियव्वा जाव सव्वट्ठसिद्धगत्ति ।।

७७ जइ मीसापरिणया किं मणमीसापरिणया ?
एव मीसापरिणया वि ।।

---

१. भ० ८।४९ । २ दुय० (ब) ।

७८. जइ वीससापरिणया किं वण्णपरिणया ? गंधपरिणया ?
एवं वीससापरिणया वि जाव अहवेगे चउरससंठाणपरिणए, एगे आयतसंठाण-परिणए ॥

तिण्णि दव्वाइं पडुच्च पोग्गलपरिणति-पदं

७९. तिण्णि भंते ! दव्वा किं पयोगपरिणया ? मीसापरिणया ? वीससापरिणया ?
गोयमा ! १ पयोगपरिणया वा २ मीसापरिणया वा ३ वीससापरिणया वा ४ अहवेगे पयोगपरिणए, दो मीसापरिणया ५ अहवेगे पयोगपरिणए, दो वीससापरिणया ६ अहवा दो पयोगपरिणया, एगे मीसापरिणए[1] ७ अहवा दो पयोगपरिणया, एगे वीससापरिणए ८ अहवेगे मीसापरिणए, दो वीससापरि-णया ९ अहवा दो मीसापरिणया, एगे वीससापरिणए १० अहवेगे पयोगपरि-णए, एगे मीसापरिणए, एगे वीससापरिणए ॥

८० जइ पयोगपरिणया किं मणपयोगपरिणया ? वइपयोगपरिणया ? कायपयोग-परिणया ?
गोयमा ! मणपयोगपरिणया वा, एवं एक्कासंयोगो[2], दुयासंयोगो[3], तियासंयोगो[4] य भाणियव्वो ॥

८१. जइ मणपयोगपरिणया किं सच्चमणपयोगपरिणया ? असच्चमणपयोगपरिणया? सच्चमोसमणपयोगपरिणया ? असच्चमोसमणपयोगपरिणया ?
गोयमा ! सच्चमणपयोगपरिणया वा जाव असच्चामोसमणपयोगपरिणया वा, अहवेगे सच्चमणपयोगपरिणए, दो मोसमणपयोगपरिणया । एवं दुयासंयोगो, तियासंयोगो भाणियव्वो एत्थ वि तहेव जाव अहवेगे तंससंठाणपरिणए, एगे चउरससंठाणपरिणए, एगे आयतसंठाणपरिणए ॥

चत्तारि दव्वाइं पडुच्च पोग्गलपरिणति-पदं

८२. चत्तारि भंते ! दव्वा किं पयोगपरिणया ? मीसापरिणया ? वीससापरिणया ?
गोयमा ! १ पयोगपरिणया वा २ मीसापरिणया वा ३ वीससापरिणया वा ४ अहवेगे पयोगपरिणए, तिण्णि[5] मीसापरिणया ५ अहवेगे पयोगपरिणए, तिण्णि वीससापरिणया ६ अहवा दो पयोगपरिणया, दो मीसापरिणया ७ अहवा दो पयोगपरिणया, दो वीससापरिणया ८ अहवा तिण्णि पयोगपरिणया, एगे मीसापरिणए ९ अहवा तिण्णि पयोगपरिणया, एगे वीससापरिणए १०. अहवेगे मीसापरिणए, तिण्णि वीससापरिणया ११ अहवा दो मीसापरिणया, दो

---

१. मीससा° (स) ।
२. एक्क° (व) ।
३. दुय° (व) ।
४. तिय° (व) ।
५ तिण्णिओ (ता) ।

वीससापरिणया १२ अहवा तिण्णि मीसापरिणया, एगे वीससापरिणए १३ अहवेगे पयोगपरिणए, एगे मीसापरिणए, दो वीससापरिणया १४ अहवेगे पयोगपरिणए, दो मीसापरिणया, एगे वीससापरिणए १५ अहवा दो पयोग-परिणया, एगे मीसापरिणए, एगे वीससापरिणए ॥

८३ जइ पयोगपरिणया कि मणपयोगपरिणया ? वइपयोगपरिणया ? कायपयोग-परिणया ?
एव एएणं कमेणं पच छ सत्त जाव दस सखेज्जा असखेज्जा अणता य दव्वा भाणियव्वा—दुयासजोएणं तियासजोएण जाव दससजोएणं वारससंजोएणं उवजुजिऊण[1] जत्थ जत्तिया सजोगा उट्ठेति ते सव्वे भाणियव्वा, एए पुण जहा नवमसए[2] पवेसणए भणिहामो तहा उवजुजिऊण भाणियव्वा जाव असखेज्जा अणंता एव चेव, नवर—एक्क पदं अब्भहिय जाव अहवा अणता परिमडल-सठाणपरिणया जाव अणता आयतसठाणपरिणया ॥

८४. एएसि ण भते ! पोग्गलाण पयोगपरिणयाण, मीसापरिणयाण, वीससापरिणयाण य कयरे कयरेहिंतो[3] •अप्पा वा ? वहुया वा ? तुल्ला वा ? ० विसेसाहिया वा ?
गोयमा ! सव्वत्थोवा पोग्गला पयोगपरिणया, मीसापरिणया अणतगुणा, वीससापरिणया अणतगुणा ॥

८५ सेव भते ! सेव भते ! त्ति[4] ॥

बीओ उद्देसो

आसीविस-पद

८६. कतिविहा ण भते ! आसीविसा पण्णत्ता ?
गोयमा ! दुविहा आसीविसा पण्णत्ता, त जहा—जातिआसीविसा य, कम्म-आसीविसा य ॥

८७ जातिआसीविसा ण भते ! कतिविहा पण्णत्ता ?

---

१ उवजुज्जित्तण (क), उववज्जिऊण (ता), उवजुत्तिऊण (व), उवजुज्जिऊण (स)।
२ भ० ९।८६-१३२।
३. स० पा०—कयरेहिंतो जाव विसेसाहिया।
४. भ० १।५१।

गोयमा ! चउव्विहा पण्णत्ता, तं जहा—विच्छुयजातिआसीविसे, मडुक्कजाति-आसीविसे, उरगजातिआसीविसे, मणुस्सजातिआसीविसे[1] ॥

८८ विच्छुयजातिआसीविसस्स णं भंते ! केवतिए विसए पण्णत्ते ?
गोयमा ! पभू णं विच्छुयजातिआसीविसे अद्धभरहप्पमाणमेत्तं बोंदिं विसेणं विसपरिगयं[2] विसट्टमाणं पकरेत्तए। विसए से विसट्ठयाए, नो चेव णं संपत्तीए करेंसु[3] वा, करेंति वा, करिस्संति वा ॥

८९ मडुक्कजातिआसीविसस्स [4]°णं भंते ! केवतिए विसए पण्णत्ते ?°
गोयमा ! पभू णं मडुक्कजातिआसीविसे भरहप्पमाणमेत्तं बोंदिं विसेणं विसप-रिगयं [5]°विसट्टमाणं पकरेत्तए। विसए से विसट्ठयाए, नो चेव णं संपत्तीए करेंसु वा, करेंति वा°, करिस्संति वा ॥

९० [6]°उरगजातिआसीविसस्स णं भंते ! केवतिए विसए पण्णत्ते ?
गोयमा ! पभू णं उरगजातिआसीविसे जंबुद्दीवप्पमाणमेत्तं बोंदिं विसेणं विस-परिगयं विसट्टमाणं पकरेत्तए। विसए से विसट्ठयाए, नो चेव णं संपत्तीए करेंसु वा, करेंति वा°, करिस्संति वा ॥

९१ मणुस्सजातिआसीविसस्स [7]°णं भंते ! केवतिए विसए पण्णत्ते ?
गोयमा ! पभू णं मणुस्सजातिआसीविसे समयखेत्तप्पमाणमेत्तं बोंदिं विसेणं विसपरिगयं विसट्टमाणं पकरेत्तए। विसए से विसट्ठयाए, नो चेव णं संपत्तीए करेंसु वा, करेंति वा,° करिस्संति वा ॥

९२ जइ कम्मआसीविसे किं नेरइयकम्मआसीविसे ? तिरिक्खजोणियकम्मआसी-विसे ? मणुस्सकम्मआसीविसे ? देवकम्मआसीविसे ?
गोयमा ! नो नेरइयकम्मासीविसे, तिरिक्खजोणियकम्मासीविसे वि, मणुस्स-कम्मासीविसे वि, देवकम्मासीविसे वि ॥

९३ जइ तिरिक्खजोणियकम्मासीविसे किं एगिंदियतिरिक्खजोणियकम्मासीविसे जाव पंचिंदियतिरिक्खजोणियकम्मासीविसे ?
गोयमा ! नो एगिंदियतिरिक्खजोणियकम्मासीविसे जाव नो चउरिंदियतिरि-क्खजोणियकम्मासीविसे, पंचिंदियतिरिक्खजोणियकम्मासीविसे।
जइ पंचिंदियतिरिक्खजोणियकम्मासीविसे किं संमुच्छिमपंचिंदियतिरिक्खजो-

---

१ मणुय° (ता)।
२. विसपरिणयं (ठा० ४।५१४)।
३. इह चैकवचनप्रक्रमेपि बहुवचननिर्देशो वृश्चिकाशीविषाणां बहुत्वज्ञापनार्थम् (वृ)।
४ सं० पा० पुच्छा।
५ सं० पा०—सेसं तं चेव जाव करिस्संति।
६ सं० पा०—एवं उरगजातिआसीविसस्स वि, नवरं—जंबुद्दीवप्पमाणमेत्तं बोंदिं विसेणं विसपरिगयं, सेसं तं चेव जाव करिस्संति।
७ सं० पा०—वि एवं चेव, नवरं—समयखेत्तप्पमाणमेत्तं बोंदिं विसेणं विसपरिगयं, सेसं तं चेव जाव करिस्संति।

णियकम्मासीविसे ? गब्भवक्कतियपचिदियतिरिक्खजोणियकम्मासीविसे ? एव जहा वेउव्वियसरीरस्स भेदो जाव[1] पज्जत्तासखेज्जवासाउयगब्भवक्कतिय-पचिदियतिरिक्खजोणियकम्मासीविसे, नो अपज्जत्तासखेज्जवासाउय जाव कम्मासीविसे ।।

९४ जइ मणुस्सकम्मासीविसे कि समुच्छिममणुस्सकम्मासीविसे ? गब्भवक्कतिय-मणुस्सकम्मासीविसे ?

गोयमा ! नो समुच्छिममणुस्सकम्मासीविसे, गब्भवक्कतियमणुस्सकम्मासीविसे, एव जहा वेउव्वियसरीर जाव पज्जत्तसखेज्जवासाउयकम्मभूमागब्भवक्कतिय-मणुस्सकम्मासीविसे[2], नो अपज्जत्ता जाव कम्मासीविसे ।।

९५. जइ देवकम्मासोविसे किं भवणवासिदेवकम्मासीविसे जाव वेमाणियदेवकम्मा-सीविसे ?

गोयमा ! भवणवासिदेवकम्मासीविसे, वाणमतर-जोतिसिय-वेमाणियदेवकम्मा-सीविसे वि ।

जइ भवणवासिदेवकम्मासीविसे कि असुरकुमारभवणवासिदेवकम्मासीविसे जाव थणियकुमारभवणवासिदेवकम्मासीविसे ?

गोयमा ! असुरकुमारभवणवासिदेवकम्मासीविसे वि जाव थणियकुमारभवण-वासिदेवकम्मासीविसे वि ।

जइ असुरकुमारभवणवासिदेवकम्मासीविसे[3] कि पज्जत्ताअसुरकुमारभवण-वासिदेवकम्मासीविसे ? अपज्जत्ताअसुरकुमारभवणवासिदेवकम्मासीविसे ?

गोयमा ! नो पज्जत्ताअसुरकुमारभवणवासिदेवकम्मासीविसे, अपज्जत्ता-असुरकुमारभवणवासिदेवकम्मासीविसे । एव जाव थणियकुमाराण ।

जइ वाणमतरदेवकम्मासीविसे कि पिसायवाणमतरदेवकम्मासीविसे ? एव सव्वेसि अपज्जत्तगाण । जोइसियाण सव्वेसिं अपज्जत्तगाण ।

जइ वेमाणियदेवकम्मासीविसे किं कप्पोवावेमाणियदेवकम्मासीविसे[4] ? कप्पा-तीयावेमाणियदेवकम्मासीविसे ?

गोयमा ! कप्पोवावेमाणियदेवकम्मासीविसे, नो कप्पातीयावेमाणियदेवकम्मा-सीविसे ।

जइ कप्पोवावेमाणियदेवकम्मासीविसे कि सोहम्मकप्पोवावेमाणियदेवकम्मा-सीविसे जाव अच्चुयकप्पोवावेमाणियदेवकम्मासीविसे ?

---

१. प० २१ ।

२. ०कम्मभूमग० (स) ।

३ असुरकुमार जाव कम्म० (अ, क, ता, ब, म, स) ।

४ कप्पोवग० (अ, क, ता, म, स) ।

गोयमा ! सोहम्मकप्पोवावेमाणियदेवकम्मासीविसे वि जाव सहस्सारकप्पो-वावेमाणियदेवकम्मासीविसे वि, नो आणयकप्पोवावेमाणियदेवकम्मासीविसे जाव नो अच्चुयकप्पोवावेमाणियदेवकम्मासीविसे ।

जइ सोहम्मकप्पोवा[1] •वेमाणियदेव॰कम्मासीविसे किं पज्जत्तासोहम्मकप्पो-वावेमाणियदेवकम्मासीविसे ? अपज्जत्तासोहम्मकप्पोवावेमाणियदेवकम्मा-सीविसे ?

गोयमा ! नो पज्जत्तासोहम्मकप्पोवावेमाणियदेवकम्मासीविसे, अपज्जत्ता-सोहम्मकप्पोवावेमाणियदेवकम्मासीविसे, एव जाव नो पज्जत्तासहस्सारकप्पो-वावेमाणियदेवकम्मासीविसे, अपज्जत्तासहस्सारकप्पोवावेमाणियदेवकम्मा-सीविसे ।।

छउमत्थ-केवलि-पद

९६ दस ठाणाइ छउमत्थे सव्वभावेण न जाणइ न पासइ, त जहा—१ धम्मत्थि-काय २. अधम्मत्थिकाय ३. आगासत्थिकाय ४. जीव असरीरपडिवद्ध ५ परमाणुपोग्गल ६ सद्द ७ गध ८. वात ९. अय जिणे भविस्सइ वा न वा भविस्सइ १० अय सव्वदुक्खाण अत करेस्सइ वा न वा करेस्सइ ।

एयाणि चेव उप्पण्णनाणदसणधरे अरहा जिणे केवली सव्वभावेण जाणइ-पासइ, त जहा—धम्मत्थिकाय[2], •अधम्मत्थिकाय, आगासत्थिकाय, जीव असरीरपडिवद्ध, परमाणुपोग्गल, सद्द, गध, वात, अय जिणे भविस्सइ वा न वा भविस्सइ, अय सव्वदुक्खाण अत॰ करेस्सइ वा न वा करेस्सइ ।।

नाण-पदं

९७. कतिविहे ण भते ! नाणे पण्णत्ते ?

गोयमा ! पंचविहे नाणे पण्णत्ते, त जहा—आभिणिवोहियनाणे, सुयनाणे, ओहिनाणे, मणपज्जवनाणे, केवलनाणे ।।

९८. से किं तं आभिणिबोहियनाणे ?

आभिणिवोहियनाणे चउव्विहे पण्णत्ते, त जहा—ओग्गहो, ईहा, अवाओ, धारणा । एव जहा 'रायप्पसेणइज्जे' नाणाणं भेदो तहेव इह भाणियव्वो जाव[3] सेत्त केवलनाणे[4] ।।

---

१. स० पा०—सोहम्मकप्पोवा जाव कम्मा-सीविसे ।
२ स० पा०—धम्मत्थिकाय जाव करेस्सइ ।
३ राय० सू० ७४१-७४५ ।
४. यच्च वाचनान्तरे श्रुतज्ञानाधिकारे यथा नन्द्यामङ्गप्ररूपणेत्यभिधाय 'जाव भवियअभ-विया तत्तो सिद्धा असिद्धा य' इत्युक्त तस्या-यमर्थ —श्रुतज्ञानसूत्रावसाने किल नन्द्या श्रुतविषय दर्शयतेदमभिहितम्—'इच्चेयमि दुवालसगे गणिपिडए अणता भावा अणता

९९ अण्णाणे ण भते ! कतिविहे पण्णत्ते ?
गोयमा ! तिविहे पण्णत्ते, त जहा—मइअण्णाणे, सुयअण्णाणे, विभगनाणे ।।

१००. से किं त मइअण्णाणे ?
मइअण्णाणे चउव्विहे पण्णत्ते, त जहा—ओग्गहो[1], •ईहा, अवाओ°, धारणा ।।

१०१ से किं त ओग्गहे ?
ओग्गहे दुविहे पण्णत्ते, त जहा—अत्थोग्गहे य वजणोग्गहे य । एव जहेव आभिणिवोहियनाणं तहेव, नवर—एगट्ठियवज्ज[2] जाव[3] नोइदियधारणा । सेत्त धारणा, सेत्त मइअण्णाणे ।।

१०२ से कि त सुयअण्णाणे ?
सुयअण्णाणे—ज इम अण्णाणिएहिं मिच्छादिट्ठिएहिं सच्छदबुद्धि-मइ-विग्गपिय, त जहा—भारह, रामायण जहा नदीए जाव[4] चत्तारि वेदा सगोवगा । सेत्त सुयअण्णाणे ।।

१०३ से किं त विभगनाणे ?
विभगनाणे अणेगविहे पण्णत्ते, त जहा—गामसठिए, नगरसठिए, जाव[5] सण्णिवेससठिए, दीवसठिए, समुद्दसठिए, वाससठिए, वासहरसठिए, पव्वयसठिए, रुक्खसठिए, थूभसठिए, हयसठिए, गयसठिए, नरसठिए, किन्नरसठिए, किपुरिससठिए, महोरगसठिए, गधव्वसठिए, उसभसठिए, पसुसठिए, पसयसठिए, विहगसठिए, वानरसठिए—नाणासठाणसठिए[6] पण्णत्ते ।।

जीवाण नाणि-अण्णाणित्त-पद

१०४ जीवा ण भते ! किं नाणी ? अण्णाणी ?
गोयमा ! जीवा नाणी वि, अण्णाणी वि ।
जे नाणी ते अत्थेगतिया दुण्णाणी, अत्थेगतिया तिण्णाणी, अत्थेगतिया चउनाणी, अत्थेगतिया एगनाणी । जे दुण्णाणी[7] ते आभिणिबोहियनाणी सुयनाणी

अभावा जाव अणता भवसिद्धिया अणता अभवसिद्धिया अणता सिद्धा अणता असिद्धा पण्णत्ते' ति, अस्य च सूत्रस्य या सग्रहगाथा—
भावमभावा हेऊमहेउ कारणमकारणा जीवा ।
अजीव भवियाऽभविया, तत्तो सिद्धा असिद्धा य ।।
इत्येवरूपा, तस्या खण्डमिदमेतदन्त श्रुतज्ञानसूत्रमिहाध्येयमिति (वृ) ।

१ स० पा०—ओग्गहो जाव धारणा ।

२ १ ओगेण्हणया २ उवधारणया ३ सवणया ४ अवलवणया ५ मेहा (नदी सू० ४३), इत्यादीनि पच-पचैकार्थिकान्यवग्रहादीनामधीतानि, मत्यज्ञाने तु न तान्यध्येयानीति भाव (वृ) ।

३ नदी सू० ४०-४८ ।

४ नदी सू० ६७ ।

५. भ० १।४९ ।

६. नाणासठिए (ता, ब) ।

७ दुयाणाणी (क, ता, ब, म, स) ।

य। जे तिण्णाणी ते आभिणिवोहियनाणी, सुयनाणी, ओहिनाणी, अहवा आभिणिवोहियनाणी, सुयनाणी, मणपज्जवनाणी। जे चउनाणी ते आभिणिवोहियनाणी, सुयनाणी, ओहिनाणी, मणपज्जवनाणी। जे एगनाणी ते नियमा केवलनाणी।

जे अण्णाणी ते अत्थेगतिया दुअण्णाणी, अत्थेगतिया तिअण्णाणी। जे दुअण्णाणी ते मइअण्णाणी सुयअण्णाणी य। जे तिअण्णाणी ते मइअण्णाणी, सुयअण्णाणी, विभगनाणी॥

१०५ नेरइया ण भते! किं नाणी? अण्णाणी?

गोयमा! नाणी वि, अण्णाणी वि।

जे नाणी ते नियमा तिण्णाणी, त तहा—आभिणिवोहियनाणी, सुयनाणी, ओहिनाणी। जे अण्णाणी ते अत्थेगतिया दुअण्णाणी, अत्थेगतिया तिअण्णाणी। एव तिण्णि अण्णाणाणि भयणाए॥

१०६ असुरकुमारा ण भते! किं नाणी? अण्णाणी?

जहेव नेरइया तहेव, तिण्णि नाणाणि नियमा, तिण्णि अण्णाणाणि भयणाए। एव जाव[1] थणियकुमारा॥

१०७ पुढविक्काइया ण भते! किं नाणी? अण्णाणी?

गोयमा! नो नाणी, अण्णाणी। जे अण्णाणी ते नियमा दुअण्णाणी-मइअण्णाणी सुयअण्णाणी य। एव जाव वणस्सइकाइया॥

१०८ बेइदियाण पुच्छा।

गोयमा! नाणी वि अण्णाणी वि।

जे नाणी ते नियमा दुण्णाणी, त जहा—आभिणिवोहियनाणी सुयनाणी य। जे अण्णाणी ते नियमा दुअण्णाणी, त जहा—मइअण्णाणी सुयअण्णाणी य। एव तेइदिय-चउरिदिया वि॥

१०९ पचिदियतिरिक्खजोणियाण पुच्छा।

गोयमा! नाणी वि, अण्णाणी वि।

जे नाणी ते अत्थेगतिया दुण्णाणी, अत्थेगतिया तिण्णाणी।

जे अण्णाणी ते अत्थेगतिया दुअण्णाणी, अत्थेगतिया तिअण्णाणी। एव तिण्णि नाणाणि, तिण्णि अण्णाणाणि भयणाए। मणुस्सा जहा जीवा, तहेव पच नाणाणि, तिण्णि अण्णाणाणि भयणाए। वाणमतरा जहा नेरइया। जोइसिय-वेमाणियाण तिण्णि नाणाणि, तिण्णि अण्णाणाणि नियमा॥

११०. सिद्धाण भते! पुच्छा।

गोयमा! नाणी, नो अण्णाणी, नियमा एगनाणी—केवलनाणी॥

---

१. पू० प० २।

अतरालगति पडुच्च—

१११. 'निरयगतिया ण'[1] भते ! जीवा किं नाणी ? अण्णाणी ?
गोयमा ! नाणी वि, अण्णाणी वि। तिण्णि नाणाइ नियमा, तिण्णि अण्णाणाइ भयणाए ॥

११२ तिरियगतिया ण भते ! जीवा किं नाणी ? अण्णाणी ?
गोयमा ! दो नाणा, दो अण्णाणा नियमा[2] ॥

११३ मणुस्सगतिया ण भते ! जीवा किं नाणी ? अण्णाणी ?
गोयमा ! तिण्णि नाणाइ भयणाए, दो अण्णाणाइ नियमा। देवगतिया जहा निरयगतिया ॥

११४ सिद्धगतिया ण भते ! जीवा कि नाणी ?
जहा[3] सिद्धा ॥

इदिय पडुच्च—

११५ सइदिया ण भते ! जीवा किं नाणी ? अण्णाणी ?
गोयमा ! चत्तारि नाणाइ, तिण्णि अण्णाणाइ—भयणाए ॥

११६. एगिंदिया ण भते ! जीवा किं नाणी ?
जहा पुढविकाइया। बेइंदिय-तेइदिय-चउरिंदिया ण दो नाणा, दो अण्णाणा नियमा। पंचिंदिया जहा सइदिया ॥

११७ अणिंदिया ण भते ! जीवा कि नाणी ?
जहा सिद्धा ॥

काय पडुच्च—

११८ सकाइया ण भते ! जीवा कि नाणी ? अण्णाणी ?
गोयमा ! पच नाणाइ, तिण्णि अण्णाणाइ—भयणाए। पुढविक्काइया जाव वणस्सइकाइया नो नाणी, अण्णाणी, नियमा दुअण्णाणी, त जहा—मइ-अण्णाणी य सुयअण्णाणी य। तसकाइया जहा सकाइया ॥

११९ अकाइया ण भते ! जीवा किं नाणी ?
जहा सिद्धा ॥

सुहुम-बादर पडुच्च—

१२०. सुहुमा ण भते ! जीवा कि नाणी ?
जहा पुढविक्काइया ॥

---

१ निरयगतियाए (वृ)।
२ नियम (ता)।
३. भ० ८।११०।

१२१ वादरा ण भते ! जीवा कि नाणी ?
जहा सकाइया ॥
१२२ नोसुहुमा-नोवादरा ण भते ! जीवा कि नाणी ?
जहा सिद्धा ॥

पज्जत्तापज्जत्त पडुच्च—

१२३. पज्जत्ता णं भते ! जीवा किं नाणी ?
जहा सकाइया ॥
१२४ पज्जत्ता ण भते ! नेरइया कि नाणी ?
तिण्णि नाणा, तिण्णि अण्णाणा नियमा । जहा नेरइया एव थणियकुमारा । पुढविकाइया जहा एगिंदिया । एव जाव चउरिंदिया ॥
१२५ पज्जत्ता णं भते ! पचिदियतिरिक्खजोणिया कि नाणी ? अण्णाणी ?
तिण्णि नाणा, तिण्णि अण्णाणा—भयणाए । मणुस्सा जहा सकाइया । वाणमंतर-जोइसिय-वेमाणिया जहा नेरइया ॥
१२६ अपज्जत्ता ण भते ! जीवा किं नाणी ? अण्णाणी ?
तिण्णि नाणा, तिण्णि अण्णाणा—भयणाए ।
१२७ अपज्जत्ता णं भते ! नेरइया किं नाणी ? अण्णाणी ?
तिण्णि नाणा नियमा, तिण्णि अण्णाणा भयणाए । एव जाव थणियकुमारा । पुढविक्काइया जाव वणस्सइकाइया जहा एगिंदिया ॥
१२८ वेइदियाण पुच्छा ।
दो नाणा, दो अण्णाणा—नियमा । एव जाव पचिदियतिरिक्खजोणियाण ॥
१२९ अपज्जत्तगा ण भते ! मणुस्सा कि नाणी ? अण्णाणी ?
तिण्णि नाणाइ भयणाए, दो अण्णाणाइं नियमा । वाणमतरा जहा नेरइया । अपज्जत्तगाण जोइसिय-वेमाणियाण तिण्णि नाणा, तिण्णि अण्णाणा—नियमा ॥
१३० नोपज्जत्तगा-नोअपज्जत्तगा ण भते ! जीवा किं नाणी ?
जहा सिद्धा ॥

भवत्थं पडुच्च—

१३१ निरयभवत्था ण भते ! जीवा किं नाणी ? अण्णाणी ?
जहा निरयगतिया ॥
१३२ तिरियभवत्था ण भते ! जीवा किं नाणी ? अण्णाणी ?
तिण्णि नाणा, तिण्णि अण्णाणा—भयणाए ॥
१३३. मणुस्सभवत्था ?
जहा सकाइया ॥

१३४. देवभवत्था ण भते !
जहा निरयभवत्था। अभवत्था जहा सिद्धा ॥

भवसिद्धियाभवसिद्धिय पडुच्च—

१३५ भवसिद्धिया ण भते ! जीवा कि नाणी ?
जहा सकाइया ॥

१३६ अभवसिद्धियाण पुच्छा।
गोयमा ! नो नाणी, अण्णाणी, तिण्णि अण्णाणाइ भयणाए ॥

१३७ नोभवसिद्धिया-नोअभवसिद्धिया ण भते ! जीवा कि नाणी ?
जहा सिद्धा ॥

सण्णि-असण्णि पडुच्च—

१३८. सण्णीण पुच्छा।
जहा सइदिया। असण्णी जहा वेइदिया। नोसण्णी-नोअसण्णी जहा सिद्धा ॥

लद्धि-पद

१३९. कतिविहा ण भते लद्धी पण्णत्ता ?
गोयमा ! दसविहा लद्धी पण्णत्ता, त जहा—१ नाणलद्धी २ दसणलद्धी ३ चरित्तलद्धी ४ चरित्ताचरित्तलद्धी ५ दाणलद्धी ६ लाभलद्धी ७ भोगलद्धी ८ उवभोगलद्धी ९ वीरियलद्धी १० इदियलद्धी ॥

१४०. नाणलद्धी ण भते ! कतिविहा पण्णत्ता ?
गोयमा ! पचविहा पण्णत्ता, त जहा—आभिणिबोहियनाणलद्धी जाव[1] केवलनाणलद्धी ॥

१४१ अण्णाणलद्धी ण भते ! कतिविहा पण्णत्ता ?
गोयमा ! तिविहा पण्णत्ता, तं जहा—मइअण्णाणलद्धी, सुयअण्णाणलद्धी, विभगनाणलद्धी ॥

१४२ दसणलद्धी ण भते ! कतिविहा पण्णत्ता ?
गोयमा ! तिविहा पण्णत्ता, त जहा—सम्मदसणलद्धी, मिच्छादसणलद्धी, सम्मामिच्छादसणलद्धी ॥

१४३ चरित्तलद्धी ण भते ! कतिविहा पण्णत्ता ?
गोयमा ! पचविहा पण्णत्ता, त जहा—सामाइयचरित्तलद्धी, छेदोवट्ठावणियचरित्तलद्धी, परिहारविसुद्धिचरित्तलद्धी, सुहुमसपरायचरित्तलद्धी, अहक्खायचरित्तलद्धी ॥

---

१. भ० ८।९७।

१४४. चरित्ताचरित्तलद्धी ण भंते ! कतिविहा पण्णत्ता ?
गोयमा ! एगागारा पण्णत्ता। एवं जाव उवभोगलद्धी एगागारा पण्णत्ता ॥

१४५. वीरियलद्धी णं भंते ! कतिविहा पण्णत्ता ?
गोयमा ! तिविहा पण्णत्ता, तं जहा—बालवीरियलद्धी, पंडियवीरियलद्धी, बालपंडियवीरियलद्धी ॥

१४६. इंदियलद्धी णं भंते ! कतिविहा पण्णत्ता ?
गोयमा ! पंचविहा पण्णत्ता, तं जहा—सोइंदियलद्धी जाव[1] फासिंदियलद्धी ॥

नाणलद्धि पडुच्च-नाणि-अण्णाणित्त-पद

१४७. नाणलद्धिया णं भंते ! जीवा किं नाणी ? अण्णाणी ?
गोयमा ! नाणी, नो अण्णाणी। अत्थेगतिया दुण्णाणी, एवं पंच नाणाइं भयणाए ॥

१४८. तस्स अलद्धीया णं भंते ! जीवा किं नाणी ? अण्णाणी ?
गोयमा ! नो नाणी, अण्णाणी। अत्थेगतिया दुअण्णाणी, तिण्णि अण्णाणा भयणाए ॥

१४९. आभिणिबोहियनाणलद्धिया णं भंते ! जीवा किं नाणी ? अण्णाणी ?
गोयमा ! नाणी, नो अण्णाणी। अत्थेगतिया दुण्णाणी, चत्तारि नाणाइं भयणाए ॥

१५०. तस्स अलद्धिया णं भंते ! जीवा किं नाणी ? अण्णाणी ?
गोयमा ! नाणी वि, अण्णाणी वि। जे नाणी ते नियमा एगनाणी—केवलनाणी जे अण्णाणी ते अत्थेगतिया दुअण्णाणी, तिण्णि अण्णाणाइं भयणाए। एवं सुयनाणलद्धिया वि। तस्स अलद्धिया वि जहा आभिणिबोहियनाणस्स अलद्धीया[2] ॥

१५१. ओहिनाणलद्धियाणं पुच्छा।
गोयमा ! नाणी, नो अण्णाणी। अत्थेगतिया तिण्णाणी, अत्थेगतिया चउनाणी। जे तिण्णाणी ते आभिणिबोहियनाणी, सुयनाणी, ओहिनाणी। जे चउनाणी ते आभिणिबोहियनाणी, सुयनाणी, ओहिनाणी, मणपज्जवनाणी ॥

१५२. तस्स अलद्धियाणं पुच्छा।
गोयमा ! नाणी वि, अण्णाणी वि। एवं ओहिनाणवज्जाइं चत्तारि नाणाइं, तिण्णि अण्णाणाइं—भयणाए ॥

१५३. मणपज्जवनाणलद्धियाणं पुच्छा।

---

१. भ० २।७७।

२. लद्धीया (अ, व, म, स), अर्थसमीक्षया एतत्पदमशुद्धं प्रतिभाति।

गोयमा ! नाणी, नो अण्णाणी। अत्थेगतिया तिण्णाणी, अत्थेगतिया चउ-नाणी। जे तिण्णाणी ते आभिणिबोहियनाणी, सुयनाणी, मणपज्जवनाणी। जे चउनाणी ते आभिणिबोहियनाणी, सुयनाणी, ओहिनाणी मणपज्जवनाणी।

१५४. तस्स अलद्धीयाणं पुच्छा।
गोयमा ! नाणी वि, अण्णाणी वि। मणपज्जवनाणवज्जाइ चत्तारि नाणाइ, तिण्णि अण्णाणाइ—भयणाए।

१५५ केवलनाणलद्धिया ण भते ! जीवा किं नाणी ? अण्णाणी ?
गोयमा ! नाणी, नो अण्णाणी। नियमा एगनाणी—केवलनाणी॥

१५६ तस्स अलद्धियाण पुच्छा।
गोयमा ! नाणी वि, अण्णाणी वि। केवलनाणवज्जाइ चत्तारि नाणाइ, तिण्णि अण्णाणाइं—भयणाए॥

१५७ अण्णाणलद्धियाण पुच्छा।
गोयमा ! नो नाणी, अण्णाणी। तिण्णि अण्णाणाइं भयणाए॥

१५८ तस्स अलद्धियाणं पुच्छा।
गोयमा ! नाणी, नो अण्णाणी। पंच नाणाइ भयणाए। जहा अण्णाणस्स य लद्धिया अलद्धिया य भणिया, एव मइअण्णाणस्स सुयअण्णाणस्स य लद्धिया अलद्धिया य भाणियव्वा। विभगनाणलद्धियाण तिण्णि अण्णाणाइ नियमा। तस्स अलद्धियाण पच नाणाइं भयणाए, दो अण्णाणाइ नियमा।

दंसणं पडुच्च—

१५९ दसणलद्धिया णं भते ! जीवा किं नाणी ? अण्णाणी ?
गोयमा ! नाणी वि, अण्णाणी वि। पच नाणाइ, तिण्णि अण्णाणाइ—भयणाए॥

१६०. तस्स अलद्धिया ण भते ! जीवा किं नाणी ? अण्णाणी ?
गोयमा ! तस्स अलद्धिया नत्थि।
सम्मदसणलद्धियाण पच नाणाइ भयणाए। तस्स अलद्धियाण तिण्णि अण्णा-णाइ भयणाए॥
मिच्छादसणलद्धियाण तिण्णि अण्णाणाइ भयणाए। तस्स अलद्धियाण पच नाणाइ, तिण्णि य अण्णाणाइ—भयणाए।
सम्मामिच्छादसणलद्धिया, अलद्धिया य जहा मिच्छादसणलद्धिया अलद्धिया तहेव भाणियव्वा॥

चरित्तं-पडुच्च—

१६१ चरित्तलद्धिया ण भते ! जीवा किं नाणी ? अण्णाणी ?
गोयमा ! पच नाणाइ भयणाए॥

तस्स अलद्धीयाण मणपज्जवनाणवज्जाइ चत्तारि नाणाइ, तिण्णि य अण्णाणाइ-भयणाए।

१६२. सामाइयचरित्तलद्धिया ण भते ! जीवा कि नाणी ? अण्णाणी ?
गोयमा ! नाणी—केवलवज्जाइ चत्तारि नाणाइ भयणाए। तस्स अलद्धियाणं पच नाणाइ, तिण्णि य अण्णाणाइ—भयणाए। एव जहा सामाइयचरित्तलद्धिया अलद्धीया य भणिया, एव जाव अहक्खायचरित्तलद्धीया अलद्धीया य भाणियव्वा, नवर—अहक्खायचरित्तलद्धीयाण[1] पच नाणाइ भयणाए॥

चरित्ताचरित्त पडुच्च—

१६३. चरित्ताचरित्तलद्धिया ण भते ! जीवा कि नाणी ? अण्णाणी ?
गोयमा ! नाणी, नो अण्णाणी। अत्थेगतिया दुण्णाणी, अत्थेगतिया तिण्णाणी। जे दुण्णाणी ते आभिणिबोहियनाणी य सुयनाणी य। जे तिण्णाणी ते आभिणिबोहियनाणी, सुयनाणी, ओहिनाणी॥

दाणाइ पडुच्च—

१६४ तस्स अलद्धियाण पच नाणाइ, तिण्णि अण्णाणाइ—भयणाए।
दाणलद्धियाण पच नाणाइ, तिण्णि अण्णाणाइ—भयणाए॥

१६५ तस्स अलद्धीयाणं पुच्छा।
गोयमा ! नाणी, नो अण्णाणी। नियमा एगनाणी—केवलनाणी। एव जाव वीरियस्स 'लद्धीया अलद्धीया'[2] य भाणियव्वा।

बालाइवीरिय पडुच्च—

बालवीरियलद्धियाण तिण्णि नाणाइ, तिण्णि अण्णाणाइ—भयणाए। तस्स अलद्धियाण पंच नाणाइ भयणाए।
पडियवीरियलद्धियाण पच नाणाइ भयणाए। तस्स अलद्धीयाण मणपज्जवनाणवज्जाइ नाणाइ, अण्णाणाणि य भयणाए।
बालपडियवीरियलद्धियाण तिण्णि नाणाइ भयणाए। तस्स अलद्धीयाण पच नाणाइ, तिण्णि अण्णाणाइ— भयणाए॥

इदिय पडुच्च—

१६६. इदियलद्धिया ण भते ! जीवा किं नाणी ? अण्णाणी ?
गोयमा ! चत्तारि नाणाइं, तिण्णि य अण्णाणाइ – भयणाए॥

१६७ तस्स अलद्धियाण पुच्छा।
गोयमा ! नाणी, नो अण्णाणी। नियमा एगनाणी—केवलनाणी॥

---

१. °लद्धीए (अ, क, ता, ब, म, स)।
२ लद्धी अलद्धी (अ, क, ता, ब, म, स)।

१६८ सोइंदियलद्धिया ण जहा इंदियलद्धिया ।।

१६९ तस्स अलद्धियाण पुच्छा ।
गोयमा ! नाणी वि, अण्णाणी वि । जे नाणी ते अत्थेगतिया दुण्णाणी, अत्थेगतिया एगनाणी । जे दुण्णाणी ते आभिणिवोहियनाणी, सुयनाणी । जे एगनाणी ते केवलनाणी । जे अण्णाणी ते नियमा दुअण्णाणी, त जहा—मइअण्णाणी य सुयअण्णाणी य । चक्खिदिय-घाणिदियाण लद्धीया अलद्धीया य जहेव सोइंदियस्स ।।

१७० जिब्भिदियलद्धियाण चत्तारि नाणाइ, तिण्णि य अण्णाणाइ— भयणाए ।।

१७१ तस्स अलद्धियाण पुच्छा ।
गोयमा ! नाणी वि, अण्णाणी वि । जे नाणी ते नियमा एगनाणी—केवलनाणी । जे अण्णाणी ते नियमा दुअण्णाणी, त जहा—मइअण्णाणी य सुयअण्णाणी य । फासिंदियलद्धीया अलद्धीया य जहा इंदियलद्धिया अलद्धिया य ।।

उवउत्ताण नाणि-अण्णाणित्त-पद

१७२. सागारोवउत्ता ण भते ! जीवा कि नाणी ? अण्णाणी ?
पच नाणाइ, तिण्णि अण्णाणाइ—भयणाए ।।

१७३ आभिणिवोहियनाणसागारोवउत्ता ण भते ?
चत्तारि नाणाइ भयणाए । एव सुयनाणसागारोवउत्ता वि । ओहिनाणसागारोवउत्ता जहा ओहिनाणलद्धिया । मणपज्जवनाणसागारोवउत्ता जहा मणपज्जवनाणलद्धीया । केवलनाणसागारोवउत्ता जहा केवलनाणलद्धीया ।
मइअण्णाणसागारोवउत्ताण तिण्णि अण्णाणाइ भयणाए । एव सुयअण्णाणसागारोवउत्ता वि । विभगनाणसागारोवउत्ताण तिण्णि अण्णाणाइ नियमा ।।

१७४ अणागारोवउत्ता ण भते ! जीवा कि नाणी ? अण्णाणी ?
पच नाणाइ, तिण्णि अण्णाणाइ—भयणाए । एव चक्खुदसण-अचक्खुदसणअणागारोवउत्ता वि, नवर—चत्तारि नाणाइ, तिण्णि अण्णाणाइ—भयणाए ।।

१७५ ओहिदसणअणागारोवउत्ताण पुच्छा ।
गोयमा ! नाणी वि, अण्णाणी वि । जे नाणी ते अत्थेगतिया तिण्णाणी, अत्थेगतिया चउनाणी । जे तिण्णाणी ते आभिणिवोहियनाणी, सुयनाणी, ओहीनाणी । जे चउनाणी ते आभिणिवोहियनाणी जाव मणपज्जवनाणी । जे अण्णाणी ते नियमा तिअण्णाणी, त जहा—मइअण्णाणी, सुयअण्णाणी, विभगनाणी । केवलदसणअणागारोवउत्ता जहा केवलनाणलद्धिया ।।

जोग पडुच्च—

१७६ सजोगी ण भते ! जीवा किं नाणी ? अण्णाणी ?
जहा[1] सकाइया । एव मणजोगी, वइजोगी, कायजोगी वि । अजोगी जहा सिद्धा ।।

---

१ भ० ८।११८ ।

लेस्सं पडुच्च—

१७७. सलेस्सा णं भते ! जीवा किं नाणी ? अण्णाणी ?
जहा सकाइया ।।

१७८. कण्हलेस्सा ण भते ! जीवा किं नाणी ? अण्णाणी ?
जहा[1] सइंदिया । एव जाव पम्हलेस्सा, सुक्कलेस्सा जहा सलेस्सा । अलेस्
जहा सिद्धा ।।

कसायं पडुच्च—

१७९. सकसाई ण भते ! जीवा किं नाणी ? अण्णाणी ?
जहा सइंदिया । एव जाव लोभकसाई ।।

१८०. अकसाई ण भते ! जीवा किं नाणी ? अण्णाणी ?
पच नाणाइ भयणाए ।।

वेद पडुच्च—

१८१. सवेदगा ण भते ! जीवा कि नाणी ? अण्णाणी ?
जहा सइंदिया । एवं इत्थिवेदगा वि, एव पुरिसवेदगा वि, एवं नपुसग वेद
वि । अवेदगा जहा अकसाई ।।

आहारग पडुच्च—

१८२. आहारगा ण भते ! जीवा कि नाणी ? अण्णाणी ?
जहा सकसाई, नवर—केवलनाण पि ।।

१८३. अणाहारगा ण भते ! जीवा किं नाणी ? अण्णाणी ?
मणपज्जवनाणवज्जाइ नाणाइं, अण्णाणाइ तिण्णि—भयणाए ।।

नाणाण विसय-पदं

१८४ आभिणिवोहियनाणस्स ण भते ! केवतिए विसए पण्णत्ते ?
गोयमा ! से समासओ चउव्विहे पण्णत्ते, त जहा—दव्वओ, खेत्तओ, कालअ
भावओ ।
दव्वओ णं आभिणिवोहियनाणी आएसेण सव्वदव्वाइ जाणइ-पासइ ।
खेत्तओ ण आभिणिवोहियनाणी आएसेण सव्व खेत्त जाणइ-पासइ ।
[2]कालओ ण आभिणिवोहियनाणी आएसेण सव्वं कालं जाणइ-पासइ ।
भावओ ण आभिणिवोहियनाणी आएसेणं सव्वे भावे जाणइ-पासइ[3] ।।

---

१. भ० ८।११५ ।

२. सं० पा०—एव कालओ वि, एव भावओ वि ।

३. नन्दीसूत्रे अस्मिन् विषये विवक्षाभेदोस्ति—
दव्वओ ण आभिणिवोहियनाणी आएसेण सव्वदव्वाइ जाणइ, न पासइ ।
खेत्तओ ण आभिणिवोहियनाणी आएसे सव्व खेत्त जाणइ, न पासइ ।

१८५ सुयनाणस्स ण भते ! केवतिए विसए पण्णत्ते ?
गोयमा ! से समासग्रो चउव्विहे पण्णत्ते, त जहा—दव्वग्रो, खेत्तग्रो, कालग्रो, भावग्रो ।
दव्वग्रो ण सुयनाणी उवउत्ते सव्वदव्वाइ जाणइ-पासइ ।
[1]•खेत्तग्रो ण सुयनाणी उवउत्ते सव्वखेत्त जाणइ-पासइ ।
कालओ ण सुयनाणी उवउत्ते सव्वकाल जाणइ-पासइ ।°
भावग्रो ण सुयनाणी उवउत्ते सव्वभावे जाणइ-पासइ ॥

१८६. ग्रोहिनाणस्स ण भते ! केवतिए विसए पण्णत्ते ?
गोयमा ! से समासग्रो चउव्विहे पण्णत्ते, त जहा—दव्वओ, खेत्तग्रो, कालग्रो, भावग्रो ।
दव्वग्रो ण ग्रोहिनाणी[2] •जहण्णेण ग्रणताइ रूविदव्वाइ जाणइ-पासइ । उक्कोसेण सव्वाइ रूविदव्वाइ जाणइ-पासइ ।
खेत्तग्रो ण ग्रोहिनाणी जहण्णेण ग्रगुलस्स ग्रसखेज्जइभाग जाणइ-पासइ । उक्कोसेण ग्रसखेज्जाइं ग्रलोगे लोयमेत्ताइ खडाइ जाणइ-पासइ ।
कालग्रो ण ग्रोहिनाणी जहण्णेण ग्रावलियाए ग्रसखेज्जइभाग जाणइ-पासइ । उक्कोसेण ग्रसखेज्जाग्रो ग्रोसप्पिणीग्रो उस्सप्पिणीग्रो ग्रईयमणागय च काल जाणइ-पासइ ।
भावग्रो ण ग्रोहिनाणी जहण्णेण ग्रणते भावे जाणइ-पासइ । उक्कोसेण वि ग्रणते भावे जाणइ-पासइ, सव्वभावाणमणतभाग जाणइ-पासइ° ॥

१८७ मणपज्जवनाणस्स ण भते ! केवतिए विसए पण्णत्ते ?
गोयमा ! से समासग्रो चउव्विहे पण्णत्ते, त जहा—दव्वग्रो, खेत्तग्रो, कालग्रो, भावग्रो ।
दव्वग्रो ण उज्जुमती ग्रणते ग्रणतपदेसिए[3] •खधे जाणइ-पासइ । ते चेव विउलमई ग्रब्भहियतराए विउलतराए विसुद्धतराए वितिमिरतराए जाणइ-पासइ ।
खेत्तग्रो ण उज्जुमई ग्रहे जाव इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए उवरिमहेट्ठिल्ले खुड्डागपयरे, उड्ढ जाव जोइसस्स उवरिमतले, तिरिय जाव ग्रतोमणुस्सखेत्ते ग्रड्ढाइज्जेसु दीवसमुद्देसु पण्णरससु कम्मभूमीसु तीसाए ग्रकम्मभूमीसु

कालओ ण आभिणिवोहियनाणी आएसेण सव्व काल जाणइ, न पासइ ।
भावओ ण आभिणिवोहियनाणी आएसेण सव्वे भावे जाणइ, न पासइ (सू० ५४) ।

१ स० पा०—एव खेत्तओ वि, कालओ वि ।
२ स० पा०—ओहिनाणी रूविदव्वाइ जाणइ-पासइ जहा नदीए जाव भावओ ।
३. स० पा०—जहा नदीए जाव भावओ ।

छप्पण्णए अंतरदीवगेसु सण्णीणं पंचिंदियाणं पज्जत्तयाणं मणोगए भावे जाणइ-पासइ।

तं चेव विउलमई अड्ढाइज्जेहिमंगुलेहिं अब्भहियतरं विउलतरं विसुद्धतरं वितिमिरतरं खेत्तं जाणइ-पासइ।

कालओ णं उज्जुमई जहण्णेणं पलिओवमस्स असंखिज्जयभागं, उक्कोसेण वि पलिओवमस्स असंखिज्जयभागं अतीयमणागयं वा कालं जाणइ-पासइ।

तं चेव विउलमई अब्भहियतरागं विउलतरागं विसुद्धतरागं वितिमिरतरागं जाणइ पासइ।

भावओ णं उज्जुमई अणंते भावे जाणइ-पासइ, सव्वभावाणं अणंतभागं जाणइ-पासइ।

तं चेव विउलमई अब्भहियतरागं विउलतरागं विसुद्धतरागं वितिमिरतरागं जाणइ-पासइ॰॥

१८८. केवलनाणस्स णं भंते! केवतिए विसए पण्णत्ते?

गोयमा! से समासओ चउव्विहे पण्णत्ते, तं जहा—दव्वओ, खेत्तओ, कालओ, भावओ।

दव्वओ णं केवलनाणी सव्वदव्वाइं जाणइ-पासइ।

[1]●खेत्तओ णं केवलनाणी सव्वं खेत्तं जाणइ-पासइ।

कालओ णं केवलनाणी सव्वं कालं जाणइ-पासइ।

भावओ णं केवलनाणी सव्वे भावे जाणइ-पासइ॰॥

१८९. मइअण्णाणस्स णं भंते! केवतिए विसए पण्णत्ते?

गोयमा! से समासओ चउव्विहे पण्णत्ते, तं जहा—दव्वओ, खेत्तओ, कालओ, भावओ।

दव्वओ णं मइअण्णाणी मइअण्णाणपरिगयाइं दव्वाइं जाणइ-पासइ[2]।

●खेत्तओ णं मइअण्णाणी मइअण्णाणपरिगयं खेत्तं जाणइ-पासइ।

कालओ णं मइअण्णाणी मइअण्णाणपरिगयं कालं जाणइ-पासइ।॰

भावओ णं मइअण्णाणी मइअण्णाणपरिगए भावे जाणइ-पासइ॥

१९०. सुयअण्णाणस्स णं भंते! केवतिए विसए पण्णत्ते?

गोयमा! से समासओ चउव्विहे पण्णत्ते, तं जहा—दव्वओ, खेत्तओ, कालओ, भावओ।

दव्वओ णं सुयअण्णाणी सुयअण्णाणपरिगयाइं दव्वाइं आघवेइ, पण्णवेइ, परूवेइ[3]।

---

१. सं॰ पा॰—एवं जाव भावओ।

२. सं॰ पा॰—पासइ जाव भावओ।

३. वाचनान्तरे पुनरिदमधिकमवलोक्यते 'दसेति निदसेति उवदसेति' (वृ)।

'•खेत्तओ ण सुयअण्णाणी सुयअण्णाणपरिगय खेत्तं आघवेइ, पण्णवेइ, परूवेइ।
कालओ ण सुयअण्णाणी सुयअण्णाणपरिगय काल आघवेइ, पण्णवेइ, परूवेइ° ।
भावओ ण सुयअण्णाणी सुयअण्णाणपरिगए भावे आघवेइ[२], •पण्णवेइ, परूवेइ° ॥

१९१. विभगनाणस्स ण भते ! केवतिए विसए पण्णत्ते ?
गोयमा ! से समासओ चउव्विहे पण्णत्ते, त जहा— दव्वओ, खेत्तओ, कालओ, भावओ।
दव्वओ ण विभंगनाणी विभगनाणपरिगयाइ दव्वाइ जाणइ-पासइ।
'•खेत्तओ ण विभगनाणी विभगनाणपरिगय खेत्त जाणइ-पासइ।
कालओ ण विभगनाणी विभगनाणपरिगय काल जाणइ-पासइ।°
भावओ ण विभगनाणी विभंगनाणपरिगए भावे जाणइ-पासइ ॥

नाणीण सठिइ-पद

१९२ नाणी ण भंते ! नाणी ति कालओ केवच्चिर होइ ?
गोयमा ! नाणी दुविहे पण्णत्ते, त जहा—१ सादीए वा अपज्जवसिए २ सादीए वा सपज्जवसिए। तत्थ ण जे से सादीए सपज्जवसिए से जहण्णेण अतोमुहुत्त, उक्कोसेण छावट्ठि सागरोवमाइ सातिरेगाइ ॥

१९३. आभिणिबोहियनाणी ण भते ! आभिणिबोहिय[४] •नाणी ति कालओ केवच्चिर होइ ?
गोयमा ! एव चेव[५] ॥

१९४. एव[६] सुयनाणी वि ॥

१९५. ओहिनाणी वि एव[७] चेव, नवर—जहण्णेण एक्क समय ॥

१९६. मणपज्जवनाणी ण भते ! मणपज्जवनाणी ति कालओ केवच्चिरं होइ ?
गोयमा ! जहण्णेण एक्क समय, उक्कोसेण देसूण पुव्वकोडिं ॥

१९७ केवलनाणी ण भते ! केवलनाणी ति कालओ केवच्चिर होइ ?
गोयमा ! सादीए अपज्जवसिए ॥

१९८. अण्णाणी, मइअण्णाणी, सुयअण्णाणी ण भते ! पुच्छा।

---

१ स० पा०—एव खेत्तओ कालओ।
२. स० पा०—त चेव।
३ स० पा०—एव जाव भावओ।
४. स० पा०—एव नाणी आभिणिबोहियनाणी जाव केवलनाणी अण्णाणी मइअण्णाणी सुयअण्णाणी विभगनाणी एएसि दसण्ह वि [अट्ठण्ह वि (अ)] सचिट्ठणा जहा कायठितीए अतर सव्व जहा जीवाभिगमे अप्पाबहुगाणि तिण्णि जहा बहुवत्तव्वयाए।
५ भ० ८।१९२।
६. भ० ८।१९२।
७ भ० ८।१९२।

गोयमा ! अण्णाणी, मइअण्णाणी, सुयअण्णाणी य तिविहे पण्णत्ते, त जहा—१ अणादीए वा अपज्जवसिए २. अणादीए वा सपज्जवसिए ३ सादीए वा सपज्जवसिए। तत्थ ण जे से सादीए सपज्जवसिए से जहण्णेण अतोमुहुत्त, उक्कोसेण अणत काल—अणता ओसप्पिणी उस्सप्पिणीओ कालओ, खेत्तओ अवड्ढ पोग्गलपरियट्ट देसूण ॥

१९९ विभगनाणी ण भते ! पुच्छा।
गोयमा ! जहण्णेण एक्क समय, उक्कोसेण तेत्तीस सागरोवमाइ देसूणाए पुव्वकोडीए अब्भहियाइ ॥

नाणीण अतर-पद

२०० आभिणिबोहियनाणिस्स ण भते ! अतर कालओ केवच्चिर होइ ?
गोयमा ! जहण्णेण अतोमुहुत्त, उक्कोसेण अणत काल जाव[1] अवड्ढ पोग्गल-परियट्ट देसूण ॥

२०१ सुयनाणि-ओहिनाणि-मणपज्जवनाणीण एव चेव ॥

२०२ केवलनाणिस्स पुच्छा।
गोयमा ! नत्थि अतर ॥

२०३ मइअण्णाणिस्स सुयअण्णाणिस्स य पुच्छा।
गोयमा ! जहण्णेण अतोमुहुत्त, उक्कोसेण छावट्ठि सागरोवमाइ साइरेगाइं ॥

२०४ विभगनाणिस्स पुच्छा।
गोयमा ! जहण्णेण अतोमुहुत्त, उक्कोसेण वणस्सइकालो ॥

नाणीण अप्पाबहुयत्त-पद

२०५ एतेसि ण भते ! जीवाण आभिणिबोहियनाणीण, सुयनाणीण, ओहिनाणीण मणपज्जवनाणीण केवलनाणीण य कयरे कयरेहिंतो अप्पा वा ? बहुया वा ? तुल्ला वा ? विसेसाहिया वा ?
गोयमा ! सव्वत्थोवा जीवा मणपज्जवनाणी, ओहिनाणी असखेज्जगुणा, आभिणिबोहियनाणी सुयनाणी दो वि तुल्ला विसेसाहिया, केवलनाणी अणत-गुणा ॥

२०६. एतेसि ण भते ! जीवाण मइअण्णाणीण, सुयअण्णाणीण, विभगनाणीण य कयरे कयरेहिंतो अप्पा वा ? बहुया वा ? तुल्ला वा ? विसेसाहिया वा ?
गोयमा ! सव्वत्थोवा जीवा विभगनाणी, मइअण्णाणी सुयअण्णाणी दो वि तुल्ला अणतगुणा ॥

---

१. भ० ८।१९८।

२०७. एतेसि ण भते ! जीवाण ग्राभिणिबोहियनाणीण सुयनाणीण ग्रोहिनाणीण मणपज्जवनाणीण केवलनाणीण मतिग्रण्णाणीण सुयग्रण्णाणीण विभगनाणीण य कयरे कयरेहिंतो ग्रप्पा वा ? वहुया वा ? तुल्ला वा ? विसेसाहिया वा ?
गोयमा ! सव्वत्थोवा जीवा मणपज्जवनाणी, ग्रोहिनाणी ग्रसखेज्जगुणा, आभिणिवोहियनाणी सुयनाणी य दो वि तुल्ला विसेसाहिया, विभगनाणी ग्रस-खेज्जगुणा, केवलनाणी ग्रणतगुणा, मइग्रण्णाणी सुयग्रण्णाणी य दो वि तुल्ला ग्रणतगुणा° ।।

नाणपज्जव-पद

२०८ केवतिया ण भते ! ग्राभिणिवोहियनाणपज्जवा पण्णत्ता ?
गोयमा ! ग्रणता आभिणिवोहियनाणपज्जवा पण्णत्ता ।।

२०९. केवतिया ण भते ! सुयनाणपज्जवा पण्णत्ता ?
एवं चेव ।।

२१०. एव जाव केवलनाणस्स । एव मइग्रण्णाणस्स सुयग्रण्णाणस्स ।।

२११. केवतिया ण भते ! विभगनाणपज्जवा पण्णत्ता ?
गोयमा ! ग्रणता विभगनाणपज्जवा पण्णत्ता ।।

नाणपज्जवाण अप्पाबहुयत्त-पद

२१२ एतेसि ण भते ! ग्राभिणिवोहियनाणपज्जवाण, सुयनाणपज्जवाण, ग्रोहिनाण-पज्जवाण, मणपज्जवनाणपज्जवाण, केवलनाणपज्जवाण य कयरे कयरेहितो[1] •ग्रप्पा वा ? वहुया वा ? तुल्ला वा ?° विसेसाहिया वा ?
गोयमा ! सव्वत्थोवा मणपज्जवनाणपज्जवा, ग्रोहिनाणपज्जवा ग्रणतगुणा, सुयनाणपज्जवा अणतगुणा, ग्राभिणिबोहियनाणपज्जवा ग्रणतगुणा, केवलनाण-पज्जवा ग्रणतगुणा ।।

२१३ एएसि ण भते ! मइग्रण्णाणपज्जवाण, सुयग्रण्णाणपज्जवाण, विभगनाण-पज्जवाण य कयरे कयरेहिंतो[2] •ग्रप्पा वा ? बहुया वा ? तुल्ला वा ?° विसे-साहिया वा ?
गोयमा ! सव्वत्थोवा विभगनाणपज्जवा, सुयग्रण्णाणपज्जवा ग्रणतगुणा, मइग्रण्णाणपज्जवा ग्रणतगुणा ।।

२१४ एएसि ण भते ! ग्राभिणिबोहियनाणपज्जवाण जाव केवलनाणपज्जवाण, मइ-ग्रण्णाणपज्जवाण, सुयग्रण्णाणपज्जवाण, विभगनाणपज्जवाण य कयरे कयरे-हिंतो[3] •ग्रप्पा वा ? वहुया वा ? तुल्ला वा°? विसेसाहिया वा ?

---

१. स० पा०—कयरेहिंतो जाव विसेसाहिया ।
२ स० पा०—कयरेहिंतो जाव विसेसाहिया ।
३ स० पा०—कयरेहिंतो जाव विसेसाहिया ।

गोयमा ! सव्वत्थोवा मणपज्जवनाणपज्जवा, विभंगनाणपज्जवा अणंतगुणा, ओहिनाणपज्जवा अणंतगुणा, सुयअण्णाणपज्जवा अणंतगुणा, सुयनाणपज्जवा विसेसाहिया, मइअण्णाणपज्जवा अणंतगुणा, आभिणिबोहियनाणपज्जवा विसेसाहिया, केवलनाणपज्जवा अणंतगुणा ॥

२१५. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति[1] ॥

तइओ उद्देसो

वणस्सइ-पदं

२१६. कतिविहा णं भंते ! रुक्खा पण्णत्ता ?
गोयमा ! तिविहा रुक्खा पण्णत्ता, तं जहा—संखेज्जजीविया, असंखेज्जजीविया, अणंतजीविया ॥

२१७. से किं तं संखेज्जजीविया ?
संखेज्जजीविया अणेगविहा पण्णत्ता, तं जहा—

ताल[2] तमाले तक्कलि, तेयलि[3] •साले य सालकल्लाणे ।
सरले जावति केयइ, कदलि तह चम्मरुक्खे य ॥१॥
भुयरुक्ख हिंगुरुक्खे, लवंगरुक्खे य होति बोधव्वे ।
पूयफली खज्जूरी, बोधव्वा नालिएरी य° ॥२॥

जे यावण्णे तहप्पगारा । सेत्तं संखेज्जजीविया ॥

२१८. से किं तं असंखेज्जजीविया ?
असंखेज्जजीविया दुविहा पण्णत्ता, तं जहा—एगट्ठिया य बहुबीयगा य ॥

२१९. से किं तं एगट्ठिया ?
एगट्ठिया अणेगविहा पण्णत्ता, तं जहा—

निंबंब जंबु[4] •कोसंब, साल अंकोल्ल पीलु सेलू य ।
सल्लइ मोयइ मालुय, बउल पलासे करंजे य ॥१॥
पुत्तंजीवयरिट्ठे, बिभेलए हरडए य भल्लाए ।
उंबभरिया[5] खीरिणि, बोधव्वे धायइ पियाले ॥२॥

---

१ भ० १।५१ ।
२ ताले (अ, क, ता, ब, म, स) ।
३ सं० पा०—जहा पण्णवणाए जाव नालिएरी ।
४. सं० पा०—जहा पण्णवणापदे जाव फला ।
५ प्रज्ञापनावृत्तौ 'उंबेभरिका' इति दृश्यते । भ० २२।२ सूत्रे 'उंबभरिका' इतिपदमस्ति ।

पूइयनिंबारग सेण्हा, तह सीसवा य असणे य।
पुण्णाग नागरुक्खे, सीवण्णि तहा असोगे य ॥३॥

जे यावण्णे तहप्पगारा। एएसि ण मूला वि असखेज्जजीविया, कदा वि खधा वि तया वि साला वि पवाला वि। पत्ता पत्तेयजीविया। पुप्फा अणेगजीविया। फला एगट्ठिया। सेत्त एगट्ठिया ॥

२२० से किं त बहुबीयगा ?

बहुबीयगा अणेगविहा पण्णत्ता, त जहा—

अत्थिय तिंदु कविट्ठे, अवाडग माउलिंग बिल्ले य।
आमलग फणस दाडिम, आसोत्थे उबर वडे य ॥१॥
नग्गोह नदिरुक्खे, पिप्परि सयरी पिलुक्खरुक्खे य।
काउबरी कुत्थुभरि, बोधव्वा देवदाली य ॥२॥
तिलए लउए छत्तोह, सिरीसे सत्तिवण्ण दहिवण्णे।
लोद्ध धव चदणज्जुण, नीमे कुडए कयबे य ॥३॥

जे यावण्णे तहप्पगारा। एएसि ण मूला वि असखेज्जजीविया, कदा वि खधा वि तया वि साला वि पवाला वि। पत्ता पत्तेयजीविया। पुप्फा अणेगजीविया।° फला बहुबीयगा। सेत्त बहुबीयगा। सेत्त असखेज्जजीविया ॥

२२१ से किं त अणतजीविया ?

अणतजीविया अणेगविहा पण्णत्ता, त जहा—आलुए, मूलए, सिगबेरे—एव जहा— सत्तमसए जाव[1] सिउढी[2], मुमुढी। जेयावण्णे तहप्पगारा। सेत्त अणतजीविया ॥

जीवपएसाणं-अंतर-पद

२२२ अह भते! कुम्मे, कुम्मावलिया, गोहा, गोहावलिया, गोणा, गोणावलिया, मणुस्से, मणुस्सावलिया, महिसे, महिसावलिया—एएसि ण दुहा वा तिहा वा सखेज्जहा वा छिन्नाण जे अतरा ते वि ण तेहिं जीवपएसेहिं फुडा ?

हता फुडा ॥

२२३ पुरिसे ण भते! अतरे हत्थेण वा पादेण वा अगुलियाए वा सलागाए[3] वा कट्ठेण वा किलिंचेण[4] वा आमुसमाणे वा समुसमाणे वा आलिहमाणे वा विलिहमाणे वा अण्णयरेण वा तिक्खेण सत्थजाएण आछिंदमाणे वा विछिंदमाणे वा,

---

१. भ० ७।६६।

२ सीउण्हे (अ), सीउण्ही (क), सीउण्णी (ता), सीकण्हे (स)।

३ सलागए (अ), × (ता)।

४. कलिंचेण (अ, ता, व, म, स)।

अगणिकाएण वा समोडहमाणे तेसिं जीवपएसाणं किंचि आबाहं वा विवाहं वा उप्पाएइ ? छविच्छेदं वा करेइ ?

णो तिणट्ठे समट्ठे, नो खलु तत्थ सत्थ कमइ[1] ॥

चरिम-अचरिम-पद

२२४. कइ ण भंते ! पुढवीओ पण्णत्ताओ ?

गोयमा ! अट्ठ पुढवीओ पण्णत्ताओ, त जहा—रयणप्पभा जाव[2] अहेसत्तमा, ईसीपब्भारा ॥

२२५ इमा ण भंते ! रयणप्पभापुढवी किं चरिमा ? अचरिमा ?

चरिमपद निरवसेस भाणियव्व जाव[3]—

२२६ वेमाणिया ण भंते ! फासचरिमेण किं चरिमा ? अचरिमा ?

गोयमा ! चरिमा वि, अचरिमा वि ॥

२२७. सेव भंते ! सेव भंते ! त्ति[4] ॥

चउत्थो उद्देसो

किरिया-पद

२२८. रायगिहे जाव[5] एव वयासी—कति ण भंते ! किरियाओ पण्णत्ताओ ?

गोयमा ! पच किरियाओ पण्णत्ताओ, त जहा—काइया, अहिगरणिया, पाओसिया, पारियावणिया, पाणाइवायकिरिया—एव किरियापद निरवसेस भाणियव्व जाव[6] सव्वत्थोवाओ मिच्छादसणवत्तियाओ किरियाओ, अप्पच्चक्खाणकिरियाओ विसेसाहियाओ, पारिग्गहियाओ किरियाओ विसेसाहियाओ, आरभियाओ किरियाओ विसेसाहियाओ, मायावत्तियाओ किरियाओ विसेसाहियाओ ॥

२२९. सेव भंते ! सेव भंते ! त्ति[7] ॥

---

१. [illegible] (क, म) ।
२. भ० २।१२५ ।
३. प० १० ।
४. भ० १।५१ ।
५. भ० १।४-८ ।
६. प० २२ ।
७. भ० १।५१ ।

पंचमो उद्देसो

आजीवियसंदब्भे समणोवासय-पद

२३० रायगिहे जाव[1] एव वयासी—आजीविया ण भंते ! थेरे भगवते एव वयासी—समणोवासगस्स[2] ण भते ! सामाइयकडस्स समणोवस्सए अच्छमाणस्स केइ भडं अवहरेज्जा, से ण भते ! त भंड अणुगवेसमाणे किं सभड[3] अणुगवेसइ ? परायग भडं अणुगवेसइ ?

गोयमा ! सभड अणुगवेसइ, नो परायगं भड अणुगवेसइ ॥

२३१ तस्स णं भते ! तेहिं सीलव्वय-गुण-वेरमण-पच्चक्खाण-पोसहोववासेहिं से भडे अभडे भवइ[4] ?

हंता भवइ ॥

२३२ से केण खाइ णं अट्ठेण भते ! एवं वुच्चइ—सभंडं अणुगवेसइ, नो परायगं भड अणुगवेसइ ?

गोयमा ! तस्स ण एवं भवइ—नो मे हिरण्णे, नो मे सुवण्णे, नो मे कसे, नो मे दूसे, नो मे विपुलधण-कणग-रयण-मणि-मोत्तिय-सख-सिल-प्पवाल-रत्तरयण-मादीए सतसारसावदेज्जे[5], ममत्तभावे[6] पुण से अपरिण्णाए भवइ । से तेणट्ठेण गोयमा ! एव वुच्चइ—सभड अणुगवेसइ, नो परायग भड अणुगवेसइ ॥

२३३. समणोवासगस्स ण भते ! सामाइयकडस्स समणोवस्सए अच्छमाणस्स केइ[7] जाय चरेज्जा, से ण भते ! किं जाय चरइ ? अजाय चरइ ?

गोयमा ! जाय चरइ ? नो अजाय चरइ ॥

२३४. तस्स ण भते ! तेहिं सीलव्वय-गुण-वेरमण-पच्चक्खाण-पोसहोववासेहिं सा जाया अजाया भवइ ?

हता भवइ ॥

२३५ से केण खाइ ण अट्ठेग भते एव वुच्चइ—जाय चरइ ? नो अजाय चरइ ?

गोयमा ! तस्स ण एव भवइ—नो मे माता, नो मे पिता, नो मे भाया, नो मे भगिणी, नो मे भज्जा, नो मे पुत्ता, नो मे धूया, नो मे सुण्हा, पेज्जबधणे पुण से अव्वोच्छिन्ने[8] भवइ। से तेणट्ठेण गोयमा[9] ! •एव वुच्चइ—जाय चरइ°, नो अजाय चरइ ॥

---

१ भ० १।४-८ ।

२ एव वक्ष्यमाणप्रकारमवादिषु, यच्च ते तान् प्रत्यवादिषुस्तद्गौतम स्वयमेव पृच्छन्नाह (वृ) ।

३. सयभड (अ), स भड (ता, म), सय भड (स) ।

४ हवइ (ता) ।

५ °सापदेज्जे (ता), सावतेज्जे (व) ।

६ ममत्ति° (क, ता, व) ।

७ केवइ (ता) ।

८. अवो° (अ) ।

९. सं० पा०—गोयमा जाव नो ।

२३६. समणोवासगस्स ण भते ! पुव्वामेव थूलए पाणाइवाए अपच्चक्खाए[1] भवइ, से ण भते ! पच्छा पच्चाइक्खमाणे कि करेइ ?
गोयमा ! तीय पडिक्कमति, पडुप्पन्नं सवरेति, अणागय पच्चक्खाति ।।

२३७ तीय पडिक्कममाणे कि १. तिविह तिविहेण पडिक्कमति ? २. तिविह दुविहेणं पडिक्कमति ? ३ तिविह एगविहेण पडिक्कमति ? ४ दुविह तिविहेण पडिक्कमति ? ५. दुविह दुविहेण पडिक्कमति ? ६ दुविह एगविहेण पडिक्कमति ? ७ एगविह तिविहेण पडिक्कमति ? ८ एगविह दुविहेण पडिक्कमति ? ९ एगविह एगविहेण पडिक्कमति ?
गोयमा ! तिविहं वा[2] तिविहेण पडिक्कमति, तिविह वा दुविहेणं पडिक्कमति, एव[3] चेव जाव एगविह वा एगविहेण पडिक्कमति ।
१. तिविह तिविहेण पडिक्कममाणे न करेइ, न कारवेइ, करेत नाणुजाणइ मणसा वयसा कायसा ।
२. तिविहं दुविहेण पडिक्कममाणे न करेइ, न कारवेइ, करेत नाणुजाणइ मणसा वयसा ३ अहवा न करेइ, न कारवेइ, करेत नाणुजाणइ मणसा कायसा ४ अहवा न करेइ, न कारवेइ, करेत नाणुजाणइ वयसा कायसा ।
५ तिविह एगविहेण पडिक्कममाणे न करेइ, न कारवेइ, करेतं नाणुजाणइ मणसा ६ अहवा न करेइ, न कारवेइ, करेत नाणुजाणइ वयसा ७ अहवा न करेइ, न कारवेइ, करेत नाणुजाणइ कायसा ।
८ दुविह तिविहेण पडिक्कममाणे न करेइ, न कारवेइ मणसा वयसा कायसा ९ अहवा न करेइ, करेतं नाणुजाणइ मणसा वयसा कायसा १० अहवा न कारवेइ, करेत नाणुजाणइ मणसा वयसा कायसा ।
११. दुविह दुविहेण पडिक्कममाणे न करेइ, न कारवेइ, मणसा वयसा १२ अहवा न करेइ, न कारवेइ मणसा कायसा १३ अहवा न करेइ, न कारवेइ वयसा कायसा १४. अहवा न करेइ, करेत नाणुजाणइ मणसा वयसा १५. अहवा न करेइ, करेतं नाणुजाणइ मणसा कायसा १६ अहवा न करेइ, करेत नाणुजाणइ वयसा कायसा १७ अहवा न कारवेइ, करेत नाणुजाणइ मणसा वयसा १८ अहवा न कारवेइ, करेत नाणुजाणइ मणसा कायसा १९. अहवा न कारवेइ, करेत नाणुजाणइ वयसा कायसा ।
२०. दुविह एक्कविहेण पडिक्कममाणे न करेइ, न कारवेइ मणसा २१ अहवा न करेइ, न कारवेइ वयसा २२ अहवा न करेइ, न कारवेइ कायसा २३ अहवा

---

१. वाचनान्तरे तु 'अपच्चक्खाए' इत्यस्य स्थाने 'पच्चक्खाए'त्ति 'पच्चाइक्खमाणे' इत्यस्य च स्थाने 'पच्चक्खावेमाणे' त्ति दृश्यते (वृ) ।
२. × (स) ।
३ त (अ, क, ता, स) ।

न करेइ, करेत नाणुजाणइ मणसा २४ अहवा न करेइ, करेत नाणुजाणइ वयसा २५ अहवा न करेइ, करेत नाणुजाणइ कायसा २६ अहवा न कारवेइ, करेत नाणुजाणइ मणसा २७. अहवा न कारवेइ, करेत नाणुजाणइ वयसा २८ अहवा न कारवेइ, करेत नाणुजाणइ कायसा ।

२९ एगविह तिविहेण पडिक्कममाणे न करेइ, मणसा वयसा कायसा ३०. अहवा न कारवेइ मणसा वयसा कायसा ३१ अहवा करेत नाणुजाणइ मणसा वयसा कायसा ।

३२ एक्कविह दुविहेण पडिक्कममाणे न करेइ मणसा वयसा ३३ अहवा न करेइ मणसा कायसा ३४ अहवा न करेइ वयसा कायसा ३५ अहवा न कारवेइ मणसा वयसा ३६ अहवा न कारवेइ मणसा कायसा ३७ अहवा न कारवेइ वयसा कायसा ३८ अहवा करेत नाणुजाणइ मणसा वयसा ३९ अहवा करेत नाणुजाणइ मणसा कायसा ४० अहवा करेत नाणुजाणइ वयसा कायसा ।

४१ एगविह एगविहेण पडिक्कममाणे न करेइ मणसा ४२ अहवा न करेइ वयसा ४३ अहवा न करेइ कायसा ४४ अहवा न कारवेइ मणसा ४५ अहवा न कारवेइ वयसा ४६ अहवा न कारवेइ कायसा ४७ अहवा करेत नाणुजाणइ मणसा ४८ अहवा करेत नाणुजाणइ वयसा ४९. अहवा करेत नाणुजाणइ कायसा ।।

२३८ पडुप्पन्न सवरेमाणे कि तिविह तिविहेण सवरेइ ?

एव जहा पडिक्कममाणेण एगूणपन्न भगा भणिया एव सवरमाणेण वि एगूणपन्न भगा भाणियव्वा ।।

२३९. अणागय पच्चक्खमाणे कि तिविह तिविहेण पच्चक्खाइ ?

एव एते[1] चेव भगा एगूणपन्न[2] भाणियव्वा जाव अहवा करेत नाणुजाणइ कायसा ।।

२४०. समणोवासगस्स णं भते ! पुव्वामेव थूलए मुसावाए अपच्चक्खाए भवइ, से ण भते ! पच्छा पच्चाइक्खमाणे किं करेइ ?

एव जहा पाणाइवायस्स सीयाल भगसय भणिय, तहा मुसावायस्स वि भाणियव्व । एव अदिन्नादाणस्स वि[3], एव थूलगस्स वि मेहुणस्स, थूलगस्स वि परिग्गहस्स जाव अहवा करेत नाणुजाणइ कायसा ।

एते खलु एरिसगा समणोवासगा भवति, नो खलु एरिसगा आजीविओवासगा भवति ।।

---

१. × (अ, म), ते (क, व, स) ।
२. × (ता) ।
३ वि भाणितव्व (ता) ।

२४१. आजीवियसमयस्स ण अयमट्ठे—अक्खीणपडिभोइणो सव्वे सत्ता; से हंता, छेत्ता, भेत्ता, लुपित्ता, विलुपित्ता, उद्दवइत्ता आहारमाहारेंति ॥

२४२. तत्थ खलु इमे दुवालस आजीवियोवासगा भवंति, त जहा—१. ताले २ तालपलवे ३ उव्विहे ४. सविहे ५ अवविहे ६ उदए[1] ७ नामुदए ८ णम्मुदए[2] ९ अणुवालए १०. सखवालए ११ अयपुले १२ कायरए[3]—इच्चेते दुवालस आजीविओवासगा अरहतदेवतागा[4], अम्मापिउसुस्सूसगा, पचफलपडिक्कता, [त जहा—उबरेहिं, वडेहि, बोरेहिं, सतरेहि, पिलक्खूहि][5] पलडुल्हसुणकदमूलविवज्जगा[6], अणिल्लछिएहि[7] अणक्कभिन्नेहि गोणेहि तसपाणविवज्जिएहिं छेत्तेहिं[8] वित्ति कप्पेमाणा विहरति। एए वि ताव एव इच्छति किमग ! पुण जे इमे समणोवासगा भवति, जेसिं नो कप्पति इमाइ पन्नरस कम्मादाणाइ सय करेत्तए वा, कारवेत्तए वा, करेत वा अन्न समणुजाणेत्तए, त जहा—इगालकम्मे, वणकम्मे, साडीकम्मे, भाडीकम्मे, फोडीकम्मे, दतवाणिज्जे, लक्खवाणिज्जे, केसवाणिज्जे, रसवाणिज्जे, विसवाणिज्जे, जंतपीलणकम्मे, निल्लछणकम्मे[9], दवग्गिदावणया, सर-दह-तलागपरिसोसणया[10], असतीपोसणया। इच्चेते समणोवासगा सुक्का, सुक्काभिजातीया भवित्ता कालमासे काल किच्चा अण्णयरेसु देवलोएसु देवत्ताए उववत्तारो भवंति ॥

२४३ कतिविहा णं भते ! देवलोगा पण्णत्ता ?

गोयमा ! चउव्विहा देवलोगा पण्णत्ता, त जहा—भवणवासी, वाणमतरा जोइसिया, वेमाणिया ॥

२४४. सेव भते ! सेवं भते ! त्ति[11] ॥

---

१. उवए (अ)।
२. णमुदए (स)।
३. कातरिए (ता, व, म)।
४. °देवयागा (क्व०)।
५ असौ कोष्ठकवर्ती पाठो व्याख्यांश. प्रतीयते।
६. पलडुल्हसण° (स)।
७ अणे° (क, ता, स)।
८ वित्तेहिं (अ), छत्तेहि (क, म), चित्तेहिं (स)
९ निलछण° (अ), णेल्लछण° (ता)।
१०. तलाय° (अ, स)।
११ भ° १।५१।

छट्ठो उद्देसो

समणोवासगकयस्स दाणस्स परिणाम-पदं

२४५ समणोवासगस्स ण भंते ! तहारूव समण वा माहण वा फासु-एसणिज्जेण असण-पाण-खाइम-साइमेण पडिलाभेमाणस्स कि कज्जइ ?
गोयमा ! एगंतसो से निज्जरा कज्जइ, नत्थि य से पावे कम्मे कज्जइ ॥

२४६ समणोवासगस्स ण भंते ! तहारूव समण वा माहण वा अफासुएणं अणेस-णिज्जेण असण-पाण[1]●-खाइम-साइमेण° पडिलाभेमाणस्स कि कज्जइ ?
गोयमा ! बहुतरिया[2] से निज्जरा कज्जइ, अप्पतराए से पावे कम्मे कज्जइ ॥

२४७. समणोवासगस्स ण भंते ! तहारूव अस्संजय-विरय[3]-पडिहय-पच्चक्खायपाव-कम्म फासुएण वा, अफासुएण वा, एसणिज्जेण वा, अणेसणिज्जेण वा असण-पाण[4]-●खाइम-साइमेण पडिलाभेमाणस्स° कि कज्जइ ?
गोयमा ! एगंतसो से पावे कम्मे कज्जइ, नत्थि से काइ[5] निज्जरा कज्जइ ॥

उवनिमंतितपिंडादि-परिभोगविहि-पदं

२४८ निग्गंथ च ण गाहावइकुल पिंडवायपडियाए अणुप्पविट्ठ केइ दोहि पिंडेहि उवनिमंतेज्जा—एग आउसो ! अप्पणा भुंजाहि, एग थेराण दलयाहि । से य त पडिग्गाहेज्जा[6], थेरा य से अणुगवेसियव्वा सिया । जत्थेव अणुगवेसमाणे थेरे पासिज्जा तत्थेव अणुप्पदायव्वे[7] सिया, नो चेव ण अणुगवेसमाणे थेरे पासिज्जा त नो अप्पणा भुजेज्जा, नो अण्णेसिं दावए, एगते अणावाए अचित्ते बहुफासुए थंडिल्ले पडिलेहेत्ता पमज्जित्ता परिट्ठावेयव्वे[8] सिया ॥

२४९. निग्गंथ च ण गाहावइकुल पिंडवायपडियाए अणुप्पविट्ठ केइ तिहिं पिंडेहिं उवनिमंतेज्जा—एग आउसो ! अप्पणा भुंजाहि, दो थेराण दलयाहि । से य ते पडिग्गाहेज्जा, थेरा य से अणुगवेसियव्वा ●[9]सिया । जत्थेव अणुगवेसमाणे थेरे पासिज्जा तत्थेव अणुप्पदायव्वे सिया, नो चेव ण अणुगवेसमाणे थेरे पासिज्जा ते नो अप्पणा भुजेज्जा, नो अण्णेसि दावए, एगते अणावाए अचित्ते बहुफासुए थंडिल्ले पडिलेहेत्ता पमज्जित्ता° परिट्ठावेयव्वा सिया । एव जाव दसहि पिंडेहिं

---

१ स० पा०—पाण जाव पडिलाभेमाणस्स ।
२ बहुतरिता (क, ब, म) ।
३ अविरय (अ, क, ब, म) ।
४. स० पा०—पाण जाव कि ।
५, कावि (क, ब) ।
६ पडिगाहेज्जा (अ, स), पडिग्गहेज्जा (ब) ।
७ अणुप्पतातव्वे (ता) ।
८ परिट्ठवेयव्वे (अ, स) ।
९ स० पा०—सेस त चेव जाव परिट्ठावेयव्वा ।

उवनिमतेज्जा, नवरं—एग आउसो ! अप्पणा भुजाहि, नव थेराणं दलयाहि। सेस त चेव जाव परिट्ठावेयव्वा सिया ॥

२५०. निग्गय च ण गाहावइ'•कुल पिंडवायपडियाए अणुप्पविट्ठ° केइ दोहिं पडिग्गहेहिं उवनिमतेज्जा—एग आउसो ! अप्पणा पडिभुजाहि, एग थेराण दलयाहि। से य त पडिग्गाहेज्जा, •'थेरा य से अणुगवेसियव्वा सिया। जत्थेव अणुगवेसमाणे थेरे पासिज्जा तत्थेव अणुप्पदायव्वे सिया, नो चेव ण अणुगवेसमाणे थेरे पासिज्जा त नो अप्पणा परिभुजेज्जा, नो अण्णेसि दावए, एगते अणावाए अचित्ते बहुफासुए थडिल्ले पडिलेहेत्ता पम्मज्जित्ता° परिट्ठावेयव्वे सिया। एव जाव दसहि पडिग्गहेहि।

एव जहा पडिग्गहवत्तव्वया भणिया, एव गोच्छग-रयहरण-चोलपट्टग-कबल-लट्ठि-सथारगवत्तव्वया य भाणियव्वा जाव दसहि सथारएहि उवनिमतेज्जा जाव परिट्ठावेयव्वा सिया ॥

आलोयणाभिमुहस्स आराहय-पदं

२५१. निग्गथेण य गाहावइकुलं पिंडवायपडियाए पविट्ठेणं अण्णयरे अकिच्चट्ठाणे पडिसेविए, तस्स ण एवं भवति—इहेव ताव अह एयस्स ठाणस्स आलोएमि, पडिक्कमामि, निदामि, गरिहामि, विउट्टामि³, विसोहेमि, अकरणयाए अब्भुट्ठेमि, अहारिय पायच्छित्तं तवोकम्म पडिवज्जामि, तओ पच्छा थेराण अतियं⁴ आलोएस्सामि जाव तवोकम्म पडिवज्जिस्सामि।

१. से य सपट्ठिए असपत्ते, थेरा य पुव्वामेव⁵ अमुहा सिया। से ण भते ! किं आराहएं ? विराहए ?

गोयमा ! आराहए, नो विराहए।

२. से य सपट्ठिए असपत्ते, अप्पणा य पुव्वामेव अमुहे सिया। से ण भते ! कि आराहए ? विराहए ?

गोयमा ! आराहए, नो विराहए।

३ से य सपट्ठिए असपत्ते, थेरा य काल करेज्जा। से ण भते ! कि आराहए ? विराहए ?

गोयमा ! आराहए, नो विराहए।

---

१. स० पा०—गाहावइ जाव केइ।

२. स० पा०—तहेव जाव त नो अप्पणा परिभुजेज्जा, नो अण्णेसिं दावए, सेस तं चेव जाव परिट्ठवेयव्वे।

३ विउट्टेमि (ता)।

४ अतिए (अ)।

५ × (अ, ता, व, म)।

४ से य सपट्ठिए असपत्ते, अप्पणा य पुव्वामेव काल करेज्जा । से ण भंते ! कि आराहए ? विराहए ?
गोयमा ! आराहए, नो विराहए ।
५ से य सपट्ठिए सपत्ते, थेरा य अमुहा सिया । से ण भंते ! किं आराहए ? विराहए ?
गोयमा ! आराहए, नो विराहए ।
६ से य सपट्ठिए सपत्ते अप्पणा य °'अमुहे सिया । से ण भते ! कि आराहए ? विराहए ?
गोयमा ! आराहए, नो विराहए ।
७ से य सपट्ठिए सपत्ते, थेरा य काल करेज्जा । से ण भते ! कि आराहए ? विराहए ?
गोयमा ! आराहए, नो विराहए ।
८ से य सपट्ठिए सपत्ते अप्पणा य काल करेज्जा । से ण भते कि आराहए ? विराहए ?
गोयमा ! आराहए, नो विराहए° ।।

२५२ निग्गथेण य बहिया वियारभूमि[2] वा विहारभूमि वा निक्खतेण अण्णयरे अकिच्चट्ठाणे पडिसेविए, तस्स ण एव भवति—इहेव ताव अह एयस्स ठाणस्स आलोएमि—एव एत्थ वि ते चेव अट्ठ आलावगा भाणियव्वा जाव नो विराहए ।।

२५३ निग्गथेण य गामाणुगाम दूइज्जमाणेण अण्णयरे अकिच्चट्ठाणे पडिसेविए, तस्स ण एव भवइ—इहेव ताव अह एयस्स ठाणस्स आलोएमि—एव एत्थ वि ते चेव अट्ठ आलावगा भाणियव्वा जाव नो विराहए ।।

२५४ निग्गथीए य गाहावइकुल पिंडवायपडियाए अणुपविट्ठाए अण्णयरे अकिच्चट्ठाणे पडिसेविए, तीसे ण एव भवइ—इहेव ताव अह एयस्स ठाणस्स आलोएमि जाव तवोकम्म पडिवज्जामि, तओ पच्छा पवत्तिणीए[3] अतिय आलोएस्सामि जाव तवोकम्म पडिवज्जिस्सामि ।
सा य सपट्ठिया असपत्ता, पवत्तिणी य अमुहा सिया । सा ण भते ! किं आराहिया ? विराहिया ?
गोयमा ! आराहिया, नो विराहिया ।
सा य सपट्ठिया जहा निग्गथस्स तिण्णि गमा भणिया एव निग्गथीए वि तिण्णि आलावगा भाणियव्वा जाव आराहिया, नो विराहिया ।।

---

१ स० पा०—एव सपत्तेण वि चत्तारि आलावगा भाणियव्वा जहेव असपत्तेण ।

२ विचार° (ता, म), वितार (व)° ।

३. पविित्तणीए (अ, ता, व, स) ।

२५५. से केणट्ठण भते ! एव वुच्चइ—आराहए ? नो विराहए ?
गोयमा ! से जहानामए केइ पुरिसे एग मह उण्णालोम वा, गयलोमं वा, सण-लोम वा, कप्पासलोम वा, तणसूय वा दुहा वा तिहा वा सखेज्जहा वा छिंदित्ता अगणिकायसि पक्खिवेज्जा, से नूण गोयमा ! छिज्जमाणे छिण्णे, पक्खिप्पमाणे पक्खित्ते, 'दज्झमाणे दड्ढे'[1] त्ति वत्तव्व सिया ?
हता भगव ! छिज्जमाणे छिण्णे[2], •पक्खिप्पमाणे पक्खित्ते, दज्झमाणे° दड्ढे त्ति वत्तव्व सिया।
से जहा वा केइ पुरिसे वत्थ अहत वा, धोत वा, ततुग्गय वा मजिट्ठ[3]-दोणीए पक्खिवेज्जा, से नूण गोयमा ! उक्खिप्पमाणे उक्खित्ते, पक्खिप्पमाणे पक्खित्ते, रज्जमाणे रत्ते त्ति वत्तव्व सिया ?
हता भगव ! उक्खिप्पमाणे उक्खित्ते[4], •पक्खिप्पमाणे पक्खित्ते, रज्जमाणे° रत्ते त्ति वत्तव्व सिया। से तेणट्ठेण गोयमा ! एव वुच्चइ—आराहए, नो विराहए ॥

जोति-जलण-पदं

२५६. पदीवस्स ण भते ! झियायमाणस्स कि पदीवे झियाइ ? लट्ठी झियाइ ? वत्ती झियाइ ? तेल्ले झियाइ ? दीवचपए झियाइ ? जोती झियाइ ?
गोयमा ! नो पदीवे झियाइ[5], •नो लट्ठी झियाइ, नो वत्ती झियाइ, नो तेल्ले झियाइ°, नो दीवचपए झियाइ, जोती झियाइ ॥

२५७. अगारस्स[6] ण भते ! झियायमाणस्स कि अगारे झियाइ ? कुड्डा झियाइ ? कडणा झियाइ ? धारणा झियाइ ? वलहरणे झियाइ ? वसा झियाइ ? मल्ला झियाइ ? वागा झियाइ ? छित्तरा झियाइ ? छाणे झियाइ ? जोती झियाइ ?
गोयमा ! नो अगारे झियाइ, नो कुड्डा झियाइ जाव नो छाणे झियाइ, जोती झियाइ ॥

किरिया-पदं

२५८ जीवे ण भते ! ओरालियसरीराओ कतिकिरिए ?
गोयमा ! सिय तिकिरिए, सिय चउकिरिए, सिय पचकिरिए, सिय अकिरिए ॥

---

१. डज्झमाणे डज्झे (ता, व)।
२ स० पा०—छिण्णे जाव दड्ढे।
३ मंजिट्ठा (अ, स)।
४ सं० पा०—उक्खित्ते जाव रत्ते।
५. स० पा०—झियाइ जाव नो।
६. आगारे (अ, म, स)।

२५९ नेरइए ण भते ! ओरालियसरीराओ कतिकिरिए ?
गोयमा ! सिय तिकिरिए, सिय चउकिरिए, सिय पचकिरिए ॥

२६०. असुरकुमारे ण भते ! ओरालियसरीराओ कतिकिरिए ?
एव चेव । एव जाव वेमाणिए, नवर—मणुस्से जहा जीवे ॥

२६१ जीवे ण भते ! ओरालियसरीरेहितो कतिकिरिए ?
गोयमा ! सिय तिकिरिए जाव सिय अकिरिए ॥

२६२ नेरइए ण भते ! ओरालियसरीरेहितो कतिकिरिए ?
एव एसो वि[1] जहा[2] पढमो दडओ तहा[3] भाणियव्वो जाव वेमाणिए, नवर—मणुस्से जहा[4] जीवे ॥

२६३ जीवा ण भते ! ओरालियसरीराओ कतिकिरिया ?
गोयमा ! सिय तिकिरिया जाव सिय अकिरिया ॥

२६४ नेरइया ण भते ! ओरालियसरीराओ कतिकिरिया ?
एव एसो वि जहा पढमो दडओ तहा भाणियव्वो जाव वेमाणिया, नवर—मणुस्सा जहा जीवा ॥

२६५ जीवा ण भते ! ओरालियसरीरेहितो कतिकिरिया ?
गोयमा ! तिकिरिया वि, चउकिरिया वि, पचकिरिया वि, अकिरिया वि ॥

२६६ नेरइया ण भते ! ओरालियसरीरेहितो कतिकिरिया ?
गोयमा ! तिकिरिया वि, चउकिरिया वि, पचकिरिया वि । एव जाव वेमाणिया, नवर—मणुस्सा जहा जीवा ॥

२६७ जीवे ण भते ! वेउव्वियसरीराओ कतिकिरिए ?
गोयमा ! सिय तिकिरिए, सिय चउकिरिए, सिय अकिरिए ॥

२६८. नेरइए ण भते ! वेउव्वियसरीराओ कतिकिरिए ?
गोयमा ! सिय तिकिरिए, सिय चउकिरिए । एव जाव वेमाणिए, नवर—मणुस्से जहा जीवे । एव जहा ओरालियसरीरेण चत्तारि दडगा भणिया तहा वेउव्वियसरीरेण वि चत्तारि दडगा भाणियव्वा, नवर—पचमकिरिया न भण्णइ, सेस त चेव । एव जहा वेउव्विय तहा आहारग पि, तेयग पि कम्मग पि भाणियव्वं—एक्केक्के चत्तारि दडगा भाणियव्वा जाव—

२६९ वेमाणिया ण भते ! कम्मगसरीरेहितो कतिकिरिया ?
गोयमा ! तिकिरिया वि, चउकिरिया वि ॥

२७० सेव भते ! सेव भते ! त्ति[5] ॥

---

१ × (अ, क, ता, म, स) ।
२ भ० ८।२५९ ।
३ तहा इमो वि अपरिसेसो (अ, क, ता, व, स)
४ भ० ८।२५८ ।
५ भ० १।५१ ।

सत्तमो उद्देसो

अण्णउत्थियसंवाद-पदं

अदत्त पडुच्च —

२७१ तेण कालेण तेण समएण रायगिहे नयरे—वण्णओ[1], गुणसिलए चेइए—वण्णओ जाव[2] पुढविसिलावट्टओ। तस्स ण गुणसिलस्स चेइयस्स अदूरसामते वहवे अण्णउत्थिया परिवसति। तेण कालेण तेण समएण समणे भगव महावीरे आदिगरे जाव[3] समोसढे जाव[4] परिसा पडिगया ॥

२७२ तेण कालेण तेण समएण समणस्स भगवओ महावीरस्स वहवे अतेवासी थेरा भगवतो जातिसपन्ना कुलसपन्ना •[5]बलसपन्ना विणयसपन्ना नाणसपन्ना दसण-सपन्ना चरित्तसपन्ना लज्जासपन्ना लाघवसपन्ना ओयसी तेयसी वच्चसी जससी जियकोहा जियमाणा जियमाया जियलोभा जियनिद्दा जिइदिया जिय-परीसहा °जीवियास-मरणभयविप्पमुक्का समणस्स भगवओ महावीरस्स अदूर-सामते उड्ढजाणू अहोसिरा झाणकोट्ठोवगया सजमेण तवसा अप्पाण भावेमाणा विहरति[6] ॥

२७३ तए ण ते अण्णउत्थिया जेणेव थेरा भगवतो तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता ते थेरे भगवते एव वयासी—तुब्भे ण अज्जो तिविह तिविहेण अस्सजय-'विरय-पडिहय'[7]-'•पच्चक्खायपावकम्मा, सकिरिया, असवुडा, अगतदडा° एगंतवाला या वि भवह ॥

२७४ तए ण ते थेरा भगवतो ते अण्णउत्थिए एव वयासी—केण कारणेण अज्जो ! अम्हे तिविह तिविहेण अस्सजय-विरय[8]-•पडिहय-पच्चक्खायपावकम्मा, सकिरिया, असवुडा, एगतदडा°, एगतवाला या वि भवामो ?

२७५ तए ण ते अण्णउत्थिया ते थेरे भगवते एव वयासी—तुब्भे[10] ण अज्जो ! अदिन्न गेण्हह, अदिन्न भुजह, अदिन्न सातिज्जह। तए ण ते तुब्भे अदिन्न गेण्हमाणा, अदिन्न भुजमाणा, अदिन्न सातिज्जमाणा तिविह तिविहेण अस्सजय-विरय-पडिहय-पच्चक्खायपावकम्मा जाव एगतवाला या वि भवह ॥

---

१. ओ० सू० १।
२. ओ० सू० २-१३।
३ भ० १।७।
४. भ० १।८।
५ स० पा०—जहा वितियसए जाव जीवियास।
६ जाव विहरति (अ, क, ता, म, स)।
७. अविरय-अपडिहय (अ, क, व, म, स)।
८ स० पा०—जहा सत्तमसए वितिए उद्देसए जाव एगतवाला।
९ स० पा०—विरय जाव एगतवाला।
१०. तुम्हे (व)।

२७६ तए ण ते थेरा भगवतो ते अण्णउत्थिए एवं वयासी—केण कारणेण अज्जो ! अम्हे अदिन्न गेण्हामो, अदिन्न भुंजामो, अदिन्न सातिज्जामो, जए[1] ण अम्हे अदिन्न गेण्हमाणा[2], •अदिन्न भुंजमाणा° अदिन्न सातिज्जमाणा तिविह तिविहेण अस्सजय-विरय-पडिहय-पच्चक्खायपावकम्मा जाव एगतबाला या वि भवामो ?

२७७ तए ण ते अण्णउत्थिया ते थेरे भगवते एव वयासी—तुब्भण्ण[3] अज्जो ! दिज्जमाणे अदिन्ने, पडिग्गाहेज्जमाणे अपडिग्गाहिए, निस्सिरिज्जमाणे[4] अणिसिट्ठे । तुब्भण्ण अज्जो ! दिज्जमाण पडिग्गहग असपत्त एत्थ ण अतरा केइ अवहरेज्जा गाहावइस्स ण त, नो खलु त तुब्भ, तए ण तुब्भे अदिन्न गेण्हह[5], •अदिन्न भुंजह°, अदिन्न सातिज्जह । तए ण तुब्भे अदिन्न गेण्हमाणा जाव[6] एगतबाला या वि भवह ।।

२७८ तए ण ते थेरा भगवतो ते अण्णउत्थिए एव वयासी—नो खलु अज्जो ! अम्हे अदिन्न गेण्हामो, अदिन्न भुंजामो, अदिन्न सातिज्जामो । अम्हे ण अज्जो ! दिन्न गेण्हामो, दिन्न भुंजामो, दिन्न सातिज्जामो । तए ण अम्हे दिन्न गेण्हमाणा, दिन्न भुंजमाणा, दिन्न सातिज्जमाणा तिविह तिविहेण सजय-विरय-पडिहय-•[7]पच्चक्खायपावकम्मा, अकिरिया, सवुडा° एगतपडिया या वि भवामो ।।

२७९. तए ण ते अण्णउत्थिया ते थेरे भगवते एव वयासी—केण कारणेण अज्जो ! तुम्हे दिन्न गेण्हह[8], •दिन्न भुंजह°, दिन्न सातिज्जह, जए[9] ण तुब्भे दिन्न गेण्हमाणा जाव[10] एगतपडिया या वि भवह ?

२८० तए ण ते थेरा भगवतो ते अण्णउत्थिए एव वयासी—अम्हण्ण अज्जो ! दिज्जमाणे दिन्ने, पडिग्गाहिज्जमाणे पडिग्गाहिए, निस्सिरिज्जमाणे निसिट्ठे । अम्हण्ण अज्जो ! दिज्जमाण पडिग्गहग असपत्त एत्थ ण अतरा केइ अवहरेज्जा, अम्हण्ण त, नो खलु त गाहावइस्स, तए ण अम्हे दिन्न गेण्हामो, दिन्न भुंजामो, दिन्न सातिज्जामो तए ण अम्हे दिन्न गेण्हमाणा[11],•दिन्न भुंजमाणा,° दिन्न सातिज्जमाणा तिविह तिविहेण सजय-विरय-पडिहय-पच्चक्खायपावकम्मा जाव एगत-

---

१. तए (अ, क, ता, ब, म, स) ।
२. स० पा०—गेण्हमाणा जाव अदिन्न ।
३. तुम्हाण (म, स) ।
४ निसरिज्ज° (क) ।
५ स० पा०—गेण्हह जाव अदिन्न ।
६. भ० ८।२७६ ।
७. स० पा०—जहा सत्तमसए जाव एगतपडिया
८ स० पा०—गेण्हह जाव दिन्न ।
९ तए (अ, क, ता, व, म, स) ।
१०. भ० ८।२७८ ।
११. स० पा०—गेण्हमाणा जाव दिन्न ।

पंडिया या वि भवामो। तुब्भे ण अज्जो! अप्पणा चेव तिविह तिविहेणं अस्संजय-विरयपडिहय-पच्चक्खायपावकम्मा जाव एगंतबाला या वि भवह ॥

२८१ तए ण ते अण्णउत्थिया ते थेरे भगवंते एव वयासी—केण कारणेण अज्जो! अम्हे तिविह तिविहेण अस्संजय-विरय-पडिहय-पच्चक्खायपावकम्मा जाव एगतबाला या वि भवामो ?

२८२ तए ण ते थेरा भगवतो ते अण्णउत्थिए एव वयासी—तुब्भे ण अज्जो! अदिन्नं गेण्हह, अदिन्न भुजह, अदिन्न सातिज्जह, तए ण तुब्भे अदिन्नं गेण्हमाणा जाव एगतबाला या वि भवह ॥

२८३. तए ण ते अण्णउत्थिया ते थेरे भगवते एव वयासी—केण कारणेणं अज्जो! अम्हे अदिन्न गेण्हामो जाव एगतबाला या वि भवामो ?

२८४. तए ण ते थेरा भगवतो ते अण्णउत्थिए एव वयासी—तुब्भण्ण अज्जो! दिज्जमाणे अदिन्ने •[1]पडिग्गाहेज्जमाणे अपडिग्गाहिए, निस्सिरिज्जमाणे अणिसिट्ठे। तुब्भण्ण अज्जो! दिज्जमाण पडिग्गहग असपत्त एत्थ ण अंतरा केइ अवहरेज्जा°, गाहावइस्स ण त, नो खलु त तुब्भ। तए ण तुब्भे अदिन्नं गेण्हह जाव[2] एगतबाला या वि भवह ॥

हिंसं पडुच्च—

२८५ तए ण ते अण्णउत्थिया ते थेरे भगवते एव वयासी—तुब्भे ण अज्जो! तिविहं तिविहेण अस्संजय-विरय-पडिहय-पच्चक्खायपावकम्मा जाव एगंतबाला या वि भवह ॥

२८६. तए ण ते थेरा भगवतो ते अण्णउत्थिए एव वयासी—केण कारणेण अज्जो! अम्हे तिविह तिविहेण जाव एगतबाला यावि भवामो ?

२८७. तए ण ते अण्णउत्थिया ते थेरे भगवते एव वयासी—तुब्भे ण अज्जो! रीय रीयमाणा पुढवि पेच्चेह अभिहणह वत्तेह लेसेह सघाएह सघट्टेह परितावेह किलामेह उद्दवेह, तए ण तुब्भे पुढवि पेच्चेमाणा अभिहणमाणा[3] •वत्तेमाणा लेसेमाणा सघाएमाणा सघट्टेमाणा परितावेमाणा किलामेमाणा° उद्दवेमाणा तिविह तिविहेण अस्संजय-विरय-पडिहय-पच्चक्खायपावकम्मा जाव एगतबाला या वि भवह ॥

२८८ तए ण ते थेरा भगवतो ते अण्णउत्थिए एव वयासी—नो खलु अज्जो! अम्हे रीय रीयमाणा पुढविं पेच्चामो अभिहणामो जाव उद्दवेमो। अम्हे ण अज्जो!

---

१. स० पा०—त चेव जाव गाहावइस्स।
२. त चेव जाव (अ, क, ता, व, म, स)।
३ स० पा०—अभिहणमाणा जाव उद्दवेमाणा।

रीय रीयमाणा काय वा, जोय वा, रिय वा पडुच्च देस देसेण वयामो, पदेस पदेसेण वयामो, तेण अम्हे देस देसेण वयमाणा, पदेस पदेसेण वयमाणा नो पुढविं पेच्चेमो अभिहणामो जाव उद्दवेमो, तए ण अम्हे पुढवि अपेच्चेमाणा अणभिहणमाणा जाव अणोद्दवेमाणा तिविह तिविहेण सजय-विरय-पडिहय-पच्चक्खायपावकम्मा जाव एगतपडिया या वि भवामो। तुब्भे ण अज्जो! अप्पणा चेव तिविह तिविहेण अस्सजय-विरय-पडिहय-पच्चक्खायपावकम्मा जाव एगतबाला या वि भवह ।।

२८९ तए ण ते अण्णउत्थिया ते थेरे भगवते एव वयासी—केण कारणेण अज्जो! अम्हे तिविह तिविहेण जाव एगतबाला या वि भवामो?

२९० तए ण ते थेरा भगवतो ते अण्णउत्थिए एव वयासी—तुब्भे ण अज्जो! रीय रीयमाणा पुढविं पेच्चेह जाव उद्दवेह, तए ण तुब्भे पुढवि पेच्चेमाणा जाव उद्दवेमाणा तिविह तिविहेण जाव एगतबाला या वि भवह ।।

गममाणगयं पडुच्च—

२९१ तए ण ते अण्णउत्थिया ते थेरे भगवते एव वयासी—तुब्भण्ण अज्जो! गम्म-माणे अगते, वीतिक्कमिज्जमाणे अवीतिक्कते, रायगिह नगर सपाविउकामे असपत्ते ।।

२९२ तए ण ते थेरा भगवतो ते अण्णउत्थिए एव वयासी—नो खलु अज्जो! अम्ह गम्ममाणे अगते, वीतिक्कमिज्जमाणे अवीतिक्कते, रायगिह नगर सपाविउकामे असपत्ते। अम्हण्ण अज्जो! गम्ममाणे गए, वीतिक्कमिज्जमाणे वीतिक्कते, रायगिह नगर सपाविउकामे सपत्ते। तुब्भण्ण अप्पणा चेव गम्ममाणे अगते, वीतिक्कमिज्जमाणे अवीतिक्कते, रायगिह[1] •नगर सपाविउकामे° असपत्ते तए ण ते थेरा भगवतो अण्णउत्थिए एव पडिभणति,[2] पडिभणित्ता गइप्पवाय नाम अज्झयण पण्णवइसु ।।

२९३. कतिविहे ण भते! गइप्पवाए पण्णत्ते?
गोयमा! पचविहे गइप्पवाए पण्णत्ते, त जहा—पयोगगई, ततगई, बधणछेयण-गई, उववायगई, विहायगई[3]। एत्तो आरब्भ[4] पयोगपय निरवसेस भाणियव्व जाव[5] सेत्त विहायगई।

२९४ सेव भते! सेव भते! त्ति[6] ।।

---

१ स० पा०—रायगिह जाव असपत्ते।
२. पडिहणइ (अ, क, ता, व, म, स)।
३. विहागती (ता)।
४. आरद्ध (क, ता, व, म)।
५ प० १६।
६. भ० १।५१।

अट्ठमो उद्देसो

पडिणीय-पदं

२६५ रायगिहे जाव[1] एव वयासी—गुरू ण भते ! पडुच्च[2] कति पडिणीया[3] पण्णत्ता ?
गोयमा ! तम्रो पडिणीया पण्णत्ता, तं जहा—आयरियपडिणीए, उवज्झाय-पडिणीए, थेरपडिणीए ॥

२६६ गति[4] ण भते ! पडुच्च कति पडिणीया पण्णत्ता ?
गोयमा ! तम्रो पडिणीया पण्णत्ता, त जहा—इहलोगपडिणीए, परलोग-पडिणीए, दुहम्रोलोगपडिणीए[5] ॥

२६७ समूहण्ण भते ! पडुच्च कति पडिणीया पण्णत्ता ?
गोयमा ! तम्रो पडिणीया पण्णत्ता, त जहा—कुलपडिणीए, गणपडिणीए, सघपडिणीए ॥

२६८. अणुकप पडुच्च •[6]कति पडिणीया पण्णत्ता ?°
गोयमा ! तम्रो पडिणीया पण्णत्ता, त जहा—तवस्सिपडिणीए, गिलाणपडिणीए, सेहपडिणीए ॥

२६६ सुयण्ण भते । पडुच्च •[7]कति पडिणीया पण्णत्ता ?°
गोयमा ! तम्रो पडिणीया पण्णत्ता, त जहा—सुत्तपडिणीए, अत्थपडिणीए, तदुभयपडिणीए ॥

३०० भावण्ण भते ! पडुच्च •[8]कति पडिणीया पण्णत्ता ?°
गोयमा ! तओ पडिणीया पण्णत्ता, त जहा—नाणपडिणीए, दसणपडिणीए, चरित्तपडिणीए ॥

पंचववहार-पदं

३०१ कतिविहे ण भते ! ववहारे[9] पण्णत्ते ?
गोयमा ! पचविहे ववहारे पण्णत्ते, तं जहा—आगमे, सुतं, आणा, धारणा, जीए ।

---

१. भ० १।४-१० ।
२. पडुच्चा (क, म) ।
३. पडणिया (ता, म), तुलना—ठा० ३।४८८-४६३ ।
४ अत्र णकारयोगे अनुस्वारलोप ।
५. दुहालोग° (अ, व, म), उभयपडि° (क); दुहलोग° (ता) ।
६ स० पा०—पुच्छा ।
७ स० पा०—पुच्छा ।
८ स० पा०—पुच्छा ।
६. तुलना—ठा० ५।१२४; व० १० ।

जहा से तत्थ आगमे सिया आगमेणं ववहारं पट्ठवेज्जा ।
णो य से तत्थ आगमे सिया, जहा से तत्थ सुए सिया, सुएण ववहार पट्ठवेज्जा ।
णो य से तत्थ सुए सिया, जहा से तत्थ आणा सिया, आणाए ववहार पट्ठवेज्जा ।
णो य से तत्थ आणा सिया, जहा से तत्थ धारणा सिया, धारणाए ववहार पट्ठवेज्जा ।
णो य से तत्थ धारणा सिया, जहा से तत्थ जीए सिया, जीएण ववहार पट्ठवेज्जा ।
इच्चेएहिं पचहिं ववहार पट्ठवेज्जा, त जहा—आगमेण, सुएण आणाए, धारणाए, जीएण ।
जहा-जहा से आगमे सुए आणा धारणा जीए तहा-तहा ववहार पट्ठवेज्जा ।
से किमाहु भते ! आगमवलिया समणा निग्गथा ?
इच्चेतं पचविह ववहार जदा-जदा जहिं-जहिं 'तदा-तदा'[1] तहिं-तहि अणिस्सि-ओवस्सित सम्म ववहरमाणे समणे निग्गथे आणाए आराहए भवइ[2] ।।

बंध-पदं

३०२ कतिविहे ण भते ! बधे पण्णत्ते ?
गोयमा ! दुविहे बधे पण्णत्ते, त जहा—इरियावहियबधे[3] य, सपराइयबधे य ।।

इरियावहियबंध-पदं

३०३ इरियावहिय[4] ण भते ! कम्म कि नेरइओ बधइ ? तिरिक्खजोणिओ बधइ ? तिरिक्खजोणिणी बधइ ? मणुस्सो बधइ ? मणुस्सी बधइ ? देवो बधइ ? देवी बधइ ?
गोयमा ! नो नेरइओ बधइ, नो तिरिक्खजोणिओ बधइ, नो तिरिक्खजोणिणी बधइ, नो देवो बधइ, नो देवी बधइ । पुव्व पडिवन्नए पडुच्च मणुस्सा य मणुस्सीओ य बधति, पडिवज्जमाणए पडुच्च १ मणुस्सो वा बधइ २ मणुस्सी वा बधइ ३ मणुस्सा वा बधति ४ मणुस्सीओ वा बधति ५ अहवा मणुस्सो य मणुस्सी य बधइ ६ अहवा मणुस्सो य मणुस्सीओ य बधति ७ अहवा मणुस्सा य मणुस्सी य बधति ८ अहवा मणुस्सा य मणुस्सीओ य बधति ।।

---

१. तहा-तहा (अ, स) ।
२ हन्त ! आहुरेवेति गुरुवचन गम्यमिति, अन्ये तु 'से किमाहु भते !' इत्याद्येव व्याख्यान्ति— अथ किमाहुर्भदन्त ! आगमवलिका श्रमणा निर्ग्रन्था. ! पञ्चविधव्यवहारस्य फलमिति शेष , अत्रोत्तरमाह—'इच्चेय' मित्यादि(वृ) ।
३ °वधिय° (म), °वहिया° (स) ।
४. °वहिया (अ, क, स), °वहिय (ता) ।

३०४. त भंते ! किं इत्थी बंधइ ? पुरिसो बंधइ ? नपुसगो बधइ ? इत्थीओ ? बधति ? पुरिसा वधति ? नपुसगा वधति ? नोइत्थी नोपुरिसो नोनपुसगो वधइ ?

गोयमा ! नो इत्थी वधइ, नो पुरिसो बधइ[1] °नो नपुसगो वधइ, नो इत्थीओ बधति, नो पुरिसा वधति, नो नपुसगा वधति, नोइत्थी नोपुरिसो° नोनपुसगो वधइ—पुव्वपडिवन्नए पडुच्च अवगयवेदा वधति, पडिवज्जमाणए पडुच्च अवगयवेदो वा वंधइ अवगयवेदा वा वधति ।।

३०५ जइ भते ! अवगयवेदो वा बधइ, अवगयवेदा वा वधंति त भते ! कि १ इत्थीपच्छाकडो बधइ ? २ पुरिसपच्छाकडो वधइ ? ३ नपुसगपच्छाकडो वधइ ? ४ इत्थीपच्छाकडा बंधति ? ५ पुरिसपच्छाकडा वधति ? ६ नपुसगपच्छाकडा वधति ? उदाहु इत्थीपच्छाकडो य पुरिसपच्छाकडो य वधइ ४ ? उदाहु इत्थीपच्छाकडो य नपुसगपच्छाकडो य । वधइ ४ ? उदाहु पुरिसपच्छाकडो य नपुसगपच्छाकडो य वधइ ४ ? उदाहु इत्थीपच्छाकडो य पुरिसपच्छाकडो य नपुसगपच्छाकडो य बधइ ८ एव एते छव्वीस भगा जाव उदाहु इत्थीपच्छाकडा य पुरिसपच्छाकडा य नपुसगपच्छाकडा य वधति ?

गोयमा ! १ इत्थीपच्छाकडो वि वधइ २ पुरिसपच्छाकडो वि वंधइ ३ नपुसगपच्छाकडो वि वंधइ ४. इत्थीपच्छाकडा वि वधति ५ पुरिसपच्छाकडा वि वधति ६ नपुसगपच्छाकडा वि वधति ७. अहवा इत्थीपच्छाकडो य पुरिसपच्छाकडो य वधइ, एव एए चेव छव्वीसं भगा भाणियव्वा जाव[2] २६. अहवा इत्थीपच्छाकडा य पुरिसपच्छाकडा य नपुसगपच्छाकडा य वधति ।।

३०६ त भते ! कि १ बधी बधइ वधिस्सइ ? २ वधी वधइ न वधिस्सइ ? ३ वधी न वधइ वंधिस्सइ ? ४ वधी न वधइ न वधिस्सइ ? ५ न बधी वधइ वधिस्सइ ? ६ न वधी वधइ न वधिस्सइ ? ७ न वधी न वधइ वधिस्सइ ? ८. न वंधी न वधइ न वधिस्सइ ?

गोयमा ! भवागरिस पडुच्च अत्थेगतिए बधी वंधइ बधिस्सइ, अत्थेगतिए वधी वधइ न वधिस्सइ, एव त चेव सव्व जाव अत्थेगतिए न बंधी न बधइ न वधिस्सइ ।

१. स० पा०—वधइ जाव नोनपुसगो ।

२ ८ अहवाइत्थीपच्छाकडो य पुरिसपच्छाकडा य वधति ९ अहवा इत्थीपच्छाकडा य पुरिसपच्छाकडो य वधइ १० अहवा इत्थीपच्छाकडा य पुरिसपच्छाकडा य वधति ११ अहवा इत्थीपच्छाकडो य नपुसगपच्छाकडो य वधइ १२. अहवा इत्थीपच्छाकडो य नपुसगपच्छाकडा य वधति १३ अहवा इत्थीपच्छाकडा य नपुसगपच्छाकडो य वधइ १४. अहवा इत्थीपच्छाकडा य नपुसगपच्छाकडा य वधति

गहणागरिसं पडुच्च अत्थेगतिए बधी बधइ बधिस्सइ, एव जाव[1] अत्थेगतिए न बधी बधइ बधिस्सइ, नो चेव ण न बधी बधइ न बधिस्सइ, अत्थेगतिए न बधी न बधइ बधिस्सइ, अत्थेगतिए न बधी न बधइ न बधिस्सइ ।।

३०७. त भते ! किं सादीय सपज्जवसिय बधइ ? सादीय अपज्जवसिय बधइ ? अणादीय सपज्जवसिय बधइ ? अणादीय अपज्जवसिय बधइ ?
गोयमा ! सादीय सपज्जवसिय बधइ, नो सादीय अपज्जवसिय बधइ, नो अणादीय सपज्जवसिय बधइ, नो अणादीय अपज्जवसिय बधइ ।।

३०८ त भते ! कि देसेण देस बधइ ? देसेण सव्व बधइ ? सव्वेण देस बधइ ? सव्वेण सव्व बधइ ?
गोयमा ! नो देसेण देस बधइ, नो देसेण सव्व बधइ, नो सव्वेण देस बधइ, सव्वेण सव्व बधइ ।।

संपराइयबंध-पदं

३०९ सपराइय णं भते ! कम्म कि नेरइओ बधइ ? तिरिक्खजोणिओ बधइ ? जाव[2] देवी बधइ ?
गोयमा ! नेरइओ वि बधइ, तिरिक्खजोणिओ वि बधइ, तिरिक्खजोणिणी वि बधइ, मणुस्सो वि बधइ, मणुस्सो वि बधइ, देवो वि बधइ, देवी वि बधइ ।।

३१० त भते ! किं इत्थी बधइ ? पुरिसो बधइ ? तहेव जाव[3] नोइत्थी नोपुरिसो नोनपुसगो बधइ ?
गोयमा ! इत्थी वि बधइ, पुरिसो वि बधइ जाव नपुसगा वि बधति, 'अहवा एते'[4] य अवगयवेदो य बधइ, अहवा एते य अवगयवेदा य बधति ।।

---

१५. अहवा पुरिसपच्छाकडो य नपुसगपच्छाकडो य बधइ १६ अहवा पुरिसपच्छाकडो य नपुसगपच्छाकडा य बधति १७ अहवा पुरिसपच्छाकडा य नपुसगपच्छाकडो य बधइ १८. अहवा पुरिसपच्छाकडा य नपुसगपच्छाकडा य बधति १९ अहवा इत्थीपच्छाकडो य पुरिसपच्छाकडो य नपुसगपच्छाकडो य बधइ २० अहवा इत्थीपच्छाकडो य पुरिसपच्छाकडो य नपुसगपच्छाकडा य बधति २१ अहवा इत्थीपच्छाकडो य पुरिसपच्छाकडा य नपुसगपच्छाकडो य बधइ २२ अहवा इत्थीपच्छाकडो य पुरिसपच्छाकडा य नपुसगपच्छाकडा य बधति २३ अहवा इत्थीपच्छाकडा य पुरिसपच्छाकडो य नपुसगपच्छाकडो य बधइ २४ अहवा इत्थीपच्छाकडा य पुरिसपच्छाकडो य नपुसगपच्छाकडा य बधति २५ अहवा इत्थीपच्छाकडा य पुरिसपच्छाकडा य नपुसगपच्छाकडो य बधइ ।

१. अत्र जाव-पदेन त्रयो भङ्गा गृहीता ।
२ भ० ८।३०३ ।
३. भ० ८।३०४ ।
४. अहवेए (अ, व, स), अहवेते (ता, म) ।

३११ 'जइ भंते ! अवगयवेदो य वंधइ, अवगयवेदा य बंधंति'[1] तं भंते ! किं इत्थीपच्छाकडो बधइ ? पुरिसपच्छाकडो वधइ ? एवं जहेव इरियावहिय-वधगस्स तहेव निरवसेस जाव अहवा इत्थीपच्छाकडा य पुरिसपच्छाकडा य नपुसगपच्छाकडा य बधति ॥

३१२ त भते ! किं १ वधी वधइ वधिस्सइ ? २. वधी वधइ न वधिस्सइ ? ३. वधी न बधइ वधिस्सइ ? ४ वधी न वधइ न वधिस्सइ ?
गोयमा ! १. अत्थेगतिए वधी वधइ वधिस्सइ २. अत्थेगतिए वधी वधइ न वधिस्सइ ३ अत्थेगतिए वधी न बधइ वधिस्सइ ४ अत्थेगतिए वधी न वधइ न बधिस्सइ ॥

३१३ तं भते ! किं सादीय सपज्जवसिय वधइ ? पुच्छा तहेव ।
गोयमा ! सादीय वा सपज्जवसिय वधइ, अणादीय वा सपज्जवसिय वधइ, अणादीय वा अपज्जवसिय बधइ, नो चेव ण सादीय अपज्जवसिय बधइ ॥

३१४ तं भते ! किं देसेण देस वंधइ ? एव जहेव इरियावहियवधगस्स जाव[2] सव्वेणं सव्व वधइ ॥

कम्मप्पगडीसु परीसहसमवतार-पदं

३१५. कइ ण भते ! कम्मप्पगडीओ पण्णत्ताओ ?
गोयमा ! अट्ठ कम्मप्पगडीओ पण्णत्ताओ, त जहा—नाणावरणिज्ज दसणावरणिज्ज वेदणिज्ज मोहणिज्ज आउग नाम गोय[3] अतराइय ॥

३१६. कइ ण भते ! परीसहा पण्णत्ता ?
गोयमा ! वावीसं परीसहा पण्णत्ता, तं जहा—दिगिंछापरीसहे, पिवासा-परीसहे[4] °सीतपरीसहे उसिणपरीसहे दसमसगपरीसहे अचेलपरीसहे अरइ-परीसहे इत्थिपरीसहे चरियापरीसहे निसीहियापरीसहे सेज्जापरीसहे अक्कोस-परीसहे वहपरीसहे जायणापरीसहे अलाभपरीसहे रोगपरीसहे तणफासपरीसहे जल्लपरीसहे सक्कारपुरक्कारपरीसहे 'पण्णापरीसहे नाणपरीसहे[5] °दसण-परीसहे'[6] ॥

३१७ एए ण भते ! वावीस परीसहा कतिसु कम्मप्पगडीसु समोयरंति ?
गोयमा ! चउसु कम्मप्पगडीसु समोयरंति, तं जहा—नाणावरणिज्जे, वेदणिज्जे, मोहणिज्जे, अतराइए ॥

---

१. × (व) ।
२. भ० ८।३०८ ।
३. गोद (व) ।
४. स० पा०—पिवासापरिसहे जाव दसण° ।
५. अन्नाणपरिसहे (उत्त० २।३) ।
६ नाणपरीसहे दसणपरीसहे पण्णापरीसहे (स० २२।१) ।

३१८. नाणावरणिज्जे ण भते ! कम्मे कति परीसहा समोयरंति ?
गोयमा ! दो परीसहा समोयरंति, त जहा—पण्णापरीसहे नाणपरीसहे[1] य ॥
३१९ वेदणिज्जे ण भते ! कम्मे कति परीसहा समोयरति ?
गोयमा ! एक्कारस परीसहा समोयरति, त जहा—

पचेव आणुपुव्वी, चरिया सेज्जा वहे य रोगे य ।
तणफास—जल्लमेव य, एक्कारस वेदणिज्जम्मि ॥१॥

३२० दसणमोहणिज्जे णं भते ! कम्मे कति परिसहा समोयरति ?
गोयमा ! एगे दसणपरीसहे समोयरइ ॥
३२१ चरित्तमोहणिज्जे ण भते ! कम्मे कति परीसहा समोयरति ?
गोयमा ! सत्त परीसहा समोयरति, त जहा—

अरती अचेल इत्थी, निसीहिया जायणा य अक्कोसे ।
सक्कार-पुरक्कारे, चरित्तमोहम्मि सत्तेते ॥१॥

३२२. अतराइए ण भते ! कम्मे कति परीसहा समोयरति ?
गोयमा ! एगे अलाभपरीसहे समोयरइ ॥
३२३. सत्तविहबधगस्स ण भते ! कति परीसहा पण्णत्ता ?
गोयमा ! बावीस परीसहा पण्णत्ता । वीसं पुण वेदेइ—ज समय सीयपरीसह वेदेइ नो त समय उसिणपरीसहं वेदेइ, ज समय उसिणपरीसह वेदेइ नो तं समय सीयपरीसह वेदेइ, जं समय चरियापरीसह वेदेइ नो त समय निसीहिया-परीसह वेदेइ, ज समय निसीहियापरीसह वेदेइ नो त समय चरियापरीसहं वेदेइ ॥
३२४ 'एव अट्ठविहबधगस्स वि'[2] ॥
३२५ छव्विहबधगस्स ण भते ! सरागछउमत्थस्स कति परीसहा पण्णत्ता ?
गोयमा ! चोद्दस परिसहा पण्णता । बारस पुण वेदेइ—ज समय सीयपरीसह वेदेइ नो त समय उसिणपरीसह[3] वेदेइ, ज समय उसिणपरीसह वेदेइ नो त समय सीयपरीसह वेदेइ, ज समय चरियापरीसह वेदेइ नो त समय सेज्जा-परीसह वेदेइ, ज समयं सेज्जापरीसह वेदेइ नो त समय चरियापरीसह वेदेइ ॥

---

१ अण्णाण० (अ) ।
२. अट्ठविहबधगस्स ण भते ! कति परिसहा प० गो० बावीस परीसहा, त छुहापरीसहे पिवासा परीसहे सीयपरीसहे उसिणपरीसहे दस-मसगपरीसहे जाव अलाभपरीसहे एव अट्ठ-विहबधगस्स वि (क, ब, म), अट्ठविहबधगस्स ण भते ! कति परीसहा प० गो० बावीस परीसहा प० एव-अट्ठविधबधगस्स (ता, स) ।
३ उसुण० (ता) ।

३२६. एक्कविहबंधगस्स णं भंते ! वीयरागछउमत्थस्स कति परीसहा पण्णत्ता ?
गोयमा ! एवं चेव—जहेव छव्विहबंधगस्स ।।

३२७ एगविहबंधगस्स णं भंते ! सजोगिभवत्थकेवलिस्स कति परीसहा पण्णत्ता ?
गोयमा ! एक्कारस परीसहा पण्णत्ता । नव पुण वेदेइ । सेसं जहा छव्विहबंधगस्स ।।

३२८ अबंधगस्स णं भंते ! अयोगिभवत्थकेवलिस्स कति परीसहा पण्णत्ता ?
गोयमा ! एक्कारस परीसहा पण्णत्ता । नव पुण वेदेइ—जं समयं सीयपरीसहं वेदेइ नो तं समयं उसिणपरीसहं वेदेइ, जं समयं उसिणपरीसहं वेदेइ नो तं समयं सीयपरीसहं वेदेइ, जं समयं चरियापरीसहं वेदेइ नो तं समयं सेज्जापरीसहं वेदेइ, जं समयं सेज्जापरीसहं वेदेइ नो तं समयं चरियापरीसहं वेदेइ ।।

सूरिय-पदं

३२९ जंबुद्दीवे णं भंते ! दीवे सूरिया उग्गमणमुहुत्तंसि दूरे य मूले य दीसंति ? मज्झंतियमुहुत्तंसि मूले य दूरे य दीसंति ? अत्थमणमुहुत्तंसि दूरे य मूले य दीसंति ?
हंता गोयमा ! जंबुद्दीवे णं दीवे सूरिया उग्गमणमुहुत्तंसि दूरे य[1] •मूले य दीसंति, मज्झंतियमुहुत्तंसि मूले य दूरे य दीसंति°, अत्थमणमुहुत्तंसि दूरे य मूले य दीसंति ।।

३३०. जंबुद्दीवे णं भंते ! दीवे सूरिया उग्गमणमुहुत्तंसि, मज्झंतियमुहुत्तंसि य, अत्थमणमुहुत्तंसि य सव्वत्थ समा उच्चत्तेणं ?
हंता गोयमा ! जंबुद्दीवे णं दीवे सूरिया उग्गमण[2]•मुहुत्तंसि, मज्झंतियमुहुत्तंसि य, अत्थमणमुहुत्तंसि य सव्वत्थ समा° उच्चत्तेणं ।।

३३१. जइ णं भंते ! जंबुद्दीवे दीवे सूरिया उग्गमणमहुत्तंसि, मज्झंतियमुहुत्तंसि य, अत्थमणमुहुत्तंसि[3] •य सव्वत्थ समा° उच्चत्तेणं, से केणं खाइ अट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ— जंबुद्दीवे णं दीवे सूरिया उग्गमणमुहुत्तंसि[4] दूरे य मूले य दीसंति ? जाव अत्थमणमुहुत्तंसि दूरे य मूले य दीसंति ?
गोयमा ! लेसापडिघाएणं उग्गमणमुहुत्तंसि दूरे य मूले य दीसंति, लेसाभितावेणं मज्झंतियमुहुत्तंसि मूले य दूरे य दीसंति, लेसापडिघाएणं अत्थमणमुहुत्तंसि

---

१. सं० पा०—तं चेव जाव अत्थमण° ।
२. सं० पा०—उग्गमण जाव उच्चत्तेणं ।
३ सं० पा०—अत्थमणमुहुत्तंसि जाव उच्चत्तेणं । 'अ, ता, ता, म, स' संकेतितादर्शेषु 'अत्थमणमुहुत्तंसि मूले जाव उच्चत्तेणं' इति पाठोऽस्ति । अत्र 'मूले' इति पदं नावश्यकं प्रतिभाति ।
४. °मुहुत्तंसि य (अ, क, ता, ब, म, स)।

दूरे य मूले य दीसति। से तेणट्ठेणं गोयमा! एवं वुच्चइ—जबुद्दीवे णं दीवे सूरिया उग्गमणमुहुत्तसि दूरे य मूले य दीसति जाव अत्थमण[1]•मुहुत्तसि दूरे य मूले य° दीसंति॥

३३२ जवुद्दीवे ण भते! दीवे सूरिया कि तीय खेत्त गच्छति? पडुप्पन्न खेत्त गच्छति? अणागय खेत्त गच्छति?
गोयमा! नो तीय खेत्त गच्छति, पडुप्पन्न खेत्त गच्छति, नो अणागय खेत्त गच्छति॥

३३३ जंवुद्दीवे ण भते! दीवे सूरिया कि तीय खेत्त ओभासति? पडुप्पन्न खेत्त ओभासति? अणागय खेत्त ओभासति?
गोयमा! नो तीय खेत्त ओभासति, पडुप्पन्न खेत्त ओभासति, नो अणागय खेत्तं ओभासति॥

३३४. त भते! किं पुट्ठ ओभासति? अपुट्ठ ओभासति?
गोयमा! पुट्ठ ओभासति, नो अपुट्ठ ओभासति जाव[2] नियमा छद्दिसिं॥

३३५. जवुद्दीवे ण भते! दीवे सूरिया कि तीय खेत्त उज्जोवेति?
एव चेव जाव नियमा छद्दिसिं॥

३३६. एव तवेति, एव भासति जाव नियमा छद्दिसि॥

३३७. जवुद्दीवे ण भते! दीवे सूरियाण कि तीए खेत्ते किरिया कज्जइ? पडुप्पन्ने खेत्ते किरिया कज्जइ? अणागए खेत्ते किरिया कज्जइ?
गोयमा! नो तीए खेते किरिया कज्जइ, पडुप्पन्ने खेत्ते किरिया कज्जइ, नो अणागए खेत्ते किरिया कज्जइ॥

३३८ सा भते! किं पुट्ठा कज्जइ? अपुट्ठा कज्जइ?
गोयमा! पुट्ठा कज्जइ, नो अपुट्ठा कज्जइ जाव[3] नियमा छद्दिसिं॥

३३९. जवुद्दीवे ण भते! दीवे सूरिया केवतिय खेत्त उड्ढ तवति? केवतिय खेत्तं अहे तवति? केवतिय खेत्त तिरिय तवति?
गोयमा! एग जोयणसय उड्ढ तवति, अट्ठारस जोयणसयाइ अहे तवति, सीयालीस जोयणसहस्साइ दोण्णिय तेवट्ठे जोयणसए एक्कवीस च सट्ठिभाए जोयणस्स तिरिय तवति॥

जोइसियाणं उववत्ति-पदं

३४० अतो ण भते! माणुसुत्तरपव्वयस्स जे चदिम-सूरिय-गहगण-णक्खत्त-तारारूवा ते ण भते! देवा किं उड्ढोववन्नगा?

---

१. स० पा०—अत्थमण जाव दीसति। ३ भ० १।२५९-२६६।
२. भ० १।२५९-२६६।

जहा जीवाभिगमे तहेव निरवसेसं जाव[1]—

३४१ इंदट्ठाणे ण भंते ! केवतिय काल विरहिए उववाएण ?
गोयमा ! जहण्णेण एक्कं समय, उक्कोसेण छम्मासा ॥

३४२. वहिया णं भंते ! माणुसुत्तरपव्वयस्स जे चंदिम-सूरिय-गहगण-णक्खत्त-तारारूवा ते ण भंते ! देवा कि उड्ढोववन्नगा ?
जहा जीवाभिगमे जाव[2]—

३४३ इदट्ठाणे ण भंते ! केवतिय काल उववाएण विरहिए पण्णत्ते ?
गोयमा ! जहण्णेण एक्कं समय, उक्कोसेण छम्मासा ॥

३४४ सेव भंते ! सेव भंते ! त्ति[3] ॥

नवमो उद्देसो

बंध-पदं

३४५ कतिविहे ण भंते ! बंधे पण्णत्ते !
गोयमा ! दुविहे बंधे पण्णत्ते, तं जहा—पयोगबंधे य, वीससाबंधे य ॥

वीससाबंध-पदं

३४६. वीससाबंधे ण भंते ! कतिविहे पण्णत्ते ?
गोयमा ! दुविहे पण्णत्ते, त जहा—सादीयवीससाबंधे य, अणादीयवीससाबंधे य ॥

३४७ अणादियवीससाबंधे[4] ण भंते ! कतिविहे पण्णत्ते ?
गोयमा ! तिविहे पण्णत्ते, त जहा—धम्मत्थिकायअण्णमण्णअणादीयवीससाबंधे, अधम्मत्थिकायअण्णमण्णअणादीयवीससाबंधे, आगासत्थिकायअण्णमण्णअणादीयवीससाबंधे ॥

३४८. धम्मत्थिकायअण्णमण्णअणादीयवीससाबंधे ण भंते ! कि देसबंधे ? सव्वबंधे ?
गोयमा ! देसबंधे, नो सव्वबंधे । एव अधम्मत्थिकायअण्णमण्णअणादीयवीससाबंधे वि, एवं आगासत्थिकायअण्णमण्णअणादीयवीससाबंधे वि ॥

---

१. जी० ३ ।
२. जी० ३ ।
३. भ० १।५१ ।
४. अणातीत० (ता) ।

३४९ धम्मत्थिकायअण्णमण्णअणादीयवीससाबधे ण भंते ! कालओ केवच्चिर होइ ?
गोयमा ! सव्वद्ध । एव अधम्मत्थिकायअण्णमण्णअणादीयवीससाबधे वि, एव आगासत्थिकायअण्णमण्णअणादीयवीससाबधे वि[1] ।।

३५० सादीयवीससाबधे ण भते ! कतिविहे पण्णत्ते ?
गोयमा ! तिविहे पण्णत्ते, त जहा—बधणपच्चइए, भायणपच्चइए, परिणामपच्चइए ।।

३५१ से कि त बधणपच्चइए ?
बधणपच्चइए—जण्ण परमाणुपोग्गलदुप्पदेसिय-तिप्पदेसिय जाव दसपदेसिय-सखेज्जपदेसिय-असखेज्जपदेसिय-अणतपदेसियाण खधाण वेमायनिद्धयाए, वेमायलुक्खयाए, वेमायनिद्धलुक्खयाए बधणपच्चएण[2] बधे समुप्पज्जइ, जहण्णेण एक्क समय, उक्कोसेण असखेज्ज काल । सेत्त बधणपच्चइए ।।

३५२. से कि त भायणपच्चइए ?
भायणपच्चइए—जण्ण जुण्णसुर-जुण्णगुल-जुण्णतदुलाण भायणपच्चएण[3] बधे समुप्पज्जइ, जहण्णेण अतोमुहुत्त, उक्कोसेण सखेज्ज काल । सेत्त भायणपच्चइए ।।

३५३ से किं त परिणामपच्चइए ?
परिणामपच्चइए—जण्ण अब्भाण, अब्भरुक्खाण जहा ततियसए जाव[4] अमोहाण परिणामपच्चएण[5] बधे समुप्पज्जइ, जहण्णेण एक्क समय, उक्कोसेण छम्मासा । सेत्त परिणामपच्चइए । सेत्त सादीयवीससाबधे । सेत्त वीससाबधे ।।

पयोगबंध-पदं

३५४ से कि त पयोगबधे ?
पयोगबधे तिविहे पण्णत्ते, त जहा—अणादीए वा अपज्जवसिए, सादीए वा अपज्जवसिए,सादीए वा सपज्जवसिए ।
तत्थ ण जे से अणादीए अपज्जवसिए से णं अट्ठण्ह जीवमज्झपएसाण, तत्थ वि ण तिण्ह-तिण्ह अणादीए अपज्जवसिए,सेसाण सादीए । तत्थ ण जे से सादीए अपज्जवसिए से ण सिद्धाण । तत्थ णं जे से सादीए सपज्जवसिए से ण

---

१ अस्य सूत्रस्यानन्तर 'ता' प्रतौ एतावानतिरिक्त पाठोऽस्ति—'धम्मत्थिकायअण्णमण्णअणादीयवीससावधस्स रा भते ! केवइय काल अतर होइ गो नत्थि अतर एव तिण्हवि सेत्त अणादीयवीससावधे ।'

२ °पच्चइएण (अ) ।

३. °पच्चइएण (अ, स) ।

४ भ० ३।२५३ ।

५. °पच्चइएण (अ, स) ।

चउव्विहे पण्णत्ते, त जहा—आलावणबधे, अल्लियावणबधे, सरीरबंधे, सरीर-प्पयोगबधे ॥

आलावणं पडुच्च—

३५५ से किं त आलावणबधे ?

आलावणबधे—जण्ण तणभाराण वा, कट्ठभाराण वा, पत्तभाराण वा, पलाल-भाराण वा[1], वेत्तलता-वाग-वरत्त-रज्जु-वल्लि-कुस-दब्भमादीएहिं आलावण-बधे समुप्पज्जइ, जहण्णेणं अतोमुहुत्त, उक्कोसेण सखेज्ज काल । सेत्त आलावण-बधे ॥

अल्लियावणं पडुच्च—

३५६ से कि त अल्लियावणबधे ?

अल्लियावणबधे चउव्विहे पण्णत्ते, त जहा—लेसणाबधे, उच्चयबधे, समुच्चय-बधे, साहणणाबधे[2] ॥

३५७ से कि त लेसणाबधे ?

लेसणाबधे—जण्ण कुड्डाण, कोट्टिमाण[3], खभाण, पासायाण, कट्ठाणं, चम्माण, घडाण, पडाण, कडाण छुहा-चिक्खल्ल-सिलेस-लक्ख-महुसित्थमाईएहिं लेसण-एहिं बधे समुप्पज्जइ, जहण्णेण अतोमुहुत्त, उक्कोसेण सखेज्ज काल । सेत्त लेसणाबधे ॥

३५८ से किं त उच्चयबधे ? उच्चयबधे—जण्ण तणरासीण वा, कट्ठरासीण वा, पत्तरासीण वा, तुसरासीण वा, भुसरासीण वा गोमयरासीण वा, अवगर-रासीण वा, उच्चत्तेण बधे समुप्पज्जइ, जहण्णेण अतोमुहुत्त, उक्कोसेण सखेज्ज काल । सेत्त उच्चयबधे ॥

३५९ से किं त समुच्चयबधे ?

समुच्चयबधे—जण्ण अगड-तडाग-नदी-दह-वावी-पुक्खरिणी-दीहियाण गुजालि-याणं, सराण, सरपतियाण, सरसरपतियाण, बिलपतियाण देवकुल-सभ-प्पव-थूभ-खाइयाण, फरिहाण[4], पागारट्टालग-चरिय-दार-गोपुर-तोरणाण, पासाय-घर-सरण-लेण-आवणाण, सिघाडग-तिय-चउक्क-चच्चर-चउम्मुह[5]-महापह-पहमादीण, छुहा-चिक्खल्ल-सिला[6]-समुच्चएण बधे समुप्पज्जइ, जहण्णेण अतोमुहुत्त, उक्कोसेण सखेज्ज काल । सेत्त समुच्चयबधे ॥

---

१. वा वेल्लभाराण वा (अ, स) ।
२ साहणबधे (ता), सहणाण ° (म, स) ।
३ कुट्टिमाण (क) ।
४ परिहाण (क, व, म) ।
५ चउमुह (क, ता) ।
६. सिलेस (अ, स); सेला (ता) ।

३६०. से किं तं साहणणाबंधे ?
साहणणाबधे दुविहे पण्णत्ते, त जहा—देससाहणणाबधे य, सव्वसाहणणाबधे य ॥

३६१ से किं त देससाहणणाबधे ?
देससाहणणाबधे—जण्ण सगड-रह-जाण-जुग्ग-गिल्लि-थिल्लि-सीय-सदमाणी-लोही-लोहकडाह-कडच्छुय[1]-आसण-सयण-खभ-भडमत्तोवगरणमादीण देस-साहणणाबधे[2] समुप्पज्जइ, जहण्णेण अतोमुहुत्त, उक्कोसेण सखेज्जं काल। सेत्त देससाहणणाबधे ॥

३६२ से किं त सव्वसाहणणाबधे ?
सव्वसाहणणाबधे—से ण खीरोदगमाईण। सेत्त सव्वसाहणणाबधे । सेत्त साहणणाबधे। सेत्त अल्लियावणबधे ॥

सरीरं पडुच्च—

३६३. से किं त सरीरबधे ?
सरीरबधे दुविहे पण्णत्ते, त जहा—पुव्वपयोगपच्चइए[3] य, पडुप्पन्नपयोग-पच्चइए[4] य ॥

३६४ से किं त पुव्वपयोगपच्चइए ?
पुव्वपयोगपच्चइए—जण्णं नेरइयाण ससारत्थाण सव्वजीवाण तत्थ-तत्थ तेसु-तेसु कारणेसु समोहण्णमाणाण[5] जीवप्पदेसाण[6] बधे समुप्पज्जइ। सेत्त पुव्व-पयोगपच्चइए ॥

३६५. से किं तं पडुप्पन्नपयोगपच्चइए ?
पडुप्पन्नपयोगपच्चइए—जण्ण केवलनाणिस्स अणगारस्स केवलिसमुग्घाएण समोहयस्स ताओ समुग्घायाओ पडिनियत्तमाणस्स अतरा मथे वट्टमाणस्स तेया-कम्माण बधे समुप्पज्जइ। कि कारण ? ताहे से पएसा एगत्तीगया भवति[7]। सेत्त पडुप्पन्नपयोगपच्चइए। सेत्त सरीरबधे ॥

---

१. कडेच्छुय (ता, ब, म); कडुच्छुया (भ० ५।१८६)
२. देससावणाणाएवधे (ता)।
३ तुव्वप्पओग ° (ता)।
४. पच्चुप्पण्ण ° (ता, ब, म)।
५. समोहण ° (स)।
६ इह जीवप्रदेशानामित्युक्तावपि शरीरबन्धाधिकारात्तात्स्थ्यात्तद्व्यपदेश इति न्यायेन जीवप्रदेशाश्रिततैजसकार्मणशरीरप्रदेशानामिति द्रष्टव्य, शरीरिबन्ध इत्यत्र तु पक्षे समुद्घातेन विक्षिप्य सङ्कोचितानामुपसर्जनीकृततैजसादिशरीरप्रदेशाना जीवप्रदेशानामेवेति (वृ)।
७. शरीरिबन्ध इत्यत्र तु पक्षे तेयाकम्माण बधे समुप्पज्जइ (वृ)।

सरीरप्पयोगं पडुच्च—

३६६. से किं त सरीरप्पयोगवधे ?
सरीरप्पयोगवधे पचविहे पण्णत्ते, त जहा—ओरालियसरीरप्पयोगवधे, वेउव्वियसरीरप्पयोगबधे, आहारगसरीरप्पयोगवंधे, तेयासरीरप्पयोगवधे, कम्मासरीरप्पयोगवधे ।।

ओरालियसरीरप्पयोगं पडुच्च—

३६७. ओरालियसरीरप्पयोगवंधे ण भते ! कतिविहे पण्णत्ते ?
गोयमा ! पचविहे पण्णत्ते, त जहा—एगिंदियओरालियसरीरप्पयोगवंधे, बेइदियओरालियसरीरप्पयोगवधे जाव पचिंदियओरालियसरीरप्पयोगवधे ।।

३६८. एगिंदियओरालियसरीरप्पयोगवधे ण भते ! कतिविहे पण्णत्ते ?
गोयमा ! पचविहे पण्णत्ते, त जहा—पुढविक्काइयएगिदियओरालियसरीरप्पयोगवधे, एव एएण अभिलावेण भेदो जहा ओगाहणसठाणे ओरालियसरीरस्स तहा भाणियव्वो जाव[1] पज्जत्तागब्भवक्कतियमणुस्सपचिदियओरालियसरीरप्पयोगवंधे य, अप्पज्जत्तागब्भवक्कतियमणुस्स[2] •पचिदियओरालियसरीरप्पयोग°-वधे य ।।

३६९ ओरालियसरीरप्पयोगवधे ण भते ! कस्स कम्मस्स उदएण ?
गोयमा ! वीरिय-सजोग-सद्दव्वयाए पमादपच्चया कम्मं च जोग च भव च आउयं च पडुच्च ओरालियसरीरप्पयोगनामकम्मस्स उदएण ओरालियसरीरप्पयोगबधे ।।

३७० एगिंदियओरालियसरीरप्पयोगवधे ण भते ! कस्स कम्मस्स उदएणं ?
एव चेव । पुढविक्काइयएगिंदियओरालियसरीरप्पयोगवंधे एव चेव, एव जाव वणस्सइकाइया । एव वेइदिया, एव तेइदिया, एव चउरिंदिया ।।

३७१. तिरिक्खजोणियपचिंदियओरालियसरीरप्पयोगवधे ण भते ! कस्स कम्मस्स उदएण ? एव चेव ।।

३७२ मणुस्स पचिंदियओरालियसरीरप्पयोगवधे ण भते ! कस्स कम्मस्स उदएण ?
गोयमा ! वीरिय-सजोग-सद्दव्वयाए पमादपच्चया[3] •कम्म च जोगं च भव च° आउय च पडुच्च मणुस्सपचिंदियओरालियसरीरप्पयोगनामकम्मस्स उदएण मणुस्सपचिंदियओरालियसरीरप्पयोगवधे ।।

३७३. ओरालियसरीरप्पयोगवधे ण भते ! किं देसवधे ? सव्ववधे ?

---

१. प० २१ ।
२. स० पा०—°मणुस्स जाव वधे ।
३. स० पा०—पमादपच्चया जाव आउय ।

गोयमा ! देसवधे वि, सव्ववधे वि ।।

३७४ एगिदियओरालियसरीरप्पयोगवधे ण भते ! कि देसवधे ? सव्ववधे ?
एव चेव । एव पुढविक्काइया एव जाव—

३७५. मणुस्सपचिदियओरालियसरीरप्पयोगवधे ण भते ! कि देसवधे ? सव्ववधे ?
गोयमा ! देसवधे वि, सव्ववधे वि ।।

३७६. ओरालियसरीरप्पयोगवधे ण भते ! कालओ केवच्चिर होइ ?
गोयमा ! सव्ववधे एक्क समय, देसवधे जहण्णेण एक्क समय, उक्कोसेण तिण्णि पलिओवमाइ समयूणाइ[1] ।।

३७७. एगिदियओरालियसरीरप्पयोगवधे ण भते ! कालओ केवच्चिर होइ ?
गोयमा ! सव्ववधे एक्क समय, देसवधे जहण्णेण एक्क समय, उक्कोसेण वावीस वाससहस्साइ समयूणाइ ।।

३७८. पुढविक्काइयएगिदियपुच्छा ।
गोयमा ! सव्ववधे एक्क समय, देसवधे जहण्णेण खुड्डाग[2] भवग्गहण तिसमयूण, उक्कोसेण वावीस वाससहस्साइ समयूणाइ । एव सव्वेसि सव्ववधो एक्क समय, देसवधो जेसि नत्थि वेउव्वियसरीर तेसि जहण्णेण खुड्डाग भवग्गहण तिसमयूण, उक्कोसेण जा सा ठिती सा समयूणा कायव्वा, जेसि पुण अत्थि वेउव्वियसरीर तेसि देसवधो जहण्णेण एक्क समय, उक्कोसेण जा जस्स ठिती सा समयूणा कायव्वा जाव मणुस्साण देसवधे जहण्णेण एक्क समय, उक्कोसेण तिण्णि पलिओवमाइ समयूणाइ ।

३७९. ओरालियसरीरवधंतर ण भते ! कालओ केवच्चिर होइ ?
गोयमा ! सव्ववधतर जहण्णेण खुड्डाग भवग्गहण तिसमयूण, उक्कोसेण तेत्तीस सागरोवमाइ पुव्वकोडिसमयाहियाइ । देसवधतर जहण्णेण एक्क समय, उक्कोसेण तेत्तीस सागरोवमाइ तिसमयाहियाइ ।।

३८०. एगिदियओरालियपुच्छा ।
गोयमा ! सव्ववधतर जहण्णेण खुड्डाग भवग्गहण तिसमयूण, उक्कोसेण वावीस वाससहस्साइ समयाहियाइ । देसवधतर जहण्णेण एक्क समय, उक्कोसेण अतोमुहुत्त ।।

३८१. पुढविक्काइयएगिदियपुच्छा ।
सव्ववधतर जहेव एगिदियस्स तहेव भाणियव्व । देसवधतर जहण्णेण एक्क समय, उक्कोसेण तिण्णि समया । जहा पुढविक्काइयाण एव जाव चउरिंदियाण वाउक्काइयवज्जाण, नवर—सव्ववधतर उक्कोसेण जा जस्स ठिती सा समया-

---

१ समयऊणाइ (क) । २ खुड्डाग (क) प्राय सर्वत्र ।

हिया कायव्वा । वाउक्काइयाणं सव्वबंधतरं जहण्णेण खुड्डागं भवग्गहणं ति-समयूणं, उक्कोसेणं तिण्णि वाससहस्साइं समयाहियाइं । देसबंधंतरं जहण्णेणं एक्कं समयं, उक्कोसेणं अंतोमुहुत्तं ।।

३८२ पंचिंदियतिरिक्खजोणियओरालियपुच्छा ।
सव्वबंधतरं जहण्णेणं खुड्डागं भवग्गहणं तिसमयूणं, उक्कोसेणं पुव्वकोडी समयाहिया । देसबंधतरं जहा एगिंदियाणं तहा पंचिंदियतिरिक्खजोणियाणं, एवं मणुस्साण वि निरवसेसं भाणियव्वं जाव उक्कोसेणं अंतोमुहुत्तं ।।

३८३ जीवस्स णं भंते ! एगिंदियत्ते, नोएगिंदियत्ते, पुणरवि एगिंदियत्ते एगिंदिय-ओरालियसरीरप्पयोगबंधतरं कालओ केवच्चिरं होइ ?
गोयमा ! सव्वबंधतरं जहण्णेणं दो खुड्डाइं भवग्गहणाइं तिसमयूणाइं, उक्कोसेणं दो सागरोवमसहस्साइं संखेज्जवासमब्भहियाइं । देसबंधतरं जहण्णेणं खुड्डागं भवग्गहणं समयाहियं, उक्कोसेणं दो सागरोवमसहस्साइं संखेज्जवास-मब्भहियाइं ।।

३८४ जीवस्स णं भंते ! पुढविक्काइयत्ते, नोपुढविक्काइयत्ते, पुणरवि पुढविक्काइयत्ते पुढविक्काइयएगिंदियओरालियसरीरप्पयोगबंधतरं कालओ केवच्चिरं होइ ?
गोयमा ! सव्वबंधतरं जहण्णेणं दो खुड्डाइं भवग्गहणाइं तिसमयूणाइं[1], उक्कोसेणं अणंतं कालं—अणंताओ ओसप्पिणीओ उस्सप्पिणीओ कालओ, खेत्तओ अणंता लोगा—असंखेज्जा पोग्गलपरियट्टा, ते णं पोग्गलपरियट्टा आवलियाए असंखेज्जइभागो । देसबंधतरं जहण्णेणं खुड्डागं भवग्गहणं समयाहियं, उक्कोसेणं अणंतं कालं जाव आवलियाए असंखेज्जइभागो । जहा पुढविक्काइयाणं एवं वणस्सइकाइयवज्जाणं जाव मणुस्साणं । वणस्सइकाइयाणं[2] दोण्णि खुड्डाइं एवं चेव, उक्कोसेणं असंखेज्जं कालं—असंखेज्जाओ ओसप्पिणीओ उस्सप्पिणीओ कालओ, खेत्तओ असंखेज्जा लोगा, एवं देसबंधतरं पि उक्कोसेणं पुढविकालो ।।

३८५. एएसि णं भंते ! जीवाणं ओरालियसरीरस्स देसबंधगाणं, सव्वबंधगाणं, अबंधगाण य कयरे कयरेहिंतो[3] ॰अप्पा वा ? बहुया वा ? तुल्ला वा॰? विसेसाहिया वा ?
गोयमा ! सव्वत्थोवा जीवा ओरालियसरीरस्स सव्वबंधगा, अबंधगा विसेसाहिया, देसबंधगा असंखेज्जगुणा ।।

---

१. एवं चेव (अ, क, ता, ब, म); तिसमयूणाइं एव चेव (स), अत्र द्वयोर्मिश्रणं जातम् । 'एव चेव' त्ति करणात् 'तिसमयूणाइं' ति दृश्यम् ।

२. तरुकालो वण॰ (ता) ।

३. स॰ पा॰—कयरेहिंतो जाव विसेसाहिया ।

वेउव्वियसरीरप्पयोगं पडुच्च—

३८६. वेउव्वियसरीरप्पयोगवधे ण भते ! कतिविहे पण्णत्ते ?
गोयमा ! दुविहे पण्णत्ते, त जहा—एगिदियवेउव्वियसरीरप्पयोगवधे य पचेंदियवेउव्वियसरीरप्पयोगवधे य ।।

३८७ जइ एगिदियवेउव्वियसरीरप्पयोगवधे कि वाउक्काइयएगिदियसरीरप्पयोगवधे ? अवाउक्काइयएगिदियसरीरप्पयोगवधे ?
एव एएण अभिलावेण जहा ओगाहणसठाणे वेउव्वियसरीरभेदो तहा भाणियव्वो जाव[1] पज्जत्तासव्वट्ठसिद्धअणुत्तरोववाइयकप्पातीयवेमाणियदेवपचिदियवेउव्वियसरीरप्पयोगवधे य, अपज्जत्तासव्वट्ठसिद्ध[2] •अणुत्तरोववाइयकप्पातीयवेमाणियदेवपचिंदियवेउव्वियसरीरप्पयोगवधे य ।।

३८८ वेउव्वियसरीरप्पयोगवधे ण भते ! कस्स कम्मस्स उदएण ?
गोयमा ! वीरिय-सजोग-सद्दव्वयाए[3] •पमादपच्चया कम्म च जोग च भव च° आउयं 'च लद्धि वा'[4] पडुच्च वेउव्वियसरीरप्पयोगनामाए कम्मस्स उदएण वेउव्वियसरीरप्पयोगवधे ।।

३८९. वाउक्काइयएगिदियवेउव्वियसरीरप्पयोगपुच्छा ।
गोयमा ! वीरिय-सजोग-सद्दव्वयाए एव चेव जाव लद्धि पडुच्च वाउक्काइयएगिदियवेउव्विय[5] •सरीरप्पयोग° वधे।।

३९० रयणप्पभापुढविनेरइयपचिदियवेउव्वियसरीरप्पयोगवधे ण भंते ! कस्स कम्मस्स उदएण ?
गोयमा ! वीरिय-सजोग-सद्दव्वयाए जाव आउय वा पडुच्च रयणप्पभापुढवि[6] •नेरइयपचिदियवेउव्वियसरीरप्पयोग°वधे, एव जाव अहेसत्तमाए ।।

३९१. तिरिक्खजोणियपचिंदियवेउव्वियसरीरपुच्छा ।
गोयमा ! वीरिय-सजोग-सद्दव्वयाए जहा वाउक्काइयाण । मणुस्सपचिंदियवेउव्वियसरीरप्पयोगवधे एव चेव । असुरकुमारभवणवासिदेवपचिंदियवेउव्वियसरीरप्पयोगवधे जहा रयणप्पभापुढविनेरइयाण । एव जाव थणियकुमारा । एव वाणमतरा । एव जोइसिया । एव सोहम्मकप्पोवया[7] वेमाणिया । एव जाव अच्चुयगेवेज्जकप्पातीया वेमाणिया । अणुत्तरोववाइयकप्पातीया वेमाणिया एव चेव ।

---

१. प० २१ ।
२. स० पा०—°सिद्ध जाव पयोगवधे ।
३. स० पा०—सद्दव्वयाए जाव आउय ।
४. वा लद्धि (अ), वा लद्धि वा (क, ता, व, म, स) ।
५ स० पा०—°वेउव्विय जाव वधे ।
६ स० पा०—°पुढवि जाव वधे ।
७ °कप्पोवा (ता) ।

३९२ वेउव्वियसरीरप्पयोगवधे ण भते ! कि देसवधे ? सव्ववधे ?
गोयमा ! देसवधे वि, सव्ववधे वि ।
वाउक्काइयएगिदियवेउव्वियसरीरप्पयोगवधे वि एव चेव । रयणप्पभापुढवि-नेरइया एव चेव । एव जाव अणुत्तरोववाइया ॥

३९३ वेउव्वियसरीरप्पयोगवधे ण भते । कालग्रो केवच्चिर होइ ?
गोयमा ! सव्ववधे जहण्णेणं एक्क समय, उक्कोसेण दो समया । देसवधे जहण्णेण एक्क समय, उक्कोसेण तेत्तीस सागरोवमाइ समयूणाइ ॥

३९४ वाउक्काइयएगिदियवेउव्वियपुच्छा ।
गोयमा ! सव्ववधे एक्क समय, देसवधे जहण्णेण एक्क समय, उक्कोसेण अतोमुहुत्त ॥

३९५ रयणप्पभापुढविनेरइयपुच्छा ।
गोयमा ! सव्ववधे एक्क समय, देसवधे जहण्णेण दसवाससहस्साइ तिसमयूणाइ, उक्कोसेण सागरोवम समयूण । एव जाव अहे सत्तमा, नवर—देसवधे जस्स जा जहण्णिया ठिती सा तिसमयूणा कायव्वा जाव उक्कोसिया सा समयूणा । पचिंदियतिरिक्खजोणियाण मणुस्साण य जहा वाउक्काइयाण, असुरकुमार-नागकुमार जाव अणुत्तरोववाइयाण जहा नेरइयाण, नवर—जस्स जा ठिती सा भाणियव्वा जाव अणुत्तरोववाइयाण सव्ववधे एक्क समय, देसवधे जहण्णेण एक्कतीस सागरोवमाइ तिसमयूणाइ[1], उक्कोसेणं तेत्तीस सागरोवमाइ समयूणाइ ॥

३९६. वेउव्वियसरीरप्पयोगवधतर ण भते ! कालग्रो केवच्चिर होइ ?
गोयमा ! सव्ववधतर जहण्णेण एक्क समयं, उक्कोसेण अणत काल—अणताग्रो[2] •ओसप्पिणीओ उस्सप्पिणीओ कालओ, खेत्तओ अणता लोगा—असखेज्जा पोग्गलपरियट्टा, ते ण पोग्गलपरियट्टा° आवलियाए असखेज्जइभागो । एव देसवधतर पि ॥

३९७ वाउक्काइयवेउव्वियसरीरपुच्छा ।
गोयमा ! सव्ववधतर जहण्णेण अतोमुहुत्त, उक्कोसेण पलिओवमस्स असखेज्जइभाग । एव देसवधतर पि ॥

३९८ तिरिक्खजोणियपचिंदियवेउव्वियसरीरप्पयोगवधतर—पुच्छा ।
गोयमा ! सव्ववधतर जहण्णेण अतोमुहुत्त, उक्कोसेण पुव्वकोडीपुहत्त । एव देसवधतर पि । एव मणूसस्स वि[3] ॥

---

१. तिसमऊणाइ (क, ता, व) ।
२. स० पा०—अणताओ जाव आवलियाए ।
३ मणुयस्स (क, म), मणुस्सा (ता, व) ।

३९९ जीवस्स ण भंते ! वाउक्काइयत्ते, नोवाउकाइयत्ते, पुणरवि वाउकाइयत्ते वाउक्काइयएगिदियवेउव्वियपुच्छा ।
गोयमा ! सव्ववधतर जहण्णेण अतोमुहुत्त, उक्कोसेण अणत काल—वणस्सइ-कालो । एव देसवधतर पि ॥

४००. जीवस्स ण भते ! रयणप्पभापुढविनेरइयत्ते, नोरयणप्पभापुढविनेरइयत्ते, पुणरवि रयणप्पभापुढविनेरइयत्ते—पुच्छा ।
गोयमा ! सव्ववधतर जहण्णेण दसवाससहस्साइ अतोमुहुत्तमब्भहियाइ, उक्कोसेण वणस्सइकालो । देसवधतर जहण्णेण अतोमुहुत्त, उक्कोसेण अणत काल—वणस्सइकालो । एव जाव अहेसत्तमाए, नवर—जा जस्स ठिती जहण्णिया सा सव्ववधतर जहण्णेण अतोमुहुत्तमब्भहिया कायव्वा, सेस त चेव । पचिंदियतिरिक्खजोणिय-मणुस्साण य जहा वाउक्काइयाण । असुर-कुमार-नागकुमार जाव सहस्सारदेवाण—एएसि जहा रयणप्पभापुढविनेर-इयाण, नवर—सव्ववधतर जस्स जा ठिती जहण्णिया सा अतोमुहुत्तमब्भहिया कायव्वा, सेस तं चेव ॥

४०१ जीवस्स ण भते ! आणयदेवत्ते[1], नोआणयदेवत्ते, पुणरवि आणयदेवत्ते पुच्छा ।
गोयमा ! सव्ववधतर जहण्णेण अट्ठारस सागरोवमाइ वासपुहत्तमब्भहियाइ, उक्कोसेण अणत काल—वणस्सइकालो । देसवधतर जहण्णेण वासपुहत्त, उक्कोसेण अणत काल—वणस्सइकालो । एव जाव अच्चुए, नवर—जस्स जा ठिती सा सव्ववधतर जहण्णेण वासपुहत्तमब्भहिया कायव्वा, सेस त चेव ॥

४०२ गेवेज्जाकप्पातीतापुच्छा ।
गोयमा ! सव्ववधतर जहण्णेण वावीस सागरोवमाइ वासपुहत्तमब्भहियाइ, उक्कोसेण अणत काल—वणस्सइकालो । देसवधतर जहण्णेण वासपुहत्त, उक्कोसेण वणस्सइकालो ॥

४०३ जीवस्स ण भते ! अणुत्तरोववाइयपुच्छा ।
गोयमा ! सव्वबधतर जहण्णेण एक्कतीस सागरोवमाइ वासपुहत्तमब्भहियाइ, उक्कोसेण सखेज्जाइ सागरोवमाइ । देसबधतर जहण्णेण वासपुहत्त, उक्कोसेण सखेज्जाइ सागरोवमाइ ॥

४०४ एएसि ण भते ! जीवाण वेउव्वियसरीरस्स देसबधगाण, सव्वबधगाण, अवधगाण य कयरे कयरेहिंतो[2] °अप्पा वा ? बहुया वा ? तुल्ला वा ?° विसेसाहिया वा ?
गोयमा ! सव्वत्थोवा जीवा वेउव्वियसरीरस्स सव्वबधगा, देसबधगा असखेज्जगुणा, अवधगा अणतगुणा ।

१ आणया° (अ) ।
२ स० पा०—कयरेहिंतो जाव विसेसाहिया ।

आहारगसरीरप्पयोगं पडुच्च –

४०५ आहारगसरीरप्पयोगबधे ण भते ! कतिविहे पण्णत्ते ?
गोयमा ! एगागारे पण्णत्ते ॥

४०६ जइ एगागारे पण्णत्ते कि मणुस्साहारगसरीरप्पयोगबंधे ? अमणुस्साहारग-सरीरप्पयोगबधे ?
गोयमा ! मणुस्साहारगसरीरप्पयोगबधे, नो अमणुस्साहारगसरीप्पयोगबधे । एव एएण अभिलावेण जहा ओगाहणसठाणे जाव[1] इड्ढिपत्तपमत्तसजयसम्म-दिट्ठिपज्जत्तसखेज्जवासाउयकम्मभूमागब्भवक्कतियमणुस्साहारगसरीरप्पयोग-बधे, नो अणिड्ढिपत्तपमत्त[2]•सजयसम्मदिट्ठिपज्जत्तसखेज्जवासाउयकम्मभूमा-गब्भवक्कतियमणुस्सा°हारगसरीरप्पयोगबधे ॥

४०७. आहारगसरीरप्पयोगबधे ण भते ! कस्स कम्मस्स उदएणं ?
गोयमा ! वीरिय-सजोग-सद्दव्वयाए[3] •पमादपच्चया कम्म च जोगं च भव च आउयं च° लद्धि वा पडुच्च[4] आहारगसरीरप्पयोगनामाए कम्मस्स उदएण आहारगसरीरप्पयोगबधे ॥

४०८ आहारगसरीरप्पयोगबधे णं भते ! किं देसबधे ? सव्वबधे ?
गोयमा ! देसबधे वि, सव्वबधे वि ॥

४०९. आहारगसरीरप्पयोगबधे ण भते ! कालओ केवच्चिरं होइ ?
गोयमा ! सव्वबधे एक्क समय, देसबधे जहण्णेण अतोमुहुत्तं, उक्कोसेण वि अतोमुहुत्त ॥

४१० आहारगसरीरप्पयोगबधतर[5] ण भते ! कालओ केवच्चिरं होइ ?
गोयमा ! सव्वबधतर जहण्णेण अतोमुहुत्त, उक्कोसेण अणत काल—अणताओ ओसप्पिणीओ उस्सप्पिणीओ कालओ, खेत्तओ अणता लोगा—अवड्ढपोग्गल-परियट्ट देसूणं । एव देसबधतर पि ॥

४११ एएसि ण भते ! जीवाण आहारगसरीरस्स देसबधगाण, सव्वबधगाण, अबध-गाण य कयरे कयरेहितो[6] •अप्पा वा ? बहुया वा ? तुल्ला वा ?° विसेसा-हिया वा ?
गोयमा ! सव्वत्थोवा जीवा आहारगसरीरस्स सव्वबधगा, देसबधगा संखेज्ज-गुणा, अबंधगा अणतगुणा ॥

---

१ प० २१ ।
२. स० पा०—°पमत्त जाव आहारग° ।
३ स० पा०—सद्दव्वयाए जाव लद्धि ।
४. पडुच्चा (ता, व) ।
५. °बधतरे (अ, क, स) ।
६ स० पा०—कयरेहितो जाव विसेसाहिया ।

तेयासरीरप्पयोगं पडुच्च—

४१२ तेयासरीरप्पयोगबधे ण भते ! कतिविहे पण्णत्ते ?
गोयमा ! पचविहे पण्णत्ते, त जहा—एगिदियतेयासरीरप्पयोगबधे, बेइदिय-तेयासरीरप्पयोगबधे जाव पचिंदियतेयासरीरप्पयोगबधे ॥

४१३ एगिंदियतेयासरीरप्पयोगबधे ण भते ! कतिविहे पण्णत्ते ?
एवं एएण अभिलावेण भेदो जहा ओगाहणसठाणे जाव[1] पज्जत्तासव्वट्टसिद्धअणुत्तरोववाइयकप्पातीतवेमाणियदेवपचिदियतेयासरीरप्पयोगबधे य, अपज्जत्तासव्वट्ठसिद्ध अणुत्तरोववाइय[2] •कप्पातीतवेमाणियदेवपचिंदियतेयासरीरप्पयोग°-बधे य ॥

४१४ तेयासरीरप्पयोगबधे ण भते ! कस्स कम्मस्स उदएण ?
गोयमा ! वीरिय-सजोग-सद्दव्वयाए[3] •पमादपच्चया कम्म च जोग च भव च° आउय वा[4] पडुच्च तेयासरीरप्पयोगनामाए कम्मस्स उदएण तेयासरीरप्पयोगबधे ॥

४१५ तेयासरीरप्पयोगबधे ण भते ! किं देसबधे ? सव्वबधे ?
गोयमा ! देसबधे, नो सव्वबधे ॥

४१६ तेयासरीरप्पयोगबधे ण भते ! कालओ केवच्चिर होइ ?
गोयमा ! दुविहे पण्णत्ते, त जहा—अणादीए[5] वा अपज्जवसिए, अणादीए वा सपज्जवसिए ॥

४१७. तेयासरीरप्पयोगबधतर ण भते ! कालओ केवच्चिर होइ ?
गोयमा ! अणादीयस्स अपज्जवसियस्स नत्थि अतर, अणादीयस्स सपज्जवसियस्स नत्थि अतर ॥

४१८ एएसि ण भते ! जीवाण तेयासरीरस्स देसबधगाण, अबधगाण य कयरे कयरेहिंतो[6] •अप्पा वा ? बहुया वा ? तुल्ला वा ?° विसेसाहिया वा ?
गोयमा ! सव्वत्थोवा जीवा तेयासरीरस्स अबधगा, देसबधगा अणतगुणा ॥

कम्मासरीरप्पयोगं पडुच्च—

४१९ कम्मासरीरप्पयोगबधे ण भंते ! कतिविहे पण्णत्ते ?
गोयमा ! अट्ठविहे पण्णत्ते, त जहा—नाणावरणिज्जकम्मासरीरप्पयोगबधे जाव अतराइयकम्मासरीरप्पयोगबधे ॥

---

१. प० २१ ।
२. स० पा०—°वाइय जाव बधे ।
३. स० पा०—सद्दव्वयाए जाव आउय ।
४ च (ता, व, म) ।
५ अणादिए (ता) ।
६ स० पा०—कयरेहिंतो जाव विसेसाहिया ।

४२० नाणावरणिज्जकम्मासरीरप्पयोगबधे ण भते ! कस्स कम्मस्स उदएण ?
गोयमा ! नाणपडिणीययाए, नाणणिण्हवणयाए, नाणतराएण, नाणप्पदोसेणं, नाणच्चासातणयाए[1], नाणविसवादणाजोगेण नाणावरणिज्जकम्मासरीरप्पयोगनामाए[2] कम्मस्स उदएण नाणावरणिज्जकम्मासरीरप्पयोगबधे ॥

४२१ दरिसणावरणिज्जकम्मासरीरप्पयोगबधे ण भते ! कस्स कम्मस्स उदएण ?
गोयमा ! दसणपडिणीययाए, •[3]दसणणिण्हवणयाए, दसणतराएण, दंसणप्पदोसेण, दसणच्चासातणयाए॰, दसणविसवादणाजोगेण दसणावरणिज्जकम्मासरीरप्पयोगनामाए कम्मस्स उदएण[4] •दरिसणावरणिज्जकम्मासरीर॰प्पयोगबधे ॥

४२२ सायावेयणिज्जकम्मासरीरप्पयोगबधे ण भते ! कस्स कम्मस्स उदएण ?
गोयमा ! पाणाणुकपयाए, भूयाणुकपयाए, •[5]जीवाणुकपयाए, सत्ताणुकपयाए, बहूण पाणाण भूयाण जीवाण सत्ताण अदुक्खणयाए असोयणयाए अजूरणयाए अतिप्पणयाए अपिट्टणयाए॰ अपरियावणयाए सायावेयणिज्जकम्मासरीरप्पयोगनामाए कम्मस्स उदएणं सायावेयणिज्जकम्मा[6]•सरीरप्पयोग॰बधे ॥

४२३ असायावेयणिज्ज[7]•कम्मासरीरप्पयोगबधे ण भते ! कस्स कम्मस्स उदएणं॰ ?
गोयमा ! परदुक्खणयाए, परसोयणयाए, •[8]परजूरणयाए, परतिप्पणयाए, परपिट्टणयाए, परपरियावणयाए, बहूण पाणाण भूयाण जीवाण सत्ताण दुक्खणयाए सोयणयाए जूरणयाए तिप्पणयाए पिट्टणयाए॰ परियावणयाए असायावेयणिज्जकम्मा[9]•सरीरप्पयोगनामाए कम्मस्स उदएण असायावेयणिज्जकम्मासरीर॰प्पयोगबधे ॥

४२४ मोहणिज्जकम्मासरीर[10]•प्पयोगबधे ण भते ! कस्स कम्मस्स उदएण॰ ?
गोयमा ! तिव्वकोहयाए, तिव्वमाणयाए, तिव्वमाययाए तिव्वलोभयाए, तिव्वदसणमोहणिज्जयाए, तिव्वचरित्तमोहणिज्जयाए मोहणिज्जकम्मासरीर[11]•प्पयोगनामाए कम्मस उदएण मोहणिज्जकम्मासरीर॰प्पयोगबधे ॥

---

१. ॰सादणाए (अ), सादणताए (क, ब, म), ॰सातणाताए (ता)।
२ नाणावरणिज्ज॰ (अ, स)।
३. स॰ पा॰—एव जहा नाणावरणिज्ज, नवर—दसणनाम घेतव्व जाव दसण॰।
४. स॰ पा॰—उदएण जाव पयोग॰।
५ स॰ पा॰—एव जहा सत्तमसए दुस्समउद्देसए जाव अपरिया॰।
६ स॰ पा॰—॰कम्मा जाव बधे।
७ स॰ पा॰—पुच्छा।
८ स॰ पा॰—जहा सत्तमसए दुस्समाउद्देसए जाव परिया॰।
९. स॰ पा॰—॰कम्मा जाव पयोग॰।
१० स॰ पा॰—पुच्छा।
११. स॰ पा॰—॰सरीर जाव पयोग॰।

४२५. नेरइयाउयकम्मासरीर[1]•प्पयोगबंधे ण भंते ! कस्स कम्मस्स उदएणं ? ०
गोयमा ! महारंभयाए, महापरिग्गहयाए, 'पंचिंदियवहेणं, कुणिमाहारेण'[2] नेरइयाउयकम्मासरीरप्पयोगनामाए कम्मस्स उदएण नेरइयाउयकम्मासरीरप्पयोगबंधे ।।

४२६ तिरिक्खजोणियाउयकम्मासरीर[3]•प्पयोगबधे ण भते ! कस्स कम्मस्स उदएण ? ०
गोयमा ! माइल्लयाए, नियडिल्लयाए, अलियवयणेण, कूडतुल[4]-कूडमाणेण तिरिक्खजोणियाउयकम्मा[5]•सरीरप्पयोगनामाए कम्मस्स उदएण तिरिक्खजोणियाउयकम्मासरीर०प्पयोगबधे ।।

४२७. मणुस्साउयकम्मासरीर[6]•प्पयोगबधे ण भते ! कस्स कम्मस्स उदएण ? ०
गोयमा ! पगइभद्दयाए, पगइविणीययाए, साणुक्कोसयाए[7], अमच्छरियाए मणुस्साउयकम्मा[8]•सरीरप्पयोगनामाए कम्मस्स उदएण मणुस्साउयकम्मासरीर०प्पयोगबधे ।।

४२८. देवाउयकम्मासरीर[9]•प्पयोगबंधे ण भते ! कस्स कम्मस्स उदएण ? ०
गोयमा ! सरागसजमेण, सजमासजमेण, बालतवोकम्मेण[10], अकामनिज्जराए देवाउयकम्मा[11]•सरीरप्पयोगनामाए कम्मस्स उदएण देवाउयकम्मासरीर०प्पयोगबधे ।।

४२९. सुभनामकम्मासरीर[12]•प्पयोगबधे ण भते ! कस्स कम्मस्स उदएणं ? ०
गोयमा ! काउज्जुययाए[13], 'भावुज्जुययाए, भासुज्जुययाए',[14] अविसवादणाजोगेण सुभनामकम्मा[15]•सरीरप्पयोगनामाए कम्मस्स उदएण सुभनामकम्मासरीरप्पयोगबधे ।।

४३०. असुभनामकम्मासरीर[16]•प्पयोगबधे ण भते ! कस्स कम्मस्स उदएण ?
गोयमा ! कायअणुज्जुययाए, भावअणुज्जुययाए, 'भासअणुज्जुययाए विसवाद-

---

१ स० पा०—पुच्छा ।
२ कुणिमाहारेण, पचिंदियवहेण (क, ब, म) ।
३. स० पा०—पुच्छा ।
४ ०तोल (अ), ०तुल्ल (स) ।
५ स० पा०—०कम्मा जाव पयोग० ।
६ स० पा०—पुच्छा ।
७ साणुक्कोसियाए (अ), साणुक्कोसणयाए (क)
८. स० पा०—पुच्छा ।
९ स० पा०—पुच्छा ।
१०. बालतवेण (ब) ।
११. स० पा०—०कम्मा जाव पयोग० ।
१२ स० पा०—पुच्छा ।
१३ कायजुययाए (अ), कायउज्जुययाए (स) ।
१४ भासुज्जुययाए भावुज्जुययाए (ता) ।
१५ स० पा०—०कम्मा जाव पयोग० ।
१६ स० पा०—पुच्छा ।

णाजोगेण[1] असुभनामकम्मा[2]•सरीरप्पयोगनामाए कम्मस्स उदएणं असुभनाम-कम्मासरीर°प्पयोगबधे ॥

४३१ उच्चागोयकम्मासरीर[3]•प्पयोगवधे णं भते ! कस्स कम्मस्स उदएण ?°
गोयमा ! जातिअमदेणं, कुलअमदेण, बलअमदेण, रूवअमदेण, तवअमदेण, 'सुयअमदेण, लाभअमदेण',[4] इस्सरियअमदेण[5] उच्चागोयकम्मा[6]•सरीरप्पयोग-नामाए कम्मस्स उदएण उच्चागोयकम्मासरीर°प्पयोगबधे ॥

४३२ नीयागोयकम्मासरीर[7]•प्पयोगबधे ण भते ! कस्स कम्मस्स उदएण ?°
गोयमा ! जातिमदेणं, कुलमदेण, बलमदेण[8], •रूवमदेण, तवमदेण सुयमदेण, लाभमदेण°, इस्सरियमदेण[9] नीयागोयकम्मा[10]•सरीरप्पयोगनामाए कम्मस्स उदएण नीयागोयकम्मासरीर°प्पयोगबधे ॥

४३३ अतराइयकम्मासरीर[11]•प्पयोगबधे ण भते ! कस्स कम्मस्स उदएण ?°
गोयमा ! दाणतराएण, लाभतराएणं, भोगतराएण, उवभोगतराएणं, वीरिय-तराएण, अतराइयकम्मासरीरप्पयोगनामाए कम्मस्स उदएण अतराइयकम्मा-सरीरप्पयोगबधे ॥

पयोगबंधस्स देसबंध-सव्वबंध-पदं

४३४. नाणावरणिज्जकम्मासरीरप्पयोगबंधे णं भते ! कि देसबंधे ? सव्वबंधे ?
गोयमा ! देसबधे, नो सव्वबधे । एव जाव अतराइयं ॥

४३५ नाणावरणिज्जकम्मासरीरप्पयोगबधे ण भंते ! कालओ केवच्चिर होइ ?
गोयमा ! दुविहे पण्णत्ते, तं जहा—अणादीए[12]•वा अपज्जवसिए, अणादीए वा सपज्जवसिए° । एव जाव अतराइयस्स ॥

४३६ नाणावरणिज्जकम्मासरीरप्पयोगबधतर ण भते ! कालओ केवच्चिर होइ ?
गोयमा ! अणादीयस्स[13]•अपज्जवसियस्स नत्थि अतर, अणादीयस्स सपज्ज-वसियस्स नत्थि अतर° । एव जाव अतराइयस्स ॥

४३७. एएसि ण भते ! जीवाणं नाणावरणिज्जस्स कम्मस्स देसबधगाण, अबधगाण

---

१ वायअणुज्जुययाए भावअणुज्जुयाए (ता) ।
२ स० पा०—°कम्मा जाव पयोग° ।
३. स० पा०—पुच्छा ।
४. लाभअमदेण, सुयअमदेण (अ) ।
५ इस्सरिय° (म) ।
६ स० पा०—°कम्मा जाव पयोग° ।
७. स० पा०—पुच्छा ।
८. स० पा०—बलमदेण जाव इस्सरिय° ।
९. तिस्सरिय° (म) ।
१०. स० पा०—°कम्मा जाव पयोग° ।
११ स० पा०—पुच्छा ।
१२ स० पा०—एव जहा तेयगस्स सचिट्ठणा तहेव ।
१३. स० पा०—एव जहा तेयगसरीरस्स अतर तहेव ।

य कयरे कयरेहिंतो[1] •अप्पा वा ? बहुया वा ? तुल्ला वा ? विसेसाहिया वा ? गोयमा ! सव्वत्थोवा जीवा नाणावरणिज्जस्स कम्मस्स अबधगा देसबधगा, अणतगुणा° । एव आउयवज्ज जाव अंतराइयस्स ॥

४३८. आउयस्स पुच्छा ।
गोयमा ! सव्वत्थोवा जीवा आउयस्स कम्मस्स देसबधगा, अबधगा सखेज्जगुणा ॥

४३९ जस्स ण भते ! ओरालियसरीरस्स सव्वबधे, से ण भते ! वेउव्वियसरीरस्स किं बधए ? अबधए ?
गोयमा ! नो बधए, अबधए ॥
आहारगसरीरस्स[2] किं बधए ? अबधए ?
गोयमा ! नो बधए, अबंधए ॥
तेयासरीरस्स किं बधए ? अबधए ?
गोयमा ! बधए, नो अबधए ।
जइ बधए किं देसबधए ? सव्वबधए ?
गोयमा ! देसबधए, नो सव्वबधए ।
कम्मासरीरस्स किं बधए ? अबधए ?
[3]•गोयमा ! बधए, नो अबधए ।
जइ बधए किं देसबधए ? सव्वबधए ?
गोयमा !° देसबधए, नो सव्वबधए ॥

४४० जस्स ण भते ! ओरालियसरीरस्स देसबधे, से ण भते ! वेउव्वियसरीरस्स किं बधए ? अबधए ?
गोयमा ! नो बधए, अबधए । एव जहेव सव्वबधेण भणिय तहेव देसबधेण वि भाणियव्व जाव कम्मगस्स ॥

४४१ जस्स ण भते ! वेउव्वियसरीरस्स सव्वबंधे, से ण भते ! ओरालियसरीरस्स किं बंधए ? अबधए ?
गोयमा ! नो बधए, अबधए । आहारगसरीरस्स एव चेव । तेयगस्स कम्मगस्स य जहेव ओरालिएण सम भणिय तहेव भाणियव्व जाव[4] देसबंधए, नो सव्वबधए ॥

४४२ जस्स ण भते ! वेउव्वियसरीरस्स देसबधे, से णं भते ! ओरालियसरीरस्स किं बधए ? अबधए ?

---

१ स० पा०—कयरेहिंतो जाव अप्पाबहुग जहा तेयगस्स ।
२. आहारासरीरस्स (ता, व) ।
३ स० पा०—जहेव तेयगस्स जाव देसबधए ।
४ भ० ८।४३९ ।

गोयमा ! नो वंधए, अवंधए। एवं जहेव सव्ववंधेणं भणियं तहेव देसवंधेण वि भाणियव्वं जाव कम्मगस्स ।।

४४३. जस्स ण भते ! आहारगसरीरस्स सव्ववंधे, से णं भंते ! ओरालियसरीरस्स किं वंधए ? अवधए ?
गोयमा ! नो वंधए, अवंधए। एवं वेउव्वियस्स वि । तेया-कम्माणं जहेव ओरालिएणं सम भणिय तहेव भाणियव्व[1] ।।

४४४. जस्स ण भते ! आहारगसरीरस्स देसवंधे, से ण भते ! ओरालियसरीरस्स किं वधए ? अवधए ?
गोयमा ! नो वधए, अवधए। एव जहा आहारगस्स सव्ववधेण भणियं तहा देस-वधेण वि भाणियव्व जाव कम्मगस्स ।।

४४५. जस्स ण भंते ! तेयासरीरस्स देसवधे, से णं भते ! ओरालियसरीरस्स किं वधए ? अवंवए ?
गोयमा ! वंधए वा, अवंधए वा।
जइ वंधए किं देसवंधए ? सव्ववधए ?
गोयमा ! देसवधए वा, सव्ववंधए वा ?
वेउव्वियसरीस्स किं वधए ? अवधए ?
एवं चेव। एव आहारगस्स[2] वि ।
कम्मगसरीरस्स किं वधए ? अवंधए ?
गोयमा ! वंधए, नो अवंधए।
जइ वधए कि देसवधए ? सव्वबधए ?
गोयमा ! देसवधए, नो सव्ववंधए ।।

४४६. जस्स ण भते ! कम्मासरीरस्स देसवधे, से ण भते ! ओरालियसरीरस्स किं वंधए ? अवधए ?
गोयमा ! नो वधए, अवधए। जहा तेयगस्स वत्तव्वया भणिया तहा कम्मगस्स वि भाणियव्वा जाव—
तेयासरीरस्स[3] •किं वधए ? अवंधए ?
गोयमा ! वधए, नो अवधए।
जइ ववइ किं देसवधए ? सव्ववधए ?
गोयमा !° देसवंधए, नो सव्ववंधए ।।

४४७ एएसि णं भते ! जीवाण[4] ओरालिय-वेउव्विय-आहारग-तेयाकम्मासरीरगाणं

---

१. भ० ८।४३९।
२. आहारगसरीरस्स (ब, स)।
३. स० पा०—तेयासरीरस्स जाव देसवधए।
४ सव्वजीवाए (अ, स)।

देसबधगाण, सव्वबंधगाणं, अबधगाण य कयरे कयरेहिंतो[1] •अप्पा वा ? बहुया वा ? तुल्ला वा ?° विसेसाहिया वा ?

गोयमा ! १ सव्वत्थोवा जीवा आहारगसरीरस्स सव्वबधगा २ तस्स चेव देसबधगा सखेज्जगुणा ३ वेउव्वियसरीरस्स सव्वबधगा असखेज्जगुणा ४. तस्स चेव देसबधगा असखेज्जगुणा ५ तेया-कम्मगाणं[2] अबधगा अणतगुणा ६ ओरालियसरीरस्स सव्वबधगा अणतगुणा ७. तस्स चेव अबधगा विसेसाहिया ८ तस्स चेव देसबधगा असंखेज्जगुणा ९. तेया-कम्मगाण देसबधगा विसेसाहिया १० वेउव्वियसरीरस्स अबधगा विसेसाहिया ११. आहारगसरीरस्स अबधगा विसेसाहिया ॥

४४८ सेव भते ! सेव भते ! त्ति[3] ॥

दसमो उद्देसो

सुय-सील-पद

४४९. रायगिहे नगरे जाव[4] एव वयासी—अण्णउत्थिया णं भते ! एवमाइक्खति जाव[5] एव परूवेंति—एव खलु १ सील सेय २ सुय सेय ३ 'सुय सील सेय'[6] ॥

४५० से कहमेय भते ! एव ?

गोयमा ! जण्ण ते अण्णउत्थिया एवमाइक्खति जाव[7] जे ते एवमाहसु, मिच्छा ते एवमाहसु । अह पुण गोयमा ! एवमाइक्खामि जाव[8] परूवेमि—

एव खलु मए चत्तारि पुरिसजाया पण्णत्ता, त जहा—१ सीलसपन्ने नामं एगे नो सुयसपन्ने २ सुयसपन्ने नाम एगे नो सीलसपन्ने ३. एगे सीलसपन्ने वि सुयसपन्ने वि ४ एगे नो सीलसपन्ने नो सुयसपन्ने ।

तत्थ ण जे से पढमे पुरिसजाए से ण पुरिसे सीलवं असुयवं—उवरए, अविण्णायधम्मे । एस ण गोयमा ! मए पुरिसे देसाराहए पण्णत्ते ।

---

१ स० पा०—कयरेहिंतो जाव विसेसाहिया ।
२ °गाण दोण्ह वि तुल्ला (अ, ता, स) ।
३. भ० १।५१ ।
४. भ० १।४-१० ।
५. भ० १।४२० ।
६ सुय सेय सील सेय (क, ता, व, स, वृ) ।
७ भ० ८।४४९ ।
८ भ० १।४२१ ।

तत्थ ण जे से दोच्चे पुरिसजाए से णं पुरिसे असीलवं सुयवं—अणुवरए, विण्णायधम्मे । एस ण गोयमा ! मए पुरिसे देसविराहए पण्णत्ते ।
तत्थ ण जे से तच्चे पुरिसजाए से णं पुरिसे सीलव सुयव—उवरए, विण्णायधम्मे । एस ण गोयमा ! मए पुरिसे सव्वाराहए पण्णत्ते ।
तत्थ ण जे से चउत्थे पुरिसजाए से णं पुरिसे असीलव असुयवं—अणुवरए, अविण्णायधम्मे । एस ण गोयमा ! मए पुरिसे सव्वविराहए पण्णत्ते ।

आराहणा-पद

४५१. कतिविहा णं भते ! आराहणा पण्णत्ता ?
गोयमा ! तिविहा आराहणा पण्णत्ता, त जहा—नाणाराहणा, दसणाराहणा, चरित्ताराहणा ।।

४५२. नाणाराहणा ण भते ! कतिविहा पण्णत्ता ?
गोयमा ! तिविहा पण्णत्ता, तं जहा—उक्कोसिया, मज्झिमा, जहण्णा ।।

४५३. दसणाराहणा ण भते ! कतिविहा पण्णत्ता ?
[1]•गोयमा ! तिविहा पण्णत्ता, तं जहा—उक्कोसिया, मज्झिमा, जहण्णा ।।

४५४ चरित्ताराहणा ण भते ! कतिविहा पण्णत्ता !
गोयमा ! तिविहा पण्णत्ता, त जहा—उक्कोसिया, मज्झिमा, जहण्णा ।।°

४५५. जस्स ण भते ! उक्कोसिया नाणाराहणा तस्स उक्कोसिया दसणाराहणा ? जस्स उक्कोसिया दसणाराहणा तस्स उक्कोसिया नाणाराहणा ?
गोयमा ! 'जस्स उक्कोसिया'[2] नाणाराहणा तस्स दसणाराहणा उक्कोसा वा अजहण्णुक्कोसा वा । जस्स पुण उक्कोसिया दसणाराहणा तस्स नाणाराहणा उक्कोसा वा, जहण्णा वा, अजहण्णमणुक्कोसा वा ।।

४५६ जस्स ण भते ! उक्कोसिया नाणाराहणा तस्स उक्कोसिया चरित्ताराहणा ? जस्स उक्कोसिया चरित्ताराहणा तस्स उक्कोसिया नाणाराहणा ?
[3]•गोयमा ! जस्स उक्कोसिया नाणाराहणा तस्स चरित्ताराहणा उक्कोसा वा अजहण्णुक्कोसा वा । जस्स पुण उक्कोसिया चरित्ताराहणा तस्स नाणाराहणा उक्कोसा वा, जहण्णा वा, अजहण्णमणुक्कोसा वा° ।।

४५७. जस्स ण भते ! उक्कोसिया दसणाराहणा तस्स उक्कोसिया चरित्ताराहणा ? जस्स उक्कोसिया चरित्ताराहणा तस्स उक्कोसिया दसणाराहणा ?

---

१ सं० पा०—एव चेव तिविहा वि, एव चरित्ताराहणा वि ।
२. जस्सुक्कोसिया (अ, ता, व) ।
३. स० पा०—जहा उक्कोसिया नाणाराहणा य दसणाराहणा य भणिया तहा उक्कोसिया नाणाराहणा य चरित्ताराहणाय भाणियव्वा ।

गोयमा ! जस्स उक्कोसिया दसणाराहणा तस्स चरित्ताराहणा उक्कोसा[1] वा, जहण्णा वा, अजहण्णमणुक्कोसा वा। जस्स पुण उक्कोसिया चरित्ताराहणा तस्स दसणाराहणा नियमा उक्कोसा ॥

४५८ उक्कोसियण्ण[2] भते ! नाणाराहण आराहेत्ता कतिहि भवग्गहणेहि सिज्झति जाव[3] सव्वदुक्खाणं अत करेति ?

गोयमा ! अत्थेगतिए तेणेव भवग्गहणेण सिज्झति जाव सव्वदुक्खाण अत करेति[4], अत्थेगतिए कप्पोवएसु वा कप्पातीएसु वा उववज्जति ॥

४५९. उक्कोसियण्ण भते ! दसणाराहण आराहेत्ता कतिहि भवग्गहणेहि •[5]सिज्झति जाव सव्वदुक्खाण अत करेति ?

गोयमा ! अत्थेगतिए तेणेव भवग्गहणेण सिज्झति जाव सव्वदुक्खाण अत करेति, अत्थेगतिए कप्पोवएसु वा कप्पातीएसु वा उववज्जति° ॥

४६० उक्कोसियण्ण भते ! चरित्ताराहण आराहेत्ता [6]•कतिहि भवग्गहणेहिं सिज्झति जाव सव्वदुक्खाण अत करेति ?

गोयमा ! अत्थेगतिए तेणेव भवग्गहणेण सिज्झति जाव सव्वदुक्खाण अत करेति,° अत्थेगतिए कप्पातीएसु उववज्जति ॥

४६१ मज्झिमियण्ण भते ! नाणाराहण आराहेत्ता कतिहिं भवग्गहणेहि सिज्झति जाव सव्वदुक्खाण अत करेति ?

गोयमा ! अत्थेगतिए दोच्चेण भवग्गहणेण सिज्झति जाव सव्वदुक्खाण अत करेति, तच्च पुण भवग्गहण नाइक्कमइ ॥

४६२ मज्झिमियण्ण भते ! दसणाराहण आराहेत्ता [7]•कतिहि भवग्गहणेहि सिज्झति जाव सव्वदुक्खाण अत करेति ?

गोयमा ! अत्थेगतिए दोच्चेण भवग्गहणेण सिज्झति जाव सव्वदुक्खाण अत करेति, तच्च पुण भवग्गहण नाइक्कमइ ॥

४६३ मज्झिमियण्ण भते ! चरित्ताराहण आराहेत्ता कतिहि भवग्गहणेहि सिज्झति जाव सव्वदुक्खाण अत करेति ?

गोयमा ! अत्थेगतिए दोच्चेण भवग्गहणेण सिज्झति जाव सव्वदुक्खाण अत करेति, तच्च पुण भवग्गहण नाइक्कमइ° ॥

---

१. उक्कोसिया (व, स)।

२ उक्कोसिया ण (अ, क, व, स), उक्कोसिय ण (ता)।

३ भ० १।४४।

४ करेति, अत्थेगतिए दोच्चे ण भवग्गहणेण सिज्झति जाव अत करेति (क, व, म, स)।

५. स० पा०—एवं चेव।

६ स० पा०—एव चेव नवर अत्थेगतिए।

७. स० पा०—एव चेव एव मज्झिमिय चरित्ताराहण पि।

४६४. जहण्णियण्ण भते ! नाणाराहण आराहेत्ता कतिहि भवग्गहणेहि सिज्झति जाव सव्वदुक्खाण अत करेति ?
गोयमा ! अत्थेगतिए तच्चेण भवग्गहणेण सिज्झति जाव सव्वदुक्खाणं अंतं करेति, सत्तट्ठ भवग्गहणाइ पुण नाइक्कमइ ।।

४६५ [1]°जहण्णियण्ण भते ! दसणाराहण आराहेत्ता कतिहि भवग्गहणेहि सिज्झति जाव सव्वदुक्खाण अत करेति ?
गोयमा ! अत्थेगतिए तच्चेण भवग्गहणेण सिज्झति जाव सव्वदुक्खाण अत करेति, सत्तट्ठ भवग्गहणाइ पुण नाइक्कमइ ।।

४६६ जहण्णियण्ण भते ! चरित्ताराहण आराहेत्ता कतिहि भवग्गहणेहि सिज्झति जाव सव्वदुक्खाण अत करेति ?
गोयमा ! अत्थेगतिए तच्चेण भवग्गहणेण सिज्झति जाव सव्वदुक्खाण अत करेति, सत्तट्ठ भवग्गहणाइ पुण नाइक्कमइ° ।।

पोग्गलपरिणाम-पदं

४६७. कतिविहे ण भते ! पोग्गलपरिणामे पण्णत्ते ?
गोयमा ! पचविहे पोग्गलपरिणामे पण्णत्ते, त जहा--वण्णपरिणामे, गंधपरिणामे, रसपरिणामे, फासपरिणामे, सठाणपरिणामे ।।

४६८. वण्णपरिणामे ण भते ! कतिविहे पण्णत्ते ?
गोयमा ! पचविहे पण्णत्ते, त जहा—कालवण्णपरिणामे जाव[2] सुक्किलवण्णपरिणामे । एव एएण अभिलावेण गधपरिणामे दुविहे, रसपरिणामे पंचविहे, फासपरिणामे अट्ठविहे ।।

४६९ सठाणपरिणामे ण भते ! कतिविहे पण्णत्ते ?
गोयमा ! पचविहे पण्णत्ते, त जहा—परिमडलसठाणपरिणामे जाव[3] आयतसठाणपरिणामे ।।

पोग्गलपएसस्स दव्वादीहिं भंग-पदं

४७० एगे[4] भते ! पोग्गलत्थिकायपदेसे कि १ दव्व ? २ दव्वदेसे ? ३. दव्वाइं ? ४ दव्वदेसा ? ५. उदाहु दव्व च दव्वदेसे य ? ६ उदाहु दव्व च दव्वदेसा य ? ७. उदाहु दव्वाइ च दव्वदेसे य ? ८. उदाहु दव्वाइं च दव्वदेसा य ?

---

१. स० पा०—एव दसणाराहण पि, एव चरित्ताराहण पि ।
२. भ० ८।३६ ।
३. भ० ८।३६ ।
४ एगे ण (अ) ।

गोयमा ! १. सिय दव्व २ सिय दव्वदेसे ३. नो दव्वाइ ४ नो दव्वदेसा ५ नो दव्व च दव्वदेसे य ६ नो दव्व च दव्वदेसा य ७ नो दव्वाइ च दव्वदेसे य ८ नो दव्वाइ च दव्वदेसा य ॥

४७१ दो भते ! पोग्गलत्थिकायपदेसा किं दव्व ? दव्वदेसे ?—पुच्छा[1] ।
गोयमा ! सिय दिव्व, सिय दव्वदेसे, सिय दव्वाइ, सिय दव्वदेसा, सिय दव्व च दव्वदेसे य[2] । सेसा पडिसेहेयव्वा ॥

४७२ तिण्णि भते पोग्गलत्थिकायपदेसा कि दव्व ? दव्वदेसे ?—पुच्छा ।
गोयमा ! सिय दव्व, सिय दव्वदेसे, एव सत्त भगा भाणियव्वा जाव सिय दव्वाइ च दव्वदेसे य, नो दव्वाइ च दव्वदेसा य ॥

४७३ चत्तारि भते ! पोग्गलत्थिकायपदेसा कि दव्व ?—पुच्छा ।
गोयमा ! सिय दव्व, सिय दव्वदेसे, अट्ठ वि भगा भाणियव्वा जाव सिय दव्वाइ च दव्वदेसा य । जहा चत्तारि भणिया एव पच, छ, सत्त जाव असखेज्जा ॥

४७४ अणता भते ! पोग्गलत्थिकायपदेसा कि दव्व ?
एव चेव जाव सिय दव्वाइ च दव्वदेसा य ॥

पएस-परिमाण-पद

४७५ केवतिया ण भते ! लोयागासपदेसा पण्णत्ता ?
गोयमा ! असखेज्जा लोयागासपदेसा पण्णत्ता ॥

४७६ एगमेगस्स ण भते ! जीवस्स केवइया जीवपदेसा पण्णत्ता ?
गोयमा ! जावतिया लोयागासपदेसा, एगमेगस्स ण जीवस्स एवतिया जीवपदेसा पण्णत्ता ॥

कम्माणं अविभागपलिच्छेद-पदं

४७७ कति ण भते ! कम्मपगडीओ पण्णत्ताओ ?
गोयमा ! अट्ठ कम्मपगडीओ पण्णत्ताओ, त जहा—नाणावरणिज्ज जाव[3] अतराइय ॥

४७८ नेरइयाण भते ! कति कम्मपगडीओ पण्णत्ताओ ?
गोयमा ! अट्ठ । एव सव्वजीवाण अट्ठ कम्मपगडीओ ठावेयव्वाओ जाव वेमाणियाण ॥

---

१ पुच्छा तहेव (अ, क, ता, ब, म, स) ।
२ य नो दव्व च दव्वदेसा य (अ, क, ता, ब, म, स) ।
३. भ० ६।३३ ।

४७९. नाणावरणिज्जस्स ण भते ! कम्मस्स केवतिया अविभागपलिच्छेदा पण्णत्ता ?
गोयमा ! अणता अविभागपलिच्छेदा पण्णत्ता ॥

४८०. नेरइयाण भते ! नाणावरणिज्जस्स कम्मस्स केवतिया अविभागपलिच्छेदा पण्णत्ता ?
गोयमा ! अणता अविभागपलिच्छेदा पण्णत्ता ॥

४८१ एव सव्वजीवाण जाव वेमाणियाण—पुच्छा ।
गोयमा ! अणता अविभागपलिच्छेदा पण्णत्ता । एव जहा नाणावरणिज्जस्स अविभागपलिच्छेदा भणिया तहा अट्ठण्ह वि कम्मपगडीण भाणियव्वा जाव वेमाणियाण अतराइयस्स[1] ॥

४८२ एगमेगस्स ण भते ! जीवस्स एगमेगे जीवपदेसे नाणावरणिज्जस्स कम्मस्स केवतिएहि अविभागपलिच्छेदेहि आवेढिय-परिवेढिए ?
गोयमा ! सिय आवेढिय-परिवेढिए, सिय नो आवेढिय-परिवेढिए । जइ आवेढिय-परिवेढिए नियमा अणतेहि ॥

४८३. एगमेगस्स ण भते ! नेरइयस्स एगमेगे जीवपदेसे नाणावरणिज्जस्स कम्मस्स केवतिएहि[2] अविभागपलिच्छेदेहि आवेढिय-परिवेढिए ?
गोयमा ! नियम अणतेहिं । जहा नेरइयस्स एव जाव वेमाणियस्स, नवरं—मणूसस्स जहा जीवस्स ॥

कम्माणं परोप्परं नियमा-भयणा-पदं

४८४. एगमेगस्स ण भते । जीवस्स एगमेगे जीवपदेसे दरिसणावरणिज्जस्स कम्मस्स केवतिएहिं अविभागपलिच्छेदेहिं आवेढिय-परिवेढिए ?
गोयमा ! नियम अणंतेहिं । जहा जीवस्स एव जाव वेमाणियस्स, नवर—मणूसस्स जहा जीवस्स । एव जहेव नाणावरणिज्जस्स तहेव दडगो भाणियव्वो जाव वेमाणियस्स । एव जाव अतराइयस्स भाणियव्व, नवर—वेयणिज्जस्स, आउयस्स, नामस्स, गोयस्स—एएसि चउण्ह वि कम्माणं मणूसस्स जहा नेरइयस्स तहा भाणियव्व । सेस त चेव ॥

४८५ जस्स ण भते ! नाणावरणिज्ज तस्स दरिसणावरणिज्ज ? जस्स दसणावरणिज्ज तस्स नाणावरणिज्ज ?
गोयमा ! जस्स ण नाणावरणिज्ज तस्स दसणावरणिज्ज नियम अत्थि, जस्स ण दरिसणावरणिज्ज तस्स वि नाणावरणिज्ज नियम अत्थि ॥

४८६. जस्स ण भते ! नाणावरणिज्जं तस्स वेयणिज्ज ? जस्स वेयणिज्ज तस्स नाणावरणिज्ज ?

१. अतरातियस्स (अ, स), अतरादियस्स (ता) २ केवईहिं (ता) ।

गोयमा ! जस्स नाणावरणिज्ज तस्स वेयणिज्ज नियम[1] अत्थि जस्स पुण वेयणिज्ज तस्स नाणावरणिज्ज सिय अत्थि, सिय नत्थि ॥

४८७ जस्स ण भते ! नाणावरणिज्ज तस्स मोहणिज्ज ? जस्स मोहणिज्ज तस्स नाणावरणिज्ज ?
गोयमा ! जस्स नाणावरणिज्ज तस्स मोहणिज्ज सिय अत्थि, सिय नत्थि; जस्स पुण मोहणिज्ज तस्स नाणावरणिज्ज नियम अत्थि ॥

४८८ जस्स ण भते ! नाणावरणिज्ज तस्स आउय ? [2]•जस्स आउय तस्स नाणावरणिज्ज ?
गोयमा ! जस्स नाणावरणिज्ज तस्स आउय नियम अत्थि, जस्स पुण आउय तस्स नाणावरणिज्ज सिय अत्थि, सिय नत्थि।° एव नामेण वि, एव गोएण वि सम, अतराइएण जहा दरिसणावरणिज्जेण सम तहेव नियम परोप्पर भाणियव्वाणि ॥

४८९ जस्स ण भते ! दरिसणावरणिज्ज तस्स वेयणिज्ज ? जस्स वेयणिज्ज तस्स दरिसणावरणिज्ज ?
जहा नाणावरणिज्ज उवरिमेहिं सत्तहि कम्मेहिं सम भणिय तहा दरिसणावरणिज्ज पि उवरिमेहि छहि कम्मेहि सम भाणियव्व जाव अतराइएण ॥

४९०. जस्स णं भते ! वेयणिज्ज तस्स मोहणिज्ज ? जस्स मोहणिज्ज तस्स वेयणिज्ज ?
गोयमा ! जस्स वेयणिज्ज तस्स मोहणिज्ज सिय अत्थि, सिय नत्थि, जस्स पुण मोहणिज्ज तस्स वेयणिज्ज नियम अत्थि ॥

४९१ जस्स ण भते ! वेयणिज्ज तस्स आउय ? जस्स आउय तस्स वेयणिज्ज ?
एव एयाणि परोप्परं नियम। जहा आउएण सम एव नामेण वि गोएण वि सम भाणियव्व ॥

४९२ जस्स ण भते ! वेयणिज्ज तस्स अतराइय ? [3]•जस्स अतराइय तस्स वेयणिज्ज ?°
गोयमा ! जस्स वेयणिज्ज तस्स अतराइय सिय अत्थि, सिय नत्थि, जस्स पुण अतराइय तस्स वेयणिज्ज नियम अत्थि ॥

४९३. जस्स ण भते ! मोहणिज्ज तस्स आउय ? जस्स आउय तस्स मोहणिज्ज ?
गोयमा ! जस्स मोहणिज्ज तस्स आउय नियम अत्थि, जस्स पुण आउय तस्स[4] मोहणिज्ज सिय अत्थि, सिय नत्थि। एव नाम गोय अतराइय च भाणियव्व ॥

---

१. नितम (व)।
२. स० पा०—एव जहा वेयणिज्जेण सम भणिय तहा आउएण वि सम भाणियव्व।
३. स० पा०—पुच्छा।
४ तस्स पुण (अ, क, ता, ब, म, स)।

४९४ जस्स णं भते ! आउय तस्स नाम ? [1]•जस्स नाम तस्स आउय ?°
गोयमा ! दो वि परोप्पर नियम । एव गोत्तेण वि सम भाणियव्व ॥

४९५ जस्स ण भते ! आउय तस्स अतराइय ? [2]•जस्स अतराइय तस्स आउय ?°
गोयमा ! जस्स आउय तस्स अतराइय सिय अत्थि, सिय नत्थि; जस्स पुण अंतराइय तस्स आउय नियम अत्थि ॥

४९६. जस्स ण भते ! नाम तस्स गोय [3]•जस्स गोय तस्स नाम ?°
गोयमा ! दो वि एए परोप्पर नियमा अत्थि ॥

४९७. जस्स ण भते ! नाम तस्स अतराइय ? [4]•जस्स अतराइय तस्स नाम ?°
गोयमा जस्स नाम तस्स अतराइय सिय अत्थि, सिय नत्थि; जस्स पुण अतराइय तस्स नाम नियमं अत्थि ॥

४९८ जस्स ण भते ! गोयं तस्स अतराइय ? [5]•जस्स अतराइय तस्स गोय ?°
गोयमा ! जस्स गोय तस्स अतराइय सिय अत्थि, सिय नत्थि; जस्स पुण अतराइय तस्स गोय नियम अत्थि ॥

पोग्गलि-पोग्गल-पदं

४९९ जीवे ण भते ! किं पोग्गली ? पोग्गले ?
गोयमा ! जीवे पोग्गली वि, पोग्गले वि ॥

५००. से केणट्ठेण भते ! एव वुच्चइ—जीवे पोग्गली वि, पोग्गले वि ?
गोयमा ! से जहानामए छत्तेण छत्ती, दडेण दडी, घडेण घडी, पडेण पडी, करेण करी, एवामेव गोयमा ! जीवे वि सोइदिय-चक्खिदिय-घाणिंदिय-जिब्भिदिय-फासिंदियाइं पडुच्च पोग्गली, जीव पडुच्च पोग्गले । से तेणट्ठेण गोयमा ! एव वुच्चइ—जीवे पोग्गली वि, पोग्गले वि ॥

५०१. नेरइए ण भते ! किं पोग्गली ! पोग्गले ?
एव चेव । एव जाव वेमाणिए, नवर—जस्स जइ इदियाइ तस्स तइ भाणियव्वाइ ॥

५०२ सिद्धे ण भते ! किं पोग्गली ? पोग्गले ?
गोयमा ! नो पोग्गली, पोग्गले ॥

---

१. स० पा०—पुच्छा ।
२. स० पा०—पुच्छा ।
३. स० पा०—पुच्छा ।
४. स० पा०—पुच्छा ।
५ स० पा०—पुच्छा ।

५०३. से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ[1]—•सिद्धे नो पोग्गली•, पोग्गले ?
गोयमा ! जीवं पडुच्च। से तेणट्ठेणं गोयमा ! एवं वुच्चइ—सिद्धे नो पोग्गली, पोग्गले ॥

५०४. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति[2] ॥

---

१. स० पा०—वुच्चइ जाव पोग्गले।
२ भ० १।५१।

नवमं सतं

पढमो उद्देसो

१ जंबुद्दीवे २ जोइस, ३०. अंतरदीवा ३१. असोच्च ३२. गंगेय ।
३३ कुंडग्गामे ३४ पुरिसे, णवमम्मि सतम्मि चोत्तीसा ॥१॥

जंबुद्दीव-पदं

१. तेणं कालेणं तेणं समएणं मिहिला नामं नगरी होत्था—वण्णओ[1] । माणिभद्दे[2] चेतिए—वण्णओ[3] । सामी समोसढे, परिसा निग्गता जाव[4] भगवं गोयमे पज्जुवासमाणे एवं वदासी—कहि णं भंते ! जंबुद्दीवे दीवे ? किंसंठिए णं भंते ! जंबुद्दीवे दीवे ?

'एवं जंबुद्दीवपण्णत्ती भाणियव्वा जाव'[5] एवामेव सपुव्वावरेणं जंबुद्दीवे दीवे चोद्दस सलिला-सयसहस्सा छप्पन्नं च सहस्सा भवंतीति मक्खाया''[6] ॥

२. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति[7] ॥

---

१ ओ० सू० १ ।
२ माणिभद्दे (ता, म) ।
३. ओ० सू०—२-१३ ।
४ भ० १।८-१० ।
५. जं० १-६ ।
६ वाचनान्तरे पुनरिदं दृश्यते—जहा जंबुद्दीवपण्णत्तीए तहा नेयव्वं जोइसविहूणं जाव—
खंडा जोयण वासा,
पव्वय कूडा य तित्थ सेढीओ ।
विजय द्दह सलिलाओ,
य पिंडए होंति संगहणी ॥ (वृ) ।
७. भ० १।५१ ।

बीओ उद्देसो

जोइस-पदं

३ रायगिहे जाव[1] एव वयासी—जबुद्दीवे ण भते ! दीवे केवइया चदा पभासिसु वा ? पभासेति वा ? पभासिस्सति वा ?
एव जहा जीवाभिगमे जाव[2]—
एग च सयसहस्स, तेत्तीस खलु भवे सहस्साइ ।
नव य सया पन्नासा, तारागणकोडिकोडीण[3] ।।१।।
सोभिसु[4], सोभिति, सोभिस्सति ।।

४. लवणे ण भते ! समुद्दे केवतिया चदा पभासिसु वा ? पभासेति वा ? पभासिस्सति वा ?
एव जहा जीवाभिगमे जाव[5] ताराओ। धायइसडे, कालोदे, पुक्खरवरे, अब्भतपुक्खरद्धे[6], मणुस्सखेत्ते—एएसु सव्वेसु जहा जीवाभिगमे जाव[7]—एगससीपरिवारो, तारागणकोडिकोडीण ।।

५ पुक्खरोदे ण भते ! समुद्दे केवतिया चदा पभासिसु वा ? पभासेति वा ? पभासिस्सति वा ?
एव सव्वेसु दीव-समुद्देसु जोतिसियाण[8] भाणियव्व जाव[9] सयभूरमणे जाव सोभिसु वा, सोभिति वा, सोभिस्सति वा ।।

६ सेव भते ! सेव भते ! त्ति[10] ।।

---

१ भ० १।४-१० ।
२ जी० ३ ।
३. °कोडाकोडीण (ता, व, म) ।
४. सोभ सोभिसु (व, म) ।
५. जी० ३ ।
६ अब्भितर° (स) ।
७ जी० ३ ।
८ जोतिस (क, ता, व, म) ।
६. जी० ३ ।
१०. भ० १।५१ ।

३-३० उद्देसा

अंतरदीव-पदं

७　रायगिहे जाव[1] एव वयासी—कहि ण भते। दाहिणिल्लाणं एगूरुयमणुस्साण[2] एगूरुयदीवे नाम दीवे पण्णत्ते ?
गोयमा ! जबुद्दीवे दीवे मदरस्स पव्वयस्स दाहिणे ण 'चुल्लहिमवतस्स वासहरपव्वयस्स पुरत्थिमिल्लाओ चरिमताओ लवणसमुद्दं उत्तरपुरत्थिमे णं तिण्णि जोयणसयाइं ओगाहित्ता एत्थ ण दाहिणिल्लाण एगूरुयमणुस्साण एगूरुयदीवे नाम दीवे पण्णत्ते—तिण्णि जोयणसयाइ आयाम-विक्खभेण, नव एगूणवन्ने जोयणसए किंचिविसेसूणे परिक्खेवेण। से ण एगाए पउमवरवेइयाए एगेण य वणसडेण सव्वओ समता सपरिक्खित्ते। दोण्ह वि पमाण वण्णओ य। एव एएण कमेण'[3] 'एव जहा जीवाभिगमे जाव[4] सुद्धदतदीवे जाव देवलोगपरिग्गहा ण ते मणुया पण्णत्ता समणाउसो !'[5]
एव अट्ठावीसपि अतरदीवा सएण-सएणं आयाम-विक्खभेण भाणियव्वा, नवर—दीवे-दीवे उद्देसओ, एव सव्वे वि अट्ठावीस उद्देसगा ॥

८　सेव भते ! सेव भते ! त्ति[6] ॥

एगतीसइमो उद्देसो

असोच्चा उवलद्धि-पदं

९　रायगिहे जाव[7] एव वयासी—असोच्चा ण भते ! केवलिस्स वा, केवलिसावगस्स वा, केवलिसावियाए वा, केवलिउवासगस्स वा, केवलिउवासियाए वा, तप्पक्खियस्स वा, तप्पक्खियसावगस्स वा, तप्पक्खियसावियाए वा, तप्पक्खियउवासगस्स वा, तप्पक्खियउवासियाए वा केवलिपण्णत्त धम्म लभेज्ज[8] सवणयाए ?

---

१. भ० १।४-१०।
२ एगरूय° (अ), एगुरुय° (व, म); एगोरुय° (स)।
३ ×(क ता)।
४. जी० ३।
५. वाचनान्तरे त्विद दृश्यते एव जहा जीवाभिगमे उत्तरकुरुवत्तव्वयाए नेयव्वो नाणत्त अट्ठधणुसया उस्सेहो चाउसट्ठिपिट्ठकरडया अणुसज्जणा नत्थि (वृ)।
६. भ० १।५१।
७ भ० १।४-१०।
८ लभेज्जा (अ, म, स)।

गोयमा ! असोच्चा ण केवलिस्स वा जाव तप्पक्खियउवासियाए वा अत्थेगतिए केवलिपण्णत्त धम्म लभेज्ज सवणयाए, अत्थेगतिए केवलिपण्णत्त धम्म नो लभेज्ज सवणयाए ॥

१० से केणट्ठेण भते ! एव वुच्चइ—असोच्चा ण जाव नो लभेज्ज सवणयाए ?
गोयमा ! जस्स णं नाणावरणिज्जाण कम्माण खओवसमे कडे भवइ से ण असोच्चा केवलिस्स वा जाव तप्पक्खियउवासियाए वा केवलिपण्णत्त धम्म लभेज्ज सवणयाए, जस्स ण नाणावरणिज्जाण कम्माण खओवसमे 'नो कडे'[1] भवइ से ण असोच्चा ण केवलिस्स वा जाव तप्पक्खियउवासियाए वा केवलि-पण्णत्त धम्म नो लभेज्ज सवणयाए। से तेणट्ठेण गोयमा ! एव वुच्चइ—'असोच्चा ण'[2] जाव नो लभेज्ज सवणयाए ॥

११. असोच्चा ण भते ! केवलिस्स वा जाव तप्पक्खियउवासियाए वा केवल बोहिं बुज्झेज्जा ?
गोयमा ! असोच्चा ण केवलिस्स वा जाव तप्पक्खियउवासियाए वा अत्थेगतिए केवल बोहि बुज्झेज्जा, अत्थेगतिए केवलं बोहि नो बुज्झेज्जा ॥

१२ से केणट्ठेण भते ! एव वुच्चइ—असोच्चा ण जाव केवल बोहिं नो बुज्झेज्जा ?
गोयमा ! जस्स ण दरिसणावरणिज्जाण कम्माण खओवसमे कडे भवइ से णं असोच्चा केवलिस्स वा जाव तप्पक्खियउवासियाए वा केवल बोहि बुज्झेज्जा, जस्स ण दरिसणावरणिज्जाण कम्माण खओवसमे नो कडे भवइ से ण असोच्चा केवलिस्स वा जाव तप्पक्खियउवासियाए वा केवल बोहिं नो बुज्झेज्जा। से तेणट्ठेण गोयमा ! एव वुच्चइ—असोच्चा ण जाव केवल बोहिं नो बुज्झेज्जा ॥

१३ असोच्चा ण भते ! केवलिस्स वा जाव तप्पक्खियउवासियाए वा केवल मुडे भवित्ता अगाराओ अणगारिय पव्वएज्जा ?
गोयमा ! असोच्चा ण केवलिस्स वा जाव तप्पक्खियउवासियाए वा अत्थेगतिए केवल मुडे भवित्ता अगाराओ अणगारिय पव्वएज्जा, अत्थेगतिए केवल मुडे भवित्ता अगाराओ अणगारिय नो पव्वएज्जा ॥

१४. से केणट्ठेण भते ! एव वुच्चइ—असोच्चा ण जाव केवल मुडे भवित्ता अगाराओ अणगारिय नो पव्वएज्जा ?
गोयमा ! जस्स ण धम्मतराइयाण कम्माण खओवसमे कडे भवति से णं असोच्चा केवलिस्स वा जाव तप्पक्खियउवासियाए वा केवल मुडे भवित्ता अगाराओ अणगारिय पव्वएज्जा, जस्स ण धम्मतराइयाण कम्माण खओवसमे नो कडे भवति से ण असोच्चा केवलिस्स वा जाव तप्पक्खियउवासियाए वा

---

१. कडे नो (ता)।

२. त चेव (अ, क, ता, ब, म, स)।

केवलं मुडे भवित्ता[1] •अगाराओ अणगारियं° नो पव्वएज्जा। से तेणट्ठेण गोयमा! एव वुच्चइ—असोच्चा णं जाव केवल मुडे भवित्ता अगाराओ अणगारिय नो पव्वएज्जा ।।

१५. असोच्चा ण भते! केवलिस्स वा जाव तप्पक्खियउवासियाए वा केवलं बभचेर-वास आवसेज्जा[2] ?

गोयमा! असोच्चा ण केवलिस्स वा जाव तप्पक्खियउवासियाए वा अत्थेगतिए केवल बभचेरवास आवसेज्जा, अत्थेगतिए केवल बभचेरवासं नो आवसेज्जा ।।

१६ से केणट्ठेण भते! एव वुच्चइ—असोच्चा ण जाव केवल बभचेरवास नो आवसेज्जा ?

गोयमा! जस्स ण चरित्तावरणिज्जाण कम्माण खओवसमे कडे भवइ से ण असोच्चा केवलिस्स वा जाव तप्पक्खियउवासियाए वा केवल बभचेरवास आवसेज्जा, जस्स ण चरित्तावरणिज्जाणं कम्माण खओवसमे नो कडे भवइ से ण असोच्चा केवलिस्स वा जाव तप्पक्खियउवासियाए वा केवलं बभचेरवास नो आवसेज्जा। से तेणट्ठेणं गोयमा! एव वुच्चइ—असोच्चा ण जाव केवल बभचेरवास नो आवसेज्जा ।।

१७ असोच्चा ण भते! केवलिस्स वा जाव तप्पक्खियउवासियाए वा केवलेण संजमेण सजमेज्जा ?

गोयमा! असोच्चा ण केवलिस्स वा जाव तप्पक्खियउवासियाए वा अत्थेगतिए केवलेण सजमेण सजमेज्जा, अत्थेगतिए केवलेण सजमेण नो सजमेज्जा ।।

१८ से केणट्ठेण भते! एवं वुच्चइ—असोच्चा ण जाव केवलेण सजमेण नो संजमेज्जा ?

गोयमा! जस्स ण जयणावरणिज्जाण कम्माण खओवसमे कडे भवइ से ण असोच्चा केवलिस्स वा जाव तप्पक्खियउवासियाए वा केवलेणं सजमेण सजमेज्जा, जस्स ण जयणावरणिज्जाण कम्माण खओवसमे नो कडे भवइ से ण असोच्चा केवलिस्स वा जाव[3] तप्पक्खियउवासियाए वा केवलेणं सजमेण नो सजमेज्जा। से तेणट्ठेण गोयमा! एव वुच्चइ—असोच्चा णं जाव केवलेण सजमेण नो सजमेज्जा ।।

१९ असोच्चा ण भते! केवलिस्स वा जाव तप्पक्खियउवासियाए वा केवलेण सवरेण सवरेज्जा ?

गोयमा! असोच्चा ण केवलिस्स वा जाव तप्पक्खियउवासियाए वा अत्थेगतिए केवलेणं सवरेण[4] सवरेज्जा, अत्थेगतिए केवलेण सवरेण नो सवरेज्जा ।।

---

१. स० पा०—भवित्ता जाव नो।

२. आवासेज्जा (ता, व)।

३. जाव अत्थेगतिए (अ, क, ता, व, म, स)।

४ जाव (अ, क, ता, व, म, स)।

२०. से केणट्ठेण भते ! एव वुच्चइ—असोच्चा णं जाव केवलेणं सवरेण नो सवरेज्जा ?
गोयमा ! जस्स ण अज्झवसाणावरणिज्जाण कम्माण खओवसमे कडे भवइ से ण असोच्चा केवलिस्स वा जाव तप्पक्खियउवासियाए वा केवलेण सवरेण सवरेज्जा, जस्स ण अज्झवसाणावरणिज्जाण कम्माण खओवसमे नो कडे भवइ से ण असोच्चा केवलिस्स वा जाव तप्पक्खियउवासियाए वा केवलेण सवरेण नो सवरेज्जा। से तेणट्ठेण गोयमा ! एव वुच्चइ—असोच्चा ण जाव केवलेण सवरेण नो सवरेज्जा ॥

२१ असोच्चा ण भते केवलिस्स वा जाव तप्पक्खियउवासियाए वा केवल आभिणिवोहियनाण उप्पाडेज्जा ?
गोयमा ! असोच्चा ण केवलिस्स वा जाव तप्पक्खियउवासियाए वा अत्थेगतिए केवल आभिणिवोहियनाण उप्पाडेज्जा, अत्थेगतिए केवल आभिणिवोहियनाण नो उप्पाडेज्जा ॥

२२ से केणट्ठेण भते ! एव वुच्चइ—असोच्चा ण जाव केवल आभिणिवोहियनाणं नो उप्पाडेज्जा ?
गोयमा ! जस्स ण आभिणिबोहियनाणावरणिज्जाण कम्माण खओवसमे कडे भवइ से ण असोच्चा केवलिस्स वा जाव तप्पक्खियउवासियाए वा केवलं आभिणिवोहियनाण उप्पाडेज्जा, जस्स ण आभिणिबोहियनाणावरणिज्जाण कम्माण खओवसमे नो कडे भवइ से ण असोच्चा केवलिस्स वा जाव तप्पक्खियउवासियाए वा केवल आभिणिवोहियनाण नो उप्पाडेज्जा। से तेणट्ठेणं गोयमा ! एव वुच्चइ—असोच्चा ण जाव केवल आभिणिवोहियनाण नो उप्पाडेज्जा ॥

२३ असोच्चा ण भते ! केवलिस्स वा जाव तप्पक्खियउवासियाए वा केवल सुयनाण उप्पाडेज्जा ?
[1]गोयमा ! असोच्चा ण केवलिस्स वा जाव तप्पक्खियउवासियाए वा अत्थेगतिए केवल सुयनाण उप्पाडेज्जा, अत्थेगतिए केवल सुयनाण नो उप्पाडेज्जा ॥

२४. से केणट्ठेण भते ! एव वुच्चइ—असोच्चा ण जाव केवल सुयनाण नो उप्पाडेज्जा ॥

---

१. स० पा०—एव जहा आभिणिबोहियनाणस्स वत्तव्वया भणिया तहा सुयनाणस्स वि भाणियव्वा, नवर—सुयनाणावरणिज्जाण कम्माण खओवसमे भाणियव्वे। एव चेव केवल ओहिनाण भाणियव्व, नवर—ओहिनाणावरणिज्जाण कम्माण खओवसमे भाणियव्वे। एव केवल मणपज्जवनाण उप्पाडेज्जा, नवर—मणपज्जवनाणावरणिज्जाण कम्माण खओवसमे भाणियव्वे।

गोयमा ! जस्स ण सुयनाणावरणिज्जाणं कम्माणं खओवसमे कडे भवइ से ण असोच्चा केवलिस्स वा जाव तप्पक्खियउवासियाए वा केवल सुयनाण उप्पाडेज्जा, जस्स ण सुयनाणावरणिज्जाण कम्माण खओवसमे नो कडे भवइ से ण असोच्चा केवलिस्स वा जाव तप्पक्खियउवासियाए वा केवल सुयनाण नो उप्पाडेज्जा। से तेणट्ठेण गोयमा ! एव वुच्चइ–असोच्चा ण जाव केवल सुयनाण नो उप्पाडेज्जा ।।

२५. असोच्चा ण भते ! केवलिस्स वा जाव तप्पक्खियउवासिए वा केवल ओहिनाण उप्पाडेज्जा ?

गोयमा ! असोच्चा णं केवलिस्स वा जाव तप्पक्खियउवासियाए वा अत्थेगतिए केवल ओहिनाण उप्पाडेज्जा, अत्थेगतिए केवल ओहिनाण नो उप्पाडेज्जा ।।

२६ से केणट्ठेण भते ! एव वुच्चइ—असोच्चा ण जाव केवल ओहिनाणं नो उप्पाडेज्जा ?

गोयमा ! जस्स ण ओहिनाणावरणिज्जाण कम्माण खओवसमे कडे भवइ से णं असोच्चा केवलिस्स वा जाव तप्पक्खियउवासियाए वा केवल ओहिनाण उप्पाडेज्जा, जस्स ण ओहिनाणावरणिज्जाण कम्माण खओवसमे नो कडे भवइ से ण असोच्चा केवलिस्स वा जाव तप्पक्खियउवासियाए वा केवल ओहिनाण नो उप्पाडेज्जा। से तेणट्ठेण गोयमा ! एव वुच्चइ—असोच्चा ण जाव केवल ओहिनाण नो उप्पाडेज्जा ।।

२७. असोच्चा ण भते ! केवलिस्स वा जाव तप्पक्खियउवासियाए वा केवलं मणपज्जवनाण उप्पाडेज्जा ?

गोयमा ! असोच्चा ण केवलिस्स वा जाव तप्पक्खियउवासियाए वा अत्थेगतिए केवल मणपज्जवनाण उप्पाडेज्जा, अत्थेगतिए केवल मणपज्जवनाण नो उप्पाडेज्जा ।।

२८. से केणट्ठेण भते ! एव वुच्चइ—असोच्चा ण जाव केवलं मणपज्जवनाण नो उप्पाडेज्जा ?

गोयमा ! जस्स णं मणपज्जवनाणावरणिज्जाण कम्माण खओवसमे कडे भवइ से ण असोच्चा केवलिस्स वा जाव तप्पक्खियउवासियाए वा केवल मणपज्जवनाण उप्पाडेज्जा, जस्स ण मणपज्जवनाणावरणिज्जाण कम्माण खओवसमे नो कडे भवइ से ण असोच्चा केवलिस्स वा जाव तप्पक्खियउवासियाए वा केवल मणपज्जवनाण नो उप्पाडेज्जा। से तेणट्ठेण गोयमा ! एवं वुच्चइ—असोच्चा णं जाव केवल मणपज्जवनाण नो उप्पाडेज्जा० ।।

२९. असोच्चा ण भते ! केवलिस्स वा जाव तप्पक्खियउवासियाए वा केवलनाण उप्पाडेज्जा ?

[1]•गोयमा ! असोच्चा णं केवलिस्स वा जाव तप्पक्खियउवासियाए वा अत्थेगतिए केवलनाणं उप्पाडेज्जा, अत्थेगतिए केवलनाण नो उप्पाडेज्जा ॥

३०. से केणट्ठेण भंते ! एव वुच्चइ—असोच्चा णं जाव केवलनाण नो उप्पाडेज्जा ?
गोयमा ! जस्स णं केवलनाणावरणिज्जाण कम्माण खए कडे भवइ से ण असोच्चा केवलिस्स वा जाव तप्पक्खियउवासियाए वा केवलनाण उप्पाडेज्जा, जस्स ण केवलनाणावरणिज्जाणं कम्माण खए नो कडे भवइ से ण असोच्चा केवलिस्स वा जाव तप्पक्खियउवासियाए वा केवलनाण नो उप्पाडेज्जा° । से तेणट्ठेण गोयमा ! एव वुच्चइ—असोच्चा ण जाव केवलनाण नो उप्पाडेज्जा ॥

३१ असोच्चा[2] ण भते ! केवलिस्स वा जाव तप्पक्खियउवासियाए वा—१ केवलिपण्णत्त धम्म लभेज्ज सवणयाए २ केवल वोहि वुज्झेज्जा ३ केवल मुडे भवित्ता आगाराओ अणगारिय पव्वएज्जा ४ केवल वभचेरवास आवसेज्जा ५ केवलेण सजमेण सजमेज्जा ६ केवलेण सवरेण सवरेज्जा ७ केवल आभिणिवोहियनाण उप्पाडेज्जा[3] ८ •केवल सुयनाण उप्पाडेज्जा ९ केवल ओहिनाण उप्पाडेज्जा° १० केवल मणपज्जवनाण उप्पाडेज्जा ११. केवलनाण उप्पाडेज्जा ?

गोयमा ! असोच्चा ण केवलिस्स वा जाव तप्पक्खियउवासिए वा—१. अत्थेगतिए केवलिपण्णत्त धम्मं लभेज्ज सवणयाए, अत्थेगतिए केवलिपण्णत्त धम्म नो लभेज्ज सवणयाए २ अत्थेगतिए केवल वोहि वुज्झेज्जा, अत्थेगतिए केवलं वोहिं नो वुज्झेज्जा ३ अत्थेगतिए केवल मुडे भवित्ता अगाराओ अणगारिय पव्वएज्जा, अत्थेगतिए[4] •केवलं मुडे भवित्ता अगाराओ अणगारिय° नो पव्वएज्जा ४ अत्थेगतिए केवल वभचेरवास आवसेज्जा, अत्थेगतिए केवल बभचेरवास नो आवसेज्जा ५ अत्थेगतिए केवलेण सजमेण सजमेज्जा, अत्थेगतिए केवलेण सजमेण नो सजमेज्जा ६ [5]•अत्थेगतिए केवलेण सवरेण सवरेज्जा, अत्थेगतिए केवलेण सवरेण नो सवरेज्जा° ७ अत्थेगतिए केवल आभिणिवोहियनाण उप्पाडेज्जा, अत्थेगतिए[6] •केवल आभिणीवोहियनाण° नो उप्पा-

---

१. स० पा०—एव चेव, नवर—केवलनाणावरणिज्जाण कम्माण खए भाणियव्वे, सेस त चेव।

२ एकत्रिंशद्-द्वात्रिंशत् सूत्रयो पूर्वपादित एव विषय पुनरुक्तोस्ति। वृत्तिकृतात्र एका टिप्पणीकृतास्ति पूर्वोक्तानेवार्थान् पुन. समुदायेनाह (वृ), किन्तु समग्रविषयस्य पौनरुक्त्यदर्शनेन द्वयोर्वाचनयो सम्मिश्रण प्रतीयते।

३ स० पा०—उप्पाडेज्जा जाव केवल।

४ स० पा०—अत्थेगतिए जाव नो।

५ स० पा०—एव सवरेण वि।

६. स० पा०—अत्थेगतिए जाव नो।

डेज्जा ८ [1]•अत्थेगतिए केवल सुयनाण उप्पाडेज्जा, अत्थेगतिए केवलं सुयनाण नो उप्पाडेज्जा ९. अत्थेगतिए केवलं ओहिनाण उप्पाडेज्जा, अत्थेगतिए केवल ओहिनाणं नो उप्पाडेज्जा १०. अत्थेगतिए केवल मणपज्जवनाणं उप्पाडेज्जा, अत्थेगतिए केवल मणपज्जवनाण नो उप्पाडेज्जा° ११ अत्थेगतिए केवलनाण उप्पाडेज्जा, अत्थेगतिए केवलनाणं नो उप्पाडेज्जा ।।

३२. से केणट्ठेणं भते ! एवं वुच्चइ—असोच्चा ण त चेव जाव अत्थेगतिए केवलनाण उप्पाडेज्जा, अत्थेगतिए केवलनाण नो उप्पाडेज्जा ?

गोयमा ! १. जस्स ण नाणावरणिज्जाण कम्माण खओवसमे नो कडे भवइ २ जस्स ण दरिसणावरणिज्जाण कम्माण खओवसमे नो कडे भवइ ३ जस्स ण धम्मतराइयाण कम्माणं खओवसमे नो कडे भवइ ४. [2]•जस्स ण चरित्तावरणिज्जाण कम्माण खओवसमे नो कडे भवइ ५. जस्स ण जयणावरणिज्जाण कम्माण खओवसमे नो कडे भवइ ६ जस्स ण अज्झवसाणावरणिज्जाण कम्माण खओवसमे नो कडे भवइ ७. जस्स ण आभिणिवोहियनाणावरणिज्जाण कम्माणं खओवसमे नो कडे भवइ ८. जस्स णं सुयनाणावरणिज्जाणं कम्माण खओवसमे नो कडे भवइ ९ जस्स ण ओहिनाणावरणिज्जाण कम्माणं खओवसमे नो कडे भवइ १० जस्स ण° मणपज्जवनाणावरणिज्जाण कम्माण खओवसमे नो कडे भवइ ११ जस्स ण केवलनाणावरणिज्जाणं कम्माण खए नो कडे भवइ, से ण असोच्चा केवलिस्स वा जाव तप्पक्खियउवासियाए वा केवलिपण्णत्त धम्म नो लभेज्ज सवणयाए, केवल वोहि नो वुज्झेज्जा जाव केवलनाण नो उप्पाडेज्जा।

जस्स ण नाणावरणिज्जाण कम्माण खओवसमे कडे भवइ, जस्स ण दरिसणावरणिज्जाण कम्माण खओवसमे कडे भवइ, जस्स ण धम्मतराइयाण कम्माण खओवसमे कडे भवइ, एव जाव जस्स ण केवलनाणावरणिज्जाणं कम्माण खए कडे भवइ, से ण असोच्चा केवलिस्स वा जाव तप्पक्खियउवासियाए वा केवलिपण्णत्त धम्म लभेज्ज सवणयाए, केवलं वोहिं वुज्झेज्जा जाव केवलनाण उप्पाडेज्जा ।।

३३. तस्स ण[3] छट्ठछट्ठेण अणिक्खित्तेण तवोकम्मेण उड्ढ वाहाओ 'पगिज्झिय-पगिज्झिय'[4] सूराभिमुहस्स आयावणभूमीए आयावेमाणस्स पगइभद्दयाए, पगइउव-

---

१. सं० पा०—एव जाव मणपज्जवनाण । मणपज्जव° ।

२ सं० पा०—एव चरित्तावरणिज्जाण जयणावरणिज्जाणं अज्झवसाणावरणिज्जाण आभिणिवोहियनाणावरणिज्जाण जाव

३. ण भते (अ, क, ता, व, स)।

४. पगज्झिय २ (स) ।

सतयाए, पगडपयणुकोह-माण-माया-लोभयाए, मिउमद्दवसंपन्नयाए, अल्लीणयाए[1], विणीययाए, अण्णया कयावि 'सुभेण अज्भवसाणेण, सुभेण परिणामेण, लेस्साहि विसुज्भमाणीहि-विसुज्भमाणीहि'[2] तयावरणिज्जाण कम्माण खओवसमेण ईहापोहमग्गणगवेसण[3] करेमाणस्स विब्भगे नाम अण्णाणे समुप्पज्जइ। से ण तेण विब्भगनाणेण[4] समुप्पन्नेण जहण्णेण अगुलस्स असखेज्जतिभाग, उक्कोसेण असंखेज्जाइ जोयणसहस्साइ जाणइ-पासइ। से ण तेण विब्भगनाणेण समुप्पन्नेण जीवे वि जाणइ, अजीवे वि जाणइ, पासडत्थे सारभे सपरिग्गहे सकिलिस्समाणे वि जाणइ, विसुज्भमाणे वि जाणइ। से ण पुव्वामेव सम्मत्त पडिवज्जइ, सम्मत्त पडिवज्जित्ता समणधम्म रोएति, समणधम्म रोएत्ता चरित्त पडिवज्जइ, चरित्तं पडिवज्जित्ता लिग पडिवज्जइ। तस्स ण तेहि मिच्छत्तपज्जवेहि परिहायमाणेहिं-परिहायमाणेहि सम्मदसणपज्जवेहि परिवड्ढमाणेहि-परिवड्ढमाणेहिं से विब्भगे अण्णाणे सम्मत्तपरिग्गहिए खिप्पामेव ओही परावत्तइ॥

३४. से ण भते! कतिसु लेस्सासु[5] होज्जा?
गोयमा! तिसु विसुद्धलेस्सासु होज्जा, त जहा—तेउलेस्साए, पम्हलेस्साए, सुक्कलेस्साए॥

३५ से ण भते! कतिसु नाणेसु होज्जा?
गोयमा! तिसु—आभिणिवोहियनाण-सुयनाण-ओहिनाणेसु होज्जा॥

३६ से ण भते! कि सजोगी होज्जा? अजोगी होज्जा?
गोयमा! सजोगी होज्जा, नो अजोगी होज्जा।
जइ सजोगी होज्जा, कि मणजोगी होज्जा? वइजोगी होज्जा? कायजोगी होज्जा?
गोयमा! मणजोगी वा[6] होज्जा, वइजोगी वा होज्जा, कायजोगी वा होज्जा॥

३७ से ण भते! किं सागारोवउत्ते होज्जा? अणागारोवउत्ते होज्जा?
गोयमा! सागारोवउत्ते वा होज्जा, अणागारोवउत्ते वा होज्जा॥

३८ से ण भते! कयरम्मि सघयणे होज्जा?
गोयमा! वइरोसभनारायसघयणे[7] होज्जा॥

---

१ अल्लीणयाए भद्दयाए (अ, क, ता, व, म, स)।
२ × (क, ता,)।
३ इहापूह° (अ, म), इहावूह° (ता)।
४ विभग° (अ, ता, म)।
५ लेसासु (क, ता, स)।
६ त्रि (क) सर्वत्र।
७ वइरोसह° (व, म)।

३९ से ण भते ! कयरम्मि सठाणे होज्जा ?
गोयमा ! छण्ह सठाणाणं अण्णयरे सठाणे होज्जा ॥

४०. से णं भते ! कयरम्मि उच्चत्ते होज्जा ?
गोयमा ! जहण्णेण सत्तरयणीए, उक्कोसेण पचधणुसतिए होज्जा ॥

४१ से ण भते ! कयरम्मि आउए होज्जा ?
गोयमा ! जहण्णेण सातिरेगट्ठवासाउए, उक्कोसेण पुव्वकोडिआउए होज्जा ॥

४२. से ण भते ! कि सवेदए होज्जा ? अवेदए होज्जा ?
गोयमा ! सवेदए होज्जा, नो अवेदए होज्जा ।
जइ सवेदए होज्जा कि इत्थिवेदए होज्जा ? पुरिसवेदए होज्जा ? पुरिस-नपुसगवेदए होज्जा ? 'नपुसगवेदए होज्जा ?'[1]
गोयमा ! नो इत्थिवेदए होज्जा, पुरिसवेदए होज्जा, 'नो नपुसगवेदए होज्जा'[2], पुरिस-नपुसगवेदए वा होज्जा ॥

४३. से ण भते ! कि सकसाई[3] होज्जा ? अकसाई होज्जा ?
गोयमा ! सकसाई होज्जा, नो अकसाई होज्जा ।
जइ सकसाई होज्जा से ण भते ! कतिसु कसाएसु होज्जा ?
गोयमा ! चउसु—संजलणकोह-माण-माया लोभेसु होज्जा ॥

४४. तस्स ण भते ! केवइया अज्झवसाणा पण्णत्ता ?
गोयमा ! असखेज्जा अज्झवसाणा पण्णत्ता ॥

४५. ते ण भते ! कि पसत्था ? अप्पसत्था ?
गोयमा ! पसत्था, नो अप्पसत्था ॥

४६ से णं भते ! तेहि पसत्थेहिं अज्झवसाणेहिं वड्ढमाणेहि अणतेहि नेरइयभवग्गहणेहिंतो अप्पाण विसजोएइ, अणतेहिं तिरिक्खजोणियभवग्गहणेहिंतो अप्पाणं विसजोएइ, अणतेहिं मणुस्सभवग्गहणेहितो अप्पाण विसजोएइ, अणतेहि देवभवग्गहणेहितो अप्पाण विसजोएइ । जाओ वि य से इमाओ नेरइय-तिरिक्खजोणिय-मणुस्स-देवगतिनामाओ चत्तारि उत्तरपगडीओ, तासिं च णं ओवग्गहिए[4] अणताणुबधी कोह-माण-माया-लोभे खवेइ, खवेत्ता अपच्चक्खाणकसाए कोह-माण-माया-लोभे खवेइ, खवेत्ता पच्चक्खाणावरणे कोह-माण-माया-लोभे खवेइ, खवेत्ता सजलणे कोह-माण-माया-लोभे खवेइ, खवेत्ता पचविह नाणावरणिज्ज, नवविह दरिसणावरणिज्ज, पचविह अतराइय, ताल-

---

१. × (क, व, म) ।
२. × (क, व, म) ।
३. सकसादी (अ, ता) ।
४. उवग्गहिए (क, म, स) ।

मत्थाकड[1] च णं मोहणिज्ज कट्टु कम्मरयविकिरणकर अपुव्वकरण अणुपविट्ठस्स[2] अणते अणुत्तरे निव्वाघाए निरावरणे कसिणे पडिपुण्णे केवलवरनाण-दसणे समुपज्जति ।।

४७. से ण भते ! केवलिपण्णत्त धम्म आघवेज्ज वा ? पण्णवेज्ज वा ? परूवेज्ज वा ?
नो तिणट्ठे समट्ठे, नण्णत्थ[3] एगनाएण वा, एगवागरणेण वा ।।

४८ से ण भते ! पव्वावेज्ज वा ? मुडावेज्ज वा ?
णो तिणट्ठे समट्ठे, उवदेस पुण करेज्जा ।।

४९. से णं भते ! सिज्झति जाव[4] सव्वदुक्खाण अत करेति ?
हता सिज्झति जाव सव्वदुक्खाण अत करेति ।।

५० से ण भते ! कि उड्ढ होज्जा ? अहे होज्जा ? तिरिय होज्जा ?
गोयमा ! उड्ढ वा होज्जा, अहे वा होज्जा, तिरिय वा होज्जा । उड्ढ होमाणे[5] सद्दावइ-वियडावइ-गधावइ-मालवतपरियाएसु वट्टवेयड्ढपव्वएसु होज्जा, साहरण पडुच्च सोमणसवणे वा पडगवणे वा होज्जा । अहे होमाणे गड्डाए वा दरीए वा होज्जा, साहरण पडुच्च पायाले वा भवणे वा होज्जा । तिरिय होमाणे पण्णरससु कम्मभूमीसु होज्जा, साहरण पडुच्च 'अड्ढाइज्जदीव-समुद्द'[6]-तदेक्कदेसभाए होज्जा ।।

५१ ते ण भते ! एगसमए ण केवतिया होज्जा ?
गोयमा ! जहण्णेण एक्को वा दो वा तिण्णि वा, उक्कोसेण दस । से तेणट्ठेण गोयमा ! एव वुच्चइ—असोच्चा ण केवलिस्स वा जाव तप्पक्खियउवासियाए वा अत्थेगतिए केवलिपण्णत्त धम्म लभेज्ज सवणयाए, अत्थेगतिए असोच्चा ण केवलिस्स वा जाव तप्पक्खियउवासियाए वा केवलिपण्णत्त धम्म नो लभेज्ज सवणयाए जाव अत्थेगतिए केवलनाण उप्पाडेज्जा, अत्थेगतिए केवलनाण नो उप्पाडेज्जा ।।

---

१. °मत्थ° (अ, क), मत्था—अत्र एकपदे सन्विजति । वृत्तौ अस्य व्याख्या एवमस्ति —मस्तक—मस्तकशुची कृत्त—छिन्न यस्यासौ मस्तककृत्त, तालश्चासौ मस्तककृत्तश्च तालमस्तककृत्त, छान्दसत्वाच्चैव निर्देश, तालमस्तककृत्त इव यत्तत्तालमस्तककृत्तम् (वृ) ।

२. पविट्ठस्स (अ, क, ता, म) ।

३ अण्णत्थ (ता) ।

४ भ० १।४४ ।

५ होज्जमाणे (व, स) ।

६. अड्ढाइज्जे दीवसमुद्दे (अ, स) ।

सोच्चा उवलद्धि-पदं

५२. सोच्चा णं भते ! केवलिस्स वा,[1] •केवलिसावगस्स वा, केवलिसावियाए वा, केवलिउवासगस्स वा, केवलिउवासियाए वा, तप्पक्खियस्स वा, तप्पक्खियसावगस्सवा, तप्पविखयसावियाए वा, तप्पक्खियउवासगस्स वा, तप्पक्खियउवासियाए वा केवलिपण्णत्त धम्म लभेज्ज सवणयाए ?
गोयमा ! सोच्चा ण केवलिस्स वा जाव तप्पक्खियउवासियाए वा अत्थेगतिए केवलिपण्णत्त धम्म लभेज्ज सवणयाए, अत्थेगतिए केवलिपण्णत्त धम्म नो लभेज्ज सवणयाए ॥

५३ से केणट्ठेण भते ! एव वुच्चइ—सोच्चा ण जाव नो लभेज्ज सवणयाए ?
गोयमा ! जस्स णं नाणावरणिज्जाण कम्माण खओवसमे कडे भवइ से णं सोच्चा केवलिस्स वा जाव तप्पक्खियउवासियाए वा केवलिपण्णत्त धम्म लभेज्ज सवणयाए, जस्स ण नाणावरणिज्जाण कम्माण खओवसमे नो कडे भवइ से ण सोच्चा केवलिस्स वा जाव तप्पक्खियउवासियाए वा केवलिपण्णत्त धम्म नो लभेज्ज सवणयाए। से तेणट्ठेणं गोयमा ! एव वुच्चइ—सोच्चा ण जाव नो लभेज्ज सवणयाए° ॥

५४ एव 'जा चेव'[2] असोच्चाए वत्तव्वया 'सा चेव'[3] सोच्चाए वि भाणियव्वा, नवर —अभिलावो सोच्चे त्ति, सेस तं चेव निरवसेस जाव जस्स ण मणपज्जवनाणावरणिज्जाण कम्माण खओवसमे कडे भवइ, जस्स ण केवलनाणावरणिज्जाण कम्माण खए कडे भवइ से ण सोच्चा केवलिस्स वा जाव तप्पक्खियउवासियाए वा केवलिपण्णत्त धम्म लभेज्ज सवणयाए, केवल वोहिं बुज्झेज्जा जाव[4] केवलनाण उप्पाडेज्जा ॥

५५ तस्स ण अट्ठमअट्ठमेण अणिक्खित्तेण तवोकम्मेण अप्पाण भावेमाणस्स पगइभद्दयाए, [5]•पगइउवसतयाए, पगइपयणुकोह-माण-माया-लोभयाए, मिउमद्दवसपन्नयाए, अल्लीणयाए, विणीययाए, अण्णया कयावि सुभेण अज्झवसाणेण, सुभेण परिणामेण, लेस्साहि विसुज्झमाणीहिं-विसुज्झमाणीहिं तयावरणिज्जाण कम्माणं खओवसमेण ईहापोहमग्गण°गवेसण करेमाणस्स ओहिनाणे समुप्पज्जइ। से ण तेण ओहिनाणेण समुप्पन्नेण जहण्णेण अगुलस्स असखेज्जतिभाग, उक्कोसेण असखेज्जाइ अलोए लोयप्पमाणमेत्ताइ खडाइं जाणइ-पासइ ॥

---

१. स० पा०—वा जाव तप्पक्खियउवासियाए वा केवलिपण्णत्त धम्म लभेज्ज सवणयाए ? गोयमा ! सोच्चा ण केवलिस्स वा जाव अत्थेगतिए केवलिपण्णत्तं धम्म।

२ जच्चेव (क, ता, म), जहेव (स)।

३. सच्चेव (क, ता, व, म)।

४ भ० ९।११-३२।

५. स० पा०—तहेव जाव गवेसण।

५६. से ण भते ! कतिसु लेस्सासु होज्जा ?
गोयमा ! छसु लेस्सासु होज्जा, त जहा—कण्हलेस्साए जाव[1] सुक्कलेस्साए ॥

५७. से ण भते ! कतिसु नाणेसु होज्जा ?
गोयमा ! तिसु वा, चउसु वा होज्जा। तिसु होमाणे[2] आभिणिबोहियनाण-सुयनाण-ओहिनाणेसु होज्जा, चउसु होमाणे आभिणिबोहियनाण-सुयनाण-ओहिनाण-मणपज्जवनाणेसु होज्जा ॥

५८ से ण भते ! कि सजोगी होज्जा ? अजोगी होज्जा ?
[3]•गोयमा ! सजोगी होज्जा, नो अजोगी होज्जा।
जइ सजोगी होज्जा, कि मणजोगी होज्जा ? वइजोगी होज्जा ? कायजोगी होज्जा ?
गोयमा ! मणजोगी वा होज्जा, वइजोगी वा होज्जा, कायजोगी वा होज्जा ॥

५९ से ण भते ! कि सागारोवउत्ते होज्जा ? अणागारोवउत्ते होज्जा ?
गोयमा ! सागारोवउत्ते वा होज्जा, अणागारोवउत्ते वा होज्जा ॥

६०. से ण भते ! कयरम्मि सघयणे होज्जा ?
गोयमा ! वइरोसभनारायसघयणे होज्जा ॥

६१. से ण भते ! कयरम्मि सठाणे होज्जा ?
गोयमा ! छण्ह सठाणाण अण्णयरे सठाणे होज्जा ॥

६२. से ण भते ! कयरम्मि उच्चत्ते होज्जा ?
गोयमा ! जहण्णेण सत्तरयणीए, उक्कोसेण पचधणुसतिए होज्जा ॥

६३ से ण भते ! कयरम्मि आउए होज्जा ?
गोयमा ! जहण्णेण सातिरेगट्ठवासाउए, उक्कोसेण पुव्वकोडिआउए होज्जा° ॥

६४ से ण भते ! किं सवेदए [4]•होज्जा ? अवेदए होज्जा ?°
गोयमा ! सवेदए वा होज्जा, अवेदए वा होज्जा।
जइ अवेदए होज्जा कि उवसतवेदए होज्जा ? खीणवेदए होज्जा ?
गोयमा ! नो उवसतवेदए होज्जा, खीणवेदए होज्जा।
जइ सवेदए होज्जा कि इत्थीवेदए होज्जा ? पुरिसवेदए होज्जा ? 'पुरिस-नपुसगवेदए'[5] होज्जा ?
गोयमा ! इत्थीवेदए वा होज्जा, पुरिसवेदए वा होज्जा, पुरिस-नपसगवेदए वा होज्जा ॥

---

१. भ० १।१०२।
२. होज्जमाणे (अ, क,)।
३. स० पा०—एव जोगो, उवओगो, सघयण, सठाण, उच्चत्त, आउय च—एयाणि सव्वाणि जहा असोच्चाए तहेव भाणियव्वाणि।
४ स० पा०—पुच्छा।
५ नपुसगवेदए (अ, म)।

६५. से णं भंते ! किं सकसाई होज्जा ? अकसाई होज्जा ?
गोयमा ! सकसाई वा होज्जा, अकसाई वा होज्जा ।
जइ अकसाई होज्जा किं उवसंतकसाई होज्जा ? खीणकसाई होज्जा ?
गोयमा ! नो उवसंतकसाई होज्जा, खीणकसाई होज्जा ।
जइ सकसाई होज्जा से णं भंते ! कतिसु कसाएसु होज्जा ?
गोयमा ! चउसु वा तिसु वा दोसु वा एक्कम्मि वा होज्जा । चउसु होमाणे चउसु—संजलणकोह-माण-माया-लोभेसु होज्जा, तिसु होमाणे तिसु—संजलण-माण-माया-लोभेसु होज्जा, दोसु होमाणे दोसु—संजलणमाया-लोभेसु होज्जा, एगम्मि होमाणे एगम्मि—संजलणलोभे होज्जा ॥

६६. तस्स णं भंते ! केवतिया अज्झवसाणा पण्णत्ता ?
गोयमा ! असंखेज्जा [1]•अज्झवसाणा पण्णत्ता ॥

६७. ते णं भंते ! किं पसत्था ? अप्पसत्था ?
गोयमा ! पसत्था, नो अप्पसत्था ॥

६८. से णं भंते ! तेहिं पसत्थेहिं अज्झवसाणेहिं वड्ढमाणेहिं अणंतेहिं नेरइय-भवग्गहणेहिंतो अप्पाणं विसंजोएइ, अणंतेहिं तिरिक्खजोणियभवग्गहणेहिंतो अप्पाणं विसंजोएइ, अणंतेहिं मणुस्सभवग्गहणेहिंतो अप्पाणं विसंजोएइ, अणंतेहिं देवभवग्गहणेहिंतो अप्पाणं विसंजोएइ । जाओ वि य से इमाओ नेरइय-तिरिक्खजोणिय-मणुस्स-देवगतिनामाओ चत्तारि उत्तरपगडीओ, तासिं च णं ओवग्गहिए अणंताणुबंधी कोह-माण-माया-लोभे खवेइ, खवेत्ता अपच्चक्खाणकसाए कोह-माण-माया-लोभे खवेइ, खवेत्ता पच्चक्खाणावरणे कोह-माण-माया-लोभे खवेइ, खवेत्ता संजलणे कोह-माण-माया-लोभे खवेइ, खवेत्ता पंचविहं नाणावरणिज्जं, नवविहं दरिसणावरणिज्जं, पंचविहं अंतराइयं तालमत्थाकडं च णं मोहणिज्जं कट्टु कम्मरयविकिरणकरं अपुव्वकरणं अणुपविट्ठस्स अणंते अणुत्तरे निव्वाघाए निरावरणे कसिणे पडिपुण्णे° केवलवरनाण-दंसणे समुप्पज्जइ ॥

६९. से णं भंते ! केवलिपण्णत्तं धम्मं आघवेज्ज वा ? पण्णवेज्ज वा ? परूवेज्ज वा ?
हंता आघवेज्ज वा, पण्णवेज्ज वा, परूवेज्ज वा ॥

७०. से णं भंते ! पव्वावेज्ज वा ? मुंडावेज्ज वा ?
हंता पव्वावेज्ज वा, मुंडावेज्ज वा[2] ॥

---

१. सं० पा०—एवं जहा असोच्चाए तहेव जाव केवल° ।

२. वा तस्स णं भंते ! सिस्सा वि पव्वावेज्ज वा मुंडावेज्ज वा हंता पव्वावेज्ज वा मुंडावेज्ज वा (क, ता, व) ।

७१ से ण भते ! सिज्झति बुज्झति जाव[1] सव्वदुक्खाण अंतं करेइ ?
हता सिज्झति जाव सव्वदुक्खाण अत करेति ।।
७२ तस्स ण भते ! सिस्सा वि सिज्झति जाव सव्वदुक्खाण अत करेति ?
हता सिज्झति जाव सव्वदुक्खाण अत करेति ।।
७३. तस्स ण भंते ! पसिस्सा वि सिज्झति जाव सव्वदुक्खाण अत करेति ?
'हंता सिज्झति'[2] जाव सव्वदुक्खाण अत करेति ।।
७४. से ण भते ! किं उड्ढ होज्जा ? जहेव असोच्चाए जाव[3] अड्ढाइज्जदीवसमुद्द-तदेक्कदेसभाए होज्जा ।।
७५ ते ण भते ! एगसमए णं केवतिया होज्जा ?
गोयमा ! जहण्णेण एक्को वा दो वा तिण्णि वा, उक्कोसेण अट्ठसय। से तेणट्ठेण गोयमा ! एव वुच्चइ—सोच्चा ण केवलिस्स वा जाव[4] तप्पक्खियउवासियाए[5] वा अत्थेगतिए केवलनाण उप्पाडेज्जा, अत्थेगतिए केवलनाण नो उप्पाडेज्जा ।।
७६. सेव भते ! सेव भते ! त्ति[6] ।।

बत्तीसइमो उद्देसो

पासावच्चिज्जगंगेय-पसिण-पदं

७७. तेण कालेण तेण समएण वाणियग्गामे नाम नयरे होत्था—वण्णओ[7]। दूतिपलासए चेइए[8]। सामी समोसढे। परिसा निग्गया। धम्मो कहिओ। परिसा पडिगया ।।
७८ तेण कालेण तेण समएण पासावच्चिज्जे गगेए नाम अणगारे जेणेव समणे भगव महावीरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता समणस्स भगवओ महावीरस्स अदूरसामते ठिच्चा समण भगव महावीर एव वदासी—

---

१. भ० १।४४ ।
२ एव चेव (अ, क, ता, ब, म, स) ।
३. भ० ६।५० ।
४. भ० ६।५१ ।
५ केवलिउवासियाए (अ, क, ता, स) ।
६ भ० १।५१ ।
७ ओ० सू० १ ।
८. चेइए वण्णओ (ता) ।

संतर-निरंतर-उववज्जणादि-पदं

७९. संतरं[1] भते ! नेरइया उववज्जति ? निरंतरं नेरइया उववज्जति ?
गगेया ! सतर पि नेरइया उववज्जति, निरतर पि नेरइया उववज्जति ॥

८० सतर भते ! असुरकुमारा उववज्जति ? निरतर असुरकुमारा उववज्जति ?
गगेया ! सतर पि असुरकुमारा उववज्जति, निरंतर पि असुरकुमारा उववज्जति । एव जाव थणियकुमारा ॥

८१ सतर भते ! पुढविक्काइया उववज्जति ? निरतर पुढविक्काइया उववज्जति ?
गगेया ! नो सतर पुढविक्काइया उववज्जति, निरतर पुढविक्काइया उववज्जति । एवं जाव वणस्सइकाइया । बेइदिया जाव वेमाणिया एते जहा नेरइया ॥

८२ सतर भते ! नेरइया उव्वट्टति ? निरतरं नेरइया उव्वट्टति ?
गगेया ! सतर पि नेरइया उव्वट्टति, निरतर पि नेरइया उव्वट्टंति । एव जाव थणियकुमारा ॥

८३ सतर भते ! पुढविक्काइया उव्वट्टति ?—पुच्छा ।
गगेया ! नो सतर पुढविक्काइया उव्वट्टति, निरतरं पुढविक्काइया उव्वट्टति । एव जाव वणस्सइकाइया—नो सतर, निरतर उव्वट्टति ॥

८४. सतर भते ! बेइदिया उव्वट्टति ? निरतरं बेइदिया उव्वट्टति ?
गंगेया ! सतर पि बेइदिया उव्वट्टति, निरतर पि बेइदिया उव्वट्टति । एवं जाव वाणमतरा ॥

८५ सतर भते ! जोइसिया चयति ?—पुच्छा ।
गगेया ! सतर पि जोइसिया चयति, निरतर पि जोइसिया चयति । एव वेमाणिया वि ॥

पवेसण-पद

८६ कतिविहे ण भते ! पवेसणए पण्णत्ते ?
गगेया ! चउव्विहे पवेसणए पण्णत्ते, त जहा—नेरइयपवेसणए, तिरिक्खजोणियपवेसणए, मणुस्सपवेसणए, देवपवेसणए ॥

८७ नेरइयपवेसणए ण भते ! कतिविहे पण्णत्ते ?
गगेया ! सत्तविहे पण्णत्ते, त जहा—रयणप्पभापुढविनेरइयपवेसणए[2] जाव अहेसत्तमापुढविनेरइयपवेसणए ॥

---

१. सातर (क, ता, म) ।
२ रयणप्पभ० (क, ता) ।

८८ एगे भते ! नेरइए नेरइयपवेसणएण पविसमाणे कि रयणप्पभाए होज्जा, सक्करप्पभाए होज्जा जाव अहेसत्तमाए होज्जा ?
गगेया ! रयणप्पभाए वा होज्जा जाव अहेसत्तमाए वा होज्जा ॥

८९. दो भते ! नेरइया नेरइयपवेसणएण पविसमाणा कि रयणप्पभाए होज्जा जाव अहेसत्तमाए होज्जा ?
गगेया ! रयणप्पभाए वा होज्जा जाव अहेसत्तमाए वा होज्जा ।
अहवा एगे रयणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए होज्जा, अहवा एगे रयणप्पभाए एगे वालुयप्पभाए होज्जा जाव एगे रयणप्पभाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा । अहवा एगे सक्करप्पभाए एगे वालुयप्पभाए होज्जा जाव अहवा एगे सक्करप्पभाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा । अहवा एगे वालुयप्पभाए एगे पकप्पभाए होज्जा, एव जाव अहवा एगे वालुयप्पभाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा । एव एक्केका पुढवी छड्डेयव्वा जाव अहवा एगे तमाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा[1] ॥

९०. तिण्णि भते ! नेरइया नेरइयपवेसणएण पविसमाणा कि रयणप्पभाए होज्जा जाव अहेसत्तमाए होज्जा ?
गगेया ! रयणप्पभाए वा होज्जा जाव अहेसत्तमाए वा होज्जा ।
अहवा एगे रयणप्पभाए दो सक्करप्पभाए होज्जा जाव अहवा एगे रयणप्पभाए दो अहेसत्तमाए होज्जा । अहवा दो रयणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए होज्जा जाव अहवा दो रयणप्पभाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा । अहवा एगे सक्करप्पभाए दो वालुयप्पभाए होज्जा जाव अहवा एगे सक्करप्पभाए दो अहेसत्तमाए होज्जा । अहवा दो सक्करप्पभाए एगे वालुयप्पभाए होज्जा जाव अहवा दो सक्करप्पभाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा, एव जहा सक्करप्पभाए वत्तव्वया भणिया, तहा सव्वपुढवीण भाणियव्व जाव अहवा दो तमाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा[2] ॥
अहवा एगे रयणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए एगे वालुयप्पभाए होज्जा, अहवा एगे रयणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए एगे पकप्पभाए होज्जा जाव अहवा एगे रयणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा । अहवा एगे रयणप्पभाए एगे वालुयप्पभाए एगे पकप्पभाए होज्जा, अहवा एगे रयणप्पभाए एगे वालुयप्पभाए एगे धूमप्पभाए होज्जा, एव जाव अहवा एगे रयणप्पभाए एगे वालुयप्पभाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा । अहवा एगे रयणप्पभाए एगे पकप्पभाए एगे धूमप्पभाए होज्जा जाव अहवा एगे रयणप्पभाए एगे पकप्पभाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा । अहवा एगे रयणप्पभाए एगे धूमप्पभाए एगे तमाए

---

१ द्विसयोगजा भङ्गा २१ । २ द्विसयोगजा भङ्गा ४२ ।

होज्जा, अहवा एगे रयणप्पभाए एगे धूमप्पभाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा, अहवा एगे रयणप्पभाए एगे तमाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा। अहवा एगे सक्करप्पभाए एगे वालुयप्पभाए एगे पंकप्पभाए होज्जा, अहवा एगे सक्करप्पभाए एगे वालुयप्पभाए एगे धूमप्पभाए होज्जा जाव अहवा एगे सक्करप्पभाए एगे वालुयप्पभाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा। अहवा एगे सक्करप्पभाए एगे पंकप्पभाए एगे धूमप्पभाए होज्जा जाव अहवा एगे सक्करप्पभाए एगे पंकप्पभाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा। अहवा एगे सक्करप्पभाए एगे धूमप्पभाए एगे तमाए होज्जा, अहवा एगे सक्करप्पभाए एगे धूमप्पभाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा, अहवा एगे सक्करप्पभाए एगे तमाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा। अहवा एगे वालुयप्पभाए एगे पंकप्पभाए एगे धूमप्पभाए होज्जा, अहवा एगे वालुयप्पभाए एगे पंकप्पभाए एगे तमाए होज्जा, अहवा एगे वालुयप्पभाए एगे पंकप्पभाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा। अहवा एगे वालुयप्पभाए एगे धूमप्पभाए एगे तमाए होज्जा, अहवा एगे वालुयप्पभाए एगे धूमप्पभाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा, अहवा एगे वालुयप्पभाए एगे तमाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा, अहवा एगे पंकप्पभाए एगे धूमप्पभाए एगे तमाए होज्जा, अहवा एगे पंकप्पभाए एगे धूमप्पभाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा, अहवा एगे धूमप्पभाए एगे तमाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा[1]॥

९१ चत्तारि भंते! नेरइया नेरइयपवेसणएणं पविसमाणा किं रयणप्पभाए होज्जा?—पुच्छा।

गंगेया! रयणप्पभाए वा होज्जा जाव अहेसत्तमाए वा होज्जा।

अहवा एगे रयणप्पभाए तिण्णि सक्करप्पभाए होज्जा, अहवा एगे रयणप्पभाए तिण्णि वालुयप्पभाए होज्जा, एवं जाव अहवा एगे रयणप्पभाए तिण्णि अहेसत्तमाए होज्जा। अहवा दो रयणप्पभाए दो सक्करप्पभाए होज्जा, एवं जाव अहवा दो रयणप्पभाए दो अहेसत्तमाए होज्जा। अहवा तिण्णि रयणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए होज्जा, एवं जाव अहवा तिण्णि रयणप्पभाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा। अहवा एगे सक्करप्पभाए तिण्णि वालुयप्पभाए होज्जा, एवं जहेव रयणप्पभाए उवरिमाहिं समं चारियं तहा सक्करप्पभाए वि उवरिमाहिं समं चारेयव्वं, एवं एक्केक्काए समं चारेयव्वं जाव अहवा तिण्णि तमाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा[2]।

अहवा एगे रयणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए दो वालुयप्पभाए होज्जा, अहवा एगे रयणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए दो पंकप्पभाए होज्जा, एवं जाव एगे रय-

---

१ त्रिसंयोगजा भङ्गा ३५। २. द्विसंयोगजा भङ्गा ६३।

णप्पभाए एगे सक्करप्पभाए दो अहेसत्तमाए होज्जा। अहवा एगे रयणप्पभाए दो सक्करप्पभाए एगे वालुयप्पभाए होज्जा, एव जाव अहवा एगे रयणप्पभाए दो सक्करप्पभाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा। अहवा दो रयणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए एगे वालुयप्पभाए होज्जा, एव जाव अहवा दो रयणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा। अहवा एगे रयणप्पभाए एगे वालुयप्पभाए दो पकप्पभाए होज्जा जाव अहवा एगे रयणप्पभाए एगे वालुयप्पभाए दो अहेसत्तमाए होज्जा। एव एएण गमएण जहा तिण्ह तियासजोगो[1] तहा भाणियव्वो जाव अहवा दो धूमप्पभाए एगे तमाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा[2]।

अहवा एगे रयणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए एगे वालुयप्पभाए एगे पकप्पभाए होज्जा, अहवा एगे रयणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए एगे वालुयप्पभाए एगे धूमप्पभाए होज्जा, 'अहवा एगे रयणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए एगे वालुयप्पभाए एगे तमाए होज्जा, अहवा एगे रयणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए एगे वालुयप्पभाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा'[3], अहवा एगे रयणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए एगे पकप्पभाए एगे धूमप्पभाए होज्जा, अहवा एगे रयणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए एगे पकप्पभाए एगे तमाए होज्जा, अहवा एगे रयणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए एगे पकप्पभाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा, अहवा एगे रयणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए एगे धूमप्पभाए एगे तमाए होज्जा, अहवा एगे रयणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए एगे धूमप्पभाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा, अहवा एगे रयणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए एगे तमाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा, अहवा एगे रयणप्पभाए एगे वालुयप्पभाए एगे पकप्पभाए एगे धूमप्पभाए होज्जा अहवा एगे रयणप्पभाए एगे वालुयप्पभाए एगे पकप्पभाए एगे तमाए होज्जा, अहवा एगे रयणप्पभाए एगे वालुयप्पभाए एगे पकप्पभाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा, अहवा एगे रयणप्पभाए एगे वालुयप्पभाए एगे धूमप्पभाए एगे तमाए होज्जा, अहवा एगे रयणप्पभाए एगे वालुयप्पभाए एगे धूमप्पभाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा, अहवा एगे रयणप्पभाए एगे वालुयप्पभाए एगे तमाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा, अहवा एगे रयणप्पभाए एगे पकप्पभाए एगे धूमप्पभाए एगे तमाए होज्जा, अहवा एगे रयणप्पभाए एगे पकप्पभाए एगे धूमप्पभाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा, अहवा एगे रयणप्पभाए एगे पकप्पभाए एगे तमाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा, अहवा एगे रयणप्पभाए एगे धूमप्पभाए एगे तमाए एगे अहेसत्तमाए

---

१. तिय० (अ, म, स)।
२ त्रिसयोगजा भङ्गा १०५।
३ एवं जाव अहवा एगे रयणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए एगे वालुयप्पभाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा।

होज्जा, अहवा एगे सक्करप्पभाए एगे वालुयप्पभाए एगे पकप्पभाए एगे धूमप्पभाए होज्जा। एव जहा रयणप्पभाए उवरिमाओ पुढवीओ चारियाओ तहा सक्करप्पभाए वि उवरिमाओ चारियव्वाओ जाव अहवा एगे सक्करप्पभाए एगे धूमप्पभाए एगे तमाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा। अहवा एगे वालुयप्पभाए एगे पकप्पभाए एगे धूमप्पभाए एगे तमाए होज्जा, अहवा एगे वालुयप्पभाए एगे पकप्पभाए एगे धूमप्पभाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा, अहवा एगे वालुयप्पभाए एगे पकप्पभाए एगे तमाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा, अहवा एगे वालुयप्पभाए एगे धूमप्पभाए एगे तमाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा, अहवा एगे पकप्पभाए एगे धूमप्पभाए एगे तमाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा[1] ॥

२. पच भते ! नेरइया नेरइयप्पवेसणएण पविसमाणा कि रयणप्पभाए होज्जा ? —पुच्छा।

गगेया ! रयणप्पभाए वा होज्जा जाव अहेसत्तमाए वा होज्जा।

अहवा एगे रयणप्पभाए चत्तारि सक्करप्पभाए होज्जा जाव अहवा एगे रयणप्पभाए चत्तारि अहेसत्तमाए होज्जा। अहवा दो रयणप्पभाए तिण्णि सक्करप्पभाए होज्जा, एव जाव अहवा दो रयणप्पभाए तिण्णि अहेसत्तमाए होज्जा। अहवा तिण्णि रयणप्पभाए दोण्णि सक्करप्पभाए होज्जा, एव जाव अहेसत्तमाए होज्जा। अहवा चत्तारि रयणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए होज्जा, एव जाव अहवा चत्तारि रयणप्पभाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा। अहवा एगे सक्करप्पभाए चत्तारि वालुयप्पभाए होज्जा। एव जहा रयणप्पभाए सम उवरिमपुढवीओ चारियाओ तहा सक्करप्पभाए वि सम चारेयव्वाओ जाव अहवा चत्तारि सक्करप्पभाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा। एव एक्केक्काए सम चारेयव्वाओ जाव अहवा चत्तारि तमाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा[2]।

अहवा एगे रयणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए तिण्णि वालुयप्पभाए होज्जा, एव जाव अहवा एगे रयणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए तिण्णि अहेसत्तमाए होज्जा। अहवा अगे रयणप्पभाए दो सक्करप्पभाए दो वालुयप्पभाए होज्जा, एव जाव अहवा एगे रयणप्पभाए दो सक्करप्पभाए दो अहेसत्तमाए होज्जा। अहवा दो रयणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए दो वालुयप्पभाए होज्जा, एव जाव अहवा दो रयणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए दो अहेसत्तमाए होज्जा। अहवा एगे रयणप्पभाए तिण्णि सक्करप्पभाए एगे वालुयप्पभाए होज्जा, एव जाव अहवा एगे रयणप्पभाए तिण्णि सक्करप्पभाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा। अहवा दो रयणप्पभाए दो सक्करप्पभाए एगे वालुयप्पभाए होज्जा, एव जाव

---

१. चतु सयोगजा भङ्गा ३५।

२. द्विमयोगजा भङ्गा ८४।

अहेसत्तमाए। अहवा तिण्णि रयणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए एगे वालुयप्पभाए होज्जा, एव जाव अहवा तिण्णि रयणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा। अहवा एगे रयणप्पभाए एगे वालुयप्पभाए तिण्णि पकप्पभाए होज्जा। एव एएण कमेण जहा चउण्ह तियासजोगो[1] भणितो तहा पचण्ह वि तियासजोगो भाणियव्वो, नवर—तत्थ एगो सचारिज्जइ, इह[2] दोण्णि, सेस त चेव जाव अहवा तिण्णि धूमप्पभाए एगे तमाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा[3]।

अहवा एगे रयणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए एगे वालुयप्पभाए दो पकप्पभाए होज्जा, एव जाव अहवा एगे रयणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए एगे वालुयप्पभाए दो अहेसत्तमाए होज्जा। अहवा एगे रयणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए दो वालुयप्पभाए एगे पकप्पभाए होज्जा, एव जाव अहेसत्तमाए। अहवा एगे रयणप्पभाए दो सक्करप्पभाए एगे वालुयप्पभाए एगे पकप्पभाए होज्जा, एव जाव अहवा एगे रयणप्पभाए दो सक्करप्पभाए एगे वालुयप्पभाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा। अहवा दो रयणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए एगे वालुयप्पभाए एगे पकप्पभाए होज्जा जाव अहवा दो रयणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए एगे वालुयप्पभाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा। अहवा एगे रयणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए एगे पकप्पभाए दो धूमप्पभाए होज्जा, एव जहा चउण्ह चउक्कसजोगो भणिओ तहा पचण्ह वि चउक्कसजोगो भाणियव्वो नवर—अब्भहिय एगो सचारेयव्वो, एव जाव अहवा दो पकप्पभाए एगे धूमप्पभाए एगे तमाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा[4]।

अहवा एगे रयणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए एगे वालुयप्पभाए एगे पकप्पभाए एगे धूमप्पभाए होज्जा, अहवा एगे रयणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए एगे वालुयप्पभाए एगे पकप्पभाए एगे तमाए होज्जा, अहवा एगे रयणप्पभाए जाव एगे पकप्पभाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा, अहवा एगे रयणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए एगे वालुयप्पभाए एगे धूमप्पभाए एगे तमाए होज्जा, अहवा एगे रयणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए एगे वालुयप्पभाए एगे धूमप्पभाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा, अहवा एगे रयणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए एगे वालुयप्पभाए एगे तमाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा, अहवा एगे रयणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए एगे पकप्पभाए एगे धूमप्पभाए एगे तमाए होज्जा, अहवा एगे रयणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए एगे पकप्पभाए एगे धूमप्पभाए एगे

---

१ तिय° (क)।
२ इमाहिं (अ, क, व, म, स), इमेहिं (ता)।
३ त्रिसयोगजा भङ्गा २१०।
४ चतु सयोगजा भङ्गा १४०।

अहेसत्तमाए होज्जा, अहवा एगे रयणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए एगे पकप्प-भाए एगे तमाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा, अहवा एगे रयणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए एगे धूमप्पभाए एगे तमाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा, अहवा एगे रयणप्पभाए एगे वालुयप्पभाए एगे पकप्पभाए एगे धूमप्पभाए एगे तमाए होज्जा, अहवा एगे रयणप्पभाए एगे वालुयप्पभाए एगे पकप्पभाए एगे धूमप्पभाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा, अहवा एगे रयणप्पभाए एगे वालुयप्पभाए एगे पकप्पभाए एगे तमाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा, अहवा एगे रयणप्पभाए एगे वालुयप्पभाए एगे धूमप्पभाए एगे तमाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा, अहवा एगे रयणप्पभाए एगे पकप्पभाए जाव एगे अहेसत्तमाए होज्जा, अहवा एगे सक्करप्पभाए एगे वालुयप्पभाए जाव एगे तमाए होज्जा, अहवा एगे सक्करप्पभाए जाव एगे पकप्पभाए एगे धूमप्पभाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा, अहवा एगे सक्करप्पभाए जाव एगे पकप्पभाए एगे तमाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा, अहवा एगे सक्करप्पभाए एगे वालुयप्पभाए एगे धूमप्पभाए एगे तमाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा, अहवा एगे सक्करप्पभाए एगे पकप्पभाए जाव एगे अहेसत्तमाए होज्जा, अहवा एगे वालुयप्पभाए जाव एगे अहेसत्तमाए होज्जा[1] ॥

९३. छब्भंते ! नेरइया नेरइयप्पवेसणएणं पविसमाणा किं रयणप्पभाए होज्जा ?
—पुच्छा ।
गंगेया ! रयणप्पभाए वा होज्जा जाव अहेसत्तमाए वा होज्जा ।
अहवा एगे रयणप्पभाए पंच सक्करप्पभाए होज्जा, अहवा एगे रयणप्पभाए पंच वालुयप्पभाए होज्जा जाव अहवा एगे रयणप्पभाए पंच अहेसत्तमाए होज्जा । अहवा दो रयणप्पभाए चत्तारि सक्करप्पभाए होज्जा जाव अहवा दो रयणप्पभाए चत्तारि अहेसत्तमाए होज्जा । अहवा तिण्णि रयणप्पभाए तिण्णि सक्करप्पभाए । एवं एएणं कमेणं जहा पंचण्हं दुयासंजोगो तहा छण्हं वि भाणियव्वो, नवरं—एक्को अब्भहिओ संचारेयव्वो जाव अहवा पंच तमाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा[2] ।
अहवा एगे रयणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए चत्तारि वालुयप्पभाए होज्जा, अहवा एगे रयणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए चत्तारि पंकप्पभाए होज्जा, एवं जाव अहवा एगे रयणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए चत्तारि अहेसत्तमाए होज्जा । अहवा एगे रयणप्पभाए दो सक्करप्पभाए तिण्णि वालुयप्पभाए होज्जा । एवं एएणं कमेणं जहा पंचण्हं तियासंजोगो भणिओ तहा छण्हं वि भाणियव्वो,

---

१. पञ्चसंयोगजा भङ्गा २१ ।　　२ द्विसंयोगजा भङ्गा १०५ ।

नवरं—एक्को अहिओ उच्चारेयव्वो, सेसं तं चेव[1]। चउक्कसजोगो वि तहेव[2], पचगसजोगो वि तहेव, नवरं—एक्को अब्भहिओ सचारेयव्वो जाव पच्छिमो भगो, अहवा दो वालुयप्पभाए एगे पकप्पभाए एगे धूमप्पभाए एगे तमाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा[3]।

अहवा एगे रयणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए जाव एगे तमाए होज्जा, अहवा एगे रयणप्पभाए जाव एगे धूमप्पभाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा, अहवा एगे रयणप्पभाए जाव एगे पकप्पभाए एगे तमाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा, अहवा एगे रयणप्पभाए 'एगे सक्करप्पभाए'[4] एगे वालुयप्पभाए एगे धूमप्पभाए जाव एगे अहेसत्तमाए होज्जा, अहवा एगे रयणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए एगे पकप्पभाए जाव एगे अहेसत्तमाए होज्जा, अहवा एगे रयणप्पभाए एगे वालुयप्पभाए जाव एगे अहेसत्तमाए होज्जा, अहवा एगे सक्करप्पभाए एगे वालुयप्पभाए जाव एगे अहेसत्तमाए होज्जा[5]॥

९४. सत्त भते ! नेरइया नेरइयप्पवेसणएण पविसमाणा कि रयणप्पभाए होज्जा ?—पुच्छा।

गगेया ! रयणप्पभाए वा होज्जा जाव अहेसत्तमाए वा होज्जा।

अहवा एगे रयणप्पभाए छ सक्करप्पभाए होज्जा। एव एएण कमेण जहा छण्ह दुयासजोगो तहा सत्तण्ह वि भाणियव्व, नवर—एगो अब्भहिओ सचारिज्जइ, सेस तं चेव[6]। तियासजोगो[7], चउक्कसजोगो[8], पचसजोगो[9], छक्कसजोगो[10] य छण्ह जहा तहा सत्तण्ह वि भाणियव्व, नवर—एक्केक्को अब्भहिओ[11] सचारेयव्वो जाव छक्कगसजोगो अहवा दो सक्करप्पभाए एगे वालुयप्पभाए जाव एगे अहेसत्तमाए होज्जा[12]। अहवा एगे रयणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए जाव एगे अहेसत्तमाए होज्जा॥

९५ अट्ठ भते ! नेरइया नेरइयप्पवेसणएण पविसमाणा कि रयणप्पभाए होज्जा ?—पुच्छा।

गगेया ! रयणप्पभाए वा होज्जा जाव अहेसत्तमाए वा होज्जा।

अहवा एगे रयणप्पभाए सत्त सक्करप्पभाए होज्जा। एव दुयासजोगो[13] जाव

---

१ त्रिसयोगजा भङ्गा ३५०।
२ चतु सयोगजा भङ्गा ३५०।
३ पञ्चसयोगजा भङ्गा १०५।
४. जाव (अ, क, ता, व, म, स)।
५ षट्सयोगजा भङ्गा ७।
६. द्विसयोगजा भङ्गा १२६।
७ त्रिसयोगजा भङ्गा ५२५।
८. चतु सयोगजा भङ्गा ७००।
९ पचा° (क), पञ्चसयोगजा भङ्गा. ३१५।
१० छक्का° (क, व)।
११ अहिओ (अ), अहितो (क); अधितो (ता)।
१२. षट्सयोगजा भङ्गा ४२।
१३ द्विसयोगजा भङ्गा १४७, त्रिसयोगजा भङ्गा ७३५, चतु सयोगजा भङ्गा १२२५, पञ्चसयोगजा भङ्गा ७३५।

छक्कसजोगो य जहा सत्तण्ह भणिओ तहा अट्ठण्ह वि भाणियव्वो, नवर—एक्केक्को अब्भहिओ सचारेयव्वो, सेस त चेव जाव छक्कगसजोगस्स अहवा तिण्णि सक्करप्पभाए एगे वालुयप्पभाए जाव एगे अहेसत्तमाए होज्जा[1]।
अहवा एगे रयणप्पभाए जाव एगे तमाए दो अहेसत्तमाए होज्जा, अहवा एगे रयणप्पभाए जाव दो तमाए एगे अहेसत्तमाए होज्जा। एव सचारेयव्व जाव अहवा दो रयणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए जाव एगे अहेसत्तमाए होज्जा[2]॥

९६ नव भते! नेरइया नेरइयप्पवेसणएण पविसमाणा कि रयणप्पभाए होज्जा?
—पुच्छा।
गगेया! रयणप्पभाए वा होज्जा जाव अहेसत्तमाए वा होज्जा।
अहवा एगे रयणप्पभाए अट्ठ सक्करप्पभाए होज्जा। एव दुयासजोगो[3] जाव सत्तगसजोगो[4] य जहा अट्ठण्ह भणिय तहा नवण्ह पि भाणियव्व, नवर—एक्केक्को अब्भहिओ सचारेयव्वो, सेसं त चेव पच्छिमो आलावगो—अहवा तिण्णि रयणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए एगे वालुयप्पभाए जाव एगे अहेसत्तमाए होज्जा[5]॥

९७ दस भते! नेरइया नेरइयप्पवेसणएणं पविसमाणा कि रयणप्पभाए होज्जा?
—पुच्छा।
गगेया! रयणप्पभाए वा होज्जा जाव अहेसत्तमाए वा होज्जा।
अहवा एगे रयणप्पभाए नव सक्करप्पभाए होज्जा। एवं दुयासजोगो[6] जाव सत्तसजोगो य जहा नवण्ह, नवर—एक्केक्को अब्भहिओ सचारेयव्वो, सेस त चेव पच्छिमो[7] आलावगो—अहवा चत्तारि रयणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए जाव एगे अहेसत्तमाए होज्जा[8]॥

९८. सखेज्जा भते! नेरइया नेरइयप्पवेसणएण पविसमाणा कि रयणप्पभाए होज्जा?—पुच्छा।
गगेया! रयणप्पभाए वा होज्जा जाव अहेसत्तमाए वा होज्जा।
अहवा एगे रयणप्पभाए सखेज्जा सक्करप्पभाए होज्जा, एव जाव अहवा एगे

---

१. षट्सयोगजा भङ्गा. १४७।
२. सप्तसयोगजा भङ्गा ७।
३ द्विसयोगजा भङ्गा १६८, त्रिसयोगजा भङ्गा ९८०, चतुःसयोगजा भङ्गा. १९६०, पञ्चसयोगजा भङ्गा १४७०, षट्सयोगजा भङ्गा ३९२।
४. वडेंसगसजोगो (अ)।
५ सप्तसयोगजा भङ्गा २८।
६ द्विसंयोगजा भङ्गा १८९, त्रिसयोगजा भङ्गा १२६०, चतुःसयोगजा भङ्गा २९४०, पञ्चसयोगजा भङ्गा २६४६, षट्-सयोगजा भङ्गा ८८२।
७. अपच्छिमो (अ, क, ता, म, स)।
८. सप्तसयोगजा भङ्गा ८४।

रयणप्पभाए संखेज्जा अहेसत्तमाए होज्जा। अहवा दो रयणप्पभाए सखेज्जा सक्करप्पभाए होज्जा, एव जाव अहवा दो रयणप्पभाए सखेज्जा अहेसत्तमाए होज्जा। अहवा तिण्णि रयणप्पभाए सखेज्जा सक्करप्पभाए होज्जा। एव एएण कमेण एक्केक्को सचारेयव्वो जाव अहवा दस रयणप्पभाए सखेज्जा सक्करप्पभाए होज्जा। एव जाव अहवा दस रयणप्पभाए सखेज्जा अहेसत्तमाए होज्जा। अहवा सखेज्जा रयणप्पभाए सखेज्जा सक्करप्पभाए होज्जा जाव अहवा सखेज्जा रयणप्पभाए सखेज्जा अहेसत्तमाए होज्जा। अहवा एगे सक्करप्पभाए सखेज्जा वालुयप्पभाए होज्जा, एव जहा रयणप्पभा उवरिम-पुढवीहि सम चारिया एव सक्करप्पभा वि उवरिमपुढवीहि समं चारेयव्वा, एव एक्केक्का पुढवी उवरिमपुढवीहि सम चारेयव्वा जाव अहवा सखेज्जा तमाए सखेज्जा अहेसत्तमाए होज्जा।

अहवा एगे रयणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए सखेज्जा वालुयप्पभाए होज्जा, अहवा एगे रयणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए सखेज्जा पकप्पभाए होज्जा जाव अहवा एगे रयणप्पभाए एगे सक्करप्पभाए सखेज्जा अहेसत्तमाए होज्जा। अहवा एगे रयणप्पभाए दो सक्करप्पभाए सखेज्जा वालुयप्पभाए होज्जा जाव अहवा एगे रयणप्पभाए दो सक्करप्पभाए सखेज्जा अहेसत्तमाए होज्जा। अहवा एगे रयणप्पभाए तिण्णि सक्करप्पभाए सखेज्जा वालुयप्पभाए होज्जा, एव एएण कमेण एक्केक्को सचारेयव्वो सक्करप्पभाए जाव अहवा एगे रयण-प्पभाए सखेज्जा सक्करप्पभाए सखेज्जा वालुयप्पभाए होज्जा जाव अहवा एगे रयणप्पभाए सखेज्जा वालुयप्पभाए सखेज्जा अहेसत्तमाए होज्जा। अहवा दो रयणप्पभाए सखेज्जा सक्करप्पभाए सखेज्जा वालुयप्पभाए होज्जा जाव अहवा दो रयणप्पभाए सखेज्जा सक्करप्पभाए सखेज्जा अहेसत्तमाए होज्जा। अहवा तिण्णि रयणप्पभाए सखेज्जा सक्करप्पभाए सखेज्जा वालुयप्पभाए होज्जा, एव एएण कमेण एक्केक्को रयणप्पभाए सचारेयव्वो जाव अहवा सखेज्जा रयणप्पभाए सखेज्जा सक्करप्पभाए सखेज्जा वालुयप्पभाए होज्जा जाव अहवा सखेज्जा रयणप्पभाए सखेज्जा सक्करप्पभाए संखेज्जा अहेसत्तमाए होज्जा। अहवा एगे रयणप्पभाए एगे वालुयप्पभाए सखेज्जा पकप्पभाए होज्जा जाव अहवा एगे रयणप्पभाए एगे वालुयप्पभाए सखेज्जा अहेसत्तमाए होज्जा। अहवा एगे रयणप्पभाए दो वालुयप्पभाए सखेज्जा पकप्पभाए होज्जा, एव एएण कमेण तियासजोगो, चउक्कसजोगो जाव सत्तगसजोगो य जहा दसण्ह तहेव भाणियव्वो। पच्छिमो आलावगो सत्तसजोगस्स—अहवा सखेज्जा रयणप्पभाए सखेज्जा सक्करप्पभाए जाव सखेज्जा अहेसत्तमाए होज्जा॥

९९ असखेज्जा भते! नेरइया नेरइयप्पवेसणएण पविसमाणा किं रयणप्पभाए होज्जा?—पुच्छा।

गगेया ! रयणप्पभाए वा होज्जा जाव अहेसत्तमाए वा होज्जा।
अहवा एगे रयणप्पभाए असंखेज्जा सक्करप्पभाए होज्जा, एवं दुयासजोगो जाव सत्तगसजोगो[1] य जहा सखेज्जाण भणिओ तहा असखेज्जाण वि भाणियव्वो, नवर—असखेज्जओ अब्भहिओ भाणियव्वो, सेस तं चेव जाव सत्तगसजोगस्स पच्छिमो आलावगो अहवा असखेज्जा रयणप्पभाए असखेज्जा सक्करप्पभाए जाव असखेज्जा अहेसत्तमाए होज्जा।

१००. उक्कोसेण भते ! नेरइया नेरइयप्पवेसणएण पविसमाणा किं रयणप्पभाए होज्जा ? —पुच्छा।
गगेया ! सव्वे वि ताव रयणप्पभाए होज्जा, अहवा रयणप्पभाए य सक्करप्पभाए य होज्जा, अहवा रयणप्पभाए य वालुयप्पभाए य होज्जा जाव अहवा रयणप्पभाए य अहेसत्तमाए य होज्जा, अहवा रयणप्पभाए य सक्करप्पभाए य वालुयप्पभाए य होज्जा, एव जाव अहवा रयणप्पभाए य सक्करप्पभाए य अहेसत्तमाए य होज्जा, अहवा रयणप्पभाए वालुयप्पभाए पकप्पभाए य होज्जा जाव अहवा रयणप्पभाए वालुयप्पभाए अहेसत्तमाए य होज्जा, अहवा रयणप्पभाए पकप्पभाए धूमाए होज्जा, एव रयणप्पभ अमुयतेसु जहा तिण्ह तियासजोगो भणिओ तहा भाणियव्व जाव अहवा रयणप्पभाए तमाए य अहेसत्तमाए य होज्जा। अहवा रयणप्पभाए य सक्करप्पभाए वालुयप्पभाए पकप्पभाए य होज्जा, अहवा रयणप्पभाए सक्करप्पभाए वालुयप्पभाए धूमप्पभाए य होज्जा जाव अहवा रयणप्पभाए सक्करप्पभाए वालुयप्पभाए अहेसत्तमाए य होज्जा, अहवा रयणप्पभाए सक्करप्पभाए पकप्पभाए धूमप्पभाए य होज्जा एव रयणप्पभ अमुयतेसु जहा चउण्ह चउक्कगसजोगो भणितो तहा भाणियव्व जाव अहवा रयणप्पभाए धूमप्पभाए तमाए अहेसत्तमाए य होज्जा। अहवा रयणप्पभाए सक्करप्पभाए वालुयप्पभाए पकप्पभाए धूमप्पभाए य होज्जा, अहवा रयणप्पभाए जाव पकप्पभाए तमाए य होज्जा, अहवा रयणप्पभाए जाव पकप्पभाए अहेसत्तमाए य होज्जा, अहवा रयणप्पभाए सक्करप्पभाए वालुयप्पभाए धूमप्पभाए तमाए य होज्जा, एव रयणप्पभ अमुयतेसु जहा पचण्ह पचगसजोगो तहा भाणियव्व जाव अहवा रयणप्पभाए पकप्पभाए जाव अहेसत्तमाए य होज्जा, अहवा रयणप्पभाए सक्करप्पभाए जाव धूमप्पभाए तमाए य होज्जा, अहवा रयणप्पभाए जाव धूमप्पभाए अहेसत्तमाए य होज्जा अहवा रयणप्पभाए सक्करप्पभाए जाव पकप्पभाए तमाए य अहेसत्तमाए य होज्जा, अहवा रयणप्पभाए सक्करप्पभाए वालुयप्पभाए धूमप्पभाए तमाए अहेसत्तमाए य होज्जा, अहवा रयणप्पभाए सक्करप्पभाए पकप्पभाए जाव

१. सत्ता°, (अ ता, ब)।

अहेसत्तमाए य होज्जा, अहवा रयणप्पभाए वालुयप्पभाए जाव अहेसत्तमाए य होज्जा, अहवा रयणप्पभाए य सक्करप्पभाए य जाव अहेसत्तमाए य होज्जा ॥

१०१ एयस्स ण भते ! रयणप्पभापुढविनेरइयपवेसणगस्स सक्करप्पभापुढविनेरइयपवेसणगस्स जाव अहेसत्तमापुढविनेरइयपवेसणगस्स कयरे कयरेहिंतो[1] •अप्पा वा ? वहुया वा ? तुल्ला वा ?° विसेसाहिया वा ?
गगेया ! सव्वत्थोवे अहेसत्तमापुढविनेरइयपवेसणए, तमापुढविनेरइयपवेसणए असखेज्जगुणे, एव पडिलोमग[2] जाव रयणप्पभापुढविनेरइयपवेसणए असखेज्जगुणे ॥

१०२ तिरिक्खजोणियपवेसणए ण भते ! कतिविहे पण्णत्ते ?
गगेया ! पचविहे पण्णत्ते, त जहा—एगिंदियतिरिक्खजोणियपवेसणए जाव पचिदियतिरिक्खजोणियपवेसणए ॥

१०३. एगे भते ! तिरिक्खजोणिए तिरिक्खजोणियपवेसणएण पविसमाणे कि एगिंदिएसु होज्जा जाव पचिदिएसु होज्जा ?
गगेया ! एगिंदिएसु वा होज्जा जाव पचिदिएसु वा होज्जा ॥

१०४. दो भते ! तिरिक्खजोणिया तिरिक्खजोणियपवेसणएण—पुच्छा ।
गगेया ! एगिंदिएसु वा होज्जा जाव पचिदिएसु वा होज्जा । अहवा एगे एगिंदिएसु होज्जा एगे वेइंदिएसु होज्जा, एव जहा नेरइयपवेसणए तहा तिरिक्खजोणियपवेसणए वि भाणियव्वे जाव असखेज्जा ॥

१०५. उक्कोसा भते ! तिरिक्खजोणिया तिरिक्खजोणियपवेसणएण—पुच्छा ।
गगेया ! सव्वे वि ताव एगिंदिएसु होज्जा, अहवा एगिंदिएसु वा[3] बेइंदिएसु वा होज्जा । एव जहा नेरइया चारिया तहा तिरिक्खजोणिया वि चारेयव्वा । एगिंदिया अमुयतेसु दुयासजोगो, तियासजोगो, चउक्कसजोगो[4], पचसजोगो[5] उवजुजिऊण[6] भाणियव्वो जाव अहवा एगिंदिएसु वा, बेइंदिएसु वा जाव पचिंदिएसु वा होज्जा ॥

१०६ एयस्स ण भते ! एगिंदियतिरिक्खजोणियपवेसणगस्स जाव पचिंदियतिरिक्खजोणियपवेसणगस्स य कयरे कयरेहितो[7] •अप्पा वा ? बहुया वा ? तुल्ला वा ?° विसेसाहिया वा ?
गगेया ! सव्वथोवे पचिंदियतिरिक्खजोणियपवेसणए, चउरिंदियतिरिक्ख-

---

१ स० पा०—कयरेहिंतो जाव विसेसाहिया ।
२ उप्पडि° (क, ता, व) ।
३. य, (अ, ता), या (क) ।
४. चउक्का° (अ, क, व) ।
५ पचा° (क, व) ।
६ उववज्जिऊण (अ), उवउज्जित्तण (क), उवउज्जिऊण (ता, स) ।
७ स० पा०—कयरेहिंतो जाव विसेसाहिया ।

जोणियपवेसणए विसेसाहिए, तेइंदियतिरिक्खजोणियपवेसणए विसेसाहिए, बेइंदियतिरिक्खजोणियपवेसणए विसेसाहिए, एगिंदियतिरिक्खजोणियपवेसणए विसेसाहिए ।।

१०७ मणुस्सपवेसणए ण भंते ! कतिविहे पण्णत्ते ?
गंगेया ! दुविहे पण्णत्ते, त जहा—समुच्छिममणुस्सपवेसणए, गब्भवक्कतियमणुस्सपवेसणए य ।।

१०८ एगे भंते ! मणुस्से मणुस्सपवेसणएण पविसमाणे किं समुच्छिममणुस्सेसु होज्जा? गब्भवक्कतियमणुस्सेसु होज्जा ?
गंगेया ! समुच्छिममणुस्सेसु वा होज्जा, गब्भवक्कतियमणुस्सेसु वा होज्जा ।।

१०९ दो भंते ! मणुस्सा—पुच्छा ।
गंगेया ! समुच्छिममणुस्सेसु वा होज्जा, गब्भवक्कतियमणुस्सेसु वा होज्जा । अहवा एगे समुच्छिममणुस्सेसु होज्जा एगे गब्भवक्कतियमणुस्सेसु होज्जा, एवं एएण कमेण जहा नेरइयपवेसणए तहा मणुस्सपवेसणए वि भाणियव्वे जाव दस ।।

११० संखेज्जा भंते ! मणुस्सा—पुच्छा ।
गंगेया ! समुच्छिममणुस्सेसु वा होज्जा, गब्भवक्कतियमणुस्सेसु वा होज्जा । अहवा एगे समुच्छिममणुस्सेसु होज्जा संखेज्जा गब्भवक्कतियमणुस्सेसु होज्जा, अहवा दो समुच्छिममणुस्सेसु होज्जा संखेज्जा गब्भवक्कतियमणुस्सेसु होज्जा, एवं एक्केक्कं उस्सारितेसु जाव अहवा संखेज्जा समुच्छिममणुस्सेसु होज्जा संखेज्जा गब्भवक्कतियमणुस्सेसु होज्जा ।।

१११. असंखेज्जा भंते ! मणुस्सा—पुच्छा ।
गंगेया ! सव्वे वि ताव समुच्छिममणुस्सेसु होज्जा । अहवा असंखेज्जा समुच्छिममणुस्सेसु एगे गब्भवक्कतियमणुस्सेसु होज्जा, अहवा असंखेज्जा समुच्छिममणुस्सेसु दो गब्भवक्कतियमणुस्सेसु होज्जा, एवं जाव असंखेज्जा समुच्छिममणुस्सेसु होज्जा संखेज्जा गब्भवक्कतियमणुस्सेसु होज्जा ।।

११२. उक्कोसा भंते ! मणुस्सा—पुच्छा ।
गंगेया ! सव्वे वि ताव समुच्छिममणुस्सेसु होज्जा । अहवा समुच्छिममणुस्सेसु य गब्भवक्कतियमणुस्सेसु य होज्जा ।।

११३ एयस्स णं भंते ! समुच्छिममणुस्सपवेसणगस्स गब्भवक्कतियमणुस्सपवेसणगस्स य कयरे कयरेहिंतो[1] °अप्पा वा ? बहुया वा ? तुल्ला वा ?° विसेसाहिया वा ?

---

१ स० पा०—कयरेहिंतो जाव विसेसाहिया ।

गंगेया ! सव्वत्थोवे गब्भवक्कंतियमणुस्सपवेसणए समुच्छिममणुस्सपवेसणए असखेज्जगुणे ॥

११४. देवपवेसणए णं भंते ! कतिविहे पण्णत्ते ?
गंगेया ! चउव्विहे पण्णत्ते, तं जहा—भवणवासिदेवपवेसणए जाव वेमाणिय-देवपवेसणए ॥

११५. एगे भंते ! देवे देवपवेसणएणं पविसमाणे किं भवणवासीसु होज्जा ? वाणमंतर-जोइसिय-वेमाणिएसु होज्जा ?
गंगेया ! भवणवासीसु वा होज्जा, वाणमंतर-जोइसिय-वेमाणिएसु वा होज्जा ॥

११६. दो भंते ! देवा देवपवेसणएणं—पुच्छा ।
गंगेया ! भवणवासीसु वा होज्जा, वाणमंतर-जोइसिय-वेमाणिएसु वा होज्जा । अहवा एगे भवणवासीसु एगे वाणमंतरेसु होज्जा, एवं जहा तिरिक्खजोणिय-पवेसणए तहा देवपवेसणए वि भाणियव्वे जाव असंखेज्ज त्ति ॥

११७. उक्कोसा भंते ! —पुच्छा ।
गंगेया ! सव्वे वि ताव जोइसिएसु होज्जा, अहवा जोइसिय-भवणवासीसु य होज्जा, अहवा जोइसिय-वाणमंतरेसु य होज्जा, अहवा जोइसिय-वेमाणिएसु य होज्जा, अहवा जोइसिएसु य भवणवासीसु य वाणमंतरेसु य होज्जा, अहवा जोइसिएसु य भवणवासीसु ए वेमाणिएसु य होज्जा, अहवा जोइसिएसु य वाणमंतरेसु य वेमाणिएसु य होज्जा, अहवा जोइसिएसु य भवणवासीसु य वाणमंतरेसु य वेमाणिएसु य होज्जा ॥

११८. एयस्स णं भंते ! भवणवासिदेवपवेसणगस्स, वाणमंतरदेवपवेसणगस्स, जोइसियदेवपवेसणगस्स, वेमाणियदेवपवेसणगस्स य कयरे कयरेहिंतो[1] °अप्पा वा ? बहुया वा ? तुल्ला वा ?° विसेसाहिया वा ?
गंगेया ! सव्वत्थोवे वेमाणियदेवपवेसणए, भवणवासिदेवपवेसणए असंखेज्ज-गुणे, वाणमंतरदेवपवेसणए असंखेज्जगुणे, जोइसियदेवपवेसणए संखेज्जगुणे ॥

११९. एयस्स णं भंते ! नेरइयपवेसणगस्स तिरिक्खजोणियपवेसणगस्स मणुस्सपवेसण-गस्स देवपवेसणगस्स य कयरे कयरेहिंतो[2] °अप्पा वा ? बहुया वा ? तुल्ला वा ?° विसेसाहिया वा ?
गंगेया ! सव्वत्थोवे मणुस्सपवेसणए, नेरइयपवेसणए असंखेज्जगुणे, देवपवेसणए असंखेज्जगुणे, तिरिक्खजोणियपवेसणए असंखेज्जगुणे ॥

---

१. सं० पा०—कयरेहिंतो जाव विसेसाहिया । २. सं० पा०—कयरेहिंतो जाव विसेसाहिया ।

संतर-निरंतर-उववज्जणादि-पदं

१२० संतरं[1] भंते ! नेरइया उववज्जंति निरंतरं नेरइया उववज्जंति संतरं असुरकुमारा उववज्जंति निरंतरं असुरकुमारा उववज्जंति जाव संतरं वेमाणिया उववज्जंति निरंतरं वेमाणिया उववज्जंति ?
संतरं नेरइया उव्वट्टंति निरंतरं नेरइया उव्वट्टंति जाव संतरं वाणमंतरा उव्वट्टंति निरंतरं वाणमंतरा उव्वट्टंति ? संतरं जोइसिया चयंति निरंतरं जोइसिया चयंति संतरं वेमाणिया चयंति निरंतरं वेमाणिया चयंति ?
गंगेया ! संतरं पि नेरइया उववज्जंति निरंतरं पि नेरइया उववज्जंति जाव संतरं पि थणियकुमारा उववज्जंति निरंतरं पि थणियकुमारा उववज्जंति, नो संतरं पुढविक्काइया उववज्जंति निरंतरं पुढविक्काइया उववज्जंति, एवं जाव वणस्सइकाइया। सेसा जहा नेरइया जाव संतरं पि वेमाणिया उववज्जंति निरंतरं पि वेमाणिया उववज्जंति ।
संतरं पि नेरइया उव्वट्टंति निरंतरं पि नेरइया उव्वट्टंति, एवं जाव थणियकुमारा । नो संतरं पुढविक्काइया उव्वट्टंति निरंतरं पुढविक्काइया उव्वट्टंति, एवं जाव वणस्सइकाइया। सेसा जहा नेरइया, नवरं—जोइसिय-वेमाणिया चयंति अभिलावो जाव संतरं पि वेमाणिया चयंति निरंतरं पि वेमाणिया चयंति ॥

संतो असंतो उववज्जणादि-पदं

१२१ संतो[2] भंते ! नेरइया उववज्जंति, असंतो[3] नेरइया उववज्जंति, संतो असुर-कुमारा उववज्जंति जाव संतो वेमाणिया उववज्जंति, असंतो वेमाणिया उववज्जंति ? संतो नेरइया उव्वट्टंति, असंतो नेरइया उव्वट्टंति, संतो असुर-कुमारा उव्वट्टंति जाव संतो वेमाणिया चयंति, असंतो वेमाणिया चयंति ?

---

१. सांतर (क, ता, व, म)।

२ अस्मिन् प्रकरणे द्वयोर्वाचनायोर्मिश्रणं दृश्यते। प्रथमा वाचना किञ्चित् संक्षिप्तास्ति, द्वितीया च किञ्चिद् विस्तृता। एतत् मिश्रणं वृत्ति-रचनात् उत्तरकालमेव जातं सम्भाव्यते, तेनैव वृत्तिकृता नास्मिन् विषये किञ्चिद् लिखितम्। आदर्शेषु च प्राप्यते। अस्माभि-र्वृत्तिमनुसृत्य एका वाचना स्वीकृता, द्वितीया च पाठान्तरे न्यस्ता, यथा—
'संतो भंते ! नेरइया उववज्जंति ? असंतो नेरइया उववज्जंति ? गंगेया ! संतो नेरइया उववज्जंति, नो असंतो नेरइया उववज्जंति। एवं जाव वेमाणिया।
'संतो भंते ! नेरइया उव्वट्टंति ? असंतो नेरइया उव्वट्टंति ? गंगेया ! संतो नेरइया उव्वट्टंति, नो असंतो नेरइया उव्वट्टंति। एवं जाव वेमाणिया, नवरं—जोइसिय-वेमाणिएसु चयंति भाणियव्वं।'

३ असओ (ता)।

गगेया ! सतो नेरइया उववज्जति, नो असतो नेरइया उववज्जंति, सतो असुरकुमारा उववज्जति, नो असतो असुरकुमारा उववज्जति जाव सतो वेमाणिया उववज्जति, नो असतो वेमाणिया उववज्जति, सतो नेरइया उव्वट्टति, नो असतो नेरइया उव्वट्टति जाव सतो वेमाणिया चयति, नो असतो वेमाणिया चयति ।।

१२२ से केणट्ठेण भते ! एव वुच्चइ—सतो नेरइया उववज्जति, नो असतो नेरइया उववज्जति जाव सतो वेमाणिया चयति, नो असतो वेमाणिया चयति ?

से नूण भे[1] गगेया ! पासेण अरहया पुरिसादाणीएण सासए लोए बुइए अणादीए अणवदग्गे [2]•परित्ते परिवुडे हेट्ठा विच्छिण्णे, मज्झे सखित्ते, उप्पि विसाले; अहे पलियकसठिए, मज्झे वरवइरविग्गहिए, उप्पि उद्धमुइगाकार-सठिए। तसि च ण सासयसि लोगसि अणादियसि अणवदग्गसि परित्तसि परिवुडसि हेट्ठा विच्छिण्णसि, मज्झे सखित्तसि, उप्पि विसालसि, अहे पलियकसठियसि, मज्झे वरवइरविग्गहियसि, उप्पि उद्धमुइगाकारसठियसि अणता जीवघणा उप्पज्जित्ता-उप्पज्जित्ता निलीयति, परित्ता जीवघणा उप्पज्जित्ता-उप्पज्जित्ता निलीयति ।

से भूए उप्पण्णे विगए परिणए, अजीवेहि लोक्कइ पलोक्कइ°, जे लोक्कइ से लोए। से तेणट्ठेण गगेया! एव वुच्चइ—जाव सतो वेमाणिया चयति, नो असतो वेमाणिया चयति ।।

सतो परतो वा जाणणा-पदं

१२३ सय[3] भते ! एतेव[4] जाणह, उदाहु असय, असोच्चा एतेव जाणह, उदाहु सोच्चा—सतो नेरइया उववज्जति, नो असतो नेरइया उववज्जति जाव सतो वेमाणिया, चयति, नो असतो वेमाणिया चयति ?

गगेया ! सय एतेव जाणामि, नो असय, असोच्चा एतेव जाणामि, नो सोच्चा—सतो नेरइया उववज्जति, नो असतो नेरइया उववज्जति जाव सतो वेमाणिया चयति, नो असतो वेमाणिया चयति ।।

१२४ से केणट्ठेण भते ! एव वुच्चइ—[5]•सय एतेव जाणामि, नो असय, असोच्चा एतेव जाणामि, नो सोच्चा—सतो नेरइया उववज्जति, नो असतो नेरइया उववज्जति जाव सतो वेमाणिया चयति°, नो असतो वेमाणिया चयति ?

---

१ ते (अ) ।
२ स० पा०—जहा पचमसए जाव जे ।
३ सत (क, ता) ।
४ एव (अ, क); एते एव (ता), एय एव (व)
५ स० पा०—त चेव जाव नो ।

गंगेया ! केवली णं पुरत्थिमे णं मियं पि जाणइ, अमियं पि जाणइ। दाहिणे णं, [1]●पच्चत्थिमे णं, उत्तरे णं, उड्ढं, अहे मियं पि जाणइ, अमियं पि जाणइ।
सव्वं जाणइ केवली, सव्वं पासइ केवली।
सव्वओ जाणइ केवली, सव्वओ पासइ केवली।
सव्वकालं जाणइ केवली, सव्वकालं पासइ केवली।
सव्वभावे जाणइ केवली, सव्वभावे पासइ केवली।
अणंते नाणे केवलिस्स, अणंते दंसणे केवलिस्स।
निव्वुडे नाणे केवलिस्स, निव्वुडे दंसणे केवलिस्स०। से तेणट्ठेणं गंगेया ! एवं वुच्चइ—सयं एतेवं जाणामि, नो असयं असोच्चा एतेवं जाणामि, नो सोच्चा—तं चेव जाव नो असतो वेमाणिया चयंति॥

सयं असयं उववज्जणा-पदं

१२५ सयं भंते ! नेरइया नेरइएसु उववज्जंति ? असयं नेरइया नेरइएसु उववज्जंति ?
गंगेया ! सयं नेरइया नेरइएसु उववज्जंति, नो असयं नेरइया नेरइएसु उववज्जंति॥

१२६ से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ[2]—●सयं नेरइया नेरइएसु उववज्जंति, नो असयं नेरइया नेरइएसु० उववज्जंति ?
गंगेया ! कम्मोदएणं, कम्मगुरुयत्ताए, कम्मभारियत्ताए, कम्मगुरुसंभारियत्ताए, असुभाणं कम्माणं उदएणं, असुभाणं कम्माणं विवागेणं, असुभाणं कम्माणं फलविवागेणं सयं नेरइया नेरइएसु उववज्जंति, नो असयं नेरइया नेरइएसु उववज्जंति। से तेणट्ठेणं गंगेया[3] ! ●एवं वुच्चइ—सयं नेरइया नेरइएसु उववज्जंति, नो असयं नेरइया नेरइएसु० उववज्जंति॥

१२७ सयं भंते ! असुरकुमारा—पुच्छा।
गंगेया ! सयं असुरकुमारा[4] ●असुरकुमारेसु० उववज्जंति, नो असयं असुरकुमारा[5] ●असुरकुमारेसु० उववज्जंति॥

१२८. से केणट्ठेणं तं चेव जाव उववज्जंति ?
गंगेया ! कम्मोदएणं[6], कम्मविगतीए[7], कम्मविसोहीए, कम्मविसुद्धीए, सुभाणं कम्माणं उदएणं, सुभाणं कम्माणं विवागेणं सुभाणं कम्माणं फलविवागेणं सयं

---

१. स० पा०—एवं जहा सद्दुद्देसए जाव निव्वुडे नाणे केवलिस्स।
२. म० पा०—वुच्चइ जाव उववज्जंति।
३. म० पा०—गंगेया जाव उववज्जंति।
४. म० पा०—असुरकुमारा जाव उववज्जंति।
५. स० पा०—असुरकुमारा जाव उववज्जंति।
६. कम्मोदएणं कम्मोवसमेणं (अ, क, वृपा)।
७. कम्मविगयत्ताए (ता)।

असुरकुमारा असुरकुमारत्ताए उववज्जति, नो असय असुरकुमारा[1] •असरकुमारत्ताए° उववज्जति । से तेणट्ठेण जाव उववज्जंति । एव जाव थणियकुमारा ।।

१२९. सय भते ! पुढविक्काइया—पुच्छा ।
गगेया ! सय पुढविक्काइया[2] •पुढविक्काइएसु° उववज्जति नो असय पुढविक्काइया[3] •पुढविक्काइएसु ° उववज्जति ।।

१३० से केणट्ठेण जाव उववज्जति ?
गगेया ! कम्मोदएण, कम्मगुरुयत्ताए, कम्मभारियत्ताए, कम्मगुरुसभारियत्ताए, सुभासुभाण कम्माण उदएण, सुभासुभाण कम्माण विवागेण, सुभासुभाण कम्माण फलविवागेण सय पुढविक्काइया[4] •पुढविक्काइएसु° उववज्जति, नो असय पुढविक्काइया[5] •पुढविक्काइएसु° उववज्जति । से तेणट्ठेण जाव उववज्जति ।।

१३१ एव जाव मणुस्सा ।।

१३२. वाणमतर-जोइसिय-वेमाणिया जहा असुरकुमारा । से तेणट्ठेण गगेया ! एव वुच्चइ—सय वेमाणिया[6] •वेमाणिएसु° उववज्जति, नो असय[7] •वेमाणिया वेमाणिएसु° उववज्जति ।।

गंगेयस्स संबोधि-पद

१३३ तप्पभिर्ति च ण से गगेये अणगारे समण भगव महावीर पच्चभिजाणइ सव्वण्णु सव्वदरिसि । तए ण से गगेये अणगारे समण भगव महावीर तिक्खुत्तो आयहिण-पयाहिण करेइ, करेत्ता वदइ नमसइ, वदित्ता नमसित्ता एव वयासी—इच्छामि ण भते ! तुब्भ अतिय चाउज्जामाओ धम्माओ पचमहव्वइय '•सपडिक्कमण धम्म उवसपज्जित्ता ण विहरित्तए ।
अहासुह देवाणुप्पिया ! मा पडिवध ।।

१३४ तए ण से गगेये अणगारे समण भगव महावीर वदइ नमसइ, वदित्ता नमसित्ता चाउज्जामाओ धम्माओ पचमहव्वइय सपडिक्कमण धम्म उवसपज्जित्ता ण विहरति ।।

१३५ तए ण से गगेये अणगारे वहूणि वासाणि सामण्णपरियाग पाउणइ, पाउणित्ता

---

१ स० पा०—असुरकुमारा जाव उववज्जति ।
२ स० पा०—पुढविक्काइया जाव उववज्जति ।
३ स० पा०—पुढविक्काइया जाव उववज्जति ।
४ स० पा०—पुढविक्काइया जाव उववज्जति ।
५. स० पा०—पुढविक्काइया जाव उववज्जति ।
६ स० पा०—वेमाणिया जाव उववज्जति ।
७ स० पा०—असय जाव उववज्जति ।
८ स० पा०—एव जहा कालासवेसियपुत्तो तहेव भाणियव्व जाव सव्वदुक्खप्पहीणे ।

जस्सट्ठाए कीरइ नग्गभावे मुंडभावे अण्हाणय अदंतवणय अच्छत्तय अणोवाहणय भूमिसेज्जा फलहसेज्जा कट्ठसेज्जा केसलोओ बंभचेरवासो परघरप्पवेसो लद्धावलद्धी उच्चावया गामकंटगा बावीसं परिसहोवसग्गा अहियासिज्जंति, तमट्ठं आराहेइ, आराहेत्ता चरमेहिं उस्सास-नीसासेहिं सिद्धे बुद्धे मुक्के परिनिव्वुडे° सव्वदुक्खप्पहीणे ॥

१३६ सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति[1] ॥

तेत्तीसइमो उद्देसो

उसभदत्त-देवाणंदा-पदं

१३७ तेणं कालेणं तेणं समएणं माहणकुंडग्गामे नयरे होत्था—वण्णओ[2]। बहुसालए चेइए—वण्णओ[3]। तत्थ णं माहणकुंडग्गामे नयरे उसभदत्ते नामं माहणे परिवसइ—अड्ढे दित्ते वित्ते जाव[4] बहुजणस्स अपरिभूए रिव्वेद[5]-जजुव्वेद[6]-सामवेद-अथव्वणवेद-[7]•इतिहासपंचमाणं निघंटुछट्ठाणं—चउण्हं वेदाणं संगोवंगाणं सरहस्साणं सारए धारए पारए सडंगवी सट्ठितंतविसारए, संखाणे सिक्खाकप्पे वागरणे छंदे निरुत्ते जोतिसामयणे°, अण्णेसु य बहूसु बंभण्णएसु नयेसु सुपरिनिट्ठिए समणोवासए अभिगयजीवाजीवे[8] उवलद्धपुण्णपावे जाव[9] अहापरिग्गहिएहिं तवोकम्मेहिं अप्पाणं भावेमाणे विहरइ। तस्स णं उसभदत्तस्स माहणस्स देवाणंदा नामं माहणी होत्था—सुकुमालपाणिपाया जाव[10] पियदंसणा सुरूवा समणोवासिया अभिगयजीवाजीवा उवलद्धपुण्णपावा जाव अहापरिग्गहिएहिं तवोकम्मेहिं अप्पाणं भावेमाणी विहरइ ॥

१३८ तेणं कालेणं तेणं समएणं सामी समोसढे। परिसा पज्जुवासइ ॥

---

१ भ० १।५१।
२. ओ० सू० १।
३ ओ० सू० २-१३।
४ भ० २।९४।
५ रिउवेद (अ, स); रिउव्वेद (क), रुव्वेद (म)
६ यजुवेद (अ), यजुव्वेद (म)।
७ सं० पा०—जहा खंदओ जाव अण्णेसु।
८ अधिगत° (ता), अहिगय° (ब, म)।
९ भ० २।९४।
१०. ओ० सू० १५।

१३९ तए ण से उसभदत्ते माहणे इमोसे कहाए लद्धट्ठे समाणे हट्ठ[1]•तुट्ठचित्तमाणदिए णदिए पीइमणे परमसोमणस्सिए हरिसवसविसप्पमाण°हियए जेणेव देवाणदा माहणी तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता देवाणद माहणि एवं वयासी—एव खलु देवाणुप्पिए ! समणे भगव महावीरे आदिगरे जाव[2] सव्वण्णू सव्वदरिसी आगासगएण चक्केण जाव[3] सुहसुहेण विहरमाणे वहुसालए चेइए अहापडिरूव[4] •ओग्गह ओगिण्हित्ता सजमेण तवसा अप्पाण भावेमाणे° विहरइ। त महप्फल खलु देवाणुप्पिए ! तहारूवाण अरहताण भगवताण नामगोयस्स वि सवणयाए, किमग पुण अभिगमण-वदण-नमसण-पडिपुच्छण-पज्जुवासणयाए ? एगस्स वि आरियस्स[5] धम्मियस्स सुवयणस्स सवणयाए, किमग पुण विउलस्स अट्ठस्स गहणयाए ? त गच्छामो ण देवाणुप्पिए ! समण भगवं महावीर वदामो नमसामो[6] •सक्कारेमो सम्माणेमो कल्लाण मगल देवय चेइय° पज्जुवासमो। एय णे इहभवे य परभवे य हियाए सुहाए खमाए निस्सेसाए[7] आणुगामियत्ताए भविस्सइ ॥

१४० तए ण सा देवाणदा माहणी उसभदत्तेण माहणेणं एव वुत्ता समाणी हट्ठ[8]•तुट्ठचित्तमाणदिया णदिया पीइमणा परमसोमणस्सिया हरिसवसविसप्पमाण° हियया करयल[9] •परिग्गहिय दसनह सिरसावत्त मत्थए अजलि° कट्टु उसभदत्तस्स माहणस्स एयमट्ठ विणएण पडिसुणेइ ॥

१४१ तए ण से उसभदत्ते माहणे कोडुवियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी—खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया ! लहुकरणजुत्त-जोइय-समखुरवालिहाण-समलिहियसिगेहि[10], जवूणयामयकलावजुत्त-पतिविसिट्ठेहि[11], रययामयघटा-सुत्तरज्जुय-पवरकचणनत्थपग्गहोग्गहियएहिं, नोलुप्पलकयामेलएहि, पवरगोणजुवाणएहिं नाणामणिरयण-घटियाजालपरिगय, सुजायजुग-जोत्तरज्जुयजुग-पसत्थसुविरचियनिमिय, पवरलक्खणोववेय-धम्मिय जाणप्पवर जुत्तामेव उवट्ठवेह, उवट्ठवेत्ता मम एतमाणत्तिय पच्चप्पिणह ॥

१४२ तए ण ते कोडुबियपुरिसा उसभदत्तेण माहणेण एव वुत्ता समाणा हट्ठ[12]•तुट्ठचित्तमाणदिया णदिया पीइमणा परमसोमणस्सिया हरिसवसविसप्पमाण°हियया

---

१. स० पा०—हट्ठ जाव हियए।
२. भ० १।७।
३ ओ० सू० १६।
४ स० पा०—अहापडिरूव जाव विहरइ।
५. आयरियस्स (अ, स)।
६ स० पा०—नमसामो जाव पज्जुवासामो।
७. × (क, ता, व, म), निस्सेयसाए (भ० २।३०)।
८ स० पा०—हट्ठ जाव हियया।
९ स० पा०—करयल जाव कट्टु।
१० ° संगएहिं (ता, म)।
११ परिविसट्ठेहि (अ, स), पविसिट्ठेहिं (क, ता)।
१२ स० पा०—हट्ठ जाव हियया।

करयल[1]•परिग्गहिय दसनह सिरसावत्त मत्थए अजलि कट्टु ° एव सामी ! तहत्ताणाए विणएण वयण पडिसुणेति[2], पडिसुणेत्ता खिप्पामेव लहुकरणजुत्त जाव धम्मिय जाणप्पवर जुत्तामेव उवट्ठवेत्ता[3] तमाणत्तिय पच्चप्पिणति ।।

१४३. तए ण से उसभदत्ते माहणे ण्हाए जाव[4] अप्पमहग्घाभरणालकियसरीरे साओ गिहाओ पडिणिक्खमति, पडिणिक्खमित्ता जेणेव बाहिरिया उवट्ठाणसाला जेणेव धम्मिए जाणप्पवरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता धम्मिय जाणप्पवर दुरूढे[5] ।।

१४४ तए ण सा देवाणदा माहणी ण्हाया[6] जाव[7]-अप्पमहग्घाभरणालकियसरीरा बहूहि खुज्जाहि, चिलातियाहि जाव[8] चेडियाचक्कवाल-वरिसधर-थेरकचुइज्ज-महत्तरगवदपरिक्खित्ता अतेउराओ निग्गच्छति, निग्गच्छित्ता जेणेव बाहिरिया उवट्ठाणसाला, जेणेव धम्मिए जाणप्पवरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता धम्मिय[9] जाणप्पवर दुरूढा ।।

१४५ तए ण से उसभदत्ते माहणे देवाणदाए माहणीए सद्धि धम्मिय जाणप्पवर दुरूढे समाणे नियगपरियालसपरिवुडे माहणकुडग्गाम नगर मज्झमज्झेण निग्गच्छइ, निग्गच्छित्ता जेणेव बहुसालए चेइए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता छत्तादीए[10] तित्थकरातिसए पासइ, पासित्ता धम्मिय जाणप्पवर ठवेइ, ठवेत्ता धम्मियाओ जाणप्पवराओ पच्चोरुहइ, पच्चोरुहित्ता समण भगव महावीरं पचविहेण अभिगमेण अभिगच्छाति, [त जहा—१ सच्चित्ताण दव्वाण

---

१ स० पा०—करयल ।

२ जाव (अ, क, ता, ब, म, स) ।

३. उवट्ठवेत्ता जाव (अ, क, ता, ब, म, स) ।

४. भ० ३।३३ ।

५ दूरूढे (ता) ।

६. वाचनान्तरे देवानन्दावर्णक एव दृश्यते—अतो अतेउरसि ण्हाया कयवलिकम्मा कय-कोउय-मगल-पायच्छित्ता, किच [किंते (व)]—वरपादपत्तणेउर-मणिमेहला-हाररचित-उचिय-कडग-खुड्डाग-एकावली-कठसुत्त-उरत्थगेवेज्ज-सोणिसुत्तग-नाणामणि-रयणभूसणविराइयगी, चीणमुयवत्थपवरपरिहिया, दुगुल्लसुकुमाल उत्तरिज्जा, सव्वोतुयसुरभिकुसुमवरियसिरया, वरचदणवदिना, वराभरणभूसितंगी, कालागरुधूवधूविया, सिरिसमाणवेसा (वृ) ।

७ भ० ३।३३ ।

८ वामणीहि वडभीहिं वब्बरीहिं वउसियाहिं जोणियाहिं पल्हवियाहिं ईसिगिणियाहिं चारु (वास) गिणियाहिं ल्हासियाहिं लउसियाहिं आरवीहिं दमिलीहिं सिहलीहिं पुलिंदीहि पक्कणीहिं(पुक्कलीहिं) बहलीहिं सुरुडीहिं सवरीहिं पारसीहिं णाणादेस-विदेसपरिपिंडियाहिं सदेसनेवत्थगहियवेसाहिं इगित-चिंतित-पत्थिय-वियाणियाहिं कुसलाहिं विणीयाहिं (अ, ता, ब, स), इद च सर्वं वाचनान्तरे साक्षादेवास्ति (वृ) ।

९ जाव धम्मिय (अ, क, ता, ब, म, स) ।

१०. चुत्तीसाए (म) ।

विश्रोसरणयाए [1]•२. श्रचित्ताण दव्वाण श्रविश्रोसरणयाए ३. एगसाडिएणं उत्तरासंगकरणेण ४ चक्खुप्फासे श्रजलिप्पग्गहेण ५. मणसो एगत्तीकरणेण][2] जेणेव समणे भगव महावीरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता तिक्खुत्तो श्रायाहिण-पयाहिण करेइ, करेत्ता वदइ नमसइ, वदित्ता नमसित्ता° तिविहाए पज्जुवासणाए पज्जुवासइ ॥

१४६. तए ण सा देवाणदा माहणी धम्मियाश्रो जाणप्पवराश्रो पच्चोरुहति, पच्चोरुहित्ता वहूहिं खुज्जाहि जाव[3] चेडियाचक्कवाल-वरिसधर-थेरकचुइज्ज-महत्तरग-वदपरिक्खित्ता समण भगव महावीर पचविहेण श्रभिगमेण श्रभिगच्छइ, [त जहा—१. सचित्ताण दव्वाण विश्रोसरणयाए २ श्रचित्ताण दव्वाण श्रविमोयणयाए ३. विणयोणयाए गायलट्ठीए ४ चक्खुप्फासे श्रजलिपग्गहेणं ५. मणस्स एगत्तीभावकरणेण][4] जेणेव समणे भगव महावीरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता समण भगव महावीर तिक्खुत्तो श्रायाहिण-पयाहिण करेइ, करेत्ता वदइ नमसइ, वदित्ता नमसित्ता उसभदत्त माहण पुरश्रो कट्टु ठिया चेव सपरिवारा सुस्सूसमाणी नमसमाणी श्रभिमुहा विणएण पजलिकडा[5] पज्जुवासइ ॥

१४७ तए ण सा देवाणदा माहणी श्रागयपण्हया पप्पुयलोयणा[6] सवरियवलयबाहा कचुयपरिक्खित्तिया धाराहयकलवग पिव समूसवियरोमकूवा समणं भगव महावीर श्रणिमिसाए दिट्ठीए देहमाणी-देहमाणी चिट्ठइ ॥

१४८ भतेति ! भगव गोयमे समणं भगव महावीर वदइ नमसइ, वदित्ता नमसित्ता एव वयासी—किं ण भते ! एसा देवाणदा माहणी श्रागयपण्हया [7]•पप्पुयलोयणा सवरियवलयबाहा कचुयपरिक्खित्तिया धाराहयकलवग पिव समूसविय° रोमकूवा देवाणुप्पिय श्रणिमिसाए दिट्ठीए देहमाणी-देहमाणी चिट्ठइ ?
गोयमादि[8] ! समणे भगव महावीरे भगव गोयम एव वयासी—एव खलु गोयमा ! देवाणदा माहणी मम श्रम्मगा, श्रहण्ण देवाणदाए माहणीए श्रत्तए । 'तण्ण एसा[9] देवाणदा माहणी तेण पुव्वपुत्तसिणेहरागेण श्रागयपण्हया[10] •पप्पुयलोयणा, सवरियवलयबाहा कचुयपरिक्खित्तिया धाराहयकलबग पिव° समूसवियरोमकूवा मम श्रणिमिसाए दिट्ठीए देहमाणी-देहमाणी चिट्ठइ ॥

---

१. स० पा०—एव जहा वितियसए जाव तिविहाए ।
२. कोष्ठकवर्ती पाठो व्याख्याश प्रतीयते ।
३. भ० ६।१४४ ।
४. कोष्ठकवर्ती पाठो व्याख्याश प्रतीयते ।
५. पजलिउडा (अ) ।
६ पप्फुय° (अ, ता, स), पप्फुल्ल° (क) ।
७ स० पा०—त चेव जाव रोमकूवा ।
८ गोयमादी (क, ता, व, म) ।
९ तए ण सा (अ, म) ।
१० स० पा०—आगयपण्हया जाव समूसविय° ।

१४९. तए णं समणे भगवं महावीरे उसभदत्तस्स माहणस्स देवाणंदाए माहणीए तीसे य महतिमहालियाए इसिपरिसाए[1] ●मुणिपरिसाए जइपरिसाए देवपरिसाए अणेगसयाए अणेगसयवंदाए अणेगसयवंदपरियालाए ओहबले अइबले महब्बले अपरिमियबल-वीरिय-तेय-माहप्प-कंति-जुत्ते सारय-नवत्थणिय-महुरगभीर-कोंचणिग्घोस-दुंदुभिस्सरे उरे वित्थडाए कंठे वट्टियाए सिरे समाइण्णाए अगर-लाए अमम्मणाए सुव्वत्तक्खर-सण्णिवाइयाए पुण्णरत्ताए सव्वभासाणुगामिणीए सरस्सईए जोयणणीहारिणा सरेण अद्धमागहाए भासाए भासइ—धम्मं परि-कहेइ० जाव[2] परिसा पडिगया ।।

१५०. तए णं से उसभदत्ते माहणे समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतियं[3] धम्मं सोच्चा निसम्म हट्ठतुट्ठे उट्ठाए उट्ठेइ, उट्ठेत्ता समणं भगवं महावीरं तिक्खुत्तो[4]● आयाहिण-पयाहिणं करेइ, करेत्ता वंदइ नमंसइ, वंदित्ता० नमंसित्ता एवं वदासी—एवमेयं भंते ! तहमेयं भंते ! [5]●अवितहमेयं भंते ! असंदिद्धमेयं भंते ! इच्छियमेयं भंते ! पडिच्छियमेयं भंते ! इच्छिय-पडिच्छियमेयं भंते ! ० —से जहेयं तुब्भे वदह त्ति कट्टु उत्तरपुरत्थिमं दिसिभागं अवक्कमति, अवक्कमित्ता सयमेव आभरणमल्लालंकारं ओमुयइ, ओमुइत्ता सयमेव पंचमुट्ठियं लोयं करेइ, करेत्ता जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता समणं भगवं महावीरं तिक्खुत्तो आयाहिण-पयाहिणं करेइ[6], ●करेत्ता वंदइ नमंसइ, वंदित्ता० नमंसित्ता एवं वयासी—आलित्ते णं भंते ! लोए, पलित्ते णं भंते ! लोए, आलित्त-पलित्ते णं भंते ! लोए जराए मरणेण य ।

[7]●से जहानामाए केइ गाहावई अगारंसि झियायमाणंसि जे से तत्थ भंडे भवइ अप्पभारे मोल्लगरुए, तं गहाय आयाए एगंतमंतं अवक्कमइ । एस मे नित्थारिए समाणे पच्छा पुरा य हियाए सुहाए खमाए निस्सेयसाए आणुगामियत्ताए भविस्सइ ।

एवामेव देवाणुप्पिया ! मज्झ वि आया एगे भंडे इट्ठे कंते पिए मणुण्णे मणामे थेज्जे वेस्सासिए सम्मए बहुमए अणुमए भंडकरंडगसमाणे, मा णं सीयं, मा णं उण्हं, मा णं खुहा, मा णं पिवासा, मा णं चोरा, मा णं वाला, मा णं दंसा, मा णं मसया, मा णं वाइय-पित्तिय-सेंभिय-सन्निवाइय विविहा रोगायंका परीस-होवसग्गा फुसंतु त्ति कट्टु एस मे नित्थारिए समाणे परलोयस्स हियाए सुहाए खमाए नीसेसाए आणुगामियत्ताए भविस्सइ ।

---

१ सं० पा०—इसिपरिसाए जाव ।
२. ओ० सू० ७१-७९ ।
३ अंतिए (ता) ।
४, सं० पा०—तिक्खुत्तो जाव नमंसित्ता ।
५. सं० पा०—जहा खंदओ जाव से ।
६ सं० पा०—करेइ जाव नमंसित्ता ।
७. सं० पा०—एवं एएणं कमेणं जहा खंदओ तहेव पव्वइओ ।

त इच्छामि ण देवाणुप्पिया ! सयमेव पव्वाविय, सयमेव मुडाविय, सयमेव सेहाविय, सयमेव सिक्खाविय, सयमेव आयारगोयर विणय-वेणइय-चरण-करण जायामायावत्तिय धम्ममाइक्खिय ॥

१५१ तए ण समणे भगव महावीरे उसभदत्त माहण सयमेव पव्वावेइ, सयमेव मुडावेइ, सयमेव सेहावेइ, सयमेव सिक्खावेइ, सयमेव आयार-गोयर विणय-वेणइय चरण-करण जायामायावत्तिय धम्ममाइक्खइ—एव देवाणुप्पिया गतव्व, एव चिट्ठियव्व, एव निसीइयव्व, एव तुयट्टियव्व, एव भुजियव्व, एव भासियव्व एव उट्ठाय-उट्ठाय पाणेहि भूएहि जीवेहि सत्तेहि सजमेणं सजमियव्व अस्सि च ण अट्ठे णो किंचि वि पमाइयव्व ।

तए ण से उसभदत्ते माहणे समणस्स भगवओ महावीरस्स इम एयारूव धम्मिय उवएस सम्म सपडिवज्जइ °जाव[1] सामाइयमाइयाइ एक्कारस अगाइ अहिज्जइ, अहिज्जित्ता[2] बहूहि चउत्थ-छट्ठट्ठम-दसम[3]-°दुवालसेहि, मासद्धमासखमणेहि° विचित्तेहि तवोकम्मेहि अप्पाण भावेमाणे बहूइ वासाइ सामण्णपरियाग पाउणइ, पाउणित्ता मासियाए सलेहणाए अत्ताण झूसेइ, झूसेत्ता सट्ठि भत्ताइ अणसणाए छेदेइ, छेदेत्ता जस्सट्ठाए कीरति नग्गभावे जाव[4] तमट्ठ आराहेइ, आराहेत्ता[5] °चरमेहि उस्सास-नीसासेहि सिद्धे बुद्धे मुक्के परिनिव्वुडे° सव्वदुक्खप्पहीणे ॥

१५२ तए ण सा देवाणदा माहणी समणस्स भगवओ महावीरस्स अतिय धम्म सोच्चा निसम्म हट्ठतुट्ठा समण भगव महावीर तिक्खुत्तो आयाहिण-पयाहिण[6] °करेइ, करेत्ता वदइ नमसइ, वदित्ता° नमसित्ता एव वयासी—एवमेय भते ! तहमेय भते ! एव जहा उसभदत्तो तहेव जाव धम्ममाइक्खिय ॥

१५३. तए ण समणे भगव महावीरे देवाणद माहणि सयमेव पव्वावेइ, पव्वावेत्ता सयमेव अज्जचदणाए अज्जाए[7] सीसिणित्ताए दलयइ ॥

१५४ तए ण सा अज्जचदणा अज्जा देवाणद माहणि सयमेव[8] मुडावेति, सयमेव सेहावेति । एव जहेव उसभदत्तो तहेव अज्जचदणाए अज्जाए इम एयारूव धम्मिय उवदेस सम्म सपडिवज्जइ, तमाणाए तह गच्छइ जाव[9] सजमेण सजमति ॥

१५५ तए ण सा देवाणदा अज्जा अज्जचदणाए अज्जाए अतिय सामाइयमाइयाइ एक्कारस अगाइ अहिज्जइ, [10]°अहिज्जित्ता बहूहि चउत्थ-छट्ठट्ठम-दसम-दुवाल-

---

१. भ० २।५३-५७ ।
२. जाव (अ, क, ता, ब, स) ।
३ स० पा०—दसम जाव विचित्तेहिं ।
४. भ० १।४३३ ।
५ स० पा०—आराहेत्ता जाव सव्व° ।
६ स० पा०—पयाहिण जाव नमसित्ता ।
७ × (ब, म) ।
८ सयमेव पव्वावेति सयमेव (क, ब, म) ।
९ भ० २।५४ ।
१०. स० पा०—सेस त चेव जाव सव्व° ।

सेहिं, मासद्धमासखमणेहि विचित्तेहि तवोकम्मेहि अप्पाण भावेमाणी वहूइं वासाइ सामण्णपरियाग पाउणइ, पाउणित्ता मासियाए सलेहणाए अत्ताण भूसेइ, भूसेत्ता सट्ठि भत्ताइ अणसणाए छेदेइ, छेदेत्ता चरमेहि उस्सास-नीसासेहि सिद्धा वुद्धा मुक्का परिनिव्वुडा ० सव्वदुक्खप्पहीणा ॥

जमालि-पदं

१५६ तस्स ण माहणकुडग्गामस्स नगरस्स पच्चत्थिमे णं एत्थ ण खत्तियकुडग्गामे नाम नयरे होत्था—वण्णओ[1]। तत्थ ण खत्तियकुडग्गामे नयरे जमाली नाम खत्तियकुमारे परिवसइ—अड्ढे दित्ते जाव[2] वहुजणस्स अपरिभूते, उप्पि पासायवरगए फुट्टमाणेहि मुइगमत्थएहि वत्तीसतिवद्धेहि णाडएहि वरतरुणीसपउत्तेहिं[3] उवनच्चिज्जमाणे-उवनच्चिज्जमाणे, उवगिज्जमाणे-उवगिज्जमाणे, उवलालिज्जमाणे-उवलालिज्जमाणे, पाउस-वासारत्त-सरद-हेमंत-वसत-गिम्हपज्जते छप्पि उऊ[4] जहाविभवेण माणेमाणे, काल गालेमाणे, इट्ठे सद्द-फरिस-रस-रूव-गधे पचविहे माणुस्सए कामभोगे पच्चणुब्भवमाणे विहरइ ॥

१५७ तए ण खत्तियकुण्डग्गामे नयरे सिंघाडग-तिक-चउक्क-चच्चर[5]-•चउम्मुह-महापह-पहेसु महया जणसद्दे इ वा जणवूहे इ वा जणवोले इ वा जणकलकले इ वा जणुम्मी इ वा जणुक्कलिया इ वा जणसण्णिवाए इ वा वहुजणो अण्णमण्णस्स एवमाइक्खइ एव भासइ ०, एव पण्णवेइ, एव परूवेइ, एव खलु देवाणुप्पिया ! समणे भगव महावीरे आदिगरे जाव[6] सव्वण्णू सव्वदरिसी माहणकुडग्गामस्स नगरस्स वहिया वहुसालए चेइए अहापडिरूव[7] •ओग्गह ओगिण्हित्ता संजमेण तवसा अप्पाण भावेमाणे ० विहरइ।

त महप्फल खलु देवाणुप्पिया ! तहारूवाण अरहताण भगवंताण नामगोयस्स वि सवणयाए जहा ओववाइए जाव[8] एगाभिमुहे खत्तियकुण्डग्गाम नयर मज्झमज्झेण निग्गच्छति[9], निग्गच्छित्ता जेणेव माहणकुडग्गामे नयरे जेणेव वहुसालए चेइए, तेणेव उवागच्छति एव जहा ओववाइए जाव[10] तिविहाए पज्जुवासणयाए पज्जुवासति ॥

---

१. ओ० सू० १।
२. भ० २।६४।
३. णाणाविहवरतरुणी ० (अ, व, स)।
४. उडू (अ), उदू (ता, व, स)।
५. स० पा०—चच्चर जाव वहुजणसद्दे इ वा जाव एव।
६ ओ० सू० १६।
७ स० पा०—अहापडिरूव जाव विहरइ।
८. ओ० सू० ५२, वाचनान्तर पृ० १४७।
९. निग्गच्छइ (क, ता)।
१०. ओ० सू० ५२, ६९।

१५८. तए ण तस्स जमालिस्स खत्तियकुमारस्स त महयाजणसद्द वा जाव जणसन्निवाय वा सुणमाणस्स वा पासमाणस्स वा अयमेयारूवे अज्झत्थिए[1] •चितिए पत्थिए मणोगए सकप्पे° समुप्पज्जित्था—किण्ण अज्ज खत्तियकुडग्गामे नयरे इदमहे इ वा, खदमहे इ वा, मुगुदमहे इ वा, नागमहे इ वा, जक्खमहे इ वा, भूयमहे इ वा, कूवमहे इ वा, तडागमहे इ वा, नईमहे इ वा, दहमहे इ वा, पव्वयमहे इ वा, रूक्खमहे इ वा, चेइयमहे इ वा, थूभमहे इ वा, जण्ण एते वहवे उग्गा, भोगा, राइण्णा, इक्खागा, णाया[2], कोरव्वा, खत्तिया, खत्तियपुत्ता, भडा, भडपुत्ता,[3] •जोहा पसत्थारो मल्लई लेच्छई लेच्छईपुत्ता अण्णे य वहवे राईसर–तलवर–माडविय–कोडुविय–इब्भ-सेट्ठि-सेणावइ°-सत्थवाहप्पभितयो ण्हाया कयवलिकम्मा जहा ओववाइए जाव[4] खत्तियकुडग्गामे नयरे मज्झमज्झेण निग्गच्छति ?—एव सपेहेइ, सपेहेत्ता कचुइ[5]-पुरिस सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एव वदासी—किण्ण देवाणुप्पिया ! अज्ज खत्तियकुडग्गामे नयरे इदमहे इ वा जाव निग्गच्छति ?

१५९. तए ण से कचुइ-पुरिसे जमालिणा खत्तियकुमारेण एव वुत्ते समाणे हट्ठतुट्ठे समणस्स भगवओ महावीरस्स आगमणगहियविणिच्छए करयल[6]•परिग्गहिय दसनह सिरसावत्त मत्थए अजलिं कट्टु° जमालि खत्तियकुमार जएण विजएण वद्धावेइ, वद्धावेत्ता एव वयासी—नो खलु देवाणुप्पिया ! अज्ज खत्तियकुडग्गामे नयरे इदमहे इ वा जाव[7] निग्गच्छति । एव खलु देवाणुप्पिया ! अज्ज समणे भगव महावीरे आदिगरे जाव[8] सव्वण्णू सव्वदरिसी माहणकुडग्गामस्स नयरस्स वहिया वहुसालए चेइए अहापडिरूव ओग्गह[9] •ओगिण्हित्ता सजमेण तवसा अप्पाण भावेमाणे° विहरइ, तए ण एते वहवे उग्गा, भोगा जाव[10] निग्गच्छति ॥

१६०. तए ण से जमाली खत्तियकुमारे कचुइ[11]-पुरिसस्स अतिय एयमट्ठ सोच्चा निसम्म हट्ठतुट्ठे कोडुवियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एव वयासी—खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया ! चाउग्घट आसरह जुत्तामेव उवट्ठवेह, उवट्ठवेत्ता मम एयमाणत्तिय पच्चप्पिणह ॥

---

१ स०पा०—अज्झत्थिए जाव समुप्पज्जित्था ।
२. नाता (क, व, म) ।
३ स०पा०—जहा ओववाइए जाव सत्थवाह° ।
४ ओ० सू० ५२ ।
५ कचुइज्ज (अ, क, ता, व) ।
६ स० पा०—करयल ।
७ भ० ९।१५८ ।
८ ओ० सू० १९ ।
९ स० पा०—ओग्गहं जाव विहरइ ।
१० ओसू सू० ५२, जाव अप्पेगइया वदणवत्तिय जाव (अ, क, ता, व, म) ।
११ कचुति (अ, क, व, स) ।

१६१. तए णं ते कोडुंबियपुरिसा जमालिणा खत्तियकुमारेणं एवं वुत्ता समाणा[1] •चाउग्घंटं आसरहं जुत्तामेव उवट्ठवेंति, उवट्ठवेत्ता तमाणत्तियं ° पच्चप्पिणंति ।

१६२. तए णं से जमाली खत्तियकुमारे जेणेव मज्जणघरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता ण्हाए कयबलिकम्मे जाव[2] चंदणुक्खित्तगायसरीरे[3] सव्वालंकारविभूसिए मज्जणघराओ पडिनिक्खमइ, पडिनिक्खमित्ता जेणेव बाहिरिया उवट्ठाणसाला, जेणेव चाउग्घंटे आसरहे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता चाउग्घंटं आसरहं दुरुहइ[4], दुरुहित्ता सकोरेंटमल्लदामेणं[5] छत्तेणं धरिज्जमाणेणं, महयाभडचडगरपहकरवंदपरिक्खित्ते खत्तियकुंडग्गामं नगरं मज्झंमज्झेणं निग्गच्छइ, निग्गच्छित्ता जेणेव माहणकुंडग्गामे नयरे, जेणेव बहुसालए चेइए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता तुरए निगिण्हेइ, निगिण्हेत्ता रहं ठवेइ, ठवेत्ता रहाओ पच्चोरुहति, पच्चोरुहित्ता पुप्फतंबोलाउहमादियं पाहणाओ[6] य विसज्जेति, विसज्जेत्ता एगसाडियं उत्तरासंगं करेइ, करेत्ता आयंते चोक्खे परमसुइब्भूए अंजलिमउलियहत्थे[7] जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता समणं भगवं महावीरं तिक्खुत्तो आयाहिण-पयाहिणं करेइ, करेत्ता[8] •वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता° तिविहाए पज्जुवासणाए पज्जुवासइ ॥

१६३. तए णं समणे भगवं महावीरे जमालिस्स खत्तियकुमारस्स, तीसे य महतिमहालियाए इसि[9] •परिसाए मुणिपरिसाए जइपरिसाए देवपरिसाए अणेगसयाए अणेगसयवंदाए अणेगसयवंदपरियालाए ओहबले अइबले महब्बले अपरिमियबल-वीरिय-तेय-माहप्प-कंति-जुत्ते सारय-नवत्थणिय-महुरगंभीर-कोंचणिग्घोस-दुंदुभिस्सरे उरे वित्थडाए कंठे वट्टियाए सिरे समाइण्णाए अगरलाए अमम्मणाए सुव्वत्तक्खर-सण्णिवाइयाए पुण्णरत्ताए सव्वभासाणुगामिणीए सरस्सईए जोयणणीहारिणा सरेणं अद्धमागहाए भासाए भासइ—धम्मं परिकहेइ ° जाव[10] परिसा पडिगया ॥

---

१. सं० पा०—समाणा जाव पच्चप्पिणंति ।

२. जाव ओववाइए परिसावण्णओ तहा भाणियव्व जाव (अ, क, ता, ब, म, स); मज्जनगृहप्रकरणे परिवारवर्णनस्य सूचना स्वाभाविकी नास्ति, अतः प्रतीयते अत्र पाठसंक्षेपीकरणे कश्चिद् विपर्ययो जातः । न च एतद्रूपेणासौ पाठः औपपातिके लभ्यते, अतएवासौ पाठान्तरत्वेन स्वीकृतः । द्रष्टव्यम्—ओ० सू० ६३ ।

३. चंदणोकिण्ण° (ता, म), चंदणोखिण्ण° (ब) ।

४. द्रूहइ (अ, ता, ब), द्रूहति (क) ।

५. सकोरंट° (म, स) ।

६. वाहणाओ (अ, म), पाणहाओ (क), वाणहाओ (स) ।

७. अंजलितमउ० (ता) ।

८. सं० पा०—करेत्ता जाव तिविहाए ।

९. सं० पा०—इसि जाव धम्मकहा ।

१०. ओ० सू० ७१-७९ ।

१६४. तए ण से जमाली खत्तियकुमारे समणस्स भगवओ महावीरस्स अतिए धम्मं सोच्चा निसम्म हट्ठ[1]•तुट्ठचित्तमाणदिए णदिए पीइमणे परमसोमणस्सिए हरिसवसविसप्पमाण°हियए उट्ठाए उट्ठेइ, उट्ठेत्ता समण भगव महावीर तिक्खुत्तो[2] •आयाहिण-पयाहिण करेइ, करेत्ता वदइ नमसइ, वदित्ता° नमसित्ता एव वयासी—सद्दहामि ण भते ! निग्गथ पावयण, पत्तियामि ण भते ! निग्गथ पावयण, रोएमि ण भते ! निग्गथ पावयण, अब्भुट्ठेमि ण भते ! निग्गथ पावयण, एवमेय भते ! तहमेय भते ! अवितहमेय भते ! असदिद्धमेय भते[3] ! •इच्छियमेय भते ! पडिच्छियमेय भते ! इच्छिय-पडिच्छियमेय भते !°—से जहेय तुब्भे वदह, ज नवर—देवाणुप्पिया ! अम्मापियरो आपुच्छामि, तए ण अह देवाणुप्पियाण अतिय मुडे भवित्ता अगाराओ अणगारिय पव्वयामि ।
अहासुह देवाणुप्पिया ! मा पडिबध ।।

१६५. तए ण से जमाली खत्तियकुमारे समणेण भगवया महावीरेण एव वुत्ते समाणे हट्ठतुट्ठे समण भगव महावीर तिक्खुत्तो[4] •आयाहिण-पयाहिण करेइ, करेत्ता वदइ नमसइ, वदित्ता° नमसित्ता तमेव चाउग्घट आसरह दुरुहइ, दुरुहित्ता समणस्स भगवओ महावीरस्स अतियाओ बहुसालाओ चेइयाओ पडिनिक्खमइ, पडिनिक्खमित्ता सकोरेंट[5]•मल्लदामेण छत्तेण° धरिज्जमाणेण महयाभडचड-गर[6]•पहकरवद°परिक्खित्ते, जेणेव खत्तियकुडग्गामे नयरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता खत्तियकुडग्गाम नयर मज्झमज्झेण जेणेव सए गेहे जेणेव बाहि-रिया उवट्ठाणसाला तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता तुरए निगिण्हइ, निगि-ण्हित्ता रह ठवेइ, ठवेत्ता रहाओ पच्चोरुहइ, पच्चोरुहित्ता जेणेव अब्भितरिया उवट्ठाणसाला, जेणेव अम्मापियरो तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता अम्मापियरो जएण विजएण वद्धावेइ, वद्धावेत्ता एव वयासी—एवं खलु अम्मताओ[7] ! मए समणस्स भगवओ महावीरस्स अतिय धम्मे निसते, से वि य मे धम्मे इच्छिए, पडिच्छिए अभिरुइए ।।

१६६ तए ण त जमालि खत्तियकुमार अम्मापियरो एव वयासी—धन्ने सि ण तुम जाया ! कयत्थे सि ण तुम जाया ! कयपुण्णे सि ण तुम जाया ! कयलक्खणे सि ण तुम जाया ! जण्ण तुमे समणस्स भगवओ महावीरस्स अतिय धम्मे निसते, से वि य ते धम्मे इच्छिए, पडिच्छिए, अभिरुइए ।।

---

१ स० पा०—हट्ठ जाव हियए ।
२. स० पा०—तिक्खुत्तो जाव नमसित्ता ।
३ स० पा०—भते जाव से ।
४. स० पा०—तिक्खुत्तो जाव नमसित्ता ।
५. स० पा०—सकोरेंट जाव धरिज्जमाणेणं ।
६ स० पा०—चडगर जाव परिक्खित्ते ।
७. अम्मयाओ (अ, स), अम्माताओ (व) ।

१६७ तए ण से जमाली खत्तियकुमारे अम्मापियरो दोच्च पि एव वयासी—एव खलु मए अम्मताओ ! समणस्स भगवओ महावीरस्स अतिए धम्मे निसते[1], •से वि य मे धम्मे इच्छिए, पडिच्छिए°, अभिरुइए। तए ण अह अम्मताओ ! ससारभउव्विग्गे, भीते जम्मण[2]-मरणेण, त इच्छामि ण अम्मताओ ! तुब्भेहि अब्भणुण्णाए समाणे समणस्स भगवओ महावीरस्स अतियं मुडे भवित्ता अगाराओ अणगारिय पव्वइत्तए ॥

१६८ तए ण सा जमालिस्स खत्तियकुमारस्स माता त अणिट्ठ अकत अप्पिय अमणुण्ण अमणाम अस्सुयपुव्व गिर सोच्चा निसम्म सेयागयरोमकूवपगलतचिलिणगत्ता[3], सोगभरपवेवियगमगी नित्तेया दीणविमणवयणा, करयलमलिय व्व कमलमाला, तक्खणओलुग्गदुब्बलसरीरलायण्णसुन्ननिच्छाया[4], गयसिरीया पसिढिलभूसण[5]-पडतखुण्णियसचुण्णियधवलवलय[6]-पब्भट्ठउत्तरिज्जा, मुच्छावसणट्ठचेतगरुई[7], सुकुमालविकिण्णकेसहत्था, परसुणियत्त[8] व्व चपगलया, निव्वत्तमहे व्व इदलट्ठी, विमुक्कसधिबधणा कोट्टिमतलसि[9] धसत्ति सव्वगेहि[10] सनिवडिया[10] ॥

१६९ तए ण सा जमालिस्स खत्तियकुमारस्स माया ससभमोवत्तियाए[11] तुरिय कचण-भिगारमुहविणिग्गय - सीयलजलविमलधारपरिसिच्चमाणनिव्वावियगायलट्ठी[12], उक्खेवय-तालियट-वीयणगजणियवाएण, सफुसिएण अतेउरपरिजणेण आसासिया समाणी रोयमाणी कदमाणी सोयमाणी विलवमाणी जमालि खत्तिय-कुमार एव वयासी—तुम सि ण जाया ! अम्ह एगे पुत्ते इट्ठे कते पिए मणुण्णे मणामे थेज्जे वेसासिए समए बहुमए अणुमए भडकरडगसमाणे रयणे रयणब्भूए जीविऊसविए[13] हिययनदिजणणे उवरपुप्फ पिव[14] दुल्लभे सवणयाए[15], किमग ! पुणपासणयाए ? त नो खलु जाया ! अम्हे इच्छामो तुब्भ खणमवि विप्पयोग, त अच्छाहि ताव जाया ! जाव ताव अम्हे जीवामो तओ पच्छा अम्हेहि कालग-एहि समाणेहि परिणयवए वड्ढियकुलवसततुकज्जम्मि निरवयक्खे समणस्स

---

१. स० पा०—निसते जाव अभिरूइए।
२ जम्मजरा (क्व०)।
३ °विलीणगत्ता (अ, व, स)।
४ °लावण्ण° (ना० १।१।१०५)।
५. पसढिल° (अ, क, ता, म)।
६ °खुम्मिय° (ना० १।१।१०५)।
७. °गुरुई (अ, ता, व, स)।
८ °णितत्त (ता), °णिकत्त (व)।
९ सव्वगेहि धसत्ति (ना० १।१।१०५)।
१० निवडिया (अ, ता, स)।
११ ° यत्तियाए (क, ता), चेट्या इति गम्यम् (वृ)।
१२. सीयलविमलजल° (अ); सीतलविमल° (क), °सीतलविमलधारपरिसिच्चमाणनिव्ववित° (ता), °निव्ववित° (व), सीयलविमलजलधारपरिसिच्चमाणनिव्ववित° (स)
१३ जीवियउस्सासिए (वृपा, ना० १।१।१०६)।
१४ विव (क).
१५ समणयाए (अ)।

भगवओ महावीरस्स अंतिय मुडे भवित्ता अगाराओ अणगारिय पव्वइहिसि ।।

१७०. तए ण से जमाली खत्तियकुमारे अम्मापियरो एव वयासी—तहा वि ण त अम्मताओ ! जण्ण तुब्भे मम एव वदह—तुम सि ण जाया ! अम्ह एगे पुत्ते इट्ठे कते त चेव जाव[1] पव्वइहिसि, एव खलु अम्मताओ ! माणुस्सए भवे अणेगजाइ-जरा-मरण-रोग-सारीरमाणसपकामदुक्खवेयण-वसणसतोवद्दवाभिभूए अधुवे अणितिए असासए सभब्भरागसरिसे जलबुब्बुदसमाणे कुसग्गजलविदु-सन्निभे सुविणदसणोवमे[2] विज्जुलयाचचले अणिच्चे सडण-पडण-विद्धसणधम्मे, पुव्वि वा पच्छा वा अवस्सविप्पजहियव्वे भविस्सइ, से केस[3] ण जाणइ अम्मताओ ! के पुव्वि गमणयाए, के पच्छा गमणयाए ? त इच्छामि ण अम्मताओ ! तुब्भेहि अब्भणुण्णाए समाणे समणस्स[4] °भगवओ महावीरस्स अतियं मुडे भवित्ता अगाराओ अणगारिय° पव्वइत्तए ।।

१७१. तए ण त जमालिं खत्तियकुमार अम्मापियरो एव वयासी—इम च ते जाया ! सरीरग पविसिट्ठरूव[5] लक्खण-वजण-गुणोववेय उत्तमबल-वीरियसत्त-जुत्त विण्णाणवियक्खण ससोहग्गगुणसमूसिय[6] अभिजायमहक्खम विविहवाहि-रोगरहिय, निरुवहय-उदत्त[7]-लट्ठपचिदियपडु[8] पढमजोव्वणत्थ अणेगउत्तमगुणेहि सजुत्त, त अणुहोहि ताव जाया ! नियगसरीररूव-सोहग्ग-जोव्वणगुणे, तओ पच्छा अणुभूय नियगसरीररूव-सोहग्ग-जोव्वणगुणे अम्हेहि कालगएहि समाणेहि परिणयवए वड्ढियकुलवसततुकज्जम्मि निरवयक्खे समणस्स भगवओ महावीर-स्स अतिय मुडे भवित्ता अगाराओ अणगारिय पव्वइहिसि ।।

१७२ तए ण से जमाली खत्तियकुमारे अम्मापियरो एव वयासी—तहा वि ण त अम्मताओ ! जण्ण तुब्भे मम एव वदह—इम च ण ते जाया ! सरीरग त चेव जाव[9] पव्वइहिसि, एव खलु अम्मताओ ! माणुस्सग सरीर दुक्खाययण, विविहवाहिसयसनिकेत, अट्ठियकट्ठुट्ठिय, छिराण्हारुजाल-ओणद्धसपिणद्ध, मट्टियभड व दुब्बल, असुइसकिलिट्ठ, अणिट्ठविय-सव्वकालसठप्पय, जराकुणिम-जज्जरघर व सडण-पडण-विद्धसणधम्म, पुव्वि वा पच्छा वा अवस्सविप्पजहि-यव्वं भविस्सइ । से केस ण जाणइ अम्मताओ ! के पुव्वि[10] °गमणयाए, के पच्छा गमणयाए ? त इच्छामि ण अम्मताओ ! तुब्भेहि अब्भणुण्णाए समाणे

---

१ भ० ९।१६६ ।
२ सुविणगसद° (क, म), सुविणगद° (स) ।
३ के (ता, ना० १।१।१०७) ।
४ स० पा०—समणस्स जाव पव्वइत्तए ।
५ पइवि° (ता, ब) ।
६. °समूविय (ता) ।
७ उयग्ग (ता) ।
८. लट्ठ° (स) ।
९. भ० ९।१६६ ।
१०. स० पा०—त चेव जाव पव्वइत्तए ।

समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतियं मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं° पव्वइत्तए ॥

१७३ तए णं तं जमालिं खत्तियकुमारं अम्मापियरो एवं वयासी—इमाओ य ते जाया! विपुलकुलबालियाओ[1] कलाकुसल-सव्वकाललालिय-सुहोचियाओ[2], मद्दवगुणजुत्त-निउणविणओवयारपंडिय-वियक्खणाओ, मंजुलमियमहुरभणिय-विहसिय-विप्पेक्खिय-गति-विलास-चिट्ठियविसारदाओ, अविकलकुल-सीलसालिणीओ[3], विसुद्धकुलवंससंताणतंतुवद्धण-प्पगब्भुब्भवपभाविणीओ[4], मणाणुकूल-हियइच्छियाओ, अट्ठ तुज्झ गुणवल्लहाओ उत्तमाओ, निच्चं भावाणुरत्तसव्वंग-सुंदरीओ[5]। तं भुंजाहि ताव जाया! एताहिं सद्धिं विउले माणुस्सए कामभोगे, तओ पच्छा भुत्तभोगी विसय-विगयवोच्छिण्ण-कोउहल्ले अम्हेहिं कालगएहिं[6] °समाणेहिं परिणयवए वड्ढियकुलवंसतंतुकज्जम्मि निरवयक्खे समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतियं मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं° पव्वइहिसि ॥

१७४ तए णं से जमाली खत्तियकुमारे अम्मापियरो एवं वयासी—तहा वि णं तं अम्मताओ! जण्णं तुब्भे ममं एयं वदह—इमाओ ते जाया! विपुलकुल-बालियाओ जाव[7] पव्वइहिसि, एवं खलु अम्मताओ! माणुस्सगा कामभोगा[8] उच्चार-पासवण-खेल-सिंघाणग-वंत-पित्त-पूय-सुक्क-सोणिय-समुब्भवा, अमणुण्णदुरुय[9]-मुत्त-पूइय-पुरीसपुण्णा, मयगंधुस्सास[10]-असुभनिस्सासउव्वेयणगा, बीभच्छा[11], अप्पकालिया, लहुसगा[12], 'कलमलाहिवासदुक्खा बहुजणसाहारणा'[13], परिकिलेसकिच्छदुक्खसज्झा, अबुहजणणिसेविया, 'सदा साहुगरहणिज्जा'[14],

---

१. °बालियाओ (स), सरिसियाओ, सरित्तयाओ, सरिव्वयाओ, सरिसलावण्णरूव—जोव्वण-गुणोववेयाओ, सरिसएहिंतो कुलेहिंतो आणि-एल्लियाओ (अ, क, ब, म, स), असौ पाठः 'ता' संकेतिते आदर्शे नास्ति तथा वृत्तावपि नास्ति व्याख्यातः। नायाधम्मकहाओ (१।१।१०८) असौ विद्यते। तस्य वाचनान्तरे चैष पाठो नास्ति। वाचनान्तरगतश्च पाठः प्रस्तुतभगवतीपाठसदृशोस्ति।

२. सुहोइयाओ (ब)।

३. °णियाओ (ब)।

४. प्पगब्भभप्पभा° (अ), पगब्भवयभा° (क, वृ), पगब्भवपभा° (ता), पगब्भुब्भवपभा-विणीओ (वृपा)।

५. °सुंदरीओ भारियाओ (ब, म, स)।

६. सं० पा०—कालगएहिं जाव पव्वइहिसि।

७. भ० ९।१७३।

८. कामभोगा असुई, असासया, वंतासवा, पित्तासवा, खेलासवा, सुक्कासवा, सोणियासवा (अ, ब, म, स)।

९. °दुरूव (अ, क, ब, स)।

१०. मद° (ता); मत° (ब)।

११. बीभत्था (ब)।

१२. लहूसगा (अ, क, ब, म)।

१३. °दुक्खबहुजण° (क, ता, ब, म)।

१४. साधुजणगरहणिज्जा (ता)।

अणतससारवद्धणा, कडुगफलविवागा चुडल्लिव अमुच्चमाण[1], दुक्खाणुबधिणो, सिद्धिगमणविग्घा। से केस ण जाणइ अम्मताओ! के पुव्वि गमणयाए? के पच्छा गमणयाए? त इच्छामि ण अम्मताओ[2]! °तुब्भेहिं अब्भणुण्णाए समाणे समणस्स भगवओ महावीरस्स अतिय मुडे भवित्ता अगाराओ अणगारिय° पव्वइत्तए॥

१७५ तए ण त जमालि खत्तियकुमार अम्मापियरो एव वयासी—इमे य ते जाया! अज्जय-पज्जय-पिउपज्जयागए सुवहू हिरण्णे य[3], सुवण्णे य, कसे य, दूसे य, विउलधण-कणग[4]-°रयण-मणि-मोत्तिय-सख-सिल-प्पवालरत्तरयण°-सतसार-सावएज्जे, अलाहि जाव आसत्तमाओ कुलवसाओ पकाम दाउ, पकाम भोत्तु, परिभाएउ, त अणुहोहि ताव जाया! विउले माणुस्सए इड्ढि-सक्कारसमुदए, तओ पच्छा अणुहूयकल्लाणे, वड्ढियकुलवस[5]°ततुकज्जम्मि निरवयक्खे समणस्स भगवओ महावीरस्स अतिय मुडे भवित्ता अगाराओ अणगारिय° पव्वइहिसि॥

१७६. तए ण से जमाली खत्तियकुमारे अम्मापियरो एव वयासी—तहा वि ण त अम्मताओ! जण्ण तुब्भे मम एव वदह—इम च ते जाया! अज्जय-पज्जय-पिउपज्जयागए जाव[6] पव्वइहिसि, एव खलु अम्मताओ! हिरण्णे य, सुवण्णे य जाव सावएज्जे अग्गिसाहिए, चोरसाहिए, रायसाहिए, मच्चुसाहिए, दाइय-साहिए, अग्गिसामण्णे[7], °चोरसामण्णे, रायसामण्णे, मच्चुसामण्णे°, दाइय-सामण्णे, अधुवे, अणितिए, असासए, पुव्वि वा पच्छा वा अवस्सविप्पजहियव्वे भविस्सइ, से केस ण जाणइ [8]°अम्मताओ! के पुव्वि गमणयाए, के पच्छा गमणयाए? त इच्छामि ण अम्मताओ! तुब्भेहि अब्भणुण्णाए समाणे समणस्स भगवओ महावीरस्स अतिय मुडे भवित्ता अगाराओ अणगारिय° पव्वइत्तए॥

१७७ तए ण त जमालि खत्तियकुमार अम्मताओ जाहे नो सचाएति विसयाणुलोमाहि बहूहि आघवणाहि य पण्णवणाहि य सण्णवणाहि य विण्णवणाहि य, आघवेत्तए वा पण्णवेत्तए वा सण्णवेत्तए वा विण्णवेत्तए वा, ताहे विसयपडिकूलाहिं सजमभयुव्वेयणकरीहि[9] पण्णवणाहि पण्णवेमाणा एव वयासी—एव

---

१ इह प्रथमाबहुवचनलोपो दृश्य (वृ)।
२. स० पा०—अम्मताओ जाव पव्वइत्तए।
३. या (क, ता, ब, म) सर्वत्र।
४ स० पा०—कणग जाव सतसार°।
५ स० पा०—वड्ढियकुलवस जाव पव्वइहिसि।
६ भ० ९।१७५।
७ स० पा०-अग्गिसामण्णे जाव दाइयसामण्णे।
८ स० पा०—त चेव जाव पव्वइत्तए।
९ °भयुव्वेवक° (ता), भयुव्वेवणक° (ब)।

खलु जाया ! निग्गथे पावयणे सच्चे अणुत्तरे केवले[1] •पडिपुण्णे नेयाउए ससुद्धे सल्लगत्तणे सिद्धिमग्गे मुत्तिमग्गे निज्जाणमग्गे निव्वाणमग्गे अवितहे अविसंधि सव्वदुक्खप्पहीणमग्गे, एत्थ ठिया जीवा सिज्झति बुज्झति मुच्चति परिनिवायति° सव्वदुक्खाण अत करेति ।

अहीव एगतदिट्ठीए, खुरो इव एगतधाराए, लोहमया जवा चावेयव्वा, वालुयाकवले इव निस्साए, गगा वा महानदी पडिसोयगमणयाए, महासमुद्दो वा भुयाहिं दुत्तरो, तिक्ख कमियव्व, गरुय[2] लवेयव्व, असिधारग वय चरियव्व ।

नो[3] खलु कप्पइ जाया ! समणाण निग्गथाण अहाकम्मिए इ वा, उद्देसिए इ वा, मिस्सजाए[4] इ वा, अज्झोयरए[5] इ वा, पूइए इ वा, कीते इ वा, पामिच्चे इ वा, अच्छेज्जे इ वा, अणिसट्ठे इ वा, अभिहडे इ वा, कंतारभत्ते इ वा, दुब्भिक्खभत्ते इ वा, गिलाणभत्ते इ वा, वद्दलियाभत्ते इ वा, पाहुणगभत्ते इ वा, सेज्जायरपिडे इ वा, रायपिंडे इ वा, मूलभोयणे इ वा, कदभोयणे इ वा, फलभोयणे इ वा, वीयभोयणे इ वा, हरियभोयणे इ वा, भोत्तए वा पायए वा ।

तुम सि च ण जाया ! सुहसमुचिए नो चेव ण दुहसमुचिए, नाल सीय, नाल उण्ह, नाल खुहा, नाल पिवासा, नाल चोरा, नाल वाला, नाल दसा, नालं मसगा, नाल वाइय-पित्तिय-सेभिय-सन्निवाइए विविहे रोगायंके, परिस्सहोवसग्गे उदिण्णे अहियासेत्तए । त नो खलु जाया ! अम्हे इच्छामो तुब्भं खणमवि विप्पयोग, त अच्छाहि ताव जाया ! जाव ताव अम्हे जीवामो तओ पच्छा अम्हेहिं[6] •कालगएहि समाणेहि परिणयवए, वड्ढियकुलवसततुकज्जम्मि निरवयक्खे समणस्स भगवओ महावीरस्स अतिय मुडे भवित्ता अगाराओ अणगारिय° पव्वइहिसि ॥

१७८ तए णं से जमाली खत्तियकुमारे अम्मापियरो एव वयासी—तहा वि ण त अम्मताओ[7] ! जण्ण तुब्भे मम एव वदह— एव खलु जाया ! निग्गथे पावयणे सच्चे अणुत्तरे केवले त चेव जाव[8] पव्वइहिसि, एव खलु अम्मताओ ! निग्गथे पावयणे कीवाण कायराण कापुरिसाण इहलोगपडिवद्धाण परलोगपरमुहाण विसयतिसियाण दुरणुचरे पागयजणस्स, धीरस्स निच्छियस्स ववसियस्स नो खलु एत्थ किचि वि दुक्कर करणयाए, त इच्छामि ण अम्मताओ ! तुब्भेहि

---

१. स० पा०—जहा आवस्सए जाव सव्व° ।
२ गुरुय (अ) ।
३ णो य (अ, ता, व) ।
४. मीसजाए (ता), मिस्साजाए (व) ।
५ उज्झो° (अ, स) ।
६ स० पा०—अम्हेहिं जाव पव्वइहिसि ।
७ अम्मयाओ (अ, स) ।
८ भ० ९।१७७ ।

अब्भणुण्णाए समाणे समणस्स भगवओ महावीरस्स[1] •अतिय मुडे भवित्ता अगाराओ अणगारिय॰ पव्वइत्तए ॥

१७६ तए ण त जमालि खत्तियकुमार अम्मापियरो जाहे नो सचाएति विसयाणुलोमाहि य, विसयपडिकूलाहि य बहूहि आघवणाहि य पण्णवणाहि य सण्णवणाहि य विण्णवणाहि य आघवेत्तए वा[2] •पण्णवेत्तए वा सण्णवेत्तए वा॰ विण्णवेत्तए वा, ताहे अकामाइ चेव जमालिस्स खत्तियकुमारस्स निक्खमण अणुमण्णित्था ॥

१८० तए ण तस्स जमालिस्स खत्तियकुमारस्स पिया कोडुवियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एव वयासी—खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया ! खत्तियकुडग्गाम नयर सब्भितरवाहिरिय आसिय-सम्मज्जिओवलित्त जहा ओववाइए जाव[3] सुगधवरगधगधिय गधवट्टिभूय करेह य कारवेह य, करेत्ता य कारवेत्ता य एयमाणत्तिय पच्चप्पिणह । ते वि तहेव पच्चप्पिणति ॥

१८१. तए ण से जमालिस्स खत्तियकुमारस्स पिया दोच्च पि कोडुवियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एव वयासी—खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया ! जमालिस्स खत्तियकुमारस्स महत्थ महग्घ महरिह विपुल निक्खमणाभिसेय उवट्ठवेह । तए ण ते कोडुवियपुरिसा तहेव जाव उवट्ठवेति[4] ॥

१८२ तए ण त जमालि खत्तियकुमार अम्मापियरो सीहासणवरसि पुरत्थाभिमुह निसीयावेति, निसीयावेत्ता अट्ठसएण सोवण्णियाण कलसाण, •[5]अट्ठसएण रुप्पमयाण कलसाण, अट्ठसएण मणिमयाण कलसाण, अट्ठसएण सुवण्णरुप्पामयाण कलसाण, अट्ठसएण सुवण्णमणिमयाण कलसाण, अट्ठसएण रुप्पमणिमयाण कलसाण, अट्ठसएण सुवण्णरुप्पमणिमयाण कलसाण॰, अट्ठसएण भोमेज्जाण कलसाण सव्विड्ढीए[6] •सव्वजुतीए सव्वबलेण सव्वसमुदएण सव्वादरेण सव्वविभूईए सव्वविभूसाए सव्वसभमेण सव्वपुप्फगधमल्लालकारेण सव्वतुडियसद्द-सण्णिणाएण महया इड्ढीए महया जुईए महया वलेण महया समुदएण महया वरतुडिय-जमगसमग-प्पवाइएण सख-पणव-पडह-भेरि-झल्लरि-खरमुहि-हुडुक्क-मुरय-मुइग-दुदुहि-णिग्घोसणाइय॰ रवेण महया-महया निक्खमणाभिसेगेण अभिसिचति, अभिसिचित्ता करयल[7]•परिग्गहिय दसनह सिरसावत्त

---

१ स॰ पा॰—महावीरस्स जाव पव्वइत्तए ।

२ स॰ पा॰—वा जाव विण्णवेत्तए ।

३ ओ॰ सू॰ ५५ ।

४. पच्चप्पिणति (अ, क, ता, व, म, स), नायाधम्मकहाओ (१।१।११६, ११७) सूत्रानुसारेण एतत्पद स्वीकृतम् । 'पच्चप्पिणति' इति पद अत्र नावश्यक प्रतिभाति ।

५ स॰ पा॰—एव जहा रायप्पसेणइज्जे जाव अट्ठसएण ।

६ स॰ पा॰—सविड्ढीए जाव रवेण ।

७ स॰ पा॰—करयल जाव जएण ।

मत्थए अजलि कट्टु° जएण विजएण वद्धावेति, वद्धावेत्ता एव वयासी—भण जाया ! किं देमो? किं पयच्छामो ? 'किणा व'[1] ते अट्ठो ?

१८३. तए ण से जमाली खत्तियकुमारे अम्मापियरो एव वयासी—इच्छामि णं अम्म-ताओ ! कुत्तियावणाओ रयहरण च पडिग्गहं च आणिय[2], कासवग च सद्दाविय[3] ।।

१८४ तए ण से जमालिस्स खत्तियकुमारस्स पिता कोडुवियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एव वयासी—खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया ! सिरिघराओ तिण्णि सयसहस्साइ गहाय[4] 'दोहि सयसहस्सेहिं'[5] कुत्तियावणाओ रयहरण च पडिग्गहं च आणेह, सयसहस्सेण कासवग सद्दावेह ।।

१८५. तए ण ते कोडुवियपुरिसा जमालिस्स खत्तियकुमारस्स पिउणा एव वुत्ता समाणा हट्ठतुट्ठा करयल[6]°परिग्गहिय दसनह सिरसावत्त मत्थए अजलि कट्टु एव सामी ! तहत्ताणाए विणएण वयण पडिसुणेति°, पडिसुणेत्ता खिप्पामेव सिरिघराओ तिण्णि सयसहस्साइ[7]°गिण्हति, गिण्हित्ता दोहिं सयसहस्सेहिं कुत्तियावणाओ रयहरण च पडिग्गह च आणेंति, सयसहस्सेण° कासवगं सद्दावेति ।।

१८६ तए ण से कासवए जमालिस्स खत्तियकुमारस्स पिउणा कोडुवियपुरिसेहि सद्दा-विए समाणे हट्ठतुट्ठे ण्हाए कयवलिकम्मे[8] °कय-कोउय-मगल-पायच्छित्ते सुद्धप्पा-वेसाइ मगल्लाइ वत्थाइ पवर परिहिए अप्पमहग्घाभरणालकिय°सरीरे, जेणेव जमालिस्स खत्तियकुमारस्स पिया तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता करयल[9]-°परिग्गहिय दसनह सिरसावत्त मत्थए अजलि कट्टु° जमालिस्स खत्तियकुमा-रस्स पियर जएणं विजएण वद्धावेइ वद्धावेत्ता एव वयासी—सदिसतु ण देवाणुप्पिया ! ज मए करणिज्ज ?

१८७ तए ण से जमालिस्स खत्तियकुमारस्स पिया त कासवग एव वयासी—तुमं देवाणुप्पिया ! जमालिस्स खत्तियकुमारस्स परेण जत्तेण चउरगुलवज्जे निक्खमणपाओग्गे अग्गकेसे कप्पेहि ।।

१८८ तए ण से कासवगे जमालिस्स खत्तियकुमारस्स पिउणा एव वुत्ते समाणे

---

१ किं णा वा (व, स), किं णा व (म) ।
२ आणिउ (ता व) ।
३ सद्दावेउ (ता), सद्दावितु (व) ।
४. गहेत्ता (ता) ।
५ दोहि सयसहस्सेण (अ, क), एगसतमहस्सेण (ता), सयसहस्सेण (व, म, स), वहुवचनान्त पद नायाधम्मकहाओ (१।१।१२२) सूत्रस्याधारेण स्वीकृतम् ।
६ स० पा०—करयल जाव पडिसुणेत्ता ।
७ स० पा०—तहेव जाव कासवग ।
८. स० पा०—कयवलिकम्मे जाव सरीरे ।
९. स० पा०—करयल ।

हट्ठतुट्ठे करयल[1]•परिग्गहिय दसनह सिरसावत्त मत्थए अजलि कट्टु० एव सामी ! तहत्ताणाए विणएण वयण पडिसुणेइ, पडिसुणेत्ता सुरभिणा गधोदएण हत्थपादे पक्खालेइ, पक्खालेत्ता सुद्धाए अट्ठपडलाए[2] पोत्तीए मुह बधइ, बधित्ता जमालिस्स खत्तियकुमारस्स परेण जत्तेण चउरगुलवज्जे निक्खमणपाओग्गे अग्गकेसे कप्पेइ ।।

१८९ तए णं सा जमालिस्स खत्तियकुमारस्स माया हसलक्खणेण पडसाडएण अग्गकेसे पडिच्छइ, पडिच्छित्ता सुरभिणा गधोदएण पक्खालेइ, पक्खालेत्ता अग्गेहिं वरेहिं गधेहिं मल्लेहिं अच्चेति, अच्चेत्ता 'सुद्धे वत्थे'[3] बधइ, बधित्ता रयणकरडगसि पक्खिवति, पक्खिवित्ता हार-वारिधार-सिदुवार-छिण्णमुत्तावलिप्पगासाइ सुयवियोगदूसहाइ[4] असूइ विणिम्मुयमाणी-विणिम्मुयमाणी एव वयासी—एस ण अम्ह जमालिस्स खत्तियकुमारस्स बहूसु तिहीसु य पव्वणीसु य उस्सवेसु य जण्णेसु य छणेसु य अपच्छिमे दरिसणे भविस्सतीति कट्टु ऊसीसगमूले ठवेति ।।

१९० तए ण तस्स जमालिस्स खत्तियकुमारस्स अम्मापियरो दोच्च पि उत्तरावक्कमण सीहासण रयावेति, रयावेत्ता जमालिस्स खत्तियकुमारस्स सेया[5]-पीयएहिं कलसेहिं ण्हावेति, ण्हावेत्ता पम्हलसुकुमालाए सुरभीए गधकासाईए गायाइ लूहेति, लूहेत्ता सरसेण गोसीसचदणेण गायाइ अणुलिपति, अणुलिपित्ता नासानिस्सासवायवोज्झ चक्खुहर वण्ण-फरिसजुत्त[6] हयलालापेलवातिरेग धवल कणगखचितंतकम्म महरिह हसलक्खणपडसाडग परिहिंति, परिहित्ता हार पिणद्धेति[7], पिणद्धेत्ता अद्धहार पिणद्धेति[8], पिणद्धेत्ता [9]•एगावलि पिणद्धेति, पिणद्धेत्ता मुत्तावलिं पिणद्धेति, पिणद्धेत्ता रयणावलि पिणद्धेति, पिणद्धेत्ता एव—अगयाइ केयूराइ कडगाइ तुडियाइ कडिसुत्तग दसमुद्दाणतग विकच्छसुत्तग[10] मुरविं कठमुरवि पालब कुडलाइ चूडामणिं[11]० चित्त रयणसकडुक्कड मउड पिणद्धेति, किं बहुणा ? गथिम-वेढिम-पूरिम-सघातिमेण चउव्विहेण मल्लेण कप्परुक्खग पिव अलकिय-विभूसियं करेति[12] ।।

---

१ स० पा०—करयल जाव एव ।
२ चउप्फलाए (ना० १।१।१२५) ।
३. सुद्धवत्थेण (अ, स) ।
४ °दूसहसहाइ (क, व, म) ।
५ सीया (अ, व, म, स) ।
६. °सजुत्त (अ) ।
७. पिणिहेति (ता, व) ।
८ पिणहेति (व) ।
९. स० पा०—एव जहा सूरियाभस्स अलकारो तहेव जाव चित्त ।
१०. वच्छसुत्त (म० वृ०), वेकच्छसुत्त (वृपा) ।
११. वाचनान्तरे त्वयमलकारवर्णक साक्षात्लिखित एव दृश्यते (वृ) ।
१२ वाचनान्तरे पुनरिदमधिक 'दद्दरमलयसुगधिगधिएहिं गायाइ भुकुडेति' त्ति दृश्यते (वृ) ।

१९१ तए ण से जमालिस्स खत्तियकुमारस्स पिया कोडुवियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एव वयासी—खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया ! अणेगखभसयसण्णिविट्ठ, लील-ट्ठियसालभजियाग जहा रायप्पसेणइज्जे विमाणवण्णओ जाव[1] मणिरयणघटिया-जालपरिक्खित्त[2] पुरिससहस्सवाहिणि सीयं उवट्ठवेह, उवट्ठवेत्ता मम एयमाण-त्तिय पच्चप्पिणह । तए ण ते कोडुवियपुरिसा जाव पच्चप्पिणति ॥

१९२ तए ण से जमाली खत्तियकुमारे केसालकारेण, वत्थालकारेण, मल्लालकारेणं, आभरणालकारेण —चउव्विहेण अलकारेण अलकारिए समाणे पडिपुण्णालकारे सीहासणाओ अब्भुट्ठेइ, अब्भुट्ठेत्ता सीय अणुप्पदाहिणीकरेमाणे सीय दुरुहइ[3], दुरुहित्ता सीहासणवरसि पुरत्थाभिमुहे सण्णिसण्णे ॥

१९३ तए ण तस्स जमालिस्स खत्तियकुमारस्स माता ण्हाया कयवलिकम्मा जाव[4] अप्पमहग्घाभरणालकियसरीरा हसलक्खण पडसाडग गहाय सीयं अणुप्पदा-हिणीकरेमाणी सीय दुरुहइ, दुरुहित्ता जमालिस्स खत्तियकुमारस्स दाहिणे पासे भद्दासणवरसि सण्णिसण्णा ॥

१९४. तए ण तस्स जमालिस्स खत्तियकुमारस्स अम्मधाती ण्हाया कयवलिकम्मा जाव[5] अप्पमहग्घाभरणालकियसरीरा रयहरण पडिग्गह च गहाय सीयं अणुप्पदाहिणीकरेमाणी सीय दुरुहइ, दुरुहित्ता जमालिस्स खत्तियकुमारस्स वामे पासे भद्दासणवरंसि सण्णिसण्णा ॥

१९५. तए ण तस्स जमालिस्स खत्तियकुमारस्स पिट्ठओ एगा वरतरुणी सिगारागार-चारुवेसा सगय-गय[6]-•हसिय-भणिय-चेट्ठिय-विलास-सललिय-सलाव-निउण-जुत्तोवयारकुसला सुदरथण-जघण-वयण-कर-चरण-नयण-लावण्ण॰-रूव-जोव्वण-विलासकलिया[7] सरदब्भ[8]-हिम-रयय-कुमुद-कुदेदुप्पगासं सकोरेटमल्ल-दाम धवल आयवत्त गहाय सलील 'ओधरेमाणी-ओधरेमाणी'[9] चिट्ठति ॥

---

१. राय॰ सू॰ १७ ।

२. वाचनान्तरे पुनरय वर्णक साक्षाद्दृश्यत एव (वृ) ।

३ द्रुहति (क, ता, व) ।

४ भ॰ ३।३३ ।

५. भ॰ ३।३३ ।

६ स॰ पा॰—सगयगय जाव रूव ।

७ विलासकलिया सुदरथण (अ, व, म, स), एपु आदर्शेपु 'विलासकलिया' इति पदस्याग्रे 'सुदरथण' इति सक्षिप्तपाठो विद्यते, किन्तु एप पाठ 'विलासकलिया' इति पदस्यादौ विद्यमानोस्ति, तेन नात्र युज्यते । वृत्तिकृतापि उक्तपदानन्तरमसौ पाठ स्वीकृत, किन्तु एतस्मिन् स्वीकारे पाठस्य पुनरुक्तिर्जायते, यथा—'रूवजोव्वणविलासकलिया' सुन्दरथ-णजहणवयणकरचरणणयणलावण्णरूवजोव्व-णगुणोववेय' त्ति सूचितम् (वृ), अस्माक पाठानुसन्धानप्रयुक्ते प्रतिद्वये एप पाठो नास्ति । एषा वाचना सम्यक् प्रतीयते ।

८. × (अ, व, म, स) ।

९ उवधरेमाणीओ उवधरेमाणीओ (अ), उवरि धरेमाणीओ २ (स) ।

१९६. तए ण तस्स जमालिस्स (खत्तियकुमारस्स ?) उभओ पासिं दुवे वरतरुणीओ सिंगारागार[1]•चारुवेसाओ सगय-गय-हसिय-भणिय-चेट्ठिय-विलास-सललिय-सलाव-निउणजुत्तोवयारकुसलाओ सुंदरथण-जघण-वयण-कर-चरण-नयण-लावण्ण-रूव-जोव्वण-विलास°कलियाओ नाणामणि-कणग-रयण-विमलमहरिहतवणिज्जुज्जलविचित्तदंडाओ, चिल्लियाओ, संखंक-कुंद-दगरय-अमय-महिय-फेणपुंजसण्णिकासाओ धवलाओ चामराओ[2] गहाय सलीलं वीयमाणीओ-वीयमाणीओ चिट्ठंति ।।

१९७. तए णं तस्स जमालिस्स खत्तियकुमारस्स उत्तरपुरत्थिमे णं एगा वरतरुणी सिंगारागार[3]•चारुवेसा सगय-गय-हसिय-भणिय-चेट्ठिय-विलास-सललिय-सलाव-निउणजुत्तोवयारकुसला सुंदरथण-जघण-वयण-कर-चरण-नयण-लावण्ण-रूव-जोव्वण-विलास°कलिया सेतं रययामयं विमलसलिलपुण्णं मत्तगयमहामुहाकितिसमाणं भिंगारं गहाय चिट्ठइ ।।

१९८ तए णं तस्स जमालिस्स खत्तियकुमारस्स दाहिणपुरत्थिमे णं एगा वरतरुणी सिंगारागार[4]•चारुवेसा सगय-गय-हसिय-भणिय-चेट्ठिय-विलास-सललिय-सलाव-निउणजुत्तोवयारकुसला सुंदरथण-जघण-वयण-कर-चरण-नयण-लावण्ण-रूव-जोव्वण-विलास°कलिया चित्तकणगदंडं तालवेंटं गहाय चिट्ठइ ।।

१९९. तए णं तस्स जमालिस्स खत्तियकुमारस्स पिया कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी—खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया ! सरिसयं सरित्तयं सरिव्वयं सरिसलावण्ण-रूव-जोव्वण-गुणोववेयं, एगाभरणवसण[5]-गहियनिज्जोयं कोडुंबियवरतरुणसहस्सं सद्दावेह ।।

२०० तए णं ते कोडुंबियपुरिसा जाव[6] पडिसुणेत्ता खिप्पामेव सरिसयं सरित्तयं[7] •सरिव्वयं सरिसलावण्ण-रूव-जोव्वण-गुणोववेयं एगाभरणवसण-गहियनिज्जोयं कोडुंबियवरतरुणसहस्सं° सद्दावेंति ।।

२०१ तए णं ते कोडुंबियवरतरुणपुरिसा[8] जमालिस्स खत्तियकुमारस्स पिउणा कोडुंबियपुरिसेहिं सद्दाविया समाणा हट्ठतुट्ठा ण्हाया कयबलिकम्मा कयकोउय-मंगल-पायच्छित्ता एगाभरणवसण-गहियनिज्जोया जेणेव जमालिस्स खत्तियकुमारस्स पिया तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता करयल[9]•परिग्गहियं दसनहं सिरसावत्तं

---

१. सं० पा०—सिंगारागार जाव कलिया ।
२. सेयवरचामराओ (क) ।
३. सं० पा०—सिंगारागार जाव कलिया ।
४. सं० पा०—सिंगारागार जाव कलिया ।
५. एगाऽऽभरण° (अ) ।
६ भ० ९।१८५ ।
७ सं० पा०—सरित्तयं जाव सद्दावेंति ।
८ अस्मिन् पदे 'वरतरुण' इति पाठ नायाधम्मकहाओ (१।१।१४०) सूत्रानुसारेण स्वीकृत. ।
९ सं० पा०—करयल जाव वद्धावेत्ता ।

मत्थए अंजलि कट्टु जएण विजएण वद्धावेति, ° वद्धावेत्ता एव वयासी—संदि-सतु ण देवाणुप्पिया ! ज अम्हेहि करणिज्ज ॥

२०२ तए ण से जमालिस्स खत्तियकुमारस्स पिया त कोडुवियवरतरुणसहस्स[1] एव वयासी—तुब्भे ण देवाणुप्पिया ! ण्हाया कय°[2]वलिकम्मा कयकोउय-मगल-पायच्छित्ता एगाभरणवसण°-गहियनिज्जोया जमालिस्स खत्तियकुमारस्स सीय परिवहेह ॥

२०३ तए ण ते कोडुवियवरतरुणपुरिसा जमालिस्स खत्तियकुमारस्स पिउणा एव वुत्ता समाणा जाव[3] पडिसुणेत्ता ण्हाया जाव[4] एगाभरणवसण-गहियनिज्जोगा जमालिस्स खत्तियकुमारस्स सीय परिवहति ॥

२०४. तए ण तस्स जमालिस्स खत्तियकुमारस्स पुरिससहस्सवाहिणि सीय दुरूढस्स समाणस्स तप्पढमयाए इमे अट्ठट्ठमगलगा पुरओ अहाणुपुव्वीए सपट्ठिया, तं जहा—सोत्थिय-सिरिवच्छ[5]-°णदियावत्त-वद्धमाणग-भद्दासण-कलस-मच्छ°-दप्पणा।

तदाणतर च ण पुण्णकलसभिगार[6],°दिव्वा य छत्तपडागा सचामरा दंसण-रइय-आलोय-दरिसणिज्जा, वाउद्धय-विजयवेजयती य ऊसिया°गगणतलमणुलिहती पुरओ अहाणुपुव्वीए सपट्ठिया ।

°[7]तदाणतर च णं वेरुलिय-भिसत-विमलदडं पलवकोरंटमल्लदामोवसोभियं चदमडलणिभ समूसिय विमल आयवत्त, पवर सीहासण वरमणिरयणपाद-पीढ सपाउयाजोयसमाउत्त बहुकिंकर-कम्मकर-पुरिस-पायत्त-परिक्खित्त पुरओ अहाणुपुव्वीए सपट्ठिय ।

तदाणतर च ण वहवे लट्ठिग्गाहा कुतग्गाहा चामरग्गाहा पासग्गाहा चावग्गाहा पोत्थयग्गाहा फलगग्गाहा पीढग्गाहा वीणग्गाहा कूवग्गाहा हडप्पग्गाहा पुरओ अहाणुपुव्वीए सपट्ठिया ।

तदाणतर च ण वहवे दडिणो मुडिणो सिहडिणो जडिणो पिच्छिणो हासकरा डमरकरा दवकरा चाडुकरा कदप्पिया कोक्कुइया किड्डकरा य वायता य गायता य णच्चता य हसता य भासता य सासता य सावेता य रक्खता य° आलोय च करेमाणा जय-जय सद्द पउजमाणा पुरओ अहाणुपुव्वीए सपट्ठिया ।

---

१. °सहस्स पि (अ, क, व, म, स) ।
२ स० पा०—कय जाव गहिय° ।
३ भ० ६।१८५ ।
४ भ० ६।२०१ ।
५. स० पा०—सिरिवच्छ जाव दप्पणा ।
६. स० पा०—जहा ओववाइए जाव गगण°, अनेन च यदुपात्त तद्वाचनान्तरे साक्षादेवास्ति (वृ) ।
७. स० पा०—एव जहा ओववाइए तहेव भाणियव्व जाव आलोय, एतच्च वाचनान्तरे प्राय साक्षाद्दृश्यत एव (वृ), वृत्तिकृता वाचनान्तरे अधिकपाठस्यापि सूचना कृतास्ति ।

तदाणतर च ण बहवे उग्गा भोगा खत्तिया इक्खागा नाया कोरव्वा जहा ओववाइए, जाव[1] महापुरिसवग्गुरापरिक्खित्ता जमालिस्स खत्तियकुमारस्स पुरओ य मग्गतो य पासओ य अहाणुपुव्वीए सपट्ठिया ।।

२०५ तए ण से जमालिस्स खत्तियकुमारस्स पिया ण्हाए कयबलिकम्मे[2] °कयकोउय-मगल-पायच्छित्ते सव्वालकार° विभूसिए हत्थिक्खधवरगए सकोरेटमल्लदामेण छत्तेण धरिज्जमाणेण सेयवरचामराहि उद्धुव्वमाणीहि-उद्धुव्वमाणीहिं हय-गय-रह-पवरजोहकलियाए चाउरगिणीए सेणाए सद्धि सपरिवुडे महयाभडचडगर-विदपरिक्खित्ते[3] 'जमालि खत्तियकुमार'[4] पिट्ठओ अणुगच्छइ ।।

२०६ तए ण तस्स जमालिस्स खत्तियकुमारस्स पुरओ मह आसा आसवरा[5], उभओ पासि नागा नागवरा, पिट्ठओ रहा, रहसगेल्ली ।।

२०७ तए ण से जमाली खत्तियकुमारे अब्भुग्गयभिगारे, परिग्गहियतालियटे[6], ऊस-वियसेतछत्ते, पवीइयसेतचामरबालवीयणीए, सव्विड्ढीए जाव[7] दुदहि-णिग्घोस-णादितरवेण[8] खत्तियकुडग्गाम नयर मज्झमज्झेण जेणेव माहणकुडग्गामे नयरे, जेणेव बहुसालए चेइए, जेणेव समणे भगव महावीरे तेणेव पाहारेत्थ गमणाए ।।

२०८. तए ण तस्स जमालिस्स खत्तियकुमारस्स खत्तियकुडग्गाम नयर मज्झमज्झेण निग्गच्छमाणस्स सिघाडग-तिय-चउक्क[9]-°चच्चर-चउम्मुह-महापह° पहेसु बहवे अत्थत्थिया[10] °कामत्थिया भोगत्थिया लाभत्थिया किव्विसिया कारोडिया कारवाहिया सखिया चक्किया नगलिया मुहमगलिया वद्धमाणा पूसमाणया खडियगणा ताहि इट्ठाहि कताहि पियाहि मणुण्णाहिं मणामाहि मणाभिरामाहिं हिययगमणिज्जाहिं वग्गूहिं जयविजयमगलसएहि अणवरय° अभिनदता य अभि-त्थुणता य एव वयासी—जय-जय नदा ! धम्मेण, जय-जय नदा ! तवेण, जय-

---

१ ओ० सू० ५२ ।
२ स० पा०—कयबलिकम्मे जाव विभूसिए ।
३ °गर जाव परिक्खित्ते (अ, क, ता, ब, म, स) ।
४. जमालिस्स खत्तियकुमारस्स (अ, स) ।
५ आसवारा (वृपा) ।
६. °तालयटे (क, ता) ।
७. भ० ६।१८२ ।
८ अतोग्रे 'अ, व, म, स' इति सकेतितेपु आदर्शेपु एतावान् अधिक पाठो लभ्यते—'तदाणतर च ण बहवे लट्ठिग्गाहा कुतग्गाहा जाव पुत्थयग्गाहा जाव वीणग्गाहा, तदाण-तर च ण अट्ठसय गयाण, अट्ठसय तुरयाण, अट्ठसय रहाण, तदाणतर च ण लउड-असि-कोतहत्थाण बहूण पायत्ताणीण पुरओ सप-ट्ठिय, तदाणतर च ण बहवे राईसर-तलवर जाव सत्थवाहप्पभिअओ पुरओ सपट्ठिया ।' असौ पाठ अत पूर्ववर्ती विद्यते । लिपिदोपेण प्रमादेन वा अत्र प्रवेश प्राप्त. । प० बेचर-दाससम्पादितभगवत्यामपि इत्थमेव अस्ति ।
९ स० पा०—चउक्क जाव पहेसु ।
१० स० पा०—जहा ओववाइए जाव अभिनदता

जय नदा ! भद्द ते' अभग्गेहिं[2] नाण-दसण-चरित्तेहिमुत्तमेहिं[3], अजियाइ जिणाहि इदियाइ, जिय पालेहि समणधम्म, जियविग्घो वि य वसाहि त देव! सिद्धिमज्झे, निहणाहि य रागदोसमल्ले तवेण धितिधणियवद्धकच्छे, मद्दाहि य अट्ठ कम्मसत्तू झाणेण उत्तमेण सुक्केण, अप्पमत्तो हराहि आराहणपडाग च धीर ! तेलोक्करगमज्झे, पावय वितिमिरमणुत्तर केवल च नाण, गच्छ य मोक्ख पर पद जिणवरोवदिट्ठेण सिद्धिमग्गेण अकुडिलेण हता परीसहचमू अभिभविय[4] गामकटकोवसग्गा ण, धम्मे ते अविग्घमत्थु त्ति कट्टु अभिनदति य अभिथुणति य ॥

२०९ तए ण से जमाली खत्तियकुमारे नयणमालासहस्सेहिं पेच्छिज्जमाणे-पेच्छिज्जमाणे [5]•हिययमालासहस्सेहि अभिणदिज्जमाणे-अभिणदिज्जमाणे मणोरहमालासहस्सेहि विच्छिप्पमाणे-विच्छिप्पमाणे वयणमालासहस्सेहिं अभिथुव्वमाणे-अभिथुव्वमाणे कतिसोहग्गगुणेहि पत्थिज्जमाणे-पत्थिज्जमाणे वहूण नरनारिसहस्साण दाहिणहत्थेण अजलिमालासहस्साइ पडिच्छमाणे-पडिच्छमाणे मजुमजुणा घोसेण आपडिपुच्छमाणे-आपडिपुच्छमाणे भवणपतिसहस्साइ समइच्छमाणे-समइच्छमाणे खत्तियकुडग्गामे नयरे मज्झमज्झेण° निग्गच्छइ, निग्गच्छित्ता जेणेव माहणकुडग्गामे नयरे जेणेव वहुसालए चेइए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता छत्तादीए तित्थगरातिसए पासइ, पासित्ता पुरिससहस्सवाहिणि सीय ठवेइ, पुरिससहस्सवाहिणीओ सीयाओ पच्चोरुहइ ॥

२१०. तए ण त जमालि खत्तियकुमार अम्मापियरो पुरओ काउ जेणेव समणे भगव महावीरे तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता समण भगव महावीर तिक्खुत्तो[6] •आयाहिण-पयाहिण करेति, करेत्ता वदति नमसति, वदित्ता° नमसित्ता एवं वयासी—एव खलु भते ! जमाली खत्तियकुमारे अम्ह एगे पुत्ते इट्ठे कते[7] •पिए मणुण्णे मणामे थेज्जे वेसासिए समए वहुमए अणुमए भडकरडगसमाणे रयणे रयणब्भूए जीविऊसविए हिययनदिजणणे उवरपुप्फ पिव दुल्लभे सवणयाए°, किमग ! पुण पासणयाए ? से जहानामए उप्पले इ वा, पउमे इ वा जाव[8] सहस्सपत्ते इ वा पके जाए जले सवुड्ढे नोवलिप्पति पकरएण, नोवलिप्पति जलरएण, एवामेव जमाली वि खत्तियकुमारे कामेहि जाए, भोगेहिं सवुड्ढे

---

१. भवतादिति गम्यते (वृ) ।
२ अभिग्गहेहिं (अ) ।
३ चरित्तमुत्तमेहिं (अ, क, म, स), चरित्तमुत्तेहिं (ता) ।
४. अभिभविया (अ, क, म), अभिभविता (ता); अभिसमिया (व) ।
५. स० पा०—एव जहा ओववाइए कूणिओ जाव निग्गच्छइ ।
६ स० पा०—तिक्खुत्तो जाव नमसित्ता ।
७ स० पा०—कते जाव किमग ।
८ ओ० सू० १५० ।

नोवलिप्पति कामरएणं, नोवलिप्पति भोगरएण, नोवलिप्पति मित्त-णाइ-णियग-सयण-संवधि-परिजणेण । एस ण देवाणुप्पिया ! ससारभयुव्विग्गे भीए जम्मण-मरणेणं, इच्छइ[1] देवाणुप्पियाण अंतिए मुडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइत्तए[2] । त एय ण देवाणुप्पियाण अम्हे सीसभिक्ख दलयामो, पडिच्छतु ण देवाणुप्पिया ! सीसभिक्ख ॥

२११ 'तए ण समणे भगव महावीरे जमालि खत्तियकुमार एव वयासी'[3]—अहासुह देवाणुप्पिया ! मा पडिवध ॥

२१२. तए ण से जमाली खत्तियकुमारे समणेण भगवया महावीरेण एव वुत्ते समाणे हट्ठतुट्ठे समण भगव महावीर तिक्खुत्तो[4] •आयाहिण-पयाहिण करेइ, करेत्ता वदइ नमसइ, वदित्ता° नमसित्ता उत्तरपुरत्थिम दिसिभाग अवक्कमइ, अवक्कमित्ता सयमेव आभरण-मल्लालकार ओमुयइ ॥

२१३ तए ण सा जमालिस्स खत्तियकुमारस्स माया हसलक्खणेण पडसाडएण आभरण-मल्लालकार पडिच्छइ, पडिच्छित्ता हार-वारि[5]•धार-सिदुवार-छिन्नमुत्तावलि-प्पगासाइ असूणि° विणिम्मुयमाणी-विणिम्मुयमाणी जमालि खत्तियकुमार एव वयासी—'जइयव्व जाया ! घडियव्व[6] जाया ! परक्कमियव्व जाया ! अस्सि च ण अट्ठे णो पमाएतव्व ति कट्टु जमालिस्स खत्तियकुमारस्स अम्मा-पियरो समण भगव महावीर वदति नमसति, वदित्ता नमसित्ता जामेव दिस पाउब्भूया तामेव दिस पडिगया ॥

२१४ तए ण से जमाली खत्तियकुमारे सयमेव पचमुट्ठिय लोय करेइ, करेत्ता जेणेव समणे भगव महावीरे तेणेव उवागच्छइ, [7]•उवागच्छित्ता समण भगव महावीर तिक्खुत्तो आयाहिण-पयाहिण करेइ, करेत्ता वदइ नमसइ, वदित्ता नमसित्ता एव वयासी—आलित्ते ण भते ! लोए, पलित्ते ण भते ! लोए, आलित्त-पलित्ते ण भते ! लोए जराए मरणेण य ।

---

१. × (अ, क, ता, व, म, स) ।

२. पव्वतेति (अ), पव्वयति (क), पव्वइतइ (ता), पव्वतिति (व), पव्वतित (म), पव्वतिते (स) अत्र 'इच्छइ, पव्वइत्तए' एते द्वे अपि पदे नायाधम्मकहाओ (१।१।१४५) सूत्रस्याधारेण स्वीकृते स्त । सर्वेषु अपि आदर्शेषु लिपिदोषेण पाठपरिवर्तन जातम् । तन्मध्यवर्तिपाठाना नहि कश्चिदर्थो-वगम्यते ।

३ × (अ, क, ब, म) ।

४ स० पा०—तिक्खुत्तो जाव नमसित्ता ।

५ स० पा०—वारि जाव विणिम्मुयमाणी ।

६ घडियव्व जाया जइयव्व (अ, क, ता, व, म, स) ।

७ स० पा०—एव जहा उसभदत्तो तहेव पव्वइओ नवर पचहिं पुरिससएहिं सद्धिं तहेव जाव ।

से जहानामए केइ गाहावई अगारंसि झियायमाणंसि जे से तत्थ भंडे भवइ अप्पभारे मोल्लगरुए, तं गहाय आयाए एगंतमंतं अवक्कमइ। एस मे नित्थारिए समाणे पच्छा पुरा य हियाए सुहाए खमाए निस्सेयसाए आणुगामियत्ताए भविस्सइ।

एवामेव देवाणुप्पिया ! मज्झ वि आया एगे भंडे इट्ठे कंते पिए मणुण्णे मणामे थेज्जे वेस्सासिए सम्मए बहुमए अणुमए भंडकरंडगसमाणे, मा णं सीयं, मा णं उण्हं, मा णं खुहा, मा णं पिवासा, मा णं चोरा, मा णं वाला, मा णं दंसा, मा णं मसया, मा णं वाइय-पित्तिय-सेंभिय-सन्निवाइय विविहा रोगायंका परीसहोवसग्गा फुसंतु त्ति कट्टु एस मे नित्थारिए समाणे परलोयस्स हियाए सुहाए खमाए नीसेसाए आणुगामियत्ताए भविस्सइ।

तं इच्छामि णं देवाणुप्पिया ! सयमेव पव्वावियं, सयमेव मुंडावियं, सयमेव सेहावियं, सयमेव सिक्खावियं, सयमेव आयार-गोयरं विणय-वेणइय-चरण-करण-जायामायावत्तियं धम्ममाइक्खियं॥

२१५ तए णं समणे भगवं महावीरे जमालिं खत्तियकुमारं पंचहिं पुरिससएहिं सद्धिं सयमेव पव्वावेइ° जाव[1] सामाइयमाइयाइं एक्कारस अंगाइं अहिज्जइ, अहिज्जित्ता बहूहिं चउत्थ-छट्ठट्ठम[2]-°दसम-दुवालसेहिं° मासद्ध-मासखमणेहिं विचित्तेहिं तवोकम्मेहिं अप्पाणं भावेमाणे विहरइ॥

२१६ तए णं से जमाली अणगारे अण्णया कयाइ जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता समणं भगवं महावीरं वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी—इच्छामि णं भंते ! तुब्भेहिं अब्भणुण्णाए समाणे पंचहिं अणगार-सएहिं सद्धिं बहिया जणवयविहारं विहरित्तए॥

२१७. तए णं समणे भगवं महावीरे जमालिस्स अणगारस्स एयमट्ठं नो आढाइ, नो परिजाणइ, तुसिणीए संचिट्ठइ॥

२१८ तए णं से जमाली अणगारे समणं भगवं महावीरं दोच्चं पि तच्चं पि एवं वयासी—इच्छामि णं भंते ! तुब्भेहिं अब्भणुण्णाए समाणे पंचहिं अणगारसएहिं सद्धिं[3] °बहिया जणवयविहारं° विहरित्तए॥

२१९. तए णं समणे भगवं महावीरे जमालिस्स अणगारस्स दोच्चं पि, तच्चं पि एयमट्ठं नो आढाइ[4], °नो परिजाणइ°, तुसिणीए संचिट्ठइ।

२२०. तए णं से जमाली अणगारे समणं भगवं महावीरं वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतियाओ बहुसालाओ चेइयाओ

---

१. भ० २।५२-५७।

२. सं० पा०—छट्ठट्ठम जाव मासद्ध।

३. सं० पा०—सद्धिं जाव विहरित्तए।

४. सं० पा०—आढाइ जाव तुसिणीए।

पडिनिक्खमइ, पडिनिक्खमित्ता पचहि अणगारसएहि सद्धि बहिया जणवय-विहार विहरइ ॥

२२१ तेण कालेण तेण समएण सावत्थी नाम नयरी होत्था—वण्णओ[1], कोट्ठए चेइए—वण्णओ जाव[2] वणसडस्स । तेण कालेण तेण समएण चपा नाम नयरी होत्था—वण्णओ[3] । पुण्णभद्दे चेइए—वण्णओ जाव[4] पुढविसिलापट्टओ ॥

२२२ तए ण से जमाली अणगारे अण्णया कयाइ पचहि अणगारसएहि सद्धि सपरिवुडे पुव्वाणुपुव्वि चरमाणे गामाणुग्गाम दुइज्जमाणे जेणेव सावत्थी नयरी जेणेव कोट्ठए चेइए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता अहापडिरूव ओग्गह ओगिण्हइ, ओगिण्हित्ता सजमेण तवसा अप्पाण भावेमाणे विहरइ ॥

२२३. तए ण समणे भगव महावीरे अण्णया कयाइ पुव्वाणुपुव्वि चरमाणे[5] •गामाणुग्गाम दूइज्जमाणे॰ सुहसुहेण विहरमाणे जेणेव चपा नयरी जेणेव पुण्णभद्दे चेइए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता अहापडिरूवं ओग्गहं ओगिण्हइ, ओगिण्हित्ता सजमेण तवसा अप्पाण भावेमाणे विहरइ ॥

२२४ तए ण तस्स जमालिस्स अणगारस्स तेहि 'अरसेहि य'[6], विरसेहि य अतेहि य, पतेहि य, लूहेहि य, तुच्छेहि य, कालाइक्कतेहि य, पमाणाइक्कतेहि य[7] पाण-भोयणेहि अण्णया कयाइ सरीरगसि विउले रोगातके पाउब्भूए—उज्जले विउले[8] पगाढे कक्कसे कडुए चडे दुक्खे दुग्गे तिव्वे दुरहियासे । पित्तज्जरपरि-गतसरीरे, दाहवक्कतिए[9] या वि विहरइ ॥

२२५ तए ण से जमाली अणगारे वेयणाए अभिभूए समाणे समणे निग्गथे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एव वयासी—तुब्भे ण देवाणुप्पिया ! मम सेज्जा-सथारग सथरह ॥

२२६. तए ण ते समणा निग्गथा जमालिस्स अणगारस्स एतमट्ठ विणएण पडिसुणेति, पडिसुणेत्ता जमालिस्स अणगारस्स सेज्जा-सथारग सथरति ॥

२२७ तए ण से जमाली अणगारे बलियतर वेदणाए अभिभूए समाणे दोच्च पि समणे निग्गथे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एव वयासी—मम[10] ण देवाणुप्पिया ! सेज्जा-सथारए कि कडे ? कज्जइ ?

तते ण ते समणा निग्गथा जमालि अणगार एव वयासी—नो खलु देवाणुप्पियाण सेज्जा-सथारए कडे, कज्जइ ॥

---

१. ओ० सू० १ ।
२ ओ० सू० २-१३ ।
३ ओ० सू० १ ।
४. ओ० सू० २-१३ ।
५ स० पा०—चरमाणे जाव सुहसुहेण ।
६ अरसेहिं या (क, ता, ब) सर्वत्र ।
७. य सीओएहि य (अ), य सीएहिं (ब), य सीतेहि य (स) ।
८. वितुले (ब, म), तिउले (स, वृ), विउले (वृपा) ।
९ दाहवुक्कतिए (ब) ।
१०. मम (अ, स) ।

२२८. तए ण तस्स जमालिस्स अणगारस्स अयमेयारूवे अज्झत्थिए[1] •चिंतिए पत्थिए मणोगए सकप्पे° समुप्पज्जित्था—जण्ण समणे भगव महावीरे एवमाइक्खइ जाव[2] एव परूवेइ—एव खलु चलमाणे चलिए, उदीरिज्जमाणे उदीरिए[3], •वेदिज्जमाणे वेदिए, पहिज्जमाणे पहीणे, छिज्जमाणे छिण्णे, भिज्जमाणे भिण्णे, दज्झमाणे दड्ढे, मिज्जमाणे मए°, निज्जरिज्जमाणे निज्जिण्णे, तण्ण मिच्छा। इम च ण पच्चक्खमेव दीसइ सेज्जा-सथारए कज्जमाणे अकडे, सथरिज्जमाणे असथरिए। जम्हा ण सेज्जा-सथारए कज्जमाणे अकडे, सथरिज्जमाणे असथरिए। तम्हा चलमाणे वि अचलिए जाव निज्जरिज्जमाणे वि अनिज्जिण्णे—एव सपेहेइ, सपेहेत्ता समणे निग्गथे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एव वयासी—जण्ण देवाणुप्पिया! समणे भगव महावीरे एवमाइक्खइ जाव परूवेइ—एव खलु चलमाणे चलिए[4] •जाव निज्जरिज्जमाणे निज्जिण्णे, तण्ण मिच्छा। इम च ण पच्चक्खमेव दीसइ सेज्जा-सथारए कज्जमाणे अकडे, सथरिज्जमाणे असथरिए। जम्हा ण सेज्जा-सथारए कज्जमाणे अकडे, सथरिज्जमाणे असथरिए। तम्हा चलमाणे वि अचलिए° जाव निज्जरिज्जमाणे वि अनिज्जिण्णे॥

२२९. तए ण तस्स जमालिस्स अणगारस्स एवमाइक्खमाणस्स जाव परूवेमाणस्स अत्थेगतिया समणा निग्गथा एयमट्ठ सद्दहति पत्तियति रोयति, अत्थेगतिया समणा निग्गथा एयमट्ठ नो सद्दहति नो पत्तियति नो रोयति। तत्थ ण जे ते समणा निग्गथा जमालिस्स अणगारस्स एयमट्ठ सद्दहति पत्तियति रोयति, ते ण जमालि चेव अणगार उवसपज्जित्ता ण विहरति। तत्थ ण जे ते समणा निग्गथा जमालिस्स अणगारस्स एयमट्ठ नो सद्दहति नो पत्तियति नो रोयति, ते ण जमालिस्स अणगारस्स अतियाओ कोट्ठगाओ चेइयाओ पडिनिक्खमति, पडिनिक्खमित्ता पुव्वाणुपुव्वि चरमाणा गामाणुग्गाम दूइज्जमाणा जेणेव चपा नयरी, जेणेव पुण्णभद्दे चेइए, जेणेव समणे भगव महावीरे तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता समण भगव महावीर तिक्खुत्तो आयाहिण-पयाहिण करेति, करेत्ता वदति नमसति, वदित्ता नमंसित्ता समण भगव महावीरं उवसपज्जित्ता ण विहरति॥

२३०. तए ण से जमाली अणगारे अण्णया कयाइ[5] ताओ रोगायकाओ विप्पमुक्के हट्ठे जाए, अरोए वलियसरीरे सावत्थीओ नयरीओ कोट्ठगाओ चेइयाओ

१. स० पा०—अज्झत्थिए जाव समुप्पज्जित्था।
२ भ० १।४२०।
३ स० पा०—उदीरिए जाव निज्जरिज्जमाणे।
४ स० पा०—त चेव जाव।
५ कयाति (अ, व, स), कदायी (ता)।

पडिनिक्खमइ, पडिनिक्खमित्ता पुव्वाणुपुव्वि चरमाणे, गामाणुग्गाम दूइज्ज-माणे जेणेव चपा नयरी, जेणेव पुण्णभद्दे चेइए, जेणेव समणे भगव महावीरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता समणस्स भगवओ महावीरस्स अदूरसामते ठिच्चा समण भगव महावीर एव वयासी—जहा ण देवाणुप्पियाण बहवे अते-वासी समणा निग्गथा छउमत्थावक्कमणेण[1] अवक्कता, नो खलु अह तहा छउमत्थावक्कमणेण[2] अवक्कते, अह ण उप्पन्ननाण-दसणधरे अरहा जिणे केवली भवित्ता केवलिअवक्कमणेण अवक्कते ॥

२३१. तए ण भगव गोयमे जमालि अणगार एव वयासी—नो खलु जमाली ! केव-लिस्स नाणे वा दसणे वा सेलसि वा 'थभसि वा'[3] थूभसि वा आवरिज्जइ वा निवारिज्जइ वा, जदि ण तुम जमाली ! उप्पन्ननाण-दसणधरे अरहा जिणे केवलि भवित्ता केवलिअवक्कमणेण अवक्कते, तो ण इमाइ दो वागरणाइ वागरेहि—सासए लोए जमाली ! असासए लोए जमाली ? सासए जीवे जमाली ! असासए जीवे जमाली ?

२३२. तए ण से जमाली अणगारे भगवया गोयमेण एव वुत्ते समाणे सकिए कखिए[4] •वितिगिच्छिए भेदसमावण्णे° कलुससमावण्णे जाए या वि होत्था, नो सचाएति भगवओ गोयमस्स किचि वि पमोक्खमाइक्खित्तए, तुसिणीए सचिट्ठइ ॥

२३३ जमालीति ! समणे भगव महावीरे जमालि अणगार एव वयासी—अत्थि ण जमाली ! मम बहवे अतेवासी समणा निग्गथा छउमत्था, जे ण पभू एय वागरण वागरित्तए, जहा ण अह, नो चेव[5] ण एतप्पगार भास भासित्तए, जहा ण तुम ।

सासए लोए जमाली[6] ! ज न कयाइ नासि, न कयाइ न भवइ, न कयाइ न भविस्सइ—भुवि च, भवइ य, भविस्सइ य—धुवे, नितिए सासए, अक्खए, अव्वए, अवट्ठिए निच्चे ।

असासए लोए जमाली ! ज ओसप्पिणी भवित्ता उस्सप्पिणी भवइ, उस्सप्पिणी भवित्ता ओसप्पिणी भवइ ।

सासए जीवे जमाली ! ज न कयाइ नासि[7], •न कयाइ न भवइ, न कयाइ न भविस्सइ—भुवि च, भवइ य, भविस्सइ य—धुवे, नितिए, सासए, अक्खए, अव्वए, अवट्ठिए° निच्चे ।

---

१ छउमत्था भवेत्ता छउमत्था° (अ, क, म, स)
२ छउमत्था भवेत्ता छउमत्था° (अ, क, म, स)
३ × (अ, व, म) ।
४. स० पा०—कखिए जाव कलुस° ।
५ च्चेव (ता) ।
६ × (क, ता) ।
७ स० पा०—नासि जाव निच्चे ।

असासए जीवे जमाली ! जण्ण नेरइए भवित्ता तिरिक्खजोणिए भवइ, तिरिक्खजोणिए भवित्ता मणुस्से भवइ, मणुस्से भवित्ता देवे भवइ ।।

२३४ तए ण से जमाली अणगारे समणस्स भगवओ महावीरस्स एवमाइक्खमाणस्स जाव[1] एव परूवेमाणस्स एतमट्ठ नो सद्दहइ नो पत्तियइ नो रोएइ, एतमट्ठं असद्दहमाणे अपत्तियमाणे अरोएमाणे दोच्च पि समणस्स भगवओ महावीरस्स अतियाओ आयाए अवक्कमइ, अवक्कमित्ता वहूहि असब्भावुब्भावणाहि मिच्छत्ताभिणिवेसेहि य अप्पाण च पर च तदुभय च वुग्गाहेमाणे वुप्पाएमाणे वहूइ वासाइ सामण्णपरियाग पाउणइ, पाउणित्ता अद्धमासियाए सलेहणाए अत्ताण भूसेइ, भूसेत्ता तीस भत्ताइ अणसणाए छेदेइ, छेदेत्ता तस्स ठाणस्स[2] अणालोइयपडिक्कते कालमासे काल किच्चा लतए कप्पे तेरससागरोवमठितीएसु देवकिव्विसिएसु देवेसु देवकिव्विसियत्ताए उववन्ने ।।

२३५. तए ण भगव गोयमे जमालि अणगार कालगय जाणित्ता जेणेव समणे भगव महावीरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता समण भगव महावीर वदइ नमसइ, वदित्ता नमसिता एव वयासी—एव खलु देवाणुप्पियाण अतेवासी कुसिस्से जमाली नाम अणगारे से ण भते ! जमालो अणगारे कालमासे काल किच्चा कहि गए ? कहि उववन्ने ?

गोयमादी ! समणे भगव महावीरे भगव गोयम एव वयासी—एवं खलु गोयमा ! मम अतेवासी कुसिस्से जमाली नाम अणगारे, से ण तदा मम एवमाइक्खमाणस्स एव भासमाणस्स एव पण्णवेमाणस्स एव परूवेमाणस्स एतमट्ठ नो सद्दहइ नो पत्तियइ नो रोएइ, एतमट्ठ असद्दहमाणे अपत्तियमाणे अरोएमाणे, दोच्च पि मम अतियाओ आयाए अवक्कमइ, अवक्कमित्ता वहूहि असब्भावुब्भावणाहि [3]•मिच्छत्ताभिणिवेसेहि य अप्पाण च पर च तदुभय च वुग्गाहेमाणे वुप्पाएमाणे वहूइ वासाइ सामण्णपरियाग पाउणित्ता, अद्धमासियाए सलेहणाए अत्ताण भूसेत्ता, तीस भत्ताइ अणसणाए छेदेत्ता तस्स ठाणस्स अणालोइयपडिक्कते कालमासे काल किच्चा लतए कप्पे तेरससागरोवमठितीएसु देवकिव्विसिएसु देवेसु° देवकिव्विसियत्ताए उववन्ने ।।

२३६. कतिविहा ण भते ! देवकिव्विसिया पण्णत्ता ?

गोयमा ! तिविहा देवकिव्विसिया पण्णत्ता, त जहा—तिपलिओवमट्ठिइया, तिसागरोवमट्ठिइया, तेरससागरोवमट्ठिइया ।।

२३७. कहि ण भते ! तिपलिओवमट्ठिइया देवकिव्विसिया परिवसति ?

---

१. भ० १।४२० ।

२ ट्ठाणस्स (ता, म, स) ।

३ स० पा०—त चेव जाव देव० ।

गोयमा ! उप्पिं जोइसियाण, हिट्ठिं[1] सोहम्मीसाणेसु कप्पेसु, एत्थ ण तिपलिओवमट्ठिइया देवकिव्विसिया परिवसति ।।

२३८ कहिं ण भते ! तिसागरोवमट्ठिइया देवकिव्विसिया परिवसति ?
गोयमा ! उप्पिं सोहम्मीसाणाण कप्पाण, हिट्ठि सणकुमार-माहिंदेसु कप्पेसु, एत्थ ण तिसागरोवमट्ठिइया देवकिव्विसिया परिवसति ।।

२३९. कहिं ण भते ! तेरससागरोवमट्ठिइया देवकिव्विसिया परिवसति ?
गोयमा ! उप्पिं बभलोगस्स कप्पस्स, हिट्ठि लतए कप्पे, एत्थ ण तेरससागरोवमट्ठिइया देवकिव्विसिया देवा परिवसति ।।

२४० देवकिव्विसिया ण भते ! केसु कम्मादाणेसु देवकिव्विसियत्ताए उववत्तारो भवति ?
गोयमा ! जे इमे जीवा आयरियपडिणीया, उवज्झायपडिणीया, कुलपडिणीया, गणपडिणीया, सघपडिणीया, आयरिय-उवज्झायाण अयसकारा[2] अवण्णकारा अकित्तिकारा वहूहिं असब्भावुब्भावणाहिं, मिच्छत्ताभिनिवेसेहि य अप्पाण पर च तदुभय च वुग्गाहेमाणा वुप्पाएमाणा बहूइ वासाइ सामण्णपरियाग पाउणति, पाउणित्ता तस्स ठाणस्स अणालोइयपडिक्कता कालमासे काल किच्चा अण्णयरेसु देवकिव्विसिएसु देवकिव्विसियत्ताए उववत्तारो भवति, त जहा—तिपलिओवमट्ठितिएसु वा, तिसागरोवमट्ठितिएसु वा, तेरससागरोवमट्ठितिएसु वा ।।

२४१ देवकिव्विसिया ण भते ! ताओ देवलोगाओ आउक्खएण, 'भवक्खएण, ठितिक्खएण'[3] अणतर चय चइत्ता कहिं गच्छति ? कहिं उववज्जति ?
गोयमा ! जाव चत्तारि पच नेरइय-तिरिक्खजोणिय-मणुस्स-देवभवग्गहणाइ ससार अणुपरियट्टित्ता तओ पच्छा सिज्झति बुज्झति[4] •मुच्चति परिणिव्वायति सव्वदुक्खाण° अत करेति, अत्थेगतिया अणादीय अणवदग्ग दीहमद्ध चाउरत ससारकतार अणुपरियट्टति ।।

२४२ जमाली ण भते ! अणगारे अरसाहारे विरसाहारे अताहारे पताहारे लूहाहारे तुच्छाहारे अरसजीवी विरसजीवी[5] •अतजीवी पतजीवी लूहजीवी° तुच्छजीवी उवसतजीवी पसतजीवी विवित्तजीवी ?
हता गोयमा ! जमाली ण अणगारे अरसाहारे विरसाहारे जाव विवित्तजीवी ।।

२४३ जति ण भते ! जमाली अणगारे अरसाहारे विरसाहारे जाव विवित्तजीवी

---

१. हव्वि (ता) सर्वत्र, हव्वि (म) ।
२ °करा (अ, स), सर्वत्र, अयसकारगा (वृ) ।
३ ठितिक्खएण भवक्खएण (ता) ।
४ स० पा०—बुज्झति जाव अत ।
५ स० पा०—विरसजीवी जाव तुच्छजीवी ।

कम्हा ण भते ! जमाली अणगारे कालमासे काल किच्चा लंतए कप्पे तेरस-सागरोवमट्ठितिएसु देवकिव्विसिएसु देवेसु देवकिव्विसियत्ताए उववन्ने ?
गोयमा ! जमाली ण अणगारे आयरियपडिणीए, उवज्झायपडिणीए, आयरिय-उवज्झायाण अयसकारए अवण्णकारए[1] •अकित्तिकारए वहूहि असब्भावुब्भावणाहिं, मिच्छत्ताभिनिवेसेहि य अप्पाण पर च तदुभय च वुग्गाहेमाणे° वुप्पाएमाणे वहूइ वासाइ सामण्णपरियाग पाउणित्ता, अद्धमासियाए सलेहणाए तीस भत्ताइ अणसणाए छेदेत्ता तस्स ठाणस्स अणालोइयपडिक्कते कालमासे काल किच्चा लतए कप्पे[2] •तेरससागरोवमट्ठितिएसु देवकिव्विसिएसु देवेसु देवकिव्विसियत्ताए° उववन्ने ॥

२४४ जमाली ण भते ! देवे ताओ देवलोगाओ आउक्खएण[3] •भवक्खएण ठिइक्खएण अणंतर चय चइत्ता कहिं गच्छिहिति ? °कहि उववज्जिहिति ?
गोयमा ! चत्तारि पच तिरिक्खजोणिय-मणुस्स-देवभवग्गहणाइ ससारं अणुपरियट्टित्ता तओ पच्छा सिज्झिहिति[4] •वुज्झिहिति मुच्चिहिति परिणिव्वाहिति सव्वदुक्खाण° अंत काहिति ॥

२४५. सेव भते ! सेव भते ! त्ति[5] ॥

चोत्तीसइमो उद्देसो

एगस्स वधे अणेगवध-पद

२४६. तेण कालेण तेण समएण रायगिहे जाव[6] एवं वयासी—पुरिसे ण भते ! पुरिस हणमाणे किं पुरिस हणइ[7] ? नोपुरिसे हणइ ?
गोयमा ! पुरिस पि हणइ, नोपुरिसे वि हणइ ॥

२४७ से केणट्ठेण भते ! एव वुच्चइ—पुरिस पि हणइ, नोपुरिसे वि हणइ ?

---

१. सं० पा०—अवण्णकारए जाव वुप्पाएमाणे ।
२ स० पा०—कप्पे जाव उववन्ने ।
३ स० पा०—आउक्खएण जाव कहि ।
४. सं० पा०—सिज्झिहिति जाव अतं ।
५ भ० १।५१ ।
६ भ० १।४-१० ।
७ छणइ (वृपा) ।

गोयमा ! तस्स ण एव भवइ—एव खलु अह एग पुरिस हणामि, से ण एग पुरिस हणमाणे 'अणेगे जीवे'[1] हणइ। से तेणट्ठेण गोयमा ! एव वुच्चइ—पुरिस पि हणइ, नोपुरिसे वि हणइ ॥

२४८. पुरिसे ण भते ! आस हणमाणे कि आस हणइ ? नोआसे[2] हणइ ?
गोयमा ! आस पि हणइ, नोआसे वि हणइ ॥
से केणट्ठेण ?
अट्ठो तहेव। एव हत्थि, सीह, वग्घ जाव[3] चिल्ललग[4] ॥

इसिस्स वधे अणंतवध-पद

२४९. पुरिसे ण भते ? इसिं हणमाणे किं इसिं हणइ ? नोइसिं हणइ ?
गोयमा ! इसिं पि हणइ, नोइसि पि हणइ ॥

२५० से केणट्ठेण भते ? एव वुच्चइ[5]—•इसि पि हणइ, ° नोइसिं पि हणइ ?
गोयमा ! तस्स ण एव भवइ—एव खलु अह एग इसि हणामि, से ण एग इसिं हणमाणे 'अणते जीवे'[6] हणइ। से तेणट्ठेण [7]•गोयमा ! एव वुच्चइ—इसिं पि हणइ, नोइसि पि हणइ° ॥

वेर-बंध-पद

२५१. पुरिसे ण भते ! पुरिस हणमाणे किं पुरिसवेरेण पुट्ठे ? 'नोपुरिसवेरेण पुट्ठे ?'[8]
गोयमा ! नियम–ताव पुरिसवेरेण पुट्ठे, अहवा पुरिसवेरेण य नोपुरिसवेरेण य

---

१. अणेगा जीवा (अ, क, ता, म, स)।
२ नोआस (व), नोआसे वि (म)।
३. प० १।
४ चित्तलग (व), अतोग्रे 'क, ता, वृ' एषु—'एते सव्वे इक्कगमा' इति पाठोस्ति, 'अ, व, म, स'—एतेषु आदर्शेषु 'चिल्ललग इति पाठानन्तर एष पाठोस्ति—'पुरिसे ण भते ! अण्णयर तस पाण हणमाणे कि अण्णयर तस पाण हणइ, नोअण्णतरे तसे पाणे हणइ ? गोयमा ! अण्णयर पि तस पाण हणइ, नोअण्णतरे वि तसे पाणे हणइ। से केणट्ठेण भते ! एव वुच्चइ—अण्णयर पि तस पाण, हणइ नोअण्णयरे वि तसे पाणे हणइ ? गोयमा ! तस्स ण एव भवइ—एव खलु अह एग अण्णयर तस पाण हणामि, से ण एग अण्णयर तस पाण हणमाणे अणेगे जीवे हणइ। से तेणट्ठेण गोयमा ! त चेव। एए सव्वे वि एक्कगमा'। वृत्तावपि नासौ० याख्यात, अतोस्माभिरसौ पाठान्तरत्वेन स्वीकृत ।
५ स० पा०—वुच्चइ जाव नोइसिं।
६ अणता जीवा (अ, क, ता, व, म)।
७ स० पा०—निक्खेवो।
८. × (ता)।

पुट्ठे, अहवा पुरिसवेरेण य नोपुरिसवेरेहि य पुट्ठे। एव आस जाव चिल्ललगं जाव अहवा चिल्ललगवेरेण[1] य नोचिल्ललगवेरेहि य पुट्ठे ॥

२५२ पुरिसे ण भते ! इसि हणमाणे किं इसिवेरेण पुट्ठे ? नोइसिवेरेण पुट्ठे ?
गोयमा ! नियम[2] इसिवेरेण य[3] नोइसिवेरेहि य पुट्ठे ॥

पुढविक्काइयादीणं आण-पाण-पदं

२५३ पुढविक्काइए ण भते ! पुढविक्काय चेव आणमइ वा ? पाणमइ वा ? ऊससइ वा ? नीससइ वा ?
हता गोयमा ! पुढविक्काइए पुढविक्काइय चेव आणमइ वा जाव नीससइ वा ॥

२५४. पुढविक्काइए ण भते ! आउक्काइय आणमइ वा जाव नीससइ वा ?
हता गोयमा ! पुढविक्काइए ण आउक्काइयं आणमइ वा जाव नीससइ वा। एव तेउक्काइय, वाउक्काइय, एव वणस्सइकाइय ॥

२५५ आउक्काइए ण भते ! पुढविक्काइय आणमइ वा [4]•जाव नीससइ वा ?
हता गोयमा ! आउक्काइए ण पुढविक्काइय आणमइ वा जाव नीससइ वा° ॥

२५६ आउक्काइए ण भते ! आउक्काइय चेव आणमइ वा ?
एवं चेव। एव तेउ-वाउ-वणस्सइकाइय ॥

२५७ तेउक्काइए ण भते ! पुढविक्काइय आणमइ वा ? एव जाव वणस्सइकाइए णं भते ! वणस्सइकाइय चेव आणमइ वा ? तहेव ॥

किरिया-पदं

२५८ पुढविक्काइए ण भते ! पुढविक्काइय चेव आणममाणे वा, पाणममाणे वा ऊससमाणे वा, नीससमाणे वा कतिकिरिए ?
गोयमा ! सिय तिकिरिए, सिय चउकिरिए, सिय पचकिरिए ॥

२५९ पुढविक्काइए ण भते ! आउक्काइय आणममाणे वा ?
एव चेव। एव जाव वणस्सइकाइय। एव आउक्काएण वि सव्वे[5] भाणियव्वा। एव तेउक्काइएण वि, एव वाउक्काइएण वि जाव—

---

१ चित्तला° (व); चिल्लला° (म)।
२ नियम ताव (क); नितम (व)।
३ य जाव (ता), एतत् सम्यक्नास्ति। ऋषि-पक्षे तु ऋषिवैरेण नो नोऋषिवैरैश्चेत्येवमेक एव (वृ)।
४. स० पा०—एव चेव।
५. सव्वे वि (ता, स)।

२६०. वणस्सइकाइए ण भते ! वणस्सइकाइय चेव आणममाणे वा—पुच्छा ?
गोयमा ! सिय तिकिरिए, सिय चउकिरिए, सिय पचकिरिए ॥

२६१. वाउक्काइए ण भते ! रुक्खस्स मूल 'पचालेमाणे वा'[1] पवाडेमाणे वा कति-किरिए ?
गोयमा ! सिय तिकिरिए, सिय चउकिरिए, सिय पचकिरिए। एव कद, एव जाव[2]—

२६२ वीय पचालेमाणे वा—पुच्छा ?
गोयमा ! सिय तिकिरिए, सिय चउकिरिए, सिय पचकिरिए ॥

२६३. सेव भते ! सेव भते ! त्ति[3] ॥

---

१ × (क)।
२ भ० ८।२१६।
३ भ० १।५१।

दसमं सतं

पढमो उद्देसो

संगहणी-गाहा

१. दिस २ संवुडअणगारे[1], ३ आइड्ढी[2] ४ सामहत्थि ५ देवि ६ सभा ।
७-३४ उत्तरअंतरदीवा, दसमम्मि सयम्मि चउत्तीसा ॥१॥

दिसा-पद

१. रायगिहे[3] जाव[4] एवं वयासी—किमियं भंते ! 'पाईणा ति'[5] पवुच्चइ ?
गोयमा ! जीवा चेव, अजीवा चेव ॥

२. किमियं भंते ! पडीणा ति पवुच्चइ ?
गोयमा ! एवं चेव । एवं दाहिणा, एवं उदीणा, एवं उड्ढा, एवं अहो[6] वि ॥

३ कति णं भंते ! दिसाओ पण्णत्ताओ ?
गोयमा ! दस दिसाओ पण्णत्ताओ, तं जहा—१. पुरत्थिमा २. पुरत्थिमदाहिणा ३. दाहिणा ४ दाहिणपच्चत्थिमा ५ पच्चत्थिमा ६. पच्चत्थिमुत्तरा ७. उत्तरा ८. उत्तरपुरत्थिमा ९. उड्ढा १० अहो[7] ॥

४ एयासि णं भंते ! दसण्हं दिसाणं कति नामधेज्जा पण्णत्ता ?
गोयमा ! दस नामधेज्जा पण्णत्ता, तं जहा—

---

१ संवुडमणगारे (अ, क, व, म) ।
२ आयड्ढी (अ, स) ।
३ रायगिचे (ता) ।
४ भ० १।४-१० ।
५ पाईणत्ति (क, स); पादीणा ति (ता) ।
६ अहा (अ, क, व, म), अधो (ता) ।
७ अहा (अ, क, व, म), अधा (ता) ।

इदा अग्गेयी जम्मा[1], य नेरई वारुणी य वायव्वा ।
सोमा ईसाणी या, विमला य तमा य बोद्धव्वा ॥१॥

५. इदा ण भते ! दिसा कि १ जीवा २ जीवदेसा ३ जीवपदेसा ४ अजीवा ५. अजीवदेसा ६. अजीवपदेसा ?
गोयमा ! जीवा वि, [2]•जीवदेसा वि, जीवपदेसा वि, अजीवा वि, अजीवदेसा वि°, अजीवपदेसा वि ।
जे जीवा ते नियमा एगिदिया वेइदिया[3] •तेइदिया चउरिदिया° पचिदिया, अणिदिया ।
जे जीवदेसा ते नियमा एगिंदियदेसा जाव अणिदियदेसा ।
जे जीवपदेसा ते नियमा[4] एगिदियपदेसा वेइदियपदेसा जाव अणिदियपदेसा ।
जे अजीवा ते दुविहा पण्णत्ता, त जहा—रूविअजीवा य, अरूविअजीवा य ।
जे रूविअजीवा ते चउव्विहा पण्णत्ता, त जहा—खधा, खधदेसा, खधपदेसा, परमाणुपोग्गला ।
जे अरूविअजीवा ते सत्तविहा पण्णत्ता, त जहा—१. नोधम्मत्थिकाए धम्मत्थिकायस्स देसे २ धम्मत्थिकायस्स पदेसा ३ नोअधम्मत्थिकाए अधम्मत्थिकायस्स देसे ४ अधम्मत्थिकायस्स पदेसा ५ नोआगासत्थिकाए आगासत्थिकायस्स देसे ६ आगासत्थिकायस्स पदेसा ७ अद्धासमए ॥

६. अग्गेयी ण भते ! दिसा कि जीवा, जीवदेसा, जीवपदेसा —पुच्छा ।
गोयमा ! नोजीवा, जीवदेसा वि, जीवपदेसा वि, अजीवा वि अजीवदेसा वि, अजीवपदेसा वि ।
जे जीवदेसा ते नियमा एगिदियदेसा, अहवा एगिदियदेसा य वेइदियस्स य देसे, अहवा एगिदियदेसा य वेइदियस्स य देसा, अहवा एगिदियदेसा य वेइदियाण य देसा । अहवा एगिदियदेसा य तेइदियस्स य देसे । एव चेव तियभगो भाणियव्वो । एव जाव अणिदियाण तियभगो । जे जीवपदेसा ते नियमा एगिदियपदेसा । अहवा एगिदियपदेसा य बेइदियस्स पदेसा, अहवा एगिदियपदेसा य वेइदियाण य पदेसा । एव आइल्लविरहिओ जाव अणिदियाण ।
जे अजीवा ते दुविहा पण्णत्ता, त जहा—रूविअजीवा[5] य, अरूविअजीवा य ।
जे रूविअजीवा ते चउव्विहा पण्णत्ता, त जहा—खधा जाव परमाणुपोग्गला ।

---

१ जमा (ख) ।
२. स० पा०—त चेव जाव अजीवपदेसा ।
३ स० पा०—वेइदिया जाव पचिदिया ।
४ नियम (ता), × (व) ।
५ रूवि अजीवा (ता, व) ।

जे अरूविअजीवा ते सत्तविहा पण्णत्ता, तं जहा—नोधम्मत्थिकाए धम्मत्थिकायस्स देसे, धम्मत्थिकायस्स पदेसा, एवं अधम्मत्थिकायस्स वि जाव आगासत्थिकायस्स पदेसा, अद्धासमए[1] ॥

७. जम्मा णं भंते ! दिसा किं जीवा ?
जहा इंदा 'तहेव निरवसेसं'[2]। नेरती[3] य जहा अग्गेयी। वारुणी जहा इंदा। वायव्वा जहा अग्गेयी। सोमा जहा इंदा। ईसाणी जहा अग्गेयी। विमलाए जीवा जहा अग्गेयीए, अजीवा जहा इंदाए। एवं तमाए वि, नवरं—अरूवी छव्विहा, अद्धासमयो न भण्णति ॥

सरीर-पदं

८. कति णं भंते ! सरीरा पण्णत्ता ?
गोयमा ! पंच सरीरा पण्णत्ता, तं जहा—ओरालिए[4] •वेउव्विए आहारए तेयए° कम्मए ॥

९. ओरालियसरीरे णं भंते ! कतिविहे पण्णत्ते ?
एवं ओगाहणासंठाणं निरवसेसं भाणियव्वं जाव[5] अप्पाबहुगं ति ॥

१०. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति[6] ॥

बीओ उद्देसो

संवुडस्स किरिया-पदं

११. रायगिहे जाव[7] एवं वयासी—संवुडस्स णं भंते ! अणगारस्स वीयीपथे ठिच्चा पुरओ रूवाइं निज्झायमाणस्स, मग्गओ रूवाइं अवयक्खमाणस्स, पासओ रूवाइं अवलोएमाणस्स, उड्ढं रूवाइं ओलोएमाणस्स, अहे रूवाइं आलोएमाणस्स तस्स णं भंते ! किं इरियावहिया किरिया कज्जइ ? संपराइया किरिया कज्जइ ?

---

१. अद्धासमए। विदिसासु नत्थि जीवा, देसे भंगो य होइ सव्वत्थ (अ, ब, म, स)।
२. तहा निरवसेसा (क)।
३. निरुती (क)।
४. सं० पा०—ओरालिए जाव कम्मए।
५. प० २१।
६. भ० १।५१।
७. भ० १।४-१०।

गोयमा ! संवुडस्स णं अणगारस्स वीयीपथे ठिच्चा[1] •पुरओ रूवाइं निज्झायमाणस्स, मग्गओ रूवाइं अवयक्खमाणस्स, पासओ रूवाइं अवलोएमाणस्स, उड्ढं रूवाइं ओलोएमाणस्स, अहे रूवाइं आलोएमाणस्स॰ तस्स णं नो इरियावहिया किरिया कज्जइ, संपराइया किरिया कज्जइ ॥

१२ से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ—संवुडस्स णं जाव संपराइया किरिया कज्जइ ?
गोयमा ! जस्स णं कोह-माण-माया-लोभा [2]•वोच्छिण्णा भवंति तस्स णं इरियावहिया किरिया कज्जइ, जस्स णं कोह-माण-माया-लोभा अवोच्छिण्णा भवंति तस्स णं संपराइया किरिया कज्जइ। अहासुत्तं रीयमाणस्स इरियावहिया किरिया कज्जइ, उस्सुत्तं रीयमाणस्स संपराइया किरिया कज्जइ॰। से णं उस्सुत्तमेव रीयति। से तेणट्ठेणं जाव संपराइया किरिया कज्जइ ॥

१३. संवुडस्स णं भंते ! अणगारस्स अवीयीपथे ठिच्चा पुरओ रूवाइं निज्झायमाणस्स जाव[3] तस्स णं भंते ! किं इरियावहिया किरिया कज्जइ ?—पुच्छा।
गोयमा ! संवुडस्स णं अणगारस्स अवीयीपथे ठिच्चा जाव तस्स णं इरियावहिया किरिया कज्जइ, नो संपराइया किरिया कज्जइ ॥

१४ से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ—संवुडस्स णं जाव इरियावहिया किरिया कज्जइ, नो संपराइया किरिया कज्जइ ?
[4]•गोयमा ! जस्स णं कोह-माण-माया-लोभा वोच्छिण्णा भवंति तस्स णं इरियावहिया किरिया कज्जइ, जस्स णं कोह-माण-माया-लोभा अवोच्छिण्णा भवंति तस्स णं संपराइया किरिया कज्जइ। अहासुत्तं रीयमाणस्स इरियावहिया किरिया कज्जइ, उस्सुत्तं रीयमाणस्स संपराइया किरिया कज्जइ।॰ से णं अहासुत्तमेव रीयति। से तेणट्ठेणं जाव नो संपराइया किरिया कज्जइ ॥

जोणी-पदं

१५. कतिविहा णं भंते ! जोणी पण्णत्ता ?
गोयमा ! तिविहा जोणी पण्णत्ता, तं जहा—सीया, उसिणा, सीतोसिणा। एवं जोणीपदं निरवसेसं भाणियव्वं[5] ॥

वेदणा-पदं

१६. कतिविहा णं भंते ! वेयणा पण्णत्ता ?

---

१. स॰ पा॰—ठिच्चा जाव तस्स।
२. स॰ पा॰—एवं जहा सत्तमसए पढमउद्देसए जाव से।
३. भ॰ १०।११।
४ स॰ पा॰—जहा सत्तमसए सत्तमुद्देसए जाव से।
५ प॰ ९।

गोयमा ! तिविहा वेयणा पण्णत्ता, त जहा—सीया, उसिणा, सीग्रोसिणा। एव वेयणापद भाणियव्व जाव[1]—

१७ नेरइया ण भते ! कि दुक्ख वेयण वेदेति ? सुह वेयण वेदेति ? ग्रदुक्खमसुह वेयण वेदेति ?
गोयमा ! दुक्ख पि वेयण वेदेति, सुह पि वेयण वेदेति, ग्रदुक्खमसुह पि वेयण वेदेति ॥

भिक्खुपडिमा-पद

१८ मासियण्ण[2] भिक्खुपडिम पडिवन्नस्स ग्रणगारस्स[3], निच्च 'वोसट्ठकाए, चियत्त-देहे'[4] जे केइ परीसहोवसग्गा उप्पज्जति, त जहा—दिव्वा वा माणुसा वा तिरिक्खजोणिया वा ते उप्पन्ने सम्म सहइ खमइ तितिक्खइ ग्रहियासेइ। एव मासिया भिक्खुपडिमा निरवसेसा भाणियव्वा, जहा दसाहि जाव[5] ग्राराहिया भवइ ॥

ग्रकिच्चट्ठाणपडिसेवण-पदं

१९. भिक्खू य ग्रण्णयर ग्रकिच्चट्ठाण पडिसेवित्ता[6] से ण तस्स ठाणस्स ग्रणालोइय-पडिक्कते काल करेइ नत्थि तस्स ग्राराहणा, से ण तस्स ठाणस्स ग्रालोइय-पडिक्कते काल करेइ ग्रत्थि तस्स ग्राराहणा ॥

२० भिक्खू य ग्रण्णयर ग्रकिच्चट्ठाण पडिसेवित्ता तस्स ण एवं भवइ—पच्छा वि णं ग्रह चरिमकालसमयसि एयस्स ठाणस्स ग्रालोएस्सामि[7], •पडिक्कमिस्सामि, निदिस्सामि, गरिहिस्सामि, विउट्टिस्सामि, विसोहिस्सामि, ग्रकरणयाए ग्रब्भुट्ठिस्सामि, ग्रहारिय पायच्छित्त तवोकम्म° पडिवज्जिस्सामि[8], से ण तस्स ठाणस्स ग्रणालोइय[9]•पडिक्कते काल करेइ° नत्थि तस्स ग्राराहणा, से ण तस्स ठाणस्स ग्रालोइय-पडिक्कते काल करेइ ग्रत्थि तस्स ग्राराहणा ॥

२१. भिक्खू य ग्रण्णयर ग्रकिच्चट्ठाण पडिसेवित्ता तस्स ण एव भवइ—जइ ताव समणोवासगा वि कालमासे काल किच्चा ग्रण्णयरेसु देवलोएसु देवत्ताए उववत्तारो भवति, किमंग ! पुण ग्रहं ग्रणपन्नियदेवत्तणपि[10] नो लभिस्सामि त्ति

---

१. प० ३५।
२. मासिय ण भते (क, ता, स)।
३. ग्रयमाचारो भवतीति शेष।
४. वोसट्ठे काए चियत्ते देहे (वृ)।
५ दसा° ७।
६ प्रतिषेविता भवतीति गम्यम्। वाचनान्तरे त्वस्य स्थाने पडिसेविज्ज त्ति दृश्यते (वृ)।
७ स० पा०—आलोएस्सामि जाव पडिवज्जिस्सामि।
८. पडिक्कमामि (व)।
९ स० पा०—अणालोइय जाव नत्थि।
१०. ग्रणवण्णि° (व)।

कट्टु से ण तस्स ठाणस्स अणालोइयपडिक्कते काल करेइ नत्थि तस्स आराहणा, से ण तस्स ठाणस्स आलोइय-पडिक्कते काल करेइ अत्थि तस्स आराहणा ।

२२ सेव भते ! सेवं भते ! त्ति[1] ।।

— —

तइओ उद्देसो

आइड्ढीए परिड्ढीए वीइवयण-पदं

२३ रायगिहे जाव[2] एव वयासी—आइड्ढीए[3] ण भते ! देवे जाव चत्तारि, पच देवावासंतराइ वीतिक्कते[4], तेण पर परिड्ढीए ?
हता गोयमा ! आइड्ढीए ण [5]°देवे जाव चत्तारि, पच देवावासतराइ वीतिक्कते, तेण पर परिड्ढीए ।° एव असुरकुमारे वि, नवर—असुरकुमारावासतराइ, सेस त चेव । एव एएण कमेण जाव थणियकुमारे, एव वाणमतरे, जोइसिए वेमाणिए जाव तेण पर परिड्ढीए ।।

देवाणं विणयविहि-पदं

२४ अप्पिड्ढीए ण भते ! देवे महिड्ढियस्स देवस्स मज्भमज्भेण वीइवएज्जा ?
नो इणट्ठे समट्ठे ।।

२५ समिड्ढीए ण भते ! देवे समिड्ढीयस्स देवस्स मज्भमज्भेण वीइवएज्जा ?
नो इणट्ठे समट्ठे, पमत्त पुण वीइवएज्जा ।।

२६ [6]से भते ! किं विमोहित्ता पभू ? अविमोहित्ता पभू ?
गोयमा ! विमोहित्ता पभू, नो अविमोहित्ता पभू ।।

२७. से भते ! किं पुव्वि विमोहित्ता पच्छा वीइवएज्जा ? पुव्वि वीइवइत्ता पच्छा विमोहेज्जा ?
गोयमा ! पुव्वि विमोहित्ता पच्छा वीइवएज्जा, नो पुव्वि वीइवइत्ता पच्छा विमोहेज्जा ।।

---

१ भ० १।५१ ।
२ भ० १।४-१० ।
३ आतड्ढिए (अ, स), आतिड्ढीए (क, व, म), आयड्ढीए (ता)
४ वीईवयइ (वृपा) ।
५ स० पा०—त चेव ।
६ से ण (व, म, स) ।

२८. महिड्ढीए ण भते ! देवे अप्पिड्ढियस्स देवस्स मज्झमज्झेण वीइवएज्जा ?
हंता वीइवएज्जा ॥

२९ से भते ! कि विमोहित्ता पभू ? अविमोहित्ता पभू ?
गोयमा ! विमोहित्ता वि पभू, अविमोहित्ता वि पभू ॥

३० से भते ! कि पुव्वि विमोहित्ता पच्छा वीइवएज्जा ? पुव्वि वीइवइत्ता पच्छा विमोहेज्जा ?
गोयमा ! पुव्वि वा विमोहेत्ता पच्छा वीइवएज्जा, पुव्वि वा वीइवइत्ता पच्छा विमोहेज्जा ॥

३१ अप्पिड्ढिए[1] ण भते ! असुरकुमारे महिड्ढियस्स असुरकुमारस्स मज्झमज्झेण वीइवएज्जा ?
नो इणट्ठे समट्ठे । एव असुरकुमारेण वि तिण्णि आलावगा भाणियव्वा जहा ओहिएण देवेण भणिया । एव जाव थणियकुमारेण । वाणमतर-जोइसिय-वेमाणिएण एव चेव ॥

३२ अप्पिड्ढिए ण भते ! देवे महिड्ढियाए देवीए मज्झमज्झेण वीइवएज्जा ?
नो इणट्ठे समट्ठे ॥

३३ समिड्ढिए[2] ण भते ! देवे समिड्ढियाए देवीए मज्झमज्झेण वीइवएज्जा ?
एव तहेव देवेण य देवीए य दडओ भाणियव्वो जाव वेमाणियाए ॥

३४. अप्पिड्ढिया ण भते ! देवी महिड्ढियस्स देवस्स मज्झमज्झेण वीइवएज्जा ?
एव एसो वि ततिओ[3] दडओ भाणियव्वो जाव—

३५ महिड्ढिया वेमाणिणी अप्पिड्ढियस्स वेमाणियस्स मज्झमज्झेण वीइवएज्जा ?
हता वीइवएज्जा ॥

३६ अप्पिड्ढिया ण भते ! देवी महिड्ढियाए देवीए मज्झमज्झेण वीइवएज्जा ?
नो इणट्ठे समट्ठे । एव समिड्ढिया देवी समिड्ढियाए देवीए तहेव । महिड्ढिया वि देवी अप्पिड्ढियाए देवीए तहेव । एव एक्केक्के तिण्णि-तिण्णि आलावगा भाणियव्वा जाव—

३७. महिड्ढिया[4] ण भते ! वेमाणिणी अप्पिड्ढियाए वेमाणिणीए मज्झंमज्झेणं वीइवएज्जा ?
हता वीइवएज्जा ॥

३८. सा भते ! कि विमोहित्ता पभू ? अविमोहित्ता पभू ?

---

१. अप्पड्ढीए (क्व०) ।
२. समड्ढीए (अ) ।
३. तिओ (अ; स,) ।
४. महड्ढिया (क्व) ।

गोयमा ! विमोहित्ता वि पभू, अविमोहित्ता वि पभू । तहेव जाव पुव्वि वा वीइवइत्ता पच्छा विमोहेज्जा । एए चत्तारि दडगा ॥

आसस्स 'खु-खु' करण-पदं

३९ आसस्स ण भते ! धावमाणस्स कि 'खु-खु' त्ति करेति ?
गोयमा ! आसस्स ण धावमाणस्स हिययस्स य जगस्स[1] य अतरा एत्थ ण 'कक्कडए नाम'[2] वाए समुच्छइ[3], जेण आसस्स धावमाणस्स 'खु-खु' त्ति करेति ॥

पण्णवणी-भासा-पदं

४०. अह भंते ! आसइस्सामो, सइस्सामो, चिट्ठिस्सामो, निसिइस्सामो, तुयट्टिस्सामो[4]—पण्णवणी ण एस भासा ? न एसा भासा मोसा ?
हता गोयमा ! आसइस्सामो, [5]•सइस्सामो, चिट्ठिस्सामो, निसिइस्सामो, तुयट्टिस्सामो—पण्णवणी ण एसा भासा°, न एसा भासा मोसा ॥

४१ सेव भते ! सेव भते ! त्ति[6] ॥

---

१ जगयस्स (अ, क, स,); जातस्स (ता) ।
२. कक्कडनाम (ता), कव्वडए नाम (स) ।
३ समुत्थइ (अ, ता, व, म, स) ।
४ अतोग्रे गाथाद्वय लभ्यते—
आमतणी आणवणी,
जायणी तह पुच्छणी य पण्णवणी ।
पच्चक्खाणी भासा, भासा इच्छाणुलोमा य ॥
अणभिग्गहिया भासा,
भासा य अभिग्गहम्मि बोद्धव्वा ।
ससयकरणी भासा, वोयडमव्वोयडा चेव ॥
(अ, क, ता, व, म, स), अस्मिन् सग्रहगाथाद्वये 'असच्चामोसा' भाषाया द्वादशप्रकारा निरूपिता सन्ति । प्रज्ञापनाया भाषापदे एवमेवास्ति । अत्र प्रज्ञापनीभाषाप्रकरणे प्रासङ्गिकरूपेण अमू सग्रहगाथे लिखिते आस्ताम् । केनचित् प्रतिलिपिकर्त्रा मूले प्रक्षिप्ते । उत्तरकाले तथैव अनुगते, वृत्तिकृतापि तथैव व्याख्याते ।
५. स० पा०—त चेव जाव न ।
६. भ० १।५१।

चउत्थो उद्देसो

तावत्तीसगदेव-पदं

४२. तेण कालेण तेण समएण वाणियग्गामे नयरे होत्था—वण्णओ[1]। दूतिपलासए चेइए। सामी समोसढे जाव[2] परिसा पडिगया॥

४३. तेण कालेण तेण समएण समणस्स भगवओ महावीरस्स जेट्ठे अंतेवासी इंदभूई नाम अणगारे जाव[3] उड्ढजाणू[4] °अहोसिरे झाणकोट्ठोवगए संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे° विहरइ॥

४४. तेण कालेण तेण समएण समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतेवासी सामहत्थी नाम अणगारे पगइभद्दए[5] °पगइउवसंते पगइपयणुकोहमाणमायालोभे मिउ-मद्दवसपन्ने अल्लीणे विणीए समणस्स भगवओ महावीरस्स अदूरसामंते उड्ढ-जाणू अहोसिरे झाणकोट्ठोवगए संजमेण तवसा अप्पाणं भावेमाणे° विहरइ॥

४५ तए णं से सामहत्थी अणगारे जायसड्ढे जाव[6] उट्ठाए उट्ठेइ, उट्ठेत्ता जेणेव भगवं गोयमे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता भगवं गोयमं तिक्खुत्तो जाव[7] पज्जुवासमाणे एवं वयासी—

४६. अत्थि णं भंते! चमरस्स असुरिंदस्स असुरकुमाररण्णो तावत्तीसगा[8] देवा-ताव-त्तीसगा देवा?

हंता अत्थि॥

४७ से केणट्ठेणं भंते! एवं वुच्चइ—चमरस्स असुरिंदस्स असुरकुमाररण्णो ताव—त्तीसगा देवा-तावत्तीसगा देवा?

एवं खलु सामहत्थी! तेणं कालेणं तेणं समएणं इहेव जंबुद्दीवे दीवे भारहे वासे कायंदी नाम नयरी होत्था—वण्णओ[9]। तत्थ णं कायंदीए नयरीए तायत्तीसं[10] सहाया[11] गाहावई समणोवासया परिवसंति—अड्ढा जाव[12] बहुजणस्स अपरि-भूता अभिगयजीवाजीवा, उवलद्धपुण्णपावा[13] जाव[14] अहापरिग्गहिएहिं तवो-कम्मेहिं अप्पाणं भावेमाणा विहरंति॥

---

१. ओ० सू० १।
२. भ० १।७,८।
३ भ० १।६।
४. सं० पा०—उड्ढजाणू जाव विहरइ।
५ सं० पा०—जहा रोहे जाव उड्ढजाणू जाव विहरइ।
६. भ० १।१०।
७. भ० १।१०।
८ तायत्तीसगा (क्व०)।
९ ओ० सू० १।
१०. तावत्तीस (क, ता, व, म)।
११ साहाया (अ)।
१२ भ० २।९४।
१३ उवलद्धपुण्ण वण्णओ(अ, क, ता, व, म, स)।
१४ भ० २।९४।

४८ तए ण ते तायत्तीस सहाया गाहावई समणोवासया पुव्वि उग्गा उग्गविहारी, सविग्गा सविग्गविहारी भवित्ता तग्रो पच्छा पासत्था पासत्थविहारी, ग्रोसन्ना ओसन्नविहारी, कुसीला कुसीलविहारी, ग्रहाच्छदा ग्रहाच्छदविहारी बहूइ वासाइ समणोवासगपरियाग पाउणित्ता, ग्रद्धमासियाए सलेहणाए ग्रत्ताण भूसेत्ता, तीसं भत्ताइ ग्रणसणाए छेदेत्ता तस्स ठाणस्स ग्रणालोइयपडिक्कता कालमासे काल किच्चा चमरस्स ग्रसुरिदस्स ग्रसुरकुमाररण्णो तावत्तीसग-देवत्ताए उववण्णा ।।

४९. जप्पभिइ च ण भते ! ते कायदगा तायत्तीस सहाया गाहावई समणोवासगा चमरस्स ग्रसुरिदस्स असुरकुमाररण्णो तावत्तीसगदेवत्ताए उववन्ना, तप्पभिइ च ण भते ! एव वुच्चइ—चमरस्स ग्रसुरिदस्स असुरकुमाररण्णो तावत्तीसगा देवा-तावत्तीसगा देवा ?

तए ण भगव गोयमे सामहत्थिणा ग्रणगारेण एव वुत्ते समाणे सकिए कखिए वितिगिच्छिए उट्ठाए उट्ठेइ, उट्ठेत्ता सामहत्थिणा ग्रणगारेण सद्धि जेणेव समणे भगव महावीरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता समण भगव महावीर वदइ नमसइ, वदित्ता नमसित्ता एव वयासी—

५० ग्रत्थि ण भते ! चमरस्स ग्रसुरिदस्स असुरकुमाररण्णो तावत्तीसगा देवा-तावत्तीसगा देवा ?

हता अत्थि ।।

५१ से केणट्ठेण भते ! एव वुच्चइ—एव त चेव सव्व भाणियव्व जाव जप्पभिइ च ण भते ! ते कायदगा तायत्तीस सहाया गाहावई समणोवासगा चमरस्स ग्रसुरिदस्स ग्रसुरकुमाररण्णो तावत्तीसगदेवत्ताए उववन्ना, तप्पभिइ च ण भते ! एव वुच्चइ—चमरस्स ग्रसुरिदस्स ग्रसुरकुमाररण्णो तावत्तीसगा देवा-तावत्तीसगा देवा ?

नो इणट्ठे समट्ठे । गोयमा ! चमरस्स ण ग्रसुरिदस्स ग्रसुरकुमाररण्णो तावत्ती-सगाण देवाण सासए नामधेज्जे पण्णत्ते—ज न कयाइ नासी, न कयाइ न भवइ, न कयाइ न भविस्सइ[1], •भविसु य, भवति य, भविस्सइ य—धुवे नियए सासए ग्रक्खए ग्रव्वए ग्रवट्ठिए° निच्चे, ग्रव्वोच्छित्तिनयट्ठयाए ग्रण्णे चयति, ग्रण्णे उववज्जति ।।

५२ ग्रत्थि ण भते ! वलिस्स वइरोयणिदस्स वइरोयणरण्णो तावत्तीसगा देवा-तावत्तीसगा देवा ?

हता ग्रत्थि ।।

---

१ स० पा०—भविस्सइ जाव निच्चे ।

५३ से केणट्ठेण भते ! एव वुच्चइ—वलिस्स वइरोयणिंदस्स वइरोयणरण्णो[1] ताव-त्तीसगा देवा-तावत्तीसगा देवा ?
एव खलु गोयमा ! तेण कालेण तेण समएण इहेव जवुद्दीवे दीवे भारहे वासे वेभेले नाम सण्णिवेसे होत्था—वण्णओ[2]। तत्थ ण वेभेले सण्णिवेसे तायत्तीस सहाया गाहावई समणोवासया परिवसति—जहा चमरस्स जाव[3] तावत्तीसग-देवत्ताए उववण्णा ॥

५४ जप्पभिइ च ण भते ! ते वेभेलगा तायत्तीस सहाया गाहावई समणोवासगा वलिस्स वइरोयणिंदस्स वइरोयणरण्णो तावत्तीसगदेवत्ताए उववन्ना, सेस त चेव जाव[4] निच्चे, अव्वोच्छित्तिनयट्ठयाए अण्णे चयति, अण्णे उववज्जति ॥

५५. अत्थि ण भते ! धरणस्स नागकुमारिंदस्स नागकुमाररण्णो तावत्तीसगा देवा-तावत्तीसगा देवा ?
हता अत्थि ॥

५६ से केणट्ठेण जाव तावत्तीसगा देवा-तावत्तीसगा देवा ?
गोयमा ! धरणस्स नागकुमारिंदस्स नागकुमाररण्णो तावत्तीसगाणं देवाण सासए नामधेज्जे पण्णत्ते—ज न कयाइ नासी जाव अण्णे चयति, अण्णे उवव-ज्जति । एव भूयाणदस्स वि, एव जाव[5] महाघोसस्स ॥

५७ अत्थि ण भते ! सक्कस्स देविंदस्स देवरण्णो [6]॰तावत्तीसगा देवा-तावत्तीसगा देवा ?॰
हता अत्थि ॥

५८. से केणट्ठेण जाव तावत्तीसगा देवा-तावत्तीसगा देवा ?
एव खलु गोयमा ! तेण कालेणं तेण समएण इहेव जवुद्दीवे दीवे भारहे वासे पालए[7] नाम सण्णिवेसे होत्था—वण्णओ । तत्थ ण पालए सण्णिवेसे तायत्तीसं सहाया गाहावई समणोवासया जहा चमरस्स जाव[8] विहरति ॥

५९ तए ण ते तायत्तीस सहाया गाहावई समणोवासया पुव्वि पि पच्छा वि उग्गा उग्गविहारी, सविग्गा सविग्गविहारी वहूइ वासाइ समणोवासगपरियाग पाउ-णित्ता, मासियाए सलेहणाए अत्ताणं भूसेत्ता, सट्ठि भत्ताइ अणसणाए छेदेत्ता, आलोइय-पडिक्कता समाहिपत्ता कालमासे काल किच्चा[9] ॰सक्कस्स देविंदस्स

---

१. जाव (अ, क, ता, व, म, स) ।
२. ओ० सू० १, एतद्वर्णन 'नदणवण-सन्निभ-प्पगासे' एतावदेवग्राह्यम् ।
३. भ० १०।४७-४८।
४. भ० १०।४९-५१।
५. भ० ३।२७४।
६. स० पा०—पुच्छा ।
७. वालाए (अ), पालाए (व), पालासए (स) ।
८. भ० १०।४७।
९. स० पा०—किच्चा जाव उववन्ना ।

देवरण्णो तावत्तीसगदेवत्ताए° उववन्ना। जप्पभिइ च णं भते! ते पालगा[1] तायत्तीस सहाया गाहावई समणोवासगा, सेसं जहा चमरस्स जाव अण्णे उववज्जति ॥

६०. अत्थि णं भते! ईसाणस्स देविंदस्स देवरण्णो तावत्तीसगा देवा-तावत्तीसगा देवा?
एव जहा सक्कस्स, नवर—चपाए नयरीए जाव[2] उववण्णा जप्पभिइ च ण भते! ते चपिज्जा तायत्तीस सहाया, सेस त चेव जाव अण्णे उववज्जति ॥

६१. अत्थि ण भते! सणकुमारस्स देविंदस्स [3]°देवरण्णो तावत्तीसगा देवा-तावत्तीसगा देवा?°
हता अत्थि ॥

६२. से केणट्ठेण?
जहा धरणस्स तहेव, एव जाव पाणयस्स, एव अच्चुयस्स जाव अण्णे उववज्जति ॥

६३. सेव भते! सेव भते! त्ति[4] ॥

पंचमो उद्देसो

देवाणं तुडिएण सद्धिं दिव्वभोग-पदं

६४. तेण कालेण तेण समएण रायगिहे नाम नयरे। गुणसिलए चेइए जाव[5] परिसा पडिगया। तेण कालेण तेण समएण समणस्स भगवओ महावीरस्स बहवे अतेवासी थेरा भगवतो जाइसपन्ना जहा अट्ठमे सए सत्तमुद्देसए जाव[6] सजमेण तवसा अप्पाण भावेमाणा विहरति। तए ण ते थेरा भगवतो जायसड्ढा जायससया जहा गोयमसामी जाव[7] पज्जुवासमाणा एव वयासी—

६५. चमरस्स ण भते असुरिंदस्स असुरकुमाररण्णो कति अग्गमहिसीओ पण्णत्ताओ?

---

१ वालगा (अ, म), पालागा (क, व), पालासगा (स)।
२. भ० १०।५७-५६।
३. स० पा०—पुच्छा।
४ भ० १।५१।
५. भ० १।४-८।
६ भ० ८।२७२।
७ भ० १।१०।

अज्जो ! पंच अग्गमहिसीओ पण्णत्ताओ, त जहा—काली, रायी, रयणी, विज्जू, मेहा। तत्थ ण एगमेगाए देवीए अट्ठट्ठ देवीसहस्स[1] परिवारो पण्णत्तो ॥

६६. पभू ण भते ! ताओ एगमेगा देवी अण्णाइ अट्ठट्ठ देवीसहस्साइ परियारं विउव्वित्तए ?

एवामेव सपुव्वावरेण चत्तालीस देवीसहस्सा। सेत्त तुडिए ॥

६७ पभू ण भते ! चमरे असुरिंदे असुरकुमारराया चमरचचाए रायहाणीए, सभाए सुहम्माए, चमरसि सीहासणसि तुडिएण सद्धि दिव्वाइ भोगभोगाइ भुजमाणे विहरित्तए ?

नो इणट्ठे समट्ठे ॥

६८ से केणट्ठेण भते ! एव वुच्चइ—नो पभू चमरे असुरिंदे असुरकुमारराया चमरचचाए रायहाणीए जाव[2] विहरित्तए ?

अज्जो ! चमरस्स ण असुरिंदस्स असुरकुमाररण्णो चमरचचाए रायहाणीए, सभाए सुहम्माए, माणवए चेइयखभे वइरामएसु गोल-वट्ट-समुग्गएसु वहूओ जिणसकहाओ सन्निक्खित्ताओ चिट्ठति, जाओ ण चमरस्स असुरिंदस्स असुरकुमाररण्णो अण्णेसि च वहूण असुरकुमाराण देवाण य देवीण य अच्चणिज्जाओ वदणिज्जाओ नमसणिज्जाओ पूयणिज्जाओ सक्कारणिज्जाओ सम्माणणिज्जाओ कल्लाण मगल देवय चेइय पज्जुवासणिज्जाओ भवति[3]। से तेणट्ठेण अज्जो ! एव वुच्चइ—नो पभू चमरे असुरिंदे असुरकुमारराया[4] •चमरचचाए रायहाणीए, सभाए सुहम्माए, चमरसि सिहासणसि तुडिएण सद्धि दिव्वाइ भोगभोगाइ भुजमाणे° विहरित्तए ॥

६९ पभू ण अज्जो ! चमरे असुरिंदे असुरकुमारराया चमरचचाए रायहाणीए, सभाए सुहम्माए, चमरसि सीहासणसि चउसट्ठीए सामाणियसाहस्सीहिं, तायत्तीसाए[5] •तावत्तीसगेहि, चउहिं लोगपालेहि, पचहि अग्गमहिसीहि सपरिवाराहि चउसट्ठीए आयरक्खदेवसाहस्सीहि°, अण्णेहि[6] य वहूहि असुरकुमारेहि देवेहि य, देवीहि य सद्धि सपरिवुडे महयाहय[7]•नट्ट-गीय-वाइय-तती-तल-ताल-तुडिय-घणमुइगपडुप्पवाइयरवेण दिव्वाइ भोगभोगाइ° भुजमाणे विहरित्तए ?

केवलं परियारिड्ढीए, नो चेव ण मेहुणवत्तिय ॥

---

१ °सहस्सा (ता, स)।

२. भ० १०।६७।

३. भवति तेणं पणिहाए णो पभू (अ, स)।

४ स० पा०—असुरकुमारराय जाव विहरित्तए।

५ स० पा०—तायत्तीसाए जाव अण्णेहि।

६. अण्णेसि (अ, स)।

७ स० पा०—महयाहय जाव भुजमाणे।

७० चमरस्स ण भंते ! असुरिंदस्स असुरकुमाररण्णो सोमस्स महारण्णो कति अग्गमहिसीओ पण्णत्ताओ ?
अज्जो ! चत्तारि अग्गमहिसीओ पण्णत्ताओ, त जहा—कणगा, कणगलता, चित्तगुत्ता, वसुधरा । तत्थ ण एगमेगाए देवीए एगमेग[1] देवीसहस्स परिवारे[2] पण्णत्ते ॥

७१. पभू ण ताओ 'एगामेगा देवी'[3] अण्ण एगमेग देवीसहस्स परियार विउव्वित्तए ? एवामेव सपुव्वावरेण चत्तारि देवीसहस्सा । सेत्त तुडिए ॥

७२ पभू ण भते ! चमरस्स असुरिंदस्स असुरकुमाररण्णो सोमे महाराया सोमाए रायहाणीए, सभाए सुहम्माए, सोमसि सीहासणसि तुडिएण सद्धि दिव्वाइ भोगभोगाइ भुजमाणे विहरित्तए ? अवसेस जहा चमरस्स, नवर—परियारो जहा[4] सूरियाभस्स । सेस त चेव जाव[5] नो चेव ण मेहुणवत्तिय ॥

७३. चमरस्स ण भते[6] ! •असुरिंदस्स असुरकुमार॰रण्णो जमस्स महारण्णो कति अग्गमहिसीओ ?
एव चेव[7], नवर—जमाए रायहाणीए, सेस जहा सोमस्स । एव वरुणस्स वि, नवर—वरुणाए रायहाणीए । एव वेसमणस्स वि, नवर—वेसमणाए रायहाणीए । सेस त चेव जाव नो चेव ण मेहुणवत्तिय[8] ॥

७४ वलिस्स ण भते ! वइरोयणिदस्स—पुच्छा ।
अज्जो ! पच अग्गमहिसीओ पण्णत्ताओ, त जहा—सुभा[9], निसुभा, रभा, निरभा, मदणा । तत्थ ण एगमेगाए देवीए अट्ठट्ठ देवीसहस्स परिवारो, सेस जहा चमरस्स, नवर—बलिचचाए रायहाणीए, परियारो जहा[10] मोउद्देसए । सेस त चेव जाव नो चेव ण मेहुणवत्तिय ॥

७५ वलिस्स ण भते ! वइरोयणिदस्स वइरोयणरण्णो सोमस्स महारण्णो कति अग्गमहिसीओ पण्णत्ताओ ?
अज्जो ! चत्तारि अग्गमहिसीओ पण्णत्ताओ, त जहा—मीणगा, सुभद्दा, विज्जुया[11], असणी । तत्थ ण एगमेगाए देवीए एगमेग देवीसहस्स परिवारो, सेस जहा चमरसोमस्स एव जाव वरुणस्स[12] ॥

---

१. एगमेगसि (स) ।
२. परियारो (ता) ।
३ एगमेगाओ देवीओ (अ) एगमेगाए देवीए (स) ।
४ राय० सू० ७।
५. भ० १०।६७-६६।
६. स० पा०—भते जाव रण्णो ।
७ भ० १०।७०-७२ ।
८ ०पत्तिय (व) ।
६ सुभा (अ, व, स) ।
१०. भ० ३।१२।
११ विजया (स) ।
१२. वेसमणस्स (अ, स) ।

महाकच्छा, फुडा। तत्थ णं एगमेगाए देवीए एगमेग देवीसहस्सं परिवारे, सेस तं चेव। एव महाकायस्स वि ॥

८९ गीयरइस्स ण—पुच्छा।
अज्जो ! चत्तारि अग्गमहिसीओ पण्णत्ताओ, त जहा—सुघोसा, विमला, सुस्सरा, सरस्सई। तत्थ ण एगमेगाए देवीए एगमेग देवीसहस्स परिवारे, सेस त चेव। एव गीयजसस्स वि। सव्वेसि एएसि जहा कालस्स, नवर—सरिसनामियाओ रायहाणीओ सीहासणाणि य, सेस त चेव ॥

९० चदस्स ण भते ! जोइसिदस्स जोइसरण्णो – पुच्छा।
'अज्जो ! चत्तारि अग्गमहिसीओ पण्णत्ताओ, त जहा—चदप्पभा, दोसिणाभा[1], अच्चिमाली, पभकरा। एव जहा[2] जीवाभिगमे जोइसियउद्देसए तहेव सूरस्स वि सूरप्पभा, आयवा[3], अच्चिमाली, पभकरा। सेस त चेव जाव[4] नो चेव णं मेहुणवत्तिय ॥

९१ इगालस्स ण भते ! महग्गहस्स कति अग्गमहिसीओ—पुच्छा।
अज्जो ! चत्तारि अग्गमहिसीओ पण्णत्ताओ, त जहा—विजया, वेजयती, जयती, अपराजिया। तत्थ ण एगमेगाए देवीए एगमेग देवीसहस्स परिवारे, सेस[5] जहा चदस्स, नवर—इगालवडेसए विमाणे, इगालगसि सीहासणसि, सेस त चेव। एव वियालगस्स वि। एव अट्ठासीतिए वि महग्गहाण[6] भाणियव्व जाव[7] भावकेउस्स, नवर—वडेसगा सीहासणाणि य सरिसनामगाणि, सेस तं चेव ॥

९२. सक्कस्स ण भते ! देविंदस्स देवरण्णो—पुच्छा।
अज्जो ! अट्ठ अग्गमहिसिओ पण्णत्ताओ, त जहा—पउमा, सिवा, सची[8], अजू, अमला, अच्छरा, नवमिया, रोहिणी। तत्थ ण एगमेगाए देवीए सोलस-सोलस देवीसहस्सा परिवारो पण्णत्तो ॥

९३ पभू ण ताओ एगमेगा देवी अण्णाइं सोलस-सोलस देवीसहस्साइं परिवार विउव्वित्तए ?
एवामेव सपुव्वावरेण अट्ठावीसुत्तर देवीसयसहस्स। सेत्त तुडिए ॥

९४. पभू ण भते ! सक्के देविदे देवराया सोहम्मे कप्पे, सोहम्मवडेसए विमाणे, सभाए सुहम्माए, सक्कसि सीहासणसि तुडिएण सद्धि दिव्वाइ भोगभोगाइ

---

१. ओसिणाभा (ता, स)।
२. जी० ३।
३ आयच्चा (अ, स)
४. भ० १०।६७-६९।
५ सेस त चेव (अ, स)।
६. महागहाण (अ, क, व, स)।
७ ठा० २।३२५।
८. सेया (अ, स), सुयी (क, ता, म)।

भुजमाणे विहरित्तए । सेस जहा चमरस्स, नवर—परियारो जहा[1] मोउद्देसए ।।

९५. सक्कस्स ण देविदस्स देवरण्णो सोमस्स महारण्णो कति अग्गमहिसीओ—पुच्छा ।
अज्जो ! चत्तारि अग्गमहिसीओ पण्णत्ताओ, त जहा—रोहिणी, मदणा, चित्ता, सोमा । तत्थ ण एगमेगाए देवीए एगमेगं देवीसहस्स परिवारे, सेस जहा[2] चमरलोगपालाण, नवर—सयपभे विमाणे, सभाए सुहम्माए, सोमसि सीहासणसि, सेसं त चेव । एव जाव वेसमणस्स, नवर—विमाणाइ जहा[3] ततियसए ।।

९६ ईसाणस्स ण भते !—पुच्छा ।
अज्जो ! अट्ठ अग्गमहिसीओ पण्णत्ताओ, त जहा—कण्हा, कण्हराई, रामा, रामरक्खिया, वसू, वसुगुत्ता, वसुमित्ता, वसुधरा । तत्थ ण एगमेगाए देवीए एगमेग देवीसहस्स परिवारे, सेस जहा[4] सक्कस्स ।।

९७. ईसाणस्स ण भते ! देविदस्स देवरण्णो सोमस्स महारण्णो कति अग्गमहिसीओ—पुच्छा ।
अज्जो ! चत्तारि अग्गमहिसीओ पण्णत्ताओ, त जहा—पुहवी, राई, रयणी, विज्जू । तत्थ ण एगमेगाए देवीए एगमेग देवीसहस्स परिवारे, सेसं जहा सक्कस्स लोगपालाण, एव जाव वरुणस्स, नवर—विमाणा जहा[5] चउत्थसए, सेस त चेव जाव[6] नो चेव ण मेहुणवत्तिय ।।

९८. सेव भते ! सेव भते ! त्ति[7] ।।

छट्ठो उद्देसो

सुहम्मा सभा-पदं

९९ कहि णि भते ! सक्कस्स देविदस्स देवरण्णो सभा सुहम्मा पण्णत्ता ?
गोयमा ! जबुद्दीवे दीवे मदरस्स पव्वयस्स दाहिणे ण इमीसे रयणप्पभाए पुढ-

---

१ भ० ३।१६ ।
२ भ० १०।७०-७२ ।
३ भ० ३।२५०, २५१, २५६, २६१, २६६ ।
४. भ० १०।९२-९४ ।
५ भ० ४।२-४ ।
६ भ० १०।६७-६९ ।
७ भ० १।५१ ।

७६ धरणस्स णं भंते ! नागकुमारिंदस्स नागकुमाररण्णो कति अग्गमहिसीओ पण्णत्ताओ ?
अज्जो ! छ अग्गमहिसीओ पण्णत्ताओ, तं जहा—अला[1], सक्का[2], सतेरा[3], सोदामिणी, इंदा, घणविज्जुया। तत्थ णं एगमेगाए देवीए छ-छ देवीसहस्सं[4] परिवारो पण्णत्तो ॥

७७ पभू णं ताओ एगमेगा देवी अण्णाइं छ-छ देविसहस्साइं परियारं विउव्वित्तए ? एवामेव सपुव्वावरेण छत्तीसाइं देविसहस्साइं। सेत्तं तुडिए ॥

७८ पभू णं भंते ! धरणे ? सेसं तं चेव[5], नवरं—धरणाए रायहाणीए, धरणंसि सीहासणंसि, सओ परियारो[6]। सेसं तं चेव ॥

७९ धरणस्स णं भंते ! नागकुमारिंदस्स नागकुमाररण्णो कालवालस्स[7] महारण्णो कति अग्गमहिसीओ पण्णत्ताओ ?
अज्जो चत्तारि अग्गमहिसीओ पण्णत्ताओ तं जहा—असोगा, विमला, सुप्पभा, सुदंसणा। तत्थ णं एगमेगाए देवीए एगमेगं देवीसहस्सं परिवारो, अवसेसं जहा[8] चमरलोगपालाणं। एवं सेसाणं तिण्ह वि ॥

८०. भूयाणंदस्स भंते !—पुच्छा।
अज्जो ! छ अग्गमहिसीओ पण्णत्ताओ, तं जहा—रूया रूयंसा, सुरूया, रूयगावती, रूयकंता, रूयप्पभा। तत्थ णं एगमेगाए देवीए एगमेगं देवीसहस्सं परिवारे, अवसेसं जहा धरणस्स ॥

८१ भूयाणंदस्स णं भंते ! नागकुमारिंदस्स नागकुमाररण्णो नागचित्तस्स—पुच्छा।
अज्जो ! चत्तारि अग्गमहिसीओ पण्णत्ताओ, तं जहा—सुणंदा, सुभद्दा, सुजाया, सुमणा। तत्थ णं एगमेगाए देवीए एगमेगं देवीसहस्सं परिवारे, अवसेसं जहा चमरलोगपालाणं। एवं सेसाणं तिण्ह वि लोगपालाणं।
जे दाहिणिल्ला इंदा तेसिं जहा धरणिंदस्स, लोगपालाणं वि तेसिं जहा धरणस्स लोगपालाणं। उत्तरिल्लाणं इंदाणं[9] जहा भूयाणंदस्स, लोगपालाण वि तेसिं जहा भूयाणंदस्स लोगपालाणं, नवरं—इंदाणं सव्वेसिं रायहाणीओ सीहासणाणि य सरिसणामगाणि, परियारो जहा[10] मोउद्देसए। लोगपालाणं सव्वेसिं रायहा-

---

१. आला (व), इला (क्व०)।
२ मक्का (ता, व, म), सुक्का (स), कमा (ना० २।३।९)।
३ सतारा (अ, स)।
४. ०सहस्सा (अ, ता, व, म, स)।
५ भ० १०।६७-६९।
६ भ० ३।१४।
७ काललोगपालस्स (अ), लोगपालस्स काललोगपालस्स (स)।
८ भ० १०।७०-७२।
९. × (ता, व)।
१० भ० ३।१४, १५।

णीओ सीहासणाणि य सरिसणामगाणि, परियारो जहा[1] चमरस्स लोगपालाण ॥

८२ कालस्स ण भते ! पिसायिंदस्स पिसायरण्णो कति अग्गमहिसीओ पण्णत्ताओ ?
अज्जो ! चत्तारि अग्गमहिसीओ पण्णत्ताओ, त जहा—कमला, कमलप्पभा, उप्पला, सुदसणा। तत्थ ण एगमेगाए देवीए एगमेग देवीसहस्स परिवारो, सेस जहा[2] चमरलोगपालाण। परिवारो तहेव, नवर—कालाए रायहाणीए, कालसि सीहासणसि, सेस त चेव। एव महाकालस्स वि ॥

८३ सुरूवस्स ण भते ! भूतिदस्स भूतरण्णो—पुच्छा।
अज्जो ! चत्तारि अग्गमहिसीओ पण्णत्ताओ, त जहा—रूववई, बहुरूवा, सुरूवा, सुभगा। तत्थ ण एगमेगाए देवीए एगमेग देवीसहस्स परिवारे, सेस जहा कालस्स। एव पडिरूवस्स वि ॥

८४ पुण्णभद्दस्स ण भते ! जक्खिदस्स—पुच्छा।
अज्जो ! चत्तारि अग्गमहिसीओ पण्णत्ताओ, त जहा—पुण्णा, बहुपुत्तिया, उत्तमा, तारया। तत्थ ण एगमेगाए देवीए एगमेग देवीसहस्स परिवारे, सेस जहा कालस्स। एव माणिभद्दस्स वि ॥

८५ भीमस्स णं भते ! रक्खसिंदस्स—पुच्छा।
अज्जो ! चत्तारि अग्गमहिसीओ पण्णत्ताओ, त जहा—पउमा, वसुमती[3], कणगा, रयणप्पभा। तत्थ ण एगमेगाए देवीए एगमेग देवीसहस्स परिवारे, सेस जहा कालस्स। एव महाभीमस्स वि ॥

८६ किन्नरस्स ण—पुच्छा।
अज्जो ! चत्तारि अग्गमहिसीओ पण्णत्ताओ, त जहा—वडेसा, केतुमती, रतिसेणा, रइप्पियाँ। तत्थ ण एगमेगाए देवीए एगमेग देवीसहस्स परिवारे, सेस त चेव। एव किंपुरिसस्स वि ॥

८७ सप्पुरिसस्स ण—पुच्छा।
अज्जो ! चत्तारि अग्गमहिसीओ पण्णत्ताओ, त जहा—रोहिणी, नवमिया, हिरी, पुप्फवती। तत्थ ण एगमेगाए देवीए एगमेग देवीसहस्स परिवारे, सेस त चेव। एव महापुरिसस्स वि ॥

८८ अतिकायस्स ण—पुच्छा।
अज्जो ! चत्तारि अग्गमहिसीओ पण्णत्ताओ, तं जहा—भुयगा[4], भुयगवती,

---

१. भ० १०।७०-७३।
२ भ० १०।७१, ७२।
३ पउमवती (अ, स), पउमावती (क, म)।
४ भुयगा (स)।

महाकच्छा, फुडा । तत्थ ण एगमेगाए देवीए एगमेग देवीसहस्स परिवारे, सेसं त चेव । एव महाकायस्स वि ।।

८९ गीयरइस्स णं—पुच्छा ।
अज्जो ! चत्तारि अग्गमहिसीओ पण्णत्ताओ, त जहा—सुघोसा, विमला, सुस्सरा, सरस्सई । तत्थ ण एगमेगाए देवीए एगमेग देवीसहस्स परिवारे, सेस तं चेव । एव गीयजसस्स वि । सव्वेसि एएसि जहा कालस्स, नवर—सरिसनामियाओ रायहाणीओ सीहासणाणि य, सेस त चेव ।।

९०. चदस्स ण भते ! जोइसिदस्स जोइसरण्णो – पुच्छा ।
'अज्जो ! चत्तारि अग्गमहिसीओ पण्णत्ताओ, त जहा—चदप्पभा, दोसिणाभा[1], अच्चिमाली, पभकरा । एव जहा[2] जीवाभिगमे जोइसियउद्देसए तहेव सूरस्स वि सूरप्पभा, आयवा[3], अच्चिमाली, पभकरा । सेस त चेव जाव[4] नो चेव ण मेहुणवत्तियं ।।

९१ इगालस्स ण भते ! महग्गहस्स कति अग्गमहिसीओ—पुच्छा ।
अज्जो ! चत्तारि अग्गमहिसीओ पण्णत्ताओ, त जहा—विजया, वेजयती, जयती, अपराजिया । तत्थ ण एगमेगाए देवीए एगमेगं देवीसहस्स परिवारे, सेस[5] जहा चदस्स, नवर—इगालवडेसए विमाणे, इगालगसि सीहासणंसि, सेस त चेव । एवं वियालगस्स वि । एव अट्ठासीतिए वि महग्गहाणं[6] भाणियव्व जाव[7] भावकेउस्स, नवर—वडेसगा सीहासणाणि य सरिसनामगाणि, सेस तं चेव ।।

९२. सक्कस्स ण भते ! देविंदस्स देवरण्णो—पुच्छा ।
अज्जो ! अट्ठ अग्गमहिसिओ पण्णत्ताओ, तं जहा—पउमा, सिवा, सची[8], अजू, अमला, अच्छरा, नवमिया, रोहिणी । तत्थ ण एगमेगाए देवीए सोलस-सोलस देवीसहस्सा परिवारो पण्णत्तो ।।

९३ पभू ण ताओ एगमेगा देवी अण्णाइं सोलस-सोलस देवीसहस्साइं परिवार विउव्वित्तए ?
एवामेव सपुव्वावरेण अट्ठावीसुत्तर देवीसयसहस्स । सेत्त तुडिए ।।

९४ पभू ण भंते ! सक्के देविंदे देवराया सोहम्मे कप्पे, सोहम्मवडेसए विमाणे, सभाए सुहम्माए, सक्कसि सीहासणसि तुडिएण सद्धि दिव्वाइ भोगभोगाइ

---

१ ओसिणाभा (ता, स) ।
२. जी० ३ ।
३ आयच्चा (अ, म) .
४. भ० १०।६७-६९ ।
५ सेस त चेव (अ, स) ।
६. महागहाण (अ, क, व, स) ।
७ ठा० २।३२५ ।
८. सेया (अ, स), सुयी (क, ता, म) ।

भुजमाणे विहरित्तए। सेस जहा चमरस्स, नवर—परियारो जहा[1] मोउद्देसए ॥

९५ सक्कस्स ण देविदस्स देवरण्णो सोमस्स महारण्णो कति अग्गमहिसीओ—पुच्छा।
अज्जो! चत्तारि अग्गमहिसीओ पण्णत्ताओ, त जहा—रोहिणी, मदणा, चित्ता, सोमा। तत्थ ण एगमेगाए देवीए एगमेगं देवीसहस्स परिवारे, सेस जहा[2] चमरलोगपालाण, नवर—सयपभे विमाणे, सभाए सुहम्माए, सोमसि सोहासणसि, सेस त चेव। एव जाव वेसमणस्स, नवर—विमाणाइ जहा[3] ततियसए ॥

९६ ईसाणस्स ण भते!—पुच्छा।
अज्जो! अट्ठ अग्गमहिसीओ पण्णत्ताओ, त जहा—कण्हा, कण्हराई, रामा, रामरक्खिया, वसू, वसुगुत्ता, वसुमित्ता, वसुधरा। तत्थ ण एगमेगाए देवीए एगमेग देवीसहस्स परिवारे, सेस जहा[4] सक्कस्स ॥

९७. ईसाणस्स ण भते! देविदस्स देवरण्णो सोमस्स महारण्णो कति अग्गमहिसीओ—पुच्छा।
अज्जो! चत्तारि अग्गमहिसीओ पण्णत्ताओ, त जहा—पुहवी, राई, रयणी, विज्जू। तत्थ ण एगमेगाए देवीए एगमेग देवीसहस्स परिवारे, सेस जहा सक्कस्स लोगपालाण, एव जाव वरुणस्स, नवर—विमाणा जहा[5] चउत्थसए, सेस त चेव जाव[6] नो चेव ण मेहुणवत्तिय ॥

९८. सेव भते! सेव भते! त्ति[7] ॥

छट्ठो उद्देसो

सुहम्मा सभा-पदं

९९. कहि णि भते! सक्कस्स देविदस्स देवरण्णो सभा सुहम्मा पण्णत्ता?
गोयमा! जबुद्दीवे दीवे मदरस्स पव्वयस्स दाहिणे ण इमीसे रयणप्पभाए पुढ-

---

१ भ० ३।१६।
२ भ० १०।७०-७२।
३ भ० ३।२५०, २५१, २५६, २६१, २६६।
४ भ० १०।९२-९४।
५ भ० ४।२-४।
६ भ० १०।९७-९९।
७ भ० १।५१।

वीए बहुसमरमणिज्जातो भूमिभागातो उड्ढं एवं जहा रायप्पसेणइज्जे जाव[1] पंच वडेंसगा पण्णत्ता, तं जहा—असोगवडेंसए[2], •सत्तवण्णवडेंसए, चंपगवडेंसए, चूयवडेंसए॰ मज्झे सोहम्मवडेंसए। से णं सोहम्मवडेंसए महाविमाणे अद्धतेरस-जोयणसयसहस्साइं आयामविक्खंभेणं,

एवं जह सूरियाभे, तहेव माणं[3] तहेव उववाओ।
सक्कस्स य अभिसेओ, तहेव जह सूरियाभस्स।
अलंकारअच्चणिया, तहेव जाव[4] आयरक्ख त्ति ॥१॥

दो सागरोवमाइं ठिती ॥

सक्क-पदं

१००. सक्के णं भंते ! देविंदे देवराया केमहिड्ढिए जाव केमहासोक्खे[5]।
गोयमा ! महिड्ढिए जाव महासोक्खे। से णं तत्थ बत्तीसाए विमाणावाससय-सहस्साणं जाव[6] दिव्वाइं भोगभोगाइं भुंजमाणे विहरइ। एमहिड्ढिए जाव एमहासोक्खे सक्के देविंदे देवराया ॥

१०१. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति[7] ॥

७-३४ उद्देसा

अंतरदीव-पद

१०२. कहि णं भंते ! दाहिणिल्लाणं एगूरुयमणुस्साणं[9] एगूरुयदीवे नामं दीवे पण्णत्ते ? एवं जहा जीवाभिगमे तहेव निरवसेसं जाव[10] सुद्धदंतदीवो त्ति। एए अट्ठावीसं उद्देसगा भाणियव्वा ॥

१०३. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति जाव[11] अप्पाणं भावेमाणे विहरइ ॥

---

१. राय० सू० १२४, १२५ ।
२. सं० पा०—असोगवडेंसए जाव मज्झे ।
३. [illegible] (अ, क, [illegible]) ।
४. राय० सू० [illegible] ।
५. भ० [illegible] ।
६. [illegible] (ब, म) ।
७. भ० ३।१६ ।
८. भ० १।५१ ।
९. एगूरुय० (अ, क, ब) ।
१०. जी० ३ ।
११. भ० १।५१ ।

एक्कारसं सतं

पढमो उद्देसो

१. उप्पल २. सालु ३. पलासे ४. कुभी ५ नाली य ६. पउम ७ कण्णी य[1] ।
८. नलिण ९. सिव १०. लोग ११,१२ कालालभिय दस दो य एक्कारे[2] ॥१॥

उप्पलजीवाण उववायादि-पदं

१ तेण कालेण तेण समएण रायगिहे जाव[3] पज्जुवासमाणे एव वयासी—उप्पले ण भते ! एगपत्तए कि एगजीवे ? अणेगजीवे ?
गोयमा ! एगजीवे, नो अणेगजीवे । तेण पर जे अण्णे जीवा उववज्जति ते ण नो एगजीवा अणेगजीवा ॥

२ ते णं भते ! जीवा कतोहितो उववज्जति—कि नेरइएहितो उववज्जति ? 'तिरिक्खजोणिएहिंतो उववज्जति ? मणुस्सेहिंतो उववज्जति'[4] ? देवेहिंतो उववज्जति ?

---

१ या (ब) ।

२. अतोग्रे प्रमोद्देशकद्वारसग्रहगाथा लभ्यन्ते, ताश्च इमा—

उववाओ परिमाण,
अवहारुच्चत्त बध वेदे य ।
उदए उदीरणाए,
लेसा दिट्ठी य नाणे य ॥
जोगुवओगे वण्ण,
रसमाई ऊसासगे य आहारे ।
विरई किरिया बधे,
सन्न कसायित्थि बधे य ॥
सन्निदिय अणुबधे,
सवेहाहार ठिइ समुग्घाए ।
चयण मूलादीसु य,
उववाओ सव्वजीवाण ॥ (वृपा) ॥

३. भ० १।४-१० ।

४ तिरि मणु (अ, क, ता, ब, म, स) ।

गोयमा ! नो नेरइएहिंतो उववज्जति, तिरिक्खजोणिएहिंतो उववज्जति, मणुस्सेहिंतो उववज्जति देवेहिंतो वि उववज्जति । एव उववाओ भाणियव्वो जहा वक्कतीए वणस्सइकाइयाण जाव[1] ईसाणेति ।।

३. ते ण भते ! जीवा एगसमए ण केवइया उववज्जति ?
गोयमा ! जहण्णेण एक्को वा दो वा तिण्णि वा, उक्कोसेणं सखेज्जा वा[2] असखेज्जा वा उववज्जति ।।

४. ते णं भते ! जीवा समए-समए अवहीरमाणा-अवहीरमाणा केवतिकालेणं अवहीरति ?
गोयमा ! ते ण असखेज्जा समए-समए 'अवहीरमाणा-अवहीरमाणा'[3] असखेज्जाहि ओसप्पिणि[4]-उस्सप्पिणीहिं अवहीरति, नो चेव ण अवहिया सिया ।।

५ तेसि ण भते ! जीवाण केमहालिया सरीरोगाहणा पण्णत्ता ?
गोयमा ! जहण्णेण अगुलस्स असखेज्जइभाग, उक्कोसेण सातिरेग जोयणसहस्स ।।

६. ते णं भते ! जीवा नाणावरणिज्जस्स कम्मस्स कि वधगा ? अवधगा ?
गोयमा ! नो अवंधगा, वंधए वा, वधगा वा ।।

७. एव जाव अतराइयस्स, नवर—आउयस्स—पुच्छा ।
गोयमा ! १ वधए वा २ अवधए वा ३ वधगा वा ४. अवंधगा वा ५. अहवा वधए य अवधए य ६ अहवा वधए य अवधगा य ७ अहवा वधगा य अवधए य ८. अहवा वधगा य अवधगा य—एते अट्ठ भगा ।।

८ ते ण भते ! जीवा नाणावरणिज्जस्स कम्मस्स किं वेदगा ? अवेदगा ?
गोयमा ! नो अवेदगा, वेदए वा, वेदगा वा । एव जाव अतराइयस्स ।।

९ ते ण भते ! जीवा कि सायावेदगा ? असायावेदगा ?
गोयमा ! सायावेदए वा, असायावेदए वा—अट्ठ भंगा ।।

१०. ते ण भते ! जीवा नाणावरणिज्जस्स कम्मस्स कि उदई ? अणुदई ?
गोयमा ! नो अणुदई, उदई वा, उदइणो वा । एव जाव अतराइयस्स ।।

११. ते ण भते ! जीवा नाणावरणिज्जस्स कम्मस्स कि उदीरगा ? अणुदीरगा ?
गोयमा ! नो अणुदीरगा, उदीरए वा, उदीरगा वा । एव जाव अतराइयस्स, नवर—वेदणिज्जाउएसु अट्ठ भगा ।।

१२. ते ण भते ! जीवा कि कण्हलेसा ? नीललेसा ? काउलेसा ? तेउलेसा ?

---

१. प० ६ ।
२. वा उवव (ता) ।
३. अवहीरेमाणा २ (स) ।
४. ०प्पिणीहिं (व, म) ।

गोयमा ! कण्हलेसे वा[1] •नीललेसे वा काउलेसे वा° तेउलेसे वा, कण्हलेस्सा वा नीललेस्सा वा काउलेस्सा वा तेउलेस्सा वा, अहवा कण्हलेसे य नीललेसे य। एव एए दुयासजोग-तियासजोग-चउक्कसजोगेण[2] असीती भगा[3] भवति ॥

१३. ते ण भते ! जीवा कि सम्मद्दिट्ठी ? मिच्छादिट्ठी ? सम्मामिच्छादिट्ठी ?
गोयमा ! नो सम्मद्दिट्ठी, नो सम्मामिच्छादिट्ठी, मिच्छादिट्ठी वा मिच्छादिट्ठिणो वा ॥

१४. ते ण भते ! जीवा कि नाणी ? अण्णाणी ?
गोयमा ! नो नाणी, अण्णाणी वा, अण्णाणिणो वा ॥

१५. ते ण भते ! जीवा कि मणजोगी ? वइजोगी ? कायजोगी ?
गोयमा ! नो मणजोगी, नो वइजोगी, कायजोगी वा, कायजोगिणो वा ॥

१६. ते ण भते ! जीवा कि सागारोवउत्ता ? अणागारोवउत्ता ?
गोयमा ! सागारोवउत्ते वा, अणागारोवउत्ते वा—अट्ठ भगा ॥

१७. तेसि ण भते ! जीवाण सरीरगा कतिवण्णा, कतिगधा, कतिरसा, कतिफासा, पण्णत्ता ?
गोयमा ! पचवण्णा, पचरसा, दुगधा, अट्ठफासा पण्णत्ता। ते पुण अप्पणा अवण्णा, अगंधा, अरसा, अफासा पण्णत्ता ॥

१८. ते ण भते ! जीवा कि 'उस्सासगा ? निस्सासगा ? नोउस्सासनिस्सासगा ?'[4]
गोयमा ! १ उस्सासए वा २ निस्सासए वा ३ नोउस्सासनिस्सासए वा ४. उस्सासगा वा ५. निस्सासगा वा ६ नोउस्सासनिस्सासगा वा १-४ अहवा उस्सासए य निस्सासए य १-४ अहवा उस्सासए य नो उस्सासनिस्सासए य १-४ अहवा निस्सासए य नोउस्सासनिस्सासए य १-८ अहवा उस्सासए य निस्सासए य नोउस्सासनिस्सासए य—अट्ठ भगा। एते[5] छव्वीस भगा भवंति ॥

१९ ते ण भते ! जीवा कि आहारगा ? अणाहारगा ?
गोयमा ! आहारए वा, अणाहारए वा—अट्ठ भंगा ॥

२०. ते ण भते ! जीवा किं विरया ? अविरया ? विरयाविरया ?
गोयमा ! नो विरया, नो विरयाविरया, अविरए वा अविरया वा ॥

२१ ते ण भते ! जीवा किं सकिरिया ? अकिरिया ?
गोयमा ! नो अकिरिया, सकिरिए वा, सकिरिया वा ॥

---

१ स० पा०—वा जाव तेउलेसे।
२ चउक्कसजोगेण य (अ, क, ता, म, स), चतुक्कासजोगेण य (ब)।
३ द्रष्टव्यम्–भ० १।२१८ सूत्रस्य पादटिप्पणम्।
४ उस्सासा निस्सासा नोउस्सासानिस्सासा (क, ता, म)।
५ एव (ता)।

२२ ते णं भते ! जीवा कि सत्तविहवधगा ? अट्ठविहवधगा ?
गोयमा ! सत्तविहवधए वा, अट्ठविहवधए वा—अट्ठ भगा ।।

२३. ते णं भते ! जीवा कि आहारसण्णोवउत्ता ? भयसण्णोवउत्ता ? मेहुणसण्णोवउत्ता ? परिग्गहसण्णोवउत्ता ?
गोयमा ! आहारसण्णोवउत्ता—असीती भगा[1] ।।

२४. ते ण भते ! जीवा कि कोहकसाई ? माणकसाई ? मायाकसाई ? लोभकसाई ? असीती भगा[2] ।।

२५. ते ण भते ! जीवा कि इत्थिवेदगा ? पुरिसवेदगा ? नपुसगवेदगा ?
गोयमा ! नो इत्थिवेदगा, नो पुरिसवेदगा, नपुसगवेदए वा, नपुसगवेदगा वा ।।

२६. ते ण भते ! जीवा कि इत्थिवेदवधगा ? पुरिसवेदवधगा ? नपुसगवेदवधगा ?
गोयमा ! इत्थिवेदवंधए वा, पुरिसवेदवधए वा, नपुसगवेदवधए वा—छव्वीस भगा[3] ।।

२७ ते ण भते ! जीवा कि सण्णी ? असण्णी ?
गोयमा ! नो सण्णी, असण्णी वा असण्णिणो वा ।

२८ ते ण भते ! जीवा कि सइदिया ? अणिदिया ?
गोयमा ! नो अणिदिया, सइदिए वा, सइदिया वा ।।

२९. से ण भते ! उप्पलजीवेत्ति[4] कालओ केवच्चिर होइ ?
गोयमा ! जहण्णेण अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेण असखेज्ज काल ।।

३०. से ण भते ! उप्पलजीवे पुढविजीवे, पुणरवि उप्पलजीवेत्ति केवतिय काल सेवेज्जा ? केवतियं काल गतिरागति करेज्जा ?
गोयमा ! भवादेसेण जहण्णेण दो भवग्गहणाइ, उक्कोसेण असखेज्जाइं भवग्गहणाइ । कालादेसेण जहण्णेण दो अंतोमुहुत्ता, उक्कोसेण असखेज्ज कालं, एवतिय काल सेवेज्जा, एवतिय काल गतिरागति करेज्जा ।।

३१ से ण भते ! उप्पलजीवे, आउजीवे, पुणरवि उप्पलजीवेत्ति केवतिय काल सेवेज्जा ? केवतिय काल गतिरागति करेज्जा !
एव चेव । एव जहा पुढविजीवे भणिए तहा जाव वाउजीवे भाणियव्वे ।।

३२ से ण भते ! उप्पलजीवे सेसवणस्सइजीवे[5], से पुणरवि उप्पलजीवेत्ति केवतिय 'काल सेवेज्जा ? केवतिय काल गतिरागति करेज्जा ?

१, २. द्रष्टव्यम्—भ० ११२१८ सूत्रस्य पादटिप्पणम् ।
३. भ० ११।१८।
४. ०जीवे (व) ।
५. से वण० (अ, क, व, म, स) ।

गोयमा ! भवादेसेणं जहण्णेण दो भवग्गहणाइं, उक्कोसेण अणताइ भवग्गहणाइ, कालादेसेण जहण्णेण दो अतोमुहुत्ता, उक्कोसेण अणत काल तरुकाल[1], एवतिय काल सेवेज्जा, एवतिय काल गतिरागति करेज्जा"[2] ॥

३३ से ण भते ! उप्पलजीवे वेइदियजीवे, पुणरवि उप्पलजीवेत्ति केवतिय काल सेवेज्जा ? केवतिय काल गतिरागति करेज्जा ?
गोयमा ! भवादेसेण जहण्णेण दो भवग्गहणाइ, उक्कोसेण सखेज्जाइ भवग्गहणाइ, कालादेसेण जहण्णेण दो अतोमुहुत्ता, उक्कोसेण सखेज्ज काल, एवतिय काल सेवेज्जा, एवतिय कालं गतिरागति करेज्जा। एवं तेइदियजीवे, एव चउरिदियजीवे वि ॥

३४ से ण भते ! उप्पलजीवे पचिदियतिरिक्खजोणियजीवे, पुणरवि उप्पलजीवेत्ति —पुच्छा ।
गोयमा ! भवादेसेण जहण्णेण दो भवग्गहणाइ, उक्कोसेण अट्ठ भवग्गहणाइ, कालादेसेण जहण्णेण दो अतोमुहुत्ता, उक्कोसेण पुव्वकोडिपुहत्त, एवतिय काल सेवेज्जा, एवतिय काल गतिरागति करेज्जा। एव मणुस्सेण वि सम जाव एवतिय काल गतिरागति करेज्जा ॥

३५ ते ण भते ! जीवा किमाहारमाहारेंति ?
गोयमा ! दव्वओ अणतपदेसियाइ दव्वाइ, खेत्तओ असखेज्जपदेसोगाढाइ, कालओ अण्णयरकालट्ठिइयाइ, भावओ वण्णमताइ गधमताइ रसमताइं फासमताइ एव जहा आहारुद्देसए वणस्सइकाइयाण आहारो तहेव जाव[3] सव्वप्पणयाए आहारमाहारेंति, नवर—नियमा छद्दिसि, सेस त चेव ॥

३६ तेसि ण भते ! जीवाण केवतिय काल ठिई पण्णत्ता ?
गोयमा ! जहण्णेण अतोमुहुत्त, उक्कोसेण दस वाससहस्साइ ॥

३७ तेसि ण भते ! जीवाण कति समुग्घाया पण्णत्ता ?
गोयमा ! तओ समुग्घाया पण्णत्ता, त जहा—वेदणासमुग्घाए, कसायसमुग्घाए, मारणतियसमुग्घाए ॥

३८ ते ण भते ! जीवा मारणतियसमुग्घाएण कि समोहता मरति ? असमोहता मरति ?
गोयमा ! समोहता वि मरति, असमोहता वि मरति ॥

३९. ते ण भते ! जीवा अणतर उव्वट्टित्ता कहि गच्छति ? कहिं उववज्जति—कि

---

१. × (क, ता, म) । वि (व) ।
२. एव चेव नवरमणत काल जाव कालाएसेण ३. प० २८।१।

नेरइएसु उववज्जति ? तिरिक्खजोणिएसु उववज्जति ? एव जहा वक्कतीए उव्वट्टाणाए वणस्सइकाइयाणं तहा भाणियव्व[1] ॥

४० अह भते ! सव्वपाणा, सव्वभूता, सव्वजीवा, सव्वसत्ता उप्पलमूलत्ताए, उप्पलकदत्ताए, उप्पलनालत्ताए, उप्पलपत्तत्ताए, उप्पलकेसरत्ताए, उप्पलकण्णियत्ताए, उप्पलथिभगत्ताए[2] उववन्नपुव्वा ?
हता गोयमा ! असति अदुवा अणतखुत्तो ॥

४१ सेव भते ! सेव भते ! त्ति[3] ॥

बीओ उद्देसो

सालुयादिजीवाण उववायादि पद

४२ सालुए ण भते ! एगपत्तए कि एगजीवे ? अणेगजीवे ?
गोयमा ! एगजीवे । एव उप्पलुद्देसगवत्तव्वया अपरिसेसा भाणियव्वा जाव[4] अणतखुत्तो, नवरं—सरीरोगाहणा जहण्णेण अगुलस्स असखेज्जइभाग, उक्कोसेणं धणुपुहत्त, सेस त चेव ॥

४३. सेवं भते ! सेव भते ! त्ति[5] ॥

---

१. प० ६ ।
२ ०विभगत्ताए (अ) ।
३. भ० १।५१ ।
४ भ० ११।१-४० ।
५ भ० १।५१ ।

तइओ उद्देसो

४४ पलासे ण भते ? एगपत्तए कि एगजीवे ? अणेगजीवे ?
एव उप्पलुद्देसगवत्तव्वया अपरिसेसा भाणियव्वा, नवर—सरीरोगाहणा जहण्णेण अगुलस्स असखेज्जइभाग, उक्कोसेण गाउयपुहत्ता[1]। देवेहिंतो[2] न उववज्जति ॥

४५. लेसासु—ते ण भते ! जीवा कि कण्हलेस्सा ? नीललेस्सा ? काउलेस्सा ?
गोयमा ! कण्हलेस्से वा नीललेस्से वा काउलेस्से वा—छव्वीसं भगा[3], सेस त चेव ॥

४६ सेव भते ! सेव भते ! त्ति[4] ॥

चउत्थो उद्देसो

४७ कुभिए ण भते ! एगपत्तए कि एगजीवे ? अणेगजीवे ?
एव जहा पलासुद्देसए तहा भाणियव्वे, नवर—ठिती जहण्णेण अतोमुहुत्त उक्कोसेण वासपुहत्त, सेसं त चेव ॥]

४८ सेव भते ! सेव भते ! त्ति[5] ॥

---

१ °पुहुत्त (अ, व)।

२ देवा एएसु (अ, व), देवेसु (ता, म); देवा एएसु चेव (स); वृत्तिकृतापि ११।२ सूत्रस्य सन्दर्भे एव व्याख्या कृतास्ति। अस्माभिरपि तस्य सन्दर्भे एव पाठ· स्वीकृत.।

३ भ० ११।१८।

४ भ० १।५१।

५ भ० १।५१।

पंचमो उद्देसो

४९. नालिए ण भते ! एगपत्तए कि एगजीवे ? अणेगजीवे ?
एव कुभिउद्देसगवत्तव्वया निरवसेस भाणियव्वा ।।

५०. सेव भते ! सेवं भंते ! त्ति[1] ।।

छट्ठो उद्देसो

५१. पउमे ण भते ! एगपत्तए कि एगजीवे ? अणेगजीवे ?
एवं उप्पलुद्देसगवत्तव्वया निरवसेसा भाणियव्वा ।।

५२ सेवं भंते ! सेव भते ! त्ति[2] ।।

सत्तमो उद्देसो

५३ कण्णिए ण भते ! एगपत्तए किं एगजीवे ? अणेगजीवे ?
एव चेव निरवसेस भाणियव्वं ।।

५४. सेव भते ! सेव भते ! त्ति[3] ।।

---

१. भ० १।५१।
२. भ० १।५१।
३ भ० १।५१।

अट्ठमो उद्देसो

५५. नलिणे ण भंते ! एगपत्तए किं एगजीवे ? अणेगजीवे ?
एवं चेव निरवसेसं जाव[1] अणंतखुत्तो ॥

५६. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति[2] ॥

नवमो उद्देसो

सिवरायरिसि-पदं

५७ तेणं कालेणं तेणं समएणं हत्थिणापुरे[3] नामं नगरे होत्था—वण्णओ[4]। तस्स णं हत्थिणापुरस्स नगरस्स बहिया उत्तरपुरत्थिमे दिसीभागे, एत्थ णं सहसंबवणे नामं उज्जाणे होत्था—सव्वोउय[5]-पुप्फ-फलसमिद्धे रम्मे णंदणवणसन्निभप्पगासे[6] सुहसीतलच्छाए मणोरमे सादुप्फले अकंटए, पासादीए[7] •दरिसणिज्जे अभिरूवे॰ पडिरूवे ॥

५८ तत्थ णं हत्थिणापुरे नगरे सिवे नामं राया होत्था—महयाहिमवंत-महंत-मलय-मंदर-महिंदसारे—वण्णओ[8]। तस्स णं सिवस्स रण्णो धारिणी नामं देवी होत्था—सुकुमालपाणिपाया—वण्णओ[9]। तस्स णं सिवस्स रण्णो पुत्ते धारिणीए अत्तए सिवभद्दे नामं कुमारे होत्था—सुकुमालपाणिपाए, जहा सूरियकंते जाव[10] रज्जं च रट्ठं च बलं च वाहणं च कोसं च कोट्ठारं च पुरं च अंतेउरं च सयमेव पच्चुवेक्खमाणे-पच्चुवेक्खमाणे विहरइ ॥

---

१ भ० ११।१-४०।
२ भ० १।५१।
३. हत्थिणागपुरे (अ, म), हत्थिणपुरे (क), हत्थिणाउरे (ता)।
४. ओ० सू० १।
५. सव्वोदुय (क, म)।
६ ॰सन्निगासे (अ, क, ब, स)।
७ स० पा०—पासादीए जाव पडिरूवे।
८ ओ० सू० १४।
९ ओ० सू० १५।
१०. राय० सू० ६७३,६७४।

५६ तए ण तस्स सिवस्स रण्णो अण्णया कयाइ पुव्वरत्तावरत्तकालसमयसि रज्जधुर चिंतेमाणस्स अयमेयारूवे अज्झत्थिए[1] °चिंतिए पत्थिए मणोगए सकप्पे° समुप्पज्जित्था—अत्थि ता मे पुरा पोराणाण [2]°सुचिण्णाण सुपरक्कताण सुभाणं कल्लाणाण कडाण कम्माण कल्लाणफलवित्तिविसेसे, जेणाह हिरण्णेण वड्ढामि सुवण्णेण वड्ढामि, धणेण वड्ढामि, धण्णेण वड्ढामि°, पुत्तेहिं वड्ढामि, पसूहिं वड्ढामि, रज्जेण वड्ढामि, एव रट्ठेण वलेण वाहणेण कोसेण कोट्ठागारेण पुरेणं अतेउरेण वड्ढामि, विपुलधण-कणग-रयण[3]-°मणि-मोत्तिय-सखसिलप्पवाल-रत्तरयण°-सतसारसावएज्जेण[4] अतीव-अतीव अभिवड्ढामि, त कि ण अह पुरा पोराणाण[5] °सुचिण्णाण सुपरक्कताण सुभाण कल्लाणाण कडाण कम्माण° 'एगतसो खय'[6] उवेहमाणे[7] विहरामि ? त जावताव अह हिरण्णेण वड्ढामि जाव[8] अतीव-अतीव अभिवड्ढामि जाव मे सामतरायाणो वि वसे वट्टति, तावता मे सेय कल्ल पाउप्पभायाए रयणीए जाव[9] उट्ठियम्मि सूरे सहस्सरस्सिम्मि दिणयरे तेयसा जलते सुवहु लोही-लोहकडाह-कडच्छुय[10] तविय तावसभडग घडावेत्ता सिवभद्द कुमार रज्जे ठावेत्ता त सुवहु लोही-लोहकडाह-कडच्छुय तविय तावसभडग गहाय जे इमे गगाकुले वाणपत्था तावसा भवति, [त जहा—होत्तिया पोत्तिया[11] कोत्तिया जहा ओववाइए जाव[12] आयावणाहिं पचग्गि-

---

१. स० पा०—अज्झत्थिए जाव समुप्पज्जित्था
२. स० पा०—जहा तामलिस्स जाव पुत्तेहिं।
३ स० पा०—रयण जाव सत०।
४ °सावदेज्जेण (क, व, म, स)।
५ स० पा—पोराणाण जाव एगतसोक्खय।
६ एगतसोक्खय (अ)।
७ उव्वेह० (स)।
८ त चेव जाव (अ, क, व, म. स)।
६ भ० २।६६।
१० कडेच्छुय (क, ता, व, म)।
११ सोत्तिया (क, व, वृपा)।
१२ केपुचिदादर्शेपु विस्तृत. पाठोस्ति। तदनन्तर 'जहा ओववाइए' इति सक्षिप्तपाठस्य सूचनमप्यस्ति। एतद् द्वयोर्वाचनयो सम्मिश्रणेन जातम्। केवल 'व' सकेतितादर्शे एकैव विस्तृतवाचना लभ्यते। सा च इत्थमस्ति—होत्तिया पोत्तिया कोत्तिया जण्णई सड्ढई थालई हुवउट्ठा [हुचउट्ठा (अ) हुपतुट्ठा (क, व), उट्टिया (ता)]- दतुक्खलिया उम्मज्जगा सम्मज्जगा निमज्जगा सपक्खाला 'उद्धकडुयगा अहोकडुयगा' ['×' (क, व, म)] दाहिणकूलगा उत्तरकूलगा सखधमगा कूलधमगा मियलुद्धगा हत्थितावसा जलाभिसेयकढिणगत्ता अवुवासिणो वाउवासिणो सेवालवासिणो [वेलनासिणो (स)] अबुभक्खिणो वाउभक्खिणो सेवालभक्खिणो मूलाहारा कदाहारा पत्ताहारा तयाहारा पुप्फाहारा फलाहारा वीयाहारा परिसडिय-पडु-पत्तपुप्फ-फलाहारा उद्दडा रुक्खमूलिया मडलिया विलवासिणो [वलिवासिणो (क), पलवासिणो (व), वणवासिणो (म)] दिसापोक्खिया, आतावणेहि पचग्गितावेहिं

तावेहि इगालसोल्लिय कदुसोल्लिय कट्ठसोल्लिय पिव अप्पाण करेमाणा विहरति]'
तत्थ ण जे ते दिसापोक्खी तावसा तेसि अतिय मुडे भवित्ता दिसापोक्खियतावसत्ताए पव्वइत्तए, पव्वइते वि य ण समाणे अयमेयारूव अभिग्गह अभिगिण्हिस्सामि—कप्पइ मे जावज्जीवाए छट्ठछट्ठेण अणिक्खित्तेण दिसाचक्कवालेण तवोकम्मेण उड्ढ बाहाओ पगिज्झिय-पगिज्झिय[2] •सूराभिमुहस्स आयावणभूमीए आयावेमाणस्स° विहरित्तए, त्ति कट्टु एव सपेहेइ, सपेहेत्ता कल्ल पाउप्पभायाए रयणीए जाव[3] उट्ठियम्मि सूरे सहस्सरस्सिम्मि दिणयरे तेयसा जलते सुबहु लोहीलोह[4]•कडाह-कडच्छुय तबिय तावसभडग° घडावेत्ता कोडुबियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एव वयासी—खिप्पामेव भो! देवाणुप्पिया! हत्थिणापुर नगर सब्भितरबाहिरिय आसिय-सम्मज्जिओवलित्त जाव[5] सुगंधवरगधगधिय गधवट्टिभूय करेह य कारवेह य, करेत्ता य कारवेत्ता य एयमाणत्तिय पच्चप्पिणह। ते वि तमाणत्तिय पच्चप्पिणति॥

६०. तए ण से सिवे राया दोच्च पि कोडुबियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एव वयासी—खिप्पामेव भो! देवाणुप्पिया! सिवभद्दस्स कुमारस्स महत्थ महग्घ महरिह विउल रायाभिसेय उवट्ठवेह। तए ण ते कोडुबियपुरिसा तहेव उवट्ठवेति॥

६१ तए ण से सिवे राया अणेगगणनायग-दडनायग[6]-•राईसर-तलवर-माडबिय-कोडुबिय-इब्भ-सेट्ठि-सेणावइ-सत्थवाह-दूय-° सधिपाल-सद्धि सपरिवुडे सिवभद्द कुमार सीहासणवरसि पुरत्थाभिमुह, निसियावेइ, निसियावेत्ता अट्ठसएण सोवण्णियाण कलसाण जाव[7] अट्ठसएण भोमेज्जाण कलसाण सव्विड्ढीए जाव[8] दुदुहि-णिग्घोसणाइयरवेण महया-महया रायाभिसेगेण अभिसिचइ, अभिसि-

---

इगालसोल्लिय कदु (डु)सोल्लिय कट्ठसोल्लिय पिव अप्पाण करेमाणा विहरति।
'ओववाइय' सूत्रस्य (९४) पूर्णपाठ एवमस्ति—'होत्तिया पोत्तिया कोत्तिया जण्णई सड्ढई थालई हुबउट्ठा दतुक्खलिया उम्मज्जगा सम्मज्जगा निमज्जगा सपक्खाला दक्खिणकूलगा उत्तरकूलगा सखधमगा कूलधमगा मिगलुद्धगा हत्थितावसा उद्दडगा दिसापोक्खिणो वाकवासिणो चेलवासिणो जलवासिणो रुक्खमूलिया अबुभक्खिणो वाउभक्खिणो सेवालभक्खिणो मूलाहारा कदाहारा तयाहारा पत्ताहारा पुप्फाहारा फलाहारा बीयाहारा परिसडिय-कद-मूल-तय-पत्त-पुप्फफलाहारा जलाभिसेय-कढिण-गाया आयावणाहिं पंचग्गितावेहिं इगालसोल्लिय कदुसोल्लिय कट्ठसोल्लिय पिव अप्पाण करेमाणा।'

१ असौ कोष्ठकवर्ती पाठ व्याख्याश प्रतीयते।
२ स० पा०—पगिज्झिय जाव विहरित्तए।
३ भ० २।६६।
४ स० पा०—लोह जाव घडावेत्ता।
५ ओ० सू० ५५।
६ स० पा०—दडनायग जाव सधिपाल।
७. भ० ९।१८२।
८ भ० ९।१८२।

चित्ता पम्हलसुकुमालाए सुरभीए गधकासाईए गायाइं लूहेति, लूहेत्ता सरसेण गोसीसचदणेण गायाइ अणुलिपति एव जहेव जमालिस्स अलकारो तहेव जाव[1] कप्परुक्खग पिव अलकिय-विभूसिय करेइ, करेत्ता करयल[2]•परिग्गहिय दसनह सिरसावत्त मत्थए अजलि° कट्टु सिवभद्द कुमार जएण विजएण वद्धावेइ, वद्धावेत्ता ताहि इट्ठाहि कताहि पियाहि [3]•मणुण्णाहि मणामाहि मणाभिरामाहि हिययगमणिज्जाहि वग्गूहि जयविजयमगलसएहि अणवरय अभिणदतो य अभित्थुणतो य एव वयासी—जय-जय नदा! जय-जय भद्दा! भद्द ते, अजिय जिणाहि जिय पालयाहि, जियमज्झे वसाहि। इदो इव देवाण, चमरो इव असुराण, धरणो इव नागाण, चदो इव ताराण, भरहो इव मणुयाण वहूइ वासाइ बहूइ वाससयाइ बहूइ वाससहस्साइ वहूइ वाससयसहस्साइ अणहसमग्गो हट्ठतुट्ठो° परमाउ पालयाहि, इट्ठजणसपरिवुडे हत्थिणापुरस्स नगरस्स, अण्णेसिं च बहूण गामागर-नगर-[4]•खेड-कव्वड-दोणमुह-मडव-पट्टण-आसम-निगम-सवाह-सण्णिवेसाण आहेवच्च पोरेवच्च सामित्त भट्टित्त महत्तरगत्त आणा-ईसर-सेणावच्च कारेमाणे पालेमाणे महयाहय-नट्ट-गीय-वाइय-तती-तल-ताल-तुडिय-घण-मुइग-पडुप्पवाइयरवेण विउलाइ भोगभोगाइ भुजमाणे° विहराहि त्ति कट्टु जयजयसद्द पउजति ॥

६२ तए ण से सिवभद्दे कुमारे राया जाते—महया हिमवत-महत-मलय-मदर-महिदसारे, वण्णओ जाव[5] रज्ज पसासेमाणे विहरइ ॥

६३ तए ण से सिवे राया अण्णया कयाइ सोभणसि तिहि-करण-दिवस-मुहुत्त-नक्खत्तसि विपुल असण-पाण-खाइम-साइम उवक्खडावेति, उवक्खडावेत्ता मित्त-नाइ-नियग-[6]•सयण-सबधि°-परिजण 'रायाणो य खत्तिए य'[7] आमतेति, आमतेत्ता तओ पच्छा ण्हाए [8]•कयबलिकम्मे कयकोउय-मगल-पायच्छित्ते सुद्धप्पावेसाइ मगल्लाइ वत्थाइ पवर परिहिए अप्पमहग्घाभरणालकिय° सरीरे भोयणवेलाए[9] भोयणमडवसि सुहासणवरगए तेण मित्त-नाइ-नियग-सयण-सवधि[10]-परिजणेण राएहि य खत्तिएहि सद्धि विपुल असण-पाण-खाइम-साइम [11]•आसादेमाणे वीसादेमाणे परिभाएमाणे परिभुजेमाणे विहरइ।

---

१ भ० ९।१९०।
२ स० पा०—करयल जाव कट्टु।
३. स० पा०—जहा ओववाइए कूणियस्स जाव परमाउ।
४. स० पा०—नगर जाव विहराहि।
५. ओ० सू० १४।
६ स० पा०—नियग जाव परिजण।
७ रायाणो य खत्तिया (अ, क, म, स), रायाणो रायखत्तिए य (ता, व)।
८ स० पा०—ण्हाए जाव सरीरे।
९. × (ता, व)।
१०. जाव (अ, क, ता, व, म, स)।
११ स० पा०—एव जहा तामली जाव सक्कारेइ

जिमियभुत्तुरागए वि य ण समाण आयंते चोक्खे परमसुइब्भूए त मित्त-नाइ-नियग-सयण-सबधि-परिजण विउलेण असण-पाण-खाइम-साइमेण वत्थ-गध-मल्लालकारेण य° सक्कारेइ सम्माणेइ, सक्कारेत्ता सम्माणेत्ता त मित्त-नाइ-[1] •नियग-सयण-सबधि-° परिजण रायाणो य खत्तिए य सिवभद्द च रायाण आपुच्छइ, आपुच्छित्ता सुबहु लोही-लोहकडाह-कडच्छुय[2] •तबिय तावस ° भडगं गहाय जे इमे गगाकूलगा वाणपत्था तावसा भवति, त चेव जाव[3] तेसिं अंतिय मुडे भवित्ता दिसापोक्खियतावसत्ताए पव्वइए, पव्वइए वि य ण समाणे अय-मेयारूव अभिग्गह अभिगिण्हति—'कप्पइ मे जावज्जीवाए छट्ठ[4] •छट्ठेण अणि-क्खित्तेण दिसाचक्कवालेण तवोकम्मेण उड्ढ वाहाओ पगिज्झिय-पगिज्झिय विहरित्तए'— अयमेयारूव ° अभिग्गह[5] अभिगिण्हित्ता पढम छट्ठक्खमण उव-सपज्जित्ताणं विहरइ ।।

६४. तए ण से सिवे रायरिसी पढमछट्ठक्खमणपारणगसि आयावणभूमीओ पच्चोरुहइ, पच्चोरुहित्ता वागलवत्थनियत्थे जेणेव सए उडए तेणेव उवागच्छइ, उवा-गच्छित्ता किढिण[6]-सकाइयग गिण्हइ, गिण्हित्ता पुरत्थिम दिस पोक्खेइ, पुर-त्थिमाए दिसाए सोमे महाराया पत्थाणे पत्थिय अभिरक्खउ सिव[7] रायरिसि-अभिरक्खउ सिव रायरिसिं, जाणि य तत्थ कदाणि य मूलाणि य तयाणि य पत्ताणि य पुप्फाणि य फलाणि य बीयाणि य हरियाणि य ताणि अणुजाणउ त्ति कट्टु पुरत्थिम दिस पसरइ[8], पसरित्ता जाणि य तत्थ कदाणि य जाव हरियाणि य ताइ गेण्हइ, गेण्हित्ता किढिण-सकाइयग भरेइ, भरेत्ता दब्भे य कुसे य समिहाओ य पत्तामोड च गिण्हइ, गिण्हित्ता जेणेव सए उडए तेणेव उवा-गच्छइ, उवागच्छित्ता किढिण-सकाइयग ठवेइ, ठवेत्ता वेदिं वड्ढेइ, वड्ढेत्ता उवलेवण समज्जण करेइ, करेत्ता दब्भकलसाहत्थगए[9] जेणेव गगा महानदी तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता 'गंग महानदिं'[10] ओगाहेइ, ओगाहेत्ता जल-मज्जण करेइ, करेत्ता जलकीड करेइ, करेत्ता जलाभिसेय करेइ, करेत्ता आयते चोक्खे परमसुइभूए देवय-पिति-कयकज्जे दब्भकलसाहत्थगए[11] गगाओ महा-

---

१. स० पा—नाइ जाव परिजण ।
२. स० पा०—कडच्छुय जाव भडग ।
३. भ० ११।५६ ।
४. स० पा०—त चेव जाव अभिग्गह ।
५. अभिग्गह अभिगिण्हइ (अ, क, ता, व, म, स), द्रष्टव्यम्—भ० ३।३३ सूत्रस्य पाद-टिप्पणम् ।
६ कढिण (अ) ।
७ सिवे (ब, स) ।
८. सरइ (ता, म) ।
९ दब्भकलस° (अ), दब्भसगब्भकलसा (सग) हत्थगए (ता, वृपा) ।
१० गगामहानदी (क, व, म) ।
११ दब्भसगब्भकलसा (अ, क, ता, व, म, स) ।

नदीओ पच्चुत्तरइ, पच्चुत्तरित्ता जेणेव सए उडए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता दब्भेहि य कुसेहि य वालुयाएहि य वेदिं[1] रएति[2], रएत्ता सरएण अर्रणि महेइ, महेत्ता अग्गि पाडेइ, पाडेत्ता अग्गि सधुक्केइ, सधुक्केत्ता समिहाकट्ठाइ पक्खिवइ, पक्खिवित्ता अग्गि उज्जालेइ, उज्जालेत्ता "अग्गिस्स दाहिणे पासे, सत्तगाइ समादहे," [त जहा—

सकह वक्कल ठाण, सिज्जाभड कमडलु ।
दडदारू तहप्पाण, अहे ताइ समादहे ॥१॥][3]

महुणा य घएण य तदुलेहि य अग्गि हुणइ, हुणित्ता चरु साहेइ, साहेत्ता वलिवइस्सदेव[4] करेइ, करेत्ता अतिहिपूयं करेइ, करेत्ता तओ पच्छा अप्पणा आहारमाहारेति ॥

६५ तए ण से सिवे रायरिसी दोच्च छट्ठक्खमण उवसपज्जित्ताण विहरइ ॥

६६ तए णं से सिवे रायरिसी दोच्चे छट्ठक्खमणपारणगसि आयावणभूमीओ पच्चोरुहइ, पच्चोरुहित्ता [5]•वागलवत्थनियत्थे जेणेव सए उडए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता किढिण-सकाइयग गिण्हइ, गिण्हित्ता° दाहिणग दिसं पोक्खेइ, दाहिणाए दिसाए जमे महाराया पत्थाणे पत्थिय अभिरक्खउ सिवं रायरिसिं, सेस त चेव जाव[6] तओ पच्छा अप्पणा आहारमाहारेइ ॥

६७. तए ण से सिवे रायरिसी तच्च छट्ठक्खमणं उवसपज्जित्ताण विहरइ ॥

६८ तए ण से सिवे रायरिसि [7]•तच्चे छट्ठक्खमणपारणगसि आयावणभूमीओ पच्चोरुहइ, पच्चोरुहित्ता वागलवत्थनियत्थे जेणेव सए उडए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता किढिण-सकाइयग गिण्हइ, गिण्हित्ता पच्चत्थिम दिस पोक्खेइ°, पच्चत्थिमाए दिसाए वरुणे महाराया पत्थाणे पत्थिय अभिरक्खउ सिवं रायरिसिं, सेस त चेव जाव[8] तओ पच्छा अप्पणा आहारमाहारेइ ॥

६९ तए णं से सिवे रायरिसी चउत्थ छट्ठक्खमण उवसपज्जित्ताण विहरइ ॥

७० तए ण से सिवे रायरिसी चउत्थे छट्ठक्खमण[9]•पारणगसि आयावणभूमीओ पच्चोरुहइ, पच्चोरुहित्ता वागलवत्थनियत्थे जेणेव सए उडए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता किढिण-सकाइयग गिण्हइ, गिण्हित्ता° उत्तरदिस पोक्खेइ,

---

१. वेति (अ, क, म, स) ।
२ रयावेइ (ता) ।
३ असौ कोष्ठकवर्ती पाठो व्याख्यांश. प्रतीयते ।
४ वलिविस्सदेव (अ, क, ता), वलि विस्सदेव (व), वलिविम्सादेव (म), वलिविइस्सदेव (स) ।
५. स० पा०—एव जहा पढमपारणग नवर ।
६. भ० ११।६४ ।
७ स० पा०—सेस तं चेव नवर ।
८ भ० ११।६४ ।
९ स० पा०—एव त चेव नवर ।

उत्तराए दिसाए वेसमणे महाराया पत्थाणे पत्थियं अभिरक्खउ सिव रायरिसिं, सेस त चेव जाव[1] तओ पच्छा अप्पणा आहारमाहारेइ ॥

७१ तए ण तस्स सिवस्स रायरिसिस्स छट्ठछट्ठेण अणिक्खित्तेण दिसाचक्कवालेण[2] •तवोकम्मेण उड्ढ बाहाओ पगिज्झिय-पगिज्झिय सूराभिमुहस्स आयावणभूमीए° आयावेमाणस्स पगइभद्दयाए[3] •पगइउवसतयाए पगइपयणुकोहमाण-मायालोभयाए मिउमद्दवसपन्नयाए अल्लीणयाए° विणीययाए अण्णया कयाइ तयावरणिज्जाणं कम्माण खओवसमेण ईहापूहमग्गणगवेसण करेमाणस्स विब्भगे नाम नाणे[4] समुप्पन्ने। से ण तेण विब्भगनाणेण समुप्पन्नेण पासति अस्सि लोए सत्त दीवे सत्त समुद्दे, तेण पर न जाणइ, न पासइ ॥

७२ तए ण तस्स सिवस्स रायरिसिस्स अयमेयारूवे अज्झत्थिए[5] •चिंतिए पत्थिए मणोगए सकप्पे° समुप्पज्जित्था—अत्थि ण मम अतिसेसे नाणदसणे समुप्पन्ने, एवं खलु अस्सि लोए सत्त दीवा सत्त समुद्दा, तेण पर वोच्छिन्ना दीवा य समुद्दा य—एव सपेहेइ, सपेहेत्ता आयावणभूमीओ पच्चोरुहइ, पच्चोरुहित्ता वागलवत्थनियत्थे जेणेव सए उडए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सुवहु लोही-लोहकडाह-कडच्छुय[6] •तबिय तावस°भडग किढिण-सकाइयग च गेण्हइ, गेण्हित्ता जेणेव हत्थिणापुरे नगरे जेणेव तावसावसहे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता भडनिक्खेव करेइ, करेत्ता हत्थिणापुरे नगरे सिंघाडग-तिग[7]-•चउक्क-चच्चर-चउम्मुह-महापह°-पहेसु बहुजणस्स एवमाइक्खइ जाव[8] एव परूवेइ- अत्थि ण देवाणुप्पिया ! मम अतिसेसे नाणदसणे समुप्पन्ने, एव खलु अस्सि लोए[9] •सत्त दीवा सत्त समुद्दा, तेण पर वोच्छिन्ना° दीवा य समुद्दा य ॥

७३. तए ण तस्स सिवस्स रायरिसिस्स अतिय एयमट्ठ सोच्चा निसम्म हत्थिणापुरे नगरे सिंघाडग-तिग[10]-•चउक्क-चच्चर-चउम्मुह-महापह°-पहेसु बहुजणो अण्णमण्णस्स एवमाइक्खइ जाव[11] परूवेइ—एव खलु देवाणुप्पिया ! सिवे रायरिसी एवमाइक्खइ जाव परूवेइ—अत्थि ण देवाणुप्पिया ! मम अतिसेसे

---

१ भ० ११।६४।
२ स० पा०—दिसाचक्कवालेण जाव आयावेमाणस्स।
३ स० पा०—पगइभद्दयाए जाव विणीययाए।
४ अण्णाणे (अ, क, ता, ब, म)।
५ स० पा०—अज्झत्थिए जाव समुप्पज्जित्था।
६ कडुच्छुय (अ, स), कडेच्छुय (क, व), स० पा० –कडच्छुय जाव भडग।
७ स० पा०—तिग जाव पहेसु।
८ भ० १।४२०।
९ स० पा०—लोए जाव दीवा।
१० स० पा०—तिग जाव पहेसु।
११. भ० १।४२०।

नाणदसणे[1] •समुप्पन्ने, एव खलु अस्सि लोए सत्त दीवा सत्त समुद्दा°, तेण पर वोच्छिन्ना दीवा य समुद्दा य। से कहमेय मन्ने एव ?

७४ तेणं कालेण तेण समएण सामी समोसढे, परिसा[2] •निग्गया। धम्मो कहिओ परिसा° पडिगया॥

७५. तेण कालेण तेण समएण समणस्स भगवओ महावीरस्स जेट्ठे अतेवासी इदभूई नाम अणगारे जहा बितियसए नियंठुद्देसए जाव[3] घरसमुदाणस्स भिक्खायरियाए अडमाणे बहुजणसद्द निसामेइ, बहुजणो अण्णमण्णस्स एवमाइक्खइ जाव एव परूवेइ—एव खलु देवाणुप्पिया! सिवे रायरिसि एवमाइक्खइ जाव एव परूवेइ—अत्थि ण देवाणुप्पिया! [4]•मम अतिसेसे नाणदसणे समुप्पन्ने, एव खलु अस्सि लोए सत्त दीवा सत्त समुद्दा, तेण पर° वोच्छिन्ना दीवा य समुद्दा य। से कहमेय मन्ने एवं ?

७६. तए ण भगव गोयमे बहुजणस्स अतिय एयमट्ठ सोच्चा निसम्म जायसड्ढे [5]•जाव[6] समणं भगव महावीरं वदइ नमसइ, वदित्ता नमसित्ता एव वदासी—एव खलु भंते! अह तुब्भेहिं अब्भणुण्णाए समाणे हत्थिणापुरे नयरे उच्च-नीय-मज्झिमाणि कुलाणि घरसमुदाणस्स भिक्खायरियाए अडमाणे बहुजणसद्द निसामेमि—एव खलु देवाणुप्पिया! सिवे रायरिसी एवमाइक्खइ जाव परूवेइ—अत्थि ण देवाणुप्पिया! मम अतिसेसे नाणदसणे समुप्पन्ने, एव खलु अस्सि लोए सत्त दीवा सत्त समुद्दा°, तेण पर वोच्छिन्ना दीवा य समुद्दा य॥

७७. से कहमेय भते! एवं ?

गोयमादि! समणे भगव महावीरे भगव गोयम एव वयासी—जण्ण गोयमा! 'एव खलु एयस्स सिवस्स रायरिसिस्स छट्ठछट्ठेण अणिक्खितेण दिसाचक्कवालेण तवोकम्मेण उड्ढ बाहाओ पगिज्झिय-पगिज्झिय सूराभिमुहस्स आयावणभूमीए आयावेमाणस्स पगइभद्दयाए पगइउवसतयाए पगइपयणुकोहमाणमायालोभयाए मिउमद्दवसपन्नयाए अल्लीणयाए विणीययाए अण्णया कयाइ तयावरणिज्जाण कम्माण खओवसमेण ईहापूहमग्गणगवेसण करेमाणस्स विब्भगे नाम नाणे

---

१ स० पा०—नाणदसणे जाव तेण।
२. सं० पा०—परिसा जाव पडिगया।
३. भ० २।१०६-१०६।
४. स० पा०—तं चेव जाव वोच्छिन्ना।
५. स० पा०—जहा नियठुद्देसए जाव तेण।
६ भ० २।११०।

समुप्पन्ने ।'[1] 'त चेव सव्व भाणियव्व जाव[2] भडनिक्खेव करेइ, करेत्ता हत्थिणा-पुरे नगरे सिंघाडग-•[3]तिग-चउक्क-चच्चर-चउम्मुह-महापह-पहेसु बहुजणस्स एवमाइक्खइ जाव एव परूवेइ—अत्थि ण देवाणुप्पिया ! मम अतिसेसे नाणदसणे समुप्पन्ने, एव खलु अस्सि लोए सत्त दीवा सत्त समुद्दा, तेण पर° वोच्छिन्ना दीवा य समुद्दा य ।

तए ण तस्स सिवस्स रायरिसिस्स अतिए एयमट्ठ सोच्चा निसम्म [4]•हत्थिणापुरे नगरे सिंघाडग-तिग-चउक्क-चच्चर-चउम्मुह-महापह-पहेसु बहुजणो अण्णमण्णस्स एवमाइक्खइ जाव परूवेइ—एव खलु देवाणुप्पिया ! सिवे रायरिसी एवमाइक्खइ जाव परूवेइ—अत्थि ण देवाणुप्पिया ! मम अतिसेसे नाणदसणे समुप्पन्ने, एव खलु अस्सि लोए सत्त दीवा सत्त समुद्दा°, तेण पर वोच्छिन्ना दीवा य समुद्दा य, तण्ण मिच्छा । अह पुण गोयमा ! एवमाइक्खामि जाव परूवेमि—एव खलु जबुद्दीवादीया दीवा, लवणादीया समुद्दा सठाणओ एगविहिविहाणा, वित्थारओ अणेगविहिविहाणा एव जहा जीवाभिगमे जाव[5] सयभूरमणपज्जवसाणा अस्सि तिरियलोए असखेज्जा दीवसमुद्दा पण्णत्ता समणाउसो !

७८ 'अत्थि ण भते ! जबुद्दीवे दीवे दव्वाइ—सवण्णाइ पि, अवण्णाइ पि सगधाइ पि अगधाइ पि, सरसाइ पि अरसाइ पि, सफासाइ पि अफासाइ पि, अण्णमण्ण-बद्धाइ अण्णमण्णपुट्ठाइ[6] •अण्णमण्णबद्धपुट्ठाइ अण्णमण्ण° घडत्ताए चिट्ठति ? हता अत्थि'[7] ।।

७९. 'अत्थि ण भते ! लवणसमुद्दे दव्वाइ—सवण्णाइ पि अवण्णाइ पि, सगधाइं पि अगधाइ पि, सरसाइ पि अरसाइ पि, सफासाइ पि अफासाइ पि अण्णमण्ण-बद्धाइ अण्णमण्णपुट्ठाइ[8] •अण्णमण्णबद्धपुट्ठाइ अण्णमण्ण° घडत्ताए चिट्ठति ? हता अत्थि'[9] ।।

---

१ अस्य पाठस्य स्थाने सर्वेषु आदर्शेषु निम्न-निर्दिष्ट. पाठोस्ति—'से बहुजणे अण्णमण्णस्स एवमाइक्खइ', किन्तु पौर्वापर्यसमालोचनया नास्य सङ्गतिर्जायते । 'से वहुजणे' इत्यादिपाठ 'भडनिक्खेव करेइ' (७२) अत: उत्तरवर्ती (७३) वर्तते । अस्य पूर्वविन्यासो नैव युक्त स्यात् । सभाव्यते सक्षेपीकरणे क्वचिद् विपर्यासो जात । अस्माभिरस्य पाठस्य सङ्गतिरुत्तरवर्तिना ८३ सूत्रेण सपादितास्ति ।

२ भ० ११।६३-७२ ।

३ स० पा०—त चेव जाव वोच्छिन्ना ।

४ स० पा०—त चेव जाव तेण ।

५ भ० ६।१५६।

६ स० पा०—अण्णमण्णपुट्ठाइ जाव घडत्ताए ।

७ × (अ, क, व, म) ।

८. स० पा०—अण्णमण्णपुट्ठाइ जाव घडत्ताए ।

९. × (ता) ।

८०. अत्थि णं भंते ! धायइसंडे दीवे दव्वाइं सवण्णाइं पि [1]•अवण्णाइं पि, सगंधाइं पि अगंधाइं पि, सरसाइं पि अरसाइं पि, सफासाइं पि अफासाइं पि अण्णमण्ण-बद्धाइं अण्णमण्णपुट्ठाइं अण्णमण्णबद्धपुट्ठाइं अण्णमण्णघडत्ताए चिट्ठंति ?
हंता अत्थि° । एवं जाव—

८१. [2]•अत्थि णं भंते ! सयंभूरमणसमुद्दे दव्वाइं—सवण्णाइं पि अवण्णाइं पि, सगंधाइं पि, अगंधाइं पि, सरसाइं पि अरसाइं पि, सफासाइं पि अफासाइं पि अण्णमण्णबद्धाइं अण्णमण्णपुट्ठाइं अण्णमण्णबद्धपुट्ठाइं अण्णमण्णघडत्ताए चिट्ठंति?
हंता अत्थि° ॥

८२. तए णं सा महतिमहालिया महच्चपरिसा समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतिए[3] एयमट्ठं सोच्चा निसम्म हट्ठतुट्ठा समणं भगवं महावीरं वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता जामेव दिसं पाउब्भूया तामेव दिसं पडिगया ॥

८३. तए णं हत्थिणापुरे नगरे सिंघाडग[4]-•तिग-चउक्क-चच्चर-चउम्मुह-महापह°-पहेसु बहुजणो अण्णमण्णस्स एवमाइक्खइ जाव[5] परूवेइ जण्णं देवाणुप्पिया ! सिवे रायरिसी एवमाइक्खइ जाव परूवेइ—अत्थि णं देवाणुप्पिया ! ममं अतिसेसे नाण[6]•दंसणे समुप्पन्ने, एवं खलु अस्सिं लोए सत्त दीवा सत्त समुद्दा, तेण परं वोच्छिन्ना दीवा य° समुद्दा य। तं नो इणट्ठे समट्ठे, समणे भगवं महावीरे एवमाइक्खइ जाव परूवेइ—एवं खलु एयस्स सिवस्स रायरिसिस्स छट्ठंछट्ठेणं तं चेव जाव[7] भंडनिक्खेवं करेइ, करेत्ता हत्थिणापुरे नगरे सिंघाडग[8]-•तिग-चउक्क-चच्चर-चउम्मुह-महापह-पहेसु बहुजणस्स एवमाइक्खइ जाव एवं परूवेइ—अत्थि णं देवाणुप्पिया ! ममं अतिसेसे नाणदंसणे समुप्पन्ने, एवं खलु अस्सिं लोए सत्त दीवा सत्त समुद्दा, तेण परं वोच्छिन्ना दीवा य° समुद्दा य। तए णं तस्स सिवस्स रायरिसिस्स अंतियं एयमट्ठं सोच्चा निसम्म जाव[9] तेण परं वोच्छिन्ना दीवा य समुद्दा य तण्णं मिच्छा, समणे भगवं महावीरे एवमाइक्खइ—एवं खलु जंबुद्दीवादीया दीवा लवणादीया समुद्दा तं चेव जाव[10] असंखेज्जा दीवसमुद्दा पण्णत्ता समणाउसो !

८४. तए णं से सिवे रायरिसी बहुजणस्स अंतियं एयमट्ठं सोच्चा निसम्म संकिए कंखिए वितिगिच्छिए भेदसमावन्ने कलुससमावन्ने जाए यावि होत्था । तए णं

१. सं० पा०—एवं चेव ।
२. सं० पा०—सयंभूरमणसमुद्दे जाव हंता ।
३. अंतियं (अ, क, म) ।
४. सं० पा०—सिंघाडग जाव पहेसु ।
५. भ० ११।८२।
६. सं० पा०—नाण जाव समुद्दा ।
७. भ० ११।७३।
८. सं० पा०—सिंघाडग जाव समुद्दा ।
९. भ० ११।७३।
१०. भ० ११।७७।

तस्स सिवस्स रायरिसिस्स सकियस्स कखियस्स[1] •वितिगिच्छियस्स भेदसमावन्नस्स° कलुससमावन्नस्स से विभगे नाणे[2] खिप्पामेव परिवडिए ।।

८५. तए ण तस्स सिवस्स रायरिसिस्स अयमेयारूवे अज्झत्थिए[3] •चिंतिए पत्थिए मणोगए सकप्पे° समुप्पज्जित्था—एव खलु समणे भगव महावीरे तित्थगरे आदिगरे जाव[4] सव्वण्णू सव्वदरिसी आगासगएणं चक्केणं जाव[5] सहसबवणे उज्जाणे अहापडिरूव[6] •ओग्गह ओगिण्हित्ता सजमेण तवसा अप्पाण भावेमाणे° विहरइ, त महप्फलं खलु तहारूवाण अरहताण भगवताण नामगोयस्स [7]•वि सवणयाए, किमग पुण अभिगमण-वदण-नमसण-पडिपुच्छण-पज्जुवासणयाए ? एगस्स वि आरियस्स धम्मियस्स सुवयणस्स सवणयाए, किमग पुण विउलस्स अट्ठस्स° गहणयाए ? त गच्छामि ण समण भगव महावीर वदामि जाव[8] पज्जुवासामि, एय णे इहभवे य परभवे य[9] •हियाए सुहाए खमाए निस्सेयसाए आणुगामियत्ताए° भविस्सइ त्ति कट्टु एव सपेहेइ, सपेहेत्ता जेणेव तावसावसहे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता तावसावसह अणुप्पविसइ अणुप्पविसित्ता सुबहु लोही-लोहकडाह[10]-•कडच्छुय तबिय तावसभडग° किढिण-सकाइयग च गेण्हइ गेण्हित्ता तावसावसहाओ पडिनिक्खमइ, पडिनिक्खमित्ता पडिवडियविब्भगे हत्थिणापुरं नगर मज्झमज्झेण निग्गच्छइ, निग्गच्छित्ता जेणेव सहसबवणे उज्जाणे, जेणेव समणे भगव महावीरे, तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता समण भगव महावीर तिक्खुत्तो[11] वदइ नमसइ, वदित्ता नमसित्ता नच्चासन्ने नातिदूरे[12]•सुस्सूसमाणे नमसमाणे अभिमुहे विणएण °पजलिकडे[13] पज्जुवासइ ।।

८६ तए ण समणे भगवं महावीरे सिवस्स रायरिसिस्स तीसे य महतिसहालियाए परिसाए[14] धम्म परिकहेइ जाव[15] आणाए आराहए भवइ ।।

८७ तए ण से सिवे रायरिसी समणस्स भगवओ महावीरस्स अतिय धम्म सोच्चा निसम्म जहा खदओ जाव[16] उत्तरपुरत्थिम दिसीभाग अवक्कमइ, अवक्कमित्ता सुवहु लोही-लोहकडाह[17]-•कडच्छुय तबिय तावसभडग° किढिण-सकाइयग च

---

१ स० पा०—कखियस्स जाव कलुस° ।
२ अण्णाणे (क, स) ।
३. स० पा०—अज्झत्थिए जाव समुप्पज्जित्था ।
४. भ० १।७।
५. ओ० सू० १६।
६. स० पा०—अहापडिरूव जाव विहरइ ।
७. स० पा०—जहा ओववाइए जाव गहणयाए।
८. भ० २।३०।
९. स० पा०—य जाव भविस्सइ ।
१० स० पा०—लोहकडाह जाव किढिण ।
११. तिक्खुत्तो आयाहिण-पयाहिण (स) ।
१२ स० पा०—नातिदूरे जाव पजलिकडे ।
१३ पजलियडे (ता) ।
१४. पू०—ओ० सू० ७१।
१५. ओ० सू० ७१-७७।
१६. भ० २।५२।
१७. स० पा०—लोहकडाह जाव किढिण ।

एगंते एडेइ, एडेत्ता सयमेव पंचमुट्ठियं लोयं करेइ, करेत्ता समणं भगवं महावीरं तिक्खुत्तो आयाहिण-पयाहिणं करेइ, करेत्ता वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता एवं जहेव उसभदत्तो तहेव पव्वइओ, तहेव एक्कारस अंगाइं अहिज्जइ, तहेव सव्वं जाव[1] सव्वदुक्खप्पहीणे ॥

८८. भंतेति ! भगवं गोयमे समणं भगवं महावीरं वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी—जीवा णं भंते ! सिज्झमाणा कयरम्मि संघयणे सिज्झंति ?
गोयमा ! वइरोसभणारायसंघयणे सिज्झंति, एवं जहेव ओववाइए तहेव ।
'संघयणं संठाणं, उच्चत्तं आउयं च परिवसणा ।'[2]
एवं सिद्धिगंडिया निरवसेसा भाणियव्वा जाव[3]—
अव्वाबाहं सोक्खं, अणुहोंति सासयं सिद्धा ॥

८९. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति[4] ॥

दसमो उद्देसो

खेत्तलोय-पदं

९०. रायगिहे जाव[5] एवं वयासी—कतिविहे णं भंते ! लोए पण्णत्ते ?
गोयमा ! चउव्विहे लोए पण्णत्ते, तं जहा—दव्वलोए, खेत्तलोए, काललोए, भावलोए ॥

९१. खेत्तलोए णं भंते ! कतिविहे पण्णत्ते ?
गोयमा ! तिविहे पण्णत्ते, तं जहा—अहेलोयखेत्तलोए[6], तिरियलोयखेत्तलोए, उड्ढलोयखेत्तलोए ॥

९२. अहेलोयखेत्तलोए णं भंते ! कतिविहे पण्णत्ते ?
गोयमा ! सत्तविहे पण्णत्ते, तं जहा—रयणप्पभापुढविअहेलोयखेत्तलोए[7] जाव[8] अहेसत्तमापुढविअहेलोयखेत्तलोए ॥

---

१. भ० ९।१५०,१५१।
२. एतत् संग्रहगाथार्धं औपपातिके नोपलभ्यते । इदं च कुत्रचिद् अन्यस्थानाद् उद्धृतमस्ति ।
३. ओ० सू० १९५।
४. भ० १।५१।
५. भ० १।४-१०।
६. अहो० (अ, क, म, स), अधे० (ता) ।
७. रयणप्पभ० (ता) ।
८. भ० २।७५।

९३. तिरियलोयखेत्तलोए णं भंते ! कतिविहे पण्णत्ते ?
गोयमा ! असंखेज्जविहे पण्णत्ते, तं जहा—जंबुद्दीवे दीवे तिरियलोयखेत्तलोए जाव सयंभूरमणसमुद्दे तिरियलोयखेत्तलोए ।।

९४ उड्ढलोयखेत्तलोए णं भंते ! कतिविहे पण्णत्ते ?
गोयमा ! पन्नरसविहे पण्णत्ते, तं जहा—सोहम्मकप्पउड्ढलोयखेत्तलोए[1] •ईसाण-सणंकुमार-माहिंद-बंभलोय-लंतग - महासुक्क-सहस्सार-आणय-पाणय-आरण°-अच्चुयकप्पउड्ढलोयखेत्तलोए, गेवेज्जविमाणउड्ढलोयखेत्तलोए, अणुत्तरविमाणउड्ढलोयखेत्तलोए, ईसिपब्भारपुढविउड्ढलोयखेत्तलोए ।।

९५. अहेलोयखेत्तलोए णं भंते ! किंसठिए पण्णत्ते ?
गोयमा ! तप्पागारसंठिए पण्णत्ते ।।

९६ तिरियलोयखेत्तलोए णं भंते ! किंसंठिए पण्णत्ते ?
गोयमा ! झल्लरिसंठिए पण्णत्ते ।।

९७ उड्ढलोयखेत्तलोए णं भंते ! किंसंठिए पण्णत्ते ?
गोयमा ! उड्ढमुइंगाकारसंठिए पण्णत्ते ।।

लोयसंठाण-पद

९८ लोए णं भंते ! किंसंठिए पण्णत्ते ?
गोयमा ! सुपइट्ठगसंठिए पण्णत्ते[2], तं जहा—हेट्ठा विच्छिण्णे, मज्झे संखित्ते, [3]•उप्पिं विसाले, अहे पलियंकसंठिए, मज्झे वरवइरविग्गहिए, उप्पिं उद्धमुइंगाकारसंठिए ।
तंसि च णं सासयंसि लोगंसि हेट्ठा विच्छिण्णंसि जाव उप्पिं उद्धमुइंगाकारसंठियंसि उप्पण्णनाण-दंसणधरे अरहा जिणे केवली जीवे वि जाणइ-पासइ, अजीवे वि जाणइ-पासइ, तओ पच्छा सिज्झइ बुज्झइ मुच्चइ परिनिव्वाइ सव्वदुक्खाणं° अंतं करेइ ।।

अलोयसंठाण-पद

९९. अलोए णं भंते ! किंसंठिए पण्णत्ते ?
गोयमा ! झुसिरगोलसंठिए[4] पण्णत्ते ।।

---

१. सं° पा०—सोहम्मकप्पउड्ढलोयखेत्तलोए जाव अच्चुय० ।
२. लोए पण्णत्ते (अ, क, व, म, स) ।
३. सं० पा०—जहा सत्तमसए पढमुद्देसए जाव अंतं ।
४ सुसिरगोलकसंठिए (व) ।

लोयालोए जीवाजीव-मग्गणा-पदं

१००. अहेलोयखेत्तलोए णं भंते ! किं १. जीवा २. जीवदेसा ३. जीवपदेसा ४ अजीवा ५. अजीवदेसा ६. अजीवपदेसा ?
[1]•गोयमा ! जीवा वि, जीवदेसा वि, जीवपदेसा वि, अजीवा वि, अजीवदेसा वि, अजोवपदेसा वि ।
जे जीवा ते नियमा एगिंदिया बेइंदिया तेइंदिया चउरिंदिया पंचिंदिया, अणिंदिया ।
जे जीवदेसा ते नियमा एगिंदियदेसा जाव अणिंदियदेसा ।
जे जीवपदेसा ते नियमा एगिंदियपदेसा बेइंदियपदेसा जाव अणिंदियपदेसा ।
जे अजीवा ते दुविहा पण्णत्ता, तं जहा—रूविअजीवा य, अरूविअजीवा य ।
जे रूविअजीवा ते चउव्विहा पण्णत्ता, तं जहा—खंधा, खंधदेसा, खंधपदेसा, परमाणुपोग्गला ।
जे अरूविअजीवा ते सत्तविहा पण्णत्ता, तं जहा—१ नोधम्मत्थिकाए धम्मत्थिकायस्स देसे २ धम्मत्थिकायस्स पदेसा ३ नोअधम्मत्थिकाए अधम्मत्थिकायस्स देसे ४. अधम्मत्थिकायस्स पदेसा ५ नोआगासत्थिकाए आगासत्थिकायस्स देसे ६ आगासत्थिकायस्स पदेसा° ७ अद्धासमए ॥

१०१. तिरियलोयखेत्तलोए णं भंते ! किं जीवा ? जीवदेसा ? जीवपदेसा ?
एवं चेव । एवं उड्ढलोयखेत्तलोए वि, नवरं—अरूवी छव्विहा, अद्धासमयो नत्थि ॥

१०२ लोए णं भंते ! किं जीवा ? जीवदेसा ? जीवपदेसा ?
जहा बितियसए अत्थिउद्देसए लोयागासे[2], नवरं—अरूवि अजीवा सत्तविहा[3] •पण्णत्ता, तं जहा—धम्मत्थिकाए नोधम्मत्थिकायस्स देसे, धम्मत्थिकायस्स पदेसा, अधम्मत्थिकाए नोअधम्मत्थिकायस्स देसे°, अधम्मत्थिकायस्स पदेसा, नोआगासत्थिकाए आगासत्थिकायस्स देसे, आगासत्थिकायस्स पदेसा, अद्धासमए, सेसं तं चेव ॥

१०३ अलोए णं भंते ! किं जीवा ? जीवदेसा ? जीवपदेसा ?
एवं जहा अत्थिकायउद्देसए अलोयागासे, तहेव निरवसेसं जाव[4] सव्वागासे अणंतभागूणे ॥

---

१. सं० पा०—एवं जहा इंदा दिसा तहेव निरवसेसं भाणियव्वं जाव अद्धासमए ।
२. भ० २।१३६, १०।५।
३. सं० पा०—सत्तविहा जाव अधम्मत्थि• ।
४. भ० २।१४० ।

१०४. अहेलोगखेत्तलोगस्स ण भते ! एगम्मि आगासपदेसे किं १ जीवा २ जीवदेसा ३. जीवपदेसा ४. अजीवा ५ अजीवदेसा ६ अजीवपदेसा ?
गोयमा ! नो जीवा, जीवदेसा वि, जीवपदेसा वि, अजीवा वि, अजीवदेसा वि, अजीवपदेसा वि ।
जे जीवदेसा ते नियम १ एगिंदियदेसा २ अहवा एगिंदियदेसा य बेइंदियस्स देसे ३ अहवा एगिंदियदेसा य बेइंदियाण य देसा । एव मज्झिल्लविरहिओ[1] जाव[2] अहवा एगिंदियदेसा य अणिंदियाण य देसा । जे जीवपदेसा ते नियम १. एगिंदियपदेसा २ अहवा एगिंदियपदेसा य बेइंदियस्स पदेसा ३ अहवा एगिंदियपदेसा य बेइंदियाण य पदेसा, एव आइल्लविरहिओ[3] जाव पचिंदिएसु, अणिंदिएसु तियभगो ।
जे अजीवा ते दुविहा पण्णत्ता, त जहा—रूवी अजीवा य, अरूवी अजीवा य । रूवी तहेव । जे अरूवी अजीवा ते पचविहा पण्णत्ता, त जहा—नोधम्मत्थिकाए धम्मत्थिकायस्स देसे, धम्मत्थिकायस्स पदेसे, [4]•नोअधम्मत्थिकाए अधम्मत्थिकायस्स देसे, अधम्मत्थिकायस्स पदेसे°, अद्धासमए ।।

१०५. तिरियलोगखेत्तलोगस्स ण भते ! एगम्मि आगासपदेसे किं जीवा ?
एव जहा[5] अहेलोगखेत्तलोगस्स तहेव, एव उड्ढलोगखेत्तलोगस्स वि, नवर—अद्धासमयो नत्थि । अरूवी चउव्विहा ।।

१०६ [6]•लोगस्स ण भते ! एगम्मि आगासपदेसे कि जीवा° ?
जहा अहेलोगखेत्तलोगस्स एगम्मि आगासपदेसे ।।

१०७ अलोगस्स ण भते ! एगम्मि आगासपदेसे—पुच्छा ।
गोयमा ! नो जीवा, नो जीवदेसा, [7]•नो जीवप्पदेसा, नो अजीवा नो अजीवदेसा, नो अजीवप्पदेसा, एगे अजीवदव्वदेसे अगरुयलहुए° अणतेहिं अगरुयलहुयगुणेहिं सजुते सव्वागासस्स अणतभागूणे ।।

१०८ दव्वओ ण अहेलोगखेत्तलोए 'अणता जीवदव्वा, अणता अजीवदव्वा'[8], अणता

---

१ 'अहवा एगिंदियदेसा य बेइंदियस्स य देसा' इत्येव रूपो यो मध्यमभङ्ग तद्विरहितोसौ त्रिकभङ्ग । मध्यमभङ्गकस्य असम्भवात् तथाहि द्वीन्द्रियस्स एकत्राकाशप्रदेशे बहवो देशा न सन्ति, देशस्यैवभावात् (वृ) ।

२ जाव अणिंदिएसु जाव (अ, क, ता, ब, म) ।

३ 'अहवा एगिंदियपदेसा य बेइंदियस्स य पदेसे' इत्येवरूपाद्यभङ्गकविरहित. त्रिकभङ्ग, तथाहि नास्त्येव एकत्राकाशप्रदेशे केवलसमुद्घात विना एकस्य जीवस्य एकप्रदेश सम्भवोऽसङ्ख्यातानामेव भावात् (वृ) ।

४ स० पा०—एव अधम्मत्थिकायस्स वि ।

५ भ० ११।१०४।

६ स० पा०—लोगस्स ।

७ स० पा०—त चेव जाव अणतेहिं ।

८ अणताइ जीवदव्वाइ अणताइ अजीवदव्वाइ (क, ब, म) ।

जीवाजीवदव्वा। एव तिरियलोयखेत्तलोए वि, 'एवं उड्ढलोयखेत्तलोए वि (एव लोए वि ?)'[1]। दव्वओ ण अलोए नेवत्थि जीवदव्वा, नेवत्थि अजीव-दव्वा, नेवत्थि जीवाजीवदव्वा, एगे अजीवदव्वदेसे[2] •अगरुयलहुए अणतेहिं अगरुयलहुयगुणेहिं सजुत्ते° सव्वागासस्स अणतभागूणे।

कालओ ण अहेलोयखेत्तलोए न कयाइ नासि[3], •न कयाइ न भवइ, न कयाइ न भविस्सइ—भविसु य, भवइ य, भविस्सइ य—धुवे नियए सासए अक्खए अव्वए अवट्ठिए° निच्चे, एव[4] •तिरियलोयखेत्तलोए, एव उड्ढलोयखेत्तलोए, एव लोए एव° अलोए।

भावओ ण अहेलोयखेत्तलोए अणता वण्णपज्जवा, [5]•अणता गंधपज्जवा, अणता रसपज्जवा, अणता फासपज्जवा, अणता सठाणपज्जवा, अणता गरुयलहुयप-ज्जवा,° अणता अगरुयलहुयपज्जवा, एव[6] •तिरियलोयखेत्तलोए, एव उड्ढ-लोयखेत्तलोए, एव° लोए। भावओ ण अलोए नेवत्थि वण्णपज्जवा,[7] •नेवत्थि गधपज्जवा, नेवत्थि रसपज्जवा, नेवत्थि फासपज्जवा, नेवत्थि सठाणपज्जवा°, नेवत्थि गरुयलहुयपज्जवा[8], एगे अजीवदव्वदेसे[9] •अगरुयलहुए अणतेहिं अगरुय-लहुयगुणेहिं सजुत्ते सव्वागासस्स° अणतभागूणे॥

लोयस्स परिमाण-पद

१०६ लोए ण भते! केमहालए पण्णत्ते ?

गोयमा! अयण्ण जबुद्दीवे दीवे सव्वदीव[10]-•समुद्दाण सव्वब्भतराए जाव[11] एग जोयणसयसहस्स आयाम-विक्खभेण, तिण्णि जोयणसयसहस्साइ सोलससहस्साइ

---

१. पूर्वक्रमानुसारेणात्रलोकसूत्रमपेक्षितमस्ति, किन्तु कस्मिन्नपि आदर्शे नैव लभ्यते। कारणमत्र न ज्ञायते। अपेक्षितसूत्रस्य पाठस्य क्रम एव स्यात्—'एव उड्ढलोयखेत्तलोए वि, एव लोए वि'।

२. स० पा० — अजीवदव्वदेसे जाव सव्वागासस्स

३ स० पा०—नासि जाव निच्चे।

४. स० पा० —एव जाव अलोए।

५ स० पा०—जहा खदए जाव अणता।

६. स० पा०—एव जाव लोए।

७. स० पा०—वण्णपज्जवा जाव नेवत्थि।

८. अगरुयलहुय० (अ, क, व, म, स, वृ), अलोके अगुरुलघुपर्यवाणा भावात् अत्र 'नेवत्थि गरुयलहुयपज्जवा' एतत्पर्यन्त एव पाठो युज्यते 'ता' प्रतौ एवमेवास्ति। वृत्तिकृता 'जाव नेवत्थि अगरुयलहुयपज्जवा' इति पाठो लब्धस्तेन अर्थसङ्गतिकरणाय एव व्याख्या कृता—अगुरुलघुपर्यवोपेतद्रव्याणा पुद्गलाना तत्राभावात् (वृ)। यदि वृत्तिकृता शुद्ध. पाठो लब्धोभविष्यत् तदा अस्या व्याख्याया नावश्यकताभविष्यत्।

९ स० पा०—अजीवदव्वदेसे जाव अणत-भागूणे।

१०. स० पा०—सव्वदीव जाव परिक्खेवेण।

११. ठा० १।२४८।

दोण्णि य सत्तावीसे जोयणसए तिण्णि य कोसे अट्ठावीस च धणुसय तेरस अगुलाइ अद्धगुलग च किंचिविसेसाहिए° परिक्खेवेण ।

तेण कालेण तेण समएण छ देवा महिड्ढीया जाव[1] महासोक्खा[2] जबुद्दीवे दीवे मदरे पव्वए मदरचलिय सव्वओ समता सपरिक्खित्ताण चिट्ठेज्जा । अहे ण चत्तारि दिसाकुमारीओ महत्तरियाओ चत्तारि बलिपिडे गहाय जबुद्दीवस्स दीवस्स चउसु वि दिसासु बहियाभिमुहीओ ठिच्चा ते चत्तारि बलिपिडे जमगसमग वहियाभिमुहे[3] पक्खिवेज्जा । पभू ण गोयमा ! तओ एगमेगे देवे ते चत्तारि बलिपिडे धरणितलमसपत्ते खिप्पामेव पडिसाहरित्तए। ते ण गोयमा ! देवा ताए उक्किट्ठाए[4] •तुरियाए चवलाए चडाए जइणाए छेयाए सीहाए सिग्घाए उद्धयाए दिव्वाए° देवगईए एगे देवे पुरत्थाभिमुहे पयाते 'एगे देवे दाहिणाभिमुहे पयाते, एगे देवे पच्चत्थाभिमुहे पयाते, एगे देवे उत्तराभिमुहे पयाते, एगे देवे उड्ढाभिमुहे पयाते'[5] एगे देवे अहोभिमुहे पयाते ।

तेण कालेण तेण समएण वाससहस्साउए दारए पयाते । तए ण तस्स दारगस्स अम्मापियरो पहीणा भवति, नो चेव ण ते देवा लोगत सपाउणति । तए ण तस्स दारगस्स आउए पहीणे भवति, नो चेव ण[6] •ते देवा लोगत° सपाउणति । तए ण तस्स दारगस्स अट्ठिमिजा पहीणा भवति, नो चेव ण ते देवा लोगतं सपाउर्णाति । तए ण तस्स दारगस्स आसत्तमे वि कुलवसे पहीणे भवति, नो चेव ण ते देवा लोगत सपाउणति । तए ण तस्स दारगस्स नामगोए वि पहीणे भवति, नो चेव ण ते देवा लोगत सपाउणति ।

तेसि ण भते ! देवाण किं गए बहुए ? अगए बहुए ? गोयमा ! गए बहुए, नो अगए बहुए, गयाओ से अगए असक्खेज्जइभागे, अगयाओ से गए असखेज्जगुणे । लोए ण गोयमा ! एमहालए पण्णत्ते ॥

अलोयस्स परिमाण-पदं

११० अलोए ण भते ! केमहालए पण्णत्ते ?

गोयमा ! अयण्ण समयखेत्ते पणयालीस जोयणसयसहस्साइ आयाम-विक्खंभेण, •[7]एगा जोयणकोडी बायालीस च सयसहस्साइ तीस च सहस्साइ दोण्णि य अउणापन्नजोयणसए किंचि विसेसाहिए° परिक्खेवेण ।

---

१ भ० ३।४ ।

२. महेसक्खा (अ, ता, व, स), महासुक्खा (क) ।

३. बहिभिमुहे (क, ता) ।

४. स० पा०—उक्किट्ठाए जाव देवगईए ।

५ एव दाहिणाभिमुहे एव पच्चत्थाभिमुहे एव उत्तराभिमुहे एव उड्ढाभिमुहे (अ, क, ता, व, म, स) ।

६. स० पा०—ण जाव सपाउणति ।

७ स० पा०—जहा खदए जाव परिक्खेवेणं ।

तेण कालेण तेण समएण दस देवा महिड्ढिया •'जाव[2] महासोक्खा जवुद्दीवे दीवे मदरे पव्वए मदरचूलिय सव्वओ समता° सपरिक्खित्ताणं सचिट्ठेज्जा, अहे ण अट्ठ दिसाकुमारीओ महत्तरियाओ अट्ठ बलिपिडे गहाय माणुसुत्तरस्स पव्वयस्स चउसु वि दिसासु चउसु वि विदिसासु वहियाभिमुहीओ ठिच्चा ते अट्ठ बलिपिंडे जमगसमग वहियाभिमुहे[3] पक्खिवेज्जा। पभू ण गोयमा ! तओ एगमेगे देवे ते अट्ठ बलिपिंडे धरणितलमपत्ते खिप्पामेव पडिसाहरित्तए। ते ण गोयमा ! देवा ताए उक्किट्ठाए[4] •तुरियाए चवलाए चडाए जइणाए छेयाए सीहाए सिग्घाए उद्धयाए दिव्वाए° देवगईए लोगते ठिच्चा असब्भावपट्ठवणाए एगे देवे पुरत्थाभिमुहे पयाते, एगे देवे दाहिणपुरत्थाभिमुहे पयाते, [5]•एगे देवे दाहिणाभिमुहे पयाते, एगे देवे दाहिणपच्चत्थाभिमुहे पयाते, एगे देवे पच्चत्थाभिमुहे पयाते, एगे देवे पच्चत्थउत्तराभिमुहे पयाते, एगे देवे उत्तराभिमुहे पयाते एगे देवे° उत्तरपुरत्थाभिमुहे पयाते, एगे देवे उड्ढाभिमुहे पयाते, एगे देवे अहोभिमुहे पयाते।

तेण कालेण तेण समएण वाससयसहस्साउए दारए पयाते। तए ण तस्स दारगस्स अम्मापियरो पहीणा भवति, नो चेव ण ते देवा अलोयत सपाउणति। [6]•तए ण तस्स दारगस्स आउए पहीणे भवति, नो चेव ण ते देवा अलोयत सपाउणंति। तए ण तस्स दारगस्स अट्ठिमिजा पहीणा भवति, नो चेव ण ते देवा अलोयत सपाउणति। तए ण तस्स दारगस्स आसत्तमे वि कुलवसे पहीणे भवति, नो चेव ण ते देवा अलोयत सपाउणति। तए ण तस्स दारगस्स नामगोए वि पहीणे भवति, नो चेव ण ते देवा अलोयंत सपाउणति।°

तेसि ण भते ! देवाण किं गए वहुए ? अगए वहुए ? गोयमा ! नो गए वहुए, अगए वहुए, गयाओ से अगए अणंतगुणे, अगयाओ से गए अणतभागे। अलोए ण गोयमा ! एमहालए पण्णत्ते ॥

लोगागासे जीवपदेस-पदं

१११. लोगस्स ण भते ! एगम्मि आगासपदेसे जे एगिंदियपदेसा जाव पंचिंदियपदेसा अणिंदियपदेसा अण्णमण्णबद्धा अण्णमण्णपुट्ठा[7] •अण्णमण्णबद्धपुट्ठा° अण्णमण्ण-

---

१. स० पा०—तहेव जाव सपरिक्खित्ताण।

२ भ० ३।४।

३. वाहियाभिमुहीओ (अ, क, ता, व, म, स), अस्य पूर्ववर्तिलोकसूत्रे 'वहियामुहे' इति पाठोस्ति। अत्र सदृशे एव प्रकरणे केनचिद् लिपिदोषादिकारणेन परिवर्तन दृश्यते। अस्माभि पूर्वसूत्रानुसारी पाठ स्वीकृत।

४ स० पा०—उक्किट्ठाए जाव देवगईए।

५ स० पा०—एव जाव उत्तर°।

६ स० पा०—त चेव जाव तेसि।

७. स० पा०—अण्णमण्णपुट्ठा जाव अण्णमण्ण°

घडत्ताए चिट्ठति ? अत्थि ण भते ! अण्णमण्णस्स किंचि आबाह वा वाबाह वा उप्पायति ? छविच्छेद वा करेति ?
नो इणट्ठे समट्ठे ।।

११२ से केणट्ठेण भते ! एव वुच्चइ—लोगस्स ण एगम्मि आगासपदेसे जे एगिंदिय-पदेसा जाव अण्णमण्णघडत्ताए चिट्ठति, नत्थि ण भते ! अण्णमण्णस्स किंचि आबाह वा[1] •वाबाह वा उप्पायति ? छविच्छेद वा° करेति ?
गोयमा ! से जहानामए नट्टिया सिया—सिंगारागारचारुवेसा[2] •सगय-गय-हसिय-भणिय-चेट्ठिय-विलास-सललिय-सलाव-निउणजुत्तोवयारकुसला सुदरथण-जघण-वयण-कर-चरण-नयण-लावण्ण-रूव-जोव्वण-विलास °कलिया रगट्ठाणसि जणसयाउलसि (जणसहस्साउलसि ?) जणसयसहस्साउलसि बत्तीसइविहस्स नट्टस्स अण्णयर नट्टविहिं उवदसेज्जा, से नूण गोयमा ! ते पेच्छगा त नट्टिय अणिमिसाए दिट्ठीए सव्वओ समता समभिलोएति ?
हता समभिलोएति ।
ताओ ण गोयमा ! दिट्ठीओ तसि नट्टियसि सव्वओ समता सन्निपडियाओ ?
हता सन्निपडियाओ[3] । अत्थि ण गोयमा ! ताओ दिट्ठीओ तीसे नट्टियाए किंचि वि आबाह वा वाबाह वा उप्पायति ? छविच्छेद वा करेति ?
नो इणट्ठे समट्ठे ।
'सा वा'[4] नट्टिया तासिं दिट्ठीण किंचि आबाह वा वाबाह वा उप्पाएति ? छविच्छेद वा करेइ ?
नो इणट्ठे समट्ठे ।
ताओ वा दिट्ठीओ अण्णमण्णाए दिट्ठीए किंचि आबाह वा वाबाह वा उप्पाएति ? छविच्छेद वा करेंति ?
नो इणट्ठे समट्ठे । से तेणट्ठेण गोयमा ! एव वुच्चइ—[5]•लोगस्स ण एगम्मि आगासपदेसे जे एगिंदियपदेसा जाव अण्णमण्णघडत्ताए चिट्ठति, नत्थि णं अण्णमण्णस्स आबाह वा वाबाह वा उप्पायति°, छविच्छेद वा करेति ।।

११३ लोगस्स ण भते एगम्मि आगासपदेसे जहण्णपए जीवपदेसाण, उक्कोसपए जीवपदेसाण सव्वजीवाण य कयरे कयरेहिंतो[6] •अप्पा वा ? बहुया वा ? तुल्ला वा ?° विसेसाहिया वा ?

---

१. स० पा०—आबाह वा जाव करेति ।
२. स० पा०—सिंगारागारचारुवेसा जाव कलिया ।
३. सन्निवडियाओ (अ) ।
४. अहवा सा (अ, स) ।
५ स० पा०—त चेव जाव छविच्छेद ।
६. सं० पा०—कयरेहिंतो जाव विसेसाहिया ।

गोयमा ! सव्वत्थोवा लोगस्स एगम्मि आगासपदेसे जहण्णपए जीवपदेसा, सव्वजीवा असखेज्जगुणा, उक्कोसपए जीवपदेसा विसेसाहिया ॥

११४ सेव भते ! सेव भते ! त्ति[1] ॥

एक्कारसमो उद्देसो

सुदंसणसेट्ठि-पदं

११५. तेण कालेण तेण समएणं वाणियग्गामे नाम नगरे होत्था—वण्णओ[2]। दूतिपलासे चेइए—वण्णओ जाव[3] पुढविसिलापट्टओ। तत्थ ण वाणियग्गामे नगरे सुदसणे नामं सेट्ठी परिवसइ—अड्ढे जाव[4] बहुजणस्स अपरिभूए समणोवासए अभिगयजीवाजीवे जाव[5] अहापरिग्गहिएहिं तवोकम्मेहिं अप्पाण भावेमाणे विहरइ। सामी समोसढे जाव[6] परिसा पज्जुवासइ ॥

११६ तए ण से सुदसणे सेट्ठी इमीसे कहाए लद्धट्ठे समाणे हट्ठतुट्ठे ण्हाए कय[7]•बलिकम्मे कयकोउय-मंगल°-पायच्छित्ते सव्वालकारविभूसिए साओ गिहाओ पडिनिक्खमइ, पडिनिक्खमित्ता सकोरेटमल्लदामेण छत्तेणं धरिज्जमाणेण पायविहारचारेण महयापुरिसवग्गुरापरिक्खित्ते वाणियग्गाम नगर मज्झमज्झेण निग्गच्छइ, निग्गछित्ता जेणेव दूतिपलासे[8] चेइए जेणेव समणे भगव महावीरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता समण भगव महावीर पचविहेणं अभिगमेण अभिगच्छइ, [त जहा—सच्चित्ताण दव्वाण विओसरणयाए][9] जहा उसभदत्तो जाव[10] तिविहाए पज्जुवासणाए पज्जुवासइ ॥

११७ तए ण समणे भगव महावीरे सुदसणस्स सेट्ठिस्स तीसे य महतिमहालियाए[11] परिसाए[12] धम्मं परिकहेइ जाव[13] आणाए आराहए भवइ ॥

---

१. भ० १।५१।
२ ओ० सू० १।
३ ओ० सू० २-१३।
४. भ० २।९४।
५. भ० २।९४।
६. ओ० सू० १९-५२।
७. स० पा०—कय जाव पायच्छित्ते ।
८ दूतिपलासए (अ) ।
९ कोण्ठकवर्ती पाठो व्याख्याश· प्रतीयते ।
१० भ० ९।१४५।
११ °महालयाए (स) ।
१२ पू०—ओ० सू० ७१।
१३ ओ० सू० ७१-७७।

११८. तए णं से सुदंसणे सेट्ठी समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतिय धम्म सोच्चा निसम्म हट्ठतुट्ठे उट्ठाए उट्ठेइ, उट्ठेत्ता समण भगव महावीर तिक्खुत्तो[1] •आयाहिण-पयाहिण करेइ, करेत्ता वदइ नमसइ, वदित्ता° नमसित्ता एव वयासी—

११९ कतिविहे ण भते ! काले पण्णत्ते ?
सुदसणा ! चउव्विहे काले पण्णत्ते, त जहा—पमाणकाले, अहाउनिव्वत्तिकाले, मरणकाले, अद्धाकाले ।।

१२० से किं त पमाणकाले ?
पमाणकाले दुविहे पण्णत्ते, त जहा—दिवसप्पमाणकाले, राइप्पमाणकाले[2] य । चउपोरिसिए दिवसे, चउपोरिसिया राई भवइ । उक्कोसिया अद्धपचममुहुत्ता दिवसस्स वा राईए वा पोरिसी भवइ, जहण्णिया तिमुहुत्ता दिवसस्स वा राईए वा पोरिसी भवइ ।।

१२१. जदा णं भते ! उक्कोसिया अद्धपचममुहुत्ता दिवसस्स वा राईए वा पोरिसी भवइ, तदा ण कतिभागमुहुत्तभागेण परिहायमाणी-परिहायमाणी जहण्णिया तिमुहुत्ता दिवसस्स वा राईए वा पोरिसी भवइ ? जदा ण जहण्णिया तिमुहुत्ता दिवसस्स वा राईए वा पोरिसी भवइ, तदा ण कतिभागमुहुत्तभागेण परिवड्ढमाणी-परिवड्ढमाणी उक्कोसिया अद्धपचममुहुत्ता दिवसस्स वा राईए वा पोरिसी भवइ ?
सुदसणा ! जदा ण उक्कोसिया अद्धपचमुहुत्ता दिवसस्स वा राईए वा पोरिसी भवइ, तदा ण बावीससयभागमुहुत्तभागेण परिहायमाणी-परिहायमाणी जहण्णिया तिमुहुत्ता दिवसस्स वा राईए वा पोरिसी भवइ। जदा वा जहण्णिया तिमुहुत्ता दिवसस्स वा राईए वा पोरिसी भवइ, तदा ण बावीससयभागमुहुत्तभागेण परिवड्ढमाणी-परिवड्ढमाणी उक्कोसिया अद्धपचममुहुत्ता दिवसस्स वा राईए वा पोरिसी भवइ ।।

१२२ कदा ण भते ! उक्कोसिया अद्धपचममुहुत्ता दिवसस्स वा राईए वा पोरिसी भवइ ? कदा वा जहण्णिया तिमुहुत्ता दिवसस्स वा राईए वा पोरिसी भवइ ?
सुदसणा ! जदा ण उक्कोसए अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे भवइ, जहण्णिया दुवालसमुहुत्ता राई भवइ, तदा ण उक्कोसिया अद्धपचममुहुत्ता दिवसस्स पोरिसी भवइ, जहण्णिया तिमुहुत्ता राईए पोरिसी भवइ । जदा ण उक्कोसिया अट्ठारसमुहुत्तिया राई भवई, जहण्णिए दुवालसमुहुत्ते दिवसे भवइ, तदा ण उक्कोसिया अद्धपचममुहुत्ता राईए पोरिसी भवइ, जहण्णिया तिमुहुत्ता दिवसस्स पोरिसी भवइ ।।

---

१. स० पा०—तिक्खुत्तो जाव नमसित्ता । २. रत्ति° (अ, क, व, म) ।

१२३ कदा ण भंते ! उक्कोसए अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे भवइ, जहण्णिया दुवालसमुहुत्ता राई भवई ? कदा वा उक्कोसिया अट्ठारसमुहुत्ता राई भवइ, जहण्णए दुवालस-मुहुत्ते दिवसे भवइ ?
सुदंसणा ! आसाढपुण्णिमाए उक्कोसए अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे भवइ, जहण्णिया दुवालसमुहुत्ता राई भवइ । पोसपुण्णिमाए[1] णं उक्कोसिया अट्ठारसमुहुत्ता राई भवइ, जहण्णए दुवालसमुहुत्ते दिवसे भवइ ॥

१२४ अत्थि णं भंते ! दिवसा य राईओ य समा चेव भवंति ?
हंता अत्थि ॥

१२५ कदा णं भंते ! दिवसा य राईओ य समा चेव भवंति ?
सुदंसणा ! चेत्तासोयपुण्णिमासु[2], एत्थ[3] णं दिवसा य राईओ य समा चेव भवंति—पण्णरसमुहुत्ते दिवसे पण्णरसमुहुत्ता राई भवइ । चउभागमुहुत्तभागूणा चउमुहुत्ता[4] दिवसस्स वा राईए वा पोरिसी भवइ । सेत्तं पमाणकाले ॥

१२६. से किं तं अहाउनिव्वत्तिकाले ?
अहाउनिव्वत्तिकाले—जण्णं जेणं नेरइएण वा तिरिक्खजोणिएण वा मणुस्सेण वा देवेण वा अहाउयं निव्वत्तियं । 'सेत्तं अहाउनिव्वत्तिकाले'[5] ॥

१२७ से किं तं मरणकाले ?
मरणकाले—जीवो वा सरीराओ सरीरं वा जीवाओ[6] । सेत्तं मरणकाले ॥

१२८ से किं तं अद्धाकाले ?
'अद्धाकाले—से णं'[7] समयट्ठयाए[8] आवलियट्ठयाए जाव[9] उस्सप्पिणीट्ठयाए । एस णं सुदंसणा ! अद्धा दोहाराछेदेणं[10] छिज्जमाणी जाहे विभागं नो हव्वमागच्छइ, सेत्तं समए समयट्ठयाए । असंखेज्जाणं समयाणं समुदयसमिइसमागमेणं सा एगा आवलियत्ति पवुच्चइ । संखेज्जाओ आवलियाओ उस्सासो जहा सालिउद्देसए जाव[11]—

एएसिं णं पल्लाणं, कोडाकोडी हवेज्ज दसगुणिया ।
तं सागरोवमस्स उ, एगस्स भवे परिमाणं ॥१॥

---

१ पोसस्स पुण्णिमाए (म) ।
२ °मासु णं (क, ता, स) ।
३ तत्थ (अ, स) ।
४ चउभागमुहुत्ता (अ) ।
५ सेत्तं पालेमाणे अहाउनिव्वत्तिकाले (अ, म, स), सेत्तं पालेमाणे अहाउनिव्वत्तिकाले । सेत्तं अहाउनिव्वत्तिकाले (ता) ।
६ वियुज्यते इति शेष (वृ) ।
७ अद्धाकाले अणेगविहे पण्णत्ते (अ, स) ।
८ समयद्धयाए (अ) सर्वत्र ।
९ अ० सू० ४१५ ।
१० दोहारच्छेदेण (क, ब), दोहाराछेयणेण (वृ)
११ भ० ६।१३२-१३४ ।

१२९ एएहि ण भते ! पलिओवम-सागरोवमेहि कि पयोयण ?
सुदसणा ! एएहि पलिओवम-सागरोवमेहि नेरइय-तिरिक्खजोणिय-मणुस्स-देवाण आउयाइ मविज्जति ॥

१३० नेरइयाण भते ! केवइय काल ठिई पण्णत्ता ?
एव ठिइपद निरवसेस भाणियव्व जाव[1] अजहण्णमणुक्कोसेण तेत्तीस सागरोवमाइ ठिई पण्णत्ता ॥

१३१. अत्थि ण भते ! एएसि पलिओवम-सागरोवमाण खएति वा अवचएति वा ?
हता अत्थि ॥

१३२ से केणट्ठेण भते ! एव वुच्चइ—अत्थि ण एएसि पलिओवमसागरोवमाण 'खएति वा'[2] अवचएति वा ?
एव खलु सुदसणा ! तेण कालेण तेण समएण हत्थिणापुरे नाम नगरे होत्था—वण्णओ[3]। सहसबवणे उज्जाणे—वण्णओ[4]। तत्थ ण हत्थिणापुरे नगरे बले नाम राया होत्था—वण्णओ[5]। तस्स ण बलस्स रण्णो पभावई नाम देवी होत्था—सुकुमालपाणिपाया वण्णओ जाव[6] पचविहे माणुस्सए कामभोगे पच्चणुभवमाणी विहरइ ॥

१३३. तए ण सा पभावई देवी अण्णया कयाइ तसि तारिसगसि वासघरसि अब्भितरओ सचित्तकम्मे, वाहिरओ दूमिय-घट्ठ-मट्ठे विचित्तउल्लोग-चिल्लियतले[7] मणिरयणपणासियधयारे बहुसमसुविभत्तदेसभाए पचवण्ण-सरससुरभि-मुक्क-पुप्फपुजोवयारकलिए कालागरु-पवरकुदुरुक्क-तुरुक्क-धूव[8]-मघमघेत[9]-गधुद्धुयाभिरामे सुगधवरगधिए गधवट्टिभूए,
तसि तारिसगसि सयणिज्जसि—सालिगणवट्टिए उभओ विब्बोयणे दुहओ उण्णए 'मज्झे णय-गभीरे'[10] गगापुलिणवालुय-उद्दालसालिसए ओयविय[11]-खोमियदुगुल्लपट्ट-पडिच्छयणे[12] सुविरइयरयत्ताणे रत्तसुयसवुए सुरम्मे आइणग-रूय-बूर-नवणीय-तूलफासे[13] सुगधवरकुसुम-चुण्ण-सयणोवयारकलिए अद्धरत्तकाल-

---

१. प० ४।
२. जाव (अ, क, ता, व, म, स)।
३ ओ० सू० १।
४. भ० ११।५७।
५ ओ० सू० १४।
६ ओ० सू० १५।
७ चिलग (अ)।
८ धूम (ता)।
९. °मघत (स)।
१० मज्झेण गभीरे (ता), मज्झेण य गभीरे (वृपा), पण्णत्तगडविब्बोयणे त्ति क्वचित् दृश्यते (वृ)।
११. उयचिय (म, स), उवचिय (क्व०)।
१२. पलिच्छण्ण (ता)।
१३ तुल्ल° (म)।

मयसि[1] सुत्तजागरा ओहीरमाणी-ओहीरमाणी अयमेयारूव ओराल कल्लाण सिव धण्ण मगल्ल सस्सिरीयं महासुविणं[2] पासित्ता ण पडिवुद्धा ।
हार-रयय-खीरसागर-ससककिरण-दगरय-रययमहासेल-पडरतरोरुरमणिज्ज[3]-पेच्छणिज्ज थिर-लट्ठ-पउट्ठ-वट्ट-पीवर-सुसिलिट्ठ-विसिट्ठ-तिक्खदाढाविडविय-मुह परिकम्मियजच्चकमलकोमल-माइयसोभतलट्ठओट्ठ[4] 'रत्तुप्पलपत्तमउय-सुकुमालतालुजीह'[5] मूसागयपवरकणगतावियआवत्तायत-वट्ट-तडिविमलसरि-सनयण विसालपीवरोरु पडिपुण्णविपुलखध मिउविसयमुहुमलक्खण-पसत्थ-विच्छिन्न[6]-केसरसडोवसोभिय ऊसिय[7]-मुनिम्मिय-मुजाय-अप्फोडियलगूलं[8] सोम सोमाकार लीलायत जभायत[9], नहयलाओ ओवयमाण, निययवयणमतिवयत[10] सीह सुविणे पासित्ता ण 'पडिवुद्धा समाणी'[11] हट्ठतुट्ठ[12]°चित्तमाणंदिया णदिया पीइमणा परमसोमणस्सिया हरिसवसविसप्पमाण° हियया धाराहयकलंवग पिव समूसवियरोमकूवा[13] त सुविण ओगिण्हइ, ओगिण्हित्ता सयणिज्जाओ अब्भुट्ठेइ, अब्भुट्ठेत्ता अतुरियमचवलमसभताए अविलवियाए रायहससरिसीए गईए जेणेव वलस्स रण्णो सयणिज्जे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता वल रायं ताहिं इट्ठाहिं कताहिं पियाहिं मणुण्णाहिं मणामाहिं ओरालाहिं कल्लाणाहिं सिवाहिं धन्नाहिं मगल्लाहिं सस्सिरीयाहिं मिय-महुर-मजुलाहिं गिराहिं सलवमाणी-सलवमाणी पडिवोहेइ, पडिवोहेत्ता वलेण रण्णा अब्भणुण्णाया समाणी नाणामणिरयणभ-त्तिचित्तसि[14] भद्दासणंसि निसीयति, निसीयित्ता आसत्था वीसत्था सुहासणवर-गया वलं राय ताहिं इट्ठाहिं कताहिं जाव मिय-महुर-मजुलाहिं गिराहिं संलव-माणी-सलवमाणी एव वयासी—एव खलु अह देवाणुप्पिया ! अज्ज तसि तारिसगसि सयणिज्जसि सालिगणवट्टिए त चेव जाव नियगवयणमइवयत सीह सुविणे पासित्ता ण पडिवुद्धा, तण्ण देवाणुप्पिया ! एयस्स ओरालस्स जाव महासुविणस्स के मन्ने कल्लाणे फलवित्तिविसेसे भविस्सइ ?

---

१ अड्ढ° (ता, म) ।
२ महासुविण सुविणे (क, ता, व, म, स, वृ) ।
३ पडुर °(अ, व, स,) ।
४ °उट्ठ (अ, क, व, स) ।
५ वाचनान्तरे—रत्तुप्पलपत्तमउयसुकुमालतालु-निल्लालियग्गजीह महुगुलियाभिसतपिगलच्छ (वृ) ।
६ विक्किण्ण (ता, वृपा) ।
७. ऊमसिय (ता) ।
८. अप्फोडियतलनगोल (ख) ।
९ × (अ, ख, ता, म) ।
१०. नियय वयणकमलसरमइवत (ता, म) ।
११ पडिवुद्धा तए ण सा पभावती देवी अयमेयारूव ओराल जाव सस्सिरीय महासुमिण सुविणे पासित्ता ण पडिवुद्ध समाणी (क, ख, ता, व, स) ।
१२ स० पा०—हट्ठतुट्ठ जाव हियया ।
१३. समूससित° (व) ।
१४ रयणविचित्तंसि (ता) ।

१३४ तए ण से बले राया पभावईए देवीए अतिय एयमट्ठ सोच्चा निसम्म हट्ठतुट्ठ[1] °चित्तमाणदिए णदिए पीइमाणे परमसोमणस्सिए हरिसवसविसप्पमाण° हियए धाराहयनीवसुरभिकुसुम[2]-चचुमालइयतणुए[3] ऊसवियरोमकूवे त सुविण ओगिण्हइ, ओगिण्हित्ता ईह पविसइ, पविसित्ता अप्पणो साभाविएण मइपुव्वएण बुद्धिविण्णाणेण तस्स सुविणस्स अत्थोग्गहण करेइ, करेत्ता पभावइ देवि ताहि इट्ठाहि कताहि जाव[4] मगल्लाहि मिय-महुर[5]-सस्सिरीयाहि वग्गूहि सलवमाणे-सलवमाणे एव वयासी—ओराले ण तुमे देवी ! सुविणे दिट्ठे, कल्लाणे ण तुमे देवी ! सुविणे दिट्ठे जाव[6] सस्सिरीए ण तुमे देवी ! सुविणे दिट्ठे, 'आरोग्ग-तुट्ठि-दीहाउ-कल्लाण-मगल्लकारए ण तुमे देवी ! सुविणे दिट्ठे'[7], अत्थलाभो देवाणुप्पिए ! भोगलाभो देवाणुप्पिए ! पुत्तलाभो देवाणुप्पिए ! 'रज्जलाभो देवाणुप्पिए !'[8] एव खलु तुम देवाणुप्पिए ! नवण्ह मासाण बहुपडिपुण्णाण अद्धट्ठमाण य राइदियाण वीइक्कताण अम्ह कुलकेउ कुलदीव कुलपव्वय कुलवडेसय कुलतिलग कुलकित्तिकर कुलनदिकर कुलजसकर कुलाधार कुलपायव कुलविवद्धणकर सुकुमालपाणिपाय अहीणपडिपुण्णपचिदियसरीर[9] °लक्खण-वजण-गुणोववेय माणुम्माण-प्पमाण-पडिपुण्ण-सुजाय-सव्वगसुदरग° ससिसोमाकार कत पियदसण सुरूव देवकुमारसमप्पभ दारग पयाहिसि ।

से वि य ण दारए उम्मुक्कबालभावे विण्णय-[10]परिणयमेत्ते जोव्वणगमणुप्पत्ते सूरे वीरे विक्कते वित्थिण्ण-विउलबल-वाहणे रज्जवई राया भविस्सइ । त ओराले ण तुमे देवी ! सुविणे दिट्ठे जाव आरोग्ग-तुट्ठि[11]-°दीहाउ-कल्लाण°-मगल्लकारए ण तुमे देवी ! सुविणे दिट्ठे त्ति कट्टु पभावति देविं ताहि इट्ठाहि जाव वग्गूहि दोच्च पि तच्च पि अणुवूहति ॥

१३५ तए ण सा पभावती देवी बलस्स रण्णो अतिय एयमट्ठ सोच्चा निसम्म हट्ठतुट्ठा[12] करयल[13]°परिग्गहिय दसनह सिरसावत्त मत्थए अजलिं कट्टु° एव वयासी—एवमेय देवाणुप्पिया ! तहमेय देवाणुप्पिया ! अवितहमेय देवाणुप्पिया ! असदिद्धमेय देवाणुप्पिया ! इच्छियमेय देवाणुप्पिया ! पडिच्छियमेय देवाणु-

---

१ स० पा०—हट्ठतुट्ठ जाव हियए ।
२ °नीम° (ता, व) ।
३ °तणुय (अ, क, ख, ता, म, स) ।
४ भ० ११।१३३।
५. मंहुररिभियगभीर (ना० १।१।२०) ।
६. भ० ११।१३३।
७ × (अ) ।
८ × (म) ।
९ स० पा०—°पचिदियसरीर जाव ससि° ।
१० विण्णाय (अ, ता, स) ।
११ स० पा०—तुट्ठि जाव मगल्लकारए ।
१२ हट्ठतुट्ठ (अ, ता, स) ।
१३ स० पा०—करयल जाव एव ।

प्पिया ! इच्छियपडिच्छियमेयं देवाणुप्पिया ! से जहेयं तुब्भे वदह त्ति कट्टु तं सुविणं सम्मं पडिच्छइ[1], पडिच्छित्ता बलेणं रण्णा अब्भणुण्णाया समाणी नाणामणिरयणभत्तिचित्ताओ भद्दासणाओ अब्भुट्ठेइ, अब्भुट्ठेत्ता अतुरियमचवलं[2] •मसंभंताए अविलंबियाए रायहंससरिसीए° गईए जेणेव सए सयणिज्जे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सयणिज्जंसि निसीयति, निसीयित्ता एवं वयासी—मा मे से उत्तमे पहाणे मंगल्ले सुविणे अण्णेहिं पावसुमिणेहिं पडिहम्मिस्सइ त्ति कट्टु देवगुरुजणसंबद्धाहिं[3] पसत्थाहिं मंगल्लाहिं धम्मियाहिं[4] कहाहिं सुविणजागरियं पडिजागरमाणी-पडिजागरमाणी विहरइ ॥

१३६. तए णं से बले राया कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया ! अज्ज सविसेसं बाहिरियं उवट्ठाणसालं गंधोदयसित्त[5]-सुइय-समज्जिओवलित्तं सुगंधवरपंचवण्णपुप्फोवयारकलियं कालागरु-पवरकुंदुरुक्क[6]•-तुरुक्क-धूव-मघमघेंत-गंधुद्धयाभिरामं सुगंधवरगंधियं° गंधवट्टिभूयं करेह य कारवेह[7] य, करेत्ता य कारवेत्ता य सीहासणं रएह, रएत्ता ममेतमाणत्तियं[8] पच्चप्पिणह ॥

१३७. तए णं ते कोडुंबियपुरिसा जाव[9] पडिसुणेत्ता खिप्पामेव सविसेसं बाहिरियं उवट्ठाणसालं[10] •गंधोदयसित्त-सुइय-समज्जिओवलित्तं सुगंधवरपंचवण्णपुप्फोवयारकलियं कालागरु-पवरकुंदुरुक्क-तुरुक्क-धूव-मघमघेंत-गंधुद्धयाभिरामं सुगंधवरगंधियं गंधवट्टिभूयं करेत्ता य कारवेत्ता य सीहासणं रएत्ता तमाणत्तियं° पच्चप्पिणंति ॥

१३८. तए णं से बले राया पच्चूसकालसमयंसि सयणिज्जाओ अब्भुट्ठेइ, अब्भुट्ठेत्ता पायपीढाओ[11] पच्चोरुहइ, पच्चोरुहित्ता जेणेव अट्टणसाला तेणेव उवागच्छइ, अट्टणसालं अणुपविसइ, जहा ओववाइए तहेव अट्टणसाला तहेव मज्जणघरे जाव[12] ससिव्व पियदंसणे नरवई[13] जेणेव बाहिरिया उवट्ठाणसाला तेणेव उवागच्छइ, उवाग-

---

१. सपडिच्छइ (ख, स)।
२. सं० पा०—अतुरियमचवलं जाव गईए।
३. देवतगुरु° (ता)।
४. × (अ)।
५. गंधोदय (व)।
६. सं० पा०—पवरकुंदुरुक्क जाव गंध°।
७. करावेह (ख, स)।
८. ममेतं जाव (अ, क, ख, ता, व, म, स)।
९. भ० ९।१४२।
१०. सं० पा०—उवट्ठाणसालं जाव पच्चप्पिणंति।
११. पायवीढाओ (ख, ब, म)।
१२. ओ० सू० ६३।
१३. नरवई मज्जणघराओ पडिनिक्खमइ २ (अ, क, ख, ता, व, म, स), औपपातिकानुसारेण स्वीकृतपाठ एव समीचीनः। आदर्शेषु परिवर्तनं संक्षेपीकरणेन जातम्। पाठसंक्षेपे प्राय एवं भवत्येव।

च्छित्ता सीहासणवरंसि पुरत्थाभिमुहे निसीयइ, निसीयित्ता अप्पणो उत्तरपुरत्थिमे दिसीभाए अट्ठ भद्दासणाइं सेयवत्थपच्चत्थुयाइं[1] सिद्धत्थगकयमंगलोवयाराइं रयावेइ, रयावेत्ता अप्पणो अदूरसामंते नाणामणि-रयणमंडियं अहियपेच्छणिज्जं महग्घ-वरपट्टणुग्गयं सण्हपट्टभत्तिसयचित्तताणं[2] ईहामिय-उसभ[3]-•तुरग-नर-मगर-विहग-वालग-किण्णर-रुरु-सरभ-चमर-कुंजर-वणलय-पउमलय°-भत्ति-चित्तं अब्भिंतरियं जवणियं अंछावेइ, अंछावेत्ता नाणामणिरयणभत्तिचित्तं अत्थरय-मउयमसूरगोत्थयं सेयवत्थपच्चत्थुयं[4] अंगसुहफासयं[5] सुमउयं पभावतीए देवीए भद्दासणं रयावेइ, रयावेत्ता कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासि—खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया! अट्ठंगमहानिमित्तसुत्तत्थधारए विविह-सत्थकुसले सुविणलक्खणपाढए सद्दावेह ॥

१३९ तए णं ते कोडुंबियपुरिसा जाव[6] पडिसुणेत्ता बलस्स रण्णो अंतियाओ पडिनिक्खमंति, पडिनिक्खमित्ता सिग्घं तुरियं चवलं चंडं वेइयं हत्थिणपुरं नगरं मज्झंमज्झेणं जेणेव तेसिं सुविणलक्खणपाढगाणं गिहाइं तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता ते सुविणलक्खणपाढए सद्दावेंति ॥

१४० तए णं ते सुविणलक्खणपाढगा बलस्स रण्णो कोडुंबियपुरिसेहिं सद्दाविया समाणा हट्ठतुट्ठा ण्हाया कय[7]•बलिकम्मा कयकोउय-मंगल-पायच्छित्ता सुद्धप्पावेसाइं मंगल्लाइं वत्थाइं पवर परिहिया अप्पमहग्घाभरणालंकिय°सरीरा सिद्धत्थग-हरियालियाकयमंगलमुद्धाणा सएहिं-सएहिं गेहेहिंतो निग्गच्छंति, निग्गच्छित्ता हत्थिणपुरं नगरं मज्झंमज्झेणं जेणेव बलस्स रण्णो भवणवरवडेंसए तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता भवणवरवडेंसगपडिदुवारंसि एगओ मिलंति, मिलित्ता जेणेव बाहिरिया उवट्ठाणसाला जेणेव बले राया तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता करयल[8]•परिग्गहियं दसनहं सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं कट्टु° बलरायं जएणं विजएणं वद्धावेंति। तए णं ते सुविणलक्खणपाढगा बलेणं रण्णा वंदिय-पूइय-सक्कारिय-सम्माणिया समाणा पत्तेयं-पत्तेयं पुव्वण्णत्थेसु भद्दासणेसु निसीयंति ॥

१४१ तए णं से बले राया पभावतिं देविं जवणियंतरियं ठावेइ, ठावेत्ता पुप्फ-फल पडिपुण्णहत्थे परेणं विणएणं ते सुविणलक्खणपाढए एवं वयासी—एवं खलु

---

१. °पच्चुत्थुयाइं (म)।
२. सण्हबहुभत्ति° (ब, म)।
३. सं० पा०—उसभ जाव भत्तिचित्तं।
४. °पच्चुत्थयं (ब, म, स)।
५. °फासुयं (ख, ब)।
६. भ० ६।१४२।
७ सं० पा०—कय जाव सरीरा।
८. सं० पा०—करयल।

देवाणुप्पिया ! पभावती देवी अज्ज तंसि तारिसगंसि वासघरंसि जाव[1] सीहं सुविणे पासित्ता णं पडिबुद्धा, तण्णं देवाणुप्पिया ! एयस्स ओरालस्स जाव[2] महासुविणस्स के मन्ने कल्लाणे फलवित्तिविसेसे भविस्सइ ?

१४२ तए णं ते सुविणलक्खणपाढगा बलस्स रण्णो अंतियं एयमट्ठं सोच्चा निसम्म हट्ठतुट्ठा तं सुविणं ओगिण्हंति, ओगिण्हित्ता ईहं अणुप्पविसंति, अणुप्पविसित्ता तस्स सुविणस्स अत्थोग्गहणं करेंति करेत्ता अण्णमण्णेणं सद्धिं संचालेंति[3], संचालेत्ता तस्स सुविणस्स लद्धट्ठा गहियट्ठा पुच्छियट्ठा विणिच्छियट्ठा अभिगयट्ठा बलस्स रण्णो पुरओ सुविणसत्थाइं उच्चारेमाणा-उच्चारेमाणा एवं वयासी—एवं खलु देवाणुप्पिया ! अम्हं सुविणसत्थंसि बायालीसं सुविणा, तीसं महासुविणा—बावत्तरिं सव्वसुविणा दिट्ठा। तत्थ णं देवाणुप्पिया ! तित्थगरमायरो वा चक्कवट्टिमायरो वा तित्थगरंसि वा चक्कवट्टिंसि वा गब्भं वक्कममाणंसि एएसिं तीसाए महासुविणाणं इमे चोद्दस महासुविणे पासित्ता णं पडिबुज्झंति, तं जहा—

गय उसह[4] सीह अभिसेय दाम ससि दिणयरं झयं कुंभं ।
पउमसर[5] सागर विमाणभवण[6] रयणुच्चय सिहिं च[7] ॥१॥

वासुदेवमायरो वासुदेवंसि गब्भं वक्कममाणंसि एएसिं चोद्दसण्हं महासुविणाणं अण्णयरे सत्त महासुविणे पासित्ता णं पडिबुज्झंति। बलदेवमायरो बलदेवंसि गब्भं वक्कममाणंसि एएसिं चोद्दसण्हं महासुविणाणं अण्णयरे चत्तारि महासुविणे पासित्ता णं पडिबुज्झंति। मंडलियमायरो मंडलियंसि गब्भं वक्कममाणंसि एएसिं णं चोद्दसण्हं महासुविणाणं अण्णयरं एगं महासुविणं पासित्ता णं पडिबुज्झंति। इमे य णं देवाणुप्पिया ! पभावतीए देवीए एगे महासुविणे दिट्ठे, तं ओराले णं देवाणुप्पिया ! पभावतीए देवीए सुविणे दिट्ठे जाव[8] आरोग्ग-तुट्ठि[9]-•दीहाउ कल्लाण•-मंगल्लकारए णं देवाणुप्पिया ! पभावतीए देवीए सुविणे दिट्ठे, अत्थलाभो देवाणुप्पिया ! भोगलाभो देवाणुप्पिया ! पुत्तलाभो देवाणुप्पिया ! रज्जलाभो देवाणुप्पिया ! एवं खलु देवाणुप्पिया ! पभावती देवी नवण्हं मासाणं बहुपडिपुण्णाणं[10] •अद्धट्ठमाण य राइंदियाणं° वीइक्कंताणं तुम्हं कुलकेउं जाव[11] देवकुमारसमप्पभं दारगं पयाहिति ।

१. भ० ११।१३३।
२. भ० ११।१३३।
३ संलवंति (ता) ।
४. वसहं (क, ता, म) ।
५ पदुमसर (ता) ।
६ 'विमाणभवण' त्ति एकमेव, तत्र विमानाकारं भवनं विमानभवनं, अथवा देवलोकाद्योऽवतरति तन्माता विमानं पश्यति यस्तु नरकात् तन्माता भवनमिति (वृ) ।
७ इह च गाथायां केषुचित्पदेष्वनुस्वारस्याश्रवणं गाथाऽनुलोम्याद् दृश्यम् (वृ) ।
८. भ० ११।१३४।
९ सं० पा०—तुट्ठि जाव मंगल्लकारए ।
१०. सं० पा०—बहुपडिपुण्णाणं जाव वीइक्कंताणं ।
११ भ० ११।१३४।

से वि य ण दारए उम्मुक्कवालभावे[1] •विण्णय-परिणयमेत्ते जोव्वणगमणुप्पत्ते सूरे वीरे विक्कते वित्थिण्ण-विउलवल-वाहणे° रज्जवई राया भविस्सइ, अणगारे वा भावियप्पा। त ओराले ण देवाणुप्पिया! पभावतीए देवीए सुविणे दिट्ठे जाव आरोग्ग-तुट्ठि-दीहाउ-कल्लाण[2]-•मगल्लकारए पभावतीए देवीए सुविणे° दिट्ठे ॥

१४३ तए ण से वले राया सुविणलक्खणपाढगाण अतिए एयमट्ठ सोच्चा निसम्म हट्ठतुट्ठे करयल[3]•परिग्गहिय दसनह सिरसावत्त मत्थए अजलि° कट्टु ते सुविणलक्खणपाढगे एव वयासी—एवमेय देवाणुप्पिया[4]! •तहमेय देवाणुप्पिया! अवितहमेय देवाणुप्पिया! असदिद्धमेय देवाणुप्पिया! इच्छियमेय देवाणुप्पिया! पडिच्छियमेय देवाणुप्पिया! इच्छिय-पडिच्छियमेय देवाणुप्पिया!° से जहेय तुब्भे वदह त्ति कट्टु त सुविण सम्म पडिच्छइ[5], पडिच्छित्ता सुविणलक्खणपाढए विउलेण असण-पाण-खाइम-साइम-पुप्फ-वत्थ-गध-मल्लालकारेण सक्कारेइ सम्माणेइ, सक्कारेत्ता सम्माणेत्ता विउल जीवियारिह पीइदाण दलयइ, दलयित्ता पडिविसज्जेइ, पडिविसज्जेत्ता सीहासणाओ अब्भुट्ठेइ, अब्भुट्ठेत्ता जेणेव पभावती देवी तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता पभावति देविं ताहि इट्ठाहि जाव[6] मिय-महुर-सस्सिरीयाहि वग्गूहि सलवमाणे-सलवमाणे एव वयासी—एव खलु देवाणुप्पिए! सुविणसत्थसि वायालीस सुविणा, तीस महासुविणा—वावत्तरि सव्वसुविणा दिट्ठा। तत्थ ण देवाणुप्पिए! तित्थगरमायरो वा चक्कवट्टिमायरो वा तित्थगरसि वा चक्कवट्टिसि वा गब्भ वक्कममाणसि एएसि तीसाए महासुविणाण इमे चोद्दस महासुविणे पासित्ता ण पडिबुज्झति तं चेव जाव[7] मडलियमायरो मडलियसि गब्भ वक्कममाणसि एएसि ण चोद्दसण्ह महासुविणाण अण्णयर एग महासुविण पासित्ता ण पडिबुज्झति। इमे य ण तुमे देवाणुप्पिए! एगे महासुविणे दिट्ठे, त ओराले ण तुमे देवी! सुविणे दिट्ठे जाव[8] रज्जवई राया भविस्सइ, अणगारे वा भावियप्पा, त ओराले ण तुमे देवी! सुविणे दिट्ठे जाव[9] आरोग्ग-तुट्ठि-दीहाउ-कल्लाण-मगल्लकारए ण तुमे देवी! सुविणे दिट्ठे त्ति कट्टु पभावति देवि ताहि इट्ठाहिं जाव मिय-महुर-सस्सिरीयाहिं वग्गूहिं दोच्च पि तच्च पि अणुबूहइ ॥

---

१. स० पा०—उम्मुक्कवालभावे जाव रज्जवई।
२. स० पा०—कल्लाण जाव दिट्ठे।
३ स० पा०—करयल जाव कट्टु।
४ स० पा०—देवाणुप्पिया जाव से।
५. सपडिच्छइ (क, ता, म, स)।
६ भ० ११।१३४।
७. भ० ११।१४२।
८. भ० ११।१४२।
९. भ० ११।१३४।

१४४ तए ण सा पभावती देवी वलस्स रण्णो अतिय एयमट्ठ सोच्चा निसम्म हट्ठतुट्ठा करयल[1]•परिग्गहिय दसनह सिरसावत्त मत्थए अजलि कट्टु° एव वयासी—एयमेय देवाणुप्पिया ! जाव[2] त सुविण सम्म पडिच्छइ, पडिच्छित्ता वलेण रण्णा अब्भणुण्णाया समाणी नाणामणिरयणभत्ति[3]•चित्ताओ भद्दासणाओ° अब्भुट्ठेइ, अतुरियमचवल[4]•मसभताए अविलवियाए रायहससरिसीए° गईए जेणेव सए भवणे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सय भवणमणुपविट्ठा ॥

१४५ तए ण सा पभावती देवी ण्हाया कयवलिकम्मा जाव[5] सव्वालकारविभूसिया त गब्भ नातिसोतेहि नातिउण्हेहि नातितित्तेहि नातिकडुएहि नातिकसाएहि नातिअंविलेहि नातिमहुरेहि उउभयमाणसुहेहि[6] भोयण-च्छायण-गध-मल्लेहि जं तस्स गब्भस्स हिय मित पत्थ गब्भपोसण त देसे य काले य आहारमाहारेमाणी विवित्त-मउएहि[7] सयणासणेहि पइरिक्कसुहाए मणाणुकूलाए विहारभूमीए पसत्थदोहला सपुण्णदोहला[8] सम्माणियदोहला अविमाणियदोहला वोच्छिण्णदोहला विणीय-दोहला ववगयरोग-सोग-मोह-भय-परित्तासा त गब्भ 'सुहसुहेण परिवहति'[9] ॥

१४६ तए ण सा पभावती देवी नवण्ह मासाण वहुपडिपुण्णाण अद्धट्ठमाण य राइदियाण वीइक्कताण सुकुमालपाणिपाय अहीणपडिपुण्णपचिदियसरीर लक्खण-वजण-गुणोववेय[10] •माणुम्माण-प्पमाण-पडिपुण्ण-सुजाय-सव्वगसुदरग °ससिसोमाकार कत पियदसण सुरूव दारय पयाया ॥

१४७ तए ण तीसे पभावतीए देवीए अंगपडियारियाओ पभावतिं देविं पसूय जाणेत्ता जेणेव वले राया तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता करयल[11]•परिग्गहिय दसनह सिरसावत्तं मत्थए अजलि कट्टु° वल राय जएण विजएण वद्धावेति, वद्धावेत्ता एव वयासी—एवं खलु देवाणुप्पिया ! पभावती देवी नवण्ह मासाण वहुपडि-पुण्णाण जाव[12] सुरूव दारग पयाया । त एयण्ण[13] देवाणुप्पियाण पियट्ठयाए पिय निवेदेमो । पिय भे भवतु ॥

१४८. तए ण से वले राया अगपडियारियाण अतिय एयमट्ठ सोच्चा निसम्म हट्ठतुट्ठ[14]-•चित्तमाणदिए णदिए पीइमणे परमसोमणस्सिए हरिसवसविसप्पमाणहियए

---

१ स० पा०—करयल जाव एव ।
२. भ० ११।१३५।
३ स पा०—°भत्ति जाव अब्भुट्ठइ ।
४. स० पा०—अतुरियमचवल जाव गईए ।
५. भ० ७।१७६।
६. तदु° (ख), उतु° (ता, म), उडु° (व) ।
७. विचित्त° (अ, ख, ता, व, स) ।
८ सपन्न° (अ), °डोहला (ता) ।
९. वाचनान्तरे—सुहसुहेण आसयइ सुयइ चिट्ठइ निसीयइ तुयट्टइ त्ति दृश्यते (वृ) ।
१०. स० पा०—गुणोववेय जाव ससि° ।
११ स० पा०—करयल ।
१२. भ० ११।१३४ ।
१३. एतण (अ, स); एत (ता) ।
१४ स०पा०—हट्ठतुट्ठ जाव धाराहयनीव जाव कूवे ।

धाराहयनीवसुरभिकुसुम-चचुमालइयतणुए ऊसवियरोम °कूवे तासि अगपडिया-रियाण मउडवज्ज जहामालिय[1] ओमोय दलयइ[2], दलयित्ता सेत रययामय विमलसलिलपुण्ण भिंगार पगिण्हइ, पगिण्हित्ता मत्थए धोवइ, धोवित्ता विउल जीवियारिह पीइदाण दलयइ, दलयित्ता सक्कारेइ सम्माणेइ, सक्कारेत्ता सम्मा-णेत्ता पडिविसज्जेइ ॥

१४९ तए ण से वले राया कोडुवियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एव वयासी—खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया ! हत्थिणापुरे नयरे चारगसोहण करेह, करेत्ता माणुम्माण-वड्ढण[3] करेह, करेत्ता हत्थिणापुर नगर सब्भितरबाहिरिय आसिय-समज्जिओ-वलित्त जाव[4] गधवट्टिभूय करेह य कारवेह य, करेत्ता य कारवेत्ता य जूवसहस्स वा चक्कसहस्स वा पूयामहामहिमसजुत्त[5] उस्सवेह, उस्सवेत्ता ममेतमाणत्तिय पच्चप्पिणह ॥

१५० तए ण ते कोडुवियपुरिसा वलेण रण्णा एव वुत्ता समाणा हट्ठतुट्ठा जाव[6] तमाण-त्तिय पच्चप्पिणति ॥

१५१ तए ण से वले राया जेणेव अट्टणसाला तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता त चेव जाव[7] मज्जणघराओ पडिनिक्खमइ, पडिनिक्खमित्ता उस्सुक्क उक्कर उक्किट्ठ अदेज्ज अमेज्ज अभडप्पवेस[8] अदडकोदंडिम अधरिम गणियावरनाडइज्जकलिय अणेगतालाचराणुचरिय अणुद्धयमुइग[9] अमिलायमल्लदाम[10] पमुइयपक्कीलिय सपुरजणजाणवय दसदिवसे ठिइवडिय करेति ॥

१५२. तए ण से वले राया दसाहियाए ठिइवडियाए वट्टमाणीए सइए य साहस्सिए य सयसाहस्सिए य जाए य दाए य भाए य दलमाणे य दवावेमाणे य, सइए य सय-साहस्सिए य लभे[11] पडिच्छेमाणे य पडिच्छावेमाणे य एव यावि विहरइ ॥

१५३ तए ण तस्स दारगस्स अम्मापियरो पढमे दिवसे ठिइवडिय करेइ, तइए दिवसे चदसूरदसावणिय[12] करेइ, छट्ठे दिवसे जागरिय करेइ, एक्कारसमे दिवसे वीइ-

---

१. जहाजमालित (ता) ।
२ दलति (ता) ।
३. °वड्ढ (ता) ।
४. ओ० सू० ५५ ।
५. °महिमसक्कार वा (अ, म, स), आयाम-जावदिसक्कार वा (क), °सजुत्त वा आया-मेजाहससक्खा (ख), पूता° (ता), पूया-महिमसक्कारं वा (ब) ।
६ भ० ११।१४९ ।
७. ओ० सू० ६३ ।
८ °पावेस (ख), अहड° (ता) ।
९ अणुद्धत° (क), अणद्धुत्त° (ब) ।
१० अमिलाण° (ता) ।
११ लाभे (क, ब) लभो (ता) ।
१२ °दंसणिय (क), औपपातिकाद्यागमेषु 'दस-णिय' इति पाठ प्रायेण स्वीकृतोस्ति । तत्र स्वीकृतपाठो नोपलब्ध । अर्थदृष्ट्यासौ समी-चीनोस्ति ।

वकते निव्वत्ते असुइजायकम्मकरणे सपत्ते 'बारसमे दिवसे'[1] विउल असण पाण खाइम साइम उवक्खडावेति, उवक्खडावेत्ता •[2]मित्त-नाइ-नियग-सयण-सबधि-परिजण रायाणो य° खत्तिए य आमतेति, आमतेत्ता तओ पच्छा ण्हाया त चेव जाव[3] सक्कारेति सम्माणेति, सक्कारेत्ता सम्माणेत्ता तस्सेव मित्त-नाइ[4]-•नियग-सयण-सबधि-परिजणस्स° राईण य खत्तियाण य पुरओ अज्जय-पज्जय पिउपज्जयागय वहुपुरिसपरपरप्परूढ कुलाणुरूव कुलसरिस कुलसताणततुवद्ध-णकर अयमेयारूव गोण्ण गुणनिप्फन्न नामधेज्ज करेति—जम्हा ण अम्ह इमे दारए बलस्स रण्णो पुत्ते पभावतीए देवीए अत्तए, त होउ ण अम्ह इमस्स दार-गस्स नामधेज्ज 'महब्बले-महब्बले'[5]। तए ण तस्स दारगस्स अम्मापियरो नाम-धेज्ज करेति महब्वले त्ति ॥

१५४ तए ण से महब्वले दारए पचधाईपरिग्गहिए, [त जहा—खीरधाईए],[6] एव जहा दढपइण्णस्स जाव[7] निव्वाय[8]-निव्वाघायसि सुहसुहेण परिवड्ढति ॥

१५५ तए ण तस्स महब्वलस्स दारगस्स अम्मापियरो अणुपुव्वेण ठिइवडिय वा चद-सूरदसावणिय वा जागरिय वा नामकरण वा परगामण वा पचकामण[9] वा पजेमामण[10] वा पिडवद्धण वा पजपावण[11] वा कण्णवेहण वा सवच्छरपडिलेहण[12] वा चोलोयणग[13] वा उवणयण वा, अण्णाणि य बहूणि गब्भाधाण[14]-जम्मणमादि-याइ कोउयाइ करेति ॥

१५६ तए ण त महब्वल कुमार अम्मापियरो सातिरेगट्ठवासग जाणित्ता सोभणसि

---

१. वारसाहदिवसे (अ, क, ख, म, स), वारसा-दिवमे (ता), वारहदिवसे (व), 'रायपसेणइय' सूत्रस्य ८०२ सूत्रानुसारेणासौ पाठ. स्वीकृत.। विशेपाववोधाय द्रष्टव्य 'ओववाइय' सूत्रस्य १४४ सूत्रस्य प्रथम पाद-टिप्पणम् ।

२. स० पा०—जहा सिवो जाव खत्तिए ।

३. भ० ११।६३ ।

४. स० पा०—नाइ जाव राईण ।

५. महब्बले (अ, क, ख, व, म, स) ।

६ कोष्ठकवर्ती पाठो व्याख्याश प्रतीयते ।

७ ओ० वाचनान्तर पृष्ठ १५१, १५२, राय० सू० ८०४ ।

८. निवात (अ, ता, ब, म); नियात (ख) ।

९ पयचकमाण (अ), पचकम्मावण (ख, ब), पचक्कामवण (ता), पयिचकामण (म)। पयचकमण (स) ।

१० जेमावण (क, व, म, स) ।

११ पजपमाण (क, ख), पजपामण (व) ।

१२ °पलेहण (ख), °वलेहणगं (ता) ।

१३ चोलायणग (अ), चोलोपणगं (क, ख,), चोलगणि (ता), चोलोयण (व) ।

१४. गब्भदाण (अ, ख), गब्भायाण (ता), गब्भादाण (व, वृ), 'गब्भाहाण' पदस्य हकारदकारयोर्लिपिसादृश्यात् 'गब्भादाण' रूपे परिवर्तन जातमिति सभाव्यते ।

तिहि-करण-नक्खत्त-मुहुत्तसि कलायरियस्स उवणेति, एवं जहा दढप्पइण्णे जाव[1] अलभोगसमत्थे जाए यावि होत्था ॥

१५७ तए ण त महब्बल कुमार उम्मुक्कबालभाव जाव[2] अलभोगसमत्थ विजाणित्ता अम्मापियरो अट्ठ पासायवडेसए कारेति[3]—अब्भुग्गय-मूसिय-पहसिए इव वण्णओ जहा रायप्पसेणइज्जे जाव[4] पडिरूवे । तेसि ण पासायवडेसगाण वहुमज्झदेस-भागे, एत्थ ण महेग भवण कारेति—अणेगखभसयसनिविट्ठ वण्णओ जहा राय-प्पसेणइज्जे पेच्छाघरमडवसि जाव[5] पडिरूवे ॥

१५८ तए ण त महब्बल कुमार अम्मापियरो अण्णया कयाइ सोभणसि तिहि-करण-दिवस-नक्खत्त-मुहुत्तसि ण्हाय कयबलिकम्म कयकोउय-मगल-पायच्छित्त सव्वा-लकारविभूसिय पमक्खणग-ण्हाण-गीय-वाइय-पसाहण-अट्ठगतिलग-ककण-अवि-हवबहुउवणीय[6] मगलसुजपिएहि य वरकोउयमगलोवयार-कयसतिकम्म सरि-सियाण सरित्तयाण सरिव्वयाण सरिसलावण्ण-रूव-जोव्वणगुणोववेयाण 'विणीयाण कयकोउय-मगलपायच्छित्ताण'[7] सरिसएहि रायकुलेहिंतो आणिल्लि-याण[8] अट्ठण्ह रायवरकन्नाण एगदिवसेण पाणिं गिण्हाविंसु ॥

१५९ तए ण तस्स महाबलस्स कुमारस्स अम्मापियरो अयमेयारूव पीइदाण दलयति, त जहा – अट्ठ हिरण्णकोडीओ, अट्ठ सुवण्णकोडीओ, अट्ठ मउडे मउडप्पवरे, अट्ठ 'कुडलजोए कुडलजोयप्पवरे'[9] अट्ठ हारे हारप्पवरे, अट्ठ अद्धहारे अद्धहारप्पवरे, अट्ठ एगावलीओ एगावलिप्पवराओ, एव मुत्तावलीओ, एव कणगावलीओ, एव रयणावलीओ, अट्ठ कडगजोए कडगजोयप्पवरे, एव तुडियजोए, अट्ठ खोमजुय-लाइ खोमजुयलप्पवराइ, एव वडगजुयलाइ,[10] एव पट्टजुयलाइ, एव दुगुल्ल-जुयलाइ, अट्ठ सिरीओ, अट्ठ हिरीओ, एव धिईओ, कित्तीओ, वुद्धीओ, लच्छीओ, अट्ठ नदाइ, अट्ठ भद्दाइ, अट्ठ तले तलप्पवरे सव्वरयणामए, नियगवरभवणकेऊ अट्ठ झए झयप्पवरे, अट्ठ वए वयप्पवरे दसगोसाहस्सिएण वएण, अट्ठ नाडगाइ नाडगप्पवराइ बत्तीसइबद्धेण नाडएण, अट्ठ आसे आसप्पवरे सव्वरयणामए सिरिघरपडिरूवए, अट्ठ हत्थी हत्थिप्पवरे सव्वरयणामए सिरिघरपघडिरूवए, अट्ठ जाणाइ जाणप्पवराइ, अट्ठ जुगाइ जुगप्पवराइ, एव सिबियाओ[11], एव सद-

---

१ ओ० सू० १४६-१४८, राय० सू० ८०५-८०९ ।
२. राय० सू० ८१०।
३ करेंति (अ, म, स) ।
४. राय० सू० १३७।
५ राय० सू० ३२।
६. अविधववघुओवणीत (ता) ।
७. × (व) ।
८ आणिते (ति) ल्लियाण (क, ख, ता, व, म) ।
९. कुडलजुए कुडलजुय० (अ, स) ।
१० पडलगजुवलाइ (अ) ।
११. सिविया (अ), सिताओ (ता) ।

माणीओ[1], एव गिल्लीओ, थिल्लीओ, अट्ठ वियडजाणाइ वियडजाणप्पवराइ, अट्ठ रहे पारिजाणिए, अट्ठ रहे सगामिए, अट्ठ आसे आसप्पवरे, अट्ठ हत्थी हत्थिप्पवरे, अट्ठ गामे गामप्पवरे दसकुलसाहस्सिएण गामेण, अट्ठ दासे दासप्पवरे, एव दासीओ, एव किकरे, एव कचुइज्जे, एव वरिसधरे, एव महत्तरए, अट्ठ सोवण्णिए ओलवणदीवे, अट्ठ रुप्पामए ओलवणदीवे, अट्ठ सुवण्णरुप्पामए ओलवणदीवे, अट्ठ सोवण्णिए उक्कंवणदीवे[2], एव चेव तिण्णि वि, अट्ठ सोवण्णिए पजरदीवे, एव चेव तिण्णि वि, अट्ठ सोवण्णिए थाले, अट्ठ रुप्पामए थाले, अट्ठ सुवण्णरुप्पामए थाले, अट्ठ सोवण्णियाओ पत्तीओ[3] ३, अट्ठ सोवण्णियाइ थासगाइ ३, अट्ठ सोवण्णियाइ मल्लगाइ ३, अट्ठ सोवण्णियाओ तलियाओ[4] ३, अट्ठ सोवण्णियाओ कविचियाओ[5] ३, अट्ठ सोवण्णिए अवएडए[6] ३, अट्ठ सोवण्णियाओ अवयक्काओ[7] ३, अट्ठ सोवण्णिए पायपीढए ३, अट्ठ सोवण्णियाओ भिसियाओ ३, अट्ठ सोवण्णियाओ करोडियाओ ३, अट्ठ सोवण्णिए पल्लके ३, अट्ठ सोवण्णियाओ पडिसेज्जाओ ३, अट्ठ हसासणाइ, अट्ठ कोचासणाइ, एव गरुलासणाइं, उन्नयासणाइ, पणयासणाइ, दीहासणाइ, भद्दासणाइ, पक्खासणाइं, मगरासणाइ, अट्ठ पउमासणाइ, अट्ठ दिसासोवत्थियासणाइ, अट्ठ तेल्ल-समुग्गे, [8]•अट्ठ कोट्ठ-समुग्गे, एव पत्त-चोयग-तगर-एल-हरियाल-हिंगुलय-मणोसिल-अजण-समुग्गे°, अट्ठ सरिसव-समुग्गे, अट्ठ खुज्जाओ जहा ओववाइए जाव[9] अट्ठ पारिसीओ, अट्ठ छत्ते, अट्ठ छत्तधारीओ चेडीओ, अट्ठ चामराओ, अट्ठ चामरधारीओ चेडीओ अट्ठ तालियटे, अट्ठ तालियटधारीओ चेडीओ, 'अट्ठ करोडियाओ',[10] अट्ठ करोडियाधारीओ चेडीओ, अट्ठ खीरधाईओ[11], •अट्ठ मज्जणधाईओ, अट्ठ मडणधाईओ अट्ठ खेल्लावणधाईओ°, अट्ठ अकधाईओ, अट्ठ अगमद्दियाओ, अट्ठ उम्मद्दियाओ अट्ठ ण्हावियाओ, अट्ठ पसाहियाओ, अट्ठ वण्णगपेसीओ, अट्ठ चुण्णगपेसीओ[12], अट्ठ कीडागारीओ[13], अट्ठ दवकारीओ[14], अट्ठ उवत्थाणियाओ, अट्ठ नाडइज्जाओ,

---

१. सदमाणी (अ), सदमाणियाओ (क, ता, व, म)।
२. उक्कपणदीवे (क, ख, ता, व, स)।
३. 'एव तिण्णि वि' इति पाठस्य सूचकमङ्कमिदं सर्वत्र।
४. चवलियाओ (ख), चवलियाओ अट्ठसोवण्णियाओ तिलियाओ (ता)।
५ कवचियाओ (अ, ख, ता, व, म), कतिवियाओ (क)।
६ अवपडए (अ, स), अवयडए (ता)।
७. अवक्काओ (अ, क, ख, ता, म)।
८ स० पा०—जहा रायपसेणइज्जे जाव अट्ठ।
९ ओ० सू० ७०, भ० ९।१४४।
१०. × (अ, क, ख, ता, व, म)।
११ स० पा०—खीरधाईओ जाव अट्ठ।
१२. × (ख)।
१३ कीलाकरीओ (ता)।
१४. उवकारीओ (क, ता)।

अट्ठ कोडुंबिणीओ, अट्ठ महाणसिणीओ[1], अट्ठ भंडागारिणीओ, अट्ठ अब्भाधारिणीओ, अट्ठ पुप्फधरणीओ, अट्ठ पाणिधरणीओ, अट्ठ बाहिरियाओ, अट्ठ सेज्जाकारीओ, अट्ठ अब्भितरियाओ पडिहारीओ, अट्ठ बाहिरियाओ पडिहारीओ, अट्ठ मालाकारीओ, अट्ठ पेसणकारीओ, अण्णं वा सुबहु हिरण्णं वा सुवण्णं वा कंसं वा दूसं वा विउलधण-कणग[2]-•रयण-मणि-मोत्तिय-संख-सिल-प्पवाल-रत्तरयण-°संतसारसावएज्जं, अलाहि जाव आसत्तमाओ कुलवंसाओ पकामं दाउं, पकामं भोत्तुं[3], पकामं परिभाएउं[4] ॥

१६०. तए णं से महब्बले कुमारे एगमेगाए भज्जाए एगमेगं हिरण्णकोडिं दलयइ, एगमेगं सुवण्णकोडिं दलयइ, एगमेगं मउडं मउडप्पवरं दलयइ, एवं तं चेव सव्वं जाव एगमेगं पेसणकारिं दलयइ, अण्णं वा सुबहु हिरण्णं वा[5] •सुवण्णं वा कंसं वा दूसं वा विउलधण-कणग-रयण-मणि-मोत्तिय-संख-सिल-प्पवाल-रत्तरयण-संतसारसावएज्जं, अलाहि जाव आसत्तमाओ कुलवंसाओ पकामं दाउं, पकामं भोत्तुं, पकामं° परिभाएउं ॥

१६१. तए णं से महब्बले कुमारे उप्पिं पासायवरगए जहा जमाली जाव[6] पंचविहे माणुस्सए कामभोगे पच्चणुब्भवमाणे विहरइ ॥

१६२. तेणं कालेणं तेणं समएणं विमलस्स अरहओ पओप्पए[7] धम्मघोसे नामं अणगारे जाइसंपन्ने वण्णओ जहा केसिसामिस्स जाव[8] पंचहिं अणगारसएहिं सद्धिं संपरिवुडे पुव्वाणुपुव्विं चरमाणे गामाणुग्गामं दूइज्जमाणे जेणेव हत्थिणापुरे नगरे, जेणेव सहसंबवणे उज्जाणे, तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता अहापडिरूवं ओग्गहं ओगिण्हइ, ओगिण्हित्ता संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे विहरइ ॥

१६३. तए णं हत्थिणापुरे नगरे सिंघाडग-तिय-चउक्क-चच्चर-चउम्मुह-महापह-पहेसु महया जणसद्दे इ वा जाव[9] परिसा पज्जुवासइ ॥

१६४. तए णं तस्स महब्बलस्स कुमारस्स तं महयाजणसद्दं वा जणवूहं वा जाव जण-सन्निवायं वा सुणमाणस्स वा पासमाणस्स वा एवं जहा[10] जमाली तहेव चिंता,

---

१. महाणसीओ (क, ता, ब)।
२. सं० पा०—कणग जाव संतसार।
३. परिभोत्तुं (क, ब, म, स)।
४. परिभाइउं (ख), परियाभाएउं (ता)।
५. सं० पा०—हिरण्णं वा जाव परिभाएउं।
६. भ० ९।१५६।
७. पदोप्पए (ख), पतोप्पए (ब, म)।
८. राय० सू० ६८६।
९. राय० सू० ६८७, ओ० सू० ५२; भ० ९।१५७।
१०. भ० ९।१५८।

तहेव कचुइज्ज-पुरिस सद्दावेति, [1]•सद्दावेत्ता एव वयासी—किण्ण देवाणुप्पिया ! अज्ज हत्थिणापुरे नयरे इदमहे इ वा जाव निग्गच्छति ।।

१६५. तए णं से कचुइ-पुरिसे महव्वलेण कुमारेण एव वुत्ते समाणे हट्ठतुट्ठे धम्मघोसस्स अणगारस्स आगमणगहियविणिच्छए करयलपरिग्गहिय दसनह सिरसावत्त मत्थए अजलि कट्टु महव्वल कुमार जएण विजएण वद्धावेइ, वद्धावेत्ता एव वयासी—नो खलु देवाणुप्पिया ! अज्ज हत्थिणापुरे नगरे इदमहे इ वा जाव[2] निग्गच्छति। एव खलु देवाणुप्पिया ! अज्ज विमलस्स अरहओ पओप्पए धम्मघोसे नाम अणगारे हत्थिणापुरस्स नगरस्स वहिया सहसंववणे उज्जाणे अहापडिरूव ओग्गह ओगिण्हित्ता सजमेण तवसा अप्पाण भावेमाणे विहरइ, तए ण एते वहवे उग्गा, भोगा जाव[3] निग्गच्छति ।।

१६६ तए ण से महव्वले कुमारे° तहेव[4] रहवरेण निग्गच्छति। धम्मकहा जहा[5] केसिसामिस्स। सो वि तहेव अम्मापियर आपुच्छइ, नवर—धम्मघोसस्स अणगारस्स अतिय मुडे भवित्ता अगाराओ अणगारिय पव्वइत्तए। तहेव वुत्तपडिवुत्तिया[6], नवर—इमाओ य ते जाया ! विउलरायकुलवालियाओ कलाकुसल-सव्वकाललालिय-सुहोचियाओ सेस त चेव जाव[7] ताहे अकामाइ चेव महव्वल-कुमार एव वयासी—त इच्छामो ते जाया ! एगदिवसमवि रज्जसिरिं पासित्तए ।।

१६७. तए ण से महव्वले कुमारे अम्मापिउ-वयणमणुयत्तमाणे तुसिणीए सचिट्ठइ ।।

१६८. तए ण से वले राया कोडुवियपुरिसे सद्दावेइ, एव जहा सिवभद्दस्स तहेव सयाभिसेओ भाणियव्वो जाव[8] अभिसिंचति, करयलपरिग्गहिय[9] •दसनह सिरसावत्त मत्थए अजलि कट्टु° महव्वल कुमारं जएण विजएणं वद्धावेति, वद्धावेत्ता एवं वयासी—भण जाया ! किं देमो ? किं पयच्छामो ? सेस जहा जमालिस्स तहेव जाव[10]—

१६९. तए ण से महव्वले अणगारे धम्मघोसस्स अणगारस्स अतिय सामाइयमाइयाइ चोद्दस पुव्वाइं अहिज्जइ, अहिज्जित्ता वहूहि चउत्थ[11]-•छट्ठट्ठम-दसम-दुवाल-

---

१. स० पा०—कचुइज्जपुरिसो वि तहेव अक्खाति, नवर—धम्मघोसस्स अणगारस्स आगमणगहियविणिच्छए करयल जाव निग्गच्छइ। एव खलु देवाणप्पिया ! विमलस्स अरहओ पओप्पए धम्मघोसे नाम अणगारे, सेस तं चेव जाव सो वि तहेव।

२. भ० ९।१५८।

३. भ० ९।१५८।

४. भ० ९।१६०-१६२।

५ राय० सू० ६९३।

६. वुत्तपडिवत्तया (क्व)।

७ भ० ९।१६४-१७९।

८. भ० ११।५९-६२।

९ स० पा०—करयपलरिग्गहिय।

१०. भ० ९।१८०-२१५।

११ स० पा०—चउत्थ जाव विचित्तेहिं।

सेहिं मासद्ध-मासखमणेहिं° विचित्तेहिं तवोकम्मेहिं अप्पाणं भावेमाणे बहुपडिपुण्णाइं दुवालस वासाइं सामण्णपरियागं पाउणइ, पाउणित्ता मासियाए संलेहणाए अत्ताणं झूसित्ता, सट्ठिं भत्ताइं अणसणाए छेदेत्ता आलोइय-पडिक्कंते समाहिपत्ते कालमासे कालं किच्चा उड्ढं चंदिम-सूरिय-[1]°गहगण-नक्खत्त-तारारूवाणं बहूइं जोयणाइं, बहूइं जोयणसयाइं, बहूइं जोयणसहस्साइं, बहूइं जोयणसयसहस्साइं, बहूओ जोयणकोडीओ, बहूओ जोयणकोडाकोडीओ उड्ढं दूरं उप्पइत्ता सोहम्मीसाण-सणंकुमार-माहिंदे कप्पे वीईवइत्ता° बंभलोए कप्पे देवत्ताए उववन्ने। तत्थ णं अत्थेगतियाणं देवाणं दस सागरोवमाइं ठिती पण्णत्ता। तत्थ णं महब्बलस्स वि देवस्स दस सागरोवमाइं ठिती पण्णत्ता। से णं तुमं सुदंसणा! बंभलोगे कप्पे दस सागरोवमाइं दिव्वाइं भोगभोगाइं भुंजमाणे विहरित्ता तओ[2] देवलोगाओ आउक्खएणं भवक्खएणं ठिइक्खएणं अणंतरं चयं चइत्ता इहेव वाणियग्गामे नगरे सेट्ठिकुलंसि पुत्तत्ताए पच्चायाए॥

१७०. तए णं तुमे सुदंसणा! उम्मुक्कबालभावेणं विण्णय-परिणयमेत्तेणं जोव्वणगमणुप्पत्तेणं तहारूवाणं थेराणं अंतियं केवलिपण्णत्ते धम्मे निसंते, से वि य धम्मे इच्छिए, पडिच्छिए, अभिरुइए। तं सुट्ठु णं तुमं सुदंसणा! 'इदाणिं पि'[3] करेसि। से तेणट्ठेणं सुदंसणा! एवं वुच्चइ—अत्थि णं एतेसिं पलिओवम-सागरोवमाणं खएति वा अवचएति वा॥

१७१ तए णं तस्स सुदंसणस्स सेट्ठिस्स समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतियं एयमट्ठं सोच्चा निसम्म सुभेणं अज्झवसाणेणं सुभेणं[4] परिणामेणं लेसाहिं विसुज्झमाणीहिं तयावरणिज्जाणं कम्माणं खओवसमेणं ईहापूह-मग्गण-गवेसणं करेमाणस्स 'सण्णीपुव्वे जातीसरणे'[5] समुप्पन्ने, एयमट्ठं सम्मं अभिसमेति॥

१७२ तए णं से सुदंसणे सेट्ठी समणेणं भगवया महावीरेणं संभारियपुव्वभवे दुगुणाणीयसड्ढसंवेगे[6] आणंदंसुपुण्णनयणे समणं भगवं महावीरं तिक्खुत्तो आयाहिण-पयाहिणं करेइ, करेत्ता वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी—एवमेयं भंते[7]! °तहमेयं भंते! अवितहमेयं भंते! असंदिद्धमेयं भंते! इच्छियमेयं भंते! पडिच्छियमेयं भंते! इच्छिय-पडिच्छियमेयं भंते!°—से जहेयं तुब्भे वदह त्ति कट्टु उत्तरपुरत्थिमं दिसीभागं अवक्कमइ, सेसं जहा उसभदत्तस्स

---

१ सं० पा०—जहा अम्मडो जाव बंभलोए। औपपातिकादर्शेषु तद्वृत्तौ च नैष पाठो लभ्यते, तेन चिन्त्यमिदम्।

२. तओ चेव (अ), ताओ (ता, ब, म), ताओ चेव (स)।

३. इदाणि वि (अ, क, ख, ता, ब)।

४ सोभणेणं (ता)।

५. सण्णीपुव्वजाती° (अ, क, ता, ब, वृ)।

६. °सद्द° (म)।

७, सं० पा०—भंते जाव से।

जाव[1] सव्वदुक्खप्पहीणे, नवर—चोद्दस पुव्वाइ अहिज्जइ, वहुपडिपुण्णाइ दुवालस वासाइ सामण्णपरियाग पाउणइ, सेस तं चेव ॥

१७३. सेव भंते ! सेव भते ! त्ति[2] ॥

बारसमो उद्देसो

इसिभद्दपुत्त-पदं

१७४ तेण कालेणं तेण समएण आलभिया नाम नगरी होत्था—वण्णओ[3]। सखवणे चेइए—वण्णओ[4]। तत्थ ण आलभियाए नगरीए वहवे इसिभद्दपुत्तपामोक्खा समणोवासया परिवसति—अड्ढा जाव[5] वहुजणस्स अपरिभूया अभिगयजीवा-जीवा जाव[6] अहापरिग्गहिएहिं तवोकम्मेहि अप्पाण भावेमाणा विहरति ॥

१७५. तए ण तेसिं समणोवासयाणं अण्णया कयाइ एगयओ समुवागयाण सहियाणं सण्णिविट्ठाण[7] सण्णिसण्णाण अयमेयारूवे मिहोकहासमुल्लावे[8] समुप्पज्जित्था—देवलोगेसु ण अज्जो ! देवाण केवतिय काल ठिती पण्णत्ता ?

१७६. तए ण से इसिभद्दपुत्ते समणोवासए देवट्ठिती-गहियट्ठे ते समणोवासए एव वयासी—देवलोएसु ण अज्जो ! देवाणं जहण्णेण दसवाससहस्साइ ठिती पण्णत्ता, तेण पर समयाहिया, दुसमयाहिया, तिसमयाहिया जाव दससमयाहिया, सखेज्जसमयाहिया, असखेज्जसमयाहिया, उक्कोसेण तेत्तीस सागरोवमाइ ठिती पण्णत्ता। तेण पर वोच्छिण्णा देवा य देवलोगा य ॥

१७७ तए ण ते समणोवासया इसिभद्दपुत्तस्स समणोवासगस्स एवमाइक्खमाणस्स जाव एव परूवेमाणस्स एयमट्ठ नो सद्दहति नो पत्तियति नो रोयति, एयमट्ठ असद्दहमाणा अपत्तियमाणा अरोयमाणा जामेव दिस पाउब्भूया तामेव दिस पडिगया ॥

---

१ भ० ६।१५१।
२ भ० १।५१।
३ ओ० सू० १।
४ ओ० सू० २-१३।
५. भ० २।६४।
६ भ० २।६४।
७ समुवविट्ठाए (अ), समुविट्ठाण (ख, व, म, वृ) समुवेट्ठाण (ता), द्रष्टव्यम्—भ० ७।२१२।
८ मिहोकहासमुल्लावे अज्झत्थिए (अ, ख, म), अज्झत्थिए (व)।

१७८ तेण कालेण तेण समएण समणे भगव महावीरे जाव[1] समोसढे जाव[2] परिसा पज्जुवासइ। तए ण ते समणोवासया इमीसे कहाए लद्धट्ठा समाणा, हट्ठतुट्ठा •[3]अण्णमण्ण सद्दावेति, सद्दावेत्ता एव वयासी—एव खलु देवाणुप्पिया! समणे भगव महावीरे जाव[4] आलभियाए नगरीए अहापडिरूव ओग्गह ओगिण्हित्ता सजमेण तवसा अप्पाण भावेमाणे विहरइ।

त महप्फल खलु भो देवाणुप्पिया! तहारूवाण अरहताण भगवताण नामगोयस्स वि सवणयाए, किमग पुण अभिगमण-वदण-नमसण-पडिपुच्छण-पज्जुवासणाए? एगस्स वि आरियस्स धम्मियस्स सुवयणस्स सवणयाए, किमग पुण विउलस्स अट्ठस्स गहणयाए? त गच्छामो ण देवाणुप्पिया! समण भगव महावीर वदामो नमसामो सक्कारेमो सम्माणेमो कल्लाण मगल देवयं चेइय पज्जुवासामो।

एय णे पेच्चभवे इहभवे य हियाए सुहाए खमाए निस्सेयसाए आणुगामियत्ताए भविस्सइ त्ति कट्टु अण्णमण्णस्स अतिए एयमट्ठ पडिसुणेति, पडिसुणेत्ता जेणेव सयाइ-सयाइ गिहाइ तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता ण्हाया कयबलिकम्मा कयकोउय-मगल-पायच्छित्ता सुद्धप्पावेसाइं मगल्लाइ वत्थाइ पवर परिहिया अप्पमहग्घाभरणालकियसरीरा सएहि-सएहि गिहेहितो पडिनिक्खमति, पडिनिक्खमित्ता एगयओ मेलायति, मेलायित्ता पायविहारचारेण आलभियाए नगरीए मज्झमज्झेण निग्गच्छति, निग्गच्छित्ता जेणेव सखवणे चेइए, जेणेव समणे भगव महावीरे, तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता समण भगव महावीर जाव[5] तिविहाए पज्जुवासणाए° पज्जुवासति। तए ण समणे भगव महावीरे तेसि समणोवासगाण तीसे य महतिमहालियाए परिसाए 'धम्म परिकहेइ'[6] जाव[7] आणाए आराहए भवइ॥

१७९ तए ण ते समणोवासया समणस्स भगवओ महावीरस्स अतिय धम्म सोच्चा निसम्म हट्ठतुट्ठा उट्ठाए उट्ठेति, उट्ठेत्ता समण भगव महावीर वदति नमसति, वदित्ता नमसित्ता एव वदासी—एव खलु भते! इसिभद्दपुत्ते समणोवासए अम्ह एवमाइक्खइ जाव[8] परूवेइ—देवलोएसु ण अज्जो! देवाण जहण्णेण दस

---

१. भ० १।७।
२ ओ० सू० २२-५२।
३ स० पा०—एव जहा तुगियउद्देसए जाव पज्जुवासति।
४. ओ० सू० ५२।
५. भ० २।९७।
६ धम्मकहा (अ, क, ख, ता, ब, म, स)।
७. ओ० सू० ७१-७७।
८ भ० १।४२०।

वाससहस्साइ ठिती पण्णत्ता, तेण पर समयाहिया जाव[1] तेण पर वोच्छिण्णा देवा य देवलोगा य ।

१८० से कहमेय भते ! एव ?
अज्जोति ! समणे भगव महावीरे ते समणोवासए एव वयासी—जण्ण अज्जो ! इसिभद्दपुत्ते समणोवासए तुब्भ एवमाइक्खइ जाव परूवेइ—देवलोएसु ण देवाणं जहण्णेण दस वाससहस्साइ ठिती पण्णत्ता, तेण पर समयाहिया जाव तेण पर वोच्छिण्णा देवा य देवलोगा य—सच्चे ण एसमट्ठे, अह 'पि ण'[2] अज्जो ! एवमाइक्खामि जाव[3] परूवेमि—देवलोएसु ण अज्जो ! देवाण जहण्णेण दस वाससहस्साइ [4]०ठिती पण्णत्ता, तेण पर समयाहिया, दुसमयाहिया, तिसमयाहिया जाव दससमियाहिया, सखेज्जसमयाहिया, असखेज्जसमयाहिया, उक्कोसेण तेत्तीस सागरोवमाइ ठिती पण्णत्ता० । तेण पर वोच्छिण्णा देवा य देवलोगा य—'सच्चे ण एसमट्ठे'[5] ॥

१८१. तए ण ते समणोवासगा समणस्स भगवओ महावीरस्स अतिय एयमट्ठ सोच्चा निसम्म समण भगव महावीर वदति नमसति, वदित्ता नमसित्ता[6] जेणेव इसिभद्दपुत्ते समणोवासए तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता इसिभद्दपुत्त समणोवासग वदति नमंसति, वदित्ता नमसित्ता एयमट्ठ सम्म विणएणं भुज्जो-भुज्जो खामेति । तए ण ते समणोवासया पसिणाइ पुच्छति, पुच्छित्ता अट्ठाइ परियादियति, परियादियित्ता समण भगव महावीर वदति नमसति, वदित्ता नमसित्ता जामेव दिस पाउब्भूया तामेव दिस पडिगया ॥

१८२ भतेति ! भगव गोयमे समण भगव महावीरं वदइ नमसइ, वदित्ता नमसित्ता एव वयासी—पभू ण भते ! इसिभद्दपुत्ते समणोवासए देवाणुप्पियाण अतिय मुडे भवित्ता अगाराओ अणगारिय पव्वइत्तए ?
नो इणट्ठे समट्ठे गोयमा ! इसिभद्दपुत्ते समणोवासए बहूहि सीलव्वय-गुण[7]-वेरमण-पच्चक्खाण-पोसहोववासेहि अहापरिग्गहिएहिं तवोकम्मेहिं अप्पाण भावेमाणे बहूइ वासाइ समणोवासगपरियाग पाउणिहिति, पाउणित्ता मासियाए सलेहणाए अत्ताण झूसेहिति, झूसेत्ता सट्ठि भत्ताइ अणसणाए छेदेहिति, छेदेत्ता आलोइय-पडिक्कते समाहिपत्ते कालमासे काल किच्चा सोहम्मे कप्पे अरुणाभे

---

१ भ० ११।१७६।
२. पुण (अ, स) ।
३ भ० १।४२१।
४ स० पा०—त चेव जाव तेण ।
५ सच्चमेसे अट्ठे (क, ख, ता, व, म) ।
६ नमसित्ता उट्ठाते उट्ठेति २ (ता) ।
७ गुणव्वय (ख, व, म) ।

विमाणे देवत्ताए उववज्जिहिति । तत्थ ण अत्थेगतियाण देवाण चत्तारि पलिओवमाइ ठिती पण्णत्ता । तत्थ ण इसिभद्दपुत्तस्स वि देवस्स चत्तारि पलिओवमाइ ठिती भविस्सति ।।

१८३ से ण भते ! इसिभद्दपुत्ते देवे ताओ देवलोगाओ आउक्खएण भवक्खएण ठिइक्खएण[1] •अणतर चय चइत्ता कहि गच्छिहिति ?° कहि उववज्जिहिति ? गोयमा ! महाविदेहे वासे सिज्झिहिति[2] •बुज्झिहिति मुच्चिहिति परिणिव्वाहिति सव्वदुक्खाण° अत काहिति ।।

१८४ सेव भते ! सेव भते ! त्ति भगव गोयमे जाव[3] अप्पाण भावेमाणे विहरइ ।।

१८५ तए ण समणे भगव महावीरे अण्णया कयाइ आलभियाओ नगरीओ सखवणाओ चेइयाओ पडिनिक्खमइ, पडिनिक्खमित्ता बहिया जणवयविहार विहरइ ।।

पोग्गल-परिव्वायग-पदं

१८६ तेण कालेण तेण समएण आलभिया नाम नगरी होत्था—वण्णओ[4] । तत्थ ण सखवणे नाम चेइए होत्था—वण्णओ[5] । तस्स ण सखवणस्स चेइयस्स अदूरसामते पोग्गले नाम परिव्वायए[6]—रिउव्वेद-जजुव्वेद जाव[7] बभण्णएसु परिव्वायएसु य नएसु सुपरिनिट्ठिए छट्ठछट्ठेण अणिक्खित्तेण तवोकम्मेणं उड्ढ बाहाओ[8] •पगिज्झिय-पगिज्झिय सूराभिमुहे आयावणभूमीए° आयावेमाणे विहरइ ।।

१८७ तए ण तस्स पोग्गलस्स परिव्वायगस्स छट्ठछट्ठेण[9] •अणिक्खित्तेण तवोकम्मेण उड्ढ बाहाओ पगिज्झिय-पगिज्झिय सूराभिमुहे आयावणभूमीए° आयावेमाणस्स पगइभद्दयाए[10] •पगइउवसतयाए पगइपयणुकोहमाणमायालोभाए मिउमद्दवसपन्नयाए अल्लीणयाए विणीययाए अण्णया कयाइ तयावरणिज्जाण कम्माण खओवसमेण ईहापूह-मग्गण-गवेसण करेमाणस्स° विब्भगे नाम नाणे[11] समुप्पन्ने । से ण तेण विब्भगेण नाणेण समुप्पन्नेण बभलोए कप्पे देवाण ठिति जाणइ-पासइ ।।

१८८ तए ण तस्स पोग्गलस्स परिव्वायगस्स अयमेयारूवे अज्झत्थिए[12] •चितिए पत्थिए मणोगए सकप्पे° समुप्पज्जित्था—अत्थि ण मम अतिसेसे नाणदसणे

---

१ स० पा०—ठिइक्खएण जाव कहि ।
२ स० पा०—सिज्झिहिति जाव अत ।
३ भ० १।५१।
४ ओ० सू० १ ।
५. ओ० सू० २-१३ ।
६. परिव्वायए परिवसति (अ, स) ।
७ भ० २।२४ ।
८ स० पा०—बाहाओ जाव आयावेमाणे ।
९ स० पा०—छट्ठछट्ठेण जाव आयावेमाणस्स
१० स० पा०—जहा सिवस्स जाव विब्भगे ।
११ अण्णाणे (अ) ।
१२. स० पा०—अज्झत्थिए जाव समुप्पज्जित्था ।

समुप्पन्ने, देवलोएसु ण देवाण जहण्णेणं दस वाससहस्साइ ठिती पण्णत्ता, तेण पर समयाहिया, दुसमयाहिया जाव असखेज्जसमयाहिया, उक्कोसेणं दससागरोवमाइ ठिती पण्णत्ता। तेण परं वोच्छिण्णा देवा य देवलोगा य—एव सपेहेइ, सपेहेत्ता आयावणभूमीओ पच्चोरुहइ, पच्चोरुहित्ता 'तिदड च कुडिय च'[1] जाव[2] धाउरत्ताओ य गेण्हइ, गेण्हित्ता जेणेव आलभिया नगरी, जेणेव परिव्वायगावसहे, तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता भडनिक्खेव करेइ, करेत्ता आलभियाए नगरीए सिघाडग[3]-•तिग-चउक्क-चच्चर-चउम्मुह-महापह°-पहेसु अण्णमण्णस्स एवमाइक्खइ जाव परूवेइ—अत्थि ण देवाणुप्पिया! मम अतिसेसे नाणदसणे समुप्पन्ने, देवलोएसु ण देवाण जहण्णेण दसवाससहस्साइ [4]•ठिती पण्णत्ता, तेण पर समयाहिया, दुसमयाहिया, जाव असखेज्जसमयाहिया, उक्कोसेण दससागरोवमाइ ठिती पण्णत्ता। तेण पर° वोच्छिण्णा देवा य देवलोगा य॥

१८९. तए ण [5]•पोग्गलस्स परिव्वायगस्स अतिय एयमट्ठ सोच्चा निसम्म आलभियाए नगरीए सिंघाडग-तिग-चउक्क-चच्चर-चउम्मुह-महापह-पहेसुबहुजणो अण्णमण्णस्स एवमाइक्खइ जाव परूवेइ—एव खलु देवाणुप्पिया! पोग्गले परिव्वायए एवमाइक्खइ जाव परूवेइ—अत्थि ण देवाणुप्पिया! मम अतिसेसे नाणदसणे समुप्पन्ने, एव खलु देवलोएसु ण देवाण जहण्णेण दसवाससहस्साइ ठिती पण्णत्ता, तेण पर समयाहिया, दुसमयाहिया जाव असखेज्जसमयाहिया, उक्कोसेण दससागरोवमाइ ठिती पण्णत्ता। तेण पर वोच्छिण्णा देवा य देवलोगा य।° से कहमेय मन्ने एव?

१९० सामी समोसढे[6], •परिसा निग्गया। धम्मो कहिओ, °परिसा पडिगया। भगव गोयमे तहेव भिक्खायरियाए तहेव बहुजणसद्द निसामेइ, निसामेत्ता तहेव सव्व भाणियव्व जाव[7] अह पुण गोयमा! एवमाइक्खामि, एव भासामि जाव परूवेमि—देवलोएसु ण देवाण जहण्णेण दस वाससहस्साइ ठिती पण्णत्ता, तेण पर समयाहिया, दुसमयाहिया जाव असखेज्जसमयाहिया, उक्कोसेण तेत्तीस सागरोवमाइ ठिती पण्णत्ता। तेण पर वोच्छिण्णा देवा य देवलोगा य॥

१९१ अत्थि ण भते! सोहम्मे कप्पे दव्वाइं—सवण्णाइ पि अवण्णाइ पि, •[8]सगधाइ पि अगधाइ पि, सरसाइ पि अरसाइ पि, सफासाइ पि अफासाइं

---

१. तिदडकुडिय (अ क, ख, ता, व, म, स)।
२. भ० २।३१।
३. स० पा०—सिघाडग जाव पहेसु।
४. स० पा०—तहेव जाव वोच्छिण्णा।
५. स० पा०—आलभियाए नगरीए एव एएणं अभिलावेण जहा सिवस्स त चेव जाव से।
६ स० पा०—समोसढे जाव परिसा।
७ भ० ११।७५-७७।
८ स० पा०—तहेव जाव हता।

पि अण्णमण्णबद्धाइ अण्णमण्णपुट्ठाइ अण्णमण्णबद्धपुट्ठाइ अण्णमण्णघडत्ताए चिट्ठति ? ०

हत्ता अत्थि ।

एव ईसाणे वि, एवं जाव[1] अच्चुए, एव गेवेज्जविमाणेसु, अणुत्तरविमाणेसु वि, ईसिपब्भाराए वि जाव ?

हता अत्थि ॥

१९२. तए ण सा महतिमहालिया परिसा जाव[2] जामेव दिसि पाउब्भूया तामेव दिस पडिगया ॥

१९३ तए ण आलभियाए नगरीए सिंघाडग-तिग-[3]•चउक्क-चच्चर-चउम्मुह-महापह-पहेसु बहुजणो अण्णमण्णस्स एवमाइक्खइ जाव परूवेइ जण्ण देवाणुप्पिया ! पोग्गले परिव्वायए एवमाइक्खइ जाव परूवेइ—अत्थि ण देवाणुप्पिया ! मम अतिसेसे नाणदसणे समुप्पन्ने, एव खलु देवलोएसु ण देवाण जहण्णेण दस वाससहस्साइ ठिती पण्णत्ता, तेण पर समयाहिया, दुसमयाहिया जाव असखेज्जसमयाहिया, उक्कोसेण दससागरोवमाइ ठिती पण्णत्ता । तेण पर वोच्छिण्णा देवा य देवलोगा य । त नो इणट्ठे समट्ठे । समणे भगव महावीरे एवमाइक्खइ जाव[4] देवलोएसु ण देवाण जहण्णेण दस वाससहस्साइ ठितो पण्णत्ता, तेण पर समयाहिया, दुसमयाहिया जाव असखेज्जसमयाहिया, उक्कोसेण तेत्तीस सागरोवमाइ ठिती पण्णत्ता । तेण पर वोच्छिण्णा देवा य देवलोगा य ॥

१९४ तए ण से पोग्गले परिव्वायए बहुजणस्स अतिय एयमट्ठ सोच्चा निसम्म सकिए कखिए वितिगिच्छिए भेदसमावन्ने कलुससमावन्ने जाए यावि होत्था । तए ण तस्स पोग्गलस्स परिव्वायगस्स सकियस्स कखियस्स वितिगिच्छियस्स भेदसमावन्नस्स कलुससमावन्नस्स से विभगे नाणे खिप्पामेव पडिवडिए ॥

१९५ तए ण तस्स पोग्गलस्स परिव्वायगस्स अयमेयारूवे अज्झत्थिए चिंतिए पत्थिए मणोगए सकप्पे समुप्पज्जित्था—एव खलु समणे भगव महावीरे आदिगरे तित्थगरे जाव[5] सव्वण्णू सव्वदरिसी आगासगएण चक्केण जाव[6] सखवणे चेइए

---

१. भ० ११।९४ ।

२. भ० ११।८२ ।

३. स० पा०—अवसेस जहा सिवस्स जाव सव्वदुक्खप्पहीणे, नवर—तिदडकुडिय जाव धाउरत्तवत्थपरिहिए परिवडियविब्भगे आलभिय नगरिं मज्झमज्झेण निग्गच्छइ जाव उत्तरपुरत्थिम दिसीभाग अवक्कमइ २ तिदडकुडिय च जहा खदओ जाव पव्वइओ सेस जहा सिवस्स जाव ।

४. भ० ११।८३, १९० ।

५ भ० १।७ ।

६. ओ० सू० १६।

अहापडिरूवं ओग्गहं ओगिण्हित्ता संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे विहरइ, तं महप्फलं खलु तहारूवाणं अरहंताणं भगवंताणं नामगोयस्स वि सवणयाए, किमंग पुण अभिगमण-वंदण-नमंसण-पडिपुच्छण-पज्जुवासणयाए ? एगस्स वि आरियस्स धम्मियस्स सुवयणस्स सवणयाए, किमंग पुण विउलस्स अट्ठस्स गहणयाए ? तं गच्छामि णं समणं भगवं महावीरं वंदामि जाव[1] पज्जुवासामि, एयं णे इहभवे य परभवे य हियाए सुहाए खमाए निस्सेयसाए आणुगामियत्ताए भविस्सइ त्ति कट्टु एवं संपेहेइ, संपेहेत्ता जेणेव परिव्वायगावसहे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता परिव्वायगावसहं अणुप्पविसइ, अणुप्पविसित्ता तिदंडं च कुंडियं च जाव[2] धाउरत्ताओ य गेण्हइ, गेण्हित्ता परिव्वायगावसहाओ पडिनिक्खमइ, पडिनिक्खमित्ता पडिवडियविब्भंगे आलभियं नगरिं मज्झंमज्झेणं निग्गच्छइ, निग्गच्छित्ता जेणेव संखवणे चेइए, जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता समणं भगवं महावीरं तिक्खुत्तो वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता नच्चासन्ने नातिदूरे सुस्सूसमाणे नमंसमाणे अभिमुहे विणएणं पंजलिकडे पज्जुवासइ ॥

१९६. तए णं समणे भगवं महावीरे पोग्गलस्स परिव्वायगस्स तीसे य महतिमहालियाए परिसाए धम्मं परिकहेइ जाव[3] आणाए आराहए भवइ ॥

१९७. तए णं से पोग्गले परिव्वायए समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतियं धम्मं सोच्चा निसम्म जहा खंदओ जाव[4] उत्तरपुरत्थिमं दिसीभागं अवक्कमइ, अवक्कमित्ता तिदंडं च कुंडियं च जाव[5] धाउरत्ताओ य एगंते एडेइ, एडेत्ता सयमेव पंचमुट्ठियं लोयं करेइ, करेत्ता समणं भगवं महावीरं तिक्खुत्तो आयाहिण-पयाहिणं करेइ, करेत्ता वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता एवं जहेव उसभदत्तो तहेव[6] पव्वइओ, तहेव[7] एक्कारस अंगाइं अहिज्जइ, तहेव सव्वं जाव[8] सव्वदुक्खप्पहीणे ॥

१९८. भंतेति ! भगवं गोयमे समणं भगवं महावीरं वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी—जीवा णं भंते ! सिज्झमाणा कयरम्मि संघयणे सिज्झंति ?
गोयमा ! वइरोसभणारायसंघयणे सिज्झंति, एवं जहेव ओववाइए तहेव ।

---

१. भ० २।३० ।
२. भ० २।३१ ।
३ ओ० सू० ७१-७७ ।
४. भ० २।५२ ।
५. भ० २।३१ ।
६. भ० ९।१५०,१५१ ।
७. भ० ९।१५१ ।
८. भ० ९।१५१ ।

सघयण सठाण, उच्चत्त ग्राउय च परिवसणा ।
एव सिद्धिगडिया निरवसेसा भाणियव्वा° जाव[1]—
ग्रव्वावाह सोक्ख, ग्रणुभवति सासय सिद्धा ।।

१६६ सेव भते ! सेव भते ! त्ति[2] ।।

---

१. ग्रो० सू० १६५ । २ भ० १।५१ ।

बारसमं सतं

पढमो उद्देसो

१ संखे २ जयंति ३. पुढवि ४ पोग्गल ५ अइवाय ६. राहु ७ लोगे य ।
८ नागे य ९. देव १० आया, बारसमसए दसुद्देसा ॥१॥

संख-पोक्खली-पदं

१ तेणं कालेणं तेणं समएणं सावत्थी नामं नगरी होत्था—वण्णओ[1] । कोट्ठए चेइए —वण्णओ[2] । तत्थ णं सावत्थीए नगरीए बहवे संखप्पामोक्खा समणोवासया परिवसंति—अड्ढा जाव[3] बहुजणस्स अपरिभूया, अभिगयजीवाजीवा जाव[4] अहापरिग्गहिएहिं तवोकम्मेहिं अप्पाणं भावेमाणा विहरंति । तस्स णं संखस्स समणोवासगस्स उप्पला नामं भारिया होत्था—सुकुमालपाणिपाया जाव[5] सुरूवा, समणोवासिया अभिगयजीवाजीवा जाव अहापरिग्गहिएहिं तवोकम्मेहिं अप्पाणं भावेमाणी विहरइ । तत्थ णं सावत्थीए नगरीए पोक्खली नामं समणोवासए परिवसइ—अड्ढे, अभिगयजीवाजीवे जाव अहापरिग्गहिएहिं तवोकम्मेहिं अप्पाणं भावेमाणे विहरइ ॥

२ तेणं कालेणं तेणं समएणं सामी समोसढे । परिसा जाव[6] पज्जुवासइ । तए णं ते समणोवासगा इमीसे कहाए लद्धट्ठा समाणा जहा आलभियाए जाव[7] पज्जुवासंति । तए णं समणे भगवं महावीरे तेसिं समणोवासगाणं तीसे य महतिमहालियाए परिसाए 'धम्मं परिकहेइ'[8] जाव[9] परिसा पडिगया ॥

३. तए णं ते समणोवासगा समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतियं धम्मं सोच्चा निसम्म हट्ठतुट्ठा समणं भगवं महावीरं वंदंति नमंसंति, वंदित्ता नमंसित्ता पसि-

---

१. ओ० सू० १ ।
२. ओ० सू० २-१३ ।
३. भ० २।९४ ।
४. भ० २।९४ ।
५ ओ० सू० १५ ।
६. ओ० सू० ५२ ।
७. भ० ११।१७८ ।
८. धम्मकहा (अ, क, ख, ता, ब, म, स) ।
९. ओ० सू० ७१-७९ ।

णाइं पुच्छंति, पुच्छित्ता अट्ठाइं परियादियंति[1], परियादियित्ता उट्ठाए उट्ठेंति, उट्ठेत्ता समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतियाओ कोट्ठयाओ चेइयाओ पडिनिक्खमंति, पडिनिक्खमित्ता जेणेव सावत्थी नगरी तेणेव पहारेत्थ गमणाए ।।

४ तए णं से संखे समणोवासए ते समणोवासए एवं वयासी—तुब्भे णं देवाणुप्पिया ! विपुलं 'असणं पाणं खाइमं साइमं'[2] उवक्खडावेह । तए णं अम्हे तं विपुलं असणं पाणं खाइमं साइमं अस्साएमाणा[3] विस्साएमाणा 'परिभाएमाणा परिभुंजेमाणा'[4] पक्खियं पोसहं[5] पडिजागरमाणा विहरिस्सामो ।।

५ तए णं ते समणोवासगा संखस्स समणोवासगस्स एयमट्ठं विणएणं पडिसुणेंति ।।

६. तए णं तस्स संखस्स समणोवासगस्स अयमेयारूवे अज्झत्थिए[6] •चिंतिए पत्थिए मणोगए संकप्पे° समुप्पज्जित्था—नो खलु मे सेयं तं विपुलं असणं पाणं खाइमं[7] साइमं अस्साएमाणस्स विस्साएमाणस्स परिभाएमाणस्स परिभुंजेमाणस्स पक्खियं पोसहं[8] पडिजागरमाणस्स विहरित्तए, सेयं खलु मे पोसहसालाए पोसहियस्स बंभचारिस्स ओमुक्कमणि[9]-सुवण्णस्स ववगयमाला[10]-वण्णग-विलेवणस्स निक्खित्तसत्थ-मुसलस्स एगस्स अबिइयस्स दब्भसंथारोवगयस्स पक्खियं पोसहं पडिजागरमाणस्स विहरित्तए त्ति कट्टु एवं संपेहेइ, संपेहेत्ता जेणेव सावत्थी नगरी, जेणेव सए गिहे, जेणेव उप्पला समणोवासिया, तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता उप्पलं समणोवासियं आपुच्छइ, आपुच्छित्ता जेणेव पोसहसाला तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता पोसहसालं अणुपविस्सइ, अणुपविस्सित्ता पोसहसालं पमज्जइ, पमज्जित्ता उच्चारपासवणभूमिं पडिलेहेइ, पडिलेहेत्ता दब्भसंथारगं संथरइ, संथरित्ता दब्भसंथारगं दुरुहइ, दुरुहित्ता पोसहसालाए पोसहिए बंभचारी[11] •ओमुक्कमणि-सुवण्णे ववगयमाला-वण्णगविलेवणे निक्खित्तसत्थ-मुसले एगे अबिइए दब्भसंथारोवगए° पक्खियं पोसहं पडिजागरमाणे विहरइ ।।

७ तए णं ते समणोवासगा जेणेव सावत्थी नगरी जेणेव साइं-साइं गिहाइं, तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता विपुलं असणं पाणं खाइमं साइमं उवक्खडावेंति, उवक्खडावेत्ता अण्णमण्णं सद्दावेंति, सद्दावेत्ता एवं वयासी—एवं खलु देवाणु-

---

१. पडियाइयंति (ता) ।
२. असणपाणखाइमसाइमं (क, ख, ता, ब, म) ।
३. आसाएमाणा (स) ।
४ परिभुंजेमाणा परिभाएमाणा (अ, क, ख, स), परिभुंजमाणा परियाभाएमाणा (ता) ।
५ पोसहियं (त) (ख, ता, म) ।
६. सं० पा०—अज्झत्थिए जाव समुप्पज्जित्था ।
७ जाव (अ, क, ख, ता, ब, म, स) ।
८ पोसहियं (ख, ता, म,) ।
६ उम्मुक्क° (ब, म) ।
१० °मल्लग (ता) ।
११. सं० पा०—बंभचारी जाव पक्खियं ।

प्पिया ! अम्हेहि से विउले असण-पाण-खाइम-साइमे उवक्खडाविए, सखे य णं समणोवासए नो हव्वमागच्छइ, त सेय खलु देवाणुप्पिया ! अम्ह सख समणोवासग सद्दावेत्तए ॥

८ तए ण से पोक्खली समणोवासए 'ते समणोवासए'[1] एव वयासी—अच्छह ण तुब्भे देवाणुप्पिया ! सुनिव्वुय[2]-वीसत्था, अहण्ण सख समणोवासग सद्दावेमि त्ति कट्टु तेसि समणोवासगाणं अतियाओ पडिनिक्खमइ, पडिनिक्खमित्ता सावत्थीए नगरीए मज्झमज्झेण जेणेव सखस्स समणोवासगस्स गिहे, तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सखस्स समणोवासगस्स गिह अणुपविट्ठे ॥

९. तए ण सा उप्पला समणोवासिया पोक्खलि समणोवासय एज्जमाण पासइ, पासित्ता हट्ठतुट्ठा आसणाओ अब्भुट्ठेइ, अब्भुट्ठेत्ता सत्तट्ठ पयाइ अणुगच्छइ, अणुगच्छित्ता पोक्खलि समणोवासग वदति नमसति, वदित्ता नमसित्ता आसणेण उवनिमतेइ[3], उवनिमतेत्ता एव वयासी—सदिसतु ण देवाणुप्पिया ! किमागमणप्पयोयण ?

१०. तए ण से पोक्खली समणोवासए उप्पल समणोवासिय एव वयासी—कहिण्ण[4] देवाणुप्पिया ! सखे समणोवासए ?

११ तए ण सा उप्पला समणोवासिया पोक्खलि समणोवासय एव वयासी—एव खलु देवाणुप्पिया ! सखे समणोवासए पोसहसालाए पोसहिए वभचारी[5] •ओमुक्कमणि-सुवण्णे ववगयमाला-वण्णग-विलेवणे निक्खित्तसत्थ-मुसले एगे अविइए दब्भसथारोवगए पक्खिय पोसह पडिजागरमाणे° विहरइ ॥

१२ तए ण से पोक्खली समणोवासए जेणेव पोसहसाला, जेणेव सखे समणोवासए, तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता गमणागमणाए पडिक्कमइ, पडिक्कमित्ता सख समणोवासग वदइ नमसइ, वंदित्ता नमसित्ता एव वयासी—एव खलु देवाणुप्पिया ! अम्हेहि से विउले असण-पाण-खाइम-साइमे उवक्खडाविए, त गच्छामो ण[6] देवाणुप्पिया ! तं विउल असण[7] •पाण खाइम° साइम अस्साएमाणा[8] •विस्साएमाणा परिभाएमाणा परिभुजेमाणा पक्खिय पोसह° पडिजागरमाणा विहरामो ॥

१३. तए णं से सखे समणोवासए पोक्खलिं समणोवासग एव वयासी—नो खलु

---

१. × (ख, ता, व, म) ।
२. सुनिव्वुया (अ, स) ।
३. निमतेइ (ता) ।
४. कहि ण (अ, क, ख, ता, व, म) ।
५. सं० पा०—वभचारी जाव विहरइ ।
६ × (क, ख, ता, व, म) ।
७ स० पा०—असण जाव साइम ।
८. स० पा०—अस्साएमाणा जाव पडिजागरमाणा ।

कप्पइ देवाणुप्पिया ! त विउल असण पाण खाइम साइम अस्साएमाणस्स[1] •विस्साएमाणस्स परिभाएमाणस्स परिभुजेमाणस्स पक्खिय पोसह° पडिजागरमाणस्स विहरित्तए, कप्पइ मे पोसहसालाए पोसहियस्स[2] •बभचारिस्स ओमुक्कमणि-सुवण्णस्स ववगयमाला-वण्णग-विलेवणस्स निक्खत्तसत्थ-मुसलस्स एगस्स अविइयस्स दब्भसथारोवगयस्स पक्खिय पोसह पडिजागरमाणस्स° विहरित्तए, 'त छदेण'[3] देवाणुप्पिया ! तुब्भे त विउल असण पाण खाइम साइम अस्साएमाणा[4] •विस्साएमाणा परिभाएमाणा परिभुजेमाणा पक्खिय पोसह पडिजागरमाणा° विहरह ।।

१४ तए ण से पोक्खली समणोवासए सखस्स समणोवासगस्स अतियाओ पोसहसालाओ पडिनिक्खमइ, पडिनिक्खमित्ता सावत्थि नगरिं मज्झमज्झेण जेणेव ते समणोवासगा तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता ते समणोवासए एव वयासी—एव खलु देवाणुप्पिया ! सखे समणोवासए पोसहसालाए पोसहिए जाव[5] विहरइ, त छदेण देवाणुप्पिया ! तुब्भे विउल असण[6] •पाण खाइम साइम अस्साएमाणा विस्साएमाणा परिभाएमाणा परिभुजेमाणा पक्खिय पोसह पडिजागरमाणा° विहरह, सखे ण समणोवासए नो हव्वमागच्छइ । तए ण ते समणोवासगा त विउल असण पाण खाइम साइम अस्साएमाणा जाव विहरति ।।

१५ तए ण तस्स सखस्स समणोवासगस्स पुव्वरत्तावरत्तकालसमयसि धम्मजागरिय जागरमाणस्स अयमेयारूवे[7] •अज्झत्थिए चिंतिए पत्थिए मणोगए सकप्पे° समुप्पज्जित्था—सेय खलु मे कल्ल पाउप्पभायाए रयणीए जाव[8] उट्ठियम्मि सूरे सहस्सरस्सिम्मि दिणयरे तेयसा जलते समण भगव महावीर वदित्ता नमसित्ता जाव[9] पज्जुवासित्ता तओ पडिनियत्तस्स पक्खिय पोसह पारित्तए त्ति कट्टु एव सपेहेइ, सपेहेत्ता कल्ल पाउप्पभायाए रयणीए जाव उट्ठियम्मि सूरे सहस्सरस्सिम्मि दिणयरे तेयसा जलते पोसहसालाओ पडिनिक्खमइ, पडिनिक्खमित्ता सुद्धप्पावेसाइ मगल्लाइ वत्थाइ पवर[10] परिहिए साओ गिहाओ पडिनिक्खमइ, पडिनिक्खमित्ता पायविहारचारेण सावत्थि नगरिं मज्झमज्झेण[11] •निग्गच्छइ,

---

१ स० पा०—अस्साएमाणस्स जाव पडिजागरमाणस्स ।

२ स० पा०—पोसहियस्स जाव विहरित्तए ।

३ तत्थ ण (अ), त ण छदेण (ख) ।

४ स० पा०—अस्साएमाणा जाव विहरह ।

५ भ० १२।६ ।

६ स० पा०—असण ४ जाव विहरह ।

७ स० पा०—अयमेयारूवे जाव समुप्पज्जित्था ।

८ भ० २।६६ ।

९ भ० २।३१ ।

१० × (व) ।

११ स० पा०—मज्झमज्झेण जाव पज्जुवासति अभिगमो नत्थि ।

निग्गच्छित्ता जेणेव कोट्ठए चेइए, जेणेव समणे भगवं महावीरे, तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता तिक्खुत्तो आयाहिण-पयाहिणं करेइ, करेत्ता वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता तिविहाए पज्जुवासणाए° पज्जुवासंति ॥

१६. तए णं ते समणोवासगा कल्लं पाउप्पभायाए रयणीए जाव[1] उट्ठियम्मि सूरे सहस्सरस्सिम्मि दिणयरे तेयसा जलंते ण्हाया कयबलिकम्मा जाव[2] अप्पमहग्घाभरणालंकियसरीरा सएहिं-सएहिं गिहेहिंतो पडिनिक्खमंति, पडिनिक्खमित्ता एगयओ मेलायंति[3], मेलायित्ता [4]•पायविहारचारेणं सावत्थीए नगरीए मज्झंमज्झेणं निग्गच्छंति, निग्गच्छित्ता जेणेव कोट्ठए चेइए, जेणेव समणे भगवं महावीरे, तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता समणं भगवं महावीरं जाव[5] तिविहाए पज्जुवासणाए° पज्जुवासंति ॥

१७ तए णं समणे भगवं महावीरे तेसिं समणोवासगाणं तीसे य महतिमहालियाए परिसाए 'धम्मं परिकहेइ'[6] जाव[7] आणाए आराहए भवइ ॥

१८ तए णं ते समणोवासगा समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतियं धम्मं सोच्चा निसम्म हट्ठतुट्ठा उट्ठाए उट्ठेंति, उट्ठेत्ता समणं भगवं महावीरं वंदंति नमंसंति, वंदित्ता नमंसित्ता जेणेव संखे समणोवासए, तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता संखं समणोवासयं एवं वयासी—तुमं णं देवाणुप्पिया ! हिज्जो अम्हे अप्पणा चेव एवं वयासी—तुम्हे णं देवाणुप्पिया ! विउलं असणं[8] •पाणं खाइमं साइमं उवक्खडावेह । तए णं अम्हे तं विपुलं असणं पाणं खाइमं साइमं अस्साएमाणा विस्साएमाणा परिभाएमाणा परिभुंजेमाणा पक्खियं पोसहं पडिजागरमाणा° विहरिस्सामो । तए णं तुमं पोसहसालाए[9] •पोसहिए बंभचारी ओमुक्कमणि-सुवण्णे ववगयमाला-वण्णग-विलेवणे निक्खित्तसत्थ-मुसले एगे अबिइए दब्भसंथारोवगए पक्खियं पोसहं पडिजागरमाणे° विहरिए, तं सुट्ठु णं तुमं देवाणुप्पिया ! अम्हे हीलसि[10] ॥

१९ अज्जोति ! समणे भगवं महावीरे ते समणोवासए एवं वयासी— मा णं अज्जो ! तुब्भे संखं समणोवासगं हीलह निंदह खिंसह गरहह अवमण्णह । संखे णं समणोवासए पियधम्मे चेव, दढधम्मे चेव, सुदक्खुजागरियं जागरिए ॥

---

१. भ० २।६६ ।
२ भ० २।६७ ।
३. मिलायंति (अ, ख, व, स) ।
४. सं० पा०—सेसं जहा पढमं जाव पज्जुवासंति ।
५. भ० २।६७ ।
६. धम्मकहा (अ, क, ख, ता, ब, म, स) ।
७. ओ० सू० ७१-७७ ।
८ सं० पा०—असणं जाव विहरिस्सामो ।
९ सं० पा०—पोसहसालाए जाव विहरिए ।
१०. हीलेसि (अ, स) ।

२० भंतेति ! भगवं गोयमे समणं भगवं महावीरं वंदइ नमसइ, वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी—कतिविहा णं भंते ! जागरिया पण्णत्ता ?
गोयमा ! तिविहा जागरिया पण्णत्ता, तं जहा—बुद्धजागरिया, अबुद्धजागरिया, सुदक्खुजागरिया ।।

२१ से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ—तिविहा जागरिया पण्णत्ता, तं जहा—बुद्धजागरिया, अबुद्धजागरिया, सुदक्खुजागरिया ?
गोयमा ! जे इमे अरहंता भगवंतो उप्पण्णनाणदंसणधरा [1]•अरहा जिणे केवली तीयपच्चुप्पन्नमणागयवियाणए° सव्वण्णू सव्वदरिसी एए णं बुद्धा[2] बुद्धजागरियं जागरंति ।
जे इमे अणगारा भगवंतो रियासमिया[3] भासासमिया[4] •एसणासमिया आयाण-भंडमत्तनिक्खेवणासमिया उच्चार-पासवण-खेल-सिंघाण-जल्ल-पारिट्ठावणिया-समिया मणसमिया वइसमिया कायसमिया मणगुत्ता वइगुत्ता कायगुत्ता गुत्ता गुत्तिंदिया° गुत्तबंभचारी[5]—एए णं अबुद्धा अबुद्धजागरियं जागरंति ।
जे इमे समणोवासगा अभिगयजीवाजीवा जाव[6] अहापरिग्गहिएहिं तवोकम्मेहिं अप्पाणं भावेमाणा विहरंति—एए णं सुदक्खुजागरियं जागरंति । से तेणट्ठेणं गोयमा ! एवं वुच्चइ—तिविहा जागरिया[7] •पण्णत्ता, तं जहा बुद्धजागरिया, अबुद्धजागरिया°, सुदक्खुजागरिया ।।

२२. तए णं से संखे समणोवासए समणं भगवं महावीरं वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी—कोहवसट्टे णं भंते ! जीवे किं बंधइ ? किं पकरेइ ? किं चिणाइ ? किं उवचिणाइ ?
संखा ! कोहवसट्टे णं जीवे आउयवज्जाओ सत्त कम्मपगडीओ सिढिलबंधण-बद्धाओ [8]•धणियबंधणबद्धाओ पकरेइ, हस्सकालठिइयाओ दीहकालठिइयाओ पकरेइ, मंदाणुभावाओ तिव्वाणुभावाओ पकरेइ, अप्पपएसग्गाओ बहुप्प-एसग्गाओ पकरेइ, आउयं च णं कम्मं सिय बंधइ, सिय नो बंधइ, अस्सायावेयणिज्जं च णं कम्मं भुज्जो-भुज्जो उवचिणाइ, अणाइयं च णं अणव-दग्गं दीहमद्धं चाउरंतं संसारकंतारं° अणुपरियट्टइ ।।

२३ माणवसट्टे णं भंते ! जीवे [9]•किं बंधइ ? किं पकरेइ ? किं चिणाइ ? किं

---

१ सं० पा०—जहा खंदए जाव सव्वण्णू ।
२ × (अ) ।
३ इरिया ° (व, म) ।
४ सं० पा०—भासासमिया जाव गुत्तबंभचारी ।
५. °चारिणो (अ) ।
६ भ० २।९४ ।
७ सं० पा०—जागरिया जाव सुदक्खु° ।
८ सं० पा०—एवं जहा पढमसए असंवुडस्स अणगारस्स जाव अणुपरियट्टइ ।
९ सं० पा०—एवं चेव, एवं मायवसट्टे वि एवं लोभवसट्टे वि जाव अणुपरियट्टइ ।

उवचिणाइ ? एव चेव जाव[1] अणुपरियट्टइ ॥

२४ मायवसट्टे[2] ण भते ! जीवे कि बधइ ? कि पकरेइ ? कि चिणाइ ? कि उवचिणाइ ? एव चेव जाव[3] अणुपरियट्टइ ॥

२५ लोभवसट्टे ण भते ! जीवे कि बधइ ? कि पकरेइ ? कि चिणाइ ? कि उवचिणाइ ? एव चेव जाव[4] अणुपरियट्टइ ॥

२६. तए ण ते समणोवासगा समणस्स भगवओ महावीरस्स अतिय एयमट्ठ सोच्चा निसम्म भीया तत्था तसिया ससारभउव्विग्गा समण भगव महावीर वदइ नमसइ, वदित्ता नमसित्ता जेणेव सखे समणोवासए तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता सख समणोवासग वदति नमसति, वदित्ता नमसित्ता एयमट्ठ सम्म विणएण भुज्जो-भुज्जो खामेति । तए ण ते समणोवासगा [5]पसिणाइ पुच्छति, पुच्छित्ता अट्ठाइ परियादियति, परियादियित्ता समण भगव महावीर वदति नमसति, वदित्ता नमसित्ता जामेव दिस पाउब्भूया तामेव दिस पडिगया ॥

२७. भतेति ! भगव गोयमे समण भगव महावीर वदइ नमसइ, वदित्ता नमसित्ता एव वयासी—पभू ण भते ! सखे समणोवासए देवाणुप्पियाण अतिय [6]मुडे भवित्ता अगाराओ अणगारिय पव्वइत्तए ?

नो इणट्ठे समट्ठे । गोयमा ! सखे समणोवासए वहूहि सीलव्वय-गुण-वेरमण-पच्चक्खाण-पोसहोववासेहि अहापरिग्गहिएहि तवोकम्मेहि अप्पाण भावेमाणे वहूइ वासाइ समणोवासगपरियाग पाउणिहिति, पाउणित्ता मासियाए सलेहणाए अत्ताण झूसेहिति, झूसेत्ता सट्ठि भत्ताइ अणसणाए छेदेहिति, छेदेत्ता आलोइय-पडिक्कते समाहिपत्ते कालमासे काल किच्चा सोहम्मे कप्पे अरुणाभे विमाणे देवत्ताए उववज्जिहिति । तत्थ ण अत्थेगतियाण देवाण चत्तारि पलिओवमाइ ठिती पण्णत्ता । तत्थ ण सखस्स वि देवस्स चत्तारि पलिओवमाइ ठिती भविस्सति ॥

२८ से ण भते ! सखे देवे ताओ देवलोगाओ आउक्खएण भवक्खएण ठिइक्खएण अणतर चय चइत्ता कहि गच्छिहिति ? कहि उववज्जिहिति ?

गोयमा ! महाविदेहे वासे सिज्झिहिति वुज्झिहिति मुच्चिहिति परिणिव्वाहिति सव्वदुक्खाण° अत काहिति ॥

२९ सेव भते ! सेव भते ! त्ति जाव[7] विहरइ ॥

---

१. भ० १२।२२ ।

२ मायावयट्टे (व, म) ।

३. भ० १२।२२ ।

४. भ० १२।२२ ।

५ स० पा०—सेस जहा आलभियाए जाव पडिगया ।

६. सं०पा०—सेस जहा इसिभद्दपुत्तस्स जाव अत ।

७ भ० १।५१ ।

बीओ उद्देसो

उदयणादीणं धम्मसवण-पदं

३० तेणं कालेणं तेणं समएणं कोसंबी नामं नगरी होत्था—वण्णओ[1]। चंदोतरणे[2] चेइए—वण्णओ[3]। तत्थ णं कोसंबीए नगरीए सहस्साणीयस्स रण्णो पोत्ते, सयाणीयस्स रण्णो पुत्ते, चेडगस्स रण्णो नत्तुए, मिगावतीए देवीए अत्तए, जयंतीए समणोवासियाए भत्तिज्जए उदयणे[4] नामं राया होत्था—वण्णओ[5]। तत्थ णं कोसंबीए नयरीए सहस्साणीयस्स रण्णो सुण्हा, सयाणीयस्स रण्णो भज्जा, चेडगस्स रण्णो धूया, उदयणस्स रण्णो माया, जयंतीए समणोवासियाए भाउज्जा मिगावती नामं देवी होत्था[6]—सुकुमालपाणिपाया जाव[7] सुरूवा समणोवासिया अभिगयजीवाजीवा जाव[8] अहापरिग्गहिएहिं तवोकम्मेहिं अप्पाणं भावेमाणी विहरइ। तत्थ णं कोसंबीए नगरीए सहस्साणीयस्स रण्णो धूया, सयाणीयस्स रण्णो भगिणी, उदयणस्स रण्णो पिउच्छा, मिगावतीए देवीए नणंदा, वेसालियसावयाणं[9] अरहंताणं पुव्वसेज्जातरी[10] जयंती नामं समणोवासिया होत्था—सुकुमालपाणिपाया जाव सुरूवा अभिगयजीवाजीवा जाव अहापरिग्गहिएहिं तवोकम्मेहिं अप्पाणं भावेमाणी विहरइ॥

३१. तेणं कालेणं तेणं समएणं सामी समोसढे जाव[11] परिसा पज्जुवासइ॥

३२. तए णं से उदयणे राया इमीसे कहाए लद्धट्ठे समाणे हट्ठतुट्ठे[12] कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी—खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया! कोसंबिं नगरिं सब्भिंतर-बाहिरियं आसित्त-सम्मज्जिओवलित्तं[13] करेत्ता य कारवेत्ता य एयमाणत्तियं पच्चप्पिणह। एवं जहा कूणिओ तहेव सव्वं जाव[14] पज्जुवासइ॥

३३. तए णं सा जयंती समणोवासिया इमीसे कहाए लद्धट्ठा समाणी हट्ठतुट्ठा जेणेव मिगावती देवी तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता मिगावतिं देविं एवं वयासी—[15]

---

१ ओ० सू० १।
२. चंदोत्तराए (अ), चंदोवरणे (ख), चंदोवतरणे (स)।
३ ओ० सू० २-१३।
४. उदायणे (अ), उद्दायणे (स)।
५. ओ० सू० १४।
६ होत्था वण्णओ (अ, क, ख, ता, ब, म, स)।
७ ओ० सू० १५।
८. भ० २।९४।
९ वेसालीसावयाणं (अ, क, ख, ब, म, स)।
१०. ०सिज्जायरी (अ, स)।
११ ओ० सू० २२-५२।
१२ हट्ठतुट्ठ (ता)।
१३. पू०—ओ० सू० ५५।
१४ ओ० सू० ५६-६९।
१५ सं० पा०—एवं जहा नवमसए उसभदत्तो जाव भविस्सइ।

•एवं खलु देवाणुप्पिए ! समणे भगव महावीरे आदिगरे जाव[1] सव्वण्णू सव्व-दरिसी आगासगएणं चक्केण जाव[2] सुहसुहेण विहरमाणे चदोतरणे चेइए अहापडिरूव ओग्गह ओगिण्हित्ता सजमेण तवसा अप्पाण भावेमाणे विहरइ। त महप्फल खलु देवाणुप्पिए ! तहारूवाण अरहताण भगवताणं नामगोयस्स वि सवणयाए जाव[3] एय णे इहभवे य, परभवे य हियाए सुहाए खमाए निस्से-साए आणुगामियत्ताए° भविस्सइ ॥

३४. तए ण सा मिगावती देवी जयतीए समणोवासियाए[4]•एव वुत्ता समाणी हट्ठतुट्ठचित्तमाणदिया णंदिया पीइमणा परमसोमणस्सिया हरिसवसविसप्प-माणहियया करयलपरिग्गहिय दसनह सिरसावत्तं मत्थए अंजलि कट्टु जयतीए समणोवासियाए एयमट्ठ विणएण° पडिसुणेइ ॥

३५. तए ण सा मिगावती देवी कोडुवियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एव वयासी—खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया ! लहुकरणजुत्त-जोइय जाव[5] धम्मियं जाणप्पवर जुत्तामेव उवट्ठवेह[6] •उवट्ठवेत्ता मम एयमाणत्तिय पच्चप्पिणह ॥

३६ तए ण ते कोडुवियपुरिसा मिगावतीए देवीए एवं वुत्ता समाणा धम्मिय जाण-प्पवर जुत्तामेव उवट्ठवेंति, उवट्ठवेत्ता तमाणत्तियं° पच्चप्पिणति ॥

३७ तए ण सा मिगावती देवी जयतीए समणोवासियाए सद्धि ण्हाया कयबलिकम्मा जाव[7] अप्पमहग्घाभरणालकियसरीरा वहूहिं खुज्जाहिं जाव[8] चेडियाचक्कवाल-वरिसधर-थेरकचुइज्ज-महत्तरगवदपरिक्खित्ता अतेउराओ निग्गच्छइ, निग्ग-च्छित्ता जेणेव वाहिरिया उवट्ठाणसाला जेणेव धम्मिए जाणप्पवरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता[9] •धम्मिए जाणप्पवर° दुरूढा[10] ॥

३८. तए ण सा मिगावती देवी जयतीए समणोवासियाए सद्धि धम्मिय जाणप्पवर दुरूढा[11] समाणी नियगपरियालसपरिवुडा जहा उसभदत्तो जाव[12] धम्मियाओ जाणप्पवराओ पच्चोरुहइ ॥

३९. तए ण सा मिगावती देवी जयतीए समणोवासियाए सद्धि वहूहिं जहा देवाणदा

---

१. भ० १।७।
२. ओ० सू० १९।
३. भ० ९।१३९।
४. स० पा०—जहा देवाणदा जाव पडिसुणेइ।
५. भ० ९।१४१।
६. स० पा०—उवट्ठवेह जाव उवट्ठवेंति जाव पच्चप्पिणति।
७ भ० २।९७।
८. भ० ९।१४४।
९. स० पा०—उवागच्छित्ता जाव दुरूढा।
१० द्रूढा (अ, क, ख, ता, व, म)।
११ द्रूढा (अ, क, ख, ता, व, म)।
१२. भ० ९।१४५।

जाव[1] वदइ नमसइ, वदित्ता नमसित्ता उदयण राय पुरओ कट्टु ठिया[2] चेव[3] •सपरिवारा सुस्सूसमाणी नमसमाणी अभिमुहा विणएण पजलिकडा° पज्जुवासइ ॥

४० तए ण समणे भगव महावीरे उदयणस्स रण्णो मिगावतीए देवीए जयतीए समणोवासियाए तीसे य महतिमहलियाए परिसाए जाव[4] धम्म परिकहेइ जाव[5] परिसा पडिगया, उदयणे पडिगए, मिगावती वि पडिगया ॥

जयंती-पसिण-पदं

४१ तए ण सा जयती समणोवासिया समणस्स भगवओ महावीरस्स अतिय धम्म सोच्चा निसम्म हट्ठतुट्ठा समण भगव महावीर वदइ नमसइ, वदित्ता नमसित्ता एव वयासी—कहण्ण[6] भते ! जीवा गरुयत्त हव्वमागच्छति ?
जयती ! पाणाइवाएण[7] •मुसावाएण अदिण्णादाणेण मेहुणेण परिग्गहेण कोह-माण-माया-लोभ-पेज्ज-दोस-कलह-अब्भक्खाण-पेसुन्न-परपरिवाय-अरतिरति-मायामोस-मिच्छादसणसल्लेण—एव खलु जयती ! जीवा गरुयत्त हव्वमागच्छति ॥

४२ कहण्ण भते ! जीवा लहुयत्त हव्वमागच्छति ?
जयती ! पाणाइवायवेरमणेण मुसावायवेरमणेण अदिण्णादाणवेरमणेण मेहुणवेरमणेण परिग्गहवेरमणेण कोह-माण-माया-लोभ-पेज्ज-दोस-कलह-अब्भक्खाण-पेसुन्न-परपरिवाय-अरतिरति-मायामोस-मिच्छादसणसल्लवेरमणेण —एव खलु जयती ! जीवा लहुयत्त हव्वमागच्छति ॥

४३ कहण्ण भते ! जीवा ससार आउलीकरेति ?
जयती ! पाणाइवाएण जाव मिच्छादसणसल्लेण—एव खलु जयती ! जीवा ससार आउलीकरेति ॥

४४ कहण्ण भते ! जीवा ससार परित्तीकरेति ?
जयती ! पाणाइवायवेरमणेण जाव मिच्छादसणसल्लवेरमणेण—एव खलु जयती ! जीवा ससार परित्तीकरेति ॥

४५ कहण्ण भते ! जीवा ससार दीहीकरेति ?

---

१ भ० ६।१४६।
२. ठितिया (अ, क, ख, स)।
३ स० पा०—चेव जाव पज्जुवासइ।
४. भ० ६।१४६।
५. ओ० सू० ७१-७६।
६ कह ण (क, ता, व), कह ण (ख, म); कहिण्ण (स)।
७ स० पा०—पाणातिवाएण जाव मिच्छादसणसल्लेण एव खलु जीवा गरुयत्त हव्वमागच्छति एव जहा पढमसए जाव वीतिवयति।

जयती ! पाणाइवाएण जाव मिच्छादसणसल्लेण—एव खलु जयंती ! जीवा ससार दीहीकरेति ॥

४६. कहण्ण भते ! जीवा संसार ह्रस्सीकरेति ?
जयती पाणाइवायवेरमणेण जाव मिच्छादसणसल्लवेरमणेण—एव खलु जयती ! जीवा ससार ह्रस्सीकरेति ॥

४७ कहण्ण भते ! जीवा ससार अणुपरियट्टति ?
जयती ! पाणाइवाएण जाव मिच्छादसणसल्लेण—एव खलु जयती ! जीवा ससार अणुपरियट्टति ॥

४८ कहण्ण भते ! जीवा ससार वीतिवयति ?
जयती ! पाणाइवायवेरमणेण जाव मिच्छादसणसल्लवेरमणेण—एव खलु जयती ! जीवा ससार° वीतिवयति ॥

४९. भवसिद्धियत्तणं भते ! जीवाण किं सभावओ ? परिणामओ ?
जयती ! सभावओ, नो परिणामओ ॥

५०. सव्वेवि ण भते ! भवसिद्धिया जीवा सिज्झिस्सति ?
हता जयती ! सव्वेवि ण भवसिद्धिया जीवा सिज्झिस्सति ॥

५१. जइ ण भते ! सव्वे भवसिद्धिया जीवा सिज्झिस्सति, तम्हा ण भवसिद्धियविरहिए लोए भविस्सइ ?
नो इणट्ठे समट्ठे ॥

५२. से केण खाइण[1] अट्ठेण भते ! एव वुच्चइ—सव्वेवि ण भवसिद्धिया जीवा सिज्झिस्सति, नो चेव ण भवसिद्धियविरहिए लोए भविस्सइ ?
जयति ! से जहानामए सव्वागाससेढी सिया—अणादीया अणवदग्गा परित्ता परिवुडा, सा णं परमाणुपोग्गलमेत्तेहि खडेहिं समए-समए अवहीरमाणी-अवहीरमाणी अणताहिं ओसप्पिणी-उस्सप्पिणीहिं अवहीरति, नो चेव ण अवहिया सिया। से तेणट्ठेण जयती ! एव वुच्चइ—सव्वेवि ण भवसिद्धिया जीवा सिज्झिस्सति, नो चेव ण भवसिद्धिअविरहिए लोए भविस्सइ ॥

५३. सुत्तत्त भते ! साहू ? जागरियत्त साहू ?
जयती ! अत्थेगतियाण जीवाण सुत्तत्तं साहू, अत्थेगतियाण जीवाण जागरियत्त साहू ॥

५४. से केणट्ठेण भते ! एव वुच्चइ—अत्थेगतियाण[2] •जीवाण सुत्तत्त साहू, अत्थेगतियाणं जीवाण जागरियत्त° साहू ?
जयती ! जे इमे जीवा अहम्मिया अहम्माणुया अहम्मिट्ठा अहम्मक्खाई अहम्मपलोई अहम्मपलज्जणा अहम्मसमुदायारा अहम्मेणं चेव वित्ति कप्पेमाणा विह-

१. खाइएण (ता), खातेण (न)।
२ स० पा०—अत्थेगतियाण जाव साहू।

रति, एएसि ण जीवाण सुत्तत्त साहू । एए ण जीवा सुत्ता समाणा नो बहूण पाणाण भूयाण जीवाण सत्ताण दुक्खणयाए सोयणयाए[1] •जूरणयाए तिप्पणयाए पिट्टणयाए° परियावणयाए वट्टति । एए णं जीवा सुत्ता समाणा अप्पाण वा पर वा तदुभय वा नो बहूहि अहम्मियाहिं सजोयणाहि सजोएत्तारो भवति एएसि ण जीवाणं सुत्तत साहू ।

जयती ! जे इमे जीवा धम्मिया धम्माणुया[2] •धम्मिट्ठा धम्मक्खाई धम्मपलोई धम्मपलज्जणा धम्मसमुदायारा° धम्मेण चेव वित्ति कप्पेमाणा विहरति, एएसि ण जीवाण जागरियत्त साहू । एए ण जीवा 'जागरा समाणा'[3] बहूण पाणाण[4] •भूयाण जीवाणं° सत्ताण अदुक्खणयाए[5] •असोयणयाए अजूरणयाए अतिप्पणयाए अपिट्टणयाए° अपरियावणयाए वट्टति । एए[6] ण जीवा जागरा समाणा अप्पाण वा पर वा तदुभय वा बहूहिं धम्मियाहिं सजोयणाहि सजोए-त्तारो भवति । एए ण जीवा जागरा समाणा धम्मजागरियाए अप्पाण जागर-इत्तारो भवति । एएसि ण जीवाण जागरियत्त साहू । से तेणट्ठेण जयती ! एव वुच्चइ—अत्थेगतियाण जीवाण सुत्तत्त साहू, अत्थेगतियाण जीवाण जागरियत्त साहू ॥

५५. बलियत्त भते ! साहू ? दुब्बलियत्त साहू ?
जयती ! अत्थेगतियाण जीवाण बलियत्त साहू, अत्थेगतियाण जीवाण दुब्बलि-यत्त साहू ॥

५६ से केणट्ठेण भते ! एव वुच्चइ[7]—•अत्थेगतियाण जीवाण बलियत्त साहू, अत्थेग-तियाण जीवाण दुब्बलियत्त° साहू ?
जयती ! जे इमे जीवा अहम्मिया जाव[8] अहम्मेण चेव वित्तिं कप्पेमाणा विह-रति, एएसि ण जीवाण दुब्बलियत्त साहू । एए ण जीवा [9]•दुब्बलिया समाणा नो बहूण पाणाण भूयाण जीवाण सत्ताण दुक्खणयाए जाव परियावणयाए वट्टति । एए ण जीवा दुब्बलिया समाणा अप्पाण वा पर वा तदुभय वा नो बहूहिं अहम्मियाहिं सजोयणाहिं सजोएत्तारो भवति । एएसि ण जीवाण दुब्ब-लियत्त साहू ।

---

१ स०पा०—सोयणयाए जाव परियावणयाए।
२. स० पा०—धम्माणुया जाव धम्मेण ।
३. जागरमाणा (अ, क, ख) ।
४. स० पा०—पाणाण जाव सत्ताण ।
५. स० पा०—अदुक्खणयाए जाव अपरियावण-याए।
६ ते (अ)।
७. स० पा०—वुच्चइ जाव साहू ।
८ भ० १२।५४।
६ स० पा०—एव जहा सुत्तस्स तहा दुब्बलिय-वत्तव्वया भाणियव्वा, बलियस्स जहा जागरस्स तहा भाणियव्व जाव सजोएत्तारो।

जयती ! जे इमे जीवा धम्मिया जाव धम्मेण चेव वित्ति कप्पेमाणा विहरति, एएसि ण जीवाण वलियत्त साहू । एए ण जीवा वलिया समाणा वहूण पाणाण भूयाण जीवाण सत्ताण अदुक्खणयाए जाव अपरियावणयाए वट्टति । एए ण जीवा वलिया समाणा अप्पाण वा पर वा तदुभय वा वहूहिं धम्मियाहिं सजोयणाहि° सजोएत्तारो भवति । एएसि ण जीवाण वलियत्त साहू । से तेणट्ठेण जयती ! एव वुच्चइ—●[1]अत्थेगतियाण जीवाण वलियत्त साहू, अत्थेगतियाण जीवाण दुव्वलियत्त° साहू ॥

५७. दक्खत्त भते ! साहू ? आलसियत्त साहू ?

जयती ! अत्थेगतियाण जीवाण दक्खत्त साहू, अत्थेगतियाण जीवाण आलसियत्त साहू ॥

५८ से केणट्ठेण भते ! एव वुच्चइ—●[2]अत्थेगतियाण जीवाण दक्खत्त साहू, अत्थेगतियाण जीवाण आलसियत्त° साहू ?

जयती ! जे इमे जीवा अहम्मिया जाव अहम्मेण चेव वित्ति कप्पेमाणा विहरति, एएसि ण जीवाण आलसियत्त साहू । एए ण जीवा आलसा[3] समाणा नो बहूण [4]●पाणाण भूयाण जीवाण सत्ताण दुक्खणयाए जाव परियावणयाए वट्टति । एए ण जीवा आलसा समाणा अप्पाण वा पर वा तदुभय वा नो वहूहिं अहम्मियाहिं सजोयणाहिं सजोएत्तारो भवति । एएसि ण जीवाण आलसियत्त साहू ।

जयति ! जे इमे जीवा धम्मिया जाव धम्मेण चेव वित्ति कप्पेमाणा विहरति, एएसि ण जीवाण दक्खत्त साहू । एए ण जीवा दक्खा समाणा बहूण पाणाण भूयाण जीवाण सत्ताण अदुक्खणयाए जाव अपरियावणयाए वट्टति । एए ण जीवा दक्खा समाणा अप्पाण वा पर वा तदुभय वा बहूहिं धम्मियाहिं सजोयणाहिं° सजोएत्तारो भवति । एए ण जीवा दक्खा समाणा वहूहि आयरियवेयावच्चेहिं[5] उवज्झायवेयावच्चेहिं थेरवेयावच्चेहिं तवस्सिवेयावच्चेहिं गिलाणवेयावच्चेहिं सेहवेयावच्चेहिं कुलवेयावच्चेहिं गणवेयावच्चेहिं सघवेयावच्चेहि साहम्मियवेयावच्चेहिं अत्ताण सजोएत्तारो भवति, एएसि ण जीवाण दक्खत्त साहू । से तेणट्ठेण [6]●जयती ! एव वुच्चइ—अत्थेगतियाण जीवाण दक्खत्त साहू, अत्थेगतियाण जीवाण आलसियत्त° साहू ॥

---

१. स० पा०—तं चेव जाव साहू ।

२ स० पा०—त चेव जाव साहू ।

३. अलसा (अ, ब) ।

४. स० पा०—जहा सुत्ता तहा आलसा भाणियव्वा, जहा जागरा तहा दक्खा भाणियव्वा जाव सजोएत्तारो ।

५. °वेदावच्चेहिं (अ, ब) ।

६. स० पा०—त चेव जाव साहू ।

५९. सोइदियवसट्टे ण भते ! जीवे किं बधइ ? [1]•किं पकरेइ ? किं चिणाइ ? किं उवचिणाइ ?
जयती ! सोइदियवसट्टे ण जीवे आउयवज्जाओ सत्त कम्मपगडीओ सिढिलबधणबद्धाओ धणियबधणबद्धाओ पकरेइ, हस्सकालठिइयाओ दीहकालठिइयाओ पकरेइ, मदाणुभावाओ तिव्वाणुभावाओ पकरेइ, अप्पपएसग्गाओ बहुप्पएसग्गाओ पकरेइ, आउय च ण कम्म सिय बधइ, सिय नो बधइ, अस्सायावेयणिज्ज च ण कम्म भुज्जो-भुज्जो उवचिणाइ, अणाइय च ण अणवदग्ग दीहमद्धं चाउरत ससारकतार° अणुपरियट्टइ ।।

६० [2]•चक्खिदियवसट्टे ण भते ! जीवे कि बधइ ? किं पकरेइ ? किं चिणाइ ? किं उवचिणाइ ? एव चेव जाव अणुपरियट्टइ ।।

६१ घाणिदियवसट्टे ण भते ! जीवे कि बधइ ? कि पकरेइ ? कि चिणाइ ? किं उवचिणाइ ? एव चेव जाव अणुपरियट्टइ ।।

६२ रसिंदियवसट्टे ण भते ! जीवे कि बधइ ? कि पकरेइ ? कि चिणाइ ? किं उवचिणाइ ? एव चेव जाव अणुपरियट्टइ ।।

६३ फासिदियवसट्टे ण भते ! जीवे किं बधइ ? कि पकरेइ ? कि चिणाइ ? किं उवचिणाइ ? एव चेव जाव° अणुपरियट्टइ ।।

६४. तए ण सा जयती समणोवासिया समणस्स भगवओ महावीरस्स अतिय एयमट्ठ सोच्चा निसम्म हट्ठतुट्ठा सेस जहा देवाणदा तहेव पव्वइया जाव[3] सव्वदुक्खप्पहीणा ।।

६५. सेव भते ! सेव भते ! त्ति[4] ।।

तइओ उद्देसो

पुढवी-पदं

६६ रायगिहे जाव[5] एव वयासी—कति ण भते ! पुढवीओ पण्णत्ताओ ?
गोयमा ! सत्त पुढवीओ पण्णत्ताओ, त जहा—पढमा, दोच्चा जाव सत्तमा ।।

---

१. स० पा०—एव जहा कोहवसट्टे तहेव जाव अणुपरियट्टइ ।
२ स० पा०—एव चक्खिदियवसट्टे वि एव जाव फासिदियवसट्टे वि जाव अणपरियट्टइ ।
३. भ० ९।१५२-१५५ ।
४. भ० १।५१ ।
५. भ० १।४-१० ।

६७ पढमा ण भंते ! पुढवी किंगोत्ता पण्णत्ता ?
गोयमा ! घम्मा नामेण, रयणप्पभा गोत्तेण, एवं जहा जीवाभिगमे पढमो नेरइयउद्देसओ सो चेव निरवसेसो भाणियव्वो जाव[1] अप्पाबहुगं ति ॥

६८. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति[2] ॥

चउत्थो उद्देसो

परमाणुपोग्गलाणं संघात-भेद-पदं

६९ रायगिहे जाव[3] एवं वयासी—दो भंते ! परमाणुपोग्गला एगयओ साहण्णंति, साहण्णित्ता किं भवइ ?
गोयमा ! दुप्पएसिए खंधे भवइ। से भिज्जमाणे दुहा कज्जइ—एगयओ परमाणुपोग्गले, एगयओ परमाणुपोग्गले भवइ ॥

७० तिण्णि भंते ! परमाणुपोग्गला एगयओ साहण्णंति, साहणित्ता किं भवइ ?
गोयमा ! तिपएसिए खंधे भवइ। से भिज्जमाणे दुहा वि तिहा वि कज्जइ—दुहा कज्जमाणे एगयओ परमाणुपोग्गले, एगयओ दुपएसिए खंधे भवइ। तिहा कज्जमाणे तिण्णि परमाणुपोग्गला भवंति ॥

७१ चत्तारि भंते ! परमाणुपोग्गला एगयओ साहण्णंति,[4] •साहणित्ता किं भवइ ?०
गोयमा ! चउपएसिए खंधे भवइ। से भिज्जमाणे दुहा वि तिहा वि चउहा वि कज्जइ—दुहा कज्जमाणे एगयओ परमाणुपोग्गले, एगयओ तिपएसिए खंधे भवइ, अहवा दो दुपएसिया खंधा भवंति। तिहा कज्जमाणे एगयओ दो परमाणुपोग्गला, एगयओ दुपएसिए खंधे भवइ। चउहा कज्जमाणे चत्तारि परमाणुपोग्गला भवंति ॥

७२. पंच भंते ! परमाणुपोग्गला [5]•एगयओ साहण्णंति, साहणित्ता किं भवइ ?०
गोयमा ! पंचपएसिए खंधे भवइ। से भिज्जमाणे दुहा वि तिहा वि चउहा वि पंचहा वि कज्जइ—दुहा कज्जमाणे एगयओ परमाणुपोग्गले, एगयओ चउपए-

---

१. जी० ३।
२. भ० १।५१।
३. भ० १।४-१०।
४. सं० पा०—साहण्णंति जाव पुच्छा।
५. सं० पा०—पुच्छा।

सिए खधे भवइ, अहवा एगयओ दुपएसिए खधे, एगयओ तिपएसिए खधे भवइ। तिहा कज्जमाणे एगयओ दो परमाणुपोग्गला एगयओ तिपएसिए खधे भवइ, अहवा एगयओ परमाणुपोग्गले, एगयओ दो दुपएसिया खधा भवति। चउहा कज्जमाणे एगयओ तिण्णि परमाणुपोग्गला, एगयओ दुपएसिए खधे भवइ। पचहा कज्जमाणे पच परमाणुपोग्गला भवति ।।

७३ छब्भते! परमाणुपोग्गला [1]•एगयओ साहण्णति, साहणित्ता किं भवइ?० गोयमा छप्पएसिए खधे भवइ। से भिज्जमाणे दुहा वि तिहा वि जाव छव्विहा वि कज्जइ—दुहा कज्जमाणे एगयओ परमाणुपोग्गले, एगयओ पचपएसिए खधे भवइ, अहवा एगयओ दुपएसिए खधे, एगयओ चउपएसिए खधे भवइ; अहवा दो तिपएसिया खधा भवति। तिहा कज्जमाणे एगयओ दो परमाणु-पोग्गला, एगयओ चउपएसिए खधे भवइ, अहवा एगयओ परमाणुपोग्गले, एगयओ दुपएसिए खधे, एगयओ तिपएसिए खधे भवइ, अहवा तिण्णि दुपएसिया खधा भवति। चउहा कज्जमाणे एगयओ तिण्णि परमाणुपोग्गला, एगयओ तिपएसिए खधे भवइ, अहवा एगयओ दो परमाणुपोग्गला, एगयओ दो दुपएसिया खधा भवति। पचहा कज्जमाणे एगयओ चत्तारि परमाणु-पोग्गला, एगयओ दुपएसिए खधे भवइ। छहा कज्जमाणे छ परमाणुपोग्गला भवति ।।

७४ सत्त भते! परमाणुपोग्गला [2]•एगयओ साहण्णति, साहणित्ता किं भवइ?० गोयमा! सत्तपएसिए खधे भवइ। से भिज्जमाणे दुहा वि जाव सत्तहा वि कज्जइ—दुहा कज्जमाणे एगयओ परमाणुपोग्गले, एगयओ छप्पएसिए खधे भवइ, अहवा एगयओ दुपएसिए खधे, एगयओ पचपएसिए खधे भवइ, अहवा एगयओ तिपएसिए खधे, एगयओ चउपएसिए खधे भवइ। तिहा कज्जमाणे एगयओ दो परमाणुपोग्गला, एगयओ पचपएसिए खधे भवइ, अहवा एगयओ परमाणुपोग्गले, एगयओ दुपएसिए खधे, एगयओ चउपएसिए खधे भवइ, अहवा एगयओ परमाणुपोग्गले, एगयओ दो तिपएसिया खधा भवति, अहवा एगयओ दो दुपएसिया खधा, एगयओ तिपएसिए खधे भवइ। चउहा कज्जमाणे एगयओ तिण्णि परमाणुपोग्गला, एगयओ चउप्पएसिए खधे भवइ, अहवा एगयओ दो परमाणुपोग्गला, एगयओ दुपएसिए खधे, एगयओ तिपएसिए खधे भवइ, अहवा एगयओ परमाणुपोग्गले, एगयओ तिण्णि दुपएसिया खधा भवति। पचहा कज्जमाणे एगयओ चत्तारि परमाणुपोग्गला, एगयओ तिपए-सिए खधे भवइ, अहवा एगयओ तिण्णि परमाणुपोग्गला, एगयओ दो दुपए-

---

१. स० पा०—पुच्छा। २ स० पा०—पुच्छा।

सिया खधा भवति। छहा कज्जमाणे एगयग्रो पच परमाणुपोग्गला, एगयग्रो दुपएसिए खधे भवइ। सत्तहा कज्जमाणे सत्त परमाणुपोग्गला भवति ॥

७५ अट्ठ भते! परमाणुपोग्गला [1]•एगयग्रो साहण्णति, साहणित्ता कि भवइ?° गोयमा! अट्ठपएसिए खधे भवइ[2]। •से भिज्जमाणे दुहा वि जाव अट्ठहा वि कज्जइ°—दुहा कज्जमाणे एगयग्रो परमाणुपोग्गले, एगयग्रो सत्तपएसिए खधे भवइ, अहवा एगयग्रो दुपएसिए खधे, एगयग्रो छप्पएसिए खधे भवइ; अहवा एगयग्रो तिपएसिए खधे, एगयग्रो पचपएसिए खधे भवइ, अहवा दो चउप्पए-सिया खधा भवति। तिहा कज्जमाणे एगयग्रो दो परमाणुपोग्गला भवति, एगयग्रो छप्पएसिए खधे भवइ, अहवा एगयग्रो परमाणुपोग्गले, एगयग्रो दुप्पएसिए खधे, एगयग्रो पचपएसिए खधे भवइ, अहवा एगयग्रो परमाणु-पोग्गले, एगयग्रो तिपएसिए खधे, एगयग्रो चउप्पएसिए खधे भवइ, अहवा एगयग्रो दो दुपएसिया खधा, एगयग्रो चउप्पएसिए खधे भवइ, अहवा एगयग्रो दुपएसिए खधे, एगयग्रो दो तिपएसिया खधा भवति। चउहा कज्जमाणे एगयग्रो तिण्णि परमाणुपोग्गला, एगयग्रो पचपएसिए खधे भवइ, अहवा एगयग्रो दोण्णि परमाणुपोग्गला, एगयग्रो दुपएसिए खधे, एगयग्रो चउप्पएसिए खधे भवइ, अहवा एगयग्रो दो परमाणुपोग्गला, एगयओ दो तिपएसिया खधा भवति, अहवा एगयग्रो परमाणुपोग्गले, एगयग्रो दो दुपएसिया खधा, एगयग्रो तिपएसिए खधे भवइ, अहवा चत्तारि दुपएसिया खधा भवति। पचहा कज्जमाणे एगयग्रो चत्तारि परमाणुपोग्गला, एगयग्रो चउप्पएसिए खधे भवइ, अहवा एगयग्रो तिण्णि परमाणुपोग्गला, एगयग्रो दुपएसिए खधे, एगयग्रो तिपएसिए खधे भवइ; अहवा एगयग्रो दो परमाणुपोग्गला, एगयग्रो तिण्णि दुपएसिया खधा भवति। छहा कज्जमाणे एगयग्रो पच परमाणुपोग्गला, एगयग्रो तिपएसिए खधे भवइ, अहवा एगयग्रो चत्तारि परमाणुपोग्गला, एगयओ दो दुपएसिया खधा भवति। सत्तहा कज्जमाणे एगयग्रो छ परमाणु-पोग्गला, एगयग्रो दुपएसिए खधे भवइ। अट्ठहा कज्जमाणे अट्ठ परमाणुपोग्गला भवति ॥

७६ नव भते! परमाणुपोग्गला [3]•एगयग्रो साहण्णति, साहणित्ता किं भवइ?° गोयमा[4]! •नवपएसिए खधे भवइ। से भिज्जमाणे दुहा वि जाव नवहा[5] वि कज्जइ°—दुहा कज्जमाणे एगयओ परमाणुपोग्गले, एगयग्रो अट्ठपएसिए खधे

---

१. स० पा०—पुच्छा।
२. स० पा०—भवइ जाव दुहा।
३. सं० पा०—पुच्छा।
४. स० पा०—गोयमा जाव नवहा।
५. नवविहा (ता, स)।

भवइ, [1]॰अहवा एगयओ दुपएसिए खधे, एगयओ सत्तपएसिए खधे भवइ, अहवा एगयओ तिपएसिए खधे, एगयओ छप्पएसिए खधे भवइ,॰ अहवा एगयओ चउप्पएसिए खधे, एगयओ पचपएसिए खधे भवइ। तिहा कज्जमाणे एगयओ दो परमाणुपोग्गला, एगयओ सत्तपएसिए खधे भवइ, अहवा एगयओ परमाणुपोग्गले, एगयओ दुपएसिए खधे, एगयओ छप्पएसिए खधे भवइ, अहवा एगयओ परमाणुपोग्गले, एगयओ तिपएसिए खधे, एगयओ पचपएसिए खधे भवइ, अहवा एगयओ परमाणुपोग्गले, एगयओ दो चउप्पएसिया खधा भवति, अहवा एगयओ दुपएसिए खधे, एगयओ तिपएसिए खधे, एगयओ चउप्पएसिए खधे भवइ, अहवा तिण्णि तिपएसिया खधा भवति। चउहा कज्जमाणे एगयओ तिण्णि परमाणुपोग्गला, एगयओ छप्पएसिए खधे भवइ, अहवा एग-यओ दो परमाणुपोग्गला, एगयओ दुपएसिए खधे, एगयओ पचपएसिए खधे भवइ, अहवा एगयओ दो परमाणुपोग्गला, एगयओ तिपएसिए खधे, एगयओ चउप्पएसिए खधे भवइ, अहवा एगयओ परमाणुपोग्गले, एगयओ दो दुपएसिया खधा, एगयओ चउप्पएसिए खधे भवइ, अहवा एगयओ परमाणुपोग्गले, एग-यओ दुपएसिए खधे, एगयओ दो तिपएसिया खधा भवति, अहवा एगयओ तिण्णि दुप्पएसिया खधा, एगयओ तिपएसिए खधे भवइ। पचहा कज्जमाणे एगयओ चत्तारि परमाणुपोग्गला, एगयओ पचपएसिए खधे भवइ, अहवा एगयओ तिण्णि परमाणुपोग्गला, एगयओ दुपएसिए खधे, एगयओ चउप्पएसिए खधे भवइ, अहवा एगयओ तिण्णि परमाणुपोग्गला, एगयओ दो तिपएसिया खधा भवति, अहवा एगयओ दो परमाणुपोग्गला, एगयओ दो दुपएसिया खधा, एगयओ तिपएसिए खधे भवइ, अहवा एगयओ परमाणुपोग्गले, एगयओ चत्तारि दुपएसिया खधा भवति। छहा कज्जमाणे एगयओ पच परमाणुपोग्गला, एगयओ चउप्पएसिए खधे भवइ, अहवा एगयओ चत्तारि परमाणुपोग्गला, एगयओ दुप्पएसिए खधे, एगयओ तिपएसिए खधे भवइ, अहवा एगयओ तिण्णि परमाणुपोग्गला, एगयओ तिण्णि दुप्पएसिया खधा भवति। सत्तहा कज्जमाणे एगयओ छ परमाणुपोग्गला, एगयओ तिप्पएसिए खधे भवइ, अहवा एगयओ पच परमाणुपोग्गला, एगयओ दो दुपएसिया खधा भवति। अट्ठहा कज्जमाणे एगयओ सत्त परमाणुपोग्गला, एगयओ दुपएसिए खधे भवइ। नवहा कज्जमाणे नव परमाणुपोग्गला भवति॥

७७. दस भते! परमाणुपोग्गला[2] ॰एगयओ साहण्णति, साहणित्ता किं भवइ?

---

१. स॰ पा॰—एव एक्केक्क सचारेंतेहिं जाव २ स॰ पा—॰पोग्गला जाव दुहा। अहवा।

गोयमा ! दसपएसिए खंधे भवइ । से भिज्जमाणे दुहा वि जाव दसहा वि कज्जइ°—दुहा कज्जमाणे एगयओ परमाणुपोग्गले, एगयओ नवपएसिए खंधे भवइ ; अहवा एगयओ दुपएसिए खंधे, एगयओ अट्ठपएसिए खंधे भवइ ; [1]•अहवा एगयओ तिपएसिए खंधे, एगयओ सत्तपएसिए खंधे भवइ ; अहवा एगयओ चउप्पएसिए खंधे, एगयओ छप्पएसिए खंधे भवइ° , अहवा दो पंचपएसिया खंधा भवंति । तिहा कज्जमाणे एगयओ दो परमाणुपोग्गला, एगयओ अट्ठपएसिए खंधे भवइ, अहवा एगयओ परमाणुपोग्गले, एगयओ दुपएसिए खंधे, एगयओ सत्तपएसिए खंधे भवइ, अहवा एगयओ परमाणुपोग्गले, एगयओ तिपएसिए खंधे, एगयओ छप्पएसिए खंधे भवइ, अहवा एगयओ परमाणुपोग्गले, एगयओ चउप्पएसिए खंधे, एगयओ पंचपएसिए खंधे भवइ; अहवा एगयओ दुपएसिए खंधे, एगयओ दो चउप्पएसिया खंधा भवंति, अहवा एगयओ दो तिपएसिया खंधा, एगयओ चउप्पएसिए खंधे भवइ । चउहा कज्जमाणे एगयओ तिण्णि परमाणुपोग्गला, एगयओ सत्तपएसिए खंधे भवइ, अहवा एगयओ दो परमाणुपोग्गला, एगयओ दुपएसिए खंधे, एगयओ छप्पएसिए खंधे भवइ, अहवा एगयओ दो परमाणुपोग्गला, एगयओ तिप्पएसिए खंधे, एगयओ पंचपएसिए खंधे भवइ; अहवा एगयओ दो परमाणुपोग्गला, एगयओ दो चउप्पएसिया खंधा भवंति, अहवा एगयओ परमाणुपोग्गले, एगयओ दुपएसिए खंधे, एगयओ तिपएसिए खंधे, एगयओ चउप्पएसिए खंधे भवइ, अहवा एगयओ परमाणुपोग्गले, एगयओ तिण्णि तिपएसिया खंधा भवंति, अहवा एगयओ तिण्णि दुपएसिया खंधा, एगयओ चउप्पएसिए खंधे भवइ, अहवा एगयओ दो दुपएसिया खंधा, एगयओ दो तिपएसिया खंधा भवंति । पंचहा कज्जमाणे एगयओ चत्तारि परमाणु-पोग्गला, एगयओ छप्पएसिए खंधे भवइ, अहवा एगयओ तिण्णि परमाणु-पोग्गला, एगयओ दुपएसिए खंधे, एगयओ पंचपएसिए खंधे भवइ; अहवा एगयओ तिण्णि परमाणुपोग्गला, एगयओ तिपएसिए खंधे, एगयओ चउपएसिए खंधे भवइ, अहवा एगयओ दो परमाणुपोग्गला, एगयओ दो दुपएसिया खंधा, एगयओ चउप्पएसिए खंधे भवइ, अहवा एगयओ दो परमाणुपोग्गला, एगयओ दुपएसिए खंधे, एगयओ दो तिपएसिया खंधा भवंति, अहवा एगयओ परमाणुपोग्गले, एगयओ तिण्णि दुपएसिया खंधा, एगयओ तिपएसिए खंधे भवइ, अहवा पंच दुपएसिया खंधा भवंति । छहा कज्जमाणे एगयओ पंच

---

१. सं० पा०—एवं एक्केक्कं संचारेंतेण जाव अहवा ।

परमाणुपोग्गला, एगयओ पचपएसिए खधे भवइ; अहवा एगयओ चत्तारि परमाणुपोग्गला, एगयओ दुपएसिए खधे, एगयओ चउपएसिए खधे भवइ, अहवा एगयओ चत्तारि परमाणुपोग्गला, एगयओ दो तिपएसिया खधा भवति, अहवा एगयओ तिण्णि परमाणुपोग्गला, एगयओ दो दुपएसिया खधा, एगयओ तिपएसिए खधे भवइ, अहवा एगयओ दो परमाणुपोग्गला, एगयओ चत्तारि दुपएसिया खधा भवति। सत्तहा कज्जमाणे एगयओ छ परमाणुपोग्गला, एगयओ चउप्पएसिए खधे भवइ, अहवा एगयओ पच परमाणुपोग्गला, एगयओ दुपएसिए खधे, एगयओ तिपएसिए खधे भवइ, अहवा एगयओ चत्तारि परमाणुपोग्गला, एगयओ तिण्णि दुपएसिया खधा भवति। अट्ठहा कज्जमाणे एगयओ सत्त परमाणुपोग्गला, एगयओ तिपएसिए खधे भवइ, अहवा एगयओ छ परमाणुपोग्गला, एगयओ दो दुपएसिया खधा भवति। नवहा कज्जमाणे एगयओ अट्ठ परमाणुपोग्गला, एगयओ दुपएसिए खधे भवइ। दसहा कज्जमाणे दस परमाणुपोग्गला भवति ॥

७८. सखेज्जा ण भते! परमाणुपोग्गला एगयओ साहण्णति, साहणित्ता किं भवइ? गोयमा! सखेज्जपएसिए खधे भवइ। से भिज्जमाणे दुहा वि जाव दसहा वि सखेज्जहा वि कज्जइ—दुहा कज्जमाणे एगयओ परमाणुपोग्गले, एगयओ सखेज्जपएसिए खधे भवइ; अहवा एगयओ दुपएसिए खधे, एगयओ सखेज्जपएसिए खधे भवइ, एगयओ तिपएसिए खधे, एगयओ सखेज्जपएसिए खधे भवइ, एव जाव अहवा एगयओ दसपएसिए खधे, एगयओ सखेज्जपएसिए खधे भवइ, अहवा दो सखेज्जपएसिया खधा भवति। तिहा कज्जमाणे एगयओ दो परमाणुपोग्गला, एगयओ सखेज्जपएसिए खधे भवइ; अहवा एगयओ परमाणुपोग्गले, एगयओ दुपएसिए खधे, एगयओ सखेज्जपएसिए खधे भवइ, अहवा एगयओ परमाणुपोग्गले, एगयओ तिपएसिए खधे, एगयओ सखेज्जपएसिए खधे भवइ, एव जाव अहवा एगयओ परमाणुपोग्गले, एगयओ दसपएसिए खधे, एगयओ सखेज्जपएसिए खधे भवइ, अहवा एगयओ परमाणुपोग्गले, एगयओ दो सखेज्जपएसिया खंधा भवति, अहवा एगयओ दुपएसिए खधे, एगयओ दो सखेज्जपएसिया खधा भवति, एव जाव अहवा एगयओ दसपएसिए खधे, एगयओ दो सखेज्जपएसिया खधा भवति, अहवा तिण्णि सखेज्जपएसिया खधा भवति। चउहा कज्जमाणे एगयओ तिण्णि परमाणुपोग्गला, एगयओ सखेज्जपएसिए खधे भवइ, अहवा एगयओ दो परमाणुपोग्गला, एगयओ दुपएसिए खधं, एगयओ सखेज्जपएसिए खधे भवइ, अहवा एगयओ दो परमाणुपोग्गला, एगयओ तिप्पएसिए खधे, एगयओ सखेज्जपएसिए खधे भवइ, एव जाव अहवा एगयओ दो परमाणुपोग्गला, एगयओ दसपएसिए

खधे, एगयग्रो सखेज्जपएसिए खधे भवइ, ग्रहवा एगयग्रो दो परमाणुपोग्गला, एगयग्रो दो सखेज्जपएसिया खधा भवति, ग्रहवा एगयग्रो परमाणुपोग्गले, एगयग्रो दुपएसिए खधे, एगयग्रो दो सखेज्जपएसिया खधा भवति जाव ग्रहवा एगयग्रो परमाणुपोग्गले एगयग्रो दसपएसिए खधे, एगयग्रो दो सखेज्जपएसिया खधा भवति, ग्रहवा एगयग्रो परमाणुपोग्गले, एगयओ तिण्णि सखेज्जपए सिया खधा भवति, ग्रहवा एगयग्रो दुपएसिए खधे, एगयग्रो तिण्णि सखेज्जपएसिया खधा भवति जाव ग्रहवा एगयग्रो दसपएसिए खधे, एगयग्रो तिण्णि सखेज्ज-पएसिया खधा भवति, ग्रहवा चत्तारि सखेज्जपएसिया खधा भवति, एव एएण कमेणं पचगसजोगो वि भाणियव्वो जाव नवगसजोगो। दसहा कज्जमाणे एगयग्रो नव परमाणुपोग्गला, एगयग्रो सखेज्जपएसिए खधे भवइ, ग्रहवा एगयग्रो ग्रट्ठ परमाणुपोग्गला, एगयग्रो दुपएसिए, एगयग्रो सखेज्जपएसिए खधे भवइ। एएण कमेण एक्केक्को पूरेयव्वो जाव ग्रहवा एगयग्रो दसपएसिए खधे, एगयग्रो नव सखेज्जपएसिया खधा भवति, ग्रहवा दस सखेज्जपएसिया खधा भवति। सखेज्जहा कज्जमाणे सखेज्जा परमाणुपोग्गला भवति ॥

७९ ग्रसखेज्जा भते! परमाणुपोग्गला एगयओ साहण्णति[1], साहणित्ता किं भवइ? गोयमा! ग्रसखेज्जपएसिए खधे भवइ। से भिज्जमाणे दुहा वि जाव दसहा वि, सखेज्जहा वि, ग्रसखेज्जहा वि कज्जइ—दुहा कज्जमाणे एगयओ परमाणु-पोग्गले, एगयग्रो ग्रसखेज्जपएसिए खंधे भवइ जाव अहवा एगयग्रो दसपएसिए खधे भवइ, एगयग्रो ग्रसखेज्जपएसिए खधे भवइ, ग्रहवा एगयग्रो सखेज्ज-पएसिए खधे, एगयग्रो ग्रसखेज्जपएसिए खधे भवइ, ग्रहवा दो असखेज्ज-पएसिया खधा भवति। तिहा कज्जमाणे एगयग्रो दो परमाणुपोग्गला, एगयग्रो ग्रसखेज्जपएसिए खधे भवइ, ग्रहवा एगयग्रो परमाणुपोग्गले, एगयग्रो दुपए-सिए खधे, एगयग्रो ग्रसखेज्जपएसिए खधे भवइ जाव ग्रहवा एगयग्रो परमाणु-पोग्गले, एगयग्रो दसपएसिए खधे, एगयग्रो ग्रसखेज्जपएसिए खधे भवइ, ग्रहवा एगयग्रो परमाणुपोग्गले, एगयग्रो सखेज्जपएसिए खंधे, एगयग्रो ग्रसखेज्जपएसिए खधे भवइ, ग्रहवा एगयग्रो परमाणुपोग्गले, एगयग्रो दो ग्रसखेज्जपएसिया खधा भवति, ग्रहवा एगयग्रो दुपएसिए खधे, एगयओ दो ग्रसखेज्जपएसिया खधा भवति, एव जाव ग्रहवा एगयग्रो सखेज्जपएसिए खधे, एगयग्रो दो ग्रसखेज्जपएसिया खंधा भवति, ग्रहवा तिण्णि ग्रसखेज्जपएसिया खधा भवति। चउहा कज्जमाणे एगयग्रो तिण्णि परमाणुपोग्गला, एगयग्रो ग्रसखेज्ज-पएसिए खधे भवइ; एव चउक्कगसजोगो जाव दसगसजोगो। एए जहेव सखेज्जपएसियस्स, नवरं—ग्रसखेज्जग एग ग्रहिग भाणियव्व जाव ग्रहवा दस

१. साहणंति (अ, क, ख, म, स)।

असखेज्जपएसिया खधा भवति। संखेज्जहा कज्जमाणे एगयओ सखेज्जा परमाणुपोग्गला, एगयओ असखेज्जपएसिए खधे भवइ, अहवा एगयओ सखेज्जा दुपएसिया खधा, एगयओ असखेज्जपएसिए खधे भवइ, एव जाव अहवा एगयओ सखेज्जा दसपएसिया खधा, एगयओ असखेज्जपएसिए खधे भवइ, अहवा एगयओ सखेज्जा सखेज्जपएसिया खधा, एगयओ असखेज्जपएसिए खधे भवइ; अहवा सखेज्जा असखेज्जपएसिया खधा भवति। असखेज्जहा कज्जमाणे असंखेज्जा परमाणुपोग्गला भवति ॥

८०. अणता ण भते! परमाणुपोग्गला[1] ॰एगयओ साहण्णति, साहणित्ता॰ कि भवइ?

गोयमा! अणतपएसिए खधे भवइ। से भिज्जमाणे दुहा वि तिहा वि जाव दसहा वि 'सखेज्जहा वि असखेज्जहा वि'[2] अणतहा वि कज्जइ—दुहा कज्जमाणे एगयओ परमाणुपोग्गले एगयओ अणतपएसिए खधे भवइ जाव अहवा दो अणत-पएसिया खधा भवति। तिहा कज्जमाणे एगयओ दो परमाणुपोग्गला, एगयओ अणतपएसिए खधे भवइ, अहवा एगयओ परमाणुपोग्गले, एगयओ दुपएसिए खधे, एगयओ अणतपएसिए खधे भवइ जाव अहवा एगयओ परमाणुपोग्गले, एगयओ असखेज्जपएसिए खधे, एगयओ अणतपएसिए खधे भवइ, अहवा एगयओ परमाणुपोग्गले, एगयओ दो अणतपएसिया खधा भवति, अहवा एगयओ दुपएसिए खधे, एगयओ दो अणतपएसिया खधा भवति, एव जाव अहवा एगयओ दसपएसिए खधे, एगयओ दो अणतपएसिया खधा भवति, अहवा एगयओ सखेज्जपएसिए खधे, एगयओ दो अणतपएसिया खधा भवति, अहवा एगयओ असखेज्जपएसिए खधे, एगयओ दो अणतपएसिया खधा भवति, अहवा तिण्णि अणतपएसिया खधा भवति। चउहा कज्जमाणे एगयओ तिण्णि परमाणुपोग्गला, एगयओ अणतपएसिए खधे भवइ, एव चउक्कसजोगो जाव असखेज्जगसजोगो। एते सव्वे जहेव असखेज्जाण भणिया तहेव अणताण वि भाणियव्व, नवर—एक्क अणतग अब्भहिय भाणियव्व जाव अहवा एगयओ सखेज्जा सखेज्जपएसिया खधा, एगयओ अणतपएसिए खधे भवइ, अहवा एगयओ सखेज्जा असखेज्जपएसिया खधा, एगयओ अणतपएसिए खधे भवइ, अहवा सखेज्जा अणतपएसिया खधा भवति। असखेज्जहा कज्जमाणे एगयओ असखेज्जा परमाणुपोग्गला, एगयओ अणतपएसिए खधे भवइ, अहवा एगयओ असखेज्जा दुपएसिया खधा, एगयओ अणतपएसिए खधे भवइ जाव अहवा

---

१. स॰ पा॰—परमाणुपोग्गला जाव किं।

२ सखेज्जाअसखेज्ज (अ, क, ब, स), सखेज्जा-असखेज्जा (ख, म). सखेज्जाऽसखेज्जा (ता)।

एगयओ असखेज्जा सखेज्जपएसिया खधा, एगयओ अणतपएसिए खधे भवइ; अहवा एगयओ असखेज्जा असखेज्जपएसिया खधा, एगयओ अणतपएसिए खधे भवइ, अहवा असखेज्जा अणतपएसिया खधा भवति । अणतहा कज्जमाणे अणता परमाणुपोग्गला भवति ॥

पोग्गलपरियट्ट-पदं

८१ एएसि ण भते ! परमाणुपोग्गलाण साहणणा-भेदाणुवाएण अणंताणता पोग्गलपरियट्टा समणुगतव्वा भवतीति मक्खाया ?
हता गोयमा ! एएसि ण परमाणुपोग्गलाण साहणणा [1]•भेदाणुवाएण अणंताणता पोग्गलपरियट्टा समणुगतव्वा भवतीति° मक्खाया ॥

८२. कइविहे ण भते ! पोग्गलपरियट्टे पण्णत्ते ?
गोयमा ! सत्तविहे पोग्गलपरियट्टे पण्णत्ते, त जहा—ओरालियपोग्गलपरियट्टे, वेउव्वियपोग्गलपरियट्टे, तेयापोग्गलपरियट्टे, कम्मापोग्गलपरियट्टे, मणपोग्गल-परियट्टे, वइपोग्गलपरियट्टे, आणापाणुपोग्गलपरियट्टे[2] ॥

८३ नेरइयाण भते ! कतिविहे पोग्गलपरियट्टे पण्णत्ते ?
गोयमा ! सत्तविहे पोग्गलपरियट्टे पण्णत्ते, त जहा—ओरालियपोग्गलपरियट्टे, वेउव्वियपोग्गलपरियट्टे जाव[3] आणापाणुपोग्गलपरियट्टे । एव जाव[4] वेमाणियाण ॥

८४. एगमेगस्स णं भते ! नेरइयस्स केवइया ओरालियपोग्गलपरियट्टा अतीता ?
अणंता ।
केवइया पुरेक्खडा[5] ?
कस्सइ अत्थि, कस्सइ नत्थि । जस्सत्थि जहण्णेण एक्को वा दो वा तिण्णि वा, उक्कोसेण सखेज्जा वा असखेज्जा वा अणता वा ॥

८५ एगमेगस्स ण भते ! असुरकुमारस्स केवइया ओरालियपोग्गलपरियट्टा [6]•अतीता ?
अणता ।
केवइया पुरेक्खडा ?
कस्सइ अत्थि, कस्सइ नत्थि । जस्सत्थि जहण्णेण एक्को वा दो वा तिण्णि वा, उक्कोसेण सखेज्जा वा असखेज्जा वा अणता वा ।° एवं जाव वेमाणियस्स ॥

---

१. स० पा०—साहणणा जाव मक्खाया ।
२. आणपाणु° (ख) ।
३. भ० १२।८२ ।
४ पू० प० २ ।
५. पुरेक्कडा (अ), पुरक्खडा (क, ता) ।
६. स० पा०—एव चेव जाव एवं ।

८६ एगमेगस्स ण भते ! नेरइयस्स केवइया वेउव्वियपोग्गलपरियट्टा अतीता ?
अणता। एव जहेव ओरालियपोग्गलपरियट्टा तहेव वेउव्वियपोग्गलपरियट्टावि भाणियव्वा। एव जाव[1] वेमाणियस्स। एव जाव[2] आणापाणुपोग्गलपरियट्टा। एते एगत्तिया सत्त दडगा भवति ॥

८७ नेरइयाण भते ! केवइया ओरालियपोग्गलपरियट्टा अतीता ?
अणता।
केवइया पुरेक्खडा ?
अणता। एव जाव वेमाणियाण। एव[1] वेउव्वियपोग्गलपरियट्टावि। एव जाव आणापाणुपोग्गलपरियट्टा वेमाणियाण। एव एए पोहत्तिया सत्त चउव्वीसति-दडगा ॥

८८ एगमेगस्स ण भते ! नेरइयस्स नेरइयत्ते केवतिया ओरालियपोग्गलपरियट्टा अतीता ?
नत्थि एक्को वि।
केवतिया पुरेक्खडा ?
नत्थि एक्को वि ॥

८९ एगमेगस्स ण भते ! नेरइयस्स असुरकुमारत्ते केवतिया ओरालियपोग्गल-परियट्टा अतीता ?
एव चेव। एव जाव थणियकुमारत्ते[3] ॥

९० एगमेगस्स ण भते ! नेरइयस्स पुढविक्काइयत्ते केवतिया ओरालियपोग्गल-परियट्टा अतीता ?
अणता।
केवतिया पुरेक्खडा ?
कस्सइ अत्थि, कस्सइ नत्थि। जस्सत्थि जहण्णेण एक्को वा दो वा तिण्णि वा, उक्कोसेण सखेज्जा वा असखेज्जा वा अणता वा। एव जाव मणुस्सत्ते। वाण-मतर-जोइसिय-वेमाणियत्ते जहा असुरकुमारत्ते ॥

९१. एगमेगस्स ण भते ! असुरकुमारस्स नेरइयत्ते केवतिया ओरालियपोग्गल-परियट्टा° ?
एव जहा नेरइयस्स वत्तव्वया भणिया, तहा असुरकुमारस्स वि भाणियव्वा जाव वेमाणियत्ते। एव जाव थणियकुमारस्स। एव पुढविक्काइयस्स वि। एव जाव वेमाणियस्स। सव्वेसिं[4] एक्को गमो[5] ॥

---

१. पू० प० २।
२. भ० १२।८२।
३. °कुमारत्ते जहा असुरकुमारत्ते (अ, स)।
४ सव्वेसिं उ (ता)।
५ गमओ (क, ता, व, म, स)।

९२. एगमेगस्स ण भते ! नेरइयस्स नेरइयत्ते केवतिया वेउव्वियपोग्गलपरियट्टा अतीता ?
अणंता ।
केवतिया पुरेक्खडा ?
एकुत्तरिया[1] जाव अणंता वा । एव जाव थणियकुमारत्ते ॥

९३. पुढविकाइयत्ते—पुच्छा ।
नत्थि एक्कोवि ।
केवतिया पुरेक्खडा ?
नत्थि एक्कोवि[2] । एव जत्थ वेउव्वियसरीर[3] तत्थ एकुत्तरिओ, जत्थ नत्थि तत्थ जहा पुढविकाइयत्ते तहा भाणियव्व जाव वेमाणियस्स वेमाणियत्ते ।
तेयापोग्गलपरियट्टा, कम्मापोग्गलपरियट्टा य सव्वत्थ एकुत्तरिया भाणियव्वा, मणपोग्गलपरियट्टा सव्वेसु पचिंदिएसु एगुत्तरिया, विगलिंदिएसु नत्थि । वइ-पोग्गलपरियट्टा एवं चेव, नवर—एगिंदिएसु नत्थि भाणियव्वा । आणापाणु-पोग्गलपरियट्टा सव्वत्थ एकुत्तरिया जाव वेमाणियस्स वेमाणियत्ते ॥

९४ नेरइयाण भते ! नेरइयत्ते केवतिया ओरालियपोग्गलपरियट्टा अतीता ?
'नत्थि एक्कोवि'[4] ।
केवतिया पुरेक्खडा ?
नत्थि एक्कोवि । एवं जाव थणियकुमारत्त ॥

९५. पुढविकाइयत्ते—पुच्छा ।
अणता ।
केवतिया पुरेक्खडा ?
अणता । एवं जाव मणुस्सत्ते । वाणमंतर-जोइसिय-वेमाणियत्ते जहा नेरइयत्ते । एव जाव वेमाणियाण[5] वेमाणियत्ते । एवं सत्त वि पोग्गलपरियट्टा भाणियव्वा —जत्थ[6] अत्थि तत्थ[7] अतीता वि पुरेक्खडा वि अणंता भाणियव्वा, जत्थ[8] नत्थि तत्थ दोवि नत्थि भाणियव्वा जाव—

९६. वेमाणियाण वेमाणियत्ते केवतिया आणापाणुपोग्गलपरियट्टा अतीता ?
अणता ।
केवतिया पुरेक्खडा ?

---

१. एगुत्तरिया (अ); एक्कुत्तरिया (क, ता) ।
२. तेक्कोवि (व, म) ।
३. °सरीर अत्थि (अ, स) ।
४. नत्येक्कोवि (क, ख, म) ।
५. वेमाणियस्स (क, ता, व) ।
६ जस्स (क, ता, व, म) ।
७. तस्स (क, ता, व, म) ।
८ जस्स (क, ख, ता, व, म) ।

अणता ।।

९७. से केणट्ठेण भते ! एव वुच्चइ—ओरालियपोग्गलपरियट्टे-ओरालियपोग्गलपरियट्टे ?

गोयमा ! जण्ण जीवेण ओरालियसरीरे वट्टमाणेण ओरालियसरीरपायोग्गाइ दव्वाइ ओरालियसरीरत्ताए गहियाइ बद्धाइ पुट्ठाइ कडाइ पट्ठवियाइ निविट्ठाइ अभिनिविट्ठाइ अभिसमण्णागयाइ परियादियाइ परिणामियाइ निज्जिण्णाइ निसिरियाइ निसिट्ठाइ भवति । से तेणट्ठेण गोयमा ! एव वुच्चइ—ओरालियपोग्गलपरियट्टे-ओरालियपोग्गलपरियट्टे ।

एव वेउव्वियपोग्गलपरियट्टेवि, नवर—वेउव्वियसरीरे वट्टमाणेण वेउव्वियसरीरप्पायोग्गाइ दव्वाइ वेउव्वियसरीरत्ताए गहियाइ, सेस त चेव सव्व, एव जाव आणापाणुपोग्गलपरियट्टे, नवर—आणापाणुपायोग्गाइ सव्वदव्वाइ आणापाणुत्ताए गहियाइ, सेस त चेव ।।

९८ ओरालियपोग्गलपरियट्टे ण भते ! केवइकालस्स निव्वत्तिज्जइ ?

गोयमा ! अणताहि 'ओसप्पिणीहिं उस्सप्पिणीहिं'[1] एवतिकालस्स निव्वत्तिज्जइ । एव वेउव्वियपोग्गलपरियट्टे वि । एव जाव आणापाणुपोग्गलपरियट्टेवि ।।

९९. एयस्स ण भते ! ओरालियपोग्गलपरियट्टनिव्वत्तणाकालस्स, वेउव्वियपोग्गलपरियट्टनिव्वत्तणाकालस्स जाव आणापाणुपोग्गलपरियट्टनिव्वत्तणाकालस्स य कयरे कयरेहिंतो[2] •अप्पा वा ? वहुया वा ? तुल्ला वा ?° विसेसाहिया वा ?

गोयमा ! सव्वत्थोवे कम्मगपोग्गलपरियट्टनिव्वत्तणाकाले, तेयापोग्गलपरियट्टनिव्वत्तणाकाले अणतगुणे, ओरालियपोग्गलपरियट्टनिव्वत्तणाकाले अणतगुणे, आणापाणुपोग्गलपरियट्टनिव्वत्तणाकाले अणतगुणे, मणपोग्गलपरियट्टनिव्वत्तणाकाले अणतगुणे, वइपोग्गलपरियट्टनिव्वत्तणाकाले अणतगुणे, वेउव्वियपोग्गलपरियट्टनिव्वत्तणाकाले अणतगुणे ।।

१००. एएसि ण भते ! ओरालियपोग्गलपरियट्टाण जाव आणापाणुपोग्गलपरियट्टाण य कयरे कयरेहिंतो[3] •अप्पा वा ? वहुया या ? तुल्ला वा ?° विसेसाहिया वा ?

गोयमा ! सव्वत्थोवा वेउव्वियपोग्गलपरियट्टा, वइपोग्गलपरियट्टा अणतगुणा, मणपोग्गलपरियट्टा अणतगुणा, आणापाणुपोग्गलपरियट्टा अणतगुणा, ओरालिय-

---

१. ओसप्पिणि-उस्स° (अ, ख, व, म); उस्सपिणीहिं ओस° (क), उस्सप्पिरिए-ओस° (स) ।

२ स० पा०—कयरेहिंतो जाव विसेसाहिया ।

३. स० पा०—कयरेहिंतो जाव विसेसाहिया ।

पोग्गलपरियट्टा अणंतगुणा, तेयापोग्गलपरियट्टा अणतगुणा, कम्मगपोग्गलपरियट्टा अणतगुणा ॥

१०१. सेव भते ! सेव भते ! त्ति भगव जाव[1] विहरइ ॥

पंचमो उद्देसो

वण्णादि अवण्णादि च पडुच्च दव्ववीमंसा-पदं

१०२. रायगिहे जाव[2] एव वयासी—अह भते ! पाणाइवाए, मुसावाए, अदिण्णादाणे, मेहुणे, परिग्गहे—एस ण कतिवण्णे, कतिगंधे, कतिरसे, कतिफासे पण्णत्ते ?
गोयमा ! पचवण्णे, दुगधे, पचरसे, चउफासे पण्णत्ते ॥

१०३ अह भते ! कोहे, कोवे, रोसे, दोसे, अखमा, सजलणे, कलहे, चंडिक्के, भंडणे, विवादे—एस ण कतिवण्णे जाव कतिफासे पण्णत्ते ?
गोयमा ! पचवण्णे, 'दुगधे, पचरसे'[3], चउफासे पण्णत्ते ॥

१०४. अह भते ! माणे, मदे, दप्पे, थभे, गव्वे, अत्तुक्कोसे[4], परपरिवाए, उक्कोसे[5], अवक्कोसे[6], उण्णते, उण्णामे, दुण्णामे—एस ण कतिवण्णे जाव कतिफासे पण्णत्ते ?
गोयमा ! पचवण्णे, [7]°दुगधे, पचरसे, चउफासे, पण्णत्ते° ॥

१०५. अह भते ! माया, उवही, नियडी, वलए[8], गहणे, णूमे, कक्के, कुरुए[9], जिम्हे[10], किव्बिसे, आयरणया, गूहणया, वचणया, पलिउचणया, सातिजोगे—एस णं कतिवण्णे जाव कतिफासे पण्णत्ते ?
गोयमा ! पचवण्णे [11]°दुगधे पचरसे चउफासे पण्णत्ते° ॥

१०६ अह भते ! लोभे, इच्छा, मुच्छा, कखा, गेही, तण्हा, भिज्झा, अभिज्झा, आसासणया, पत्थणया, लालप्पणया, कामासा, भोगासा, जीवियासा, मर-

---

१. भ० १।५१ ।
२. भ० १।४-१० ।
३. पंचरसे दुगधे (अ, क, ख, ता, व, म, स) ।
४. अत्तुक्कासे (क, ख), अत्तुक्करिसे (ता) ।
५. उक्कासे (ख, वृपा) ।
६. अवक्कासे (ख, वृपा) ।
७. स० पा०—जहा कोहे तहेव ।
८ वलये (अ, क, ख, व, म, स) ।
९ कुरूए (म) ।
१० भिमे (अ, व, स), जिम्मे (क), भिम्मे (ख); पिम्हे (ता) ।
११. स० पा०—जहेव कोहे ।

णासा[1], नदिरागे[2]—एस ण कतिवण्णे जाव कतिफासे पण्णत्ते ?
[3]•गोयमा ! पचवण्णे दुगधे पचरसे चउफासे पण्णत्ते° ।।

१०७ अह भते ! पेज्जे, दोसे, कलहे[4], •अ०भक्खाणे, पेसुन्ने, परपरिवाए, अरतिरती, मायामोसे,° मिच्छादसणसल्ले—एस ण कतिवण्णे जाव कतिफासे पण्णत्ते ?
[5]•गोयमा ! पचवण्णे दुगधे पचरसे चउफासे पण्णत्ते° ।।

१०८ अह भते ! पाणाइवायवेरमणे, जाव[6] परिग्गहवेरमणे, कोहविवेगे जाव[7] मिच्छादसणसल्लविवेगे—एस ण कतिवण्णे जाव कतिफासे पण्णत्ते ?
गोयमा ! अवण्णे, अगधे, अरसे, अफासे पण्णत्ते ।।

१०९ अह भंते ! उप्पत्तिया, वेणइया, कम्मया[8], पारिणामिया—एस ण कतिवण्णा जाव कतिफासा पण्णत्ता ?
[9]•गोयमा ! अवण्णा, अगधा, अरसा, अफासा पण्णत्ता° ।।

११० अह भते ! ओग्गहे, ईहा, अवाए[10], धारणा—एस ण कतिवण्णा जाव कतिफासा पण्णत्ता ?
[11]•गोयमा ! अवण्णा, अगधा, अरसा°, अफासा पण्णत्ता ।।

१११ अह भते ! उट्ठाणे, कम्मे, बले, वीरिए, पुरिसक्कार-परक्कमे—एस ण कतिवण्णे जाव कतिफासे पण्णत्ते ?
[12]•गोयमा ! अवण्णे, अगधे, अरसे°, अफासे पण्णत्ते ।।

११२ सत्तमे ण भते ! ओवासतरे कतिवण्णे जाव कतिफासे पण्णत्ते ?
[13]•गोयमा ! अवण्णे, अगधे, अरसे°, अफासे पण्णत्ते ।।

११३ सत्तमे ण भते ! तणुवाए कतिवण्णे जाव कतिफासे पण्णत्ते ?
[14]•गोयमा । पचवण्णे, दुगधे, पचरसे° अट्ठफासे पण्णत्ते ।
एव जहा सत्तमे तणुवाए तहा सत्तमे घणवाए, घणोदधी, पुढवी । छट्ठे ओवासतरे अवण्णे । तणुवाए जाव छट्ठी पुढवी—एयाइ अट्ठफासाइ । एव जहा सत्तमाए पुढवीए वत्तव्वया भणिया तहा जाव पढमाए पुढवीए भाणियव्व । जबुद्दीवे दीवे जाव सयभुरमणे समुद्दे, सोहम्मे कप्पे जाव ईसिपब्भारा पुढवी,

---

१. इद च क्वचिन्न दृश्यते (वृ) ।
२. नदीरागे (क, व, म) ।
३. स० पा०—जहेव कोहे ।
४. स० पा०—कलहे जाव मिच्छा° ।
५ स० पा०—जहेव कोहे तहेव चउफासे ।
६. भ० १।३८५ ।
७. ठा० १।११५-१२५ ।
८ कम्मिया (अ, क, ख, ता, म) ।
९ स० पा०—त चेव जाव अफासा ।
१० अपोहे (क), अपाए (व, म) ।
११ सं० पा०—एव चेव जाव अफासा ।
१२. स० पा०—त चेव जाव अफासे ।
१३. स० पा०—एव चेव जाव अफासे ।
१४ स० पा०—जहा पाणाइवाए नवर अट्ठफासे ।

नेरइयावासा जाव वेमाणियावासा—-एयाणि सव्वाणि अट्ठफासाणि ॥

११४ नेरइयाण भते ! कतिवण्णा जाव कतिफासा पण्णत्ता ?
गोयमा ! वेउव्विय-तेयाइ पडुच्च[1] पचवण्णा, 'दुगधा, पचरसा'[2], अट्ठफासा पण्णत्ता । कम्मगं पडुच्च पचवण्णा, दुगधा, पचरसा, चउफासा पण्णत्ता । जीव पडुच्च अवण्णा जाव अफासा पण्णत्ता । एव जाव थणियकुमारा ॥

११५ पुढविक्काइयाण—पुच्छा ।
गोयमा ! ओरालिय-तेयगाइ पडुच्च पचवण्णा जाव अट्ठफासा पण्णत्ता । कम्मग पडुच्च जहा नेरइयाण । जीव पडुच्च तहेव । एव जाव चउरिदिया, नवर—वाउक्काइया ओरालिय-वेउव्विय-तेयगाइ पडुच्च पचवण्णा जाव अट्ठफासा पण्णत्ता, सेस जहा नेरइयाण । पचिंदियतिरिक्खजोणिया जहा वाउक्काइया ॥

११६ मणुस्साण—पुच्छा ।
ओरालिय-वेउव्विय-आहारग-तेयगाइ पडुच्च पचवण्णा जाव अट्ठफासा पण्णत्ता । कम्मग जीव च पडुच्च जहा नेरइयाण वाणमतर-जोइसिय-वेमाणिया जहा नेरइया ।
धम्मत्थिकाए जाव[3] पोग्गलत्थिकाए—एए सव्वे अवण्णा, नवरं—पोग्गलत्थिकाए पचवण्णे, दुगधे, पचरसे, अट्ठफासे पण्णत्ते ।
नाणावरणिज्जे जाव[4] अतराइए—एयाणि चउफासाणि ॥

११७ कण्हलेसा णं भते ! कतिवण्णा [5]॰जाव कतिफासा पण्णत्ता ? ॰
दव्वलेस पडुच्च पचवण्णा जाव अट्ठफासा पण्णत्ता । भावलेस पडुच्च अवण्णा, अगधा, अरसा, अफासा पण्णत्ता । एव जाव[6] सुक्कलेस्सा ।
सम्मदिट्ठी, मिच्छदिट्ठी, सम्मामिच्छदिट्ठी, चक्खुदसणे, अचक्खुदसणे, ओहिदसणे, केवलदसणे, आभिणिबोहियनाणे जाव[7] विब्भगनाणे, आहारसण्णा जाव परिग्गहसण्णा—एयाणि अवण्णाणि, अगधाणि, अरसाणि, अफासाणि ।
ओरालियसरीरे जाव तेयगसरीरे—एयाणि अट्ठफासाणि । कम्मगसरीरे[8] चउफासे । मणजोगे, वइजोगे य चउफासे, कायजोगे अट्ठफासे ।
सागारोवओगे अणागारोवओगे य अवण्णे ॥

११८. सव्वदव्वा ण भते ! कतिवण्णा [9]॰जाव कतिफासा पण्णत्ता ? ॰

---

१. पडुच्चा (ता, व, म) ।
२ पचरसा दुगधा (अ, क, ख, ता, व, म, स) ।
३ भ० २।१२४ ।
४. भ० ६।३३ ।
५. स० पा०—पुच्छा ।
६ भ० १।१०२ ।
७. भ० २।१३७ ।
८. कम्मसरीरे (व, म) ।
९. स० पा०—पुच्छा ।

गोयमा ! अत्थेगतिया सव्वदव्वा पचवण्णा जाव अट्ठफासा पण्णत्ता । अत्थेगतिया सव्वदव्वा पचवण्णा जाव चउफासा पण्णत्ता । अत्थेगतिया सव्वदव्वा एगवण्णा, एगगधा, एगरसा, दुफासा पण्णत्ता । अत्थेगतिया सव्वदव्वा अवण्णा जाव अफासा पण्णत्ता । एव सव्वपएसा वि, सव्वपज्जवा वि । तीयद्धा अवण्णा जाव अफासा । एव अणागयद्धा वि, सव्वद्धा वि ।।

११९ जीवे ण भते ! गब्भ वक्कममाणे कतिवण्ण, कतिगध, कतिरस, कतिफास परिणाम[1] परिणमइ ?
गोयमा ! पचवण्ण, दुगध, पचरस, अट्ठफास परिणाम[2] परिणमइ ।।

कम्मओ विभत्ति-पदं

१२०. कम्मओ णं भते ! जीवे नो अकम्मओ विभत्तिभाव परिणमइ ? कम्मओ ण जए नो अकम्मओ विभत्तिभाव परिणमइ ?
हता गोयमा ! कम्मओ ण [3]•जीवे नो अकम्मओ विभत्तिभाव परिणमइ, कम्मओ णं जए नो अकम्मओ विभत्तिभाव° परिणमइ ।।

१२१ सेव भते ! सेव भते ! त्ति[4] ।।

छट्ठो उद्देसो

चंद-सूर-गहण पदं

१२२. रायगिहे जाव[5] एव वयासी—बहुजण ण भते ! अण्णमण्णस्स एवमाइक्खइ जाव[6] एव परूवेइ– एव खलु राहू चद गेण्हति, एव खलु राहू चद गेण्हति ।।

१२३. से कहमेय भते ! एव ?
गोयमा ! जण्ण से बहुजणे अण्णमण्णस्स एवमाइक्खइ जाव जे ते एवमाहसु मिच्छ ते एवमाहसु, अह पुण गोयमा ! एवमाइक्खामि जाव[7] एव परूवेमि— एव खलु राहू देवे महिड्ढीए जाव[8] महेसक्खे[9] वरवत्थधरे वरमल्लधरे वरगधधरे वराभरणधारी ।

---

१. × (ता) ।
२. × (ता) ।
३. स० पा०—त चेव जाव परिणमइ ।
४. भ० १।५१ ।
५. भ० १।४-१० ।
६. भ० १।४२० ।
७. भ० १।४२१ ।
८. भ० ३।४ ।
९. महेसक्के (व); महसोक्खे (म) ।

राहुस्स ण देवस्स नव नामधेज्जा पण्णत्ता, त जहा—सिघाडए[1] जडिलए खतए[2] खरए दद्दुरे मगरे मच्छे कच्छभे[3] कण्हसप्पे ।

राहुस्स ण देवस्स विमाणा पचवण्णा, पण्णत्ता, त जहा—किण्हा, नीला, लोहिया, हालिद्दा, सुक्किला । अत्थि कालए राहुविमाणे खजणवण्णाभे पण्णत्ते, अत्थि नीलए राहुविमाणे लाउयवण्णाभे पण्णत्ते, अत्थि लोहिए राहुविमाणे मजिट्ठवण्णाभे पण्णत्ते, अत्थि पीतए राहुविमाणे हालिद्दवण्णाभे पण्णत्ते, अत्थि सुक्किलए राहुविमाणे भासरासिवण्णाभे पण्णत्ते ।

जदा ण राहू आगच्छमाणे वा गच्छमाणे वा विउव्वमाणे वा परियारेमाणे वा चदलेस्स पुरत्थिमेण आवरेत्ता ण पच्चत्थिमेण वीतीवयइ तदा ण पुरत्थिमेण चदे उवदंसेति, पच्चत्थिमेण राहू । जदा ण राहू आगच्छमाणे वा गच्छमाणे वा विउव्वमाणे वा परियारेमाणे वा चदलेस्सा पच्चत्थिमेण आवरेत्ता ण पुरत्थिमेण वीतीवयइ तदा ण पच्चत्थिमेणं चदे उवदसेति, पुरत्थिमेण राहू । एव जहा पुरत्थिमेण पच्चत्थिमेण य दो आलावगा भणिया एव दाहिणेण उत्तरेण य दो आलावगा भाणियव्वा । एव उत्तरपुरत्थिमेण दाहिणपच्चत्थिमेण य दो आलावगा भाणियव्वा । एव दाहिणपुरत्थिमेण उत्तरपच्चत्थिमेण य दो आलावगा भाणियव्वा । एव चेव जाव तदा ण उत्तरपच्चत्थिमेण चदे उवदसेति, दाहिणपुरत्थिमेण राहू । जदा ण राहू आगच्छमाणे वा गच्छमाणे वा विउव्वमाणे वा परियारेमाणे वा चदलेस्स आवरेमाणे-आवरेमाणे चिट्ठइ तदा ण मणुस्सलोए मणुस्सा वदति—एव खलु राहू चद गेण्हति, एव खलु राहू चदं गेण्हति । जदा णं राहू आगच्छमाणे वा गच्छमाणे वा विउव्वमाणे वा परियारेमाणे वा चदलेस्सा[4] आवरेत्ता ण पासेण वीतीवयइ तदा ण मणुस्सलोए मणुस्सा वदति—एव खलु चदेण राहुस्स कुच्छी भिन्ना, एव खलु चदेण राहुस्स कुच्छी भिन्ना । जदा ण राहू आगच्छमाणे वा गच्छमाणे वा विउव्वमाणे वा परियारेमाणे वा चदलेस्सा आवरेत्ता ण पच्चोसक्कइ तदा ण मणुस्सलोए मणुस्सा वदति—एव खलु राहुणा चदे वते, एव खलु राहुणा चदे वते । जदा ण राहू आगच्छमाणे वा गच्छमाणे वा विउव्वमाणे वा परियारेमाणे वा चदलेस्सा अहे सपक्खि सपडिदिसि आवरेत्ता ण चिट्ठइ तदा ण मणुस्सलोए मणुस्सा वदति—एव खलु राहुणा चदे घत्थे, एव खलु राहुणा चदे घत्थे ।।

१२४ कतिविहे ण भते ! राहू पण्णत्ते ?

गोयमा ! दुविहे राहू पण्णत्ते, त जहा—धुवराहू य, पव्वराहू य । तत्थ ण जे से धुवराहू से ण बहुलपक्खस्स पाडिवए पन्नरसतिभागेण पन्नरसतिभागं

---

१. सघाडए (व) ।
२. खत्तए (अ); खतए (ख); खभए (स) ।
३. अच्छभे (व) ।
४. चदस्स लेस (क, व, म) ।

चदलेस्सा आवरेमाणे-आवरेमाणे चिट्ठइ, त जहा—पढमाए पढमं भाग, बितियाए वितिय भाग जाव पन्नरसेसु पन्नरसम भाग[1]। चरिमसमये चदे रत्ते भवइ, अवसेसे समये चदे 'रत्ते वा विरत्ते वा'[2] भवइ। तमेव[3] सुक्कपक्खस्स[4] उवदसेमाणे-उवदसेमाणे चिट्ठइ, पढमाए पढम भाग जाव पन्नरसेसु पन्नरसम भाग। चरिमसमये चदे विरत्ते भवइ, अवसेसे समये चदे 'रत्ते वा विरत्ते वा'[5] भवइ। तत्थ ण जे से पव्वराहू से जहण्णेण 'छण्ह मासाण'[6] उक्कोसेण बायालीसाए मासाण चदस्स[7], अडयालीसाए सवच्छराण सूरस्स[8]॥

ससि-आइच्च-पद

१२५ से केणट्ठेण भते ! एव वुच्चइ—चदे ससी, चदे ससी ?
गोयमा ! चदस्स णं जोइसिदस्स जोइसरण्णो मियके विमाणे कता देवा, कताओ देवीओ, कताइ आसण-सयण-खभ-भडमत्तोवगरणाइ, अप्पणा वि य ण चदे जोइसिंदे जोइसराया सोमे कते सुभए पियदसणे सुरूवे। से तेणट्ठेण[9] •गोयमा ! एव वुच्चइ—चदे ससी, चदे° ससी॥

१२६. से केणट्ठेण भते ! एव वुच्चइ—सूरे आदिच्चे, सूरे आदिच्चे ?
गोयमा ! सूरादिया ण समया इ वा आवलिया इ वा जाव[10] ओसप्पिणी इ वा उस्सप्पिणी इ वा। से तेणट्ठेण[11] •गोयमा ! एव वुच्चइ—सूरे आदिच्चे, सूरे° आदिच्चे॥

चंद-सूराणं कामभोग-पदं

१२७ चदस्स ण भते ! जोइसिदस्स जोइसरण्णो कति अग्गमहिसीओ पण्णत्ताओ ?
जहा दसमसए जाव[12] नो चेव ण मेहुणवत्तिय। सूरस्स वि तहेव॥

१२८. चदिम-सूरिया ण भते ! जोइसिदा जोइसरायाणो केरिसए कामभोगे पच्चणुब्भवमाणा विहरति ?
गोयमा ! से जहानामए केइ पुरिसे पढमजोव्वणुट्ठाणबलत्थे पढमजोव्वणुट्ठाणबलत्थाए भारियाए सद्धि अचिरवत्तविवाहकज्जे[13] अत्थगवेसणयाए सोलसवास-

---

१. 'आवरेत्ता ण चिट्ठइ' त्ति वाक्यशेष (वृ)।
२ रत्ते य विरत्ते य (क)।
३ तामेव (क, ख, ता, व, म)।
४ प्रतिपदादिष्विति गम्यते (वृ)।
५. रत्ते य विरत्ते य (अ, ख, ता), रत्ते य विरत्ते वा (क, व, म, स)।
६. छम्मासाण (ता)।
७ लेश्यामावृत्य तिष्ठतीति गम्यम् (वृ)।
८. लेश्यामावृत्य तिष्ठतीति गम्यम् (वृ)।
९ स० पा०—तेणट्ठेण जाव ससी।
१० ठा० २।३८७-३८९।
११. स० पा०—तेणट्ठेण जाव आदिच्चे।
१२. भ० १०।९०।
१३ अचिरवत्तावाहुज्जे (ता)।

विप्पवासिए, से ण तओ लद्धट्ठे कयकज्जे अणहसमग्गे पुणरवि नियग गिहं हव्वमागए, ण्हाए कयवलिकम्मे कयकोउय-मगल-पायच्छित्ते सव्वालकार-विभूसिए मणुण्ण थालिपागसुद्ध[1] अट्ठारसवजणाकुल भोयणं भुत्ते समाणे तसि तारिसगसि वासघरसि [2]•अब्भितरओ सचित्तकम्मे वाहिरओ दूमिय-घट्ठ-मट्ठे विचित्तउल्लोग-चिल्लियतले मणिरयणपणासियधयारे, वहुसम-सुविभत्तदेसभाए पचवण्ण-सरससुरभि-मुक्कपुप्फपुजोवयारकलिए कालागुरु-पवरकुदुरुक्क-तुरुक्क-धूव-मघमघेत-गधुद्धुयाभिरामे सुगधवरगधिए गधवट्टिभूए।

तसि तारिसगसि सयणिज्जसि—सालिगणवट्टिए उभओ विव्वोयणे दुहओ उण्णए मज्झे णय-गभीरे गगापुलिणवालुय-उद्दालसालिसए ओयविय-खोमिय-दुगुल्लपट्ट-पडिच्छयणे सुविरइयरयत्ताणे रत्तसुयसवुए सुरम्मे आइणग-रूय-वूर-नवणीय-तूलफासे सुगधवरकुसुम-चुण्ण°-सयणोवयारकलिए ताए तारिसियाए भारियाए सिंगारागारचारुवेसाए[3] •सगय-गय-हसिय-भणिय-चेट्ठिय-विलास-सललिय-सलाव-निउणजुत्तोवयारकुसलाए सुदरथण-जघण-वयण-कर-चरण-नयण-लावण्ण-रूव-जोव्वण-विलास°कलियाए अणुरत्ताए अविरत्ताए मणाणुकूलाए सद्धि इट्ठे सद्दे फरिसे[4] •रसे रूवे गधे° पचविहे माणुस्सए कामभोगे पच्चणुब्भवमाणे विहरेज्जा, से ण गोयमा! पुरिसे विउसमणकालसमयसि केरिसयं सायासोक्खं पच्चणुब्भवमाणे विहरइ?

ओराल समणाउसो!

तस्स ण गोयमा! पुरिसस्स कामभोगेहिंतो वाणमतराण देवाण एत्तो अणत-गुणविसिट्ठतरा चेव कामभोगा। वाणमतराण देवाण कामभोगेहिंतो असुरिंदव-ज्जियाण भवणवासीण देवाण एत्तो अणंतगुणविसिट्ठतरा चेव कामभोगा। असुरिंदवज्जियाणं भवणवासियाण देवाण कामभोगेहिंतो असुरकुमाराण देवाण एत्तो अणतगुणविसिट्ठतरा चेव कामभोगा। असुरकुमाराण देवाण कामभोगेहिंतो गहगण-नक्खत्त-तारारूवाणं जोतिसियाण देवाण एत्तो अणतगुणविसिट्ठतरा चेव कामभोगा। गहगण-नक्खत्त[5]-•तारारूवाण जोतिसियाण° कामभोगेहिंतो चदिम-सूरियाण जोतिसियाण जोतिसराईण एत्तो अणंतगुणविसिट्ठतरा चेव कामभोगा। चदिम-सूरिया णं गोयमा! जोतिसिंदा जोतिसरायाणो एरिसे कामभोगे पच्चणुब्भवमाणा विहरति॥

---

१. थालिपागसिद्ध (ब)।

२. सं० पा०—वण्णओ महब्बले कुमारे जाव सयणो°।

३. सं० पा०—सिंगारागारचारुवेसाए जाव कलियाए।

४. सं० पा०—फरिसे जाव पंचविहे।

५. पा० सं०—नक्खत्त जाव काम°।

१२९ सेव भते ! सेव भते ! त्ति भगव गोयमे समण भगव महावीरं वदइ नमसइ, वदित्ता नमसित्ता[1] •सजमेण तवसा अप्पाण भावेमाणे° विहरइ ॥

सत्तमो उद्देसो

जीवाणं सव्वत्थ जम्म-मच्चु-पदं

१३०. तेण कालेण तेण समएण जाव[2] एव वयासी—केमहालए ण भते ! लोए पण्णत्ते ?

गोयमा ! महतिमहालए लोए पण्णत्ते—पुरत्थिमेण असखेज्जाओ जोयणकोडाकोडीओ, दाहिणेण असखेज्जाओ [3]•जोयणकोडाकोडीओ°, एव पच्चत्थिमेण वि, एव उत्तरेण वि, एव उड्ढ पि, अहे असखेज्जाओ जोयणकोडाकोडीओ आयाम-विक्खभेण ॥

१३१. एयंसि[4] ण भते ! एमहालगसि लोगसि अत्थि केइ परमाणुपोग्गलमेत्ते वि पएसे, जत्थ ण अय जीवे न जाए वा, न मए वा वि ?

गोयमा ! नो इणट्ठे समट्ठे ॥

१३२. से केणट्ठेण भते ! एव वुच्चइ—एयसि ण एमहालगसि लोगसि नत्थि केइ परमाणुपोग्गलमेत्ते वि पएसे, जत्थ ण अय जीवे न जाए वा, न मए वा वि ?

गोयमा ! से जहानामए केइ पुरिसे अया-सयस्स एग मह अया-वय करेज्जा. से ण तत्थ जहण्णेण एक्क वा दो वा तिण्णि वा, उक्कोसेण अया-सहस्स पक्खिवेज्जा, ताओ ण तत्थ पउरगोयराओ पउरपाणियाओ जहण्णेण एगाह वा दुयाह वा तियाह वा, उक्कोसेण छम्मासे परिवसेज्जा। अत्थि ण गोयमा ! तस्स अया-वयस्स केई परमाणुपोग्गलमेत्ते वि पएसे, जे ण तासि अयाण उच्चारेण वा पासवणेण वा खेलेण वा सिघाणेण वा वतेण वा पित्तेण वा पूएण वा सुक्केण वा सोणिएण वा चम्मेहिं वा रोमेहिं वा सिंगेहिं वा खुरेहिं वा नहेहिं वा अणोक्कतपुव्वे[5] भवइ ?

नो इणट्ठे समट्ठे ।

होज्जा वि ण गोयमा ! तस्स अया-वयस्स केई परमाणुपोग्गलमेत्ते वि पएसे,

---

१. स० पा०—नमसित्ता जाव विहरइ ।
२. भ० १।४-१० ।
३. स० पा०—एव चेव ।
४. एयस्सि (ता) ।
५ अणक्कतपुव्वे (क, स) ।

जे ण तासिं अयाण उच्चारेण वा जाव नहेहि वा अणोक्कतपुव्वे, नो चेव ण एयसि एमहालगसि लोगसि लोगस्स य सासय भाव, ससारस्स य अणादिभाव, जीवस्स य णिच्चभाव, कम्मवहुत्त, जम्मण-मरणवाहुल्ल च पडुच्च अत्थि[1] केइ परमाणुपोग्गलमेत्ते वि पएसे, जत्थ ण अय जीवे न जाए वा, न मए वा वि। से तेणट्ठेण [2]°गोयमा! एव वुच्चइ—एयसि ण एमहालगसि लोगसि नत्थि केइ परमाणुपोग्गलमेत्ते वि पएसे, जत्थ ण अय जीवे न जाए वा°, न मए वा वि ॥

असइं अदुवा अणंतखुत्तो उववज्जण-पदं

१३३ कति ण भते! पुढवीओ पण्णत्ताओ?
गोयमा! सत्त पुढवीओ पण्णत्ताओ, जहा पढमसए पचमउद्देसए तहेव आवासा ठावेयव्वा जाव[3] अणुत्तरविमाणेत्ति जाव[4] अपराजिए सव्वट्ठसिद्धे ॥

१३४ अयण्ण[5] भते! जीवे इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए तीसाए निरयावाससयसहस्सेसु एगमेगसि निरयावाससि पुढविक्काइयत्ताए जाव वणस्सइकाइयत्ताए, नरगत्ताए, नेरइयत्ताए उववन्नपुव्वे?
हता गोयमा! असइ, अदुवा अणतखुत्तो ॥

१३५ सव्वजीवा वि ण भते! इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए तीसाए निरयावाससय-सहस्सेसु[6]°एगमेगसि निरयावाससि पुढविकाइयत्ताए जाव वणस्सइकाइयत्ताए, नरगत्ताए, नेरइयत्ताए उववन्नपुव्वे?
हता गोयमा! असइ, अदुवा° अणतखुत्तो ॥

१३६ अयण्ण भते! जीवे सक्करप्पभाए पुढवीए पणुवीसाए निरयावाससयसहस्सेसु एगमेगसि निरयावाससि°? एव जहा रयणप्पभाए तहेव दो आलावगा भाणि-यव्वा। एव जाव धूमप्पभाए ॥

१३७. अयण्ण भते! जीवे तमाए पुढवीए पचूणे निरयावाससयसहस्से एगमेगसि निरयावाससि°? सेस त चेव[7] ॥

१३८ अयण्ण भते! जीवे अहेसत्तमाए पुढवीए पचसु अणुत्तरेसु महतिमहालएसु महानिरएसु एगमेगसि निरयावाससि°? सेस जहा रयणप्पभाए ॥

---

१. 'नत्थि' इति पद लभ्यते, किन्तु प्रस्तुतवाक्यारम्भे 'नो चेव ण' इति पाठोस्ति, तेनैतत् न सङ्गच्छते। वृत्तौ सम्यक्पाठोस्ति। स एवास्माभि· स्वीकृत ।

२ स० पा०—तं चेव जाव न।

३ भ० १।२११-२५५।

४. भ० ५।२२२।

५. अय ण (अ, क, ता, म), अय ण (ख, व)।

६. स० पा०—त चेव जाव अणतखुत्तो।

७. भ० १२।१३४।

१३९ अयण्णं भते ! जीवे चउसट्ठीए असुरकुमारावाससयसहस्सेसु एगमेगसि असुरकुमारावाससि पुढविक्काइयत्ताए जाव वणस्सइकाइयत्ताए देवत्ताए देवित्ताए आसण-सयण-भडमत्तोवगरणत्ताए उववन्नपुव्वे ?

हता गोयमा[1] ! •असइ, अदुवा° अणतखुत्तो। सव्वजीवा वि ण भते ! एव चेव। एव जाव थणियकुमारेसु। नाणत्त आवासेसु, आवासा पुव्वभणिया ॥

१४० अयण्ण भते ! जीवे असखेज्जेसु पुढविक्काइयावाससयसहस्सेसु एगमेगसि पुढविक्काइयावाससि पुढविकाइयत्ताए जाव वणस्सइकाइयत्ताए उववन्नपुव्वे ?

हता गोयमा[2] ! • असइ, अदुवा° अणतखुत्तो। एव सव्वजीवा वि। एव जाव वणस्सइकाइएसु ॥

१४१ अयण्ण भते ! जीवे असखेज्जेसु बेइदियावाससयसहस्सेसु[3] एगमेगसि बेइदियावाससि पुढविक्काइयत्ताए जाव वणस्सइकाइयत्ताए, बेइदियत्ताए उववन्नपुव्वे ?

हता गोयमा[4] ! •असइ, अदुवा° अणतखुत्तो। सव्वजीवा वि ण एव चेव। एव जाव मणुस्सेसु, नवर—तेइदिएसु[5] जाव वणस्सइकाइयत्ताए तेइदियत्ताए, चउरिदिएसु चउरिदियत्ताए, पचिदियतिरिक्खजोणिएसु पचिंदियतिरिक्खजोणियत्ताए, मणुस्सेसु मणुस्सत्ताए, सेस जहा बेइदियाण, वाणमतर-जोइसिय-सोहम्मीसाणेसु[6] य जहा असुरकुमाराण ॥

१४२ अयण्ण भते ! जीवे सणकुमारे कप्पे बारससु[7] विमाणावाससयसहस्सेसु एगमेगसि वेमाणियावाससि पुढविकाइयत्ताए [8]•जाव वणस्सइकाइयत्ताए देवत्ताए-आसण-सयण-भडमत्तोवगरणत्ताए उववन्नपुव्वे ?

हता गोयमा ! असइ, अदुवा अणतखुत्तो।° एव सव्वजीवा वि। एव जाव आणयपाणएसु, एव आरणच्चुएसु वि ॥

१४३ अयण्ण भते ! जीवे तिसु वि अट्ठारसुत्तरेसु गेविज्जविमाणावाससयेसु एव चेव ॥

१४४. अयण्ण भते ! जीवे पचसु अणुत्तरविमाणेसु एगमेगसि अणुत्तरविमाणसि पुढविकाइयत्ताए ?

तहेव जाव असइ, अदुवा अणतखुत्तो, नो चेव ण देवत्ताए वा देवीत्ताए वा। एव सव्वजीवा वि ॥

---

१ स० पा०—गोयमा जाव अणतखुत्तो।

२. स० पा०—गोयमा जाव अणतखुत्तो।

३ बेंदिया° (अ, क, ख, व, म, स)।

४ स० पा०—गोयमा जाव अणंतखुत्तो।

५ तेंदिएसु (ख, स)।

६. सोहम्मीसाणे (अ, क, ख, ता, व, म)।

७ बारसेसु (ख), बारस (ता)।

८ स० पा०—सेस जहा असुरकुमाराण जाव अणतखुत्तो नो चेव ण देवित्ताए।

१४५. अयण्णं भते ! जीवे सव्वजीवाण माइत्ताए, पितित्ताए[1], भाइत्ताए, भगिणित्ताए भज्जत्ताए, पुत्तत्ताए, धूयत्ताए, सुण्हत्ताए उववन्नपुव्वे ?
हंता गोयमा ! असइ, अदुवा अणतखुत्तो ।।

१४६. सव्वजीवा वि ण भते ! इमस्स जीवस्स माइत्ताए,[2] •पितित्ताए, भाइत्ताए, भगिणित्ताए, भज्जत्ताए, पुत्तत्ताए, धूयत्ताए, सुण्हत्ताए उववन्नपुव्वे ?
हता गोयमा ! असइ, अदुवा° अणतखुत्तो ।।

१४७ अयण्ण भते ! जीवे सव्वजीवाण अरित्ताए, वेरियत्ताए, घातगत्ताए, वहगत्ताए, पडिणीयत्ताए, पच्चामित्तत्ताए उववन्नपुव्वे ?
हता गोयमा[3] ! •असइ, अदुवा° अणतखुत्तो ।।

१४८. सव्वजीवा वि ण भते ! [4]•इमस्स जीवस्स अरित्ताए, वेरियत्ताए, घातगत्ताए, वहगत्ताए, पडिणीयत्ताए, पच्चामित्तत्ताए उववन्नपुव्वे ?
हता गोयमा ! असइ, अदुवा° अणतखुत्तो ।।

१४९ अयण्ण भते ! जीवे सव्वजीवाण रायत्ताए, जुवरायत्ताए,[5] •तलवरत्ताए, माडंबियत्ताए, कोडुंबियत्ताए, इब्भत्ताए, सेट्ठित्ताए, सेणावइत्ताए,° सत्थवाहत्ताए उववन्नपुव्वे ?
हता गोयमा[6] ! •असइं, अदुवा° अणतखुत्तो ।।

१५० [7]•सव्वजीवा वि णं भते ! इमस्स जीवस्स रायत्ताए, जुवरायत्ताए, तलवरत्ताए माडंबियत्ताए, कोडुंबियत्ताए, इब्भत्ताए, सेट्ठित्ताए, सेणावइत्ताए, सत्थवाहत्ताए उववन्नपुव्वे ?
हता गोयमा ! असइं, अदुवा अणतखुत्तो° ।।

१५१ अयण्ण भते ! जीवे सव्वजीवाणं दासत्ताए, पेसत्ताए, भयगत्ताए[8], भाइल्लत्ताए[9] भोगपुरिसत्ताए, सीसत्ताए, वेसत्ताए उववन्नपुव्वे ?
हंता गोयमा[10] ! •असइं, अदुवा° अणतखुत्तो ।।

१५२. [11]•सव्वजीवा वि ण भते ! इमस्स जीवस्स दासत्ताए, पेसत्ताए, भयगत्ताए,

---

१. × (ख, म), पतित्ताए (व, स) ।
२. सं० पा०—माइत्ताए जाव उववन्नपुव्वा हंता गो जाव अणतखुत्तो ।
३. स० पा०—गोयमा जाव अणतखुत्तो ।
४. स० पा०—एव चेव ।
५. स० पा०—जुवरायत्ताए जाव सत्थवाहत्ताए ।
६. स० पा०—गोयमा जाव अणतखुत्तो ।
७. स० पा०—सव्वजीवाण एव चेव ।
८. भियगत्ताए (ख) ।
९. भाइलत्ताए (ता), भाइल्लगत्ताए (क्व०) ।
१०. सं० पा०—गोयमा जाव अणतखुत्तो ।
११. स० पा०—एव सव्वजीवा वि अणतखुत्तो ।

भाइल्लत्ताए, भोगपुरिसत्ताए, सीसत्ताए, वेसत्ताए उववन्नपुव्वे ?
हंता गोयमा ! असइं, अदुवा° अणंतखुत्तो ।।

१५३ सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति जाव[1] विहरइ ।।

अट्ठमो उद्देसो

देवाणं बिसरीरेसु उववाय-पदं

१५४ तेणं कालेणं तेणं समएणं जाव[2] एवं वयासी—देवे णं भंते ! महिड्ढीए जाव[3] महेसक्खे अणंतरं चयं चइत्ता बिसरीरेसु नागेसु उववज्जेज्जा ?
हंता उववज्जेज्जा ।।

१५५ से णं तत्थ अच्चिय-वंदिय-पूइय-सक्कारिय-सम्माणिए दिव्वे सच्चे सच्चोवाए सन्निहियपाडिहेरे यावि भवेज्जा ?
हंता भवेज्जा ।।

१५६. से णं भंते ! तओहिंतो अणंतरं उव्वट्टित्ता सिज्झेज्जा जाव[4] सव्वदुक्खाणं अंतं करेज्जा ?
हंता सिज्झेज्जा जाव सव्वदुक्खाणं अंतं करेज्जा ।।

१५७ देवे णं भंते ! महिड्ढीए [5]•जाव महेसक्खे अणंतरं चयं चइत्ता° बिसरीरेसु मणीसु उववज्जेज्जा ?
हंता उववज्जेज्जा । एवं चेव जहा नागाणं ।।

१५८ देवे णं भंते ! महिड्ढीए[6] •जाव महेसक्खे अणंतरं चयं चइत्ता° बिसरीरेसु रुक्खेसु उववज्जेज्जा ?
हंता उववज्जेज्जा । एवं चेव, नवरं—इमं नाणत्तं जाव सन्निहियपाडिहेरे लाउल्लोइयमहिए यावि भवेज्जा ?
हंता भवेज्जा । सेसं तं चेव जाव सव्वदुक्खाणं अंतं करेज्जा ।।

पंचेंदियतिरिक्खजोणियाणं उववाय-पदं

१५९ अह भंते ! गोनंगूलवसभे[7], कुक्कुडवसभे, मंडुक्कवसभे—एए णं निस्सीला

---

१. भ० १।५१ ।
२. भ० १।४-१० ।
३. भ० १।३३९ ।
४. भ० १।४४ ।
५ सं० पा०—एवं चेव जाव बिसरीरेसु ।
६. सं० पा०—महिड्ढीए जाव बिसरीरेसु ।
७. गोलंगूल° (क, ब); गोणंगल° (ख, ता) ।

निव्वया निग्गुणा निम्मेरा निप्पच्चक्खाण-पोसहोववासा कालमासे कालं किच्चा इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए उक्कोसं[1] सागरोवमट्ठितीयंसि नरगंसि नेरइयत्ताए उववज्जेज्जा ?
समणे भगवं महावीरे वागरेइ—उववज्जमाणे उववन्ने त्ति वत्तव्वं सिया ।।

१६० अह भंते ! सीहे वग्घे, [2]•वगे, दीविए अच्छे, तरच्छे°, परस्सरे—एए णं निस्सीला [3]•निव्वया निग्गुणा निम्मेरा निप्पच्चक्खाण-पोसहोववासा कालमासे कालं किच्चा इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए उक्कोसं सागरोवमट्ठितीयंसि नरगंसि नेरइयत्ताए उववज्जेज्जा ?
समणे भगवं महावीरे वागरेइ—उववज्जमाणे उववन्ने त्ति° वत्तव्वं सिया ।।

१६१ अह भंते ! ढंके कंके विलए[4] मद्दुए सिखी—एए णं निस्सीला [5]•निव्वया निग्गुणा निम्मेरा निप्पच्चक्खाण-पोसहोववासा कालमासे कालं किच्चा इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए उक्कोसं सागरोवमट्ठितीयंसि नरगंसि नेरइयत्ताए उववज्जेज्जा ?
समणे भगवं महावीरे वागरेइ—उववज्जमाणे उववन्ने त्ति° वत्तव्वं सिया ।।

१६२. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति जाव[6] विहरइ ।।

नवमो उद्देसो

पंचविह-देव-पदं

१६३ कतिविहा णं भंते ! देवा पण्णत्ता ?
गोयमा ! पंचविहा देवा पण्णत्ता, तं जहा—भवियदव्वदेवा, नरदेवा, धम्मदेवा, देवातिदेवा[7], भावदेवा ।।

१६४. से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ—भवियदव्वदेवा-भवियदव्वदेवा ?
गोयमा ! जे भविए[8] पंचिंदियतिरिक्खजोणिए वा मणुस्से वा देवेसु उववज्जि-त्तए[9] । से तेणट्ठेणं गोयमा ! एवं वुच्चइ—भवियदव्वदेवा-भवियदव्वदेवा ।।

---

१. उक्कोसेण (क) ।
२. सं० पा०—जहा ओसप्पिणी उद्देसए जाव परस्सरे ।
३ सं० पा०—एवं चेव जाव वत्तव्वं ।
४. पिलए (अ, ख, ता, स) ।
५. सं० पा०—सेसं तं चेव जाव वत्तव्वं ।
६. भ० १।५१ ।
७. देवाधिदेवा (अ, क, व, म, स); 'देवाहिदेव' त्ति क्वचिद् दृश्यते (वृ) ।
८. इह जातौ एकवचनमतो बहुवचनार्थे व्याख्येयम् (वृ) ।
९ ते यस्माद्भाविदेवभावा इति गम्यम् (वृ) ।

१६५ से केणट्ठेण भते ! एव वुच्चइ—नरदेवा-नरदेवा ?
गोयमा ! जे इमे रायाणो चाउरतचक्कवट्टी[1] उप्पण्णसमत्तचक्करयणप्पहाणा 'नवनिहिपइणो समिद्धकोसा वत्तीसरायवरसहस्साणुयातमग्गा'[2] सागरवरमेहलाहिवइणो मणुस्सिदा। से तेणट्ठेण[3] •गोयमा ! एव वुच्चइ°—नरदेवा-नरदेवा ॥

१६६ से केणट्ठेण भते ! एव वुच्चइ—धम्मदेवा-धम्मदेवा ?
गोयमा ! जे इमे अणगारा भगवतो[4] रियासमिया[5] जाव[6] गुत्तबभयारी। से तेणट्ठेण[7] •गोयमा ! एव वुच्चइ°—धम्मदेवा-धम्मदेवा ॥

१६७ से केणट्ठेण भते ! एव वुच्चइ—देवातिदेवा[8]-देवातिदेवा ?
गोयमा ! जे इमे अरहता भगवतो[9] उप्पण्णनाण-दसणधरा[10] •अरहा जिणा केवली तीयपच्चुप्पन्नमणागयवियाणया सव्वण्णू° सव्वदरिसी। से तेणट्ठेण[11] •गोयमा ! एव वुच्चइ°—देवातिदेवा-देवातिदेवा ॥

१६८ से केणट्ठेण भते ! एव वुच्चइ—भावदेवा-भावदेवा ?
गोयमा ! जे इमे भवणवइ-वाणमतर-जोइस-वेमाणिया देवा[12] देवगतिनाम-गोयाइ कम्माइ वेदेति। से तेणट्ठेण[13] •गोयमा ! एव वुच्चइ°—भावदेवा-भावदेवा ॥

पचविह-देवाणं उववाय-पदं

१६९. भवियदव्वदेवा ण भते ! कओहिंतो उववज्जति—किं नेरइएहिंतो उववज्जति ? तिरिक्ख-मणुस्स-देवेहिंतो उववज्जति ?
गोयमा ! नेरइएहिंतो उववज्जति, तिरिक्ख-मणुस्स-देवेहिंतो वि उववज्जति। भेदो जहा वक्कतीए सव्वेसु उववाएयव्वा जाव[14] अणुत्तरोववाइय त्ति, नवर—असखेज्जवासाउयअकम्मभूमगअतरदीवगसव्वट्ठसिद्धवज्ज जाव अपराजियदेवेहिंतो वि उववज्जति[15] ॥

---

१ ते यस्माद् इति वाक्यशेष (वृ)।
२ चिन्हाङ्कित पाठो वृत्तौ नास्ति व्याख्यात।
३ स० पा०—तेणट्ठेण जाव नरदेवा।
४ ते यस्माद् इति वाक्यशेष (वृ)।
५ इरिया° (क)।
६ भ० २।५५।
७ स० पा०—तेणट्ठेण जाव धम्म°।
८ देवाधिदेवा (अ, क, व, म, स)।
९ भगवता (ख, व, म), ते यस्मात् (वृ)।
१० स० पा०—उप्पन्ननाणदसणधरा जाव सव्व°।
११ स० पा०—तेणट्ठेण जाव देवाति°।
१२ ते यस्मात् (वृ)।
१३ स० पा०—तेणट्ठेण जाव भाव°
१४ प० ६।
१५ उववज्जति नो सव्वट्ठसिद्धदेवेहिंतो उववज्जति (क, ख, ता, ब, म)।

१७०. नरदेवा णं भंते ! कओहिंतो उववज्जंति—किं नेरइएहिंतो—पुच्छा ।
गोयमा ! नेरइएहिंतो उववज्जति, नो तिरिक्खजोणिएहिंतो, नो मणुस्सेहिंतो, देवेहिंतो वि उववज्जति ।।

१७१ जइ नेरइएहिंतो उववज्जति—किं रयणप्पभापुढविनेरइएहिंतो उववज्जति जाव अहेसत्तमापुढविनेरइएहिंतो उववज्जति ?
गोयमा ! रयणप्पभापुढविनेरइएहिंतो उववज्जंति, नो सक्करप्पभापुढविनेरइएहिंतो जाव नो अहेसत्तमापुढविनेरइएहिंतो उववज्जति ।।

१७२ जइ देवेहिंतो उववज्जति किं भवणवासिदेवेहिंतो उववज्जति ? वाणमतर-जोइसिय-वेमाणियदेवेहिंतो उववज्जति ?
गोयमा ! भवणवासिदेवेहिंतो वि उववज्जति, वाणमतरदेवेहिंतो, एवं सव्वदेवेसु उववाएयव्वा, वक्कतीए भेदेण जाव[1] सव्वट्ठसिद्धत्ति ।।

१७३. धम्मदेवा णं भंते ! कओहिंतो उववज्जति—किं नेरइएहिंतो उववज्जति—पुच्छा ।
एव वक्कतीभेदेण सव्वेसु उववाएयव्वा जाव सव्वट्ठसिद्धत्ति, नवर—तम-अहेसत्तम-तेउ-वाउ-असखेज्जवासाउयअकम्मभूमग-अतरदीवगवज्जेसु ।।

१७४ देवातिदेवा ण भंते ! कओहिंतो उववज्जति - किं नेरइएहिंतो उववज्जति—पुच्छा ।
गोयमा ! नेरइएहिंतो उववज्जति, नो तिरिक्खजोणिएहिंतो, नो मण्णुस्सेहिंतो, देवेहिंतो वि उववज्जति ।।

१७५. जइ नेरइएहिंतो ? एव तिसु पुढवीसु उववज्जति, सेसाओ खोडेयव्वाओ ।।

१७६ जइ देवेहिंतो ? वेमाणिएसु सव्वेसु उववज्जति जाव सव्वट्ठसिद्धत्ति, सेसा खोडेयव्वा ।।

१७७. भावदेवा णं भंते ! कओहिंतो उववज्जति ? एव जहा वक्कतीए भवणवासीणं उववाओ तहा भाणियव्वो ।।

पंचविह-देवाणं ठिइ-पद

१७८. भवियदव्वदेवाणं भंते ! केवतिय काल ठिती पण्णत्ता ?
गोयमा ! जहण्णेण अतोमुहुत्तं, उक्कोसेण तिण्णि पलिओवमाइं ।।

१७९. नरदेवाण—पुच्छा ।
गोयमा ! जहण्णेणं सत्त वाससयाइ, उक्कोसेण चउरासीइ पुव्वसयसहस्साइं ।।

१८० धम्मदेवाण—पुच्छा ।
गोयमा ! जहण्णेण अतोमुहुत्त, उक्कोसेण देसूणा पुव्वकोडी ।।

---

१. प० ६ ।

१८१. देवातिदेवाण[1]—पुच्छा ।
गोयमा ! जहण्णेण बावत्तरि वासाइ, उक्कोसेण चउरासीइ पुव्वसयसहस्साइ ।।

१८२ भावदेवाण—पुच्छा ।
गोयमा ! जहण्णेण दस वाससहस्साइ, उक्कोसेण तेत्तीस सागरोवमाइ ।।

पंचविह-देवाण विउव्वणा-पद

१८३ भवियदव्वदेवा ण भते ! किं एगत्त पभू विउव्वित्तए ? पुहत्त पभू विउव्वित्तए ?
गोयमा ! एगत्त पि पभू विउव्वित्तए, पुहत्त पि पभू विउव्वित्तए । एगत्त विउव्वमाणे एगिंदियरूव वा जाव पचिंदियरूव वा, पुहत्त विउव्वमाणे एगिंदियरूवाणि वा जाव पचिंदियरूवाणि वा, ताइ सखेज्जाणि वा असखेज्जाणि वा, सबद्धाणि वा असबद्धाणि वा, सरिसाणि वा असरिसाणि वा विउव्वति, विउव्वित्ता तओ पच्छा[2] जहिच्छियाइ कज्जाइ करेति । एव नरदेवा वि, एव धम्मदेवा वि ।।

१८४ देवातिदेवाण[3]—पुच्छा ।
गोयमा ! एगत्त पि पभू विउव्वित्तए, पुहत्त पि पभू विउव्वित्तए, नो चेव णं सपत्तीए विउव्विसु वा, विउव्वति[4] वा, विउव्विस्सति वा ।
भावदेवा जहा भवियदव्वदेवा ।।

पंचविह-देवाण उव्वट्टण-पद

१८५ भवियदव्वदेवा ण भते ! अणतर उव्वट्टित्ता कहि गच्छति ? कहि उववज्जति —कि नेरइएसु उववज्जति जाव देवेसु उववज्जति ?
गोयमा ! नो नेरइएसु उववज्जति, नो तिरिक्खजोणिएसु, नो मणुस्सेसु, देवेसु उववज्जति ।
'जइ देवेसु उववज्जति° ?'[5] सव्वदेवेसु उववज्जति जाव सव्वट्ठसिद्धत्ति ।।

१८६ नेरदेवा ण भते ! अणतर उव्वट्टित्ता—पुच्छा ।
गोयमा ! नेरइएसु उववज्जति, नो तिरिक्खजोणिएसु, नो मणुस्सेसु, नो देवेसु उववज्जति ।
जइ नेरइएसु उववज्जति°? सत्तसु वि पुढवीसु उववज्जति ।।

१८७ धम्मदेवा ण भते ! अणतर उव्वट्टित्ता—पुच्छा ।
गोयमा ! नो नेरइएसु उववज्जति, नो तिरिक्खजोणिएसु, नो मणुस्सेसु, देवेसु उववज्जति ।।

---

१ देवाधि° (अ, क, व, म, स) ।
२. पच्छा अप्पणो (अ, म, स) ।
३. देवाधि° (अ, क, ख, व, म, स) ।
४ विउव्विति (व, म, स) ।
५ × (ब, म) ।

१८८. जइ देवेसु उववज्जंति किं भवणवासि—पुच्छा ।
गोयमा ! नो भवणवासिदेवेसु उववज्जति, नो वाणमतरदेवेसु उववज्जति, नो जोइसियदेवेसु उववज्जति, वेमाणियदेवेसु उववज्जति । सव्वेसु वेमाणिएसु उववज्जति जाव सव्वट्ठसिद्धअणुत्तरोववाइय[1]°वेमाणियदेवेसु° उववज्जति, अत्थेगतिया सिज्झति जाव सव्वदुक्खाण अत करेति ।।

१८९ देवातिदेवा अणतर उव्वट्टित्ता कहि गच्छति ? कहि उववज्जति ?
गोयमा ! सिज्झति जाव[2] सव्वदुक्खाण अत करेति ।।

१९० भावदेवा ण भते ! अणतर उव्वट्टित्ता – पुच्छा ।
जहा[3] वक्कतीए असुरकुमाराण उव्वट्टणा तहा भाणियव्वा ।।

पंचविह-देवाणं संचिट्ठणा-पद

१९१. भवियदव्वदेवे ण भते ! भवियदव्वदेवे त्ति कालओ केवच्चिर[4] होइ ?
गोयमा ! जहण्णेण अतोमुहुत्त, उक्कोसेण तिण्णि पलिओवमाइ । एव जच्चेव[5] ठिई सच्चेव सचिट्ठणा वि जाव भावदेवस्स, नवर—धम्मदेवस्स जहण्णेण एक्क समय, उक्कोसेण देसूणा पुव्वकोडी ।।

पंचविह-देवाणं अंतर-पद

१९२. भवियदव्वदेवस्स ण भते ! केवतिय काल अतर होइ ?
गोयमा ! जहण्णेण दसवाससहस्साइं अतोमुहुत्तमब्भहियाइ, उक्कोसेण अणत काल—वणस्सइकालो ।।

१९३ नरदेवाण—पुच्छा ।
गोयमा ! जहण्णेण सातिरेग सागरोवम, उक्कोसेण अणत काल—अवड्ढ पोग्गलपरियट्ट देसूण ।।

१९४. धम्मदेवस्स ण—पुच्छा ।
गोयमा ! जहण्णेण पलिओवमपुहत्त, उक्कोसेण अणत काल जाव अवड्ढ पोग्गलपरियट्ट देसूण ।।

१९५ देवातिदेवाण—पुच्छा ।
गोयमा ! नत्थि अंतरं ।।

१९६. भावदेवस्स ण—पुच्छा ।
गोयमा ! जहण्णेण अतोमुहुत्त, उक्कोसेण अणतं काल—वणस्सइकालो ।।

---

१ स० पा०—°अणुत्तरोववाइय जाव उव° ।
२ भ० १।१४४ ।
३. प० ६ ।
४ केवचिर (अ, क, ख, म) ।
५ जहेव (ब, स) ।

पंचविह-देवाणं अप्पाबहुयत्त-पदं

१९७ एएसि ण भते ! भवियदव्वदेवाण, नरदेवाण[1], •धम्मदेवाण, देवातिदेवाण°, भावदेवाण य कयरे कयरेहितो[2] •अप्पा वा ? बहुया वा ? तुल्ला वा ?° विसेसाहिया वा ?
गोयमा ! सव्वत्थोवा नरदेवा, देवातिदेवा सखेज्जगुणा, धम्मदेवा सखेज्जगुणा, भवियदव्वदेवा असखेज्जगुणा, भावदेवा असखेज्जगुणा ।।

१९८ एएसि ण भते ! भावदेवाण भवणवासीण, वाणमतराण, जोइसियाण, वेमाणियाण[3]—सोहम्मगाण जाव अच्चुयगाण, गेवेज्जगाण, अणुत्तरोववाइयाण य कयरे कयरेहितो[4] •अप्पा वा ? बहुया वा ? तुल्ला वा ?° विसेसाहिया वा ?
गोयमा ! सव्वत्थोवा अणुत्तरोववाइया भावदेवा, उवरिमगेवेज्जा भावदेवा सखेज्जगुणा, मज्झिमगेवेज्जा सखेज्जगुणा, हेट्ठिमगेवेज्जा सखेज्जगुणा, अच्चुए कप्पे देवा सखेज्जगुणा जाव आणयकप्पे देवा सखेज्जगुणा,[5] •सहस्सारे कप्पे देवा असखेज्जगुणा, महासुक्के कप्पे देवा असखेज्जगुणा, लतए कप्पे देवा असखेज्जगुणा, बभलोए कप्पे देवा असखेज्जगुणा, माहिदे कप्पे देवा असखेज्जगुणा, सणकुमारे कप्पे देवा असखेज्जगुणा, ईसाणे कप्पे देवा असखेज्जगुणा, सोहम्मे कप्पे देवा असखेज्जगुणा, भवणवासिदेवा असखेज्जगुणा, वाणमतरा देवा असखेज्जगुणा°, जोतिसिया भावदेवा असखेज्जगुणा ।।

१९९ सेव भते ! सेव भते ! त्ति[6] ।।

दसमो उद्देसो

अट्ठविह-आय-पदं

२०० कतिविहा ण भते ! आया[7] पण्णत्ता ?
गोयमा ! अट्ठविहा आया पण्णत्ता, त जहा—दवियाया, कसायाया, जोगाया, उवओगाया, नाणाया, दसणाया, चरित्ताया, वीरियाया ।।

२०१. जस्स ण भते ! दवियाया तस्स कसायाया ? जस्स कसायाया तस्स दवियाया ?

---

१. स० पा०—नरदेवाण जाव भावदेवाण ।
२ स० पा०—कयरेहितो जाव विसेसाहिया ।
३ × (क, म); देवाण (व) ।
४. स० पा०—कयरेहितो जाव विसेसाहिया ।
५ स० पा०—एव जहा जीवाभिगमे तिविहे देवपुरिसे अप्पाबहुय जाव जोतिसिया ।
६. भ० १।५१ ।
७ आता (अ, ख, ता, ब, म, स) ।

गोयमा ! जस्स दवियाया तस्स कसायाया सिय अत्थि सिय नत्थि, जस्स पुण कसायाया तस्स दवियाया नियम अत्थि ।।

२०२. जस्स ण भते ! दवियाया तस्स जोगाया ? [1]•जस्स जोगाया तस्स दवियाया ? गोयमा ! जस्स दवियाया तस्स जोगाया सिय अत्थि सिय नत्थि, जस्स पुण जोगाया तस्स दवियाया नियम अत्थि° ।।

२०३ जस्स ण भते ! दवियाया तस्स उवओगाया ? जस्स उवओगाया तस्स दवियाया ?—एव सव्वत्थ पुच्छा भाणियव्वा ।

गोयमा ! जस्स दवियाया तस्स उवओगाया नियम अत्थि । जस्स वि उवओगाया तस्स वि दवियाया नियम अत्थि । जस्स दवियाया तस्स नाणाया भयणाए । जस्स पुण नाणाया तस्स दवियाया नियम अत्थि । जस्स दवियाया तस्स दसणाया नियम अत्थि । जस्स वि दसणाया तस्स वि दवियाया नियम अत्थि । जस्स दवियाया तस्स चरित्ताया भयणाए, जस्स पुण चरित्ताया तस्स दवियाया नियम अत्थि । [2]•जस्स दवियाया तस्स वीरियाया भयणाए, जस्स पुण वीरियाया तस्स दवियाया नियम अत्थि° ।।

२०४. जस्स ण भते ! कसायाया तस्स जोगाया—पुच्छा ।

गोयमा ! जस्स कसायाया तस्स जोगाया नियम अत्थि, जस्स पुण जोगाया तस्स कसायाया सिय अत्थि सिय नत्थि । एव उवओगायाए वि सम कसायाया नेयव्वा । कसायाया य नाणाया य परोप्पर दो वि भइयव्वाओ । जहा कसायाया य उवओगाया य तहा कसायाया य दसणाया य, कसायाया य चरित्ताया य दो वि परोप्पर भइयव्वाओ । जहा कसायाया य जोगाया य तहा कसायाया य वीरियाया य भाणियव्वाओ[3] । एव जहा कसायायाए वत्तव्वया भणिया तहा जोगायाए वि उवरिमाहिं सम भाणियव्वाओ । जहा दवियायाए वत्तव्वया भणिया तहा उवओगायाए वि उवरिल्लाहि सम भाणियव्वा[4] । जस्स नाणाया तस्स दसणाया नियम अत्थि, जस्स पुण दसणाया तस्स नाणाया भयणाए । जस्स नाणाया तस्स चरित्ताया सिय अत्थि सिय नत्थि, जस्स पुण चरित्ताया तस्स नाणाया नियम अत्थि । नाणाया वीरियाया दो वि परोप्पर भयणाए । जस्स दसणाया तस्स उवरिमाओ दो वि भयणाए, जस्स पुण ताओ तस्स दसणाया नियम अत्थि । जस्स पुण चरित्ताया तस्स वीरियाया नियम अत्थि, जस्स पुण वीरियाया तस्स चरित्ताया सिय अत्थि सिय नत्थि ।।

---

१. स० पा०—एव जहा दवियाया कसायाया भणिया तहा दवियाया जोगाया भाणियव्वा ।

२. सं० पा०—एव वीरियायाए वि सम ।

३ भणितव्वाओ (ख, ता) ।

४. नेयव्वा (व) ।

अट्ठविह-आयाणं अप्पाबहुत्त-पद

२०५ एयासि ण भते ! दवियायाण, कसायायाण जाव वीरियायाण य कयरे कयरेहितो[1] •अप्पा वा ? वहुया वा ? तुल्ला वा ?° विसेसाहिया वा ?
गोयमा ! सव्वत्थोवाओ चरित्तायाओ, नाणायाओ अणतगुणाओ, कसायायाओ अणतगुणाओ, जोगायाओ विसेसाहियाओ, वीरियायाओ विसेसाहियाओ, उव-ओगदविय-दसणायाओ तिण्णि वि तुल्लाओ विसेसाहियाओ ॥

नाणदंसणाणं अत्तणा भेदाभेद-पद

२०६ आया भते ! नाणे ? 'अण्णे नाणे'[2] ?
गोयमा आया सिय नाणे सिय अण्णाणे, नाणे पुण नियम आया ॥

२०७ आया भते ! नेरइयाण नाणे ? अण्णे नेरइयाण नाणे ?
गोयमा ! आया नेरइयाण सिय नाणे, सिय अण्णाणे । नाणे पुण से नियम आया । एव जाव थणियकुमाराण ॥

२०८. आया भते ! पुढविकाइयाण अण्णाणे ? अण्णे पुढविकाइयाण अण्णाणे ?
गोयमा ! आया पुढविकाइयाण नियम अण्णाणे, अण्णाणे वि नियम आया । एव जाव वणस्सइकाइयाण । वेइदिय-तेइदियाण जाव वेमाणियाण जहा नेरइयाण ॥

२०९. आया भते ! दसणे ? अण्णे दसणे ?
गोयमा ! आया नियम दसणे, दसणे वि नियम आया ॥

२१० आया भते ! नेरइयाण दसणे ? अण्णे नेरइयाण दसणे ?
गोयमा ! आया नेरइयाण नियम दसणे, दसणे वि से नियम आया । एव जाव वेमाणियाण निरतर दडओ ॥

सियवाद-पदं

२११ आया भते ! रयणप्पभा पुढवी ? अण्णा रयणप्पभा पुढवी ?
गोयमा ! रयणप्पभा पुढवी सिय आया, सिय नोआया, सिय अवत्तव्व—आयाति य नोआयाति य ॥

२१२ से केणट्ठेण भते ! एव वुच्चइ—रयणप्पभा पुढवी सिय आया, सिय नोआया, सिय अवत्तव्व—आयाति य नोआयाति य ?
गोयमा ! अप्पणो आदिट्ठे आया, परस्स आदिट्ठे नोआया, तदुभयस्स आदिट्ठे[3] अवत्तव्व—रयणप्पभा पुढवी आयाति य नोआयाति य । से तेणट्ठेण [4]•गोयमा !

---

१. स० पा०—कयरेहिंतो जाव विसेसाहिया ।
२ अण्णाणे (म, स) ।
३. आतिट्ठा (ता, व, म) ।
४ स० पा०—त चेव जाव नोआयाति ।

एवं वुच्चइ—रयणप्पभा पुढवी सिय आया, सिय नोआया, सिय अवत्तव्व—आयाति य° नोआयाति य ॥

२१३ आया भते ! सक्करप्पभा पुढवी ?
जहा रयणप्पभा पुढवी तहा सक्करप्पभावि । एव जाव अहेसत्तमा ॥

२१४. आया भते । सोहम्मे कप्पे—पुच्छा ।
गोयमा ! सोहम्मे कप्पे सिय आया सिय नोआया[1], °सिय अवत्तव्वं—आयाति य° नोआयाति य ॥

२१५ से केणट्ठेण भते ! जाव आयाति य नोआयाति य ?
गोयमा ! अप्पणो आइट्ठे आया, परस्स आइट्ठे नोआया, तदुभयस्स आइट्ठे अवत्तव्व—आयाति य नोआयाति य । से तेणट्ठेणं त चेव जाव आयाति य नोआयाति य । एव जाव अच्चुए कप्पे ॥

२१६. आया भंते ! गेवेज्जविमाणे ? अण्णे गेवेज्जविमाणे ?
एव जहा रयणप्पभा तहेव । एव अणुत्तरविमाणा वि । एव ईसिपब्भारा वि ॥

२१७. आया भते ! परमाणुपोग्गले ? अण्णे परमाणुपोग्गले ?
एवं जहा सोहम्मे तहा परमाणुपोग्गले वि भाणियव्वे ॥

२१८. आया भंते ! दुपएसिए खंधे ? अण्णे दुपएसिए खधे ?
गोयमा ! दुपएसिए खधे १. सिय आया २ सिय नोआया ३ सिय अवत्तव्व—आयाति य नोआयाति य ४. सिय आया य नोआया य ५. सिय आया य अवत्तव्व—आयाति य नोआयाति य ६. सिय नोआया य अवत्तव्व—आयाति य नोआयाति य ॥

२१९ से केणट्ठेण भते ! एव तं चेव जाव नोआया य अवत्तव्वं—आयाति य नोआयाति य ?
गोयमा ! १. अप्पणो आदिट्ठे आया २. परस्स आदिट्ठे नोआया ३. तदुभयस्स आदिट्ठे अवत्तव्व दुपएसिए खधे—आयाति य नोआयाति य ४. देसे आदिट्ठे सब्भावपज्जवे देसे आदिट्ठे असब्भावपज्जवे दुप्पएसिए खंधे आया य नोआया य ५. देसे आदिट्ठे सब्भावपज्जवे देसे आदिट्ठे तदुभयपज्जवे दुपएसिए खंधे आया य अवत्तव्वं—आयाति य नोआयाति य ६ देसे आदिट्ठे असब्भावपज्जवे देसे आदिट्ठे तदुभयपज्जवे दुपएसिए खधे नोआया य अवत्तव्व—आयाति य नोआयाति य । से तेणट्ठेण त चेव जाव नोआया य अवत्तव्वं—आयाति य नोआयाति य ॥

२२०. आया भते ! तिपएसिए खधे ? अण्णे तिपएसिए खंधे ?

---

१. सं० पा०—नोआया जाव नोआयाति ।

गोयमा ! तिपसिए खंधे १ सिय आया २ सिय नोआया ३ सिय अवत्तव्वं—आयाति य नोआयाति य ४ सिय आया य नोआया य ५ सिय आया य नोआयाओ य ६. सिय आयाओ य नोआया य ७ सिय आया य अवत्तव्वं—आयाति य नोआयाति य ८. सिय आया य अवत्तव्वाइं—आयाओ[1] य नोआयाओ य ९ सिय आयाओ य अवत्तव्वं—आयाति य नोआयाति य १० सिय नोआया य अवत्तव्वं—आयाति य नोआयाति य ११. सिय नोआया य अवत्तव्वाइं—आयाओ य नोआयाओ य १२ सिय नोआयाओ य अवत्तव्वं—आयाति य नोआयाति य १३ सिय आया य नोआया य अवत्तव्वं—आयाति य नोआयाति य ॥

२२१. से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ—तिपएसिए खंधे सिय आया—एवं चेव उच्चारेयव्वं जाव सिय आया य नोआया य अवत्तव्वं—आयाति य नोआयाति य ? गोयमा ! १ अप्पणो आदिट्ठे आया २ परस्स आदिट्ठे नोआया ३ तदुभयस्स आदिट्ठे अवत्तव्वं—आयाति य नोआयाति य ४ देसे आदिट्ठे सब्भावपज्जवे देसे आदिट्ठे असब्भावपज्जवे तिपएसिए खंधे आया य नोआया य ५. देसे आदिट्ठे सब्भावपज्जवे देसा आदिट्ठा असब्भावपज्जवा तिपएसिए खंधे आया य नोआयाओ य ६. देसा आदिट्ठा सब्भावपज्जवा देसे आदिट्ठे असब्भावपज्जवे तिपएसिए खंधे आयाओ य नोआया य ७ देसे आदिट्ठे सब्भावपज्जवे देसे आदिट्ठे तदुभयपज्जवे तिपएसिए खंधे आया य अवत्तव्वं—आयाति य नोआयाति य ८ देसे आदिट्ठे सब्भावपज्जवे देसा आदिट्ठा तदुभयपज्जवा तिपएसिए खंधे आया य अवत्तव्वाइं—आयाओ य नोआयाओ य ९ देसा आदिट्ठा सब्भावपज्जवा देसे आदिट्ठे तदुभयपज्जवे तिपएसिए खंधे आयाओ य अवत्तव्वं—आयाति य नोआयाति य[2] १० देसे आदिट्ठे असब्भावपज्जवे देसे आदिट्ठे तदुभयपज्जवे तिपएसिए खंधे नोआया य अवत्तव्वं—आयाति य नोआयाति य ११. देसे आदिट्ठे असब्भावपज्जवे देसा आदिट्ठा तदुभयपज्जवा तिपएसिए खंधे नोआया य अवत्तव्वाइं—आयाओ य नोआयाओ य १२ देसा आदिट्ठा असब्भावपज्जवा देसे आदिट्ठे तदुभयपज्जवे तिपएसिए खंधे नोआयाओ य अवत्तव्वं—आयाति य नोआयाति य १३ देसे आदिट्ठे सब्भावपज्जवे देसे आदिट्ठे असब्भावपज्जवे देसे आदिट्ठे तदुभयपज्जवे तिपएसिए खंधे आया य नोआया य अवत्तव्वं—आयाति य नोआयाति य । से तेणट्ठेणं गोयमा ! एवं वुच्चइ—तिपएसिए खंधे सिय आया तं चेव जाव नोआयाति य ॥

---

१. आयाइं (ता), प्राय. एकवचनम् ।

२. य एए तिण्णि भंगा (अ, क, ख, ता, ब, म, स) ।

२२२ आया भंते ! चउप्पएसिए खंधे ? अण्णे [1]•चउप्पएसिए खंधे ?०
गोयमा ! चउप्पएसिए खंधे १ सिय आया २ सिय नोआया ३. सिय अवत्तव्वं—आयाति य नोआयाति य ४-७ सिय आया य नोआया य ८-११ सिय आया य अवत्तव्वं १२-१५ सिय नोआया य अवत्तव्वं[2] १६. सिय आया य नोआया य अवत्तव्वं—आयाति य नोआयाति य १७ सिय आया य नोआया य अवत्तव्वाइं—आयाओ य नोआयाओ य १८. सिय आया य नोआयाओ य अवत्तव्वं—आयाति य नोआयाति य १९. सिय आयाओ य नोआया य अवत्तव्वं—आयाति य नोआयाति य ।।

२२३. से केणट्ठेण भंते ! एवं वुच्चइ—चउप्पएसिए खंधे सिय आया य नोआया य अवत्तव्वं—तं चेव अट्ठे पडिउच्चारेयव्वं ?
गोयमा ! १ अप्पणो आदिट्ठे आया २ परस्स आदिट्ठे नोआया ३. तदुभयस्स आदिट्ठे अवत्तव्वं—आयाति य नोआयाति य ४-७. देसे आदिट्ठे सब्भावपज्जवे देसे आदिट्ठे असब्भावपज्जवे चउभंगो ८-११. सब्भावेणं तदुभयेण य चउभंगो १२-१५ असब्भावेणं तदुभयेण य चउभंगो १६ देसे आदिट्ठे सब्भावपज्जवे देसे आदिट्ठे असब्भावपज्जवे देसे आदिट्ठे तदुभयपज्जवे चउप्पएसिए खंधे आया य नोआया य अवत्तव्वं - आयाति य नोआयाति य १७. देसे आदिट्ठे सब्भावपज्जवे देसे आदिट्ठे असब्भावपज्जवे देसा आदिट्ठा तदुभयपज्जवा चउप्पएसिए खंधे आया य नोआया य अवत्तव्वाइं—आयाओ य नोआयाओ य १८. देसे आदिट्ठे सब्भावपज्जवे देसा आदिट्ठा असब्भावपज्जवा देसे आदिट्ठे तदुभयपज्जवे चउप्पएसिए खंधे आया य नोआयाओ य अवत्तव्वं—आयाति य नोआयाति य १९ देसा आदिट्ठा सब्भावपज्जवा देसे आदिट्ठे असब्भावपज्जवे देसे आदिट्ठे तदुभयपज्जवे चउप्पएसिए खंधे आयाओ य नोआया य अवत्तव्वं - आयाति य नोआयाति य । से तेणट्ठेणं गोयमा ! एवं वुच्चइ—चउप्पएसिए खंधे सिय आया सिय नोआया सिय अवत्तव्वं—निक्खेवे ते चेव भंगा उच्चारेयव्वा जाव आयाति य नोआयाति य ।।

२२४. आया भंते ! पंचपएसिए खंधे ? अण्णे पंचपएसिए खंधे ?
गोयमा ! पंचपएसिए खंधे १ सिय आया २ सिय नोआया ३. सिय अवत्तव्वं—आयाति य नोआयाति य ४-७. सिय आया य नोआया य ८-११. सिय आया य अवत्तव्वं १२-१५ नोआया य अवत्तव्वेण य[3] १६. [4]•सिय आया य नोआया

---

१ सं० पा०—पुच्छा ।
२. एकवचन-बहुवचनभेदात् चत्वारश्चत्वारो भङ्गा. ।
३. एकवचन-बहुवचनभेदात् चत्वारश्चत्वारो भङ्गा ।
४ सं० पा०—तियगसंजोगे एक्को न पडइ,

य अवत्तव्व १७ सिय आया य नोआया य अवत्तव्वाइ १८ सिय आया य नोआयाओ य अवत्तव्व १९. सिय आया य नोआयाओ य अवत्तव्वाइ २० सिय आयाओ य नोआया य अवत्तव्व २१. सिय आयाओ य नोआया य अवत्तव्वाइ २२. सिय आयाओ य नोआयाओ य अवत्तव्व °॥

२२५. से केणट्ठेण भते ! [1]•एव वुच्चइ—पचपएसिए खधे सिय आया जाव सिय आयाओ य नोआयाओ य अवत्तव्व ?°

गोयमा ! १ अप्पणो आदिट्ठे आया २ परस्स आदिट्ठे नोआया ३ तदुभयस्स आदिट्ठे अवत्तव्व ४. देसे आदिट्ठे सब्भावपज्जवे देसे आदिट्ठे असब्भावपज्जवे—एव दुयगसजोगे सव्वे पडति, तियसजोगे[2] एक्को न पडइ ।

छप्पएसियस्स सव्वे पडति । जहा छप्पएसिए एव जाव अणतपएसिए ॥

२२६ सेव भते ! सेव भते ! त्ति जाव[3] विहरइ ॥

— — —

एकसयोगजा त्रयो भङ्गा, द्विसयोगजा द्वादश भङ्गा, त्रिकसयोगजा सप्त भङ्गा सर्वे मीलिता द्वाविंशतिर्भङ्गा पञ्चप्रदेशिकस्कन्धे भवन्ति । त्रिकसयोगे अष्टमो भङ्ग 'सिय आयाओ य नोआयाओ य अवत्तव्वाइ' इतिरूप पचप्रदेशिकस्कन्धत्वात् न सम्भवति । अत उक्त 'तियगसजोगे एक्को न पडइ' ।

१. स० पा०—त चेव पडिउच्चारेयव्व ।

२. तियगसजोगे (ख), तिगसजोगे (व, म) ।

३. भ० १।५१ ।

तेरसमं सतं

पढमो उद्देसो

१. पुढवी २ देव ३ मणतर, ४ पुढवी ५. आहारमेव ६. उववाए ।
७ भासा ८,९ कम्मणगारे, केयाघडिया[1] १० समुग्घाए ।। १ ।।

सखेज्जवित्थडेसु नरएसु उववाय-पदं

१ रायगिहे जाव[2] एव वयासी—कति ण भते ! पुढवीओ पण्णत्ताओ ?
गोयमा ! सत्त पुढवीओ पण्णत्ताओ, त जहा—रयणप्पभा जाव अहेसत्तमा ।।

२ इमीसे ण भते ! रयणप्पभाए पुढवीए केवतिया निरयावाससयसहस्सा पण्णत्ता ?
गोयमा ! तीस निरयावाससयसहस्सा पण्णत्ता ।
ते ण भते ! कि सखेज्जवित्थडा ? असखेज्जवित्थडा ?
गोयमा ! सखेज्जवित्थडा वि, असखेज्जवित्थडा वि ।।

३ इमीसे ण भते ! रयणप्पभाए पुढवीए तीसाए निरयावाससयसहस्सेसु संखेज्ज-वित्थडेसु नरएसु १ एगसमएण केवतिया नेरइया उववज्जति ? २ केवतिया काउलेस्सा उववज्जति ? ३ केवतिया कण्हपक्खिया उववज्जति ? ४. केवतिया सुक्कपक्खिया उववज्जति ? ५. केवतिया सण्णी उववज्जति ? ६ केवतिया असण्णी उववज्जति ? ७ केवतिया भवसिद्धिया[3] उववज्जति ? ८ केवतिया अभवसिद्धिया उववज्जति ? ९ केवतिया आभिणिबोहियनाणी उववज्जति ? १०. केवतिया सुयनाणी उववज्जति ? ११. केवतिया ओहिनाणी उववज्जति ? १२. केवतिया मइअण्णाणी उववज्जति ? १३. केवतिया सुयअण्णाणी उववज्जति ? १४. केवतिया विब्भंगनाणी उववज्जति ? १५. केवतिया चक्खुदसणी

---

१. केयाहडिया (अ, क, ख, व, म) ।
२. भ० १।४-१० ।
३. भवसिद्धीया (अ, व, म, स) ।

उववज्जति ? १६. केवतिया अचक्खुदसणी उववज्जति ? १७. केवतिया ओहिदसणी उववज्जति ? १८ केवतिया आहारसण्णोवउत्ता उववज्जति ? १९ केवतिया भयसण्णोवउत्ता उववज्जति ? २० केवतिया मेहुणसण्णोवउत्ता उववज्जति ? २१ केवतिया परिग्गहसण्णोवउत्ता उववज्जति ? २२ केवतिया इत्थिवेदगा उववज्जति ? २३. केवतिया पुरिसवेदगा उववज्जति ? २४ केवतिया नपुसगवेदगा उववज्जति ? २५-२८ केवतिया कोहकसाई उववज्जति जाव केवतिया लोभकसाई उववज्जति ? २९-३३ केवतिया सोइदियोवउत्ता उववज्जति जाव केवतिया फासिंदियोवउत्ता उववज्जति ? ३४ केवतिया नोइदियोवउत्ता उववज्जति ? ३५. केवतिया मणजोगी उववज्जति ? ३६ केवतिया वइजोगी उववज्जति ? ३७ केवतिया कायजोगी उववज्जति ? ३८. केवतिया सागारोवउत्ता उववज्जति ? ३९ केवतिया अणागारोवउत्ता उववज्जति ?

गोयमा ! इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए तीसाए निरयावाससयसहस्सेसु सखेज्ज-वित्थडेसु नरएसु जहण्णेण एक्को वा दो वा तिण्णि वा, उक्कोसेण सखेज्जा नेरइया उववज्जति । जहण्णेण एक्को वा दो वा तिण्णि वा, उक्कोसेण सखेज्जा काउलेस्सा उववज्जति । जहण्णेण एक्को वा दो वा तिण्णि वा, उक्कोसेण सखेज्जा कण्हपक्खिया उववज्जति । एव सुक्कपक्खिया वि, 'एव सण्णी, एव असण्णी'[1], एव भवसिद्धिया, अभवसिद्धिया, आभिणिबोहियनाणी, सुयनाणी, ओहिनाणी, मइअण्णाणी, सुयअण्णाणी, विभगनाणी । चक्खुदसणी न उववज्जति । जहण्णेण एक्को वा दो वा तिण्णि वा, उक्कोसेण सखेज्जा अचक्खु-दसणी उववज्जति एव ओहिदसणी वि । आहारसण्णोवउत्ता वि जाव परिग्गह-सण्णोवउत्ता वि । इत्थीवेयगा न उववज्जति, पुरिसवेयगा न उववज्जति । जहण्णेण एक्को वा दो वा तिण्णि वा, उक्कोसेण सखेज्जा नपुसगवेयगा[2] उववज्जति । एव कोहकसाई जाव लोभकसाई । सोइदियोवउत्ता न उववज्जति, एव जाव फासिंदिओवउत्ता न उववज्जति । जहण्णेण एक्को वा दो वा तिण्णि वा, उक्कोसेण सखेज्जा नोइदिओवउत्ता उववज्जति । मणजोगी न उववज्जति, एव वइजोगी वि । जहण्णेण एक्को वा दो वा तिण्णि वा, उक्कोसेण सखेज्जा कायजोगी उववज्जति । एव सागारोवउत्ता वि, एव अणागारोव-उत्ता[3] वि ॥

---

१ एव सण्णी वि असण्णी वि (अ), एव सण्णी असण्णी (क, ता), एवं सण्णी एव असण्णी वि (स) ।

२. नपुसगवेदा (क, व, म), नपुसगा (ख, ता) ।

३ अणगारोवउत्ता (अ, क, ख, ता, म) ।

संखेज्जवित्थडेसु नरएसु उव्वट्टण-पदं

४. इमीसे ण भते ! रयणप्पभाए पुढवीए तीसाए निरयावाससयसहस्सेसु सखेज्ज-वित्थडेसु नरएसु[1] एगसमएण केवतिया नेरइया उव्वट्टति ? केवतिया काउलेस्सा उव्वट्टति जाव केवतिया अणागारोवउत्ता उव्वट्टति ?
गोयमा ! इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए तीसाए निरयावाससयसहस्सेसु सखेज्ज-वित्थडेसु नरएसु एगसमएण जहण्णेण एक्को वा दो वा तिण्णि वा, उक्कोसेणं सखेज्जा नेरइया उव्वट्टति । जहण्णेण एक्को वा दो वा तिण्णि वा, उक्कोसेणं सखेज्जा काउलेस्सा उव्वट्टति । एव जाव सण्णी । असण्णी न उव्वट्टति । जहण्णेण एक्को वा दो वा तिण्णि वा, उक्कोसेण सखेज्जा भवसिद्धिया उव्वट्टति । एव जाव सुयअण्णाणी । विभगनाणी न उव्वट्टति, चक्खुदसणी न उव्वट्टति । जहण्णेणं एक्को वा दो वा तिण्णि वा, उक्कोसेण सखेज्जा अचक्खुदसणी उव्वट्टति । एव जाव लोभकसाई । सोइदियोवउत्ता न उव्वट्टति, एव जाव फासिदियोवउत्ता न उव्वट्टति । जहण्णेण एक्को वा दो वा तिण्णि वा, उक्कोसेणं संखेज्जा नोइदियोवउत्ता उव्वट्टति । मणजोगी न उव्वट्टति, एव वइजोगी वि । जहण्णेण एक्को वा दो वा तिण्णि वा, उक्कोसेण सखेज्जा कायजोगी उव्वट्टति । एव सागारोवउत्ता, अणागारोवउत्ता ॥

संखेज्जवित्थडेसु नरएसु सत्ता-पदं

५. इमीसे ण भते ! रयणप्पभाए पुढवीए तीसाए निरयावाससयसहस्सेसु संखेज्ज-वित्थडेसु नरएसु केवतिया नेरइया पण्णत्ता ? केवतिया काउलेस्सा जाव केवतिया अणागारोवउत्ता पण्णत्ता ? केवतिया अणतरोववण्णगा पण्णत्ता ? केवतिया परंपरोववण्णगा पण्णत्ता ? केवतिया अणतरोवगाढा पण्णत्ता ? केवतिया परपरोवगाढा पण्णत्ता ? केवतिया अणतराहारा पण्णत्ता ? केवतिया परपराहारा पण्णत्ता ? केवतिया अणतरपज्जत्ता पण्णत्ता ? केवतिया परपरपज्जत्ता पण्णत्ता ? केवतिया चरिमा पण्णत्ता ? केवतिया अचरिमा पण्णत्ता ?
गोयमा ! इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए तीसाए निरयावाससयसहस्सेसु सखेज्ज-वित्थडेसु नरएसु सखेज्जा नेरइया पण्णत्ता, सखेज्जा काउलेस्सा पण्णत्ता, एवं जाव सखेज्जा सण्णी पण्णत्ता । असण्णी सिय अत्थि, सिय नत्थि । जइ अत्थि जहण्णेणं एक्को वा दो वा तिण्णि वा, उक्कोसेण सखेज्जा पण्णत्ता । संखेज्जा भवसिद्धिया पण्णत्ता । एवं जाव संखेज्जा परिग्गहसण्णोवउत्ता पण्णत्ता । इत्थि-वेदगा नत्थि, पुरिसवेदगा नत्थि, सखेज्जा नपुसगवेदगा पण्णत्ता । एव कोह-

---

१. निरत्तेसु (ता) ।

कसाई वि, माणकसाई जहा असण्णी, एव जाव लोभकसाई। सखेज्जा सोइदियो-वउत्ता पण्णत्ता, एव जाव फासिंदियोवउत्ता। नोइदियोवउत्ता जहा असण्णी। सखेज्जा मणजोगी पण्णत्ता। एव जाव अणागारोवउत्ता। अणतरोववण्णगा सिय अत्थि, सिय नत्थि। जइ अत्थि जहा असण्णी। सखेज्जा परपरोववण्णगा पण्णत्ता। एव जहा अणतरोववण्णगा तहा अणतरोवगाढगा, अणतराहारगा, अणतरपज्जत्तगा। परपरोवगाढगा जाव अचरिमा जहा परपरोववण्णगा।।

६ इमीसे ण भते! रयणप्पभाए पुढवीए तीसाए निरयावाससयसहस्सेसु असखेज्ज-वित्थडेसु नरएसु एगसमएण केवतिया नेरइया उववज्जति जाव केवतिया अणागारोवउत्ता उववज्जति?

गोयमा! इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए तीसाए निरयावाससयसहस्सेसु अस-खेज्जवित्थडेसु नरएसु एगसमएण जहण्णेण एक्को वा दो वा तिण्णि वा, उक्को-सेण असखेज्जा नेरइया उववज्जति। एव जहेव सखेज्जवित्थडेसु तिण्णि गमगा[1] तहा असखेज्जवित्थडेसु वि तिण्णि गमगा भाणियव्वा, नवर—असखेज्जा भाणियव्वा, सेस त चेव जाव असखेज्जा अचरिमा पण्णत्ता[2], नवर—सखेज्ज-वित्थडेसु असखेज्जवित्थडेसु वि ओहिनाणी ओहिदसणी य सखेज्जा उव्वट्टा-वेयव्वा, सेस त चेव।।

७. सक्करप्पभाए ण भते! पुढवीए केवतिया निरयावास[3]°सयसहस्सा पण्णत्ता°?

गोयमा! पणुवीस निरयावाससयसहस्सा पण्णत्ता।

ते ण भते! किं सखेज्जवित्थडा? असखेज्जवित्थडा?

एव जहा रयणप्पभाए तहा सक्करप्पभाए वि, नवर—असण्णी तिसु वि गमएसु न भण्णति, सेस त चेव।।

८ वालुयप्पभाए ण—पुच्छा।

गोयमा! पन्नरस निरयावाससयसहस्सा पण्णत्ता, सेस जहा सक्करप्पभाए, नाणत्त लेसासु, लेसाओ जहा[4] पढमसए।।

९ पकप्पभाए ण—पुच्छा।

गोयमा! दस निरयावाससयसहस्सा पण्णत्ता, एव जहा सक्करप्पभाए, नवर—ओहिनाणी ओहिदसणी य न उव्वट्टति, सेस त चेव।।

१० धूमप्पभाए ण—पुच्छा।

---

१. गमा (ता)।

२. पण्णत्ता नाणत्त लेसासु लेसाओ जहा पढमसए (अ, क, ख, व, म, स), रत्न-प्रभाया एकैव कापोतीलेश्या भवति, तेन नासौ पाठ सगच्छते।

३. स० पा०—पुच्छा।

४ भ० १।२४४।

गोयमा ! तिण्णि निरयावाससयसहस्सा, एव जहा पकप्पभाए ।।

११ तमाए ण भते ! पुढवीए केवतिया निरयावास[1]•सयसहस्सा पण्णत्ता° ?
गोयमा ! एगे पचूणे निरयावाससयसहस्से पण्णत्ते । सेस जहा पकप्पभाए ।।

१२ अहेसत्तमाए ण भते ! पुढवीए कति अणुत्तरा महतिमहालया महानिरया पण्णत्ता ?
गोयमा ! पच अणुत्तरा[2] •महतिमहालया महानिरया पण्णत्ता, त जहा—काले, महाकाले, रोरुए, महारोरुए°, अपइट्ठाणे ।
ते ण भते ! कि सखेज्जवित्थडा ? असखेज्जवित्थडा ?
गोयमा ! सखेज्जवित्थडे य असखेज्जवित्थडा य ।।

१३ अहेसत्तमाए णं भते ! पुढवीए पचसु अणुत्तरेसु महतिमहालएसु[3] महानिरएसु सखेज्जवित्थडे नरए एगसमएण केवतिया नेरइया उववज्जति ?
एव जहा पकप्पभाए, नवर—तिसु नाणेसु न उववज्जति, न उव्वट्टति, पण्णत्तएसु[4] तहेव अत्थि । एव असखेज्जवित्थडेसु वि, नवर—असखेज्जा भाणियव्वा ।

१४ इमीसे ण भते ! रयणप्पभाए पुढवीए तीसाए निरयावाससयसहस्सेसु सखेज्ज-वित्थडेसु नरएसु कि सम्मद्दिट्ठी नेरइया उववज्जति ? मिच्छदिट्ठी नेरइया उववज्जति ? सम्मामिच्छदिट्ठी नेरइया उववज्जति ?
गोयमा ! सम्मदिट्ठी वि नेरइया उववज्जति, मिच्छदिट्ठी वि नेरइया उवव-ज्जति, नो सम्मामिच्छदिट्ठी नेरइया उववज्जति ।।

१५ इमीसे ण भते ! रयणप्पभाए पुढवीए तीसाए निरयावाससयसहस्सेसु सखेज्ज-वित्थडेसु नरएसु कि सम्मदिट्ठी नेरइया उव्वट्टति ?
एवं चेव ।।

१६ इमीसे ण भते ! रयणप्पभाए पुढवीए तीसाए निरयावाससयसहस्सेसु सखेज्ज-वित्थडा नरगा कि सम्मद्दिट्ठीहिं नेरइएहिं अविरहिया ? मिच्छदिट्ठीहि नेरइएहि अविरहिया ? सम्मामिच्छदिट्ठीहिं नेरइएहिं अविरहिया ?
गोयमा ! सम्मद्दिट्ठीहिं नेरइएहिं अविरहिया, मिच्छदिट्ठीहिं वि नेरइएहिं अविरहिया, सम्मामिच्छदिट्ठीहिं नेरइएहि अविरहिया विरहिया वा । एव असखेज्जवित्थडेसु वि तिण्णि गमगा भाणियव्वा । एव सक्करप्पभाए वि, एव जाव तमाए वि ।।

१७ अहेसत्तमाए ण भते ! पुढवीए पचसु अणुत्तरेसु जाव[5] सखेज्जवित्थडे नरए कि सम्मद्दिट्ठी नेरइया—पुच्छा ।

---

१ स० पा०— पुच्छा ।
२. स० पा०—अणुत्तरा जाव अपइट्ठाणे ।
३ महतिमहा जाव (अ, क, ख, ता, व, म, स)।
४ पण्णत्ताएसु (अ, ता, म, स), पण्णत्तेसु (क, व) ।
५. भ० १३।१२ ।

गोयमा ! सम्मद्दिट्ठी नेरइया न उववज्जति, मिच्छदिट्ठी नेरइया उववज्जति, सम्मामिच्छदिट्ठी नेरइया न उववज्जति। एव उव्वट्टति वि, अविरहिए जहेव रयणप्पभाए। एव असखेज्जवित्थडेसु वि तिण्णि गमगा ॥

१८ से नूण भते ! कण्हलेस्से, नीललेस्से जाव सुक्कलेस्से भवित्ता कण्हलेस्सेसु नेरइएसु उववज्जति ?
हता गोयमा ! कण्हलेस्से जाव उववज्जति ॥

१९ से केणट्ठेण भते ! एव वुच्चइ—कण्हलेस्से जाव उववज्जति ?
गोयमा ! लेस्सट्ठाणेसु सकिलिस्समाणेसु-सकिलिस्समाणेसु कण्हलेस परिणमइ, परिणमित्ता कण्हलेसेसु नेरइएसु उववज्जति। से तेणट्ठेण जाव उववज्जति ॥

२० से नूण भते ! कण्हलेस्से जाव सुक्कलेस्से भवित्ता नीललेस्सेसु नेरइएसु उववज्जति ?
हता गोयमा ! जाव उववज्जति ॥

२१. से केणट्ठेण जाव उववज्जति ?
गोयमा ! लेस्सट्ठाणेसु सकिलिस्समाणेसु वा विसुज्झमाणेसु वा नीललेस्स परिणमइ, परिणमित्ता नीललेस्सेसु नेरइएसु उववज्जति। से तेणट्ठेण गोयमा ! जाव उववज्जति ॥

२२ से नूण भते ! कण्हलेस्से, नीललेस्से जाव सुक्कलेस्से भवित्ता काउलेस्सेसु नेरइएसु उववज्जति ?
एव जहा नीललेस्साए तहा काउलेस्साए वि भाणियव्वा जाव से तेणट्ठेण जाव उववज्जति ॥

२३ सेव भते ! सेव भते ! त्ति[1] ॥

बीओ उद्देसो

२४ कतिविहा ण भते ! देवा पण्णत्ता ?
गोयमा ! चउव्विहा देवा पण्णत्ता, त जहा—भवणवासी, वाणमतरा, जोइसिया, वेमाणिया ॥

२५ भवणवासी ण भते ! देवा कतिविहा पण्णत्ता ?

---

१ भ० १।५१।

गोयमा ! दसविहा पण्णत्ता, त जहा—असुरकुमारा—एव भेओ[1] जहा बितिय-सए देवुद्देसए जाव[2] अपराजिया, सव्वट्ठसिद्धगा ।।

२६. केवतिया ण भते ! असुरकुमारावाससयसहस्सा पण्णत्ता ?
गोयमा ! चोयट्ठि[3] असुरकुमारावाससयसहस्सा पण्णत्ता ।
ते ण भते ! किं सखेज्जवित्थडा ? असखेज्जवित्थडा ?
गोयमा ! सखेज्जवित्थडा वि, असखेज्जवित्थडा वि ।।

२७ चोयट्ठीए[4] ण भते ! असुरकुमारावाससयसहस्सेसु सखेज्जवित्थडेसु असुरकुमारावासेसु एगसमएण केवतिया असुरकुमारा उववज्जति जाव केवतिया तेउलेस्सा उववज्जति ? केवतिया कण्हपक्खिया उववज्जति ? एव जहा रयणप्पभाए तहेव पुच्छा, तहेव[5] वागरण, नवर—दोहिं वेदेहि उववज्जति, नपुसगवेयगा न उववज्जति, सेस त चेव । उव्वट्टतगा वि तहेव, नवर—असण्णी उव्वट्टति । ओहिनाणी ओहिदसणी य ण उव्वट्टति, सेसं त चेव । पण्णत्तएसु[6] तहेव, नवर—सखेज्जगा इत्थिवेदगा पण्णत्ता, एव पुरिसवेदगा वि, नपुसगवेदगा नत्थि । कोहकसाई सिय अत्थि सिय नत्थि । जइ अत्थि जहण्णेण एक्को वा दो वा तिण्णि वा, उक्कोसेण सखेज्जा पण्णत्ता । एव माणकसाई मायकसाई । सखेज्जा लोभकसाई पण्णत्ता, सेस त चेव । तिसु वि गमएसु[7] चत्तारि लेस्साओ भाणियव्वाओ । एव असखेज्जवित्थडेसु वि, नवर—तिसु वि गमएसु असखेज्जा भाणियव्वा जाव[8] असखेज्जा अचरिमा पण्णत्ता ।।

२८ केवतिया ण भते ! नागकुमारावाससयसहस्सा पण्णत्ता ? एव जाव थणियकुमारा, नवर—जत्थ जत्तिया भवणा[9] ।।

२९ केवतिया ण भते ! वाणमतरावाससयसहस्सा पण्णत्ता ?
गोयमा ! असखेज्जा वाणमतरावाससयसहस्सा पण्णत्ता ।
ते ण भते ! किं सखेज्जवित्थडा ? असखेज्जवित्थडा ?
गोयमा ! सखेज्जवित्थडा, नो असखेज्जवित्थडा ।।

३० सखेज्जेसु ण भते ! वाणमतरावाससयसहस्सेसु एगसमएण केवतिया वाणमतरा उववज्जति ?
एव जहा असुरकुमाराणं सखेज्जवित्थडेसु तिण्णि गमगा[10] तहेव भाणियव्वा वाणमतराण वि तिण्णि गमगा ।।

---

१. × (ता, व) ।
२. भ० २।११७; प० २ ।
३ चोसट्ठिं (स) ।
४. चोसट्ठीए (स) ।
५. भ० १३।३ ।
६ पण्णत्ताएसु (अ, क, व, म, स) ।
७ गमएसु सखेज्जेसु (अ, स) ।
८ भ० १३।५ ।
९ भ० १।२१३ ।
१० गमा (क, ख, ता, व, म) ।

३१ केवतिया ण भते ! जोइसियविमाणावाससयसहस्सा[1] पण्णत्ता ?
गोयमा ! असखेज्जा जोइसियविमाणावाससयसहस्सा पण्णत्ता।
ते ण भते ! किं सखेज्जवित्थडा० ?
एव जहा वाणमतराण तहा जोइसियाण वि तिण्णि गमगा भाणियव्वा, नवर—एगा तेउलेस्सा। उववज्जतेसु पण्णत्तेसु य असण्णी नत्थि, सेस त चेव॥

३२ सोहम्मे ण भते ! कप्पे केवतिया विमाणावाससयसहस्सा पण्णत्ता ?
गोयमा ! बत्तीस विमाणावाससयसहस्सा पण्णत्ता।
ते ण भते ! किं सखेज्जवित्थडा ? असखेज्जवित्थडा ?
गोयमा ! सखेज्जवित्थडा वि, असखेज्जवित्थडा वि॥

३३ सोहम्मे ण भते ! कप्पे बत्तीसाए विमाणावाससयसहस्सेसु सखेज्जवित्थडेसु विमाणेसु एगसमएण केवतिया सोहम्मा देवा उववज्जति ? केवतिया तेउलेस्सा उववज्जति ?
एव जहा जोइसियाण तिण्णि गमगा तहेव तिण्णि गमगा भाणियव्वा, नवर—तिसु वि सखेज्जा भाणियव्वा, ओहिनाणी ओहिदसणी य चयावेयव्वा, सेस तं चेव। असखेज्जवित्थडेसु एव चेव तिण्णि गमगा, नवर—तिसु वि गमएसु असखेज्जा भाणियव्वा। ओहिनाणी ओहिदसणी य सखेज्जा चयति, सेस त चेव। एव जहा सोहम्मे वत्तव्वया भणिया तहा ईसाणे वि छ गमगा भाणियव्वा। सणकुमारे एव चेव, नवर—इत्थीवेयगा उववज्जतेसु[2] पण्णत्तेसु य न भण्णति, असण्णी तिसु वि गमएसु न भण्णति, सेस त चेव। एव जाव सहस्सारे, नाणत्त विमाणेसु लेस्सासु य, सेस त चेव॥

३४ आणय-पाणएसु ण भते ! कप्पेसु केवतिया विमाणावाससया पण्णत्ता ?
गोयमा ! चत्तारि विमाणावाससया पण्णत्ता।
तेण भते ! किं सखेज्जवित्थडा ? असखेज्जवित्थडा ?
गोयमा ! सखेज्जवित्थडा वि, असखेज्जवित्थडा वि। एव सखेज्जवित्थडेसु तिण्णि गमगा जहा सहस्सारे, असखेज्जवित्थडेसु उववज्जतेसु चयतेसु य एव चेव सखेज्जा भाणियव्वा, पण्णत्तेसु असखेज्जा, नवर—नोइदियोवउत्ता अणतरोववण्णगा अणतरोवगाढगा अणतराहारगा अणतरपज्जत्तगा य एएसिं जहण्णेण एक्को वा दो वा तिण्णि वा, उक्कोसेण सखेज्जा पण्णत्ता, सेसा असखेज्जा भाणियव्वा। 'आरण-अच्चुएसु'[3] एव चेव जहा आणय-पाणएसु, नाणत्त विमाणेसु। एव गेवेज्जगा वि॥

---

१. जोतिसियावाससहस्सा (अ, क, ख, ता, व, म)।
२. न उववज्जति (स)।
३. आरणच्चुएसु (अ, क, ख, व, म, स)।

३५ कति णं भते ! अणुत्तरविमाणा पण्णत्ता ?
गोयमा ! पंच अणुत्तरविमाणा पण्णत्ता ।
'ते ण भते ! किं सखेज्जवित्थडा ? असखेज्जवित्थडा ?
गोयमा'[1] ! सखेज्जवित्थडे य असंखेज्जवित्थडा य ।।

३६. पचसु णं भते ! अणुत्तरविमाणेसु सखेज्जवित्थडे विमाणे एगसमएण केवतिया अणुत्तरोववाइया उववज्जति ? केवतिया सुक्कलेस्सा उववज्जति—पुच्छा तहेव ।
गोयमा ! पचसु णं अणुत्तरविमाणेसु सखेज्जवित्थडे अणुत्तरविमाणे एगसमएण जहण्णेण एक्को वा दो वा तिण्णि वा, उक्कोसेण सखेज्जा अणुत्तरोववाइया उववज्जति, एव जहा गेवेज्जविमाणेसु सखेज्जवित्थडेसु, नवर—किण्हपक्खिया, अभवसिद्धिया, तिसु अण्णाणेसु एए न उववज्जति, न चयति, न वि पण्णत्तएसु भाणियव्वा, अचरिमा वि खोडिज्जति जाव सखेज्जा चरिमा पण्णत्ता, सेस त चेव । असखेज्जवित्थडेसु वि एए न भण्णति, नवर—अचरिमा अत्थि, सेस जहा गेवेज्जएसु असखेज्जवित्थडेसु जाव असखेज्जा अचरिमा पण्णत्ता ।।

३७. चोयट्ठीए णं भते ! असुरकुमारावाससयसहस्सेसु सखेज्जवित्थडेसु असुरकुमारावासेसु किं सम्मद्दिट्ठी असुरकुमारा उववज्जति ? मिच्छदिट्ठी असुरकुमारा उववज्जति ?
एवं जहा रयणप्पभाए तिण्णि आलावगा भणिया[2] तहा भाणियव्वा । एवं असखेज्जवित्थडेसु वि तिण्णि गमगा, एव जाव गेवेज्जविमाणे, अणुत्तरविमाणेसु एव चेव, नवर—तिसु वि आलावएसु मिच्छादिट्ठी सम्मामिच्छादिट्ठी य न भण्णति, सेसं त चेव ।।

३८ से नूण भते ! कण्हलेस्से नीललेस्से जाव सुक्कलेस्से भवित्ता कण्हलेस्सेसु देवेसु उववज्जति ?
हता गोयमा ! एव जहेव नेरइएसु पढमे उद्देसए[3] तहेव भाणियव्व । नीललेस्साए वि जहेव नेरइयाण, जहा नीललेस्साए एव जाव पम्हलेस्सेसु, सुक्कलेस्सेसु एव चेव, नवर—लेस्सट्ठाणेसु विसुज्झमाणेसु-विसुज्झमाणेसु सुक्कलेस्सा परिणमति, परिणमित्ता सुक्कलेस्सेसु देवेसु उववज्जति । से तेणट्ठेण जाव उववज्जति ।।

३९. सेव भते ! सेव भते ! त्ति[4] ।।

---

१. X (अ, क, ख, ता, व, म) ।
२ भ० १३।१४ ।
३. भ० १३।१८-२२ ।
४. भ० १।५१ ।

तइओ उद्देसो

४०. नेरइया ण भते ! अणतराहारा, ततो निव्वत्तणया, एव परियारणापद[1] निरवसेस भाणियव्व ॥

४१ सेव भते ! सेव भते ! त्ति[2] ॥

चउत्थो उद्देसो

नरय-नेरइयाणं अप्पमहंत-पद

४२ कति[3] ण भते ! पुढवीओ पण्णत्ताओ ?

गोयमा ! सत्त पुढवीओ पण्णत्ताओ, त जहा—रयणप्पभा जाव अहेसत्तमा ॥

४३. अहेसत्तमाए ण भते ! पुढवीए पच अणुत्तरा महतिमहालया[4] •महानिरया पण्णत्ता, त जहा—काले, महाकाले, रोरुए, महारोरुए,° अपइट्ठाणे । ते णं नरगा छट्ठीए[5] तमाए पुढवीए नरएहिंतो महत्तरा[6] चेव, महावित्थिण्णतरा[7] चेव, महोगासतरा[8] चेव, महापइरिक्कतरा चेव, नो[9] तहा महप्पवेसणतरा[10] चेव, आइण्णतरा चेव, आउलतरा चेव, अणोमाणतरा[11] चेव । तेसु ण नरएसु नेरइया छट्ठीए तमाए पुढवीए नेरइएहिंतो महाकम्मतरा चेव, महाकिरियतरा चेव,

---

१ प० ३४ ।

२ भ० १।५१ ।

३ इह च द्वारगाथे क्वचिद् दृश्येते, तद्यथा—
१. नेरइय २ फास ३ पणिहि,
४. निरयते चेव ५. लोयमज्झे य ।
६. दिसिविदिसाण य पवहा,
७ पवत्तण अत्थिकाएहिं ॥१॥
८. अत्थी पएसफुसणा,
९ ओगाहणया य जीवमोगाढा ।
१०. अत्थि पएसनिसीयण,
११. बहुसमे लोयसंठाणे ॥२॥ (वृ) ।

४ स० पा०—महतिमहालया जाव अपइट्ठाणे ।

५ छठाए (अ, क, ख, ता, म) ।

६ महतरा (क, व, म) ।

७. महाविच्छिण्णतरा (अ, स) ।

८. महावासतरा (अ, क), महोवासतरा (ख, ता), महावासतरा (म, स) ।

९. 'नो' शब्द उत्तरपदद्वयेपि सम्बन्धनीयः (वृ) ।

१०. महापवेसणतरा (म, स) ।

११. अणोयणतरा (अ, ख, ता, म, स, वृपा) ।

महासवतरा[1] चेव, महावेदणतरा चेव, नो तहा अप्पकम्मतरा चेव, अप्पकिरियतरा चेव, अप्पासवतरा चेव, अप्पवेदणतरा चेव, अप्पिड्ढियतरा[2] चेव, अप्पजुतियतरा[3] चेव, नो तहा महिड्ढियतरा चेव, महज्जुतियतरा चेव।

छट्ठीए ण तमाए पुढवीए एगे पचूणे निरयावाससयसहस्से पण्णत्ते। ते ण नरगा अहेसत्तमाए पुढवीए नरएहितो नो तहा महत्तरा चेव, महावित्थिण्णतरा चेव, महोगासतरा चेव, महापइरिक्कतरा चेव, महप्पवेसणतरा चेव, आइण्णतरा चेव, आउलतरा चेव, अणोमाणतरा चेव। तेसु ण नरएसु नेरइया अहेसत्तमाए पुढवीए नेरइएहितो अप्पकम्मतरा चेव, अप्पकिरियतरा चेव, अप्पासवतरा चेव, अप्पवेदणतरा चेव, नो तहा महाकम्मतरा चेव, महाकिरियतरा चेव, महासवतरा चेव, महावेदणतरा चेव, महिड्ढियतरा चेव, महज्जुइयतरा चेव, नो 'तहा अप्पिड्ढियतरा'[4] चेव, अप्पजुइयतरा चेव।

छट्ठीए ण तमाए पुढवीए नरगा पचमाए धूमप्पभाए पुढवीए नरएहितो महत्तरा चेव, महावित्थिण्णतरा चेव, महोगासतरा चेव, महापइरिक्कतरा चेव, नो तहा महप्पवेसणतरा चेव, आइण्णतरा चेव, आउलतरा चेव, अणोमाणतरा चेव। तेसु ण नरएसु नेरइया पचमाए धूमप्पभाए पुढवीए नेरइएहितो महाकम्मतरा चेव, महाकिरियतरा चेव, महासवतरा चेव, महावेदणतरा चेव, नो तहा अप्पकम्मतरा चेव, अप्पकिरियतरा चेव, अप्पासवतरा चेव, अप्पवेदणतरा चेव, अप्पिड्ढियतरा चेव, अप्पजुतियतरा चेव; नो तहा महड्ढियतरा चेव, महज्जुतियतरा चेव।

पचमाए ण धूमप्पभाए पुढवीए तिण्णि निरयावाससयसहस्सा पण्णत्ता। एव जहा छट्ठीए भणिया एव सत्त वि पुढवीओ परोप्पर भण्णति जाव रयणप्पभति जाव नो तहा महड्ढियतरा चेव, अप्पजुतियतरा चेव॥

नेरइयाणं फासाणुभव-पदं

४४. रयणप्पभापुढविनेरइया ण भते! केरिसय पुढविफास पच्चणुब्भवमाणा विहरति?

गोयमा! अणिट्ठ जाव[5] अमणाम। एव जाव अहेसत्तमपुढविनेरइया। एव आउफास, एव जाव वणस्सइफास॥

---

१. महस्सवतरा (क, ता, म)।
२. अप्पिड्ढितरा (ता, व)।
३. अप्पज्जुत्तितरा (अ, ता, व)।
४ तहप्पिड्ढियतरा (अ, क, ख, स), तहिप्पिड्ढियतरा (ता)।
५. भ० १।३५७।

नरयाणं बाहल्ल-खुड्डत्त-पद

४५ इमा ण भते ! रयणप्पभापुढवी दोच्च सक्करप्पभ पुढविं पणिहाय सव्वमहतिया बाहल्लेण, सव्वखुड्डिया सव्वतेसु ?
[1]•हता गोयमा ! इमा ण रयणप्पभापुढवी दोच्च पुढवि पणिहाय जाव सव्वखुड्डिया सव्वतेसु ।
दोच्चा ण भते ! पुढवी तच्च पुढवि पणिहाय सव्वमहतिया बाहल्लेण—पुच्छा ।
हता गोयमा ! दोच्चा ण पुढवी जाव सव्वखुड्डिया सव्वतेसु । एव एएण अभिलावेण जाव छट्ठिया पुढवी अहेसत्तम पुढविं पणिहाय जाव सव्वखुड्डिया सव्वतेसु° ॥

निरयपरिसामत-पदं

४६ इमीसे ण भते ! रयणप्पभाए पुढवीए निरयपरिसामतेसु[2] जे पुढविक्काइया [3]•जाव वणस्सइकाइया तेण जीवा महाकम्मतरा चेव, महाकिरियतरा चेव, महासवतरा चेव, महावेदणतरा चेव ?
हता गोयमा ! इमीसे ण रयणप्पभाए पुढवीए निरयपरिसामतेसु त चेव जाव महावेदणतरा चेव । एव° जाव अहेसत्तमा ॥

लोगमज्झ-पदं

४७ कहि ण भते ! लोगस्स आयाममज्झे पण्णत्ते ?
गोयमा ! इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए ओवासतरस्स असखेज्जइभाग ओगाहेत्ता, एत्थ ण लोगस्स आयाममज्झे पण्णत्ते ॥

४८ कहि ण भते ! अहेलोगस्स आयाममज्झे पण्णत्ते ?
गोयमा ! चउत्थीए पकप्पभाए पुढवीए ओवासतरस्स सातिरेग अद्धं ओगाहेत्ता, एत्थ ण अहेलोगस्स आयाममज्झे पण्णत्ते ॥

४९ कहि ण भते ! उड्ढलोगस्स आयाममज्झे पण्णत्ते ?
गोयमा ! उप्पि सणकुमार-माहिंदाण कप्पाण हेट्ठिं[4] बभलोए कप्पे रिट्ठविमाणे पत्थडे, एत्थ ण उड्ढलोगस्स आयाममज्झे पण्णत्ते ॥

५० कहि ण भते ! तिरियलोगस्स आयाममज्झे पण्णत्ते ?
गोयमा ! जबुद्दीवे दीवे मदरस्स पव्वयस्स बहुमज्झदेसभाए इमीसे रयणप्पभाए

---

१ स० पा०—एव जहा जीवाभिगमे वितिए नेरइयउद्देसए ।
२. निरयापरिसमतेसु (ता) ।
३. स० पा०—एव जहा नेरइयउद्देसए जाव ।
४ हत्थि (क); हव्वि (ख, ता); हिट्ठि (व), हट्ठि (म) ।

पुढवीए उवरिमहेट्ठिल्लेसु खुड्डगपयरेसु[1], एत्थ णं तिरियलोगमज्झे अट्ठपएसिए रुयए पण्णत्ते, जओ ण इमाओ दस दिसाओ पवहति, त जहा—१ पुरत्थिमा २. पुरत्थिमदाहिणा ३. [2]●दाहिणा ४. दाहिणपच्चत्थिमा ५ पच्चत्थिमा ६ पच्चत्थिमुत्तरा ७ उत्तरा ८ उत्तरपुरत्थिमा ९ उड्ढा १० अहो ।।

५१ एयासि ण भते ! दसण्ह दिसाण कति नामधेज्जा पण्णत्ता ?
गोयमा ! दस नामधेज्जा पण्णत्ता, त जहा—

इदा अग्गेयी जमा, य नेरई वारुणी य वायव्वा ।
सोमा ईसाणी या, विमला य तमा य बोद्धव्वा° ।।१।।

५२. इदा ण भते ! दिसा किमादीया, किपवहा, कतिपदेसादीया, कतिपदेसुत्तरा, कतिपदेसिया, किपज्जवसिया, किसठिया पण्णत्ता ?
गोयमा ! इदा ण दिसा रुयगादीया, रुयगप्पवहा, दुपएसादीया, दुपएसुत्तरा, लोग पडुच्च[3] असखेज्जपएसिया, अलोग पडुच्च अणतपएसिया, लोग पडुच्च सादीया सपज्जवसिया, अलोग पडुच्च सादीया अपज्जवसिया, लोग पडुच्च मुरवसठिया, अलोग पडुच्च सगडुद्धिसठिया पण्णत्ता ।।

५३. अग्गेयी ण भते ! दिसा किमादीया, किंपवहा, कतिपएसादीया, कतिपएस-वित्थिण्णा, कतिपएसिया, किंपज्जवसिया, किंसठिया पण्णत्ता ?
गोयमा ! अग्गेयी ण दिसा रुयगादीया, रुयगप्पवहा, एगपएसादीया, एगपएस-वित्थिण्णा—अणुत्तरा, लोग पडुच्च असखेज्जपएसिया अलोग, पडुच्च अणतपए-सिया, लोग पडुच्च सादीया सपज्जवसिया, अलोग पडुच्च सादीया अपज्जवसिया, छिण्णमुत्तावलिसठिया पण्णत्ता । जमा जहा इदा, नेरई जहा अग्गेयी । एव जहा इदा तहा दिसाओ चत्तारि[4], जहा अग्गेई तहा चत्तारि विदिसाओ ।।

५४. विमला ण भते ! दिसा किमादीया, [5]●किंपवहा, कतिपएसादीया, कतिपएस-वित्थिण्णा, कतिपएसिया, किंपज्जवसिया, किसठिया पण्णत्ता° ?
गोयमा ! विमला ण दिसा रुयगादीया, रुयगप्पवहा, चउप्पएसादीया, दुपएस-वित्थिण्णा—अणुत्तरा, लोग पडुच्च [6]●असखेज्जपएसिया, अलोग पडुच्च अणतपएसिया, लोग पडुच्च सादीया सपज्जवसिया, अलोग पडुच्च सादीया अपज्जवसिया°, रुयगसठिया पण्णत्ता । एव तमा वि ।।

---

१ खुड्डाग° (ता, ब) ।
२. स० पा०—एव जहा दसमसए जाव नाम-धेज्जे त्ति ।
३. पडुच्चा (ता) सर्वत्र ।
४. चत्तारि वि (क, ख, ता, व, म) ।
५. स० पा०—पुच्छा जहा अग्गेयीए ।
६ स० पा०—सेस जहा अग्गेयीए नवर रुयग-सठिया ।

लोय-पदं

५५ किमिय भते ! लोएत्ति पवुच्चइ ?
गोयमा ! पचत्थिकाया, एस ण एवतिए लोएत्ति पवुच्चइ, त जहा—धम्मत्थि-काए, अधम्मत्थिकाए[1] •आगासत्थिकाए, जीवत्थिकाए°, पोग्गलत्थिकाए ॥

५६ धम्मत्थिकाएण भते ! जीवाण कि पवत्तति ?
गोयमा ! धम्मत्थिकाएण जीवाण आगमण-गमण-भासुम्मेस[2]-मणजोग-वइजोग-कायजोगा, जे यावण्णे तहप्पगारा चला भावा सव्वे ते धम्मत्थिकाए पवत्तति । गइलक्खणे ण धम्मत्थिकाए ॥

५७. अधम्मत्थिकाएण भते ! जीवाण किं पवत्तति ?
गोयमा ! अधम्मत्थिकाएण जीवाण ठाण-निसीयण-तुयट्टण[3], मणस्स य एगत्तीभावकरणता, जे यावण्णे तहप्पगारा थिरा भावा सव्वे ते अधम्मत्थि-काए पवत्तति । ठाणलक्खणे ण अधम्मत्थिकाए ॥

५८ आगासत्थिकाएण भते ! जीवाण 'अजीवाण य'[4] किं पवत्तति ?
गोयमा ! आगासत्थिकाए ण जीवदव्वाण 'य अजीवदव्वाण य'[5] भायणभूए—

एगेण वि से पुण्णे, दोहि वि पुण्णे सय पि माएज्जा ।
कोडिसएण वि पुण्णे, कोडिसहस्स पि माएज्जा ॥१॥

अवगाहणालक्खणे ण आगासत्थिकाए ॥

५९ जीवत्थिकाए ण भते ! जीवाण कि पवत्तति ?
गोयमा ! जीवत्थिकाएण जीवे अणताण आभिणिबोहियनाणपज्जवाण, अणताण सुयनाणपज्जवाण [6]•अणताण ओहिनाणपज्जवाण, अणताण मणपज्जव-नाणपज्जवाण, अणताण केवलनाणपज्जवाण, अणताण मइअण्णाणपज्जवाण, अणताण सुयअण्णाणपज्जवाण, अणताण विभगनाणपज्जवाणं, अणताण चक्खुदसणपज्जवाण, अणताण अचक्खुदसणपज्जवाणं, अणताण ओहिदसण-पज्जवाण, अणताण केवलदसणपज्जवाण° उवयोग गच्छति । उवयोगलक्खणे[7] ण जीवे ॥

६० पोग्गलत्थिकाए ण [8]•भते ! जीवाणं कि पवत्तति° ?

---

१ अहम्म° (अ, क, म, स), स० पा०—अधम्मत्थिकाए जाव पोग्गलत्थिकाए ।
२. भासुमोस (अ, स), भासुमेस (ख) ।
३. प्रथमाबहुवचनलोपदर्शनात् (वृ) ।
४. × (ख, व, म) ।
५ × (ख) ।
६. स० पा०—एव जहा वितियसए अत्थिकाय-उद्देसए जाव उवयोग ।
७ उवओग° (क, ता), उवजोग° (व) ।
८. स० पा०—पुच्छा ।

गोयमा ! पोग्गलत्थिकाएण जीवाण ओरालिय-वेउव्विय-'आहारा-तेया कम्मा'[1]-सोइंदिय-चक्खिदिय-घाणिदिय - जिब्भिदिय - फासिदिय-मणजोग-वइजोग-कायजोग-आणापाणूण च गहण पवत्तति। गहणलक्खणे णं पोग्गलत्थिकाए ।।

धम्मत्थिकायादीणं परोप्परं फास-पदं

६१ एगे भते ! धम्मत्थिकायपदेसे केवतिएहिं धम्मत्थिकायपदेसेहिं पुट्ठे ?
गोयमा ! जहण्णपदे तिहि, उक्कोसपदे छहि। केवतिएहि अधम्मत्थिकायपदेसेहिं पुट्ठे ? जहण्णपदे[2] चउहि, उक्कोसपदे सत्तहि। केवतिएहिं आगासत्थिकायपदेसेहि पुट्ठे ? सत्तहि। केवतिएहि जीवत्थिकायपदेसेहिं पुट्ठे ? अणतेहिं। केवतिएहि पोग्गलत्थिकायपदेसेहि पुट्ठे ? अणतेहि। केवतिएहि अद्धासमएहि पुट्ठे ? सिय पुट्ठे सिय नो पुट्ठे, जइ पुट्ठे नियम अणतेहि ।।

६२ एगे भते ! अधम्मत्थिकायपदेसे केवतिएहिं धम्मत्थिकायपदेसेहिं पुट्ठे ?
गोयमा ! जहण्णपदे चउहि, उक्कोसपदे सत्तहिं। केवतिएहि अधम्मत्थिकायपदेसेहि पुट्ठे ? जहण्णपदे तिहि, उक्कोसपदे छहि। सेस जहा धम्मत्थिकायस्स ।।

६३. एगे भते ! आगासत्थिकायपदेसे केवतिएहि धम्मत्थिकायपदेसेहि पुट्ठे ?
गोयमा ! सिय पुट्ठे सिय नो पुट्ठे, जइ पुट्ठे जहण्णपदे एक्केण वा दोहि वा तीहिं वा, उक्कोसपदे सत्तहि। एव अधम्मत्थिकायपदेसेहि वि। केवतिएहि आगासत्थिकायपदेसेहि पुट्ठे ? छहि। केवतिएहिं जीवत्थिकायपदेसेहि पुट्ठे ? सिय पुट्ठे सिय नो पुट्ठे, जइ पुट्ठे नियम अणतेहिं। एव पोग्गलत्थिकायपदेसेहि वि, अद्धासमएहिं वि ।।

६४. एगे भते ! जीवत्थिकायपदेसे केवतिएहि धम्मत्थिकाय[3]°पदेसेहि पुट्ठे ?° जहण्णपदे चउहि, उक्कोसपदे सत्तहिं। एव अधम्मत्थिकायपदेसेहि वि। केवतिएहि आगासत्थिकाय[4]°पदेसेहि पुट्ठे ?° सत्तहि। केवतिएहिं जीवत्थिकायपदेसेहिं पुट्ठे ? अणतेहि। सेस जहा[5] धम्मत्थिकायस्स ।।

६५. एगे भते ! पोग्गलत्थिकायपदेसे केवतिएहिं धम्मत्थिकायपदेसेहिं पुट्ठे ? एव जहेव[6] जीवत्थिकायस्स ।।

६६. दो भते ! पोग्गलत्थिकायपदेसा केवतिएहिं धम्मत्थिकायपदेसेहि पुट्ठा ?
गोयमा ! जहण्णपदे छहिं, उक्कोसपदे बारसहि। एव अधम्मत्थिकायपदेसेहि वि। केवतिएहि आगासत्थिकायपदेसेहि पुट्ठा ? बारसहिं। सेस जहा[7] धम्मत्थिकायस्स ।।

---

१. आहारए तेयकम्मए (ख)।
२ गोयमा ! जहण्णपदे (स) सर्वत्र।
३. स० पा०—पुच्छा।
४. स० पा०—पुच्छा।
५. भ० १३।६१।
६. भ० १३।६४।
७. भ० १३।६१।

६७ तिण्णि भते ! पोग्गलत्थिकायपदेसा केवतिएहिं धम्मत्थिकायपदेसेहि पुट्ठा ?
जहण्णपदे अट्ठहि, उक्कोसपदे सत्तरसहि। एव अधम्मत्थिकायपदेसेहि वि। केवतिएहिं आगासत्थिकायपदेसेहि पुट्ठा ? सत्तरसहिं। सेस जहा धम्मत्थिकायस्स। एव एएण गमेण भाणियव्वा[1] जाव दस, नवर—जहण्णपदे दोण्णि पक्खिवियव्वा, उक्कोसपदे पच। चत्तारि पोग्गलत्थिकायस्स पदेसा जहण्णपदे दसहि, उक्कोसपदे वावीसाए। पच पोग्गलत्थिकायस्स पदेसा जहण्णपदे बारसहि उक्कोसपदे सत्तावीसाए। छ पोग्गलत्थिकायस्स पदेसा जहण्णपदे चोद्दसहि, उक्कोसपदे वत्तीसाए। सत्त पोग्गलत्थिकायस्स पदेसा जहण्णपदे सोलसहिं, उक्कोसपदे सत्ततीसाए। अट्ठ पोग्गलत्थिकायस्स पदेसा जहण्णपदे अट्ठारसहि, उक्कोसपदे बायालीसाए। नव पोग्गलत्थिकायस्स पदेसा जहण्णपदे वीसाए, उक्कोसपदे सीयालीसाए। दस पोग्गलत्थिकायस्स पदेसा जहण्णपदे बावीसाए, उक्कोसपदे बावन्नाए। आगासत्थिकायस्स सव्वत्थ उक्कोसग भाणियव्व ॥

६८ सखेज्जा भते ! पोग्गलत्थिकायपदेसा केवतिएहि धम्मत्थिकायपदेसेहि पुट्ठा ?
जहण्णपदे तेणेव सखेज्जएण दुगुणेण दुरूवाहिएण, उक्कोसपदे तेणेव सखेज्जएण पचगुणेण दुरूवाहिएण। केवतिएहि अधम्मत्थिकायपदेसेहि ? एव चेव। केवतिएहि आगासत्थिकायपदेसेहि ? तेणेव सखेज्जएण पचगुणेण दुरूवाहिएण। केवतिएहि जीवत्थिकायपदेसेहि ? अणतेहिं। केवतिएहि पोग्गलत्थिकायपदेसेहि? अणतेहिं। केवतिएहि अद्धासमएहि ? सिय पुट्ठे, सिय नो पुट्ठे[2], •जइ पुट्ठे नियम॰ अणतेहिं ॥

६९ असखेज्जा भते ! पोग्गलत्थिकायपदेसा केवतिएहि धम्मत्थिकायपदेसेहि पुट्ठा ?
जहण्णपदे तेणेव असखेज्जएण दुगुणेण दुरूवाहिएण, उक्कोसपदे तेणेव असखेज्जएण पचगुणेण दुरूवाहिएण। सेस जहा सखेज्जाण जाव नियम अणतेहि ॥

७०. अणता भते ! पोग्गलत्थिकायपदेसा केवतिएहि धम्मत्थिकायपदेसेहिं पुट्ठा ?
एव जहा असखेज्जा तहा अणता वि निरवसेस ॥

७१ एगे भते ! अद्धासमए केवतिएहिं धम्मत्थिकायपदेसेहि पुट्ठे ?
सत्तहि। केवतिएहिं अधम्मत्थिकायपदेसेहि पुट्ठे? एव चेव, एव आगासत्थिकाएहि वि। केवतिएहिं जीवत्थिकायपदेसेहि पुट्ठे ? अणतेहि, एव जाव अद्धासमएहिं ॥

७२ धम्मत्थिकाए ण भते ! केवतिएहि धम्मत्थिकायपदेसेहिं पुट्ठे ?
'नत्थि एक्केण'[3] वि। केवतिएहि अधम्मत्थिकायपदेसेहि ? असंखेज्जेहिं। केवतिएहि आगासत्थिकायपदेसेहिं ? असखेज्जेहिं। केवतिएहि जीवत्थिकाय-

---

१. भाणियव्व (म, स)।
२ स० पा०—पुट्ठे जाव अणतेहिं।
३ नत्थिक्केण (अ, ख, ता), नत्थि इक्केण (क)।

पदेसेहिं ? अणंतेहि । 'केवतिएहिं पोग्गलत्थिकायपदेसेहिं ? अणतेहि । केवतिएहि अद्धासमएहि ? सिय पुट्ठे, सिय नो पुट्ठे, जइ पुट्ठे नियमा अणतेहिं'[1] ।।

७३. अधम्मत्थिकाए ण भते ! केवतिएहिं धम्मत्थिकायपदेसेहिं पुट्ठे ?
असखेज्जेहिं । केवतिएहि अधम्मत्थिकायपदेसेहिं ? नत्थि एक्केण वि । सेस जहा धम्मत्थिकायस्स । एव एएण गमएण सव्वे[2] वि सट्ठाणए नत्थि एक्केण वि पुट्ठा, परट्ठाणए आदिल्लएहि तिहि असखेज्जेहिं भाणियव्व, पच्छिल्लएसु तिसु[3] अणता भाणियव्वा जाव अद्धासमयो त्ति जाव केवतिएहिं अद्धासमएहिं पुट्ठे ? नत्थि एक्केण वि ।।

धम्मत्थिकायादीरण ओगाढ-पदं

७४ जत्थ ण भते ! एगे धम्मत्थिकायपदेसे ओगाढे, तत्थ केवतिया धम्मत्थिकाय-पदेसा ओगाढा ?
नत्थि एक्को वि । केवतिया अधम्मत्थिकायपदेसा ओगाढा ? एक्को । केवतिया आगासत्थिकायपदेसा ओगाढा? एक्को । केवतिया जीवत्थिकायपदेसा ओगाढा? अणता । केवतिया पोग्गलत्थिकायपदेसा ओगाढा ? अणंता । केवतिया अद्धा-समया ओगाढा ? सिय ओगाढा, सिय नो ओगाढा, जइ ओगाढा अणंता ।।

७५ जत्थ ण भते ! एगे अधम्मत्थिकायपदेसे ओगाढे तत्थ केवतिया धम्मत्थिकाय-पदेसा ओगाढा ?
एक्को । केवतिया अधम्मत्थिकायपदेसा ? 'नत्थि एक्को'[4] वि । सेस जहा धम्मत्थिकायस्स ।।

७६ जत्थ ण भते ! एगे आगासत्थिकायपदेसे ओगाढे तत्थ केवतिया धम्मत्थिकाय-पदेसा ओगाढा ?
सिय ओगाढा, सिय नो ओगाढा, जइ ओगाढा एक्को । एव अधम्मत्थिकायपदेसा वि । केवतिया आगासत्थिकायपदेसा ? नत्थि एक्को वि । केवतिया जीवत्थिकायपदेसा ? सिय ओगाढा, सिय नो ओगाढा, जइ ओगाढा अणता । एवं जाव अद्धासमया ।।

७७. जत्थ ण भते ! एगे जीवत्थिकायपदेसे ओगाढे तत्थ केवतिया धम्मत्थिकाय-पदेसा ओगाढा ?
एक्को, एव अधम्मत्थिकायपदेसा वि, एव आगासत्थिकायपदेसा वि । केवत्तिया जीवत्थिकायपदेसा ? अणता । सेस जहा धम्मत्थिकायस्स ।।

७८. जत्थ ण भते ! एगे पोग्गलत्थिकायपदेसे ओगाढे तत्थ केवतिया धम्मत्थिकाय-पदेसा ओगाढा ?

---

१. एव पोग्गलत्थि अद्धासमएहि य (ख, ता) । ३. × (ता) ।
२. सव्वेसिण (क), सव्वेण (ता, व, म) । ४ नत्थेक्को (ता); नत्थेक्के (व, स) ।

एव जहा जीवत्थिकायपदेसे तहेव निरवसेस ।।

७९ जत्थ ण भते ! दो पोग्गलत्थिकायपदेसा ओगाढा तत्थ केवतिया धम्मत्थिकाय-पदेसा ओगाढा ?
सिय एक्को सिय दोण्णि, एव अधम्मत्थिकायस्स वि, एव आगासत्थिकायस्स वि । सेस जहा धम्मत्थिकायस्स ।।

८० जत्थ ण भते ! तिण्णि पोग्गलत्थिकायपदेसा ओगाढा तत्थ केवतिया धम्म-त्थिकायपदेसा ओगाढा ?
सिय एक्को, सिय दोण्णि, सिय तिण्णि, एव अधम्मत्थिकायस्स वि, एव आगा-सत्थिकायस्स वि । सेस जहेव दोण्ह, एव एक्केक्को वड्ढियव्वो पदेसो आइल्ल-एहिं तिहिं अत्थिकाएहि, सेसेहि जहेव दोण्ह जाव दसण्ह सिय एक्को, सिय दोण्णि, सिय तिण्णि जाव सिय दस । सखेज्जाण सिय एक्को, सिय दोण्णि जाव सिय दस, सिय सखेज्जा । असखेज्जाण सिय एक्को जाव सिय सखेज्जा, सिय असखेज्जा । जहा असखेज्जा एव अणता वि ।।

८१. जत्थ ण भते ! एगे अद्धासमए ओगाढे तत्थ केवतिया धम्मत्थिकायपदेसा ओगाढा? एक्को । केवतिया अधम्मत्थिकायपदेसा ? एक्को । केवतिया आगासत्थिकाय-पदेसा? एक्को । केवतिया जीवत्थिकायपदेसा? अणता । एव जाव अद्धासमया ।।

८२ जत्थ ण भते ! धम्मत्थिकाए ओगाढे तत्थ केवतिया धम्मत्थिकायपदेसा ओगाढा? नत्थि एक्को वि । केवतिया अधम्मत्थिकायपदेसा ? असखेज्जा । केवतिया आगासत्थिकायपदेसा ? असखेज्जा । केवतिया जीवत्थिकायपदेसा ? अणता । एव जाव अद्धासमया ।।

८३ जत्थ ण भते ! अधम्मत्थिकाए ओगाढे तत्थ केवतिया धम्मत्थिकायपदेसा ओगाढा ?
असखेज्जा । केवतिया अधम्मत्थिकायपदेसा ? नत्थि एक्को वि । सेस जहा धम्मत्थिकायस्स । एव सव्वे—सट्ठाणे नत्थि एक्को वि भाणियव्वो, परट्ठाणे आदिल्लगा तिण्णि असखेज्जा भाणियव्वा, पच्छिल्लगा तिण्णि अणता भाणियव्वा जाव अद्धासमयो त्ति जाव केवतिया अद्धासमया ओगाढा ? नत्थि एक्को वि ।।

८४. जत्थ ण भते ! एगे पुढविक्काइए ओगाढे तत्थ ण केवतिया पुढविक्काइया ओगाढा ?
असखेज्जा । केवतिया आउक्काइया ओगाढा ? असखेज्जा । केवतिया तेउकाइया ओगाढा ? असखेज्जा । केवतिया वाउकाइया ओगाढा ? असखेज्जा । केवतिया वणस्सइकाइया ओगाढा ? अणता ।

८५ जत्थ ण भंते ! एगे आउक्काइए ओगाढे तत्थ ण केवतिया पुढविक्काइया ओगाढा? असखेज्जा । केवतिया आउक्काइया ओगाढा ? असखेज्जा । एव जहेव

पुढविक्काइयाणं वत्तव्वया तहेव सव्वेसि निरवसेसं भाणियव्वं जाव वणस्सइकाइयाणं जाव केवतिया वणस्सइकाइया ओगाढा ? अणता ॥

८६. एयसि[1] ण भंते ! धम्मत्थिकाय-अधम्मत्थिकाय-आगासत्थिकायसि चक्किया केई आसइत्तए वा सइत्तए वा चिट्ठित्तए वा निसीयत्तए वा तुयट्टित्तए वा ?
नो इणट्ठे समट्ठे, अणता पुणत्थ[2] जीवा ओगाढा ॥

८७ से केणट्ठेण भते ! एव वुच्चइ—एयसि ण धम्मत्थि[3]•काय-अधम्मत्थिकाय°-आगासत्थिकायसि नो चक्किया केई आसइत्तए वा[4] •सइत्तए वा चिट्ठित्तए वा निसीयत्तए वा तुयट्टित्तए वा अणता पुणत्थ जीवा° ओगाढा ?
गोयमा ! से जहानामए कूडागारसाला सिया—दुहओ लित्ता गुत्ता गुत्तदुवारा [5]•णिवाया णिवायगभीरा । अह ण केई पुरिसे पदीवसहस्सं गहाय कूडागारसालाए अतो-अंतो अणुप्पविसइ, अणुप्पविसित्ता तीसे कूडागारसालाए सव्वतो समंता घण-निचिय-निरतर-णिच्छिड्डाइ° दुवारवयणाइ पिहेइ, पिहेत्ता तीसे कूडागारसालाए वहुमज्झदेसभाए जहण्णेण एक्को वा दो वा तिण्णि वा, उक्कोसेण पदीवसहस्स[6] पलीवेज्जा । से नूण गोयमा ! ताओ पदीवलेस्साओ अण्णमण्णसवद्धाओ अण्णमण्णपुट्ठाओ अण्णमण्णसवद्धपुट्ठाओ[7] अण्णमण्णघडत्ताए चिट्ठति ?
'हंता चिट्ठति'[8] ।
चक्किया णं गोयमा ! केई तासु पदीवलेस्सासु आसइत्तए वा जाव तुयट्टित्तए वा ?
भगवं ! नो इणट्ठे समट्ठे । अणंता पुणत्थ[9] जीवा ओगाढा । से तेणट्ठेण गोयमा ! एवं वुच्चइ जाव अणंता पुणत्थ जीवा ओगाढा ॥

लोय-पदं

८८ कहि ण भते ! लोए वहुसमे, कहि ण भते ! लोए सव्वविग्गहिए पण्णत्ते ?
गोयमा ! इमोसे रयणप्पभाए पुढवीए उवरिमहेट्ठिल्लेसु खुड्डगपयरेसु[10], एत्थ णं लोए वहुसमे, एत्थ णं लोए सव्वविग्गहिए पण्णत्ते ॥

---

१. एतेमि (क, ख, ता, व, म, म) ।
२. पुरा तत्थ (अ, ख, म, स), पुरोत्थ (क) ।
३. स० पा०—धम्मत्थि जाव आगासत्थिकायसि ।
४. म० पा०—वा जाव ओगाढा ।
५. स० पा०—जहा रायप्पसेणइज्जे जाव दुवारवयणाइ ।
६. दीव° (अ) ।
७. जाव (अ, क, ता, व, म, स) ।
८ × (व, म) ।
९ पुण तत्थ (अ, ख, व, म, स) ।
१०. खुड्डाग° (व) ।

८९. कहि ण भते ! विग्गहविग्गहिए[1] लोए पण्णत्ते ?
गोयमा ! विग्गहकडए, एत्थ ण विग्गहविग्गहिए लोए पण्णत्ते ॥

९०. किसठिए ण भते ! लोए पण्णत्ते ?
गोयमा ! सुपइट्ठियसठिए लोए पण्णत्ते—हेट्ठा विच्छिण्णे[2], मज्झे [3]•सखित्ते, उप्पि विसाले; अहे पलियकसठिए, मज्झे वरवइरविग्गहिए, उप्पि उद्धमुइगाकारसठिए। तसि च ण सासयसि लोगसि हेट्ठा विच्छिण्णसि जाव उप्पि उद्धमुइगाकारसठियसि उप्पण्णनाण-दसणधरे अरहा जिणे केवली जीवे वि जाणइ-पासइ, अजीवे वि जाणइ-पासइ, तओ पच्छा सिज्झइ बुज्झइ मुच्चइ परिनिव्वाइ सव्वदुक्खाण° अत करेति ॥

९१. एयस्स ण भते ! अहेलोगस्स, तिरियलोगस्स, उड्ढलोगस्स य कयरे कयरेहितो[4] •अप्पा वा ? वहुया वा ? तुल्ला वा ? ° विसेसाहिया वा ?
गोयमा ! सव्वत्थोवे तिरियलोए, उड्ढलोए असखेज्जगुणे, अहेलोए विसेसाहिए ॥

९२ सेव भते ! सेव भते ! त्ति[5] ॥

पंचमो उद्देसो

आहार-पद

९३ नेरइया ण भते ! किं सचित्ताहारा ? अचित्ताहारा ? मीसाहारा ?
गोयमा ! नो सचित्ताहारा, अचित्ताहारा, नो मीसाहारा। एव असुरकुमारा, पढमो नेरइयउद्देसओ निरवसेसो भाणियव्वो[6] ॥

९४ सेव भते ! सेव भते ! त्ति[7] ॥

---

१. विग्गहिए (अ)।
२. वित्थिण्णे (अ, ब, म)।
३. स० पा०—जहा सत्तमसए पढमुद्देसे जाव अत।
४. स० पा०—कयरेहिंतो जाव विसेसाहिया।
५. भ० १।५१।
६. प० २८।१।
७. भ० १।५१।

छट्ठो उद्देसो

संतर-निरतर-उववज्जणादि-पदं

९५. रायगिहे जाव[1] एव वयासी—सतर भते ! नेरइया उववज्जति ? निरंतरं नेरइया उववज्जति ?
गोयमा ! संतर पि नेरइया उववज्जति, निरंतर पि नेरइया उववज्जति। एव असुरकुमारा वि। एव जहा गगेये तहेव दो दडगा जाव[2] संतर पि वेमाणिया चयति, निरतर पि वेमाणिया चयति ॥

चमरचंच-आवास-पद

९६. कहि ण भंते ! चमरस्स असुरिंदस्स असुरकुमाररण्णो[3] चमरचचे[4] नाम आवासे पण्णत्ते ?
गोयमा ! जवुद्दीवे दीवे मदरस्स पव्वयस्स दाहिणे ण तिरियमसखेज्जे दीवसमुद्दे—एव जहा वितियसए सभाउद्देसए वत्तव्वया सच्चेव अपरिसेसा नेयव्वा[5]। तीसे ण चमरचचाए रायहाणीए दाहिणपच्चत्थिमे ण छक्कोडिसए पणपन्न च कोडीओ 'पणतीसं च सयसहस्साइ'[6] पन्नास च सहस्साइ अरुणोदगसमुद्द तिरियं वीइवइत्ता, एत्थ ण चमरस्स असुरिंदस्स असुरकुमाररण्णो चमरचचे नाम आवासे पण्णत्ते—चउरासीइ जोयणसहस्साइ आयामविक्खभेणं, दो जोयणसयसहस्सा पन्नट्ठिं च सहस्साइ छच्च बत्तीसे जोयणसए किचि विसेसाहिए परिक्खेवेण। से ण एगेणं पागारेण सव्वओ समता सपरिक्खित्ते। से ण पागारे दिवड्ढं जोयणसय उड्ढं उच्चत्तेण, एवं चमरचचाए रायहाणीए वत्तव्वया भाणियव्वा सभाविहूणा जाव[7] चत्तारि पासायपतीओ।

---

१ भ० १।४-१०।
२. भ० ९।८०-८५।
३ असुररण्णो (अ, ता, म, स)।
४. चमरचचा (अ, क, ख, ता, व, म, स)।
५. भ० २।११८-१२१, नेयव्वा, नवर—इम नाणत्त जाव तिगिञ्छकूडस्स उप्पायपव्वयस्स चमरचचाए रायहाणीए चमरचचस्स आवासपव्वयस्स, अण्णेसिं च वहूण सेस त चेव जाव तेरस य अगुलाइ अद्धंगुल च किंचि विसेसाहिया परिक्खेवेण (अ, क, ख, ता, व, म स); अस्मिन् द्वितीयशतकस्य सभाख्योद्देशकस्य समर्पणमस्ति। एतत्समर्पणानुसारेण द्वितीयशतकस्य, 'जंबुद्दीवप्पमाणा' एतावत्पर्यन्त पाठोत्र समायोजनार्हः, किन्तु 'नवर इम नाणत्त' अस्याभिप्रायो नावगम्यते। 'नेयव्वा' अत. परवर्तिपाठो नावश्यक. प्रतिभाति, तेनासौ पाठान्तरत्वेन स्वीकृत।
६. त चेव जाव (अ, क, ख, ता, व)।
७. भ० २।१२१।

९७ चमरे णं भंते ! असुरिंदे असुरकुमारराया चमरचंचे आवासे वसहिं उवेति ?
नो इणट्ठे समट्ठे ॥

९८ से केणं खाइ अट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ—चमरचंचे आवासे, चमरचंचे आवासे ? गोयमा ! से जहानामए—इहं मणुस्सलोगंसि उवगारियलेणाइ वा, उज्जाणियलेणाइ वा, णिज्जाणियलेणाइ वा, धारावारियलेणाइ[1] वा, तत्थ णं बहवे मणुस्सा य मणुस्सीओ य आसयंति सयंति [2]•चिट्ठंति निसीयंति तुयट्टंति हसंति रमंति ललंति कीलंति कित्तंति मोहेंति पुरा पोराणाणं सुचिण्णाणं सुपरक्कंताणं सुभाणं कडाणं कम्माणं कल्लाणाणं° कल्लाणफलवित्तिविसेसं पच्चणुब्भवमाणा विहरंति, अण्णत्थ पुण वसहिं उवेंति। एवामेव गोयमा ! चमरस्स असुरिंदस्स असुरकुमाररण्णो चमरचंचे आवासे केवलं किड्डा-रतिपत्तियं, अण्णत्थ पुण वसहिं उवेति। से तेणट्ठेणं[3] •गोयमा ! एवं वुच्चइ—चमरचंचे आवासे, चमरचंचे° आवासे ॥

९९ सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति जाव[4] विहरइ ॥

१०० तए णं समणे भगवं महावीरे अण्णया कयाइ रायगिहाओ नगराओ गुणसिलाओ[5] •चेइयाओ पडिनिक्खमइ, पडिनिक्खमित्ता बहिया जणवयविहारं° विहरइ ॥

उद्दायणकहा-पदं

१०१. तेणं कालेणं तेणं समएणं चंपा नामं नयरी होत्था—वण्णओ[6]। पुण्णभद्दे चेइए—वण्णओ[7]। तए णं समणे भगवं महावीरे अण्णदा कदाइ पुव्वाणुपुव्विं चरमाणे[8] •गामाणुगामं दूइज्जमाणे सुहंसुहेणं° विहरमाणे जेणेव चंपा नगरी जेणेव पुण्णभद्दे चेइए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता[9] •अहापडिरूवं ओग्गहं ओगिण्हइ ओगिण्हित्ता संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे° विहरइ ॥

१०२ तेणं कालेणं तेणं समएणं सिंधूसोवीरेसु[10] जणवएसु वीतीभए[11] नामं नगरे होत्था—वण्णओ[12]। तस्स णं वीतीभयस्स नगरस्स बहिया उत्तरपुरत्थिमे दिसीभाए,

---

१. वारधारिय° (अ, क, म), धारवारिय° (ख, व), धारिवारिय° (स)।
२. सं० पा०—जहा रायप्पसेणइज्जे जाव कल्लाण°।
३. सं० पा०—तेणट्ठेण जाव आवासे।
४ भ० १।५१।
५. सं० पा०—गुणसिलाओ जाव विहरइ।
६ ओ० सू० १।
७ ओ० सू० २-१३।
८ सं० पा०—चरमाणे जाव विहरमाणे।
९ सं० पा०—उवागच्छित्ता जाव विहरइ।
१० सिंधु° (स)।
११ वीभवे (ता), 'विदर्भे' ति केचित् (वृ)।
१२ ओ० सू० १।

एत्थ णं मियवणे नामं उज्जाणे होत्था—सव्वोउय-पुप्फ-फलसमिद्धे—वण्णओ[1]। तत्थ णं वीतीभए नगरे उद्दायणे[2] नामं राया होत्था—महयाहिमवंत-महंत-मलय-मंदर-महिंदसारे—वण्णओ[3]। तस्स णं उद्दायणस्स रण्णो पउमावती नामं देवी होत्था—सुकुमालपाणिपाया—वण्णओ[4]। तस्स णं उद्दायणस्स रण्णो पभावती नामं देवी होत्था—वण्णओ जाव[5] विहरइ। तस्स णं उद्दायणस्स रण्णो पुत्ते पभावतीए देवीए अत्तए अभीयी[6] नामं कुमारे होत्था—सुकुमाल[7]•पाणिपाए अहीण-पडिपुण्ण-पंचिंदिय-सरीरे लक्खण-वंजण-गुणोववेए माणुम्माण-पमाण-पडिपुण्ण-सुजायसव्वंग-सुंदरंगे ससिसोमाकारे कंते पियदंसणे सुरूवे पडिरूवे। से णं अभीयी कुमारे जुवराया वि होत्था—उद्दायणस्स रण्णो रज्जं च रट्ठं च बलं च वाहणं च कोसं च कोट्ठारं च पुरं च अंतेउरं च सयमेव पच्चुवेक्ख-माणे°-पच्चुवेक्खमाणे विहरइ। तस्स णं उद्दायणस्स रण्णो नियए भाइणेज्जे[8] केसी नामं कुमारे होत्था—सुकुमालपाणिपाए जाव सुरूवे। से णं उद्दायणे राया सिंधूसोवीरप्पामोक्खाणं सोलसण्हं जणवयाणं, वीतीभयप्पामोक्खाणं तिण्हं तेसट्ठीणं नगरागरसयाणं[9], महसेणप्पामोक्खाणं दसण्हं राईणं बद्धमउडाणं विदिन्नछत्त-चामर-वालवीयणाणं, अण्णेसिं च बहूणं राईसर-तलवर[10]-•माडंबिय-कोडुंबिय-इब्भ-सेट्ठि-सेणावइ°-सत्थवाहप्पभिईणं आहेवच्चं पोरेवच्चं[11] •सामित्तं भट्टित्तं आणा-ईसर-सेणावच्चं° कारेमाणे पालेमाणे समणोवासए अभिगयजीवाजीवे जाव[12] अहापरिग्गहिएहिं तवोकम्मेहिं अप्पाणं भावेमाणे विहरइ॥

१०३. तए णं से उद्दायणे राया अण्णया कयाइ जेणेव पोसहसाला तेणेव उवागच्छइ, जहा संखे जाव[13] पोसहिए बंभचारी ओमुक्कमणिसुवण्णे ववगयमाला-वण्णग-विलेवणे निक्खित्तसत्थ-मुसले एगे अबिइए दब्भसंथारोवगए पक्खियं पोसहं पडिजागरमाणे विहरइ॥

१०४. तए णं तस्स उद्दायणस्स रण्णो पुव्वरत्तावरत्तकालसमयंसि धम्मजागरियं जागरमाणस्स अयमेयारूवे अज्झत्थिए[14] •चिंतिए पत्थिए मणोगए संकप्पे°

---

१. भ० ११।५७।
२. ओदायणे (अ), उदायणे (स) सर्वत्र।
३. ओ० सू० १४।
४. ओ० सू० १५।
५. ओ० सू० १५।
६. अभीति (अ, स,)।
७. सं० पा०—जहा सिवभद्दे जाव पच्चुवेक्खमाणे।
८. भायणेज्जे (अ, ख, म)।
९. नगरसयाणं (अ, व, म, वृपा)।
१०. सं० पा०—तलवर जाव सत्थवाह°।
११. सं० पा०—पोरेवच्चं जाव कारेमाणे।
१२. भ० ३।९४।
१३. भ० १२।६।
१४. सं० पा०—अज्झत्थिए जाव समुप्पज्जित्था।

समुप्पज्जित्था—धन्ना ण ते गामागर-नगर-खेड-कब्बड-मडब-दोणमुह-पट्टणा-सम-सवाहसण्णिवेसा जत्थ ण समणे भगव महावीरे विहरइ, धन्ना ण ते राई-सर-तलवर[1]-•माडविय-कोडुबिय-इब्भ-सेट्ठि-सेणावइ°-सत्थवाहप्पभितयो[2] जे ण समण भगव महावीर वदति नमसति जाव[3] पज्जुवासति। जइ ण समणे भगव महावीरे पुव्वाणुपुव्वि चरमाणे गामाणुगाम[4] •दूइज्जमाणे सुहसुहेण° विहरमाणे इहमागच्छेज्जा, इह समोसरेज्जा, इहेव वीतीभयस्स नगरस्स बहिया मियवणे उज्जाणे अहापडिरूव ओग्गह ओगिण्हित्ता सजमेण तवसा[5] •अप्पाण भावेमाणे° विहरेज्जा, तो ण अह समण भगव महावीर वदेज्जा नमसेज्जा जाव पज्जुवासेज्जा ॥

१०५ तए ण समणे भगव महावीरे उद्दायणस्स रण्णो अयमेयारूव अज्झत्थिय[6] •चिंतिय पत्थिय मणोगय सकप्प° समुप्पन्न वियाणित्ता चपाओ नगरीओ पुण्णभद्दाओ चेइयाओ पडिनिक्खमइ, पडिनिक्खमित्ता पुव्वाणुपुव्वि चरमाणे गामाणु[7]•गाम दूइज्जमाणे सुहसुहेण° विहरमाणे जेणेव सिधूसोवीरे जणवए जेणेव वीतीभये नगरे, जेणेव मियवणे उज्जाणे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता जाव[8] सजमेण तवसा अप्पाण भावेमाणे विहरइ ॥

१०६ तए ण वीतोभये नगरे सिंघाडग-तिग-चउक्क-चच्चर-चउम्मुह-महापह-पहेसु जाव[9] परिसा पज्जुवासइ ॥

१०७ तए ण से उद्दायणे राया इमीसे कहाए लद्धट्ठे समाणे हट्ठतुट्ठे कोडुबियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एव वयासी—खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया! वीयीभय नगर सब्भितरबाहिरिय जहा कूणिओ ओववाइए जाव[10] पज्जुवासइ। पउमावती-पामोक्खाओ देवीओ तहेव जाव[11] पज्जुवासति। धम्मकहा ॥

१०८ तए ण से उद्दायणे राया समणस्स भगवओ महावीरस्स अतिय धम्म सोच्चा निसम्म हट्ठतुट्ठे उट्ठाए उट्ठेइ, उट्ठेत्ता समण भगव महावीर तिक्खुत्तो जाव[12] नमसित्ता एव वयासी—एवमेय भते! तहमेय भते[13]! •अवितहमेय भते! असदिद्धमेय भते! इच्छियमेय भते! पडिच्छियमेय भते! इच्छिय-पडिच्छिय-

---

१ स० पा०—तलवर जाव सत्थवाह°।
२ °प्पभिइओ (अ, स)।
३. भ० २।३०।
४ स० पा०—गामाणुगाम जाव विहरमाणे।
५. स० पा०—तवसा जाव विहरेज्जा।
६ स० पा०—अज्झत्थिय जाव समुप्पन्न।
७ स० पा०—गामाणु जाव विहरमाणे।
८ भ० १।७।
९ ओ० सू० ५२।
१०. ओ० सू० ५५-६९।
११ ओ० सू० ७०।
१२ भ० १।१०।
१३. स० पा०—भते जाव से।

मेयं भंते ! ०—से जहेयं तुब्भे वदह त्ति कट्टु जं नवरं—देवाणुप्पिया ! अभीयिकुमारं रज्जे ठावेमि, तए णं अहं देवाणुप्पियाणं अंतिए मुंडे भवित्ता[1] •अगाराओ अणगारियं° पव्वयामि।

अहासुहं देवाणुप्पिया ! मा पडिबंधं॥

१०९. तए णं से उद्दायणे राया समणेणं भगवया महावीरेणं एवं वुत्ते समाणे हट्ठतुट्ठे समणं भगवं महावीरं वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता तमेव आभिसेक्कं हत्थिं दुरुहइ[2], दुरुहित्ता समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतियाओ मियवणाओ उज्जाणाओ पडिनिक्खमइ, पडिनिक्खमित्ता जेणेव वीतीभये नगरे तेणेव पहारेत्थ गमणाए॥

११०. तए णं तस्स उद्दायणस्स रण्णो अयमेयारूवे अज्झत्थिए[3] •चिंतिए पत्थिए मणोगए संकप्पे° समुप्पज्जित्था—एवं खलु अभीयीकुमारे मम एगे पुत्ते इट्ठे कंते[4] •पिए मणुण्णे मणामे थेज्जे वेसासिए संमए बहुमए अणुमए भंडकरंडगसमाणे रयणे रयणब्भूए जीविऊसविए हिययनंदिजणणे उंबरपुप्फं पिव दुल्लभे सवणयाए°, किमंग पुण पासणयाए ? तं जदि णं अहं अभीयीकुमारं रज्जे ठावेत्ता समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतियं मुंडे भवित्ता[5] •अगाराओ अणगारियं° पव्वयामि, तो णं अभीयीकुमारे रज्जे य रट्ठे य[6] •बले य वाहणे य कोसे य कोट्ठागारे य पुरे य अंतेउरे य° जणवए य माणुस्सएसु य कामभोगेसु मुच्छिए गिद्धे गढिए अज्झोववन्ने अणादीयं अणवदग्गं दीहमद्धं चाउरंतसंसारकंतारं अणुपरियट्टिस्सइ, तं नो खलु मे सेयं अभीयीकुमारं रज्जे ठावेत्ता समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतियं मुंडे भवित्ता[7] •अगाराओ अणगारियं° पव्वइत्तए, सेयं खलु मे नियगं भाइणेज्जं केसिं कुमारं रज्जे ठावेत्ता समणस्स भगवओ[8] •महावीरस्स अंतियं मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं° पव्वइत्तए—एवं संपेहेइ, संपेहेत्ता जेणेव वीयीभये नगरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता वीयीभयं नगरं मज्झंमज्झेणं जेणेव सए गेहे जेणेव बाहिरिया उवट्ठाणसाला, तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता आभिसेक्कं हत्थिं ठवेइ, ठवेत्ता आभिसेक्काओ हत्थीओ पच्चोरुभइ, पच्चोरुभित्ता जेणेव सीहासणे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सीहासणवरंसि पुरत्थाभिमुहे निसीयति, निसीइत्ता कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी—खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया ! वीयीभयं नगरं

---

१. म० पा०—भवित्ता जाव पव्वयामि।
२. दुरुहइ (ता)।
३. अब्भत्थिए (ब, ता, म), स० पा०—अज्झत्थिए जाव समुप्पज्जित्था।
४. म० पा०—कंते जाव किमंग।
५. स० पा०—भवित्ता जाव पव्वयामि।
६. म० पा०—रट्ठे य जाव जणवए।
७. स० पा०—भवित्ता जाव पव्वइत्तए।
८. म० पा०—भगवओ जाव पव्वइत्तए।

सब्भितरबाहिरिय[1] ●आसिय-समज्जिओवलित्त जाव[2] सुगधवरगधगधिय गध-वट्टिभूय करेह य कारवेह य, करेत्ता य कारवेत्ता य एयमाणत्तिय पच्चप्पिणह । ते वि तमाणत्तिय ° पच्चप्पिणति ।।

१११ तए ण से उद्दायणे राया दोच्च पि कोडुवियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एव वयासी —खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया ! केसिस्स कुमारस्स महत्थ महग्घ महरिह विउल एव रायाभिसेओ जहा सिवभद्दस्स कुमारस्स तहेव भाणियव्वो जाव[3] परमाउ पालयाहि, इट्ठजणसपरिवुडे सिधूसोवीरपामोक्खाण सोलसण्ह जणवयाण वीयीभयपामोक्खाण तिण्णि तेसट्ठीण नगरागरसयाण महसेणपामोक्खाण दसण्ह राईण, अण्णेसि च बहूण राईसर[4]-●तलवर-माडबिय-कोडुबिय-इब्भ-सेट्ठि-सेणावइ-सत्थवाहप्पभिईण आहेवच्च पोरेवच्च सामित्त भट्टित्त आणा-ईसर सेणावच्च ° कारेमाणे, पालेमाणे विहराहि त्ति कट्टु जयजयसद्द पउजति ।।

११२ तए ण से केसी कुमारे राया जाए—महयाहिमवत-महत-मलय-मदर-महिंदसारे जाव[5] रज्ज पसासेमाणे विहरइ ।।

११३ तए ण से उद्दायणे राया केसि रायाणं आपुच्छइ ।।

११४ तए ण से केसी राया कोडुवियपुरिसे सद्दावेइ—एव जहा जमालिस्स तहेव सब्भितरबाहिरिय तहेव जाव[6] निक्खमणाभिसेय उवट्ठवेति ।।

११५. तए ण से केसी राया अणेगगणनायग[7]-●दडनायग-राईसर-तलवर-माडबिय-कोडुविय-इब्भ-सेट्ठि-सेणावइ-सत्थवाह-दूय-सधिपाल-सद्धि°-सपरिवुडे उद्दायणं राय सीहासणवरसि पुरत्थाभिमुहे निसीयावेति, निसीयावेत्ता अट्ठसएण सोवण्णियाण कलसाण एव जहा जमालिस्स जाव[8] महया-महया निक्खमणाभिसेगेण अभिसिचति, अभिसिचित्ता करयलपरिग्गहिय दसनह सिरसावत्त मत्थए अजलि कट्टु जएण विजएण वद्धावेति, वद्धावेत्ता एव वयासी—भण सामी ! किं देमो ? किं पयच्छामो ? किणा वा ते अट्ठो ?

११६ तए ण से उद्दायणे राया केसिं राय एव वयासी—इच्छामि ण देवाणुप्पिया ! कुत्तियावणाओ रयहरण च पडिग्गह च आणिय, कासवग च सद्दाविय—एव जहा[9] जमालिस्स, नवर—पउमावती अग्गकेसे पडिच्छइ पियविप्पयोगदूसहा ।।

११७. तए ण से केसी राया दोच्च पि उत्तरावक्कमण सीहासण रयावेति, रयावेत्ता उद्दायण राय सेया-पीतएहिं कलसेहि ण्हावेति, ण्हावेत्ता सेस जहा जमालिस्स

---

१ स० पा०—°बाहिरियं जाव पच्चप्पिणति ।
२. ओ० सू० ५५ ।
३. भ० ११।६१ ।
४. स० पा०—राईसर जाव कारेमाणे ।
५. ओ० सू० १४ ।
६ भ० ९।१८०, १८१ ।
७ स० पा०—अणेगगणनायग जाव सपरिवुडे ।
८. भ० ९।१८२ ।
९. भ० ९।१८४-१८९ ।

जाव[1] चउव्विहेण अलकारेण अलकारिए समाणे पडिपुण्णालकारे सीहासणाओ अब्भुट्ठेइ, अब्भुट्ठेत्ता सीय अणुप्पदाहिणीकरेमाणे सीय दुरुहइ, दुरुहित्ता सीहासणवरसि पुरत्थाभिमुहे सण्णिसण्णे, तहेव[2] अम्मधाती, नवर पउमावती हसलक्खण पडसाडग गहाय सीय अणुप्पदाहिणीकरेमाणी सीय दुरुहइ, दुरुहित्ता उद्दायणस्स रण्णो दाहिणे पासे भद्दासणवरसि सण्णिसण्णा सेस तं चेव जाव[3] छत्तादीए तित्थगरातिसए पासइ, पासित्ता पुरिससहस्सवाहिणि सीय ठवेइ, पुरिससहस्सवाहिणीओ सीयाओ पच्चोरुभइ, पच्चोरुभित्ता जेणेव समणे भगव महावीरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता समणं भगव महावीर तिक्खुत्तो वदइ नमंसइ, वदित्ता नमसित्ता उत्तरपुरत्थिम दिसीभाग अवक्कमइ, अवक्कमित्ता सयमेव आभरणमल्लालकार ओमुयइ ॥

११८. [4]•तए ण सा पउमावती देवी हंसलक्खणेण पडसाडएण आभरणमल्लालकार पडिच्छइ, पडिच्छित्ता हार-वारिधार-सिदुवार-छिन्न-मुत्तावलि-प्पगासाइ असूणि विणिम्मुयमाणी-विणिम्मुयमाणी उद्दायण राय एवं वयासी—जइयव्व सामी ! घडियव्व सामी ! परक्कमियव्व सामी ! अस्सि च ण अट्ठे° नो पमादेयव्व त्ति कट्टु केसी राया पउमावती य समणं भगव महावीर वदति नमसति, वदित्ता नमसित्ता[5] •जामेव दिस पाउब्भुया तामेव दिस° पडिगया ॥

११९. तए ण से उद्दायणे राया सयमेव पचमुट्ठिय लोय करेइ सेस जहा उसभदत्तस्स जाव[6] सव्वदुक्खप्पहीणे ॥

१२०. तए ण तस्स अभीयिस्स कुमारस्स अण्णदा कदाइ पुव्वरत्तावरत्तकालसमयसि कुडुवजागरिय जागरमाणस्स अयमेयारूवे अज्झत्थिए[7] •चितिए पत्थिए मणोगए सकप्पे समुप्पज्जित्था—एव खलु अह उद्दायणस्स पुत्ते पभावतीए देवीए अत्तए, तए ण से उद्दायणे राया मम अवहाय नियगं भाइणेज्ज केसिं कुमार रज्जे ठावेत्ता समणस्स भगवओ[8] •महावीरस्स अतिय मुडे भवित्ता अगाराओ अणगारिय° पव्वइए—इमेण एयारूवेणं महया अप्पत्तिएण मणोमाणसिएण दुक्खेण अभिभूए समाणे अतेउरपरियालसपरिवुडे सभडमत्तोवगरणमायाए वीतीभयाओ नयराओ निग्गच्छइ, निग्गच्छित्ता पुव्वाणुपुव्वि चरमाणे गामाणुगाम दूइज्जमाणे जेणेव चपा नयरी, जेणेव कूणिए राया, तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता कूणियं राय

---

१. भ० ९।१९०-१९२।
२. भ० ९।१९३, १९४।
३. भ० ९।१९५-२०९।
४. स० पा०—तं चेव पउमावती पडिच्छइ जाव घडियव्व सामी ! जाव नो।
५. स० पा०—नमसित्ता जाव पडिगया।
६ भ० ९।१५०,१५१।
७. सं० पा०—अज्झत्थिए जाव समुप्पज्जित्था।
८. स० पा०—भगवओ जाव पव्वइए।

उवसपज्जित्ताणं विहरइ। तत्थ वि ण से विउलभोगसमितिसमन्नागए यावि होत्था। तए ण से अभीयीकुमारे समणोवासए यावि होत्था—अभिगयजीवाजीवे जाव[1] अहापरिग्गहिएहिं तवोकम्मेहिं अप्पाण भावेमाणे विहरइ, उद्दायणम्मि रायरिसिम्मि समणुबद्धवेरे यावि होत्था ॥

१२१. इमीसे[2] रयणप्पभाए पुढवीए निरयपरिसामतेसु चोयट्ठिं[3] असुरकुमारावाससयसहस्सा पण्णत्ता। तए ण से अभीयीकुमारे बहूइ वासाइ समणोवासगपरियाग पाउणइ, पाउणित्ता अद्धमासियाए सलेहणाए तीस भत्ताइ अणसणाए छेएइ, छेएत्ता तस्स ठाणस्स अणालोइयपडिक्कते कालमासे काल किच्चा इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए निरयपरिसामतेसु चोयट्ठीए आयावाअसुरकुमारावाससयसहस्सेसु[4] अण्णयरसि आयावाअसुरकुमारावाससि आयावाअसुरकुमारदेवत्ताए उववण्णो। तत्थ ण अत्थेगतियाण आयावगाण असुरकुमाराण देवाण एग पलिओवम ठिई पण्णत्ता, तत्थ ण अभीयिस्स वि देवस्स एग पलिओवम ठिई पण्णत्ता ॥

१२२ से ण भते! अभीयीदेवे ताओ देवलोगाओ आउक्खएण भवक्खएण ठिइक्खएणं अणतर उव्वट्टित्ता कहिं गच्छिहिति? कहिं उववज्जिहिति?
गोयमा! महाविदेहे वासे सिज्झिहिति जाव[5] सव्वदुक्खाण अत काहिति ॥

१२३ सेव भते! सेव भते! त्ति[6] ॥

सत्तमो उद्देसो

भासा-पद

१२४ रायगिहे जाव[7] एव वयासी—आया भते! भासा? अण्णा भासा?
गोयमा! नो आया भासा, अण्णा भासा।
रूविं भते! भासा? अरूविं भासा?

---

१. भ० २।६४।
२. तेण कालेण तेण समएण इमीसे (अ, क, ख, ता, ब, म, स), अयं पाठ अप्रासङ्गिकोस्ति। शाश्वतपदार्थाना निरूपणे कालनिर्देशो नावश्यकोस्ति। केनापि कारणेन प्रवाहपाती लेख. सजात इति प्रतीयते, तेनात्र पाठान्तरत्वेनास्माभि स्वीकृत।
३. चोसट्ठि (स)।
४. °सहस्सेसु असुरकुमारावासेसु (ता)।
५ भ० २।७३।
६. भ० १।५१।
७. भ० १।४-१०।

गोयमा ! रूवि भासा, नो अरूवि भासा ।
सचित्ता[1] भंते ! भासा ? अचित्ता[2] भासा ?
गोयमा ! नो सचित्ता भासा, अचित्ता भासा ।
जीवा भंते ! भासा ? अजीवा भासा ?
गोयमा ! नो जीवा भासा, अजीवा भासा ।
जीवाण भंते ! भासा ? अजीवाण भासा ?
गोयमा ! जीवाण भासा, नो अजीवाण भासा ।
पुव्वि भंते ! भासा ? भासिज्जमाणी भासा ? भासासमयवीतिक्कता भासा ?
गोयमा ! नो पुव्वि भासा, भासिज्जमाणी भासा, नो भासासमयवीतिक्कता भासा ।
पुव्वि भंते ! भासा भिज्जति ? भासिज्जमाणी भासा भिज्जति ? भासासमय-वीतिक्कता भासा भिज्जति ?
गोयमा ! नो पुव्वि भासा भिज्जति, भासिज्जमाणी भासा भिज्जति, नो भासासमयवीतिक्कता भासा भिज्जति ॥

१२५. कतिविहा ण भंते ! भासा पण्णत्ता ?
गोयमा ! चउव्विहा भासा पण्णत्ता, त जहा—सच्चा, मोसा, सच्चामोसा असच्चामोसा ॥

मण-पदं

१२६. आया भंते ! मणे ? अण्णे मणे ?
गोयमा ! नो आया मणे, अण्णे मणे ।
[3]•रूविं भंते ! मणे ? अरूविं मणे ?
गोयमा ! रूविं मणे, नो अरूवि मणे ।
सचित्ते भंते ! मणे ? अचित्ते मणे ?
गोयमा ! नो सचित्ते मणे, अचित्ते मणे ।
जीवे भंते ! मणे ? अजीवे मणे ?
गोयमा ! नो जीवे मणे, अजीवे मणे ॥
जीवाण भंते ! मणे ? अजीवाण मणे ?
गोयमा ! जीवाण मणे•, नो अजीवाण मणे ।
पुव्वि भंते ! मणे ? मणिज्जमाणे मणे ? [4]•मणसमयवीतिक्कते मणे ?

---

१. सच्चित्ता (क, ता, म) ।
२. अच्चित्ता (क, ता, म) ।
३. स० पा०—जहा भासा तहा मणे वि जाव नो ।
४. स० पा०—एवं जहेव भासा ।

गोयमा ! नो पुव्वि मणे, मणिज्जमाणे मणे, नो मणसमयवीतिक्कते मणे° ।
पुव्वि भंते ! मणे भिज्जति, मणिज्जमाणे मणे भिज्जति, मणसमयवीतिक्कते मणे भिज्जति ?[१]°
गोयमा ! नो पुव्वि मणे भिज्जति, मणिज्जमाणे मणे भिज्जति, नो मणसमयवीतिक्कते मणे भिज्जति° ।।

१२७ कतिविहे णं भंते ! मणे पण्णत्ते ?
गोयमा ! चउव्विहे मणे पण्णत्ते, तं जहा—सच्चे[२], °मोसे, सच्चामोसे°, असच्चामोसे ।।

काय-पद

१२८ आया भंते ! काये ? अण्णे काये ?
गोयमा ! आया वि काये, अण्णे वि काये ।
रूवि भंते ! काये ? अरूवि काये[३] ?
गोयमा ! रूवि पि काये, अरूवि पि काये ।
[४]°सचित्ते भंते ! काये ? अचित्ते काये ?
गोयमा ! सचित्ते वि काये, अचित्ते वि काये ।
जीवे भंते ! काये ? अजीवे काये ?
गोयमा ! जीवे वि काये, अजीवे वि काये ।
जीवाणं भंते ! काये ? अजीवाणं काये ?
गोयमा ! जीवाण वि काये, अजीवाण वि काये° ।
पुव्वि भंते ! काये[५] ? [६]°कायिज्जमाणे काये ? कायसमयवीतिक्कते काये° ?
गोयमा ! पुव्वि पि काये, कायिज्जमाणे वि काये, कायसमयवीतिक्कते वि काये ।
पुव्वि भंते ! काये भिज्जति ? [६]°कायिज्जमाणे काये भिज्जति ? कायसमयवीतिक्कते काये भिज्जति ?°
गोयमा ! पुव्वि पि काये भिज्जति[७], °कायिज्जमाणे वि काये भिज्जति, कायसमयवीतिक्कते वि° काये भिज्जति ।।

१२९ कतिविहे णं भंते ! काये पण्णत्ते ?
गोयमा ! सत्तविहे काये पण्णत्ते, तं जहा—ओरालिए[८], ओरालियमीसए, वेउव्विए, वेउव्वियमीसए, आहारए, आहारगमीसए, कम्मए ।।

---

१. सं० पा०—एवं जहेव भासा ।
२. सं० पा०—सच्चे जाव असच्चामोसे ।
३. काये पुच्छा (स) ।
४. सं० पा०—एवं एक्केक्के पुच्छा । सचित्ते वि काये, अचित्ते वि काये । जीवे वि काए, अजीवे वि काए, जीवाण वि काए, अजीवाण वि काये ।
५. सं० पा०—पुच्छा ।
६. सं० पा०—पुच्छा ।
७. सं० पा०—भिज्जति जाव काये ।
८. ओराले (स) ।

मरण-पद

१३० कतिविहे ण भते ! मरणे पण्णत्ते ?
गोयमा ! पचविहे मरणे पण्णत्ते, त जहा—आवीचियमरणे[1], ओहिमरणे[2], आतियतियमरणे[3], बालमरणे, पडियमरणे ।।

१३१. आवीचियमरणे ण भते ! कतिविहे पण्णत्ते ?
गोयमा ! पचविहे पण्णत्ते, त जहा—दव्वावीचियमरणे, खेत्तावीचियमरणे, कालावीचियमरणे, भवावीचियमरणे, भावावीचियमरणे ।।

१३२ दव्वावीचियमरणे ण भते ! कतिविहे पण्णत्ते ?
गोयमा ! चउव्विहे पण्णत्ते, त जहा—नेरइयदव्वावीचियमरणे, तिरिक्ख-जोणियदव्वावीचियमरणे, मणुस्सदव्वावीचियमरणे, देवदव्वावीचियमरणे ।।

१३३ से केणट्ठेण भते ! एव वुच्चइ—नेरइयदव्वावीचियमरणे-नेरइयदव्वावीचिय-मरणे ?
गोयमा ! जण्ण नेरइया नेरइए दव्वे वट्टमाणा जाइ दव्वाइ नेरइयाउयत्ताए गहियाइ बद्धाइ पुट्ठाइ कडाइ पट्ठवियाइ 'निविट्ठाइ अभिनिविट्ठाइ'[4] अभिसम-ण्णागयाइ भवति ताइ दव्वाइ आवीचिमणुसमय[5] निरतर मरति त्ति कट्टु । से तेणट्ठेण गोयमा ! एव वुच्चइ—नेरइयदव्वावीचियमरणे, एवं जाव देवदव्वा-वीचियमरणे ।।

१३४ खेत्तावीचियमरणे ण भते ! कतिविहे पण्णत्ते ?
गोयमा ! चउव्विहे पण्णत्ते, त जहा—नेरइयखेत्तावीचियमरणे जाव देवखेत्ता-वीचियमरणे ।।

१३५ से केणट्ठेणं भते ! एव वुच्चइ—नेरइयखेत्तावीचियमरणे-नेरइयखेत्तावीचिय-मरणे ?
गोयमा ! जण्ण नेरइया नेरइयखेत्ते वट्टमाणा जाइ दव्वाइ नेरइयाउयत्ताए गहियाइ एव जहेव दव्वावीचियमरणे तहेव खेत्तावीचियमरणे वि । एव जाव भावावीचियमरणे ।।

१३६ ओहिमरणे ण भते ! कतिविहे पण्णत्ते ?
गोयमा ! पचविहे पण्णत्ते, त जहा—दव्वोहिमरणे, खेत्तोहिमरणे,[6] •कालोहि-मरणे, भवोहिमरणे°, भावोहिमरणे ।।

---

१. आवीयिय° (व) ।
२. अवहि° (व, म) ।
३. आदितिय° (अ, स), आदियतिय; (क, ख, ब) ।
४. × (ब) ।
५. आवीचियम° (क, स) ।
६. स० पा०—खेत्तोहिमरणे जाव भवो° ।

१३७ दव्वोहिमरणे ण भते कतिविहे पण्णत्ते ?
गोयमा ! चउव्विहे पण्णत्ते, त जहा—नेरइयदव्वोहिमरणे जाव देवदव्वोहि-मरणे ।।

१३८ से केणट्ठेण भते ! एव वुच्चइ—नेरइयदव्वोहिमरणे-नेरइयदव्वोहिमरणे ?
गोयमा ! 'जे ण'[1] नेरइया नेरइयदव्वे वट्टमाणा जाइ दव्वाइ सपय मरति, 'ते ण'[2] नेरइया ताइ दव्वाइ अणागए काले पुणो वि मरिस्सति । से तेणट्ठेण गोयमा ! जाव दव्वोहिमरणे । एव तिरिक्खजोणिय-मणुस्स-देवदव्वोहिमरणे[3] वि । एव एएण गमेण खेत्तोहिमरणे वि, कालोहिमरणे वि, भवोहिमरणे वि, भावोहिमरणे वि ।।

१३९ आतियतियमरणे ण भते !—पुच्छा ।
गोयमा ! पचविहे पण्णत्ते, त जहा—दव्वातियतियमरणे, खेत्तातियतियमरणे जाव भावातियतियमरणे ।।

१४०. दव्वातियतियमरणे ण भते ! कतिविहे पण्णत्ते ?
गोयमा ! चउव्विहे पण्णत्ते, त जहा—नेरइयदव्वातियतियमरणे जाव देवदव्वा-तियतियमरणे ।।।

१४१. से केणट्ठेण भते ! एव वुच्चइ—नेरइयदव्वातियतियमरणे-नेरइयदव्वातियतिय-मरणे ?
गोयमा ! 'जे ण'[4] नेरइया नेरइयदव्वे वट्टमाणा जाइ दव्वाइ सपय मरति, 'ते ण'[5] नेरइया ताइ दव्वाइ अणागए काले नो पुणो वि मरिस्सति । से तेणट्ठेण जाव नेरइयदव्वातियतियमरणे । एव तिरिक्खजोणिय-मणुस्स-देवदव्वातिय-तियमरणे । एव खेत्तातियतियमरणे वि, एव जाव भावातियतियमरणे वि ।।

१४२. बालमरणेण भते ! कतिविहे पण्णत्ते !
गोयमा ! दुवालसविहे पण्णत्ते, त जहा—१ वलयमरणे [6]°२ वसट्टमरणे ३ अतोसल्लमरणे ४ तब्भवमरणे ५ गिरिपडणे ६ तरुपडणे ७ जलप्पवेसे ८ जलणप्पवेसे ९ विसभक्खणे १० सत्थोवाडणे ११ वेहाणसे° १२ गद्धपट्ठे ।।

१४३. पडियमरणे ण भते ! कतिविहे पण्णत्ते ?
गोयमा ! दुविहे पण्णत्ते, त जहा—पाओवगमणे य, भत्तपच्चक्खाणे य ।।

१४४. पाओवगमणे[7] ण भते ! कतिविहे पण्णत्ते ?

---

१. ज ण (अ, क, ख, ता, ब), जण्ण (म) ।
२ ज ण (अ, ता, व, स), जे ण (ख), 'त' इति गम्यम् (वृ) ।
३ देवोहिमरणे (अ, क, ख, ता, ब, म) ।
४. ज ण (अ, क, ता, स), जण्ण (म) ।
५ जे ण (अ, क, ख, ता, व, म, स) ।
६ स० पा०—जहा खदए जाव गद्धपट्ठे ।
७ °गमणमरणेण (ता), पाओवगमरणेण(व) ।

गोयमा ! दुविहे पण्णत्ते, तं जहा—नीहारिमे य, अनीहारिमे य। नियमं अप-डिकम्मे ॥

१४५. भत्तपच्चक्खाणे णं भंते ! कतिविहे पण्णत्ते ?
[1]•गोयमा ! दुविहे पण्णत्ते, तं जहा—नीहारिमे य, अनीहारिमे य।° नियमं सपडिकम्मे ॥

१४६. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति[2] ॥

अट्ठमो उद्देसो

कम्मपगडि-पदं

१४७. कति णं भंते ! कम्मपगडीओ पण्णत्ताओ ?
गोयमा ! अट्ठ कम्मपगडीओ पण्णत्ताओ। एवं बंधट्ठिइ-उद्देसो[3] भाणियव्वो निरवसेसो जहा[4] पण्णवणाए[5] ॥

१४८. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति[6] ॥

नवमो उद्देसो

भावियप्प-विउव्वणा-पदं

१४९. रायगिहे जाव[7] एवं वयासी—से जहानामए केइ पुरिसे केयाघडियं गहाय गच्छेज्जा, एवामेव अणगारे वि भावियप्पा केयाघडियाकिच्चहत्थगएणं अप्पाणेणं उड्ढं वेहासं उप्पएज्जा ?
हंता उप्पएज्जा ॥

---

१. सं० पा०—एवं तं चेव नवरं नियमं सपडिकम्मे।
२. भ० ११५१।
३. उद्देसओ (क, ता, ब, म)।
४. प० २४।
५. इह च वाचनान्तरे संग्रहणीगाथास्ति, सा चेयं—
पयडीणं भेयठिई, बंधोवि य इंदियाणुवाएणं।
केरिसयं जहन्नठिइं, बंधइ उक्कोसियं वावि ॥
(वृ)।
६. भ० ११५१।
७. भ० १।४-१०।

१५० अणगारे ण भते ! भावियप्पा केवतियाइ पभू केयाघडियाकिच्चहत्थगयाइ[1] रूवाइ विउव्वित्तए ?
गोयमा ! से जहानामए जुवति जुवाणे हत्थेण हत्थे [2]•गेण्हेज्जा, चक्कस्स वा नाभी अरगाउत्ता सिया, एवामेव अणगारे वि भाविअप्पा वेउव्वियसमुग्घाएण समोहण्णइ जाव[3] पभू ण गोयमा ! अणगारे ण भाविअप्पा केवलकप्प जबुद्दीव दीव बहूहि इत्थिरूवेहि आइण्ण वितिकिण्ण उवत्थड सथड फुड अवगाढावगाढ करेत्तए। एस ण गोयमा ! अणगारस्स भाविअप्पणो अयमेयारूवे विसए, विसयमेत्ते बुइए॰, नो चेव ण सपत्तीए विउव्विसु वा विउव्वति वा विउव्वि-स्सति वा ॥

१५१. से जहानामए केइ पुरिसे हिरण्णपेल गहाय गच्छेज्जा, एवामेव अणगारे वि भावियप्पा हिरण्णपेलहत्थकिच्चगएण[4] अप्पाणेण उड्ढ वेहास उप्पएज्जा ?
सेस त चेव एव सुवण्णपेल, एव रयणपेल, वइरपेल, वत्थपेल[5], आभरणपेल, एव वियलकड[6], सुबकड[7], चम्मकड[8], कवलकड[9], एव अयभार, तबभार, तउय-भार, सोसगभार, हिरण्णभार, सुवण्णभार, वइरभार ॥

१५२ से जहानामए वग्गुलो सिया, दो वि पाए उल्लबिया-उल्लबिया उड्ढपादा अहोसिरा चिट्ठेज्जा, एवामेव अणगारे वि भाविअप्पा वग्गुलीकिच्चगएण अप्पाणेण उड्ढ वेहास उप्पएज्जा ?
एव जण्णोवइयवत्तव्वया भाणियव्वा जाव[10] विउव्विस्सति वा ॥

१५३ से जहानामए जलोया सिया, उदगसि काय उव्विहिया-उव्विहिया गच्छेज्जा, एवामेव अणगारे, सेस जहा वग्गुलीए ॥

१५४ से जहानामए वीयवीयगसउणे[11] सिया, दो वि पाए समतुरगेमाणे-समतुरगेमाणे गच्छेज्जा, एवामेव अणगारे, सेस त चेव ॥

१५५ से जहानामए पक्खिविरालए सिया, रुक्खाओ रुक्ख डेवेमाणे-डेवेमाणे गच्छेज्जा, एवामेव अणगारे, सेस त चेव ॥

---

१. केयाघडियाहत्थ (त्थे) किच्चगयाइ (क, ख, ता, व, म, स)।
२ स० पा०—एव जहा तइयमए पचमुद्देसए जाव नो।
३ भ० ३।४।
४ हिरण्णपेर॰ (ता), हिरण्णपेउ॰ (क्व०)।
५ × (क, व, म)।
६ वियलकिड (क, ख, व, स), विदलकिर (ता)।
७ सुठकड (अ), सुठकिड (ख, व), सुठकिर (ता), सुट्ठिकड (म), ॰किड्ड (स)।
८ ॰किड (क, ख, व), ॰किर (ता), किड्ड (स)।
९ ॰किड (क, ख, व), ॰किर (ता), ॰किड्ड (स)।
१० भ० ३।२०२,२०३।
११ ॰सउणए (ख, ता)।

१५६. से जहानामए जीवजीवगसउणे सिया, दो वि पाए समतुरगेमाणे-समतुरगेमाणे गच्छेज्जा, एवामेव अणगारे, सेस त चेव ॥

१५७. से जहानामए हसे सिया, तीराओ तीर अभिरममाणे-अभिरममाणे गच्छेज्जा, एवामेव अणगारे वि भाविअप्पा हसकिच्चगएण अप्पाणेण, त चेव ॥

१५८. से जहानामए समुद्दवायसए सिया, वीईओ वीइ डेवेमाणे-डेवेमाणे गच्छेज्जा, एवामेव अणगारे, तहेव ॥

१५९ से जहानामए केइ पुरिसे चक्क गहाय गच्छेज्जा, एवामेव अणगारे वि भाविअप्पा चक्कहत्थकिच्चगएण अप्पाणेण, सेसं जहा[1] केयाघडियाए । एव छत्त, एव चम्म[2] ॥

१६० से जहानामए केइ पुरिसे रयण गहाय गच्छेज्जा, एव चेव । एव वइर, वेरुलिय जाव[3] रिट्ठ । एव उप्पलहत्थग, एव पउमहत्थग, कुमुदहत्थग, [4]•नलिणहत्थग, सुभगहत्थग, सुगधियहत्थग, पोडरीयहत्थग, महापोडरीयहत्थग, सयपत्तहत्थग॰, से जहानामए केइ पुरिसे सहस्सपत्तग गहाय गच्छेज्जा, एव चेव ॥

१६१ से जहानामए केइ पुरिसे भिस अवद्दालिय-अवद्दालिय गच्छेज्जा, एवामेव अणगारे वि भिसकिच्चगएण अप्पाणेण, त चेव ॥

१६२. से जहानामए मुणालिया सिया, उदगसि काय उम्मज्जिया-उम्मज्जिया चिट्ठेज्जा, एवामेव, सेस जहा[5] वग्गुलीए ॥

१६३. से जहानामए वणसडे सिया—किण्हे किण्होभासे जाव[6] महामेहनिकुरबभूए[7], पासादीए दरिसणिज्जे अभिरूवे पडिरूवे, एवामेव अणगारे वि भाविअप्पा वणसडकिच्चगएण अप्पाणेण उड्ढ वेहास उप्पएज्जा ? सेस त चेव ॥

१६४. से जहानामए पुक्खरणी सिया—चउक्कोणा, समतीरा, अणुपुव्वसुजायवप्प-गभीरसीयलजला जाव[8] सद्दुन्नइयमहुरसरणादिया पासादीया दरिसणिज्जा अभिरूवा पडिरूवा, एवामेव अणगारे वि भाविअप्पा पोक्खरणीकिच्चगएण अप्पाणेण उड्ढं वेहासं उप्पएज्जा ?
हता उप्पएज्जा ॥

१६५. अणगारे ण भते ! भाविअप्पा केवतियाइं पभू पोक्खरणीकिच्चगयाइ रूवाइ विउव्वित्तए ? सेस त चेव जाव विउव्विस्सति वा ॥

---

१. भ० १३।१४६,१५० ।
२ चमर (म) ।
३. भ० ३।४ ।
४ म० पा०—एव जाव से ।
५. भ० १३।१५२ ।
६ ओ० सू० ४ ।
७. ॰निउयम्वभूए (ख), ॰निकुरुवभूए (ता, व) ।
८. ओ० सू० ६, भ० वृत्ति ।

१६६ से भंते ! किं मायी विउव्वति ? अमायी विउव्वति ?
गोयमा ! मायी विउव्वति, नो अमायी विउव्वति। मायी णं तस्स ठाणस्स अणालोइय[1]•पडिक्कते कालं करेइ, नत्थि तस्स आराहणा। अमायी णं तस्स ठाणस्स आलोइय-पडिक्कते कालं करेइ°, अत्थि तस्स आराहणा ॥

१६७ सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति जाव[2] विहरइ ॥

दसमो उद्देसो

छाउमत्थियसमुग्घाय-पदं

१६८ कति णं भंते ! छाउमत्थियसमुग्घाया पण्णत्ता ?
गोयमा ! छ छाउमत्थिया समुग्घाया पण्णत्ता, तं जहा—वेयणासमुग्घाए, एवं छाउमत्थियसमुग्घाया नेयव्वा, जहा पण्णवणाए जाव[3] आहारगसमुग्घायेत्ति ॥

१६९. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति जाव[4] विहरइ ॥

---

१ सं० पा०—एवं जहा तइयसए चउत्थुद्देसए जाव अत्थि ।
२. भ० १।५१ ।
३ प० ३६ ।
४ भ० १।५१ ।

चोद्दसमं सतं

पढमो उद्देसो

१. चर २ उम्माद ३ सरीरे, ४ पोग्गल ५ अगणी तहा ६. किमाहारे।
७,८ ससिट्ठमतरे[1] खलु, ९. अणगारे १० केवली चेव ॥ १ ॥

लेस्साणुसारि-उववाय-पदं

१. रायगिहे जाव[2] एव वयासी—अणगारे ण भते ! भावियप्पा चरम देवावासं वीतिक्कते, परमं देवावासमसपत्ते, एत्थ ण अतरा काल करेज्जा, तस्स ण भंते ! कहि गती ? कहि उववाए पण्णत्ते ?
गोयमा ! जे से तत्थ परिपस्सओ[3] तल्लेसा देवावासा, तहि तस्स गती, तहि तस्स उववाए पण्णत्ते। से य तत्थ गए विराहेज्जा कम्मलेस्सामेव[4] पडिपडति[5], से य तत्थ गए नो विराहेज्जा, तामेव लेस्स उवसंपज्जित्ताण विहरइ ॥

२. अणगारे ण भते ! भावियप्पा चरम असुरकुमारावास वीतिक्कते, परमं असुर-[6]°कुमारावासमसपत्ते, एत्थ ण अतरा काल करेज्जा, तस्स ण भते ! कहि गती ? कहि उववाए पण्णत्ते ?
गोयमा ! जे से तत्थ परिपस्सओ तल्लेसा असुरकुमारावासा, तहि तस्स गती, तहि तस्स उववाए पण्णत्ते। से य तत्थ गए विराहेज्जा कम्मलेस्सामेव पडि-पडति, से य तत्थ गए नो विराहेज्जा, तामेव लेस्स उवसपज्जित्ताण विहरइ।°
एव जाव थणियकुमारावास, जोइसियावास, एवं वेमाणियावास जाव विहरइ ॥

---

१. ससट्ठ° (अ, क, ख, व, म, स)।
२. भ० १।४-१०।
३. पलियस्सओ (ख), परियस्सतो (व, म)।
४. °मेवा (क, व)।
५. परिपडइ (ता)।
६. स० पा०—एव चेव।

नेरइयादीणं गतिविसय-पदं

३ नेरइयाण भते ! कह सीहा गती ? कह सीहे गतिविसए पण्णत्ते ?
गोयमा ! से जहानामए—केइपुरिसे तरुणे बलव जुगव[1] •जुवाणे अप्पातके थिरग्गहत्थे दढपाणि-पाय-पास-पिट्ठतरोरुपरिणते तलजमलजुयल-परिघनिभ-बाहू चम्मेट्ठग-दुहण-मुट्ठिय-समाहत-निचित-गत्तकाए उरस्सबलसमण्णागए लघण-पवण-जइण-वायाम-समत्थे छेए दक्खे पत्तट्ठे कुसले मेहावी निउणे° निउणसिप्पोवगए आउटिय[2] बाह पसारेज्जा, पसारिय वा बाह आउटेज्जा[3], विक्खिण्ण वा मुट्ठि साहरेज्जा, साहरिय वा मुट्ठि विक्खिरेज्जा, उम्मिसिय[4] वा अच्छि निम्मिसेज्जा, निम्मिसिय वा अच्छि उम्मिसेज्जा, 'भवे एयारूवे'[5] ? नो इणट्ठे समट्ठे । नेरइया ण एगसमइएण[6] वा दुसमइएण वा तिसमइएण वा विग्गहेण उववज्जति । नेरइयाणं गोयमा ! तहा सीहा गती, तहा सीहे गतिविसए पण्णत्ते । एव जाव वेमाणियाणं, नवर—एगिदियाण चउसमइए विग्गहे भाणियव्वे । सेसं त चेव ॥

नेरइयादीणं अणंतरोववन्नगादि-पदं

४ नेरइया ण भते ! किं अणतरोववन्नगा ? परपरोववन्नगा ? अणतर-परपर-अणुववन्नगा ?
गोयमा ! नेरइया अणतरोववन्नगा वि, परपरोववन्नगा वि, अणतर-परपर-अणुववन्नगा वि ॥

५ से केणट्ठेण भते ! एव वुच्चइ[7]—•नेरइया अणतरोववन्नगा वि, परपरोववन्नगा वि°, अणतर-परपर-अणुववन्नगा वि ?
गोयमा ! जे ण नेरइया पढमसमयोववन्नगा ते ण नेरइया अणतरोववन्नगा, जे ण नेरइया अपढमसमयोववन्नगा ते ण नेरइया परपरोववन्नगा, जे ण नेरइया विग्गहगइसमावन्नगा ते ण नेरइया अणतर-परपर-अणुववन्नगा । से तेणट्ठेण जाव अणतर-परपर-अणुववन्नगा वि । एव निरतर जाव वेमाणिया ॥

६ अणतरोववन्नगा ण भंते ! नेरइया किं नेरइयाउय पकरेति ? तिरिक्ख-मणुस्स-देवाउय पकरेति ?
गोयमा ! नो नेरइयाउय पकरेति जाव नो देवाउय पकरेति ॥

---

१. स० पा०—जुगव जाव निउण° ।
२ आउट्टिय (अ, ख, स), आउदिय (क), आदिउट्टिय (ता) ।
३ आउट्टेज्जा (ता) ।
४. अणिमिसिय (अ, क, ता, व, म, स); उण्णिसिय (ख) ।
५ भवे एयारूवे सिया (अ), भवेयारूवे (क, ख, ता, व, म) ।
६ °समएण (अ) ।
७ स० पा०—वुच्चइ जाव अणतर ।

७. परपरोववन्नगा ण भते ! नेरइया किं नेरइयाउयं पकरेंति जाव देवाउयं पकरेति ?
गोयमा ! नो नेरइयाउय पकरेति, तिरिक्खजोणियाउय पकरेति, मणुस्साउयं पि पकरेति, नो देवाउय पकरेति ॥

८ अणतर-परपर-अणुववन्नगा ण भते ! नेरइया किं नेरइयाउय पकरेति—पुच्छा ।
गोयमा ! नो नेरइयाउय पकरेति जाव नो देवाउय पकरेति । एव जाव वेमाणिया, नवर—पचिंदियतिरिक्खजोणिया मणुस्सा य परपरोववन्नगा चत्तारि वि आउयाइ पकरेति । सेस त चेव ॥

९ नेरइया ण भते ! किं अणतरनिग्गया ? परपरनिग्गया ? अणतर-परपर-अनिग्गया ?
गोयमा ! नेरइया अणतरनिग्गया वि, 'परपरनिग्गया वि'[1], अणतर-परंपर-अनिग्गया वि ॥

१०. से केणट्ठेण जाव अणतर-परपर-अनिग्गया वि ?
गोयमा ! जे ण नेरइया पढमसमयनिग्गया ते ण नेरइया अणतरनिग्गया, जे ण नेरइया अपढमसमयनिग्गया ते ण नेरइया परपरनिग्गया, जे ण नेरइया विग्गहगतिसमावन्नगा ते ण नेरइया अणंतर-परंपर-अनिग्गया । से तेणट्ठेणं गोयमा ! जाव अणतर-परपर-अनिग्गया वि । एव जाव वेमाणिया ॥

११. अणतरनिग्गया ण भते ! नेरइया किं नेरइयाउयं पकरेंति जाव देवाउय पकरेति ?
गोयमा ! नो नेरइयाउय पकरेति जाव नो देवाउय पकरेति ॥

१२ परपरनिग्गया ण भते ! नेरइया कि नेरइयाउय पकरेति—पुच्छा ।
गोयमा ! नेरइयाउय पि पकरेति जाव देवाउय पि पकरेति ॥

१३ अणतर-परपर-अनिग्गया ण भते ! नेरइया—पुच्छा ।
गोयमा ! नो नेरइयाउय पकरेति जाव नो देवाउय पकरेति । निरवसेस जाव वेमाणिया ॥

१४. नेरइया ण भते ! किं अणतरखेदोववन्नगा[2] ? परपरखेदोववन्नगा ? अणतर-परपर-खेदाणुववन्नगा ?
गोयमा ! नेरइया अणतरखेदोववन्नगा वि, परपरखेदोववन्नगा वि, अणतर-

---

१. जाव (अ, क, ख, ता, व, म, स) ।

२. °खेत्तोववन्नगा (क, व), खेतोववन्नगा (ता) ।

परपर-खेदाणुववन्नगा वि। एव एएण अभिलावेण ते[1] चेव चत्तारि दडगा भाणियव्वा ॥

१५. सेव भते ! सेव भते ! त्ति जाव[2] विहरइ ॥

बीओ उद्देसो

उम्माद-पदं

१६. कतिविहे ण भते ! उम्मादे पण्णत्ते ?
गोयमा ! दुविहे उम्मादे पण्णत्ते, त जहा—जक्खाएसे[3] य, मोहणिज्जस्स य[4] कम्मस्स उदएण। तत्थ ण जे से जक्खाएसे से ण सुहवेयणतराए चेव सुहविमोयणतराए चेव। तत्थ ण जे से मोहणिज्जस्स कम्मस्स उदएण से ण दुहवेयणतराए चेव दुहविमोयणतराए चेव ॥

१७ नेरइयाण भते ! कतिविहे उम्मादे पण्णत्ते ?
गोयमा ! दुविहे उम्मादे पण्णत्ते, त जहा—जक्खाएसे य, मोहणिज्जस्स य कम्मस्स उदएण ॥

१८ से केणट्ठेणं भते ! एव वुच्चइ—नेरइयाण दुविहे उम्मादे पण्णत्ते, त जहा—जक्खाएसे य, मोहणिज्जस्स 'य कम्मस्स'[5] उदएण ?
गोयमा ! देवे वा से असुभे पोग्गले पक्खिवेज्जा, से ण तेसि असुभाण पोग्गलाण पक्खिवणयाए जक्खाएस उम्माद पाउणेज्जा, मोहणिज्जस्स वा कम्मस्स उदएण मोहणिज्ज उम्माय पाउणेज्जा। से तेणट्ठेण[6] •गोयमा ! एव वुच्चइ—नेरइयाण दुविहे उम्मादे पण्णत्ते, त जहा—जक्खाएसे य, मोहणिज्जस्स य कम्मस्स° उदएण[7] ॥

१९ असुरकुमाराण भते ! कतिविहे उम्मादे पण्णत्ते ?
[8]•गोयमा ! दुविहे उम्मादे पण्णत्ते, त जहा—जक्खाएसे य, मोहणिज्जस्स कम्मस्स य उदएण ॥

२० से केणट्ठेण भते ! एव वुच्चइ—असुरकुमाराण दुविहे उम्मादे पण्णत्ते, त जहा—जक्खाएसे य, मोहणिज्जस्स य कम्मस्स उदएण ?

---

१ त (व)।
२ भ० १।५१।
३ जक्खादेसे (ता), जक्खायेसे (व), जक्खावेसे (क्व°)।
४ व (ता), वा (स)।
५ जाव (अ, क, ख, ता, ब, म, स)।
६ स० पा०—तेणट्ठेण जाव उदएण।
७ उम्मादे (अ)।
८. स० पा०—एव जहेव नेरइयाण नवर देवे।

गोयमा ! ॰ देवे वा से महिड्ढियतराए असुभे पोग्गले पक्खिवेज्जा, से णं तेसिं असुभाण पोग्गलाण पक्खिवणयाए जक्खाएस उम्माद पाउणेज्जा, मोहणिज्जस्स वा [१]॰कम्मस्स उदएण मोहणिज्ज उम्माय पाउणिज्जा॰ । से तेणट्ठेणं जाव उदएण । एव जाव थणियकुमाराण । पुढविक्काइयाण जाव मणुस्साण —एएसि जहा नेरइयाण, वाणमतर-जोइस-वेमाणियाण जहा असुरकुमाराण ।।

वुट्ठिकायकरण-पदं

२१ अत्थि ण भते ! पज्जण्णे[२] कालवासी वुट्ठिकाय पकरेति[३] ?
हता अत्थि ।।

२२ जाहे ण भते ! सक्के देविंदे देवराया वुट्ठिकाय काउकामे भवइ से कहमियाणिं पकरेति ?
गोयमा ! ताहे चेव ण से सक्के देविंदे देवराया अब्भितरपरिसए देवे सद्दावेइ । तए ण ते अब्भितरपरिसगा देवा सद्दाविया समाणा मज्झिमपरिसए देवे सद्दावेति । तए ण ते मज्झिमपरिसगा[४] देवा सद्दाविया समाणा बाहिरपरिसए देवे सद्दावेति । तए ण ते बाहिरपरिसगा देवा सद्दाविया समाणा बाहिरबाहिरगे देवे सद्दावेति । तए ण ते बाहिरबाहिरगा देवा सद्दाविया समाणा आभिओगिए देवे सद्दावेति । तए ण ते [५]॰आभिओगिया देवा॰ सद्दाविया समाणा वुट्ठिकाइए देवे सद्दावेति । तए ण ते वुट्ठिकाइया देवा सद्दाविया समाणा वुट्ठिकाय पकरेति । एव खलु गोयमा ! सक्के देविंदे देवराया वुट्ठिकाय पकरेति ।।

२३ अत्थि ण भते ! असुरकुमारा वि देवा वुट्ठिकाय पकरेति ?
हता अत्थि ।।

२४ किंपत्तिय ण भते ! असुरकुमारा देवा वुट्ठिकाय पकरेति ?
गोयमा ! जे इमे अरहता भगवतो—एएसि ण जम्मणमहिमासु वा निक्खमण-महिमासु वा नाणुप्पायमहिमासु वा परिनिव्वाणमहिमासु वा, एव खलु गोयमा ! असुरकुमारा देवा वुट्ठिकाय पकरेति । एव नागकुमारा वि, एव जाव थणियकुमारा । वाणमतर-जोइसिय-वेमाणिया एव चेव ।।

तमुक्कायकरण-पदं

२५ जाहे ण भते ! ईसाणे देविंदे देवराया तमुक्काय काउकामे भवति से कह-मियाणिं पकरेति ?

---

१ स॰ पा॰—सेस त चेव ।
२ पज्जुण्णे (क, ता, म) ।
३. इह स्थाने शक्रोपि त प्रकरोतीति दृश्यम् (वृ)।
४ ॰परिसोववण्णगा (अ, ख, ब) ।
५. स॰ पा॰—ते जाव सद्दाविया ।

गोयमा! ताहे चेव ण से ईसाणे देविंदे देवराया अब्भितरपरिसए देवे सद्दावेति। तए ण ते अब्भितरपरिसगा देवा सद्दाविया समाणा [1]मज्झिमपरिसए देवे सद्दावेति। तए ण ते मज्झिमपरिसगा देवा सद्दाविया समाणा बाहिरपरिसए देवे सद्दावेति। तए ण ते बाहिरपरिसगा देवा सद्दाविया समाणा बाहिरबाहिरगे देवे सद्दावेति। तए ण ते बाहिरबाहिरगा देवा सद्दाविया समाणा आभिओगिए देवे सद्दावेति°। तए ण ते आभिओगिया देवा सद्दाविया समाणा तमुक्काइए देवे सद्दावेति। तए ण ते तमुक्काइया देवा सद्दाविया समाणा तमुक्काय पकरेति। एव खलु गोयमा! ईसाणे देविंदे देवराया तमुक्काय पकरेति॥

२६ अत्थि ण भते! असुरकुमारा वि देवा तमुक्काय पकरेति?
हता अत्थि॥

२७ किंपत्तिय ण भते! असुरकुमारा देवा तमुक्काय पकरेति?
गोयमा! किड्डा-रतिपत्तिय वा पडिणीयविमोहणट्ठयाए वा गुत्तीसारक्खणहेउ वा अप्पणो वा सरीरपच्छायणट्ठयाए, एव खलु गोयमा! असुरकुमारा वि देवा तमुक्काय पकरेति। एव जाव[2] वेमाणिया॥

२८ सेव भते! सेव भते! त्ति जाव[3] विहरइ॥

तइओ उद्देसो

विणयविहि-पदं

२९ [4]देवे ण भते! महाकाए महासरीरे अणगारस्स भावियप्पणो मज्झमज्झेण[5] वीइवएज्जा?
गोयमा! अत्थेगतिए वीइवएज्जा, अत्थेगतिए नो वीइवएज्जा॥

३० से केणट्ठेण भते! एव वुच्चइ—अत्थेगतिए वीइवएज्जा, अत्थेगतिए नो वीइवएज्जा?
गोयमा! दुविहा देवा पण्णत्ता, त जहा—मायीमिच्छादिट्ठीउववन्नगा य,

---

१. स० पा०—एव जहेव सक्कस्स जाव तए।
२ भ० १४।२३।
३. भ० १।५१।
४. उद्देशकस्य प्रारम्भे क्वचिदिय द्वारगाथा दृश्यते—
महक्काए, -सक्कारे,
सत्थेण वीईवयति देवा उ।
वास चेव य ठाणा,
नेरइयाण तु परिणामे॥
५. मज्झेण मज्झेण (अ, क, ख, ता, व)।

अमायीसम्मदिट्ठीउववन्नगा य। तत्थ णं जे से मायीमिच्छदिट्ठीउववन्नए[1] देवे से ण अणगार भावियप्पाण पासइ, पासित्ता नो वदइ, नो नमसइ, नो सक्कारेइ, नो सम्माणेइ, नो कल्लाण मगल देवय चेइय[2] पज्जुवासइ। से ण अणगारस्स भावियप्पणो मज्झमज्झेण वीइवएज्जा। तत्थ ण जे से अमायीसम्मद्दिट्ठी-उववन्नए देवे से ण अणगार भावियप्पाणं पासइ, पासित्ता वदइ नमसइ[3] •सक्कारेइ सम्माणेइ कल्लाण मगल देवय चेइय° पज्जुवासइ। से ण अणगारस्स भावियप्पणो मज्झमज्झेण नो वीइवएज्जा। से तेणट्ठेण गोयमा! एव वुच्चइ[4]—•अत्थेगतिए वीइवएज्जा, अत्थेगतिए° नो वीइवएज्जा॥

३१ असुरकुमारे ण भते! महाकाए महासरीरे अणगारस्स भावियप्पणो मज्झ-मज्झेण वीइवएज्जा? एव चेव। एव देवदडग्रो भाणियव्वो जाव[5] वेमाणिए॥

३२. अत्थि ण भते! नेरइयाण सक्कारे इ वा? सम्माणे इ वा? किइकम्मे इ वा? अब्भुट्ठाणे इ वा? अजलिपग्गहे इ वा? आसणाभिग्गहे इ वा? आस-णाणुप्पदाणे इ वा? एतस्स[6] पच्चुग्गच्छणया[7]? ठियस्स पज्जुवासणया? गच्छतस्स पडिससाहणया?

नो इणट्ठे समट्ठे॥

३३. अत्थि ण भते! असुरकुमाराण सक्कारे इ वा? सम्माणे इ वा जाव गच्छतस्स पडिससाहणया वा?

हता अत्थि। एव जाव थणियकुमाराण। पुढविकाइयाण जाव चउरिंदियाण—एएसिं[8] जहा नेरइयाण॥

३४ अत्थि ण भते! पंचिंदियतिरिक्खजोणियाण सक्कारे इ वा जाव गच्छतस्स पडिससाहणया वा?

हंता अत्थि। नो चेव ण आसणाभिग्गहे इ वा, आसणाणुप्पयाणे इ वा॥

३५ [9]•अत्थि ण भते! मणुस्साण सक्कारे इ वा? सम्माणे इ वा? किइकम्मे इ वा? अब्भुट्ठाणे इ वा? अजलिपग्गहे इ वा? आसणाभिग्गहे इ वा? आस-णाणुप्पदाणे इ वा? एतस्स पच्चुग्गच्छणया? ठियस्स पज्जुवासणया? गच्छ-तस्स पडिससाहणया?

हता अत्थि।° वाणमतर-जोइस-वेमाणियाण जहा असुरकुमाराण॥

---

१. °मिच्छद्दिट्ठी° (अ, क, ख, व, म, स)।
२. जाव (अ, क, ख, ता, व, म, स)।
३. स० पा०—नमंसइ जाव पज्जुवासइ।
४. स० पा०—वुच्चइ जाव नो।
५. भ० १४।२३।
६. इतस्स (अ)।
७. पच्चप्पत्यणया (अ)।
८. एर्सि (क, ख, ता, व, म)।
९. स० पा०—मणुस्साण जाव वेमाणियाण।

३६ अप्पिड्ढिए[1] ण भते ! देवे महिड्ढियस्स देवस्स मज्झमज्झेण वीइवएज्जा ?
नो इणट्ठे समट्ठे ॥

३७ समिड्ढिए[2] ण भते ! देवे समिड्ढियस्स देवस्स मज्झमज्झेण वीइवएज्जा ?
नो इणट्ठे समट्ठे, पमत्त पुण वीइवएज्जा ॥

३८ से ण भते ! किं सत्थेण अक्कमित्ता पभू ? अणक्कमित्ता पभू ?
गोयमा ! अक्कमित्ता पभू, नो अणक्कमित्ता पभू ॥

३९. से ण भते ! किं पुव्विं सत्थेण अक्कमित्ता पच्छा वीइवएज्जा ? पुव्विं वीइवइत्ता पच्छा सत्थेण अक्कमेज्जा ?
गोयमा ! पुव्विं सत्थेण अक्कमित्ता पच्छा वीइवएज्जा, नो पुव्विं वीइवइत्ता पच्छा सत्थेण अक्कमिज्जा । एव एएण अभिलावेण जहा दसमसए आइड्ढी-उद्देसए[3] तहेव निरवसेस चत्तारि दडगा भाणियव्वा जाव[4] महिड्ढिया वेमाणिणी अप्पिड्ढियाए वेमाणिणीए ॥

४०. रयणप्पभपुढविनेरइया ण भते ! केरिसय पोग्गलपरिणाम पच्चणुब्भवमाणा विहरति ?
गोयमा ! अणिट्ठ[5] •अकत अप्पिय असुभ अमणुण्ण° अमणाम । एव जाव अहेसत्तमापुढविनेरइया ॥

४१ [6]•रयणप्पभपुढविनेरइया ण भते ! केरिसय वेदनापरिणामं पच्चणुब्भवमाणा विहरति ?
गोयमा ! अणिट्ठ जाव अमणाम ।° एव जहा जीवाभिगमे बितिए नेरइयउ-द्देसए जाव[7]—

४२ अहेसत्तमापुढविनेरइया ण भते ! केरिसय परिग्गहसण्णापरिणाम पच्चणुब्भ-वमाणा विहरति ?
गोयमा ! अणिट्ठ जाव अमणाम ॥

४३ सेव भते ! सेव भते ! त्ति[8] ॥

---

१. अप्पिड्ढीए (अ, क, ता, व, म, स) ।
२ समिड्ढीए (अ, क, व, म), समड्ढीए (ता, स) ।
३ आतिड्ढीयउद्देसए (ता, ब, म) ।
४. भ० १०।२८-३८ ।
५ स० पा०—अणिट्ठ जाव अमणाम ।
६ स० पा०—एव वेदणापरिणाम ।
७ जी० ३ ।
८. भ० १।५१ ।

चउत्थो उद्देसो

पोग्गल-जीव-परिणाम-पदं

४४ [1]एस ण भंते ! पोग्गले तीतमणत सासयं समय लुक्खी ? समयं अलुक्खी ? समय लुक्खी वा अलुक्खी वा ? पुव्वि च ण करणेणं अणेगवण्णं अणेगरूव परिणाम परिणमइ ? अहे से परिणामे निज्जिण्णे भवइ, तओ पच्छा एगवण्णे एगरूवे सिया ?
हता गोयमा ! एस ण पोग्गले तीतमणत सासय समय त चेव जाव एगरूवे सिया ।।

४५ एस ण भते ! पोग्गले पडुप्पन्न सासय समय लुक्खी ? एव चेव ।।

४६ [2]•एस ण भते ! पोग्गले अणागयमणंत सासय समय लुक्खी ? एव चेव° ।।

४७. एस ण भते ! खधे तीतमणंत सासय समय लुक्खी ? एव चेव खधे वि जहा पोग्गले ।।

४८. एस ण भते ! जीवे तीतमणत सासय समय दुक्खी ? समय अदुक्खी ? समय दुक्खी वा अदुक्खी वा ? पुव्वि च ण करणेणं अणेगभाव अणेगभूयं परिणामं परिणमइ ? अहे से वेयणिज्जे निजिण्णे भवइ, तओ पच्छा एगभावे एगभूए सिया ?
हता गोयमा ! एस ण जीवे तीतमणत सासय समयं जाव एगभूए सिया । एवं पडुप्पन्नं सासयं समयं, एवं अणागयमणत सासय समयं ।।

४९. परमाणुपोग्गले ण भते ! किं सासए ? असासए ?
गोयमा ! सिय सासए, सिय असासए ।।

५०. से केणट्ठेण भते ! एव वुच्चइ—सिय सासए, सिय असासए ?
गोयमा ! दव्वट्ठयाए सासए, वण्णपज्जवेहिं[3] •गवपज्जवेहिं रसपज्जवेहि° फासपज्जवेहिं असासए । से तेणट्ठेण[4] •गोयमा ! एव वुच्चइ°—सिय सासए, सिय असासए ।।

५१. परमाणुपोग्गले ण भते ! किं चरिमे ? अचरिमे ?
गोयमा ! दव्वादेसेणं नो चरिमे, अचरिमे । खेत्तादेसेणं सिय चरिमे, सिय अचरिमे । कालादेसेण सिय चरिमे, सिय अचरिमे । भावादेसेणं सिय चरिमे, सिय अचरिमे ।।

---

१. इह पुनरुद्देशकार्थसग्रहगाथा क्वचिद् दृश्यते, सा चेय—
१. पोग्गल २ खधे ३. जीवे, ४. परमाणू ५. सासए य चरमे य । ६. दुविहे खलु परिणामे, अज्जीवाणं च जीवाणं ।।

२. सं० पा०—एव अणागयमणंत पि ।

३. स० पा०—वण्णपज्जवेहिं जाव फ़ास° ।

४. स० पा०—तेणट्ठेण जाव सिय ।

५२. कतिविहे ण भते ! परिणामे पण्णत्ते ?
गोयमा ! दुविहे परिणामे पण्णत्ते, त जहा—जीवपरिणामे य, अजीवपरिणामे य। एव परिणामपय[1] निरवसेस भाणियव्व ॥
५३ सेव भंते ! सेव भते ! त्ति जाव[2] विहरइ ॥

पंचमो उद्देसो

अगणिकायस्स अतिक्कमण-पदं

५४ [3]नेरइए ण भते ! अगणिकायस्स मज्झमज्झेणं[4] वीइवएज्जा ?
गोयमा ! अत्थेगतिए वीइवएज्जा, अत्थेगतिए नो वीइवएज्जा ॥
५५ से केणट्ठेण भते ! एव वुच्चइ—अत्थेगतिए वीइवएज्जा, अत्थेगतिए नो वीइवएज्जा ?
गोयमा ! नेरइया दुविहा पण्णत्ता, त जहा—विग्गहगतिसमावन्नगा य, अविग्गहगतिसमावन्नगा य। तत्थ ण जे से विग्गहगतिसमावन्नए नेरइए से ण अगणिकायस्स मज्झमज्झेण वीइवएज्जा।
से ण तत्थ झियाएज्जा ?
नो इणट्ठे समट्ठे, नो खलु तत्थ सत्थं कमइ। तत्थ ण जे से अविग्गहगतिसमावन्नए नेरइए से ण अगणिकायस्स मज्झमज्झेण नो वीइवएज्जा। से तेणट्ठेण जाव नो वीइवएज्जा ॥
५६. असुरकुमारे ण भते ! अगणिकायस्स [5]°मज्झमज्झेण वीइवएज्जा ? °
गोयमा ! अत्थेगतिए वीइवएज्जा, अत्थेगतिए नो वीइवएज्जा ॥
५७. से केणट्ठेण जाव नो वीइवएज्जा ?
गोयमा ! असुरकुमारा दुविहा पण्णत्ता, त जहा—विग्गहगतिसमावन्नगा य, अविग्गहगतिसमावन्नगा य। तत्थ ण जे से विग्गहगतिसमावन्नए असुरकुमारे से ण—एव जहेव नेरइए जाव कमइ। तत्थ णं जे से अविग्गहगतिसमावन्नए

---

१. प० १३।
२. भ० १।५१।
३. इह च क्वचिदुद्देशकार्थसग्रहगाथा दृश्यते, सा चेय—
नेरइय अगणिमज्झे,
दस ठाणा तिरिय पोग्गले देवे।
पव्वयभित्ती उल्लघणा,
य पल्लघणा चेव ॥
४. मज्झेण मज्झेण (अ, क, ख, ता, व)।
५. स० पा०—पुच्छा।

असुरकुमारे से ण अत्थेगतिए अगणिकायस्स मज्भमज्भेण वीइवएज्जा, अत्थेगतिए नो वीइवएज्जा ।
जे ण वीइवएज्जा से ण तत्थ भियाएज्जा ?
नो इणट्ठे समट्ठे, नो खलु तत्थ सत्थ कमइ । से तेणट्ठेण । एव जाव थणियकुमारा । एगिंदिया जहा नेरइया ।।

५८. वेइदिया ण भते ! अगणिकायस्स मज्भमज्भेण वीइवएज्जा ?
जहा असुरकुमारे तहा वेइदिएवि, नवर—
जे ण वीइवएज्जा से ण तत्थ भियाएज्जा ?
हता भियाएज्जा । सेस त चेव । एव जाव चउरिदिए ।।

५९ पचिंदियतिरिक्खजोणिए ण भते ! अगणिकायस्स [1]•मज्भमज्भेण वीइवएज्जा° ?
गोयमा ! अत्थेगतिए वीइवएज्जा, अत्थेगतिए नो वीइवएज्जा ।।

६० से केणट्ठेण ?
गोयमा ! पचिंदियतिरिक्खजोणिया दुविहा पण्णत्ता, त जहा—विग्गहगतिसमावन्नगा य, अविग्गहगतिसमावन्नगा य । विग्गहगतिसमावन्नए जहेव नेरइए जाव नो खलु तत्थ सत्थ कमइ । अविग्गहगतिसमावन्नगा पचिंदियतिरिक्खजोणिया दुविहा पण्णत्ता, त जहा—इड्ढिप्पत्ता य, अणिड्ढिप्पत्ता य । तत्थ ण जे से इड्ढिप्पत्ते पचिंदियतिरिक्खजोणिए से ण अत्थेगतिए अगणिकायस्स मज्भमज्भेण वीइवएज्जा, अत्थेगतिए नो वीइवएज्जा ।
जे ण वीइवएज्जा से ण तत्थ भियाएज्जा ?
नो इणट्ठे समट्ठे, नो खलु तत्थ सत्थ कमइ । तत्थ ण जे से अणिड्ढिप्पत्ते पचिंदियतिरिक्खजोणिए से ण अत्थेगतिए अगणिकायस्स मज्भमज्भेण वीइवएज्जा, अत्थेगतिए नो वीइवएज्जा ।
जे ण वीइवएज्जा से ण तत्थ भियाएज्जा ?
हता भियाएज्जा । से तेणट्ठेण जाव नो वीइवएज्जा । एव मणुस्से वि । वाणमतर-जोइसिय-वेमाणिए जहा असुरकुमारे ।।

पच्चणुब्भव-पदं

६१. नेरइया दस ठाणाइ पच्चणुब्भवमाणा विहरति, त जहा—अणिट्ठा सद्दा, अणिट्ठा रूवा, अणिट्ठा गधा, अणिट्ठा रसा, अणिट्ठा फासा, अणिट्ठा गती, अणिट्ठा ठिती, अणिट्ठे लावण्णे[2], अणिट्ठे जसे कित्ती, अणिट्ठे उट्ठाण-कम्म[3]-बल-वीरिय-पुरिसक्कार-परक्कमे ।।

---

१ स० पा०—पुच्छा ।
२. लायण्णे (ता) ।
३ कम्मए (ता) ।

६२ असुरकुमारा दस ठाणाइ पच्चणुब्भवमाणा विहरति, त जहा—इट्ठा सद्दा, इट्ठा रूवा जाव इट्ठे उट्ठाण-कम्म-बल-वीरिय-पुरिसक्कार-परक्कमे। एव जाव थणियकुमारा ॥

६३ पुढविक्काइया छट्ठाणाइ पच्चणुब्भवमाणा विहरति, त जहा—इट्ठाणिट्ठा फासा, इट्ठाणिट्ठा गती, एव जाव पुरिसक्कार-परक्कमे। एव जाव वणस्सइकाइया ॥

६४ बेइदिया[1] सत्तट्ठाणाइ पच्चणुब्भवमाणा विहरति, त जहा—इट्ठाणिट्ठा रसा, सेस जहा एगिदियाण ॥

६५ तेइदिया अट्ठट्ठाणाइ पच्चणुब्भवमाणा विहरति, त जहा—इट्ठाणिट्ठा गधा, सेस जहा बेइदियाण ॥

६६ चउरिदिया नवट्ठाणाइ पच्चणुब्भवमाणा विहरति, त जहा—इट्ठाणिट्ठा रूवा, सेसं जहा तेइदियाण ॥

६७ पचिदियतिरिक्खजोणिया दस ठाणाइ पच्चणुब्भवमाणा विहरति, त जहा—इट्ठाणिट्ठा सद्दा जाव पुरिसक्कार-परक्कमे। एव मणुस्सा वि, वाणमतर-जोइसिय-वेमाणिया जहा असुरकुमारा ॥

देवस्स उल्लघण-पल्लंघण-पदं

६८. देवे ण भते! महिड्ढीए जाव[2] महेसक्खे[3] बाहिरए पोग्गले अपरियाइत्ता पभू तिरियपव्वय वा तिरियभित्ति वा उल्लघेत्तए वा पल्लघेत्तए वा?
[4]नो इणट्ठे समट्ठे ॥

६९. देवे ण भते! महिड्ढीए जाव महेसक्खे बाहिरए पोग्गले परियाइत्ता पभू तिरिय °पव्वय वा तिरियभित्ति वा उल्लघेत्तए वा° पल्लघेत्तए वा?
हता पभू ॥

७० सेव भते! सेव भते! त्ति[6] ॥

---

१ बेंदिया (ब)।
२ भ० १।३३६।
३. महेसक्के (ब)।
४. णो नो (अ, ख)।
५ स० पा०—तिरिय जाव पल्लघेत्तए।
६ भ० १।५१।

छट्ठो उद्देसो

नेरइयादीणं किमाहारादि-पद

७१. रायगिहे जाव[1] एव वयासि—नेरइया ण भते ! किमाहारा, किंपरिणामा, किंजोणिया[2], किंठितीया पण्णत्ता ?
गोयमा ! नेरइया ण पोग्गलाहारा, पोग्गलपरिणामा, पोग्गलजोणिया, पोग्गल-ट्ठितीया, कम्मोवगा, कम्मनियाणा, कम्मट्ठितीया, कम्मुणामेव[3] विप्परिया-समेंति । एव जाव वेमाणिया ॥

७२ नेरइया ण भते ! कि वीचीदव्वाइ[4] आहारेंति ? अवीचीदव्वाइं आहारेंति ?
गोयमा ! नेरइया वीचीदव्वाइ पि आहारेंति, अवीचीदव्वाइं पि आहारेंति ॥

७३. से केणट्ठेण भते ! एव वुच्चइ—नेरइया वीची[5]•दव्वाइ पि आहारेंति, अवीची-दव्वाइ पि° आहारेंति ?
गोयमा ! जे ण नेरइया एगपएसूणाइ पि दव्वाइ आहारेंति, ते ण नेरइया वीचीदव्वाइ आहारेंति, जे ण नेरइया पडिपुण्णाइ दव्वाइ आहारेंति, ते ण नेरइया अवीचीदव्वाइ आहारेंति । से तेणट्ठेण गोयमा ! एव वुच्चइ[6]—•नेरइया वीचीदव्वाइ पि आहारेंति, अवीचीदव्वाइं पि° आहारेंति । एव जाव वेमाणिया[7] ॥

देविंदाण भोग-पद

७४. जाहे ण भते ! सक्के देविंदे देवराया दिव्वाइ भोगभोगाइ भुंजिउकामे[8] भवइ से कहमियाणि पकरेति ?
गोयमा ! ताहे चेव ण से सक्के देविंदे देवराया एग महं नेमिपडिरूवग विउव्वइ—एग जोयणसयसहस्स आयामविक्खभेण, तिण्णि जोयणसयसहस्साइ जाव[9] अद्धगुल च किंचिविसेसाहियं परिक्खेवेण । तस्स ण नेमिपडिरूवगस्स[10] उवरिं[11] बहुसमरमणिज्जे भूमिभागे पण्णत्ते जाव[12] मणीण फासो । तस्स ण नेमिपडिरूवगस्स बहुमज्भदेसभागे, एत्थ[13] ण महं एगं पासायवडेंसग विउव्वइ—

---

१. भ० १।४-१० ।
२. किंजोणीया (अ, ब, म) ।
३. कम्मणामेव (व) ।
४. वीचि° (अ, क, ख, व, म, स) ।
५. स० पा०—त चेव जाव आहारेंति ।
६. स० पा०—वुच्चइ जाव आहारेंति ।
७. °णिया आहारेंति (स) ।
८. भोजिउकामे (ख), भुजउकामे (स) ।
९. भ० ६।७५ ।
१०. नेमिरूवस्स (ख, ता, व) ।
११ अवरिं (ख, ता, म), अवरि (ब) ।
१२. राय० सू० २४-३१ ।
१३. तत्थ (अ, क, ता, व, म, स) ।

पच जोयणसयाइ उड्ढ उच्चत्तेण, अड्ढाइज्जाइं जोयणसयाइ विक्खभेण, अब्भुग्गय-मूसिय-पहसियमिव वण्णओ जाव[1] पडिरूव। तस्स ण पासायवडेसगस्स उल्लोए पउमलयाभत्तिचित्ते जाव[2] पडिरूवे। तस्स ण पासायवडेसगस्स अतो वहुसमरमणिज्जे भूमिभागे जाव मणीण फासो, मणिपेढिया अट्ठजोयणिया जहा[3] वेमाणियाण। तीसे ण मणिपेढियाए उवरि मह 'एगे देवसयणिज्जे'[4] विउव्वइ, सयणिज्जवण्णओ जाव[5] पडिरूवे। तत्थ ण से सक्के देविंदे देवराया अट्ठहि अग्गमहिसीहिं सपरिवाराहि, दोहि य अणिएहिं[6]—नट्टाणिएण य गधव्वाणिएण य सद्धि महयाहयनट्ट[7]-°गीय-वाइय-तती-तल-ताल-तुडिय-घणमुइगपडुप्पवाइय-रवेण° दिव्वाइ भोगभोगाइ भुजमाणे विहरइ॥

७५ जाहे ईसाणे देविंदे देवराया दिव्वाइ भोगभोगाइ भुजिउकामे भवइ से कहमियाणि पकरेति ?
जहा सक्के तहा ईसाणे वि निरवसेस। एव सणकुमारे वि, नवर—पासायवडेसओ छ जोयणसयाइ उड्ढ उच्चत्तेण, तिण्णि जोयणसयाइ विक्खभेण, मणिपेढिया तहेव अट्ठजोयणिया। तीसे ण मणिपेढियाए उवरि, एत्थ ण महेग सीहासण विउव्वइ, सपरिवार भाणियव्व[8]। तत्थ ण सणकुमारे देविंदे देवराया वावत्तरीए सामाणियसाहस्सीहि जाव[9] चउहि य बावत्तरीहि आयरक्खदेवसाहस्सीहि य वहूहिं सणकुमारकप्पवासीहि वेमाणिएहि देवेहि य देवीहि य सद्धि सपरिवुडे महयाहयनट्ट जाव[10] विहरइ। एव जहा सणकुमारे तहा जाव पाणओ अच्चुओ, नवर—जो जस्स परिवारो सो तस्स भाणियव्वो[11]। पासायउच्चत्त—ज सएसु-सएसु कप्पेसु विमाणाण उच्चत्त, अद्धद्ध वित्थारो जाव[12] अच्चुयस्स नवजोयणसयाइ उड्ढ उच्चत्तेण, अद्धपचमाइ जोयणसयाइ विक्खभेण। 'तत्थ ण'[13] अच्चुए देविंदे देवराया दसहिं सामाणियसाहस्सीहिं जाव विहरइ, सेस त चेव॥

७६ सेव भते! सेव भते! त्ति[14]॥

———

१ राय० सू० १३७।
२. राय० सू० ३४।
३. राय० सू० ३६।
४ विभक्तिव्यत्ययेन 'एग देवसयणिज्जं'।
५ राय० सू० २४५।
६. अणिएहिं त (अ)।
७. स० पा०—महयाहयनट्ट जाव दिव्वाइ।
८. राय० सू० ३७-४४।
९ प० २।
१० भ० १४।७४।
११ प० २।
१२ भ० ११।९४।
१३. एत्थ ण गो (अ)।
१४. भ० १।५१।

सत्तमो उद्देसो

गोयमस्स आसासण-पदं

७७ रायगिहे जाव[1] परिसा पडिगया। गोयमादी ! समणे भगवं महावीरे भगवं गोयमं आमंतेत्ता एवं वयासी - चिरं संसिट्ठोसि मे गोयमा ! चिरसंथुओसि मे गोयमा ! चिरपरिचिओसि मे गोयमा ! चिरजुसिओसि[2] मे गोयमा ! चिराणुगओसि मे गोयमा ! चिराणुवत्तीसि मे गोयमा ! अणंतरं देवलोए अणंतरं माणुस्सए भवे, किं परं मरणा कायस्स भेदा इओ चुता दो वि तुल्ला एगट्ठा अविसेसमणाणत्ता भविस्सामो ॥

७८ जहा णं भंते ! वयं एयमट्ठं जाणामो-पासामो, तहा णं अणुत्तरोववाइया वि देवा एयमट्ठं जाणंति-पासंति ?
हंता गोयमा ! जहा णं वयं एयमट्ठं जाणामो-पासामो, तहा णं अणुत्तरोववाइया वि देवा एयमट्ठं जाणंति-पासंति ॥

७९ से केणट्ठेणं[3] °भंते ! एवं वुच्चइ—वयं एयमट्ठं जाणामो-पासामो, तहा णं अणुत्तरोववाइया वि देवा एयमट्ठं जाणंति°-पासंति ?
गोयमा ! अणुत्तरोववाइयाणं अणंताओ मणोदव्ववग्गणाओ लद्धाओ पत्ताओ अभिसमण्णागयाओ भवंति। से तेणट्ठेणं गोयमा ! एवं वुच्चइ[4]—°वयं एयमट्ठं जाणामो-पासामो, तहा णं अणुत्तरोववाइया वि देवा एयमट्ठं जाणंति°-पासंति ॥

तुल्लय-पदं

८०. कतिविहे णं भंते ! तुल्लए पण्णत्ते ?
गोयमा ! छव्विहे तुल्लए पण्णत्ते, तं जहा—दव्वतुल्लए, खेत्ततुल्लए, कालतुल्लए, भवतुल्लए, भावतुल्लए, संठाणतुल्लए ॥

८१. से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ—दव्वतुल्लए-दव्वतुल्लए ?
गोयमा ! परमाणुपोग्गले परमाणुपोग्गलस्स दव्वओ तुल्ले, परमाणुपोग्गले परमाणुपोग्गलवइरित्तस्स दव्वओ नो तुल्ले। दुपएसिए खंधे दुपएसियस्स खंधस्स दव्वओ तुल्ले, दुपएसिए खंधे दुपएसियवइरित्तस्स खंधस्स दव्वओ नो तुल्ले। एवं जाव दसपएसिए। तुल्लसंखेज्जपएसिए खंधे तुल्लसंखेज्जपएसियस्स खंधस्स दव्वओ तुल्ले, तुल्लसंखेज्जपएसिए खंधे तुल्लसंखेज्जपएसियवइरित्तस्स खंधस्स दव्वओ नो तुल्ले, एवं तुल्लअसंखेज्जपएसिए वि, एवं तुल्ल-

---

१. भ० १।४-८।
२. चिरज्झुसिओसि (ता, म)।
३. सं० पा०—केणट्ठेणं जाव पासंति।
४. सं० पा०—वुच्चइ जाव पासंति।

अणंतपएसिए वि। से तेणट्ठेण गोयमा! एवं वुच्चइ—दव्वतुल्लए-दव्वतुल्लए।
से केणट्ठेण भंते! एवं वुच्चइ—खेत्ततुल्लए-खेत्ततुल्लए?
गोयमा! एगपएसोगाढे पोग्गले एगपएसोगाढस्स पोग्गलस्स खेत्तओ तुल्ले, एगपएसोगाढे पोग्गले एगपएसोगाढवइरित्तस्स पोग्गलस्स खेत्तओ नो तुल्ले, एवं जाव दसपएसोगाढे। तुल्लसंखेज्जपएसोगाढे[1] •पोग्गले तुल्लसंखेज्जपएसोगाढस्स पोग्गलस्स खेत्तओ तुल्ले, तुल्लसंखेज्जपएसोगाढे पोग्गले तुल्लसंखेज्जपएसोगाढवइरित्तस्स पोग्गलस्स खेत्तओ नो तुल्ले°, एवं तुल्लअसंखेज्जपएसोगाढे वि। से तेणट्ठेण[2] •गोयमा! एवं वुच्चइ°—खेत्ततुल्लए-खेत्ततुल्लए।
से केणट्ठेण भंते! एवं वुच्चइ—कालतुल्लए-कालतुल्लए?
गोयमा! एगसमयठितीए पोग्गले एगसमयठितीयस्स पोग्गलस्स कालओ तुल्ले, एकसमयठितीए पोग्गले एगसमयठितीयवइरित्तस्स पोग्गलस्स कालओ नो तुल्ले, एवं जाव दससमयट्ठितीए, तुल्लसंखेज्जसमयट्ठितीए एवं चेव, एवं तुल्लअसंखेज्जसमयट्ठितीए वि। से तेणट्ठेण[3] •गोयमा! एवं वुच्चइ°—कालतुल्लए-कालतुल्लए।
से केणट्ठेण भंते! एवं वुच्चइ—भवतुल्लए-भवतुल्लए?
गोयमा! नेरइए नेरइयस्स भवट्ठयाए तुल्ले, नेरइयवइरित्तस्स भवट्ठयाए नो तुल्ले, तिरिक्खजोणिए एवं चेव, एवं मणुस्से, एवं देवे वि। से तेणट्ठेण[4] •गोयमा! एवं वुच्चइ°—भवतुल्लए-भवतुल्लए।
से केणट्ठेण भंते! एवं वुच्चइ—भावतुल्लए-भावतुल्लए?
गोयमा! एगगुणकालए पोग्गले एगगुणकालगस्स[5] पोग्गलस्स भावओ तुल्ले, एगगुणकालए पोग्गले एगगुणकालावइरित्तस्स[6] पोग्गलस्स भावओ नो तुल्ले, एवं जाव दसगुणकालए, एवं तुल्लसंखेज्जगुणकालए पोग्गले, एवं तुल्लअसंखेज्जगुणकालए वि, एवं तुल्लअणंतगुणकालए वि। जहा कालए, एवं नीलए, लोहियए, हालिद्दए, सुक्किलए। एवं सुब्भिगंधे, एवं दुब्भिगंधे। एवं तित्ते जाव[7] महुरे। एवं कक्खडे जाव[8] लुक्खे। ओदइए भावे ओदइयस्स भावस्स भावओ तुल्ले, ओदइए भावे ओदइयभाववइरित्तस्स भावस्स भावओ नो तुल्ले, एवं ओवसमिए, खइए, खओवसमिए, पारिणामिए। सन्निवाइए भावे सन्निवाइयस्स

---

१. सं० पा०—तुल्लसंखेज्ज।
२. सं० पा०—तेणट्ठेण जाव खेत्ततुल्लए।
३. सं० पा०—तेणट्ठेण जाव कालतुल्लए।
४. सं० पा०—तेणट्ठेण जाव भवतुल्लए।
५. °कालस्स (अ, क, व, स)।
६. °काल° (अ, ख, स), स्वीकृतपाठे एकपदे सन्धि।
७. भ० ८।३६।
८. भ० ८।३६,

भावस्स भावओ तुल्ले, सन्निवाइए भावे सन्निवाइयभाववइरित्तस्स भावस्स भावओ नो तुल्ले। से तेणट्ठेण गोयमा! एव वुच्चइ—भावतुल्लए-भावतुल्लए।
से केणट्ठेण भते! एव वुच्चइ—सठाणतुल्लए-सठाणतुल्लए?
गोयमा! परिमडले सठाणे परिमडलस्स सठाणस्स सठाणओ तुल्ले परिमडले सठाणे परिमडलसठाणवइरित्तस्स सठाणस्स सठाणओ नो तुल्ले, एवं वट्टे, तसे, चउरसे, आयए। समचउरससठाणे समचउरसस्स सठाणस्स सठाणओ तुल्ले समचउरसे सठाणे समचउरससठाणवइरित्तस्स सठाणस्स सठाणओ नो तुल्ले, 'एव परिमडले वि'[1], एव[2] •साई खुज्जे वामणे॰ हुडे। से तेणट्ठेण[3] •गोयमा! एव वुच्चइ॰—सठाणतुल्लए-सठाणतुल्लए॥

भत्तपच्चक्खायस्स आहार-पदं

८२ भत्तपच्चक्खायए ण भते! अणगारे मुच्छिए[4] •गिद्धे गढिए॰ अज्झोववन्ने आहारमाहारेति, अहे ण वीससाए काल करेइ, तओ पच्छा अमुच्छिए अगिद्धे अगढिए[5] अणज्झोववन्ने आहारमाहारेति?
हंता गोयमा! भत्तपच्चक्खायए णं अणगारे '[6]•मुच्छिए गिद्धे गढिए अज्झोववन्ने आहारमाहारेति, अहे ण वीससाए काल करेइ, तओ पच्छा अमुच्छिए अगिद्धे अगढिए अणज्झोववन्ने आहारमाहारेति॰॥

८३ से केणट्ठेण भंते! एव वुच्चइ—भत्तपच्चक्खायए ण '[7]•अणगारे मुच्छिए गिद्धे गढिए अज्झोववन्ने आहारमाहारेति, अहे ण वीससाए काल करेइ, तओ पच्छा अमुच्छिए अगिद्धे अगढिए अणज्झोववन्ने आहारमाहारेति?॰
गोयमा! भत्तपच्चक्खायए ण अणगारे मुच्छिए[8] •गिद्धे गढिए॰ अज्झोववन्ने आहारे[9] भवइ, अहे ण वीससाए कालं करेइ, तओ पच्छा अमुच्छिए[10] •अगिद्धे अगढिए अणज्झोववन्ने॰ आहारे भवइ। से तेणट्ठेण गोयमा! जाव आहारमाहारेति॥

लवसत्तम देव-पदं

८४. अत्थि ण भंते! लवसत्तमा देवा, लवसत्तमा देवा?
हता अत्थि॥

---

१. × (अ, ख); एव जाव परिमडले वि (क, ता, व, म)।
२. सं॰ पा॰—एव जाव हुडे।
३. स॰ पा॰—तेणट्ठेण जाव सठाणतुल्लए।
४. सं॰ पा॰—मुच्छिए जाव अज्झोववन्ने।
५. जाव (अ, क, ख, ता, व, म, स)।
६. स॰ पा॰—त चेव।
७. स॰ पा॰—तं चेव।
८ स॰ पा॰—मुच्छिए जाव अज्झोववन्ने।
९. अत्रकपदे सन्धिस्तेन 'आहारए' इति स्थाने 'आहारे' इति प्रयोगो दृश्यते।
१०. स॰ पा॰—अमुच्छिए जाव आहारे।

८५. से केणट्ठेण भंते ! एवं वुच्चइ—लवसत्तमा देवा, लवसत्तमा देवा ?
गोयमा ! से जहानामए केइ पुरिसे तरुणे जाव[1] निउणसिप्पोवगए सालीण वा, वीहीण वा, गोधूमाण वा, जवाण वा, जवजवाण वा पक्काण[2], परियाताण, हरियाणं, हरियकडाण तिक्खेण नवपज्जणएण[3] असिअएण पडिसाहरिया-पडिसाहरिया पडिसखिविया-पडिसखिविया जाव इणामेव-इणामेव त्ति कट्टु सत्त लवे[4] लुएज्जा, जदि[5] ण गोयमा ! तेसि देवाण एवतिय काल आउए पहुप्पते[6] तो ण ते देवा तेण चेव भवग्गहणेण सिज्झता[7] •बुज्झता मुच्चता परिनिव्वायता सव्वदुक्खाण° अत करेता। से तेणट्ठेण[8] •गोयमा ! एवं वुच्चइ°—लवसत्तमा देवा, लवसत्तमा देवा ॥

अणुत्तरोववाइयदेव-पदं

८६. अत्थि ण भंते ! अणुत्तरोववाइया देवा, अणुत्तरोववाइया देवा ?
हंता अत्थि ॥

८७. से केणट्ठेण भंते ! एव वुच्चइ—अणुत्तरोववाइया देवा, अणुत्तरोववाइया देवा ?
गोयमा ! अणुत्तरोववाइयाण देवाण अणुत्तरा सद्दा[9], •अणुत्तरा रूवा, अणुत्तरा गधा, अणुत्तरा रसा, अणुत्तरा°फासा। से तेणट्ठेण गोयमा ! एव वुच्चइ—अणुत्तरोववाइया देवा, अणुत्तरोववाइया देवा ॥

८८ अणुत्तरोववाइया ण भंते ! देवा केवतिएण कम्मावसेसेण अणुत्तरोववाइयदेवत्ताए उववन्ना ?
गोयमा ! जावतिय छट्ठभत्तिए समणे निग्गथे कम्म निज्जरेति एवतिएण कम्मावसेसेण अणुत्तरोववाइयदेवत्ताए उववन्ना ॥

८९. सेव भंते ! सेव भंते ! त्ति[10] ॥

---

१. भ० १४।३।
२ पिक्काण (म, स)।
३. नवपज्जएण (क, ता, स), नवपज्जवएण (म)।
४ लए (अ, क, ख, ता, ब), लवए (म, स)।
५ जति (अ, ख, म, स)।
६ वहुप्पत्ते (अ, क), वहुप्पते (ख, ब, म, स), पहुप्पते (ता)।
७ सिज्झेज्जा (ता), स० पा०—सिज्झता जाव अते।
८ स० पा०—तेणट्ठेण जाव लवसत्तमा।
९ स० पा०—सद्दा जाव फासा।
१०. भ० १।५१।

अट्ठमो उद्देसो

अबाहाए अंतर-पद

९०. इमीसे णं भंते ! रयणप्पभाए पुढवीए सक्करप्पभाए य[1] पुढवीए केवतिए[2] अबाहाए[3] अंतरे पण्णत्ते ?
गोयमा ! असंखेज्जाइं जोयणसहस्साइं अबाहाए अंतरे पण्णत्ते ॥

९१. सक्करप्पभाए णं भंते ! पुढवीए वालुयप्पभाए य पुढवीए केवतिए अबाहाए अंतरे पण्णत्ते ? एवं चेव । एवं जाव तमाए अहेसत्तमाए य ॥

९२. अहेसत्तमाए णं भंते ! पुढवीए अलोगस्स य केवतिए अबाहाए अंतरे पण्णत्ते ?
गोयमा ! असंखेज्जाइं जोयणसहस्साइं अबाहाए अंतरे पण्णत्ते ॥

९३. इमीसे णं भंते ! रयणप्पभाए पुढवीए जोतिसस्स य केवतिए [4]•अबाहाए अंतरे पण्णत्ते ?°
गोयमा ! सत्तनउए जोयणसए अबाहाए अंतरे पण्णत्ते ॥

९४. जोतिसस्स णं भंते ! सोहम्मीसाणाणं य कप्पाणं केवतिए [5]•अबाहाए अंतरे पण्णत्ते ?°
गोयमा ! असंखेज्जाइं जोयण[6]•सहस्साइं अबाहाए° अंतरे पण्णत्ते ॥

९५. सोहम्मीसाणाणं भंते ! सणंकुमार-माहिंदाणं य केवतिए अबाहाए अंतरे पण्णत्ते ? एवं चेव ॥

९६. सणंकुमार-माहिंदाणं भंते ! बंभलोगस्स कप्पस्स य केवतिए अबाहाए अंतरे पण्णत्ते ? एवं चेव ॥

९७. बंभलोगस्स णं भंते ! लंतगस्स य कप्पस्स केवतिए अबाहाए अंतरे पण्णत्ते ? एवं चेव ॥

९८. लंतयस्स णं भंते ! महासुक्कस्स य कप्पस्स केवतिए अबाहाए अंतरे पण्णत्ते ? एवं चेव । एवं महासुक्कस्स कप्पस्स सहस्सारस्स य, एवं सहस्सारस्स आणय-'पाणयाणं य कप्पाणं'[7], एवं आणय-पाणयाणं[8] आरणच्चुयाणं य कप्पाणं, एवं आरणच्चुयाणं गेवेज्जविमाणाणं य, एवं गेवेज्जविमाणाणं अणुत्तरविमाणाणं य ॥

---

१. × (अ, क, व, म) ।
२. केवतिय (अ, क, ख, ता, व, म, स) प्रायः ।
३. आबाहाए (अ, क, ता, स) सर्वत्र, अवाहे (ख), आवाहए (व, म) ।
४. सं० पा०—पुच्छा ।
५. सं० पा०—पुच्छा ।
६. सं० पा०—जोयण जाव अंतरे ।
७. पाणयकप्पाणं (क, स) ।
८. पाणयाणं कप्पाणं (अ, क, म) ।

९९. अणुत्तरविमाणाणं भंते ! ईसिपब्भाराए[1] य पुढवीए केवतिए[2] •अबाहाए अंतरे पण्णत्ते ?°

गोयमा ! दुवालस जोयणे अबाहाए अंतरे पण्णत्ते ।।

१०० ईसिपब्भाराए णं भंते ! पुढवीए अलोगस्स य केवतिए अबाहाए[3] •अंतरे पण्णत्ते ?°

गोयमा ! देसूणं जोयणं अबाहाए अंतरे पण्णत्ते ।।

रुक्खाणं पुणब्भव-पदं

१०१ एस णं भंते ! सालरुक्खे उण्हाभिहए तण्हाभिहए दवग्गिजालाभिहए कालमासे कालं किच्चा कहिं गमिहिति[4] ? कहिं उववज्जिहिति ?

गोयमा ! इहेव रायगिहे नगरे सालरुक्खत्ताए पच्चायाहिती[5] । से णं तत्थ[6] अच्चिय-वंदिय-पूइय-सक्कारिय-सम्माणिए दिव्वे सच्चे सच्चोवाए सन्निहिय-पाडिहेरे लाउल्लोइयमहिए यावि भविस्सइ ।।

१०२ से णं भंते ! तओहिंतो अणंतरं उव्वट्टित्ता कहिं गमिहिति ? कहिं उववज्जि-हिति ?

गोयमा ! महाविदेहे वासे सिज्झिहिति जाव[7] सव्वदुक्खाणं अंतं काहिति ।।

१०३ एस णं भंते ! साललट्ठिया[8] उण्हाभिहया तण्हाभिहया दवग्गिजालाभिहया कालमासे कालं किच्चा[9] •कहिं गमिहिति ?° कहिं उववज्जिहिति ?

गोयमा ! इहेव जंबुद्दीवे दीवे भारहे वासे विंझगिरिपायमूले[10] महेसरिए नगरीए सामलिरुक्खत्ताए पच्चायाहिति । से[11] णं तत्थ अच्चिय-वंदिय[12]-•पूइय-सक्कारिय-सम्माणिए दिव्वे सच्चे सच्चोवाए सन्निहियपाडिहेरे° लाउल्लोइयमहिए यावि भविस्सइ ।।

१०४ से णं भंते ! तओहिंतो अणंतरं उव्वट्टित्ता[13] •कहिं गमिहिति ? कहिं उवव-ज्जिहिति ?

गोयमा ! महाविदेहे वासे सिज्झिहिति जाव सव्वदुक्खाणं° अंतं काहिति ।।

---

१. ईसि° (अ, क, ख, ता, ब, म) ।
२ स० पा०—पुच्छा ।
३ स० पा०—पुच्छा ।
४. गच्छिहिति (अ, क, ख, स)
५ पच्चाहिति (ता, ब, म) ।
६ तत्था (क, ता, ब) ।
७ भ० २।७३ ।
८ सालिलट्ठिल्लिया (ख), साललट्ठिल्लिया (ता)
९ स० पा०—किच्चा जाव कहिं ।
१० विंज्झ° (क, ख, ता, ब) ।
११ सा (अ, क, ख, ता, ब, म, स) ।
१२ स० पा०—वंदिय जाव लाउल्लोइय° ।
१३ स० पा०—सेसं जहा सालरुक्खस्स जाव अंतं ।

१०५. एस णं भंते ! उवरलद्विया[1] उण्हाभिहया तण्हाभिहया दवग्गिजालाभिहया कालमासे कालं किच्चा[2] °कहिं गमिहिति ?° कहिं उववज्जिहिति ?
गोयमा ! इहेव जंबुद्दीवे दीवे भारहे वासे पाडलिपुत्ते नगरे पाडलिरुक्खत्ताए पच्चायाहिति । से णं तत्थ अच्चिय-वंदिय[3]-°पूइय-सक्कारिय-सम्माणिए दिव्वे सच्चे सच्चोवाए सन्निहियपाडिहेरे लाउल्लोइयमहिए यावि° भविस्सइ ॥
१०६. से णं भंते ! तओहिंतो अणंतरं उव्वट्टित्ता [4]°कहिं गमिहिति ? कहिं उववज्जिहिति ?
गोयमा ! महाविदेहे वासे सिज्झिहिति जाव सव्वदुक्खाणं° अंतं काहिति ॥

अम्मड-अंतेवासि-पदं

१०७ तेणं कालेणं तेणं समएणं अम्मडस्स परिव्वायगस्स सत्त अंतेवासिसया गिम्ह-कालसमयंसि [5]°जेट्ठामूलमासंमि गंगाए महानदीए उभओकूलेणं कंपिल्लपुराओ नगराओ पुरिमतालं नयरं संपट्ठिया विहाराए ॥
१०८. तए णं तेसिं परिव्वायगाणं तीसे अगामियाए छिण्णावायाए दीहमद्धाए अडवीए कंचि देसंतरमणुपत्ताणं से पुव्वग्गहिए उदए अणुपुव्वेणं परिभुंजमाणे झीणे ॥
१०९. तए णं ते परिव्वाया झीणोदगा समाणा तण्हाए पारब्भमाणा-पारब्भमाणा उदगदातारमपस्समाणा अण्णमण्णं सद्दावेंति, सद्दावेत्ता एवं वयासी—एवं खलु देवाणुप्पिया ! अम्हं इमीसे अगामियाए छिण्णावायाए दीहमद्धाए अडवीए कंचि देसंतरमणुपत्ताणं से पुव्वग्गहिए उदए अणुपुव्वेणं परिभुंजमाणे झीणे । तं सेयं खलु देवाणुप्पिया ! अम्हं इमीसे अगामियाए छिण्णावायाए दीहमद्धाए अडवीए उदगदातारस्स सव्वओ समंता मग्गण-गवेसणं करित्तए त्ति कट्टु अण्णमण्णस्स अंतिए एयमट्ठं पडिसुणेंति, पडिसुणेत्ता तीसे अगामियाए छिण्णा-वायाए दीहमद्धाए अडवीए उदगदातारस्स सव्वओ समंता मग्गण-गवेसणं करेंति, करेत्ता उदगदातारमलभमाणा दोच्चं पि अण्णमण्णं सद्दावेंति, सद्दावेत्ता एवं वयासी—इहण्णं देवाणुप्पिया ! उदगदातारो नत्थि तं नो खलु कप्पइ अम्हं अदिण्णं गिण्हित्तए, अदिण्णं साइज्जित्तए, तं मा णं अम्हे इयाणिं आवइकालं पि अदिण्णं गिण्हामो, अदिण्णं साइज्जामो, मा णं अम्हं तवलोवे भविस्सइ । तं सेयं खलु अम्हं देवाणुप्पिया ! तिदंडए य कुंडियाओ य कंचणियाओ य करोडियाओ य भिसियाओ य छण्णालए य अंकुसए य केसरियाओ य पवित्तए य गणेत्तियाओ य छत्तए य वाहणाओ य धाउरत्ताओ य एगंते एडित्ता गंगं

---

१. उवरि° (अ, स) ।
२ स० पा०—किच्चा जाव कहिं ।
३ स० पा०—वंदिय जाव भविस्सइ ।
४. स० पा०—सेसं तं चेव जाव अंतं ।
५. स० पा०—एवं जहा ओववाइए जाव आराहगा ।

महानइ ओगाहित्ता वालुयासथारए सथरित्ता सलेहणा-भूसियाणं भत्तपाण-पडियाइक्खियाण पाओवगयाण काल अणवकखमाणाण विहरित्तए त्ति कट्टु अण्णमण्णस्स अतिए एयमट्ठ पडिसुणेति, पडिसुणेत्ता तिदडए य कुडियाओ य कचणियाओ य करोडियाओ य भिसियाओ य छण्णालए य अकुसए य केसरियाओ य पवित्तए य गणेत्तियाओ य छत्तए य वाहणाओ य धाउरत्ताओ य एगते एडेति, एडेत्ता गग महानइ ओगाहेति, ओगाहेत्ता वालुयासथारए सथरति, सथरित्ता वालुयासथारय दुरुहति, दुरुहित्ता पुरत्थाभिमुहा सपलियकनिसण्णा करयलपरिग्गहिय सिरसावत्त मत्थए अजलि कट्टु एव वयासी—

नमोत्थु ण अरहताण जाव[1] सिद्धिगइनामधेय ठाण सपत्ताण।

नमोत्थु ण समणस्स भगवओ महावीरस्स जाव[2] सपाविउकामस्स।

नमोत्थु ण अम्मडस्स परिव्वायगस्स अम्ह धम्मायरियस्स धम्मोवदेसगस्स।

पुव्वि ण अम्हेहि अम्मडस्स परिव्वायगस्स अतिए थूलए पाणाइवाए पच्चक्खाए जावज्जीवाए, मुसावाए अदिण्णादाणे पच्चक्खाए जावज्जीवाए, सव्वे मेहुणे पच्चक्खाए जावज्जीवाए, थूलए परिग्गहे पच्चक्खाए जावज्जीवाए, इयाणि अम्हे समणस्स भगवओ महावीरस्स अतिए सव्व पाणाइवाय पच्चक्खामो जावज्जीवाए सव्व मुसावाय पच्चक्खामो जावज्जीवाए सव्व अदिण्णादाण पच्चक्खामो जावज्जीवाए सव्व मेहुण पच्चक्खामो जावज्जीवाए सव्व परिग्गह पच्चक्खामो जावज्जीवाए सव्व कोह माण माय लोह पेज्ज दोस कलह अब्भक्खाण पेसुण्ण परपरिवाय अरइरइ मायामोस मिच्छादसणसल्ल अकरणिज्ज जोग पच्चक्खामो जावज्जीवाए सव्व असण पाण खाइम साइम—चउव्विह पि आहारं पच्चक्खामो जावज्जीवाए।

ज पि य इमं सरीर इट्ठ कत पिय मणुण्ण मणाम पेज्ज वेसासिय समय बहुमयं अणुमय भड-करडग-समाण मा ण सीय, मा ण उण्ह, मा ण खुहा, मा ण पिवासा, मा ण वाला, मा ण चोरा, मा ण दसा, मा ण मसगा, मा ण वाइय-पित्तिय-सिंभिय-सन्निवाइय[1] विविहा रोगायका परीसहोवसग्गा फुसंतु त्ति कट्टु एयपि ण चरिमेहि ऊसासनीसासेहिं वोसिरामि त्ति कट्टु सलेहणा-भूसिया भत्तपाण-पडियाइक्खिया पाओवगया काल अणवकखमाणा विहरति।

तए ण ते परिव्वाया बहूइ भत्ताइ अणसणाए छेदेति, छेदित्ता आलोइय-पडिक्कता समाहिपत्ता कालमासे काल किच्चा बभलोए कप्पे देवत्ताए उववण्णा। तहिं तेसिं गई, तहिं तेसिं ठिई, तहि तेसिं उववाए पण्णत्ते।

---

१. ओ० सू० २१।
२. ओ० सू० २१।

१ विभक्तिरहित पदम्।

तेसि णं भते ! देवाण केवतिय काल ठिई पण्णत्ता ?
गोयमा ! दससागरोवमाइ ठिई पण्णत्ता ।
अत्थि ण भते ! तेसि देवाण इड्ढी इ वा जुई इ वा जसे इ वा वले इ वा वीरिए इ वा पुरिसक्कार-परक्कमे इ वा ?
हता अत्थि ।
ते ण भते ! देवा परलोगस्स आराहगा ?
हता अत्थि ॥°

अम्मड-चरिया-पदं

११० बहुजणे ण भते ! अण्णमण्णस्स एवमाइक्खइ एव भासइ एव पण्णवेइ एव परूवेइ—एव खलु अम्मडे परिव्वायए कपिल्लपुरे नगरे घरसए [1]°आहारमाहरेइ, घरसए वसहि उवेइ ।
से कहमेय भते ?
एव खलु गोयमा ! ज ण से वहुजणे अण्णमण्णस्स एवमाइक्खइ एव भासइ एव पण्णवेइ एव परूवेइ—एव खलु अम्मडे परिव्वायए कपिल्लपुरे नगरे घरसए आहारमाहरेइ, घरसए वसहि उवेइ, सच्चे ण एसमट्ठे अहपि णं गोयमा ! एवमाइक्खामि एव भासामि एव पण्णवेमि एव परूवेमि—एव खलु अम्मडे परिव्वायए कपिल्लपुरे नगरे घरसए आहारमाहरेइ, घरसए वसहि उवेइ ॥

१११. से केणट्ठेण भते ! एव वुच्चइ—अम्मडे परिव्वायए कपिल्लपुरे नगरे घरसए आहारमाहरेइ, घरसए वसहि उवेइ ?
गोयमा ! अम्मडस्स ण परिव्वायगस्स पगइभद्दयाए पगइउवसतयाए पगइपतणु-कोहमाणमायालोहयाए मिउमद्दवसपण्णयाए अल्लीणयाए विणीययाए छट्ठछट्ठेण अणिक्खित्तेण तवोकम्मेण उड्ढं वाहाओ पगिज्झिय-पगिज्झिय सूराभिमुहस्स आयावणभूमीए आयावेमाणस्स सुभेण परिणामेण पसत्थेहि अज्झवसाणेहि लेसाहि विसुज्झमाणीहि अण्णया कयाइ तदावरणिज्जाण कम्माण खओवसमेणं ईहापूह-मग्गण-गवेसण करेमाणस्स वीरियलद्धीए वेउव्वियलद्धीए ओहिनाण-लद्धी समुप्पण्णा ।
तए ण से अम्मडे परिव्वायए तीए वीरियलद्धीए वेउव्वियलद्धीए ओहिनाणल-द्धीए समुप्पण्णाए जणविम्हावणहेउ कपिल्लपुरे नगरे घरसए आहारमाहरेइ, घरसए वसहि उवेइ । से तेणट्ठेण गोयमा ! एव वुच्चइ—अम्मडे परिव्वायए कपिल्लपुरे नगरे घरसए आहारमाहरेइ, घरसए वसहि उवेइ ॥

---

१ स० पा०—एव जहा ओववाइए अम्मडस्स वत्तव्वया जाव ।

११२ पहू ण भते ! अम्मडे परिव्वायए देवाणुप्पियाण अतिय मुडे भवित्ता अगाराओ अणगारिय पव्वइत्तए ?
नो इणट्ठे समट्ठे । गोयमा ! अम्मडे ण परिव्वायए समणोवासए अभिगयजीवाजीवे उवलद्धपुण्णपावे आसव-सवर-निज्जर-किरियाहिगरण-बध-मोक्खकुसले असहेज्ज[1] देवासुरनाग-सुवण्ण जक्ख-रक्खस-किन्नर-किंपुरिस-गरुल-गधव्व-महोरगाइएहि निग्गथाओ पावयणाओ अणइक्कमणिज्जे, इणमो निग्गथे पावयणे निस्सकिए निक्कखिए निव्वितिगिच्छे लद्धट्ठे गहियट्ठे पुच्छियट्ठे अभिगयट्ठे विणिच्छियट्ठे अट्ठिमिजपेमाणुरागरत्ते, अयमाउसो ! निग्गथे पावयणे अट्ठे, अय परमट्ठे, सेसे अणट्ठे, चउद्दसअट्ठमुद्दिट्ठपुण्णमासिणीसु पडिपुण्ण पोसह अणुपालेमाणे, समणे निग्गथे फासुएसणिज्जेण असण-पाण-खाइम-साइमेण वत्थ-पडिग्गह-कवल-पायपुच्छणेण ओसहभेसज्जेण पाडिहारिएण पीढफलगसेज्जा-सथारएण पडिलाभेमाणे सीलव्वय-गुण-वेरमण-पच्चक्खाण-पोसहोववासेहि अहापरिग्गहिएहि तवोकम्मेहि अप्पाण भावेमाणे विहरइ ° जाव[2] दढप्पइण्णो अत काहिति ॥

अव्वाबाहदेव-सत्ति-पद

२१३. अत्थि ण भते ! अव्वावाहा देवा, अव्वावाहा देवा ?
हता अत्थि ॥

११४ से केणट्ठेण भते ! एव वुच्चइ—अव्वावाहा देवा, अव्वावाहा देवा ?
गोयमा ! पभू ण एगमेगे अव्वाबाहे देवे एगमेगस्स पुरिसस्स एगमेगसि अच्छिपत्तसि दिव्व देविड्ढि, दिव्व देवज्जुति, दिव्व देवाणुभाग, दिव्व बत्तीसतिविह नट्टविहि उवदसेत्तए, नो चेव ण तस्स पुरिसस्स किंचि आबाह वा वाबाह[3] वा उप्पाएइ, छविच्छेय वा करेइ, एसुहुम[4] च ण उवदसेज्जा । से तेणट्ठेण[5] •गोयमा ! एव वुच्चइ °—अव्वावाहा देवा, अव्वावाहा देवा ॥

सक्कस्स सत्ति-पदं

११५ पभू ण भते ! सक्के देविंदे देवराया पुरिसस्स सीस सपाणिणा[6] असिणा छिदित्ता कमडलुसि[7] पक्खिवित्तए ?
हता पभू ॥

११६. से कहमिदाणि पकरेति ?
गोयमा ! छिंदिया-छिंदिया च ण पक्खिवेज्जा, भिंदिया-भिंदिया च णं

---

१. विभक्तिरहित पदम् ।
२. ओ० सू० १२१-१५४ ।
३ पवाह (क, वृ), वावाह (वृपा) ।
४ एस्सुमुह (ता, व, म) ।
५. स० पा०—तेणट्ठेण जाव अव्वावाहा ।
६. सापाणिणा (ख, ता, व) ।
७ कमडलुमि (अ, क, म), कमडलुपि (ख, व, स) ।

पक्खिवेज्जा, कोट्टिया-कोट्टिया च णं पक्खिवेज्जा, चुण्णिया-चुण्णिया च ण पक्खिवेज्जा, तओ पच्छा खिप्पामेव पडिसंघाएज्जा, नो चेव ण तस्स पुरिसस्स किंचि आबाह वा वाबाह वा उप्पाएज्जा, छविच्छेयं पुण करेइ, एसुहुम च ण पक्खिवेज्जा ।।

जंभगदेव-पद

११७ अत्थि ण भते ! जभगा देवा, जभगा देवा ?
हता अत्थि ।।

११८ से केणट्ठेण भते ! एव वुच्चइ—जभगा देवा, जभगा देवा ?
गोयमा ! जभगा ण देवा निच्चं पमुदित-पक्कीलिया कदप्परतिमोहणसीला । जे णं ते देवे कुद्धे पासेज्जा, से ण पुरिसे महत अयसं पाउणेज्जा । जे णं ते देवे तुट्ठे पासेज्जा, से ण महत जस पाउणेज्जा । से तेणट्ठेण गोयमा ! एवं वुच्चइ—जभगा देवा, जभगा देवा ।।

११९. कतिविहा ण भते ! जभगा देवा पण्णत्ता ?
गोयमा ! दसविहा पण्णत्ता, त जहा—अन्नजभगा, पाणजभगा, वत्थजभगा, लेणजभगा, सयणजभगा, पुप्फजभगा, फलजभगा, 'पुप्फ-फल-जभगा'[1], विज्जा-जभगा अवियत्तिजभगा[2] ।।

१२०. जभगा ण भते ! देवा कहि वसहि उवेति ?
गोयमा ! सव्वेसु चेव दीहवेयड्ढेसु, चित्त-विचित्त-जमगपव्वएसु, कचणपव्वएसु य, एत्थ ण जभगा देवा वसहि उवेति ।।

१२१ जभगाण भते ! देवाण केवतिय काल ठिती पण्णत्ता ?
गोयमा ! एगं पलिओवम ठिती पण्णत्ता ।।

१२२ सेव भते ! सेव भते ! त्ति जाव[3] विहरइ ।।

नवमो उद्देसो

सरूवि-सकम्मलेस्स-पद

१२३. अणगारे ण भते ! भावियप्पा अप्पणो कम्मलेस्स न जाणइ, न पासइ, त पुण जीव सरूविं[4] सकम्मलेस्स जाणइ-पासइ ?

---

१. मतजंभगा (वृपा) ।
२ अहिवइजंभगा (वृपा)
३. भ० १।५१ ।
४. सरूव (अ) ।

हता गोयमा ! अणगारे ण भावियप्पा अप्पणो[1] •कम्मलेस्स न जाणइ, न पासइ, त पुण जीव सरूवि सकम्मलेस्स जाणइ °-पासइ ।।

१२४ अत्थि ण भते ! सरूवी सकम्मलेस्सा पोग्गला ओभासेति[2] उज्जोएति तवेति पभासेति ?
हता अत्थि ।।

१२५. कयरे ण भते ! सरूवी सकम्मलेस्सा पोग्गला ओभासेति जाव पभासेति ?
गोयमा ! जाओ इमाओ चदिम-सूरियाण देवाण विमाणेहिंतो लेस्साओ बहिया अभिनिस्सडाओ[3] पभावेति[4], एए ण गोयमा ! ते सरूवी सकम्मलेस्सा पोग्गला ओभासेति उज्जोएति तवेति पभासेति ।।

अत्ताणत्त-पोग्गल-पद

१२६ नेरइयाण भते ! कि अत्ता पोग्गला ? अणत्ता पोग्गला ?
गोयमा ! नो अत्ता पोग्गला, अणत्ता पोग्गला ।।

१२७ असुरकुमाराण भते ! कि अत्ता पोग्गला ? अणत्ता पोग्गला ?
गोयमा ! अत्ता पोग्गला, नो अणत्ता पोग्गला । एव जाव[5] थणियकुमाराण ।।

१२८ पुढविकाइयाण [6]•भते ! कि अत्ता पोग्गला ? अणत्ता पोग्गला ?°
गोयमा ! अत्ता वि पोग्गला, अणत्ता वि पोग्गला । एव जाव[7] मणुस्साण । वाणमतर-जोइसिय-वेमाणियाण जहा असुरकुमाराण ।।

इट्ठाणिट्ठादि-पोग्गल-पदं

१२९. नेरइयाण भते ! किं इट्ठा पोग्गला ? अणिट्ठा पोग्गला ?
गोयमा ! नो इट्ठा पोग्गला, अणिट्ठा पोग्गला । जहा अत्ता भणिया एव इट्ठा वि, कता वि, पिया वि, मणुण्णा वि भाणियव्वा । एए[8] पच दंडगा ।।

देवाणं भासासहस्स-पद

१३०. देवे ण भते ! महिड्ढिए जाव[9] महेसक्खे रूवसहस्स विउव्वित्ता पभू भासासहस्स भासित्तए ?
हता पभू ।।

१३१. सा ण भते ! किं एगा भासा ? भासासहस्सं ?
गोयमा ! एगा ण सा भासा, नो खलु त भासासहस्स ।।

---

१. स० पा०—अप्पणो जाव पासइ ।
२ तोभासति (क, म) ।
३ अभिनिस्सडाओ (क); अभिनिस्सदाओ (ता)
४ पयावेति (ता), पभावेति एव (म, स) ।
५. पू० प० २ ।
६ सं० पा०—पुच्छा ।
७. पू० प० २ ।
८ एव (अ, क, व, म, स) ।
९. भ० १।३३९ ।

सूरिय-पदं

१३२ तेण कालेण तेण समएण भगव गोयमे अचिरुग्गय बालसूरिय जासुमणाकुसुम-पुजप्पकास लोहितग पासइ, पासित्ता जायसड्ढे जाव[1] समुप्पन्नकोउहल्ले जेणेव समणे भगव महावीरे तेणेव उवागच्छइ[2], °उवागच्छित्ता समण भगव महावीर तिक्खुत्तो आयाहिण-पयाहिण करेइ, करेत्ता वदइ नमसइ, वदित्ता नमंसित्ता णच्चासण्णे णातिदूरे सुस्सूसमाणे नमसमाणे अभिमुहे विणएण पजलियडे पज्जुवासमाणे° एव वयासी—किमिद भते ! सूरिए ? किमिद भते ! सूरियस्स अट्ठे ?

गोयमा ! सुभे सूरिए, सुभे सूरियस्स अट्ठे ॥

१३३ किमिद भते ! सूरिए ? किमिद भते ! सूरियस्स पभा ?

[3]°गोयमा । सुभे सूरिए, सुभा सूरियस्स पभा ॥

१३४ किमिद भते सूरिए ? किमिद भते ! सूरियस्स छाया ?

गोयमा ! सुभे सूरिए, सुभा सूरियस्स छाया ॥

१३५ किमिद भते । सूरिए ? किमिद भते ! सूरियस्स लेस्सा ?

गोयमा ! सुभे सूरिए, सुभा सूरियस्स लेस्सा ° ॥

समणाणं तेयलेस्सा-पद

१३६ जे इमे भते ! अज्जत्ताए समणा निग्गथा विहरति, ते[4] ण कस्स तेयलेस्स वीईवयति ?

गोयमा ! मासपरियाए समणे निग्गथे वाणमतराण देवाण तेयलेस्स वीईवयइ ।

दुमासपरियाए समणे निग्गथे असुरिदवज्जियाण भवणवासीण देवाण तेयलेस्स वीईवयइ ।

एवं एएण[5] अभिलावेण—तिमासपरियाए समणे निग्गथे असुरकुमाराण देवाण तेयलेस्स वीईवयइ ।

चउम्मासपरियाए समणे निग्गथे गहगण-नक्खत्त-तारारूवाण जोतिसियाण देवाण तेयलेस्स वीईवयई ।

पंचमासपरियाए समणे निग्गंथे चदिम-सूरियाणं जोतिसिंदाण जोतिसराईण तेयलेस्स वीईवयइ ।

छम्मासपरियाए[6] समणे निग्गथे सोहम्मीसाणाण देवाण तेयलेस्स वीईवयइ ।

---

१. भ० १।१० ।

२ स० पा०—उवागच्छइ जाव नमसित्ता जाव एव ।

३. स० पा०—एव चेव एवं छाया एव लेस्सा ।

४. एते (क, ता, व, म, स), तए (ख) ।

५ तेतेण (व) ।

६. छमास° (स) ।

सत्तमासपरियाए समणे निग्गथे सणकुमार-माहिदाण देवाण तेयलेस्स वीईवयइ ।
अट्ठमासपरियाए समणे निग्गथे बभलोग-लतगाण देवाण तेयलेस्स वीईवयइ ।
नवमासपरियाए समणे निग्गथे महासुक्क-सहस्साराण देवाण तेयलेस्स वीईवयइ ।
दसमासपरियाए समणे निग्गथे आणय-पाणय-आरणच्चुयाण देवाण तेयलेस्स वीईवयइ ।
एक्कारसमासपरियाए समणे निग्गथे गेवेज्जगाण देवाण तेयलेस्स वीईवयइ ।
बारसमासपरियाए समणे निग्गथे अणुत्तरोववाइयाण देवाण तेयलेस्स वीईवयइ ।
तेण पर सुक्के सुक्काभिजाए भवित्ता तओ पच्छा सिज्झति[1] •बुज्झति मुच्चति परिनिव्वायति सव्वदुक्खाण° अत करेति ।।

१३७ सेव भते ! सेव भते ! त्ति जाव[2] विहरइ ।।

दसमो उद्देसो

केवलि-पदं

१३८. केवली ण भते ! छउमत्थ[3] जाणइ-पासइ ?
हता जाणइ-पासइ ।।

१३९. जहा ण भते ! केवली छउमत्थ जाणइ-पासइ, तहा ण सिद्धे वि छउमत्थ जाणइ-पासइ ?
हता जाणइ-पासइ ।।

१४०. केवली ण भते ! आहोहिय[4] जाणइ-पासइ ? एव चेव । एव परमाहोहिय[5], एव केवलि, एव सिद्ध जाव—

१४१ जहा ण भते ! केवली सिद्ध जाणइ-पासइ, तहा ण सिद्धे वि सिद्ध जाणइ-पासइ ?
हता जाणइ-पासइ ।।

---

१ स० पा०—सिज्झति जाव अत ।
२ भ० १।५१ ।
३ छदुमत्थ (ता), छतुमत्थ (ब) ।
४. आधोधिय (अ, स), आवोधीय (क), आहोधिय (ख), अधोविय (ता), आधोविय (ब), आधोहिय (म) ।
५. परमावधिय (अ), परमावोहिय (क); परमोविय (ख), परमहोहिय (ता), परमाधोविय (ब), परमाधोहिय (म, स) ।

१४२ केवली णं भंते ! भासेज्ज वा ? वागरेज्जा वा ?
हंता भासेज्ज वा, वागरेज्ज वा ।।

१४३ जहा णं भंते ! केवली भासेज्ज वा वागरेज्ज वा, तहा णं सिद्धे वि भासेज्ज वा वागरेज्ज वा ?
नो इणट्ठे समट्ठे ।।

१४४ से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ—जहा णं केवली भासेज्ज वा वागरेज्ज वा नो तहा णं सिद्धे भासेज्ज वा वागरेज्ज वा ?
गोयमा ! केवली णं सउट्ठाणे सकम्मे सबले सवीरिए सपुरिसक्कार-परक्कमे, सिद्धे णं अणुट्ठाणे[1] •अकम्मे अबले अवीरिए° अपुरिसक्कारपरक्कमे । से तेणट्ठेणं[2] •गोयमा ! एवं वुच्चइ—जहा णं केवली भासेज्ज वा वागरेज्ज वा नो तहा णं सिद्धे भासेज्ज वा° वागरेज्ज वा ।।

१४५. केवली णं भंते ! उम्मिसेज्ज वा ? निम्मिसेज्ज वा ?
हंता उम्मिसेज्ज वा, निम्मिसेज्ज वा ।।

१४६. जहा णं भंते ! केवली उम्मिसेज्ज वा, निम्मिसेज्ज वा, तहा णं सिद्धे वि उम्मिसेज्ज वा निम्मिसेज्ज वा ?
नो इणट्ठे समट्ठे । एवं चेव[3] । एवं आउटेज्ज[4] वा पसारेज्ज वा, एवं ठाणं वा सेज्जं वा निसीहियं वा चेएज्जा ।।

१४७. केवली णं भंते ! इमं रयणप्पभं पुढविं रयणप्पभापुढवीति जाणइ-पासइ ?
हंता जाणइ-पासइ ।।

१४८ जहा णं भंते ! केवली इमं रयणप्पभं पुढविं रयणप्पभापुढवीति जाणइ-पासइ, तहा णं सिद्धे वि इमं रयणप्पभं पुढविं रयणप्पभापुढवीति जाणइ-पासइ ?
हंता जाणइ-पासइ ।।

१४९. केवली णं भंते ! सक्करप्पभं पुढविं सक्करप्पभापुढवीति जाणइ-पासइ ? एवं चेव । एवं जाव अहेसत्तमं ।।

१५०. केवली णं भंते ! सोहम्मं कप्पं सोहम्मकप्पे त्ति जाणइ-पासइ ?
हंता जाणइ-पासइ । एवं चेव । एवं ईसाणं, एवं जाव अच्चुयं ।।

१५१. केवली णं भंते ! गेवेज्जविमाणं गेवेज्जविमाणे त्ति जाणइ-पासइ ? एवं चेव । एवं अणुत्तरविमाणे वि ।।

१५२. केवली णं भंते ईसिपब्भारं पुढविं ईसिपब्भारपुढवीति जाणइ-पासइ ? एवं चेव ।।

---

१. सं० पा०—अणुट्ठाणे जाव अपुरिसक्कार° ।
२. सं० पा०—तेणट्ठेणं जाव वागरेज्ज ।
३. भ० १४।१४४ ।
४ आउट्टेज्ज (अ, स); आउट्टावेज्ज (क म), आउंट्टावेज्ज (ख, ता); आउंटावेज्ज (व) ।

१५३ केवली ण भते ! परमाणुपोग्गल परमाणुपोग्गले त्ति जाणइ-पासइ ? एव चेव । एव दुपएसिय खध, एव जाव—

१५४. जहा ण भते ! केवली अणतपएसिय खध अणतपएसिए खधे त्ति जाणइ-पासइ, तहा ण सिद्धे वि अणतपएसिय[1] •खध अणतपएसिए खधे त्ति जाणइ°-पासइ ? हता जाणइ-पासइ ॥

१५५. सेव भते ! सेव भते ! त्ति[2] ॥

---

१. स० पा०—अणतपएसिय जाव पासइ ।

२ भ० १।५१ ।

पन्नरसमं सतं

नमो सुयदेवयाए भगवईए[1]

गोसालग-पदं

१ तेणं कालेण तेण समएण सावत्थी नाम नगरी होत्था—वण्णओ[2]। तीसे ण सावत्थीए नगरीए बहिया उत्तरपुरत्थिमे[3] दिसीभाए, तत्थ ण कोट्ठए नाम चेइए होत्था—वण्णओ[4]। तत्थ ण सावत्थीए नगरीए हालाहला[5] नामं कुभकारी आजीविओवासिया परिवसति—अड्ढा जाव[6] वहुजणस्स अपरिभूया, आजीवियसमयसि लद्धट्ठा गहियट्ठा पुच्छियट्ठा विणिच्छियट्ठा अट्ठिमिजपेम्माणुरागरत्ता, अयमाउसो! आजीवियसमये अट्ठे, अय परमट्ठे, सेसे अणट्ठे त्ति आजीवियसमएण अप्पाणं भावेमाणी विहरइ ।।

२. तेणं कालेण तेण समएण गोसाले मखलिपुत्ते चउव्वीसवासपरियाए हालाहलाए कुभकारीए कुभकारावणसि आजीवियसघसपरिवुडे आजीवियसमएण अप्पाणं भावेमाणे विहरइ ।।

३ तए ण तस्स गोसालस्स मंखलिपुत्तस्स अण्णदा कदायि इमे छ दिसाचरा[7] अतिय पाउब्भवित्था, त जहा—साणे, कलदे[8], कण्णियारे, अच्छिदे, अग्गिवेसायणे, अज्जुणे गोमायुपुत्ते[9] ।।

४ तए ण ते छ दिसाचरा अट्ठविह[10] पुव्वगय मग्गदसम 'सएहिं-सएहि'[11] मतिदसणेहिं निज्जूहति[12], निज्जूहित्ता गोसालं मखलिपुत्त उवट्ठाइसु ।।

---

१ एतद् वृत्तौ व्याख्यात नास्ति।
२ ओ० सू० १।
३. ०पुरच्छिमे (स)।
४. ओ० सू० २-१३।
५ हालाहाला (ता, स)।
६. भ० २।६४।
७. दिक्चरा भगवच्छिष्या पार्श्वस्थीभूता इति टीकाकार 'पासावच्चिज्ज' त्ति चूर्णिकार (वृ)।
८. कणदे (क, ता, म)।
९. गोतमपुत्ते (क, व, म)।
१० निमित्तमिति शेष (वृ)।
११. सतेहिं २ (अ, क, व, म, स)।
१२. निजूहति (ता, स); निज्जु ति (व, म)।

५ तए ण से गोसाले मखलिपुत्ते तेण अट्ठगस्स महानिमित्तस्स केणइ उल्लोयमेत्तेण सव्वेसि पाणाण, सव्वेसि भूयाण, सव्वेसि जीवाण, सव्वेसि सत्ताण इमाइ छ अणइक्कमणिज्जाइ वागरणाइ वागरेति, त जहा—

लाभ अलाभ सुह दुक्ख, जीविय मरण तहा ।।

६ तए ण से गोसाले मखलिपुत्ते तेण अट्ठगस्स महानिमित्तस्स केणइ उल्लोयमेत्तेण सावत्थीए नगरीए अजिणे जिणप्पलावी, अणरहा अरहप्पलावी, अकेवली केवलिप्पलावी, असव्वण्णू सव्वण्णुप्पलावी, अजिणे जिणसद्द पगासेमाणे[1] विहरइ ।।

७. तए ण सावत्थीए नगरीए सिघाडग[2]-•तिग-चउक्क-चच्चर-चउम्मुह-महापह°-पहेसु बहुजणो अण्णमण्णस्स एवमाइक्खइ[3], •एव भासइ, एव पण्णवेइ°, एव परूवेइ—एव खलु देवाणुप्पिया ! गोसाले मखलिपुत्ते जिणे जिणप्पलावी[4], •अरहा अरहप्पलावी, केवली केवलिप्पलावी, सव्वण्णू सव्वण्णुप्पलावी, जिणे जिणसद्द° पगासेमाणे विहरइ । से कहमेय मन्ने एव ?

८ तेण कालेण तेण समएण सामी समोसढे जाव[5] परिसा पडिगया ।।

९ तेण कालेण तेण समएण समणस्स भगवओ महावीरस्स जेट्ठे अतेवासी इदभूती नाम अणगारे गोयमे गोत्तेण[6] •सत्तुस्सेहे समचउरससठाणसठिए वज्जरिसभ-नारायसघयणे कणगपुलगनिघसपम्हगोरे उग्गतवे दित्ततवे तत्ततवे महातवे ओराले घोरे घोरगुणे घोरतवस्सी घोरबभचेरवासी उच्छूढसरीरे सखित्त-विउलतेयलेस्से° छट्ठछट्ठेण[7] •अणिक्खित्तेण तवोकम्मेण सजमेण तवसा अप्पाण भावेमाणे विहरइ ।।

१० तए णं भगव गोयमे छट्ठक्खमणपारणगसि पढमाए पोरिसीए सज्झाय करेइ, बीयाए पोरिसीए झाण झियाइ, तइयाए पोरिसीए अतुरियमचवलमसभते मुहपोत्तिय पडिलेहेइ, पडिलेहेत्ता भायणवत्थाइ पडिलेहेइ, पडिलेहेत्ता भायणाइ पमज्जइ, पमज्जित्ता भायणाइ उग्गाहेइ, उग्गाहेत्ता जेणेव समणे भगव महावीरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता समण भगव महावीर वदइ नमसइ, वदित्ता नमसित्ता एव वयासी—इच्छामि ण भते ! तुब्भेहि अब्भणुण्णाए समाणे छट्ठक्खमणपारणगसि सावत्थीए नगरीए उच्च-नीय-मज्झिमाइ कुलाइ घर-समुदाणस्स भिक्खायरियाए अडित्तए ।

---

१ पभासेमाणे (ख, ता) ।
२ स० पा०—सिघाडग जाव पहेसु ।
३. स० पा०—एवमाइक्खइ जाव एव ।
४. स० पा०—जिणप्पलावी जाव पगासेमाणे ।
५. भ० १।७,८ ।
६. स० पा०—गोत्तेण जाव छट्ठछट्ठेण ।
७ स० पा०—एव जहा वितियसए नियठुद्देसए जाव अडमाणे ।

अहासुहं देवाणुप्पिया ! मा पडिबंधं ॥

११ तए णं भगवं गोयमे समणेणं भगवया महावीरेण अब्भणुण्णाए समाणे समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतियाओ कोट्ठयाओ चेइयाओ पडिनिक्खमइ, पडिनिक्खमित्ता अतुरियमचवलमसंभंते जुगंतरपलोयणाए दिट्ठीए पुरओ रियं सोहेमाणे-सोहेमाणे जेणेव सावत्थी नगरी तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सावत्थीए नगरीए उच्च-नीय-मज्झिमाइं कुलाइं घरसमुदाणस्स भिक्खायरियं अडइ ॥

१२ तए णं भगवं गोयमे सावत्थीए नगरीए उच्च-नीय-मज्झिमाइं कुलाइं घरसमुदाणस्स भिक्खायरियाए° अडमाणे बहुजणसद्दं निसामेइ, बहुजणो अण्णमण्णस्स एवमाइक्खइ एवं भासइ एवं पण्णवेइ एवं परूवेइ—एवं खलु देवाणुप्पिया ! गोसाले मंखलिपुत्ते जिणे जिणप्पलावी जाव[1] जिणे जिणसद्दं पगासेमाणे विहरइ। से कहमेयं मन्ने एवं ?

१३ तए णं भगवं गोयमे बहुजणस्स अंतियं एयमट्ठं सोच्चा निसम्म जायसड्ढे[2] •जाव[3] समुप्पन्नकोउहल्ले अहापज्जत्तं समुदाणं गेण्हइ, गेण्हित्ता सावत्थीओ नगरीओ पडिनिक्खमइ, अतुरियमचवलमसंभंते जुगंतरपलोयणाए दिट्ठीए पुरओ रियं सोहेमाणे-सोहेमाणे जेणेव कोट्ठए चेइए, जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता समणस्स भगवओ महावीरस्स अदूरसामंते गमणागमणाए पडिक्कमइ, पडिक्कमित्ता एसणमणेसणं आलोएइ, आलोएत्ता भत्तपाणं पडिदंसेइ, पडिदंसेत्ता समणं भगवं महावीरं वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता णच्चासन्ने णातिदूरे सुस्सूसमाणे नमंसमाणे अभिमुहे विणएणं पंजलियडे° पज्जुवासमाणे एवं वयासी—एवं खलु अहं भंते ![4] •छट्ठक्खमणपारणगंसि तुब्भेहिं अब्भणुण्णाए समाणे सावत्थीए नगरीए उच्च-नीय-मज्झिमाणि कुलाणि घरसमुदाणस्स भिक्खयरियाए अडमाणे बहुजणसद्दं निसामेमि, बहुजणो अण्णमण्णस्स एवमाइक्खइ एवं भासइ एवं पण्णवेइ एवं परूवेइ—एवं खलु देवाणुप्पिया ! गोसाले मंखलिपुत्ते जिणे जिणप्पलावी जाव जिणे° जिणसद्दं पगासेमाणे विहरइ। से कहमेयं भंते ! एवं ? तं इच्छामि णं भंते ! गोसालस्स मंखलिपुत्तस्स उट्ठाणपारियाणियं[5] परिकहियं ॥

१४. गोयमादी ! समणे भगवं महावीरे भगवं गोयमं एवं वयासी—जण्णं गोयमा ! से बहुजणो अण्णमण्णस्स एवमाइक्खइ एवं भासइ एवं पण्णवेइ एवं परूवेइ—एवं खलु गोसाले मंखलिपुत्ते जिणे जिणप्पलावी जाव जिणे जिणसद्दं पगासेमाणे विहरइ। तण्णं मिच्छा। अहं पुण गोयमा ! एवमाइक्खामि जाव परूवेमि—

---

१. भ० १५।६।

२. सं० पा०—जायसड्ढे जाव भत्तपाणं पडिदंसेइ जाव पज्जुवासमाणे।

३. भ० १।१०।

४. सं० पा०—छट्ठं तं चेव जाव जिणसद्दं।

५ °परियाणिणं (अ,ब,स), °पारियाणं (ता)।

एव खलु एयस्स गोसालस्स मखलीपुत्तस्स मखली नाम मखे पिता होत्था। तस्स ण मखलिस्स मखस्स भद्दा नाम भारिया होत्था—सुकुमालपाणिपाया जाव[1] पडिरूवा। तए ण सा भद्दा भारिया अण्णदा कदायि गुव्विणी यावि होत्था ।।

१५ तेण कालेण तेण समएण सरवणे नाम सण्णिवेसे होत्था—रिद्धत्थिमियसमिद्धे जाव[2] नदणवण-सन्निभप्पगासे, पासादीए दरिसणिज्जे अभिरूवे पडिरूवे। तत्थ ण सरवणे सण्णिवेसे गोवहुले नाम माहणे परिवसइ—अड्ढे जाव[3] बहुजणस्स अपरिभूए, रिउव्वेद जाव[4] वभण्णएसु परिव्वायएसु य नयेसु सुपरिनिट्ठिए यावि होत्था। तस्स ण गोवहुलस्स माहणस्स गोसाला यावि होत्था ।।

१६ तए ण से मखली मखे अण्णया कदायि भद्दाए भारियाए गुव्विणीए सद्धि चित्त-फलगहत्थगए मखत्तणेण अप्पाण भावेमाणे पुव्वाणुपुव्वि चरमाणे गामाणुगाम दूइज्जमाणे जेणेव सरवणे सण्णिवेसे जेणेव गोवहुलस्स माहणस्स गोसाला तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता गोवहुलस्स माहणस्स गोसालाए एगदेससि भडनि-क्खेव करेड, करेत्ता सरवणे सण्णिवेसे उच्च-नीय-मज्झिमाइ कुलाइ घरसमुदाणस्स भिक्खायरियाए अडमाणे वसहीए सव्वओ समता मग्गण-गवेसण करेइ, वसहीए सव्वओ समंता मग्गण-गवेसण करेमाणे अण्णत्थ वसहिं अलभमाणे तस्सेव गोवहुलस्स माहणस्स गोसालाए एगदेससि वासावास उवागए ।।

१७ तए णं सा भद्दा भारिया नवण्ह मासाण बहुपडिपुण्णाण अद्धट्ठमाण य राइदियाण वीतिक्कताण सुकुमालपाणिपाय जाव[1] पडिरूवग दारग पयाया ।।

१८ तए ण तस्स दारगस्स अम्मापियरो एक्कारसमे दिवसे वीतिक्कते[5] •निव्वत्ते असुइजायकम्मकरणे सपत्ते° 'वारसमे दिवसे'[6] अयमेयारूव गोण्ण गुणनिप्फन्न नामधेज्ज करेंति—जम्हा ण अम्ह इमे दारए गोवहुलस्स माहणस्स गोसालाए जाए त होउ ण अम्ह इमस्स दारगस्स नामधेज्ज गोसाले-गोसाले त्ति। तए णं तस्स दारगस्स अम्मापितरो नामधेज्ज करेंति गोसालें ति ।।

१९ तए ण से गोसाले दारए उम्मुक्कबालभावे विण्णय[8]-परिणयमेत्ते जोव्वणगमणु प्पत्ते सयमेव पाडिएक्क[9] चित्तफलगं करेइ, करेत्ता चित्तफलगहत्थगए मखत्तणेण अप्पाण भावेमाणे विहरइ ।।

---

१ ओ० सू० १५।
२ ओ० सू० १।
३ भ० २।९४।
४. भ० २।२४।
५ भ० ११।१३४।
६ स० पा०—वीतिक्कते जाव वारसमे।
७ वारसाहदिवसे (अ, क, ख, ता, ब), वारसहे दिवसे (म), वारसाहे दिवसे (स); द्रष्टव्यम्—भ० ११।१५३ सूत्रस्य पादटिप्पणम्।
८ विण्णाय (अ, स)।
९. पडिएक्क (क, ता, ब)।

भगवओ विहार-पदं

२० तेणं कालेणं तेणं समएणं अहं गोयमा ! तीसं वासाइं अगारवासमज्झावसित्ता[1] अम्मा-पिईहिं देवत्तगएहिं[2] समत्तपइण्णे एवं जहा भावणाए जाव[3] एगं देवदूसमादाय मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइए[4] ॥

२१ तए णं अहं गोयमा ! पढमं वासं अद्धमासं अद्धमासेणं खममाणे अट्ठियगामं निस्साए पढमं अंतरवासं[5] वासावासं उवागए[6]। दोच्चं वासं मासं मासेणं खममाणे पुव्वाणुपुव्विं चरमाणे गामाणुगामं दूइज्जमाणे जेणेव रायगिहे नगरे, जेणेव नालंदा बाहिरिया, जेणेव तंतुवायसाला, तेणेव उवागच्छामि, उवागच्छित्ता अहापडिरूवं ओग्गहं ओगिण्हामि, ओगिण्हित्ता तंतुवायसालाए एगदेसंसि[7] वासावासं उवागए ॥

पढम-मासखमण-पदं

२२ तए णं अहं गोयमा ! पढमं मासखमणं उवसंपज्जित्ताणं विहरामि ॥

२३. तए णं से गोसाले मंखलिपुत्ते चित्तफलगहत्थगए मंखत्तणेणं अप्पाणं भावेमाणे पुव्वाणुपुव्विं चरमाणे गामाणुगामं[8] दूइज्जमाणे जेणेव रायगिहे नगरे, जेणेव नालंदा बाहिरिया, जेणेव तंतुवायसाला, तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता तंतुवायसालाए एगदेसंसि भंडनिक्खेवं करेइ, करेत्ता रायगिहे नगरे उच्च-नीय[9]-•मज्झिमाइं कुलाइं घरसमुदाणस्स भिक्खायरियाए अडमाणे वसहीए सव्वओ समंता मग्गण-गवेसणं करेइ, वसहीए सव्वओ समंता मग्गण-गवेसणं करेमाणे° अण्णत्थ कत्थ वि वसहिं अलभमाणे तीसे य तंतुवायसालाए एगदेसंसि वासावासं उवागए, जत्थेव णं अहं गोयमा !

२४ तए णं अहं गोयमा ! पढम-मासक्खमणपारणगंसि तंतुवायसालाओ पडिनिक्खमामि, पडिनिक्खमित्ता नालंदं[10] बाहिरियं मज्झंमज्झेणं[11] निग्गच्छामि, निग्गच्छित्ता जेणेव रायगिहे नगरे तेणेव उवागच्छामि, उवागच्छित्ता रायगिहे नगरे

---

१ आगारवासमज्झे वसित्ता (अ, ख, व, म, स), अगारवासमज्झे वसित्ता (क), अगारवासे वसित्ता (ता), अगारवास—गृहवासमध्युष्य इति वृत्तिगतव्याख्यानुसारेण प्रस्तुतपाठः स्वीकृतः।

२ देवत्तिगएहिं (क, ख, ता म); देवत्तेगतेहिं (व, स)।

३. आयारचूला १५।२६-२९।

४ पव्वइत्तए (ता, स)।

५ अंतरावासं (क, म, वृपा)।

६ उवगए (ता)।

७ एगदेसमि (व)।

८ जाव (अ, क, ख, ता, व, म, स)।

९ सं० पा०—नीय जाव अण्णत्थ।

१० नालदा (अ)।

११ मज्झेणं २ (क, ख, ता, व, म)।

उच्च-नीय[1]-•मज्झिमाइ कुलाइ घरसमुदाणस्स भिक्खायरियाए° अडमाणे विजयस्स गाहावइस्स गिह अणुपविट्ठे ॥

२५ तए ण से विजए गाहावई मम एज्जमाण पासइ, पासित्ता हट्ठतुट्ठ[2]•चित्तमाणदिए णदिए पीइमणे परमसोमणस्सिए हरिसवसविसप्पमाणहियए° खिप्पामेव आसणाओ अब्भुट्ठेइ, अब्भुट्ठेत्ता पायपीढाओ पच्चोरुहइ, पच्चोरुहित्ता पाउयाओ ओमुयइ, ओमुइत्ता एगसाडिय उत्तरासंग करेइ, करेत्ता अजलिमउलियहत्थे मम सत्तट्ठपयाइ अणुगच्छइ, अणुगच्छित्ता मम तिक्खुत्तो आयाहिण-पयाहिण करेइ, करेत्ता मम वदइ नमसइ, वदित्ता नमसित्ता मम विउलेण असण-पाण-खाइम-साइमेण पडिलाभेस्सामित्ति तुट्ठे, पडिलाभेमाणे वि तुट्ठे, पडिलाभिते वि तुट्ठे ॥

२६ तए ण तस्स विजयस्स गाहावइस्स तेण दव्वसुद्धेण दायगसुद्धेण पडिगाहगसुद्धेण तिविहेण तिकरणसुद्धेण दाणेण मए पडिलाभिए समाणे देवाउए निवद्धे, ससारे परित्तीकए, गिहसि य से इमाइ पच दिव्वाइ पाउब्भूयाइ, त जहा—वसुधारा वुट्ठा, दसद्धवण्णे कुसुमे निवातिए, चेलुक्खेवे कए, आहयाओ देवदुदुभीओ, अतरा वि य ण आगासे अहो दाणे, अहो दाणे त्ति घुट्ठे ॥

२७. तए ण रायगिहे नगरे सिघाडग[3]-°तिग-चउक्क-चच्चर-चउम्मुह-महापह°-पहेसु वहुजणो अण्णमण्णस्स एवमाइक्खइ[4] •एव भासइ एव पण्णवेइ° एव परूवेइ—धन्ने ण देवाणुप्पिया ! विजये गाहावई, कयत्थे ण देवाणुप्पिया ! विजये गाहावई, कयपुण्णे ण देवाणुप्पिया ! विजये गाहावई, कयलक्खणे ण देवाणुप्पिया ! विजये गाहावई, कया ण लोया देवाणुप्पिया ! विजयस्स गाहावइस्स, सुलद्धे ण देवाणुप्पिया ! माणुस्सए जम्मजीवियफले विजयस्स गाहावइस्स, जस्स ण गिहसि तहारूवे साधू साधुरूवे पडिलाभिए समाणे इमाइ पंच दिव्वाइ पाउब्भूयाइ, त जहा—वसुधारा वुट्ठा जाव अहो दाणे, अहो दाणे त्ति घुट्ठे, त धन्ने कयत्थे कयपुण्णे कयलक्खणे, कया ण लोया, सुलद्धे माणुस्सए जम्मजीवियफले विजयस्स गाहावइस्स, विजयस्स गाहावइस्स ॥

२८ तए ण से गोसाले मखलिपुत्ते बहुजणस्स अतिए एयमट्ठ सोच्चा निसम्म समुप्पन्न-ससए समुप्पन्नकोउहल्ले जेणेव विजयस्स गाहावइस्स गिहे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता पासइ विजयस्स गाहावइस्स गिहसि वसुहार वुट्ठ, दसद्धवण्ण कुसुम निवडिय, मम च ण विजयस्स गाहावइस्स गिहाओ पडिनिक्खममाण पासइ, पासित्ता हट्ठतुट्ठे जेणेव ममं अतिए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता मम

---

१ स० पा०—नीय जाव अडमाणे ।

२. स० पा०—हट्ठतुट्ठ ।

३ सं० पा०—सिघाडग जाव पहेसु ।

४ स० पा०—एवमाइक्खइ जाव एव ।

तिक्खुत्तो आयाहिण-पयाहिण करेइ, करेत्ता मम वदइ नमसइ, वदित्ता नम-सित्ता मम एव वयासी—तुब्भे ण भते ! मम धम्मायरिया, अहण्णं तुब्भ धम्मतेवासी ॥

२९ तए ण अह गोयमा ! गोसालस्स मखलिपुत्तस्स एयमट्ठ नो आढामि, नो परि-जाणामि, तुसिणीए सचिट्ठामि ॥

दोच्च-मासखमण-पदं

३० तए ण अह गोयमा ! रायगिहाओ नगराओ पडिनिक्खमामि, पडिनिक्खमित्ता नालद बाहिरियं मज्झमज्झेण निग्गच्छामि, निग्गच्छित्ता जेणेव ततुवायसाला[1], तेणेव उवागच्छामि, उवागच्छित्ता दोच्च मासखमण[2] उवसपज्जित्ताण विहरामि ॥

३१. तए ण अह गोयमा ! दोच्च[3]-मासखमणपारणगसि[4] ततुवायसालाओ पडिनि-क्खमामि, पडिनिक्खमित्ता नालद बाहिरिय मज्झमज्झेण निग्गच्छामि, निग्ग-च्छित्ता जेणेव रायगिहे नगरे[5] •तेणेव उवागच्छामि, उवागच्छित्ता रायगिहे नगरे उच्च-नीय-मज्झिमाइ कुलाइ घरसमुदाणस्स भिक्खायरियाए° अडमाणे आणदस्स गाहावइस्स गिह अणुप्पविट्ठे ॥

३२ तए ण से आणदे गाहावई मम एज्जमाण पासइ, [6]•पासित्ता हट्ठतुट्ठचित्तमाणदिए णदिए पीइमणे परमसोमणस्सिए हरिसवसविसप्पमाणहियए खिप्पामेव आस-णाओ अब्भुट्ठेइ, अब्भुट्ठेत्ता पायपीढाओ पच्चोरुहइ, पच्चोरुहित्ता पाउयाओ ओमुयइ, ओमुइत्ता एगसाडिय उत्तरासग करेइ, करेत्ता अजलिमउलियहत्थे मम सत्तट्ठपयाइ अणुगच्छइ, अणुगच्छित्ता मम तिक्खुत्तो आयाहिण-पयाहिण करेइ, करेत्ता मम वदइ नमसइ, वदित्ता नमसित्ता मम विउलाए खज्जगविहीए पडिलाभेस्सामित्ति तुट्ठे, पडिलाभेमाणे वि तुट्ठे, पडिलाभिते वि तुट्ठे ॥

३३. तए ण तस्स आणदस्स गाहावइस्स तेण दव्वसुद्धेण दायगसुद्धेण पडिगाहगसुद्धेण तिविहेण तिकरणसुद्धेण दाणेण मए पडिलाभिए समाणे देवाउए निबद्धे, ससारे परित्तीकए, गिहसि य से इमाइ पच दिव्वाइ पाउब्भूयाइ, त जहा—वसुधारा वुट्ठा, दसद्धवण्णे कुसुमे निवातिए, चेलुक्खेवे कए, आहयाओ देवदुदुभीओ, अतरा वि य ण आगासे अहो दाणे, अहो दाणे त्ति घुट्ठे ॥

३४ तए ण रायगिहे नगरे सिघाडग-तिग-चउक्क-चच्चर-चउम्मुह-महापह-पहेसु

---

१. ततवाय° (ता) सर्वत्र ।
२. मासखवण (ता) ।
३ दोच्च (अ, क, ब, म, स) ।
४ मासक्खमणसि (ता, ब, म, स) ।
५ स० पा०—नगरे जाव अडमाणे ।
६ स० पा०—एव जहेव विजयस्स नवर मम विउलाए खज्जगविहीए पडिलाभेस्सामित्ति तुट्ठे सेस त चेव जाव तच्च ।

वहुजणो अण्णमण्णस्स एवमाइक्खइ एव भासइ एव पण्णवेइ एव परूवेइ—धन्ने णं देवाणुप्पिया ! आणदे गाहावई, कयत्थे णं देवाणुप्पिया ! आणदे गाहावई, कयपुण्णे णं देवाणुप्पिया ! आणदे गाहावई, कयलक्खणे णं देवाणुप्पिया ! आणदे गाहावई, कया णं लोया देवाणुप्पिया ! आणदस्स गाहावइस्स, सुलद्धे णं देवाणुप्पिया ! माणुस्सए जम्मजीवियफले आणदस्स गाहावइस्स, जस्स णं गिहंसि तहारूवे साधू साधुरूवे पडिलाभिए समाणे इमाइं पंच दिव्वाइं पाउब्भूयाइं, तं जहा वसुधारा वुट्ठा जाव अहो दाणे, अहो दाणे त्ति घुट्ठे, तं धन्ने कयत्थे कयपुण्णे कयलक्खणे, कया णं लोया, सुलद्धे माणुस्सए जम्मजीवियफले आणदस्स गाहावइस्स, आणदस्स गाहावइस्स ॥

३५ तए णं से गोसाले मखलिपुत्ते वहुजणस्स अंतिए एयमट्ठं सोच्चा निसम्म समुप्पन्नसंसए समुप्पन्नकोउहल्ले जेणेव आणदस्स गाहावइस्स गिहे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता पासइ आणदस्स गाहावइस्स गिहंसि वसुहारं वुट्ठं, दसद्धवण्णं कुसुमं निवडियं, ममं च णं आणदस्स गाहावइस्स गिहाओ पडिनिक्खममाणं पासइ, पासित्ता हट्ठतुट्ठे जेणेव ममं अंतिए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता ममं तिक्खुत्तो आयाहिण-पयाहिणं करेइ, करेत्ता ममं वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता ममं एवं वयासी—तुब्भे णं भंते ! ममं धम्मायरिया, अहण्णं तुब्भं धम्मंतेवासी ॥

३६ तए णं अहं गोयमा ! गोसालस्स मखलिपुत्तस्स एयमट्ठं नो आढामि, नो परिजाणामि, तुसिणीए संचिट्ठामि ॥

तच्च-मासखमण-पदं

३७ तए णं अहं गोयमा ! रायगिहाओ नगराओ पडिनिक्खमामि, पडिनिक्खमित्ता नालंदं वाहिरियं मज्झंमज्झेणं निग्गच्छामि, निग्गच्छित्ता जेणेव तंतुवायसाला, तेणेव उवागच्छामि, उवागच्छित्ता° तच्चं मासखमणं उवसंपज्जित्ताणं विहरामि ॥

३८ तए णं अहं गोयमा ! तच्च[1]-मासखमणपारणगंसि तंतुवायसालाओ पडिनिक्खमामि, पडिनिक्खमित्ता [2]•नालंदं वाहिरियं मज्झंमज्झेणं निग्गच्छामि, निग्गच्छित्ता जेणेव रायगिहे नगरे तेणेव उवागच्छामि, उवागच्छित्ता रायगिहे नगरे उच्च-नीय-मज्झिमाइं कुलाइं घरसमुदाणस्स भिक्खायरियाए° अडमाणे सुणंदस्स गाहावइस्स गिहं अणुपविट्ठे ॥

३९ तए णं से सुणंदे गाहावई [3]•ममं एज्जमाणं पासइ, पासित्ता हट्ठतुट्ठचित्तमाणदिए

---

१. तच्च (क, ख, व) ।
२. सं० पा०—तहेव जाव अडमाणे ।
३. सं० पा०—एवं जहेव विजयगाहावई नवरं सव्वकामगुणिएणं भोयणेणं पडिलाभेइ सेसं तं चेव जाव चउत्थं ।

णदिए पीइमणे परमसोमणस्सिए हरिसवसविसप्पमाणहियए खिप्पामेव आसणाओ अब्भुट्ठेइ अब्भुट्ठेत्ता पायपीढाओ पच्चोरुहइ, पच्चोरुहित्ता पाउयाओ ओमुयइ, ओमुइत्ता एगसाडियं उत्तरासंगं करेइ, करेत्ता अंजलिमउलियहत्थे ममं सत्तट्ठपयाइं अणुगच्छइ, अणुगच्छित्ता ममं तिक्खुत्तो आयाहिण-पयाहिणं करेइ, करेत्ता ममं वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता ममं विउलेणं सव्वकामगुणिएणं भोयणेणं पडिलाभेस्सामित्ति तुट्ठे, पडिलाभेमाणे वि तुट्ठे, पडिलाभिते वि तुट्ठे ॥

४० तए णं तस्स सुणंदस्स गाहावइस्स तेणं दव्वसुद्धेणं दायगसुद्धेणं पडिगाहगसुद्धेणं तिविहेणं तिकरणसुद्धेणं दाणेणं मए पडिलाभिए समाणे देवाउए निबद्धे, संसारे परित्तीकए, गिहंसि य से इमाइं पंच दिव्वाइं पाउब्भूयाइं, तं जहा—वसुधारा वुट्ठा, दसद्धवण्णे कुसुमे निवातिए, चेलुक्खेवे कए, आहयाओ देवदुंदुभीओ, अंतरा वि य णं आगासे अहो दाणे, अहो दाणे त्ति घुट्ठे ॥

४१. तए णं रायगिहे नगरे सिंघाडग-तिग-चउक्क-चच्चर-चउम्मुह-महापह-पहेसु बहुजणो अण्णमण्णस्स एवमाइक्खइ एवं भासइ एवं पण्णवेइ एवं परूवेइ—धन्ने णं देवाणुप्पिया! सुणंदे गाहावई, कयत्थे णं देवाणुप्पिया! सुणंदे गाहावई, कयपुण्णे णं देवाणुप्पिया! सुणंदे गाहावई, कयलक्खणे णं देवाणुप्पिया! सुणंदे गाहावई, कया णं लोया देवाणुप्पिया! सुणंदस्स गाहावइस्स, सुलद्धे णं देवाणुप्पिया! माणुस्सए जम्मजीवियफले सुणंदस्स गाहावइस्स, जस्स णं गिहंसि तहारूवे साधू साधुरूवे पडिलाभिए समाणे इमाइं पंच दिव्वाइं पाउब्भूयाइं, तं जहा—वसुधारा वुट्ठा जाव अहो दाणे, अहो दाणे त्ति घुट्ठे, तं धन्ने कयत्थे कयपुण्णे कयलक्खणे, कया णं लोया, सुलद्धे माणुस्सए जम्मजीवियफले सुणंदस्स गाहावइस्स, सुणंदस्स गाहावइस्स ॥

४२ तए णं से गोसाले मंखलिपुत्ते बहुजणस्स अंतिए एयमट्ठं सोच्चा निसम्म समुप्पन्नसंसए समुप्पन्नकोउहल्ले जेणेव सुणंदस्स गाहावइस्स गिहे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता पासइ सुणंदस्स गाहावइस्स गिहंसि वसुहारं वुट्ठं, दसद्धवण्णं कुसुमं निवडियं, ममं च णं सुणंदस्स गाहावइस्स गिहाओ पडिनिक्खममाणं पासइ, पासित्ता हट्ठतुट्ठे जेणेव ममं अंतिए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता ममं तिक्खुत्तो आयाहिण-पयाहिणं करेइ, करेत्ता ममं वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता ममं एवं वयासी—तुब्भे णं भंते! ममं धम्मायरिया, अहण्णं तुब्भं धम्मंतेवासी ॥

४३ तए णं अहं गोयमा! गोसालस्स मंखलिपुत्तस्स एयमट्ठं नो आढामि, नो परिजाणामि, तुसिणीए संचिट्ठामि ॥

चउत्थ-मासखमण-पद

४४ तए णं अहं गोयमा! रायगिहाओ नगराओ पडिनिक्खमामि, पडिनिक्खमित्ता

नालदं वाहिरियं मज्झंमज्झेण निग्गच्छामि, निग्गच्छित्ता जेणेव ततुवायसाला तेणेव उवागच्छामि, उवागच्छिता° चउत्थ मासखमण उवसपज्जित्ताण विहरामि ।।

४५. तीसे ण नालदाए वाहिरियाए अदूरसामते, एत्थ ण कोल्लाए नाम सण्णिवेसे होत्था—सण्णिवेसवण्णओ[1] । तत्थ ण कोल्लाए सण्णिवेसे वहुले नाम माहणे परिवसइ—अड्ढे जाव[2] वहुजणस्स अपरिभूए, रिउव्वेय जाव[3] वभण्णएसु परिव्वायएसु य नयेसु सुपरिनिट्ठिए यावि होत्था ।।

४६ तए ण से वहुले माहणे कत्तियचाउम्मासियपाडिवगसि विउलेण महुघयसजुत्तेण परमण्णेण माहणे आयामेत्था ।।

४७ तए ण अह गोयमा ! चउत्थ-मासखमणपारणगसि ततुवायसालाओ पडिनिक्खिमामि, पडिनिक्खमित्ता नालद वाहिरिय मज्झमज्झेण निग्गच्छामि, निग्गच्छित्ता जेणेव कोल्लाए सण्णिवेसे तेणेव उवागच्छामि, उवागच्छित्ता कोल्लाए मण्णिवेसे उच्च-नीय[4]-°मज्झिमाइ कुलाइ घरसमुदाणस्स भिक्खायरियाए° अडमाणे वहुलस्स माहणस्स गिह अणुप्पविट्ठे ।।

४८ तए ण से वहुले माहणे मम एज्जमाण [5]°पासइ, पासित्ता हट्ठतुट्ठचित्तमाणदिए णदिए पीइमणे परमसोमणस्सिए हरिसवसविसप्पमाणहियए खिप्पामेव आसणाओ अब्भुट्ठेइ, अब्भुट्ठेत्ता पायपीढाओ पच्चोरुहइ, पच्चोरुहित्ता पाउयाओ ओमुयइ, ओमुइत्ता एगसाडिय उत्तरासग करेइ, करेत्ता अजलिमउलियहत्थे मम सत्तट्ठपयाइ अणुगच्छइ, अणुगच्छित्ता मम तिक्खुत्तो आयाहिण-पयाहिण करेइ, करेत्ता मम वदइ नमसइ, वदित्ता नमसित्ता मम विउलेण महुघयसजुत्तेण परमण्णेण पडिलाभेस्सामित्ति तुट्ठे, पडिलाभेमाणे वि तुट्ठे, पडिलाभिते वि तुट्ठे ।।

४९ तए ण तस्स वहुलस्स माहणस्स तेण दव्वसुद्धेण दायगसुद्धेण पडिगाहगसुद्धेण तिविहेण तिकरणसुद्धेण दाणेण मए पडिलाभिए समाणे देवाउए निवद्धे, ससारे परित्तीकए, गिहसि य से इमाइ पच दिव्वाइ पाउब्भूयाइ, त जहा—वसुधारा वुट्ठा, दसद्धवण्णे कुसुमे निवातिए, चेलुक्खेवे कए, आहयाओ देवदुदुभीओ, अतरा वि य ण आगासे अहो दाणे, अहो दाणे त्ति घुट्ठे ।।

५० तए ण रायगिहे नगरे सिंघाडग-तिग-चउक्क-चच्चर-चउम्मुह-महापह-पहेसु

---

१. भ० १५।१५ ।

२ भ० २।९४ ।

३ भ० २।२४ ।

४. स० पा०—नीय जाव अडमाणे ।

५ स० पा०—तहेव जाव मम विउलेण महुघयसजुत्तेण परमण्णेणं पडिलाभेस्सामीति तुट्ठे सेस जहा विजयस्स जाव वहुले माहणे २ ।

बहुजणो अण्णमण्णस्स एवमाइक्खइ एवं भासइ एवं पण्णवेइ एवं परूवेइ—धन्ने णं देवाणुप्पिया! बहुले माहणे, कयत्थे णं देवाणुप्पिया! बहुले माहणे, कयपुण्णे णं देवाणुप्पिया! बहुले माहणे, कयलक्खणे णं देवाणुप्पिया! बहुले माहणे, कया णं लोया देवाणुप्पिया! बहुलस्स माहणस्स, सुलद्धे णं देवाणुप्पिया! माणुस्सए जम्मजीवियफले बहुलस्स माहणस्स, जस्स णं गिहंसि तहारूवे साधू साधुरूवे पडिलाभिए समाणे इमाइं पंच दिव्वाइं पाउब्भूयाइं, तं जहा—वसुधारा वुट्ठा जाव अहो दाणे, अहो दाणे त्ति घुट्ठे, तं धन्ने कयत्थे कयपुण्णे कयलक्खणे, कया णं लोया, सुलद्धे माणुस्सए जम्मजीवियफले बहुलस्स माहणस्स, बहुलस्स माहणस्स° ॥

५१ तए णं से गोसाले मंखलिपुत्ते ममं तंतुवायसालाए अपासमाणे रायगिहे नगरे सब्भिंतरबाहिरियाए ममं सव्वओ समंता मग्गण-गवेसणं करेइ, ममं कत्थवि[1] सुतिं वा खुतिं वा पवत्तिं वा अलभमाणे जेणेव तंतुवायसाला तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता साडियाओ य पाडियाओ[2] य कुंडियाओ य वाहणाओ[3] य चित्तफलगं च माहणे आयामेइ, आयामेत्ता सउत्तरोट्ठं भंडं[4] कारेइ, कारेत्ता तंतुवायसालाओ पडिनिक्खमइ, पडिनिक्खमित्ता नालंदं बाहिरियं मज्झंमज्झेणं निग्गच्छइ, निग्गच्छित्ता जेणेव कोल्लाए सण्णिवेसे तेणेव उवागच्छइ ॥

५२ तए णं तस्स कोल्लागस्स सण्णिवेसस्स बहिया बहुजणो अण्णमण्णस्स एवमाइक्खइ जाव परूवेइ—धन्ने णं देवाणुप्पिया! बहुले माहणे, [5]°कयत्थे णं देवाणुप्पिया! बहुले माहणे, कयपुण्णे णं देवाणुप्पिया! बहुले माहणे, कयलक्खणे णं देवाणुप्पिया! बहुले माहणे, कया णं लोया देवाणुप्पिया! बहुलस्स माहणस्स, सुलद्धे णं देवाणुप्पिया! माणुस्सए जम्म°जीवियफले बहुलस्स माहणस्स, बहुलस्स माहणस्स ॥

गोसालस्स सिस्सरूवेण अंगीकरण-पदं

५३. तए णं तस्स गोसालस्स मंखलिपुत्तस्स बहुजणस्स अंतियं एयमट्ठं सोच्चा निसम्म अयमेयारूवे अज्झत्थिए[6] °चिंतिए पत्थिए मणोगए संकप्पे° समुप्पज्जित्था—जारिसिया णं ममं धम्मायरियस्स धम्मोवदेसगस्स समणस्स भगवओ महावीरस्स इड्ढी जुती[7] जसे बले वीरिए पुरिसक्कार-परक्कमे लद्धे पत्ते अभिसमण्णागए, नो खलु अत्थि तारिसिया अण्णस्स कस्सइ तहारूवस्स समणस्स वा माहणस्स वा इड्ढी जुती[8] °जसे बले वीरिए पुरिसक्कार°-परक्कमे लद्धे पत्ते

---

१. कत्थति (अ, क, ख, ब, म), कत्थइ (ता)।
२ × (ता), भडियाओ (वृपा)।
३ पाहणाओ (क, ख, ता, ब, म)।
४. मुंड (अ, ता)।
५. सं० पा०—तं चेव जाव जीवियफले।
६ सं० पा०—अज्झत्थिए जाव समुप्पज्जित्था।
७ जुत्ती (क, ब, म)।
८ सं० पा०—जती जाव परक्कमे।

अभिसमण्णागए, तं निस्संदिद्धं[1] णं एत्थं[2] ममं धम्मायरिए धम्मोवदेसए समणे भगवं महावीरे भविस्सतीति कट्टु कोल्लाए सण्णिवेसे सब्भिंतरबाहिरिए[3] ममं सव्वओ समंता मग्गण-गवेसणं करेइ, ममं सव्वओ[4] °समंता मग्गण-गवेसणं° करेमाणे 'कोल्लागस्स सण्णिवेसस्स'[5] बहिया पणियभूमीए मए सद्धिं अभिसमण्णागए ॥

५४ तए णं से गोसाले मंखलिपुत्ते हट्ठतुट्ठे ममं तिक्खुत्तो आयाहिण-पयाहिणं[6] °करेइ, करेत्ता ममं वंदइ नमंसइ, वंदित्ता° नमंसित्ता एवं वयासी—तुब्भे णं भंते ! ममं धम्मायरिया, अहण्णं तुब्भं अंतेवासी ॥

५५. तए णं अहं गोयमा ! गोसालस्स मंखलिपुत्तस्स एयमट्ठं पडिसुणेमि ॥

५६ तए णं अहं गोयमा ! गोसालेणं मंखलिपुत्तेणं सद्धिं पणियभूमीए छव्वासाइं लाभं अलाभं सुहं दुक्खं सक्कारमसक्कारं पच्चणुब्भवमाणे अणिच्चजागरियं[7] विहरित्था ॥

तिलथंभय-पदं

५७ तए णं अहं गोयमा ! अण्णया कदायि पढमसरदकालसमयंसि अप्पवुट्ठिकायंसि गोसालेणं मंखलिपुत्तेणं सद्धिं सिद्धत्थगामाओ नगराओ कुम्मगामं नगरं संपट्ठिए विहाराए। तस्स णं सिद्धत्थगामस्स नगरस्स कुम्मगामस्स नगरस्स य अंतरा, एत्थ णं महं एगे तिलथंभए पत्तिए पुप्फिए हरियगरेरिज्जमाणे सिरीए अतीव-अतीव उवसोभेमाणे-उवसोभेमाणे चिट्ठइ ॥

५८ तए णं से गोसाले मंखलिपुत्ते तं तिलथंभगं पासइ, पासित्ता ममं वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी—एस णं भंते ! तिलथंभए किं निप्फज्जिस्सइ नो निप्फज्जिस्सइ ? एए य सत्त तिलपुप्फजीवा उद्दाइत्ता-उद्दाइत्ता कहिं गच्छिहिंति ? कहिं उववज्जिहिंति ?

तए णं अहं गोयमा ! गोसालं मंखलिपुत्तं एवं वयासी—गोसाला ! एस णं तिलथंभए निप्फज्जिस्सइ, नो न निप्फज्जिस्सइ। एते य सत्ततिलपुप्फजीवा उद्दाइत्ता-उद्दाइत्ता एयस्स चेव तिलथंभगस्स एगाए तिलसंगलियाए[8] सत्त तिला पच्चायाइस्संति ॥

५९ तए णं से गोसाले मंखलिपुत्ते ममं एवं आइक्खमाणस्स एयमट्ठं नो सद्दहइ, नो पत्तियइ, नो रोएइ, एयमट्ठं असद्दहमाणे, अपत्तियमाणे, अरोएमाणे, ममं पणिहाए[9]

---

१ निस्संदिद्ध (ख, म), निस्संदिद्धं (स)।
२ एत्थ (अ, ता, व, म)।
३. सब्भतर° (अ, ख)।
४ सं० पा० —सव्वओ जाव करेमाणे।
५ कोल्लागसण्णिवेसस्स (अ, स)।
६ सं० पा०—पयाहिणं जाव नमंसित्ता।
७ कुर्वन्निति वाक्यशेष (वृ)।
८ °संग° (ता)।
९ पणिहाय (ता)।

'अयं ण मिच्छावादी भवउ' त्ति कट्टु मम अतियाओ सणियं-सणियं पच्चोसक्कइ, पच्चोसक्कित्ता जेणेव से तिलथंभए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता त तिलथभगं सलेट्ठुयाय चेव उप्पाडेइ, उप्पाडेत्ता एगते एडेइ। तक्खणमेत्त च णं गोयमा! दिव्वे अब्भवद्दलए पाउब्भूए। तए ण से दिव्वे अब्भवद्दलए खिप्पामेव पतणतणाति[1], खिप्पामेव पविज्जुयाति, खिप्पामेव नच्चोदग णातिमट्टिय पविरलपफुसिय[2] रयरेणुविणासणं दिव्व सलिलोदगं वास वासति, जेण से तिलथभए आसत्थे पच्चायाते वद्धमूले, तत्थेव पतिट्ठिए। ते य सत्त तिलपुप्फजीवा उद्दाइत्ता-उद्दाइत्ता तस्सेव तिलथभगस्स एगाए तिलसगलियाए सत्त तिला पच्चायाता॥

वेसियायण-वालतवस्सि-पदं

६०. तए ण अहं गोयमा! गोसालेण मखलिपुत्तेण सद्धिं जेणेव कुम्मग्गामे नगरे तेणेव उवागच्छामि। तए णं तस्स कुम्मग्गामस्स नगरस्स वहिया वेसियायणे नाम वालतवस्सी छट्ठंछट्ठेणं अणिक्खित्तेणं तवोकम्मेण उड्ढं वाहाओ पगिज्झिय-पगिज्झिय सूराभिमुहे आयावणभूमीए आयावेमाणे विहरइ। आइच्चतेयतवियाओ य से छप्पदीओ सव्वओ समता अभिनिस्सवति, पाण-भूय-जीव-सत्त-दयट्ठयाए च ण पडियाओ-पडियाओ तत्थेव-तत्थेव[3] भुज्जो-भुज्जो पच्चोरुभेइ॥

६१ तए णं से गोसाले मंखलिपुत्ते वेसियायण वालतवस्सि पासइ, पासित्ता मम अतियाओ सणियं-सणिय पच्चोसक्कइ, पच्चोसक्कित्ता जेणेव वेसियायणे वालतवस्सी तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता वेसियायण वालतवस्सि एव वयासी—कि भव मुणी? मुणिए? उदाहु जूयासेज्जायरए?

६२. तए णं से वेसियायणे वालतवस्सी गोसालस्स मंखलिपुत्तस्स एयमट्ठ नो आढाति, नो परियाणति, तुसिणीए सचिट्ठइ॥

६३. तए णं से गोसाले मंखलिपुत्ते वेसियायणं वालतवस्सि दोच्चं पि तच्चं पि एव वयासी—कि भव मुणी? मुणिए? 'उदाहु जूयासेज्जायरए?'[4]

६४. तए ण से वेसियायणे वालतवस्सी गोसालेणं मखलिपुत्तेण दोच्चं पि तच्च पि एवं वुत्ते समाणे आसुरुत्ते[5] •रुट्ठे कुविए चडिक्किए° मिसिमिसेमाणे आयावणभूमीओ पच्चोरुभइ, पच्चोरुभित्ता तेयासमुग्घाएणं समोहण्णइ, समोहणित्ता सत्तट्ठपयाइ पच्चोसक्कइ, पच्चोसक्कित्ता गोसालस्स मंखलिपुत्तस्स वहाए सरीरगसि तेयं निसिरइ॥

---

१. °तणाए (अ, ख), °तणाएति (स)।
२. °पप्फुसिय (अ, व)।
३ तत्थेवा २ (क, ता, व, म)।
४. जाव सेज्जायरए (अ, क, ख, ता, व, म, स)
५. स० पा०—आसुरुत्ते जाव मिसि°।

६५ तए ण अह गोयमा ! गोसालस्स मंखलिपुत्तस्स अणुकपणट्ठयाए वेसियायणस्स बालतवस्सिस्स उसिणतेयपडिसाहरणट्ठयाए[1] एत्थ णं अतरा सीयलिय तेयलेस्स निसिरामि, जाए सा मम सीयलियाए तेयलेस्साए वेसियायणस्स बालतवस्सिस्स उसिणा[2] तेयलेस्सा पडिहया ॥

६६ तए ण से वेसियायणे बालतवस्सी मम सीयलियाए तेयलेस्साए साउसिण[3] तेयलेस्स पडिहय जाणित्ता गोसालस्स मखलिपुत्तस्स सरीरगस्स किंचि आबाह वा वाबाह वा छविच्छेद वा अकीरमाण पासित्ता साउसिण तेयलेस्स पडिसा-हरइ, पडिसाहरित्ता मम एव वयासी—से गतमेय भगव ! गत-गतमेय भगव !

६७. तए ण गोसाले मखलिपुत्ते मम एव वयासी —किं ण भते ! एस[4] जूयासिज्जा-यरए तुब्भे एव वयासी—से गतमेय भगव ! गत-गतमेय भगव ?

६८ तए ण अह गोयमा ! गोसाल मखलिपुत्त एव वयासी—तुम ण गोसाला ! वेसियायण बालतवस्सि पाससि, पासित्ता मम अतियाओ सणिय-सणिय पच्चोसक्कसि, जेणेव वेसियायणे बालतवस्सी तेणेव उवागच्छसि, उवागच्छित्ता वेसियायण वालतवस्सि एव वयासी—कि भव मुणी ? मुणिए ? उदाहु जूयासेज्जायरए ? तए ण से वेसियायणे बालतवस्सी तव एयमट्ठ नो आढाति, नो परिजाणति, तुसिणीए सचिट्ठइ। तए ण तुम गोसाला ! वेसियायण बाल-तवस्सि दोच्च पि तच्च पि एव वयासी—किं भव मुणी ? मुणिए ? 'उदाहु जूयासेज्जायरए ?'[5] तए ण से वेसियायणे बालतवस्सी तुम दोच्च पि तच्च पि एव वुत्ते समाणे आसुरुत्ते जाव पच्चोसक्कति, पच्चोसक्कित्ता तव वहाए सरीरगसि तेयलेस्स निस्सिरइ। तए ण अह गोसाला ! तव अणुकपणट्ठयाए वेसियायणस्स बालतवस्सिस्स उसिणतेयपडिसाहरणट्ठयाए[6] एत्थ ण अतरा सीयलिय तेयलेस्स निसिरामि[7], °जाए सा मम सीयलियाए तेयलेस्साए वेसि-यायणस्स बालतवस्सिस्स उसिणा तेयलेस्सा पडिहया। तए ण से वेसियायणे बालतवस्सी मम सीयलियाए तेयलेस्साए साउसिण तेयलेस्स° पडिहय जाणित्ता तव य सरीरगस्स किंचि आवाह वा वाबाह वा छविच्छेद वा अकीरमाण

---

१. तेयपडि० (क, म), सा तेय० (ख, व, स), साउसिणतेय० (ता), अत्र अनेके पाठभेदा दृश्यन्ते। शीतलतेजोलेश्यासन्दर्भे 'उसिण' पदमावश्यकमस्ति। ६८ सूत्रे अस्यैव प्रस-ङ्गस्य पुनरुक्तौ 'ता' प्रतौ 'उसिणतेय' इति पाठो दृश्यते। तेनापि 'उसिण' पदस्य पुष्टिर्जायते।

२ उमुणा (क, ख, ता, व), साउसिणा (स)।

३ त उसिण (अ, ता), सीओसिण (स)।

४ एसे (ख, ता, व)।

५ जाव सेज्जायरए (अ, क, ख, ता, व, स)।

६ सायतेय० (अ, ख, व), तेय० (क, म), सीओसिणतेय० (स)।

७. स० पा०—निसिरामि जाव पडिहय।

पासित्ता साउसिणं तेयलेस्स पडिसाहरति, पडिसाहरित्ता ममं एव वयासी—से गतमेय भगव ! गत-गतमेय भगव !

६९ तए ण से गोसाले मखलिपुत्ते मम अतियाओ एयमट्ठ सोच्चा निसम्म भीए[1] •तत्थे तसिए उव्विग्गे° सजायभए मम वदइ नमसइ, वदित्ता नमसित्ता एव वयासी—कहण्ण भते ! सखित्तविउलतेयलेस्से भवति ?

७० तए ण अह गोयमा ! गोसाल मखलिपुत्त एव वयासी—जेण गोसाला ! एगाए सणहाए कुम्मासपिंडियाए एगेण य वियडासएण छट्ठछट्ठेण अणिक्खित्तेण तवोकम्मेण उड्ढ वाहाओ पगिज्झिय-पगिज्झिय[2] •सूराभिमुहे आयावणभूमीए आयावेमाणे° विहरइ। से ण अतो छण्ह मासाण सखित्तविउलतेयलेस्से भवइ ॥

७१. तए ण से गोसाले मखलिपुत्ते मम एयमट्ठ सम्म विणएण पडिसुणेति ॥

तिलथंभय-निप्फत्तीए गोसालस्स अवक्कमण-पदं

७२. तए ण अह गोयमा ! अण्णदा कदायि गोसालेण मखलिपुत्तेण सद्धि कुम्मगामाओ नगराओ सिद्धत्थग्गाम नगर सपट्ठिए[3] विहाराए। जाहे य मो तं देसं हव्वमागया जत्थ ण से तिलथभए। तए ण से गोसाले मखलिपुत्ते मम एवं वयासी—तुब्भे ण भते। तदा मम एवमाइक्खह जाव परूवेह—गोसाला ! एस ण तिलथभए निप्फज्जिस्सइ, नो न निप्फज्जिस्सइ। [4]•एते य सत्त तिल-पुप्फजीवा उद्दाइत्ता-उद्दाइत्ता एयस्स चेव तिलथभगस्स एगाए तिलसगलियाए सत्त तिला° पच्चायाइस्सति, तण्ण मिच्छा। इम च ण पच्चक्खमेव दीसइ—एस ण से तिलथभए नो निप्फन्ने, अन्निप्फन्नमेव। ते य सत्त तिलपुप्फजीवा उद्दाइत्ता-उद्दाइत्ता नो एयस्स चेव तिलथभगस्स एगाए तिलसगलियाए सत्त तिला पच्चायाया ॥

७३. तए ण अह गोयमा ! गोसाल मखलिपुत्त एवं वयासी—तुम ण गोसाला ! तदा मम एवमाइक्खमाणस्स जाव परूवेमाणस्स एयमट्ठ नो सद्दहसि, नो पत्तियसि, नो रोएसि, एयमट्ठ असद्दहमाणे, अपत्तियमाणे, अरोएमाणे, मम पणिहाए 'अयण्ण मिच्छावादी भवउ' त्ति कट्टु मम अतियाओ सणिय-सणिय पच्चो-सक्कसि, पच्चोसक्कित्ता जेणेव से तिलयभए तेणेव उवागच्छसि, उवागच्छित्ता[5] •त तिलथंभग सलेट्ठुयाय चेव उप्पाडेसि, उप्पाडेत्ता• एगतमते एडेसि। तक्ख-णमेत्तं गोसाला ! दिव्वे अब्भवद्दलए पाउब्भूए। तए ण से दिव्वे अब्भवद्दलए

---

१. स० पा०—भीए जाव संजायभए।
२ स० पा०—पगिज्झिय जाव विहरइ।
३ मपत्थिए (अ, क, ख, व, म), पत्थिए (ता)।
४ स० पा—तं चेव जाव पच्चायाइस्सति।
५ स० पा०—उवागच्छित्ता जाव एगतमते।

खिप्पामेव पतणतणाति, खिप्पामेव [1]•पविज्जुयाति, खिप्पामेव नच्चोदग णाति-मट्टिय पविरलपफुसिय रयरेणुविणासण दिव्व सलिलोदग वास वासति, जेण से तिलथंभए आसत्थे पच्चायाते बद्धमूले, तत्थेव पतिट्ठिए । ते य सत्त तिलपुप्फ-जीवा उद्दाइत्ता-उद्दाइत्ता तस्स चेव तिलथभगस्स एगाए तिलसगलियाए सत्त तिला पच्चायाया। त एस ण गोसाला ! से तिलथभए निप्फन्ने, नो अनिप्फन्न-मेव। ते य सत्त तिलपुप्फजीवा उद्दाइत्ता-उद्दाइत्ता एयस्स चेव तिलथभयस्स एगाए तिलसगलियाए सत्त तिला पच्चायाया। एव खलु गोसाला ! वणस्सइ-काइया पउट्टपरिहार परिहरति ॥

७४ तए ण से गोसाले मखलिपुत्ते मम एवमाइक्खमाणस्स जाव परूवेमाणस्स एयमट्ठ नो सद्दहइ, नो पत्तियइ, नो रोएइ, एयमट्ठ असद्दहमाणे अपत्तियमाणे[2] अरोए-माणे जेणेव से तिलथभए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता ताओ तिलथभयाओ त तिलसगलिय खुड्डइ, खुड्डित्ता करयलसि सत्त तिले पप्फोडेइ ॥

७५. तए ण तस्स गोसालस्स मखलिपुत्तस्स ते सत्त तिले गणमाणस्स अयमेयारूवे अज्झत्थिए[3] •चिंतिए पत्थिए मणोगए सकप्पे° समुप्पज्जित्था – एव खलु सव्वजीवा वि पउट्टपरिहार परिहरति—'एस ण गोयमा ! गोसालस्स मखलि-पुत्तस्स पउट्टे'[4], एस ण गोयमा ! गोसालस्स मंखलिपुत्तस्स मम अतियाओ आयाए अवक्कमणे पण्णत्ते ॥

गोसालस्स तेयलेस्सुप्पत्ति-पद

७६. तए ण से गोसाले मखलिपुत्ते एगाए सणहाए कुम्मासपिडियाए एगेण य वियडासएण छट्ठछट्ठेण अणिक्खित्तेण तवोकम्मेण उड्ढ बाहाओ पगिज्झिय-पगिज्झिय[5] •सूराभिमुहे आयावणभूमीए आयावेमाणे° विहरइ। तए ण से गोसाले मखलिपुत्ते अतो छण्ह मासाण सखित्तविउलतेयलेस्से जाए ॥

गोसालस्स पुव्वकहा-उवसहार-पदं

७७. तए ण तस्स गोसालस्स मंखलिपुत्तस्स अण्णदा कदायि इमे छ दिसाचरा अतिय पाउब्भवित्था, त जहा—साणे[6], [7]•कलदे, कणियारे, अच्छिदे, अग्गिवेसायणे, अज्जुणे, गोमायुपुत्ते । तए ण ते छ दिसाचरा अट्ठविह पुव्वगय मग्गदसम सएहि-सएहि मतिदंसणेहि निज्जूहति, निज्जूहित्ता गोसाल मखलिपुत्त उवट्ठाइंसु।

---

१ सं० पा०—त चेव जाव तस्स ।
२ जाव (अ, क, ख, ता, ब, म, स) ।
३ सं० पा० —अज्झत्थिए जाव समुप्पज्जित्था ।
४. × (ता) ।
५ सं० पा०—पगिज्झिय जाव विहरइ ।
६ साणे (ब) ।
७ सं० पा०—[illegible] जाव अज्जुणे ।

तए ण से गोसाले मखलिपुत्ते तेण अट्ठगस्स महानिमित्तस्स केणइ उल्लोय-मेत्तेण सव्वेसि पाणाण, सव्वेसि भूयाण, सव्वेसि जीवाण, सव्वेसिं सत्ताण इमाइं छ अणइक्कमणिज्जाइ वागरणाइ वागरेति, त जहा—

लाभ अलाभ सुह दुक्ख, जीवियं मरण तहा।

तए ण से गोसाले मखलिपुत्ते तेण अट्ठगस्स महानिमित्तस्स केणइ उल्लोयमेत्तेणं सावत्थीए नगरीए अजिणे जिणप्पलावी, अणरहा अरहप्पलावी, अकेवली केवलिप्पलावी, असव्वण्णू सव्वण्णुप्पलावी°, अजिणे जिणसद्द पगासेमाणे विहरइ, त नो खलु गोयमा! गोसाले मखलिपुत्ते जिणे जिणप्पलावी[1], •अरहा अरहप्पलावी, केवली केवलिप्पलावी, सव्वण्णू सव्वण्णुप्पलावी, जिणे° जिणसद्द पगासेमाणे विहरइ, गोसाले ण मखलिपुत्ते अजिणे जिणप्पलावी[2], •अणरहा अरहप्पलावी, अकेवली केवलिप्पलावी, असव्वण्ण सव्वण्णप्पलावी, अजिणे जिणसद्द° पगासेमाणे विहरइ ॥

७८ तए णं सा महतिमहालया महच्चपरिसा [3]•समणस्स भगवओ महावीरस्स अतिए एयमट्ठ सोच्चा निसम्म हट्ठतुट्ठा समण भगव महावीर वदइ नमसइ, वदित्ता नमसित्ता जामेव दिस पाउब्भूया तामेव दिस° पडिगया ॥

गोसालस्स अमरिस-पदं

७९ तए ण सावत्थीए नगरीए सिघाडग[4]-•तिग-चउक्क-चच्चर-चउम्मुह-महापह-पहेसु° वहुजणो अण्णमण्णस्स एवमाइक्खइ जाव परूवेइ—जण्ण देवाणुप्पिया! गोसाले मखलिपुत्ते जिणे जिणप्पलावी जाव जिणे जिणसद्द पगासेमाणे विहरइ त मिच्छा। समणे भगवं महावीरे एवमाइक्खइ जाव परूवेइ—एव खलु तस्स गोसालस्स मखलिपुत्तस्स मखली नाम मखे पिता होत्था। तए ण तस्स मखस्स एव चेव त सव्व भाणियव्व जाव[5] अजिणे जिणसद्द पगासेमाणे विहरइ, त नो खलु गोसाले मखलिपुत्ते जिणे जिणप्पलावी जाव विहरइ, गोसाले मखलिपुत्ते अजिणे जिणप्पलावी जाव विहरइ, समणे भगव महावीरे जिणे जिणप्पलावी जाव जिणसद्द पगासेमाणे विहरइ ॥

८०. तए ण से गोसाले मखलिपुत्ते वहुजणस्स अतिय एयमट्ठ सोच्चा निसम्म आसुरुत्ते[6] •रुट्ठे कुविए चडिक्किए° मिसिमिसेमाणे आयावणभूमीओ पच्चोरुहइ, पच्चो-रुहित्ता सावत्थिं नगरिं मज्झमज्झेण[7] जेणेव हालाहलाए कुभकारीए कुभकारा-

---

१. स० पा०—जिणप्पलावी जाव जिणसद्द।
२. स० पा०—जिणप्पलावी जाव पगासेमाणे।
३ सं० पा०—जहा मिवे जाव पडिगया।
४ स० पा०—सिंघाडग जाव वहुजणो।
५. भ० १५।१४-७६।
६. स० पा०—आसुरुत्ते जाव मिसि०।
७ लेखसक्षेपकरणेन 'निग्गच्छइ, निग्गच्छित्ता' इति पाठो न दृश्यते। द्रष्टव्यम्—१५।२४।

वणे[1] तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता हालाहलाए कुंभकारीए कुंभकारावणंसि[2] आजीवियसंघसंपरिवुडे[3] महया अमरिसं वहमाणे एवं चावि विहरइ ।।

गोसालस्स आणंदथेरसमक्खं अक्कोसपदंसण-पद

८१. तेणं कालेणं तेणं समएणं समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतेवासी आणंदे नामं थेरे पगइभद्दए जाव[4] विणीए छट्ठंछट्ठेणं अणिक्खित्तेणं तवोकम्मेणं संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे विहरइ ।।

८२. तए णं से आणंदे थेरे छट्ठक्खमणपारणगंसि पढमाए पोरिसीए एवं जहा गोयम-सामी तहेव आपुच्छइ, तहेव जाव[5] उच्च-नीय-मज्झिमाइं[6] °कुलाइं घरसमुदा-णस्स भिक्खायरियाए° अडमाणे हालाहलाए कुंभकारीए कुंभकारावणस्स अदूरसामंते वीइवयइ ।।

८३. तए णं से गोसाले मंखलिपुत्ते आणंदं थेरं हालाहलाए कुंभकारीए कुंभकारा-वणस्स अदूरसामंतेणं वीइवयमाणं पासइ, पासित्ता एवं वयासी—एहि ताव आणंदा ! इओ एगं महं उवमियं निसामेहि ।।

८४. तए णं से आणंदे थेरे गोसालेणं मंखलिपुत्तेणं एवं वुत्ते समाणे जेणेव हालाहलाए कुंभकारीए कुंभकारावणे, जेणेव गोसाले मंखलिपुत्ते तेणेव उवागच्छइ ।।

८५. तए णं से गोसाले मंखलिपुत्ते आणंदं थेरं एवं वयासी—एवं खलु आणंदा ! इत्तो चिरातीयाए अद्धाए केइ उच्चावया[7] वणिया अत्थत्थी अत्थलुद्धा अत्थगवेसी अत्थकंखिया अत्थपिवासा अत्थगवेसणयाए णाणाविहविउलपणियभंडमायाए सगडीसागडेणं सुबहुं भत्तपाणं पत्थयणं[8] गहाय एगं महं अगामियं[9] अणोहियं छिन्नावायं दीहमद्धं अडविं अणुप्पविट्ठा ।।

८६. तए णं तेसिं वणियाणं तीसे अगामियाए अणोहियाए छिन्नावायाए दीहमद्धाए अडवीए किंचि देसं अणुप्पत्ताणं समाणाणं से पुव्वगहिए उदए अणुपुव्वेणं परिभुज्जमाणे-परिभुज्जमाणे झीणे[10] ।।

८७. तए णं ते वणिया झीणोदगा[11] समाणा तण्हाए परब्भमाणा[12] अण्णमण्णं सद्दावेंति,

---

१ कुंभकारावदणे (ता) ।
२ कुंभकारावदणंसि (ता) ।
३ °संघपरिवुडे (ता, व, म) ।
४ भ० १।२८८ ।
५ भ० २।१०७-१०९ ।
६ सं० पा०—मज्झिमाइं जाव अडमाणे ।
७ उच्चावगा (ख, ता, व, स) ।
८ पत्थायणं (ता) ।
९ आगामियं (अ, म, स), अकामियं (क, ख, ता) ।
१० खीणे (अ, क, म, स) ।
११ खीणोदगा (म, स) ।
१२ परिभवमाणा (अ, स), परिब्भममाणा (ता), परब्भवमाणा (म) ।

सद्दावेत्ता एव वयासी—एव खलु देवाणुप्पिया ! अम्हं इमीसे अगामियाए[1] •अणोहियाए छिन्नावायाए दीहमद्धाए° अडवीए किंचि देस अणुप्पत्ताण समाणाण से पुव्वगहिए उदए अणुपुव्वेण परिभुज्जमाणे-परिभुज्जमाणे झीणे, त सेय खलु देवाणुप्पिया ! अम्हं इमीसे अगामियाए जाव अडवीए उदगस्स सव्वओ समता मग्गण-गवेसण करेत्तए त्ति कट्टु अण्णमण्णस्स अतिए एयमट्ठ पडिसुणेति, पडिसुणेत्ता तीसे ण अगामियाए जाव अडवीए उदगस्स सव्वओ समता मग्गण-गवेसण करेति, उदगस्स सव्वओ समता मग्गण-गवेसणं करेमाणा एगं मह वणसड आसादेति—किण्ह किण्होभास जाव[2] महामेहनिकुरवभूय[3] पासादीय[4] •दरिसणिज्ज अभिरूव° पडिरूव ।

तस्स ण वणसंडस्स वहुमज्झदेसभाए, एत्थ ण महेग वम्मीय[5] आसादेति । तस्स ण वम्मीयस्स चत्तारि वप्पूओ[6] अब्भुग्गयाओ, अभिनिसढाओ, तिरिय सुसपग्गहियाओ, अहे पन्नगद्धरूवाओ, पन्नगद्धसठाणसठियाओ, पासादियाओ[7] •दरिसणिज्जाओ अभिरूवाओ° पडिरूवाओ ॥

८८ तए ण ते वणिया हट्ठतुट्ठा अण्णमण्ण सद्दावेति, सद्दावेत्ता एव वयासी—एव खलु देवाणुप्पिया ! अम्हे इमीसे अगामियाए[8] •अणोहियाए छिन्नावायाए दीहमद्धाए अडवीए उदगस्स° सव्वओ समता मग्गण-गवेसण करेमाणेहिं इमे वणसडे आसादिए—किण्हे किण्होभासे । इमस्स ण वणसडस्स वहुमज्झदेसभाए इमे वम्मीए आसादिए । इमस्स ण वम्मीयस्स चत्तारि वप्पूओ अब्भुग्गयाओ[9], •अभिनिसढाओ, तिरिय सुसपग्गहियाओ, अहे पन्नगद्धरूवाओ, पन्नगद्धसठाण-सठियाओ, पासादियाओ दरिसणिज्जाओ अभिरूवाओ° पडिरूवाओ त सेय खलु देवाणुप्पिया ! अम्हं इमस्स वम्मीयस्स पढम वप्पु[10] भिदित्तए, अवियाइ ओराल उदगरयण अस्सादेस्सामो ॥

८९ तए णं ते वणिया अण्णमण्णस्स अतिय एयमट्ठं पडिसुणेति, पडिसुणेत्ता तस्स वम्मीयस्स पढम वप्पु भिदति । ते ण तत्थ अच्छ पत्थ जच्च तणुय फालिय-वण्णाभं ओराल उदगरयण आसादेति । तए ण ते वणिया हट्ठतुट्ठा पाणिय पिवति, पिवित्ता वाहणाइं पज्जेति, पज्जेत्ता भायणाइ भरेति, भरेत्ता दोच्च पि अण्णमण्ण एव वदासी—एव खलु देवाणुप्पिया ! अम्हेहिं इमस्स वम्मीयस्स

---

१. स० पा०—अगामियाए जाव अडवीए ।
२. ओ० सू० ४ ।
३ °निकुरुवभूय (क, ख, ता, व, म) ।
४. स० पा०—पासादीयं जाव पडिरूव ।
५ वम्मियं (अ, क) ।
६ वपू (अ, क) वपूओ (ख, म) ।
७. स० पा०—पासादियाओ जाव पडिरूवाओ ।
८ स० पा०—अगामियाए जाव सव्वओ ।
९ स० पा०—अब्भुग्गयाओ जाव पडिरूवाओ ।
१० वप्पि (अ, स), वपु (क, व, म) ।

पढमाए वप्पूए[1] भिन्नाए ओराले उदगरयणे अस्सादिए, तं सेय खलु देवाणुप्पिया! अम्ह इमस्स वम्मीयस्स दोच्चं पि वप्पुं भिंदित्तए, अवियाइ एत्थ ओरालं सुवण्णरयणं अस्सादेस्सामो ।।

९० तए णं ते वणिया अण्णमण्णस्स अंतियं एयमट्ठं पडिसुणेंति, पडिसुणेत्ता तस्स वम्मीयस्स दोच्चं पि वप्पुं भिंदंति । ते णं तत्थ अच्छं जच्चं तावणिज्जं[2] महत्थं महग्घं महरिहं ओरालं सुवण्णरयणं अस्सादेंति । तए णं ते वणिया हट्ठतुट्ठा भायणाइं भरेंति, भरेत्ता पवहणाइं भरेंति, भरेत्ता तच्चं पि अण्णमण्णं एवं वयासी—एवं खलु देवाणुप्पिया! अम्हे इमस्स वम्मीयस्स पढमाए वप्पूए भिन्नाए ओराले उदगरयणे अस्सादिए[3], दोच्चाए वप्पूए भिन्नाए ओराले सुवण्णरयणे अस्सादिए, तं सेयं खलु देवाणुप्पिया! अम्हं इमस्स वम्मीयस्स तच्चं पि वप्पुं भिंदित्तए, अवियाइं एत्थ ओरालं मणिरयणं अस्सादेस्सामो ।।

९१ तए णं ते वणिया अण्णमण्णस्स अंतियं एयमट्ठं पडिसुणेंति, पडिसुणेत्ता तस्स वम्मीयस्स तच्चं पि वप्पुं भिंदंति । ते णं तत्थ विमलं निम्मलं नित्तलं निक्कलं महत्थं महग्घं महरिहं ओरालं मणिरयणं अस्सादेंति । तए णं ते वणिया हट्ठतुट्ठा भायणाइं भरेंति, भरेत्ता पवहणाइं भरेंति, भरेत्ता चउत्थं पि अण्णमण्णं एवं वयासी—एवं खलु देवाणुप्पिया! अम्हे इमस्स वम्मीयस्स पढमाए वप्पूए भिन्नाए ओराले उदगरयणे अस्सादिए, दोच्चाए वप्पूए भिन्नाए ओराले सुवण्णरयणे अस्सादिए, तच्चाए वप्पूए भिन्नाए ओराले मणिरयणे अस्सादिए, तं सेयं खलु देवाणुप्पिया! अम्हं इमस्स वम्मीयस्स चउत्थं पि वप्पुं[4] भिंदित्तए, अवियाइं उत्तमं महग्घं महरिहं ओरालं वइररयणं अस्सादेस्सामो ।।

९२ तए णं तेसिं वणियाणं एगे वणिए हियकामए सुहकामए पत्थकामए आणुकंपिए निस्सेसिए हिय-सुह-निस्सेसकामए ते वणिए एवं वयासी—एवं खलु देवाणुप्पिया! अम्हे इमस्स वम्मीयस्स पढमाए वप्पूए भिन्नाए ओराले उदगरयणे[5] •अस्सादिए, दोच्चाए वप्पूए भिन्नाए ओराले सुवण्णरयणे अस्सादिए°, तच्चाए वप्पूए भिन्नाए ओराले मणिरयणे अस्सादिए, तं होउ अलाहि पज्जत्तं णे, एसा चउत्थी वप्पू[6] मा भिज्जउ, चउत्थी णं वप्पू सउवसग्गा यावि होत्था ।।

९३ तए णं ते वणिया तस्स वणियस्स हियकामगस्स सुहकामगस्स[7] •पत्थकामगस्स आणुकंपियस्स निस्सेसियस्स° हिय-सुह-निस्सेसकामगस्स एवमाइक्खमाणस्स

---

१ वप्पाए (अ, ख, स) ।
२ तवणिज्ज (अ, क, ब, म, स) ।
३ आसादिए (म, स) ।
४, वप्प (अ, ख, स) ।
५ स० पा०—उदगरयणे जाव तच्चाए ।
६ वप्पा (ता) ।
७ स० पा०—सुहकामगस्स जाव हिय ।

जाव परूवेमाणस्स एयमट्ठं नो सद्दहंति, 'नो पत्तियंति'[1] नो रोयति, एयमट्ठं असद्दहमाणा अपत्तियमाणा[2] अरोएमाणा तस्स वम्मीयस्स चउत्थं पि वप्पु भिंदति। ते णं तत्थ उग्गविस चंडविस घोरविस महाविस 'अतिकायं महाकायं'[3] मसिमूसाकालग नयणविसरोसपुण्णं अंजणपुंज-निगरप्पगासं रत्तच्छं जमलजुयल-[4] चंचलचलतजीह धरणितलवेणिभूय उक्कड-फुड-कुडिल-जडुल-कक्खड-विकड-फडाडोवकरणदच्छ लोहागर-धम्ममाण-धमधमेतघोस अणागलियचंडतिव्वरोस 'समुह तुरिय चवल'[5] धमत दिट्ठीविस सप्पं सघट्टेति ॥

९४ तए णं से दिट्ठीविसे सप्पे तेहिं वणिएहिं संघट्टिए समाणे आसुरुत्ते[6] •रुट्ठे कुविए चंडिक्किए° मिसिमिसेमाणे सणिय-सणिय उट्ठेइ, उट्ठेत्ता सरसरसरस्स वम्मीयस्स सिहरतलं द्रुहति[7], द्रुहित्ता आदिच्च निज्झाति, निज्झाइत्ता ते वणिए अणिमिसाए दिट्ठीए सव्वओ समता समभिलोएति ॥

९५ तए ण ते वणिया तेण दिट्ठीविसेण सप्पेण अणिमिसाए दिट्ठीए सव्वओ समता समभिलोइया समाणा खिप्पामेव सभंडमत्तोवगरणमायाए एगाहच्चं कूडाहच्चं भासरासी कया यावि[8] होत्था। तत्थ ण जे से वणिए तेसिं वणियाण हिय-कामए[9] •सुहकामए पत्थकामए आणुकंपिए निस्सेसिए° हिय-सुह-निस्सेसकामए से णं आणुकंपियाए देवयाए सभंडमत्तोवगरणमायाए नियग नगर साहिए ॥

९६. एवामेव आणदा! तव वि धम्मायरिएण धम्मोवएसएण समणेण नायपुत्तेणं ओराले परियाए अस्सादिए, ओराला कित्ति-वण्ण-सद्द-सिलोगा सदेवमणुयासुरे लोए पुव्वति, गुव्वति[10], थुव्वति[11]—इति खलु समणे भगव महावीरे, इति खलु समणे भगव महावीरे। त जदि मे से अज्ज किंचि वि वदति तो ण तवेणं तेएण एगाहच्च कूडाहच्चं भासरासि करेमि, जहा वा वालेणं ते वणिया। तुमं च णं आणदा! सारक्खामि सगोवामि जहा वा से वणिए तेसिं वणियाण हियकामए जाव[12] निस्सेसकामए आणुकंपियाए देवयाए सभंड[13]•मत्तोवगरणमायाए नियग नगर° साहिए। त गच्छ[14] ण तुम आणदा! तव धम्मायरियस्स धम्मोवए-सगस्स समणस्स नायपुत्तस्स एयमट्ठ परिकहेहि ॥

---

१ जाव (अ, क, ख, ता, व, म, स)।
२ जाव (अ, क, ख, ता, व, म, स)।
३. अतिकायमहाकाय (क, ख, ता, म)।
४. °जुवल (अ, ख, व, स)।
५. समुहिं तुरियचवल (अ, क, ख, ता, व); समुदियतुरियचवल (वृ)।
६. स० पा०—आसुरुत्ते जाव मिसि°।
७ द्रुहेति (क, ता, म); दुरुहति (स)।
८. वि (क, ता, व)।
९. स० पा० हियकामए जाव हिय।
१०. × (अ, क, ख, ता), गुवति (व, म)।
११. तुवति (क, ख); × (व, म), 'थुवति' त्ति क्वचित्, क्वचित् 'परिभमती' ति दृश्यते (वृ)।
१२. भ० १५।९२।
१३. स० पा०—सभंड जाव साहिए।
१४. गच्छाहि (व, म)।

आणंदथेरस्स भगवओ निवेदण-पद

६७. तए णं से आणदे थेरे गोसालेण मखलिपुत्तेण एव वुत्ते समाणे भीए जाव[1] सजाय-भए गोसालस्स मखलिपुत्तस्स अतियाओ हालाहलाए कुभकारीए कुभकारावणाओ पडिनिक्खमति, पडिनिक्खमित्ता सिग्घ तुरिय सावत्थि नगरि मज्झमज्झेण निग्गच्छइ, निग्गच्छित्ता जेणेव कोट्ठए चेइए, जेणेव समणे भगव महावीरे तेणेव उवागच्छइ,उवागच्छित्ता समण भगव महावीर तिक्खुत्तो आयाहिण-पयाहिण करेइ, करेत्ता वदइ नमसइ, वदित्ता नमसित्ता एव वयासी—एव खलु अह भते ! छट्ठक्खमणपारणगसि तुब्भेहिं अब्भणुण्णाए समाणे सावत्थीए नगरीए उच्च-नीय[2]-•मज्झिमाइ कुलाइ घरसमुदाणस्स भिक्खायरियाए॰ अडमाणे हालाहलाए कुभकारीए[3] •कुभकारावणस्स अदूरसामते॰ वीइवयामि, तए ण गोसाले मखलिपुत्ते मम हालाहलाए[4] •कुभकारीए कुभकारावणस्स अदूरसामनेण वीइवयमाण॰ पासित्ता एव वयासी—एहि ताव आणदा ! इओ एग मह उवमिय निसामेहि ।

तए ण अह गोसालेण मखलिपुत्तेण एव वुत्ते समाणे जेणेव हालाहलाए कुभकारीए कुभकारावणे, जेणेव गोसाले मखलिपुत्ते, तेणेव उवागच्छामि ।

तए ण से गोसाले मखलिपुत्ते मम एव वयासी—एव खलु आणदा ! इओ चिरातीयाए अद्धाए केइ उच्चावया वणिया एव त चेव सव्व निरवसेस भाणियव्व जाव[5] नियग नगर साहिए । त गच्छ ण तुम आणदा ! तव धम्मायरियस्स धम्मोवएसगस्स[6] •समणस्स नायपुत्तस्स एयमट्ठ॰ परिकहेहि ।।

६८ त पभू ण भते ! गोसाले मखलिपुत्ते तवेण तेएण एगाहच्च कूडाहच्च भासरासिं करेत्तए ? विसए ण भते ! गोसालस्स मखलिपुत्तस्स[7] •तवेण तेएण एगाहच्च कूडाहच्च भासरासिं॰ करेत्तए ? समत्थे ण भते ! गोसाले[8] •मखलिपुत्ते तवेण तेएणं एगाहच्च कूडाहच्च भासरासिं॰ करेत्तए ?

पभू ण आणदा ! गोसाले मखलिपुत्ते तवेण[9] •तेएण एगाहच्च कूडाहच्च भासरासिं॰ करेत्तए । विसए ण आणदा ! गोसालस्स[10] •मखलिपुत्तस्स तवेण तेएण एगाहच्च कूडाहच्च भासरासिं॰ करेत्तए । समत्थे ण आणदा ! गोसाले[11]

---

१ भ० १५।६६ ।
२ स० पा०—नीय जाव अडमाणे ।
३ स० पा०—कुभकारीए जाव वीइवयामि ।
४ स० पा०—हालाहलाए जाव पासित्ता ।
५ भ० १५।८५-६५ ।
६ स० पा०—धम्मोवएसगस्स जाव परिकहेहि ।
७ स० पा०—मखलिपुत्तस्स जाव करेत्तए ।
८ स० पा०—गोसाले जाव करेत्तए ।
९ स० पा०—तवेण जाव करेत्तए ।
१०. स० पा०—गोसालस्स जाव करेत्तए ।
११. स० पा०—गोसाले जाव करेत्तए ।

•मखलिपुत्ते तवेण तेएण एगाहच्चं कूडाहच्च भासरासिं° करेत्तए, नो चेव णं अरहते भगवते, पारियावणियं[1] पुण करेज्जा। जावतिए ण आणदा! गोसालस्स मखलिपुत्तस्स 'तवे तेए'[2], एत्तो अणतगुणविसिट्ठतराए चेव तवे तेए अणगाराण भगवताण, खतिखमा पुण अणगारा भगवतो। जावइए ण आणदा! अणगाराण भगवताण तवे तेए एत्तो अणतगुणविसिट्ठतराए चेव तवे तेए थेराण भगवताण, खतिखमा पुण थेरा भगवतो। जावतिए ण आणदा! थेराण भगवताण तवे तेए एत्तो अणतगुणविसिट्ठतराए चेव तवे तेए अरहताण भगवताण, खतिखमा पुण अरहता भगवतो। त पभू ण आणदा! गोसाले मखलिपुत्ते तवेण तेएण[3] •एगाहच्च कूडाहच्च भासरासिं° करेत्तए, विसए ण आणदा[4]! •गोसालस्स मखलिपुत्तस्स तवेण तेएण एगाहच्च कूडाहच्च भासरासिं°करेत्तए, समत्थे ण आणदा[5]! •गोसाले मखलिपुत्ते तवेण तेएण एगाहच्च कूडाहच्च भासरासिं° करेत्तए, नो चेव ण अरहते भगवते, पारियावणिय पुण करेज्जा॥

आणदथेरेण गोयमाईणं अणुण्णवण-पदं

९९. तं गच्छ ण तुमं आणदा! गोयमाईण समणाण निग्गथाण एयमट्ठं परिकहेहि—मा ण अज्जो! तुब्भ केई गोसालं मखलिपुत्त धम्मियाए पडिचोयणाए पडिचोएउ, धम्मियाए पडिसारणाए पडिसारेउ, धम्मिएण पडोयारेण पडोयारेउ, गोसाले ण मखलिपुत्ते समणेहिं निग्गथेहि मिच्छ विप्पडिवन्ने॥

१०० तए ण से आणदे थेरे समणेण भगवया महावीरेण एवं वुत्ते समाणे समण भगवं महावीरं वदइ नमसइ, वदित्ता नमसित्ता जेणेव गोयमादी समणा निग्गथा तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता गोयमादी समणे निग्गथे आमतेति, आमतेत्ता एव वयासी—एव खलु अज्जो! छट्ठक्खमणपारणगसि समणेणं भगवया महावीरेण अब्भणुण्णाए समाणे सावत्थीए नगरीए उच्च-नीय-मज्झिमाइ कुलाइ तं चेव सव्व जाव[6] 'गोयमाईण समणाण निग्गथाण'[7] एयमट्ठ परिकहेहि, तं मा ण

---

१ परियावणिय (अ, स)।

२. तवतेए (स) सर्वत्र।

३ स० पा०—तेएण जाव करेत्तए।

४. सं० पा०—आणदा जाव करेत्तए।

५ स० पा०—आणदा जाव करेत्तए।

६. भ० १५।८२-९९।

७ नायपुत्तस्स (अ, क, ख, ता, व, म, स), सर्वेष्वपि आदर्शेपु 'नायपुत्तस्स एयमट्ठ परिकहेहि' इति पाठोस्ति, किन्तु प्रसङ्गपर्यालोचनया नैष सगच्छते। 'नायपुत्तस्स एयमट्ठ परिकहेहि' इति गोशालकस्य उक्तिरस्ति—द्रष्टव्य १५।९६। यदि एतदन्त पाठोत्र विवक्षित स्यात्तदा आनन्दस्य भगवतो निवेदनम्, भगवतश्च आनन्दस्य गौतमादिश्रमणेभ्य तदर्थज्ञापनस्य निर्देशन—एतत् सर्व तस्मिन् पाठे नैव प्राप्त भवेत्। कथ च आनन्द. भगवत निर्देशमश्रावयित्वा गौतमादिभ्य. 'त माण अज्जो' इत्यादि निर्देश कुर्यात्? एतत् न स्वाभाविकम्। तेन प्रतीयते अत्र पाठसक्षेपीकरणे

अज्जो ! तुब्भं केई गोसालं मंखलिपुत्तं धम्मियाए पडिचोयणाए पडिचोएउ[1], •धम्मियाए पडिसारणयाए पडिसारेउ, धम्मिएणं पडोयारेण पडोयारेउ, गोसाले णं मंखलिपुत्ते समणेहिं निग्गंथेहिं° मिच्छं विप्पडिवन्ने ॥

गोसालस्स भगवंतं पइ अक्कोसपुव्वं ससिद्धंतनिरूवण-पदं

१०१. जाव च णं आणंदे थेरे गोयमाईणं समणाणं निग्गंथाणं एयमट्ठं परिकहेइ, ताव च णं से गोसाले मंखलिपुत्ते हालाहलाए कुंभकारीए कुंभकारावणाओ पडिनिक्खमइ, पडिनिक्खमित्ता आजीवियसंघसंपरिवुडे महया अमरिसं वहमाणे सिग्घं तुरियं[2] सावत्थिं नगरिं मज्झंमज्झेणं निग्गच्छइ, निग्गच्छित्ता जेणेव कोट्ठए चेइए, जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता समणस्स भगवओ महावीरस्स अदूरसामंते ठिच्चा समणं भगवं महावीरं एवं वदासी—सुट्ठु णं आउसो कासवा ! ममं एवं वयासी, साहू णं आउसो कासवा ! ममं एवं वयासी—गोसाले मंखलिपुत्ते ममं धम्मंतेवासी, गोसाले मंखलिपुत्ते ममं धम्मंतेवासी ।

जे णं से गोसाले मंखलिपुत्ते तव धम्मंतेवासी से णं सुक्के सुक्काभिजाइए भवित्ता कालमासे कालं किच्चा अण्णयरेसु[3] देवलोएसु देवत्ताए उववन्ने, अहण्णं उदाई नामं कुंडियायणीए[4] अज्जुणस्स गोयमपुत्तस्स सरीरगं विप्पजहामि, विप्पजहित्ता गोसालस्स मंखलिपुत्तस्स सरीरगं अणुप्पविसामि, अणुप्पविसित्ता इमं सत्तमं पउट्टपरिहारं परिहरामि ।

जे वि आइं आउसो कासवा ! अम्हं समयंसि केइ सिज्झिंसु वा सिज्झंति वा सिज्झिस्संति वा सव्वे ते चउरासीतिं महाकप्पसयसहस्साइं, सत्त दिव्वे, सत्त संजूहे, सत्त सण्णिगब्भे, सत्त पउट्टपरिहारे, पंच कम्मणि[5] सयसहस्साइं सट्ठिं च सहस्साइं छच्च सए तिण्णि य कम्मंसे अणुपुव्वेणं खवइत्ता तओ पच्छा सिज्झंति बुज्झंति मुच्चंति परिनिव्वायंति[6] सव्वदुक्खाणमंतं करेंसु वा करेंति वा करिस्संति वा ।

से जहा वा गंगा महानदी जओ पवूढा, जहिं वा पज्जुवत्थिया[7], एस णं अद्धा पंचजोयणसयाइं आयामेणं, अद्धजोयणं विक्खंभेणं, पंच धणुसयाइं उव्वेहेणं ।

लिपिकरणे वा कश्चिद् विपर्ययो जातः। प्रसङ्गानुसारेण 'जाव' पदस्यानन्तरं 'गोयमाईणं समणाणं निग्गंथाणं एयमट्ठं परिकहेहिं' इति पाठः उपयुज्यते ।

१. सं० पा०—पडिचोएउ जाव मिच्छं ।

२. तुरियं जाव (अ, क, ख, ता, ब, म, स), द्रष्टव्यम्—भ० १५।६७ ।

३. अण्णतरेसु चेव (ता) ।

४. कंडियायणिए (क, म), कुंडियणिए (ता) ।

५. कम्मुणि (अ, ख, ता), कम्माणि (क); कर्मणामित्यर्थः (वृ) ।

६. परिनिव्वाइंति (अ, ख, स) ।

७. पज्जवत्थिया (अ, क, स), पज्जुपत्थिया (ता) ।

एएणं गंगापमाणेणं सत्त गंगाओ सा एगा महागंगा। सत्त महागंगाओ सा एगा सादीणगंगा। सत्तसादीणगंगाओ सा एगा मद्दुगंगा[1]। सत्त मद्दुगंगाओ सा एगा लोहियगंगा। सत्त लोहियगंगाओ सा एगा आवतीगंगा[2]। सत्त आवती-गंगाओ सा एगा परमावती। एवामेव सपुव्वावरेणं एगं गंगासयसहस्सं सत्तर सहस्सा छच्च अगुणपन्नं[3] गंगासया भवतीति मक्खाया।

तासिं दुविहे उद्धारे पण्णत्ते, तं जहा—सुहुमबोंदिकलेवरे चेव, बायरबोंदि-कलेवरे चेव। तत्थ णं जे से सुहुमबोंदिकलेवरे से ठप्पे। तत्थ णं जे से बायर-बोंदिकलेवरे तओ णं वाससए गए, वाससए गए एगमेगं गंगावालुयं अवहाय जावतिएणं कालेणं से कोट्ठे खीणे णीरए निल्लेवे निट्ठिए भवति सेत्तं सरे सरप्पमाणे। एएणं सरप्पमाणेणं तिण्णि सरसयसाहस्सीओ से एगे महाकप्पे, चउरासीतिं महाकप्पसयसहस्साइं से एगे महामाणसे।

१ अणंताओ संजूहाओ जीवे चयं चइत्ता उवरिल्ले माणसे संजूहे देवे उववज्जति। से णं तत्थ[4] दिव्वाइं भोगभोगाइं भुंजमाणे विहरइ, विहरित्ता ताओ देवलोगाओ आउक्खएणं भवक्खएणं ठिइक्खएणं अणंतरं चयं चइत्ता पढमे सण्णिगब्भे जीवे पच्चायाति।

२ से णं तओहिंतो अणंतरं उव्वट्टित्ता मज्झिल्ले माणसे संजूहे देवे उववज्जइ। से णं तत्थ दिव्वाइं भोगभोगाइं भुंजमाणे विहरइ, विहरित्ता ताओ देवलोगाओ आउक्खएणं[5] ०भवक्खएणं ठिइक्खएणं अणंतरं चयं० चइत्ता दोच्चे सण्णिगब्भे जीवे पच्चायाति।

३. से णं तओहिंतो अणंतरं उव्वट्टित्ता हेट्ठिल्ले माणसे संजूहे देवे उववज्जइ। से णं तत्थ दिव्वाइं भोगभोगाइं जाव चइत्ता तच्चे सण्णिगब्भे जीवे पच्चायाति।

४ से णं तओहिंतो जाव उव्वट्टित्ता उवरिल्ले माणुसुत्तरे संजूहे देवे उववज्जइ। से णं तत्थ दिव्वाइं भोगभोगाइं जाव चइत्ता चउत्थे सण्णिगब्भे जीवे पच्चायाति।

५ से णं तओहिंतो अणंतरं उव्वट्टित्ता मज्झिल्ले माणुसुत्तरे संजूहे देवे उववज्जइ। से णं तत्थ दिव्वाइं भोगभोगाइं जाव चइत्ता पंचमे सण्णिगब्भे जीवे पच्चायाति।

६ से णं तओहिंतो अणंतरं उव्वट्टित्ता हिट्ठिल्ले माणुसुत्तरे संजूहे देवे उववज्जइ। से णं तत्थ दिव्वाइं भोगभोगाइं जाव चइत्ता छट्ठे सण्णिगब्भे जीवे पच्चायाति।

---

१. महुगंगा (ब); मद्धुगंगा (म), मच्चुगंगा (क्व०)।
२. अवतीगंगा (क, ख, ब, म)।
३. गुणपण्ण (अ. स), अगुणपण्णा (ता)।
४. तत्था (ता)।
५. सं० पा०—आउक्खएणं जाव चइत्ता।

७. से ण तओहितो अणतर उव्वट्टित्ता—वभलोगे नाम से कप्पे पण्णत्ते—पाईणपडीणायते उदीणदाहिणविच्छिण्णे, जहा ठाणपदे जाव पच वडेसगा पण्णत्ता, त जहा—असोगवडेसए जाव[1] पडिरूवा—से ण तत्थ देवे उववज्जइ। से ण तत्थ दस सागरोवमाइ दिव्वाइ भोगभोगाइ जाव चइत्ता सत्तमे सण्णि-गब्भे जीवे पच्चायाति।

से ण तत्थ नवण्ह मासाण बहुपडिपुण्णाण अद्धट्ठमाण राइदियाण वीतिक्कताण सुकुमालगभद्दलए मिउ-कुडलकुचिय[2]-केसए मट्ठगडतल-कण्णपीढए देवकुमार-सप्पभए दारए पयाति। से ण अह कासवा! तए ण अह आउसो कासवा! कोमारियपव्वज्जाए कोमारएण वभचेरवासेण अविद्धकण्णए चेव सखाण पडिलभामि, पडिलभित्ता इमे सत्त पउट्टपरिहारे परिहरामि, त जहा—१ एणेज्जस्स २ मल्लरामस्स ३ मडियस्स[3] ४. रोहस्स ५ भारद्दाइस्स ६ अज्जुणगस्स गोयमपुत्तस्स ७ गोसालस्स मखलिपुत्तस्स।

तत्थ ण जे से पढमे पउट्टपरिहारे से ण रायगिहस्स नगरस्स बहिया मडिकुच्छिसि चेइयसि उदाइस्स कुडियायणस्स सरीर विप्पजहामि, विप्पज-हित्ता एणेज्जगस्स सरीरग अणुप्पविसामि, अणुप्पविसित्ता बावीस वासाइ पढम पउट्टपरिहार परिहरामि।

तत्थ ण जे से दोच्चे पउट्टपरिहारे से ण उद्दडपुरस्स नगरस्स बहिया चदोयर-णसि चेइयसि एणेज्जगस्स सरीरग विप्पजहामि, विप्पजहित्ता मल्लरामस्स सरीरग अणुप्पविसामि, अणुप्पविसित्ता एकवीस वासाइ दोच्च पउट्टपरिहार परिहरामि।

तत्थ ण जे से तच्चे पउट्टपरिहारे से ण चपाए नगरीए बहिया अगमंदिरसि चेइयसि मल्लरामस्स सरीरग विप्पजहामि, विप्पजहित्ता मडियस्स सरीरग अणुप्पविसामि, अणुप्पविसित्ता वीस वासाइ तच्च पउट्टपरिहार परिहरामि।

तत्थ ण जे से चउत्थे पउट्टपरिहारे से ण वाणारसीए नगरीए बहिया काममहा-वणसि चेइयसि मडियस्स सरीरग विप्पजहामि, विप्पजहित्ता रोहस्स सरीरग अणुप्पविसामि, अणुप्पविसित्ता एकूणवीस वासाइ चउत्थ पउट्टपरिहार परिहरामि।

तत्थ ण जे से पचमे पउट्टपरिहारे से ण आलभियाए नगरीए बहिया पत्तकाल-गसि[4] चेइयसि रोहस्स सरीरग विप्पजहामि, विप्पजहित्ता भारद्दाइस्स सरीरग

---

१. प० २।

२. कुतल° (ता)।

३. मडिसस्स (क, ता, व)।

४. कालगयसि (स)।

अणुप्पविसामि, अणुप्पविसित्ता अट्ठारस वासाइ पचम पउट्टपरिहारं परिहरामि ।

तत्थ ण जे से छट्ठे पउट्टपरिहारे से ण वेसालीए नगरीए वहिया कोडियायणसि[1] चेइयसि भारद्दाइस्स[2] सरीर विप्पजहामि, विप्पजहित्ता अज्जुणगस्स गोयमपुत्तस्स सरीरग अणुप्पविसामि, अणुप्पविसित्ता सत्तरस वासाइ छट्ठ पउट्टपरिहार परिहरामि ।

तत्थ ण जे से सत्तमे पउट्टपरिहारे से ण इहेव सावत्थीए नगरीए हालाहलाए कुभकारीए कुभकारावणसि अज्जुणगस्स गोयमपुत्तस्स सरीरग विप्पजहामि, विप्पजहित्ता गोसालस्स मखलिपुत्तस्स सरीरग अल थिर धुव धारणिज्ज सीयसह उण्हसह खुहासह विविहदसमसगपरीसहोवसग्गसह थिरसघयण ति कट्टु त अणुप्पविसामि, अणुप्पविसित्ता सोलस वासाइ इम सत्तम पउट्टपरिहार परिहरामि । एवामेव आउसो कासवा ! एगेण तेत्तीसेण वाससएण सत्त पउट्टपरिहारा परिहरिया भवतीति मक्खाया, त सुट्ठु ण आउसो कासवा ! मम एव वयासी —साहू ण आउसो कासवा ! मम एव वयासी—गोसाले मखलिपुत्ते मम धम्मतेवासी, गोसाले मखलिपुत्ते मम धम्मतेवासी ।।

भगवया गोसालगवयणस्स पडियार-पद

१०२. तए ण समणे भगव महावीरे गोसाल मखलिपुत्त एव वयासी—गोसाला ! से जहानामए तेणए सिया, गामेल्लएहि परब्भमाणे[3]-परब्भमाणे कत्थ य गड्ड वा दरिं वा दुग्ग वा णिण्ण[4] वा पव्वय वा विसम वा अणस्सादेमाणे[5] एगेण महं उण्णालोमेण वा सणलोमेण वा कप्पासपम्हेण[6] वा तणसूएण वा अत्ताण आवरेत्ताण चिट्ठेज्जा, से ण अणावरिए आवरियमिति अप्पाण मण्णइ, अप्पच्छण्णे य पच्छण्णमिति अप्पाण मण्णइ, अणिलुक्के णिलुक्कमिति अप्पाण मण्णइ, अपलाए पलायमिति अप्पाणं मण्णइ, एवामेव तुम पि गोसाला ! अणण्णे सते अण्णमिति अप्पाण उपलभसि, त मा एव गोसाला ! नारिहसि गोसाला ! सच्चेव ते सा छाया नो अण्णा ।।

गोसालस्स पुणरक्कोस-पदं

१०३. तए ण से गोसाले मखलिपुत्ते समणेण भगवया महावीरेण एव वुत्ते समाणे आसुरुत्ते रुट्ठे कुविए चडिक्किए मिसिमिसेमाणे समण भगव महावीर उच्चावयाहिं

---

१. कडियायणसि (स) ।
२. भारद्दाइयस्स (अ, ता, स) ।
३. परिब्भमाणे (ता), पारब्भमाणे (म); परज्झमाणे (स) ।
४. णिण (क, ता), णिल्ल (म) ।
५. अणासा° (ता) ।
६ °पोम्हेण (क, ख), °पोंभेण (ता) ।

आग्रोसणाहिं आओसइ, उच्चावयाहि उद्धसणाहिं उद्धसेति, उच्चावयाहि 'निब्भछणाहि निब्भछेति'[1], उच्चावयाहिं निच्छोडणाहि निच्छोडेति, निच्छोडेत्ता एव वयासी – नट्ठे सि कदाइ, विणट्ठे सि कदाइ, भट्ठे सि कदाइ, नट्ठ-विणट्ठ-भट्ठे सि कदाइ, अज्ज न भवसि, नाहि ते ममाहितो सुहमत्थि[2] ॥

गोसालेण सव्वाणुभूतिस्स भासरासीकरण-पदं

१०४ तेण कालेण तेण समएण समणस्स भगवओ महावीरस्स अतेवासी पाईणजाणवए[3] सव्वाणुभूती नाम अणगारे पगइभद्दए[4] •पगइउवसते पगइपयणुकोहमाणमायालोभे मिउमद्दवसपन्ने अल्लीणे° विणीए धम्मायरियाणुरागेण एयमट्ठ असद्दहमाणे उट्ठाए उट्ठेइ, उट्ठेत्ता जेणेव गोसाले मखलिपुत्ते तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता गोसाल मखलिपुत्ते एव वयासी—जे वि ताव गोसाला ! तहारूवस्स समणस्स वा माहणस्स वा अतिय एगमवि आरिय[5] धम्मिय सुवयण निसामेति, से वि ताव वदति नमसति[6] •सक्कारेति सम्माणेति° कल्लाण मगल देवय चेइय पज्जुवासति, किमग पुण तुम गोसाला ! भगवया चेव पव्वाविए, भगवया चेव मुडाविए, भगवया चेव सेहाविए, भगवया चेव सिक्खाविए, भगवया चेव वहुस्सुतीकए, भगवओ[7] चेव मिच्छ विप्पडिवन्ने ? त मा एव गोसाला ! नारिहसि गोसाला ! सच्चेव ते सा छाया नो अण्णा ॥

१०५. तए ण से गोसाले मखलिपुत्ते सव्वाणुभूतिणा अणगारेण एव वुत्ते समाणे आसुरुत्ते रुट्ठे कुविए चडिक्किए मिसिमिसेमाणे सव्वाणुभूति अणगार तवेण तेएण एगाहच्च कूडाहच्च भासरासि करेति ॥

१०६. तए ण से गोसाले मखलिपुत्ते सव्वाणुभूति अणगार तवेण तेएण एगाहच्च कूडाहच्च भासरासि करेत्ता दोच्च पि समण भगव महावीर उच्चावयाहिं आओसणाहि आओसइ[8], •उच्चावयाहि उद्धसणाहि उद्धसेति, उच्चावयाहि निब्भछणाहि निब्भछेति, उच्चावयाहि निच्छोडणाहि निच्छोडेति, निच्छोडेत्ता एव वयासी—नट्ठे सि कदाइ, विणट्ठे सि कदाइ, भट्ठे सि कदाइ, नट्ठ-विणट्ठ-भट्ठे सि कदाइ, अज्ज न भवसि, नाहि ते ममाहिंतो° सुहमत्थि ॥

गोसालेण सुनक्खत्तस्स परितावण-पद

१०७ तेण कालेण तेण समएण समणस्स भगवओ महावीरस्स अतेवासी कोसलजाण-

---

१. णिब्भच्छणाहिं णिब्भच्छेइ (ता) ।
२ सुहनत्थि (अ, स) ।
३ पदीण° (क, म); पडीण° (ता, व) ।
४. स० पा०—पगइभद्दए जाव विणीए ।
५. यारिय (अ, ता, व, म) ।
६. स० पा०—नमसति जाव कल्लाण ।
७. भगवया (क, ख, ता, व) ।
८. स० पा०—आओसइ जाव सुहमत्थि ।

वए सुनक्खत्ते नाम अणगारे पगइभद्दए जाव[1] विणीए धम्मायरियाणुरागेणं [2]•एयमट्ठं असद्दहमाणे उठाए उट्ठेइ, उट्ठेत्ता जेणेव गोसाले मखलिपुत्ते तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता गोसाल मखलिपुत्त एव वयासी—जे वि ताव गोसाला ! तहारूवस्स समणस्स वा माहणस्स वा अतिय एगमवि आरिय धम्मिय सुवयण निसामेति, से वि ताव वदति नमसति सक्कारेति सम्माणेति कल्लाण मगल देवय चेइय पज्जुवासति, किमग पुण तुम गोसाला ! भगवया चेव पव्वाविए, भगवया चेव मुडाविए, भगवया चेव सेहाविए, भगवया चेव सिक्खाविए, भगवया चेव वहुस्सुतीकए, भगवओ चेव मिच्छ विप्पडिवन्ने ? त मा एव गोसाला ! नारिहसि गोसाला ! ° सच्चेव ते सा छाया नो अण्णा ।।

१०८. तए ण से गोसाले मखलिपुत्ते सुनक्खत्तेण अणगारेण एव वुत्ते समाणे आसुरुत्ते रुट्ठे कुविए चडिक्किए मिसिमिसेमाणे सुनक्खत्त अणगारं तवेण तेएण परितावेइ ।।

१०९. तए ण से सुनक्खत्ते अणगारे गोसालेण मखलिपुत्तेण तवेण तेएण परिताविए समाणे जेणेव समणे भगव महावीरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता समण भगव महावीर तिक्खुत्तो वदइ नमंसइ, वदित्ता नमसित्ता सयमेव पच महव्वयाइ आरुभेति, आरुभेत्ता समणा य समणीओ य खामेइ, खामेत्ता आलोइय-पडिक्कते समाहिपत्ते आणुपुव्वीए कालगए ।।

गोसालेण भगवओ वहाए तेयनिसिरण-पद

११० तए णं से गोसाले मखलिपुत्ते सुनक्खत्त अणगार तवेण तेएण परितावेत्ता तच्च पि समण भगव महावीर उच्चावयाहि आओसणाहिं आओसइ, [3]•उच्चावयाहिं उद्धंसणाहिं उद्धसेति, उच्चावयाहिं निब्भछणाहि निब्भछेति, उच्चावयाहिं निच्छोडणाहि निच्छोडेति, निच्छोडेत्ता एव वयासी—नट्ठे सि कदाइ, विणट्ठे सि कदाइ, भट्ठे सि कदाइ, नट्ठ-विणट्ठ-भट्ठे सि कदाइ, अज्ज न भवसि, नाहि ते ममाहितो° सुहमत्थि ।।

१११ तए ण समणे भगव महावीरे गोसाल मखलिपुत्त एव वयासी—जे वि ताव गोसाला! तहारूवस्स समणस्स वा माहणस्स वा [4]•अतियं एगमवि आरिय धम्मिय सुवयणं निसामेति, से वि ताव वदति नमसति सक्कारेति सम्माणेति कल्लाण मंगल देवय चेइयं°पज्जुवासति, किमंग पुण गोसाला ! तुम मए चेव पव्वाविए[5],

---

१. भ० १५।१०४ ।

२. स० पा०—जहा सव्वाणुभूती तहेव जाव सच्चेव ।

३. सं० पा०—सव्व त चेव जाव सुहमत्थि ।

४. स० पा०—त चेव जाव पज्जुवासति ।

५. सं० पा०—पव्वाविए जाव मए ।

•मए चेव मुडाविए, मए चेव सेहाविए, मए चेव सिक्खाविए°, मए चेव वहुस्सुतीकए, मम चेव मिच्छ विप्पडिवन्ने ? त मा एव गोसाला[1] ! •नारिहसि गोसाला ! सच्चेव ते सा छाया° नो अण्णा ।।

११२ तए ण से गोसाले मखलिपुत्ते समणेण भगवया महावीरेण एव वुत्ते समाणे आसुरुत्ते रुट्ठे कुविए चडिक्किए मिसिमिसेमाणे तेयासमुग्घाएण समोहण्णइ, समोहणित्ता सत्तट्ठ पयाइ पच्चोसक्कइ, पच्चोसक्कित्ता समणस्स भगवओ महावीरस्स वहाए सरीरगसि तेय निसिरति—से जहानामए वाउक्कलिया[2] इ वा वायमडलिया इ वा सेलसि[3] वा कुड्डसि वा थभसि वा थूभसि वा आवारिज्जमाणी[4] वा निवारिज्जमाणी वा सा ण तत्थ नो कमति नो पक्कमति एवामेव गोसालस्स वि मखलिपुत्तस्स तवे तेए समणस्स भगवओ महावीरस्स वहाए सरीरगसि निसिट्ठे समाणे से ण तत्थ नो कमति नो पक्कमति अचियचि करेति, करेत्ता आयाहिण-पयाहिण करेति, करेत्ता उड्ढ वेहास उप्पइए, से ण तओ पडिहए पडिनियत्तमाणे[5] तमेव गोसालस्स मखलिपुत्तस्स सरीरग अणुडहमाणे-अणुडहमाणे अतो-अतो अणुप्पविट्ठे ।।

११३ तए ण से गोसाले मखलिपुत्ते सएण तेएण अण्णाइट्ठे समाणे समण भगव महावीर एव वयासी—तुम ण आउसो कासवा ! मम तवेण तेएण अण्णाइट्ठे समाणे अतो छण्ह मासाण पित्तज्जरपरिगयसरीरे दाहवक्कतीए छउमत्थे चेव काल करेस्ससि ।।

११४. तए ण समणे भगव महावीरे गोसाल मखलिपुत्त एव वयासी—नो खलु अह गोसाला ! तव तवेण तेएण अण्णाइट्ठे समाणे अतो छण्ह[6] •मासाण पित्तज्जर-परिगयसरीरे दाहवक्कतीए छउमत्थे चेव° काल करेस्सामि, अहण्ण अण्णाइ सोलस वासाइ जिणे सुहत्थी विहरिस्सामि । तुम ण गोसाला ! अप्पणा चेव सएण तेएण अण्णाइट्ठे समाणे अतो सत्तरत्तस्स पित्तज्जरपरिगयसरीरे दाहवक्कतीए[7] छउमत्थे चेव काल करेस्ससि ।।

सावत्थीए जणपवाद-पदं

११५. तए ण सावत्थीए नगरीए सिंघाडग[8]-•तिग-चउक्क-चच्चर-चउम्मुह-महापह°-पहेसु बहुजणो अण्णमण्णस्स एवमाइक्खइ जाव एव परूवेइ—एव खलु

---

१. स० पा०—गोसाला जाव नो ।
२. वाओ° (ता), वातु° (म) ।
३. तृतीयार्थे सप्तमी (वृ) ।
४. आवरि° (अ, क, ख, व, म, स) ।
५. पडिणियत्तेमाणे (स) ।
६. स० पा०—छण्ह जाव काल ।
७. जाव (अ, क, ख, ता, व, म, स) ।
८. स० पा०—सिंघाडग जाव पहेसु ।

देवाणुप्पिया ! सावत्थीए नगरीए बहिया कोट्ठए चेइए दुवे जिणा संलवंति—एगे वदंति तुमं पुव्विं कालं करेस्ससि, एगे वदंति तुमं पुव्विं कालं करेस्ससि। तत्थ णं के पुण सम्मावादी[1] ? के मिच्छावादी ?
तत्थ णं जे से अहप्पहाणे जणे से वदति—समणे भगवं महावीरे सम्मावादी, गोसाले मंखलिपुत्ते मिच्छावादी ॥

गोसालेण समणाणं पसिणवागरण-पदं

११६. अज्जोति ! समणे भगवं महावीरे समणे निग्गंथे आमंतेत्ता एवं वयासी—अज्जो ! से जहानामए तणरासी इ वा कट्ठरासी इ वा पत्तरासी इ वा तयारासी इ वा तुसरासी इ वा भुसरासी इ वा गोमयरासी इ वा अवकररासी इ वा अगणिझामिए[2] अगणिझूसिए अगणिपरिणामिए हयतेए गयतेए नट्ठतेए भट्ठतेए लुत्ततेए विणट्ठतेए जाए[3], एवामेव गोसाले मंखलिपुत्ते ममं वहाए सरीरगंसि तेयं निसिरित्ता हयतेए गयतेए[4] °नट्ठतेए भट्ठतेए लुत्ततेए° विणट्ठतेए जाए, तं छंदेणं अज्जो ! तुब्भे गोसालं मंखलिपुत्तं धम्मियाए पडिचोयणाए पडिचोएह, धम्मियाए पडिसारणाए पडिसारेह, धम्मिएणं पडोयारेणं पडोयारेह, अट्ठेहि य हेऊहि य पसिणेहि य वागरणेहि य कारणेहि य निप्पट्ठपसिणवागरणं करेह ॥

११७. तए णं ते समणा निग्गंथा समणेणं भगवया महावीरेणं एवं वुत्ता समाणा समणं भगवं महावीरं वंदंति नमंसंति, वंदित्ता नमंसित्ता जेणेव गोसाले मंखलिपुत्ते तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता गोसालं मंखलिपुत्तं धम्मियाए पडिचोयणाए पडिचोएंति, धम्मियाए पडिसारणाए पडिसारेंति, धम्मिएणं पडोयारेणं पडोयारेंति, अट्ठेहि य हेऊहि य[5] °कारणेहि य निप्पट्ठपसिण°वागरणं[6] करेंति[7] ॥

११८. तए णं से गोसाले मंखलिपुत्ते समणेहिं निग्गंथेहिं धम्मियाए पडिचोयणाए पडिचोइज्जमाणे[8], °धम्मियाए पडिसारणाए पडिसारिज्जमाणे, धम्मिएणं पडोयारेण य पडोयारेज्जमाणे, अट्ठेहि य हेऊहि य पसिणेहि य वागरणेहि य कारणेहि य° निप्पट्ठपसिणवागरणे कीरमाणे आसुरुत्ते[9] °रुट्ठे कुविए चंडिक्किए° मिसिमिसेमाणे नो संचाएति समणाणं निग्गंथाणं सरीरगस्स किंचि आबाहं वा वाबाहं वा उप्पाएत्तए, छविच्छेदं वा करेत्तए ॥

---

१ सम्मावाती (अ, क, ख, ब, स)।
२. °ज्झामिए (ता, म)।
३. जाव (अ, म, स)।
४ सं० पा०—गयतेए जाव विणट्ठतेए।
५. सं० पा०—हेऊहि य जाव वागरणं।
६ °वाकरणं (अ)।
७. वाकरेंति (अ), वा वागरेति (ता)।
८. सं० पा०—पडिचोइज्जमाणे जाव निप्पट्ठ°
९ सं० पा०—आसुरुत्ते जाव मिसि°।

गोसालस्स संघभेद-पदं

११९ तए णं ते आजीविया थेरा गोसालं मंखलिपुत्तं समणेहिं निग्गंथेहिं धम्मियाए पडिचोयणाए पडिचोएज्जमाणं, धम्मियाए पडिसारणाए पडिसारिज्जमाणं, धम्मिएणं पडोयारेण य पडोयारेज्जमाणं, अट्ठेहि य हेऊहि य[1] •पसिणेहि य वागरणेहि य कारणेहि य निप्पट्ठपसिणवागरणं° कीरमाणं, आसुरुत्तं[2] •रुट्ठं कुवियं चंडिक्कियं° मिसिमिसेमाणं समणाणं निग्गंथाणं सरीरगस्स किंचि आबाहं वा वाबाहं वा छविच्छेदं वा अकरेमाणं पासंति, पासित्ता गोसालस्स मंखलिपुत्तस्स अंतियाओ आयाए अवक्कमंति, अवक्कमित्ता जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता समणं भगवं महावीरं तिक्खुत्तो आयाहिण-पयाहिणं करेंति, करेत्ता वंदंति नमंसंति, वंदित्ता नमंसित्ता समणं भगवं महावीरं उवसंपज्जित्ताणं विहरंति। अत्थेगतिया आजीविया थेरा गोसालं चेव मंखलिपुत्तं उवसंपज्जित्ताणं विहरंति।।

गोसालस्स पडिगमण-पदं

१२० तए णं से गोसाले मंखलिपुत्ते जस्सट्ठाए हव्वमागए तमट्ठं असाहेमाणे[3], रुंदाइं पलोएमाणे, दीहुण्हाइं नीससमाणे, दाढियाए लोमाइं लुंचमाणे, अवडुं[4] कंडूयमाणे, पुयलिं पप्फोडेमाणे, हत्थे विणिद्धुणमाणे, दोहि वि पाएहिं भूमिं कोट्टेमाणे हा हा अहो! हओहमस्सि त्ति कट्टु समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतियाओ कोट्ठयाओ चेइयाओ पडिनिक्खमति, पडिनिक्खमित्ता जेणेव सावत्थी नगरी, जेणेव हालाहलाए कुंभकारीए कुंभकारावणे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता हालाहलाए कुंभकारीए कुंभकारावणंसि अंबकूणगहत्थगए, मज्जपाणगं पियमाणे, अभिक्खणं गायमाणे, अभिक्खणं नच्चमाणे, अभिक्खणं हालाहलाए कुंभकारीए अंजलिकम्मं करेमाणे, सीयलएणं मट्टियापाणएणं आयंचिण-उदएणं गायाइं परिसिंचमाणे[5] विहरइ।।

गोसालेण नाणासिद्धंत-परूवण-पदं

१२१ अज्जोति! समणे भगवं महावीरे समणे निग्गंथे आमंतेत्ता एवं वयासी—जावतिए णं अज्जो! गोसालेणं मंखलिपुत्तेणं ममं वहाए सरीरगंसि तेये निसट्ठे से णं अलाहि पज्जत्ते सोलसण्हं जणवयाणं, तं जहा—१ अंगाणं २ वंगाणं ३ मगहाणं ४ मलयाणं ५ मालवगाणं[6] ६ अच्छाणं ७ वच्छाणं ८. कोच्छाणं

---

१ सं० पा०—हेऊहि य जाव कीरमाणं।
२. सं० पा०—आसुरुत्ते जाव मिसि°।
३ आसाहेमाणे (ख)।
४ अवटठुं (अ, स), अवडुयं (ता)।
५ परिसिंचमाणे २ (ता)।
६. मालवगाणं (ख), मालवताणं (ता)।

९. पाढाण १० लाढाणं ११ वज्जीण १२. मोलीणं[1] १३ कासीणं १४ कोस-लाण १५ अवाहाण १६ सुभुत्तराण[2] घाताए वहाए उच्छादणयाए भासी-करणयाए।

ज पि य अज्जो! गोसाले मखलिपुत्ते हालाहलाए कुभकारोए कुभकारावणसि अंवकूणगहत्थगए, मज्जपाण पियमाणे, अभिक्खण गायमाणे, अभिक्खण नच्च-माणे, अभिक्खण[3] •हालाहलाए कुभकारीए° अजलिकम्म करेमाणे विहरइ, तस्स वि य ण वज्जस्स पच्छादणट्ठयाए इमाइ अट्ठ चरिमाइ पण्णवेइ, त जहा— १ चरिमे पाणे २ चरिमे गेये ३ चरिमे नट्टे ४ चरिमे अजलिकम्मे ५. चरिमे पोक्खलसवट्टए महामेहे ६ चरिमे सेयणए गंधहत्थो ७ चरिमे महासिला-कटए सगामे ८ अह च ण इमीसे ओसप्पिणिसमाए[4] चउवीसाए तित्थगराण[5] चरिमे तित्थगरे सिज्झिस्स जाव[6] अत करेस्स।

ज पि य अज्जो! गोसाले मखलिपुत्ते सीयलएणं मट्टियापाणएण आयंचिण-[7] उदएण गायाइ परिसिचमाणे विहरइ, तस्स वि ण वज्जस्स पच्छादणट्ठयाए इमाइ चत्तारि पाणगाइ चत्तारि अपाणगाइ पण्णवेति॥

१२२. से कि त पाणए ?
पाणए चउव्विहे पण्णत्ते, तं जहा—१ गोपुट्ठए २. हत्थमद्दियए ३. आतवतत्तए ४ सिलापब्भट्ठए। सेत्त पाणए॥

१२३. से किं तं अपाणए ?
अपाणए चउव्विहे पण्णत्ते, त जहा—१. थालपाणए २. तयापाणए ३. सिंबलि-पाणए[8] ४ सुद्धपाणए॥

१२४ से किं त थालपाणए ?
थालपाणए—जे णं दाथालग वा दावारग वा दाकुभग वा दाकलस वा सीतलग उल्लग[9] हत्थेहिं परामुसइ, न य पाणिय पियइ। सेत्त थालपाणए॥

१२५. से कि त तयापाणए ?
तयापाणए—जे ण अंव वा अवाडग वा जहा पओगपदे जाव[10] बोर[11] वा तेवरुय[12]

---

१. मालीण (अ, ख, ता, व, म)।
२ सुभुत्तराण (अ, क, म), सुभत्तराण (ख) मभुत्तराण (ता, व); सुभत्तराण (स)।
३. स० पा०—अभिक्खण जाव अजलिकम्म।
४. ओसप्पिणीए (स)।
५ तित्यकराण (अ, क, व, म, स), तित्यक-राण (ख)।
६. भ० १।४४।
७. आदचणि (अ, क, ख, व, म)।
८. सवलि° (अ, ख), सेवलि° (व); संव-एलि° (म)।
९ ओलग्ग (ख)।
१०. प० १६।
११. पोरु (अ), पोरं (क, ता, म); चोर (ब)।
१२. तवरुय (अ, म), तंवुरुय (ता); तेवुरुय (व); तिंदुरुयं (स)।

वा तरुणग आमग[1] आसगसि आवीलेति वा पवीलेति वा, न य पाणिय पियइ । सेत्त तयापाणए ।।

१२६ से किं तं सिवलिपाणए ?
सिवलिपाणए—जे ण कलसगलिय[2] वा मुग्गसगलिय वा माससगलिय वा सिंबलिसगलिय वा तरुणिय आमिय आसगसि आवीलेति वा पवीलेति वा, न य पाणिय पियति । सेत्त सिंबलिपाणए ।।

१२७ से कि त सुद्धपाणए ?
सुद्धपाणए—जे ण छम्मासे सुद्धखाइम खाइ, दो मासे पुढविसथारोवगए, दो मासे कट्ठसथारोवगए, दो मासे दब्भसथारोवगए, तस्स ण बहुपडिपुण्णाण छण्ह मासाण अतिमराईए इमे दो देवा महिड्ढिया जाव[3] महेसक्खा अतिय पाउब्भवति, त जहा—पुण्णभद्दे य माणिभद्दे य । तए ण ते देवा सीयलएहिं उल्लएहिं हत्थेहि गायाइ परामुसति, जे ण ते देवे साइज्जति, से ण आसीविसत्ताए कम्म पकरेति, जे ण ते देवे नो साइज्जति तस्स ण ससि[4] सरीरगसि अगणिकाए सभवति, से ण सएण तेएण सरीरग झामेति, झामेत्ता तओ पच्छा सिज्झति जाव अत करेति । सेत्त सुद्धपाणए ।।

अयंपुल-आजीविओवासय-पदं

१२८. तत्थ ण सावत्थीए नयरीए अयपुले नाम आजीविओवासए परिवसइ—अड्ढे, जहा हालाहला जाव[5] आजीवियसमएण अप्पाण भावेमाणे विहरइ । तए ण तस्स अयपुलस्स आजीविओवासगस्स अण्णया कदायि पुव्वरत्तावरत्तकालसमयसि कुडुवजागरिय जागरमाणस्स अयमेयारूवे अज्झत्थिए[6] •चिंतिए पत्थिए मणोगए सकप्पे° समुप्पज्जित्था—किंसठिया ण हल्ला पण्णत्ता ?

१२९. तए ण तस्स अयपुलस्स आजीविओवासगस्स दोच्च पि अयमेयारूवे अज्झत्थिए[7] •चिंतिए पत्थिए मणोगए सकप्पे° समुप्पज्जित्था—एव खलु मम धम्मायरिए धम्मोवदेसए गोसाले मखलिपुत्ते उप्पन्ननाणदसणधरे[8] •जिणे अरहा केवली° सव्वण्णू सव्वदरिसी इहेव सावत्थीए नगरीए हालाहलाए कुभकारीए कुभकारावणसि आजीवियसघसपरिवुडे आजीवियसमएण अप्पाणं भावेमाणे विहरइ, त सेय खलु मे कल्ल पाउप्पभाए रयणीए जाव[9] उट्ठियम्मि

---

१. आमलग (ता) ।
२. °सिंगलिय (क, ता) ।
३. भ० १।३३९ ।
४ तसि (अ, म, स) ।
५. भ० १५।१ ।
६ स० पा०—अज्झत्थिए जाव समुप्पज्जित्था ।
७ स० पा०—अज्झत्थिए जाव समुप्पज्जित्था ।
८. स० पा०—उप्पन्ननाणदसणधरे जाव
९. भ० २।६६ ।

उट्ठेइ, उट्ठेत्ता गोसालं मखलिपुत्त वंदइ नमसइ[1], •वदित्ता नमंसित्ता जामेव दिस पाउब्भूए तामेव दिस ° पडिगए ॥

गोसालस्स अप्पणो नीहरण-निद्देस-पदं

१३९ तए णं से गोसाले मंखलिपुत्ते अप्पणो मरण आभोएइ, आभोएत्ता आजीविए थेरे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एव वयासी—तुब्भे णं देवाणुप्पिया ! मम कालगयं जाणित्ता सुरभिणा गधोदएण ण्हाणेह[2], ण्हाणेत्ता पम्हलसुकुमालाए गधकासाईए गायाइं लूहेह, लूहेत्ता सरसेण गोसीसचदणेण गायाइ अणुलिपह, अणुलिंपित्ता महरिहं हसलक्खण पडसाडग नियसेह, नियसेत्ता सव्वालकारविभूसिय करेह, करेत्ता पुरिससहस्सवाहिणिं सीय दुरुहेह[3], दुरुहेत्ता सावत्थीए नयरीए सिंघाडग[4]-तिग-चउक्क-चच्चर-चउम्मुह-महापह°-पहेसु महया-महया सद्देण उग्घोसेमाणा[5]-उग्घोसेमाणा एव वदह—एव खलु देवाणुप्पिया ! गोसाले मखलिपुत्ते जिणे जिणप्पलावी[6], •अरहा अरहप्पलावी, केवली केवलिप्पलावी, सव्वण्णू सव्वण्णुप्पलावी, जिणे° जिणसद्द पगासेमाणे विहरित्ता इमीसे ओसप्पिणीए चउवीसाए तित्थगराण चरिमे तित्थगरे, सिद्धे जाव[7] सव्वदुक्खप्पहीणे--इड्ढिसक्कारसमुदएणं मम सरीरगस्स नीहरण करेह ॥

१४० तए ण ते आजीविया थेरा गोसालस्स मखलिपुत्तस्स एयमट्ठ विणएण पडिसुणेति ॥

गोसालस्स परिणाम-परिवत्तणपुव्वं कालधम्म-पदं

१४१. तए ण तस्स गोसालस्स मंखलिपुत्तस्स सत्तरत्तसि परिणममाणसि पडिलद्ध-सम्मत्तस्स अयमेयारूवे अज्झत्थिए[8] •चिंतिए पत्थिए मणोगए सकप्पे° समुप्पज्जित्था—नो खलु अहं जिणे जिणप्पलावी[9], •अरहा अरहप्पलावी, केवली केवलिप्पलावी, सव्वण्णू सव्वण्णुप्पलावी, जिणे° जिणसद्द पगासेमाणे विहरिते[10] अहण्ण गोसाले चेव मखलिपुत्ते समणघायए समणमारए समणपडिणीए आयरिय-उवज्झायाण अयसकारए अवण्णकारए अकित्तिकारए बहूहिं असब्भावुब्भावणाहिं मिच्छत्ताभिनिवेसेहिं य अप्पाण वा पर वा तदुभय वा

---

१ स० पा०—नमसइ जाव पडिगए ।

२. 'ण्हावेह' इति रूपं समीचीन प्रतिभाति, किन्तु 'ण्हावेइ, ण्हाणेइ' इति रूपद्वयमपि लभ्यते ।

३. द्रुहेह (अ, क, ख, ता) ।

४. स० पा०—सिंघाडग जाव पहेसु ।

५ घोसेमाणा (अ, ख, व) ;

६ स० पा०—जिणप्पलावी जाव जिणसद्द ।

७. भ० १।४३३ ।

८. स० पा०—अज्झत्थिए जाव समुप्पज्जित्था ।

९. स० पा०—जिणप्पलावी जाव जिणसद्द ।

१०. विहरइ (क, ता, स) ।

वुग्गाहेमाणे वुप्पाएमाणे विहरित्ता सएण तेएणं अण्णाइट्ठे समाणे अतो सत्त-रत्तस्स पित्तज्जरपरिगयसरीरे दाहवक्कतीए छउमत्थे चेव काल करेस्स । समणे भगव महावीरे जिणे जिणप्पलावी[1], •अरहा अरहप्पलावी, केवली केवलिप्प-लावी, सव्वण्णू सव्वण्णुप्पलावी, जिणे° जिणसद्द पगासेमाणे विहरइ—एव सपेहेति, सपेहेत्ता आजीविए थेरे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता उच्चावय[2]-सवह-सावियए पकरेति, पकरेत्ता एव वयासी—नो खलु अह जिणे जिणप्पलावी जाव पगासे-माणे विहरिए । अहण्ण गोसाले चेव मखलिपुत्ते समणघायए[3] •समणमारए समणपडिणीए आयरिय-उवज्झायाण अयसकारए अवण्णकारए अकित्तिकारए वहूहि असब्भावुब्भावणाहि मिच्छत्ताभिनिवेसेहि य अप्पाण वा पर वा तदुभय वा वुग्गाहेमाणे वुप्पाएमाणे विहरित्ता सएण तेएण अण्णाइट्ठे समाणे अतो सत्तर-त्तस्स पित्तज्जरपरिगयसरीरे दाहवक्कतीए° छउमत्थे चेव काल करेस्स । समणे भगव महावीरे जिणे जिणप्पलावी जाव जिणसद्द पगासेमाणे विहरइ, त तुब्भ ण देवाणुप्पिया ! मम कालगय जाणित्ता वामे पाए सुबेण बधेह[4], बधेत्ता तिक्खुत्तो मुहे उट्ठुभेह[5], उट्ठुभेत्ता सावत्थीए नगरीए सिघाडग[6]-•तिग-चउक्क-चच्चर-चउम्मुह-महापह°-पहेसु आकट्ट-विकट्टि करेमाणा महया-महया सद्देण उग्घोसेमाणा-उग्घोसेमाणा एव वदह—नो खलु देवाणुप्पिया ! गोसाले मख-लिपुत्ते जिणे जिणप्पलावी जाव विहरिए । एस ण गोसाले चेव मखलिपुत्ते समणघायए जाव छउमत्थे चेव कालगए । समणे भगव महावीरे जिणे जिण-प्पलावी जाव विहरइ । महया अणिड्ढी-असक्कारसमुदएण मम सरीरगस्स नीहरण करेज्जाह—एव वदित्ता कालगए ॥

गोसालस्स नीहरण-पदं

१४२ तए ण आजीविया थेरा गोसाल मखलिपुत्त कालगय जाणित्ता हालाहलाए कुभकारीए कुभकारावणस्स दुवाराइ पिहेति, पिहेत्ता हालाहलाए कुभकारीए कुभकारावणस्स वहुमज्झदेसभाए सावत्थि नगरि आलिहति, आलिहित्ता गोसालस्स मखलिपुत्तस्स सरीरग वामे पदे सुबेण वधति, वधित्ता तिक्खुत्तो मुहे उट्ठुभति, उट्ठुभित्ता सावत्थीए नगरीए सिंघाडग[7]-•तिग-चउक्क-चच्चर-चउ-म्मुह-महापह°-पहेसु आकट्ट-विकट्टि करेमाणा णीय-णीय सद्देण उग्घोसेमाणा-

---

१. स० पा०—जिणप्पलावी जाव जिणसद्द ।
२ उच्चाविय (अ, म) ।
३ स० पा०—समणघायए जाव छउमत्थे ।
४ वधहा (अ, व), बधह (ख, म, स), वधेहा (ता) ।
५ उट्ठुभह (अ, ख, व, स); उहुभस्स(ता), उच्छुभह (वृपा)
६ स० पा०—सिंघाडग जाव पहेसु ।
७ स० पा०—सिंघाडग जाव पहेसु ।

सूरे सहस्सरस्सिम्मि दिणयरे तेयसा जलते गोसाल मंखलिपुत्तं वंदित्ता जाव[1] पज्जुवासित्ता इम एयारूव वागरण वागरित्तए त्ति कट्टु एव सपेहेति, सपेहेत्ता कल्ल पाउप्पभाए रयणीए जाव उट्ठियम्मि सूरे सहस्सरस्सिम्मि दिणयरे तेयसा जलते ण्हाए कयवलिकम्मे जाव[2] अप्पमहग्घाभरणालकियसरीरे साओ गिहाओ पडिनिक्खमति, पडिनिक्खमित्ता पायविहारचारेण सावत्थि नगरि मज्झमज्झेण[3] जेणेव हालाहलाए कुभकारीए कुभकारावणे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता गोसाल मखलिपुत्त हालाहलाए कुभकारीए कुभकारावणसि अवकूणगहत्थगय[4] •मज्जपाणग पीयमाण अभिक्खण गायमाण, अभिक्खण नच्चमाण, अभिक्खण हालाहलाए कुभकारीए° अजलिकम्म करेमाण सीयलएण मट्टिया •पाणएण आयचिण-उदएण° गायाइ परिसिचमाण पासइ, पासित्ता लज्जिए विलिए विड्डे सणिय-सणिय पच्चोसक्कइ ।।

१३० तए ण ते आजीविया थेरा अयपुल आजीवियोवासग लज्जिय जाव[6] पच्चोसक्कमाण पासइ, पासित्ता एव वयासी—एहि ताव अयपुला ! इतो ।।

१३१ तए ण से अयपुले आजीवियोवासए आजीवियथेरेहि एव वुत्ते समाणे जेणेव आजीविया थेरा तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता आजीविए थेरे वदइ नमंसइ, वदित्ता नमसित्ता नच्चासन्ने जाव[7] पज्जुवासइ ।।

१३२. अयपुलाति ! आजीविया थेरा अयपुल आजीवियोवासग एव वयासी—से नूण ते अयपुला ! पुव्वरत्तावरत्तकालसमयंसि[8] •कुडुवजागरिय जागरमाणस्स अयमेयारूवे अज्झत्थिए चितिए पत्थिए मणोगए सकप्पे समुप्पज्जित्था°—किसंठिया ण हल्ला पण्णत्ता ?

तए ण तव अयंपुला ! दोच्च पि अयमेयारूवे त चेव सव्व भाणियव्व जाव[9] सावत्थि नगरिं मज्झमज्झेण जेणेव हालाहलाए कुभकारीए कुंभकारावणे, जेणेव इह तेणेव हव्वमागए । से नूणं ते अयपुला ! अट्ठे समट्ठे ?

हता अत्थि ।

ज पि य अयपुला ! तव धम्मायरिए धम्मोवदेसए गोसाले मखलिपुत्ते हालाहलाए कुभकारीए कुभकारावणसि अवकूणगहत्थगए जाव अजलिं करेमाणे

---

१. भ० २।३१ ।
२. भ० २।६७ ।
३. मज्झेण मज्झेण (क, ता, व) सर्वत्र ।
४. स० पा०—अवकूणगहत्थगय जाव अजलिकम्म ।
५ स० पा—मट्टिया जाव गायाइ ।
६ भ० १५।१२६ ।
७ भ० १।१० ।
८. स० पा०—पुव्वरत्तावरत्तकालसमयसि जाव किसठिया ।
९. भ० १५।१२६ ।

विहरइ, तत्थ वि ण भगव इमाइं अट्ठ चरिमाइ पण्णवेति, तं जहा—चरिमे पाणे जाव[1] अत करेस्सति ।

ज पि य अयपुला ! तव धम्मायरिए धम्मोवदेसए गोसाले मखलिपुत्ते सीयलएण मट्टिया[2]•पाणएण आयचिण-उदएण गायाइ परिसिचमाणे° विहरइ, तत्थ वि ण भगव इमाइ चत्तारि पाणगाइ, चत्तारि अपाणगाइ पण्णवेति ।

से कि त पाणए ? पाणए जाव[3] तओ पच्छा सिज्झति जाव अत करेति ।

त गच्छ ण तुम अयपुला ! एस चेव तव धम्मायरिए धम्मोवदेसए गोसाले मखलिपुत्ते इमं एयारूव वागरण वागरेहिति ।।

१३३ तए ण से अयपुले आजीविओवासए आजीविएहिं थेरेहि एवं वुत्ते समाणे हट्ठतुट्ठे उट्ठाए उट्ठेइ, उट्ठेत्ता जेणेव गोसाले मखलिपुत्ते तेणेव पहारेत्थ गमणाए ।।

१३४ तए ण ते आजीविया थेरा गोसालस्स मखलिपुत्तस्स अवकूणग[4]-एडावणट्ठयाए एगतमते सगार कुव्वति ।।

१३५. तए ण से गोसाले मखलिपुत्ते आजीवियाण थेराण सगार पडिच्छइ, पडिच्छित्ता अवकूणग एगतमते एडेइ ।।

१३६ तए ण से अयपुले आजीवियोवासए जेणेव गोसाले मखलिपुत्ते तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता गोसाल मखलिपुत्त तिक्खुत्तो जाव[5] पज्जुवासति ।।

१३७ अयपुलादि ! गोसाले मखलिपुत्ते अयपुल आजीवियोवासग एव वयासी—से नूणं अयपुला ! पुव्वरत्तावरत्तकालसमयसि जाव[6] जेणेव मम अतिय तेणेव हव्वमागए । से नूण अयपुला ! अट्ठे समट्ठे ?

हता अत्थि ।

त नो खलु एस अबकूणए, अबचोयए[7] ण एसे । किंसठिया हल्ला पण्णत्ता ? वसीमूलसठिया हल्ला पण्णत्ता । वीण वाएहि रे वीरगा ! वीण वाएहि रे वीरगा !

१३८. तए ण से अयपुले आजीवियोवासए गोसालेण मखलिपुत्तेण इम एयारूव वागरण वागरिए समाणे हट्ठतुट्ठ[8]•चित्तमाणदिए णदिए पीइमणे परमसोमणस्सिए हरिसवसविसप्पमाण°हियए गोसाल मखलिपुत्त वदइ नमसइ, वदित्ता नमसित्ता पसिणाइ पुच्छइ, पुच्छित्ता अट्ठाइ परियादियइ, परियादिइत्ता उट्ठाए

---

१. भ० १५।१२१ ।
२. सं० पा०—मट्टिया जाव विहरइ ।
३ भ० १५।१२२-१२७ ।
४. अंवखुणग (अ, क), अवउणग (ता, व) ।
५ भ० १।१० ।
६ भ० १५।१२८-१३३ ।
७ अवचोवए (ता) ।
८ स० पा०—हट्ठतुट्ठ जाव हियए ।

उग्घोसेमाणा एवं वयासी—नो खलु देवाणुप्पिया ! गोसाले मखलिपुत्ते जिणे जिणप्पलावी जाव विहरिए। एस णं गोसाले चेव मखलिपुत्ते समणघायए जाव छउमत्थे चेव कालगए। समणे भगवं महावीरे जिणे जिणप्पलावी जाव[1] विहरइ—सवह-पडिमोक्खणगं करेंति, करेत्ता दोच्चं पि पूया-सक्कार-थिरीकरणट्ठयाए गोसालस्स मखलिपुत्तस्स वामाओ पादाओ सुंबं मुयंति, मुइत्ता हालाहलाए कुंभकारीए कुंभकारावणस्स 'दुवार-वयणाइं'[2] अवगुणंति[3], अवगुणित्ता गोसालस्स मखलिपुत्तस्स सरीरगं सुरभिणा गंधोदएणं ण्हाणेंति, तं चेव जाव[4] महया इड्ढिसक्कारसमुदएणं गोसालस्स मखलिपुत्तस्स सरीरगस्स नीहरणं करेंति ॥

भगवओ रोगायंक-पाउब्भवण-पदं

१४३. तए णं समणे भगवं महावीरे अण्णया कदायि सावत्थीओ नगरीओ कोट्ठयाओ चेइयाओ पडिनिक्खमति, पडिनिक्खमित्ता बहिया जणवयविहारं विहरइ ॥

१४४ तेणं कालेणं तेणं समएणं मेंढियगामे[5] नामं नगरे होत्था—वण्णओ[6]। तस्स णं मेंढियगामस्स नगरस्स बहिया उत्तरपुरत्थिमे दिसीभाए, एत्थ णं साणकोट्ठए[7] नामं चेइए होत्था—वण्णओ जाव[8] पुढविसिलापट्टओ। तस्स णं साणकोट्ठगस्स चेइयस्स अदूरसामंते, एत्थ णं महेगे मालुयाकच्छए यावि होत्था—किण्हे किण्होभासे जाव[9] महामेहनिकुरंबभूए पत्तिए पुप्फिए फलिए हरियगरेरिज्जमाणे सिरीए अतीव-अतीव उवसोभेमाणे चिट्ठति। तत्थ णं मेंढियगामे नगरे रेवती नामं गाहावइणी परिवसति—अड्ढा जाव[10] बहुजणस्स अपरिभूया ॥

१४५. तए णं समणे भगवं महावीरे अण्णदा कदायि पुव्वाणुपुव्विं चरमाणे[11] •गामाणुगामं दूइज्जमाणे सुहंसुहेणं विहरमाणे° जेणेव मेंढियगामे नगरे जेणेव साणकोट्ठए चेइए तेणेव उवागच्छइ जाव[12] परिसा पडिगया ॥

१४६ तए णं समणस्स भगवओ महावीरस्स सरीरगंसि विपुले रोगायंके पाउब्भूए—उज्जले[13] •विउले पगाढे कक्कसे कडुए चंडे दुक्खे दुग्गे[14] तिव्वे° दुरहियासे, पित्तज्जरपरिगयसरीरे दाहवक्कंतिए[15] यावि विहरति, अवि याइं लोहिय-वच्चाइं

---

१. भ० १५।१४१।
२. दाराइं (ता)।
३. अवगुवति (ता)।
४. भ० १५।१३६।
५. मेढिय° (क); मिंढिय° (ब)।
६. ओ० सू० १।
७ साल° (अ, क, ब, म, स)।
८. ओ० सू० २-१३।
९. ओ० सू० ४।
१०. भ० ३।६४।
११. सं० पा०—चरमाणे जाव जेणेव।
१२. भ० १।७, ८।
१३. सं० पा०—उज्जले जाव दुरहियासे।
१४. × (वृ), दुग्गे (वृपा)।
१५. दाहवक्कंतीए (अ, ख, ता, म, स)।

पि पकरेइ, चाउवण्ण[1] च ण वागरेति—एव खलु समणे भगव महावीरे गोसालस्स मखलिपुत्तस्स तवेण तेएण अण्णाइट्ठे[2] समाणे अतो छण्ह मासाण पित्तज्जरपरिगयसरीरे दाहवक्कतिए छउमत्थे चेव काल करेस्सति ।।

सीहस्स माणसियदुक्ख-पद

१४७. तेण कालेण तेण समएण समणस्स भगवओ महावीरस्स अतेवासी सीहे नाम अणगारे—पगइभद्दए जाव[3] विणीए मालुयाकच्छगस्स अदूरसामते छट्ठछट्ठेण अणिक्खित्तेण तवोकम्मेण उड्ढ वाहाओ[4] •पगिज्झिय-पगिज्झिय सूराभिमुहे आयावणभूमीए आयावेमाणे° विहरति ।।

१४८ तए ण तस्स सीहस्स अणगारस्स झाणतरियाए वट्टमाणस्स अयमेयारूवे अज्झत्थिए[5] •चिंतिए पत्थिए मणोगए सकप्पे° समुप्पज्जित्था—एव खलु मम धम्मायरियस्स धम्मोवदेसगस्स समणस्स भगवओ महावीरस्स सरीरगसि विउले रोगायके पाउब्भूए—उज्जले जाव[6] छउमत्थे चेव काल करेस्सति, वदिस्सति य ण अण्णतित्थिया—छउमत्थे चेव कालगए—इमेण एयारूवेण महया मणोमाणसिएण दुक्खेण अभिभूए समाणे आयावणभूमीओ पच्चोरुभइ, पच्चोरुभित्ता जेणेव मालुयाकच्छए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता मालुयाकच्छग अतो-अतो अणुपविसइ, अणुपविसित्ता महया-महया सद्देण कुहुकुहुस्स परुण्णे ।।

भगवया सीहस्स आसासण-पदं

१४९. अज्जोति ! समणे भगव महावीरे समणे निग्गथे आमतेति, आमतेत्ता एव वयासी—एव खलु अज्जो ! मम अतेवासी सीहे नाम अणगारे पगइभद्दए [7]•जाव विणीए मालुयाकच्छगस्स अदूरसामते छट्ठछट्ठेण अणिक्खित्तेण तवोकम्मेण उड्ढ बाहाओ पगिज्झिय-पगिज्झिय सूराभिमुहे आयावणभूमीए आयावेमाणे विहरति ।

तए ण तस्स सीहस्स अणगारस्स झाणतरियाए वट्टमाणस्स अयमेयारूवे अज्झत्थिए चिंतिए पत्थिए मणोगए सकप्पे समुप्पज्जित्था—एव खलु मम धम्मायरियस्स धम्मोवदेसगस्स समणस्स भगवओ महावीरस्स सरीरगसि विउले रोगायंके पाउब्भूए—उज्जले जाव छउमत्थे चेव काल करेस्सति, वदिस्सति य ण अण्णतित्थिया—छउमत्थे चेव कालगए—इमेण एयारूवेण महया मणोमाणसिएण दुक्खेण अभिभूए समाणे आयावणभूमीओ पच्चोरुभइ, पच्चोरुभित्ता जेणेव

---

१. चाउव्वण्ण (व) ।
२ आदिट्ठे (क, ता) ।
३ भ० १।२८८ ।
४ स० पा०—वाहाओ जाव विहरइ ।
५. स० पा०—अज्झत्थिए जाव समुप्पज्जित्था
६. भ० १५।१४६ ।
७ स० पा०—त चेव सव्व भाणियव्व जाव परुण्णे ।

मालुयाकच्छए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता मालुयाकच्छग अतो-अंतो अणुपविसइ अणुपविसित्ता महया-महया सद्देण कुहुकुहुस्स° परुण्णे। त गच्छह ण अज्जो! तुब्भे सीहं अणगार सद्दाह[1] ॥

१५० तए ण ते समणा निग्गथा समणेण भगवया महावीरेण एव वुत्ता समाणा समण भगव महावीर वदति नमसति, वदित्ता नमंसित्ता समणस्स भगवओ महावीरस्स अतियाओ साणकोट्ठगाओ चेइयाओ पडिनिक्खमति, पडिनिक्खमित्ता जेणेव मालुयाकच्छए, जेणेव सीहे अणगारे तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता सीह अणगार एव वयासी--सीहा! धम्मायरिया सद्दावेति ॥

१५१ तए ण से सीहे अणगारे समणेहि निग्गथेहि सद्धि मालुयाकच्छगाओ पडिनिक्खमइ, पडिनिक्खमित्ता जेणेव साणकोट्ठए चेइए, जेणेव समणे भगवं महावीरे, तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता समण भगव महावीर तिक्खुत्तो आयाहिण-पयाहिण जाव[2] पज्जुवासति ॥

१५२. सीहादि! समणे भगव महावीरे सीह अणगार एव वयासी—से नूण ते सीहा! झाणतरियाए वट्टमाणस्स अयमेयारूवे[3] °अज्झत्थिए चिंतिए पत्थिए मणोगए सकप्पे समुप्पज्जित्था—एव खलु मम धम्मायरियस्स धम्मोवदेसगस्स समणस्स भगवओ महावीरस्स सरीरगसि विउले रोगायके पाउब्भूए—उज्जले जाव छउमत्थे चेव काल करेस्सति, वदिस्सति य ण अण्णतित्थिया—छउमत्थे चेव कालगए—इमेण एयारूवेण महया मणोमाणसिएण दुक्खेण अभिभूए समाणे आयावणभूमीओ पच्चोरुभित्ता, जेणेव मालुयाकच्छए तेणेव उवागच्छित्ता मालुयाकच्छग अतो-अतो अणुपविसित्ता महया-महया सद्देण कुहुकुहुस्स° परुण्णे। से नूणं ते सीहा! अट्ठे समट्ठे?

हता अत्थि।

तं नो खलु अह सीहा! गोसालस्स मखलिपुत्तस्स तवेण तेएण अण्णाइट्ठे समाणे अतो छण्ह मासाण[4] °पित्तज्जरपरिगयसरीरे दाहवक्कतिए छउमत्थे चेव° काल करेस्स अहण्ण अद्ध सोलस वासाइ जिणे सुहत्थी विहरिस्सामि, त गच्छह ण तुम सीहा! मेढियगाम नगर, रेवतीए गाहावतिणीए गिह, तत्थ ण रेवतीए गाहावतिणीए मम अट्ठाए दुवे 'कवोय-सरीरा'[5] उवक्खडिया, तेहि नो अट्ठो, अत्थि से अण्णे पारियासिए मज्जारकडए कुक्कुडमंसए, तमाहराहि, एएणं अट्ठो ॥

---

१. सद्दह (अ, क, ता)।
२ भ० १।१०।
३. स० पा०—अयमेयारूवे जाव परुण्णे।
४. स० पा०—मासाण जाव काल।
५. कवोतासरीरा (क, व), कतोयासरीरगा (ता)।

सीहेण रेवईए भेसज्जाणयण-पद

१५३ तए णं से सीहे अणगारे समणेणं भगवया महावीरेणं एवं वुत्ते समाणे हट्ठतुट्ठ[1]-•चित्तमाणंदिए णंदिए पीइमाणे परमसोमणस्सिए हरिसवसविसप्पमाण॰हियए समणं भगवं महावीरं वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता अतुरियमचवलमसंभतं[2] मुहपोत्तियं[3] पडिलेहेति, पडिलेहेत्ता [4]•भायणवत्थाइं पडिलेहेति, पडिलेहेत्ता भायणाइं पमज्जइ, पमज्जित्ता भायणाइं उग्गाहेइ, उग्गाहेत्ता॰ जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता समणं भगवं महावीरं वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतियाओ साणकोट्ठगाओ चेइयाओ पडिनिक्खमति, पडिनिक्खमित्ता अतुरिय[5]•मचवलमसंभंतं जुगंतरपलोयणाए दिट्ठीए पुरओ रियं सोहेमाणे-सोहेमाणे॰ जेणेव मेंढियगामे नगरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता मेंढियगामं नगरं मज्झंमज्झेणं जेणेव रेवतीए गाहावइणीए गिहे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता रेवतीए गाहावतिणीए गिहं अणुप्पविट्ठे ॥

१५४ तए णं सा रेवती गाहावतिणी सीहं अणगारं एज्जमाणं पासति, पासित्ता हट्ठतुट्ठा खिप्पामेव आसणाओ अब्भुट्ठेइ, अब्भुट्ठेत्ता सीहं अणगारं सत्तट्ठ पयाइं अणुगच्छइ, अणुगच्छित्ता तिक्खुत्तो आयाहिण-पयाहिणं करेति, करेत्ता वंदति नमंसति, वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी—संदिसंतु णं देवाणुप्पिया ! किमागमणप्पयोयणं ?

१५५ तए णं से सीहे अणगारे रेवतिं गाहावइणिं एवं वयासी—एवं खलु तुमे देवाणुप्पिए ! समणस्स भगवओ महावीरस्स अट्ठाए दुवे कवोय-सरीरा उवक्खडिया, तेहिं नो अट्ठो, अत्थि ते अण्णे पारियासिए मज्जारकडए कुक्कुडमंसए एयमाहराहि, तेणं अट्ठो ॥

१५६ तए णं सा रेवती गाहावइणी सीहं अणगारं एवं वयासी—केस णं सीहा ! से नाणी वा तवस्सी वा, जेणं तव एस अट्ठे मम ताव रहस्सकडे हव्वमक्खाए, जओ णं तुमं जाणासि ?

१५७ [6]•तए णं से सीहे अणगारे रेवइं गाहावइणिं एवं वयासी—एवं खलु रेवई ! मम धम्मायरिए धम्मोवदेसए समणे भगवं महावीरे उप्पण्णनाणदंसणधरे अरहा

---

१. सं॰ पा॰—हट्ठतुट्ठ जाव हियए।

२. भ॰ २।१०७ सूत्रे आदर्शेषु अतुरियमचवलमसभंते' इति पाठोस्ति। अत्र च आदर्शेषु 'अतुरियमचवलमसभंत' इति पाठोस्ति। उभयमपि रूपं नास्ति अशुद्धमिति यथा प्राप्तमुपात्तम्।

३. ॰पत्तियं (स)।

४. सं॰ पा॰—जहा गोयमसामी जाव जेणेव।

५. सं॰ पा॰—अतुरिय जाव जेणेव।

६. सं॰ पा॰—एवं जहा खंदए जाव जओ।

जिणे केवली तीयपच्चुप्पन्नमणागयवियाणए सव्वण्णू सव्वदरिसी जेणं मम एस अट्ठे तव ताव रहस्सकडे हव्वमक्खाए°, जओ ण अह जाणामि ॥

१५८. तए ण सा रेवती गाहावतिणी सीहस्स अणगारस्स अतिय एयमट्ठ सोच्चा निसम्म[1] हट्ठतुट्ठा जेणेव भत्तघरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता पत्तग[2] मोएति, मोएत्ता जेणेव सीहे अणगारे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सीहस्स अणगारस्स पडिग्गहगसि[3] त सव्व सम्म निस्सिरति ॥

१५९ तए ण तीए रेवतीए गाहावतिणीए तेण दव्वसुद्धेण[4] •दायगसुद्धेणं पडिगाहग-सुद्धेण तिविहेण तिकरणसुद्धेण° दाणेण सीहे अणगारे पडिलाभिए समाणे देवाउए निबद्धे,[5] •ससारे परित्तीकए, गिहसि य से इमाइ पच दिव्वाइ पाउब्भू-याइ, त जहा—वसुधारा वुट्ठा, दसद्धवण्णे कुसुमे निवातिए, चेलुक्खेवे कए, आहयाओ देवदुदुभीओ, अतरा वि य ण आगासे अहो दाणे, अहो दाणे त्ति घुट्ठे ॥

१६०. तए ण रायगिहे नगरे सिघाडग-तिग-चउक्क-चच्चर-चउम्मुह-महापह-पहेसु बहुजणो अण्णमण्णस्स एवमाइक्खइ एव भासइ एव पण्णवेइ एव परूवेइ—धन्ना ण देवाणुप्पिया! रेवई गाहावइणी, कयत्था ण देवाणुप्पिया! रेवई गाहावइणी, कयपुण्णा ण देवाणुप्पिया! रेवई गाहावइणी, कयलक्खणा ण देवाणुप्पिया! रेवई गाहावइणी, कया ण लोया देवाणुप्पिया! रेवतीए गाहा-वतिणीए, सुलद्धे णं देवाणुप्पिया! माणुस्सए जम्मजीवियफले रेवतीए गाहाव-तिणीए, जस्स ण गिहसि तहारूवे साधू साधुरूवे पडिलाभिए समाणे इमाइ पच दिव्वाइ पाउब्भूयाइ, त जहा—वसुधारा वुट्ठा जाव अहो दाणे, अहो दाणे त्ति घुट्ठे, त धन्ना कयत्था कयपुण्णा कयलक्खणा, कया ण लोया, सुलद्धे माणु-स्सए° जम्मजीवियफले रेवतीए गाहावतिणीए, रेवतीए गाहावतिणीए ॥

१६१. तए ण से सीहे अणगारे रेवतीए गाहावतिणीए गिहाओ पडिनिक्खमति, पडि-निक्खमित्ता मेढियगाम नगर मज्झमज्झेण निग्गच्छइ, निग्गच्छित्ता जहा गोयमसामी जाव[6] भत्तपाण पडिदसेति, पडिदसेत्ता समणस्स भगवओ महावीरस्स पाणिसि त सव्व सम्म निस्सिरति ॥

भगवओ आरोग्ग-पद

१६२. तए ण समणे भगवं महावीरे अमुच्छिए[7] •अगिद्धे अगढिए° अणज्झोववन्ने

---

१. निसम्मा (क, ता, ब)।
२. पत्तं (क, ख, ता, व, म)।
३. पडिग्गहसि (ता)।
४. स० पा०—दव्वसुद्धेण जाव दाणेण।
५. स० पा०—जहा विजयस्स जाव जम्म-जीवियफले।
६ भ० २।११०।
७. स० पा०—अमुच्छिए जाव अणज्झोववन्ने।

विलमिव पन्नगभूएण अप्पाणेण तमाहार सरीरकोट्ठगसि पक्खिवति ।।

१६३ तए ण समणस्स भगवओ महावीरस्स तमाहार आहारियस्स समाणस्स से विपुले रोगायके खिप्पामेव उवसते, हट्ठे जाए, अरोगे[1], वलियसरीरे। तुट्ठा समणा, तुट्ठाओ समणीओ, तुट्ठा सावया, तुट्ठाओ सावियाओ, तुट्ठा देवा, तुट्ठाओ देवीओ, सदेवमणुयासुरे लोए तुट्ठे—हट्ठे जाए समणे भगव महावीरे, हट्ठे जाए समणे भगव महावीरे ।।

सव्वाणुभूतिस्स उववाय-पदं

१६४ भतेति ! भगव गोयमे समण भगव महावीर वदति नमसति, वदित्ता नमसित्ता एव वयासी—एव खलु देवाणुप्पियाण अतेवासी पाईणजाणवए[2] सव्वाणुभूती नाम अणगारे पगइभद्दए जाव[3] विणीए, से ण भते ! तदा गोसालेण मखलिपुत्तेण तवेण तेएण भासरासीकए समाणे कहि गए ? कहि उववन्ने ?

एव खलु गोयमा ! मम अतेवासी पाईणजाणवए सव्वाणुभूती नाम अणगारे पगइभद्दए जाव विणीए, से ण तदा गोसालेण मखलिपुत्तेण तवेण तेएण भासरासीकए समाणे उड्ढ चदिम-सूरिय जाव[4] बभ-लतक-महासुक्के कप्पे वीइवइत्ता सहस्सारे कप्पे देवत्ताए उववन्ने। तत्थ ण अत्थेगतियाण देवाण अट्ठारस सागरोवमाइ ठिती पण्णत्ता। तत्थ ण सव्वाणुभूतिस्स वि देवस्स अट्ठारस सागरोवमाइं ठिती पण्णत्ता।

से ण भते ! सव्वाणुभूती देवे ताओ देवलोगाओ आउक्खएण भवक्खएण ठिइक्खएण[5] •अणतर चय चइत्ता कहि गच्छिहिति ? कहिं उववज्जिहिति ?

गोयमा !° महाविदेहे वासे सिज्झिहिति जाव[6] सव्वदुक्खाण अत करेहिति ।।

सुनक्खत्तस्स उववाय-पदं

१६५ एव खलु देवाणुप्पियाण अतेवासी कोसलजाणवए सुनक्खत्ते नाम अणगारे पगइभद्दए जाव विणीए। से ण भते ! तदा गोसालेणं मखलिपुत्तेण तवेण तेएण परिताविए समाणे कालमासे काल किच्चा कहिं गए ? कहि उववन्ने ?

एव खलु गोयमा ! मम अतेवासी सुनक्खत्ते नाम अणगारे पगइभद्दए जाव विणीए, से ण तदा गोसालेण मखलिपुत्तेण तवेण तेएण परिताविए समाणे जेणेव ममं अतिए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता वदति नमसति, वदित्ता नमसित्ता सयमेव पंच महव्वयाइ आरुभेति, आरुभेत्ता समणा य समणीओ य

---

१. आरोए (अ, म), आरोते (व)।
२ पतीण° (अ, स); पदीण° (क, व), पडीण° (ख, ता)।
३. भ० १।२८८।
४. भ० ११।१६६।
५. स० पा०—ठिइक्खएण जाव महाविदेहे।
६ भ० २।७३।

खामेति, खामेत्ता आलोइय-पडिक्कते समाहिपत्ते कालमासे कालं किच्चा उड्ढं चंदिम-सूरिय जाव[1] आणय-पाणयारणे कप्पे वीइवइत्ता अच्चुए कप्पे देवत्ताए उववन्ने। तत्थ ण अत्थेगतियाण देवाण बावीस सागरोवमाइं ठिती पण्णत्ता। तत्थ ण सुनक्खत्तस्स वि देवस्स बावीस सागरोवमाइ [2]•ठिती पण्णत्ता।

से ण भते! सुनक्खत्ते देवे ताओ देवलोगाओ आउक्खएण भवक्खएणं ठिइक्खएण अणतर चय चइत्ता कहिं गच्छिहिति ? कहि उववज्जिहिति ?

गोयमा! महाविदेहे वासे सिज्झिहिति जाव सव्वदुक्खाण° अत काहिति ॥

गोसालस्स भवब्भमण-पद

१६६ एव खलु देवाणुप्पियाण अतेवासी कुसिस्से गोसाले नाम मखलिपुत्ते से ण भते! गोसाले मखलिपुत्ते कालमासे कालं किच्चा कहिं गए ? कहि उववन्ने ?

एव खलु गोयमा! मम अतेवासी कुसिस्से गोसाले नाम मखलिपुत्ते समणघायए जाव[3] छउमत्थे चेव कालमासे काल किच्चा उड्ढ चदिम-सूरिय जाव[4] अच्चुए कप्पे देवत्ताए उववन्ने। तत्थ णं अत्थेगतियाण देवाण बावीस सागरोवमाइं ठिती पण्णत्ता। तत्थ ण गोसालस्स वि देवस्स बावीस सागरोवमाइ ठिती पण्णत्ता ॥

१६७ से ण भते! गोसाले देवे ताओ देवलोगाओ आउक्खएण भवक्खएण ठिइक्खएण[5] •अणतरं चय चइत्ता कहिं गच्छिहिति° ? कहि उववज्जिहिति ?

गोयमा! इहेव जबुद्दीवे दीवे भारहे वासे विंझगिरिपायमूले पुडेसु जणवएसु सयदुवारे नगरे समुतिस्स रण्णो भद्दाए भारियाए कुच्छिसि पुत्तत्ताए पच्चायाहिति। से ण तत्थ नवण्ह मासाणं बहुपडिपुण्णाण[6] •अद्धट्ठमाण य राइंदियाण° वीइक्कंताणं जाव[7] सुरूवे दारए पयाहिति ॥

१६८ ज रयणि च ण से दारए जाइहिति, त रयणि च णं सयदुवारे नगरे सब्भितर-बाहिरिए भारग्गसो य कुभग्गसो य पउमवासे य रयणवासे य वासे वासिहिति ॥

१६९ तए ण तस्स दारगस्स अम्मापियरो एक्कारसमे दिवसे वीइक्कते[8] •निव्वत्ते असुइजायकम्मकरणे° सपत्ते 'बारसमे दिवसे'[9] अयमेयारूव गोण्णं गुणनिप्फन्नं

---

१. भ० १५।१६४।

२. स० पा०—सेस जहा सव्वाणुभूतिस्स जाव अत।

३. भ० १५।१४१।

४. भ० १५।१६५।

५. सं० पा०—ठिइक्खएण जाव कहिं।

६. स० पा०—बहुपडिपुण्णाण जाव वीइक्कताणं।

७. भ० ११।१४६।

८. स० पा०—वीइक्कते जाव संपत्ते।

९ बारसाहदिवसे (अ, क, ख, ता, ब, म, स); द्रष्टव्यम्—भ० ११।१५३ सूत्रस्य पादटिप्पणम्।

नामधेज्जं काहिंति—जम्हा णं अम्हं इमंसि दारगंसि जायंसि समाणंसि सयदुवारे नगरे सब्भिंतरबाहिरिए[1] •भारग्गसो य कुंभग्गसो य पउमवासे य° रयणवासे वुट्ठे, तं होउ णं अम्हं इमस्स दारगस्स नामधेज्जं महापउमे-महापउमे। तए णं तस्स दारगस्स अम्मापियरो नामधेज्जं करेहिंति महापउमे त्ति॥

१७० तए णं तं महापउमं दारगं अम्मापियरो सातिरेगट्ठवासजायगं जाणित्ता सोभणंसि तिहि-करण-दिवस-नक्खत्त-मुहुत्तंसि महया-महया रायाभिसेगेणं अभिसिंचेहिंति। से णं तत्थ राया भविस्सति—महया हिमवंत-महंत-मलय-मंदर-महिंदसारे वण्णओ जाव[2] विहरिस्सइ॥

१७१ तए णं तस्स महापउमस्स रण्णो अण्णदा कदायि दो देवा महिड्ढिया जाव[3] महेसक्खा सेणाकम्मं काहिंति, तं जहा—पुण्णभद्दे य माणिभद्दे य॥

तए णं सयदुवारे नगरे बहवे राईसर-तलवर[4]-•माडंबिय-कोडुंबिय-इब्भ-सेट्ठि-सेणावइ°-सत्थवाहप्पभितओ[5] अण्णमण्णं सद्दावेहिंति, सद्दावेत्ता एवं वदेहिंति—जम्हा णं देवाणुप्पिया! महापउमस्स रण्णो दो देवा महिड्ढिया जाव महेसक्खा सेणाकम्मं करेंति, तंजहा—पुण्णभद्दे य माणिभद्दे य, तं होउ णं देवाणुप्पिया! अम्हं महापउमस्स रण्णो दोच्चे वि नामधेज्जे देवसेणे-देवसेणे। तए णं तस्स महापउमस्स रण्णो 'दोच्चे वि'[6] नामधेज्जे भविस्सति देवसेणे त्ति॥

१७२ तए णं तस्स देवसेणस्स रण्णो अण्णया कयाइ सेते संखतल[7]-विमल-सन्निगासे चउद्दंते हत्थिरयणे समुप्पज्जिस्सइ। तए णं से देवसेणे राया तं सेयं संखतल-विमल-सन्निगासं चउद्दंतं हत्थिरयणं दूढे[8] समाणे सयदुवारं नगरं मज्झंमज्झेणं अभिक्खणं-अभिक्खणं अतिजाहिति य निज्जाहिति य। तए णं सयदुवारे नगरे बहवे राईसर[9]-•तलवर-माडंबिय-कोडुंबिय-इब्भ-सेट्ठि-सेणावइ°-सत्थवाहप्पभितओ अण्णमण्णं सद्दावेहिंति, सद्दावेत्ता वदेहिंति—जम्हा णं देवाणुप्पिया! अम्हं देवसेणस्स रण्णो सेते संखतल-विमल-सन्निगासे चउद्दंते हत्थिरयणे समुप्पन्ने, तं होउ णं देवाणुप्पिया! अम्हं देवसेणस्स रण्णो तच्चे वि नामधेज्जे विमलवाहणे-विमलवाहणे। तए णं तस्स देवसेणस्स रण्णो तच्चे वि नामधेज्जे भविस्सति[10] विमलवाहणे त्ति॥

---

१. सं० पा०—सब्भिंतरबाहिरिए जाव रयण-वासे।
२. ओ० सू० १४।
३. भ० १।३३९।
४. सं० पा०—तलवर जाव सत्थवाह°।
५. °प्पभितीओ (स)।
६. दोच्चं पि (स)।
७. संखदल (क, ख, ता, वृ)।
८. दुरूढे (स)।
९. सं० पा०—राईसर जाव सत्थवाह°।
१०. ठा० ९।६२ सूत्रानुसारेण एतत् पदं स्वीकृतम्।

१७३ तए णं से विमलवाहणे राया अण्णया कदायि समणेहिं निग्गथेहिं मिच्छं विप्पडिवज्जिहिति—अप्पेगतिए आओसेहिति, अप्पेगतिए अवहंसिहिति, अप्पेगतिए निच्छोडेहिति, अप्पेगतिए निब्भछेहिति[1], अप्पेगतिए वधेहिति, अप्पेगतिए निरु भेहिति[2], अप्पेगतियाणं छविच्छेद करेहिति, अप्पेगतिए पमारेहिति, अप्पगतिए उद्दवेहिति, अप्पेगतियाण वत्थ पडिग्गह कवलं पायपुछण आच्छिदिहिति विच्छिदिहिति भिदिहिति अवहरिहिति, अप्पेगतियाण भत्तपाण वोच्छिदिहिति, अप्पेगतिए निन्नगरे करेहिति, अप्पेगतिए निव्विसए करेहिति ॥

१७४ तए ण सयदुवारे नगरे वहवे राईसर[3]-•तलवर-माडविय-कोडुविय-इब्भ-सेट्ठि-सेणावइ-सत्थवाहप्पभितओ अण्णमण्ण सद्दावेहिति, सद्दावेत्ता एव° वदिहिति—एवं खलु देवाणुप्पिया ! विमलवाहणे राया समणेहि निग्गथेहि मिच्छ विप्पडिवन्ने—अप्पेगतिए आओसति[4] जाव निव्विसए करेति, त नो खलु देवाणुप्पिया ! एय अम्ह सेय, नो खलु एय विमलवाहणस्स रण्णो सेय, नो खलु एय रज्जस्स वा रट्ठस्स वा वलस्स वा वाहणस्स वा पुरस्स वा अतेउरस्स वा जणवयस्स वा सेय, जण्ण विमलवाहणे राया समणेहि निग्गथेहि मिच्छ विप्पडिवन्ने । त सेय खलु देवाणुप्पिया ! अम्ह विमलवाहण राय एयमट्ठ विण्णवेत्तए त्तिकट्टु अण्णमण्णस्स अतिय एयमट्ठ पडिसुणेहिति[5], पडिसुणेत्ता जेणेव विमलवाहणे राया तेणेव उवागच्छिहिति[6], उवागच्छित्ता करयलपरिग्गहिय[7] •दसनह सिरसावत्त मत्थए अजलि कट्टु° विमलवाहणं राय जएण विजएण वद्धावेहिति[8], वद्धावेत्ता एव वदिहिति[9]—एव खलु देवाणुप्पिया ! समणेहि निग्गथेहि मिच्छ विप्पडिवन्ना अप्पेगतिए आओसति जाव अप्पेगतिए निव्विसए करेति, त नो खलु एय देवाणुप्पियाण सेय, नो खलु एय अम्ह सेय, नो खलु एय रज्जस्स वा जाव जणवयस्स वा सेय, जण्ण देवाणुप्पिया ! समणेहि निग्गथेहि मिच्छं विप्पडिवन्ना, त विरमतु ण देवाणुप्पिया ! एयस्स अट्ठस्स अकरणयाए ॥

१७५ तए ण से विमलवाहणे राया तेहि वहूहिं राईसर[10]•-तलवर-माडबिय-कोडुबिय-

---

१. निब्भत्थेहिति (अ, क), निब्भच्छेहिति (ख, ता) ।
२ रुभेहिति (अ, ता, व, म) ।
३. स० पा०—राईसर जाव वदिहिति ।
४. आउस्सइ (व, स) ।
५. पडिसुर्णेति (अ, क, ख, ता, व, म, स) ।
६ उवागच्छति (अ, क, ख, ता, व, म, स) ।
७. स० पा०—करयलपरिग्गहिय ।
८. वद्धावेंति (अ, क, ख, ता, ब, म, स) ।
९. वदति (अ, क, ख, ता), वदासी (व, म, स) ।
१०. स० पा०—राईसर जाव सत्थवाह° ।

इब्भ-सेट्ठि-सेणावइ०-सत्थवाहप्पभिईहिं एयमट्ठं विण्णत्ते[1] समाणे नो धम्मो त्ति नो तवो त्ति मिच्छा-विणएणं एयमट्ठं पडिसुणेहिति ॥

१७६. तस्स णं सयदुवारस्स नगरस्स बहिया उत्तरपुरत्थिमे दिसीभागे, एत्थ णं सुभूमिभागे नामं उज्जाणे भविस्सइ—सव्वोउय-पुप्फ-फलसमिद्धे वण्णओ[2] ॥

१७७. तेणं कालेणं तेणं समएणं विमलस्स अरहओ पओप्पए[3] सुमंगले नामं अणगारे जाइसपन्ने, जहा धम्मघोसस्स वण्णओ जाव[4] संखित्तविउलतेयलेस्से तिन्नाणोवगए सुभूमिभागस्स उज्जाणस्स अदूरसामंते छट्ठंछट्ठेणं अणिक्खित्तेणं[5] •तवोकम्मेणं उड्ढं बाहाओ पगिज्झिय-पगिज्झिय सूराभिमुहे आयावणभूमीए° आयावेमाणे विहरिस्सति ॥

१७८ तए णं से विमलवाहणे राया अण्णदा कदायि रहचरियं काउं निज्जाहिति ॥

१७९. तए णं से विमलवाहणे राया सुभूमिभागस्स उज्जाणस्स अदूरसामंते रहचरियं करेमाणे सुमंगलं अणगारं छट्ठंछट्ठेणं[6] •अणिक्खित्तेणं तवोकम्मेणं उड्ढं बाहाओ पगिज्झिय-पगिज्झिय सूराभिमुहं आयावणभूमीए° आयावेमाणं पासिहिति, पासित्ता आसुरुत्ते[7] •रुट्ठे कुविए चंडिक्किए° मिसिमिसेमाणे सुमंगलं अणगारं रहसिरेणं नोल्लावेहिति ॥

१८० तए णं से सुमंगले अणगारे विमलवाहणेणं रण्णा रहसिरेणं नोल्लाविए समाणे सणियं-सणियं उट्ठेहेति, उट्ठेत्ता दोच्चं पि उड्ढं बाहाओ पगिज्झिय-पगिज्झिय[8] •सूराभिमुहे आयावणभूमीए° आयावेमाणे विहरिस्सति ॥

१८१ तए णं से विमलवाहणे राया सुमंगलं अणगारं दोच्चं पि रहसिरेणं नोल्लावेहिति ॥

१८२ तए णं से सुमंगले अणगारे विमलवाहणेणं रण्णा दोच्चं पि रहसिरेणं नोल्लाविए समाणे सणियं-सणियं उट्ठेहिति, उट्ठेत्ता ओहिं पउंजेहिति, पउंजित्ता विमलवाहणस्स रण्णो तीतद्धं आभोएहिति, आभोएत्ता विमलवाहणं रायं एवं वइहिति—नो खलु तुमं विमलवाहणे राया, नो खलु तुमं देवसेणे राया, नो खलु तुमं महापउमे राया, तुमण्णं इओ तच्चे भवग्गहणे गोसाले नामं मंखलिपुत्ते होत्था—समणघायए जाव[9] छउमत्थे चेव कालगए, तं जइ ते तदा सव्वाणुभूतिणा अणगारेणं पभुणा वि होऊणं[10] सम्मं सहियं खमियं तितिक्खियं अहिया-

---

१ विण्णविए (ता)।
२ भ० ११।५७।
३ पओपए (ता)।
४ भ० ११।१६२, राय० सू० ६८६।
५ स० पा०—अणिक्खित्तेण जाव आयावेमाणे।
६. स० पा०—छट्ठंछट्ठेण जाव आयावेमाण।
७ आसुरत्ते (अ), स० पा०—आसुरुत्ते जाव मिसि°।
८ स० पा०—पगिज्झिय जाव आसावेमाणे।
९ भ० १५।१४१।
१० होइत्तए (अ, व), होइऊण (ख), होइऊण (म, स)।

सिय, जइ ते तदा सुनक्खत्तेण अणगारेण पभुणा वि होऊण सम्म सहिय[1]•खमियं तितिक्खिय° अहियासिय, जइ ते तदा समणेण भगवया महावीरेण पभुणा वि[2] •होऊण सम्म सहिय खमिय तितिक्खिय° अहियासिय, त नो खलु ते अह तहा सम्म सहिस्स[3] •खमिस्स तितिक्खिस्सं° अहियासिस्स, अह ते नवर—सहय सरह ससारहियं तवेण तेएण एगाहच्च कूडाहच्च भासरासिं करेज्जामि ।।

१८३. तए ण से विमलवाहणे राया सुमगलेण अणगारेण एव वुत्ते समाणे आसुरुत्ते[4] •रुट्ठे कुविए चडिक्किए° मिसिमिसेमाणे सुमगल अणगार तच्च पि रहसिरेण नोल्लावेहिति ।।

१८४. तए ण से सुमगले अणगारे विमलवाहणेण रण्णा तच्च पि रहसिरेणं नोल्लाविए समाणे आसुरुत्ते जाव मिसिमिसेमाणे आयावणभूमीओ पच्चोरुभइ, पच्चोरुभित्ता तेयासमुग्घाएण समोहण्णिहिति, समोहणित्ता सत्तट्ठ पयाइ पच्चोसक्किहिति, पच्चोसक्कित्ता विमलवाहण राय सहय सरह ससारहिय तवेण तेएण[5] •एगाहच्च कूडाहच्च° भासरासिं करेहिति ।।

१८५ सुमगले ण भते ! अणगारे विमलवाहण राय सहय जाव[6] भासरासिं करेत्ता कहिं गच्छिहिति ? कहि उववज्जिहिति ?

गोयमा ! सुमगले अणगारे विमलवाहण राय सहय जाव भासरासिं करेत्ता बहूहिं छट्ठट्ठम-दसम[7]-•दुवालसेहिं मासद्धमासखमणेहिं° विचित्तेहिं तवोकम्मेहिं अप्पाण भावेमाणे बहूइ वासाइ सामण्णपरियाग पाउणेहिति, पाउणित्ता मासियाए सलेहणाए अत्ताण झूसित्ता, सट्ठिं भत्ताइ अणसणाए[8] छेदेत्ता आलोइय-पडिक्कते समाहिपत्ते उड्ढ चदिम जाव[9] गेविज्जविमाणावाससय वीइवइत्ता सव्वट्ठसिद्धे महाविमाणे देवत्ताए उववज्जिहिति । तत्थ ण देवाण अजहन्नमणुक्कोसेण तेत्तीस सागरोवमाइ ठिती पण्णत्ता । तत्थ ण सुमगलस्स वि देवस्स अजहन्नमणुक्कोसेण तेत्तीस सागरोवमाइ ठिती पण्णत्ता ।

से ण भते !, सुमगले देवे ताओ देवलोगाओ[10] •आउक्खएण भवक्खएण ठिइक्खएण अणतर चय चइत्ता कहिं गच्छिहिति ? कहि उववज्जिहिति ?

गोयमा ! ° महाविदेहे वासे सिज्झिहिति जाव[11] सव्वदुक्खाण अत काहिति ।।

---

१. स० पा०—सहिय जाव अहियासिय ।
२ स० पा०—वि जाव अहियासिय ।
३ म० पा०—सहिस्स जाव अहियासिस्स ।
४. स० पा०—आसुरुत्ते जाव मिसि° ।
५. सं० पा०—तेएण जाव भासरासिं ।
६ भ० १५।१८४।
७ स० पा०—दसम जाव विचित्तेहिं ।
८. अण जाव (अ, क, ख, ता, ब, स) ।
९ भ० १५।१६५ ।
१०. स० पा०—देवलोगाओ जाव महाविदेहे ।
११. भ० २।७३ ।

१८६ विमलवाहणे ण भंते ! राया सुमगलेण अणगारेण सहये जाव[1] भासरासीकए समाणे कहि गच्छिहिति ? कहि उववज्जिहिति ?

गोयमा ! विमलवाहणे ण राया सुमगलेण अणगारेण सहये जाव भासरासीकए समाणे अहेसत्तमाए पुढवीए उक्कोसकालट्ठिइयसि नरयसि नेरइयत्ताए उववज्जिहिति ।

से ण ततो अणतरं उव्वट्टित्ता मच्छेसु उववज्जिहिति । तत्थ वि ण सत्थवज्झे दाहवक्कतीए कालमासे काल किच्चा दोच्च पि अहेसत्तमाए पुढवीए उक्कोसकालट्ठिइयसि[2] नरयसि नेरइयत्ताए उववज्जिहिति ।

से ण तओणतर उव्वट्टित्ता दोच्च पि मच्छेसु उववज्जिहिति । तत्थ ण वि सत्थवज्झे[3] •दाहवक्कतीए कालमासे काल° किच्चा छट्ठाए तमाए पुढवीए उक्कोसकालट्ठिइयसि नरगसि नेरइयत्ताए उववज्जिहिति ।

से ण तओहितो अणतर[4] उव्वट्टित्ता इत्थियासु उववज्जिहिति । तत्थ वि ण सत्थवज्झे दाह[5]•वक्कतीए कालमासे काल किच्चा° दोच्च पि छट्ठाए तमाए पुढवीए उक्कोसकाल[6]•ट्ठिइयसि नरगसि नेरइयत्ताए उववज्जिहिति ।

से ण तओहितो अणतर° उव्वट्टित्ता दोच्च पि इत्थियासु उववज्जिहिति । तत्थ वि ण सत्थवज्झे[7] •दाहवक्कतीए कालमासे काल° किच्चा पचमाए धूमप्पभाए पुढवीए उक्कोसकाल[8]•ट्ठिइयसि नरगसि नेरइयत्ताए उववज्जिहिति ।

से ण ततो अणतर° उव्वट्टित्ता उरएसु उववज्जिहिति । तत्थ वि ण सत्थवज्झे[9] •दाहवक्कतीए कालमासे काल° किच्चा दोच्च पि पचमाए[10] •धूमप्पभाए पुढवीए उक्कोसकालट्ठिइयसि नरगसि नेरइयत्ताए उववज्जिहिति ।

से ण तओहितो अणतर° उव्वट्टित्ता दोच्च पि उरएसु उववज्जिहिति[11] । •तत्थ वि ण सत्थवज्झे दाहवक्कतीए कालमासे काल° किच्चा चउत्थीए पकप्पभाए पुढवीए उक्कोसकालट्ठिइयसि[12] •नरगसि नेरइयत्ताए उववज्जिहिति ।

से ण ततो अणतर° उव्वट्टित्ता सीहेसु उववज्जिहिति । तत्थ वि ण सत्थवज्झे[13]• दाहवक्कतीए कालमासे काल° किच्चा दोच्च पि चउत्थीए पक[14]•-

---

१. भ० १५।१८४ ।
२. °ट्टिईयसि (ता, म) ।
३. स० पा०—सत्थवज्झे जाव किच्चा ।
४. जाव (अ क, ख, ता, ब, म, स) ।
५ स० पा०—दाह जाव दोच्च ।
६ स० पा०—उक्कोसकाल जाव उव्वट्टित्ता ।
७ स० पा०—सत्थवज्झे जाव किच्चा ।
८ स० पा०—उक्कोसकाल जाव उव्वट्टित्ता ।
९ स० पा०—सत्थवज्झे जाव किच्चा ।
१०. स० पा०—पचमाए जाव उव्वट्टित्ता ।
११ स० पा०—उववज्जिहिति जाव किच्चा ।
१२ स० पा०—उक्कोसकालट्ठिइयसि जाव उव्वट्टित्ता ।
१३ स० पा०—तहेव जाव किच्चा ।
१४. स० पा०—पक जाव उव्वट्टित्ता ।

प्पभाए पुढवीए उक्कोसकालट्ठिइयंसि नरगंसि नेरइयत्ताए उववज्जिहिति ।
से णं तओहिंतो अणंतरं° उव्वट्टित्ता दोच्चं पि सीहेसु उववज्जिहिति[1] । °तत्थ वि णं सत्थवज्झे दाहवक्कंतीए कालमासे कालं° किच्चा तच्चाए वालुयप्पभाए पुढवीए उक्कोसकाल °ट्ठिइयंसि नरगंसि नेरइयत्ताए उववज्जिहिति ।
से णं ततो अणंतरं° उव्वट्टित्ता पक्खीसु उववज्जिहिति । तत्थ वि णं सत्थवज्झे[3]°दाहवक्कंतीए कालमासे कालं° किच्चा दोच्चं पि तच्चाए वालुय[4]-प्पभाए पुढवीए उक्कोसकालट्ठिइयंसि नरगंसि नेरइयत्ताए उववज्जिहिति ।
से णं तओणंतरं° उव्वट्टित्ता दोच्चं पि पक्खीसु उववज्जिहिति[5] । °तत्थ वि णं सत्थवज्झे दाहवक्कंतीए कालमासे कालं° किच्चा दोच्चाए सक्करप्पभाए[6] °पुढवीए उक्कोसकालट्ठिइयंसि नरगंसि नेरइयत्ताए उववज्जिहिति ।
से णं ततो अणंतरं° उव्वट्टित्ता सिरीसवेसु उववज्जिहिति । तत्थ वि णं सत्थ[7]°वज्झे दाहवक्कंतीए कालमासे कालं° किच्चा दोच्चं पि दोच्चाए सक्करप्पभाए[8] °पुढवीए उक्कोसकालट्ठिइयंसि नरगंसि नेरइयत्ताए उववज्जिहिति ।
से णं तओणंतरं° उव्वट्टित्ता दोच्चं पि सिरीसवेसु उववज्जिहिति[9] । °तत्थ वि णं सत्थवज्झे दाहवक्कंतीए कालमासे कालं° किच्चा इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए उक्कोसकालट्ठिइयंसि नरगंसि नेरइयत्ताए उववज्जिहिति[10] ।
°से णं ततो अणंतरं° उव्वट्टित्ता सण्णीसु उववज्जिहिति । तत्थ वि णं सत्थवज्झे[11] °दाहवक्कंतीए कालमासे कालं° किच्चा असण्णीसु उववज्जिहिति । तत्थ वि णं सत्थवज्झे[12] °दाहवक्कंतीए कालमासे कालं° किच्चा दोच्चं पि इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए पलिओवमस्स असंखेज्जइभागट्ठिइयंसि नरगंसि नेरइयत्ताए उववज्जिहिति ।
से णं ततो अणंतरं[13] उव्वट्टित्ता जाइं इमाइं खहयरविहाणाइं भवंति, तं जहा—चम्मपक्खीणं, लोमपक्खीणं, समुग्गपक्खीणं, विययपक्खीणं, तेसु अणेगसयसहस्सखुत्तो उद्दाइत्ता-उद्दाइत्ता तत्थेव-तत्थेव भुज्जो-भुज्जो पच्चायाहिति ।
सव्वत्थ वि णं सत्थवज्झे दाहवक्कंतीए कालमासे कालं किच्चा जाइं इमाइं

---

१. सं० पा०—उववज्जिहिति जाव किच्चा ।
२. सं० पा०—उक्कोसकाल जाव उव्वट्टित्ता ।
३. सं० पा०—सत्थवज्झे जाव किच्चा ।
४ सं० पा०—वालुय जाव उव्वट्टित्ता ।
५. सं० पा० —उववज्जिहिति जाव किच्चा ।
६. सं० पा०—सक्करप्पभाए जाव उव्वट्टित्ता ।
७. सं० पा०—सत्थ जाव किच्चा ।
८ सं० पा०—सक्करप्पभाए जाव उव्वट्टित्ता ।
९ सं० पा०—उववज्जिहिति जाव किच्चा ।
१०. सं० पा०—उववज्जिहिति जाव उव्वट्टित्ता ।
११ सं० पा०—सत्थवज्झे जाव किच्चा ।
१२. सं० पा०—सत्थवज्झे जाव किच्चा ।
१३. जाव (अ, क, ख, ता, व, म, स) ।

भुयपरिसप्पविहाणाइ भवति, त जहा—गोहाण, नउलाण, जहा पण्णवणापए जाव[1] जाहगाण चउप्पाइयाण, तेसु अणेगसयसहस्सखुत्तो[2] •उद्दाइत्ता-उद्दाइत्ता तत्थेव-तत्थेव भुज्जो-भुज्जो पच्चायाहिति।

सव्वत्थ वि ण सत्थवज्झे दाहवक्कतीए कालमासे काल° किच्चा जाइ इमाइ उरपरिसप्पविहाणाइ भवति, त जहा—अहीण, अयगराण, आसालियाण, महोरगाण, तेसु अणेगसयसह[3]•स्सखुत्तो उद्दाइत्ता-उद्दाइत्ता तत्थेव-तत्थेव भुज्जो-भुज्जो पच्चायाहिति।

सव्वत्थ वि ण सत्थवज्झे दाहवक्कंतीए कालमासे काल° किच्चा जाइं इमाइं चउप्पदविहाणाइ भवति, त जहा—एगखुराण, दुखुराण, गडीपदाण, सण-हप्पदाण[4], तेसु अणेगसयसहस्स[5]•खुत्तो उद्दाइत्ता-उद्दाइत्ता तत्थेव-तत्थेव भुज्जो-भुज्जो पच्चायाहिति।

सव्वत्थ वि ण सत्थवज्झे दाहवक्कतीए कालमासे काल° किच्चा जाइ इमाइं जलयरविहाणाइ भवति, त जहा—मच्छाण, कच्छभाण जाव[6] सुसुमाराण, तेसु अणेगसयसहस्स[7]•खुत्तो उद्दाइत्ता-उद्दाइत्ता तत्थेव-तत्थेव भुज्जो-भुज्जो पच्चायाहिति।

सव्वत्थ वि ण सत्थवज्झे दाहवक्कतीए कालमासे काल° किच्चा जाइ इमाइं चउरिंदियविहाणाइ भवति, त जहा—अधियाण, पोत्तियाण, जहा पण्णवणापदे जाव[8] गोमयकीडाण, तेसु अणेगसय[9]•सहस्सखुत्तो उद्दाइत्ता-उद्दाइत्ता तत्थेव-तत्थेव भुज्जो-भुज्जो पच्चायाहिति।

सव्वत्थ वि ण सत्थवज्झे दाहवक्कतीए कालमासे काल° किच्चा जाइ इमाइ तेइदियविहाणाइ भवति, त जहा—उवचियाण जाव[10] हत्थिसोडाण, तेसु अणेग[11]•सयसहस्सखुत्तो उद्दाइत्ता-उद्दाइत्ता तत्थेव-तत्थेव भुज्जो-भुज्जो पच्चायाहिति।।

सव्वत्थ वि ण सत्थवज्झे दाहवक्कतीए कालमासे काल° किच्चा जाइ इमाइ बेइदियविहाणाइ भवति, त जहा—पुलाकिमियाण जाव[12] समुद्दलिक्खाण, तेसु

---

१. प० १।
२ स० पा०—सेस जहा खहचराण जाव किच्चा।
३. स० पा०—अणेगसयसह जाव किच्चा।
४. सणहप्फदाण (अ, ता, स)।
५ स० पा०—अणेगसयसहस्स जाव किच्चा।
६. प० १।
७. स० पा०—अणेगसयसहस्स जाव किच्चा।
८ प० १।
९ स० पा०—अणेगसय जाव किच्चा।
१०. प० १।
११ स० पा०—अणेग जाव किच्चा।
१२. प० १।

अणेगसय[१]•सहस्सखुत्तो उद्दाइत्ता-उद्दाइत्ता तत्थेव-तत्थेव भुज्जो-भुज्जो पच्चायाहिति।

सव्वत्थ वि णं सत्थवज्झे दाहवक्कंतीए कालमासे कालं किच्चा° जाइं इमाइं वणस्सइविहाणाइं भवंति, तं जहा—रुक्खाणं, गुच्छाणं जाव[२] कुहणाणं, तेसु अणेगसय[३]•सहस्सखुत्तो उद्दाइत्ता-उद्दाइत्ता तत्थेव-तत्थेव भुज्जो-भुज्जो° पच्चायाइस्सइ—उस्सन्नं च णं कडुयरुक्खेसु, कडुयवल्लीसु।

सव्वत्थ वि णं सत्थवज्झे[४] •दाहवक्कतीए[५] कालमासे कालं° किच्चा जाइं इमाइं वाउक्काइयविहाणाइं भवंति, तं जहा—पाईणवायाणं जाव[६] सुद्धवायाणं तेसु अणेगसयसहस्स[७]•खुत्तो उद्दाइत्ता-उद्दाइत्ता तत्थेव-तत्थेव भुज्जो-भुज्जो पच्चायाहिति।

सव्वत्थ वि णं सत्थवज्झे दाहवक्कंतीए कालमासे कालं° किच्चा जाइं इमाइं तेउक्काइयविहाणाइं भवंति, तं जहा—इंगालाणं जाव[८] सूरकंतमणिनिस्सियाणं, तेसु अणेगसयसहस्स[९]•खुत्तो उद्दाइत्ता-उद्दाइत्ता तत्थेव-तत्थेव भुज्जो-भुज्जो पच्चायाहिति।

सव्वत्थ वि णं सत्थवज्झे दाहवक्कतीए कालमासे कालं° किच्चा जाइं इमाइं आउक्काइयविहाणाइं भवंति, तं जहा—ओसाणं[१०] जाव[११] खातोदगाणं, तेसु अणेग-सयसहस्सखुत्तो उद्दाइत्ता-उद्दाइत्ता तत्थेव-तत्थेव भुज्जो-भुज्जो पच्चाया-इस्सइ—उस्सन्नं च णं खारोदएसु खत्तोदएसु।

सव्वत्थ वि णं सत्थवज्झे[१२] •दाहवक्कतीए कालमासे कालं° किच्चा जाइं इमाइं पुढविक्काइयविहाणाइं भवंति, तं जहा—पुढवीणं, सक्कराणं जाव[१३] सूरकंताणं, तेसु अणेगसय[१४]•सहस्सखुत्तो उद्दाइत्ता-उद्दाइत्ता तत्थेव-तत्थेव भुज्जो-भुज्जो° पच्चायाहिति—उस्सन्नं च णं खरबायरपुढविक्काइएसु।

सव्वत्थ वि णं सत्थवज्झे[१५] •दाहवक्कतीए कालमासे कालं° किच्चा रायगिहे नगरे बाहिं खरियत्ताए उववज्जिहिति। तत्थ वि णं सत्थवज्झे[१६]•दाहवक्कतीए

---

१ सं० पा०—अणेगसय जाव किच्चा।
२. प० १।
३. सं० पा०—अणेगसय जाव पच्चायाइस्सइ।
४. सं० पा०—सत्थवज्झे जाव किच्चा।
५ 'दाहवक्कतीए' इति पाठ क्वचिद् युज्यते, किन्तु सर्वत्र प्रवाहपाती दृश्यते।
६. प० १।
७ सं० पा०—अणेगसयसहस्स जाव किच्चा।
८ प० १।
९. सं० पा०—अणेगसयसहस्स जाव किच्चा।
१०. उस्साण (क, ख, ब)।
११ प० १।
१२ सं० पा०—सत्थवज्झे जाव च्चिा।
१३. प० १।
१४. सं० पा०—अणेगसय जाव पच्चायाहिति।
१५ सं० पा०—सत्थवज्झे जाव किच्चा।
१६ सं० पा०—सत्थवज्झे जाव किच्चा।

कालमासे काल° किच्चा दोच्च पि रायगिहे नगरे अतो खरियत्ताए उववज्जिहिति। तत्थ वि णं सत्थवज्झे[1] •दाहवक्कतीए कालमासे काल°. किच्चा इहेव जबुद्दीवे दीवे भारहे वासे विंझगिरिपायमूले बेभेले सण्णिवेसे माहणकुलसि दारियत्ताए पच्चायाहिति।

तए ण त दारियं अम्मापियरो उम्मुक्कबालभाव जोव्वणगमणुप्पत्तं पडिरूवएण[2] सुक्केण, पडिरूवएण विणएण, पडिरूवयस्स भत्तारस्स भारियत्ताए दलइस्सति। सा ण तस्स भारिया भविस्सति—इट्ठा कता जाव[3] अणुमया, भडकरंडगसमाणा तेल्लकेला इव सुसगोविया, चेलपेडा इव सुसंपरिग्गहिया, रयणकरंडओ विव सुसारक्खिया, सुसगोविया, मा ण सीय, मा ण उण्ह जाव[4] परिसहोवसग्गा फुसतु। तए ण सा दारिया अण्णदा कदायि गुव्विणी ससुरकुलाओ कुलघर निज्जमाणी अतरा दवग्गिजालाभिहया कालमासे काल किच्चा दाहिणिल्लेसु अग्गिकुमारेसु देवेसु देवत्ताए उववज्जिहिति।

से ण तओहितो अणतर उव्वट्टित्ता माणुस्स विग्गह लभिहिति, लभित्ता केवल बोहिं बुज्झिहिति, बुज्झित्ता मुडे भवित्ता अगाराओ अणगारिय पव्वइहिति। तत्थ वि य ण विराहियसामण्णे कालमासे काल किच्चा दाहिणिल्लेसु असुरकुमारेसु देवेसु देवत्ताए उववज्जिहिति।

से ण तओहितो अणतर[5] उव्वट्टित्ता माणुस विग्गह[6] •लभिहिति, लभित्ता केवलं बोहिं बुज्झिहिति, बुज्झित्ता मुडे भवित्ता अगाराओ अणगारिय पव्वइहिति।° तत्थ वि य ण विराहियसामण्णे कालमासे काल किच्चा दाहिणिल्लेसु नागकुमारेसु देवेसु देवत्ताए उववज्जिहिति।

से ण तओहितो अणतर एव एएण अभिलावेण दाहिणिल्लेसु सुवण्णकुमारेसु, एव विज्जुकुमारेसु, एव अग्गिकुमारवज्ज[7] जाव[8] दाहिणिल्लेसु थणियकुमारेसु। से ण 'तओहितो अणतर'[9] उव्वट्टित्ता माणुस्स विग्गह लभिहिति[10] •लभित्ता केवल बोहिं बुज्झिहिति, बुज्झित्ता मुडे भवित्ता अगाराओ अणगारिय पव्वइहिति। तत्थ वि य ण विराहियसामण्णे जोइसिएसु देवेसु उववज्जिहिति।

से ण तओहितो अणतर चय चइत्ता माणुस्स विग्गहं लभिहिति[11], •लभित्ता

---

१ स० पा०—सत्थवज्झे जाव किच्चा।
२ पडिरूविएण (अ, क, ख, ता, ब, म) सर्वत्र।
३ भ० २।५२।
४. भ० २।५२।
५ जाव (अ, क, ख, ता, ब, म, स)।
६. स० पा०—त चेव जाव तत्थ।
७ अग्गिकुमार (ता)।
८ पू० प० २।
९ तओ जाव (अ, क, ख, ता, ब, म, स)।
१० सं० पा०—लभिहिति जाव विराहियसामण्णे।
११ स० पा०—लभिहिति जाव अविराहियसामण्णे।

केवल वोहिं वुज्झिहिति, वुज्झित्ता मुडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइहिति। तत्थ वि य ण° अविराहियसामण्णे कालमासे काल किच्चा सोहम्मे कप्पे देवत्ताए उववज्जिहिति[1]।

से ण तओहिंतो अणतर चय चइत्ता माणुस्स विग्गह लभिहिति। तत्थ वि णं अविराहियसामण्णे कालमासे काल किच्चा सणकुमारे कप्पे देवत्ताए उववज्जिहिति।

से ण तओहितो एव जहा सणकुमारे तहा वंभलोए, महासुक्के, आणए, आरणे।

से ण तओहितो[2] •अणंतर चय चइत्ता माणुस्स विग्गह लभिहिति, लभित्ता केवल वोहि वुज्झिहिति, वुज्झित्ता मुडे भवित्ता अगाराओ अणगारिय पव्वइहिति। तत्थ वि य ण° अविराहियसामण्णे कालमासे काल किच्चा सव्वट्ठसिद्धे महाविमाणे देवत्ताए उववज्जिहिति।

से ण तओहितो अणतर चय चइत्ता महाविदेहे वासे जाइं इमाइ कुलाइ भवंति—अड्ढाइ जाव[3] अपरिभूयाइं, तहप्पगारेसु कुलेसु पुत्तत्ताए[4] पच्चायाहिति, एवं जहा ओववाइए दढप्पइण्णवत्तव्वया सच्चेववत्तव्वया निरवसेसा भाणियव्वा जाव[5] केवलवरनाणदसणे समुप्पज्जिहिति॥

१८७. तए ण से दढप्पइण्णे केवली अप्पणो तीतद्ध आभोएहिइ, आभोएत्ता समणे निग्गंथे सद्दावेहिति, सद्दावेत्ता एव वदिहिइ—एव खलु अहं अज्जो! इओ चिरातीयाए अद्धाए गोसाले नाम मखलिपुत्ते होत्था—समणघायए जाव[6] छउमत्थे चेव कालगए, तम्मूलग च ण अह अज्जो अणादीय अणवदग्ग दीहमद्धं चाउरंतससारकतार अणुपरियट्टिए, त मा णं अज्जो! 'तुब्भं केयि'[7] भवतु आयरियपडिणीए उवज्झायपडिणीए आयरियउवज्झायाण अयसकारए अवण्णकारए अकित्तिकारए, मा ण से वि एव चेव अणादीय अणवदग्ग[8] •दीहमद्ध चाउरत°ससारकतार अणुपरियट्टिहिति, जहा णं अह॥

---

१ अतो अग्रे 'म, स' सङ्केतितादर्शयो निम्नवर्ती पाठो विद्यते —
'से ण तओहिंतो अणतर चयं चइत्ता माणुस्स विग्गह लभिहिति, केवल वोहिं वुज्झिहिति, तत्थ वि य ण अविरहियसामण्णे कालमासे काल किच्चा ईसाणे कप्पे देवत्ताए उववज्जिहिति', किन्तु सौधर्मादिदेवलोकेषु सप्तभवा दृश्यन्ते—षट्सु दाक्षिणात्येषु कल्पेषु सर्वार्थसिद्धेषु च तेन ईशानकल्पस्य पाठ. न सगच्छते।

२. स० पा०—तओहिंतो जाव अविराहियसामण्णे।

३ ओ० सू० १४१।

४ पुमत्ताए (व)।

५ ओ० सू० १४२-१५३।

६ भ० १५।१४१।

७ तुम केवि (ता)।

८ स० पा०—अणवदग्गं जाव ससार°।

१८८. तए ण ते समणा निग्गथा दढप्पइण्णस्स केवलिस्स अतियं एयमट्ठ सोच्चा निसम्म भीया तत्था तसिया ससारभउव्विग्गा दढप्पइण्ण केवलिं वदिहिंति नमसिहिति, वदित्ता नमसित्ता तस्स ठाणस्स आलोएहिंति[1] पडिक्कमिहिति निंदिहिंति जाव[2] अहारिय पायच्छित्त तवोकम्म पडिवज्जिहिति ॥

१८९. तए ण से दढप्पइण्णे केवली बहूइ वासाइ केवलिपरियाग पाउणिहिति, पाउणित्ता अप्पणो आउसेस जाणेत्ता भत्त पच्चक्खाहिति, एव जहा ओववाइए जाव[3] सव्वदुक्खाणमत काहिति ॥

१९०. सेव भते ! सेव भते ! त्ति जाव[4] विहरइ ॥

---

१ आलोइएहिंति (स)।
२. भ० ८।२५१।
३. ओ० सू० १५४।
४. भ० १।५१।

सोलसमं सतं

पढमो उद्देसो

१. अहिगरणि २. जरा ३ कम्मे, ४. जावतियं ५. गगदत्त ६. सुमिणे य ।
७.उवओग ८.लोग ९ वलि[1] १० ओहि, ११ दीव १२ उदही १३ दिसा १४.थणिते[2] ।१।

वाउयाय-पद

१. तेण कालेण तेण समएण रायगिहे जाव[3] पज्जुवासमाणे एव वयासी—अत्थि ण भते ! अधिकरणिसि वाउयाए वक्कमति ?
हता अत्थि ।।

२. से भते ! कि पुट्ठे उद्दाइ ? अपुट्ठे उद्दाइ ?
गोयमा ! पुट्ठे उद्दाइ, नो अपुट्ठे उद्दाइ ।।

३. से भते ! किं ससरीरी निक्खमइ ? असरीरी निक्खमइ ?
[4]°गोयमा ! सिय ससरीरी निक्खमइ, सिय असरीरी निक्खमइ ।।

४. से केणट्ठेण भंते ! एव वुच्चइ—सिय ससरीरी निक्खमइ, सिय असरीरी निक्खमइ ?
गोयमा ! वाउयायस्स ण चत्तारि सरीरया पण्णत्ता, तं जहा—ओरालिए, वेउव्विए, तेयए, कम्मए, । ओरालिय-वेउव्वियाइं विप्पजहाय तेयय-कम्मएहिं निक्खमइ । से तेणट्ठेणं गोयमा ! एव वुच्चइ—सिय ससरीरी निक्खमइ, सिय असरीरी निक्खमइ ।।°

---

१. वलि (क, व); पलि (ता) ।
२. थणिया (ता, स) ।
३. भ० १।४-१० ।
४. स० पा०—एव जहा खदए जाव से तेणट्ठेण नो असरीरी निक्खमइ; स्पृष्ट स्वकायशस्त्रादिना सशरीरश्च कडेवरान्निष्क्रामति कार्म्मणाद्यपेक्षया औदारिकाद्यपेक्षया त्वशरीरीति (वृ); पूरित पाठ अस्य वृत्तिव्याख्यानस्य सवादी वर्तते । आदर्शाना सक्षिप्तपाठे 'नोअसरीरी' ति पाठो लभ्यते । असौ वृत्तिव्याख्यानात् भिन्नोस्ति ।

अगणिकाय-पदं

५ इंगालकारियाए ण भंते ! अगणिकाए केवतियं कालं संचिट्ठइ ?

गोयमा ! जहण्णेण अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेण तिण्णि राइंदियाइं। अण्णे वि तत्थ वाउयाए वक्कमति, न विणा वाउयाएणं अगणिकाए उज्जलति ।।

कतिकिरिय-पदं

६. पुरिसे णं भंते ! अयं अयकोट्ठंसि अयोमएणं संडासएणं उव्विहमाणे वा पव्विहमाणे वा कतिकिरिए ?

गोयमा ! जावं च णं से पुरिसे अयं अयकोट्ठंसि अयोमएणं संडासएणं उव्विहति वा पव्विहति वा, तावं च णं से पुरिसे काइयाए जाव[1] पाणाइवायकिरियाए—पंचहिं किरियाहिं पुट्ठे, जेसिं पि णं जीवाणं सरीरेहिंतो अए निव्वत्तिए, अयकोट्ठे निव्वत्तिए, संडासए निव्वत्तिए, इंगाला निव्वत्तिया, इंगालकड्ढणी निव्वत्तिया, भत्था निव्वत्तिया, ते वि णं जीवा काइयाए जाव पाणाइवायकिरियाए—पंचहिं किरियाहिं पुट्ठा ।।

७ पुरिसे णं भंते ! अयं अयकोट्ठाओ अयोमएणं संडासएणं गहाय अहिकरणिंसि उक्खिव्वमाणे वा निक्खिव्वमाणे वा कतिकिरिए ?

गोयमा ! जावं च णं से पुरिसे अयं अयकोट्ठाओ[2] °अयोमएणं संडासएणं गहाय अहिकरणिंसि उक्खिवइ वा° निक्खिवइ वा तावं च णं से पुरिसे काइयाए जाव पाणाइवायकिरियाए—पंचहिं किरियाहिं पुट्ठे, जेसिं पि णं जीवाणं सरीरेहिंतो अयो निव्वत्तिए, संडासए निव्वत्तिए, चम्मेट्ठे निव्वत्तिए, मुट्ठिए निव्वत्तिए, अधिकरणी निव्वत्तिया, अधिकरणिखोडी निव्वत्तिया, उदगदोणी निव्वत्तिया, अधिकरणसाला निव्वत्तिया, ते वि णं जीवा काइयाए जाव पाणाइवायकिरियाए—पंचहिं किरियाहिं पुट्ठा ।।

अधिकरणी-अधिकरण-पदं

८ जीवे णं भंते ! किं अधिकरणी ? अधिकरणं ?

गोयमा ! जीवे अधिकरणी वि, अधिकरणं पि ।।

९ से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ—जीवे अधिकरणी वि, अधिकरणं पि ?

---

१. भ० १।३६५ ।

२. सं० पा०—अयकोट्ठाओ जाव निक्खिवइ ।

गोयमा ! अविरतिं पडुच्च। से तेणट्ठेण[1] •गोयमा ! एव वुच्चइ—जीवे अधिकरणी वि°, अधिकरण पि ॥

१० नेरइए ण भते ! कि अधिकरणी ? अधिकरण ?
गोयमा ! अधिकरणी वि, अधिकरण पि। एव जहेव जीवे तहेव नेरइए वि। एवं निरतर जाव[2] वेमाणिए ॥

११. जीवे ण भते ! कि साहिकरणी ? निरहिकरणी[3] ?
गोयमा ! साहिकरणी, नो निरहिकरणी ॥

१२. से केणट्ठेण— पुच्छा।
गोयमा ! अविरति पडुच्च। से तेणट्ठेणं जाव नो निरहिकरणी। एव जाव वेमाणिए ॥

१३ जीवे ण भते ! कि आयाहिकरणी ? पराहिकरणी ? तदुभयाहिकरणी ?
गोयमा ! आयाहिकरणी वि, पराहिकरणी वि, तदुभयाहिकरणी वि ॥

१४. से केणट्ठेण भते ! एव वुच्चइ—जाव तदुभयाहिकरणी वि ?
गोयमा ! अविरतिं पडुच्च। से तेणट्ठेण जाव तदुभयाहिकरणी वि। एव जाव वेमाणिए ॥

१५. जीवाण भते ! अधिकरणे कि आयप्पयोगनिव्वत्तिए ? परप्पयोगनिव्वत्तिए ? तदुभयप्पयोगनिव्वत्तिए ?
गोयमा ! आयप्पयोगनिव्वत्तिए वि, परप्पयोगनिव्वत्तिए वि, तदुभयप्पयोग-निव्वत्तिए वि ॥

१६. से केणट्ठेणं भते ! एव वुच्चइ ?
गोयमा ! अविरतिं पडुच्च। से तेणट्ठेणं जाव तदुभयप्पयोगनिव्वत्तिए वि। एवं जाव वेमाणियाणं ॥

१७. कति णं भते ! सरीरगा पण्णत्ता ?
गोयमा ! पच सरीरगा पण्णत्ता, त जहा—ओरालिए[4], •वेउव्विए, आहारए, तेयए°, कम्मए ॥

१८. कति ण भंते ! इदिया पण्णत्ता ?
गोयमा ! पच इदिया पण्णत्ता, त जहा—सोइदिए[5], •चक्खिदिए, घाणिंदिए, रसिंदिए°, फासिंदिए ॥

१९. कतिविहे ण भते ! जोए पण्णत्ते ?
गोयमा ! तिविहे जोए पण्णत्ते, त जहा—मणजोए, वइजोए, कायजोए ॥

---

१. स० पा०—तेणट्ठेण जाव अधिकरणं।
२. पू० प० २।
३. निराधिकरणी (अ, ख, ता, व, स)।
४ स० पा०—ओरालिए जाव कम्मए।
५. स० पा०—सोइदिए जाव फासिंदिए।

२० जीवे ण भते ! ओरालियसरीर निव्वत्तेमाणे कि अधिकरणी ? अधिकरण ?
गोयमा ! अधिकरणी वि, अधिकरण पि ॥

२१. से केणट्ठेण भते ! एव वुच्चइ—अधिकरणी वि, अधिकरण पि ?
गोयमा ! अविरति पडुच्च । से तेणट्ठेण जाव अधिकरण पि ॥

२२ पुढविकाइएण ण भते ! ओरालियसरीर निव्वत्तेमाणे कि अधिकरणी ? अधिकरण ?
एव चेव । एव जाव मणुस्से । एव वेउव्वियसरीर पि, नवर—'जस्स अत्थि'[1] ॥

२३ जीवे ण भते ! आहारगसरीर निव्वत्तेमाणे कि अधिकरणी—पुच्छा ।
गोयमा ! अधिकरणी वि, अधिकरण पि ॥

२४. से केणट्ठेण जाव अधिकरण पि ?
गोयमा ! पमाय पडुच्च । से तेणट्ठेण जाव अधिकरण पि । एव मणुस्से वि । तेयासरीर जहा ओरालिय, नवर—सव्वजीवाण भाणियव्व । एव कम्मगसरीर पि ॥

२५. जीवे ण भते ! सोइदिय निव्वत्तेमाणे कि अधिकरणी ? अधिकरण ?
एव जहेव ओरालियसरीरं तहेव सोइदिय पि भाणियव्व, नवर—जस्स अत्थि सोइदिय । एव[2] चक्खिदिय-घाणिदिय-जिब्भिदिय-फासिदियाण वि, नवर—जाणियव्व जस्स ज अत्थि ॥

२६. जीवे ण भते ! मणजोग निव्वत्तेमाणे कि अधिकरणी ? अधिकरण ?
एव जहेव सोइदिय तहेव निरवसेस । वइजोगो एव चेव, नवर—एगिंदिय-वज्जाण । एव कायजोगो वि, नवर—सव्वजीवाण जाव वेमाणिए ।

२७. सेव भते ! सेव भते ! त्ति[3] ॥

बीओ उद्देसो

जीवाणं जरा-सोग-पदं

२८. रायगिहे जाव[4] एव वयासी—जीवाण भते ! कि जरा ? सोगे ?
गोयमा ! जीवाण जरा वि, सोगे वि ॥

---

१. जस्सत्थि (अ) ।
२. एव सोइदिय (अ, क, ख, ता, ब, म) ।
३. भ० १।५१ ।
४. भ० १।४-१० ।

२९ से केणट्ठेण भंते ! एवं वुच्चइ[1]—•जीवाण जरा वि°, सोगे वि ?
गोयमा ! जे ण जीवा सारीरं वेदण वेदेंति तेसि णं जीवाण जरा, जे णं जीवा माणसं वेदण वेदेंति तेसि णं जीवाण सोगे। से तेणट्ठेण[2] •गोयमा ! एवं वुच्चइ—जीवाण जरा वि°, सोगे वि। एवं नेरइयाण वि। एवं जाव[3] थणियकुमाराण ॥

३० पुढविकाइयाण भंते ! किं जरा ? सोगे ?
गोयमा ! पुढविकाइयाणं जरा, नो सोगे ॥

३१ से केणट्ठेण[4] •भंते ! एवं वुच्चइ—पुढविकाइयाणं जरा°, नो सोगे ?
गोयमा ! पुढविकाइया णं सारीरं वेद णं वेदेंति, नो माणस वेदण वेदेंति। से तेणट्ठेण[5] •गोयमा ! एव वुच्चइ—पुढविकाइयाणं जरा°, नो सोगे। एवं जाव चउरिंदियाणं। सेसाण जहा जीवाणं जाव वेमाणियाण ॥

३२ सेव भंते ! सेवं भंते ! त्ति जाव[6] पज्जुवासति ॥

सक्कस्स ओग्गह-अणुजाणणा-पदं

३३. तेणं कालेण तेणं समएणं सक्के देविंदे देवराया वज्जपाणी पुरंदरे जाव[7] दिव्वाइ भोगभोगाइ भुंजमाणे विहरइ। इमं च णं केवलकप्पं जंबुद्दीव दीवं विपुलेण ओहिणा आभोएमाणे-आभोएमाणे पासति, 'एत्थ ण'[8] समण भगवं महावीर जंबुद्दीवे दीवे। एव जहा ईसाणे तइयसए तहेव सक्के वि, नवरं—आभिओगे ण सद्दावेति, 'हरी पायत्ताणियाहिवई',[9] सुघोसा[10] घटा, पालओ विमाणकारी, पालगं विमाणं, उत्तरिल्ले निज्जाणमग्गे, दाहिणपुरत्थिमिल्ले[11] रतिकरपव्वए, सेस त चेव जाव[12] नामग सावेत्ता पज्जुवासति। धम्मकहा जाव[13] परिसा पडिगया ॥

३४ तए ण से सक्के देविंदे देवराया समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतिय धम्मं सोच्चा निसम्म हट्ठतुट्ठे समण भगव महावीर वंदइ नमसइ, वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी—कतिविहे णं भंते ! ओग्गहे पण्णत्ते ?

---

१. सं० पा०—वुच्चइ जाव सोगे।
२. सं० पा०—तेणट्ठेणं जाव सोगे।
३. पू० प० २।
४. सं० पा०—केणट्ठेण जाव जरा।
५. सं० पा०—तेणट्ठेण जाव नो।
६. भ० १।५१।
७. भ० ३।१०९।
८. यत्थ (क, ख, व); यत्था (ता)।
९. पायत्ताणियाहिवई हरी (ख); हरी य पाय° (व)।
१०. सुघोस ण (ता)।
११. दाहिणिल्ले (ता)।
१२. भ० ३।२७।
१३. ओ० सू० ७१-७९।

सक्का ! पचविहे ओग्गहे पण्णत्ते, त जहा—देविंदोग्गहे, रायोग्गहे, गाहावइ-ओग्गहे, सागारियओग्गहे, साहम्मिओग्गहे[1]।

जे इमे भते ! अज्जत्ताए समणा निग्गथा विहरति एएसि ण ओग्गह अणुजाणामीति कट्टु समण भगव महावीर वदइ नमसइ, वदित्ता नमसित्ता तमेव[2] दिव्व जाणविमाण द्रुहति, द्रुहित्ता जामेव दिस पाउब्भूए तामेव दिस पडिगए ॥

सक्क-संबंधि-वागरण-पदं

३५ भतेति ! भगव गोयमे समण भगव महावीर वदइ नमसइ, वदित्ता नमसित्ता एव वयासी—जण्णं भते ! सक्के देविदे देवराया तुब्भे[3] एवं वदइ, सच्चे ण एसमट्ठे[4] ?
हता सच्चे ॥

३६ सक्के ण भते ! देविदे देवराया कि सम्मावादी ? मिच्छावादी ?
गोयमा ! सम्मावादी, नो मिच्छावादी ॥

३७. सक्के ण भते ! देविदे देवराया किं सच्च भास भासति ? मोस भास भासति ? सच्चामोस भास भासति ? असच्चामोस भास भासति ?
गोयमा ! सच्च पि भास भासति जाव असच्चामोस पि भास भासति ॥

३८. सक्के णं भते ! देविदे देवराया किं सावज्ज भास भासति ? अणवज्ज भास भासति ?
गोयमा ! सावज्ज पि भास भासति, अणवज्ज पि भास भासति ॥

३९. से केणट्ठेण भते ! एव वुच्चइ—सक्के देविदे देवराया सावज्ज पि[5] •भास भासति°, अणवज्ज पि भास भासति ?
गोयमा ! जाहे ण सक्के देविदे देवराया सुहुमकाय अणिज्जूहित्ता[6] ण भास भासति ताहे ण सक्के देविदे देवराया सावज्ज भास भासति, जाहे ण सक्के देविदे देवराया सुहुमकाय निज्जूहित्ता ण भास भासति ताहे ण सक्के देविदे देवराया अणवज्ज भास भासति । से तेणट्ठेण[7] •गोयमा ! एव वुच्चइ—सक्के देविदे देवराया सावज्ज पि भास भासति, अणवज्ज पि भास° भासति ॥

४०. सक्के ण भते ! देविदे देवराया कि भवसिद्धीए ? अभवसिद्धीए ? सम्मदिट्ठीए ? मिच्छदिट्ठीए ? परित्तससारिए ? अणतससारिए ? सुलभबोहिए ? दुल्लभबोहिए ? आराहए ? विराहए ? चरिमे ? अचरिमे ?

---

१. साहम्मियओग्गहे (अ, स) ।
२. तामेव (ता, म) ।
३. तुब्भे ण (अ, म) ।
४. एतमट्ठे (ता) ।
५. स० पा०—सावज्ज पि जाव अणवज्ज ।
६ अणिजूहित्ता (अ) ।
७. स० पा०—तेणट्ठेण जाव भासति ।

गोयमा ! सक्के णं देविंदे देवराया भवसिद्धीए, नो अभवसिद्धीए। सम्मदिट्ठीए, नो मिच्छदिट्ठीए। परित्तससारिए, नो अणंतसंसारिए। सुलभबोहिए, नो दुल्लभबोहिए। आराहए, नो विराहए। चरिमे, नो अचरिमे। एवं जहा मोउद्देसए सणंकुमारे जाव[1] नो अचरिमे ॥

चेय-अचेयकड-कम्म-पदं

४१. जीवाणं भंते ! किं चेयकडा[2] कम्मा कज्जंति ? अचेयकडा कम्मा कज्जंति ?
गोयमा ! जीवाणं चेयकडा[3] कम्मा कज्जंति, नो अचेयकडा कम्मा कज्जंति ॥

४२. से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ[4]—•जीवाणं चेयकडा कम्मा कज्जंति, नो अचेयकडा कम्मा° कज्जंति ?
गोयमा ! जीवाणं आहारोवचिया पोग्गला, बोंदिचिया पोग्गला, कलेवरचिया पोग्गला तहा तहा णं ते पोग्गला परिणमंति, नत्थि अचेयकडा कम्मा समणाउसो ! दुट्ठाणेसु, दुसेज्जासु, दुन्निसीहियासु तहा तहा णं ते पोग्गला परिणमंति, नत्थि अचेयकडा कम्मा समणाउसो ! आयंके से वहाए होंति, संकप्पे से वहाए होंति, मरणंते से वहाए होंति तहा तहा णं ते पोग्गला परिणमंति, नत्थिअचेयकडा कम्मा समणाउसो ! से तेणट्ठेणं[5] •गोयमा ! एवं वुच्चइ—जीवाणं चेयकडा कम्मा कज्जंति, नो अचेयकडा° कम्मा कज्जंति। एवं नेरइयाण वि। एवंजाव[6] वेमाणियाणं ॥

४३. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति जाव[7] विहरइ ॥

तइओ उद्देसो

कम्म-पदं

४४. रायगिहे जाव[8] एवं वयासी—कति णं भंते ! कम्मपगडीओ पण्णत्ताओ ?
गोयमा ! अट्ठ कम्मपगडीओ पण्णत्ताओ, तंजहा—नाणावरणिज्जं जाव[9] अंतराइयं, एवं जाव[10] वेमाणियाणं ॥

---

१. भ० ३।७३।
२. चेत° (ब)।
३. चेदे° (ता)।
४. सं० पा०—वुच्चइ जाव कज्जंति।
५. सं० पा०—तेणट्ठेणं जाव कज्जंति।
६. पू० प० २।
७. भ० १।५१।
८. भ० १।४-१०।
९. भ० ६।३३।
१०. पू० प० २।

४५ जीवे णं भते ! नाणावरणिज्जं कम्म वेदेमाणे कति कम्मपगडीओ वेदेति ? गोयमा ! अट्ठ कम्मप्पगडीओ—एव जहा पण्णवणाए वेदावेउद्देसओ[1] सो चेव निरवसेसो भाणियव्वो । वेदाबधो[2] वि तहेव, बधावेदो[3] वि तहेव, बधाबधो[4] वि तहेव भाणियव्वो जाव वेमाणियाण ति[5] ॥

४६. सेव भते ! सेव भते ! त्ति जाव विहरइ ॥

अंसिया-छेदणे वेज्जस्स किरिया-पदं

४७ तए ण समणे भगव महावीरे अण्णदा कदायि रायगिहाओ नगराओ गुणसिलाओ चेइयाओ पडिनिक्खमइ, पडिनिक्खमित्ता बहिया जणवयविहार विहरइ ॥

४८ तेण कालेण तेण समएण उल्लुयतीरे नाम नगरे होत्था—वण्णओ[6] । तस्स ण उल्लुयतीरस्स नगरस्स बहिया उत्तरपुरत्थिमे दिसिभाए, एत्थ ण एगजबुए[7] नाम चेइए होत्था—वण्णओ[8] । तए ण समणे भगव महावीरे अण्णदा कदायि पुव्वाणुपुव्विं चरमाणे[9] •गामाणुगाम दूइज्जमाणे सुहसुहेण विहरमाणे° एगजबुए समोसढे जाव[10] परिसा पडिगया ॥

४९ भतेति ! भगव गोयमे समण भगव महावीर वदइ नमसइ, वदित्ता नमसित्ता एव वयासी—अणगारस्स ण भते ! भावियप्पणो छट्ठछट्ठेण अणिक्खित्तेण[11] •तवोकम्मेण उड्ढ वाहाओ पगिज्झिय-पगिज्झिय सूराभिमुहे आयावणभूमीए° आयावेमाणस्स तस्स ण पुरत्थिमेण अवड्ढ दिवस नो कप्पति हत्थ वा पाद वा वाह वा ऊरु आउंटावेत्तए[12] वा पसारेत्तए वा, पच्चत्थिमेण से अवड्ढ दिवस कप्पति हत्थ वा[13] •पाद वा वाह वा° ऊरु वा आउटावेत्तए वा पसारेत्तए वा । तस्स ण अंसियाओ लबति । त च वेज्जे अदक्खु । ईसिं पाडेति, पाडेत्ता अंसियाओ छिंदेज्जा । से नूणं भते ! जे छिंदति तस्स किरिया कज्जति, जस्स छिज्जति नो तस्स किरिया कज्जति, णण्णत्थेगेण धम्मतराएण[14] ?

---

१. प० २७ ।
२. प० २६ ।
३. प० २५ ।
४. प० २४ ।
५ इह सग्रहगाथा क्वचिद् दृश्यते—
वेयावेओ पढमो, वेयावधो य बीयओ होइ ।
बधावेओ तइओ, चउत्थओ बधबधो उ ॥
(वृ) ।
६ ओ० सू० १ ।
७. एगजवूए (स) ।
८ ओ० सू० २-१३ ।
९. स० पा०—चरमाणे जाव एगजबुए ।
१०. भ० ९।७७ ।
११. स० पा०—अणिक्खित्तेण जाव आयावेमाणस्स ।
१२. आउट्टा° (क, ता), आउट्टा° (स) ।
१३ स० पा०—हत्थ वा जाव ऊरुं ।
१४. °राइएण (स) ।

हंता गोयमा ! जे छिंदति[1] •तस्स किरिया कज्जति, जस्स छिज्जति नो तस्स किरिया कज्जति, णण्णत्थेगेण° धम्मंतराएण ॥

५० सेव भते ! सेवं भते ! त्ति[3] ॥

चउत्थो उद्देसो

नेरइयाणं निज्जरा-पदं

५१. रायगिहे जाव[2] एव वयासी—

जावतिय ण भते ! अन्नगिलायए समणे निग्गथे कम्मं निज्जरेति एवतियं कम्मं नरएसु नेरइया वासेण वा वासेहिं वा वाससएण[4] वा खवयति ? नो इणट्ठे समट्ठे ।

जावतियं ण भते ! चउत्थभत्तिए समणे निग्गथे कम्म निज्जरेति एवतिय कम्मं नरएसु नेरइया वाससएण वा वाससएहि वा वाससहस्सेण[5] वा खवयति ? नो इणट्ठे समट्ठे ।

जावतिय ण भते ! छट्ठभत्तिए समणे निग्गथे कम्म निज्जरेति एवतिय कम्मं नरएसु नेरइया वाससहस्सेण वा वाससहस्सेहि वा वाससयसहस्सेण वा खवयति ? नो इणट्ठे समट्ठे ।

जावतिय ण भते ! अट्ठमभत्तिए समणे निग्गथे कम्म निज्जरेति एवतियं कम्मं नरएसु नेरइया वाससयसहस्सेण वा वाससयसहस्सेहिं वा वासकोडीए वा खवयति ? नो इणट्ठे समट्ठे ।

जावतिय ण भते ! दसमभत्तिए समणे निग्गथे कम्म निज्जरेति एवतियं कम्म नरएसु नेरइया वासकोडीए वा वासकोडीहि वा वासकोडाकोडीए वा खवयति ? नो इणट्ठे समट्ठे ॥

५२. से केणट्ठेण भते ! एव वुच्चइ—जावतिय अन्नगिलायए समणे निग्गथे कम्म निज्जरेति एवतिय कम्म नरएसु नेरइया वासेण वा वासेहिं वा वाससएण वा नो खवयंति, जावतिय चउत्थभत्तिए—एव त चेव पुव्वभणियं उच्चारेयव्व जाव वासकोडाकोडीए वा नो खवयति ?

---

१. स० पा०—छिंदति जाव धम्मतराएण ।
२. भ० १।५१ ।
३. भ० १।४।१० ।
४. वाससएहिं (अ, क, ता, म, स) ।
५. वाससहस्सेहिं (क, ता, व) ।

गोयमा ! से जहानामए केइ पुरिसे जुण्णे जराजज्जरियदेहे सिढिलतयावलि-तरंग-सपिणद्धगत्ते[1] पविरल-परिसडिय-दंतसेढी उण्हाभिहए तण्हाभिहए आउरे भुसिए[2] पिवासिए दुब्बले किलते एगं महं कोसंब-गंडियं सुक्कं[3] जडिलं[4] गंठिल्लं चिक्कणं वाइद्धं अपत्तियं मुंडेण परसुणा अक्कमेज्जा, तए णं से पुरिसे महंताइं-महंताइं सद्दाइं करेइ, नो महंताइं-महंताइं दलाइं अवद्दालेइ, एवामेव गोयमा ! नेरइयाणं पावाइं कम्माइं गाढीकयाइं, चिक्कणीकयाइं, [5]•सिलिट्ठीकयाइं, खिलीभूताइं भवंति। संपगाढं पि य णं ते वेदणं वेदेमाणा नो महानिज्जरा° नो महापज्जवसाणा भवंति।

से जहानामए केइ पुरिसे अहिकरणिं आउडेमाणे महया[6]-•महया सद्देणं, महया-महया घोसेणं, महया-महया परंपराघाएणं नो संचाएइ, तीसे अहिगरणीए केइ अहाबायरे पोग्गले परिसाडित्तए, एवामेव गोयमा ! नेरइयाणं पावाइं कम्माइं गाढीकयाइं, चिक्कणीकयाइं, सिलट्ठीकयाइं खिलीभूताइं भवंति। संपगाढं पि य णं ते वेदणं वेदेमाणा नो महानिज्जरा° नो महापज्जवसाणा भवंति।

से जहानामए केइ पुरिसे तरुणे बलवं जाव[7] मेहावी निउणसिप्पोवगए एगं महं सामलि-गंडियं उल्लं अजडिलं अगंठिल्लं अचिक्कणं अवाइद्धं सपत्तियं तिक्खेणं परसुणा अक्कमेज्जा, तए णं से पुरिसे नो महंताइं-महंताइं सद्दाइं करेति, महं-ताइं-महंताइं दलाइं अवद्दालेति, एवामेव गोयमा ! समणाणं निग्गंथाणं अहाबादराइं कम्माइं सिढिलीकयाइं, निट्ठियाइं कयाइं, विप्परिणामियाइं[8] खिप्पामेव परिविद्धत्थाइं भवंति जावतियं तावतियं[9] •पि णं ते वेदणं वेदेमाणा महानिज्जरा° महापज्जवसाणा भवंति।

से जहा वा केइ पुरिसे सुक्कतणहत्थगं जायतेयंसि पक्खिवेज्जा—[10]•से नूणं गोयमा ! से सुक्के तणहत्थगए जायतेयंसि पक्खित्ते समाणे खिप्पामेव मसमसाविज्जति ?

हंता मसमसाविज्जति।

एवामेव गोयमा ! समणाणं निग्गंथाणं अहाबायराइं कम्माइं, सिढिलीकयाइं, निट्ठियाइं कयाइं, विप्परिणामियाइं खिप्पामेव विद्धत्थाइं भवंति। जावतियं तावतियं पि णं ते वेदणं वेदेमाणा महानिज्जरा महापज्जवसाणा भवंति।

---

१ सविण° (ख, ता)।
२ भुभित (क, ख, म), जुज्झिते (ब), भूरित इति टीकाकार (वृ)।
३. सुक्ख (अ, ख, ता, ब)।
४. जटिलं (अ)।
५. सं० पा०—एवं जहा छट्ठसए जाव नो।
६ सं० पा० महया जाव नो।
७ भ० १४।३।
८. जाव (अ, क, ख, ता, ब, म, स)।
९ सं० पा०—तावतियं जाव महापज्जवसाणा।
१० सं० पा०—एवं जहा छट्ठसए तहा अयोक-वल्ले वि जाव महापज्जवसाणा।

चउहिं सामाणियसाहस्सीहिं [1]•तिहि परिसाहिं, सत्तहिं अणिएहिं, सत्तहिं अणियाहिवईहिं, सोलसहि आयरक्खदेवसाहस्सीहिं अण्णेहिं वहूहि महासामाणविमाणवासीहिं वेमाणिएहिं देवेहिं देवीहि य सद्धिं सपरिवुडे° जाव[2] दुंदुहि-निग्घोसनाइयरवेण जेणेव जंवुद्दीवे दीवे, जेणेव भारहे वासे, जेणेव उल्लुयतीरे[3] नगरे, जेणेव एगजवुए चेइए, जेणेव ममं अंतियं तेणेव पहारेत्थ गमणाए। तए णं से सक्के देविंदे देवराया तस्स देवस्स तं दिव्वं देविड्ढिं दिव्वं देवज्जुतिं दिव्वं देवाणुभागं दिव्वं तेयलेस्सं असहमाणे ममं अट्ठ उक्खित्तपसिणवागरणाइं पुच्छित्ता संभंतियवंदणएणं वंदित्ता जाव पडिगए ।।

५६. जाव च णं समणे भगवं महावीरे भगवओ गोयमस्स एयमट्ठं परिकहेति तावं च णं से देवे तं देसं हव्वमागए। तए णं से देवे समणं भगवं महावीरं तिक्खुत्तो आयाहिण-पयाहिणं करेइ, करेत्ता वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी—एवं खलु भंते! महासुक्के कप्पे महासामाणे[4] विमाणे एगे मायिमिच्छदिट्ठिउववन्नए देवे ममं एवं वयासी—परिणममाणा पोग्गला नो परिणया, अपरिणया, परिणमंतीति पोग्गला नो परिणया, अपरिणया। तए णं अहं तं मायिमिच्छदिट्ठिउववन्नगं देवं एवं वयासी—परिणममाणा पोग्गला परिणया, नो अपरिणया, परिणमंतीति पोग्गला परिणया, नो अपरिणया, से कहमेयं भंते! एवं?

५७ गंगदत्तादि[5]! समणे भगवं महावीरे गंगदत्तं देवं एवं वयासी—अहं पि णं गंगदत्ता! एवमाइक्खामि भासेमि पण्णवेमि परूवेमि—परिणममाणा पोग्गला[6] •परिणया, नो अपरिणया, परिणमंतीति पोग्गला परिणया°, नो अपरिणया, सच्चमेसे अट्ठे ।।

५८. तए णं से गंगदत्ते देवे समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतियं एयमट्ठं सोच्चा निसम्म हट्ठतुट्ठे समणं भगवं महावीरं वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता नच्चासन्ने जाव[7] पज्जुवासति[8] ।।

गंगदत्तदेवस्स अप्पविसए पसिण-पदं

५९ तए णं समणे भगवं महावीरे गंगदत्तस्स देवस्स तीसे य[9] •महतिमहालियाए परिसाए° धम्मं परिकहेइ जाव[10] आराहए भवति ।।

---

१. सं० पा०—परियारो जहा सूरियाभस्स जाव
२. राय० सू० ५८।
३. उल्लुया° (ख, व, म)।
४. महासमाणे (अ, क, ता, व)।
५. °दी (ता, व, म)।
६ सं० पा०—पोग्गला जाव नो।
७ भ० १।१०।
८. पज्जुवाहति (म)।
९. सं० पा०—तीसे य जाव धम्मं।
१०. ओ० सू० ७१-७७।

६० तए णं से गगदत्ते देवे समणस्स भगवओ महावीरस्स अतिए धम्मं सोच्चा निसम्म हट्ठतुट्ठे उट्ठाए उट्ठेइ, उट्ठेत्ता समण भगव महावीर वदइ नमसइ, वदित्ता नमसित्ता एव वयासी—अहण्ण भते ! गगदत्ते देवे कि भवसिद्धिए ? अभव-सिद्धिए ? [1]•सम्मदिट्ठी ? मिच्छदिट्ठी ? परित्तससारिए ? अणंतससारिए ? सुलभबोहिए ? दुल्लभबोहिए ? आराहए ? विराहए ? चरिमे ? अचरिमे ? गंगदत्ताइ ! समणे भगव महावीरे गगदत्त देव एव वयासी—गगदत्ता ! तुमण्ण भवसिद्धिए, नो अभवसिद्धिए। सम्मदिट्ठी, नो मिच्छदिट्ठी। परित्त-ससारिए, नो अणतससारिए। सुलभबोहिए, नो दुल्लभबोहिए। आराहए, नो विराहए। चरिमे, नो अचरिमे ।।

गंगदत्तदेवेण नट्ट-उवदंसण-पदं

६१. तए ण से गगदत्ते देवे समणेण भगवया महावीरेण एव वुत्ते समाणे हट्ठतुट्ठचित्त-माणदिए पीइमणे परमसोमणस्सिए हरिसवसविसप्पमाणहियए समण भगवं महावीर वदइ नमसइ, वंदित्ता नमसित्ता एव वयासी—तुब्भे ण भते ! सव्वं जाणह सव्व पासह, सव्वओ जाणह सव्वओ पासह, सव्व काल जाणह सव्व काल पासह, सव्वे भावे जाणह सव्वे भावे पासह ।
जाणति ण देवाणुप्पिया ! मम पुव्विं वा पच्छा वा ममेयरूव दिव्व देविड्ढि दिव्व देवजुइ दिव्व देवाणुभाव लद्ध पत्त अभिसमण्णागय ति, त इच्छामि ण देवाणुप्पियाण भत्तिपुव्वग गोयमातियाण समणाण निग्गथाण दिव्व देविड्ढि दिव्व देवजुइ दिव्व देवाणुभाव दिव्व वत्तीसतिवद्ध नट्टविहिं उवदसित्तए ।।

६२ तए ण समणे भगव महावीरे गगदत्तेण देवेण एव वुत्ते समाणे गगदत्तस्स देवस्स एयमट्ठ नो आढाइ, नो परियाणइ, तुसिणीए सचिट्ठति ।।

६३ तए ण से गगदत्ते देवे समण भगव महावीर दोच्च पि तच्च पि एव वयासी—तुब्भे ण भते ! सव्व जाणह सव्व पासह, सव्वओ जाणह सव्वओ पासह, सव्व काल जाणह सव्व काल पासह, सव्वे भावे जाणह सव्वे भावे पासह ।
जाणति ण देवाणुप्पिया ! मम पुव्विं वा पच्छा वा ममेयरूव दिव्व देविड्ढि दिव्व देवजुइ दिव्व देवाणुभाव लद्ध पत्त अभिसमण्णागय ति, त इच्छामि णं देवाणुप्पियाण भत्तिपुव्वग गोयमातियाण समणाण निग्गथाण दिव्व देविड्ढि दिव्व देवजुइ दिव्व देवाणुभाव दिव्व बत्तीसतिबद्ध नट्टविहिं उवदसित्तए त्ति कट्टु ० जाव बत्तीसतिबद्ध नट्टविहिं उवदसेति, उवदसेत्ता जाव[2] तामेव दिस पडिगए ।।

---

१. स० पा०—एव जहा सूरियाभो । २ राय० सू० ६५-१२० ।

से जहानामए केइ पुरिसे तत्तंसि अयकवल्लंसि उदगबिंदु पक्खिवेज्जा, से नूणं गोयमा ! से उदगबिंदू तत्तंसि अयकवल्लंसि पक्खित्ते समाणे खिप्पामेव विद्धंसमागच्छइ ?

हंता विद्धंसमागच्छइ ।

एवामेव गोयमा ! समणाणं निग्गंथाणं अहाबायराइं कम्माइं सिढिलीकयाइं, निट्ठियाइं कयाइं, विप्परिणामियाइं खिप्पामेव विद्धत्थाइं भवंति । जावतियं तावतियं पि णं ते वेदणं वेदेमाणा महानिज्जरा° महापज्जवसाणा भवंति । से तेणट्ठेणं गोयमा ! एवं वुच्चइ—जावतियं अन्नगिलायए[1] समणे निग्गंथे कम्मं निज्जरेति तं चेव जाव वासकोडाकोडीए वा नो खवयति ॥

५३. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति जाव[2] विहरइ ॥

पंचमो उद्देसो

सक्कस्स उक्खित्तपसिणवागरण-पदं

५४. तेणं कालेणं तेणं समएणं उल्लुयतीरे नामं नगरे होत्था—वण्णओ[3]। एगजंबुए चेइए—वण्णओ[4]। तेणं कालेणं तेणं समएणं सामी समोसढे जाव[5] परिसा पज्जुवासति । तेणं कालेणं तेणं समएणं सक्के देविंदे देवराया वज्जपाणी—एवं जहेव बितियउद्देसए तहेव दिव्वेणं जाणविमाणेणं आगओ जाव[6] जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता[7] •समणं भगवं महावीरं वंदइ नमंसइ, वंदित्ता° नमंसित्ता एवं वयासी—

देवे णं भंते ! महिड्ढिए जाव[8] महेसक्खे बाहिरए पोग्गले अपरियाइत्ता[9] पभू आगमित्तए ? नो इणट्ठे समट्ठे ।

देवे णं भंते ! महिड्ढिए जाव महेसक्खे बाहिरए पोग्गले परियाइत्ता पभू आगमित्तए ? हंता पभू ।

---

१. अन्नइलायए (अ, क, ख, ता, ब, म, स) ।
२. भ० १।५१ ।
३. ओ० सू० १ ।
४. ओ० सू० २-१३ ।
५. ओ० सू० २२-५२ ।
६. भ० १६।३३ ।
७. सं० पा०—उवागच्छित्ता जाव नमंसित्ता ।
८. भ० १।३३६ ।
९. अपरियादिइत्ता (क, ख, ब) ।

देवे णं भंते ! महिड्ढिए जाव महेसक्खे एवं एएणं अभिलावेणं गमित्तए वा, भासित्तए वा, विआगरित्तए वा, उम्मिसावेत्तए वा, निमिसावेत्तए वा, आउटावेत्तए वा, ठाणं वा सेज्जं वा निसीहियं वा चेइत्तए वा, विउव्वित्तए वा, परियारेत्तए वा जाव हंता पभू--इमाइं अट्ठ उक्खित्तपसिणवागरणाइं पुच्छइ, पुच्छित्ता संभंतियवंदणएणं[1] वंदति, वंदित्ता तमेव दिव्वं जाणविमाणं दुहति[2], दुहित्ता जामेव दिसं पाउब्भूए तामेव दिसं पडिगए ॥

गंगदत्तदेवस्स संदब्भे परिणममाण-परिणय-पदं

५५ भंतेति ! भगवं गोयमे समणं भगवं महावीरं वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी—अण्णदा णं भंते ! सक्के देविंदे देवराया देवाणुप्पियं वंदति नमंसति सक्कारेति जाव[3] पज्जुवासति, किण्णं भंते ! अज्ज सक्के देविंदे देवराया देवाणुप्पियं अट्ठ उक्खित्तपसिणवागरणाइं पुच्छइ, पुच्छित्ता संभंतियवंदणएणं वंदइ नमंसइ जाव[4] पडिगए ?

गोयमादि ! समणे भगवं महावीरे भगवं गोयमं एवं वयासी—एवं खलु गोयमा ! तेणं कालेणं तेणं समएणं महासुक्के कप्पे महासामाणे विमाणे दो देवा महिड्ढिया जाव महेसक्खा एगविमाणंसि देवत्ताए उववन्ना, तं जहा—मायिमिच्छदिट्ठिउववन्नए य, अमायिसम्मदिट्ठिउववन्नए य ।

तए णं से मायिमिच्छदिट्ठिउववन्नए देवे तं अमायिसम्मदिट्ठिउववन्नगं देवं एवं वयासी—परिणममाणा पोग्गला नो परिणया, अपरिणया, परिणमतीति पोग्गला नो परिणया, अपरिणया ।

तए णं से अमायिसम्मदिट्ठिउववन्नए देवे तं मायिमिच्छदिट्ठिउववन्नगं देवं एवं वयासी—परिणममाणा पोग्गला परिणया, नो अपरिणया, परिणमतीति पोग्गला परिणया, नो अपरिणया । तं मायिमिच्छदिट्ठिउववन्नगं एवं पडिहणइ[5], पडिहणित्ता ओहिं पउंजइ, पउंजित्ता ममं ओहिणा आभोएइ, आभोएत्ता अयमेयारूवे[6] •अज्झत्थिए चिंतिए पत्थिए मणोगए संकप्पे• समुप्पज्जित्था—एवं खलु समणे भगवं महावीरे जंबुद्दीवे दीवे भारहे वासे उल्लुयतीरस्स नगरस्स बहिया एगजंबुए चेइए अहापडिरूवं[7] •ओग्गहं ओगिण्हित्ता संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे• विहरइ, तं सेयं खलु मे समणं भगवं महावीरं वंदित्ता जाव[8] पज्जुवासित्ता इमं एयारूवं वागरणं पुच्छित्तए त्ति कट्टु एवं संपेहेइ, संपेहेत्ता

१. °वंदएणं (अ, ख, व, म) ।
२. दुरुहइ (स) ।
३. भ० २।३० ।
४. भ० १६।५४ ।
५. पडिभणइ (ता) ।
६. सं० पा०—अयमेयारूवे जाव समुप्पज्जित्था ।
७. सं० पा०—अहापडिरूवं जाव विहरइ ।
८. भ० २।३० ।

६४ भंतेति ! भगवं गोयमे समणं भगवं महावीरं[1] •वंदइ नमसइ, वंदित्ता नमंसित्ता° एवं वयासी—गंगदत्तस्स णं भंते ! देवस्स सा दिव्वा देविड्ढी दिव्वा देवज्जुती[2] •दिव्वे देवाणुभावे कहिं गते ? कहिं° अणुप्पविट्ठे ?
गोयमा ! सरीरं गए, सरीरं अणुप्पविट्ठे, कूडागारसालादिट्ठंतो जाव[3] सरीरं अणुप्पविट्ठे। अहो णं भंते ! गंगदत्ते देवे महिड्ढिए[4] •महज्जुइए महब्बले महायसे° महेसक्खे ॥

गंगदत्तदेवस्स पुव्वभव-पदं

६५ गंगदत्तेणं भंते ! देवेणं सा दिव्वा देविड्ढी सा दिव्वा देवज्जुती से दिव्वे देवाणुभागे किण्णा लद्धे[5] ? •किण्णा पत्ते ? किण्णा अभिसमण्णागए ? पुव्वभवे के आसी ? किं नामए वा ? किं वा गोत्तेणं ?
कयरंसि वा गामंसि वा नगरंसि वा निगमंसि वा रायहाणीए वा खेडंसि वा कब्बडंसि वा मडंबंसि वा पट्टणंसि वा दोणमुहंसि वा आगरंसि वा आसमंसि वा संबाहंसि वा सण्णिवेसंसि वा ?
किं वा दच्चा ? किं वा भोच्चा ? किं वा किच्चा ? किं वा समायरित्ता ?
कस्स वा तहारूवस्स समणस्स वा माहणस्स वा अंतिए एगमवि आरियं धम्मियं सुवयणं सोच्चा निसम्म जण्णं गंगदत्तेणं देवेणं सा दिव्वा देविड्ढी सा दिव्वा देवज्जुती से दिव्वे देवाणुभागे लद्धे पत्ते° अभिसमण्णागए ?

६६ गोयमादी ! समणे भगवं महावीरे भगवं गोयमं एवं वयासी—एवं खलु गोयमा ! तेणं कालेणं तेणं समएणं इहेव जंबुद्दीवे दीवे भारहे वासे हत्थिणापुरे नामं नगरे होत्था—वण्णओ[6]। सहसंबवणे उज्जाणे—वण्णओ[7]। तत्थ णं हत्थिणापुरे नगरे गंगदत्ते नामं गाहावती परिवसति—अड्ढे जाव[8] बहुजणस्स अपरिभूए ॥

६७ तेणं कालेणं तेणं समएणं मुणिसुव्वए अरहा आदिगरे जाव[9] सव्वण्णू सव्वदरिसी आगासगएणं चक्केणं[10], •आगासगएणं छत्तेणं, आगासियाहिं चामराहिं, आगासफालियामएणं सपायवीढेणं सीहासणेणं, धम्मज्झएणं पुरओ° पकड्ढिज्जमाणेणं-पकड्ढिज्जमाणेणं सीसगणसंपरिवुडे पुव्वाणुपुव्विं चरमाणे गामाणु-

---

१. सं० पा०—महावीरं जाव एवं ।
२. सं० पा०—देवज्जुती जाव अणुप्पविट्ठे ।
३. राय० सू० १२३ ।
४. सं० पा०—महिड्ढिए जाव महेसक्खे ।
५. सं० पा०—लद्धे जाव गंगदत्तेणं देवेणं सा दिव्वा देविड्ढी जाव अभिसमण्णागए ।
६. ओ० सू० १ ।
७. भ० ११।५७ ।
८. भ० २।९४ ।
९. भ० १।७ ।
१०. सं० पा०—चक्केणं जाव पकड्ढिज्ज° ।

गामं[1] •दूइज्जमाणे सुहसुहेण विहरमाणे जेणेव हत्थिणापुरे नगरे° जेणेव सहसववणे उज्जाणे जाव[2] विहरति । परिसा निग्गया जाव[3] पज्जुवासति ॥

६८ तए ण से गगदत्ते गाहावती इमीसे कहाए लद्धट्ठे समाणे हट्ठतुट्ठे ण्हाए[4] कयबलिकम्मे जाव[5] अप्पमहग्घाभरणालकियसरीरे साओ गिहाओ पडिनिक्खमति, पडिनिक्खमित्ता पायविहारचारेण हत्थिणापुर[6] नगर मज्झमज्झेण[7] निग्गच्छति, निग्गच्छित्ता जेणेव सहसववणे उज्जाणे जेणेव मुणिसुव्वए अरहा तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता मुणिसुव्वय अरह तिक्खुत्तो आयाहिण-पयाहिण करेइ जाव[8] तिविहाए पज्जुवासणाए पज्जुवासति ॥

६९. तए ण मुणिसुव्वए अरहा गगदत्तस्स गाहावतिस्स तीसे य महतिमहालियाए परिसाए धम्म परिकहेइ जाव[9] परिसा पडिगया ॥

७० तए ण से गगदत्ते गाहावती मुणिसुव्वयस्स अरहओ अतिय धम्म सोच्चा निसम्म हट्ठतुट्ठे उट्ठाए उट्ठेति, उट्ठेत्ता मुणिसुव्वय अरह वदइ नमसइ, वदित्ता नमसित्ता एव वयासी—सद्दहामि ण भते ! निग्गथ पावयण जाव[10] से जहेय तुब्भे वदह, ज नवर देवाणुप्पिया ! जेट्ठपुत्त कुडुबे ठावेमि. तए ण अहं देवाणुप्पियाण अतिय मुडे[11] •भवित्ता अगाराओ अणगारिय° पव्वयामि ! अहासुह देवाणुप्पिया ! मा पडिवध ॥

७१ तए ण से गगदत्ते गाहावई मुणिसुव्वएण अरहया एव वुत्ते समाणे हट्ठतुट्ठे मुणिसुव्वय अरह वदइ नमसइ, वदित्ता नमसित्ता मुणिसुव्वयस्स अरहओ अतियाओ सहसववणाओ उज्जाणाओ पडिनिक्खमति, पडिनिक्खमित्ता, जेणेव हत्थिणापुरे नगरे जेणेव सए गिहे तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता विउल असण-पाण[12]-•खाइम-साइम° उवक्खडावेति, उवक्खडावेत्ता मित्त-नाइ-नियग[13]-•सयण-सबधि-परियण°आमतेति, आमतेत्ता तओ पच्छा ण्हाए जहा पूरणे जाव[14] जेट्ठपुत्त कुडुबे ठावेति । त मित्त-नाइ[15]-•नियग-सयण-सबधि-परियण° जेट्ठपुत्त च आपुच्छइ, आपुच्छित्ता पुरिससहस्सवाहणि सीय दुरुहति, दुरुहित्ता मित्त-नाइ-

---

१. स० पा०—गामाणुगाम जाव जेणेव ।
२. भ० १।७ ।
३. ओ० सू० ५२ ।
४ जाव (ख, स) ।
५ भ० २।९७ ।
६ हत्थिणपुर (अ, म), हत्थिणाउर (ता, ब), हत्थिणागपुर (स) ।
७. मज्झेण २ (अ, ख, ता, ब, म) ।
८. ओ० सू० ६९ ।
९. ओ० सू० ७१-७९ ।
१०. भ० २।५२ ।
११ स० पा०—मुडे जाव पव्वयामि ।
१२ स० पा०—पाण जाव उवक्खडावेति ।
१३ स० पा०—नियग जाव आमतेति ।
१४. भ० ३।१०२ ।
१५ स० पा०—नाइ जाव जेट्ठपुत्ते ।

नियग[1]-•सयण-सबंधि°-परिजणेणं जेट्ठपुत्तेण य समणुगम्ममाणमग्गे सव्विड्ढीए जाव[2] दुदुहि-निग्घोसनादितरवेण हत्थिणागपुर मज्भमज्भेण निग्गच्छइ, निग्गच्छित्ता जेणेव सहसबवणे उज्जाणे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता छत्तादिते तित्थगरातिसए पासति । एव जहा उद्दायणे जाव[3] सयमेव आभरणे ओमुयइ, ओमुइत्ता सयमेव पचमुट्ठिय लोयं करेति, करेत्ता जेणेव मुणिसुव्वए अरहा एवं जहेव उद्दायणे तहेव पव्वइए, तहेव एक्कारस अगाइं अहिज्जइ जाव[4] मासियाए सलेहणाए अत्ताण भूसेइ, भूसेत्ता सट्ठि भत्ताइ अणसणाए छेदेति, छेदेत्ता आलोइय-पडिक्कते समाहिपत्ते कालमासे काल किच्चा महासुक्के कप्पे महासामाणे विमाणे उववायसभाए देवसयणिज्जसि जाव[5] गगदत्तदेवत्ताए उववन्ने ॥

७२. तए ण से गगदत्ते देवे अहुणोववन्नमेत्तए समाणे पचविहाए पज्जत्तीए पज्जत्तभाव गच्छति, [त जहा—आहारपज्जत्तीए जाव[6] भासा-मणपज्जत्तीए][7] एव खलु गोयमा ! गगदत्तेण देवेण सा दिव्वा देविड्ढी[8] •सा दिव्वा देवज्जुती से दिव्वे देवाणुभागे लद्धे पत्ते° अभिसमण्णागए ॥

७३. गगदत्तस्स ण भते ! देवस्स केवतिय काल ठिति पण्णत्ता ?
गोयमा ! सत्तरस सागरोवमाइ ठिती पण्णत्ता ॥

७४. गगदत्ते ण भते ! देवे ताओ देवलोगाओ आउक्खएण[9] •भवक्खएण ठिइक्खएणं अणतर चय चइत्ता कहि गच्छिहिति ? कहि उववज्जिहिति ?
गोयमा ! ° महाविदेहे वासे सिज्भिहिति जाव[10] सव्वदुक्खाण अत काहिति ॥

७५. सेव भते ! सेवं भते ! त्ति[11] ॥

छट्ठो उद्देसो

सुविण-पद

७६. कतिविहे ण भते ? सुविणदसणे[12] पण्णत्ते ?
गोयमा ! पचविहे सुविणदसणे पण्णत्ते, त जहा—अहातच्चे, पताणे, चितासुविणे, तव्विवरीए, अव्वत्तदसणे[13] ॥

---

१. स० पा०—नियग जाव परिजणेण ।
२. भ० ६।१८२ ।
३. भ० १३।११७ ।
४. भ० ११।११८; ६।१५०, १५१ ।
५. भ० ३।१७ ।
६. भ० ३।१७ ।
७. असौ कोष्ठकवर्तिपाठो व्याख्याश: प्रतीयते ।
८. स० पा०—देविड्ढी जाव अभिसमण्णागए ।
९. स० पा०—आउक्खएण जाव महाविदेहे ।
१०. भ० २।७३ ।
११. भ० १।५१ ।
१२. सुमिण° (अ) ।
१३. अवत्त° (अ, क, ख, ब) ।

७७ सुत्ते ण भते ! सुविण पासति ? जागरे सुविण पासति ? सुत्तजागरे सुविण पासति ?
गोयमा ! नो सुत्ते सुविण पासति, नो जागरे सुविण पासति, सुत्तजागरे सुविण पासति ।।

७८ जीवा ण भते ! कि सुत्ता ? जागरा ? सुत्तजागरा ?
गोयमा ? जीवा सुत्ता वि, जागरा वि, सुत्तजागरा वि ।।

७९ नेरइयाण भते ! कि सुत्ता—पुच्छा ।
गोयमा ! नेरइया सुत्ता, नो जागरा, नो सुत्तजागरा । एव जाव[1] चउरिंदिया ।।

८० पचिदियतिरिक्खजोणिया ण भते ! कि सुत्ता—पुच्छा ।
गोयमा ! सुत्ता, नो जागरा, सुत्तजागरा वि । मणुस्सा जहा जीवा । वाणमतर-जोइसिय-वेमाणिया जहा नेरइया ।।

८१ सवुडे ण भते ! सुविण पासति ? असवुडे सुविण पासति ? सवुडासवुडे सुविण पासति ?
गोयमा ! सवुडे वि सुविण पासति, असवुडे वि सुविण पासति, सवुडासवुडे वि सुविण पासति । सवुडे सुविण पासति अहातच्च पासति । असवुडे सुविण पासति तहा वा त होज्जा, अण्णहा वा त होज्जा । सवुडासवुडे सुविण पासति [2]•तहा वा त होज्जा, अण्णहा वा त होज्जा° ।।

८२. जीवा ण भते ! कि सवुडा ? असवुडा ? सवुडासवुडा ?
गोयमा ! जीवा सवुडा वि, असवुडा वि, सवुडासवुडा वि । एव जहेव सुत्ताणं दडओ तहेव भाणियव्वो ।।

८३ कति ण भते ! सुविणा पण्णत्ता ?
गोयमा ! बायालीस सुविणा पण्णत्ता ।।

८४ कति ण भते ! महासुविणा पण्णत्ता ?
गोयमा ! तीस महासुविणा पण्णत्ता ।।

८५ कति ण भते ! सव्वसुविणा पण्णत्ता ?
गोयमा ! बावत्तरिं सव्वसुविणा पण्णत्ता ।।

८६ तित्थगरमायरो ण भते ! तित्थगरसि गब्भ वक्कममाणसि कति महासुविणे[3] पासित्ता ण पडिबुज्झति ?
गोयमा ! तित्थगरमायरो तित्थगरसि गब्भ वक्कममाणसि एएसिं तीसाए महासुविणाण इमे चोद्दस महासुविणे पासित्ता ण पडिबुज्झति, त जहा—गय-उसभ जाव[4] सिहिं च ।।

---

१ पू० प० २ ।
२. स० पा०—एव चेव ।
३ महासुविणे सुविणे (अ, क, ख, ता, व) ।
४. भ० ११।१४२ ।

८७. चक्कवट्टिमायरो ण भंते ! चक्कवट्टिंसि गब्भं वक्कममाणंसि कति महासुविणे पासित्ता णं पडिबुज्झति ?
गोयमा ! चक्कवट्टिमायरो चक्कवट्टिंसि गब्भं[1] वक्कममाणंसि एएसिं तीसाए महासुविणाणं °इमे चोद्दस महासुविणे पासित्ता णं पडिबुज्झति, तं जहा—गय-उसभ° जाव सिहिं च ॥

८८ वासुदेवमायरो ण – पुच्छा ।
गोयमा ! वासुदेवमायरो[2] °वासुदेवंसि गब्भं° वक्कममाणंसि एएसिं चोद्दसण्हं महासुविणाणं अण्णयरे सत्त महासुविणे पासित्ता णं पडिबुज्झति ॥

८९. बलदेवमायरो—पुच्छा ।
गोयमा ! बलदेवमायरो जाव एएसिं चोद्दसण्हं महासुविणाणं अण्णयरे चत्तारि महासुविणे पासित्ता णं पडिबुज्झति ॥

९०. मंडलियमायरो णं भंते !—पुच्छा ।
गोयमा ! मंडलियमायरो जाव एएसिं चोद्दसण्हं महासुविणाणं अण्णयरं एगं महासुविणं 'पासित्ता णं'[4] पडिबुज्झति ॥

भगवओ महासुविण-दंसण-पदं

९१. समणे भगवं महावीरे छउमत्थकालियाए अंतिमराइयंसि इमे दस महासुविणे पासित्ता णं पडिबुद्धे, तं जहा—
१ एगं च णं महं घोररूवदित्तधरं तालपिसायं सुविणे पराजियं पासित्ता णं पडिबुद्धे ।
२ एगं च णं महं सुक्किलपक्खगं पुंसकोइलगं[5] सुविणे पासित्ता णं पडिबुद्धे ।
३ एगं च णं महं चित्तविचित्तपक्खगं[6] पुंसकोइलगं सुविणे पासित्ता णं पडिबुद्धे ।
४. एगं च णं महं दामदुगं सव्वरयणामयं सुविणे पासित्ता णं पडिबुद्धे ।
५. एगं च णं महं सेयं गोवग्गं सुविणे पासिता णं पडिबुद्धे ।
६ एगं च णं महं पउमसरं सव्वओ समंता कुसुमियं सुविणे पासित्ता णं पडिबुद्धे ।
७. एगं च णं 'महं सागरं'[7] उम्मीवीयीसहस्सकलियं भूयाहिं तिण्णं सुविणे पासित्ता णं पडिबुद्धे ।
८. एगं च णं महं दिणयरं तेयसा जलंतं सुविणे पासित्ता णं पडिबुद्धे ।

---

१. जाव (अ, ख, म); जाव गब्भं (क, ता, ब, स) ।
२. सं० पा०—एवं जहा तित्थगरमायरो जाव ।
३. सं० पा०—वासुदेवमायरो जाव वक्कम° ।
४. जाव (अ, क, ख, ता, ब, म, स) ।
५. पूसकोइलं (अ, क, ख, ता, ब) ।
६ चित्तपक्खगं (क, ता) ।
७. महासागरं (अ) ।

९. एग च ण महं हरिवेरुलियवण्णाभेण नियगेण अतेण माणुसुत्तर पव्वय सव्वओ समता आवेढिय परिवेढिय सुविणे पासित्ता ण पडिबुद्धे ।

१० एगं च ण मह मदरे पव्वए मदरचूलियाए उवरि सीहासणवरगय अप्पाण सुविणे पासित्ता ण पडिबुद्धे ।

१. जण्ण समणे भगव महावीरे एग मह घोररूवदित्तधर तालपिसाय सुविणे पराजिय पासित्ता ण पडिबुद्धे, तण्ण समणेण भगवया महावीरेण मोहणिज्जे मूलाओ उग्घाइए ।

२ जण्ण समणे भगव महावीरे एग मह सुक्किल[1]•पक्खग पुसकोइलग सुविणे पासित्ता ण° पडिबुद्धे, तण्ण समणे भगव महावीरे सुक्कज्झाणोवगए विहरति ।

३ जण्ण समणे भगव महावीरे एग मह चित्तविचित्त[2]•पक्खग पुसकोइलग सुविणे पासित्ता ण° पडिबुद्धे, तण्ण समणे भगव महावीरे विचित्त ससमयपर-समइय दुवालसग गणिपिडग आघवेति पण्णवेति परूवेति दसेति निदसेति उवदसेति, त जहा—आयार, सूयगड जाव[3] दिट्ठिवाय[4] ।

४ जण्ण समणे भगव महावीरे एग मह दामदुग सव्वरयणामय सुविणे पासित्ता ण पडिबुद्धे, तण्ण समणे भगव महावीरे दुविहे धम्मे पण्णवेति, त जहा—अगार-धम्म वा, अणगारधम्मं वा ।

५ जण्ण समणे भगव महावीरे एग मह सेय गोवग्ग[5]•सुविणे पासित्ता ण° पडिबुद्धे, तण्ण समणस्स भगवओ महावीरस्स चाउव्वण्णाइण्णे समणसघे, त जहा—समणा, समणीओ, सावया, सावियाओ ।

६ जण्ण समणे भगव महावीरे एगं मह पउमसर[6] •सव्वओ समता कुसुमिय सुविणे पासित्ता ण° पडिबुद्धे, तण्ण समणे भगव महावीरे चउव्विहे देवे पण्णवेति, त जहा—भवणवासी, वाणमतरे, जोतिसिए, वेमाणिए ।

७ जण्ण समणे भगव महावीरे एग मह सागर[7] •उम्मीवीयीसहस्सकलिय भूयाहि तिण्ण सुविणे पासित्ता ण° पडिबुद्धे, तण्ण समणेणं भगवया महावीरेण अणा-दीए अणवदग्गे[8] •दीहमद्धे चाउरते° ससारकतारे तिण्णे[9] ।

८. जण्ण समणे भगव महावीरे एग मह दिणयर[10] •तेयसा जलत सुविणे पासित्ता

---

१. स० पा०—सुक्किल जाव पडिबुद्धे ।
२. स० पा०—चित्तविचित्त जाव पडिबुद्धे ।
३ भ० २०।७५ ।
४. दिट्ठिवात (अ, ब), दिट्ठिवाद (ता) ।
५. स० पा०—गोवग्ग जाव पडिबुद्धे ।
६. सं० पा०—पउमसर जाव पडिबुद्धे ।
७ स० पा०—सागर जाव पडिबुद्धे ।
८ अणवतग्गे (ब), स० पा०—अणवदग्गे जाव ससार° ।
९ नित्थिण्णे (अ) ।
१०. स० पा०—दिणयर जाव पडिबुद्धे ।

ण° पडिबुद्धे, तण्णं समणस्स भगवओ महावीरस्स अणंते अणुत्तरे[1] •निव्वाघाए निरावरणे कसिणे पडिपुण्णे° केवलवरनाणदंसणे समुप्पन्ने ।

९. जण्णं समणे भगवं महावीरे एगं महं हरिवेरुलिय[2] •वण्णाभेणं नियगेणं अंतेणं माणुसुत्तरं पव्वयं सव्वओ समंता आवेढिय परिवेढियं सुविणे पासित्ता णं° पडिबुद्धे, तण्णं समणस्स भगवओ महावीरस्स ओराला कित्ति-वण्ण-सद्द-सिलोया सदेवमणुयासुरे लोए परिभमंति—इति खलु समणे भगवं महावीरे, इति खलु समणे भगवं महावीरे ।

१०. जण्णं समणे भगवं महावीरे मंदरे पव्वए मंदरचूलियाए[3] •उवरिं सीहासण-वरगयं अप्पाणं सुविणे पासित्ता णं° पडिबुद्धे, तण्णं समणे भगवं महावीरे सदेवमणुयासुराए परिसाए मज्झगए केवली[4] धम्मं आघवेति[5] •पण्णवेति परूवेति दंसेति निदंसेति° उवदंसेति ।।

सुविण-फल-पदं

९२. इत्थी वा पुरिसे वा सुविणंते एगं महं हयपंतिं वा गयपंतिं वा[6] •नरपंतिं वा किन्नरपंतिं वा किंपुरिसपंतिं वा महोरगपंतिं वा गंधव्वपंतिं वा° वसभपंतिं वा पासमाणे पासति, दुरुहमाणे दुरुहति, दुरूढमिति अप्पाणं मन्नति, तक्खणामेव बुज्झति, तेणेव भवग्गहणेणं सिज्झति जाव[7] सव्वदुक्खाणं अंतं करेति ।।

९३. इत्थी वा पुरिसे वा सुविणंते एगं महं दामिणिं[8] पाईणपडिणायतं दुहओ समुद्दे पुट्ठं पासमाणे पासति, संवेल्लेमाणे संवेल्लेइ, संवेल्लियमिति अप्पाणं मन्नति, तक्खणामेव[9] बुज्झति, तेणेव भवग्गहणेणं सिज्झति जाव सव्वदुक्खाणं अंतं करेति ।।

९४. इत्थी वा पुरिसे वा सुविणंते एगं महं रज्जुं पाईणपडिणायतं दुहओ लोगंते पुट्ठं पासमाणे पासति, छिंदमाणे छिंदति, छिन्नमिति[10] अप्पाणं मन्नति, तक्खणामेव बुज्झति, तेणेव भवग्गहणेणं सिज्झति जाव सव्वदुक्खाणं अंतं करेति ।।

९५. इत्थी वा पुरिसे वा सुविणंते एगं महं किण्हसुत्तगं वा[11] •नीलसुत्तगं वा लोहिय-सुत्तगं वा हालिद्दसुत्तगं वा° सुक्किलसुत्तगं वा पासमाणे पासति, उग्गोवेमाणे

---

१. सं० पा०—अणुत्तरे जाव केवल° ।
२. सं० पा०—हरिवेरुलिय जाव पडिबुद्धे ।
३. सं० पा०—मंदरचूलियाए जाव पडिबुद्धे ।
४. केवलीणं (क), केवलिपण्णत्तं (ठा० १०।१०३)
५. सं० पा०—आघवेति जाव उवदंसेति ।
६. सं० पा०—गयपंतिं वा जाव वसभपंतिं ।
७. भ० १।४४ ।
८. दामं (ख) ।
९. तक्खणामेव अप्पाणं (ख); तक्खणा चेव (ता)
१०. छिंदणमिति (ता) ।
११. सं० पा०—किण्हसुत्तगं वा जाव सुक्किल° ।

उग्गोवेति, उग्गोवितमिति अप्पाण मन्नति, तक्खणामेव बुज्झति, तेणेव भवग्ग-हणेण सिज्झति जाव सव्वदुक्खाण अत करेति ।।

९६ इत्थी वा पुरिसे वा सुविणते एग मह अयरासि वा तवरासि वा तउयरासिं वा सीसगरासि वा पासमाणे पासति, दुरुहमाणे दुरुहति, दुरूढमिति अप्पाण मन्नति, तक्खणामेव बुज्झति, दोच्चे भवग्गहणे सिज्झति जाव सव्वदुक्खाण अत करेति ।।

९७ इत्थी वा पुरिसे वा सुविणते एग मह हिरण्णरासि वा सुवण्णरासिं वा रयण-रासिं वा वइररासि वा पासमाणे पासति, दुरुहमाणे[1] दुरुहति, दुरूढमिति अप्पाण मन्नति, तक्खणामेव बुज्झति, तेणेव भवग्गहणेण सिज्झति जाव सव्वदुक्खाण अत करेति ।।

९८ इत्थी वा पुरिसे वा सुविणते एग मह तणरासि वा [2]°कट्ठरासि वा पत्तरासि वा तयरासिं वा तुसरासि वा भुसरासिं वा गोमयरासिं वा° अवकररासिं वा पासमाणे पासति, विक्खिरमाणे विक्खिरति, विक्खिण्णमिति अप्पाण मन्नति, तक्खणामेव बुज्झति, तेणेव भवग्गहणेण सिज्झति जाव सव्वदुक्खाण अत करेति ।।

९९ इत्थी वा पुरिसे वा सुविणते एग मह सरथभ वा वीरणथभवा वसीमूलथभ वा वल्लीमूलथभ वा पासमाणे पासति, उम्मूलेमाणे उम्मूलेति, उम्मूलितमिति अप्पाण मन्नति, तक्खणामेव बुज्झति, तेणेव भवग्गहणेण सिज्झति जाव सव्व-दुक्खाण अत करेति ।।

१०० इत्थी वा पुरिसे वा सुविणते एग मह खीरकुभ वा दधिकुभ वा घयकुभ वा मधुकुभ वा पासमाणे पासति, उप्पाडेमाणे उप्पाडेति, उप्पाडितमिति अप्पाण मन्नति, तक्खणामेव बुज्झति, तेणेव भवग्गहणेण सिज्झति जाव सव्वदुक्खाण अत करेति ।।

१०१ इत्थी वा पुरिसे वा सुविणते एग मह सुरावियडकुभ वा सोवीरवियडकुभ वा तेल्लकुभ वा वसाकुभ वा पासमाणे पासति, भिदमाणे भिदति, भिन्नमिति अप्पाण मन्नति, तक्खणामेव बुज्झति, दोच्चे भवग्गहणे सिज्झति जाव सव्व-दुक्खाण अत करेति ।।

१०२ इत्थी वा पुरिसे वा सुविणते एग मह पउमसर कुसुमिय पासमाणे पासति, ओगाहमाणे ओगाहति, ओगाढमिति अप्पाण मन्नति, तक्खणामेव बुज्झति, तेणेव भवग्गहणेण सिज्झति जाव सव्वदुक्खाण अत करेति ।।

१०३. इत्थी वा पुरिसे वा सुविणते एग मह सागर उम्मीवीयीसहस्सकलिय[3] पासमाणे

१ दुरूहमाणे (अ, ख, स) ।

२. स० पा०—जहा तेयनिसग्गे जाव अवकररासिं ।

३. उम्मीवीयी जाव कलिय (अ, क, ख, ता, व, म, स) ।

पासति, तरमाणे तरति, तिण्णमिति अप्पाण मन्नति, तक्खणामेव बुज्झति, तेणेव भवग्गहणेण सिज्झति जाव सव्वदुक्खाण अत करेति ।।

१०४ इत्थी वा पुरिसे वा सुविणते एगं मह भवण सव्वरयणामय पासमाणे पासति, अणुप्पविसमाणे अणुप्पविसति, अणुप्पविट्ठमिति अप्पाण मन्नति, तक्खणामेव बुज्झति, तेणेव भवग्गहणेण सिज्झति जाव सव्वदुक्खाण अत करेति ।।

१०५. इत्थी वा पुरिसे वा सुविणते एग महं विमाण सव्वरयणामय पासमाणे पासति, दुरुहमाणे दुरुहति, दूरूढमिति अप्पाण मन्नति, तक्खणामेव बुज्झति, तेणेव भवग्गहणेण सिज्झति जाव सव्वदुक्खाण अत करेति ।।

गंध-पोग्गल-पदं

१०६ अह भते ! कोट्ठपुडाण वा जाव[1] केयइपुडाण वा अणुवायसि उब्भिज्जमाणाण वा[2] •निब्भिज्जमाणाण वा उक्किरिज्जमाणाण वा विक्किरिज्जमाणाण वा° ठाणाओ वा ठाण संकामिज्जमाणाण कि कोट्ठे वाति जाव केयई[3] वाति ?
गोयमा ! नो कोट्ठे वाति जाव नो केयई वाति, घाणसहगया पोग्गला वाति[4] ।।

१०७ सेव भते ! सेव भते ! त्ति[5] ।।

सत्तमो उद्देसो

१०८. कतिविहे ण भते ! उवओगे पण्णत्ते ?
गोयमा ! दुविहे उवओगे पण्णत्ते, एव जहा उवओगपद[6] पण्णवणाए तहेव निरवसेस नेयव्व[7], पासणयापद[8] च नेयव्व[9] ।।

१०९ सेव भते ! सेव भते ! त्ति[10] ।।

---

१. राय० सू० ३० ।
२. स० पा०—उब्भिज्जमाणाण वा जाव ठाणाओ, रायपसेणइयसुत्ते (३०) 'उब्भिज्ज-माणाण' इत्यादीनि पदानि किञ्चिदधिकानि भिन्नान्यपि च लभ्यन्ते ।
३. केयती (अ, क, म, स) ।
४. वाति (अ, क, ब, म, स) ।
५. भ० १।५१ ।
६. प० २९ ।
७. भाणियव्व (स) ।
८ पासणापद (अ, क, ख, ता, ब, म), प० ३० ।
९ निरवसेस नेयव्व (स) ।
१० भ० १।५१ ।

अट्ठमो उद्देसो

लोगस्स चरिमंते जीवाजीवादिमग्गणा-पदं

११० केमहालए[1] ण भते ! लोए पण्णत्ते ?
गोयमा ! महतिमहालए लोए पण्णत्ते, जहा बारसमसए तहेव जाव[2] असखेज्जाओ जोयणकोडाकोडीओ परिक्खेवेण ॥

१११ लोयस्स ण भते ! पुरत्थिमिल्ले चरिमते किं जीवा, जीवदेसा, जीवपदेसा, अजीवा, अजीवदेसा, अजीवपदेसा ?
गोयमा ! नो जीवा, जीवदेसा वि, जीवपदेसा वि, अजीवा वि, अजीवदेसा वि, अजीवपदेसा वि । जे जीवदेसा ते नियम एगिंदियदेसा य, अहवा एगिंदियदेसा य बेइदियस्स य देसे—एव जहा दसमसए अग्गेयी दिसा तहेव[3], नवर—देसेसु अणिदियाण आइल्लविरहिओ । जे अरूवी अजीवा ते छव्विहा, अद्धासमयो नत्थि । सेस त चेव निरवसेस[4] ॥

११२ लोगस्स ण भते ! दाहिणिल्ले चरिमते कि जीवा ? एव चेव । एव पच्चत्थि-मिल्ले वि, उत्तरिल्ले वि ॥

११३ लोगस्स ण भते ! उवरिल्ले चरिमते कि जीवा—पुच्छा ।
गोयमा ! नो जीवा, जीवदेसा वि जाव अजीवपदेसा वि । जे जीवदेसा ते नियम[5] एगिंदियदेसा य अणिंदियदेसा य, अहवा एगिंदियदेसा य अणिंदियदेसा य बेइदियस्स[6] य देसे, अहवा एगिंदियदेसा य अणिंदियदेसा य बेइदियाण य देसा, एव मज्झिल्लविरहिओ जाव पचिंदियाण । जे जीवप्पदेसा ते नियम एगिंदियप्पदेसा य अणिंदियप्पदेसा य, अहवा एगिंदियप्पदेसा य अणिंदियप्पदेसा य बेइदियस्स पदेसा य, अहवा एगिंदियप्पदेसा य अणिंदियप्पदेसा य बेइदियाण य पदेसा, एव आदिल्लविरहिओ जाव पचिंदियाण । अजीवा जहा[7] दसमसए तमाए तहेव निरवसेस ॥

११४. लोगस्स ण भते ! हेट्ठिल्ले चरिमते किं जीवा—पुच्छा ।
गोयमा ! नो जीवा, जीवदेसा वि जाव अजीवपदेसा वि, जे जीवदेसा ते नियम एगिंदियदेसा, अहवा एगिंदियदेसा य बेइदियस्स देसे, अहवा एगिंदियदेसा य बेइदियाण य देसा, एव मज्झिल्लविरहिओ जाव अणिंदियाण । पदेसा आइल्ल-

---

१. किमहालए (अ, क, ख, ता, म, स) ।
२ भ० १२।१३०, २।४५ ।
३. भ० १०।६ ।
४. सव्व (अ, क, ता, व, म) ।
५. नितम (व) ।
६ बेंदियस्स (म, स) ।
७ भ० १०।७ ।

विरहिया सव्वेसि जहा पुरत्थिमिल्ले चरिमते तहेव । अजीवा जहेव उवरिल्ले चरिमते तहेव ॥

११५. इमीसे ण भते ! रयणप्पभाए पुढवीए पुरत्थिमिल्ले चरिमते कि जीवा पुच्छा । गोयमा ! नो जीवा, एव जहेव लोगस्स तहेव चत्तारि वि चरिमता जाव उत्तरिल्ले, उवरिल्ले तहेव, जहा[1] दसमसए विमला दिसा तहेव निरवसेस । हेट्ठिल्ले चरिमते जहेव लोगस्स हेट्ठिल्ले चरिमते तहेव, नवर—देमे पचिदिएसु तियभगो त्ति सेस त चेव । एव जहा रयणप्पभाए चत्तारि चरिमंता भणिया एव सक्करप्पभाए वि । उवरिम-हेट्ठिल्ला जहा रयणप्पभाए हेट्ठिल्ले । एव जाव अहेसत्तमाए। एव सोहम्मस्स वि जाव अच्चुयस्स । गेवेज्जविमाणाण एव चेव, नवर—उवरिम-हेट्ठिल्लेसु चरिमतेसु देसेसु पचिदियाण वि मज्झिल्लविरहिओ चेव, सेस तहेव । एव जहा गेवेज्जविमाणा तहा अणुत्तरविमाणा वि, ईसिपब्भारा वि ॥

परमाणुपोग्गलस्स गति-पद

११६ परमाणुपोग्गले ण भते ! लोगस्स पुरत्थिमिल्लाओ चरिमताओ पच्चत्थिमिल्लं चरिमत एगसमएण गच्छति ? पच्चत्थिमिल्लाओ चरिमताओ पुरत्थिमिल्ल चरिमतं एगसमएण गच्छति ? दाहिणिल्लाओ चरिमताओ उत्तरिल्ल[2] •चरिमतं एगसमएण° गच्छति ? उत्तरिल्लाओ चरिमताओ दाहिणिल्ल[3] •चरिमत एगसमएण° गच्छति ? उवरिल्लाओ चरिमताओ हेट्ठिल्ल चरिमत एगसमएण[4] गच्छति ? हेट्ठिल्लाओ चरिमताओ उवरिल्ल चरिमत एगसमएण गच्छति ? हता गोयमा ! परमाणुपोग्गले णं लोगस्स पुरत्थिमिल्ल त चेव जाव उवरिल्लं चरिमत एगसमएण गच्छति ॥

किरिया-पदं

११७ पुरिसे ण भते ! वास वासति, वास नो वासतीति हत्थ वा पाय वा बाहु वा ऊरु वा आउटावेमाणे[5] वा पसारेमाणे वा कतिकिरिए ?
गोयमा ! जाव च णं से पुरिसे वास वासति, वास नो वासतीति हत्थ वा पाय वा बाहु वा ऊरु वा आउटावेति वा पसारेति वा, ताव च ण से पुरिसे काइयाए[6] •अहिगरणियाए पाओसियाए पारितावणियाए पाणातिवायकिरियाए°—पचहि किरियाहि पुट्ठे ॥

---

१. भ० १०।७ ।
२. स० पा०—उत्तरिल्लं जाव गच्छति ।
३. स० पा०—दाहिणिल्ल जाव गच्छति ।
४ एव जाव (अ, क, ख, ता, ब, म, स) ।
५. आउंटारेमाणे (ता) सर्वत्रापि ।
६ म० पा०—काइयाए जाव पचहि ।

अलोए गतिनिसेध-पदं

११८. देवे ण भंते ! महिड्ढिए जाव[1] महेसक्खे लोगते ठिच्चा पभू अलोगंसि हत्थ वा पाय वा वाह वा ऊरु वा आउटावेत्तए वा पसारेत्तए वा ?
नो इणट्ठे समट्ठे ।।

११९. से केणट्ठेण भते ! एव वुच्चइ—देवे ण महिड्ढिए जाव महेसक्खे लोगते ठिच्चा नो पभू अलोगसि हत्थं वा[2] •पाय वा बाह वा ऊरु वा आउटावेत्तए वा° पसारेत्तए वा ?
गोयमा ! जीवाणं आहारोवचिया पोग्गला, बोदिचिया पोग्गला, कलेवरचिया पोग्गला । पोग्गलामेव पप्प जीवाण य अजीवाण य गतिपरियाए आहिज्जइ । अलोए ण नेवत्थि जीवा, नेवत्थि पोग्गला । से तेणट्ठेण[3] •गोयमा ! एव वुच्चइ—देवे महिड्ढिए जाव महेसक्खे लोगते ठिच्चा नो पभू आलोगसि हत्थ वा पाय वा वाह वा ऊरु वा आउटावेत्तए वा° पसारेत्तए वा ।।

१२० सेव भते ! सेव भते ! त्ति[4] ।।

नवमो उद्देसो

वलिस्स सभा-पद

१२१. कहिण्ण[5] भते ! वलिस्स वइरोयणिंदस्स वइरोयणरण्णो सभा सुहम्मा पण्णत्ता ?
गोयमा ! जवुद्दीवे दीवे मदरस्स पव्वयस्स उत्तरे ण तिरियमसखेज्जे जहेव चमरस्स जाव[6] वायालीस जोयणसहस्साइ ओगाहित्ता, एत्थ ण बलिस्स वइरोयणिंदस्स वइरोयणरण्णो रुयगिंदे नाम उप्पायपव्वए पण्णत्ते । सत्तरस एक्कवीसे जोयणसए—एव पमाण जहेव तिगिच्छिकूडस्स पासायवडेसगस्स वि त चेव पमाण, सीहासण सपरिवार वलिस्स परियारेण, अट्ठो तहेव[7], नवर—

---

१. भ० १।३३९ ।
२ स० पा०—हत्थ वा जाव पसारेत्तए ।
३. स० पा०—तेणट्ठेण जाव पसारेत्तए ।
४ भ० १।५१ ।
५ कहि ण (अ, क, ख, ता, व, म) ।
६. भ० २।११८ ।
७. यथा तिगिच्छकूटस्य नामान्वर्थाभिधायक वाक्य तथाऽस्यापि वाच्य, केवल तिगिच्छकूटान्वर्थप्रश्नस्योत्तरे यस्मात्तिगिच्छिप्रभाण्युत्पलादीनि तत्र सन्ति तेन तिगिच्छकूट इत्युच्यत इत्युक्त इह तु रुचकेन्द्रप्रभाणि तानि सन्तीति वाच्य, रुचकेन्द्रस्तु रत्नविशेष इति, तत्पुनरर्थत

रुयगिदप्पभाइ-रुयगिदप्पभाइ-रुयगिदप्पभाइ। सेसं तं चेव जाव वलिचंचाए रायहाणीए अण्णेसिं च जाव रुयगिदस्स ण उप्पायपव्वयस्स उत्तरे णं छक्कोडिसए तहेव जाव चत्तालीस जोयणसहस्साइ ओगाहित्ता, एत्थ ण वलिस्स वइरोयणिदस्स वइरोयणरण्णो वलिचचा नाम रायहाणी पण्णत्ता। एग जोयणसयसहस्स पमाण, तहेव जाव वलिपेढस्स उववाओ जाव आयरक्खा सव्व तहेव निरवसेस, नवर—सातिरेग सागरोवम ठिती पण्णत्ता। सेस त चेव जाव[1] वली वइरोयणिदे, वली वइरोयणिदे॥

१२२ सेव भते! सेव भते! जाव[2] विहरइ॥

दसमो उद्देसो

ओहि-पदं

१२३. कतिविहा[3] ण भते! ओही पण्णत्ता?
गोयमा! दुविहा ओही पण्णत्ता। ओहीपद निरवसेस भाणियव्व[4]॥

१२४. सेव भते! सेव भते! जाव[5] विहरइ॥

इक्कारसमो उद्देसो

दीवकुमारादि-पदं

१२५ दीवकुमारा ण भते! सव्वे समाहारा? सव्वे समुस्सासनिस्सासा?
नो इणट्ठे समट्ठे। एव जहा पढमसए वितियउद्देसए दीवकुमाराण वत्तव्वया तहेव जाव[6] समाउया, समुस्सासनिस्सासा[7]॥

सूत्रमेवमव्येय—'से केणट्ठेण भते! एव वुच्चइ—रुयगिदे-रुयगिदे उप्पायपव्वए? गोयमा! रुयगिदे ण वहूणि उप्पलाणि पउमाइ कुमुयाइ जाव रुयगिदवण्णाइ रुयगिदलेसाइ रुयगिदप्पभाइ, से तेणट्ठेण रुयगिदे-रुयगिदे उप्पायपव्वए' त्ति (वृ)।

१. भ० २।११८-१२१।

२. १।५१।

३ कतिविहे (अ, क, ख, ता, व, म, स)।

४. प० ३३।

५. भ० १।५१।

६. भ० १।७४, ७५।

७ ०निस्सासा। एव नागा वि (अ, ता, व, म, स)।

१२६. दीवकुमाराण भते ! कति लेस्साओ पण्णत्ताओ ?
गोयमा ! चत्तारि लेस्साओ पण्णत्ताओ, त जहा—कण्हलेस्सा[1], •नीललेस्सा, काउलेस्सा°, तेउलेस्सा ॥

१२७ एएसि ण भंते ! दीवकुमाराण कण्हलेस्साण जाव तेउलेस्साण य कयरे कयरे-हिंतो[2] •अप्पा वा ? वहुया वा ? तुल्ला वा° ? विसेसाहिया वा ?
गोयमा ! सव्वत्थोवा दीवकुमारा तेउलेस्सा, काउलेस्सा असखेज्जगुणा, नीललेस्सा विसेसाहिया, कण्हलेस्सा विसेसाहिया ॥

१२८ एएसि ण भते ! दीवकुमाराणं कण्हलेसाण जाव तेउलेस्साण य कयरे कयरे-हिंतो अप्पिड्ढिया वा ? महिड्ढिया वा ?
गोयमा ! कण्हलेस्साहितो नीललेस्सा महिड्ढिया जाव सव्वमहिड्ढिया तेउलेस्सा ॥

१२९ सेव भते ! सेव भंते ! जाव[3] विहरइ ॥

१२-१४ उद्देसा

१३० उदहिकुमारा णं भते ! सव्वे समाहारा ? एव चेव ॥

१३१ सेव भते ! सेव भते ! त्ति ॥

१३२ एव दिसाकुमारा वि ॥

१३३. एव थणियकुमारा वि ॥

१३४ सेव भते ! सेव भते ! जाव[4] विहरइ ॥

---

१ स० पा०—कण्हलेस्सा जाव तेउलेस्सा ।
२ स० पा०—कयरेहिंतो जाव विसेसाहिया ।
३. भ० १।५१ ।
४ भ० १।५१ ।

सत्तरसमं सतं

पढमो उद्देसो

नमो सुयदेवयाए भगवईए

१. कुंजर २ संजय ३ सेलेसि, ४ किरिय ५ ईसाण ६,७. पुढवि ८,९. दग १०,११ वाऊ।
१२ एगिंदिय १३ नाग १४ सुवण्ण, १५ विज्जु १६,१७. वातग्गि[1] सत्तरसे ॥१॥

हत्थिराय-पदं

१. रायगिहे जाव[2] एवं वयासी—उदायी णं भंते ! हत्थिराया कओहिंतो अणंतरं उव्वट्टित्ता उदायिहत्थिरायत्ताए उववन्ने ?
गोयमा ! असुरकुमारेहिंतो देवेहिंतो अणंतरं उव्वट्टित्ता उदायिहत्थिरायत्ताए उववन्ने ॥

२. उदायी णं भंते ! हत्थिराया कालमासे कालं किच्चा कहिं गच्छिहिति ? कहिं उववज्जिहिति ?
गोयमा ! इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए उक्कोससागरोवमट्ठितियंसि[3] निरयावासंसि नेरइयत्ताए उववज्जिहिति ॥

३. से णं भंते ! तओहिंतो अणंतरं उव्वट्टित्ता कहिं गच्छिहिति ? कहिं उववज्जिहिति ?
गोयमा ! महाविदेहे वासे सिज्झिहिति जाव[4] सव्वदुक्खाणं अंतं काहिति ॥

४ भूयाणंदे णं भंते ! हत्थिराया कओहिंतो अणंतरं उव्वट्टित्ता भूयाणंदे हत्थिरायत्ताए उववन्ने ? एवं जहेव उदायी जाव अंतं काहिति ॥

---

१. वायुग्गि (अ, म, स)।
२. भ० ११४-१०।
३. °ट्ठितीयंसि (अ, ख, ब, म)।
४. भ० २।७३।

किरिया-पदं

५ पुरिसे ण भंते ! तलमारुहइ[1], आरुहित्ता तलाओ तलफलं पचालेमाणे वा पवाडेमाणे वा कतिकिरिए ?
गोयमा ! जावं च णं से पुरिसे तलमारुहइ, आरुहित्ता तलाओ तलफलं पचालेइ वा पवाडेइ वा तावं च णं से पुरिसे काइयाए जाव[2] पचहिं किरियाहिं पुट्ठे । जेसिं पि णं जीवाणं सरीरेहिंतो तले निव्वत्तिए, तलफले निव्वत्तिए ते वि णं जीवा काइयाए जाव पचहिं किरियाहिं पुट्ठा ॥

६ अहे णं भंते ! से तलफले अप्पणो गरुयत्ताए[3] °भारियत्ताए गरुयसभारियत्ताए अहे वीससाए° पच्चोवयमाणे जाइं तत्थ पाणाइं जाव[4] जीवियाओ ववरोवेति, तए[5] णं भंते ! से पुरिसे कतिकिरिए ?
गोयमा ! जावं च णं से[6] तलफले अप्पणो गरुयत्ताए जाव जीवियाओ ववरोवेति तावं च णं से पुरिसे काइयाए जाव चउहिं किरियाहिं पुट्ठे । जेसिं पि णं जीवाणं सरीरेहिंतो तले निव्वत्तिए ते वि णं जीवा काइयाए जाव चउहिं किरियाहिं पुट्ठा । जेसिं पि णं जीवाणं सरीरेहिंतो तलफले निव्वत्तिए ते[7] णं जीवा काइयाए जाव पचहिं किरियाहिं पुट्ठा । जे वि य से जीवा अहे वीससाए पच्चोवयमाणस्स उवग्गहे वट्टंति ते वि य णं जीवा काइयाए जाव पचहिं किरियाहिं पुट्ठा ॥

७ पुरिसे णं भंते ! रुक्खस्स मूलं पचालेमाणे वा पवाडेमाणे वा कतिकिरिए ?
गोयमा ! जावं च णं से पुरिसे रुक्खस्स मूलं पचालेइ वा पवाडेइ वा तावं च णं से पुरिसे काइयाए जाव पचहिं किरियाहिं पुट्ठे । जेसिं पि य णं जीवाणं सरीरेहिंतो मूले निव्वत्तिए जाव[8] बीए निव्वत्तिए, ते वि य णं जीवा काइयाए जाव पचहिं किरियाहिं पुट्ठा ॥

८ अहे णं भंते ! से मूले अप्पणो गरुययाए जाव जीवियाओ ववरोवेति, तए[9] णं भंते ! से पुरिसे कतिकिरिए ?

---

१. तलमारुभइ (अ, ख, ता, ब, म), ताल° (क) ।
२. भ० १६।११७ ।
३ स० पा०—गरुयत्ताए जाव पच्चोवयमाणे ।
४. ×(अ), भ० ५।१३४ ।
५. ततो (व) ।
६ से पुरिसे (अ, क, ख, ता, ब, म, स), अत्र 'पुरिसे' इति पदं अशुद्धमस्ति । एतत् च लिपिदोषादागतम् । वृत्तौ तत्तालफलमिति लभ्यते । भ० ५।१३५ सूत्रे 'जावं च णं से उसू' इति पाठोस्ति । तत्सादृश्यादत्रापि 'जावं च णं से तलफले' इति पाठः सङ्गतोस्ति ।
७ ते वि (अ, क, ख, ता, ब, म, स), अत्र 'अपि' पदं प्रवाहपाति आगतम् । वृत्तौ फल-निर्वर्त्तकास्तु पचक्रिया एव इति व्याख्याया 'तु' पदेन पूर्वप्रकरणाद् भेदः सूचितः । अस्मिन्नर्थे 'अपि' पदस्य प्रयोगः सङ्गतो न स्यात् ।
८. भ० ७।६४ ।
९. ततो (क, ता, म) ।

गोयमा ! जावं च णं से मूले अप्पणो गरुययाए जाव जीवियाओ ववरोवेति ताव च ण से पुरिसे काइयाए जाव चउहि किरियाहिं पुट्ठे । 'जेसिं पि य ण जीवाण सरीरेहितो कदे[1] निव्वत्तिए जाव वीए निव्वत्तिए ते वि ण जीवा काइयाए जाव चउहि किरियाहिं पुट्ठा'[2] । जेसिं पि य ण जीवाण सरीरेहितो मूले निव्वत्तिए ते ण जीवा काइयाए जाव पचहि किरियाहिं पुट्ठा । जे वि य से जीवा अहे वीससाए पच्चोवयमाणस्स उवग्गहे वट्टति ते वि य ण जीवा काइयाए जाव पचहि किरियाहि पुट्ठा ।।

९. पुरिसे णं भते ! रुक्खस्स कदे पचालेमाणे वा पवाडेमाणे वा कतिकिरिए ?
गोयमा ! जाव च ण से पुरिसे रुक्खस्स कंद पचालेइ वा पवाडेइ वा ताव च णं से पुरिसे काइयाए जाव पंचहिं किरियाहि पुट्ठे । जेसिं पि य ण जीवाणं सरीरेहितो मूले निव्वत्तिए जाव वीए निव्वत्तिए ते वि य ण जीवा काइयाए जाव पचहि किरियाहिं पुट्ठा ।।

१० अहे ण भते ! से कदे अप्पणो गरुययाए जाव जीवियाओ ववरोवेति, तए ण भते ! से पुरिसे कतिकिरिए ?
गोयमा ! जावं च ण से कदे अप्पणो गरुययाए जाव जीवियाओ ववरोवेति तावं च ण से पुरिसे काइयाए जाव चउहि किरियाहिं पुट्ठे । जेसिं पि य ण जीवाणं सरीरेहितो मूले निव्वत्तिए, खंधे निव्वत्तिए जाव वीए निव्वत्तिए ते वि णं जीवा काइयाए जाव चउहिं किरियाहि पुट्ठा । जेसि पि य णं जीवाण सरीरेहितो कदे निव्वत्तिए ते[3] ण जीवा काइयाए जाव पचहि किरियाहि पुट्ठा । जे वि य से जीवा अहे वीससाए पच्चोवयमाणस्स उवग्गहे वट्टति ते वि य ण जीवा काइयाए जाव पचहि किरियाहिं पुट्ठा । जहा कदे, एव जाव वीयं ।।

११ कति ण भते ! सरीरगा पण्णत्ता ?
गोयमा ! पच सरीरगा पण्णत्ता, तं जहा—ओरालिए जाव[4] कम्मए ।।

१२. कति ण भंते ! इंदिया पण्णत्ता ?
गोयमा ! पच इंदिया पण्णत्ता, त जहा—सोइदिए जाव[5] फासिदिए ।।

१३. कतिविहे ण भंते ! जोए पण्णत्ते ?
गोयमा ! तिविहे जोए पण्णत्ते, तं जहा—मणजोए, वइजोए, कायजोए ।।

१४ जीवे णं भते ! ओरालियसरीर निव्वत्तेमाणे कतिकिरिए ?
गोयमा ! सिय तिकिरिए, सिय चउकिरिए, सिय पचकिरिए । एव पुढविकाइए वि । एवं जाव मणुस्से ।।

---

१. मूले (ख, ता, व) ।
२ × (अ) ।
३. ते वि (अ, क, ख, ता, व, म, स) ।
४. भ० १।०८ ।
५ भ० २।७७ ।

१५ जीवा ण भते ! ओरालियसरीर निव्वत्तेमाणा कतिकिरिया ?
गोयमा ! तिकिरिया वि, चउकिरिया वि, पचकिरिया वि । एव पुढविकाइया वि । एवं जाव मणुस्सा । एव वेउव्वियसरीरेण वि दो दडगा, नवर—जस्स अत्थि वेउव्विय । एव जाव कम्मगसरीर । एव सोइदिय जाव फासिदिय । एव मणजोग, वइजोग, कायजोग, जस्स ज अत्थि त भाणियव्व । एए एगत्त-पुहत्तेण छव्वीस दडगा ॥

भाव-पद

१६ कतिविहे ण भते ! भावे पण्णत्ते ?
गोयमा ! छव्विहे भावे पण्णत्ते, त जहा—ओदइए[1], ओवसमिए[2] •खइए, खओवसमिए, पारिणामिए°, सन्निवाइए ॥

१७ से कि त ओदइए ?
ओदइए भावे दुविहे पण्णत्ते, त जहा—उदए य, उदयनिप्फन्ने[3] य । एव एएण अभिलावेण जहा अणुओगदारे छन्नाम[4] तहेव निरवसेस भाणियव्व जाव[5] सेत्त सन्निवाइए भावे ॥

१८ सेव भते ! सेव भते ! त्ति[6] ॥

बीओ उद्देसो

धम्माधम्म-ठित-पदं

१९ से नूण भते ! सजत-विरत-पडिहत-पच्चक्खातपावकम्मे धम्मे ठिते ? अस्सजत-अविरत-अपडिहत-अपच्चक्खातपावकम्मे अधम्मे ठिते ? सजतासजते धम्माधम्मे ठिते ?
हता गोयमा ! संजत-विरत[7]-•पडिहत-पच्चक्खातपावकम्मे धम्मे ठिते, अस्सं-जत-अविरत-अपडिहत-अपच्चक्खातपावकम्मे अधम्मे ठिते, सजतासजते° धम्माधम्मे ठिते ॥

---

१ उदतिए (अ, क, व, म) ।
२ स० पा०—ओवसमिए जाव सन्निवाइए ।
३. निप्पन्ने (अ, म), निप्पन्ने (स) ।
४. छणाम (अ, व, म) ।
५. अ० २७३-२९७ ।
६ भ० १।५१ ।
७. स० पा०—विरत जाव धम्माधम्मे ।

२०. एयंसि[1] णं भंते ! धम्मंसि वा, अधम्मसि वा, धम्माधम्मसि वा चक्किया केइ आसइत्तए वा[2], •सइत्तए वा, चिट्ठइत्तए वा, निसीइत्तए वा° तुयट्टित्तए वा ?
गोयमा ! नो इणट्ठे समट्ठे ॥

२१. से केण खाइ अट्ठेण भंते ! एवं वुच्चइ जाव सजतासंजते धम्माधम्मे ठिते ?
गोयमा ! संजत-विरत[3]-•पडिहत-पच्चक्खाता°पावकम्मे धम्मे ठिते, धम्मं चेव उवसपज्जित्ताण विहरति । अस्सजत[4]-•अविरत-अपडिहत-अपच्चक्खात°-पावकम्मे अधम्मे ठिते, अधम्म चेव उवसपज्जित्ताणं विहरति । सजतासंजते धम्माधम्मे ठिते, धम्माधम्मं उवसंपज्जित्ताणं विहरति । से तेणट्ठेण जाव धम्माधम्मे ठिते ॥

२२. जीवा णं भंते ! कि धम्मे ठिता ? अधम्मे ठिता ? धम्माधम्मे ठिता ?
गोयमा ! जीवा धम्मे वि ठिता, अधम्मे वि ठिता, धम्माधम्मे वि ठिता ॥

२३. नेराइयाण—पुच्छा ।
गोयमा ! नेरइया नो धम्मे ठिता, अधम्मे ठिता, नो धम्माधम्मे ठिता । एवं जाव चउरिंदियाण ॥

२४ पंचिंदियतिरिक्खजोणियाण—पुच्छा ।
गोयमा ! पचिंदियतिरिक्खजोणिया नो धम्मे ठिता, अधम्मे ठिता, धम्माधम्मे वि ठिता । मणुस्सा जहा जीवा । वाणमतर-जोइसिय-वेमाणिया जहा नेरइया ॥

बालपंडिय-पदं

२५. अण्णउत्थिया ण भंते ! एवमाइक्खति जाव परूवेति—एव खलु समणा पडिया, समणोवासया बालपडिया, जस्स ण एगपाणाए वि दडे अणिक्खित्ते से णं एगतबाले त्ति वत्तव्वं सिया ॥

२६. से कहमेयं भंते ! एव ?
गोयमा ! जणणं ते अण्णउत्थिया एवमाइक्खंति जाव एगंतबाले त्ति वत्तव्वं सिया, जे ते एवमाहसु मिच्छ ते एवमाहसु । अह पुण गोयमा ! एवमाइक्खामि जाव परूवेमि—एव खलु समणा पडिया, समणोवासगा बालपडिया, जस्स ण एगपाणाए वि दडे निक्खित्ते से ण नो एगतबाले त्ति वत्तव्वं सिया ॥

२७. जीवा ण भंते ! किं बाला ? पडिया ? बालपडिया ?
गोयमा ! बाला वि, पडिया वि, बालपडिया वि ॥

२८. नेरइयाणं—पुच्छा ।
गोयमा ! नेरइया बाला, नो पंडिया, नो बालपडिया । एव जाव चउरिदिया ॥

---

१. एतेसिं (अ, क, व, म, स), अत्र षष्ठीबहुवचनान्त पद शुद्ध न प्रतिभाति ।

२. स० पा०—आसइत्तए वा जाव तुयट्टित्तए ।

३ स० पा०—विरत जाव पावकम्मे ।

४. सं० पा०—अस्सजत जाव पावकम्मे ।

२९ पंचिंदियतिक्खजोणियाण—पुच्छा।
गोयमा ! पंचिंदियतिरिक्खजोणिया वाला, नो पंडिया, वालपंडिया वि। मणुस्सा जहा जीवा। वाणमंतर-जोइसिय-वेमाणिया जहा नेरइया॥

जीवस्स जीवायाए एगत्त-पदं

३०. अण्णउत्थिया ण भंते ! एवमाइक्खंति जाव परूवेंति—एवं खलु पाणातिवाए, मुसावाए जाव[1] मिच्छादंसणसल्ले वट्टमाणस्स अण्णे जीवे, अण्णे जीवाया। पाणाइवायवेरमणे जाव परिग्गहवेरमणे, कोहविवेगे जाव[2] मिच्छादंसणसल्लविवेगे वट्टमाणस्स अण्णे जीवे, अण्णे जीवाया। उप्पत्तियाए[3] •वेणइयाए कम्मयाए° पारिणामियाए वट्टमाणस्स अण्णे जीवे, अण्णे जीवाया। ओग्गहे, ईहा-अवाए धारणाए वट्टमाणस्स[4] •अण्णे जीवे, अण्णे° जीवाया। उट्ठाणे[5] •कम्मे बले वीरिए पुरिसक्कार°-परक्कमे वट्टमाणस्स[6] •अण्णे जीवे, अण्णे° जीवाया। नेरइयत्ते तिरिक्ख-मणुस्स-देवत्ते वट्टमाणस्स[7] •अण्णे जीवे, अण्णे° जीवाया। नाणावरणिज्जे जाव अंतराइए वट्टमाणस्स[8] •अण्णे जीवे, अण्णे° जीवाया। एवं कण्हलेस्साए जाव सुक्कलेस्साए, सम्मदिट्ठीए मिच्छदिट्ठीए सम्मामिच्छदिट्ठीए, एवं चक्खुदंसणे अचक्खुदंसणे ओहिदंसणे केवलदंसणे, आभिणिबोहियनाणे सुयनाणे ओहिनाणे मणपज्जवनाणे केवलनाणे, मतिअण्णाणे सुयअण्णाणे विभंगनाणे, आहारसण्णाए भयसण्णाए मेहुणसण्णाए परिग्गहसण्णाए, एवं ओरालियसरीरे वेउव्वियसरीरे आहारगसरीरे तेयगसरीरे कम्मगसरीरे, एवं मणजोगे वइजोगे कायजोगे सागारोवओगे, अणागारोवओगे वट्टमाणस्स अण्णे जीवे, अण्णे जीवाया॥

३१. से कहमेयं भंते ! एवं ?
गोयमा ! जण्णं ते अण्णउत्थिया एवमाइक्खंति जाव जे ते एवमाहंसु मिच्छं ते एवमाहंसु। अहं पुण गोयमा ! एवमाइक्खामि जाव परूवेमि—एवं खलु पाणातिवाए जाव मिच्छादंसणसल्ले वट्टमाणस्स सच्चेव जीवे, सच्चेव जीवाया जाव अणागारोवओगे वट्टमाणस्स सच्चेव जीवे, सच्चेव जीवाया॥

रूवि-अरूवि-पदं

३२. देवे णं भंते ! महिड्ढिए जाव[9] महेसक्खे पुव्वामेव रूवी भवित्ता पभू अरूविं[10] विउव्वित्ता णं चिट्ठित्तए ?
नो इणट्ठे समट्ठे॥

---

१. भ० १।३८४।
२. भ० १।३८५।
३. सं० पा०—उप्पत्तियाए जाव पारिणामियाए।
४. सं० पा०—वट्टमाणस्स जाव जीवाया।
५. सं० पा०—उट्ठाणे जाव परक्कमे।
६, ७, ८. सं० पा०—वट्टमाणस्स जाव जीवाया।
९. भ० १।३३९।
१०. रूपातीतममूर्त्तमात्मानमिति गम्यते (वृ)।

३३. से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ—देवे णं[1] •महिड्ढिए जाव महेसक्खे पुव्वामेव रूवी भवित्ता° नो पभू अरूविं विउव्वित्ता णं चिट्ठित्तए ?
गोयमा ! अहमेयं जाणामि, अहमेयं पासामि, अहमेयं वुज्झामि, अहमेयं अभिसमण्णागच्छामि[2], 'मए एयं'[3] नायं, मए एयं दिट्ठं, मम एयं बुद्धं, मए एयं अभिसमण्णागयं—जण्णं तहागयस्स जीवस्स सरूविस्स, सकम्मस्स, सरागस्स, सवेदस्स[4], समोहस्स, सलेसस्स, ससरीरस्स, ताओ सरीराओ अविप्पमुक्कस्स एवं पण्णायति, तं जहा—कालत्ते वा जाव सुक्किलत्ते वा, सुब्भिगंधत्ते वा, दुब्भिगंधत्ते वा, तित्तत्ते वा जाव महुरत्ते वा, कक्खडत्ते वा जाव लुक्खत्ते वा। से तेणट्ठेणं गोयमा[5] ! •एवं वुच्चइ—देवे णं महिड्ढिए जाव महेसक्खे पुव्वामेव रूवी भवित्ता नो पभू अरूविं विउव्वित्ता णं° चिट्ठित्तए ॥

३४. सच्चेव णं भंते ! से जीवे पुव्वामेव अरूवी भवित्ता पभू रूविं विउव्वित्ता णं चिट्ठित्तए ?
नो इणट्ठे समट्ठे[6] ॥

३५. •से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ—सच्चेव णं से जीवे पुव्वामेव अरूवी भवित्ता नो पभू रूविं विउव्वित्ता णं° चिट्ठित्तए ?
गोयमा ! अहमेयं जाणामि[7], •अहमेयं पासामि, अहमेयं वुज्झामि, अहमेयं अभिसमण्णागच्छामि, मए एयं नायं, मए एयं दिट्ठं, मम एयं बुद्धं, मए एयं अभिसमण्णागयं°—जण्णं तहागयस्स जीवस्स अरूविस्स, अकम्मस्स, अरागस्स, अवेदस्स, अमोहस्स, अलेसस्स, असरीरस्स, ताओ सरीराओ विप्पमुक्कस्स नो एवं पण्णायति, तं जहा—कालत्ते वा[8] •जाव सुक्किलत्ते वा, सुब्भिगंधत्ते वा, दुब्भिगंधत्ते वा, तित्तत्ते वा जाव महुरत्ते वा, कक्खडत्ते वा जाव° लुक्खत्ते वा। से तेणट्ठेणं[9] •गोयमा ! एवं वुच्चइ—सच्चेव णं से जीवे पुव्वामेव अरूवी भवित्ता नो पभू रूविं विउव्वित्ता णं° चिट्ठित्तए ॥

३६. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति[10] ॥

---

१. सं० पा०—णं जाव नो।
२. अभिसमागच्छामि (अ, क, ख, ता, ब, म, वृ)।
३. मएतं (ता) सर्वत्र।
४. सवेदणस्स (ता, स)।
५. सं० पा०—गोयमा जाव चिट्ठित्तए।
६. सं० पा०—समट्ठे जाव चिट्ठित्तए।
७. सं० पा०—जाणामि जाव जण्णं।
८. सं० पा०—कालत्ते वा जाव लुक्खत्ते।
९. सं० पा०—तेणट्ठेणं जाव चिट्ठित्तए।
१०. भ० १।५१।

तइओ उद्देसो

एयणा-पदं

३७. सेलेसिं पडिवन्नए णं भंते ! अणगारे सया समियं एयति वेयति[1] •चलति फंदइ घट्टइ खुब्भइ उदीरइ° तं तं भावं परिणमति ?
नो इणट्ठे समट्ठे, णण्णत्थेगेणं परप्पयोगेणं ॥

३८ कतिविहा णं भंते ! एयणा[2] पण्णत्ता ?
गोयमा ! पंचविहा पण्णत्ता, तं जहा—दव्वेयणा, खेत्तेयणा, कालेयणा, 'भवेयणा, भावेयणा'[3] ॥

३९ दव्वेयणा णं भंते ! कतिविहा पण्णत्ता ?
गोयमा ! चउव्विहा पण्णत्ता, तं जहा—नेरइयदव्वेयणा, तिरिक्खजोणियदव्वेयणा, मणुस्सदव्वेयणा, देवदव्वेयणा ॥

४० से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ—नेरइयदव्वेयणा-नेरइयदव्वेयणा ?
गोयमा ! जण्णं नेरइया नेरइयदव्वे वट्टिंसु वा, वट्टंति वा, वट्टिस्संति वा ते णं तत्थ नेरइया नेरइयदव्वे वट्टमाणा नेरइयदव्वेयणं एइंसु[4] वा, एयंति वा, एइस्संति वा। से तेणट्ठेणं जाव नेरइयदव्वेयणा।
से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ—तिरिक्खजोणियदव्वेयणा-तिरिक्खजोणियदव्वेयणा ?
[5]•गोयमा ! जण्णं तिरिक्खजोणिया तिरिक्खजोणियदव्वे वट्टिंसु वा, वट्टंति वा, वट्टिस्संति वा ते णं तत्थ तिरिक्खजोणिया तिरिक्खजोणियदव्वे वट्टमाणा तिरिक्खजोणियदव्वेयणं एइंसु वा, एयंति वा, एइस्संति वा। से तेणट्ठेणं जाव तिरिक्खजोणियदव्वेयणा।
से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ—मणुस्सदव्वेयणा-मणुस्सदव्वेयणा ?
गोयमा ! जण्णं मणुस्सा मणुस्सदव्वे वट्टिंसु वा, वट्टंति वा, वट्टिस्संति वा ते णं तत्थ मणुस्सा मणुस्सदव्वे वट्टमाणा मणुस्सदव्वेयणं एइंसु वा, एयंति वा, एइस्संति वा। से तेणट्ठेणं जाव मणुस्सदव्वेयणा।
से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ—देवदव्वेयणा-देवदव्वेयणा ?
गोयमा ! जण्णं देवा देवदव्वे वट्टिंसु वा, वट्टंति वा, वट्टिस्संति वा ते णं तत्थ देवा देवदव्वे वट्टमाणा देवदव्वेयणं एइंसु वा, एयंति वा, एइस्संति वा। से तेणट्ठेणं जाव° देवदव्वेयणा ॥

---

१ स० पा०—वेयति जाव तं।
२ एतणा (ता, ब)।
३. भावेयणा, भवेयणा (म)।
४ एयसु (अ, ब, म)।
५ स० पा०—एवं चेव, नवरं—तिरिक्खजोणियदव्वे भाणियव्वं, सेसं तं चेव, एवं जाव देवदव्वेयणा।

संवेगादि-पदं

४८. अह भंते ! संवेगे, निव्वेए, गुरुसाहम्मियसुस्सूसणया, आलोयणया, निंदणया, गरहणया, खमावणया[1], 'विउसमणया[2], सुयसहायता'[3] भावे अप्पडिबद्धया, विणिवट्टणया, विवित्तसयणासणसेवणया, सोइंदियसंवरे जाव फासिंदियसंवरे, जोगपच्चक्खाणे, सरीरपच्चक्खाणे, कसायपच्चक्खाणे, संभोगपच्चक्खाणे, उवहिपच्चक्खाणे, भत्तपच्चक्खाणे, खमा, विरागया, भावसच्चे, जोगसच्चे, करणसच्चे, मणसमन्नाहरणया[4], वइसमन्नाहरणया, कायसमन्नाहरणया, कोहविवेगे जाव मिच्छादंसणसल्लविवेगे, नाणसंपन्नया, दंसणसंपन्नया, चरित्तसंपन्नया, वेदणअहियासणया, मारणंतियअहियासणया—एए णं[5] किंपज्जवसाणफला पण्णत्ता समणाउसो !

गोयमा ! संवेगे, निव्वेए जाव मारणंतियअहियासणया एए णं सिद्धिपज्जवसाणफला पण्णत्ता समणाउसो !

४९. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति जाव[6] विहरइ ॥

चउत्थो उद्देसो

किरिया-पदं

५०. तेणं कालेणं तेणं समएणं रायगिहे नगरे जाव[7] एवं वयासी—अत्थि णं भंते ! जीवाणं पाणाइवाएणं किरिया कज्जइ ?

हंता अत्थि ॥

५१. सा भंते ! किं पुट्ठा कज्जइ ? अपुट्ठा कज्जइ ?

गोयमा ! पुट्ठा कज्जइ, नो अपुट्ठा कज्जइ '●जाव[8] निव्वाघाएणं छद्दिसिं, वाघायं पडुच्च सिय तिदिसिं, सिय चउदिसिं, सिय पंचदिसिं ॥

५२. सा भंते ! किं कडा कज्जइ ? अकडा कज्जइ ?

गोयमा ! कडा कज्जइ, नो अकडा कज्जइ ॥

---

१. खमासणया (अ); खमायणया (क, ख, ता, ब, म, वृ)।
२. एतत् च क्वचिद् न दृश्यते (वृ)।
३. सुयसहायता विओसरणता (ता), सुहसाहयया विउसमणया (ब)।
४. मणसमाधा (हा) रणया (उत्त० २९।१)।
५. ण भंते पदं (अ, क)।
६. भ० १।५१।
७ भ० १।४-१०।
८. सं० पा०—एवं जहा पढमसए छट्ठुद्देसए जाव नो।
९ भ० १।२५९-२६६।

४१. खेत्तेयणा णं भते ! कतिविहा पण्णत्ता ?
गोयमा ! चउव्विहा पण्णत्ता, त जहा—नेरइयखेत्तेयणा जाव देवखेत्तेयणा ।।

४२. से केणट्ठेणं भते ! एव वुच्चइ—नेरइयखेत्तेयणा-नेरइयखेत्तेयणा ?
एव चेव, नवर—नेरइयखेत्तेयणा भाणियव्वा, एव जाव देवखेत्तेयणा । एव कालेयणा वि, एव भवेयणा वि, एव भावेयणा वि, एव जाव देवभावेयणा ।।

[च]लणा-पदं

४३ कतिविहा ण भते ! चलणा पण्णत्ता ?
गोयमा ! तिविहा चलणा पण्णत्ता, त जहा—सरीरचलणा, इदियचलणा, जोगचलणा ।।

४४. सरीरचलणा ण भते ! कतिविहा पण्णत्ता ?
गोयमा ! पचविहा पण्णत्ता, त जहा—ओरालियसरीरचलणा जाव कम्मग-सरीरचलणा ।।

४५. इदियचलणा णं भते ! कतिविहा पण्णत्ता ?
गोयमा ! पंचविहा पण्णत्ता, त जहा—सोइदियचलणा जाव फासिदियचलणा ।।

४६. जोगचलणा ण भते ! कतिविहा पण्णत्ता ?
गोयमा ! तिविहा पण्णत्ता, तं जहा—मणजोगचलणा, वइजोगचलणा, कायजोग-चलणा ।।

४७ से केणट्ठेण भते ! एव वुच्चइ—ओरालियसरीरचलणा-ओरालियसरीर-चलणा ?
गोयमा ! जण्ण जीवा ओरालियसरीरे वट्टमाणा ओरालियसरीरपायोग्गाइं दव्वाइ ओरालियसरीरत्ताए परिणामेमाणा ओरालियसरीरचलण चलिंसु वा, चलति वा, चलिस्सति वा । से तेणट्ठेण जाव ओरालियसरीरचलणा ।
से केणट्ठेण भते ! एव वुच्चइ—वेउव्वियसरीरचलणा-वेउव्वियसरीरचलणा ?
एव चेव, नवर वेउव्वियसरीरे वट्टमाणा । एव जाव कम्मगसरीरचलणा ।
से केणट्ठेण भते ! एव वुच्चइ—सोइदियचलणा—सोइदियचलणा ?
गोयमा ! जण्णं जीवा सोइदिये वट्टमाणा सोइदियपायोग्गाइं दव्वाइं सोइदियत्ताए परिणामेमाणा सोइदियचलण चलिंसु वा, चलति वा, चलिस्सति वा । से तेणट्ठेण जाव सोइदियचलणा । एवं जाव फासिदियचलणा ।
से केणट्ठेण भते ! एवं वुच्चइ—मणजोगचलणा-मणजोगचलणा ?
गोयमा! जण्णं जीवा मणाजोगे वट्टमाणा मणजोगपाओग्गाइ दव्वाइं मणजोगत्ताए परिणामेमाणा मणजोगचलण चलिंसु वा, चलंति वा, चलिस्सति वा । से तेणट्ठेण जाव मणजोगचलणा । एव वइजोगचलणा वि । एव कायजोगचलणा वि ।।

५३ सा भंते ! किं अत्तकडा कज्जइ ? परकडा कज्जइ ? तदुभयकडा कज्जइ ?
गोयमा ! अत्तकडा कज्जइ, नो परकडा कज्जइ, नो तदुभयकडा कज्जइ ॥

५४. सा भंते ! किं आणुपुव्वि कडा कज्जइ ? अणाणुपुव्वि कडा कज्जइ ?
गोयमा आणुपुव्वि कडा कज्जइ, नो अणाणुपुव्वि कडा कज्जइ। जा य कडा कज्जइ, जा य कज्जिस्सइ, सव्वा सा आणुपुव्वि कडा॰, नो अणाणुपुव्वि कडा ति वत्तव्व सिया। एव जाव वेमाणियाण, नवर—जीवाण एगिंदियाण य निव्वाघाएण छद्दिसिं, वाघाय पडुच्च सिय तिदिसि, सिय चउदिसिं, सिय पच-दिसिं। सेसाण नियम छद्दिसि ॥

५५ अत्थि ण भंते ! जीवाण मुसावाएण किरिया कज्जइ ?
हता अत्थि ॥

५६ सा भंते ! किं पुट्ठा कज्जइ ? अपुट्ठा कज्जइ ?
जहा पाणाइवाएण दंडओ एवं मुसावाएण वि। एव अदिन्नादाणेण वि, मेहुणेण[1] वि, परिग्गहेण वि। एव एते पच दडगा ॥

५७ ज समय ण भंते ! जीवाण पाणाइवाएणं किरिया कज्जइ सा भंते ! किं पुट्ठा कज्जइ ? अपुट्ठा कज्जइ ? एव तहेव जाव[2] वत्तव्व सिया जाव वेमाणियाणं। एवं जाव परिग्गहेण। एव एते वि पंच दडगा ॥

५८. ज देसं ण भंते ! जीवाणं पाणाइवाएण किरिया कज्जइ ? एव चेव जाव परिग्गहेण। एते वि पच दडगा ॥

५९ ज पएस ण भंते ! जीवाण पाणातिवाएण किरिया कज्जइ सा भंते ! किं पुट्ठा कज्जइ ? एव तहेव दडओ। एव जाव परिग्गहेणं। एव एते वीस दडगा ॥

दुक्ख-वेदणा-पद

६० जीवाण भंते ! किं अत्तकडे दुक्खे ? परकडे दुक्खे ? तदुभयकडे दुक्खे ?
गोयमा ! अत्तकडे दुक्खे, नो परकडे दुक्खे, नो तदुभयकडे दुक्खे। एव जाव वेमाणियाण ॥

६१ जीवा ण भंते ! किं अत्तकडं दुक्खं वेदेति ? परकड दुक्ख वेदेति ? तदुभयकड दुक्खं वेदेति ?
गोयमा ! अत्तकडं दुक्ख वेदेति, नो परकडं दुक्ख वेदेति, नो तदुभयकडं दुक्खं वेदेति। एव जाव वेमाणियाणं ॥

६२ जीवाण भंते ! किं अत्तकडा वेयणा ? परकडा वेयणा ? [3]॰तदुभयकडा वेयणा॰ ?

---

१. मेघुणेण (व)।
२. १७।५१-५४।
३. स॰ पा॰—पुच्छा।

गोयमा ! अत्तकडा वेयणा, नो परकडा वेयणा, नो तदुभयकडा वेयणा। एव जाव वेमाणियाण ॥

६३. जीवा ण भते ! किं अत्तकड वेयण वेदेति ? परकड वेयण वेदेति ? तदुभयकड वेयण वेदेति ?
गोयमा ! जीवा अत्तकड वेयण वेदेति, नो परकड वेयण वेदेति, नो तदुभयकडं वेयण वेदेति। एव जाव वेमाणियाण ॥

६४. सेव भते ! सेव भते ! त्ति[1] ॥

पंचमो उद्देसो

ईसाण-पदं

६५. कहि ण भते ! ईसाणस्स देविंदस्स देवरण्णो सभा सुहम्मा पण्णत्ता ?
गोयमा ! जबुद्दीवे दीवे मदरस्स पव्वयस्स उत्तरे ण इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए वहुसमरमणिज्जाओ भूमिभागाओ उड्ढ चदिम-सूरिय-गहगण-नक्खत्त-तारारूवाण जहा ठाणपदे जाव[2] मज्झे ईसाणवडेसए। से ण ईसाणवडेंसए महाविमाणे अद्धतेरसजोयणसयसहस्साइ—एव जहा दसमसए सक्कविमाणवत्तव्वया सा इह वि ईसाणस्स निरवसेसा भाणियव्वा जाव[3] आयरक्ख त्ति। ठिती सातिरेगाइ दो सागरोवमाइ, सेस त चेव जाव[4] ईसाणे देविदे देवराया, ईसाणे देविदे देवराया ॥

६६ सेव भते ! सेव भते ! त्ति[5] ॥

छट्ठो उद्देसो

पुढविक्काइयादीणं देस-सव्व-मारणंतियसमुग्घाय-पदं

६७ पुढविक्काइए ण भते ! इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए समोहए, समोहणित्ता जे भविए सोहम्मे कप्पे पुढविक्काइयत्ताए उववज्जित्तए, से णं भंते ! किं पुव्वि

---

१. भ० १।५१।
२. प० २।
३. भ० १०।९९।
४. भ० १०।१००।
५. भ० १।५१।

उववज्जित्ता पच्छा सपाउणेज्जा ? पुव्वि संपाउणित्ता पच्छा उववज्जेज्जा ? गोयमा ! पुव्वि वा उववज्जित्ता पच्छा संपाउणेज्जा, पुव्वि वा संपाउणित्ता पच्छा उववज्जेज्जा ॥

६८ से केणट्ठेण जाव पच्छा उववज्जेज्जा ?
गोयमा ! पुढविक्काइयाण तओ समुग्घाया पण्णत्ता, त जहा—वेदणासमुग्घाए, कसायसमुग्घाए, मारणतियसमुग्घाए । मारणतियसमुग्घाएण समोहण्णमाणे देसेण वा समोहण्णति, सव्वेण वा समोहण्णति, देसेण वा समोहण्णमाणे पुव्वि सपाउणित्ता पच्छा उववज्जेज्जा, सव्वेण समोहण्णमाणे पुव्वि उववज्जेत्ता पच्छा सपाउणेज्जा । से तेणट्ठेण जाव पच्छा उववज्जेज्जा ॥

६९. पुढविक्काइए ण भते ! इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए[1] समोहए, समोहणित्ता जे भविए ईसाणे कप्पे पुढविक्काइयत्ताए° ? एव चेव ईसाणे वि । एव जाव अच्चुय-गेवेज्जविमाणे, अणुत्तरविमाणे, ईसिपब्भाराए य एव चेव ॥

७० पुढविक्काइए ण भते ! सक्करप्पभाए पुढवीए समोहए, समोहणित्ता जे भविए सोहम्मे कप्पे पुढविक्काइयत्ताए° ? एव जहा रयणप्पभाए पुढविक्काइओ उववाइओ एव सक्करप्पभाए वि पुढविक्काइओ उववाएयव्वो जाव ईसिपब्भाराए । एव जहा रयणप्पभाए वत्तव्वया भणिया, एव जाव अहेसत्तमाए समोहए ईसिपब्भाराए उववाएयव्वो, सेस तं चेव ॥

७१. सेव भते ! सेव भते ! त्ति[2] ॥

सत्तमो उद्देसो

७२ पुढविक्काइए ण भते ! सोहम्मे कप्पे समोहए, समोहणित्ता जे भविए इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए पुढविक्काइयत्ताए उववज्जित्तए, से ण भते ! किं पुव्वि उववज्जित्ता पच्छा सपाउणेज्जा ? सेस त चेव ? जहा रयणप्पभाए पुढविक्काइए सव्वकप्पेसु जाव ईसिपब्भाराए ताव उववाइओ, एव सोहम्मपुढविक्काइओ वि सत्तसु वि पुढवीसु उववाएयव्वो जाव अहेसत्तमाए । एव जहा सोहम्मपुढविक्काइओ सव्वपुढवीसु उववाइओ, एव जाव ईसिपब्भारापुढविक्काइओ सव्वपुढवीसु उववाएयव्वो जाव अहेसत्तमाए ॥

७३. सेवं भते ! सेवं भते ! त्ति[3] ॥

---

१. पुढवीए जाव (अ, क, ख, ता, ब, म, स) । ३. भ० १।५१ ।
२. भ० १।५१ ।

अट्ठमो उद्देसो

७४ आउक्काइए णं भते ! इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए समोहए, समोहणित्ता जे भविए सोहम्मे कप्पे आउक्काइयत्ताए उववज्जित्तए० ? एव जहा पुढविक्काइओ तहा आउक्काइओ वि सव्वकप्पेसु जाव ईसिपब्भाराए तहेव उववाएयव्वो। एव जहा रयणप्पभआउक्काइओ उववाइओ तहा जाव अहेसत्तमआउक्काइओ उववाएयव्वो जाव ईसिपब्भाराए ॥

७५. सेवं भते ! सेव भते ! त्ति[1] ॥

नवमो उद्देसो

७६ आउक्काइए ण भते ! सोहम्मे कप्पे समोहए, समोहणित्ता जे भविए इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए घणोदहिवलएसु आउक्काइयत्ताए उववज्जित्तए, से ण भते० ? सेस त चेव, एव जाव अहेसत्तमाए। जहा सोहम्मआउक्काइओ एव जाव ईसिपब्भाराआउक्काइओ जाव अहेसत्तमाए उववाएयव्वो ॥

७७ सेव भते ! सेवं भते ! त्ति[2] ॥

दसमो उद्देसो

७८ वाउक्काइए ण भते ! इमीसे रयणप्पभाए जाव जे भविए सोहम्मे कप्पे वाउक्काइयत्ताए उववज्जित्तए, से ण भते० ? जहा पुढविक्काइओ तहा वाउक्काइओ वि, नवर—वाउक्काइयाण चत्तारि समुग्घाया पण्णत्ता, त जहा—वेदणासमुग्घाए जाव[3] वेउव्वियसमुग्घाए। मारणतियसमुग्घाए ण समोहण्णमाणे देसेण वा समोहण्णइ, सेस त चेव जाव अहेसत्तमाए समोहओ ईसिपब्भाराए उववाएयव्वो ॥

७९. सेव भते ! सेव भते ! त्ति[4] ॥

---

१. भ० १।५१।
२. भ० १।५१।
३ भ० २।७४।
४. भ० १।५१।

इक्कारसमो उद्देसो

८० वाउक्काइए ण भते ! सोहम्मे कप्पे समोहए, समोहणित्ता जे भविए इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए घणवाए, तणुवाए, घणवायवलएसु, तणुवायवलएसु वाउ-क्काइयत्ताए उववज्जित्तए, से ण भते० ? सेस त चेव। एव जहा सोहम्मे वाउक्काइओ सत्तसु वि पुढवीसु उववाइओ एव जाव ईसिपब्भारावाउक्काइओ अहेसत्तमाए जाव उववाएयव्वो ।।

८१. सेव भते ! सेव भते ! त्ति[1] ।।

बारसमो उद्देसो

एगिंदिय-पदं

८२ एगिंदिया ण भते ! सव्वे समाहारा० ? एव जहा पढमसए बितियउद्देसए पुढविक्काइयाण वत्तव्वया भणिया सा चेव एगिंदियाण इह भाणियव्वा जाव[2] समाउया, समोववन्नगा ।।

८३ एगिंदियाण भते ! कति लेस्साओ पण्णत्ताओ ?
गोयमा ! चत्तारि लेस्साओ पण्णत्ताओ, त जहा—कण्हलेस्सा[3] •नीललेस्सा काउलेस्सा° तेउलेस्सा ।।

८४ एएसि ण भते ! एगिंदियाण कण्हलेस्साण[4] •नीललेस्साण काउलेस्साण तेउले-स्साण य कयरे कयरेहिंतो अप्पा वा ? बहुया वा ? तुल्ला वा ?° विसेसाहिया वा ?
गोयमा ! सव्वत्थोवा एगिंदिया तेउलेस्सा, काउलेस्सा अणतगुणा, नीललेस्सा विसेसाहिया, कण्हलेस्सा विसेसाहिया ।।

८५. एएसि ण भते ! एगिंदियाण कण्हलेसाण इड्ढी० ? जहेव[5] दीवकुमाराणं ।।

८६ सेव भते ! सेव भते ! त्ति[6] ।।

---

१. भ० १।५१ ।
२. भ० १।७६-८१ ।
३. स० पा०—कण्हलेस्सा जाव तेउलेस्सा ।
४. स० पा०—कण्हलेस्साणं जाव विसेसाहिया ।
५ भ० १६।१२८ ।
६. भ० १।५१ ।

१३-१७ उद्देसा

नागकुमारादि-पदं

८७ नागकुमारा ण भते ! सव्वे समाहारा० ? जहा सोलसमसए दीवकुमारुद्देसे तहेव निरवसेस भाणियव्व जाव[1] इड्ढी ।।

८८ सेव भते ! सेव भते ! जाव[2] विहरइ ।।

८९ सुवण्णकुमारा ण भते ! सव्वे समाहारा० ? एव चेव ।।

९० सेव भते ! सेव भते ! त्ति[3] ।।

९१ विज्जुकुमारा ण भते ! सव्वे समाहारा० ? एव चेव ।।

९२ सेव भते ! सेव भते ! त्ति[4] ।।

९३ वायुकुमारा ण भते ! सव्वे समाहारा० ? एव चेव ।।

९४ सेव भते ! सेव भते ! त्ति[5] ।।

९५ अग्गिकुमारा ण भते ! सव्वे समाहारा० ? एव चेव ।।

९६ सेव भते ! सेव भते ! त्ति[6] ।।

---

१ भ० १६।१२५-१२८ ।

२ भ० १।५१ ।

३. भ० १।५१ ।

४. भ० १।५१ ।

५. भ० १।५१ ।

६. भ० १।५१ ।

अट्ठारसमं सतं

पढमो उद्देसो

१. पढमे[1] २ विसाह ३ मायदिए य ४ पाणाइवाय ५ असुरे य ।
६. गुल ७ केवलि ८. अणगारे, ९ भविए तह १०. सोमिलट्ठारसे[2] ।।१।।

पढम-अपढम-पद

१. तेण कालेण तेणं समएण रायगिहे जाव[3] एव वयासी—जीवे ण भते ! जीव-भावेण कि पढमे ? अपढमे ?
गोयमा ! नो पढमे, अपढमे । एवं नेरइए जाव वेमाणिए ।।

२ सिद्धे ण भते ! सिद्धभावेण किं पढमे ? अपढमे ?
गोयमा ! पढमे, नो अपढमे ।।

३. जीवा ण भते ! जीवभावेण किं पढमा ? अपढमा ?
गोयमा ! नो पढमा, अपढमा । एवं जाव वेमाणिया ।।

४. सिद्धा ण—पुच्छा ।
गोयमा ! पढमा, नो अपढमा ।।

५. आहारए ण भते ! जीवे आहारभावेण किं पढमे ? अपढमे ?
गोयमा ! नो पढमे, अपढमे । एव जाव वेमाणिए । पोहत्तिए एव चेव ।।

६. अणाहारए ण भंते ! जीवे अणाहारभावेण—पुच्छा ।
गोयमा ! सिय पढमे, सिय अपढमे ।।

७ नेरइए णं भते ! जीवे अणाहारभावेणं—पुच्छा । एव नेरइए जाव वेमाणिए नो पढमे, अपढमे । सिद्धे पढमे, नो अपढमे ।।

---

१ पढमा (अ, क, ख, ता, व, म) । 'अ' प्रतावपि एषा गाथा लभ्यते ।

२. उद्देशकद्वारसग्रहणी चेय गाथा क्वचिद्दृश्यते—
जीवाहारग भवसन्निलेसादिट्ठी य सजयकसाए ।
णाणे जोगुवओगे, तेए य सरीरपज्जत्ती ।। (वृ),

३. भ० १।४-१० ।

८ अणाहारगा णं भंते ! जीवा अणाहारभावेण—पुच्छा ।
गोयमा ! पढमा वि, अपढमा वि । नेरइया जाव वेमाणिया नो पढमा, अपढमा । सिद्धा पढमा, नो अपढमा—एक्केक्के पुच्छा भाणियव्वा ॥

९ भवसिद्धीए एगत्त-पुहत्तेण जहा आहारए, एवं अभवसिद्धीए वि । नोभवसिद्धीय-नोअभवसिद्धीए णं भंते ! जीवे नोभवसिद्धीय-नोअभवसिद्धीयभावेण—पुच्छा ।
गोयमा ! पढमे, नो अपढमे । नोभवसिद्धीय-नोअभवसिद्धीए णं भंते ! सिद्धे नोभवसिद्धीय-नोअभवसिद्धीयभावेण—पुच्छा । एवं पुहत्तेण वि दोण्ह वि ॥

१० सण्णी णं भंते ! जीवे सण्णीभावेण किं पढमे—पुच्छा ।
गोयमा ! नो पढमे, अपढमे । एवं विगलिदियवज्जं जाव वेमाणिए । एवं पुहत्तेण वि । असण्णी एवं चेव एगत्त-पुहत्तेण, नवरं जाव वाणमंतरा । नोसण्णी-नोअसण्णी जीवे मणुस्से सिद्धे पढमे, नो अपढमे । एवं पुहत्तेण वि ।

११ सलेसे णं भंते !— पुच्छा ।
गोयमा ! जहा आहारए, एवं पुहत्तेण वि । कण्हलेस्सा जाव सुक्कलेस्सा एवं चेव, नवरं—जस्स जा लेसा अत्थि । अलेसे णं जीव-मणुस्स-सिद्धे जहा नोसण्णी-नो असण्णी ॥

१२ सम्मदिट्ठीए णं भंते ! जीवे सम्मदिट्ठिभावेण किं पढमे—पुच्छा ।
गोयमा ! सिय पढमे, सिय अपढमे । एवं एगिंदियवज्जं जाव वेमाणिए । सिद्धे पढमे, नो अपढमे । पुहत्तिया जीवा पढमा वि, अपढमा वि । एवं जाव वेमाणिया । सिद्धा पढमा, नो अपढमा । मिच्छादिट्ठीए एगत्त-पुहत्तेण जहा आहारगा । सम्मामिच्छदिट्ठी एगत्त-पुहत्तेण जहा सम्मदिट्ठी, नवरं—जस्स अत्थि सम्मामिच्छत्तं ॥

१३ संजए जीवे मणुस्से य एगत्त-पुहत्तेण जहा सम्मदिट्ठी । असंजए जहा आहारए । संजयासंजए जीवे पंचिंदियतिरिक्खजोणिय-मणुस्सा एगत्त-पुहत्तेण जहा सम्मदिट्ठी । नोसंजए नो अस्संजए नोसंजयासंजए जीवे सिद्धे य एगत्त-पुहत्तेण पढमे, नो अपढमे ॥

१४ सकसायी, कोहकसायी जाव लोभकसायी—एए एगत्त-पुहत्तेण जहा आहारए । अकसायी जीवे सिय पढमे, सिय अपढमे । एवं मणुस्से वि । सिद्धे पढमे, नो अपढमे । पुहत्तेण जीवा मणुस्सा वि पढमा वि अपढमा वि । सिद्धा पढमा, नो अपढमा ॥

१५ नाणी एगत्त-पुहत्तेण जहा सम्मदिट्ठी । आभिणिबोहियनाणी जाव मणपज्जव-नाणी एगत्त-पुहत्तेण एवं चेव, नवरं—जस्स जं अत्थि । केवलनाणी जीवे मणुस्से सिद्धे य एगत्त-पुहत्तेण पढमा, नो अपढमा । अण्णाणी, मइअण्णाणी, सुयअण्णाणी, विभंगनाणी य एगत्त-पुहत्तेण जहा आहारए ॥

१६. सजोगी, मणजोगी, वइजोगी, कायजोगी एगत्त-पुहत्तेण जहा आहारए, नवरं— जस्स जो जोगो अत्थि। अजोगी जीव मणुस्स-सिद्धा एगत्त-पुहत्तेण पढमा, नो अपढमा ॥

१७. सागारोवउत्ता अणागारोवउत्ता एगत्त-पुहत्तेण जहा अणाहारए ॥

१८ सवेदगो जाव नपुंसगवेदगो एगत्त-पुहत्तेण जहा आहारए, नवरं— जस्स जो वेदो अत्थि। अवेदओ एगत्त-पुहत्तेण तिसु वि पदेसु जहा अकसायी ॥

१९ ससरीरी जहा आहारए, एवं जाव कम्मगसरीरी, जस्स जं अत्थि सरीरं, नवरं— आहारगसरीरी[1] एगत्त-पुहत्तेण जहा सम्मदिट्ठी। असरीरी जीवो सिद्धो य एगत्त-पुहत्तेण 'पढमो, नो अपढमो'[2] ॥

२०. पंचहि पज्जत्तीहिं पंचहिं अपज्जत्तीहिं एगत्त-पुहत्तेणं जहा आहारए, नवरं— जस्स जा अत्थि जाव वेमाणिया नो पढमा, अपढमा। इमा लक्खणगाहा—

जो जेण पत्तपुव्वो, भावो सो तेण अपढमओ होइ।
सेसेसु होइ पढमो, अपत्तपुव्वेसु भावेसु ॥१॥

चरिम-अचरिम-पदं

२१. जीवे णं भंते! जीवभावेणं किं चरिमे? अचरिमे?
गोयमा! नो चरिमे, अचरिमे ॥

२२ नेरइए णं भंते! नेरइयभावेणं—पुच्छा।
गोयमा! सिय चरिमे, सिय अचरिमे। एवं जाव वेमाणिए। सिद्धे जहा जीवे ॥

२३ जीवा णं—पुच्छा।
गोयमा! नो चरिमा, अचरिमा। नेरइया चरिमा वि, अचरिमा वि। एवं जाव वेमाणिया। सिद्धा जहा जीवा ॥

२४ आहारए सव्वत्थ एगत्तेण सिय चरिमे, सिय अचरिमे, पुहत्तेणं चरिमा वि अचरिमा वि। अणाहारओ जीवो सिद्धो य एगत्तेण वि पुहत्तेण वि 'नो चरिमो अचरिमो'[3]। सेसट्ठाणेसु एगत्त-पुहत्तेण जहा आहारओ ॥

२५. भवसिद्धीओ जीवपदे एगत्त-पुहत्तेण चरिमे, नो अचरिमे। सेसट्ठाणेसु जहा आहारओ। अभवसिद्धीओ सव्वत्थ एगत्त-पुहत्तेण नो चरिमे, अचरिमे। नोभवसिद्धीय-नोअभवसिद्धीयजीवा सिद्धा य एगत्त-पुहत्तेण जहा अभवसिद्धीओ ॥

---

१. आहारासरीरी (क, ख, ता)।
२. पढमा नो अपढमा (अ, क, ख, ता, व, म)।
३ नो चरिमा अचरिमा (क, ख, ता, व, म)

२६ सण्णी जहा आहारओ, एवं असण्णी वि। नोसण्णी-नोअसण्णी जीवपदे सिद्धपदे य अचरिमे, मणुस्सपदे चरिमे एगत्त-पुहत्तेण ।।

२७ सलेस्सो जाव सुक्कलेस्सो जहा आहारओ, नवर—जस्स जा अत्थि। अलेस्सो जहा नोसण्णी-नोअसण्णी ।।

२८. सम्मदिट्ठी जहा अणाहारओ। मिच्छादिट्ठी जहा आहारओ। सम्मामिच्छदिट्ठी एगिदिय-विगलिदियवज्ज सिय चरिमे, सिय अचरिमे। पुहत्तेण चरिमा वि, अचरिमा वि ।।

२९ सजओ जीवो मणुस्सो य जहा आहारओ। अस्सजओ वि तहेव। सजयासजए वि तहेव, नवर—जस्स ज अत्थि। नोसजय-नोअसजय-नोसंजयासजओ जहा नोभवसिद्धीय-नोअभवसिद्धीओ ।।

३० सकसायी जाव लोभकसायी सव्वट्ठाणेसु जहा आहारओ। अकसायी जीवपदे सिद्धे य नो चरिमे, अचरिमे। मणुस्सपदे सिय चरिमे, सिय अचरिमे ।।

३१ नाणी जहा सम्मद्दिट्ठी सव्वत्थ। आभिणिवोहियनाणी जाव मणपज्जवनाणी जहा आहारओ, नवर—जस्स ज अत्थि। केवलनाणी जहा नोसण्णी-नोअसण्णी। अण्णाणी जाव विभगनाणी जहा आहारओ ।।

३२. सजोगी जाव कायजोगी जहा आहारओ, जस्स जो जोगो अत्थि। अजोगी जहा नोसण्णी-नोअसण्णी ।।

३३ सागारोवउत्तो अणागारोवउत्तो य जहा अणाहारओ ।।

३४. सवेदओ जाव नपुसगवेदओ जहा आहारओ। अवेदओ जहा अकसायी ।।

३५. ससरीरी जाव कम्मगसरीरी जहा आहारओ, नवर—जस्स ज अत्थि। असरीरी जहा नोभवसिद्धीय-नोअभवसिद्धीओ ।।

३६. पचहि पज्जत्तीहि पचहि अपज्जत्तीहि जहा आहारओ, सव्वत्थ एगत्त-पुहत्तेण दडगा भाणियव्वा। इमा लक्खणगाहा—

> जो ज पाविहिति पुणो, भाव सो तेण अचरिमो होइ।
> अच्चतविओगो जस्स, जेण भावेण सो चरिमो ।।१।।

३७. सेव भंते! सेव भते! त्ति जाव[1] विहरइ ।।

---

१. भ० १।५१।

बीओ उद्देसो

सक्कस्स कत्तिय-सेट्ठिनाम-पुव्वभव-पद

३८ तेण कालेण तेण समएण विसाहा नाम नगरी होत्था—वण्णओ[1]। वहुपुत्तिए चेइए—वण्णओ[2]। सामी समोसढे जाव[3] पज्जुवासइ। तेण कालेण तेण समएण सक्के देविंदे देवराया वज्जपाणी पुरंदरे—एव जहा सोलसमसए वितियउद्देसए तहेव दिव्वेण जाणविमाणेण आगओ, नवर—एत्थ आभियोगा वि अत्थि जाव[4] बत्तीसतिविह नट्टविहि उवदसेत्ता जाव पडिगए॥

३९ भतेति! भगव गोयमे समण भगव महावीर[5] •वदइ नमसइ, वदित्ता नमसित्ता° एव वयासी—जहा तइयसए ईसाणस्स तहेव कूडागारदिट्ठतो, तहेव पुव्वभवपुच्छा जाव[6] अभिसमन्नागए?

४० गोयमादि! समणे भगव महावीरे भगव गोयम एव वयासी—एव खलु गोयमा! तेण कालेण तेण समएण इहेव जंबुद्दीवे दीवे भारहे वासे हत्थिणापुरे नाम नगरे होत्था—वण्णओ[7]। सहसंबवणे[8] उज्जाणे—वण्णओ[9]। तत्थ णं हत्थिणापुरे नगरे कत्तिए नाम सेट्ठी परिवसति अड्ढे जाव[10] वहुजणस्स अपरिभूए, नेगमपढमासणिए, नेगमट्ठसहस्सस्स वहूसु कज्जेसु य कारणेसु य कोडुबेसु य [11]•मतेसु य रहस्सेसु य गुज्झेसु य निच्छएसु य ववहारेसु य आपुच्छणिज्जे पडिपुच्छणिज्जे मेढी पमाण आहारे आलवण चक्खू, मेढिभूए पमाणभूए आहारभूए आलवणभूए° चक्खुभूए, नेगमट्ठसहस्सस्स सयस्स य कुडुबस्स आहेवच्च[12] •पोरेवच्च सामित्त भट्टित्त आणा-ईसर-सेणावच्च° कारेमाणे पालेमाणे, समणोवासए, अहिगयजीवाजीवे जाव[13] अहापरिग्गहिएहिं तवोकम्मेहिं अप्पाण भावेमाणे विहरइ॥

४१ तेण कालेण तेण समएण मुणिसुव्वए अरहा आदिगरे जहा सोलसमसए तहेव जाव समोसढे जाव[14] परिसा पज्जुवासइ॥

४२. तए णं से कत्तिए सेट्ठी इमीसे कहाए लद्धट्ठे समाणे हट्ठतुट्ठे एव जहा एक्कारसमसए सुदसणे तहेव निग्गओ जाव[15] पज्जुवासति॥

---

१. ओ० सू० १।
२. ओ० सू० २-१३।
३. ओ० सू० २२-५२।
४. भ० १६।३३; ३।२७।
५. स० पा०—महावीर जाव एव।
६. भ० ३।२८-३०।
७ ओ० सू० १।
८. सहस्सववणे (स)।
९ भ० ११।५७।
१० भ० २।९४।
११ स० पा०—एव जहा रायपसेणइज्जे चित्ते जाव चक्खुभूए।
१२. स० पा०—आहेवच्च जाव कारेमाणे।
१३. भ० २।९४।
१४ भ० १६।६७,६८।
१५. भ० ११।११६।

४३ तए ण मुणिसुव्वए अरहा कत्तियस्स सेट्ठिस्स [1]•तीसे य महतिमहालियाए परिसाए धम्म परिकहेइ° जाव[2] परिसा पडिगया ॥

४४ तए ण से कत्तिए सेट्ठी मुणिसुव्वयस्स[3] •अरहओ अतिय धम्म सोच्चा ° निसम्म हट्ठतुट्ठे उट्ठाए उट्ठेति, उट्ठेत्ता मुणिसुव्वय[4] •अरह वदइ नमसइ, वदित्ता नमसित्ता ° एव वयासी—एवमेय भते ! जाव[5]—से जहेय तुब्भे वदह ज, नवर—देवाणुप्पिया ! नेगमट्ठसहस्स आपुच्छामि, जेट्ठपुत्त च कुडुबे ठावेमि, तए ण अह देवाणुप्पियाण अतिय पव्वयामि ।

अहासुहं देवाणुप्पिया[6] ! मा पडिबध ॥

४५ तए ण से कत्तिए सेट्ठी जाव[7] पडिनिक्खमइ, पडिनिक्खमित्ता जेणेव हत्थिणापुरे नगरे जेणेव सए गेहे, तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता नेगमट्ठसहस्स सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एव वयासी—एव खलु देवाणुप्पिया ! मए मुणिसुव्वयस्स अरहओ अतिय धम्मे निसते, से वि य मे धम्मे इच्छिए, पडिच्छिए, अभिरुइए । तए ण अह देवाणुप्पिया ! ससारभयुव्विग्गे जाव[8] पव्वयामि, त तुब्भे ण देवाणुप्पिया ! किं करेह, कि ववसह, किं[9] भे हियइच्छिए, कि[10] भे सामत्थे ?

४६ तए ण त नेगमट्ठसहस्स पि[11] कत्तिय सेट्ठि एव वयासी—जइ ण तुब्भे देवाणुप्पिया ! ससारभयुव्विग्गा जाव पव्वयह[12], अम्ह देवाणुप्पिया ! के अण्णे आलबे वा, आहारे वा, पडिबधे वा ? अम्हे वि ण देवाणुप्पिया ! ससारभयुव्विग्गा भीया जम्मणमरणाण देवाणुप्पिएहि सद्धि मुणिसुव्वयस्स अरहओ अतिय मुडा भवित्ता अगाराओ अणगारिय[13] पव्वयामो[14] ॥

४७ तए ण से कत्तिए सेट्ठी त नेगमट्ठसहस्स एव वयासी—जदि ण देवाणुप्पिया ! ससारभयुव्विग्गा भीया जम्मणमरणाण मए सद्धि मुणिसुव्वयस्स[15] •अरहओ अतिय मुडा भवित्ता अगाराओ अणगारिय° पव्वयह, त गच्छह ण तुब्भे देवाणुप्पिया ! सएसु गिहेसु, विपुल असण[16] •पाण खाइम साइम ° उवक्खडावेह,

---

१ स० पा०—धम्मकहा ।
२ ओ० सू० ७१-७९ ।
३. स० पा०—मुणिसुव्वयस्स जाव निसम्म ।
४. स० पा०—मुणिसुव्वय जाव एव ।
५. भ० २।५२ ।
६. जाव (अ, क, ख, ता, ब, म, स) ।
७ भ० १६।७१ ।
८. भ० १८।४६ ।
९. के (क, ख, ता, ब, म) ।
१०. के (अ, क, ख, ता, ब, म, स) ।
११ त (ख) ।
१२. पव्वाति (अ), पव्वादि (क, ख, ता, ब), पव्वादि (म); पव्वाहिति (स) । नायाधम्मकहाओ (५।९०) सूत्रानुसारेण एतत् क्रियापद स्वीकृतम् ।
१३. जाव (अ, क, ख, ता, ब, म, स) ।
१४. पव्वामो (अ, ख, ता, ब, म) ।
१५ स० पा०—मुणिसुव्वयस्स जाव पव्वयह ।
१६. स० पा०—असण जाव उवक्खडावेह ।

मित्त-नाइ[1]-•नियग-सयण-सबधि-परियणं आमतेह, तं मित्त-नाइ-नियग-सयण-सबधि-परियण विउलेण असण-पाण-खाइम-साइमेण वत्थ-गध-मल्लाल-कारेण य सक्कारेह सम्माणेह, तस्सेव मित्त-नाइ-नियग-सयण-सबधि-परिजणस्स पुरओ° जेट्ठपुत्ते कुडुवे ठावेह, ठावेत्ता त मित्त-नाइ[2]-•नियग-सयण-सबधि-परियणं° जेट्ठपुत्ते आपुच्छह, आपुच्छित्ता पुरिससहस्सवाहिणीओ सीयाओ दुरुहह, दुरुहित्ता मित्त-नाइ[3]-•नियग-सयण-सबधि°-परिजणेण जेट्ठपुत्तेहि य समणुगम्ममणमग्गा सव्विड्ढीए जाव[4] दुदुहि-निग्घोसनादियरवेण अकालपरिहीण चेव मम अतिय पाउब्भवह ॥

४८. तए ण त नेगमट्ठसहस्स पि कत्तियस्स सेट्ठिस्स एयमट्ठ विणएण पडिसुणेति, पडिसुणेत्ता जेणेव साइ-साइ गिहाइ तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता विपुल असण[5] •पाण खाइम साइम° उवक्खडावेति, उवक्खडावेत्ता मित्त-नाइ[6]-•नियग-सयण-सबधि-परियण विउलेण असण-पाण-खाइम-साइमेण वत्थ-गध-मल्लालकारेण य सक्कारेइ सम्माणेइ°, तस्सेव मित्त-नाइ[7]-•नियग-सयण-संबधि-परियणस्स° पुरओ जेट्ठपुत्ते कुडुबे ठावेति, ठावेत्ता त मित्त-नाइ[8]-•नियग-सयण-सबधि-परियण° जेट्ठपुत्ते य आपुच्छइ, आपुच्छित्ता पुरिससहस्सवाहिणीओ सीयाओ दुरुहति, दुरुहित्ता मित्त-नाइ[9]-•नियग-सयण-सबधि° परिजणेण जेट्ठपुत्तेहि य समणुगम्ममाणमग्गा सव्विड्ढीए जाव[10] दुदुहि-निग्घोसनादियरवेणं अकालपरिहीण चेव कत्तियस्स सेट्ठिस्स अतिय पाउब्भवति ॥

४९. तए ण से कत्तिए सेट्ठी विपुल असण पाण खाइम साइम उवक्खडावेति जहा गगदत्तो जाव[11] सीय दुरुहति, दुरुहित्ता मित्त-नाइ[12]-•नियग-सयण-सबधि°-परिजणेण जेट्ठपुत्तेण नेगमट्ठसहस्सेण य समणुगम्ममाणमग्गे सव्विड्ढीए जाव[13] दुदुहि-निग्घोसनादियरवेण हत्थिणापुर नगर मज्भमज्भेण निग्गच्छइ, जहा गगदत्तो जाव[14] आलित्ते ण भंते ! लोए, पलित्ते ण भते ! लोए, आलित्त-पलित्ते णं भते ! लोए जाव[15] आणुगामियत्ताए भविस्सति, त इच्छामि ण भते ! नेगमट्ठसहस्सेण सद्धि सयमेव पव्वाविय जाव[16] धम्ममाइक्खिय ॥

---

१. सं० पा०—नाइ जाव जेट्ठपुत्ते ।
२. सं० पा०—नाइ जाव जेट्ठपुत्ते ।
३. सं० पा०—नाइ जाव परिजणेण ।
४. भ० ९।१८२ ।
५. सं० पा०—असण जाव उवक्खडावेति ।
६. स० पा०—नाइ जाव तस्सेव ।
७. स० पा०—नाइ जाव पुरओ ।
८. स० पा०—नाइ जाव जेट्ठपुत्ते ।
९. स० पा०—नाइ जाव परिजणेण ।
१०. भ० ९।१८२ ;
११. भ० १६।७१ ।
१२. स० पा०—नाइ जाव परिजणेण ।
१३. भ० ९।१८२ ।
१४ भ० १६।७१, ९।२१४ ।
१५. भ० ९।२१४ ।
१६. भ० २।५२ ।

५०. तए ण मुणिसुव्वए अरहा कत्तिय सेट्ठि नेगमट्ठसहस्सेण सद्धि सयमेव पव्वावेति जाव[1] धम्ममाइक्खइ—एव देवाणुप्पिया ! गतव्व, एव चिट्ठियव्व जाव[2] सजमियव्व ।।

५१ तए ण से कत्तिए सेट्ठी नेगमट्ठसहस्सेण सद्धि मुणिसुव्वयस्स अरहओ इम एयारूव धम्मिय उवदेस सम्म पडिवज्जइ, तमाणाए तहा गच्छति जाव[3] सजमेति ।।

५२. तए ण से कत्तिए सेट्ठी नेगमट्ठसहस्सेण सद्धि अणगारे जाए—ईरियासमिए जाव[4] गुत्तबभयारी ।।

५३. तए ण से कत्तिए अणगारे मुणिसुव्वयस्स अरहओ तहारूवाण थेराण अतिय सामाइयमाइयाइ चोद्दस पुव्वाइ अहिज्जइ, अहिज्जिता बहूहि चउत्थ छट्ठट्ठम[5]-•दसम-दुवालसेहि, मासद्धमासखमणेहि विचित्तेहि तवोकम्मेहि° अप्पाणं भावेमाणे बहुपडिपुण्णाइ दुवालस वासाइ सामण्णपरियाग पाउणइ, पाउणित्ता मासियाए सलेहणाए अत्ताण झोसेइ, झोसेत्ता सट्ठि भत्ताइ अणसणाए छेदेति, छेदेत्ता आलोइय[6]-•पडिक्कते समाहिपत्ते कालमासे° काल किच्चा सोहम्मे कप्पे सोहम्मवडेसए विमाणे उववायसभाए देवसयणिज्जसि[7] •देवदूसतरिए अगुलस्स असखेज्जइभागमेत्तीए ओगाहणाए° सक्के देविदत्ताए उववन्ने ।।

५४. तए ण से सक्के देविदे देवराया अहुणोववण्णमेत्तए सेस जहा गगदत्तस्स जाव[8] सव्वदुक्खाण अत करेहिति, नवर – ठिती दो सागरोवमाइ, सेस त चेव ।।

५५ सेव भते ! सेव भते ! त्ति[9] ।।

तइओ उद्देसो

मागदियपुत्त-पद

५६. तेण कालेण तेणं समएण रायगिहे नगरे होत्था—वण्णओ । गुणसिलए चेइए—वण्णओ जाव[10] परिसा पडिगया । तेण कालेण तेण समएण समणस्स भगवओ

---

१. भ० २।५३ ।
२. भ० २।५३ ।
३ भ० २।५४ ।
४. भ० २।५५ ।
५. स० पा०—छट्ठट्ठम जाव अप्पाण ।
६. स० पा०—आलोइय जाव काल ।
७ स० पा०—देवसयणिज्जसि जाव सक्के ।
८. भ० १६।७२-७५ ।
९. भ० १।५१ ।
१० भ० १।२-५ ।

महावीरस्स[1] अंतेवासी मागंदियपुत्ते नामं अणगारे पगइभद्दए—जहा मंडियपुत्ते जाव[2] पज्जुवासमाणे एवं वयासी—

५७. से नूणं भंते! काउलेस्से पुढविकाइए काउलेस्सेहिंतो पुढविकाइएहिंतो अणंतरं उव्वट्टित्ता माणुसं विग्गहं लभति, लभित्ता केवलं बोहिं बुज्झति, बुज्झित्ता तओ पच्छा सिज्झति जाव[3] सव्वदुक्खाणं अंतं करेति ?

हंता मागंदियपुत्ता! काउलेस्से पुढविकाइए जाव सव्वदुक्खाणं अंतं करेति ॥

५८. से नूणं भंते! काउलेस्से[4] आउकाइए काउलेस्सेहिंतो आउकाइएहिंतो अणंतरं उव्वट्टित्ता माणुसं विग्गहं लभति, लभित्ता केवलं बोहिं बुज्झति जाव सव्व-दुक्खाणं अंतं करेति ?

हंता मागंदियपुत्ता! जाव सव्वदुक्खाणं अंतं करेति ॥

५९. से नूणं भंते! काउलेस्से वणस्सइकाइए [5]°काउलेसेहिंतो वणस्सइकाइएहिंतो अणंतरं उव्वट्टित्ता माणुसं विग्गहं लभति, लभित्ता केवलं बोहिं बुज्झति, बुज्झित्ता तओ पच्छा सिज्झति जाव सव्वदुक्खाणं अंतं करेति ?

हंता मागंदियपुत्ता! ° जाव सव्वदुक्खाणं अंतं करेति ॥

६०. सेवं भंते! सेवं भंते! त्ति मागंदियपुत्ते अणगारे समणं भगवं महावीरं[6] °वंदइ नमंसइ, वंदित्ता° नमंसित्ता जेणेव समणा निग्गंथा तेणेव उवागच्छति, उवा-गच्छित्ता समणे निग्गंथे एवं वयासी—एवं खलु अज्जो! काउलेस्से पुढविकाइए तहेव जाव सव्वदुक्खाणं अंतं करेति। एवं खलु अज्जो! काउलेस्से आउक्काइए तहेव जाव सव्वदुक्खाणं अंतं करेति। एवं खलु अज्जो! काउलेस्से वणस्सइ-काइए तहेव जाव सव्वदुक्खाणं अंतं करेति ॥

६१. तए णं ते समणा निग्गंथा मागंदियपुत्तस्स अणगारस्स एवमाइक्खमाणस्स जाव एवं परूवेमाणस्स एयमट्ठं नो सद्दहंति नो पत्तियंति नो रोएंति, एयमट्ठं असद्दह-माणा अपत्तियमाणा अरोएमाणा जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता समणं भगवं महावीरं वंदंति नमंसंति, वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी—एवं खलु भंते! मागंदियपुत्ते अणगारे अम्हं एवमाइक्खति जाव परूवेति—एवं खलु अज्जो! काउलेस्से पुढविकाइए जाव सव्वदुक्खाणं अंतं करेति। एवं खलु अज्जो! काउलेस्से आउक्काइए जाव सव्वदुक्खाणं अंतं करेति! एवं खलु अज्जो! काउलेस्से वणस्सइकाइए वि जाव सव्वदुक्खाणं अंतं करेति ॥

६२. से कहमेयं भंते! एवं ?

---

१. महावीरस्स जाव (स)।
२. भ० ३।१३४, १।२८८, २८९।
३. भ० १।४४।
४. काउलेसे (अ, स)।
५. स० पा०—एवं चेव जाव।
६. स० पा०—महावीरं जाव नमंसित्ता।

अज्जोति ! समणे भगव महावीरे ते समणे निग्गथे आमतित्ता एव वयासी—जण्ण अज्जो ! मागंदियपुत्ते अणगारे तुब्भे एवमाइक्खति जाव परूवेति—एव खलु अज्जो ! काउलेस्से पुढविकाइए जाव सव्वदुक्खाण अत करेति। एव खलु अज्जो ! काउलेस्से आउकाइए जाव सव्वदुक्खाण अत करेति। एव खलु अज्जो ! काउलेस्से वणस्सइकाइए वि जाव सव्वदुक्खाण अत करेति। सच्चे ण एसमट्ठे। अह पि ण अज्जो ! एवमाइक्खामि एव भासेमि एव पण्णवेमि एव परूवेमि—एव खलु अज्जो ! कण्हलेसे पुढविकाइए कण्हलेसेहितो पुढविकाइएहितो जाव सव्वदुक्खाण अत करेति। एव खलु अज्जो ! नीललेस्से पुढविकाइए जाव सव्वदुक्खाण अत करेति। एव काउलेस्से वि। जहा पुढविकाइए एव आउकाइए वि, एव वणस्सइकाइए वि। सच्चे ण एसमट्ठे ॥

६३ सेव भते ! सेव भते ! त्ति समणा निग्गथा समण भगव महावीर वदति नमसति, वदित्ता नमसित्ता जेणेव मागदियपुत्ते अणगारे तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता मागदियपुत्त अणगार वदति नमसति, वदित्ता नमसित्ता एयमट्ठ सम्म विणएण भुज्जो-भुज्जो खामेति ॥

६४. तए ण से मागदियपुत्ते अणगारे उट्ठाए उट्ठेइ, उट्ठेत्ता जेणेव समणे भगव महावीरे तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता समण भगव महावीर वदति नमसति, वदित्ता नमसित्ता एव वयासी—

६५ अणगारस्स ण भते ! भावियप्पणो सव्व कम्म वेदेमाणस्स सव्व कम्म निज्जरेमाणस्स सव्व मार मरमाणस्स सव्व सरीर विप्पजहमाणस्स, चरिम कम्म वेदेमाणस्स चरिम कम्म निज्जरेमाणस्स चरिम मार मरमाणस्स चरिम सरीर विप्पजहमाणस्स, मारणतिय कम्म वेदेमाणस्स मारणतिय कम्म निज्जरेमाणस्स मारणतिय मार मरमाणस्स मारणतिय सरीर विप्पजहमाणस्स जे चरिमा निज्जरापोग्गला सुहुमा ण ते पोग्गला पण्णत्ता समणाउसो ! सव्व लोग पि ण ते ओगाहित्ता ण चिट्ठति ?

हता मागदियपुत्ता ! अणगारस्स ण भावियप्पणो सव्व कम्म वेदेमाणस्स जाव जे चरिमा निज्जरापोग्गला सुहुमा ण ते पोग्गला पण्णत्ता समणाउसो ! सव्व लोग पि ण ते ओगाहित्ता ण चिट्ठति ॥

निज्जरापोग्गल-जाणणादि-पदं

६६. छउमत्थे ण भते ! मणुस्से तेसिं निज्जरापोग्गलाण किंचि आणत्त वा नाणत्त वा [1]ओमत्त वा तुच्छत्त वा गरुयत्त वा लहुयत्त वा जाणइ-पासइ ?

मागदियपुत्ता ! नो इणट्ठे समट्ठे ॥

---

१. स० पा०—एव जहा इदियउद्देसए पढमे जाव वेमाणिया, जाव तत्थ ण जे ते उवउत्ता ते जाणति-पासति, आहारेंति। से तेणट्ठेण निक्खेवो भाणियव्वो।

६७ से केणट्ठेण भते ! एव वुच्चइ—छउमत्थे ण मणुस्से तेसि निज्जरापोग्गलाणं नो किंचि आणत्त वा नाणत्त वा ओमत्त वा तुच्छत्त वा गरुयत्त वा लहुयत्त वा जाणइ-पासइ ?

मागदियपुत्ता ! देवे वि य ण अत्थेगइए जे ण तेसि निज्जरापोग्गलाण नो किंचि आणत्त वा नाणत्त वा ओमत्त वा तुच्छत्त वा गरुयत्त वा लहुयत्त वा जाणइ-पासइ। से तेणट्ठेण मागदियपुत्ता ! एव वुच्चइ—छउमत्थे ण मणुस्से तेसि निज्जरापोग्गलाण नो किंचि आणत्त वा नाणत्त वा ओमत्त वा तुच्छत्त वा गरुयत्त वा लहुयत्त वा जाणइ-पासइ, सुहुमा ण ते पोग्गला पण्णत्ता समणाउसो ! सव्वलोग पि य ण ते ओगाहित्ता चिट्ठति ॥

६८. नेरइया ण भते ! ते निज्जरापोग्गले कि जाणति-पासति ? आहारेति ? उदाहु न जाणति न पासति, न आहारेति ?

मागदियपुत्ता ! नेरइया ण ते निज्जरापोग्गले न जाणति न पासति, आहारेति। एव जाव पचिंदियतिरिक्खजोणिया ॥

६९ मणुस्सा ण भते ! ते निज्जरापोग्गले कि जाणति-पासति ? आहारेति ? उदाहु न जाणति न पासति, न आहारेति ?

मागदियपुत्ता ! अत्थेगइया जाणति-पासति, आहारेति। अत्थेगइया न जाणति न पासति, आहारेति ॥

७० से केणट्ठेण भते ! एव वुच्चइ—अत्थेगइया जाणति-पासति, आहारेति ? अत्थेगइया न जाणति न पासति, आहारेति ?

मागदियपुत्ता ! मणुस्सा दुविहा पण्णत्ता, त जहा—सण्णिभूया य, असण्णिभूया य। तत्थ ण जे ते असण्णिभूया ते ण न जाणति न पासति, आहारेति। तत्थ ण जे ते सण्णिभूया ते दुविहा पण्णत्ता, त जहा—उवउत्ता य, अणुवउत्ता य। तत्थ ण जे ते अणुवउत्ता ते ण न जाणति न पासति, आहारेति। तत्थ ण जे ते उवउत्ता ते ण जाणति-पासति, आहारेति। से तेणट्ठेण मागदियपुत्ता ! एव वुच्चइ—अत्थेगइया न जाणति न पासति, आहारेति। अत्थेगइया जाणति-पासति, आहारेति। वाणमतर-जोइसिया जहा नेरइया ॥

७१. वेमाणिया ण भते ! ते निज्जरापोग्गले किं जाणति-पासति ? आहारेति ?

मागदियपुत्ता ! जहा मणुस्सा, नवर—वेमाणिया दुविहा पण्णत्ता, त जहा—मायिमिच्छदिट्ठीउववन्नगा य, अमायिसम्मदिट्ठीउववन्नगा य। तत्थ ण जे ते मायिमिच्छदिट्ठिउववन्नगा ते ण न जाणति न पासति, आहारेति। तत्थ ण जे ते अमायिसम्मदिट्ठीउववन्नगा ते दुविहा पण्णत्ता, त जहा—अणतरोववन्नगा य परपरोववन्नगा य। तत्थ णं जे ते अणतरोववन्नगा ते ण न जाणति न पासति, आहारेति। तत्थ ण जे ते परपरोववन्नगा ते दुविहा पण्णत्ता, त जहा—पज्जत्तगा य, अपज्जत्तगा य। तत्थ णं जे ते अपज्जत्तगा ते णं न जाणति

न पासति, आहारेति । तत्थ णं जे ते पज्जत्तगा ते दुविहा पण्णत्ता, त जहा—उवउत्ता य, अणुवउत्ता य । तत्थ ण जे ते अणुवउत्ता ते ण न जाणति न पासति, आहारेति । तत्थ ण जे ते उवउत्ता ते ण जाणति-पासति, आहारेति । से तेणट्ठेण मागदियपुत्ता ! एव वुच्चइ—अत्थेगइया न जाणंति न पासति, आहारेति । अत्थेगइया जाणति-पासति, आहारेति° ॥

बंध-पदं

७२. कतिविहे ण भते ! बधे पण्णत्ते ?
मागदियपुत्ता ! दुविहे बधे पण्णत्ते, त जहा—दव्वबधे य, भावबधे य ॥

७३ दव्वबधे ण भते ! कतिविहे पण्णत्ते ?
मागदियपुत्ता दुविहे ! पण्णत्ते, त जहा—पयोगबधे य, वीससाबधे य ॥

७४ वीससाबधे ण भते ! कतिविहे पण्णत्ते ?
मागदियपुत्ता ! दुविहे पण्णत्ते, त जहा—सादीयवीससाबधे य, अणादीयवीससाबधे य ॥

७५ पयोगबधे ण भते ! कतिविहे पण्णत्ते ?
मागदियपुत्ता ! दुविहे पण्णत्ते, त जहा—सिढिलबधणबधे य, धणियबधणबधे य ॥

७६. भावबधे ण भते ! कतिविहे पण्णत्ते ?
मागदियपुत्ता ! दुविहे पण्णत्ते, त जहा—मूलपगडिबधे य, उत्तरपगडिबधे य ॥

७७ नेरइयाण भते ! कतिविहे भावबधे पण्णत्ते ?
मागदियपुत्ता ! दुविहे भावबधे पण्णत्ते, त जहा—मूलपगडिबधे य, उत्तरपगडिबधे य । एव जाव वेमाणियाण ॥

७८ नाणावरणिज्जस्स ण भते ! कम्मस्स कतिविहे भावबधे पण्णत्ते ?
मागदियपुत्ता ! दुविहे भावबधे पण्णत्ते, त जहा—मूलपगडिबधे य, उत्तरपगडिबधे य ॥

७९ नेरइयाण भते ! नाणावरणिज्जस्स कम्मस्स कतिविहे भावबधे पण्णत्ते ?
मागदियपुत्ता ! दुविहे भावबधे पण्णत्ते, त जहा—मूलपगडिबधे य, उत्तरपगडिबधे य । एव जाव वेमाणियाण । जहा नाणावरणिज्जेण दडओ भणियो एव जाव अतराइएण भाणियव्वो ॥

कम्म-नाणत्त-पदं

८० जीवाण भते ! पावे कम्मे जे य कडे[1], °जे य कज्जइ[2]°, जे य कज्जिस्सइ, अत्थि याइ तस्स केइ नाणत्ते ?
हता अत्थि ॥

---

१. स० पा०—कडे जाव जे ।
२ जे त कडमाणे (ता) ।

८१ से केणट्ठेण भत्ते ! एव वुच्चइ—जीवाण पावे कम्मे जे य कडे[1], •जे य कज्जइ°, जे य कज्जिस्सइ, अत्थि याइ तस्स नाणत्ते ?
मागदियपुत्ता ! से जहानामए—केइ पुरिसे धणु परामुसइ, परामुसित्ता उसु परामुसइ, परामुसित्ता ठाण ठाइ, ठाइत्ता आययकण्णायत उसु करेति, करेत्ता उड्ढ वेहास उव्विहइ, से नूण मागदियपुत्ता ! तस्स उसुस्स उड्ढ वेहास उव्वीढस्स समाणस्स एयति वि नाणत्त[2], •वेयति वि नाणत्त, चलति वि नाणत्त, फदइ वि नाणत्त, घट्टइ वि नाणत्त, खुब्भइ वि नाणत्त, उदीरइ वि नाणत्त° त त भाव परिणमति वि नाणत्त ?
हता भगव ! एयति वि नाणत्त जाव त त भाव परिणमति वि नाणत्त ।
से तेणट्ठेण मागदियपुत्ता ! एव वुच्चइ - एयति वि नाणत्त जाव त त भावं परिणमति वि नाणत्त ॥

८२ नेरइयाण भते ! पावे कम्मे जे य कडे° ? एव चेव । एव जाव वेमाणियाण ॥

८३ नेरइया ण भते ! जे पोग्गले आहारत्ताए गेण्हति, तेसि ण भते ! पोग्गलाण सेयकालसि कतिभाग आहारेति ? कतिभाग निज्जरेति ?
मागदियपुत्ता ! असखेज्जइभाग आहारेति, अणतभाग निज्जरेति ॥

८४. चक्किया ण भते ! केइ तेसु निज्जरापोग्गलेसु आसइत्तए वा जाव[3] तुयट्टित्तए वा ?
णो इणट्ठे समट्ठे । अणाहारणमेय वुइय समणाउसो ! एव जाव वेमाणियाणं ॥

८५. सेव भते ! सेव भते ! त्ति[4] ॥

चउत्थो उद्देसो

जीवाण परिभोगापरिभोग-पदं

८६. तेण कालेण तेणं समएण रायगिहे जाव[5] भगव गोयमे एव वयासी—अह भते ! पाणाइवाए, मुसावाए जाव[6] मिच्छादसणसल्ले, पाणाइवायवेरमणे जाव[7]

---

१. सं० पा०—कडे जाव जे ।
२ स० पा०—नाणत्त जाव त ।
३. भ० ७।२१६ ।
४. भ० १।५१ ।
५ भ० १।४-१० ।
६. भ० १।३८४ ।
७. भ० १।३८५ ।

मिच्छादंसणसल्लवेरमणे, पुढविक्काइए जाव वणस्सइकाइए, धम्मत्थिकाए, अधम्मत्थिकाए, आगासत्थिकाए, जीवे असरीरपडिबद्धे, परमाणुपोग्गले, सेलेसिं पडिवन्नए अणगारे, सव्वे य वादरबोदिधरा कलेवरा—एए ण दुविहा जीवदव्वा य अजीवदव्वा य जीवाण परिभोगत्ताए हव्वमागच्छंति ?

गोयमा ! पाणाइवाए जाव एए ण दुविहा जीवदव्वा य अजीवदव्वा य अत्थेगइया जीवाण परिभोगत्ताए हव्वमागच्छंति, अत्थेगइया जीवाण परिभोगत्ताए[1] नो हव्वमागच्छंति ।।

८७ से केणट्ठेण भते ! एव वुच्चइ—पाणाइवाए जाव नो हव्वमागच्छंति ?

गोयमा ! पाणाइवाए जाव मिच्छादसणसल्ले, पुढविकाइए जाव वणस्सइकाइए, सव्वे य वादरबोदिधरा कलेवरा—एए ण दुविहा जीवदव्वा य अजीवदव्वा य जीवाण परिभोगत्ताए हव्वमागच्छंति । पाणाइवायवेरमणे जाव मिच्छादसणसल्लविवेगे, धम्मत्थिकाए, अधम्मत्थिकाए जाव परमाणुपोग्गले, सेलेसिं पडिवन्नए अणगारे—एए ण दुविहा जीवदव्वा य अजीवदव्वा य जीवाण परिभोगत्ताए नो हव्वमागच्छंति । से तेणट्ठेण गोयमा ! एव वुच्चइ—पाणाइवाए जाव नो हव्वमागच्छंति ।।

कसाय-पद

८८. कति ण भते ! कसाया पण्णत्ता ?

गोयमा ! चत्तारि कसाया पण्णत्ता, त जहा—कसायपद निरवसेस भाणियव्व जाव[2] निज्जरिस्सति लोभेण ।।

जुम्म-पदं

८९ कति ण भते ! जुम्मा पण्णत्ता ?

गोयमा ! चत्तारि जुम्मा पण्णत्ता, तं जहा—कडजुम्मे, तेयोगे[3], दावरजुम्मे[4], कलिओगे[5] ।।

९० से केणट्ठेण भते ! एव वुच्चइ—जाव कलिओगे ?

गोयमा ! जे ण रासी चउक्कएण अवहारेण अवहीरमाणे चउपज्जवसिए सेत्त कडजुम्मे । जे ण रासी चउक्कएण अवहारेण अवहीरमाणे तिपज्जवसिए सेत्त तेयोगे । जे ण रासी चउक्कएण अवहारेण अवहीरमाणे दुपज्जवसिए सेत्त दावरजुम्मे । जे ण रासी चउक्कएण अवहारेण अवहीरमाणे एगपज्जवसिए सेत्त कलिओगे । से तेणट्ठेण गोयमा ! एव वुच्चइ जाव कलिओगे ।।

---

१ जाव (अ, क, ख, ता, व, म, स) ।

२. प० १४ ।

३ तेयोए (अ), तेजोए (क), तेयोते (ख, व), तेयोदे (ता), तेजोगे (म), तियोगे (स) ।

४. वादरजुम्मे (अ, क), वादरजुण्णे (ता) ।

५ कलिओए (ख), कलिओदे (ता) ।

९१. नेरइया ण भते ! कि कडजुम्मा ? तेयोगा ? दावरजुम्मा ? कलिओगा ?
गोयमा ! जहण्णपदे कडजुम्मा, उक्कोसपदे तेयोगा, अजहण्णुक्कोसपदे सिय कडजुम्मा जाव सिय कलियोगा । एव जाव थणियकुमारा ।।

९२ वणस्सइकाइया ण––पुच्छा ।
गोयमा ! जहण्णपदे अपदा, उक्कोसपदे य अपदा, अजहण्णुक्कोसपदे सिय कडजुम्मा जाव सिय कलिओगा ।।

९३ वेदिया[1] ण––पुच्छा ।
गोयमा ! जहण्णपदे कडजुम्मा, उक्कोसपदे दावरजुम्मा, अजहण्णमणुक्कोसपदे सिय कडजुम्मा जाव सिय कलियोगा । एव जाव चउरिंदिया । सेसा एगिंदिया जहा वेदिया । पचिंदियतिरिक्खजोणिया जाव वेमाणिया जहा नेरइया । सिद्धा जहा वणस्सइकाइया ।।

९४ इत्थीओ ण भते ! कि कडजुम्मा––पुच्छा ।
गोयमा ! जहण्णपदे कडजुम्माओ, उक्कोसपदे कडजुम्माओ, अजहण्णमणुक्कोसपदे सिय कडजुम्माओ जाव सिय कलिओगाओ । एव असुरकुमारित्थीओ वि जाव थणियकुमारित्थीओ । एव तिरिक्खजोणित्थीओ, एव मणुसित्थीओ, एव वाणमतर-जोइसिय-वेमाणियदेवित्थीओ ।।

अधगवण्हिजीवाणं वर-पर-पदं

९५ जावतिया ण भते ! वरा अधगवण्हिणो जीवा तावतिया परा अधगवण्हिणो जीवा ?
हता गोयमा ! जावतिया वरा अधगवण्हिणो जीवा तावतिया परा अधगवण्हिणो जीवा ।।

९६ सेव भते ! सेव भते ! त्ति[2] ।।

पंचमो उद्देसो

वेउव्वियावेउव्विय-असुरकुमारादि-पद

९७. दो भते ! असुरकुमारा एगसि असुरकुमारावाससि असुरकुमारदेवत्ताए उववन्ना, तत्थ ण एगे असुरकुमारे देवे पासादीए दरिसणिज्जे अभिरूवे पडिरूवे, एगे असुरकुमारे देवे से ण नो पासादीए नो दरिसणिज्जे नो अभिरूवे नो पडिरूवे, से कहमेय भते ! एव ?

---

1 वेइदिया (अ) ।
2. भ० १।५१ ।

गोयमा ! असुरकुमारा देवा दुविहा पण्णत्ता, त जहा—वेउव्वियसरीरा य, अवेउव्वियसरीरा य। तत्थ ण जे से वेउव्वियसरीरे असुरकुमारे देवे से णं पासादीए जाव पडिरूवे। तत्थ ण जे से अवेउव्वियसरीरे असुरकुमारे देवे से णं नो पासादीए जाव नो पडिरूवे ॥

९८. से केणट्ठेण भते ! एव वुच्चइ—तत्थ ण जे से वेउव्वियसरीरे त चेव जाव नो पडिरूवे ?

गोयमा ! से जहानामए—इह मणुयलोगसि दुवे पुरिसा भवति—एगे पुरिसे अलकियविभूसिए, एगे पुरिसे अणलकियविभूसिए। एएसि ण गोयमा ! दोण्हं पुरिसाण कयरे पुरिसे पासादीए जाव पडिरूवे, कयरे पुरिसे नो पासादीए जाव नो पडिरूवे। जे वा से पुरिसे अलकियविभूसिए, जे वा से पुरिसे अणलकियविभूसिए ?

भगव ! तत्थ ण जे से पुरिसे अलकियविभूसिए से ण पुरिसे पासादीए जाव पडिरूवे। तत्थ ण जे से पुरिसे अणलकियविभूसिए से ण पुरिसे नो पासादीए जाव नो पडिरूवे। से तेणट्ठेण जाव नो पडिरूवे ॥

९९ दो भते ! नागकुमारा देवा एगसि नागकुमारावाससि° ? एव चेव जाव थणियकुमारा। वाणमतर-जोतिसिय-वेमाणिया एव चेव ॥

नेरइयादीणं महाकम्मादि-पदं

१०० दो भते ! नेरइया एगसि नेरइयावाससि नेरइयत्ताए उववन्ना। तत्थ ण एगे नेरइए महाकम्मतराए चेव[1], °महाकिरियतराए चेव, महासवतराए चेव°, महावेयणतराए चेव, एगे नेरइए अप्पकम्मतराए चेव[2], °अप्पकिरियतराए चेव, अप्पासवतराए चेव°, अप्पवेयणताए चेव, से कहमेय भंते ! एव ?

गोयमा ! नेरइया दुविहा पण्णत्ता, त जहा—मायिमिच्छदिट्ठिउववन्नगा[3] य, अमायिसम्मदिट्ठिउववन्नगा य। तत्थ ण जे से मायिमिच्छदिट्ठिउववन्नए नेरइए से ण महाकम्मतराए चेव जाव महावेयणतराए चेव। तत्थ ण जे से अमायिसम्मदिट्ठिउववन्नए नेरइए से ण अप्पकम्मतराए चेव जाव अप्पवेयणतराए चेव ॥

१०१ दो भते ! असुरकुमारा° ? एव चेव। एव एगिंदिय-विगलिंदियवज्ज जाव वेमाणिया ॥

नेरइयादीणं आउय-पदं

१०२. नेरइए ण भते ! अणतर उव्वट्टित्ता जे भविए पचिंदियतिरिक्खजोणिएसु उववज्जित्तए, से ण भते ! कयर आउय पडिसवेदेति ?

---

१. स० पा०—चेव जाव महावेयण° ।
२. स० पा०—चेव जाव अप्पवेयण° ।
३ मादिमिच्छ° (व)।

गोयमा ! नेरइयाउय पडिसवेदेति, पचिंदियतिरिक्खजोणियाउए से पुरओ कडे चिट्ठति । एवं मणुस्सेसु वि, नवर—मणुस्साउए से पुरओ कडे चिट्ठति ।।

१०३ असुरकुमारे णं भते ! अणंतर उव्वट्टित्ता जे भविए पुढविकाइएसु उववज्जित्तए, [1]०से ण भंते ! कयर आउय पडिसवेदेति ?०

गोयमा ! असुरकुमाराउयं पडिसवेदेति, पुढविकाइयाउए से पुरओ कडे चिट्ठति । एव जो जहिं भविओ उववज्जित्तए तस्स त पुरओ कड चिट्ठति, जत्थ ठिओ त पडिसवेदेति जाव वेमाणिए, नवरं—पुढविकाइए पुढविकाइएसु उववज्जति, पुढविकाइयाउयं पडिसवेदेति, अण्णे य से पुढविकाइयाउए पुरओ कडे चिट्ठति । एव जाव मणुस्सो सट्ठाणे उववाएतव्वो, परट्ठाणे तहेव ।।

असुरकुमारादीण विउव्वणा-पद

१०४ दो भते ! असुरकुमारा एगसि असुरकुमारावाससि असुरकुमारदेवत्ताए उववन्ना । तत्थ ण एगे असुरकुमारे देवे उज्जुयं विउव्विस्सामीति उज्जुय विउव्वइ, वक विउव्विस्सामीति वकं विउव्वइ, ज जहा इच्छइ त तहा विउव्वइ । एगे असुरकुमारे देवे उज्जुय विउव्विस्सामीति वकं विउव्वइ, वंक विउव्विस्सामीति उज्जुय विउव्वइ, ज जहा इच्छति नो त तहा विउव्वइ, से कहमेयं भते ! एव ?

गोयमा ! असुरकुमारा देवा दुविहा पण्णत्ता, त जहा—मायिमिच्छदिट्ठीउववन्नगा य, अमायिसम्मदिट्ठीउववन्नगा य । तत्थ ण जे से मायिमिच्छदिट्ठिउववन्नए असुरकुमारे देवे से णं उज्जुयं विउव्विस्सामीति वंक विउव्वइ जाव नो त तहा विउव्वइ । तत्थ ण जे से अमायिसम्मदिट्ठिउववन्नए असुरकुमारे देवे से ण उज्जुय विउव्विस्सामीति उज्जुय विउव्वइ जाव त तहा विउव्वइ ।।

१०५. दो भते ! नागकुमारा० ? एव चेव । एव जाव थणियकुमारा । वाणमतर-जोइसिय-वेमाणिया एव चेव ।।

१०६ सेव भते ! सेव भते ! त्ति[2] ।।

छट्ठो उद्देसो

नेच्छइय-ववहार-नय-पदं

१०७. फाणियगुले ण भते ! कतिवण्णे कतिगंधे कतिरसे कतिफासे पण्णत्ते ?

---

१. म० पा० —पुच्छा ।　　　　२ भ० १।५१ ।

गोयमा ! एत्थ ण दो नया भवति, त जहा—नेच्छइयनए[1] य, वावहारियनए य। वावहारियनयस्स गोड्डे[2] फाणियगुले, नेच्छइयनयस्स पचवण्णे दुगधे पचरसे अट्ठफासे पण्णत्ते ॥

१०८ भमरे ण भते ! कतिवण्णे [3]•कतिगधे कतिरसे कतिफासे पण्णत्ते° ?
गोयमा ! एत्थ ण दो नया भवति, त जहा—नेच्छइयनए य, वावहारियनए य। वावहारियनयस्स कालए भमरे, नेच्छइयनयस्स पचवण्णे जाव अट्ठफासे पण्णत्ते ॥

१०९. सुयपिच्छे ण भते ! कतिवण्णे कतिगधे कतिरसे कतिफासे पण्णत्ते ?
एव चेव, नवर वावहारियनयस्स नीलए सुयपिच्छे, नेच्छइयनयस्स पचवण्णे [4]•जाव अट्ठफासे पण्णत्ते° । एव एएण अभिलावेण लोहिया मजिट्ठिया, पीतिया हालिद्दा[5], सुक्किलए सखे, सुब्भिगधे कोट्ठे, दुब्भिगधे मयगसरीरे, तित्ते निंबे, कडुया सुठी, कसाए[6] कविट्ठे, अवा अबिलिया, महुरे खडे, कक्खडे वइरे, मउए नवणीए, गरुए[7] अए, लहुए उलुयपत्ते[8], सीए हिमे, उसिणे[9] अगणिकाए, णिद्धे तेल्ले ॥

११० छारिया ण भते !—पुच्छा ।
गोयमा ! एत्थ दो नया भवति, त जहा—नेच्छइयनए य, वावहारियनए य। वावहारियनयस्स लुक्खा छारिया, नेच्छइयनयस्स पचवण्णा जाव अट्ठफासा पण्णत्ता ॥

परमाणु-खंधाण वण्णादि-पदं

१११ परमाणुपोग्गले ण भते ! कतिवण्णे जाव कतिफासे पण्णत्ते ?
गोयमा ! एगवण्णे, एगगधे, एगरसे, दुफासे पण्णत्ते ॥

११२ दुपएसिए ण भते ! खधे कतिवण्णे [10]•जाव कतिफासे पण्णत्ते ?°
गोयमा ! सिय एगवण्णे, सिय दुवण्णे, सिय एगगधे, सिय दुगधे, सिय एगरसे सिय दुरसे, सिय दुफासे, सिय तिफासे, सिय चउफासे पण्णत्ते ॥

११३ [11]•तिपएसिए ण भते ! खधे कतिवण्णे जाव कतिफासे पण्णत्ते ?

---

१ निच्छइय° (अ, क, व, स) ।
२ गोड्डु (अ), गोडे (स) ।
३. स० पा०—पुच्छा ।
४ स० पा०—सेस त चेव ।
५ हलिद्दा (अ, क, ता, व, म) ।
६. कसाए तुयरए (अ, क, ख, ता, व म) ।
७ गुरुए (अ, व) ।
८. लउयपत्ते (ता) ।
९. उसुणे (अ, क, ख, ता, व) ।
१०. स० पा०—पुच्छा ।
११ सं० पा०—एव तिपएसिए वि, नवर—सिय एगवण्णे, सिय दुवण्णे, सिय तिवण्णे । एव रसेसु वि, सेस जहा दुपएसियस्स । एव चउपएसिए वि, नवर—सिय एगवण्णे

गोयमा ! सिय एगवण्णे, सिय दुवण्णे, सिय तिवण्णे, सिय एगगंधे, सिय दुगधे, सिय एगरसे, सिय दुरसे, सिय तिरसे, सिय दुफासे, सिय तिफासे, सिय चउफासे पण्णत्ते ॥

११४ चउपएसिए ण भते ! खंधे कतिवण्णे जाव कतिफासे पण्णत्ते ?
गोयमा ! सिय एगवण्णे, सिय दुवण्णे, सिय तिवण्णे, सिय चउवण्णे, सिय एगगधे, सिय दुगधे, सिय एगरसे, सिय दुरसे, सिय तिरसे, सिय चउरसे, सिय दुफासे, सिय तिफासे, सिय चउफासे पण्णत्ते ॥

११५ पचपएसिए ण भते ! खधे कतिवण्णे जाव कतिफासे पण्णत्ते ?
गोयमा ! सिय एगवण्णे, सिय दुवण्णे, सिय तिवण्णे, सिय चउवण्णे, सिय पंचवण्णे, सिय एगगधे, सिय दुगधे, सिय एगरसे, सिय दुरसे, सिय तिरसे, सिय चउरसे, सिय पचरसे, सिय दुफासे, सिय तिफासे, सिय चउफासे पण्णत्ते ।° जहा पचपएसिओ एव जाव असखेज्जपएसिओ ॥

११६. सुहुमपरिणए ण भते ! अणंतपएसिए खधे कतिवण्णे जाव कतिफासे पण्णत्ते ?
जहा पचपएसिए तहेव निरवसेस ॥

११७. वादरपरिणए ण भते ! अणतपएसिए खधे कतिवण्णे °जाव कतिफासे पण्णत्ते ? °
गोयमा ! सिय एगवण्णे, जाव सिय पंचवण्णे, सिय एगगधे, सिय दुगधे, सिय एगरसे जाव सिय पचरसे, सिय चउफासे जाव सिय अट्ठफासे पण्णत्ते ॥

११८. सेव भते ! सेवं भते ! त्ति[2] ॥

सत्तमो उद्देसो

केवलि-भासा-पदं

११९ रायगिहे जाव एवं वयासी—अण्णउत्थिया णं भते ! एवमाइक्खति जाव परूवेति—एव खलु केवली जक्खाएसेण आइस्सइ[3], एव खलु केवली जक्खाएसेण आइट्ठे[4] समाणे आहच्च दो भासाओ भासति, त जहा—मोसं वा, सच्चामोस वा, से कहमेय भते ! एवं ?

जाव सिय चउवण्णे । एव रसेसु वि, सेस त चेव । एव पचपएसिए वि, नवर—सिय एगवण्णे जाव सिय पचवण्णे, एव रसेसु वि, गधफासा तहेव ।

१. स० पा०—पुच्छा ।
२. भ० १।५१ ।
३. आतिस्सति (स) ।
४. आदिट्ठे (ता); आतिढे (स) ।

गोयमा ! जण्ण ते अण्णउत्थिया जाव[1] जे ते एवमाहंसु मिच्छं ते एवमाहंसु, अहं पुण गोयमा ! एवमाइक्खामि भासेमि पण्णवेमि परूवेमि—नो खलु केवली जक्खाएसेण आइस्सइ, नो खलु केवली जक्खाएसेण आइट्ठे समाणे आहच्च दो भासाओ भासति, तं जहा—मोसं वा, सच्चामोसं वा। केवली णं असावज्जाओ अपरोवघाइयाओ आहच्च दो भासाओ भासति, तं जहा—सच्चं वा, असच्चा-मोसं वा॥

उवहि-पदं

१२०. कतिविहे णं भंते ! उवही पण्णत्ते ?
गोयमा ! तिविहे उवही पण्णत्ते, तं जहा—कम्मोवही, सरीरोवही, बाहिरभंड-मत्तोवगरणोवही॥

१२१. नेरइया णं भंते !—पुच्छा।
गोयमा ! दुविहे उवही पण्णत्ते, तं जहा—कम्मोवही य, सरीरोवही य। सेसाणं तिविहे उवही एगिंदियवज्जाणं जाव वेमाणियाणं। एगिंदियाणं दुविहे उवही पण्णत्ते, तं जहा—कम्मोवही य, सरीरोवही य॥

१२२. कतिविहे णं भंते ! उवही पण्णत्ते ?
गोयमा ! तिविहे उवही पण्णत्ते, तं जहा—सच्चित्ते, अचित्ते, मीसाए[2]। एवं नेरइयाण वि। एवं निरवसेसं जाव वेमाणियाणं॥

परिग्गह-पदं

१२३. कतिविहे णं भंते ! परिग्गहे पण्णत्ते ?
गोयमा ! तिविहे परिग्गहे पण्णत्ते, तं जहा—कम्मपरिग्गहे, सरीरपरिग्गहे बाहिरगभंडमत्तोवगरणपरिग्गहे॥

१२४. नेरइयाणं भंते ! कतिविहे परिग्गहे पण्णत्ते ? एवं जहा उवहिणा दो दंडगा भणिया तहा परिग्गहेण वि दो दंडगा भाणियव्वा॥

पणिहाण-पदं

१२५. कतिविहे णं भंते ! पणिहाणे पण्णत्ते ?
गोयमा ! तिविहे पणिहाणे पण्णत्ते, तं जहा—मणपणिहाणे, वइपणिहाणे, कायपणिहाणे॥

१२६. नेरइयाणं भंते ! कतिविहे पणिहाणे पण्णत्ते ? एवं चेव। एवं जाव थणियकुमाराणं॥

१२७. पुढविकाइयाणं—पुच्छा।

---

१. भ० १।४२१। २. मीसे (ब)।

गोयमा ! एगे कायपणिहाणे पण्णत्ते । एव जाव वणस्सइकाइयाण ।।

१२८. बेइदियाण—पुच्छा ।
गोयमा ! दुविहे पणिहाणे, पण्णते त जहा—वइपणिहाणे य, कायपणिहाणे य । एव जाव चउरिदियाण । सेसाण तिविहे वि जाव वेमाणियाणं ।।

१२९. कतिविहे ण भते ! दुप्पणिहाणे पण्णत्ते ?
गोयमा ! तिविहे दुप्पणिहाणे पण्णत्ते, त जहा—मणदुप्पणिहाणे, जहेव पणिहाणेण दडगो भणिश्रो तहेव दुप्पणिहाणेण वि भाणियव्वो ।।

१३० कतिविहे ण भते ! सुप्पणिहाणे पण्णत्ते ?
गोयमा ! तिविहे सुप्पणिहाणे पण्णत्ते, त जहा—मणसुप्पणिहाणे, वइसुप्पणिहाणे, कायसुप्पणिहाणे ।।

१३१. मणुस्साण भते ! कतिविहे सुप्पणिहाणे पण्णत्ते ? एव चेव ।।

१३२ सेव भते ! सेव भते ! त्ति जाव[1] विहरइ ।।

१३३. तए ण समणे भगव महावीरे[2] •अण्णया कयाइ रायगिहाश्रो नगराश्रो गुणसिलाश्रो चेइयाश्रो पडिनिक्खमति, पडिनिक्खमित्ता° वहिया जणवयविहार विहरइ ।।

कालोदाइ-पभितीणं पचत्थिकाए सदेह-पदं

१३४. तेण कालेण तेण समएण रायगिहे नाम नगरे । गुणसिलए चेइए—वण्णश्रो जाव पुढविसिलापट्टश्रो । तस्स ण गुणसिलस्स चेइयस्स अदूरसामते वहवे अण्णउत्थिया परिवसति, त जहा—कालोदाई, सेलोदाई,[3]•सेवालोदाई, उदए, नामुदए, नम्मुदए, अण्णवालए, सेलवालए, सखवालए, सुहत्थी गाहावई ।।

१३५. तए ण तेसि अण्णउत्थियाण अण्णया कयाइ एगयश्रो सहियाण समुवागयाण सण्णिविट्ठाण सण्णिसण्णाण अयमेयारूवे मिहोकहासमुल्लावे समुप्पज्जित्था—एव खलु समणे नायपुत्ते पच अत्थिकाए पण्णवेति, त जहा—धम्मत्थिकाय जाव पोग्गलत्थिकाय ।
तत्थ ण समणे नायपुत्ते चत्तारि अत्थिकाए अजीवकाए पण्णवेति, त जहा—धम्मत्थिकाय, अधम्मत्थिकायं, आगासत्थिकाय, पोग्गलत्थिकाय । एग च ण समणे नायपुत्ते जीवत्थिकाय अरूविकाय जीवकाय पण्णवेति ।
तत्थ ण समणे नायपुत्ते चत्तारि अत्थिकाए अरूविकाए पण्णवेति, त जहा—धम्मत्थिकाय, अधम्मत्थिकाय, आगासत्थिकाय, जीवत्थिकायं । एग च ण

---

१. भ० १।५१ ।
२. सं० पा०—महावीरे जाव वहिया ।
३ स० पा०—एव जहा सत्तमसए अण्णउत्थियउद्देसए जाव से ।

समणे नायपुत्ते पोग्गलत्थिकाय रूविकाय अजीवकाय पण्णवेति ।° से कहमेय मन्ने एव ?

१३६ तत्थ ण रायगिहे नगरे मद्दुए नाम समणोवासए परिवसति—अड्ढे जाव बहुजणस्स अपरिभूए, अभिगयजीवाजीवे जाव[1] विहरइ ।।

१३७ तए ण समणे भगव महावीरे अण्णया कदायि पुव्वाणुपुव्वि चरमाणे[2] •गामाणुगाम दूइज्जमाणे सुहसुहेण विहरमाणे जेणेव रायगिहे नगरे जेणेव गुणसिलए चेइए तेणेव° समोसढे परिसा जाव[3] पज्जुवासति ।।

१३८ तए ण मद्दुए समणोवासए इमीसे कहाए लद्धट्ठे समाणे हट्ठतुट्ठ[4] •चित्तमाणदिए णदिए पीईमणे परमसोमणस्सिए हरिसवसविसप्पमाण°हियए ण्हाए जाव[5] अप्पमहग्घाभरणालकियसरीरे सयाओ गिहाओ पडिनिक्खमइ, पडिनिक्खमित्ता पादविहारचारेण रायगिह नगर मज्झमज्झेण[6] निग्गच्छति, निग्गच्छित्ता तेसि अण्णउत्थियाणं अदूरसामतेण वीईवयइ ।।

१३९. तए ण ते अण्णउत्थिया मद्दुय समणोवासय अदूरसामतेण वीईवयमाण पासति, पासित्ता अण्णमण्ण सद्दावेति, सद्दावेत्ता एव वयासी—एव खलु देवाणुप्पिया ! अम्ह इमा कहा अविप्पकडा[7], इम च ण मद्दुए समणोवासए अम्ह अदूरसामतेण वीईवयइ, त सेय खलु देवाणुप्पिया ! अम्ह मद्दुय समणोवासय एयमट्ठ पुच्छित्तए त्ति कट्टु अण्णमण्णस्स अतिय एयमट्ठं पडिसुणेति, पडिसुणेत्ता जेणेव मद्दुए समणोवासए तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता मद्दुय समणोवासय एव वदासी—एव खलु मद्दुया ! तव धम्मायरिए धम्मोवदेसए समणे नायपुत्ते पच अत्थिकाए पण्णवेइ, [8]•तं जहा—धम्मत्थिकायं जाव पोग्गलत्थिकाय । त चेव जाव[9] रूविकाय अजीवकाय पण्णवेइ ।° से कहमेय मद्दुया ! एव ?

मद्दुय-समणोवासएण समाहाण-पद

१४० तए ण से मद्दुए समणोवासए ते अण्णउत्थिए एव वयासी—जति कज्ज कज्जति जाणामो-पासामो, अहे कज्ज न कज्जति न जाणामो न पासामो ।।

१४१ तए ण ते अण्णउत्थिया मद्दुय समणोवासय एव वयासी—केस ण तुम मद्दुया ! समणोवासगाण भवसि, जे ण तुम एयमट्ठ न जाणसि न पाससि ?

---

१. भ० २।९४ ।
२. सं० पा०—चरमाणे जाव समोसढे ।
३. ओ० सू० ५२-५२ ।
४. स० पा०—हट्ठतुट्ठ जाव हियए ।
५. भ० २।९७ ।
६. जाव (अ, क, ख, ता, व, म, स) ।
७ अविउप्पक्कडा (क, व, म, स), अविदुप्पडा (ता) ।
८. स० पा०—जहा सत्तमे सए अण्णउत्थि-उद्देसए जाव से ।
९. भ० ७।२१३ ।

१४२ तए णं से मद्दुए समणोवासए ते अण्णउत्थिए एवं वयासी—
अत्थि णं आउसो ! वाउयाए वाति ?
हंता अत्थि ।
तुब्भे णं आउसो ! वाउयायस्स वायमाणस्स रूवं पासह ?
नो इणट्ठे समट्ठे ।
अत्थि णं आउसो ! घाणसहगया पोग्गला ?
हंता अत्थि ।
तुब्भे णं आउसो ! घाणसहगयाणं पोग्गलाणं रूवं पासह ?
नो इणट्ठे समट्ठे ।
अत्थि णं आउसो ! अरणिसहगए अगणिकाए ?
हंता अत्थि ।
तुब्भे णं आउसो ! अरणिसहगयस्स अगणिकायस्स रूवं पासह ?
नो इणट्ठे समट्ठे ।
अत्थि णं आउसो ! समुद्दस्स पारगयाइं रूवाइं ?
हंता अत्थि ।
तुब्भे णं आउसो ! समुद्दस्स पारगयाइं रूवाइं पासह ?
नो इणट्ठे समट्ठे ।
अत्थि णं आउसो ! देवलोगगयाइं रूवाइं ?
हंता अत्थि ।
तुब्भे णं आउसो ! देवलोगगयाइं रूवाइं पासह ?
नो इणट्ठे समट्ठे ।
एवामेव आउसो ! अहं वा तुब्भे वा अण्णो वा छउमत्थो जइ जो जं न जाणइ न पासइ तं सव्वं न भवति, एवं भे सुबहुए लोए न भविस्सती ति कट्टु ते अण्णउत्थिए एवं पडिभणइ[1], पडिभणित्ता जेणेव गुणसिलए चेइए, जेणेव समणे भगवं महावीरे, तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता समणं भगवं महावीरं पंचविहेणं अभिगमेणं जाव[2] पज्जुवासति ॥

भगवया मद्दुयस्स पसंसा-पदं

१४३ मद्दुयादी ! समणे भगवं महावीरे मद्दुयं समणोवासगं एवं वयासी—सुट्ठु णं मद्दुया ! तुमं ते अण्णउत्थिए एवं वयासी, साहु णं मद्दुया ! तुमं ते अण्णउत्थिए एवं वयासी, जे णं मद्दुया ! अट्ठं वा हेउं वा पसिणं वा वागरणं वा अण्णायं अदिट्ठं अस्सुतं अमुयं अविण्णायं बहुजणमज्झे आघवेति पण्णवेति[3] •परूवेति

---

१. पडिहणति (अ, ख, म, स) ।
२. भ० २।६७ ।
३ सं० पा०—पण्णवेति जाव उवदंसेति ।

दसेति निदसेति° उवदसेति, से ण अरहंताण आसादणाए[1] वट्टति, अरहतपण्णत्तस्स धम्मस्स आसादणाए वट्टति, केवलीण आसादणाए वट्टति, केवलिपण्णत्तस्स धम्मस्स आसादणाए वट्टति, त सुट्ठु ण तुम मद्दुया ! ते अण्णउत्थिए एव वयासी, साहु णं तुम मद्दुया[2] ! •ते अण्णउत्थिए° एव वयासी ।।

१४४ तए ण मद्दुए समणोवासए समणेण भगवया महावीरेण एव वुत्ते समाणे हट्ठतुट्ठे समणं भगव महावीर वदति नमसति, वदित्ता नमसित्ता णच्चासण्णे[3] •णातिदूरे सुस्सूसमाणे णमसमाणे अभिमुहे विणएण पजलियडे° पज्जुवासइ ।।

१४५ तए ण समणे भगव महावीरे मद्दुयस्स समणोवासगस्स तीसे य महतिमहालियाए परिसाए धम्म परिकहेइ जाव[4] परिसा पडिगया ।।

१४६. तए ण मद्दुए समणोवासए समणस्स भगवओ महावीरस्स[5] •अतिए धम्म सोच्चा° निसम्म हट्ठतुट्ठे पसिणाइ पुच्छति, पुच्छित्ता अट्ठाइ परियादियति, परियादिइत्ता उट्ठाए उट्ठेइ, उट्ठेत्ता समण भगव महावीर वदइ नमसइ, वदित्ता[6] •नमसित्ता जामेव दिस पाउब्भूए तामेव दिस° पडिगए ।।

१४७ भतेति ! भगव गोयमे समणे भगव महावीर वदइ नमसइ, वदित्ता नमसित्ता एव वयासी—पभू ण भते ! मद्दुए समणोवासए देवाणुप्पियाण अतिय[7] •मुडे भवित्ता अगाराओ अणगारिय° पव्वइत्तए ?

नो इणट्ठे समट्ठे । एव जहेव सखे तहेव अरुणाभे जाव[8] अत काहिति ।।

विकुव्वणाए एगजीव-संबध-पद

१४८ देवे ण भते ! महिड्ढिए जाव[9] महेसक्खे रूवसहस्स विउव्वित्ता पभू अण्णमण्णेण सद्धि सगाम सगामित्तए ?

हता पभू ।

ताओ ण भते ! वोदीओ कि एगजीवफुडाओ ? अणेगजीवफुडाओ ?

गोयमा ? एगजीवफुडाओ, नो अणेगजीवफुडाओ ।

'ते ण भते ! तासि'[10] वोदीण अतरा कि एगजीवफुडा ? अणेगजीवफुडा ?

गोयमा ! एगजीवफुडा, नो अणेगजीवफुडा ।।

---

१ आसायणाए (ख), आसातणाए (ता) ।

२ स० पा०—मद्दुया जाव एव ।

३. स० पा०—णच्चासण्णे जाव पज्जुवासइ ।

४. ओ० सू० ७१-७६ ।

५. स० पा०—महावीरस्स जाव निसम्म ।

६. स० पा०—वदित्ता जाव पडिगए ।

७. स० पा०—अतिय जाव पव्वइत्तए ।

८ भ० १२।२७,२८ ।

९ भ० १।३३९ ।

१०. ते ण भते ! तेसिं (अ, क, ख, ता, ब); तेसि ण भते (म, स) ।

१४९ पुरिसे ण भते ! अतरे हत्थेण वा [1]•पादेण वा अगुलियाए वा सलागाए वा कट्ठेण वा किलिचेण वा आमुसमाणे वा समुसमाणे वा आलिहमाणे वा विलिहमाणे वा, अण्णयरेण वा तिक्खेण सत्थजाएण आछिदमाणे वा विछिदमाणे वा, अगणिकाएण वा समोडहमाणे तेसिं जीवपएसाण किंचि आवाह वा विबाहं वा उप्पाएइ ? छविच्छेद वा करेइ ?
नो इणट्ठे समट्ठे° । नो खलु तत्थ सत्थं कमति ।।

देवासुर-सगाम-पद

१५० अत्थि ण भंते ! देवासुराणं सगामे,देवासुराण सगामे ?
हता अत्थि ।।

१५१ देवासुरेसु ण भते ! सगामेसु वट्टमाणेसु किण्ण तेसिं देवाण पहरणरयणत्ताए परिणमति ?
गोयमा ! जण्ण ते देवा तण वा कट्ठ वा पत्त वा सक्कर वा परामुसति[2] तण्णं तेसि देवाण पहरणरयणत्ताए परिणमति ।
जहेव देवाण तहेव असुरकुमाराण ? नो इणट्ठे समट्ठे । असुरकुमाराणं निच्चं विउव्विया पहरणरयणा पण्णत्ता ।।

देवस्स दीवसमुद्द-अणुपरियट्टण-पदं

१५२ देवे णं भते ! महिड्ढिए जाव महेसक्खे पभू लवणसमुद्दं अणुपरियट्टित्ता णं हव्वमागच्छित्तए ?
हंता पभू ।।

१५३. देवे ण भते ! महिड्ढिए [3]•जाव महेसक्खे पभू धायइसंड दीव अणुपरियट्टित्ता ण हव्वमागच्छित्तए ?°
हता पभू । एव जाव[4] रुयगवर दीव[5] •अणुपरियट्टित्ता ण हव्वमागच्छित्तए ?°
हता पभू । तेण पर वीईवएज्जा, नो चेव ण अणुपरियट्टेज्जा ।।

देवाणं कम्मक्खवण-काल-पद

१५४ अत्थि ण भंते ! देवा जे अणते कम्मसे जहण्णेणं एक्केण वा दोहिं वा तीहिं वा, उक्कोसेणं पंचहिं वाससएहिं खवयति ?
हंता अत्थि ।।

---

१. स० पा०—एव जहा अट्ठमसए ततिए उद्देसए जाव नो ।
२. परामसति (ख, ता, व) ।
३. स० पा०—एव धायइसड दीव जाव हंता ।
४. जी० ३ ।
५. स० पा०—दीव जाव हंता ।

१५५ अत्थि णं भंते ! देवा जे अणंते कम्मंसे जहण्णेणं एक्केण वा दोहिं वा तीहिं वा, उक्कोसेण पंचहिं वाससहस्सेहिं खवयंति ?
हंता अत्थि ।।

१५६ अत्थि णं भंते ! देवा जे अणंते कम्मंसे जहण्णेणं एक्केण वा दोहिं वा तीहिं वा, उक्कोसेणं पंचहिं वाससयसहस्सेहिं खवयंति ?
हंता अत्थि ।।

१५७. कयरे णं भंते ! ते देवा जे अणंते कम्मंसे जहण्णेणं एक्केण वा जाव पंचहिं वाससएहिं खवयंति ? कयरे णं भंते ! ते देवा जाव पंचहिं वाससहस्सेहिं खवयंति ? कयरे णं भंते ! ते देवा जाव पंचहिं वाससयसहस्सेहिं खवयंति ?
गोयमा ! वाणमंतरा देवा अणंते कम्मंसे एगेणं वाससएणं खवयंति । असुरिंद-वज्जिया भवणवासी देवा अणंते कम्मंसे दोहिं वाससएहिं खवयंति । असुर-कुमारा देवा अणंते कम्मंसे तीहिं वाससएहिं खवयंति । गह-नक्खत्त-तारारूवा जोइसिया देवा अणंते कम्मंसे चउहिं वाससएहिं[1] खवयंति । चंदिम-सूरिया जोइसिंदा जोतिसरायाणो अणंते कम्मंसे पंचहिं वाससएहिं खवयंति ।
सोहम्मीसाणगा देवा अणंते कम्मंसे एगेणं वाससहस्सेणं खवयंति । सणंकुमार-माहिंदगा देवा अणंते कम्मंसे दोहिं वाससहस्सेहिं खवयंति । एवं एएणं अभिलावेणं बंभलोग-लंतगा देवा अणंते कम्मंसे तीहिं वाससहस्सेहिं खवयंति । महासुक्क-सहस्सारगा देवा अणंते कम्मंसे चउहिं वाससहस्सेहिं खवयंति । आणय-पाणय-आरण-अच्चुयगा देवा अणंते कम्मंसे पंचहिं वाससहस्सेहिं खवयंति ।
हिट्ठिमगेवेज्जगा देवा अणंते कम्मंसे एगेणं वाससयसहस्सेणं खवयंति । मज्झिम-गेवेज्जगा देवा अणंते कम्मंसे दोहिं वाससयसहस्सेहिं खवयंति । उवरिम-गेवेज्जगा देवा अणंते कम्मंसे तिहिं वाससयसहस्सेहिं खवयंति । विजय-वेजयंत-जयंत-अपराजियगा देवा अणंते कम्मंसे चउहिं वाससयसहस्सेहिं खवयंति । सव्वट्ठसिद्धगा देवा अणंते कम्मंसे पंचहिं वाससयसहस्सेहिं खवयंति ।
एए णं गोयमा ! ते देवा जे अणंते कम्मंसे जहण्णेणं एक्केण वा दोहिं वा तीहिं वा, उक्कोसेणं पंचहिं वाससएहिं खवयंति । एए णं गोयमा ! ते देवा जाव पंचहिं वाससहस्सेहिं खवयंति । एए णं गोयमा ! ते देवा जाव पंचहिं वाससयसहस्सेहिं खवयंति ।।

१५८ सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति ।।

---

१. जाव (अ, क, ख, ता, व, म, स) ।

अट्ठमो उद्देसो

ईरियं पडुच्च गोयमस्स संवाद-पदं

१५९. रायगिहे जाव एवं वयासी—अणगारस्स णं भंते ! भावियप्पणो पुरओ दुहओ जुगमायाए पेहाए रीयं रीयमाणस्स पायस्स[1] अहे कुक्कुडपोते वा वट्टापोते वा कुलिंगच्छाए[2] वा परियावज्जेज्जा, तस्स णं भंते ! किं इरियावहिया किरिया कज्जइ ? संपराइया किरिया कज्जइ ?
गोयमा ! अणगारस्स णं भावियप्पणो[3] •पुरओ दुहओ जुगमायाए पेहाए रीयं रीयमाणस्स पायस्स अहे कुक्कुडपोते वा वट्टपोते वा कुलिंगच्छाए वा परिया-वज्जेज्जा°, तस्स णं इरियावहिया किरिया कज्जइ, नो संपराइया किरिया कज्जइ ॥

१६०. से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ° ?
[4]•गोयमा ! जस्स णं कोह-माण-माया-लोभा वोच्छिण्णा भवंति तस्स णं रियावहिया किरिया कज्जइ, जस्स णं कोह-माण-माया-लोभा अवोच्छिण्णा भवंति तस्स णं संपराइया किरिया कज्जइ। अहासुत्तं रीयमाणस्स रियावहिया किरिया कज्जइ, उस्सुत्तं रीयमाणस्स संपराइया किरिया कज्जइ। से णं अहासुत्तमेव रीयती। से तेणट्ठेणं° ॥

१६१. सेवं भंते ! सेवं भंते ! जाव[5] विहरइ ॥

१६२. तए णं समणे भगवं महावीरे[6] •अण्णया कयाइ रायगिहाओ नगराओ गुणसि-लाओ चेइयाओ पडिनिक्खमति, पडिनिक्खमित्ता बहिया जणवयविहारं° विहरइ ॥

अण्णउत्थियाणं आरोव-पदं

१६३. तेणं कालेणं तेणं समएणं रायगिहे नामं नगरे। गुणसिलए चेइए—वण्णओ जाव पुढविसिलापट्टओ। तस्स णं गुणसिलस्स चेइयस्स अदूरसामंते बहवे अण्णउत्थिया परिवसंति। तए णं समणे भगवं महावीरे जाव समोसढे जाव[7] परिसा पडिगया ॥

१६४. तेणं कालेणं तेणं समएणं समणस्स भगवओ महावीरस्स जेट्ठे अंतेवासी इंदभूती

---

१. पातस्स (ता)।
२. °च्छाते (ख, ब, म, स)।
३. सं० पा०—भावियप्पणो जाव तस्स।
४. सं० पा०—जहा सत्तमसए सत्तुद्देसए जाव अट्ठो निक्खित्तो।
५. भ० १।५१।
६. सं० पा०—महावीरे बहिया जाव विहरइ।
७. भ० ८।२७१।

नामं अणगारे जाव[1] उड्ढ जाणू[2] •अहोसिरे झाणकोट्ठोवगए सजमेण तवसा अप्पाण भावेमाणे° विहरइ ।।

१६५. तए णं ते अण्णउत्थिया जेणेव भगव गोयमे तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता भगव गोयम एव वयासी—तुब्भे ण अज्जो ! तिविह तिविहेण अस्सजय[3]-•विरय-पडिहय-पच्चक्खायपावकम्मा, सकिरिया, असवुडा, एगतदडा°, एगतवाला यावि भवह[4] ?

१६६ तए ण भगव गोयमे ते अण्णउत्थिए एव वयासी—केण कारणेण अज्जो ! अम्हे तिविह तिविहेण अस्सजय जाव एगतवाला यावि भवामो ?

१६७. तए ण ते अण्णउत्थिया भगव गोयम एव वयासी—तुब्भे ण अज्जो ! रीय रीयमाणा पाणे पेच्चेह, अभिहणह जाव[5] उद्दवेह[6], तए ण तुब्भे पाणे पेच्चेमाणा जाव उद्दवेमाणा[7] तिविह तिविहेण जाव एगतबाला यावि भवह ।।

१६८ तए ण भगव गोयमे ते अण्णउत्थिए एव वयासी—नो खलु अज्जो ! अम्हे रीय रीयमाणा पाणे पेच्चेमो जाव उद्दवेमो, अम्हे ण अज्जो ! रीय रीयमाणा काय च जोय च रीय च पडुच्च दिस्सा[8]-दिस्सा पदिस्सा[9]-पदिस्सा वयामो, तए ण अम्हे दिस्सा-दिस्सा वयमाणा पदिस्सा-पदिस्सा वयमाणा नो पाणे पेच्चेमो जाव नो उद्दवेमो, तए ण अम्हे पाणे अपेच्चेमाणा जाव अणोद्दवेमाणा तिविह तिविहेण जाव एगतपडिया यावि भवामो। तुब्भे ण अज्जो ! अप्पणा चेव तिविह तिविहेण जाव एगतबाला यावि भवह ।।

१६९. तए ण ते अण्णउत्थिया भगव गोयम एव वयासी—केण कारणेण अज्जो ! अम्हे तिविह तिविहेण जाव एगतवाला यावि भवामो ?

१७० तए ण भगव गोयमे ते अण्णउत्थिए एव वयासी—तुब्भे ण अज्जो ! रीय रीयमाणा पाणे पेच्चेह जाव उद्दवेह, तए ण तुब्भे पाणे पेच्चेमाणा जाव उद्दवेमाणा तिविह तिविहेण जाव एगतबाला यावि भवह ।।

१७१. तए ण भगव गोयमे ते अण्णउत्थिए एव पडिभणइ[10], पडिभणित्ता जेणेव समणे भगव महावीरे, तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता समण भगव महावीर वदइ नमसइ, वदित्ता नमसित्ता णच्चासण्णे णातिदूरे जाव[11] पज्जुवासति ।।

---

१ भ० १।९।

२. स० पा०—उड्ढजाणू जाव विहरइ।

३ स० पा०—अस्सजय जाव एगत°।

४ तुलना—भ० ८।२८५-२९०।

५ भ० ८।२८७।

६ उवद्दवेह (ख)।

७. उवद्दवेमाणा (ख)।

८. दिस्स (अ, ता, व, म)।

९ पदिस्स (अ, ख, ता, व, म)।

१० पडिहणइ (अ, क, ख, व, म, स)।

११. भ० १।१०।

१७२ गोयमादी ! समणे भगवं महावीरे भगवं गोयमं एवं वयासी—सुट्ठु णं तुमं गोयमा ! ते अण्णउत्थिए एवं वदासी, साहु णं तुमं गोयमा ! ते अण्णउत्थिए एवं वदासी। अत्थि णं गोयमा ! मम बहवे अंतेवासी समणा निग्गंथा छउमत्था, जे णं नो पभू एयं वागरणं वागरेत्तए, जहा णं तुमं। तं सुट्ठु णं तुमं गोयमा ! ते अण्णउत्थिए एवं वयासी, साहु णं तुमं गोयमा ! ते अण्णउत्थिए एवं वयासी ॥

१७३ तए णं भगवं गोयमे समणेणं भगवया महावीरेणं एवं वुत्ते समाणे हट्ठतुट्ठे समणं भगवं महावीरं वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी—

परमाणुपोग्गलादीणं जाणणा-पासणा-पदं

१७४ छउमत्थे णं भंते ! मणुस्से[1] परमाणुपोग्गलं किं जाणति-पासति ? उदाहु न जाणति न पासति ?
गोयमा ! अत्थेगतिए जाणति न पासति, अत्थेगतिए न जाणति न पासति ॥

१७५ छउमत्थे णं भंते ! मणुस्से दुपएसियं खंधं किं जाणति-पासति ? [2]•उदाहु न जाणति न पासति ?
गोयमा ! अत्थेगतिए जाणति न पासति, अत्थेगतिए न जाणति न पासति।° एवं जाव असंखेज्जपएसियं ॥

१७६. छउमत्थे णं भंते ! मणुस्से अणंतपएसियं खंधं किं [3]•जाणति-पासति ? उदाहु न जाणति न पासति ?°
गोयमा ! अत्थेगतिए जाणति-पासति, अत्थेगतिए जाणति न पासति, अत्थेगतिए न जाणति पासति, अत्थेगतिए न जाणति न पासति ॥

१७७. आहोहिए[4] णं भंते ! मणुस्से परमाणुपोग्गलं किं जाणति-पासति ? उदाहु न जाणति न पासति ? जहा छउमत्थे एवं आहोहिए वि जाव अणंतपएसियं ॥

१७८. परमाहोहिए णं भंते ! मणुस्से परमाणुपोग्गलं जं समयं जाणति तं समयं पासति ? जं समयं पासति तं समयं जाणति ?
नो इणट्ठे समट्ठे ॥

१७९. से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ—परमाहोहिए णं मणुस्से परमाणुपोग्गलं जं समयं जाणति नो तं समयं पासति ? जं समयं पासति नो तं समयं जाणति ?
गोयमा ! सागारे से नाणे भवइ, अणागारे से दंसणे भवइ। से तेणट्ठेणं[5] •गोयमा ! एवं वुच्चइ—परमाहोहिए णं मणुस्से परमाणुपोग्गलं जं समयं

---

१. मणूसे (अ, क, ता, ब, म)
२. सं० पा०—एवं चेव।
३. सं० पा०—पुच्छा।
४. अहोहिए (ख, स)।
५. सं० पा०—तेणट्ठेणं जाव नो।

जाणति नो त समय पासति, ज समय पासति° नो त समय जाणति। एव जाव अणतपदेसिय ॥

१८० केवली ण भते ! मणुस्से परमाणुपोग्गल [2]ज समय जाणति त समय पासति ? ज समय पासति त समय जाणति ?
नो इणट्ठे समट्ठे ॥

१८१ से केणट्ठेण भते ! एव वुच्चइ—केवली ण मणुस्से परमाणुपोग्गल ज समय जाणति नो त समय पासति ? ज समय पासति नो त समय जाणति ?
गोयमा ! सागारे से नाणे भवइ, अणागारे से दसणे भवइ। से तेणट्ठेण गोयमा ! एव वुच्चइ—केवली ण मणुस्से परमाणुपोग्गल ज समय जाणति नो त समय पासति, ज समय पासति नो त समय जाणति। एव° जाव अणतपएसिय ॥

१८२ सेव भते ! सेव भते ! त्ति ॥

नवमो उद्देसो

भवियदव्व-पद

१८३. रायगिहे जाव एव वयासी—अत्थि ण भते ! भवियदव्वनेरइया-भवियदव्व-नेरइया ?
हंता अत्थि ॥

१८४ से केणट्ठेण भते ! एव वुच्चइ—भवियदव्वनेरइया-भवियदव्वनेरइया ?
गोयमा ! जे भविए पंचिदिए तिरिक्खजोणिए वा मणुस्से वा नेरइएसु उववज्जित्तए। से तेणट्ठेण। एव जाव थणियकुमाराण ॥

१८५ अत्थि ण भते ! भवियदव्वपुढविकाइया-भवियदव्वपुढविकाइया ?
हता अत्थि ॥

१८६ से केणट्ठेण ?
गोयमा ! जे भविए तिरिक्खजोणिए वा मणुस्से वा देवे वा पुढविकाइएसु उववज्जित्तए। से तेणट्ठेण। आउक्काइय-वणस्सइकाइयाण एवं चेव। तेउ-वाउ-बेइदिय-तेइदिय-चउरिदियाण य जे भविए तिरिक्खजोणिए वा मणुस्से वा

---

२. स० पा०—जहा परमाहोहिए तहा केवली वि जाव।

तेउ-वाउ-बेइंदिय-तेइंदिय-चउरिंदिएसु उववज्जित्तए। पंचिंदियतिरिक्ख-जोणियाणं जे भविए नेरइए वा तिरिक्खजोणिए वा मणुस्से वा देवे वा पंचिंदियतिरिक्खजोणिए वा पंचिंदियतिरिक्खजोणिएसु उववज्जित्तए। एवं मणुस्सा वि। वाणमंतर-जोइसिय-वेमाणिया णं जहा नेरइया॥

१८७. भवियदव्वनेरइयस्स णं भंते! केवतियं कालं ठिती पण्णत्ता?
गोयमा! जहण्णेण अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं पुव्वकोडी॥

१८८. भवियदव्वअसुरकुमारस्स णं भंते! केवतियं कालं ठिती पण्णत्ता?
गोयमा! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं तिण्णि पलिओवमाइं। एवं जाव थणियकुमारस्स॥

१८९. भवियदव्वपुढविकाइयस्स णं—पुच्छा।
गोयमा! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं सातिरेगाइं दो सागरोवमाइं। एवं आउकाइयस्स वि। तेउ-वाउकाइयस्स वि जहा नेरइयस्स। वणस्सइकाइयस्स जहा पुढविकाइयस्स। बेइंदियस्स तेइंदियस्स चउरिंदियस्स जहा नेरइयस्स। पंचिंदियतिरिक्खजोणियस्स जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं तेत्तीसं सागरोवमाइं। एवं मणुस्सस्स वि। वाणमंतर-जोइसिय-वेमाणियस्स जहा असुरकुमारस्स॥

१९०. सेवं भंते! सेवं भंते! त्ति॥

दसमो उद्देसो

भावियप्पणो असिधारादि-ओगाहणादि-पदं

१९१. रायगिहे जाव एवं वयासी—अणगारे णं भंते! भावियप्पा असिधारं वा खुरधारं वा ओगाहेज्जा?
हंता ओगाहेज्जा॥
से णं तत्थ छिज्जेज्ज वा भिज्जेज्ज वा?
नो इणट्ठे समट्ठे। नो खलु तत्थ सत्थं कमइ॥

१९२. *अणगारे णं भंते! भावियप्पा अगणिकायस्स मज्झंमज्झेणं वीइवएज्जा?
हंता वीइवएज्जा।
से णं भंते! तत्थ झियाएज्जा?

१. [illegible]

गोयमा ! नो इणट्ठे समट्ठे । नो खलु तत्थ सत्थं कमइ ॥

१९३ अणगारे ण भते ! भावियप्पा पुक्खलसवट्टगस्स महामेहस्स मज्झमज्झेणं वीइवएज्जा ?
हता वीइवएज्जा ।
से ण भते ! तत्थ उल्ले सिया ?
गोयमा ! नो इणट्ठे समट्ठे । नो खलु तत्थ सत्थ कमइ ॥

१९४. अणगारे ण भते ! भावियप्पा गगाए महाणदीए पडिसोयं हव्वमागच्छेज्जा ?
हता हव्वमागच्छेज्जा ।
से ण भते ! तत्थ विणिहायमावज्जेज्जा ?
गोयमा ! नो इणट्ठे समट्ठे । नो खलु तत्थ सत्थ कमइ ॥

१९५ अणगारे ण भते ! भावियप्पा उदगावत्त वा उदगबिंदु वा ओगाहेज्जा ?
हंता ओगाहेज्जा ।
से ण भते ! तत्थ परियावज्जेज्जा ?
गोयमा ! नो इणट्ठे समट्ठे° । नो खलु तत्थ सत्थ कमइ ॥

परमाणुपोग्गलादीण वाउकाय-फास-पदं

१९६ परमाणुपोग्गले ण भते ! वाउयाएण फुडे ? वाउयाए वा परमाणुपोग्गलेण फुडे ?
गोयमा ! परमाणुपोग्गले वाउयाएण फुडे, नो वाउयाए परमाणुपोग्गलेण फुडे ॥

१९७ दुप्पएसिए ण भते ! खधे वाउयाएण फुडे ? वाउयाए वा दुप्पएसिएण खंधेण फुडे ? एव चेव । एव जाव असखेज्जपएसिए ॥

१९८ अणतपएसिए णं भते ! खधे वाउयाएण फुडे—पुच्छा ।
गोयमा ! अणतपएसिए खधे वाउयाएण फुडे, वाउयाए अणतपएसिएणं खधेण सिय फुडे, सिय नो फुडे ॥

१९९ वत्थी भते ! वाउयाएण फुडे ? वाउयाए वा वत्थिणा फुडे ?
गोयमा ! वत्थी वाउयाएण फुडे, नो वाउयाए वत्थिणा फुडे ॥

दव्वाण वण्णादि-पदं

२०० अत्थि ण भते ! इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए अहे दव्वाइ वण्णओ 'काल-नील'[1]-लोहिय-हालिद्द-सुक्किलाइ, गधओ सुब्भिगधाइ, दुब्भिगधाइं, रसओ तित्त-कडुय-कसाय-अबिल-महुराइ, फासओ कक्खड-मउय-गरुय-लहुय-सीय-उसिण-

---

१ काला नीला (अ, क, ख, ता, म) ।

निद्ध-लुक्खाइ, अण्णमण्णबद्धाइं, अण्णमण्णपुट्ठाइं, 'अण्णमण्णबद्धपुट्ठाइं'[1], अण्णमण्णघडत्ताए चिट्ठंति ?

हंता अत्थि। एवं जाव अहेसत्तमाए॥

२०१ अत्थि णं भंते! सोहम्मस्स कप्पस्स अहेदव्वाइं ? एवं चेव। एवं जाव ईसिपब्भाराए पुढवीए॥

२०२. सेवं भंते! सेवं भंते! जाव[2] विहरइ॥

२०३. तए णं समणे भगवं महावीरे[3] •अण्णया कयाइ रायगिहाओ नगराओ गुणसिलाओ चेइयाओ पडिनिक्खमइ, पडिनिक्खमित्ता° बहिया जणवयविहारं विहरइ॥

सोमिलमाहण-पदं

२०४ तेणं कालेणं तेणं समएणं वाणियगामे नामं नगरे होत्था—वण्णओ। दूतिपलासए चेइए—वण्णओ। तत्थ णं वाणियगामे नगरे सोमिले नामं माहणे परिवसति अड्ढे जाव[4] बहुजणस्स अपरिभूए, रिव्वेद[5] जाव[6] सुपरिनिट्ठिए, पंचण्हं खंडियसयाणं, 'सयस्स य'[7], कुडुंबस्स आहेवच्चं[8] •पोरेवच्चं सामित्तं भट्टित्तं आणा-ईसर-सेणावच्चं कारेमाणे पालेमाणे° विहरइ। तए णं समणे भगवं महावीरे जाव समोसढे जाव[9] परिसा पज्जुवासति॥

२०५. तए णं तस्स सोमिलस्स माहणस्स इमीसे कहाए लद्धट्ठस्स समाणस्स अयमेयारूवे[10] •अज्झत्थिए चिंतिए पत्थिए मणोगए संकप्पे° समुप्पज्जित्था—एवं खलु समणे नायपुत्ते पुव्वाणुपुव्विं चरमाणे गामाणुगामं दूइज्जमाणे सुहंसुहेणं विहरमाणे[11] इहमागए[12] •इहसंपत्ते इहसमोसढे इहेव वाणियगामे नगरे °दूतिपलासए चेइए अहापडिरूवं[13] •ओग्गहं ओगिण्हित्ता संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे° विहरइ। तं गच्छामि णं समणस्स नायपुत्तस्स अंतियं पाउब्भवामि, इमाइं च णं एयारूवाइं अट्ठाइं[14] •हेऊइं पसिणाइं कारणाइं° वागरणाइं पुच्छिस्सामि, तं जइ मे से इमाइं एयारूवाइं अट्ठाइं जाव वागरणाइं वागरेहिति ततो णं वंदीहामि नमंसीहामि जाव पज्जुवासीहामि, अह मे से इमाइं अट्ठाइं जाव

---

१. जाव (अ, क, ख, ता, ब, म, स)।
२ भ० १।५१।
३ सं० पा०—महावीरे जाव बहिया।
४. भ० २।९४।
५ रुव्वेद (अ, म), रिउव्वेद (क, स)।
६. भ० २।२४।
७. सायस्स (अ, क, ख, ता, म)।
८ सं० पा०—आहेवच्चं जाव विहरइ।
९ भ० १८।१३७।
१०. सं० पा०—अयमेयारूवे जाव समुप्पज्जित्था।
११. जाव (अ, क, ख, ता, ब, म, स)।
१२. सं० पा०—इहमागए जाव दूतिपलासए।
१३. सं० पा०—अहापडिरूवं जाव विहरइ।
१४. सं० पा०—अट्ठाइं जाव वागरणाइं।

वागरणाइं नो वागरेहिती तो णं एएहिं चेव अट्ठेहि य जाव वागरणेहि य निप्पट्ठपसिणवागरणं करेस्सामी ति कट्टु एवं संपेहेइ, संपेहेत्ता ण्हाए जाव[1] अप्पमहग्घाभरणालंकियसरीरे साम्रो गिहाम्रो पडिनिक्खमति, पडिनिक्खमित्ता पायविहारचारेणं एगेणं खंडियसएणं सद्धिं संपरिवुडे वाणियगामं नगरं मज्झमज्झेणं निग्गच्छइ, निग्गच्छित्ता जेणेव दूतिपलासए चेइए, जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता समणस्स भगवम्रो महावीरस्स अदूरसामंते ठिच्चा समणं भगवं महावीरं एवं वयासी—

२०६ जत्ता[2] ते भंते ? जवणिज्जं (ते भंते ?) ? अव्वाबाहं (ते भंते ?) ? फासुयविहारं (ते भंते ?) ?

सोमिला ! जत्ता वि मे, जवणिज्जं पि मे, अव्वाबाहं पि मे, फासुयविहारं पि मे ॥

२०७ किं ते भंते ! जत्ता ?

सोमिला ! जं मे तव-नियम-संजय-सज्झाय-झाणावस्सगमादीएसु जोगेसु जयणा, सेत्तं जत्ता ॥

२०८ किं ते भंते ! जवणिज्जं ?

सोमिला ! जवणिज्जे[3] दुविहे पण्णत्ते, तं जहा—इंदियजवणिज्जे य, नोइंदियजवणिज्जे य ॥

२०९ से किं तं इंदियजवणिज्जे ?

इंदियजवणिज्जे—जं मे सोइंदिय-चक्खिंदिय-घाणिंदिय-जिब्भिंदिय-फासिंदियाइं निरुवहयाइं वसे वट्टंति, सेत्तं इंदियजवणिज्जे ॥

२१० से किं तं नोइंदियजवणिज्जे ?

नोइंदियजवणिज्जे—जं मे कोह-माण-माया[4]-लोभा वोच्छिण्णा नो उदीरेंति, सेत्तं नोइंदियजवणिज्जे, सेत्तं जवणिज्जे ॥

२११ किं ते भंते ! अव्वाबाहं ?

सोमिला ! जं मे वातिय-पित्तिय-संभिय-सन्निवाइया[5] विविहा रोगायंका सरीरगया दोसा उवसंता नो उदीरेंति, सेत्तं अव्वाबाहं ॥

२१२ किं ते भंते ! फासुयविहारं ?

सोमिला ! जण्णं आरामेसु उज्जाणेसु देवकुलेसु सभासु पवासु इत्थी-पसु-पंडगविवज्जियासु वसहीसु फासु-एसणिज्जं पीढ-फलग-सेज्जा-संथारगं उवसंपज्जित्ताणं विहरामि, सेत्तं फासुयविहारं ॥

---

१ भ० २।६७।

२. तुलना—नायाधम्मकहाओ १।५।७०-७६।

३. जमणिज्जे (अ, ख, ता, म)।

४ माय (क, ख, ता)।

५. सन्निवाइय (अ, ख)।

२१३. सरिसवा[1] ते भंते ! किं भक्खेया ? अभक्खेया ?
सोमिला ! सरिसवा (मे ?) भक्खेया वि अभक्खेया वि ॥

२१४ से केणट्ठेण भंते ! एवं वुच्चइ—सरिसवा मे भक्खेया वि अभक्खेया वि ?
से नूणं भे सोमिला ! बंभण्णएसु नएसु दुविहा सरिसवा पण्णत्ता, तं जहा—मित्तसरिसवा य, धन्नसरिसवा य।
तत्थ णं जेते मित्तसरिसवा ते तिविहा पण्णत्ता, तं जहा—'सहजायया, सहवड्ढियया, सहपंसुकीलियया'[2], ते णं समणाणं निग्गंथाणं अभक्खेया।
तत्थ णं जेते धन्नसरिसवा ते दुविहा पण्णत्ता, तं जहा—सत्थपरिणया य, असत्थपरिणया य। तत्थ णं जेते असत्थपरिणया ते णं समणाणं निग्गंथाणं अभक्खेया। तत्थ णं जेते सत्थपरिणया ते दुविहा पण्णत्ता, तं जहा—एसणिज्जा य, अणेसणिज्जा य। तत्थ णं जेते अणेसणिज्जा ते समणाणं निग्गंथाणं अभक्खेया। तत्थ णं जेते एसणिज्जा ते दुविहा पण्णत्ता, तं जहा—जाइया य, अजाइया य। तत्थ णं जेते अजाइया ते णं समणाणं निग्गंथाणं अभक्खेया। तत्थ णं जेते जाइया ते दुविहा पण्णत्ता, तं जहा—लद्धा य, अलद्धा य। तत्थ णं जेते अलद्धा ते णं समणाणं निग्गंथाणं अभक्खेया। तत्थ णं जेते लद्धा ते णं समणाणं निग्गंथाणं भक्खेया। से तेणट्ठेणं सोमिला ! एवं वुच्चइ[3]—•सरिसवा मे भक्खेया वि° अभक्खेया वि ॥

२१५. मासा ते भंते ! किं भक्खेया ? अभक्खेया ?
सोमिला ! मासा मे भक्खेया वि, अभक्खेया वि ॥

२१६ से केणट्ठेणं[4] •भंते ! एवं वुच्चइ—मासा मे भक्खेया वि° अभक्खेया वि ?
से नूणं भे[5] सोमिला ! बंभण्णएसु नएसु दुविहा मासा पण्णत्ता, तं जहा—दव्वमासा य, कालमासा य।
तत्थ णं जेते कालमासा ते णं सावणादीया आसाढपज्जवसाणा दुवालस पण्णत्ता, तं जहा—सावणे, भद्दवए, आसोए[6], कत्तिए, मग्गसिरे, पोसे, माहे, फग्गुणे, चेत्ते, वइसाहे, जेट्ठामूले, आसाढे। ते णं समणाणं निग्गंथाणं अभक्खेया।
तत्थ णं जेते दव्वमासा ते दुविहा पण्णत्ता, तं जहा—अत्थमासा य, धण्णमासा य।

---

१. सरिसवया (ना० १।५।७३)।
२. सहजायए सहवड्ढियए सहपंसुकीलियए (अ, क, ख, ता, ब, म)।
३. सं० पा०—वुच्चइ जाव अभक्खेया।
४. सं० पा०—केणट्ठेणं जाव अभक्खेया।
५. भंते (अ, ता, ब, म); × (ख)।
६. अस्सोए (अ, क, ता, ब, म)

तत्थ णं जेते अत्थमासा ते दुविहा पण्णत्ता, तं जहा—सुवण्णमासा य, रुप्पमासा य। ते णं समणाणं निग्गंथाणं अभक्खेया।

तत्थ णं जेते धण्णमासा ते दुविहा पण्णत्ता, तं जहा— सत्थपरिणया य, असत्थ-परिणया य। एवं जहा धण्णसरिसवा जाव से तेणट्ठेणं जाव अभक्खेया वि ॥

२१७. कुलत्था ते भंते ! किं भक्खेया ? अभक्खेया ?

सोमिला ! कुलत्था मे भक्खेया वि अभक्खेया वि ॥

२१८ से केणट्ठेणं जाव अभक्खेया वि ?

से नूणं भे सोमिला ! बंभण्णएसु नएसु दुविहा कुलत्था पण्णत्ता, तं जहा—इत्थिकुलत्था य, धण्णकुलत्था य।

तत्थ णं जेते इत्थिकुलत्था ते तिविहा पण्णत्ता, तं जहा—'कुलवधुया इ वा, कुलमाउया इ वा, कुलधुया'[1] इ वा। ते णं समणाणं निग्गंथाणं अभक्खेया।

तत्थ णं जेते धण्णकुलत्था एवं जहा धण्णसरिसवा। से तेणट्ठेणं जाव अभक्खेया वि ॥

२१९ एगे भवं ? दुवे भवं ? अक्खए भवं ? अव्वए भवं ? अवट्ठिए भवं ? अणेगभूय-भाव-भविए भवं ?

सोमिला ! एगे वि अहं जाव अणेगभूय-भाव-भविए वि अहं ॥

२२० से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ[2]—°एगे वि अहं जाव अणेगभूय-भाव°-भविए वि अहं ?

सोमिला ! दव्वट्ठयाए एगे अहं, नाणदंसणट्ठयाए दुविहे अहं, पएसट्ठयाए अक्खए वि अहं, अव्वए वि अहं, अवट्ठिए वि अहं, उवयोगट्ठयाए अणेगभूय-भाव-भविए वि अहं। से तेणट्ठेणं जाव अणेगभूय-भाव-भविए वि अहं ॥

२२१ एत्थ णं से सोमिले माहणे संबुद्धे समणं भगवं महावीरं वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी—जहा खंदओ जाव[3] से जहेयं तुब्भे वदह। जहा णं देवाणुप्पियाणं अंतिए बहवे राईसर-तलवर-माडंबिय-कोडुंबिय-इब्भ-सेट्ठि-सेणावइ-सत्थवाहप्पभितओ[4] °मुंडा भवित्ता णं अगाराओ अणगारियं पव्वयंति, नो खलु अहं तहा संचाएमि[5], अहं णं देवाणुप्पियाणं अंतिए दुवालस-विहं सावगधम्मं पडिवज्जिस्सामि° जाव दुवालसविहं सावगधम्मं पडिवज्जति, पडिवज्जित्ता समणं भगवं महावीरं वंदति[7] °नमंसति, वंदित्ता नमंसित्ता जामेव दिसं पाउब्भूए तामेव दिसं° पडिगए ॥

---

१ कुलकण्णया इ वा कुलमाउया इ वा कुल-वहुया (अ, क, ता, ब, स)।

२. सं० पा०—वुच्चइ जाव भविए।

३ भ० २।५०-५२।

४ पू०—राय० सू० ६९५।

५. सं० पा०—एवं जहा रायपसेणइज्जे चित्तो।

६. पू०—राय० सू० ६९५।

७. सं० पा० —वंदति जाव पडिगए।

२२२. तए ण से सोमिले माहणे समणोवासए जाए—अभिगयजीवाजीवे जाव[1] अहा-परिग्गहिएहि तवोकम्मेहिं अप्पाण भावेमाणे विहरइ ॥

२२३ भतेति ! भगव गोयमे समणं भगव महावीर वदति नमसति, वदित्ता नमसित्ता एव वयासी—पभू ण भते ! सोमिले माहणे देवाणुप्पियाण अतिए मुडे भवित्ता अगाराओ अणगारिय पव्वइत्तए ?

नो इणट्ठे समट्ठे । जहेव सखे तहेव निरवसेस जाव[2] सव्वदुक्खाण अत काहिति ॥

२२४ सेव भते ! सेव भते ! त्ति जाव[3] विहरइ ॥

---

१. भ० २।६४ ।

२. भ० १२।२७,२८ ।

३. भ० १।५१ ।

एगूणवीसइमं सतं

पढमो उद्देसो

१ लेस्सा य २ गब्भ ३. पुढवी, ४. महासवा ५ चरम ६. दीव ७ भवणा य ।
८. निव्वत्ति ९. करण १०. वणचरसुरा य एगूणवीसइमे ।।१।।

लेस्सा-पदं

१ रायगिहे जाव एवं वयासी—कति ण भते ! लेस्साओ पण्णत्ताओ ?
गोयमा ! छल्लेसाओ पण्णत्ताओ, त जहा—एव जहा पण्णवणाए चउत्थो लेसुद्देसओ भाणियव्वो[1] निरवसेसो ।।

२ सेव भते ! सेव भते ! त्ति ।।

बीओ उद्देसो

३. कति ण भते ! लेस्साओ पण्णत्ताओ ? एव जहा पण्णवणाए गब्भुद्देसो सो चेव निरवसेसो भाणियव्वो[2] ।।

४ सेव भते ! सेव भते ! त्ति ।।

---

१. प० १७।४ । २. प० १७।६ ।

तइओ उद्देसो

पुढविकाइय-पदं

५. [1]रायगिहे जाव एव वयासी—सिय भते ! जाव[2] चत्तारि पच पुढविक्काइया एगयओ साधारणसरीर बधति, बधित्ता तओ पच्छा आहारेति वा परिणामेति वा सरीर वा बधति ?
नो इणट्ठे समट्ठे । पुढविक्काइयाण पत्तेयाहारा पत्तेयपरिणामा पत्तेय सरीर बधति, बधित्ता तओ पच्छा आहारेति वा परिणामेति वा सरीर वा बधंति ।।

६ तेसि ण भते ! जीवाण कति लेस्साओ पण्णत्ताओ ?
गोयमा ! चत्तारि लेस्साओ पण्णत्ताओ, त जहा—कण्हलेस्सा, नीललेस्सा, काउलेस्सा, तेउलेस्सा ।।

७. ते ण भते ! जीवा किं सम्मदिट्ठी ? मिच्छदिट्ठी[3] ? सम्मामिच्छदिट्ठी ?
गोयमा ! नो सम्मदिट्ठी, मिच्छदिट्ठी, नो सम्मामिच्छदिट्ठी ।।

८ ते ण भते ! जीवा किं नाणी ? अण्णाणी ?
गोयमा ! नो नाणी, अण्णाणी, नियमा दुअण्णाणी, त जहा—मतिअण्णाणी य, सुयअण्णाणी य ।।

९. ते ण भते ! जीवा किं मणजोगी ? वइजोगी ? कायजोगी ?
गोयमा ! नो मणजोगी, नो वइजोगी, कायजोगी ।।

१०. ते ण भते ! जीवा कि सागारोवउत्ता ? अणागारोवउत्ता ?
गोयमा ! सागारोवउत्ता वि, अणागारोवउत्ता वि ।।

११ ते ण भते ! जीवा किमाहारमाहारेति ?
गोयमा ! दव्वओ ण अणंतपदेसियाइं दव्वाइं—एव जहा पण्णवणाए पढमे आहारुद्देसए जाव[4] सव्वप्पणयाए[5] आहारमाहारेति ।।

१२. ते ण भते ! जीवा जमाहारेति त चिज्जति, ज नो आहारेति त नो चिज्जति, चिण्णे वा से ओद्दाइ पलिसप्पति वा ?
हता गोयमा ! ते णं जीवा जमाहारेति तं चिज्जति, ज नो आहारेति जाव पलिसप्पति वा ।।

---

१. इह चेयं द्वारगाथा क्वचिद् दृश्यते—
सिय लेसदिट्ठिणाणे,
जोगुवओगे तहा किमाहारो ।
पाणाइवाय उप्पायठिई,
समुग्घाय उव्वट्टी (वृ) ।

२. यावत्करणाद् द्वौ वा त्रयो वा (वृ) ।
३. मिच्छादिट्ठी (क, ख, ता, ब, म, स) ।
४. प० २८।१ ।
५. सव्वपयाए (ब) ।

१३. तेसि ण भते ! जीवाण एव सण्णाति वा पण्णाति वा मणोति वा वईति वा अम्हे ण आहारमाहारेमो ?
नो इणट्ठे समट्ठे, आहारेति पुण ते ॥

१४ तेसि ण भते ! जीवाण एव सण्णाति वा[1] •पण्णाति वा मणोति वा° वईति वा अम्हे ण इट्ठाणिट्ठे फासे पडिसवेदेमो ?
नो इणट्ठे समट्ठे, पडिसवेदेति पुण ते ॥

१५. ते ण भते ! जीवा कि पाणाइवाए उवक्खाइज्जति, मुसावाए, अदिण्णादाणे जाव[2] मिच्छादसणसल्ले उवक्खाइज्जति ?
गोयमा ! पाणाइवाए वि उवक्खाइज्जति जाव मिच्छादसणसल्ले वि उवक्खाइज्जति। जेसि पि ण जीवाण ते जीवा एवमाहिज्जति तेसि पि ण जीवाण नो विण्णाए नाणत्ते ॥

१६ ते ण भते ! जीवा कओहितो उववज्जति—कि नेरइएहितो उववज्जति० ?
एव जहा वक्कतीए पुढविक्काइयाण उववाओ तहा भाणियव्वो[3] ॥

१७ तेसि ण भते ! जीवाण केवतिय काल ठिती पण्णत्ता ?
गोयमा ! जहण्णेण अतोमुहुत्त, उक्कोसेण बावीस वाससहस्साइ ॥

१८ तेसि ण भते ! जीवाण कति समुग्घाया पण्णत्ता ?
गोयमा ! तओ समुग्घाया पण्णत्ता, त जहा—वेयणासमुग्घाए, कसायसमुग्घाए, मारणतियसमुग्घाए ॥

१९. ते ण भते ! जीवा मारणतियसमुग्घाएण कि समोहया मरति ? असमोहया मरति ?
गोयमा ! समोहया वि मरति, असमोहया वि मरति ॥

२०. ते ण भते ! जीवा अणतर उव्वट्टित्ता कहिं गच्छति ? कहिं उववज्जति ?
एव उव्वट्टणा जहा वक्कतीए[4] ॥

आउक्काइयादि-पदं

२१ सिय भते ! जाव चत्तारि पच आउक्काइया एगयओ साहारणसरीर बधति, बधित्ता तओ पच्छा आहारेति० ?
एव जो पुढविक्काइयाण गमो सो चेव भाणियव्वो जाव उव्वट्टति, नवर—ठिती सत्त वाससहस्साइ उक्कोसेण, सेस त चेव ॥

२२ सिय भते ! जाव चत्तारि पच तेउक्काइया० ? एव चेव, नवर—उववाओ

---

१. स० पा०—सण्णाति या जाव वईति।
२ भ० १।३८४।
३. प० ६।
४. प० ६।

ठिती उव्वट्टणा य जहा[1] पण्णवणाए सेसं तं चेव। वाउकाइयाणं एवं चेव, नाणत्तं नवरं - चत्तारि समुग्घाया॥

२३. सिय भंते! जाव चत्तारि पंच वणस्सइकाइया—पुच्छा।
गोयमा! नो इणट्ठे समट्ठे। अणंता वणस्सइकाइया एगयओ साहारणसरीरं बंधंति, बंधित्ता तओ पच्छा आहारेंति वा परिणामेंति वा सरीरं वा बंधंति। सेसं जहा तेउकाइयाणं जाव उव्वट्टंति, नवरं—आहारो नियमं छद्दिसिं, ठिती जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेण वि अंतोमुहुत्तं, सेसं तं चेव॥

थावरजीवाणं ओगाहणाए अप्पाबहुत्त-पद

२४ एएसि णं भंते! पुढविकाइयाणं आउ-तेउ-वाउ-वणस्सइकाइयाणं सुहुमाणं बादराणं पज्जत्तगाणं अपज्जत्तगाणं जहण्णुक्कोसियाए ओगाहणाए कयरे कयरेहितो[2] •अप्पा वा? बहुया वा? तुल्ला वा? ° विसेसाहिया वा?
गोयमा! १. सव्वत्थोवा सुहुमनिओयस्स अपज्जत्तगस्स जहण्णिया ओगाहणा २ सुहुमवाउक्काइयस्स अपज्जत्तगस्स जहण्णिया ओगाहणा असंखेज्जगुणा ३. सुहुमतेउकाइयस्स अपज्जत्तगस्स जहण्णिया ओगाहणा असंखेज्जगुणा ४ सुहुमआउकाइयस्स अपज्जत्तगस्स जहण्णिया ओगाहणा असंखेज्जगुणा ५ सुहुमपुढविक्काइयस्स अपज्जत्तगस्स जहण्णिया ओगाहणा असंखेज्जगुणा ६. बादरवाउकाइयस्स अपज्जत्तगस्स जहण्णिया ओगाहणा असंखेज्जगुणा ७ बादरतेउक्काइयस्स अपज्जत्तगस्स जहण्णिया ओगाहणा असंखेज्जगुणा ८ बादरआउकाइयस्स अपज्जत्तगस्स जहण्णिया ओगाहणा असंखेज्जगुणा ९ बादरपुढविकाइयस्स अपज्जत्तगस्स जहण्णिया ओगाहणा असंखेज्जगुणा १०,११ पत्तेयसरीरबादरवणस्सइकाइयस्स बादरनिओयस्स एएसि णं पज्जत्तगाणं एएसि णं अपज्जत्तगाणं जहण्णिया ओगाहणा दोण्ह वि तुल्ला असंखेज्जगुणा १२. सुहुमनिगोयस्स पज्जत्तगस्स जहण्णिया ओगाहणा असंखेज्जगुणा १३ तस्सेव अपज्जत्तगस्स उक्कोसिया ओगाहणा विसेसाहिया १४ तस्स चेव पज्जत्तगस्स उक्कोसिया ओगाहणा विसेसाहिया १५ सुहुमवाउकाइयस्स पज्जत्तगस्स जहण्णिया ओगाहणा असंखेज्जगुणा १६. तस्स चेव अपज्जत्तगस्स उक्कोसिया ओगाहणा विसेसाहिया १७ तस्स चेव पज्जत्तगस्स उक्कोसिया ओगाहणा विसेसाहिया १८-२० एवं सुहुमतेउक्काइयस्स वि २१-२३ एवं सुहुमआउक्काइयस्स वि २४-२६ एवं सुहुमपुढविकाइयस्स वि २७-२९ एवं बादरवाउकाइयस्स वि ३०-३२. एवं बादरतेउकाइयस्स वि ३३-३५ एवं बादरआउकाइयस्स वि ३६-३८ एवं बादरपुढविकाइयस्स वि सव्वेसिं तिविहेणं गमेणं भाणियव्वं, ३९ बादरनिगोयस्स पज्जत्तगस्स जहण्णिया ओगाहणा असंखेज्जगुणा

---

१. प० ४,६।
२. सं० पा०—कयरेहितो जाव विसेसाहिया।

४० तस्स चेव अपज्जत्तगस्स उक्कोसिया ओगाहणा विसेसाहिया ४१ तस्स चेव पज्जत्तगस्स उक्कोसिया ओगाहणा विसेसाहिया ४२ पत्तेयसरीरबादरवणस्सइ-काइयस्स पज्जत्तगस्स जहण्णिया ओगाहणा असखेज्जगुणा ४३ तस्स चेव अपज्जत्तगस्स उक्कोसिया ओगाहणा असखेज्जगुणा ४४ तस्स चेव पज्जत्तगस्स उक्कोसिया ओगाहणा असखेज्जगुणा ।।

थावरजीवाण सव्वसुहुम-सव्वबादर-पदं

२५ एयस्स ण भते ! पुढविकाइयस्स आउक्काइयस्स तेउकाइयस्स वाउकाइयस्स वणस्सइकाइयस्स य कयरे काये सव्वसुहुमे ? कयरे काए सव्वसुहुमतराए ?
गोयमा ! वणस्सइकाए सव्वसुहुमे, वणस्सइकाए सव्वसुहुमतराए ।।

२६ एयस्स ण भते ! पुढविकाइयस्स आउक्काइयस्स तेउकाइयस्स वाउकाइयस्स य कयरे काये सव्वसुहुमे ? कयरे काये सव्वसुहुमतराए ?
गोयमा ! वाउक्काए सव्वसुहुमे, वाउक्काए सव्वसुहुमतराए ।।

२७ एयस्स ण भते ! पुढविकाइयस्स आउक्काइयस्स तेउक्काइयस्स य कयरे काये सव्वसुहुमे ? कयरे काये सव्वसुहुमतराए ?
गोयमा ! तेउक्काए सव्वसुहुमे, तेउक्काए सव्वसुहुमतराए ।।

२८. एयस्स ण भते ! पुढविक्काइयस्स आउक्काइयस्स य कयरे काये सव्वसुहुमे ? कयरे काये सव्वसुहुमतराए ?
गोयमा ! आउक्काए सव्वसुहुमे, आउक्काए सव्वसुहुमतराए ।।

२९ एयस्स ण भते ! पुढविक्काइयस्स आउक्काइयस्स तेउकाइयस्स वाउकाइयस्स वणस्सइकाइयस्स य कयरे काये सव्ववादरे ? कयरे काये सव्वबादरतराए ?
गोयमा ! वणस्सइकाए सव्वबादरे, वणस्सइकाए सव्ववादरतराए ।।

३०. एयस्स ण भते ! पुढविकाइयस्स आउकाइयस्स तेउकाइयस्स वाउकाइयस्स य कयरे काए सव्ववादरे ? कयरे काए सव्ववादरतराए ?
गोयमा ! पुढविक्काए सव्ववादरे, पुढविक्काए सव्ववादरतराए ।।

३१ एयस्स ण भते ! आउक्काइयस्स तेउक्काइयस्स वाउकाइयस्स य कयरे काए सव्ववादरे ? कयरे काए सव्ववादरतराए ?
गोयमा ! आउक्काए सव्ववादरे, आउक्काए सव्वबादरतराए ।।

३२ एयस्स ण भते ! तेउकाइयस्स वाउकाइस्स य कयरे काए सव्ववादरे ? कयरे काए सव्ववादरतराए ?
गोयमा ! तेउक्काए सव्ववादरे, तेउक्काए सव्ववादरतराए ।।

पुढवि-सरीरस्स महालयत्त-पदं

३३. केमहालए ण भते ! पुढविसरीरे पण्णत्ते ?
गोयमा ! अणताण सुहुमवणस्सइकाइयाण जावइया सरीरा से एगे सुहुमवाउ-

सरीरे, असखेज्जाण सुहुमवाउसरीराणं[1] जावइया सरीरा से एगे सुहुमतेउसरीरे, असखेज्जाण सुहुमतेउकाइयसरीराण जावइया सरीरा से एगे सुहुमे आउसरीरे, असखेज्जाण सुहुमआउक्काइयसरीराणं जावइया सरीरा से एगे सुहुमे पुढवि-सरीरे, असखेज्जाण सुहुमपुढविकाइयसरीराण जावइया सरीरा से एगे बादर-वाउसरीरे, असखेज्जाण बादरवाउक्काइयाण जावइया सरीरा से एगे बादर-तेउसरीरे, असखेज्जाण बादरतेउकाइयाण जावइया सरीरा से एगे बादरआउ-सरीरे, असखेज्जाण बादरआउकाइयाण जावइया सरीरा से एगे बादरपुढवि-सरीरे। एमहालए ण गोयमा! पुढविसरीरे पण्णत्ते॥

पुढविकाइयस्स सरीरोगाहणा-पदं

३४. पुढविकाइयस्स ण भते! केमहालिया सरीरोगाहणा पण्णत्ता?
गोयमा! से जहानामए रण्णो चाउरतचक्कवट्टिस्स वण्णगपेसिया तरुणी बलव जुगव जुवाणी अप्पायंका [2]•थिरग्गहत्था दढपाणि-पाय-पास-पिट्ठतरोरु-परिणता तलजमलजुयल-परिघनिभबाहू उरस्सबलसमण्णागया लघण-पवण-जइण-वायाम-समत्था छेया दक्खा पत्तट्ठा कुसला मेहावी निउणा° निउण-सिप्पोवगया तिक्खाए वइरामईए सण्हकरणीए तिक्खेण वइरामएण वट्टावर-एण एग मह पुढविकाइय जतुगोलासमाण गहाय पडिसाहरिय-पडिसाहरिय पडिसखिविय-पडिसखिविय जाव इणामेवत्ति कट्टु तिसत्तक्खुत्तो ओप्पीसेज्जा, तत्थ ण गोयमा! अत्थेगतिया पुढविक्काइया आलिद्धा अत्थेगतिया पुढविक्का-इया नो आलिद्धा, अत्थेगतिया सघट्टिया अत्थेगतिया नो सघट्टिया, अत्थेग-तिया परियाविया अत्थेगतिया नो परियाविया, अत्थेगतिया उद्दविया अत्थेग-तिया नो उद्दविया, अत्थेगतिया पिट्ठा अत्थेगतिया नो पिट्ठा, पुढविकाइयस्स णं गोयमा! एमहालिया सरीरोगाहणा पण्णत्ता॥

पुढविकाइयस्स वेदणा-पदं

३५. पुढविकाइए ण भते! अक्कंते समाणे केरिसिय वेदण पच्चणुब्भवमाणे विहरइ?
गोयमा! से जहानामए—केइ पुरिसे तरुणे बलव [3]•जुगव जुवाणे अप्पातके थिरग्गहत्थे दढपाणि-पाय-पास-पिट्ठतरोरुपरिणते तलजमलजुयल-परिघनिभ-बाहू चम्मेट्ठग-दुहण-मुट्ठिय-समाहत-विचितगत्तकाए उरस्सबलसमण्णागए लघण-पवण-जइण-वायाम-समत्थे छेए दक्खे पत्तट्ठे कुसले मेहावी निउणे°

---

१. सुहुमवाउकाइयाण ति क्वचित्पाठ. (वृ)।

२. स० पा०—वण्णओ जाव निउणसिप्पोवगया, नवरं—चम्मेट्ठ-दुहण-मुट्ठियसमाहयणिचिय-गत्तकाया न भण्णति, सेस त चेव जाव निउण°।

३. स० पा०—बलव जाव निउण°।

निउणसिप्पोवगए एग पुरिस जुण्ण जरा-जज्जरिय-देह[1] •आउर झूसिय पिवासिय° दुब्बल किलत जमलपाणिणा मुद्धाणसि अभिहणेज्जा, से ण गोयमा ! पुरिसे तेण पुरिसेण जमलपाणिणा मुद्धाणसि अभिहए समाणे केरिसिय वेदण पच्चणुब्भवमाणे विहरति ?

अणिट्ठ समणाउसो !

तस्स ण गोयमा ! पुरिसस्स वेदणाहिंतो पुढविकाइए अक्कते समाणे एत्तो अणिट्ठतरिय चेव अकततरिय[2] •अप्पियतरिय असुहतरिय अमणुण्णतरिय° अमणामतरिय चेव वेदण पच्चणुब्भवमाणे विहरइ ।।

आउकाइयादीणं वेदणा-पद

३६ आउयाए ण भते ! सघट्टिए समाणे केरिसिय वेदण पच्चणुब्भवमाणे विहरइ ?
गोयमा ! जहा पुढविकाइए एव चेव । एव तेउयाए वि । एव वाउयाए वि । एव वणस्सइकाए वि जाव[3] विहरइ ।।

३७ सेवं भते ! सेव भते ! त्ति ।।

चउत्थो उद्देसो

महासवादि-पद

३८ सिय भते ! नेरइया महासवा महाकिरिया महावेयणा महानिज्जरा ?
गोयमा ! नो इणट्ठे समट्ठे ।।

३९ सिय भते ! नेरइया महासवा महाकिरिया महावेयणा अप्पनिज्जरा ?
हता सिया ।।

४०. सिय भते ! नेरइया महासवा महाकिरिया अप्पवेयणा महानिज्जरा ?
गोयमा ! नो इणट्ठे समट्ठे ।।

४१ सिय भते ! नेरइया महासवा महाकिरिया अप्पवेयणा अप्पनिज्जरा ?
गोयमा ! नो इणट्ठे समट्ठे ।।

४२ सिय भते ! नेरइया महासवा अप्पकिरिया महावेयणा महानिज्जरा ?
गोयमा ! नो इणट्ठे समट्ठे ।।

---

१. स० पा०—देह जाव दुब्बल ।
२. स० पा०—अकततरिय जाव अमणामतरिय ।
३. भ० १९।३५ ।

४३. सिय भंते ! नेरइया महासवा अप्पकिरिया महावेयणा अप्पनिज्जरा ?
गोयमा ! नो इणट्ठे समट्ठे ॥

४४. सिय भंते ! नेरइया महासवा अप्पकिरिया अप्पवेयणा महानिज्जरा ?
नो[1] इणट्ठे समट्ठे ॥

४५ सिय भंते ! नेरइया महासवा अप्पकिरिया अप्पवेयणा महानिज्जरा ?
नो इणट्ठे समट्ठे ॥

४६ सिय भंते ! नेरइया अप्पासवा महाकिरिया महावेयणा महानिज्जरा ?
नो इणट्ठे समट्ठे ॥

४७ सिय भंते ! नेरइया अप्पासवा महाकिरिया महावेयणा अप्पनिज्जरा ?
नो इणट्ठे समट्ठे ॥

४८ सिय भंते ! नेरइया अप्पासवा महाकिरिया अप्पवेयणा महानिज्जरा ?
नो इणट्ठे समट्ठे ॥

४९. सिय भंते ! नेरइया अप्पासवा महाकिरिया अप्पवेयणा अप्पनिज्जरा ?
नो इणट्ठे समट्ठे ॥

५० सिय भंते ! नेरइया अप्पासवा अप्पकिरिया महावेयणा महानिज्जरा ?
नो इणट्ठे समट्ठे ॥

५१ सिय भंते ! नेरइया अप्पासवा अप्पकिरिया महावेयणा अप्पनिज्जरा ?
नो इणट्ठे समट्ठे ॥

५२ सिय भंते ! नेरइया अप्पासवा अप्पकिरिया अप्पवेयणा महानिज्जरा ?
नो इणट्ठे समट्ठे ॥

५३ सिय भंते ! नेरइया अप्पासवा अप्पकिरिया अप्पवेयणा अप्पनिज्जरा ?
नो इणट्ठे समट्ठे । एते सोलस भंगा ॥

५४ सिय भंते ! असुरकुमारा महासवा महाकिरिया महावेयणा महानिज्जरा ?
नो इणट्ठे समट्ठे । एवं चउत्थो भंगो भाणियव्वो, सेसा पण्णरस भंगा खोडेयव्वा । एवं जाव थणियकुमारा ॥

५५. सिय भंते ! पुढविक्काइया महासवा महाकिरिया महावेयणा महानिज्जरा ?
हंता सिया । एवं जाव—

५६ सिय भंते ! पुढविक्काइया अप्पासवा अप्पकिरिया अप्पवेयणा अप्पनिज्जरा ?
हंता सिया । एवं जाव मणुस्सा । वाणमंतर-जोइसिय-वेमाणिया जहा असुरकुमारा ॥

५७ सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति ॥

---

१ सदृशप्रकरणेपि पूर्ववर्तिसूत्रेषु 'गोयमा' इति पदं लभ्यते । अस्मिन्नुत्तरवर्तिसूत्रेषु च एतत् पदं न दृश्यते ।

पंचमो उद्देसो

चरम-परम-पदं

५८ अत्थि ण भते ! चरमा[1] वि नेरइया ? परमा वि नेरइया ?
हता अत्थि ॥

५९. से नूण भते ! चरमेहिंतो नेरइएहिंतो परमा नेरइया महाकम्मतरा चेव, महाकिरियतरा चेव, महस्सवतरा चेव, महावेयणतरा चेव, परमेहिंतो वा नेरइएहिंतो चरमा नेरइया अप्पकम्मतरा चेव, अप्पकिरियतरा चेव, अप्पस्सवतरा चेव, अप्पवेयणतरा चेव ?
हता गोयमा ! चरमेहितो नेरइएहितो परमा जाव महावेयणतरा चेव, परमेहितो वा नेरइएहितो चरमा नेरइया जाव अप्पवेयणतरा चेव ॥

६० से केणट्ठेण भते ! एव वुच्चइ जाव अप्पवेयणतरा चेव ?
गोयमा ! ठिति पडुच्च । से तेणट्ठेण गोयमा ! एव वुच्चइ जाव अप्पवेयणतरा चेव ॥

६१. अत्थि ण भते ! चरमा वि असुरकुमारा ? परमा वि असुरकुमारा ? एव चेव, नवर—विवरीय भाणियव्व, परमा अप्पकम्मा, चरमा महाकम्मा[2] । सेस त चेव जाव थणियकुमारा ताव एमेव । पुढविकाइया जाव मणुस्सा एते जहा नेरइया । वाणमतर-जोइसिय-वेमाणिया जहा असुरकुमारा ॥

वेदणा-पद

६२. कतिविहा ण भते ! वेदणा पण्णत्ता ?
गोयमा ! दुविहा वेदणा पण्णत्ता, त जहा—निदा य, अनिदा य ॥

६३ नेरइया ण भते ! कि निदाय वेदण वेदेति ? अनिदाय वेदण वेदेति ?
गोयमा ! निदाय पि वेदण वेदेति, अनिदाय पि वेदण वेदेति । जहा पण्णवणाए जाव[3] वेमाणियत्ति ॥

६४. सेव भते ! सेव भते ! त्ति ॥

———

१ चरिमा (अ, ख, व, म) ।
२ बहुकम्मा (अ, व) ।
३. प० ३५ ।

छट्ठो उद्देसो

दीवसमुद्द-पदं

६५. कहि ण भते ! दीवसमुद्दा ? केवतिया ण भते ! दीवसमुद्दा ? किसठिया णं भते ! दीवसमुद्दा ? एव जहा जीवाभिगमे दीवसमुद्दुद्देसो सो चेव इह वि जोइसमडिउद्देसगवज्जो[1] भाणियव्वो जाव परिणामो, जीवउववाओ जाव[2] अणतखुत्तो ॥

६६. सेव भते ! सेव भते ! त्ति ॥

सत्तमो उद्देसो

असुरकुमारादीणं भवणादि-पदं

६७ केवतिया णं भंते ! असुरकुमारभवणावाससयसहस्सा पण्णत्ता ?
गोयमा ! चोयर्ट्ठि[3] असुरकुमारभवणावाससयसहस्सा पण्णत्ता ॥

६८ ते ण भंते ! किमया पण्णत्ता ?
गोयमा ! सव्वरयणामया अच्छा सण्हा जाव[4] पडिरूवा । तत्थ णं बहवे जीवा य पोग्गला य वक्कमति, विउक्कमति, चयति, उववज्जति । सासया ण ते भवणा दव्वट्ठयाए, वण्णपज्जवेहि जाव[5] फासपज्जवेहि असासया । एव जाव थणियकुमारावासा ॥

६९ केवतिया ण भते ! वाणमतरभोमेज्जनगरावाससयसहस्सा पण्णत्ता ?
गोयमा ! असखेज्जा वाणमतरभोमेज्जनगरावाससयसहस्सा पण्णत्ता ॥

७० ते ण भते ! किमया पण्णत्ता ? सेस त चेव ॥

७१. केवतिया ण भते ! जोइसियविमाणावाससयसहस्सा पण्णत्ता ?
गोयमा ! असखेज्जा जोइसियविमाणावाससयसहस्सा पण्णत्ता ॥

७२ ते ण भते ! किमया पण्णत्ता ?
गोयमा ! सव्वफालिहामया अच्छा, सेस त चेव ॥

---

१. जोइसियमडि० (क, स) ।
२ जी० ३ ।
३. चोवट्ठि (क, ता), चउसट्ठि (स) ।
४ भ० २।११८ ।
५. भ० २।४७ ।

७३. सोहम्मे णं भते ! कप्पे केवतिया विमाणावाससयसहस्सा पण्णत्ता ?
गोयमा ! बत्तीसं विमाणावाससयसहस्सा पण्णत्ता ।।

७४. ते ण भते ! किमया पण्णत्ता ?
गोयमा ! सव्वरयणामया अच्छा, सेस त चेव जाव अणुत्तरविमाणा, नवर—जाणेयव्वा जत्थ जत्तिया भवणा विमाणा वा ।।

७५ सेव भते ! सेव भते ! त्ति ।।

अट्ठमो उद्देसो

जीवादि-निव्वत्ति-पदं

७६ कतिविहा ण भते ! जीवनिव्वत्ती पण्णत्ता ?
गोयमा ! पचविहा जीवनिव्वत्ती पण्णत्ता, त जहा—एगिदियजीवनिव्वत्ती जाव पंचिदियजीवनिव्वत्ती ।।

७७. एगिदियजीवनिव्वत्ती ण भते ! कतिविहा पण्णत्ता ?
गोयमा ! पचविहा पण्णत्ता, त जहा—पुढविक्काइयएगिदियजीवनिव्वत्ती जाव वणस्सइकाइयएगिदियजीवनिव्वत्ती ।।

७८. पुढविकाइयएगिदियजीवनिव्वत्ती ण भते ! कतिविहा पण्णत्ता ?
गोयमा ! दुविहा पण्णत्ता, त जहा—सुहुमपुढविकाइयएगिदियजीवनिव्वत्ती य, बादरपुढविकाइयएगिदियजीवनिव्वत्ती य। एव एएण अभिलावेण भेदो जहा वड्डगबधो तेयगसरीरस्स जाव[1]—

७९ सव्वट्ठसिद्धअणुत्तरोववातियकप्पातीतवेमाणियदेवपंचिदियजीवनिव्वत्ती ण भते ! कतिविहा पण्णत्ता ?
गोयमा ! दुविहा पण्णत्ता, त जहा—पज्जत्तगसव्वट्ठसिद्धअणुत्तरोववातिय[2]-°कप्पातीतवेमाणिय°देवपंचिदियजीवनिव्वत्ती य, अपज्जत्तगसव्वट्ठसिद्धाणुत्तरोववातियकप्पातीतवेमाणियदेवपंचिदियजीवनिव्वत्ती य ।।

८०. कतिविहा ण भते ! कम्मनिव्वत्ती पण्णत्ता ?
गोयमा ! अट्ठविहा कम्मनिव्वत्ती पण्णत्ता, त जहा—नाणावरणिज्जकम्मनिव्वत्ती जाव अतराइयकम्मनिव्वत्ती ।।

८१. नेरइयाण भते ! कतिविहा कम्मनिव्वत्ती पण्णत्ता ?

---

१. भ० ८।४१३ ।

२ स० पा०—°अणुत्तरोववातिय जाव देव° ।

गोयमा ! अट्ठविहा कम्मनिव्वत्ती पण्णत्ता, तं जहा—नाणावरणिज्जकम्म-निव्वत्ती जाव अंतराइयकम्मनिव्वत्ती । एव जाव वेमाणियाणं ॥

८२. कतिविहा णं भते ! सरीरनिव्वत्ती पण्णत्ता ?
गोयमा ! पंचविहा सरीरनिव्वत्ती पण्णत्ता, तं जहा—ओरालियसरीरनिव्वत्ती जाव कम्मासरीरनिव्वत्ती ॥

८३ नेरइयाण भते ! कतिविहा सरीरनिव्वत्ती पण्णत्ता ? एव चेव । एवं जाव वेमाणियाण, नवर—नायव्वं जस्स जइ सरीराणि ॥

८४. कतिविहा णं भंते ! सव्विदियनिव्वत्ती पण्णत्ता ?
गोयमा ! पचविहा सव्विदियनिव्वत्ती पण्णत्ता, त जहा—सोइदियनिव्वत्ती जाव फासिदियनिव्वत्ती । एव[1] नेरइयाण जाव थणियकुमाराणं ॥

८५. पुढविकाइयाण—पुच्छा ।
गोयमा ! एगा फासिदियनिव्वत्ती पण्णत्ता । एव जस्स 'जति इदियाणि'[2] जाव वेमाणियाण ॥

८६. कतिविहा ण भते ! भासानिव्वत्ती पण्णत्ता ?
गोयमा ! चउव्विहा भासानिव्वत्ती पण्णत्ता, त जहा—सच्चभासानिव्वत्ती, मोसभासानिव्वत्ती, सच्चामोसभासा निव्वत्ती, असच्चामोसभासानिव्वत्ती । एवं एगिदियवज्ज जस्स जा भासा जाव वेमाणियाणं ॥

८७. कतिविहा ण भंते ! मणनिव्वत्ती पण्णत्ता ?
गोयमा ! चउव्विहा मणनिव्वत्ती पण्णत्ता त जहा—सच्चमणनिव्वत्ती जाव असच्चामोसमणनिव्वत्ती । एवं एगिदियविगलिंदियवज्जं जाव वेमाणियाणं ॥

८८. कतिविहा ण भंते ! कसायनिव्वत्ती पण्णत्ता ?
गोयमा ! चउव्विहा कसायनिव्वत्ती पण्णत्ता, त जहा—कोहकसायनिव्वत्ती जाव लोभकसायनिव्वत्ती । एव जाव वेमाणियाणं ॥

८९. कतिविहा णं भंते ! वण्णनिव्वत्ती पण्णत्ता ?
गोयमा ! पचविहा वण्णनिव्वत्ती त जहा—कालावण्णनिव्वत्ती जाव सुक्किला-वण्णनिव्वत्ती । एवं निरवसेस जाव वेमाणियाण । एव गधनिव्वत्ती दुविहा जाव वेमाणियाण । रसनिव्वत्ती पचविहा जाव वेमाणियाणं । फासनिव्वत्ती अट्ठविहा जाव वेमाणियाण ॥

९० कतिविहा ण भते ! सठाणनिव्वत्ती पण्णत्ता ?
गोयमा ! छव्विहा संठाणनिव्वत्ती पण्णत्ता, त जहा—समचउरंससठाणनिव्वत्ती जाव हुडसठाणनिव्वत्ती ॥

---

१. एव जाव (अ, क, ख, ता, व, म, स) । २. जदिदियाणि (ता) ।

९१ नेरइयाणं—पुच्छा ।
गोयमा ! एगा हुंडसठाणनिव्वत्ती पण्णत्ता ॥

९२ असुरकुमाराण —पुच्छा ।
गोयमा ! एगा समचउरससठाणनिव्वत्ती पण्णत्ता । एव जाव थणियकुमाराणं ॥

९३ पुढविकाइयाण—पुच्छा ।
गोयमा ! एगा मसूरचदसठाणनिव्वत्ती[1] पण्णत्ता । एव जस्स ज सठाण जाव वेमाणियाण ॥

९४. कतिविहा ण भते ! सण्णानिव्वत्ती पण्णत्ता ?
गोयमा ! चउव्विहा सण्णानिव्वत्ती पण्णत्ता, त जहा—आहारसण्णानिव्वत्ती जाव परिग्गहसण्णानिव्वत्ती । एव जाव वेमाणियाण ॥

९५ कतिविहा ण भते ! लेस्सानिव्वत्ती पण्णत्ता ?
गोयमा ! छव्विहा लेस्सानिव्वत्ती पण्णत्ता, त जहा—कण्हलेस्सानिव्वत्ती जाव सुक्कलेस्सानिव्वत्ती । एव जाव वेमाणियाण, जस्स जति लेस्साओ ॥

९६ कतिविहा ण भते ! दिट्ठीनिव्वत्ती पण्णत्ता ?
गोयमा ! तिविहा दिट्ठीनिव्वत्ती पण्णत्ता, त जहा—सम्मादिट्ठिनिव्वत्ती, मिच्छादिट्ठिनिव्वत्ती, सम्मामिच्छादिट्ठिनिव्वत्ती । एव जाव वेमाणियाण, जस्स जतिविहा दिट्ठी ॥

९७ कतिविहा ण भते ! नाणनिव्वत्ती पण्णत्ता ?
गोयमा ! पचविहा नाणनिव्वत्ती पण्णत्ता, त जहा—आभिणिबोहियनाणनिव्वत्ती जाव केवलनाणनिव्वत्ती । एव एगिंदियवज्जं जाव वेमाणियाण, जस्स जति नाणा ॥

९८. कतिविहा णं भते ! अण्णाणनिव्वत्ती पण्णत्ता ?
गोयमा ! तिविहा अण्णाणनिव्वत्ती पण्णत्ता, त जहा—मइअण्णाणनिव्वत्ती, सुयअण्णाणनिव्वत्ती, विभगनाणनिव्वत्ती । एव जस्स जति अण्णाणा जाव वेमाणियाण ॥

९९ कतिविहा ण भते ! जोगनिव्वत्ती पण्णत्ता ?
गोयमा ! तिविहा जोगनिव्वत्ती पण्णत्ता, त जहा—मणजोगनिव्वत्ती, वइजोगनिव्वत्ती, कायजोगनिव्वत्ती । एव जाव वेमाणियाण, जस्स जतिविहो जोगो ॥

१०० कतिविहा ण भते ! उवओगनिव्वत्ती पण्णत्ता ?

---

१. मसूरचदा° (क), मसूराचदा° (ता, व) ।

गोयमा ! दुविहा उवओगनिव्वत्ती पण्णत्ता, तं जहा— सागारोवओगनिव्वत्ती, अणागारोवओगनिव्वत्ती । एवं जाव वेमाणियाणं[1] ॥

१०१. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति ॥

नवमो उद्देसो

करण-पदं

१०२. कतिविहे णं भंते ! करणे पण्णत्ते ?
गोयमा ! पंचविहे करणे पण्णत्ते, तं जहा—दव्वकरणे, खेत्तकरणे, कालकरणे, भवकरणे, भावकरणे ॥

१०३. नेरइयाणं भंते ! कतिविहे करणे पण्णत्ते ?
गोयमा ! पंचविहे करणे पण्णत्ते, तं जहा—दव्वकरणे जाव भावकरणे । एवं जाव वेमाणियाणं ॥

१०४. कतिविहे णं भंते ! सरीरकरणे पण्णत्ते ?
गोयमा ! पंचविहे सरीरकरणे पण्णत्ते, तं जहा—ओरालियसरीरकरणे जाव कम्मासरीरकरणे । एवं जाव वेमाणियाणं, जस्स जति सरीराणि ॥

१०५. कतिविहे णं भंते ! इंदियकरणे पण्णत्ते ?
गोयमा ! पंचविहे इंदियकरणे पण्णत्ते, तं जहा—सोइंदियकरणे जाव फासिंदियकरणे । एवं जाव वेमाणियाणं, जस्स जति इंदियाइं । एवं एएणं कमेणं भासाकरणे चउव्विहे, मणकरणे चउव्विहे, कसायकरणे चउव्विहे, समुग्घायकरणे सत्तविहे, सण्णाकरणे चउव्विहे, लेसाकरणे छव्विहे, दिट्ठीकरणे तिविहे, वेदकरणे तिविहे पण्णत्ते, तं जहा—इत्थिवेदकरणे, पुरिसवेदकरणे, नपुंसगवेदकरणे । एए सव्वे नेरइयादी दंडगा जाव वेमाणियाणं, जस्स जं अत्थि तं तस्स सव्वं भाणियव्वं ॥

१०६. कतिविहे णं भंते ! पाणाइवायकरणे पण्णत्ते ?

---

१. अतोग्रे 'अ, क, व, स' प्रतिषु सङ्ग्रहणीगाथे दृश्येते—
जीवाण निव्वत्ती,
कम्मप्पगडी सरीरनिव्वत्ती ।
सव्विंदियनिव्वत्ती,
भासा य मणे कसाया य ॥१॥
वण्ण रस गंध फासे,
संठाणविही य होइ बोद्धव्वा ।
लेसा दिट्ठी नाणे,
उवओगे चेव जोगे य ॥२॥

गोयमा ! पंचविहे पाणाइवायकरणे पण्णत्ते, त जहा—एगिदियपाणाइवायकरणे जाव पचिंदियपाणाइवायकरणे । एव निरवसेस जाव वेमाणियाण ।।

१०७. कतिविहे ण भते ! पोग्गलकरणे पण्णत्ते ?
गोयमा ! पचविहे पोग्गलकरणे पण्णत्ते, त जहा—वण्णकरणे, गधकरणे, रस-करणे, फासकरणे, सठाणकरणे ।।

१०८ वण्णकरणे ण भते ! कतिविहे पण्णत्ते ?
गोयमा ! पचविहे पण्णत्ते, त जहा—कालावण्णकरणे जाव सुक्किलवण्णकरणे । एव भेदो—गधकरणे दुविहे, रसकरणे पचविहे, फासकरणे अट्ठविहे ।।

१०९. सठाणकरणे ण भते ! कतिविहे पण्णत्ते ?
गोयमा ! पचविहे पण्णत्ते, त जहा—परिमडलसठाणकरणे जाव[1] आयतसठाण-करणे ।।

११० सेव भते ! सेव भते ! त्ति जाव विहरइ ।।

दसमो उद्देसो

१११. वाणमतरा ण भते ! सव्वे समाहारा० ? एव जहा सोलसमसए दीवकुमारुद्दे-सओ जाव[2] अप्पिड्ढिय त्ति ।।

११२ सेव भते ! सेव भते ! त्ति ।।

---

१. भ० ८।३६ । २. भ० १६।१२५-१२८ ।

वीसइमं सतं

पढमो उद्देसो

१. बेइंदिय २. मागासे, ३. पाणवहे ४. उवचए य ५ परमाणू।
६ अंतर ७. बंधे ८ भूमी, ९. चारण १०. सोवक्कमा जीवा ॥१॥

बेइंदियादि-पदं

१. रायगिहे जाव एवं वयासी—सिय भंते ! जाव चत्तारि पंच बेंदिया एगयओ साहारणसरीरं बंधंति, बंधित्ता तओ पच्छा आहारेंति वा परिणामेंति वा सरीरं वा बंधंति ?
नो इणट्ठे समट्ठे। बेंदिया णं पत्तेयाहारा पत्तेयपरिणामा पत्तेयसरीरं बंधंति, बंधित्ता तओ पच्छा आहारेंति वा परिणामेंति वा सरीरं वा बंधंति ॥

२. तेसि णं भंते ! जीवाणं कति लेस्साओ पण्णत्ताओ ?
गोयमा ! तओ लेस्साओ पण्णत्ताओ, तं जहा—कण्हलेस्सा, नीललेस्सा, काउलेस्सा। एवं जहा एगूणवीसतिमे सए तेउक्काइयाणं जाव[1] उव्वट्टंति, नवरं—सम्मदिट्ठी वि मिच्छदिट्ठी वि, नो सम्मामिच्छदिट्ठी, दो नाणा दो अण्णाणा नियमं, नो मणजोगी, वइजोगी वि कायजोगी वि, आहारो नियमं छद्दिसिं।

३. तेसि णं भंते ! जीवाणं एवं सण्णाति वा पण्णाति वा मणेति वा वईति वा—अम्हे णं इट्ठाणिट्ठे रसे, इट्ठाणिट्ठे फासे पडिसंवेदेमो ?
नो इणट्ठे समट्ठे, पडिसंवेदेंति पुण ते। ठिती जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं बारस संवच्छराइं, सेसं तं चेव। एवं तेइंदिया वि, एवं चउरिंदिया वि, नाणत्तं इंदिएसु ठितीए य, सेसं तं चेव, ठिती जहा[2] पण्णवणाए ॥

४. सिय भंते ! जाव चत्तारि पंच पंचिंदिया एगयओ साहारणसरीरं बंधंति ? एवं जहा बेंदियाणं, नवरं—छल्लेसा, दिट्ठी तिविहा वि, चत्तारि नाणा तिण्णि अण्णाणा भयणाए, तिविहो जोगो ॥

---

१. भ० १९।२२। २. प० ४।

५ तेसि ण भते ! जीवाणं एव सण्णाति वा पण्णाति वा मणेति वा वईति वा—अम्हे णं आहारमाहारेमो ?
गोयमा ! अत्थेगतियाण एव सण्णाति वा पण्णाति वा मणेति वा वईति वा—अम्हे ण आहारमाहारेमो। अत्थेगतियाण नो एव सण्णाति वा जाव वईति वा—अम्हे ण आहारमाहारेमो, आहारेति पुण ते।

६. तेसि ण भते ! जीवाण एव सण्णाति वा जाव वईति वा—अम्हे ण इट्ठाणिट्ठे सद्दे, इट्ठाणिट्ठे रूवे, इट्ठाणिट्ठे गधे, इट्ठाणिट्ठे रसे, इट्ठाणिट्ठे फासे पडिसवेदेमो ?
गोयमा ! अत्थेगतियाणं एव सण्णाति वा जाव वईति वा—अम्हे ण इट्ठाणिट्ठे सद्दे जाव इट्ठाणिट्ठे फासे पडिसवेदेमो। अत्थेगतियाण नो एव सण्णाति वा जाव वईति वा—अम्हे ण इट्ठाणिट्ठे सद्दे जाव इट्ठाणिट्ठे फासे पडिसवेदेमो, पडिसवेदेंति पुण ते।

७ ते ण भते ! जीवा कि पाणाइवाए उवक्खाइज्जति—पुच्छा।
गोयमा ! अत्थेगतिया पाणातिवाए वि उवक्खाइज्जति जाव मिच्छादसणसल्ले वि उवक्खाइज्जति अत्थेगतिया नो पाणाइवाए उवक्खाइज्जति, नो मुसावाए जाव नो मिच्छादसणसल्ले उवक्खाइज्जति। जेसि पि ण जीवाण ते जीवा एवमाहिज्जति तेसि पि ण जीवाण अत्थेगतियाण विण्णाए नाणत्ते। अत्थेगतियाण नो विण्णाए नाणत्ते। उववाओ सव्वओ जाव सव्वट्ठसिद्धाओ। ठिती जहण्णेणं अंतोमुहुत्त, उक्कोसेण तेत्तीस सागरोवमाइ। छस्समुग्घाया केवलिवज्जा, उव्वट्टणा सव्वत्थ गच्छति जाव सव्वट्ठसिद्ध ति, सेस जहा बेदियाण॥

८. एएसि ण भते ! वेइदियाण जाव पचिंदियाण य कयरे कयरेहिंतो[1] °अप्पा वा ? वहुया वा ? तुल्ला वा ?° विसेसाहिया वा ?
गोयमा ! सव्वत्थोवा पचिंदिया, चउरिदिया विसेसाहिया, तेइदिया विसेसाहिया, वेइदिया विसेसाहिया॥

९. सेव भते ! सेव भते ! त्ति जाव[2] विहरइ॥

बीओ उद्देसो

अत्थिकाय-पद

१०. कतिविहे ण भते ! आगासे पण्णत्ते ?
गोयमा ! दुविहे आगासे पण्णत्ते, त जहा—लोयागासे य, अलोयागासे य॥

११. लोयागासे णं भते ! किं जीवा ? जीवदेसा° ?—एव जहा वितियसए

---

१. स० पा०—कयरेहिंतो जाव विसेसाहिया। २. भ०१।५१।

अत्थिउद्देसे तहेव इह वि भाणियव्व, नवरं—अभिलावो जाव[1] धम्मत्थिकाए ण भते ! केमहालए पण्णत्ते ?

गोयमा ! लोए लोयमेत्ते लोयप्पमाणे लोयफुडे लोयं चेव ओगाहित्ता णं चिट्ठति । एव जाव पोग्गलत्थिकाए ॥

१२. अहेलोए ण भते ! धम्मत्थिकायस्स केवतिय ओगाढे ?

गोयमा ! सातिरेग अद्ध ओगाढे । एव एएण अभिलावेण जहा वितियसए जाव[2]—

१३. ईसिपब्भारा ण भते ! पुढवी लोयागासस्स किं सखेज्जइभाग ओगाढा—पुच्छा ।

गोयमा ! नो सखेज्जइभाग ओगाढा, असखेज्जइभागं ओगाढा, नो सखेज्जे भागे ओगाढा, नो असखेज्जे भागे ओगाढा, नो सव्वलोयं ओगाढा । सेसं त चेव ॥

अत्थिकायस्स अभिवयण-पदं

१४. धम्मत्थिकायस्स ण भते ! केवतिया अभिवयणा पण्णत्ता ?

गोयमा ! अणेगा अभिवयणा पण्णत्ता, त जहा—धम्मे इ वा, धम्मत्थिकाये इ वा, पाणाइवायवेरमणे इ वा, मुसावायवेरमणे इ वा, एवं जाव परिग्गहवेरमणे इ वा, कोहविवेगे इ वा जाव मिच्छादसणसल्लविवेगे इ वा, रियासमिती इ वा, भासासमिती इ वा, एसणासमिती इ वा, आयाणभडमत्तनिक्खेवसमिती इ वा, उच्चारपासवणखेलसिंघाणजल्लपारिट्ठावणियासमिती[3] इ वा, मणगुत्ती इ वा, वइगुत्ती इ वा, कायगुत्ती इ वा, जे यावण्णे तहप्पगारा सव्वे ते धम्मत्थिकायस्स अभिवयणा ॥

१५. अधम्मत्थिकायस्स ण भते ! केवतिया अभिवयणा पण्णत्ता ?

गोयमा ! अणेगा अभिवयणा पण्णत्ता, त जहा—अधम्मे इ वा, अधम्मत्थिकाए इ वा, पाणाइवाए इ वा जाव मिच्छादसणसल्ले इ वा, रियाअस्समिती इ वा जाव उच्चारपासवण[4]•खेलसिंघाणजल्ल°पारिट्ठावणियाअस्समिती इ वा, मणअगुत्ती इ वा, वइअगुत्ती इ वा, कायअगुत्ती इ वा, जे यावण्णे तहप्पगारा सव्वे ते अधम्मत्थिकायस्स अभिवयणा ॥

१६. आगासत्थिकायस्स ण [5]•भते ! केवतिया अभिवयणा पण्णत्ता ?°

गोयमा ! अणेगा अभिवयणा पण्णत्ता, त जहा—आगासे इ वा, आगासत्थि-

---

१. भ० २।१३६-१४५ ।

२. भ० २।१४७-१५३ ।

३. °खेलजल्लसिंघाण° (ख, म, स) ।

४. स० पा०—उच्चारपासवण जाव पारिट्ठावणिया° ।

५. सं० पा०—पुच्छा ।

काए इ वा, गगणे इ वा, नभे इ वा, समे इ वा, विसमे इ वा, खहे इ वा, विहे इ वा, वीयी इ वा, विवरे इ वा, अबरे इ वा, अबरसे इ वा, छिड्डे इ वा, भुसिरे इ वा, मग्गे इ वा, विमुहे इ वा, 'अट्टे इ वा, वियट्टे इ वा'[1], आधारे इ वा, वोमे इ वा, भायणे इ वा, अतलिक्खे[2] इ वा, सामे इ वा, ओवासतरे इ वा, अगमे इ वा, फलिहे इ वा, अणते इ वा, जे यावण्णे तहप्पगारा सव्वे ते आगासत्थिकायस्स अभिवयणा ।।

१७ जीवत्थिकायस्स णं भते ! केवतिया अभिवयणा पण्णत्ता ?
गोयमा ! अणेगा अभिवयणा पण्णत्ता, त जहा—जीवे इ वा, जीवत्थिकाए इ वा, पाणे इ वा, भूए इ वा, सत्ते इ वा, विण्णू इ वा, 'वेया इ वा'[3], चेया इ वा, जेया इ वा, आया इ वा, रगणे[4] इ वा, हिंदुए[5] इ वा, पोग्गले इ वा, माणवे इ वा, कत्ता इ वा, विकत्ता इ वा, जए इ वा, जतू इ वा, जोणी[6] इ वा, सयभू इ वा, ससरीरी इ वा, नायए इ वा, अतरप्पा इ वा, जे यावण्णे तहप्पगारा सव्वे ते जीवत्थिकायस्स[7] अभिवयणा ।।

१८ पोग्गलत्थिकायस्स ण भते ! [8]•केवतिया अभिवयणा पण्णत्ता° ?
गोयमा ! अणेगा अभिवयणा पण्णत्ता, त जहा—पोग्गले इ वा, पोग्गलत्थिकाए इ वा, परमाणुपोग्गले इ वा, दुपएसिए इ वा, तिपएसिए इ वा जाव असखेज्जपएसिए इ वा, अणतपएसिए इ वा खधे, जे यावण्णे तहप्पगारा सव्वे पोग्गलत्थिकायस्स अभिवयणा ।।

१९ सेव भते ! सेव भते ! त्ति ।।

तइओ उद्देसो

पाणाइवायादीणं आयाए परिणति-पदं

२० अह भते ! पाणाइवाए, मुसावाए जाव मिच्छादसणसल्ले, पाणातिवायवेरमणे जाव मिच्छादसणसल्लविवेगे, उप्पत्तिया[9] •वेणइया कम्मया° पारिणामिया,

---

१ अद्दे इ वा, वियद्दे (स, वृ), अट्टे इ वा, वियट्टे (वृपा) ।
२. अतरिक्खे (ख, स) ।
३. × (अ, क, ख) ।
४. रगणा (अ, क, ख, ता, म) ।
५ हिंडुए (क्व०) ।
६. जोणिय (ख) ।
७ जाव (अ, क, ख, ता, व, म, स) ।
८. स० पा०—पुच्छा ।
९. स० पा०—उप्पत्तिया जाव पारिणामिया ।

ओग्गहे[1] •ईहा अवाए° धारणा, उट्ठाणे कम्मे बले वीरिए पुरिसक्कार-परक्कमे, नेरइयत्ते, असुरकुमारत्ते जाव वेमाणियत्ते, नाणावरणिज्जे जाव अंतराइए, कण्हलेस्सा जाव सुक्कलेस्सा, सम्मदिट्ठी मिच्छदिट्ठी सम्मामिच्छदिट्ठी, चक्खुदंसणे अचक्खुदंसणे ओहिदंसणे केवलदंसणे, आभिणिबोहियनाणे जाव विभंगनाणे, आहारसण्णा भयसण्णा मेहुणसण्णा परिग्गहसण्णा, ओरालियसरीरे वेउव्वियसरीरे आहारगसरीरे तेयगसरीरे कम्मगसरीरे, मणजोगे वइजोगे कायजोगे, सागारोवओगे, अणागारोवओगे, जे यावण्णे तहप्पगारा सव्वे ते नण्णत्थ आयाए परिणमंति ?

हंता गोयमा ! पाणाइवाए जाव सव्वे ते नण्णत्थ आयाए परिणमंति ॥

गब्भं वक्कममाणस्स वण्णादि-पदं

२१. जीवे णं भंते ! गब्भं वक्कममाणे 'कतिवण्णं कतिगंधं'[2] [3]•कतिरसं कतिफासं परिणामं परिणमइ ?

गोयमा ! पंचवण्णं, दुगंधं, पंचरसं, अट्ठफासं परिणामं परिणमइ ॥

२२. कम्मओ णं भंते ! जीवे नो अकम्मओ विभत्तिभावं परिणमइ ? कम्मओ णं जए नो अकम्मओ विभत्तिभावं परिणमइ ?

हंता गोयमा ! कम्मओ णं जीवे नो अकम्मओ विभत्तिभावं परिणमइ°, कम्मओ णं जए नो अकम्मओ विभत्तिभावं परिणमइ ॥

२३. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति जाव[4] विहरइ ॥

चउत्थो उद्देसो

इंदियोवचय-पदं

२४. कतिविहे णं भंते ! इंदियोवचए पण्णत्ते ?

गोयमा ! पंचविहे इंदियोवचए पण्णत्ते, तं जहा—सोइंदियोवचए, एवं बितिओ इंदियउद्देसओ निरवसेसो भाणियव्वो जहा[5] पण्णवणाए ॥

२५ सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति भगवं गोयमे जाव[6] विहरइ ॥

---

१. सं० पा०—ओग्गहे जाव धारणा ।

२. कतिवण्णे कतिगंधे (अ, क, ख, ता, म) ।

३ सं० पा०—एवं जहा बारसमसए पंचमुद्देसे जाव कम्मओ ।

४ भ० १।५१ ।

५. प० १५।२ ।

६. भ० १।५१ ।

पंचमो उद्देसो

परमाणु-खंधाणं वण्णादिभग-पदं

२६ परमाणुपोग्गले ण भते ! कतिवण्णे, कतिगधे, कतिरसे, कतिफासे पण्णत्ते ? गोयमा ! एगवण्णे, एगगधे, एगरसे, दुफासे पण्णत्ते[1]। जइ एगवण्णे ? सिय कालए, सिय नीलए, सिय लोहियए, सिय हालिद्दए, सिय सुक्किलए। जइ एगगधे ? सिय सुब्भिगधे, सिय दुब्भिगधे। जइ एगरसे ? सिय तित्ते, सिय कडुए, सिय कसाए, सिय अबिले, सिय महुरे। जइ दुफासे ? १ सिय सीए य निद्धे य, २. सिय सीए य लुक्खे य, ३ सिय उसिणे य निद्धे य, ४. सिय उसिणे य लुक्खे य ॥

२७. दुप्पएसिए ण भते ! खधे कतिवण्णे जाव कतिफासे पण्णत्ते ? [2]•गोयमा ! सिय एगवण्णे, सिय दुवण्णे, सिय एगगधे, सिय दुगधे, सिय एगरसे, सिय दुरसे, सिय दुफासे, सिय तिफासे°, सिय चउफासे पण्णत्ते। जइ एगवण्णे ? सिय कालए जाव सिय सुक्किलए। जइ दुवण्णे ? १. सिय कालए य नीलए य, २ सिय कालए य लोहितए य, ३. सिय कालए य हालिद्दए य, ४. सिय कालए य सुक्किलए य, ५. सिय नीलए य लोहियए य, ६. सिय नीलए य हालिद्दए य, ७ सिय नीलए य सुक्किलए य, ८. सिय लोहियए य हालिद्दए य, ९. सिय लोहियए य सुक्किलए य, १०. सिय हालिद्दए य सुक्किलए य, एव एए दुयासजोगे दस भगा। जइ एगगधे ? सिय सुब्भिगधे, सिय दुब्भिगधे। जइ दुगधे ? सुब्भिगधे य दुब्भिगधे य। रसेसु जहा वण्णेसु। जइ दुफासे ? सिय सीए य निद्धे य, एव जहेव परमाणुपोग्गले ४। जइ तिफासे ? १. सव्वे सीए देसे निद्धे देसे लुक्खे, २ सव्वे उसिणे देसे निद्धे देसे लुक्खे, ३. सव्वे निद्धे देसे सीए देसे उसिणे, ४ सव्वे लुक्खे देसे सीए देसे उसिणे। जइ चउफासे ? १ देसे सीए देसे उसिणे देसे निद्धे देसे लुक्खे, एए नव भंगा फासेसु ॥

२८ तिपएसिए ण भते ! खधे कतिवण्णे० ? जहा अट्ठारसमसए छट्ठुद्देसे जाव[3] चउफासे पण्णत्ते। जइ एगवण्णे ? सिय कालए जाव सुक्किलए।
जइ दुवण्णे ? १ सिय कालए य नीलए य, २. सिय कालए य नीलगा य, ३. सिय कालगा य नीलए य, १ सिय कालए य लोहियए य, २ सिय कालए य लोहियगा य, ३. सिय कालगा य लोहियए य, एव हालिद्दएण वि सम ३, एव सुक्किलेण वि सम ३, सिय नीलए य लोहियए य एत्थ वि भगा ३, एव

---

१. प त (अ, म)।
२. स० पा०—एव जहा अट्ठारसमसए छट्ठुद्देसए जाव सिय।
३. भ० १८।११३।

हालिद्दएण वि समं भगा ३, एव सुक्किल्लेण वि समं भगा ४, सिय लोहियए य हालिद्दए य भगा ३, एवं सुक्किल्लेण वि समं ३, सिय हालिद्दए य सुक्किलए य भंगा ३, एव सव्वे ते दस दुयासजोगा भगा तीसं भवंति ।

जइ तिवण्णे ? १. सिय कालए य नीलए य लोहियए य, २. सिय कालए य नीलए य हालिद्दए य, ३ सिय कालए य नीलए य सुक्किलए य, ४ सिय कालए य लोहियए य हालिद्दए य, ५ सिय कालए य लोहियए य सुक्किलए य, ६ सिय कालए य हालिद्दए य सुक्किलए य, ७. सिय नीलए य लोहियए य हालिद्दए य, ८. सिय नीलए य लोहियए य सुक्किलए य, ९ सिय नीलए य हालिद्दए य सुक्किलए य, १० सिय लोहियए स हालिद्दए य सुक्किलए य, एवं एए दस तियासजोगा ।

जइ एगगधे ? सिय सुब्भिगधे, सिय दुब्भिगधे । जइ दुगधे ? सुब्भिगधे य दुब्भिगधे य भगा ३ । रसा जहा वण्णा ।

जइ दुफासे ?सिय सीए य निद्धे य, एव जहेव दुपएसियस्स तहेव चत्तारि भगा ।

जइ तिफासे ? १. सव्वे सीए देसे निद्धे देसे लुक्खे, २ सव्वे सीए देसे निद्धे देसा लुक्खा, ३ सव्वे सीए देसा निद्धा देसे लुक्खे, सव्वे उसिणे देसे निद्धे देसे लुक्खे, एत्थ वि भंगा तिण्णि, सव्वे निद्धे देसे सीए देसे उसिणे भगा तिण्णि, सव्वे लुक्खे देसे सीए देसे उसिणे भगा तिण्णि ।

जइ चउफासे ? १. देसे सीए देसे उसिणे देसे निद्धे देसे लुक्खे, २. देसे सीए देसे उसिणे देसे निद्धे देसा लुक्खा, ३ देसे सीए देसे उसिणे देसा निद्धा देसे लुक्खे, ४ देसे सीए देसा उसिणा देसे निद्धे देसे लुक्खे, ५. देसे सीए देसा उसिणा देसे निद्धे देसा लुक्खा, ६. देसे सीए देसा उसिणा देसा निद्धा देसे लुक्खे, ७. देसा सीया देसे उसिणे देसे निद्धे देसे लुक्खे, ८. देसा सीया देसे उसिणे देसे निद्धे देसा लुक्खा, ९ देसा सीया देसे उसिणे देसा निद्धा देसे लुक्खे, एवं एए तिपएसिए फासेसु पणवीसं भंगा ॥

२९ चउप्पएसिए ण भंते ! खधे कतिवण्णे० ? जहा अट्ठारसमसए जाव[1] सिय चउफासे पण्णत्ते । जइ एगवण्णे ?सिय कालए य जाव सुक्किलए । जइ दुवण्णे ? १ सिय कालए य नीलए य, २. सिय कालए य नीलगा य, ३. सिय कालगा य नीलए य, ४. सिय कालगा य नीलगा य, सिय कालए य लोहियए य एत्थ वि चत्तारि भगा, सिय कालए य हालिद्दए य ४, सिय कालए य सुक्किलए य ४, सिय नीलए य लोहियए य ४, सिए नीलए य हालिद्दए य ४, सिय नीलए य सुक्किलए य ४, सिय लोहियए य हालिद्दए य ४, सिय लोहियए य सुक्किलए य ४,

---

१. भ० १८।११४ ।

सिय हालिद्दए य सुक्किलए य ४, एव एए दस दुयसजोगा भंगा पुण चत्तालीसं। जइ तिवण्णे ? १. सिय कालए य नीलए य लोहियए य, २ सिय कालए य नीलए य लोहियगा य, ३ सिय कालए य नीलगा य लोहियए य, ४. सिय कालगा य नीलए य लोहियए य, एए भगा ४, एव कालानीलाहालिद्दएहिं भगा ४, कालनीलसुक्किल ४, काललोहियहालिद्द ४, काललोहियसुक्किल ४, कालहालिद्दसुक्किल ४, नीललोहिसहालिद्दगाण भगा ४, नीललोहियसुक्किल ४, नीलहालिद्दसुक्किल ४, लोहियहालिद्दसुक्किलगाण भगा ४, एव एए दसतियासजोगा, एक्केक्के सजोए चत्तारि भगा, 'सव्वे एते'[1] चत्तालीस भगा।

जइ चउवण्णे ? १ सिय कालए य नीलए य लोहियए य हालिद्दए य, २. सिय कालए य नीलए य लोहियए य सुक्किलए य, ३ सिय कालए य नीलए य हालिद्दए य सुक्किलए य, ४ सिय कालए य लोहियए हालिद्दए य सुक्किलए य, ५. सिय नीलए य लोहियए य हालिद्दए य सुक्किलए य, एवमेते चउक्कगसंजोगे पच भगा। एए सव्वे नउइ भगा।

जइ एगगधे ? सिय सुब्भिगधे, सिय दुब्भिगधे। जइ दुगधे ? सुब्भिगधे य दुब्भिगधे य रसा जहा वण्णा।

जइ दुफासे ? जहेव परमाणुपोग्गले ४। जइ तिफासे ? १ सव्वे सीए देसे निद्धे देसे लुक्खे, २ सव्वे सीए देसे निद्धे देसा लुक्खा, ३ सव्वे सीए देसा निद्धा देसे लुक्खे, ४. सव्वे सीए देसा निद्धा देसा लुक्खा, सव्वे उसिणे देसे निद्धे देसे लुक्खे, एव भगा ४, सव्वे निद्धे देसे सीए देसे उसिणे ४, सव्वे लुक्खे देसे सीए देसे उसिणे ४, एए तिफासे सोलस भगा।

जइ चउफासे ? १ देसे सीए देसे उसिणे देसे निद्धे देसे लुक्खे, २ देसे सीए देसे उसिणे देसे निद्धे देसा लुक्खा, ३ देसे सीए देसे उसिणे देसा निद्धा देसे लुक्खे, ४ देसे सीए देसे उसिणे देसा निद्धा देसा लुक्खा, ५ देसे सीए देसा उसिणा देसे निद्धे देसे लुक्खे, ६ देसे सीए देसा उसिणा देसे निद्धे देसा लुक्खा, ७ देसे सीए देसा उसिणा देसा निद्धा देसे लुक्खे, ८. देसे सीए देसा उसिणा देसा निद्धा देसा लुक्खा, ९ देसा सीया देसे उसिणे देसे निद्धे देसे लुक्खे, एव एए चउफासे सोलस भगा भाणियव्वा जाव देसा सीया देसा उसिणा देसा निद्धा देसा लुक्खा, सव्वे एते फासेसु छत्तीस भगा॥

३० पचपएसिए ण भते ! खधे कतिवण्णे० ? जहा अट्ठारसमसए जाव[1] सिय चउफासे पण्णत्ते। जइ एगवण्णे ? एगवण्ण-दुवण्णा जहेव चउप्पएसिए। जइ तिवण्णे ? १ सिय कालए य नीलए य लोहियए य, २. सिय कालए य नीलए

---

१. सव्वेते (अ, क, ख, व, म, स)।

१. भ० १८।११५।

य लोहियगा य, ३ सिय कालए य नीलगा य लोहियए य, ४. सिय कालए य नीलगा य लोहियगा य, ५ सिय कालगा य नीलए य लोहियए य, ६ सिय कालगा य नीलए य लोहियगा य, ७ सिय कालगा य नीलगा य लोहियए य, सिय कालए य नीलए य हालिद्दए य, एत्थ वि सत्त भगा, एवं कालग-नीलग-सुक्किलएसु सत्त भगा, कालग-लोहिय-हालिद्देसु ७, कालग-लोहिय-सुक्किलेसु ७, कालग-हालिद्द-सुक्किलेसु ७, नीलग-लोहिय-हालिद्देसु ७, नीलग-लोहिय-सुक्किलेसु सत्त भगा, नीलग-हालिद्द-सुक्किलेसु ७, लोहिय-हालिद्द-सुक्किल्लेसु वि सत्त भगा, एवमेते तियासजोएण सत्तरि भंगा।

जइ उचवण्णे ? १ सिय कालए य नीलए य लोहियय य हालिद्दए २. सिय कालए य नीलए य लोहियए य हालिद्दगा य, ३. सिय कालए य नीलए य लोहियगा य हालिद्दगे य, ४ सिय कालए य नीलगा य लोहियगे य हालिद्दगे य, ५. सिय कालगा य नीलए य लोहियए य हालिद्दए य, एए पच भगा, सिय कालए य नीलए य लोहियए य सुक्किलए य एत्थ वि पच भगा, एवं कालग-नीलग-हालिद्द-सुक्किलेसु वि पच भगा, कालग-लोहिय-हालिद्द-सुक्किलएसु वि पंच भगा, नीलग-लोहिय-हालिद्द-सुक्किलेसु वि पच भंगा, एवमेते चउक्कगसंजोएणं पणुवीस भगा।

जइ पंचवण्णे ? कालए ण नीलए य लोहियए य हालिद्दए य सुक्किलए य, सव्व-मेते एक्कग[1]-दुयग-तियग-चउक्क-पचगसंजोएण ईयाल भंगसय भवति। गधा जहा चउप्पएसियस्स। रसा जहा वण्णा। फासा जहा चउप्पएसियस्स॥

३१. छप्पएसिए ण भते! खधे कतिववण्णे० ? एव जहा पंचपए सिए जाव सिय चउफासे पण्णत्ते। जइ एगवण्णे ? एगवण्ण-दुवण्णा जहा पंचपएसियस्स।

जइ तिवण्णे! सिय कालए य नीलए य लोहियए य, एव जहेव पचपएसियस्स सत्त भगा जाव सिय कालगा य नीलगा य लोहियए य, सिय कालगा य नीलगा य लोहियगा य, एए अट्ठ भगा, एवमेते दस तियासजोगा, एक्केक्कए सजोगे अट्ठ भगा, एवं सव्वे वि तियगसजोगे असीति भगा।

जइ चउवण्णे ? १ सिय कालए य नीलए य लोहियए य हालिद्दए य, २ सिय कालए य नीलए य लोहियए हालिद्दगा य, ३. सिय कालए य नीलए य लोहियगा त हालिद्दए य, ४ सिय कालए य नीलए य लोहियगा य हालिद्दगा य, ५ सिय कालए य नीलगा य लोहियए य हालिद्दए य, ६ सिय कालए य नीलगा य लोहिए य हालिद्दगा य, ७ सिय कालए य नीलगा य लोहियगा य हालिद्दए य, ८ सिय कालए य नीलए य लोहियए य हालिद्दए य, ९. सिय

---

१. एक्केक्का (अ, म); एक्केक्क (क, ता, व)।

कालगा य नीलए य लोहियए य हालिद्दगा य, १० सिय कालगा य नीलए य लोहियगा य हालिद्दए य, ११ सिय कालगा य नीलगा य लोहियए य हालिद्दए य, एए एक्कारस भगा, एवमेते 'पच चउक्कसजोगा'[1] कायव्वा, एक्केक्कसजोए एक्कारस भगा, सव्वे एते चउक्कसजोएण पणपण्ण भगा ।

जइ पचवण्णे ? १ सिय कालए य नीलए य लोहियए य हालिद्दए य, सुक्किलए य, २ सिय कालए य नीलए य लोहियए य हालिद्दए य सुक्किलगा य, ३ सिय कालए य नीलए य लोहियए य हालिद्दगा य सुक्किलए य, ४ सिय कालए य नीलए य लोहियगा य हालिद्दए य सुक्किलए य, ५ सिय कालए य नीलगा य लोहियए य हालिद्दए य सुक्किलए य, ६ सिय कालगा य नीलए य लोहियए य हालिद्दए य सुक्किलए य, एव एए छब्भगा भाणियव्वा, एवमेते सव्वे वि एक्कग-दुयग-तियग-चउक्कग-पचगसजोगेसु छासीय भगसय भवति । गधा जहा पचपएसियस्स । रसा जहा एयस्सेव वण्णा । फासा जहा चउप्पएसियस्स ॥

३२ सत्तपएसिए ण भते ! खधे कतिवण्णे० ? जहा पचपएसिए जाव सिय चउफासे पण्णत्ते । जइ एगवण्णे ? एव एगवण्ण-दुवण्ण-तिवण्णा जहा छप्पएसियस्स । जइ चउवण्णे ? १ सिय कालए य नीलए य लोहियए य हालिद्दए य, २ सिय कालए य नीलए य लोहियए य हालिद्दगा य, ३. सिय कालए य नीलए य लोहियगा य हालिद्दए य, एवमेते चउक्कगसजोगेण पन्नरस भगा भाणियव्वा जाव सिय कालगा य नीलगा य लोहियगा य हालिद्दए य, एवमेते पच चउक्का-संजोगा नेयव्वा, एक्केक्के सजोए पन्नरस भगा, सव्वमेते पचसत्तरि भगा भवति ।

जइ पचवण्णे ? १ सिय कालए य नीलए य लोहियए य हालिद्दए य सुक्किलए य, २ सिय कालए य नीलए य लोहियए य हालिद्दए य सुक्किलगा य, ३ सिय कालए य नीलए य लोहियए य हालिद्दगा य सुक्किलए य, ४. सिय कालए य नीलए य लोहियए य हालिद्दगा य सुक्किलगा य, ५. सिय कालए य नीलए य लोहियगा य हालिद्दए य सुक्किलए य, ६. सिय कालए य नीलए य लोहियगा य हालिद्दगे य सुक्किलगा य, ७ सिय कालए य नीलए य लोहियगा य हालिद्दगा य सुक्किलए य, ८ सिय कालए य नीलगा य लोहियए य हालिद्दए य सुक्किलए य, ९ सिय कालए य नीलगा य लोहियए य हालिद्दए य सुक्किलगा य, १०. सिय कालए य नीलगा य लोहियगे य हालिद्दगा य सुक्किलए य, ११. सिय कालए य नीलगा य लोहियगा य हालिद्दए य सुक्किलए य, १२ सिय कालगा य नीलगे य लोहियए य हालिद्दए य सुक्किलए य, १३ सिय कालगा य नीलए

---

१ पचचउक्का० (क, ख, व), पचगचउक्का (ता) ।

य लोहियगे य हालिद्दए य सुक्किलगा य, १४ सिय कालगा य नीलए य लोहियए य हालिद्दगा य सुक्किलए य, १५ सिय कालगा य नीलए य लोहियगा य हालिद्दगा य सुक्किलए य, १६ सिय कालगा य नीलगा य लोहियए य हालिद्दए य सुक्किलए य, एए सोलस भंगा, एव सव्वमेते एक्कग-दुयग-तियग-चउक्कग-पचगसजोगेण दो सोला[1] भगसया भवति । गधा जहा चउप्पएसियस्स । रसा जहा एयस्स चेव वण्णा । फासा जहा चउप्पएसियस्स ॥

३३ अट्ठपएसिए ण भते ! खधे—पुच्छा ।

गोयमा ! सिय एगवण्णे जहा सत्तपएसियस्स जाव सिय चउफासे पण्णत्ते । जइ एगवण्णे ? एवं एगवण्ण-दुवण्ण-तिवण्णा जहेव सत्तपएसिए ।

जइ चउवण्णे ? १ सिय कालए य नीलए य लोहियए य हालिद्दए य, २ सिय कालए य नीलए य लोहियए य हालिद्दगा य, एवं जहेव सत्तपएसिए जाव, १५. सिय कालगा य नीलगा य लोहियगा य हालिद्दगे य, १६. सिय कालगा य नीलगा य लोहियगा य हालिद्दगा य, एए सोलस भंगा, एवमेते पच चउक्क-संजोगा, एवमेते असीति भंगा ।

जइ पंचवण्णे ? १ सिय कालए य नीलए य लोहियए य हालिद्दए य सुक्किलए य, २ सिय कालए य नीलए य लोहियगे य हालिद्दगे य सुक्किलगा य, एव एएण कमेण भगा चारेयव्वा जाव १५ सिय कालए य नीलगा य लोहियगा य हालिद्दगा य सुक्किलगे य, एसो पन्नरसमो भंगो, १६. सिय कालगा य नीलगे य लोहियगे य हालिद्दए य सुक्किलए य १७ सिय कालगा य नीलगे य लोहियगे य हालिद्दगे य सुक्किलगा य, १८ सिय कालगा य नीलगे य लोहियगे य हालिद्दगा य सुक्किलए य, १९ सिय कालगा य नीलगे य लोहियगे य हालिद्दगा य सुक्किलगा य, २० सिय कालगा य नीलगे य लोहियगा य हालिद्दए य सुक्किलए य, २१. सिय कालगा य नीलगे य लोहियगा य हालिद्दए य सुक्किलगा य, २२. सिय कालगा य नीलए य लोहियगा य हालिद्दगा य सुक्किलए य, २३ सिय कालगा य नीलगा य लोहियगे य हालिद्दए य सुक्किलए य, २४ सिय कालगा य नीलगा य लोहियगे य हालिद्दए य सुक्किलगा य, २५. सिय कालगा य नीलगा य लोहियगे य हालिद्दगा य सुक्किलए य, २६. सिय कालगा य नीलगा य लोहियगा य हालिद्दए य सुक्किलए य, एए पचसजोएण छव्वीस भगा भवति, एवमेव सपुव्वावरेणं एक्कग-दुयग-तियग-चउक्कग-पंचगसजोएहिं दो एक्कतीस भंगसया भवति । गंधा जहा सत्तपएसियस्स । रसा जहा एयस्स चेव वण्णा । फासा जहा चउप्पएसियस्स ॥

---

१. सोलस (स) ।

३४ नवपएसिए ण भते ! खधे—पुच्छा ।
गोयमा ! सिय एगवण्णे जहा अट्ठपएसिए जाव सिय चउफासे पण्णत्ते । जइ एगवण्णे ? एगवण्ण-दुवण्ण-तिवण्ण-चउवण्णा जहेव अट्ठपएसियस्स । जइ पचवण्णे ? १ सिय कालए य नीलए य लोहियए य हालिद्दए य सुक्किलए य, २ सिय कालए य नीलए य लोहियए य हालिद्दए य सुक्किलगा य, एव परिवाडीए एक्कतीस भगा भाणियव्वा जाव सिय कालगा य नीलगा य लोहियगा य हालिद्दगा य सुक्किलए य, एए एकत्तीस भगा, एव एक्कग-दुयग-तियग-चउक्कग-पचगसजोएहि दो छत्तीसा भगसया भवति । गधा जहा अट्ठपएसियस्स । रसा जहा एयस्स चेव वण्णा । फासा जहा चउपएसियस्स ॥

३५ दसपएसिए ण भते ! खधे—पुच्छा ।
गोयमा ! सिय एगवण्णे जहा नवपएसिए जाव सिय चउफासे पण्णत्ते । जइ एगवण्णे ? एगवण्ण-दुवण्ण-तिवण्ण-चउवण्णा जहेव नवपएसियस्स । पचवण्णे वि तहेव, नवर—वत्तीसतिमो भगो भण्णति, एवमेते एक्कग-दुयग-तियग-चउक्कग-पचगसजोएसु दोण्णि सत्ततीसा भगसया भवति । गधा जहा नवपएसियस्स । रसा जहा एयस्स चेव वण्णा । फासा जहा चउप्पएसियस्स । जहा दसपएसिओ एव सखेज्जपएसिओ वि । एव असखेज्जपएसिओ वि । सुहुम-परिणओ अणतपएसिओ वि एव चेव ॥

३६ वायरपरिणए ण भते ! अणतपएसिए खधे कतिवण्णे० ? एव जहा अट्ठारसमसए जाव[1] सिय अट्ठफासे पण्णत्ते । वण्ण-गध-रसा जहा दसपएसियस्स ।
जइ चउफासे ? १. सव्वे कक्खडे सव्वे गरुए सव्वे सीए सव्वे निद्धे, २. सव्वे कक्खडे सव्वे गरुए सव्वे सीए सव्वे लुक्खे, ३. सव्वे कक्खडे सव्वे गरुए सव्वे उसिणे सव्वे निद्धे, ४ सव्वे कक्खडे सव्वे गरुए सव्वे उसिणे सव्वे लुक्खे, ५ सव्वे कक्खडे सव्वे लहुए सव्वे सीए सव्वे निद्धे, ६. सव्वे कक्खडे सव्वे लहुए सव्वे सीए सव्वे लुक्खे, ७ सव्वे कक्खडे सव्वे लहुए सव्वे उसिणे सव्वे निद्धे, ८ सव्वे कक्खडे सव्वे लहुए सव्वे उसिणे सव्वे लुक्खे, ९ सव्वे मउए सव्वे गरुए सव्वे सीए सव्वे निद्धे, १० सव्वे मउए सव्वे गरुए सव्वे सीए सव्वे लुक्खे, ११. सव्वे मउए सव्वे गरुए सव्वे उसिणे सव्वे निद्धे, १२ सव्वे मउए सव्वे गरुए सव्वे उसिणे सव्वे लुक्खे, १३ सव्वे मउए सव्वे लहुए सव्वे सीए सव्वे निद्धे, १४ सव्वे मउए सव्वे लहुए सव्वे सीए सव्वे लुक्खे, १५. सव्वे मउए सव्वे लहुए सव्वे उसिणे सव्वे निद्धे, १६. सव्वे मउए सव्वे लहुए सव्वे उसिणे सव्वे लुक्खे, एए सोलस भगा ।
जइ पचफासे ? १ सव्वे कक्खडे सव्वे गरुए सव्वे सीए देसे निद्धे देसे लक्खे,

---

१. भ० १८।११७ ।

२. सव्वे कक्खडे सव्वे गरुए सव्वे सीए देसे निद्धे देसा लुक्खा, ३ सव्वे कक्खडे सव्वे गरुए सव्वे सीए देसा निद्धा देसे लुक्खे, ४. सव्वे कक्खडे सव्वे गरुए सव्वे सीए देसा निद्धा देसा लुक्खा, सव्वे कक्खडे सव्वे गरुए सव्वे उसिणे देसे निद्धे देसे लुक्खे ४, सव्वे कक्खडे सव्वे लहुए सव्वे सीए देसे निद्धे देसे लुक्खे ४, सव्वे कक्खडे सव्वे लहुए सव्वे उसिणे देसे निद्धे देसे लुक्खे ४, एव एए कक्खडेण सोलस भगा, सव्वे मउए सव्वे गरुए सव्वे सीए देसे निद्धे देसे लुक्खे, एव मउएण वि सोलस भगा, एव बत्तीस भगा, सव्वे कक्खडे सव्वे गरुए सव्वे निद्धे देसे सीए देसे उसिणे, सव्वे कक्खडे सव्वे गरुए सव्वे लुक्खे देसे सीए देसे उसिणे, एए बत्तीस भगा, सव्वे कक्खडे सव्वे सीए सव्वे निद्धे देसे गरुए देसे लहुए, एत्थ वि बत्तीस भगा, सव्वे गरुए सव्वे सीए सव्वे निद्धे देसे कक्खडे देसे मउए, एत्थ वि बत्तीस भगा, एव सव्वे एते पचफासे अट्ठावीस भगसय भवति ।

जइ छप्फासे ? १ सव्वे कक्खडे सव्वे गरुए देसे सीए देसे उसिणे देसे निद्धे देसे लुक्खे, २. सव्वे कक्खडे सव्वे गरुए देसे सीए देसे उसिणे देसे निद्धे देसा लुक्खा, एव जाव १६ सव्वे कक्खडे सव्वे गरुए देसा सीया देसा उसिणा देसा निद्धा देसा लुक्खा, एए सोलस भगा, सव्वे कक्खडे सव्वे लहुए देसे सीए देसे उसिणे देसे निद्धे देसे लुक्खे, एत्थ वि सोलस भगा, सव्वे मउए सव्वे गरुए देसे सीए देसे उसिणे देसे निद्धे देसे लुक्खे, एत्थ वि सोलस भगा, सव्वे मउए सव्वे लहुए देसे सीए देसे उसिणे देसे निद्धे देसे लुक्खे, एत्थ वि सोलस भगा, एए चउसट्ठि भगा, सव्वे कक्खडे सव्वे सीए देसे गरुए देसे लहुए देसे निद्धे देसे लुक्खे, एव जाव सव्वे मउए सव्वे उसिणे देसा गरुया देसा लहुया देसा णिद्धा देसा लुक्खा, एत्थ वि चउसट्ठि भगा, १ सव्वे कक्खडे सव्वे निद्धे देसे गरुए देसे लहुए देसे सीए देसे उसिणे जाव सव्वे मउए सव्वे लुक्खे देसा गरुया देसा लहुया देसा सीया देसा उसिणा, एए चउसट्ठि भगा, सव्वे गरुए सव्वे सीए देसे कक्खडे देसे मउए देसे निद्धे देसे लुक्खे, एव जाव सव्वे लहुए सव्वे उसिणे देसा कक्खडा देसा मउया देसा निद्धा देसा लुक्खा, एए चउसट्ठि भगा, सव्वे गरुए सव्वे निद्धे देसे कक्खडे देसे मउए देसे सीए देसे उसिणे जाव सव्वे लहुए सव्वे लुक्खे देसा कक्खडा देसा मउया देसा सीया देसा उसिणा, एए चउसट्ठि भगा, सव्वे सीए सव्वे निद्धे देसे कक्खडे देसे मउए देसे गरुए देसे लहुए जाव सव्वे उसिणे सव्वे लुक्खे देसा कक्खडा देसा मउया देसा गरुया देसा लहुया, एए चउसट्ठि भगा, सव्वे एते छप्फासे तिण्णि चउरासीया भगसया भवति ।

जइ सत्तफासे ? १ सव्वे कक्खडे देसे गरुए देसे लहुए देसे सीए देसे उसिणे देसे निद्धे देसे लुक्खे, सव्वे कक्खडे देसे गरुए देसे लहुए देसे सीए देसे उसिणे देसा निद्धा देसा लुक्खा ४, सव्वे कक्खडे देसे गरुए देसे लहुए देसे सीए देसा उसिणा

देसे निद्धे देसे लुक्खे ४, सव्वे कक्खडे देसे गरुए देसे लहुए देसा सीया देसे उसिणे देसे निद्धे देसे लुक्खे ४, सव्वे कक्खडे देसे गरुए देसे लहुए देसा सीया देसा उसिणा देसे निद्धे देसे लुक्खे ४, सव्वे एते सोलस भगा भाणियव्वा, सव्वे कक्खडे देसे गरुए देसा लहुया देसे सीए देसे उसिणे देसे निद्धे देसे लुक्खे, एव गरुएण एगत्तेण, लहुएण पुहत्तेण, एते वि सोलस भगा, सव्वे कक्खडे देसा गरुया देसे लहुए देसे सीए देसे उसिणे देसे निद्धे देसे लुक्खे, एए वि सोलस भगा भाणियव्वा, सव्वे कक्खडे देसा गरुया देसा लहुया देसे सीए देसे उसिणे देसे निद्धे देसे लुक्खे, एए वि सोलस भगा भाणियव्वा, एवमेते चउसट्ठि भगा कक्खडेण सम। सव्वे मउए देसे गरुए देसे लहुए देसे सीए देसे उसिणे देसे निद्धे देसे लुक्खे, एव मउएण वि सम चउसट्ठि भगा भाणियव्वा[1]। सव्वे गरुए देसे कक्खडे देसे मउए देसे सीए देसे उसिणे देसे निद्धे देसे लुक्खे, एव गरुएण वि सम चउसट्ठि भगा कायव्वा। सव्वे लहुए देसे कक्खडे देसे मउए देसे सीए देसे उसिणे देसे निद्धे देसे लुक्खे, एव लहुएण वि सम चउसट्ठि भगा कायव्वा। सव्वे सीए देसे कक्खडे देसे मउए देसे गरुए देसे लहुए देसे निद्धे देसे लुक्खे, एव सीतेण वि सम चउसट्ठि भगा कायव्वा। सव्वे उसिणे देसे कक्खडे देसे मउए देसे गरुए देसे लहुए देसे निद्धे देसे लुक्खे, एव उसिणेण वि सम चउसट्ठि भगा कायव्वा। सव्वे निद्धे देसे कक्खडे देसे मउए देसे गरुए देसे लहुए देसे सीए देसे उसिणे, एव निद्धेण वि सम चउसट्ठि भगा कायव्वा। सव्वे लुक्खे देसे कक्खडे देसे मउए देसे गरुए देसे लहुए देसे सीए देसे उसिणे, एव लुक्खेण वि सम चउसट्ठि भगा कायव्वा जाव सव्वे लुक्खे देसा कक्खडा देसा मउया देसा गरुया देसा लहुया देसा सीया देसा उसिणा, एव सत्तफासे पच बारसुत्तरा भगसया भवति।

जइ अट्ठफासे ? देसे कक्खडे देसे मउए देसे गरुए देसे लहुए देसे सीए देसे उसिणे देसे निद्धे देसे लुक्खे ४, देसे कक्खडे देसे मउए देसे गरुए देसे लहुए देसे सीए देसा उसिणा देसे निद्धे देसे लुक्खे ४, देसे कक्खडे देसे मउए देसे गरुए देसे लहुए देसा सीया देसे उसिणे देसे निद्धे देसे लुक्खे ४, देसे कक्खडे देसे मउए देसे गरुए देसे लहुए देसा सीया देसा उसिणा देसे निद्धे देसे लुक्खे ४, एए चत्तारि चउक्का सोलस भगा। देसे कक्खडे देसे मउए देसे गरुए देसा लहुया देसे सीए देसे उसिणे देसे निद्धे देसे लुक्खे, एव एते गरुएण एगत्तएण, लहुएण पुहत्तएण सोलस भगा कायव्वा। देसे कक्खडे देसे मउए देसा गरुया देसे लहुए देसे सीए देसे उसिणे देसे निद्धे देसे लुक्खे, एए वि सोलस भगा कायव्वा। देसे कक्खडे देसे मउए देसा गरुया देसा लहुया देसे सीए देसे उसिणे देसे निद्धे देसे लुक्खे, एते वि सोलस भगा कायव्वा। सव्वेवेते चउसट्ठि भगा कक्खड-मउएहि

१ नेयव्वा (अ, क, ता, व, म)।

एगत्तएहिं । ताहे कक्खडेणं एगत्तएणं, मउएण पुहत्तएण, एते चउसट्ठि भंगा कायव्वा । ताहे कक्खडेण पुहत्तएण, मउएण एगत्तएण चउसट्ठि भगा कायव्वा । ताहे एतेहि चेव दोहि वि पुहत्तेहि चउसट्ठि भगा कायव्वा जाव देसा कक्खडा देसा मउया देसा गरुया देसा लहुया देसा सीया देसा उसिणा देसा निद्धा देसा लुक्खा एसो अपच्छिमो भगो । सव्वे एते अट्ठफासे दो छप्पन्ना भगसया भवति । एव एते बादरपरिणए अणतपएसिए खधे सव्वेसु सजोएसु वारस छन्नउया भगसया भवति ।।

परमाणु-पद

३७ कतिविहे ण भते ! परमाणू पण्णत्ते ?
गोयमा ! चउव्विहे परमाणू पण्णत्ते, त जहा—दव्वपरमाणू, खेत्तपरमाणू, कालपरमाणू, भावपरमाणू ।।

३८ दव्वपरमाणू ण भते ! कतिविहे पण्णत्ते ?
गोयमा ! चउव्विहे पण्णत्ते, त जहा—अच्छेज्जे, अभेज्जे, अडज्झे, अगेज्झे ।।

३९. खेत्तपरमाणू ण भते ! कतिविहे पण्णत्ते ?
गोयमा ! चउव्विहे पण्णत्ते, त जहा—अणद्धे, अमज्झे, अपदेसे, अविभाइमे ।।

४० कालपरमाणू [1]ण भते ! कतिविहे पण्णत्ते ?°
गोयमा ! चउव्विहे पण्णत्ते, त जहा—अवण्णे, अगधे, अरसे, अफासे ।।

४१ भावपरमाणू ण भते ! कतिविहे पण्णत्ते ?
गोयमा ! चउव्विहे पण्णत्ते, त जहा—वण्णमते, गधमते, रसमते, फासमते ।।

४२. सेव भते ! सेव भते ! त्ति जाव[2] विहरइ ।।

छट्ठो उद्देसो

पुढविआदीणं आहार-पद

४३. पुढविक्काइए ण भते ! इमीसे रयणप्पभाए सक्करप्पभाए य पुढवीए अतरा समोहए, समोहणित्ता जे भविए सोहम्मे कप्पे पुढविकाइयत्ताए उववज्जित्तए, से णं भते ! कि पुव्वि उववज्जित्ता पच्छा आहारेज्जा ? पुव्वि आहारेत्ता पच्छा उववज्जेज्जा ?
गोयमा ! पुव्विं वा उववज्जित्ता पच्छा आहारेज्जा एवं जहा सत्तरसमसए

---

१. स० पा०—पुच्छा ।
२. भ० १।५१ ।

छट्ठुद्देसे जाव[1] से तेणट्ठेण गोयमा ! एव वुच्चइ—पुव्वि वा जाव उववज्जेज्जा, नवर—तेहि सपाउणणा, इमेहि आहारो भण्णति, सेस त चेव ।।

४४ पुढविक्काइए ण भते ! इमासे रयणप्पभाए सक्करप्पभाए य पुढवीए अतरा समोहए, समोहणित्ता जे भविए ईसाणे कप्पे पुढविक्काइयत्ताए उववज्जित्तए० ? एव चेव । एव जाव ईसीपब्भाराए उववाएयव्वो ।।

४५ पुढविक्काइए ण भते ! सक्करप्पभाए वालुयप्पभाए य पुढवीए अतरा समोहए, समोहणित्ता जे भविए सोहम्मे जाव ईसीपब्भाराए, एव एतेण कमेण जाव तमाए अहेसत्तमाए य पुढवीए अतरा समोहए समाणे जे भविए सोहम्मे जाव ईसीपब्भाराए उववाएयव्वो ।।

४६ पुढविक्काइए ण भते ! सोहम्मीसाणाण सणकुमार-माहिदाण य कप्पाण अतरा समोहए, समोहणित्ता जे भविए इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए पुढविक्काइयत्ताए उववज्जित्तए, से ण भते ! कि पुव्वि उववज्जित्ता पच्छा आहारेज्जा० ? सेस त चेव जाव से तेणट्ठेण जाव निक्खेवओ ।।

४७ पुढविक्काइए ण भते ! सोहम्मीसाणाण सणकुमार-माहिदाण य कप्पाण अतरा समोहए, समोहणित्ता जे भविए सक्करप्पभाए पुढवीए पुढविक्काइयत्ताए उववज्जित्तए० ? एव चेव । एव जाव अहेसत्तमाए उववाएयव्वो । एव सणकुमार-माहिदाण बभलोगस्स य कप्पस्स अतरा समोहए, समोहणित्ता पुणरवि जाव अहेसत्तमाए उववाएयव्वो । एव बभलोगस्स लतगस्स य कप्पस्स अतरा समोहए, पुणरवि जाव अहेसत्तमाए । एव लतगस्स महासुक्कस्स कप्पस्स य अतरा समोहए, पुणरवि जाव अहेसत्तमाए । एव महासुक्कस्स सहस्सारस्स य कप्पस्स अतरा पुणरवि जाव अहेसत्तमाए । एव सहस्सारस्स आणय-पाणय-कप्पाण य अतरा पुणरवि जाव अहेसत्तमाए । एव आणय-पाणयाण आरणच्चुयाण य कप्पाण अतरा पुणरवि जाव अहेसत्तमाए । एव आरणच्चुयाण गेवेज्ज-विमाणाण य अतरा जाव अहेसत्तमाए । एव गेवेज्जविमाणाण अणुत्तरविमाणाण य अतरा पुणरवि जाव अहेसत्तमाए । एव अणुत्तरविमाणाण ईसीपब्भाराए य पुणरवि जाव अहेसत्तमाए उववाएयव्वो ।।

४८ आउक्काइए ण भते ! इमीसे रयणप्पभाए सक्करप्पभाए य पुढवीए अतरा समोहए, समोहणित्ता जे भविए सोहम्मे कप्पे आउकाइयत्ताए उववज्जित्तए० ? सेस जहा पुढविक्काइयस्स जाव से तेणट्ठेण । एव पढम-दोच्चाण अतरा समोहए जाव ईसीपब्भाराए उववाएयव्वो । एव एएण कमेण जाव तमाए अहेसत्तमाए य पुढवीए अतरा समोहए, समोहणित्ता जाव ईसीपब्भाराए उववाएयव्वो आउक्काइयत्ताए ।।

---

१. भ० १७।६७,६८ ।

४९ आउयाए ण भते ! सोहम्मीसाणाण सणंकुमार-माहिदाण य कप्पाण अतरा समोहए, समोहणित्ता जे भविए इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए घणोदहि-घणोदहिवलएसु आउक्काइयत्ताए उववज्जित्तए० ? सेस त चेव । एव एएहि चेव अतरा समोहओ जाव अहेसत्तमाए पुढवीए घणोदहि-घणोदहिवलएसु आउक्काइयत्ताए उववाएयव्वो । एव जाव अणुत्तरविमाणाण ईसीपब्भाराए य पुढवीए अतरा समोहए जाव अहेसत्तमाए घणोदहि-घणोदहिवलएसु उववाएयव्वो ॥

५०. वाउक्काइए ण भते ! इमीसे रयणप्पभाए सक्करप्पभाए य पुढवीए अतरा समोहए, समोहणित्ता जे भविए सोहम्मे कप्पे वाउक्काइयत्ताए उववज्जित्तए० ? एव जहा सत्तरसमसए वाउक्काइयउद्देसए तहा इह वि, नवर—अतरेसु समोहणा नेयव्वा, सेस त चेव जाव अणुत्तरविमाणाण ईसीपब्भाराए य पुढवीए अतरा समोहए, समोहणित्ता जे भविए घणवाय-तणुवाए घणवाय-तणुवायवलएसु वाउक्काइयत्ताए उववज्जित्तए, सेस त चेव जाव से तेणट्ठेण जाव[1] उववज्जेज्जा ॥

५१. सेव भते ! सेव भते ! त्ति[2] ॥

सत्तमो उद्देसो

बंध-पदं

५२ कतिविहे ण भते ! बधे पण्णत्ते ?
गोयमा ! तिविहे बधे पण्णत्ते, त जहा—जीवप्पयोगबधे, अणतरबधे, परपरबधे ॥

५३. नेरइयाण भते ! कतिविहे बधे पण्णत्ते ? एव चेव । एव जाव वेमाणियाण ॥

५४ नाणावरणिज्जस्स ण भते ! कम्मस्स कतिविहे बधे पण्णत्ते ?
गोयमा ! तिविहे बधे पण्णत्ते, त जहा—जीवप्पयोगबधे, अणतरबधे, परपरबधे ॥

५५. नेरइयाण भते ! नाणावरणिज्जस्स कम्मस्स कतिविहे बधे पण्णत्ते ? एव चेव । एव जाव वेमाणियाण । एव जाव अतराइयस्स ॥

---

१. भ० १७।७८-८० ।
२. वाचनान्तराभिप्रायेण तु पृथिव्यब्वायु-विषयत्वादुद्देशकत्रयमिदमतोऽष्टम (वृ) ।

५६ नाणावरणिज्जोदयस्स ण भते ! कम्मस कतिविहे वधे पण्णत्ते ?
गोयमा ! तिविहे वधे पण्णत्ते एव चेव। एव नेरइयाण वि। एव जाव वेमाणियाण। एव जाव अतराइओदयस्स ॥

५७. इत्थीवेदस्स ण भते ! कम्मस्स कतिविहे वधे पण्णत्ते ?
गोयमा ! तिविहे वधे पण्णत्ते एव चेव ॥

५८ असुरकुमाराण भते ! इत्थीवेदस्स कम्मस्स कतिविहे वधे पण्णत्ते ? एव चेव। एव जाव वेमाणियाण, नवर—जस्स इत्थिवेदो अत्थि। एव पुरिसवेदस्स वि। एव नपुसगवेदस्स वि जाव वेमाणियाण, नवर—जस्स जो अत्थि वेदो ॥

५९ दसणमोहणिज्जस्स ण भते ! कम्मस्स कतिविहे वधे पण्णत्ते ? एव चेव। निरतर जाव वेमाणियाण। एव चरित्तमोहणिज्जस्स वि जाव वेमाणियाण। एव एएण कमेण ओरालियसरीरस्स जाव कम्मगसरीरस्स आहारसण्णाए जाव परिग्गहसण्णाए, कण्हलेसाए जाव सुक्कलेसाए, सम्मदिट्ठीए मिच्छादिट्ठीए सम्मामिच्छादिट्ठीए, आभिणिवोहियनाणस्स जाव केवलनाणस्स, मइअण्णाणस्स सुयअण्णाणस्स विभगनाणस्स, एव आभिणिवोहियनाणविसयस्स भते ! कतिविहे वधे पण्णत्ते जाव केवलनाणविसयस्स, मइअण्णाणविसयस्स सुयअण्णाणविसयस्स विभगनाणविसयस्स—एएसिं सव्वेसि पदाण तिविहे वधे पण्णत्ते। सव्वेवेते चउव्वीस दडगा भाणियव्वा, नवर—जाणियव्व जस्स ज अत्थि। जाव—

६०. वेमाणियाण भते ! विभगनाणविसयस्स कतिविहे वधे पण्णत्ते ?
गोयमा ! तिविहे वधे पण्णत्ते, त जहा—जीवप्पयोगवधे, अणतरबधे, परपरवधे ॥

६१ सेव भते ! सेव भते ! जाव[1] विहरइ[2] ॥

———

१ भ० १।५१।

२ इह सग्रहगाथे—
जीवप्पओगवधे, अणतरपरपरे च वोद्धव्वे।
पगडी उदए वेए, दसणमोहे चरित्ते य ॥१॥
ओरालियवेउव्विय-आहारगतेयकम्मए चेव।
सण्णा लेस्सा दिट्ठी, नाणानाणेसु तव्विसए ॥२॥
(वृ)।

अट्ठमो उद्देसो

समयखेत्ते ओसप्पिणि-उस्सप्पिणि-पदं

६२ कति ण भते ! कम्मभूमीओ पण्णत्ताओ ?
गोयमा ! पन्नरस कम्मभूमीओ पण्णत्ताओ, त जहा—पच भरहाइ, पच एरवयाइ, पच महाविदेहाइ ॥

६३ कति ण भते ! अकम्मभूमीओ पण्णत्ताओ ?
गोयमा ! तीस अकम्मभूमीओ पण्णत्ताओ, त जहा—पच हेमवयाइ, पच हेरण्णवयाइ, पच हरिवासाइ, पच रम्मगवासाइ, पच 'देवकुराओ, पच उत्तरकुराओ'[1] ॥

६४ एयासु ण भते ! तीसासु अकम्मभूमीसु अत्थि ओसप्पिणीति वा उस्सप्पिणीति वा ?
नो इणट्ठे समट्ठे ॥

६५ एएसु ण भते ! पचसु भरहेसु, पचसु एरवएसु अत्थि ओसप्पिणीति वा उस्सप्पिणीति वा ?
हता अत्थि। एएसु ण पचसु महाविदेहेसु नेवत्थि ओसप्पिणी, नेवत्थि उस्स-प्पिणी, अवट्ठिए ण तत्थ काले पण्णत्ते समणाउसो !

पचमहव्वइय-चाउज्जाम-धम्म-पदं

६६. एएसु ण भते ! पचसु महाविदेहेसु अरहता भगवतो पचमहव्वइय[2] सपडिक्कमणं धम्म पण्णवयति ?
नो इणट्ठे समट्ठे।
एएसु ण पचसु भरहेसु, पचसु एरवएसु, पुरिम-पच्छिमगा दुवे अरहता भगवतो पचमहव्वइय[3] सपडिक्कमण धम्म पण्णवयति, अवसेसा ण अरहता भगवतो चाउज्जाम धम्म पण्णवयति। एएसु ण पचसु महाविदेहेसु अरहंता भगवतो चाउज्जाम धम्म पण्णवयति ॥

तित्थगर-पदं

६७ जवुद्दीवे ण भते ! दीवे भारहे वासे इमीसे ओसप्पिणीए कति तित्थगरा पण्णत्ता ?
गोयमा ! चउवीस तित्थगरा पण्णत्ता, त जहा—उसभ-अजिय-सभव-अभिनदण-

---

१. देवकुरूओ पच उत्तरकुरूओ (अ, क, ख, व, म)।
२ पचमहव्वइय पचाणुव्वइय (ता, स)।
३ पचमहव्वइय पचाणुव्वइय (ता)।

सुमति-सुप्पभ-सुपास-ससि-पुप्फदत-सीयल-सेज्जस-वासुपुज्ज-विमल-ग्रणत-धम्म-सति-कुथु-अर-मल्लि-मुणिसुव्वय-नमि-नेमि-पास-वद्धमाणा ।।

६८ एएसि ण भते ! चउवीसाए तित्थगराण कति जिणतरा पण्णत्ता ?
गोयमा ! तेवीस जिणतरा पण्णत्ता ।।

जिणतरेसु कालियसुय-पदं

६९ एएसि ण भते ! तेवीसाए जिणतरेसु कस्स कहि कालियसुयस्स वोच्छेदे पण्णत्त ?
गोयमा ! एएसु ण तेवीसाए जिणतरेसु पुरिम-पच्छिमएसु ग्रट्ठसु-ग्रट्ठसु जिणतरेसु एत्थ ण कालियसुयस्स ग्रव्वोच्छेदे पण्णत्ते, मज्झिमएसु सत्तसु जिणतरेसु एत्थ ण कालियसुयस्स वोच्छेदे पण्णत्ते, सव्वत्थ वि ण वोच्छिण्णे दिट्ठिवाए ।।

पुव्वगय-पद

७० जबुद्दीवे ण भते ! दीवे भारहे वासे इमीसे ग्रोसप्पिणीए देवाणुप्पियाण केवतिय काल पुव्वगए ग्रणुसज्जिस्सति ?
गोयमा ! जबुद्दीवे ण दीवे भारहे वासे इमीसे ग्रोसप्पिणीए मम एग वाससहस्स पुव्वगए ग्रणुसज्जिस्सति ।।

७१ जहा ण भते ! जबुद्दीवे दीवे भारहे वासे इमीसे ग्रोसप्पिणीए देवाणुप्पियाण एग वाससहस्स पुव्वगए ग्रणुसज्जिस्सति, तहा ण भते ! जबुद्दीवे दीवे भारहे वासे इमीसे ग्रोसप्पिणीए अवसेसाण तित्थगराण केवतिय काल पुव्वगए ग्रणुसज्जित्था ?
गोयमा ! अत्थेगतियाण सखेज्ज काल, ग्रत्थेगतियाण असखेज्ज काल ।।

तित्थ-पदं

७२ जबुद्दीवे ण भते ! दीवे भारहे वासे इमीसे ग्रोसप्पिणीए देवाणुप्पियाण केवतिय काल तित्थे ग्रणुसज्जिस्सति ?
गोयमा ! जबुद्दीवे दीवे भारहे वासे इमीसे ग्रोसप्पिणीए मम एगवीस वाससहस्साइ तित्थे ग्रणुसज्जिस्सति ।।

७३ जहा ण भते ! जबुद्दीवे दीवे भारहे वासे इमीसे वासे ग्रोसप्पिणीए देवाणुप्पियाण एक्कवीस वाससहस्साइ तित्थे ग्रणुसज्जिस्सति, तहा ण भते ! जबुद्दीवे दीवे भारहे वासे ग्रागमेस्साण[1] चरिमतित्थगरस्स केवतिय काल तित्थे ग्रणुसज्जिस्सति ?

१. भविष्यता महापद्मादीना जिनानाम् (वृ) ।

गोयमा ! जावतिए ण उसभस्स अरहओ कोसलियस्स जिणपरियाए एवइयाइ सखेज्जाइ आगमेस्साण चरिमतित्थगरस्स तित्थे अणुसज्जिस्सति ।।

७४ तित्थ भते ! तित्थ ? तित्थगरे तित्थ ?
गोयमा ! अरहा ताव नियम तित्थकरे, तित्थ पुण चाउवण्णे[1] समणसघे, त जहा—समणा, समणीओ, सावया, सावियाओ ।।

७५ पवयण भते ! पवयण ? पावयणी पवयण ?
गोयमा ! अरहा ताव नियम पावयणी, पवयण पुण दुवालसगे गणिपिडगे, त जहा—आयारो[2] °सूयगडो ठाण समवाओ विआहपण्णत्ती णाया-धम्मकहाओ उवासगदसाओ अतगडदसाओ अणुत्तरोववाइयदसाओ पण्हावागरणाइ विवाग-सुय° दिट्ठिवाओ ।।

उग्गादीणं निग्गथधम्माणुगमण-पदं

७६. जे इमे भते ! उग्गा, भोगा, राइण्णा, इक्खागा, नाया[3], कोरव्वा—एए ण अस्सि धम्मे ओगाहति, ओगाहित्ता अट्ठविह कम्मरयमल पवाहेति, पवाहेत्ता तओ पच्छा सिज्झति जाव सव्वदुक्खाण अत करेति ?
हता गोयमा ! जे इमे उग्गा, भोगा,[4]°राइण्णा, इक्खागा, नाया, कोरव्वा—एए ण अस्सि धम्मे ओगाहति, ओगाहित्ता अट्ठविह कम्मरयमल पवाहेति, पवाहेत्ता तओ पच्छा सिज्झति जाव सव्वदुक्खाण° अत करेति, अत्थेगतिया अण्णयरेसु देवलोएसु देवत्ताए उववत्तारो भवति ।।

७७ कतिविहा ण भते ! देवलोया पण्णत्ता ?
गोयमा ! चउव्विहा देवलोया पण्णत्ता, त जहा—भवणवासी, वाणमतरा, जोतिसिया, वेमाणिया ।।

७८ सेव भते ! सेव भते ! त्ति ।।

———

नवमो उद्देसो

विज्जा-जंघा-चारण-पदं

७९. कतिविहा ण भते ! चारणा पण्णत्ता ?

---

१. चाउवण्णाइण्णे (व, स, वृ); चाउवण्णे (वृपा) ।
२. स० पा०—आयारो जाव दिट्ठिवाओ ।
३. नाता (अ, क, ब) ।
४. स० पा०—त चेव जाव अत ।

गोयमा ! दुविहा चारणा पण्णत्ता, त जहा—विज्जाचारणा य, जघाचारणा य ॥

८० से केणट्ठेण भते ! एव वुच्चइ—विज्जाचारणे[1]-विज्जाचारणे ?
गोयमा ! तस्स ण छट्ठछट्ठेण अणिक्खित्तेण तवोकम्मेण विज्जाए उत्तरगुणलद्धि खममाणस्स विज्जाचारणलद्धी नाम लद्धी समुप्पज्जइ। से तेणट्ठेण[2] °गोयमा ! एव वुच्चइ°—विज्जाचारणे-विज्जाचारणे ॥

८१. विज्जाचारणस्स ण भते ! कह सीहा गतो, कह सोहे गतिविसए पण्णत्ते ?
गोयमा ! अयण्ण जबुद्दीवे दीवे जाव[3] किंचिविसेसाहिए परिक्खेवेण। देवे ण महिड्ढीए जाव[4] महेसक्खे जाव इणामेव-इणामेव त्ति कट्टु[5] केवलकप्प जबुद्दीव दीव तिहि अच्छरानिवाएहि तिक्खुत्तो अणुपरियट्टित्ता ण हव्वमागच्छेज्जा, विज्जाचारणस्स ण गोयमा ! तहा सीहा गती, तहा सीहे गतिविसए पण्णत्ते ॥

८२. विज्जाचारणस्स ण भते ! तिरिय केवतिय गतिविसए पण्णत्ते ?
गोयमा ! से ण इओ एगेण उप्पाएण माणुसुत्तरे पव्वए समोसरण करेति, करेत्ता तहि चेइयाइ वदति, वदित्ता बितिएण उप्पाएण नदीसरवरे दीवे समोसरण करेति, करेत्ता तहि चेइयाइ वदति, वदित्ता तओ पडिनियत्तति, पडिनियत्तित्ता इहमागच्छइ, आगच्छित्ता इह चेइयाइ वदति। विज्जाचारणस्स ण गोयमा ! तिरिय एवतिए गतिविसए पण्णत्ते ॥

८३. विज्जाचारणस्स ण भते ! उड्ढ केवतिए गतिविसए पण्णत्ते ?
गोयमा ! से ण इओ एगेण उप्पाएण नदणवणे समोसरण करेति, करेत्ता तहिं चेइयाइ वदति, वदित्ता बितिएण उप्पाएण पडगवणे समोसरण करेति, करेत्ता तहि चेइयाइ वदति, वदित्ता तओ पडिनियत्तति, पडिनियत्तित्ता इहमागच्छइ, आगच्छित्ता इह चेइयाइ वदति। विज्जाचारणस्स ण गोयमा ! उड्ढ एवतिए गतिविसए पण्णत्ते। से ण तस्स ठाणस्स अणालोइयपडिक्कते[6] काल करेति नत्थि तस्स आराहणा। से ण तस्स ठाणस्स आलोइय-पडिक्कते काल करेति अत्थि तस्स आराहणा ॥

८४ से केणट्ठेण भते ! एव वुच्चइ—जघाचारणे-जघाचारणे ?
गोयमा ! तस्स ण अट्ठमअट्ठमेण अणिक्खित्तेण तवोकम्मेण अप्पाण भावेमा-

---

१. विज्जाचारणा (अ, क, ख, म, स)।
२ स० पा०—तेणट्ठेण जाव विज्जाचारणे।
३ भ० ६।७५।
४ भ० १।३३६।
५ तुलना—भ० ६।१७३।
६ अणालोतिय° (स)।

णस्स जंघाचारणलद्धी नाम लद्धी समुप्पज्जति। से तेणट्ठेणं[1] °गोयमा! एवं वुच्चइ°—जंघाचारणे-जंघाचारणे॥

८५. जंघाचारणस्स णं भंते! कहं सीहा गती, कहं सीहे गतिविसए पण्णत्ते?
गोयमा! अयण्णं जंबुद्दीवे दीवे[2] °जाव किंचिविसेसाहिए परिक्खेवेणं। देवे णं महिड्ढीए जाव महेसक्खे जाव इणामेव-इणामेव त्ति कट्टु केवलकप्पं जंबुद्दीवं दीवं तिहिं अच्छरानिवाएहिं° तिसत्तखुत्तो अणुपरियट्टित्ता णं हव्वमागच्छेज्जा, जंघाचारणस्स णं गोयमा! तहा सीहा गती, तहा सीहे गतिविसए पण्णत्ते[3]॥

८६. जंघाचारणस्स णं भंते! तिरियं केवतिए गतिविसए पण्णत्ते?
गोयमा! से णं इओ एगेणं उप्पाएणं रुयगवरे दीवे समोसरणं करेति, करेत्ता तहिं चेइयाइं वंदति, वंदित्ता तओ पडिनियत्तमाणे बितिएणं उप्पाएणं नंदीसरवरदीवे समोसरणं करेति, करेत्ता तहिं चेइयाइं वंदति, वंदित्ता इहमागच्छइ, आगच्छित्ता इहं चेइयाइं वंदति, जंघाचारणस्स णं गोयमा! तिरियं एवतिए गतिविसए पण्णत्ते॥

८७. जंघाचारणस्स णं भंते! उड्ढं केवतिए गतिविसए पण्णत्ते?
गोयमा! से णं इओ एगेणं उप्पाएणं पंडगवणे समोसरणं करेति, करेत्ता तहिं चेइयाइं वंदति, वंदित्ता तओ पडिनियत्तमाणे बितिएणं उप्पाएणं नंदणवणे समोसरणं करेति, करेत्ता तहिं चेइयाइं वंदति, वंदित्ता इहमागच्छइ, आगच्छित्ता इहं चेइयाइं वंदति, जंघाचारणस्स णं गोयमा! उड्ढं एवतिए गतिविसए पण्णत्ते। से णं तस्स ठाणस्स अणालोइय-पडिक्कते कालं करेइ नत्थि तस्स आराहणा। से णं तस्स ठाणस्स आलोइय-पडिक्कते कालं करेति अत्थि तस्स आराहणा॥

८८. सेवं भंते! सेवं भंते! जाव[4] विहरइ॥

दसमो उद्देसो

आउय-पदं

८९. जीवा णं भंते! किं सोवक्कमाउया? निरुवक्कमाउया?
गोयमा! जीवा सोवक्कमाउया वि, निरुवक्कमाउया वि॥

---

१. सं० पा०—तेणट्ठेणं जाव जंघाचारणे।
२. सं० पा०—एवं जहेव विज्जाचारणस्स नवरं तिसत्तखुत्तो।
३. पण्णत्ते, सेसं तं चेव (अ, क, ख, ता, ब, म, स)।
४. भ० १।५१।

९० नेरइयाण—पुच्छा ।
गोयमा ! नेरइया नो सोवक्कमाउया, निरुवक्कमाउया । एव जाव थणियकुमारा । पुढविक्काइया जहा जीवा । एव जाव मणुस्सा । वाणमतर-जोइसिय-वेमाणिया जहा नेरइया ।

उववज्जण-उव्वट्टण-पदं

९१ नेरइया ण भते ! किं आतोवक्कमेण[1] उववज्जति ? परोवक्कमेण उववज्जति ? निरुवक्कमेण उववज्जति ?
गोयमा ! आतोवक्कमेण वि उववज्जति, परोवक्कमेण वि उववज्जति, निरुवक्कमेण वि उववज्जति । एव जाव वेमाणिया ।।

९२ नेरइया ण भते ! कि आतोवक्कमेण उव्वट्टति ? परोवक्कमेण उव्वट्टति ? निरुवक्कमेण उव्वट्टति ?
गोयमा ! नो आतोवक्कमेण उव्वट्टति, नो परोवक्कमेण उव्वट्टति, निरुवक्कमेण उव्वट्टति । एव जाव थणियकुमारा । पुढविकाइया जाव मणुस्सा तिसु उव्वट्टति । सेसा जहा नेरइया, नवर—जोइसिय-वेमाणिया चयति ।।

९३ नेरइया ण भते ! किं आइड्ढीए उववज्जति ? परिड्ढीए[2] उववज्जति ?
गोयमा ! आइड्ढीए उववज्जति, नो परिड्ढीए उववज्जति । एव जाव वेमाणिया ।।

९४ नेरइया ण भते ! कि आइड्ढीए उव्वट्टति ? परिड्ढीए उव्वट्टति ?
गोयमा ! आइड्ढीए उव्वट्टति, नो परिड्ढीए उव्वट्टति । एव जाव वेमाणिया, नवर—जोइसिया वेमाणिया य चयतीति अभिलावो ।।

९५ नेरइया ण भते ! किं आयकम्मुणा उववज्जति ? परकम्मुणा उववज्जति ?
गोयमा ! आयकम्मुणा उववज्जति, नो परकम्मुणा उववज्जति । एव जाव वेमाणिया । एव उव्वट्टणादडओ वि ।।

९६ नेरइया ण भते ! कि आयप्पओगेण उववज्जति ? परप्पओगेण उववज्जति ?
गोयमा ! आयप्पओगेण उववज्जति, नो परप्पओगेण उववज्जति । एव जाव वेमाणिया । एव उव्वट्टणादडओ वि ।।

कतिसचियादि-पदं

९७ नेरइयाण भते ! कि कतिसचिया ? अकतिसचिया ? अवत्तव्वगसचिया ?

---

१ आत्मना—स्वयमेवायुष उपक्रम आत्मोपक्रमस्तेन मृत्वेति शेष (वृ) ।
२ परिड्ढीए (क) ।

गोयमा ! नेरइया कतिसंचिया वि, अकतिसंचिया वि, अवत्तव्वगसंचिया वि ॥

९८ से केणट्ठेण जाव अवत्तव्वगसंचिया वि ?
गोयमा ! जे णं नेरइया संखेज्जएणं पवेसणएणं पविसंति ते णं नेरइया कतिसंचिया, जे णं नेरइया असंखेज्जएणं पवेसणएणं पविसंति ते णं नेरइया अकतिसंचिया, जे णं नेरइया एक्कएणं पवेसणएणं पविसंति ते णं नेरइया अवत्तव्वगसंचिया। से तेणट्ठेणं गोयमा ! जाव अवत्तव्वगसंचिया वि। एवं जाव थणियकुमारा ॥

९९ पुढविक्काइयाणं—पुच्छा।
गोयमा ! पुढविकाइया नो कतिसंचिया, अकतिसंचिया, नो अवत्तव्वगसंचिया ॥

१०० से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ—जाव नो अवत्तव्वगसंचिया ?
गोयमा ! पुढविकाइया असंखेज्जएणं पवेसणएणं पविसंति। से तेणट्ठेणं जाव नो अवत्तव्वगसंचिया। एवं जाव वणस्सइकाइया[1]। बेंदिया जाव वेमाणिया जहा नेरइया ॥

१०१ सिद्धाणं—पुच्छा।
गोयमा ! सिद्धा कतिसंचिया, नो अकतिसंचिया, अवत्तव्वगसंचिया वि ॥

१०२. से केणट्ठेणं जाव अवत्तव्वगसंचिया वि ?
गोयमा ! जे णं सिद्धा संखेज्जएणं पवेसणएणं पविसंति ते णं सिद्धा कतिसंचिया, जे णं सिद्धा एक्कएणं पवेसणएणं पविसंति ते णं सिद्धा अवत्तव्वगसंचिया। से तेणट्ठेणं जाव अवत्तव्वगसंचिया वि ॥

१०३. एएसि णं भंते ! नेरइयाणं कतिसंचियाणं अकतिसंचियाणं अवत्तव्वगसंचियाण य कयरे कयरेहिंतो[2] °अप्पा वा ? बहुया वा ? तुल्ला वा ?° विसेसाहिया वा ?
गोयमा ! सव्वत्थोवा नेरइया अवत्तव्वगसंचिया, कतिसंचिया संखेज्जगुणा, अकतिसंचिया असंखेज्जगुणा। एवं एगिंदियवज्जाणं जाव वेमाणियाणं अप्पाबहुगं। एगिंदियाणं नत्थि अप्पाबहुगं ॥

१०४ एएसि णं भंते ! सिद्धाणं कतिसंचियाणं अवत्तव्वगसंचियाण य कयरे कयरेहिंतो[3] °अप्पा वा ? बहुया वा ? तुल्ला वा ?° विसेसाहिया वा ?
गोयमा ! सव्वत्थोवा सिद्धा कतिसंचिया, अवत्तव्वगसंचिया संखेज्जगुणा ॥

---

१. वनस्पतयस्तु यद्यप्यनन्ता उत्पद्यन्ते तथाऽपि प्रवेशनकं विजातीयेभ्य आगतानां यस्तत्रोत्पादस्तद्विवक्षितं, असङ्ख्याता एव विजातीयेभ्य उद्वृत्तास्तत्रोत्पद्यन्त इति सूत्रे उक्तम् (वृ)।

२. स० पा०—कयरेहिंतो जाव विसेसाहिया।

३ स० पा०—कयरेहिंतो जाव विसेसाहिया।

छक्कसमज्जियादि-पदं

१०५. नेरइयाण भंते ! किं छक्कसमज्जिया ? नोछक्कसमज्जिया ? छक्केण य नोछक्केण य समज्जिया ? छक्केहिं समज्जिया ? छक्केहि य नोछक्केण य समज्जिया ?

गोयमा ! नेरइया छक्कसमज्जिया वि, नोछक्कसमज्जिया वि, छक्केण य नोछक्केण य समज्जिया वि, छक्केहि समज्जिया वि, छक्केहि य नोछक्केण य समज्जिया वि ।।

१०६. से केणट्ठेण भंते ! एवं वुच्चइ—नेरइया छक्कसमज्जिया वि जाव छक्केहि य नोछक्केण य समज्जिया वि ?

गोयमा ! जे णं नेरइया छक्कएणं पवेसणएणं पविसंति ते णं नेरइया छक्क-समज्जिया । जे णं नेरइया जहण्णेणं एक्केण वा दोहि वा तीहि वा, उक्कोसेणं पंचएणं पवेसणएणं पविसंति ते णं नेरइया नोछक्कसमज्जिया । जे णं नेरइया एगेणं छक्कएणं अण्णेण य जहण्णेणं एक्केण वा दोहि वा तीहिं वा, उक्कोसेणं पंचएणं पवेसणएणं पविसंति तेणं नेरइया छक्केण य नोछक्केण य समज्जिया । जे णं नेरइया नेगेहिं छक्केहिं पवेसणएहिं[1] पविसंति ते णं नेरइया छक्केहि सम-ज्जिया । जे णं नेरइया नेगेहिं छक्केहि अण्णेण य जहण्णेणं एक्केण वा दोहि वा तीहिं वा, उक्कोसेणं पंचएणं पवेसणएणं पविसंति ते णं नेरइया छक्केहि य नोछक्केण य समज्जिया । से तेणट्ठेणं तं चेव जाव समज्जिया वि । एवं जाव थणियकुमारा ।।

१०७. पुढविक्काइयाणं—पुच्छा ।

गोयमा ! पुढविक्काइया नो छक्कसमज्जिया, नो नोछक्कसमज्जिया, नो छक्केण य नोछक्केण य समज्जिया, छक्केहिं समज्जिया, छक्केहि य नोछक्केण य समज्जिया वि ।।

१०८. से केणट्ठेणं जाव समज्जिया वि ?

गोयमा ! जे णं पुढविक्काइया नेगेहि छक्कएहि पवेसणएहि पविसंति ते णं पुढविक्काइया छक्केहि समज्जिया । जे णं पुढविक्काइया नेगेहि छक्कएहि य अण्णेण य जहण्णेणं एक्केण वा दोहिं वा तीहिं वा, उक्कोसेणं पंचएणं पवेसण-एणं पविसंति ते णं पुढविक्काइया छक्केहि य नोछक्केण य समज्जिया । से तेण-ट्ठेणं जाव समज्जिया वि । एवं जाव वणस्सइकाइया । बेंदिया जाव वेमाणिया, सिद्धा जहा नेरइया ।।

१०९. एएसि णं भंते ! नेरइयाणं छक्कसमज्जियाणं, नोछक्कसमज्जियाणं, छक्केण य नोछक्केण य समज्जियाणं, छक्केहि समज्जियाणं, छक्केहि य नोछक्केण य

---

१ पवेसणएण (अ, क, व, स), पवेसणग (ख, म) ।

समज्जियाण य कयरे कयरेहितो[1] °अप्पा वा ? वहुया वा ? तुल्ला वा ?° विसेसाहिया वा ?

गोयमा ! सव्वत्थोवा नेरइया छक्कसमज्जिया, नोछक्कसमज्जिया सखेज्जगुणा छक्केण य नोछक्केण य समज्जिया सखेज्जगुणा, छक्केहि समज्जिया असखेज्ज-गुणा, छक्केहि य नोछक्केण य समज्जिया सखेज्जगुणा। एव जाव थणिय-कुमारा ।।

११० एएसि ण भते ! पुढविकाइयाण छक्केहि समज्जियाण, छक्केहि य नोछक्केण य समज्जियाण य कयरे कयरेहितो[2] °अप्पा वा ? वहुया वा ? तुल्ला वा ?° विसेसाहिया वा ?

गोयमा ! सव्वत्थोवा पुढविक्काइया छक्केहि समज्जिया, छक्केहि य नोछक्केण य समज्जिया सखेज्जगुणा । एव जाव वणस्सइकाइयाण । वेइंदियाण जाव वेमाणियाण जहा नेरइयाण ।।

१११. एएसि ण भते ! सिद्धाण छक्कसमज्जियाण नोछक्कसमज्जियाण जाव छक्केहि य नोछक्केण य समज्जियाण य कयरे कयरेहितो[3] °अप्पा वा ? वहुया वा ? तुल्ला वा ?° विसेसाहिया वा ?

गोयमा ! सव्वत्थोवा सिद्धा छक्केहि य नोछक्केण य समज्जिया, छक्केहि सम-ज्जिया सखेज्जगुणा, छक्केण य नोछक्केण य समज्जिया सखेज्जगुणा, छक्कसम-ज्जिया सखेज्जगुणा, नोछक्कसमज्जिया सखेज्जगुणा ।।

वारससमज्जियादि-पद

११२ नेरइया ण भते ! कि वारससमज्जिया ?, नोवारससमज्जिया ? वारसएण य नोवारसएण य समज्जिया ? वारसएहि समज्जिया ? वारसएहि य नोवारस-एण य समज्जिया ?

गोयमा ! नेरइया वारससमज्जिया वि जाव वारसएहि य नोवारसएण य सम-ज्जिया वि ।।

११३. से केणट्ठेण जाव समज्जिया वि ?

गोयमा ! जे ण नेरइया वारसएण पवेसणएण पविसति ते ण नेरइया वारस-समज्जिया । जे ण नेरइया जहण्णेण एक्केण वा दोहि वा तीहि वा, उक्कोसेण एक्कारसएण पवेसणएण पविसति ते ण नेरइया नोवारससमज्जिया । जे ण नेरइया वारसएण अण्णेण य जहण्णेण एक्केण वा दोहि वा तीहि वा, उक्कोसेण एक्कारसएण पवेसणएण पविसति ते ण नेरइया वारसएण य नोवारसएण य

---

१ स० पा० —कयरेहितो जाव विसेसाहिया । ३. स० पा० — कयरेहितो जाव विसेसाहिया ।
२. स० पा०—कयरेहितो जाव विसेसाहिया ।

समज्जिया। जे ण नेरइया नेगेहि बारसएहि पवेसणएहिं पविसति ते ण नेरइया वारसएहि समज्जिया। जे ण नेरइया नेगेहि वारसएहिं अण्णेण य जहण्णेण एक्केण वा दोहि वा तीहि वा, उक्कोसेण एक्कारसएण पवेसणएण पविसति ते ण नेरइया वारसएहि य नोवारसएण य समज्जिया। से तेणट्ठेण जाव समज्जिया वि। एव जाव थणियकुमारा ॥

११४ पुढविक्काइयाण—पुच्छा।
गोयमा! पुढविक्काइया नोबारससमज्जिया, नो नोवारससमज्जिया, नो वारसएण य नोवारसएण य समज्जिया, वारसएहिं समज्जिया, बारसेहि य नोवारसेण य समज्जिया वि ॥

११५. से केणट्ठेण जाव समज्जिया वि ?
गोयमा! जे ण पुढविक्काइया नेगेहि वारसएहिं पवेसणएहि पविसति ते ण पुढविक्काइया बारसएहिं समज्जिया। जे ण पुढविक्काइया नेगेहि बारसएहिं अण्णेण य जहण्णेण एक्केण वा दोहिं वा तीहि वा, उक्कोसेण एक्कारसएण पवेसणएण पविसति ते ण पुढविक्काइया बारसएहि य नोबारसएण य समज्जिया। से तेणट्ठेण जाव समज्जिया वि। एव जाव वणस्सइकाइया। बेइदिया जाव सिद्धा जहा नेरइया ॥

११६ एएसि ण भंते! नेरइयाण वारससमज्जियाण[1]—सव्वेसिं अप्पाबहुग जहा छक्कसमज्जियाण, नवर—बारसाभिलावो, सेस त चेव ॥

चुलसीतिसमज्जियादि-पदं

११७. नेरइया ण भते! कि चुलसीतिसमज्जिया ? नोचुलसीतिसमज्जिया ? चुलसीतीए य नोचुलसीतीए य समज्जिया ? चुलसीतीहिं समज्जिया ? चुलसीतीहि य नोचुलसीतीए य समज्जिया ?
गोयमा! नेरइया चुलसीतिसमज्जिया वि जाव चुलसीतीहि य नोचुलसीतीए य समज्जिया वि ॥

११८ से केणट्ठेण जाव समज्जिया वि ?
गोयमा! जे ण नेरइया चुलसीतीएण पवेसणएण पविसति ते ण नेरइया चुलसीतिसमज्जिया। जे ण नेरइया जहण्णेण एक्केण वा दोहि वा तीहिं वा, उक्कोसेण तेसीतिपवेसणएण पविसति ते ण नेरइया नोचुलसीतिसमज्जिया। जे ण नेरइया चुलसीतीए ण अण्णेण य जहण्णेण एक्केण वा दोहि वा तीहिं वा, उक्कोसेण तेसीतीएण पवेसणएण पविसति ते ण नेरइया चुलसीतीए य नोचुलसीतीए य समज्जिया। जे ण नेरइया नेगेहि चुलसीतीएहिं पवेसणएहिं पविसति

---

१ पू०—भ० २०।१०९।

ते ण नेरइया चुलसीतीएहिं समज्जिया। जे णं नेरइया नेगेहिं चुलसीतीएहि य अण्णेण य जहण्णेण एक्केण वा[1] •दोहिं वा तीहिं वा°, उक्कोसेण तेसीतीएणं पवेसणएण[2] पविसति ते ण नेरइया चुलसीतीहि य नोचुलसीतीए य समज्जिया। से तेणट्ठेण जाव समज्जिया वि। एव जाव थणियकुमारा। पुढविक्काइया तहेव पच्छिल्लएहिं दोहिं, नवरं—अभिलाओ चुलसीतीओ। एव जाव वणस्सइ-काइया। बेदिया जाव वेमाणिया जहा नेरइया ॥

११९ सिद्धाण—पुच्छा।
गोयमा! सिद्धा चुलसीतिसमज्जिया वि, नोचुलसीतिसमज्जिया वि, चुलसीतीए य नोचुलसीतीए य समज्जिया वि, नो चुलसीतीहिं समज्जिया, नो चुलसीतीहि य नोचुलसीतीए य समज्जिया ॥

१२० से केणट्ठेण जाव समज्जिया?
गोयमा! जे ण सिद्धा चुलसीतीएण पवेसणएण पविसति ते ण सिद्धा चुलसीति समज्जिया। जे ण सिद्धा जहण्णेण एक्केण वा दोहिं वा तीहिं वा, उक्कोसेण तेसीतीएण पवेसणएण पविसति ते ण सिद्धा नोचुलसीतिसमज्जिया। जे ण सिद्धा चुलसीतीएण अण्णेण य जहण्णेण एक्केण वा दोहिं वा तीहि वा, उक्को-सेण तेसीतीएण पवेसणएण पविसति ते ण सिद्धा चुलसीतीए य नोचुलसीतीए य समज्जिया। तेणट्ठेण जाव समज्जिया ॥

१२१ एएसि ण भते! नेरइयाण चुलसीतिसमज्जियाण नोचुलसीतिसमज्जियाण[3]। —सव्वेसिं अप्पाबहुग जहा छक्कसमज्जियाण जाव वेमाणियाण, नवर—अभिलाओ चुलसीतीओ ॥

१२२ एएसि ण भते! सिद्धाणं चुलसीतिसमज्जियाणं, नोचुलसीतिसमज्जियाण, चुलसीतीए य नोचुलसीतीए य समज्जियाण य कयरे कयरेहितो[4] •अप्पा वा? बहुया वा? तुल्ला वा°? विसेसाहिया वा?
गोयमा! सव्वत्थोवा सिद्धा चुलसीतीए य नोचुलसीतीए य समज्जिया, चुलसीतिसमज्जिया अणतगुणा, नोचुलसीतिसमज्जिया अणतगुणा ॥

१२३ सेव भते! सेव भते! त्ति जाव[5] विहरइ ॥

———

१ मं० पा०—एक्केण वा जाव उक्कोसेण।
२ जाव (अ, क, ख, ता, ब, म, स)।
३. पू०—भ० २०।१०६।
४. स० पा०—कयरेहितो जाव विसेसाहिया।
५. भ० १।५१।

एगवीसइमं सतं

पढमो वग्गो

पढमो उद्देसो

१. सालि २ कल ३ अयसि ४ वसे, ५ इक्खू ६. दब्भे य ७. अब्भ ८. तुलसी य ।
अट्ठेए दस वग्गा, असीति[1] पुण होति उद्देसा ॥१॥

सालिआदिजीवाण उववायादि-पदं

१. रायगिहे जाव एव वयासी—अह भते ! साली-वीही-गोधूम-जव-जवजवाणं—एएसि ण भते ! जीवा मूलत्ताए वक्कमति, ते ण भते ! जीवा कओहिंतो उववज्जंति—किं नेरइएहिंतो उववज्जति ? तिरिक्खजोणिएहिंतो उववज्जति ? मणुस्सेहिंतो उववज्जति ? देवेहिंतो उववज्जति ? जहा[2] वक्कतीए तहेव उववाओ, नवर—देववज्ज ॥

२. ते णं भते ! जीवा एगसमएण केवतिया उववज्जति ?
गोयमा ! जहण्णेण एक्को वा दो वा तिण्णि वा, उक्कोसेण सखेज्जा वा असखेज्जा वा उववज्जति । अवहारो जहा[3] उप्पलुद्देसे ॥

३ तेसि ण भते ! जीवाण केमहालिया सरीरोगाहणा पण्णत्ता ?
गोयमा ! जहण्णेण अगुलस्स असखेज्जइभाग, उक्कोसेण धणुपुहत्त ॥

४. ते ण भते ! जीवा नाणावरणिज्जस्स कम्मस्स किं बधगा ? अबधगा ? जहा[4] उप्पलुद्देसे । एव वेदे वि, उदए वि, उदीरणा[5] वि ॥

५ ते ण भते ! जीवा किं कण्हलेस्सा, नीललेस्सा, काउलेस्सा छव्वीस भगा, दिट्ठी जाव इदिया जहा[6] उप्पलुद्देसे ॥

---

१. असीति (क, ब, स) ।
२. प० ६ ।
३. भ० ११।४ ।
४. भ० ११।६-११ ।
५ उदीरणाए (अ, क, ख, ता, म, स) ।
६. भ० ११।१३-२८ ।

६. ते णं भंते ! साली-वीही-गोधूम-जव-जवजवगमूलगजीवे कालओ केवच्चिरं[1] होति ?
गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं असंखेज्जं कालं ॥

७. से णं भंते ! साली-वीही-गोधूम-जव-जवजवगमूलगजीवे पुढवीजीवे, पुणरवि साली-वीही-जव-जवजवगमूलगजीवे केवतियं कालं सेवेज्जा ? केवतियं कालं गतिरागतिं करेज्जा ? एवं जहा उप्पलुद्देसे । एएणं अभिलावेणं जाव[2] मणुस्स-जीवे, आहारो जहा[3] उप्पलुद्देसे, ठिती जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं वासपुहत्तं, समुग्घाया, समोहया, उव्वट्टणा य जहा[4] उप्पलुद्देसे ॥

८. अह भंते ! सव्वपाणा जाव सव्वसत्ता साली-वीही-गोधूम-जव-जवजवगमूलग-जीवत्ताए उववण्णपुव्वा ?
हंता गोयमा ! असतिं अदुवा अणंतखुत्तो ॥

९. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति ॥

२-१० उद्देसो

१०. अह भंते ! साली-वीही[5]-•गोधूम-जव-°-जवजवाणं—एएसि णं जे जीवा कंदत्ताए वक्कमंति ते णं भंते ! जीवा कओहिंतो उववज्जंति ? एवं कंदाहि-गारेण सच्चेव मूलुद्देसो अपरिसेसो भाणियव्वो जाव असतिं अदुवा अणंतखुत्तो ॥

११. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति ॥

१२. एवं खंधे वि उद्देसओ नेयव्वो । एवं तयाए वि उद्देसो भाणियव्वो । साले वि उद्देसो भाणियव्वो । पवाले वि उद्देसो भाणियव्वो । पत्ते वि उद्देसो भाणि-यव्वो । एए सत्त वि उद्देसगा अपरिसेसं जहा मूले तहा नेयव्वा । एवं पुप्फे वि उद्देसओ, नवरं—देवा उववज्जंति जहा[6] उप्पलुद्देसे । चत्तारि लेस्साओ, असीति भंगा । ओगाहणा जहण्णेणं अंगुलस्स असंखेज्जइभागं, उक्कोसेणं अंगुलपुहत्तं, सेसं तं चेव ॥

१३. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति ॥

१४. जहा पुप्फे एवं फले वि उद्देसओ अपरिसेसो भाणियव्वो । एवं बीए वि उद्देसओ । एए दस उद्देसगा ॥

---

१ केवचिर (अ, क, ख, व) ।
२ भ० ११।३०-३४ ।
३ भ० ११।३५ ।
४. भ० ११।३७-३९ ।
५ स० पा०—वीही जाव जवजवाणं ।
६ भ० ११।२ ।

बीओ वग्गो

१५ अह भते ! कल-मसूर-तिल-मुग्ग-मास-निप्फाव-कुलत्थ-आलिसदग-सतीण[1]-पलिमथगाण[2]—एएसि ण जे जीवा मूलत्ताए वक्कमति ते ण भते ! जीवा कओहितो उववज्जति ? एव मूलादीया दस उद्देसगा भाणियव्वा जहेव सालीण निरवसेस तहेव ॥

तइयो वग्गो

१६ अह भते ! अयसि-कुसुभ-कोद्दव-कगु-रालग-वरा-कोदूसा-सण-सरिसव-मूलग-बीयाण एएसि ण जे जीवा मूलत्ताए वक्कमति ते ण भते ! जीवा कओहिंतो उववज्जति ? एव एत्थ वि मूलादीया दस उद्देसगा जहेव सालीण निरवसेस तहेव भाणियव्वा ॥

चउत्थो वग्गो

१७ अह भते ! वस-वेणु-कणक-कक्कावस-चारुवस[3]-दडा[4]-कुडा[5]-विमा-कडा-वेलुया-कल्लाणाण[6]—एएसि ण जे जीवा मूलत्ताए वक्कमति० ? एव एत्थ वि मूलादीया दस उद्देसगा जहेव सालीण, नवर—देवो सव्वत्थ वि न उववज्जति । तिण्णि लेसाओ । सव्वत्थ वि छव्वीस भगा, सेस त चेव ॥

---

१ सढिए (अ), सव्विए (क), सद्दिए (ख), सडिण (ता, स); सतिए (व), सदिण (म)

२. पलिमिथगाण (अ, ता), पमिलिवगाण (क), पलिमित्थगाण (ख, व, म) ।

३ यारुरवस (अ), यारुवंस (व), वगरवंस (म) ।

४. उडा (ता), दडगा (व) ।

५. कु डा (अ, ता, स) ।

६. कल्लाणीण (अ, क, ता, ब, म) ।

पंचमो वग्गो

१८. अह भंते ! उक्खु-उक्खुवाडिय-वीरण-इक्कड-भमास-सुंठ[1]-सर-वेत्त-तिमिर-सतपोरग[2]-नलाणं—एएसि णं जे जीवा मूलत्ताए वक्कमंति० ? एवं जहेव वंसवग्गो तहेव एत्थ वि मूलादीया दस उद्देसगा, नवरं—खंधुद्देसे देवो उववज्जति । चत्तारि लेस्साओ, सेसं तं चेव ॥

छट्ठो वग्गो

१९. अह भंते ! सेडिय[3]-भंतिय[4]-कोंतिय-दब्भ-कुस-पव्वग-पोदइल[5]-अज्जुण-आसाढग-रोहियंस-सुय[6]-वखीर[7]-भुस[8]-एरंड-कुरुकुंद[9]-करकर सुंठ- विभंगु महुरतण[10]-थुरग[11]-सिप्पिय-सुंकलितणाणं—एएसि णं जे जीवा मूलत्ताए वक्कमंति० ? एवं एत्थ वि दस उद्देसगा निरवसेसं जहेव वंसवग्गो ॥

सत्तमो वग्गो

२० अह भंते ! अब्भरुह[12]-वोयाण[13]-हरितग-तंदुलेज्जग-तण-वत्थुल-पोरग[14]-मज्जार-पाइ[15]-विल्लि[16]-पालक्क-दगपिप्पलिय- दव्वि-सोत्थिक-सायमंडुक्कि[17]-मूलग-सरिसव-अंबिलसाग-जियंतगाणं—एएसि णं जे जीवा मूलत्ताए वक्कमंति० ? एवं एत्थ वि दस उद्देसगा निरवसेसं जहेव वंसवग्गो ॥

---

१. मुंडे (अ); सुंठे (क, ख, ता) ।
२ मतवोरग (ख) ।
३. सेढिय (स) ।
४. भंतिय (अ), भात्तिय (क), भंति (ता), भंतेय (व) ।
५ पदेइल (अ), वोदइल (ता) ।
६. मुत (क, ख, व, स) ।
७. पक्खीर (ता) ।
८. भूस (अ, क, ता, व) ।
९. कुडकुरुकुंद (ता) ।
१०. वहुरयण (क, व), महुरयण (ख) ।
११ छुरग (ता) ।
१२. अब्भरुह (क, ख, ता, व) ।
१३ वेताण (अ); वायाण (ख) ।
१४ वोरग (अ), चोरग (स) ।
१५. याइ (ख, म) ।
१६. विलि (ता), चिल्लि (व) ।
१७. सायमंडुक्कि (ख, ता, म) ।

अट्ठमो वग्गो

२१ अह भंते ! कुलसी-कण्ह-दराल-फणेज्जा-अज्जा-भूयणा[1]-चोरा-जीरा-दमणा-मरुया-इंदीवर-सयपुप्फाणं—एएसि णं जे जीवा मूलत्ताए वक्कमंति० ? एत्थ वि दस उद्देसगा निरवसेसं जहा वंसाणं। एवं एएसु अट्ठसु वग्गेसु असीतिं उद्देसगा भवंति॥

---

१. चूयणा (स)।

बावीसमं सतं

पढमो वग्गो

१,२ तालेगट्ठिय ३. बहुबीयगा य ४. गुच्छा य ५ गुम्म ६ वल्ली य ।
छद्दस वग्गा एए, सट्ठि पुण होंति उद्देसा ॥१॥

१ रायगिहे जाव एवं वयासी—अह भंते ! ताल-तमाल-तक्कलि-तेतलि[1]-साल-सरला-'सारकल्लाण-जावति-केयइ'[2]-कदलि- कदलि-चम्मरुक्ख- भुयरुक्ख[3]-हिंगुरुक्ख-लवगरुक्ख-पूयफलि-खज्जूरि-नालिएरीण—एएसि ण जे जीवा मूलत्ताए वक्कमति, ते ण भंते ! जीवा कओहितो उववज्जति० ? एवं एत्थ वि मूलादीया दस उद्देसगा कायव्वा जहेव सालीण, नवरं—इमं नाणत्तं—मूले कदे खंधे तयाए साले य एएसु पंचसु उद्देसगेसु देवो न उववज्जति । तिण्णि लेसाओ । ठिती जहण्णेण अतोमुहुत्त, उक्कोसेण दसवाससहस्साइ । उवरिल्लेसु पंचसु उद्देसएसु देवो उववज्जति । चत्तारि लेसाओ । ठिती जहण्णेण अतोमुहुत्त, उक्कोसेण वासपुहत्तं । ओगाहणा मूले कदे धणुहपुहत्त, खंधे तयाए साले य गाउयपुहत्त, पवाले पत्ते धणुहपुहत्त, पुप्फे हत्थपुहत्त, फले बीए य अगुलपुहत्त । सव्वेसि जहण्णेण अगुलस्स असखेज्जइभाग । सेस जहा सालीण । एवं एए दस उद्देसगा ॥

———

१. तेवलि (अ, म) ।

२. सारकल्लाण जाव केवइ (अ, क, ख, ता, व, म, स); अत्र सर्वेष्वादर्शेषु 'सारकल्लाण जाव केवइ' इति पाठो लभ्यते । भ० ८।२१७ तथा प्रज्ञापनाया प्रथमपदे यथा पाठोस्ति तदाधारेण ज्ञायते लिपिभ्रमोऽसौ जात । वस्तुत 'सारकल्लाए जावति केयइ' इति पाठ समीचीनोस्ति । अत्र जाव शब्दस्य किमपि प्रयोजन नावगम्यते ।

३ गुवरुक्ख (अ), गुयरुक्ख (क, ख), गुदरुख (ता) । × (व); गुत्तरुक्ख (म) गुतरुक्ख (स) ।

बीओ वग्गो

२ अह भते ! निबब जबु-कोसंब-साल[1]-अकोल्ल-पीलु-सेलु-सल्लइ-मोयइ-मालुय-बउल-पलास--करज- पुत्तजीवग-अरिट्ठ-विहेलग[2] - हरितग - भल्लाय-उबभरिय[3]-खीरणि-धायइ-पियाल-पूइयणिंबारग सेण्हय[4]-पासिय[5]-सीसव-असण[6]-पुण्णाग-नागरुक्ख-सीवण्णि[7]-असोगाण—एएसि ण जे जीवा मूलत्ताए वक्कमति० ? एव मूलादीया दस उद्देसगा कायव्वा निरवसेस जहा तालवग्गो ।।

तइओ वग्गो

३ अह भते ! अत्थिय-तिदुय-बोर-कविट्ठ—अबाडग-माउलिग[8]-बिल्ल[9]-आमलग-फणस- दाडिम[10]- आसोत्थ[11] -उबर-वड- नग्गोह-नदिरुक्ख - पिप्पलि - सतरि[12]-पिलक्खुरुक्ख- काउबरिय-कुत्थुभरिय[13]-देवदालि-तिलग- लउय-छत्तोह- सिरीस-सत्तिवण्ण[14]-दहिवण्ण-लोद्ध-धव-चदण-अज्जुण-नीम[15]-कुडग-कलबाण—एएसि ण जे जीवा मूलत्ताए वक्कमति, ते ण भते ! जीवा कओहिंतो उववज्जति० ? एव एत्थ वि मूलादीया दस उद्देसगा तालवग्गसरिसा नेयव्वा जाव बीय ।।

---

१. ताल (क, ख, ता, ब, म, स) ।
२ वेहेलग (ता) ।
३. उबरिभरीय (अ) ।
४ सेण्हण (ता), सिण्हण (ब), सण्हय (स) ।
५. पोसिय (अ), पसिय (म) ।
६ अयसि (अ, क ख, ता, ब, म, स); सर्वासु प्रतिषु 'अयसि' इति पाठो लिखितोस्ति, किन्तु प्रज्ञापनाया (प० १) अनुसारेण 'असण' इति पद गृहीतम् ।
७. सीवण्ण (अ, क, ख, ता, म, स) ।
८ मातुलुग (अ, क, ख, ब, म) ।
९ बेल्ल (ब) ।
१० दालिम (ख, ता, स) ।
११ असोलु (अ, म), असोट्ठ (क, ख, ब), असोह (ता) ।
१२ सतरा (अ), सतर (क, ख, स); सेतर (ब)
१३. कोच्छुभरिय (ख), कुच्छुंभरिय (स) ।
१४ सत्तवण्ण (स) ।
१५ नीव (ख) ।

चउत्थो वग्गो

४ अह भंते ! वाइगणि-अल्लइ-पोंडइ, एवं जहा पण्णवणाए गाहाणुसारेणं नेयव्वं जाव[1] गज-पाडला-दासि[2]-अंकोल्लाणं—एएसि णं जे जीवा मूलत्ताए वक्क-मंति० ? एवं एत्थ वि मूलादीया दस उद्देसगा नेयव्वा जाव बीयं ति निरवसेसं जहा वंसवग्गो ॥

पंचमो वग्गो

५ अह भंते ! सेरियक[3]-नवमालिय-कोरंटग-बंधुजीवग-मणोज्जा[4], जहा पण्णवणाए पढमपदे गाहाणुसारेणं जाव[5] नवणीतिय[6]-कुंद-महाजाईणं—एएसि णं जे जीवा मूलत्ताए वक्कमंति० ? एवं एत्थ वि मूलादीया दस उद्देसगा निरवसेसं जहा सालीणं ॥

छट्ठो वग्गो

६. अह भंते ! पूसफलि-कालिंगी-तुंबी-तउसी-एलावालुंकी, एवं पदाणि छिंदियव्वाणि पण्णवणागाहाणुसारेणं जहा तालवग्गे जाव[7] दधिफोल्लइ-काकलि-मोकलि[8]-अक्कबोंदीणं—एएसि णं जे जीवा मूलत्ताए वक्कमंति० ? एवं एत्थ वि मूलादीया दस उद्देसगा कायव्वा जहा तालवग्गो, नवरं—फलउद्देसे ओगाहणाए जहण्णेणं अंगुलस्स असंखेज्जइभागं, उक्कोसेणं धणुपुहत्तं। ठिती सव्वत्थ जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं वासपुहत्तं, सेसं तं चेव। एवं छसु वि वग्गेसु सट्ठिं उद्देसगा भवंति ॥

---

१. प० १, गुच्छवग्गो।

२ पालुलावासि (अ), पाडलावासि (ख, स); पायलायसि (व), पातुलावासि (म)।

३ सिरियका (क), सरियक (ता), सरियक (व)।

४ मणोजा (अ, म)।

५. प० १, गुम्मवग्गो।

६. नवणीय (ख, व, म), नलणीय (स)।

७. प० १, वल्लिवग्गो।

८. मोक्कलि (ख, व, स)।

तेवीसइमं सतं

पढमो वग्गो

१ आलुय २ लोही ३ अवए, ४ पाढा तह ५. मासवण्णि-वल्ली य ।
पचेते दसवग्गा, पन्नास होंति उद्देसा ॥१॥

१ रायगिहे जाव एव वयासी—अह भते ! आलुय-मूलग-सिगबेर-हलिद्दा[१]-रुरु-कडरिय- जारु- छीरबिरालि- किट्ठि- कुदु[२]- कण्हाकडभु[३]- मधु-पुयलइ[४]- महुसिगि-निरुहा[५]-सप्पसुगधा[६]-छिण्णरुह-बीयरुहाण—एएसि ण जे जीवा मूलत्ताए वक्क-मति० ? एव एत्थ वि मूलादीया दस उद्देसगा कायव्वा वसवग्गसरिसा, नवर—परिमाण जहण्णेण एक्को वा दो वा तिण्णि वा, उक्कोसेण सखेज्जा वा असखेज्जा वा अणता वा उववज्जति । अवहारो—गोयमा ! ते ण अणता समये-समये अवहीरमाणा-अवहीरमाणा अणताहिं ओसप्पिणीहि उस्सप्पिणीहि एवतिकालेण अवहीरति, नो चेव ण अवहिया[७] सिया । ठिती जहण्णेण वि उक्कोसेण वि अतोमुहुत्त, सेस त चेव ॥

बीओ वग्गो

२ अह भते ! लोही-णीहू[८]-थीहू[९]-थिभगा-अस्सकण्णी-सीहकण्णी-सिउढी-मुसुढीण[१०] —एएसि ण जे जीवा मूलत्ताए वक्कमति० ? एव एत्थ वि दस उद्देसगा जहेव आलुवग्गो, नवर—ओगाहणा तालवग्गसरिसा, सेस त चेव ॥

३ सेव भते ! सेव भते ! त्ति ॥

---

१ हालिद्दा (अ, म), हलिद्द (ख, ता, स), हालिद्द (ब) ।
२. कुथु (अ, क, ब), कुथु (ता) ।
३. कण्हकडउ (अ, स), कण्हकडलु (ब) ।
४. धुपलइ (अ) ।
५ नोरुहा (ख) ।
६ सुपासगधा (अ) ।
७ अवहरिया (स) ।
८ णेहू (ब) ।
९ वीहू (अ, ब), वीहू (स) ।
१० मुसठीण (ता) ।

तइओ वग्गो

४ अह भंते ! आय-काय-कुहुण-कुंदुरुक्क-उव्वेहलिया[1]-सफा-सज्जा-छत्ता-वंसाणिय-कुराण[2]—एएसि णं जे जीवा मूलत्ताए वक्कमंति० ? एवं एत्थ वि मूलादीया दस उद्देसगा निरवसेसं जहा आलुवग्गो, नवरं—ओगाहणा तालवग्गसरिसा, सेसं तं चेव ॥

५ सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति ॥

चउत्थो वग्गो

६ अह भंते ! पाढा-मियवालुंकि-मधुररसा-रायवल्लि-पउमा-मोढरि-दंति-चंडीणं—एएसि णं जे जीवा मूलत्ताए वक्कमंति० ? एवं एत्थ वि मूलादीया दस उद्देसगा आलुयवग्गसरिसा, नवरं - ओगाहणा जहा वल्लीणं, सेसं तं चेव ॥

७ सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति ॥

पंचमो वग्गो

८ अह भंते ! मासपण्णी-मुग्गपण्णी-जीवग-सरिसव-करेणुय-काओलि-खीरकाकोलि-भंगि-णहि- किमिरासि- भद्दमुत्थ- णंगलइ-पयुय[3] -किण्हा[4] -'पउल-हढ'[5] -हरेणुया-लोहीणं—एएसि णं जे जीवा मूलत्ताए वक्कमंति० ? एवं एत्थ वि दस उद्देसगा निरवसेसं आलुयवग्गसरिसा। एवं एत्थ पंचसु वि वग्गेसु पन्नासं उद्देसगा भाणियव्वा। सव्वत्थ देवा न उववज्जंति। तिण्णि लेसाओ ॥

९. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति ॥

---

१ उव्वेहलिया तिव्वेहलिया (ता)।

२. कुरवाण (ता)।

३. पहुय (क), पेसुय (ख), पेयुय (व, म)।

४. किणा (अ, क, ख, ता, व, म, स)।

५ पउयलघाढे (अ, क), पउयलपाढे (ख, म, स), पउयलवाढे (व)।

चउवीसइमं सतं

पढमो उद्देसो

१ उववाय २ परीमाण, ३,४ संघयणुच्चत्तमेव ५ संठाण ।
६ लेस्सा ७ दिट्ठी ८ नाणे, अण्णाणे ९ जोग १० उवओगे ।।१।।
११ सण्णा १२ कसाय १३ इंदिय, १४ समुग्घाया १५ वेदणा य १६ वेदे य ।
१७ आउ १८ अज्झवसाणा, १९ अणुबंधो २०- कायसंवेहो ।।२।।
जीवपदे[1] जीवपदे, जीवाण दंडगम्मि उद्देसो ।
चउवीसतिमम्मि सए, चउव्वीस होंति उद्देसा ।।३।।

नेरइयादीसु उववायादि-गमग-पदं

१ रायगिहे जाव एवं वयासी—नेरइया णं भंते ! कओहिंतो उववज्जंति—किं नेरइएहिंतो उववज्जंति ? तिरिक्खजोणिएहिंतो उववज्जंति ? मणुस्सेहिंतो उववज्जंति ? देवेहिंतो उववज्जंति ?
गोयमा ! नो नेरइएहिंतो उववज्जंति, तिरिक्खजोणिएहिंतो उववज्जंति, मणुस्सेहिंतो वि उववज्जंति, नो देवेहिंतो उववज्जंति ।।

२ जइ तिरिक्खजोणिएहिंतो उववज्जंति—किं एगिंदियतिरिक्खजोणिएहिंतो उववज्जंति जाव पंचिंदियतिरिक्खजोणिएहिंतो उववज्जंति ?
गोयमा ! नो एगिंदियतिरिक्खजोणिएहिंतो उववज्जंति, नो बेंदिय, नो तेइंदिय, नो चउरिंदिय, पंचिंदियतिरिक्खजोणिएहिंतो उववज्जंति ।।

३. जइ पंचिंदियतिरिक्खजोणिएहिंतो उववज्जंति—किं सण्णिपंचिंदियतिरिक्खजोणिएहिंतो उववज्जंति ? असण्णिपंचिंदियतिरिक्खजोणिएहिंतो उववज्जंति ?
गोयमा ! सण्णिपंचिंदियतिरिक्खजोणिएहिंतो उववज्जंति, असण्णिपंचिंदियतिरिक्खजोणिएहिंतो वि उववज्जंति ।।

---

१. इयं च गाथा पूर्वोक्तद्वारगाथाद्वयात् क्वचित् पूर्वं दृश्यत इति (वृ) ।

४ जइ असण्णिपंचिंदियतिरिक्खजोणिएहिंतो उववज्जंति—किं जलचरेहिंतो उववज्जंति ? थलचरेहिंतो उववज्जंति ? खहचरेहिंतो उववज्जंति ?
गोयमा ! जलचरेहिंतो उववज्जंति, थलचरेहिंतो वि उववज्जंति, खहचरेहिंतो वि उववज्जंति ।।

५ जइ जलचर-थलचर-खहचरेहिंतो उववज्जंति —किं पज्जत्तएहिंतो उववज्जंति ? अपज्जत्तएहिंतो उववज्जंति ?
गोयमा ! पज्जत्तएहिंतो उववज्जंति, नो अपज्जत्तएहिंतो उववज्जंति ।।

६ पज्जत्ताअसण्णिपंचिंदियतिरिक्खजोणिए णं भंते ! जे भविए नेरइएसु उववज्जित्तए, से णं भंते ! कतिसु पुढवीसु उववज्जेज्जा ?
गोयमा ! एगाए रयणप्पभाए पुढवीए उववज्जेज्जा ।।

७ पज्जत्ताअसण्णिपंचिंदियतिरिक्खजोणिए णं भंते ! जे भविए रयणप्पभाए पुढवीए नेरइएसु उववज्जित्तए, से णं भंते ! केवतिकालट्ठितीएसु उववज्जेज्जा ?
गोयमा ! जहण्णेणं दसवाससहस्सट्ठितीएसु, उक्कोसेणं पलिओवमस्स असंखेज्जइ-भागट्ठितीएसु उववज्जेज्जा ।।

८ ते णं भंते ! जीवा एगसमएणं केवतिया उववज्जंति ?
गोयमा ! जहण्णेणं एक्को वा दो वा तिण्णि वा, उक्कोसेणं संखेज्जा वा असंखेज्जा वा उववज्जंति ।।

९ तेसि णं भंते ! जीवाणं सरीरगा[1] किंसंघयणी[2] पण्णत्ता ?
गोयमा ! छेवट्टसंघयणी[3] पण्णत्ता ।।

१० तेसि णं भंते ! जीवाणं केमहालिया सरीरोगाहणा पण्णत्ता ?
गोयमा ! जहण्णेणं अंगुलस्स असंखेज्जइभागं, उक्कोसेणं जोयणसहस्सं ।।

११ तेसि णं भंते ! जीवाणं सरीरगा किंसंठिया पण्णत्ता ?
गोयमा ! हुंडसंठिया[4] पण्णत्ता ।।

१२ तेसि णं भंते ! जीवाणं कति लेस्साओ पण्णत्ताओ ?
गोयमा ! तिण्णि लेस्साओ पण्णत्ताओ, तं जहा—कण्हलेस्सा, नीललेस्सा, काउलेस्सा ।।

१३ ते णं भंते ! जीवा किं सम्मदिट्ठी ? मिच्छादिट्ठी ? सम्मामिच्छादिट्ठी ?
गोयमा ! नो सम्मदिट्ठी, मिच्छादिट्ठी, नो सम्मामिच्छादिट्ठी ।।

१४. ते णं भंते ! जीवा किं नाणी ? अण्णाणी ?
गोयमा ! नो नाणी, अण्णाणी, नियमा दुअण्णाणी, तं जहा—मइअण्णाणी य, सुयअण्णाणी य ।।

---

१. सरीरा (ता) ।
२. संघयणा (ख, ता, स) ।
३. छेवट्ठ° (ता) ।
४. हुडसंठिया (स) ।

१५. ते ण भते ! जीवा किं मणजोगी ? वइजोगी ? कायजोगी ?
गोयमा ! नो मणजोगी, वइजोगी वि, कायजोगी वि ।।

१६. ते ण भते ! जीवा किं सागारोवउत्ता ? अणागारोवउत्ता ?
गोयमा ! सागारोवउत्ता वि, अणागारोवउत्ता वि ।।

१७ तेसि ण भते ! जीवाण कति सण्णाओ पण्णत्ताओ ?
गोयमा ! चत्तारि सण्णाओ पण्णत्ताओ, त जहा—आहारसण्णा, भयसण्णा, मेहुणसण्णा, परिग्गहसण्णा ।।

१८. तेसि ण भते ! जीवाण कति कसाया पण्णत्ता ?
गोयमा ! चत्तारि कसाया पण्णत्ता, त जहा—कोहकसाए, माणकसाए, माया-कसाए, लोभकसाए ।।

१९ तेसि ण भते ! जीवाण कति इदिया पण्णत्ता ?
गोयमा ! पचेदिया पण्णत्ता, त जहा—सोइदिए जाव फासिदिए ।।

२०. तेसि ण भते ! जीवाण कति समुग्घाया पण्णत्ता ?
गोयमा ! तओ समुग्घाया पण्णत्ता, त जहा—वेयणासमुग्घाए, कसायसमुग्घाए, मारणतियसमुग्घाए ।।

२१ ते ण भते ! जोवा किं सायावेयगा ? असायावेयगा ?
गोयमा ! सायावेयगा वि, असायावेयगा वि ।।

२२ ते ण भते ! जोवा किं इत्थीवेदगा ? पुरिसवेदगा ? नपुसगवेदगा ?
गोयमा ! नो इत्थीवेदगा, नो पुरिसवेदगा, नपुसगवेदगा ।।

२३ तेसि ण भते ! जीवाण केवतिय काल ठिती पण्णत्ता ?
गोयमा ! जहण्णेण अतोमुहुत्त, उक्कोसेण पुव्वकोडी ।।

२४ तेसि ण भते ! जीवाण केवतिया अज्झवसाणा पण्णत्ता ?
गोयमा ! असखेज्जा अज्झवसाणा पण्णत्ता ।।

२५ ते ण भते ! किं पसत्था ? अप्पसत्था ?
गोयमा ! पसत्था वि, अप्पसत्था वि ।।

२६ से ण भते ! पज्जत्ताअसण्णिपचिंदियतिरिक्खजोणिएत्ति कालओ केवचिर होइ ?
गोयमा ! जहण्णेण अतोमुहुत्त, उक्कोसेण पुव्वकोडी ।।

२७. से ण भते ! पज्जत्ताअसण्णिपचिंदियतिरिक्खजोणिए रयणप्पभाए पुढवीए नेरइए, पुणरवि पज्जत्ताअसण्णिपचिंदियतिरिक्खजोणिएत्ति केवतिय काल सेवेज्जा ? केवतिय काल गतिरागति करेज्जा ?
गोयमा ! भवादेसेण दो भवग्गहणाइ, कालादेसेण जहण्णेण दस वाससहस्साइ अतोमुहुत्तमब्भहियाइ, उक्कोसेण पलिओवमस्स असखेज्जइभाग पुव्वकोडि-मब्भहिय, एवतिय काल सेवेज्जा, एवतिय काल गतिरागति करेज्जा १।।

२८ पज्जत्ताग्रसण्णिपंचिदियतिरिक्खजोणिए ण भते ! जे भविए जहण्णकालट्ठितीएसु रयणप्पभापुढविनेरइएसु उववज्जित्तए, से ण भते ! केवइकालट्ठितीएसु उववज्जेज्जा ?
गोयमा ! जहण्णेण दसवाससहस्सट्ठितीएसु, उक्कोसेण वि दसवाससहस्सट्ठितीएसु उववज्जेज्जा ॥

२९. ते ण भते ! जीवा एगसमएण केवतिया उववज्जति ? एव सच्चेव वत्तव्वया निरवसेसा भाणियव्वा जाव[1] अणुवधो त्ति ॥

३० से ण भते ! पज्जत्ताग्रसण्णिपंचिदियतिरिक्खजोणिए जहण्णकालट्ठितीयरयणप्पभापुढविनेरइए, पुणरवि पज्जत्ताग्रसण्णि[2]•पंचिदियतिरिक्खजोणिएत्ति केवतिय काल सेवेज्जा ? केवतिय काल° गतिरागति करेज्जा ?
गोयमा ! भवादेसेण दो भवग्गहणाइ, कालादेसेणं जहण्णेण दसवाससहस्साइ अंतोमुहुत्तमब्भहियाइ, उक्कोसेण पुव्वकोडी दसहि वाससहस्सेहि अब्भहिया, एवतिय काल सेवेज्जा, एवतिय काल गतिरागति करेज्जा २॥

३१. पज्जत्ताग्रसण्णिपंचिदियतिरिक्खजोणिए ण जे भविए उक्कोसकालट्ठितीएसु रयणप्पभापुढविनेरइएसु उववज्जित्तए, से ण भते ! केवतियकालट्ठितीएसु उववज्जेज्जा ?
गोयमा ! जहण्णेण पलिओवमस्स असखेज्जइभागट्ठितीएसु, उक्कोसेण वि पलिओवमस्स असखेज्जइभागट्ठितीएसु उववज्जेज्जा ॥

३२ ते ण भते ! जीवा एगसमएण केवतिया उववज्जति ? अवसेस त चेव जाव[3] अणुवधो ॥

३३ से ण भते ! पज्जत्ताग्रसण्णिपंचिदियतिरिक्खजोणिए उक्कोसकालट्ठितीयरयणप्पभापुढविनेरइए, पुणरवि पज्जत्ता[4]•असण्णिपंचिदियतिरिक्खजोणिएत्ति केवतिय काल सेवेज्जा ? केवतिय काल गतिरागतिं° करेज्जा ?
गोयमा ! भवादेसेण दो भवग्गहणाइ, कालादेसेणं जहण्णेण [5]पलिओवमस्स असखेज्जइभाग अतोमुहुत्तमब्भहिय, उक्कोसेण पलिओवमस्स असखेज्जइभाग पुव्वकोडिमब्भहिय, एवतिय काल सेवेज्जा, एवतिय काल गतिरागतिं करेज्जा ३॥

३४ जहण्णकालट्ठितीयपज्जत्ताअसण्णिपंचिदियतिरिक्खजोणिए ण भते ! जे भविए रयणप्पभापुढविनेरइएसु उववज्जित्तए, से ण भते ! केवतियकालट्ठितीएसु उववज्जेज्जा ?

---

१ भ० २४।८-२६ ।
२. स० पा—पज्जत्ताअसण्णि जाव गतिरागति ।
३ भ० २४।८-२६ ।
४. स० पा०—पज्जत्ता जाव करेज्जा ।
५. पुव्वकोडिमब्भहिय (अ, क, ख, व, म, स) ।

गोयमा ! जहण्णेणं दसवाससहस्सट्ठितीएसु, उक्कोसेणं पलिओवमस्स असंखेज्जइ-भागट्ठितीएसु उववज्जेज्जा ॥

३५. ते णं भंते ! जीवा एगसमएणं केवतिया उववज्जंति ? सेसं तं चेव, नवरं[1]— इमाइं तिण्णि नाणत्ताइं—आउ, अज्झवसाणा, अणुबंधो य । जहण्णेणं ठिती अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेण वि अंतोमुहुत्तं ॥

३६ तेसि णं भंते ! जीवाणं केवतिया अज्झवसाणा पण्णत्ता ?
गोयमा ! असंखेज्जा अज्झवसाणा पण्णत्ता ॥

३७ ते णं भंते ! किं पसत्था ? अप्पसत्था ?
गोयमा ! नो पसत्था, अप्पसत्था अणुबंधो अंतोमुहुत्तं, सेसं तं चेव ॥

३८ से णं भंते ! जहण्णकालट्ठितीयपज्जत्ताअसण्णिपंचिंदियतिरिक्खजोणिए रयण-प्पभाए जाव[2] गतिरागतिं करेज्जा ?
गोयमा ! भवादेसेणं दो भवग्गहणाइं, कालादेसेणं जहण्णेणं दसवाससहस्साइं अंतोमुहुत्तमब्भहियाइं, उक्कोसेणं पलिओवमस्स असंखेज्जइभागं अंतोमुहुत्त-मब्भहियं, एवतियं कालं सेवेज्जा, 'एवतियं कालं'[3] गतिरागतिं करेज्जा ४॥

३९ जहण्णकालट्ठितीयपज्जत्ताअसण्णिपंचिंदियतिरिक्खजोणिए णं भंते ! जे भविए जहण्णकालट्ठितीएसु रयणप्पभापुढविनेरइएसु उववज्जित्तए, से णं भंते ! केवतियकालट्ठितीएसु उववज्जेज्जा ?
गोयमा ! जहण्णेणं दसवाससहस्सट्ठितीएसु, उक्कोसेण वि दसवाससहस्सट्ठिती-एसु उववज्जेज्जा ॥

४० ते णं भंते ! जीवा एगसमएणं केवतिया उववज्जंति ? सेसं तं चेव, ताइं चेव तिण्णि नाणत्ताइं जाव[4]—

४१ से णं भंते ! जहण्णकालट्ठितीयपज्जत्ता[5]°असण्णिपंचिंदियतिरिक्ख°जोणिए जहण्णकालट्ठितीयरयणप्पभापुढविनेरइए पुणरवि जाव गतिरागतिं करेज्जा ?
गोयमा ! भवादेसेणं दो भवग्गहणाइं, कालादेसेणं जहण्णेणं दसवाससहस्साइं अंतोमुहुत्तमब्भहियाइं, उक्कोसेण वि दसवाससहस्साइं अंतोमुहुत्तमब्भहियाइं, एवतियं कालं सेवेज्जा,[6] °एवतियं कालं गतिरागतिं° करेज्जा ५॥

४२ जहण्णकालट्ठितीयपज्जत्ताअसण्णिपंचिंदियतिरिक्खजोणिए णं भंते ! जे भविए उक्कोसकालट्ठितीएसु रयणप्पभापुढविनेरइएसु उववज्जित्तए, से णं भंते ! केवतियकालट्ठितीएसु उववज्जेज्जा ?

---

१. नवरिं (व) ।
२ भ० २४।२७ ।
३. जाव (अ, क, ख, ता, व, म, स) ।
४ भ० २४।८-२६, ३५-३७ ।
५. स० पा०— °पज्जत्ता जाव जोणिए ।
६. स० पा०—सेवेज्जा जाव करेज्जा ।

गोयमा ! जहण्णेण पलिओवमस्स असखेज्जइभागट्ठितीएसु, उक्कोसेण वि पलिओवमस्स असखेज्जइभागट्ठितीएसु उववज्जेज्जा ॥

४३ ते ण भते ! जीवा एगसमएण केवतिया उववज्जति ? अवसेस त चेव, ताइ चेव तिण्णि नाणत्ताइ जाव[1]—

४४ से ण भते ! जहण्णकालट्ठितीयपज्जत्ताअसण्णिपचिदियतिरिक्खजोणिए उक्कोसकालट्ठितीयरयणप्पभाए जाव[2] गतिरागति करेज्जा ?

गोयमा ! भवादेसेण दो भवग्गहणाइ, कालादेसेण जहण्णेण पलिओवमस्स असखेज्जइभाग अतोमुहुत्तमब्भहिय, उक्कोसेण वि पलिओवमस्स असखेज्जइभाग अतोमुहुत्तमब्भहिय, एवतिय काल[3] °सेवेज्जा, एवतिय काल गतिरागति° करेज्जा ६॥

४५ उक्कोसकालट्ठितीयपज्जत्ताअसण्णिपचिदियतिरिक्खजोणिए णं भते ! जे भविए रयणप्पभापुढविनेरइएसु उववज्जित्तए, से ण भते ! केवतियकालट्ठितीएसु[4] उववज्जेज्जा ?

गोयमा ! जहण्णेण दसवाससहस्सट्ठितीएसु, उक्कोसेण पलिओवमस्स असखेज्जइभागट्ठितीएसु[5] उववज्जेज्जा ॥

४६ ते ण भते ! जीवा एगसमएण केवतिया उववज्जति ? अवसेस जहेव ओहियगमएण तहेव अणुगतव्व, नवर—इमाइ दोण्णि नाणत्ताइ—ठिती जहण्णेण पुव्वकोडी, उक्कोसेण वि पुव्वकोडी । एव अणुबंधो वि। अवसेस त चेव[6] ॥

४७ से ण भते ! उक्कोसकालट्ठितीयपज्जत्ताअसण्णिपचिदियतिरिक्खजोणिए[7] रयणप्पभाए जाव[8] गतिरागति करेज्जा ?

गोयमा ! भवादेसेण दो भवग्गहणाइ, कालादेसेण जहण्णेण पुव्वकोडी दसहिं वाससहस्सेहि अब्भहिया, उक्कोसेण पलिओवमस्स असखेज्जइभाग पुव्वकोडीए अब्भहिय, एवतिय[9] °काल सेवेज्जा, एवतिय काल गतिरागति° करेज्जा ७॥

४८ उक्कोसकालट्ठितीयपज्जत्ताअसण्णिपचिंदियतिरिक्खजोणिए ण भते ! जे भविए जहण्णकालट्ठितीएसु रयणप्पभापुढविनेरइएसु उववज्जित्तए, से ण भते ! केवतियकालट्ठितीएसु[10] उववज्जेज्जा ?

गोयमा ! जहण्णेण दसवाससहस्सट्ठितीएसु, उक्कोसेण वि दसवाससहस्सट्ठितीएसु उववज्जेज्जा ॥

---

१ भ० २४।८-२६, ३५-३७ ।
२. भ० २४ २७ ।
३ स० पा०—काल जाव करेज्जा ।
४ °काल जाव (अ, क, ख, ता, व, म, स) ।
५ असखेज्जइ जाव (अ क, ख, ता, व, म, स)
६. भ० २४।८-२६ ।
७. °असण्णि जाव तिरिक्खजोणिए (अ, क, ख, ता, व, म, स) ।
८. भ० २४।२७ ।
९ स० पा०—एवतिय जाव करेज्जा ।
१० केवति जाव (अ, क ख, ता, व, म, स) ।

४९ ते ण भते ! जीवा एगसमएण केवतिया उववज्जति ? सेस त चेव, जहा सत्तमगमए जाव[1]—

५० से ण भते ! उक्कोसकालट्ठितीयपज्जत्ताअसण्णिपचिंदियतिरिक्खजोणिए[2] जहण्णकालट्ठितीयरयणप्पभाए जाव[3] गतिरागतिं करेज्जा ?
गोयमा ! भवादेसेण दो भवग्गहणाइ, कालादेसेण जहण्णेण पुव्वकोडी दसहि वाससहस्सेहि अब्भहिया, उक्कोसेण वि पुव्वकोडी दसहि वाससहस्सेहि अब्भहिया, एवतिय[4] °काल सेवेज्जा, एवतिय काल गतिरागति° करेज्जा ८।।

५१ उक्कोसकालट्ठितीयपज्जत्ताअसण्णिपचिंदियतिरिक्खजोणिए[5] ण भते ! जे भविए उक्कोसकालट्ठितीएसु रयणप्पभापुढविनेरइएसु[6] उववज्जित्तए, से ण भते ! केवतियकालट्ठितीएसु[7] उववज्जेज्जा ?
गोयमा ! जहण्णेण पलिओवमस्स असखेज्जइभागट्ठितीएसु, उक्कोसेण वि पलिओवमस्स असखेज्जइभागट्ठितीएसु उववज्जेज्जा ।।

५२. ते ण भते ! जीवा एगसमएण केवतिया उववज्जति ? सेस जहा सत्तमगमए जाव[8] —

५३ से ण भते ! उक्कोसकालट्ठितीयपज्जत्ताअसण्णिपचिंदियतिरिक्खजोणिए[9] उक्कोसकालट्ठितीयरयणप्पभाए जाव[10] गतिरागतिं करेज्जा ?
गोयमा ! भवादेसेण दो भवग्गहणाइ, कालादेसेण जहण्णेण पलिओवमस्स असखेज्जइभाग पुव्वकोडीए अब्भहिय, उक्कोसेण वि पलिओवमस्स असखेज्जइभाग पुव्वकोडीए अब्भहिय, एवतिय काल सेवेज्जा, 'एवतिय काल'[11] गतिरागति करेज्जा ९। एव एते ओहिया तिण्णि गमगा, जहण्णकालट्ठितीएसु तिण्णि गमगा, उक्कोसकालट्ठितीएसु तिण्णि गमगा, सव्वेते नव गमगा भवति ।।

५४ जइ सण्णिपचिंदियतिरिक्खजोणिएहितो उववज्जति –कि सखेज्जवासाउयसण्णिपचिंदियतिरिक्खजोणिएहिंतो[12] उववज्जति ? असखेज्जवासाउयसण्णिपचिंदियतिरिक्खजोणिएहितो उववज्जति ?

---

१ भ० २४।४६ ।
२. °ट्ठितीय जाव तिरिक्खजोणिए (अ, क, ख, ता, व, म, स) ।
३ भ० २४।२७ ।
४. स० पा०—एवतिय जाव करेज्जा ।
५ °पज्जत्ता जाव तिरिक्खजोणिए (अ, क, ख, ता, व, म, स) ।
६ रयण जाव (अ, क, ख, ता, व, म, स) ।
७ °काल जाव (अ, क, ख, ता, ब, म, स) ।
८ भ० २४।४६ ।
९ °पज्जत्ता जाव तिरिक्खजोणिए (अ, क, ख ता, व, म, स) ।
१० भ० २४।२७ ।
११ जाव (अ, क, ख, ता, व, म, स) ।
१२ °तिरिक्ख जाव (अ, क, ख, ता, व, म, स) ।

गोयमा ! सखेज्जवासाउयसण्णिपंचिदियतिरिक्खजोणिएहिंतो उववज्जंति, नो असखेज्जवासाउय[1]•सण्णिपचिंदियतिरिक्खजोणिएहिंतो° उववज्जति ॥

५५ जइ सखेज्जवासाउयसण्णिपचिदियतिरिक्खजोणिएहिंतो[2] उववज्जति—किं जलचरेहितो उववज्जति—पुच्छा।
गोयमा! जलचरेहितो उववज्जति, जहा असण्णो जाव[3] पज्जत्तएहिंतो उववज्जति, नो अपज्जत्तएहिंतो उववज्जति ॥

५६ पज्जत्तसखेज्जवासाउयसण्णिपचिदियतिरिक्खजोणिए ण भते! जे भविए नेरइएसु उववज्जित्तए, से ण भते! कतिसु पुढवीसु उववज्जेज्जा ?
गोयमा! सत्तसु पुढवीसु उववज्जेज्जा, त जहा–रयणप्पभाए जाव अहेसत्तमाए ॥

५७. पज्जत्तसखेज्जवासाउयसण्णिपचिदियतिरिक्खजोणिए ण भते! जे भविए रयणप्पभपुढविनेरइएसु उववज्जित्तए, से ण भते! केवतियकालट्ठितीएसु उववज्जेज्जा ?
गोयमा! जहण्णेण दसवाससहस्सट्ठितीएसु, उक्कोसेण सागरोवमट्ठितीएसु उववज्जेज्जा ॥

५८. ते ण भते! जीवा एगसमएण केवतिया उववज्जति ? जहेव[4] असण्णी ॥

५९ तेसि ण भते! जीवाण सरीरगा किसघयणी पण्णत्ता ?
गोयमा ! छव्विहसघयणी पण्णत्ता, त जहा—वइरोसभनारायसंघयणी, उसभनारायसघयणी जाव[5] छेवट्टसघयणी[6]। सरीरोगाहणा जहेव असण्णीण जहण्णेण अगुलस्स असखेज्जइभाग, उक्कोसेण जोयणसहस्स ॥

६० तेसि ण भते! जीवाण सरीरगा किसठिया पण्णत्ता ?
गोयमा! छव्विहसठिया पण्णत्ता, त जहा—समचउरसा, निग्गोहा जाव[7] हुडा ॥

६१. तेसि ण भते! जीवाण कति लेस्साओ पण्णत्ताओ ?
गोयमा! छल्लेस्साओ पण्णत्ताओ, त जहा—कण्हलेस्सा जाव सुक्कलेस्सा। दिट्ठी तिविहा वि। तिण्णि नाणा तिण्णि अण्णाणा भयणाए। जोगो तिविहो वि। सेस जहा असण्णीण जाव[8] अणुबधो, नवर—पच समुग्घाया आदिल्लगा। वेदो तिविहो वि, अवसेसं त चेव जाव—

---

१ स० पा०—असखेज्जवासाउय जाव उववज्जति।
२ °पचिंदिय जाव (अ, क, ख, ता, ब, म, स)।
३ भ० २४।४,५।
४ भ० २४।८।
५. ठा० ६।३०।
६. मेवट्ट° (अ, ख, ब, म), छेवट्ठ° (ता)।
७ भ० १४।८१।
८. भ० २४।१६-२६।

६२ से ण भते ! पज्जत्तसखेज्जवासाउयसण्णिपचिदियतिरिक्खजोणिए[1] रयणप्पभाए जाव गतिरागति करेज्जा ?
गोयमा ! भवादेसेण जहण्णेण दो भवग्गहणाइ, उक्कोसेण अट्ठ भवग्गहणाइ । कालादेसेण जहण्णेण दसवाससहस्साइ अतोमुहुत्तमब्भहियाइ, उक्कोसेण चत्तारि सागरोवमाइ चउहि पुव्वकोडोहि अब्भहियाइ, एवतिय काल सेवेज्जा, एवतिय काल गतिरागति करेज्जा १।।

६३ पज्जत्तसखेज्ज[2]°वासाउयसण्णिपचिदियतिरिक्खजोणिए ण भते ! ° जे भविए जहण्णकाल [3]°ट्ठितीएसु रयणप्पभापुढविनेरइएसु उववज्जित्तए°, से ण भते ! केवतियकालट्ठितीएसु उववज्जेज्जा ?
गोयमा ! जहण्णेण दसवाससहस्सट्ठितीएसु, उक्कोसेण वि दसवाससहस्सट्ठितीएसु उववज्जेज्जा ।।

६४ ते ण भते ! जीवा एगसमएण केवतिया उववज्जंति ? एव सो चेव पढमो गमओ निरवसेसो भाणियव्वो जाव[4] कालादेसेण जहण्णेण दसवाससहस्साइ अतोमुहुत्तमब्भहियाइ, उक्कोसेण चत्तारि पुव्वकोडीओ चत्तालीसाए वाससहस्सेहि अब्भहियाओ, एवतिय काल सेवेज्जा, एवतिय काल गतिरागति करेज्जा २।।

६५ सो चेव उक्कोसकालट्ठितीएसु उववण्णो जहण्णेण सागरोवमट्ठितीएसु, उक्कोसेण वि सागरोवमट्ठितीएसु उववज्जेज्जा । अवसेसो परिमाणादीओ भवादेसपज्जवसाणो सो चेव पढमगमो नेयव्वो जाव[5] कालादेसेण जहण्णेण सागरोवम अतोमुहुत्तमब्भहिय, उक्कोसेण चत्तारि सागरोवमाइ चउहि पुव्वकोडीहि अब्भहियाइ, एवतिय काल सेवेज्जा, एवतिय काल गतिरागति करेज्जा ३ ।।

६६ जहण्णकालट्ठितीयपज्जत्तसखेज्जवासाउयसण्णिपचिदियतिरिक्खजोणिए ण भते ! जे भविए रयणप्पभपुढविनेरइएसु[6] उववज्जित्तए, से ण भते ! केवतिकालट्ठितीएसु उववज्जेज्जा ?
गोयमा ! जहण्णेण दसवाससहस्सट्ठितीएसु, उक्कोसेण सागरोवमट्ठितीएसु उववज्जेज्जा ।।

६७ ते ण भते ! जीवा एगसमएण केवतिया उववज्जति ? अवसेसो सो चेव गमओ, नवर —इमाइ अट्ठ नाणत्ताइ—१ सरीरोगाहणा जहण्णेण अगुलस्स असखेज्जइभाग, उक्कोसेण धणुपुहत्त २. लेस्साओ तिण्णि आदिल्लाओ ३ नो

१. °वासाउय जाव तिरिक्खजोणिए (अ, क, ख, ता, ब, म, स) ।
२. स० पा०—पज्जत्तसखेज्ज जाव जे ।
३. स० पा०—जहण्णकाल जाव से ।
४ भ० २४।५८-६२ ।
५ भ० २४।५७-६२ ।
६. °पुढवि जाव (अ, क, ख, ता, ब, म, स) ।

सम्मदिट्ठी, मिच्छादिट्ठी, नो सम्मामिच्छदिट्ठी ४. नो नाणी, दो अण्णाणा नियम ५. समुग्घाया आदिल्ला तिण्णि ६ आउ ७. अज्झवसाणा ८. अणुवंधो य जहेव असण्णीण। अवसेस जहा पढमगमए जाव[1] कालादेसेणं जहण्णेण दसवाससहस्साइ अतोमुहुत्तमब्भहियाइ, उक्कोसेण चत्तारि सागरोवमाइ चउहि अतोमुहुत्तेहि अब्भहियाइ, एवतिय काल सेवेज्जा, एवतिय काल गतिरागति करेज्जा ४।।

६८ सो चेव जहण्णकालट्ठितीएसु उववण्णो जहण्णेण दसवाससहस्सट्ठितीएसु, उक्कोसेण वि दसवाससहस्सट्ठितीएसु उववज्जेज्जा ।।

६९ ते ण भते ! जीवा एगसमएण केवतिया उववज्जंति ? एव सो चेव चउत्थो गमयो निरवसेसो भाणियव्वो जाव[2] कालादेसेण जहण्णेण दसवाससहस्साइ अतोमुहुत्तमब्भहियाइ, उक्कोसेण चत्तालीस वाससहस्साइ चउहि अतोमुहुत्तेहि अब्भहियाइ, एवतिय काल सेवेज्जा, एवतियं काल गतिरागति करेज्जा ५।।

७० सो चेव उक्कोसकालट्ठितीएसु उववण्णो जहण्णेण सागरोवमट्ठितीएसु, उक्कोसेण वि सागरोवमट्ठितीएसु उववज्जेज्जा ।।

७१ ते ण भते ! जीवा एगसमएण केवतिया उववज्जति ? एव सो चेव चउत्थो गमओ निरवसेसो भाणियव्वो जाव[3] कालादेसेणं जहण्णेण सागरोवम अतोमुहुत्तमब्भहिय, उक्कोसेण चत्तारि सागरोवमाइ चउहि अतोमुहुत्तेहि अब्भहियाइ, एवतिय काल सेवेज्जा, एवतिय काल गतिरागति करेज्जा ६।।

७२ उक्कोसकालट्ठितीयपज्जत्तसखेज्जवासाउयसण्णिपचिदियतिरिक्खजोणिए[4] ण भते ! जे भविए रयणप्पभापुढविनेरइएसु उववज्जित्तए, से ण भंते ! केवतिकालट्ठितीएसु उववज्जेज्जा ?

गोयमा ! जहण्णेण दसवाससहस्सट्ठितीएसु, उक्कोसेण सागरोवमट्ठितीएसु उववज्जेज्जा ।।

७३. ते ण भते ! जीवा एगसमएण केवतिया उववज्जति ? अवसेसो परिमाणादीओ भवादेसपज्जवसाणो सो[5] चेव पढमगमओ नेयव्वो,[6] नवर – ठिती जहण्णेण पुव्वकोडी, उक्कोसेण वि पुव्वकोडी। एव अणुवधो वि, सेस त चेव। कालादेसेण जहण्णेण पुव्वकोडी दसहि वाससहस्सेहि अब्भहिया, उक्कोसेण चत्तारि सागरोवमाइ चउहि पुव्वकोडीहि अब्भहियाइ, एवतिय काल सेवेज्जा, एवतिय काल गतिरागति करेज्जा ७।।

---

१ भ० २४।५८-६२।

२. भ० २४।६७।

३. भ० २४।६७।

४. ०वासाउय जाव तिरिक्खजोणिए (अ, क, ख, ता, व, म, स)।

५. एएसि (अ, क, ख, ता व, स)।

६. भ० २४।५८-६२।

७४ सो चेव जहण्णकालट्ठितीएसु उववण्णो जहण्णेण दसवाससहस्सट्ठितीएसु, उक्कोसेण वि दसवाससहस्सट्ठितीएसु उववज्जेज्जा ।।

७५ ते ण भते ! जीवा एगसमएण केवतिया उववज्जति ? सो चेव सत्तमो गमओ निरवसेसो भाणियव्वो जाव[1] भवादेसो त्ति । कालादेसेण जहण्णेण पुव्वकोडी दसहि वाससहस्सेहि अब्भहिया, उक्कोसेण चत्तारि पुव्वकोडीओ चत्तालीसाए वाससहस्सेहि अब्भहियाओ, एवतिय काल सेवेज्जा, एवतिय काल गतिरागति करेज्जा ८ ।।

७६ उक्कोसकालट्ठितीयपज्जत्तसखेज्जवासाउयसण्णिपचिदियतिरिक्खजोणिए[2] ण भते ! जे भविए उक्कोसकालट्ठितीएसु[3] °रयणप्पभापुढविनेरइएसु° उववज्जित्तए, से ण भते ! केवतिकालट्ठितीएसु उववज्जेज्जा ?
गोयमा ! जहण्णेण सागरोवमट्ठितीएसु, उक्कोसेण वि सागरोवमट्ठितीएसु उववज्जेज्जा ।।

७७ ते ण भते ! जीवा एगसमएण केवतिया उववज्जति ? सो चेव सत्तमगमओ निरवसेसो भाणियव्वो जाव[4] भवादेसो त्ति । कालादेसेण जहण्णेण सागरोवम पुव्वकोडीए अब्भहिय, उक्कोसेण चत्तारि सागरोवमाइ चउहि पुव्वकोडीहि अब्भहियाइ, एवतिय काल सेवेज्जा, एवतिय काल गतिरागति करेज्जा ९ । एव एते नव गमका । उक्खेव-निक्खेवओ नवसु वि जहेव[5] असण्णीण ।।

७८ पज्जत्तसखेज्जवासाउयसण्णिपचिदियतिरिक्खजोणिए ण भते ! जे भविए सक्करप्पभाए पुढवीए नेरइएसु उववज्जित्तए, से ण भते ! केवतिकालट्ठितीएसु उववज्जेज्जा ?
गोयमा ! जहण्णेण सागरोवमट्ठितीएसु, उक्कोसेणं तिसागरोवमट्ठितीएसु उववज्जेज्जा ।।

७९ ते ण भते ! जीवा एगसमएण केवतिया उववज्जति ? एव जहेव रयणप्पभाए उववज्जतगस्स लद्धी सच्चेव निरवसेसा भाणियव्वा जाव[6] भवादेसो त्ति । कालादेसेण जहण्णेण सागरोवम अतोमुहुत्तमब्भहिय, उक्कोसेण बारस सागरोवमाइ चउहि पुव्वकोडीहि अब्भहियाइ, एवतिय काल सेवेज्जा, एवतिय काल गतिरागति करेज्जा । एव रयणप्पभपुढविगमसरिसा नव वि गमगा भाणियव्वा, नवर—सव्वगमएसु वि नेरइयट्ठिती-सवेहेसु सागरोवमा भाणियव्वा, एव जाव छट्ठपुढवि त्ति, नवर—नेरइयठिई जा जत्थ पुढवीए जहण्णुक्कोसिया सा तेण

---

१. भ० २४।७३ ।
२. °पज्जत्त जाव तिरिक्खजोणिए (अ, क, ख, ता, ब, म, स) ।
३. स० पा०—उक्कोसकालट्ठितीएसु जाव उववज्जित्तए ।
४ भ० २४।७३ ।
५. असज्ञि-प्रकरण ४ सूत्रात् ५३ पर्यन्त विद्यते ।
६ भ० २४।५८-६२ ।

चेव कमेणं चउगुणा कायव्वा। वालुयप्पभाए पुढवीए अट्ठावीसं सागरोवमाइं चउगुणिया भवंति, पंकप्पभाए चत्तालीसं, धूमप्पभाए अट्ठसट्ठिं, तमाए अट्ठासीइं। संघयणाइं—वालुयप्पभाए पंचविहसंघयणी, तं जहा—वइरोसहनारायसंघयणी जाव[1] खीलियासंघयणी[2], पंकप्पभाए चउव्विहसंघयणी, धूमप्पभाए तिविहसंघयणी, तमाए दुविहसंघयणी, तं जहा—वइरोसभनारायसंघयणी य, उसभनारायसंघयणी य, सेसं तं चेव॥

८० पज्जत्तसंखेज्जवासाउयसण्णिपंचिंदियतिरिक्खजोणिए[3] णं भंते! जे भविए अहेसत्तमाए पुढवीए नेरइएसु उववज्जित्तए, से णं भंते! केवतिकालट्ठितीएसु उववज्जेज्जा?

गोयमा! जहण्णेणं बावीससागरोवमट्ठितीएसु, उक्कोसेणं तेत्तीससागरोवमट्ठितीएसु उववज्जेज्जा॥

८१. ते णं भंते! जीवा एगसमएणं केवतिया उववज्जंति? एवं जहेव रयणप्पभाए नव गमका, लद्धी वि सच्चेव, नवरं—वइरोसभनारायसंघयणी। इत्थिवेदगा न उववज्जंति, सेसं तं चेव जाव[4] अणुबंधो त्ति। संवेहो भवादेसेणं जहण्णेणं तिण्णि भवग्गहणाइं, उक्कोसेणं सत्त भवग्गहणाइं। कालादेसेणं जहण्णेणं बावीसं सागरोवमाइं दोहिं अंतोमुहुत्तेहिं अब्भहियाइं, उक्कोसेणं छावट्ठिं सागरोवमाइं चउहिं पुव्वकोडीहिं अब्भहियाइं, एवतियं कालं सेवेज्जा, एवतियं कालं गतिरागतिं करेज्जा १॥

८२. सो चेव जहण्णकालट्ठितीएसु उववण्णो, सच्चेव वत्तव्वया जाव भवादेसो त्ति। कालादेसेणं जहण्णेणं कालादेसो वि तहेव जाव[5] चउहिं पुव्वकोडीहिं अब्भहियाइं, एवतियं कालं सेवेज्जा, एवतियं कालं गतिरागतिं करेज्जा २॥

८३ सो चेव उक्कोसकालट्ठितीएसु उववण्णो, सच्चेव लद्धी जाव[6] अणुबंधो त्ति। भवादेसेणं जहण्णेणं तिण्णि भवग्गहणाइं, उक्कोसेणं पंच भवग्गहणाइं। कालादेसेणं जहण्णेणं तेत्तीसं सागरोवमाइं दोहिं अंतोमुहुत्तेहिं अब्भहियाइं, उक्कोसेणं छावट्ठिं सागरोवमाइं तिहिं पुव्वकोडीहिं अब्भहियाइं, एवतियं कालं सेवेज्जा, एवतियं कालं गतिरागतिं करेज्जा ३॥

८४ सो चेव अप्पणा जहण्णकालट्ठितीओ जाओ, सच्चेव रयणप्पभपुढविजहण्णकालट्ठितीयवत्तव्वया भाणियव्वा जाव[7] भवादेसो त्ति, नवरं—पढमं संघयणं, नो इत्थिवेदगा। भवादेसेणं जहण्णेणं तिण्णि भवग्गहणाइं, उक्कोसेणं सत्त भवग्गह-

---

१. ठा० ६।३०।
२. कीलिया° (अ)।
३. °वासाउय जाव तिरिक्खजोणिए (अ, क, ख, ता, ब, म, स)।
४ भ० २४।५८-६२।
५. भ० २४।६३,६४।
६ भ० २४।६५।
७ भ० २४।६६,६७।

णाइ। कालादेसेण जहण्णेण बावीस सागरोवमाइ दोहि अतोमुहुत्तेहि अब्भहियाइ, उक्कोसेण छावट्ठि सागरोवमाइ चउहि अतोमुहुत्तेहि अब्भहियाइ, एवतिय काल सेवेज्जा, एवतिय काल गतिरागति करेज्जा ४ ॥

८५ सो चेव जहण्णकालट्ठितीएसु उववण्णो, एव सो चेव चउत्थो गमओ निरवसेसो भाणियव्वो जाव[1] कालादेसो त्ति ५ ॥

८६. सो चेव उक्कोसकालट्ठितीएसु उववण्णो, सच्चेव लद्धी जाव[2] अणुबधो त्ति। भवादेसेण जहण्णेण तिण्णि भवग्गहणाइ, उक्कोसेण पच भवग्गहणाइ, कालादेसेण जहण्णेण तेत्तीस सागरोवमाइ दोहि अतोमुहुत्तेहि अब्भहियाइ, उक्कोसेण छावट्ठि सागरोवमाइ तिहि अतोमुहुत्तेहि अब्भहियाइ, एवतिय काल सेवेज्जा, एवतिय काल गतिरागति करेज्जा ६ ॥

८७ सो चेव अप्पणा उक्कोसकालट्ठितीओ जहण्णेण बावीससागरोवमट्ठितीएसु, उक्कोसेण तेत्तीससागरोवमट्ठितीएसु उववज्जेज्जा ॥

८८ ते ण भते! जीवा एगसमएण केवतिया उववज्जति? अवसेसा सच्चेव सत्तमपुढविपढमगमवत्तव्वया भाणियव्वा जाव[3] भवादेसो त्ति, नवर—ठिती अणुबधो य जहण्णेण पुव्वकोडी, उक्कोसेण वि पुव्वकोडी, सेस त चेव। कालादेसेण जहण्णेण बावीस सागरोवमाइ दोहि पुव्वकोडीहि अब्भहियाइ, उक्कोसेण छावट्ठि सागरोवमाइ चउहि पुव्वकोडीहि अब्भहियाइ, एवतिय काल सेवेज्जा, एवतिय काल गतिरागति करेज्जा ७ ॥

८९. सो चेव जहण्णकालट्ठितीएसु उववण्णो, सच्चेव लद्धी सवेहो वि तहेव[4] सत्तमगमगसरिसो ८ ॥

९० सो चेव उक्कोसकालट्ठितीएसु उववण्णो, 'एस चेव'[5] लद्धी जाव[6] अणुबधो त्ति। भवादेसेण जहण्णेण तिण्णि भवग्गहणाइ, उक्कोसेण पच भवग्गहणाइ। कालादेसेण जहण्णेण तेत्तीस सागरोवमाइ दोहि पुव्वकोडीहि अब्भहियाइ, उक्कोसेण छावट्ठि सागरोवमाइ तिहि पुव्वकोडीहि अब्भहियाइ, एवतिय काल सेवेज्जा, एवतिय काल गतिरागति करेज्जा ९ ॥

९१ जइ मणुस्सेहिंतो उववज्जति—किं सण्णिमणुस्सेहिंतो उववज्जति? असण्णिमणुस्सेहिंतो उववज्जति?

गोयमा! सण्णिमणुस्सेहिंतो उववज्जति, नो असण्णिमणुस्सेहिंतो उववज्जति ॥

९२ जइ सण्णिमणुस्सेहिंतो उववज्जति—कि सखेज्जवासाउयसण्णिमणुस्सेहिंतो

---

१. भ० २४।८४।
२ भ० २४।८४।
३. भ० २४।८१।
४. भ० २४।८७,८८।
५ एव सच्चेव (अ)।
६. भ० २४।८७,८८।

उववज्जति ? असखेज्जवासाउयसण्णिमणुस्सेहितो[1] उववज्जति ?
गोयमा ! सखेज्जवासाउयसण्णिमणुस्सेहितो उववज्जति, नो असखेज्जवासा-उयसण्णिमणुस्सेहितो[2] उववज्जति ।।

९३ जइ सखेज्जवासाउयसण्णिमणुस्सेहितो[3] उववज्जति—कि पज्जत्तसखेज्जवासा-उयसण्णिमणुस्सेहितो उववज्जति ? अपज्जत्तसखेज्जवासाउयसण्णिमणुस्सेहितो उववज्जति ?
गोयमा ! पज्जत्तसखेज्जवासाउयसण्णिमणुस्सेहितो उववज्जति, नो अपज्जत्त-सखेज्जवासाउयसण्णिमणुस्सेहितो उववज्जति ।।

९४. पज्जत्तसखेज्जवासाउयसण्णिमणुस्से ण भते ! जे भविए नेरइएसु उववज्जि-त्तए, से ण भते ! कतिसु पुढवीसु उववज्जेज्जा ?
गोयमा ! सत्तसु पुढवीसु उववज्जेज्जा, त जहा—रयणप्पभाए जाव अहेसत्त-माए ।।

९५ पज्जत्तसखेज्जवासाउयसण्णिमणुस्से ण भते ! जे भविए रयणप्पभाए पुढवीए नेरइएसु उववज्जित्तए, से ण भते ! केवतिकालट्ठितीएसु उववज्जेज्जा ?
गोयमा ! जहण्णेण दसवाससहस्सट्ठितीएसु, उक्कोसेण सागरोवमट्ठितीएसु उववज्जेज्जा ।।

९६ ते ण भते ! जीवा एगसमएण केवतिया उववज्जति ?
गोयमा ! जहण्णेण एक्को वा दो वा तिण्णि वा, उक्कोसेण सखेज्जा उववज्जति । सघयणा छ, सरीरोगाहणा जहण्णेण अगुलपुहत्त, उक्कोसेण पचधणु-सयाइ । एव सेस जहा सण्णिपचिदियतिरिक्खजोणियाण जाव[4] भवादेसो त्ति, नवर—चत्तारि नाणा तिण्णि अण्णाणा भयणाए । छ समुग्घाया केवलिवज्जा । ठिती अणुबधो य जहण्णेण मासपुहत्त, उक्कोसेण पुव्वकोडी, सेस तं चेव । कालादेसेण जहण्णेण दसवाससहस्साइ मासपुहत्तमब्भहियाइ, उक्कोसेण चत्तारि सागरोवमाइ चउहि पुव्वकोडीहि अब्भहियाइ, एवतिय काल सेवेज्जा, एवतिय काल गतिरागति करेज्जा १।।

९७ सो चेव जहण्णकालट्ठितीएसु उववण्णो, एस चेव वत्तव्वया, नवर—कालादेसेण जहण्णेण दसवाससहस्साइ मासपुहत्तमब्भहियाइ, उक्कोसेण चत्तारि पुव्व-कोडीओ चत्तालीसाए वाससहस्सेहि अब्भहियाओ, एवतिय काल सेवेज्जा, एव-तिय काल गतिरागति करेज्जा २।।

---

१. असखेज्ज जाव (अ, क, ख, ता, व, म, स) ।
२. असखेज्जवासाउय जाव (अ, क, ख, ता, व, म, स) ।
३. सखेज्जवासाउय जाव (अ, क, ख, ता, व, म, स) ।
४. भ० २४।५९-६२ ।

९८ सो चेव उक्कोसकालट्ठितीएसु उववण्णो, एस चेव वत्तव्वया, नवर—कालादेसेण जहण्णेण सागरोवम मासपुहत्तमब्भहिय, उक्कोसेण चत्तारि सागरोवमाइ चउहि पुव्वकोडीहिं अब्भहियाइ, एवतिय काल सेवेज्जा, एवतिय काल गतिरागति करेज्जा ३॥

९९. सो चेव अप्पणा जहण्णकालट्ठितीओ जाओ, एस चेव वत्तव्वया, नवर—इमाइ पच नाणत्ताइ—१ सरीरोगाहणा जहण्णेण अगुलपुहत्त, उक्कोसेण वि अगुलपुहत्त २ तिण्णि नाणा तिण्णि अण्णाणाइ भयणाए ३ पच समुग्घाया आदिल्ला ४, ५ ठिती अणुबधो य जहण्णेण मासपुहत्त, उक्कोसेण वि मासपुहत्त, सेस त चेव जाव[1] भवादेसोत्ति। कालादेसेण जहण्णेण दसवाससहस्साइ मासपुहत्तमब्भहियाइ, उक्कोसेण चत्तारि सागरोवमाइ चउहि मासपुहत्तेहि अब्भहियाइ एवतिय काल सेवेज्जा, एवतिय काल गतिरागति करेज्जा ४॥

१०० सो चेव जहण्णकालट्ठितीएसु उववण्णो, एस चेव वत्तव्वया चउत्थगमगसरिसा[2], नवर—कालादेसेण जहण्णेण दसवाससहस्साइ मासपुहत्तमब्भहियाइ, उक्कोसेण चत्तालीस वाससहस्साइ चउहि मासपुहत्तेहि अब्भहियाइ, एवतियं काल सेवेज्जा, एवतिय काल गतिरागति करेज्जा ५॥

१०१. सो चेव उक्कोसकालट्ठितीएसु उववण्णो, एस चेव गमगो, नवर—कालादेसेण जहण्णेण सागरोवम मासपुहत्तमब्भहिय, उक्कोसेण चत्तारि सागरोवमाइ चउहि मासपुहत्तेहि अब्भहियाइ, एवतिय काल सेवेज्जा, एवतिय काल गतिरागति करेज्जा ६॥

१०२ सो चेव अप्पणा उक्कोसकालट्ठितीओ जाओ, सो चेव पढमगमओ नेयव्वो[3], नवर—सरीरोगाहणा जहण्णेण पचधणुसयाइ, उक्कोसेण वि पचधणुसयाइ। ठिती जहण्णेण पुव्वकोडी, उक्कोसेण वि पुव्वकोडी। एव अणुवधो वि। कालादेसेण जहण्णेण पुव्वकोडी दसहि वाससहस्सेहि अब्भहिया, उक्कोसेण चत्तारि सागरोवमाइ चउहि पुव्वकोडीहिं अब्भहियाइ, एवतिय काल सेवेज्जा, एवतिय काल गतिरागति करेज्जा ७॥

१०३ सो चेव जहण्णकालट्ठितीएसु उववण्णो, सच्चेव सत्तमगमगवत्तव्वया[4], नवर—कालादेसेण जहण्णेण पुव्वकोडी दसहि वाससहस्सेहिं अब्भहिया, उक्कोसेण चत्तारि पुव्वकोडीओ चत्तालीसाए वाससहस्सेहि अब्भहियाओ, एवतिय काल सेवेज्जा, एवतिय काल गतिरागति करेज्जा ८॥

१०४ सो चेव उक्कोसकालट्ठितीएसु उववण्णो, सच्चेव सत्तमगमगवत्तव्वया, नवर—

---

१ भ० २४।९५,९६।
२ भ० २४।९६।
३. भ० २४।९५,९६।
४. भ० २४।१०२।

कालादेसेण जहण्णेण सागरोवम पुव्वकोडीए अब्भहिय, उक्कोसेण चत्तारि सागरोवमाइ चउहि पुव्वकोडीहि अब्भहियाइं, एवतिय काल सेवेज्जा, एवतिय काल गतिरागति करेज्जा ६॥

१०५. पज्जत्तसखेज्जवासाउयसण्णिमणुस्से णं भते ! जे भविए सक्करप्पभाए पुढवीए नेरइएसु[1] उववज्जित्तए, से ण भते ! केवतिकालट्ठितीएसु[2] उववज्जेज्जा ?
गोयमा ! जहण्णेण सागरोवमट्ठितीएसु, उक्कोसेण तिसागरोवमट्ठितीएसु उववज्जेज्जा ॥

१०६ ते ण भते ! जीवा एगसमएण केवतिया उववज्जति ? सो चेव रयणप्पभपुढविगमओ नेयव्वो, नवर—सरीरोगाहणा जहण्णेण रयणिपुहत्त, उक्कोसेण पचधणुसयाइ । ठिती जहण्णेण वासपुहत्तं, उक्कोसेण पुव्वकोडी । एवं अणुबधो वि । सेस त चेव जाव[3] भवादेसो त्ति । कालादेसेण जहण्णेण सागरोवमं वासपुहत्तमब्भहिय, उक्कोसेण बारस सागरोवमाइ चउहि पुव्वकोडीहि अब्भहियाइ, एवतिय काल सेवेज्जा, एवतिय काल गतिरागति करेज्जा । एव एसा ओहिएसु तिसु गमएसु मणूसस्स लद्धी, नाणत्त -नेरइयट्ठिति[4] कालादेसेण सवेह च जाणेज्जा १-३॥

१०७ सो चेव अप्पणा जहण्णकालट्ठितीओ जाओ, तस्स वि तिसु वि गमएसु एस चेव लद्धी, नवर—सरीरोगाहणा जहण्णेण रयणिपुहत्त, उक्कोसेण वि रयणिपुहत्त । ठिती जहण्णेण वासपुहत्त, उक्कोसेण वि वासपुहत्तं । एव अणुबधो वि । सेस जहा[5] ओहियाण । सवेहो उवजुजिऊण भाणियव्वो ४-६॥

१०८ सो चेव अप्पणा उक्कोसकालट्ठितीओ जाओ । तस्स वि तिसु वि गमएसु इम नाणत्तं—सरीरोगाहणा जहण्णेण पचधणुसयाइ, उक्कोसेण वि पचधणुसयाइ । ठिती जहण्णेण पुव्वकोडी, उक्कोसेण वि पुव्वकोडी । एव अणुबधो वि । सेस जहा[6] पढमगमए, नवर—नेरइयठिइ कायसवेह च जाणेज्जा ७-६ । एव जाव छट्ठपुढवी, नवर—तच्चाए आढवेत्ता एक्केक्क सघयण परिहायति जहेव तिरिक्खजोणियाण । कालादेसो वि तहेव, नवर—मणुस्सट्ठिती जाणियव्वा[7] ॥

१०६ पज्जत्तसखेज्जवासाउयसण्णिमणुस्से णं भते ! जे भविए अहेसत्तमाए पुढवीए नेरइएसु उववज्जित्तए, से ण भते ! केवतिकालट्ठितीएसु उववज्जेज्जा ?

---

१. नेरइएसु जाव (अ, क, ख, ता, ब, म, स) ।
२. केवति जाव (अ, क, ख, ता, ब, म, स) ।
३. भ० २४।६६ ।
४. °ट्ठिती (अ, क, ख, ता, ब, म, स) ।
५. भ० २४।१०५,१०६ ।
६. भ० २४।१०५,१०६ ।
७. भाणियव्वा (क, म) ।

गोयमा ! जहण्णेण बावीससागरोवमट्ठितीएसु, उक्कोसेण तेत्तीससागरोवमट्ठितीएसु उववज्जेज्जा ॥

११० ते णं भंते ! जीवा एगसमएणं केवतिया उववज्जंति ? अवसेसो सो चेव सक्करप्पभापुढविगमओ नेयव्वो, नवरं—पढमं संघयणं, इत्थिवेदगा न उववज्जंति, सेसं तं चेव जाव[1] अणुबंधो त्ति । भवादेसेणं दोभवग्गहणाइं । कालादेसेणं जहण्णेणं बावीसं सागरोवमाइं वासपुहत्तमब्भहियाइं, उक्कोसेणं तेत्तीसं सागरोवमाइं पुव्वकोडीए अब्भहियाइं, एवतियं कालं सेवेज्जा, एवतियं कालं गतिरागतिं करेज्जा १॥

१११ सो चेव जहण्णकालट्ठितीएसु उववण्णो, एस चेव वत्तव्वया, नवरं—नेरइयट्ठितिं संवेहं च जाणेज्जा २॥

११२ सो चेव उक्कोसकालट्ठितीएसु उववण्णो, एस चेव वत्तव्वया, नवरं—संवेहं च जाणेज्जा ३॥

११३ सो चेव अप्पणा जहण्णकालट्ठितीओ जाओ, तस्स वि तिसु वि गमएसु एस चेव वत्तव्वया, नवरं—सरीरोगाहणा जहण्णेणं रयणिपुहत्तं, उक्कोसेण वि रयणिपुहत्तं । ठिती जहण्णेणं वासपुहत्तं, उक्कोसेण वि वासपुहत्तं । एवं अणुबंधो वि । संवेहो उवजुंजिऊण भाणियव्वो ४-६॥

११४. सो चेव अप्पणा उक्कोसकालट्ठितीओ जाओ, तस्स वि तिसु वि गमएसु एस चेव वत्तव्वया, नवरं—सरीरोगाहणा जहण्णेणं पंचधणुसयाइं, उक्कोसेण वि पंचधणुसयाइं । ठिती जहण्णेणं पुव्वकोडी, उक्कोसेण वि पुव्वकोडी । एवं अणुबंधो वि । नवसु वि एतेसु गमएसु नेरइयट्ठितिं संवेहं च जाणेज्जा । सव्वत्थ भवग्गहणाइं दोण्णि जाव नवमगमए । कालादेसेणं जहण्णेणं तेत्तीसं सागरोवमाइं पुव्वकोडीए अब्भहियाइं उक्कोसेण वि तेत्तीसं सागरोवमाइं पुव्वकोडीए अब्भहियाइं, एवतियं कालं सेवेज्जा एवतियं कालं गतिरागतिं करेज्जा ७-९॥

११५ सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति जाव[2] विहरइ ॥

बीओ उद्देसो

११६ रायगिहे जाव एवं वयासी—असुरकुमारा णं भंते ! कओहिंतो उववज्जंति—किं नेरइएहिंतो उववज्जंति ? तिरिक्खजोणिय-मणुस्स-देवेहिंतो उववज्जंति ?

---

१. भ० २४।१०६ । २. भ० १।५१ ।

गोयमा ! नो नेरइएहितो उववज्जति, तिरिक्खजोणिएहितो उववज्जति, मणु-स्सेहितो उववज्जति, नो देवेहितो उववज्जति। एव जहेव नेरइयउद्देसए जाव[1]—

११७ पज्जत्ताग्रसण्णिपचिदियतिरिक्खजोणिए ण भते ! जे भविए असुरकुमारेसु उववज्जित्तए, से ण भते ! केवतिकालट्ठितीएसु उववज्जेज्जा ?

गोयमा ! जहण्णेण दसवाससहस्सट्ठितीएसु, उक्कोसेण पलिग्रोवमस्स ग्रसखेज्जइ-भागट्ठितीएसु उववज्जेज्जा ॥

११८. ते ण भते ! जीवा एगसमएण केवतिया उववज्जति ? एव रयणप्पभागमग-सरिसा नव वि गमा भाणियव्वा[2], नवर—जाहे अप्पणा जहण्णकालट्ठितीग्रो भवति ताहे ग्रज्झवसाणा पसत्था, नो ग्रप्पसत्था तिसु वि गमएसु। ग्रवसेस तं चेव १-९॥

११९ जइ सण्णिपचिदियतिरिक्खजोणिएहितो उववज्जति—कि सखेज्जवासाउय-सण्णिपचिदियतिरिक्खजोणिएहितो[3] उववज्जति ? ग्रसखेज्जवासाउयसण्णिपचि-दियतिरिक्खजोणिएहितो[4] उववज्जति ?

गोयमा ! सखेज्जवासाउय जाव उववज्जति, ग्रसंखेज्जवासाउय जाव उवव-ज्जति ॥

१२० ग्रसखेज्जवासाउयसण्णिपचिदियतिरिक्खजोणिए ण भते ! जे भविए ग्रसुर-कुमारेसु उववज्जित्तए, से ण भते ! केवतिकालट्ठितीएसु उववज्जेज्जा ?

गोयमा ! जहण्णेण दसवाससहस्सट्ठितीएसु, उक्कोसेणं तिपलिग्रोवमट्ठितीएसु उववज्जेज्जा ॥

१२१ ते ण भते ! जीवा एगसमएण—पुच्छा।

गोयमा ! जहण्णेण एक्को वा दो वा तिण्णि वा, उक्कोसेण सखेज्जा उवव-ज्जति। वइरोसभनारायसघयणी। ग्रोगाहणा जहण्णेण धणुपुहत्त, उक्कोसेण छ गाउयाइ। समचउरससठिया[5] पण्णत्ता। चत्तारि लेस्साओ आदिल्लाग्रो। नो सम्मदिट्ठी, मिच्छादिट्ठी, नो सम्मामिच्छादिट्ठी। नो नाणी, ग्रण्णाणी, नियम दुअण्णाणी—मतिग्रण्णाणी सुयअण्णाणी य। जोगो तिविहो वि। उवग्रोगो दुविहो वि। चत्तारि सण्णाग्रो। चत्तारि कसाया। पच इदिया। तिण्णि समु-ग्घाया ग्रादिल्ला[6]। समोहया वि मरति, ग्रसमोहया वि मरति। वेदणा दुविहा वि—सायावेदगा, ग्रसायावेदगा। वेदो दुविहो वि—इत्थिवेदगा वि पुरिसवेदगा

---

१ भ० २४।२-६।
२ भ० २४।८-५३।
३. °सण्णि जाव (ग्र, क, ख, ता, व, म, स)।
४. °वासाउय जाव (अ, क, ख, ता, व, म, स)
५ समचउरससठाणमठिया (स)।
६ आदिल्लगा (अ, क, व, म, स)।

वि, नो नपुंसगवेदगा। ठिती जहण्णेण सातिरेगा पुव्वकोडी, उक्कोसेण तिण्णि पलिओवमाइ। अज्झवसाणा पसत्था वि अप्पसत्था वि। अणुवधो जहेव ठिती। कायसवेहो भवादेसेण दो भवग्गहणाइ, कालादेसेण जहण्णेण सातिरेगा पुव्वकोडी दसहि वाससहस्सेहिं अब्भहिया, उक्कोसेण छप्पलिओवमाइ, एवतिय काल सेवेज्जा, एवतिय काल गतिरागति करेज्जा १॥

१२२ सो चेव जहण्णकालट्ठितीएसु उववण्णो--एस चेव वत्तव्वया, नवर—असुर-कुमारट्ठिति सवेह च जाणेज्जा २॥

१२३. सो चेव उक्कोसकालट्ठितीएसु उववण्णो जहण्णेण तिपलिओवमट्ठितीएसु, उक्कोसेण वि तिपलिओवमट्ठितीएसु उववज्जेज्जा—एस चेव वत्तव्वया, नवर—ठिती से जहण्णेण तिण्णि पलिओवमाइ, उक्कोसेण वि तिण्णि पलिओवमाइ। एव अणुवधो वि। कालादेसेण जहण्णेण छप्पलिओवमाइ, उक्कोसेण वि छप्पलिओवमाइ, एवतिय काल सेवेज्जा, एवतिय काल गतिरागति करेज्जा, सेस त चेव ३॥

१२४. सो चेव अप्पणा जहण्णकालट्ठितीओ जाओ जहण्णेण दसवाससहस्सट्ठितीएसु, उक्कोसेण सातिरेगपुव्वकोडीआउएसु उववज्जेज्जा॥

१२५. ते ण भते! जीवा एगसमएण केवतिया उववज्जति? अवसेस त चेव जाव भवादेसो त्ति, नवर—ओगाहणा जहण्णेण धणुपुहत्त, उक्कोसेण सातिरेग धणुसहस्स। ठिती जहण्णेण सातिरेगा पुव्वकोडी, उक्कोसेण वि सातिरेगा पुव्वकोडी। एव अणुवधो वि। कालादेसेण जहण्णेण सातिरेगा पुव्वकोडी दसहि वाससहस्सेहिं अब्भहिया, उक्कोसेण सातिरेगाओ दो पुव्वकोडीओ, एवतिय काल सेवेज्जा, एवतिय काल गतिरागति करेज्जा ४॥

१२६ सो चेव[1] जहण्णकालट्ठितीएसु उववण्णो, एस चेव वत्तव्वया, नवर—असुर-कुमारट्ठिइ सवेह च जाणेज्जा ५॥

१२७ सो चेव उक्कोसकालट्ठितीएसु उववण्णो जहण्णेण सातिरेगपुव्वकोडिआउएसु, उक्कोसेण वि सातिरेगपुव्वकोडीआउएसु उववज्जेज्जा, सेस त चेव, नवर—कालादेसेण जहण्णेण सातिरेगाओ दो पुव्वकोडीओ, उक्कोसेण वि सातिरेगाओ दो पुव्वकोडीओ, एवतिय काल सेवेज्जा, एवतिय काल गतिरागति करेज्जा ६॥

१२८ सो चेव अप्पणा उक्कोसकालट्ठितीओ जाओ, सो चेव पढमगमगो भाणियव्वो,[2] नवर—ठिती जहण्णेण तिण्णि पलिओवमाइ, उक्कोसेण वि तिण्णि पलिओव-माइ। एव अणुवधो वि। कालादेसेण जहण्णेण तिण्णि पलिओवमाइ दसहिं वाससहस्सेहिं अब्भहियाइ, उक्कोसेण छ पलिओवमाइ, एवतिय काल सेवेज्जा, एवतिय काल गतिरागति करेज्जा ७॥

---

१. चेव अप्पणा (अ, क, ख, ता, व, म)। २ भ० २४।१२०,१२१।

१२९. सो चेव जहण्णकालट्ठितीएसु उववण्णो, एस चेव वत्तव्वया, नवर—असुरकुमारट्ठिति सवेह च जाणेज्जा ८ ॥

१३० सो चेव उक्कोसकालट्ठितीएसु उववण्णो जहण्णेण तिपलिओवमाइ, उक्कोसेण वि तिपलिओवमाइ, एस चेव वत्तव्वया, नवर—कालादेसेण जहण्णेण छप्पलिओवमाइ, उक्कोसेण वि छप्पलिओवमाइ, एवतिय काल सेवेज्जा, एवतिय काल गतिरागति करेज्जा ९ ॥

१३१. जइ सखेज्जवासाउयसण्णिपचिदियतिरिक्खजोणिएहितो उववज्जति —कि जलचरेहितो उववज्जति ? एव जाव[1]—

१३२ पज्जत्तसखेज्जवासाउयसण्णिपचिदियतिरिक्खजोणिए ण भंते ! जे भविए असुरकुमारेसु उववज्जित्तए, से ण भते ! केवतिकालट्ठितीएसु उववज्जेज्जा ?
गोयमा ! जहण्णेण दसवाससहस्सट्ठितीएसु, उक्कोसेण सातिरेगसागरोवमट्ठितीएसु उववज्जेज्जा ॥

१३३. ते ण भते ! जीवा एगसमएण केवतिया उववज्जति ? एव एतेसिं रयणप्पभपुढविगमगसरिसा नव गमगा नेयव्वा,[2] नवर जाहे अप्पणा जहण्णकालट्ठितीओ भवइ ताहे तिसु वि गमएसु, इम नाणत्त—चत्तारि लेस्साओ, अज्झवसाणा पसत्था, नो अप्पसत्था। सेस त चेव। सवेहो सातिरेगेण सागरोवमेण कायव्वो १-९ ॥

१३४ जइ मणुस्सेहितो उववज्जति—कि सण्णिमणुस्सेहितो उववज्जति ? असण्णिमणुस्सेहितो उववज्जति ?
गोयमा ! सण्णिमणुस्सेहितो उववज्जति, नो असण्णिमणुस्सेहितो उववज्जति ॥

१३५ जइ सण्णिमणुस्सेहितो उववज्जति—कि सखेज्जवासाउयसण्णिमणुस्सेहितो उववज्जति ? असखेज्जवासाउयसण्णिमणुस्सेहितो उववज्जति ?
गोयमा ! सखेज्जवासाउयसण्णिमणुस्सेहितो[3] उववज्जति, 'असखेज्जवासाउयसण्णिमणुस्सेहितो वि'[4] उववज्जति ॥

१३६ असखेज्जवासाउयसण्णिमणुस्से ण भते ! जे भविए असुरकुमारेसु उववज्जित्तए से ण भते ! केवतिकालट्ठितीएसु उववज्जेज्जा ?
गोयमा ! जहण्णेण दसवाससहस्सट्ठितीएसु, उक्कोसेण तिपलिओवमट्ठितीएसु उववज्जेज्जा। एव असखेज्जवासाउयतिरिक्खजोणियसरिसा आदिल्ला तिण्णि गमगा नेयव्वा, नवरं—सरीरोगाहणा पढमबितिएसु गमएसु जहण्णेण सातिरेगाइ पचधणुसयाइ, उक्कोसेण तिण्णि गाउयाइ, सेस त चेव। तइयगमे ओगा-

---

१ भ० २४।४,५।
२. भ० २४।५८-७७।
३. ०वासाउय जाव (अ, क, ख, ता, ब, म, स)
४. ०वासाउय जाव (अ, क, ख, ता, ब, म, स)।

हणा जहण्णेणं तिण्णि गाउयाइं, उक्कोसेण वि तिण्णि गाउयाइं। सेसं जहेव तिरिक्खजोणियाण १-३ ॥

१३७. सो चेव अप्पणा जहण्णकालट्ठितीओ जाओ, तस्स वि जहण्णकालट्ठितीयतिरिक्खजोणियसरिसा तिण्णि गमगा भाणियव्वा, नवर—सरीरोगाहणा तिसु वि गमएसु जहण्णेण सातिरेगाइ पचधणुसयाइ, उक्कोसेण वि सातिरेगाइ पचधणुसयाइ। सेसं त चेव ४-६ ॥

१३८ सो चेव अप्पणा उक्कोसकालट्ठितीओ जाओ, तस्स वि ते चेव पच्छिल्ला[1] तिण्णि गमगा भाणियव्वा, नवर—सरीरोगाहणा तिसु वि गमएसु जहण्णेण तिण्णि गाउयाइ, उक्कोसेण वि तिण्णि गाउयाइ। अवसेस त चेव ७-९ ॥

१३९ जइ सखेज्जवासाउयसण्णिमणुस्सेहितो उववज्जति—किं पज्जत्तासखेज्जवासाउयसण्णिमणुस्सेहितो उववज्जति ? अपज्जत्तासखेज्जवासाउयसण्णिमणुस्सेहितो उववज्जति ?
गोयमा ! पज्जत्तासखेज्जवासाउयसण्णिमणुस्सेहितो उववज्जति, नो अपज्जत्तासखेज्जवासाउयसण्णिमणुस्सेहितो उववज्जति ॥

१४० पज्जत्तासंखेज्जवासाउयसण्णिमणुस्से ण भते ! जे भविए असुरकुमारेसु उववज्जित्तए, से ण भते ! केवतिकालट्ठितीएसु उववज्जेज्जा ?
गोयमा ! जहण्णेण दसवाससहस्सट्ठितीएसु, उक्कोसेण सातिरेगसागरोवमट्ठितीएसु उववज्जेज्जा ॥

१४१ ते ण भते ! जीवा एगसमएण केवतिया उववज्जति ? एव जहेव एतेसिं रयणप्पभाए उववज्जमाणाण नव गमगा तहेव इह वि नव गमगा भाणियव्वा[2], नवर—सवेहो सातिरेगेण सागरोवमेण कायव्वो। सेस त चेव १-९ ॥

१४२. सेव भते ! सेव भते ! त्ति ॥

तइओ उद्देसो

१४३ रायगिहे जाव एव वयासी—नागकुमाराण भते ! कओहिंतो उववज्जति—किं नेरइएहिंतो उववज्जति ? तिरिक्खजोणिय-मणुस्स-देवेहितो उववज्जति ?
गोयमा ! नो नेरइएहिंतो उववज्जति, तिरिक्खजोणिएहिंतो उववज्जति, मणुस्सेहिंतो उववज्जति, नो देवेहितो उववज्जति ॥

---

१. पच्छिल्लगा (क, ख, ता, स)। २. भ० २४।९६-१०४।

१४४ जइ तिरिक्खजोणिएहिंतो०? एव जहा असुरकुमाराण वत्तव्वया तहा एतेसिं पि जाव[1] असण्णित्ति १-९ ।।

१४५ जइ सण्णिपंचिंदियतिरिक्खजोणिएहिंतो उववज्जति—किं संखेज्जवासाउय०? असखेज्जवासाउय०?
गोयमा ! सखेज्जवासाउय, असखेज्जवासाउय जाव उववज्जति ।।

१४६ असखेज्जवासाउयसण्णिपंचिदियतिरिक्खजोणिए ण भंते ! जे भविए नागकुमारेसु उववज्जित्तए, से ण भते ! केवतिकालट्ठितीएसु उववज्जेज्जा ?
गोयमा ! जहण्णेण दसवाससहस्सट्ठितीएसु, उक्कोसेण देसूणदुपलिओवमट्ठितीएसु उववज्जेज्जा ।।

१४७. ते ण भते ! जीवा एगसमएण केवतिया उववज्जति ? अवसेसो सो चेव असुरकुमारेसु उववज्जमाणस्स गमगो भाणियव्वो जाव[2] भवादेसो त्ति । कालादेसेण जहण्णेण सातिरेगा पुव्वकोडी दसहिं वाससहस्सेहि अब्भहिया, उक्कोसेण देसूणाइ पच पलिओवमाइ, एवतिय काल सेवेज्जा, एवतिय काल गतिरागति करेज्जा १ ।।

१४८ सो चेव जहण्णकालट्ठितीएसु उववण्णो, एस चेव वत्तव्वया, नवर—नागकुमारट्ठिति सवेह च जाणेज्जा २।।

१४९. सो चेव उक्कोसकालट्ठितीएसु उववण्णो, तस्स वि एस चेव वत्तव्वया, नवर—ठिती जहण्णेण देसूणाइ दो पलिओवमाइ, उक्कोसेण तिण्णि पलिओवमाइ । सेसं त चेव जाव[3] भवादेसो त्ति । कालादेसेण जहण्णेण देसूणाइ चत्तारि पलिओवमाइ, उक्कोसेण देसूणाइ पच पलिओवमाइ, एवतिय कालं सेवेज्जा, एवतिय काल गतिरागति करेज्जा ३।।

१५० सो चेव अप्पणा जहण्णकालट्ठितीओ जाओ, तस्स वि तिसु वि गमएसु जहेव असुरकुमारेसु उववज्जमाणस्स जहण्णकालट्ठितियस्स तहेव निरवसेस ४-६ ।।

१५१ सो चेव अप्पणा उक्कोसकालट्ठितीओ जाओ, तस्स वि तहेव तिण्णि गमगा जहा असुरकुमारेसु उववज्जमाणस्स, नवर—नागकुमारट्ठिति सवेह च जाणेज्जा । सेसं तं चेव ७-९ ।।

१५२ जइ सखेज्जवासाउयसण्णिपंचिंदियतिरिक्खजोणिएहिंतो उववज्जति—किं पज्जत्तसंखेज्जवासाउय०? अपज्जत्तसखेज्जवासाउय०?
गोयमा ! पज्जत्तसखेज्जवासाउय, नो अपज्जत्तसंखेज्जवासाउय ।।

१५३ पज्जत्तसखेज्जवासाउयसण्णिपंचिंदियतिरिक्खजोणिए ण भते ! जे भविए नागकुमारेसु उववज्जित्तए, से ण भते ! केवतिकालट्ठितीएसु उववज्जेज्जा ?

---

१. भ० २४।११६-११८ ।
२. भ० २४।१२१ ।
३ भ० २४।१२३ ।

गोयमा ! जहण्णेण दस वाससहस्साइं, उक्कोसेणं देसूणाइं दो पलिओवमाइं। एवं जहेव असुरकुमारेसु उववज्जमाणस्स वत्तव्वया तहेव इह वि नवसु वि गमएसु, नवरं—नागकुमारट्ठितिं संवेहं च जाणेज्जा। सेसं तं चेव १-९ ॥

१५४ जइ मणुस्सेहिंतो उववज्जंति—किं सण्णिमणुस्सेहिंतो०? असण्णिमणुस्सेहिंतो०?
गोयमा ! सण्णिमणुस्सेहिंतो, नो असण्णिमणुस्सेहिंतो, जहा असुरकुमारेसु उववज्जमाणस्स जाव[1]—

१५५ असंखेज्जवासाउयसण्णिमणुस्से णं भंते ! जे भविए नागकुमारेसु उववज्जित्तए, से णं भंते ! केवतिकालट्ठितीएसु उववज्जेज्जा ?
गोयमा ! जहण्णेणं दसवाससहस्साइं, उक्कोसेणं देसूणाइं दो पलिओवमाइं। एवं जहेव[2] असंखेज्जवासाउयाणं तिरिक्खजोणियाणं नागकुमारेसु आदिल्ला तिण्णि गमगा तहेव इमस्स वि, नवरं—पढमबितिएसु गमएसु सरीरोगाहणा जहण्णेणं सातिरेगाइं पंचधणुसयाइं, उक्कोसेणं तिण्णि गाउयाइं। तइयगमे ओगाहणा जहण्णेणं देसूणाइं दो गाउयाइं, उक्कोसेणं तिण्णि गाउयाइं। सेसं तं चेव १-३ ॥

१५६ सो चेव अप्पणा जहण्णकालट्ठितीओ जाओ, तस्स तिसु वि गमएसु जहा तस्स चेव असुरकुमारेसु उववज्जमाणस्स तहेव निरवसेसं ४-६ ॥

१५७ सो चेव अप्पणा उक्कोसकालट्ठितीओ जाओ, तस्स तिसु वि गमएसु जहा तस्स चेव उक्कोसकालट्ठितियस्स असुरकुमारेसु उववज्जमाणस्स, नवरं—नागकुमारट्ठितिं संवेहं च जाणेज्जा। सेसं तं चेव ७-९ ॥

१५८ जइ संखेज्जवासाउयसण्णिमणुस्सेहिंतो उववज्जंति—किं पज्जत्तसंखेज्ज०? अपज्जत्तसंखेज्ज०?
गोयमा ! पज्जत्तसंखेज्ज, नो अपज्जत्तसंखेज्ज ॥

१५९ पज्जत्तसंखेज्जवासाउयसण्णिमणुस्से णं भंते ! जे भविए नागकुमारेसु उववज्जित्तए, से णं भंते ! केवतिकालट्ठितीएसु उववज्जेज्जा ?
गोयमा ! जहण्णेणं दसवाससहस्सट्ठितीएसु, उक्कोसेणं देसूणदोपलिओवमट्ठितीएसु उववज्जेज्जा। एवं जहेव असुरकुमारेसु उववज्जमाणस्स सच्चेव लद्धी निरवसेसा नवसु गमएसु, नवरं—नागकुमारट्ठितिं संवेहं च जाणेज्जा १-९ ॥

१६०. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति ॥

---

१. भ० २४।१३५।
२. भ० २४।१४७-१४९।

४-११ उद्देसा

१६१. अवसेसा सुवण्णकुमारादी जाव थणियकुमारा एए अट्ठ वि उद्देसगा जहेव नागकुमारा तहेव निरवसेसा भाणियव्वा ॥

१६२ सेव भंते ! सेव भंते ! त्ति ॥

दुवालसमो उद्देसो

१६३. पुढविक्काइया णं भंते ! कओहिंतो उववज्जंति—किं नेरइएहिंतो उववज्जंति ? तिरिक्खजोणिय-मणुस्स-देवेहिंतो उववज्जंति ?
गोयमा ! नो नेरइएहिंतो उववज्जंति, तिरिक्खजोणिय-मणुस्स-देवेहिंतो[1] उववज्जंति ॥

१६४ जइ तिरिक्खजोणिएहिंतो उववज्जंति—किं एगिंदियतिरिक्खजोणिएहिंतो एवं जहा वक्कंतीए उववाओ जाव[2]—

१६५. जइ बायरपुढविक्काइयएगिंदियतिरिक्खजोणिएहिंतो उववज्जंति—किं पज्जत्ता-बादर जाव उववज्जंति, अपज्जत्ताबादरपुढवि० ?
गोयमा ! पज्जत्ताबादरपुढवि, अपज्जत्ताबादरपुढवि जाव उववज्जंति ॥

१६६. पुढविक्काइए णं भंते ! जे भविए पुढविक्काइएसु उववज्जित्तए, से णं भंते ! केवतिकालट्ठितीएसु उववज्जेज्जा ?
गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तट्ठितीएसु, उक्कोसेणं बावीसवाससहस्सट्ठितीएसु उववज्जेज्जा ॥

१६७ ते णं भंते ! जीवा एगसमएणं—पुच्छा ।
गोयमा ! अणुसमयं अविरहिया असंखेज्जा उववज्जंति । छेवट्टसंघयणी[3] । सरीरोगाहणा जहण्णेणं अंगुलस्स असंखेज्जइभागं, उक्कोसेण वि अंगुलस्स असंखेज्जइभागं । मसूराचंदासंठिया । चत्तारि लेस्साओ । णो सम्मद्दिट्ठी, मिच्छादिट्ठी, नो सम्मामिच्छादिट्ठी । नो नाणी, अण्णाणी, दो अण्णाणा नियमं । नो मणजोगी, नो वइजोगी, कायजोगी । उवओगो दुविहो वि । चत्तारि सण्णाओ । चत्तारि कसाया । एगे फासिंदिए पण्णत्ते । तिण्णि समुग्घाया । वेदणा दुविहा । नो इत्थिवेदगा, नो पुरिसवेदगा, नपुंसगवेदगा । ठिती जहण्णेणं

---

१. देवेहिंतो वि (अ) ।
२. प० ६ ।
३. सेवट्ट० (अ, म), सेवट्ठ० (क, ख); छेवट्ठ० (ता) ।

अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं बावीसं वाससहस्साइं। अज्झवसाणा पसत्था वि[1], अपसत्था वि। अणुबंधो जहा ठिती॥

१६८ से णं भंते! पुढविक्काइए पुणरवि पुढविकाइएत्ति केवतियं कालं सेवेज्जा? केवतियं कालं गतिरागतिं करेज्जा?

गोयमा! भवादेसेणं जहण्णेणं दो भवग्गहणाइं, उक्कोसेणं असंखेज्जाइं भवग्गहणाइं। कालादेसेणं जहण्णेणं दो अंतोमुहुत्ता, उक्कोसेणं असंखेज्जं कालं एवतियं कालं सेवेज्जा, एवतियं कालं गतिरागतिं करेज्जा १॥

१६९ सो चेव जहण्णकालट्ठितीएसु उववण्णो जहण्णेणं अंतोमुहुत्तट्ठितीएसु, उक्कोसेण वि अंतोमुहुत्तट्ठितीएसु, एवं चेव वत्तव्वया निरवसेसा २॥

१७० सो चेव उक्कोसकालट्ठितीएसु उववण्णो बावीसवाससहस्सट्ठितीएसु, उक्कोसेण वि बावीसवाससहस्सट्ठितीएसु। सेसं तं चेव जाव अणुबंधो त्ति, नवरं—जहण्णेणं एक्को वा दो वा तिण्णि वा, उक्कोसेणं संखेज्जा वा असंखेज्जा वा उववज्जेज्जा। भवादेसेणं जहण्णेणं दो भवग्गहणाइं, उक्कोसेणं अट्ठ भवग्गहणाइं। कालादेसेणं जहण्णेणं बावीसं वाससहस्साइं अंतोमुहुत्तमब्भहियाइं, उक्कोसेणं 'छावत्तरं वाससयसहस्सं'[2], एवतियं कालं सेवेज्जा, एवतियं कालं गतिरागतिं करेज्जा ३॥

१७१ सो चेव अप्पणा जहण्णकालट्ठितीओ जाओ, सो चेव पढमिल्लओ गमओ भाणियव्वो[3] नवरं—लेस्साओ तिण्णि। ठिती जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेण वि अंतोमुहुत्तं। अप्पसत्था अज्झवसाणा। अणुबंधो जहा ठिती। सेसं तं चेव ४॥

१७२ सो चेव जहण्णकालट्ठितीएसु उववण्णो सच्चेव चउत्थगमगवत्तव्वया भाणियव्वा[4] ५॥

१७३ सो चेव उक्कोसकालट्ठितीएसु उववण्णो, एस चेव वत्तव्वया, नवरं—जहण्णेणं एक्को वा दो वा तिण्णि वा, उक्कोसेणं संखेज्जा वा असंखेज्जा वा जाव भवादेसेणं जहण्णेणं दो भवग्गहणाइं, उक्कोसेणं अट्ठ भवग्गहणाइं। कालादेसेणं जहण्णेणं बावीसं वाससहस्साइं अंतोमुहुत्तमब्भहियाइं, उक्कोसेणं अट्ठासीइं वाससहस्साइं चउहिं अंतोमुहुत्तेहिं अब्भहियाइं, एवतियं कालं सेवेज्जा, एवतियं कालं गतिरागतिं करेज्जा ६॥

१७४ सो चेव अप्पणा उक्कोसकालट्ठितीओ जाओ, एवं तइयगमगसरिसो निरवसेसो भाणियव्वो[5], नवरं—अप्पणा से ठिई जहण्णेणं बावीसं वाससहस्साइं, उक्कोसेण वि बावीसं वाससहस्साइं ७॥

---

१ × (ता)।

२. छावत्तरिं वाससहस्सुत्तरं सयसहस्सं (स)।

३. भ० २४।१६६,१६७।

४ भ० २४।१७१।

५ भ० २४।१७०।

१७५ सो चेव जहण्णकालट्ठितीएसु उववण्णो जहण्णेण अंतोमुहुत्त, उक्कोसेण वि अंतोमुहुत्त। एव जहा सत्तमगमगो जाव[1] भवादेसो। कालादेसेण जहण्णेण वावीस वाससहस्साइ अंतोमुहुत्तमब्भहियाइं, उक्कोसेण अट्ठासीइ वाससहस्साइ चउहि अंतोमुहुत्तेहि अब्भहियाइ, एवतिय काल सेवेज्जा, एवतिय काल गतिरागति करेज्जा ८।।

१७६ सो चेव उक्कोसकालट्ठितीएसु उववण्णो जहण्णेण वावीसवाससहस्सट्ठितीएसु, उक्कोसेण वि वावीसवाससहस्सट्ठितीएसु, एस चेव सत्तमगमगवत्तव्वया जाणियव्वा[2] जाव भवादेसो त्ति। कालादेसेण जहण्णेण चोयालीस वाससहस्साइ, उक्कोसेण छावत्तर वाससयसहस्स, एवतिय काल सेवेज्जा, एवतिय काल गतिरागति करेज्जा ९।।

१७७ जइ आउक्काइयएगिंदियतिरिक्खजोणिएहितो उववज्जति—किं सुहुमआउ० ? वादरआउ० ? एव चउक्कओ भेदो भाणियव्वो जहा पुढविक्काइयाण।।

१७८ आउक्काइए ण भते ! जे भविए पुढविक्काइएसु उववज्जित्तए, से ण भते ! केवइकालट्ठितीएसु उववज्जेज्जा ?
गोयमा ! जहण्णेण अंतोमुहुत्तट्ठितीएसु उक्कोसेण वावीसवाससहस्सट्ठितीएसु उववज्जेज्जा। एव पुढविक्काइयगमगसरिसा नव गमगा भाणियव्वा, नवर—थिवुगाविंदुसठिए। ठिती जहण्णेण अंतोमुहुत्त, उक्कोसेण सत्त वाससहस्साइ। एव अणुवधो वि। एव तिसु वि गमएसु। ठिती सवेहो तइयछट्ठसत्तमट्ठमनवमेसु गमएसु—भवादेसेण जहण्णेण दो भवग्गहणाइ, उक्कोसेण अट्ठ भवग्गहणाइ, सेसेसु चउसु गमएसु जहण्णेण दो भवग्गहणाइ, उक्कोसेण असखेज्जाइ भवग्गहणाइ। ततियगमए कालादेसेण जहण्णेण बावीस वाससहस्साइ अंतोमुहुत्तमब्भहियाइ, उक्कोसेण सोलसुत्तर वाससयसहस्सं, एवतिय काल सेवेज्जा, एवतियं काल गतिरागति करेज्जा। छट्ठे गमए कालादेसेण जहण्णेण वावीस वाससहस्साइ अंतोमुहुत्तमब्भहियाइ, उक्कोसेण अट्ठासीति वाससहस्साइ चउहि अंतोमुहुत्तेहि अब्भहियाइ, एवतिय काल सेवेज्जा, एवतिय काल गतिरागति करेज्जा। सत्तमे गमए कालादेसेण जहण्णेण सत्त वाससहस्साइ अंतोमुहुत्तमब्भहियाइ, उक्कोसेण सोलसुत्तर वाससयसहस्स, एवतिय काल सेवेज्जा, एवतिय काल गतिरागति करेज्जा। अट्ठमे गमए कालादेसेण जहण्णेण सत्त वाससहस्साइ अंतोमुहुत्तमब्भहियाइ, उक्कोसेण अट्ठावीस वाससहस्साइ चउहिं अंतोमुहुत्तेहि अब्भहियाइ, एवतिय काल सेवेज्जा, एवतिय काल गतिरागति करेज्जा। नवमे गमए भवादेसेण जहण्णेण दो भवग्गहणाइ, उक्कोसेण अट्ठ भवग्गहणाइ,

१. भ० २४।१७४। २. भ० २४।१७४।

कालादेसेण जहण्णेण एकूणतीस वाससहस्साइं, उक्कोसेणं सोलसुत्तर वाससय-सहस्सं, एवतिय काल सेवेज्जा, एवतिय काल गतिरागति करेज्जा। एव नवसु वि गमएसु आउक्काइयठिई जाणियव्वा १-९॥

१७९ जइ तेउक्काइएहिंतो उववज्जति० ? तेउक्काइयाण वि एस चेव वत्तव्वया, नवर—नवसु वि गमएसु तिण्णि लेस्साओ। तेउक्काइया ण सुईकलावसठिया। ठिई जाणियव्वा। तइयगमए कालादेसेण जहण्णेण बावीस वाससहस्साइ अतोमुहुत्तमब्भहियाइ, उक्कोसेण अट्ठासीति वाससहस्साइ बारसहि राइदिएहि अब्भहियाइ, एवतिय काल सेवेज्जा, एवतिय काल गतिरागति करेज्जा। एव सवेहो उवजुजिऊण भाणियव्वो १-९॥

१८०. जइ वाउक्काइएहितो०? वाउक्काइयाण वि एव चेव नव गमगा जहेव तेउक्काइयाण, नवर—पडागासठिया पण्णत्ता। सवेहो वाससहस्सेहि कायव्वो। तइयगमए कालादेसेण जहण्णेण बावीस वाससहस्साइ अतोमुहुत्तमब्भहियाइ, उक्कोसेण एग वाससयसहस्स। एव सवेहो उवजुजिऊण[1] भाणियव्वो १-९॥

१८१ जइ वणस्सइकाइएहितो उववज्जति० ? वणस्सइकाइयाण आउकाइयगमगसरिसा नव गमगा भाणियव्वा, नवर - नाणासठिया। सरीरोगाहणा पढमएसु पच्छिल्लएसु य तिसु गमएसु जहण्णेण अगुलस्स असखेज्जइभाग, उक्कोसेण सातिरेग जोयणसहस्स, मज्झिल्लएसु तिसु तहेव जहा पुढविकाइयाण। सवेहो ठिती य जाणियव्वा। तइयगमे कालादेसेणं जहण्णेण बावीस वाससहस्साइ अतोमुहुत्तमब्भहियाइ, उक्कोसेण अट्ठावीसुत्तर वाससयसहस्स, एवतिय काल सेवेज्जा, एवतिय काल गतिरागति करेज्जा। एव सवेहो उवजुजिऊण भाणियव्वो १-९॥

१८२ जइ बेदिएहितो उववज्जति—कि पज्जत्ताबेदिएहिंतो उववज्जति ? अपज्जत्ताबेदिएहितो उववज्जति ?
गोयमा! पज्जत्ताबेदिएहिंतो उववज्जति, अपज्जत्ताबेदिएहितो वि उववज्जति॥

१८३. बेदिए ण भते! जे भविए पुढविक्काइएसु उववज्जित्तए, से ण भते! केवतिकालट्ठितीएसु उववज्जेज्जा ?
गोयमा! जहण्णेण अतोमुहुत्तट्ठितीएसु, उक्कोसेण बावीसवाससहस्सट्ठितीएसु॥

१८४. ते ण भते! जीवा एगसमएण केवतिया उववज्जति ?
गोयमा! जहण्णेण एक्को वा दो वा तिण्णि वा, उक्कोसेण सखेज्जा वा असखेज्जा वा उववज्जति। छेवट्टसघयणी। ओगाहणा जहण्णेण अगुलस्स असखेज्जइभागं, उक्कोसेण बारस जोयणाइ। हुडसठिया। तिण्णि लेसाओ। सम्मदिट्ठी

---

१ उववज्जिऊण (अ, ता, म), उवजुज्जित्तण (क), उवउज्जित्तए (व)।

वि, मिच्छादिट्ठी वि, नो सम्मामिच्छादिट्ठी। दो नाणा, दो अण्णाणा नियम। नो मणजोगी, वइजोगी कायजोगी वि। उवओगो दुविहो वि। चत्तारि सण्णाओ। चत्तारि कसाया। दो इंदिया पण्णत्ता, त जहा—जिब्भिदिए य फासिदिए य। तिण्णि समुग्घाया। सेस जहा पुढविक्काइयाण, नवरं—ठिती जहण्णेण अतोमुहुत्तं, उक्कोसेण वारस सवच्छराइ। एव अणुवधो वि। सेस त चेव। भवादेसेण जहण्णेण दो भवग्गहणाइ, उक्कोसेण सखेज्जाइ भवग्गहणाइं। कालादेसेण जहण्णेण दो अतोमुहुत्ता, उक्कोसेण सखेज्ज काल, एवतिय काल सेवेज्जा, एवतिय काल गतिरागति करेज्जा १॥

१८५. सो चेव जहण्णकालट्ठितीएसु उववण्णो एस चेव वत्तव्वया सव्वा २॥

१८६ सो चेव उक्कोसकालट्ठितीएसु उववण्णो एस चेव वेदियस्स लद्धी, नवरं—भवादेसेण जहण्णेण दो भवग्गहणाइं, उक्कोसेण अट्ठ भवग्गहणाइ। कालादेसेण जहण्णेण वावीस वाससहस्साइ अतोमुहुत्तमव्भहियाइ, उक्कोसेण अट्ठासीतिं वाससहस्साइ अडयालीसाए सवच्छरेहि अव्भहियाइ, एवतिय काल सेवेज्जा, एवतिय काल गतिरागति करेज्जा ३॥

१८७. सो चेव अप्पणा जहण्णकालट्ठितीओ जाओ, तस्स वि एस चेव वत्तव्वया तिसु वि गमएसु, नवर—इमाइ सत्त नाणत्ताइ—१ सरीरोगाहणा जहा पुढविकाइयाण २. नो सम्मदिट्ठी, मिच्छादिट्ठी, नो सम्मामिच्छादिट्ठी ३ दो अण्णाणा नियम ४ नो मणजोगी, नो वइजोगी, कायजोगी ५ ठिती जहण्णेण अतोमुहुत्त, उक्कोसेण वि अतोमुहुत्त ६ अज्झवसाणा अपसत्था ७ अणुवधो जहा ठिती। सवेहो तहेव आदिल्लेसु दोसु गमएसु, तइयगमए भवादेसो तहेव अट्ठ भवग्गहणाइ। कालादेसेण जहण्णेण वावीस वाससहस्साइ अतोमुहुत्तमव्भहियाइ, उक्कोसेण अट्ठासीति वाससहस्साइ चउहि अतोमुहुत्तेहि अव्भहियाइ, एवतिय काल सेवेज्जा, एवतिय काल गतिरागति करेज्जा ४-६॥

१८८. सो चेव अप्पणा उक्कोसकालट्ठितीओ जाओ, एयस्स वि ओहियगमगसरिसा तिण्णि गमगा भाणियव्वा,[1] नवर—तिसु वि गमएसु ठिती जहण्णेण वारस सवच्छराइ, उक्कोसेण वि वारस सवच्छराइ। एव अणुवधो वि। भवादेसेण जहण्णेणं दो भवग्गहणाइ, उक्कोसेण अट्ठ भवग्गहणाइ। कालादेसेण उवजुजिऊण भाणियव्वं जाव नवमे गमए जहण्णेण वावीस वाससहस्साइ वारसहि सवच्छरेहिं अव्भहियाइ, उक्कोसेण अट्ठासीति वाससहस्साइ अडयालीसाए सवच्छरेहिं अव्भहियाइ, एवतिय काल सेवेज्जा, एवतिय काल गतिरागति करेज्जा ७-९॥

१८९. जइ तेइदिएहितो उववज्जति० ? एव चेव नव गमगा भाणियव्वा, नवर—आदिल्लेसु तिसु वि गमएसु सरीरोगाहणा जहण्णेण अगुलस्स असखेज्जइभाग,

---

१. भ० २४।१८४-१८६।

उक्कोसेण तिण्णि गाउयाइ[1]। तिण्णि इदियाइ। ठिती जहण्णेण अतोमुहुत्त, उक्कोसेण एगूणपन्न राइदियाइ। तइयगमए कालादेसेण जहण्णेण बावीस वाससहस्साइ अतोमुहुत्तमब्भहियाइ, उक्कोसेण अट्ठासीति वाससहस्साइ छण्णउयराइदियसयमब्भहियाइ,[2] एवतिय काल सेवेज्जा, एवतिय काल गतिरागति करेज्जा। मज्झिमा तिण्णि गमगा तहेव, पच्छिमा वि तिण्णि गमगा तहेव, नवर—ठिती जहण्णेण एगूणपन्न राइदियाइ, उक्कोसेण वि एगूणपन्न राइदियाइ। सवेहो उवजुजिऊण भाणियव्वो १-९ ॥

१९० जइ चउरिदिएहितो उववज्जति० ? एव चेव चउरिदियाण वि नव गमगा भाणियव्वा, नवर—एतेसु चेव ठाणेसु नाणत्ता जाणियव्वा। सरीरोगाहणा जहण्णेण अगुलस्स असखेज्जइभाग, उक्कोसेण चत्तारि गाउयाइ ठिती जहण्णेण अतोमुहुत्त, उक्कोसेण य छम्मासा। एव अणुबधो वि। चत्तारि इदियाइ। सेस तहेव जाव नवमगमए—कालादेसेण जहण्णेण बावीस वाससहस्साइ छहिं मासेहि अब्भहियाइ, उक्कोसेण अट्ठासीतिं वाससहस्साइ चउवीसाए मासेहिं अब्भहियाइ, एवतिय काल सेवेज्जा, एवतिय काल गतिरागति करेज्जा १-९॥

१९१ जइ पचिदियतिरिक्खजोणिएहितो उववज्जंति—कि सण्णिपचिदियतिरिक्खजोणिएहिंतो उववज्जति ? असण्णिपचिदियतिरिक्खजोणिएहितो उववज्जति ? गोयमा ! सण्णिपंचिदिय, असण्णिपचिदिय ॥

१९२ जइ असण्णिपंचिदियतिरिक्खजोणिएहितो उववज्जति—किं जलचरेहिंतो उववज्जति जाव[3] कि पज्जत्तएहितो उववज्जति ? अपज्जत्तएहितो उववज्जंति ?

गोयमा ! पज्जत्तएहितो वि उववज्जति, अपज्जत्तएहितो वि उववज्जति ॥

१९३. असण्णिपचिदियतिरिक्खजोणिए ण भते ! जे भविए पुढविक्काइएसु उववज्जित्तए, से ण भते ! केवतिकालट्ठितीएसु उववज्जेज्जा ?

गोयमा ! जहण्णेण अतोमुहुत्तट्ठितीएसु, उक्कोसेण बावीसवाससहस्सट्ठितीएसु ॥

१९४ ते ण भते ! जीवा एगसमएण केवतिया उववज्जति ? एव जहेव बेइदियस्स ओहियगमए लद्धी तहेव,[4] नवर – सरीरोगाहणा जहण्णेण अगुलस्स असखेज्जइभाग, उक्कोसेण जोयणसहस्स। पच इदिया। ठिती अणुबधो य जहण्णेण अतोमुहुत्त, उक्कोसेण पुव्वकोडी। सेस त चेव। भवादेसेण जहण्णेण दो भवग्गहणाइ, उक्कोसेण अट्ठ भवग्गहणाइ। कालादेसेण जहण्णेण दो अतोमुहुत्ता, उक्कोसेण चत्तारि पुव्वकोडीओ अट्ठासीतीए वाससहस्सेहि अब्भहियाओ,

---

१. कोसा (ता)।
२ छण्णउइ० (स)।
३. भ० २४।४,५।
४. भ० २४।१८४।

एवतिय काल सेवेज्जा, एवतियं कालं गतिरागतिं करेज्जा। नवसु वि गमएसु कायसवेहो—भवादेसेण जहण्णेण दो भवग्गहणाइ, उक्कोसेण अट्ठ भवग्गहणाइ। कालादेसेण उवजुजिऊण भाणियव्व, नवर—मज्झिमएसु तिसु गमएसु जहेव[1] वेइ-दियस्स, पच्छिल्लएसु तिसु गमएसु जहा एतस्स चेव पढमगमएसु, नवर—ठिती अणुवधो य जहण्णेणं पुव्वकोडी, उक्कोसेण वि पुव्वकोडी। सेस त चेव जाव नवमगमएसु—जहण्णेण पुव्वकोडी बावीसाए वाससहस्सेहि अब्भहिया, उक्को-सेण चत्तारि पुव्वकोडीओ अट्ठासीतीए वाससहस्सेहि अब्भहियाओ, एवतिय काल सेवेज्जा, एवतिय काल गतिरागति करेज्जा १-९ ॥

१९५ जइ सण्णिपचिंदियतिरिक्खजोणिएहिंतो उववज्जति—किं सखेज्जवासाउय० ? असखेज्जवासाउय० ?

गोयमा! सखेज्जवासाउय, नो असखेज्जवासाउय।

१९६. जइ सखेज्जवासाउय० किं जलयरेहिंतो० ? सेस जहा असण्णीण जाव[2]—

१९७. ते ण भते! जीवा एगसमएण केवतिया उववज्जति ? एव जहा[3] रयणप्पभाए उववज्जमाणस्स सण्णिस्स तहेव इह वि, नवर—ओगाहणा जहण्णेण अगुलस्स असखेज्जइभाग, उक्कोसेण जोयणसहस्स। सेस तहेव जाव कालादेसेण जहण्णेण दो अतोमुहुत्ता, उक्कोसेण चत्तारि पुव्वकोडीओ अट्ठासीतीए वाससहस्सेहि अब्भहियाओ, एवतिय काल सेवेज्जा, एवतिय काल गतिरागति करेज्जा। एव सवेहो नवसु वि गमएसु जहा असण्णीण तहेव निरवसेसो[4]। लद्धी से आदिल्लएसु तिसु वि गमएसु एस चेव, मज्झिल्लएसु तिसु वि गमएसु एस चेव, नवर—इमाइ नव नाणत्ताइ—ओगाहणा जहण्णेण अगुलस्स असखेज्जतिभाग, उक्को-सेण अगुलस्स असखेज्जतिभाग। तिण्णि लेसाओ। मिच्छादिट्ठी। दो अण्णाणा। कायजोगी। तिण्णि समुग्घाया। ठिती जहण्णेण अतोमुहुत्त, उक्कोसेण वि अतोमुहुत्त। अप्पसत्था अज्झवसाणा। अणुबधो जहा ठिती। सेस त चेव। पच्छिल्लएसु तिसु वि गमएसु जहेव पढमगमए, नवर—ठिती अणुबधो य—जहण्णेण पुव्वकोडी, उक्कोसेण वि पुव्वकोडी। सेस त चेव १-९॥

१९८. जइ मणुस्सेहिंतो उववज्जति—किं सण्णिमणुस्सेहिंतो उववज्जति ? असण्णि-मणुस्सेहिंतो उववज्जति ?

गोयमा! सण्णिमणुस्सेहिंतो उववज्जति, असण्णिमणुस्सेहिंतो वि उववज्जंति ॥

१९९. असण्णिमणुस्से ण भते! जे भविए पुढविक्काइएसु उववज्जित्तए, से ण भते! केवतिकालट्ठितीएसु उववज्जेज्जा ? एव जहा असण्णिपचिंदियतिरिक्खजोणि-

---

१. भ० २४।१८७।
२. भ० २४।१९२,१९३।
३. भ० २४।५८-६२।
४. निरवसेसं (ख, ता, व)।

यस्स जहण्णकालट्ठितीयस्स तिण्णि गमगा तहा एयस्स वि ओहिया तिण्णि गमगा भाणियव्वा तहेव निरवसेस १-३। सेसा छ न भण्णति ॥

२००. जइ सण्णिमणुस्सेहितो उववज्जति—कि सखेज्जवासाउय० ? असखेज्जवासाउय० ?
गोयमा ! सखेज्जवासाउय, नो असखेज्जवासाउय ॥

२०१ जइ सखेज्जवासाउय० कि पज्जत्तासखेज्जवासाउय० ? अपज्जत्तासखेज्जवासाउय० ?
गोयमा ! पज्जत्तासखेज्जवासाउय, अपज्जत्तासखेज्जवासाउय जाव उववज्जति ॥

२०२. सण्णिमणुस्से ण भते ! जे भविए पुढविकाइएसु उववज्जित्तए, से ण भते ! केवतिकालट्ठितीएसु उववज्जति ?
गोयमा ! जहण्णेण अतोमुहुत्तट्ठितीएसु, उक्कोसेण बावीसवाससहस्सट्ठितीएसु ॥

२०३ ते ण भते ! जीवा एगसमएण केवतिया उववज्जति ? एव जहेव रयणप्पभाए उववज्जमाणस्स तहेव तिसु वि गमएसु लद्धी, नवर—ओगाहणा जहण्णेण अगुलस्स असखेज्जइभाग, उक्कोसेण पचधणुसयाइ। ठिती जहण्णेण अतोमुहुत्त, उक्कोसेण पुव्वकोडी। एव अणुबधो। सवेहो नवसु गमएसु जहेव सण्णिपचिंदियस्स। मज्झिल्लएसु तिसु गमएसु लद्धी जहेव सण्णिपचिंदियस्स मज्झिल्लएसु तिसु। सेस त चेव निरवसेस। पच्छिल्ला तिण्णि गमगा जहा एयस्स चेव ओहिया गमगा, नवर—ओगाहणा जहण्णेण पच धणुसयाइ, उक्कोसेण वि पच धणुसयाइ। ठिती अणुबधो य जहण्णेण पुव्वकोडी, उक्कोसेण वि पुव्वकोडी। सेस तहेव[1] १-९॥

२०४ जइ देवेहितो उववज्जति—किं भवणवासिदेवेहिंतो उववज्जति ? वाणमतरदेवेहिंतो, जोइसियदेवेहिंतो, वेमाणियदेवेहितो उववज्जति ?
गोयमा ! भवणवासिदेवेहितो वि उववज्जति जाव वेमाणियदेवेहिंतो वि उववज्जति ॥

२०५ जइ भवणवासिदेवेहितो उववज्जति—कि असुरकुमारभवणवासिदेवेहितो उववज्जति जाव थणियकुमारभवणवासिदेवेहितो उववज्जति ?
गोयमा ! असुरकुमारभवणवासिदेवेहिंतो उववज्जति जाव थणियकुमारभवणवासिदेवेहितो उववज्जति ॥

२०६. असुरकुमारेण भते ! जे भविए पुढविक्काइएसु उववज्जित्तए, से ण भते ! केवतिकालट्ठितीएसु उववज्जेज्जा ?

---

१ तहेव नवर पच्छिल्लएसु गमएसु सखेज्जा उववज्जति नो असखेज्जा उववज्जति (अ, (ख, ता, ब, म)।

गोयमा ! जहण्णेण अतोमुहुत्तट्ठितीएसु, उक्कोसेण वावीसवाससहस्सट्ठितीएसु ।।

२०७ ते ण भते ! जीवा [1]•एगसमएण केवतिया उववज्जति ० ?
गोयमा ! जहण्णेण एक्को वा दो वा तिण्णि वा, उक्कोसेण सखेज्जा वा असखेज्जा वा उववज्जति ।।

२०८ तेसि ण भते ! जीवाण सरीरगा किसघयणी पण्णत्ता ?
गोयमा ! छण्ह सघयणाण असघयणी जाव[2] परिणमति ।।

२०९ तेसि णं भते ! जीवाण केमहालिया सरीरोगाहणा ?
गोयमा ! दुविहा सरीरोगाहणा[3] पण्णत्ता, त जहा—भवधारणिज्जा य उत्तरवेउव्विया य । तत्थ ण जा सा भवधारणिज्जा सा जहण्णेण अंगुलस्स असखेज्जइभाग, उक्कोसेण सत्त रयणीओ । तत्थ ण जा सा उत्तरवेउव्विया सा जहण्णेण अगुलस्स सखेज्जइभाग, उक्कोसेण जोयणसयसहस्स ।।

२१० तेसि ण भते ! जीवाण सरीरगा किसठिया पण्णत्ता ?
गोयमा ! दुविहा पण्णत्ता, त जहा—भवधारणिज्जा य उत्तरवेउव्विया य । तत्थ ण जे ते भवधारणिज्जा ते समचउरससठिया पण्णत्ता । तत्थ ण जे ते उत्तरवेउव्विया ते नाणासठिया[4] पण्णत्ता । लेस्साओ चत्तारि । दिट्ठी तिविहा वि । तिण्णि नाणा नियम, तिण्णि अण्णाणा भयणाए । जोगो तिविहो वि । उवओगो दुविहो वि । चत्तारि सण्णाओ । चत्तारि कसाया । पच इदिया । पच समुग्घाया । वेयणा दुविहा वि । इत्थिवेदगा वि पुरिसवेदगा वि, नो नपुसगवेदगा । ठिती जहण्णेण दसवाससहस्साइ, उक्कोसेण सातिरेग सागरोवमं । अज्झवसाणा असखेज्जा पसत्था वि अप्पसत्था वि । अणुबधो जहा ठिती । भवादेसेण दो भवग्गहणाइ, कालादेसेण जहण्णेण दसवाससहस्साइ अतोमुहुत्तमब्भहियाइ, उक्कोसेण सातिरेग सागरोवम वावीसाए वाससहस्सेहि अब्भहिय, एवतिय काल सेवेज्जा, एवतिय काल गतिरागति करेज्जा । एव नव वि गमा नेयव्वा, नवर—मज्झिल्लएसु पच्छिल्लएसु तिसु गमएसु असुरकुमाराण ठिइविसेसो जाणियव्वो, सेसा ओहिया चेव लद्धी कायसवेह च जाणेज्जा । सव्वत्थ दो भवग्गहणाइ जाव नवमगमए कालादेसेण जहण्णेण सातिरेग सागरोवम वावीसाए वाससहस्सेहि अब्भहिय, उक्कोसेण वि सातिरेग सागरोवमं वावीसाए वाससहस्सेहि अब्भहिय, एवतिय काल सेवेज्जा, एवतिय काल गतिरागतिं करेज्जा १-९ ।।

---

१ स० पा०—पुच्छा ।
२. भ० १।२४५, २२४ ।
३. × (क, ख, ता, म, स) ।
४. नाणासठाणसठिया (स) ।

२११. णागकुमारेणं भते ! जे भविए पुढविक्काइएसु० ? एस चेव वत्तव्वया जाव[1] भवादेसो त्ति, नवर—ठिती जहण्णेण दसवाससहस्साइ, उक्कोसेण देसूणाइ दो पलिग्रोवमाइ। एव ग्रणुबधो वि। कालादेसेण जहण्णेण दसवाससहस्साइ ग्रतोमुहुत्तमब्भहियाइ, उक्कोसेण देसूणाइ दो पलिग्रोवमाइ बावीसाए वाससहस्सेहिं अब्भहियाइ। एव नव वि गमगा असुरकुमारगमगसरिसा, नवर—ठिति कालादेस च जाणेज्जा १-९। एव जाव थणियकुमाराण॥

२१२ जइ वाणमतरेहिंतो उववज्जति—किं पिसायवाणमतरदेवेहितो जाव गधव्व-वाणमंतरदेवेहिंतो ?
गोयमा ! पिसायवाणमतरदेवेहितो जाव गधव्ववाणमतरदेवेहितो॥

२१३. वाणमतरदेवे ण भते ! जे भविए पुढविक्काइएसु उववज्जित्तए० ? एतेसिं पि असुरकुमारगमगसरिसा नव गमगा भाणियव्वा[2], नवर—ठिंति कालादेस च जाणेज्जा। ठिती जहण्णेण दसवाससहस्साइ, उक्कोसेण पलिओवम। सेस तहेव १-९॥

२१४ जइ जोइसियदेवेहिंतो उववज्जति—किं चदविमाणजोइसियदेवेहिंतो उववज्जति जाव ताराविमाणजोइसियदेवेहितो[3]० ?
गोयमा ! चदविमाण जाव ताराविमाण॥

२१५ जोइसियदेवे ण भते ! जे भविए पुढविक्काइएसु उववज्जित्तए० ? लद्धी जहा असुरकुमाराण, नवर—एगा तेउलेस्सा पण्णत्ता। तिण्णि नाणा, तिण्णि अण्णाणा नियम। ठिती जहण्णेण अट्ठभागपलिग्रोवम, उक्कोसेण पलिग्रोवम वाससयसहस्समब्भहिय। एव ग्रणुबधो वि। कालादेसेण जहण्णेण अट्ठभाग-पलिग्रोवम ग्रतोमुहुत्तमब्भहिय, उक्कोसेण पलिग्रोवम वाससयसहस्सेण बावीसाए वाससहस्सेहिं अब्भहिय, एवतिय काल सेवेज्जा, एवतिय काल गतिरागति करेज्जा। एव सेसा वि अट्ठ गमगा भाणियव्वा, नवर—ठिंति कालादेस च जाणेज्जा १-९॥

२१६ जइ वेमाणियदेवेहितो उववज्जति—किं कप्पोवावेमाणियदेवेहितो० ? कप्पातीतावेमाणियदेवेहितो० ?
गोयमा ! कप्पोवावेमाणियदेवेहितो, नो कप्पातीतावेमाणियदेवेहिंतो॥

२१७ जइ कप्पोवावेमाणियदेवेहिंतो उववज्जति—किं सोहम्मकप्पोवावेमाणियदेवेहिंतो जाव अच्चुयकप्पोवावेमाणियदेवेहितो० ?
गोयमा ! सोहम्मकप्पोवावेमाणियदेवेहिंतो ईसाणकप्पोवावेमाणियदेवेहितो, नो सणकुमार जाव नो अच्चुयकप्पोवावेमाणियदेवेहिंतो॥

---

१. भ० २४।२०६-२१०।
२ भ० २४।२०६-२१०।
३. तारविमाण० (अ, क, ख, ता, व, म)।

२१८ सोहम्मदेवे णं भंते ! जे भविए पुढविक्काइएसु उववज्जित्तए, से णं भंते ! केवतिकालट्ठितीएसु उववज्जेज्जा ? एवं जहा जोइसियस्स गमगो, नवरं—ठिती अणुबंधो य जहण्णेणं पलिओवमं, उक्कोसेणं दो सागरोवमाइं। कालादेसेणं जहण्णेणं पलिओवमं अंतोमुहुत्तमब्भहियं, उक्कोसेणं दो सागरोवमाइं बावीसाए वाससहस्सेहिं अब्भहियाइं, एवतियं कालं सेवेज्जा, एवतियं कालं गतिरागतिं करेज्जा। एवं सेसा वि अट्ठ गमगा भाणियव्वा, नवरं—ठितिं कालादेसं च जाणेज्जा ॥

२१९. ईसाणदेवे णं भंते ! जे भविए० ? एवं ईसाणदेवेण वि नव गमगा भाणियव्वा, नवरं—ठिती अणुबंधो जहण्णेणं सातिरेगं पलिओवमं, उक्कोसेणं सातिरेगाइं दो सागरोवमाइं। सेसं तं चेव १-९ ॥

२२० सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति जाव[1] विहरइ ॥

तेरसमो उद्देसो

२२१. आउक्काइया णं भंते ! कओहिंतो उववज्जंति० ? एवं जहेव पुढविक्काइय-उद्देसए जाव[2]—

२२२. पुढविक्काइए णं भंते ! जे भविए आउक्काइएसु उववज्जित्तए, से णं भंते ! केवतिकालट्ठितीएसु उववज्जेज्जा ?
गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तट्ठितीएसु, उक्कोसेणं सत्तवाससहस्सट्ठितीएसु उववज्जेज्जा। एवं पुढविक्काइयउद्देसगसरिसो भाणियव्वो[3], नवरं—ठितिं संवेहं च जाणेज्जा। सेसं तहेव ॥

२२३. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति ॥

---

१ भ० १।५१।
२. भ० २४।१६३-१६५।
३. भ० २४।१६७-२१९।

चोद्दसमो उद्देसो

२२४. तेउक्काइया ण भते ! कग्रोहितो उववज्जति० ? एव[1] पुढविक्काइयउद्देसगसरिसो[2] उद्देसो भाणियव्वो, नवर—ठिति सवेह च जाणेज्जा। देवेहितो न उववज्जति। सेस तं चेव ॥

२२५ सेव भते ! सेव भते ! त्ति जाव[3] विहरइ ॥

पण्णरसमो उद्देसो

२२६ वाउक्काइया णं भते ! कग्रोहिंतो उववज्जति० ? एव जहेव तेउक्काइयउद्देसग्रो तहेव, नवरं—ठिति सवेह च जाणेज्जा ॥

२२७. सेव भते ! सेवं भते ! त्ति ॥

सोलसमो उद्देसो

२२८. वणस्सइकाइया ण भते ! कग्रोहिंतो उववज्जंति० ? एव पुढविक्काइयसरिसो उद्देसो, नवर—जाहे वणस्सइकाइओ वणस्सइकाइएसु उववज्जति ताहे पढमबितिय-चउत्थ-पचमेसु गमएसु परिमाण ग्रणुसमय ग्रविरहिय ग्रणता उववज्जति। भवादेसेण जहण्णेण दो भवग्गहणाइ, उक्कोसेण ग्रणताइ भवग्गहणाइ। कालादेसेण जहण्णेण दो ग्रतोमुहुत्ता, उक्कोसेण ग्रणत काल, एवतिय काल सेवेज्जा, एवतिय काल गतिरागति करेज्जा। सेसा पंच गमा ग्रट्ठभवग्गहणिया तहेव, नवर—ठिति सवेह च जाणेज्जा ॥

२२९. सेव भते ! सेव भते ! त्ति ॥

१ एव जहेव (अ, म)।
२. उद्देसासरिसो (ता, व, स)।
३. भ० १।५१।

सत्तरसमो उद्देसो

२३०. बेंदिया ण भंते ! कओहिंतो उववज्जति० ? जाव[1]—

२३१. पुढविक्काइए णं भंते ! जे भविए बेंदिएसु उववज्जित्तए, से ण भंते ! केवति-कालट्ठितीएसु उववज्जेज्जा ? सच्चेव पुढविकाइयस्स लद्धी जाव कालादेसेणं जहण्णेण दो अंतोमुहुत्ता, उक्कोसेण संखेज्जाइ भवग्गहणाइ—एवतिय काल सेवेज्जा, एवतिय कालं गतिरागति करेज्जा । एव तेसु चेव चउसु गमएसु संवेहो, सेसेसु पचसु तहेव अट्ठ भवा । एव जाव चउरिंदिएण समं चउसु संखेज्जा भवा, पचसु अट्ठ भवा । पचिंदियतिरिक्खजोणियमणुस्सेसु सम तहेव अट्ठ भवा । देवेसु न[2] उववज्जति । ठिति संवेह च जाणेज्जा ॥

२३२. सेव भंते ! सेव भंते ! त्ति ॥

अट्ठारसमो उद्देसो

२३३. तेइंदिया णं भंते ! कओहिंतो उववज्जति० ? एव तेइंदियाण जहेव बेइंदियाणं उद्देसो, नवरं—ठिति संवेहं च जाणेज्जा । तेउक्काइएसु सम ततियगमे उक्को-सेणं अट्ठुत्तराइ बेराइंदियसयाइ, बेइंदिएहिं सम ततियगमे उक्कोसेणं अडया-लीस संवच्छराइ छन्नउयराइंदियसतमब्भहियाइ, तेइंदिएहिं सम ततियगमे उक्कोसेण बाणउयाइ तिण्णि राइंदियसयाइ । एवं सव्वत्थ जाणेज्जा जाव सण्णिमणुस्स त्ति ॥

२३४. सेव भंते ! सेव भंते ! त्ति ॥

एगूणवीसइमो उद्देसो

२३५. चउरिंदिया ण भंते ! कओहिंतो उववज्जंति० ? जहा तेइंदियाणं उद्देसओ तहेव चउरिंदियाण वि, नवर—ठिति संवेह च जाणेज्जा ॥

२३६. सेव भंते ! सेव भंते ! त्ति ॥

---

१. भ० २४।१६३-१६५ ।

२. न चेव (अ, क, म) ।

वीसइमो उद्देसो

२३७ पंचिंदियतिरिक्खजोणिया ण भते ! कओहिंतो उववज्जति—किं नेरइएहिंतो उववज्जति ? तिरिक्खजोणिएहिंतो उववज्जति ? मणुस्सेहितो देवेहितो उववज्जति ?

गोयमा ! नेरइएहिंतो उववज्जति, तिरिक्खजोणिएहितो, मणुस्सेहिंतो वि, देवेहितो वि उववज्जति ।।

२३८ जइ नेरइएहितो उववज्जति—कि रयणप्पभपुढविनेरइएहितो उववज्जति जाव अहेसत्तमपुढविनेरइएहितो उववज्जति ?

गोयमा ! रयणप्पभपुढविनेरइएहितो उववज्जति जाव अहेसत्तमपुढविनेरइएहितो उववज्जति ।।

२३९ रयणप्पभपुढविनेरइए ण भते ! जे भविए पंचिंदियतिरिक्खजोणिएसु उववज्जित्तए, से ण भते ! केवतिकालट्ठितीएसु उववज्जेज्जा ?

गोयमा ! जहण्णेण अतोमुहुत्तट्ठितीएसु, उक्कोसेण पुव्वकोडिआउएसु उववज्जेज्जा ।।

२४० ते ण भते ! जीवा एगसमएण केवइया उववज्जति ? एव जहा[1] असुरकुमाराण वत्तव्वया, नवर—संघयणे पोग्गला अणिट्ठा अकता जाव परिणमति। ओगाहणा दुविहा पण्णत्ता, त जहा—भवधारणिज्जा उत्तरवेउव्विया य । तत्थ ण जा सा भवधारणिज्जा सा जहण्णेण अगुलस्स असखेज्जइभाग, उक्कोसेणं सत्त धणूइ तिण्णि रयणीओ छच्चगुलाइ । तत्थ ण जा सा उत्तरवेउव्विया सा जहण्णेण अगुलस्स सखेज्जइभाग, उक्कोसेण पण्णरस धणूइ अड्ढाइज्जाओ रयणीओ ।।

२४१ तेसि ण भते ! जीवाणं सरीरगा किसठिया पण्णत्ता ?

गोयमा ! दुविहा पण्णत्ता, त जहा—भवधारणिज्जा य, उत्तरवेउव्विया य । तत्थ ण जे ते भवधारणिज्जा ते हुडसठिया पण्णत्ता । तत्थ ण जे ते उत्तरवेउव्विया ते वि हुडसठिया पण्णत्ता । एगा काउलेस्सा पण्णत्ता । समुग्घाया चत्तारि । नो इत्थिवेदगा, नो पुरिसवेदगा, नपुसगवेदगा । ठिती जहण्णेण दसवाससहस्साइ, उक्कोसेण सागरोवम । एव अणुबधो वि । सेस तहेव । भवादेसेण जहण्णेण दो भवग्गहणाइ, उक्कोसेण अट्ठ भवग्गहणाइ । कालादेसेण जहण्णेण दसवाससहस्साइ अतोमुहुत्तमब्भहियाइ, उक्कोसेण चत्तारि सागरोवमाइ चउहिं पुव्वकोडीहि अब्भहियाइ, एवतिय काल सेवेज्जा, एवतिय काल गतिरागतिं करेज्जा १ ।।

---

१. भ० २४।२०७,२०८ ।

२४२. सो चेव जहण्णकालट्ठितीएसु उववण्णो, जहण्णेणं अंतोमुहुत्तट्ठितीएसु, उक्कोसेण वि अंतोमुहुत्तट्ठितीएसु। अवसेस तहेव, नवर—कालादेसेण जहण्णेण तहेव, उक्कोसेण चत्तारि सागरोवमाइ चउहि अंतोमुहुत्तेहि अब्भहियाइ, एवतियं काल सेवेज्जा, एवतिय काल गतिरागति करेज्जा। एव सेसा वि सत्त गमगा भाणियव्वा जहेव नेरइयउद्देसए सण्णिपचिदिएहि समं। नेरइयाण 'मज्झिम-एसु तिसु गमएसु'[1] पच्छिमएसु य तिसु गमएसु ठितिनाणत्त भवति। सेस तं चेव। सव्वत्थ ठिति संवेह च जाणेज्जा २-९॥

२४३ सक्करप्पभापुढविनेरइए ण भते ! जे भविए पचिदियतिरिक्खजोणिएसु उवव-ज्जित्तए० ? एव जहा रयणप्पभाए नव गमगा तहेव सक्करप्पभाए वि, नवर—सरीरोगाहणा जहा[2] ओगाहणसठाणे[3]। तिण्णि नाणा तिण्णि अण्णाणा नियम। ठिती अणुबधा पुव्वभणिया। एव नव वि गमगा उवजुजिऊण भाणियव्वा १-९। एव जाव छट्ठपुढवी, नवर—ओगाहणा-लेस्सा-ठिति-अणुबधा सवेहो य जाणि-यव्वा॥

२४४ अहेसत्तमपुढवीनेरइए ण भते ! जे भविए पचिदियतिरिक्खजोणिएसु उववज्जि-त्तए० ? एव चेव नव गमगा, नवरं—ओगाहणा-लेस्सा-ठिति-अणुबधा जाणि-यव्वा। सवेहो भवादेसेण जहण्णेणं दो भवग्गहणाइ, उक्कोसेण छब्भवग्गहणाइ। कालादेसेण जहण्णेण बावीस सागरोवमाइ अंतोमुहुत्तमब्भहियाइ उक्कोसेणं छावट्ठि सागरोवमाइ तिहिं पुव्वकोडीहिं अब्भहियाइ, एवतिय काल सेवेज्जा, एवतिय काल गतिरागति करेज्जा। आदिल्लएसु छसु वि गमएसु जहण्णेण दो भवग्गहणाइ, उक्कोसेण छ भवग्गहणाइ। पच्छिल्लएसु तिसु गमएसु जहण्णेण दो भवग्गहणाइ, उक्कोसेण चत्तारि भवग्गहणाइ। लद्धी नवसु वि गमएसु जहा पढमगमए, नवर—ठितीविसेसो कालादेसो य बितियगमएसु जहण्णेण बावीस सागरोवमाइ अंतोमुहुत्तमब्भहियाइ, उक्कोसेण छावट्ठि सागरोवमाइ तिहिं अंतोमुहुत्तेहिं अब्भहियाइ, एवतिय काल सेवेज्जा, एवतिय काल गतिरागति करेज्जा। तइयगमए जहण्णेण बावीस सागरोवमाइ पुव्वकोडीए अब्भहियाइ, उक्कोसेण छावट्ठि सागरोवमाइ तिहिं पुव्वकोडीहि अब्भहियाइ। चउत्थगमए जहण्णेण बावीस सागरोवमाइ अंतोमुहुत्तमब्भहियाइ, उक्कोसेण छावट्ठि साग-रोवमाइ तिहिं पुव्वकोडीहिं अब्भहियाइ। पचमगमए जहण्णेण बावीस सागरो-वमाइ अंतोमुहुत्तमब्भहियाइ, उक्कोसेण छावट्ठि सागरोवमाइ तिहिं अंतोमुहुत्तेहिं अब्भहियाइ। छट्ठगमए जहण्णेण बावीस सागरोवमाइ पुव्वकोडीहिं अब्भहियाइ।

---

१. मज्झिमएसु गमएसु (अ), मज्झिमएसु य तिसु गमएसु (क, व), मज्झिमगमएसु (ख, ता), मज्झमएसु य तिसु वि गमएसु (स)।

२. प० २१।

३. ओगाहणासठाणे (अ, म)।

उक्कोसेणं छावट्ठिं सागरोवमाइं तिहिं पुव्वकोडीहिं अब्भहियाइं। सत्तमगमए जहण्णेणं तेत्तीस सागरोवमाइं अंतोमुहुत्तमब्भहियाइं, उक्कोसेण छावट्ठिं सागरोवमाइं दोहिं पुव्वकोडीहिं अब्भहियाइं। अट्ठमगमए जहण्णेण तेत्तीसं सागरोवमाइं अंतोमुहुत्तमब्भहियाइं, उक्कोसेणं छावट्ठिं सागरोवमाइं दोहिं अंतोमुहुत्तेहिं अब्भहियाइं। नवमगमए जहण्णेण तेत्तीसं सागरोवमाइं पुव्वकोडीहिं अब्भहियाइं, उक्कोसेणं छावट्ठिं सागरोवमाइं दोहिं पुव्वकोडीहिं अब्भहियाइं, एवतियं कालं सेवेज्जा, एवतियं कालं गतिरागतिं करेज्जा १-९।।

२४५. जइ तिरिक्खजोणिएहिंतो उववज्जंति—किं एगिंदियतिरिक्खजोणिएहिंतो० ? एवं उववाओ जहा पुढविकाइयउद्देसए जाव[1]—

२४६. पुढविकाइए णं भंते ! जे भविए पंचिंदियतिरिक्खजोणिएसु उववज्जित्तए, से णं भंते ! केवतिकालट्ठितीएसु उववज्जेज्जा ?
गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तट्ठितीएसु, उक्कोसेणं पुव्वकोडीआउएसु उववज्जेज्जा।।

२४७. ते णं भंते ! जीवा एगसमएणं केवतिया उववज्जंति ? एवं परिमाणादीया अणुबंधपज्जवसाणा जच्चेव अप्पणो सट्ठाणे वत्तव्वया सच्चेव पंचिंदियतिरिक्खजोणिएसु वि उववज्जमाणस्स भाणियव्वा, नवरं—नवसु वि गमएसु परिमाणे जहण्णेणं एक्को वा दो वा तिण्णि वा, उक्कोसेणं संखेज्जा वा असंखेज्जा वा उववज्जंति। भवादेसेण वि नवसु वि गमएसु जहण्णेणं दो भवग्गहणाइं, उक्कोसेणं अट्ठ भवग्गहणाइं। सेसं तं चेव। कालादेसेणं उभओ ठितीए करेज्जा १-९।।

२४८. जइ आउक्काइएहिंतो उववज्जंति० ? एवं आउक्काइयाण वि। एवं जाव चउरिंदिया उववाएयव्वा, नवरं—सव्वत्थ अप्पणो लद्धी भाणियव्वा। नवसु वि गमएसु भवादेसेणं जहण्णेणं दो भवग्गहणाइं, उक्कोसेणं अट्ठ भवग्गहणाइं। कालादेसेणं उभओ ठितिं करेज्जा सव्वेसिं सव्वगमएसु। जहेव पुढविक्काइएसु उववज्जमाणाणं लद्धी तहेव सव्वत्थ ठितिं संवेहं च जाणेज्जा १-९।।

२४९. जइ पंचिंदियतिरिक्खजोणिएहिंतो उववज्जंति—किं सण्णिपंचिंदियतिरिक्खजोणिएहिंतो उववज्जंति ? असण्णिपंचिंदियतिरिक्खजोणिएहिंतो उववज्जंति ?
गोयमा ! सण्णिपंचिंदिय, असण्णिपंचिंदिय, भेओ जहेव पुढविक्काइएसु उववज्जमाणस्स जाव[2]—

२५०. असण्णिपंचिंदियतिरिक्खजोणिए णं भंते ! जे भविए पंचिंदियतिरिक्खजोणिएसु उववज्जित्तए, से णं भंते ! केवतिकालट्ठितीएसु उववज्जेज्जा ?
गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तट्ठितीएसु, उक्कोसेणं पलिओवमस्स असंखेज्जइभागट्ठितीएसु उववज्जेज्जा।।

---

१. भ० २४।१६४,१६५। २. भ० २४।१९२।

२५१ ते ण भते ! जीवा एगसमएणं केवतिया उववज्जति ? अवसेसं जहेव पुढविक्का-इएसु उववज्जमाणस्स असण्णिस्स तहेव निरवसेसं जाव भवादेसो त्ति । काला-देसेण जहण्णेण दो अतोमुहुत्ता, उक्कोसेण पलिओवमस्स असखेज्जइभाग पुव्व-कोडिपुहत्तमब्भहिय, एवतिय काल सेवेज्जा, एवतिय काल गतिरागति करेज्जा । बितियगमए एस चेव लद्धी, नवर–कालादेसेण जहण्णेण दो अतोमुहुत्ता, उक्कोसेण चत्तारि पुव्वकोडीओ चउहि अतोमुहुत्तेहि अब्भहियाओ, एवतिय काल सेवेज्जा, एवतिय काल गतिरागति करेज्जा १,२॥

२५२ सो चेव उक्कोसकालट्ठितीएसु उववण्णो जहण्णेण पलिओवमस्स असंखेज्जइ-भागट्ठितीएसु, उक्कोसेण वि पलिओवमस्स असखेज्जइभागट्ठितीएसु उवव-ज्जेज्जा ॥

२५३ ते ण भते ! जीवा एगसमएण केवतिया उववज्जति ? एव जहा रयणप्पभाए उववज्जमाणस्स असण्णिस्स तहेव निरवसेस जाव[1] कालादेसो त्ति, नवर—परिमाणे जहण्णेण एक्को वा दो वा तिण्णि वा, उक्कोसेण सखेज्जा उववज्जति । सेस त चेव ३॥

२५४. सो चेव अप्पणा जहण्णकालट्ठितीओ जाओ जहण्णेण अतोमुहुत्तट्ठितीएसु, उक्को-सेण पुव्वकोडिआउएसु उववज्जेज्जा ॥

२५५ ते ण भते ! जीवा एगसमएण केवतिया उववज्जति ? अवसेसं जहा एयस्स पुढविक्काइएसु उववज्जमाणस्स मज्झिमेसु तिसु गमएसु तहा इह वि मज्झिमेसु तिसु गमएसु जाव[2] अणुबधो त्ति । भवादेसेण जहण्णेण दो भवग्गहणाइ, उक्कोसेण अट्ठ भवग्गहणाइ । कालादेसेण जहण्णेण दो अतोमुहुत्ता, उक्कोसेण चत्तारि पुव्वकोडीओ चउहि अतोमुहुत्तेहि अब्भहियाओ ४॥

२५६ सो चेव जहण्णकालट्ठितीएसु उववण्णो एस चेव वत्तव्वया, नवर—कालादेसेण जहण्णेण दो अतोमुहुत्ता, उक्कोसेण अट्ठ अतोमुहुत्ता, एवतिय काल सेवेज्जा, एवतिय काल गतिरागति करेज्जा ५॥

२५७ सो चेव उक्कोसकालट्ठितीएसु उववण्णो जहण्णेण पुव्वकोडिआउएसु, उक्कोसेण वि पुव्वकोडिआउएसु उववज्जेज्जा, एस चेव वत्तव्वया, नवर—कालादेसेण जाणेज्जा ६॥

२५८ सो चेव अप्पणा उक्कोसकालट्ठितीओ जाओ सच्चेव पढमगमगवत्तव्वया, नवर—ठिती जहण्णेण पुव्वकोडी, उक्कोसेण वि पुव्वकोडी । सेस त चेव । काला-देसेण जहण्णेण पुव्वकोडी अतोमुहुत्तमब्भहिया, उक्कोसेण पलिओवमस्स अस-खेज्जइभाग पुव्वकोडिपुहत्तमब्भहिय, एवतिय काल सेवेज्जा, एवतिय काल गतिरागति करेज्जा ७॥

---

१. भ० २४।३२,३३ । २. भ० २४।१९४ ।

२५९ सो चेव जहण्णकालट्ठितीएसु उववण्णो, एस चेव वत्तव्वया जहा[1] सत्तमगमे, नवर—कालदेसेण जहण्णेणं पुव्वकोडी अतोमुहुत्तमब्भहिया, उक्कोसेण चत्तारि पुव्वकोडीओ चउहि अतोमुहुत्तेहि अब्भहियाओ, एवतिय काल सेवेज्जा, एवतिय काल गतिरागति करेज्जा ८।।

२६०. सो चेव उक्कोसकालट्ठितीएसु उववण्णो जहण्णेण पलिओवमस्स असखेज्जइभाग उक्कोसेण वि पलिओवमस्स असखेज्जइभाग। एव जहा रयणप्पभाए उववज्ज-माणस्स असण्णिस्स नवमगमए तहेव निरवसेस जाव[2] कालादेसो त्ति, नवर—परिमाण जहा[3] एयस्सेव ततियगमे। सेस त चेव ९ ।।

२६१. जइ सण्णिपचिदियतिरिक्खजोणिएहिंतो उववज्जति—कि सखेज्जवासाउय० ? असखेज्जवासाउय० ?

गोयमा ! सखेज्जवासाउय, नो असखेज्जवासाउय ।।

२६२ जइ सखेज्जवासाउय जाव कि पज्जत्तसखेज्जवासाउय० ? अपज्जत्तसखेज्जवा-साउय० ? दोसु वि ।।

२६३ सखेज्जवासाउयसण्णिपचिदियतिरिक्खजोणिए ण भते ! जे भविए पचिदिय-तिरिक्खजोणिएसु उववज्जित्तए, से णं भते ! केवतिकालट्ठितीएसु उवव-ज्जेज्जा ?

गोयमा ! जहण्णेण अतोमुहुत्तट्ठितीएसु, उक्कोसेण तिपलिओवमट्ठितीएसु उववज्जेज्जा ।।

२६४ ते ण भंते ! जीवा एगसमएण केवतिया उववज्जति ? अवसेस जहा[4] एयस्स चेव सण्णिस्स रयणप्पभाए उववज्जमाणस्स पढमगमए, नवर—ओगाहणा जहण्णेण अगुलस्स असखेज्जइभाग, उक्कोसेण जोयणसहस्स। सेस त चेव जाव भवादेसो त्ति। कालादेसेण जहण्णेण दो अतोमुहुत्ता, उक्कोसेण तिण्णि पलिओवमाइ पुव्वकोडी पुहत्तमब्भहियाइ, एवतिय काल सेवेज्जा, एवतिय काल गतिरागति करेज्जा १ ।।

२६५. सो चेव जहण्णकालट्ठितीएसु उववण्णो, एस चेव वत्तव्वया, नवर—काला-देसेण जहण्णेण दो अतोमुहुत्ता, उक्कोसेण चत्तारि पुव्वकोडीओ चउहि अतोमुहुत्तेहि अब्भहियाओ २ ।।

२६६ सो चेव उक्कोसकालट्ठितीएसु उववण्णो जहण्णेण तिपलिओवमट्ठितीएसु, उक्कोसेण वि तिपलिओवमट्ठितीएसु उववज्जेज्जा, एस चेव वत्तव्वया, नवर—परिमाण जहण्णेण एक्को वा दो वा तिण्णि वा, उक्कोसेण सखेज्जा उवव-ज्जति। ओगाहणा जहण्णेण अगुलस्स असखेज्जइभाग, उक्कोसेण जोयणसहस्स।

---

१ भ० २४।२५८।
२ भ० २४।५२,५३।
३. भ० २४।२५३।
४. भ० २४।५८-६२।

सेसं तं चेव जाव—अणुबंधो त्ति। भवादेसेणं दो भवग्गहणाइं। कालादेसेणं जहण्णेणं तिण्णि पलिओवमाइं अंतोमुहुत्तमब्भहियाइं, उक्कोसेणं तिण्णि पलिओवमाइं पुव्वकोडीए अब्भहियाइं ३॥

२६७. सो चेव अप्पणा जहण्णकालट्ठितीओ जातो जहण्णेणं अंतोमुहुत्तट्ठितीएसु, उक्कोसेणं पुव्वकोडीआउएसु उववज्जेज्जा। लद्धी से जहा[1] एयस्स चेव सण्णिपंचिंदियस्स पुढविक्काएसु उववज्जमाणस्स मज्झिल्लएसु तिसु गमएसु सच्चेव इह वि मज्झिमेसु तिसु गमएसु कायव्वा। संवेहो जहेव[2] एत्थ चेव असण्णिस्स मज्झिमेसु तिसु गमएसु ४-६॥

२६८. सो चेव अप्पणा उक्कोसकालट्ठितीओ जाओ जहा पढमगमओ, नवरं—ठिती अणुबंधो जहण्णेणं पुव्वकोडी, उक्कोसेण वि पुव्वकोडी। कालादेसेणं जहण्णेणं पुव्वकोडी अंतोमुहुत्तमब्भहिया, उक्कोसेणं तिण्णि पलिओवमाइं पुव्वकोडीपुहत्तमब्भहियाइं ७॥

२६९. सो चेव जहण्णकालट्ठितीएसु उववण्णो, एस चेव वत्तव्वया, नवरं कालादेसेणं—जहण्णेणं पुव्वकोडी अंतोमुहुत्तमब्भहिया, उक्कोसेणं चत्तारि पुव्वकोडीओ चउहिं अंतोमुहुत्तेहिं अब्भहियाओ ८॥

२७० सो चेव उक्कोसकालट्ठितीएसु उववण्णो जहण्णेणं तिपलिओवमट्ठितीएसु, उक्कोसेण वि तिपलिओमट्ठितीएसु। अवसेसं तं चेव, नवरं—परिमाणं ओगाहणा य जहा एयस्सेव तइयगमए। भवादेसेणं दो भवग्गहणाइं, कालादेसेणं जहण्णेणं तिण्णि पलिओवमाइं पुव्वकोडीए अब्भहियाइं, उक्कोसेणं तिण्णि पलिओवमाइं पुव्वकोडीए अब्भहियाइं, एवतियं कालं सेवेज्जा, एवतियं कालं गतिरागतिं करेज्जा ९॥

२७१. जइ मणुस्सेहिंतो उववज्जति—किं सण्णिमणुस्सेहिंतो० ? असण्णिमणुस्सेहिंतो० ?

गोयमा ! सण्णिमणुस्सेहिंतो वि, असण्णिमणुस्सेहिंतो वि उववज्जति॥

२७२ असण्णिमणुस्से णं भंते ! जे भविए पंचिंदियतिरिक्खजोणिएसु उववज्जित्तए, से णं भंते ! केवतिकालट्ठितीएसु उववज्जेज्जा ?

गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तट्ठितीएसु, उक्कोसेणं पुव्वकोडिआउएसु उववज्जेज्जा। लद्धी से तिसु वि गमएसु जहेव[3] पुढविक्काइएसु उववज्जमाणस्स। संवेहो जहा एत्थ चेव असण्णिपंचिंदियस्स मज्झिमेसु तिसु गमएसु तहेव निरवसेसो भाणियव्वो १-३॥

---

१. भ० २४।१९७।
२. भ० २४।२५५-२५७।
३. भ० २४।१९९।

२७३ जइ सण्णिमणुस्सेहिंतो उववज्जति—किं सखेज्जवासाउयसण्णिमणुस्सेहिंतो० ? असखेज्जवासाउयसण्णिमणुस्सेहितो० ?
गोयमा ! संखेज्जवासाउय, नो असखेज्जवासाउय ॥

२७४ जइ सखेज्जवासाउय० कि पज्जत्त० ? अपज्जत्त० ?
गोयमा ! पज्जत्तसखेज्जवासाउय, अपज्जत्तसखेज्जवासाउय ॥

२७५ सण्णिमणुस्से ण भते ! जे भविए पंचिंदियतिरिक्खजोणिएसु उववज्जित्तए, से ण भते ! केवतिकालट्ठितीएसु उववज्जेज्जा ?
गोयमा ! जहण्णेण अतोमुहुत्तट्ठितीएसु, उक्कोसेण तिपलिओवमट्ठितीएसु उववज्जेज्जा ॥

२७६ ते ण भते ! जीवा एगसमएण केवतिया उववज्जति ? लद्धी से जहा एयस्सेव सण्णिमणुस्सस्स पुढविक्काइएसु उववज्जमाणस्स पढमगमए जाव[1]—भवादेसो त्ति। कालादेसेण जहण्णेण दो अतोमुहुत्ता, उक्कोसेण तिण्णि पलिओवमाइ पुव्वकोडिपुहत्तमब्भहियाइ १ ॥

२७७ सो चेव जहण्णकालट्ठितिएसु उववण्णो, एस चेव वत्तव्वया, नवर— कालादेसेण जहण्णेण दो अतोमुहुत्ता, उक्कोसेण चत्तारि पुव्वकोडीओ चउहि अतोमुहुत्तेहि अब्भहियाओ २ ॥

२७८ सो चेव उक्कोसकालट्ठितिएसु उववण्णो जहण्णेण तिपलिओवमट्ठितीएसु, उक्कोसेण वि तिपलिओवमट्ठितीएसु, सच्चेव वत्तव्वया, नवर—ओगाहणा जहण्णेण अगुलपुहत्त, उक्कोसेण पच धणुसयाइ। ठिती जहण्णेण मासपुहत्त, उक्कोसेण पुव्वकोडी। एव अणुबधो वि। भवादेसेण दो भवग्गहणाइ, कालादेसेण जहण्णेण तिण्णि पलिओवमाइ मासपुहत्तमब्भहियाइ, उक्कोसेण तिण्णि पलिओवमाइ पुव्वकोडीए अब्भहियाइ,—एवतिय काल सेवेज्जा, एवतिय काल गतिरागति करेज्जा ३ ॥

२७९ सो चेव अप्पणा जहण्णकालट्ठितीओ जाओ, जहा[2] सण्णिपंचिंदियतिरिक्खजोणियस्स पंचिंदियतिरिक्खजोणिएसु उववज्जमाणस्स मज्झिमेसु तिसु गमएसु वत्तव्वया भणिया एस चेव एयस्स वि मज्झिमेसु तिसु गमएसु निरवसेसा भाणियव्वा, नवर—परिमाण उक्कोसेण सखेज्जा उववज्जति। सेस त चेव ४-६ ॥

२८० सो चेव अप्पणा उक्कोसकालट्ठितीओ जातो, सच्चेव पढमगमगवत्तव्वया, नवर—ओगाहणा जहण्णेण पच धणुसयाइ, उक्कोसेण वि पच धणुसयाइ। ठिती अणुबधो जहण्णेण पुव्वकोडी, उक्कोसेण वि पुव्वकोडी। सेस तहेव

---

१. भ० २४।२०३। २. भ० २४।२६७।

जाव भवादेसो त्ति कालादेसेणं जहण्णेण पुव्वकोडी अंतोमुहुत्तमब्भहिया, उक्कोसेण तिण्णि पलिओवमाइं पुव्वकोडिपुहत्तमब्भहियाइ, एवतिय काल सेवेज्जा, एवतिय काल गतिरागति करेज्जा ७ ॥

२८१. सो चेव जहण्णकालट्ठितिएसु उववण्णो, एस चेव वत्तव्वया, नवर—कालादेसेण जहण्णेण पुव्वकोडो अतोमुहुत्तमब्भहिया, उक्कोसेण चत्तारि पुव्वकोडीओ चउहि अंतोमुहुत्तेहि अब्भहियाओ ८॥

२८२ सो चेव उक्कोसकालट्ठितीएसु उववण्णो, जहण्णेण तिण्णि पलिओवमाइ, उक्कोसेण वि तिण्णि पलिओवमाइ, एस चेव लद्धी जहेव सत्तमगमे। भवादेसेण दो भवग्गहणाइ। कालादेसेण जहण्णेण तिण्णि पलिओवमाइ पुव्वकोडीए अब्भहियाइ, उक्कोसेण वि तिण्णि पलिओवमाइ पुव्वकोडीए अब्भहियाइ, एवतिय काल सेवेज्जा, एवतिय काल गतिरागतिं करेज्जा ९॥

२८३. जइ देवेहितो उववज्जति — कि भवणवासिदेवेहितो उववज्जति ? वाणमतर-जोइसिय-वेमाणियदेवेहितो० ?
गोयमा ! भवणवासिदेवेहितो जाव वेमाणियदेवेहितो वि ॥

२८४ जइ भवणवासिदेवेहितो—किं असुरकुमारभवणवासिदेवेहितो जाव थणिय-कुमारभवणवासिदेवेहितो० ?
गोयमा ! असुरकुमार जाव थणियकुमारभवणवासिदेवेहितो ॥

२८५ असुरकुमारे ण भते ! जे भविए पचिदियतिरिक्खजोणिएसु उववज्जित्तए, से णं भंते ! केवतिकालट्ठितीएसु उववज्जेज्जा ?
गोयमा ! जहण्णेण अतोमुहुत्तट्ठितीएसु, उक्कोसेण पुव्वकोडिआउएसु उववज्जेज्जा। असुरकुमाराण लद्धी नवसु वि गमएसु जहा[1] पुढविक्काइएसु उववज्जमाणस्स। एव जाव ईसाणदेवस्स तहेव लद्धी। भवादेसेण सव्वत्थ अट्ठ भवग्गहणाइ, उक्कोसेण जहण्णेण दोण्णि भवग्गहणाइ। ठितिं सवेह च सव्वत्थ जाणेज्जा १-९॥

२८६ नागकुमारे ण भते ! जे भविए ०? एस चेव वत्तव्वया, नवरं—ठिति सवेहं च जाणेज्जा १-९। एव जाव थणियकुमारे ॥

२८७. जइ वाणमतरेहितो० कि पिसाय ०? तहेव जाव—

२८८. वाणमतरे ण भते ! जे भविए पचिदियतिरिक्खजोणिएसु उववज्जित्तए ०? एव चेव, नवरं—ठिति सवेहं च जाणेज्जा १-९॥

२८९ जइ जोतिसिय ०? उववाओ तहेव जाव—

२९०. जोतिसिए ण भते ! जे भविए पचिदियतिरिक्खजोणिएसु उववज्जित्तए ०? एस चेव वत्तव्वया जहा पुढविक्काइयउद्देसए। भवग्गहणाइ नवसु वि गमएसु

---

१. भ० २४।२०७-२१०।

अट्ठ जाव कालादेसेण जहण्णेण अट्ठभागपलिग्रोवम अतोमुहुत्तमब्भहिय, उक्कोसेण चत्तारि पलिग्रोवमाइ चउहि पुव्वकोडीहि चउहि य वाससयसहस्सेहि अब्भहियाइ, एवतियं काल सेवेज्जा, एवतिय काल गतिरागति करेज्जा। एव नवसु वि गमएसु, नवर—ठिति सवेह च जाणेज्जा १-६।।

२६१ जइ वेमाणियदेवेहितो ० कि कप्पोवावेमाणिय ०? कप्पातीतावेमाणिय ०?
गोयमा ! कप्पोवावेमाणिय, नो कप्पातीतावेमाणिय ।।

२६२ जइ कप्पोवा जाव सहस्सारकप्पोवगवेमाणियदेवेहितो वि उववज्जति, नो आणय जाव नो अच्चुयकप्पोवावेमाणिय ।।

२६३ सोहम्मदेवे ण भंते ! जे भविए पचिदियतिरिक्खजोणिएसु उववज्जित्तए, से ण भते ! केवतिकालट्ठितीएसु उववज्जेज्जा ?
गोयमा ! जहण्णेण अतोमुहुत्तट्ठितीएसु, उक्कोसेण पुव्वकोडीआउएसु। सेस जहेव[1] पुढविक्काइयउद्देसए नवसु वि गमएसु, नवर—नवसु वि गमएसु जहण्णेण दो भवग्गहणाइ, उक्कोसेण अट्ठ भवग्गहणाइ। ठिति कालादेस च जाणेज्जा १-६। एव ईसाणदेवे वि। एव एएण कमेणं अवसेसा वि जाव सहस्सारदेवेसु उववाएयव्वा, नवर—ओगाहणा जहा[2] ओगाहणसठाणे, लेस्सा सणकुमार-माहिद-बभलोएसु एगा पम्हलेस्सा, सेसाण एगा सुक्कलेस्सा। वेदे नो इत्थिवेदगा, पुरिसवेदगा, नो नपुसगवेदगा। आउ-अणुबधा जहा[3] ठितिपदे। सेस जहेव ईसाणगाण कायसवेह च जाणेज्जा।।

२६४. सेव भते ! सेव भते ! त्ति ।।

एगवीसतिमो उद्देसो

२६५ मणुस्सा ण भते ! कओहितो उववज्जति—कि नेरइएहितो उववज्जति जाव देवेहितो उववज्जति ?
गोयमा ! णेरइएहितो वि उववज्जति 'जाव देवेहितो वि उववज्जति'[4]। एव उववाओ जहा पचिदियतिरिक्खजोणिउद्देसए जाव[5] तमापुढविनेरइएहितो वि उववज्जति, नो अहेसत्तमपुढविनेरइएहितो उववज्जति ।।

१. भ० २४।२१८।
२ प० २१।
३. प० ४।
४ × (अ, क, ख, ता, व, म)।
५ भ० २४।२३८।

२९६ रयणप्पभपुढविनेरइए णं भंते ! से भविए मणुस्सेसु उववज्जित्तए, से णं भंते ! केवतिकालट्ठितीएसु उववज्जेज्जा ?
गोयमा ! जहण्णेणं मासपुहत्तट्ठितीएसु, उक्कोसेणं पुव्वकोडिआउएसु । अवसेसा वत्तव्वया जहा[1] पंचिंदियतिरिक्खजोणिएसु उववज्जंतस्स तहेव, नवरं—परिमाणे जहण्णेणं एक्को वा दो वा तिण्णि वा, उक्कोसेणं संखेज्जा उववज्जंति । जहा तहिं अंतोमुहुत्तेहिं तहा इहं मासपुहत्तेहिं संवेहं करेज्जा । सेसं तं चेव १-९।
जहा रयणप्पभाए 'तहा सक्करप्पभाए वि वत्तव्वया'[2], नवरं—जहण्णेणं वासपुहत्तट्ठितीएसु, उक्कोसेणं पुव्वकोडी आउएसु । ओगाहणा-लेस्सा-नाण-ट्ठिती-अणुबंध-संवेह-नाणत्तं च जाणेज्जा जहेव[3] तिरिक्खजोणियउद्देसए । एवं जाव तमापुढविनेरइए ॥

२९७. जइ तिरिक्खजोणिएहिंतो उववज्जंति—किं एगिंदियतिरिक्खजोणिएहिंतो उववज्जंति जाव पंचिंदियतिरिक्खजोणिएहिंतो उववज्जंति ?
गोयमा ! एगिंदियतिरिक्खजोणिएहिंतो भेदो जहा पंचिंदियतिरिक्खजोणियउद्देसए, नवरं—तेउ-वाऊ पडिसेहेयव्वा । सेसं तं चेव । जाव[4]—

२९८ पुढविक्काइए णं भंते ! जे भविए मणुस्सेसु उववज्जित्तए, से णं भंते ! केवतिकालट्ठितीएसु उववज्जेज्जा ?
गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तट्ठितीएसु उक्कोसेणं पुव्वकोडीआउएसु उववज्जेज्जा ॥

२९९ ते णं भंते ! जीवा एगसमएणं केवतिया उववज्जंति ? एवं जहेव पंचिंदियतिरिक्खजोणिएसु उववज्जमाणस्स पुढविक्काइयस्स वत्तव्वया सा चेव इहं वि उववज्जमाणस्स भाणियव्वा[5] नवसु वि गमएसु, नवरं—ततिय-छट्ठ-नवमेसु गमएसु परिमाणं जहण्णेणं एक्को वा दो वा तिण्णि वा, उक्कोसेणं संखेज्जा उववज्जंति । जाहे अप्पणा जहण्णकालट्ठितीओ भवति ताहे पढमगमए अज्झवसाणा पसत्था वि अप्पसत्था वि बितियगमए अप्पसत्था, ततियगमए पसत्था भवंति । सेसं तं चेव निरवसेसं १-९॥

३०० जइ आउक्काइए० ? एवं आउक्काइयाण वि । एवं वणस्सइकाइयाण वि । एवं जाव चउरिंदियाण वि । असण्णिपंचिंदियतिरिक्खजोणिय-सण्णिपंचिंदियतिरिक्खजोणिय-असण्णिमणुस्स-सण्णिमणुस्सा य एते सव्वे वि जहा पंचिंदियतिरिक्ख-

---

१ भ० २४।२४०-२४२ ।
२. वि वत्तव्वया तहा सक्करप्पभाए वि (अ, क, ब); वि वत्तव्वया तहा सक्करप्पभाए वि वत्तव्वया (स) ।
३ भ० २४।२४३ ।
४. भ० २४।२४५ ।
५. भ० २४।२४७ ।

जोणियउद्देसए तहेव भाणियव्वा[1], नवरं—एयाणि चेव परिमाण-अज्झवसाण-नाणत्ताणि जाणिज्जा पुढविकाइयस्स एत्थ चेव उद्देसए भणियाणि। सेसं तहेव निरवसेसं १-९॥

३०१. जइ देवेहिंतो उववज्जति—किं भवणवासिदेवेहिंतो उववज्जति ? वाणमंतर-जोइसिय-वेमाणियदेवेहिंतो उववज्जति ?
गोयमा ! भवणवासिदेवेहिंतो वि जाव वेमाणियदेवेहिंतो वि उववज्जति ॥

३०२ जइ भवणवासिदेवेहिंतो—किं असुरकुमार जाव थणियकुमार० ?
गोयमा ! असुरकुमार जाव थणियकुमार ॥

३०३. असुरकुमारे णं भंते ! जे भविए मणुस्सेसु उववज्जित्तए, से णं भंते ! केवति-कालट्ठितीएसु उववज्जेज्जा ?
गोयमा ! जहण्णेणं मासपुहत्तट्ठितीएसु, उक्कोसेणं पुव्वकोडिआउएसु उववज्जेज्जा। एवं जच्चेव पंचिंदियतिरिक्खजोणियउद्देसए वत्तव्वया सच्चेव एत्थ वि भाणियव्वा, नवरं—जहा तहिं जहण्णगं अंतोमुहुत्तट्ठितीएसु तहा इह मास-पुहत्तट्ठितीएसु। परिमाणं जहण्णेणं एक्को वा दो वा तिण्णि वा, उक्कोसेणं संखेज्जा उववज्जति। सेसं तं चेव १-९। एवं जाव[2] ईसाणदेवो त्ति। एयाणि चेव नाणत्ताणि। सणंकुमारादीया जाव सहस्सारो त्ति जहेव[3] पंचिंदियतिरिक्ख-जोणिउद्देसए, नवरं—परिमाणं जहण्णेणं एक्को वा दो वा तिण्णि वा, उक्को-सेणं संखेज्जा उववज्जति। उववाओ जहण्णेणं वासपुहत्तट्ठितीएसु, उक्कोसेणं पुव्वकोडीआउएसु उववज्जेज्जा। सेसं तं चेव। संवेहं वासपुहत्तं पुव्वकोडीसु करेज्जा। सणंकुमारे ठिती चउगुणिया 'अट्ठावीससागरोवमा भवंति'[4] माहिंदे ताणि चेव सातिरेगाणि, बम्हलोए चत्तालीसं, लंतए छप्पन्नं, महासुक्के अट्ठसट्ठिं, सहस्सारे बावत्तरिं सागरोवमाइं। एसा उक्कोसा ठिती भणिया। जहण्णट्ठितिं पि चउगुणेज्जा ॥

३०४ आणयदेवे णं भंते ! जे भविए मणुस्सेसु उववज्जित्तए, से णं भंते ! केवति-कालट्ठितीएसु उववज्जेज्जा ?
गोयमा ! जहण्णेणं वासपुहत्तट्ठितीएसु, उक्कोसेणं पुव्वकोडीठितीएसु उववज्जेज्जा ॥

३०५ ते णं भंते ! जीवा एगसमएणं केवतिया उववज्जति ? एवं जहेव सहस्सार-देवाणं वत्तव्वया, नवरं—ओगाहणा-ठिति-अणुबंधे य जाणेज्जा। सेसं तं चेव। भवादेसेणं जहण्णेणं दो भवग्गहणाइं, उक्कोसेणं छ भवग्गहणाइं। कालादेसेणं

---

१. भ० २४।२४८-२८२।
२. भ० २४।२८५-२९३।
३. भ० २४।२९३।
४ अट्ठावीसं सागरोवमा भवति (अ, क, ख, ता, ब, म, स)।

जहण्णेण अट्ठारस सागरोवमाइ वासपुहत्तमब्भहियाइ, उक्कोसेण सत्तावन्न सागरोवमाइ तिहि पुव्वकोडीहि अब्भहियाइ, एवतिय काल सेवेज्जा, एवतिय काल गतिरागति करेज्जा। एव नव वि गमा, नवर—ठिति अणुबध सवेह च जाणेज्जा १-६। एव जाव अच्चुयदेवो, नवर—ठिति अणुबध सवेह च जाणेज्जा। पाणयदेवस्स ठिती तिगुणिया सट्ठि सागरोवमाइ, आरणगस्स तेवट्ठि सागरोवमाइ, अच्चुयदेवस्स छावट्ठि सागरोवमाइ ॥

३०६ जइ कप्पातीतावेमाणियदेवेहितो उववज्जति—कि गेवेज्जाकप्पातीता० ? अणुत्तरोववातियकप्पातीता० ?
गोयमा ! गेवेज्जाकप्पातीता, अणुत्तरोववातियकप्पातीता ॥

३०७ जइ गेवेज्जा०—कि हेट्ठिम-हेट्ठिम गेवेज्जगकप्पातीता जाव उवरिम-उवरिम गेवेज्जा० ?
गोयमा ! हेट्ठिम-हेट्ठिम गेवेज्जा जाव उवरिम-उवरिम गेवेज्जा ॥

३०८ गेवेज्जगदेवे ण भते ! जे भविए मणुस्सेसु उववज्जित्तए, से ण भते ! केवतिकालट्ठितीएसु उववज्जेज्जा ?
गोयमा ! जहण्णेण वासपुहत्तट्ठितीएसु, उक्कोसेण पुव्वकोडीट्ठितीएसु। अवसेस जहा आणयदेवस्स वत्तव्वया, नवर—ओगाहणा[1]—एगे भवधारणिज्जे सरीरए। से जहण्णेण अगुलस्स असखेज्जइभाग, उक्कोसेण दो रयणीओ। सठाण[2]—एगे भवधारणिज्जे सरीरे। से समचउरससठिए पण्णत्ते। पच समुग्घाया पण्णत्ता, त जहा - वेदणासमुग्घाए जाव तेयगसमुग्घाए, नो चेव ण वेउव्वियतेयगसमुग्घाएहि समोहणिसु वा, समोहणति वा, समोहणिस्संति वा। ठिती अणुबधो जहण्णेण बावीस सागरोवमाइ, उक्कोसेण एक्कतीस सागरोवमाइ। सेस तं चेव। कालादेसेण जहण्णेण बावीस सागरोवमाइ वासपुहत्तमब्भहियाइ, उक्कोसेण तेणउति सागरोवमाइ तिहि पुव्वकोडीहि अब्भहियाइ, एवतिय काल सेवेज्जा, एवतिय काल गतिरागति करेज्जा। एव सेसेसु वि अट्ठगमएसु, नवर—ठिति सवेह च जाणेज्जा १-६॥

३०९ जइ अणुत्तरोववाइयकप्पातीतावेमाणियदेवेहितो उववज्जति—कि विजयअणुत्तरोववाइय० ? वेजयतअणुत्तरोववाइय जाव सव्वट्ठसिद्ध० ?
गोयमा ! विजयअणुत्तरोववाइय जाव सव्वट्ठसिद्धअणुत्तरोववाइय ॥

३१० विजय-वेजयत-जयत-अपराजियदेवे ण भते ! जे भविए मणुस्सेसु उववज्जित्तए, से ण भते ! केवतिकालट्ठितीएसु उववज्जेज्जा ? एव जहेव गेवेज्जगदेवाण, नवर—ओगाहणा जहण्णेण अगुलस्स असखेज्जइभाग, उक्कोसेण एगा रयणी।

---

१ ओगाहणा गो (अ, क, ख, ता, व, म, स)। २. सठाण गो (अ, क, ख, ता, व, म, स)।

सम्मदिट्ठी, नो मिच्छदिट्ठी, नो सम्मामिच्छदिट्ठी। नाणी, नो अण्णाणी, नियम तिण्णाणी, त जहा—आभिणिबोहियनाणी, सुयनाणी, ओहिनाणी। ठिती जहण्णेण एक्कतीस सागरोवमाइ, उक्कोसेण तेत्तीस सागरोवमाइ। सेस त चेव। भवादेसेण जहण्णेण दो भवग्गहणाइ, उक्कोसेण चत्तारि भवग्गहणाइ। कालादेसेण जहण्णेण एक्कतीस सागरोवमाइ वासपुहत्तमब्भहियाइ, उक्कोसेण छावट्ठि सागरोवमाइ दोहि पुव्वकोडीहि अब्भहियाइ, एवतिय काल सेवेज्जा, एवतिय काल गतिरागति करेज्जा। एव सेसा वि अट्ठ गमगा भाणियव्वा, नवर—ठिति अणुबध सवेध च जाणेज्जा। सेस एव चेव १-९॥

३११ सव्वट्ठसिद्धगदेवे ण भते! जे भविए मणुस्सेसु उववज्जित्तए० ? सा चेव विजयादिदेववत्तव्वया भाणियव्वा, नवर—ठिती अजहण्णमणुक्कोसेण तेत्तीस सागरोवमाइ। एव अणुबंधो वि। सेस त चेव। भवादेसेण दो भवग्गहणाइ, कालादेसेण जहण्णेण तेत्तीस सागरोवमाइ वासपुहत्तमब्भहियाइ, उक्कोसेण तेत्तीस सागरोवमाइ पुव्वकोडीए अब्भहियाइ, एवतिय काल सेवेज्जा, एवतिय काल गतिरागति करेज्जा १॥

३१२ सो चेव जहण्णकालट्ठितीएसु उववण्णो, एस चेव वत्तव्वया, नवर—कालादेसेण जहण्णेण तेत्तीस सागरोवमाइ वासपुहत्तमब्भहियाइ, उक्कोसेण वि तेत्तीस सागरोवमाइ वासपुहत्तमब्भहियाइ, एवतिय काल सेवेज्जा, एवतिय काल गतिरागति करेज्जा २॥

३१३ सो चेव उक्को कालट्ठितीएसु उववण्णो, एस चेव वत्तव्वया, नवरं—कालादेसेण जहण्णेण तेत्तीस सागरोवमाइ पुव्वकोडीए अब्भहियाइ, उक्कोसेण वि तेत्तीस सागरोवमाइ पुव्वकोडीए अब्भहियाइ एवतिय काल सेवेज्जा, एवतिय काल गतिरागति करेज्जा ३। एते चेव तिण्णि गमगा, सेसा न भण्णति॥

३१४ सेव भते! सेव भते! त्ति॥

बावीसइमो उद्देसो

३१५ वाणमतरा ण भते! कओहिंतो उववज्जति—कि नेरइएहिंतो उववज्जति ? तिरिक्ख० ? एव जहेव[1] नागकुमारउद्देसए असण्णी तहेव निरवसेस॥

३१६ जइ सण्णिपचिंदिय[2]•तिरिक्खजोणिएहितो उववज्जति—किं सखेज्जवासाउय०? असखेज्जवासाउय० ?

---

१. भ० २४।१४३, १४४।

२ स० पा०—सण्णिपचिंदिय जाव असखेज्जवासाउय।

गोयमा ! सखेज्जवासाउय, असंखेज्जवासाउय जाव उववज्जंति० ॥

३१७. सण्णिपचिंदियतिरिक्खजोणिए णं भते ! जे भविए वाणमतरेसु उववज्जित्तए, से णं भंते ! केवतिकालट्ठितीएसु उववज्जेज्जा ?
गोयमा ! जहण्णेण दसवाससहस्सट्ठितीएसु, उक्कोसेणं पलिओवमट्ठितीएसु। सेस त चेव जहा नागकुमारउद्देसए जाव[1] कालादेसेण जहण्णेणं सातिरेगा पुव्वकोडी दसहिं वाससहस्सेहिं अब्भहिया, उक्कोसेण चत्तारि पलिओवमाइ, एवतिय काल सेवेज्जा, एवतियं काल गतिरागतिं करेज्जा १ ॥

३१८ सो चेव जहण्णकालट्ठितीएसु उववण्णो, जहेव[2] नागकुमाराण वितियगमे वत्तव्वया २ ॥

३१९ सो चेव उक्कोसकालट्ठितीएसु उववण्णो जहण्णेणं पलिओवमट्ठितीएसु, उक्कोसेण वि पलिओवमट्ठितीएसु। एस चेव वत्तव्वया, नवरं—ठिती से जहण्णेण पलिओवम, उक्कोसेण तिण्णि पलिओवमाइ। सवेहो जहण्णेण दो पलिओवमाइ, उक्कोसेण चत्तारि पलिओवमाइ, एवतिय काल सेवेज्जा, एवतिय काल गतिरागतिं करेज्जा। मज्झिमगमगा तिण्णि वि जहेव[3] नागकुमारेसु पच्छिमेसु तिसु गमएसु त चेव जहा[4] नागकुमारुद्देसए, नवरं—ठिंतिं सवेहं च जाणेज्जा। सखेज्जवासाउय तहेव,[5] नवरं—ठिती अणुबघो सवेह च उभओ ठितीए जाणेज्जा ३-९ ॥

३२० जइ मणुस्सेहिंतो उववज्जति० ? असखेज्जवासाउयाण जहेव[6] नागकुमाराण उद्देसे तहेव वत्तव्वया, नवर—तइयगमए ठिती जहण्णेण पलिओवम, उक्कोसेण तिण्णि पलिओवमाइ। ओगाहणा जहण्णेण गाउय, उक्कोसेण तिण्णि गाउयाइ। सेस तहेव। सवेहो से जहा एत्थ चेव उद्देसए असंखेज्जवासाउयसण्णिपचिंदियाण। सखेज्जवासाउयसण्णिमणुस्से जहेव[7] नागकुमारुद्देसए, नवरं—वाणमतरे ठिंतिं सवेहं च जाणेज्जा १-९ ॥

३२१. सेव भते ! सेव भते ! त्ति ॥

———

१. भ० २४।१४७।
२. भ० २४।१४८।
३. भ० २४।१५०।
४. भ० २४।१५१।
५ भ० २४।१५२,१५३।
६. भ० २४।१५४-१५७।
७. भ० २४।१५८,१५९।

तेवीसइमो उद्देसो

३२२. जोइसिया ण भंते ! कम्रोहिंतो उववज्जति - कि नेरइएहितो० ? भेदो जाव[1] सण्णिपचिंदियतिरिक्खजोणिएहितो उववज्जति, नो असण्णिपचिंदियतिरिक्ख ।।

३२३. जइ सण्णि० कि सखेज्ज० ? असखेज्ज० ?
गोयमा ! सखेज्जवासाउय, असखेज्जवासाउय ।।

३२४ असखेज्जवासाउयसण्णिपचिंदियतिरिक्खजोणिए ण भते ! जे भविए जोतिसिएसु उववज्जित्तए, से ण भते ! केवतिकालट्ठितीएसु उववज्जेज्जा ?
गोयमा ! जहण्णेण अट्ठभागपलिओवमट्ठितीएसु, उक्कोसेण पलिओवमवाससयसहस्सट्ठितीएसु उववज्जेज्जा, अवसेस जहा[2] असुरकुमारुद्देसए, नवर—ठिती जहण्णेण अट्ठभागपलिओवम, उक्कोसेण तिण्णि पलिओवमाइ । एव अणुबधो वि । सेस तहेव, नवर—कालादेसेण जहण्णेण दो अट्ठभागपलिओवमाइ, उक्कोसेण चत्तारि पलिओवमाइ वाससयसहस्समब्भहियाइ, एवतिय काल सेवेज्जा, एवतिय काल गतिरागति करेज्जा १ ।।

३२५. सो चेव जहण्णकालट्ठितीएसु उववण्णो जहण्णेण अट्ठभागपलिओवमट्ठितीएसु, उक्कोसेण वि अट्ठभागपलिओवमट्ठितीएसु । एस चेव वत्तव्वया, नवर—कालादेसेण जाणेज्जा २ ।।

३२६ सो चेव उक्कोसकालट्ठितीएसु उववण्णो, एस चेव वत्तव्वया, नवर—ठिती जहण्णेण पलिओवम वाससयसहस्समब्भहिय, उक्कोसेण तिण्णि पलिओवमाइ । एव अणुबधो वि । कालादेसेण जहण्णेण दो पलिओवमाइ दोहिं वाससयसहस्सेहि अब्भहियाइ, उक्कोसेण चत्तारि पलिओवमाइ वाससयसहस्समब्भहियाइ ३ ।।

३२७ सो चेव अप्पणा जहण्णकालट्ठितीओ जाओ जहण्णेण अट्ठभागपलिओवमट्ठितीएसु, उक्कोसेण वि अट्ठभागपलिओवमट्ठितीएसु उववज्जेज्जा ।।

३२८ ते ण भते ! जीवा एगसमएण केवतिया उववज्जति ? एस चेव वत्तव्वया, नवर—ओगाहणा जहण्णेण धणुपुहत्त, उक्कोसेण सातिरेगाइ अट्ठारसधणुसयाइ । ठिती जहण्णेण अट्ठभागपलिओवम, उक्कोसेण वि अट्ठभागपलिओवम । एव अणुबधोवि । सेस तहेव । कालादेसेण जहण्णेण दो अट्ठभागपलिओवमाइ, उक्कोसेण वि दो अट्ठभागपलिओवमाइ, एवतिय काल सेवेज्जा, एवतिय काल गतिरागतिं करेज्जा । जहण्णकालट्ठितियस्स एस चेव एक्को गमो[3] ४ ।।

---

१ भ० २४।१-३ ।
२ भ० २४।१२१ ।
३. पञ्चमषष्ठगमयोरत्रैवान्तर्भावात् (वृ) ।

३४४. असंखेज्जवासाउयसण्णिमणुस्से ण भते ! जे भविए सोहम्मे कप्पे देवत्ताए उववज्जित्तए० ? एव जहेव असखेज्जवासाउयस्स सण्णिपंचिंदियतिरिक्ख-जोणियस्स सोहम्मे कप्पे उववज्जमाणस्स तहेव सत्त गमगा, नवर—आदिल्लएसु दोसु गमएसु ओगाहणा जहण्णेण गाउय, उक्कोसेण तिण्णि गाउयाइ। ततियगमे जहण्णेण तिण्णि गाउयाइ, उक्कोसेण वि तिण्णि गाउयाइं। चउत्थ-गमए जहण्णेण गाउय, उक्कोसेण वि गाउय। पच्छिमएसु तिसु गमएसु जहण्णेण तिण्णि गाउयाइ उक्कोसेण वि तिण्णि गाउयाइ, सेस तहेव निरवसेस ॥

३४५ जइ सखेज्जवासाउयसण्णिमणुस्सेहिंतो० ? एव सखेज्जवासाउयसण्णिमणुस्साण जहेव[1] असुरकुमारेसु उववज्जमाणाण तहेव नव गमगा भाणियव्वा, नवर सोहम्मदेवट्ठिति सवेह च जाणेज्जा। सेसं तं चेव १-९ ॥

३४६. ईसाणदेवा ण भते ! कओहिंतो उववज्जति० ? ईसाणदेवाण एस चेव सोहम्मग-देवसरिसा वत्तव्वया, नवरं—असंखेज्जवासाउयसण्णिपचिंदियतिरिक्खजोणि-यस्स जेसु ठाणेसु सोहम्मे उववज्जमाणस्स पलिओवमठिती तेसु ठाणेसु इह सातिरेग पलिओवम कायव्व। चउत्थगमे ओगाहणा जहण्णेण धणुपुहत्त, उक्कोसेण सातिरेगाइ दो गाउयाइ। सेस तहेव ॥

३४७ असखेज्जवासाउयसण्णिमणुस्सस्स वि तहेव ठिती जहा[2] पचिंदियतिरिक्खजो-णियस्स असखेज्जवासाउयस्स। ओगाहणा वि जेसु ठाणेसु गाउय तेसु ठाणेसु इह सातिरेग गाउय। सेस तहेव ॥

३४८ सखेज्जवासाउयाण तिरिक्खजोणियाणं मणुस्साण य जहेव सोहम्मेसु उववज्ज-माणाण तहेव निरवसेस नव वि गमगा, नवरं—ईसाणठिति सवेह च जाणेज्जा ॥

३४९ सणकुमारदेवा ण भते ! कओहिंतो उववज्जति० ? उववाओ जहा[3] सक्कर-प्पभापुढविनेरइयाण, जाव—

३५० पज्जत्तसखेज्जवासाउयसण्णिपचिंदियतिरिक्खजोणिए ण भंते ! जे भविए सणकुमारदेवेसु उववज्जित्तए० ? अवसेसा परिमाणादीया भवादेसपज्जवसाणा सच्चेव वत्तव्वया भाणियव्वा जहा[4] सोहम्मे उववज्जमाणस्स, नवर – सणकुमार-ट्ठिति सवेह च जाणेज्जा। जाहे य अप्पणा जहण्णकालट्ठितीओ भवति ताहे तिसु वि गमएसु पच लेस्साओ आदिल्लाओ कायव्वाओ। सेस तं चेव ॥

३५१ जइ मणुस्सेहिंतो उववज्जति० ? मणुस्साण जहेव सक्करप्पभाए उववज्जमाणाण तहेव नव वि गमा भाणियव्वा[5], नवरं—सणकुमारट्ठिति सवेह च जाणेज्जा ॥

---

१. भ० २४।१३९-१४१।
२. भ० २४।३३६-३४१।
३. भ० २४।७८,१०५।
४. भ० २४।३४२।
५ भ० २४।१०५-१०८।

३५२. माहिंदगदेवा ण भते ! कग्रोहितो उववज्जति ०? जहा सणंकुमारगदेवाण वत्तव्वया तहा माहिंदगदेवाण वि भाणियव्वा[1], नवर—माहिंदगदेवाण ठिती सातिरेगा भाणियव्वा सच्चेव। एव वभलोगदेवाण वि वत्तव्वया, नवर—वंभलोगट्ठिति सवेह च जाणेज्जा। एव जाव सहस्सारो, नवर—ठिति सवेह च जाणेज्जा। लतगादीण जहण्णकालट्ठितियस्स तिरिक्खजोणियस्स तिसु वि गमएसु छप्पि लेस्साग्रो कायव्वाग्रो। सघयणाइ बभलोग-लतएसु पच ग्रादिल्लगाणि, महासुक्क-सहस्सारेसु चत्तारि। तिरिक्खजोणियाण वि मणुस्साण वि। सेस त चेव ॥

३५३ ग्राणयदेवा ण भते ! कग्रोहितो उववज्जति० ? उववाग्रो जहा सहस्सारदेवाण, नवर—तिरिक्खजोणिया खोडेयव्वा, जाव —

३५४ पज्जत्तासखेज्जवासाउयसण्णिमणुस्से ण भते ! जे भविए ग्राणयदेवेसु उववज्जित्तए ०? मणुस्साण य वत्तव्वया जहेव सहस्सारेसु उववज्जमाणाण, नवर—तिण्णि सघयणाणि, सेस तहेव जाव ग्रणुबधो। भवादेसेण जहण्णेण तिण्णि भवग्गहणाइ, उक्कोसेण सत्त भवग्गहणाइ। कालादेसेण जहण्णेण ग्रट्ठारस सागरोवमाइ दोहि वासपुहत्तेहि ग्रब्भहियाइ, उक्कोसेण सत्तावन्न सागरोवमाइ चउहि पुव्वकोडीहि ग्रब्भहियाइ, एवतिय काल सेवेज्जा, एवतिय काल गतिरागति करेज्जा। एव सेसा वि ग्रट्ठ गमगा भाणियव्वा, नवर—ठिति सवेह च जाणेज्जा। सेस त चेव। एव जाव ग्रच्चुयदेवा, नवर—ठिति सवेह च जाणेज्जा। चउसु वि सघयणा तिण्णि ग्राणयादीसु ॥

३५५ गेवेज्जगदेवा ण भते ! कग्रोहितो उववज्जति ०? एस चेव वत्तव्वया, नवर—दो सघयणा। ठिति सवेह च जाणेज्जा ॥

३५६ विजय-वेजयत-जयत-अपराजितदेवा ण भते ! कग्रोहितो उववज्जति ०? एस चेव वत्तव्वया निरवसेसा जाव ग्रणुबधो त्ति, नवर --पढम सघयण। सेस तहेव। भवादेसेण जहण्णेण तिण्णि भवग्गहणाइ, उक्कोसेण पच भवग्गहणाइं। कालादेसेण जहण्णेण एक्कतीस सागरोवमाइ दोहि वासपुहत्तेहि ग्रब्भहियाइ, उक्कोसेण छावट्ठि सागरोवमाइ तिहि पुव्वकोडीहि ग्रब्भहियाइ, एवतिय काल सेवेज्जा, एवतिय काल गतिरागति करेज्जा। एव सेसा वि ग्रट्ठ गमगा भाणियव्वा, नवर—ठिति सवेह च जाणेज्जा। मणूसलद्धी[2] नवसु वि गमएसु जहा गेवेज्जेसु उववज्जमाणस्स, नवर —पढमसघयण ॥

३५७ सव्वट्ठगसिद्धगदेवा ण भते ! कग्रोहितो उववज्जति ०? उववाग्रो जहेव विजयादीण, जाव—

---

१. भ० २४।३४९-३५१ ।　　२ मणूसे लद्धी (स) ।

३२९ सो चेव अप्पणा उक्कोसकालट्ठितीओ जाओ, सा चेव ओहिया वत्तव्वया, नवर—ठिती जहण्णेण तिण्णि पलिओवमाइ, उकोक्सेण वि तिण्णि पलिओवमाइ। एव अणुवंधो वि। सेस त चेव। एव पच्छिमा तिण्णि गमगा नेयव्वा[1], नवर—ठिति सवेह च जाणेज्जा ७-९। एते सत्त गमगा॥

३३० जइ सखेज्जवासाउयसण्णिपचिंदिय० ? सखेज्जवासाउयाण जहेव[2] असुरकुमारेसु उववज्जमाणाण तहेव नव वि गमा भाणियव्वा, नवर—जोतिसियठिति सवेह च जाणेज्जा। सेस तहेव निरवसेस[3] १-९॥

३३१. जइ मणुस्सेहिंतो उववज्जति० ? भेदो तहेव जाव[4]—

३३२. असखेज्जवासाउयसण्णिमणुस्से ण भते ! जे भविए जोइसिएसु उववज्जित्तए, से ण भते ! केवतिकालट्ठितीएसु उववज्जेज्जा ? एव जहा असखेज्जवासाउयसण्णिपचिंदियस्स जोइसिएसु चेव उववज्जमाणस्स सत्त गमगा तहेव मणुस्साण वि, नवर—ओगाहणाविसेसो पढमेसु तिसु गमएसु ओगाहणा जहण्णेण सातिरेगाइ नव धणुसयाइ, उक्कोसेण तिण्णि गाउयाइ। मज्झिमगमए जहण्णेण सातिरेगाइ नव धणुसयाइ, उक्कोसेण वि सातिरेगाइ नव धणुसयाइ। पच्छिमेसु तिसु गमएसु जहण्णेण तिण्णि गाउयाइ, उक्कोसेण वि तिण्णि गाउयाइ। सेसं तहेव निरवसेसं जाव[5] सवेहो त्ति॥

३३३ जइ सखेज्जवासाउयसण्णिमणुस्सेहिंतो० ? सखेज्जवासाउयाण जहेव[6] असुरकुमारेसु उववज्जमाणाणं तहेव नव गमगा भाणियव्वा, नवर—जोतिसियठिति सवेह च जाणेज्जा। सेस त चेव निरवसेस १-९॥

३३४ सेव भते ! सेव भते ! त्ति॥

चउवीसइमो उद्देसो

३३५ सोहम्मदेवा ण भते ! कओहिंतो उववज्जति—किं नेरइएहिंतो उववज्जति ? भेदो जहा[7] जोइसियउद्देसए॥

३३६. असखेज्जवासाउयसण्णिपचिंदियतिरिक्खजोणिए ण भते ! जे भविए सोहम्मगदेवेसु उववज्जित्तए, से ण भंते ! केवतिकालट्ठितीएसु उववज्जेजा ?

---

१ भाणियव्वा (अ, क)।
२. भ० २४।१३१-१३३।
३ निरवसेस भाणियव्व (स)।
४ भ० २४।१३४,१३५।
५. भ० २४।३२४-३२९।
६. भ० २४।१३९-१४२।
७ भ० २४।३२२,३२३।

गोयमा ! जहण्णेण पलिग्रोवमट्ठितीएसु उक्कोसेणं तिपलिग्रोवमट्ठितीएसु उववज्जेज्जा ॥

३३७. ते णं भंते ! जीवा एगसमएण केवतिया उववज्जति ? अवसेस जहा[1] जोइसिएसु उववज्जमाणस्स, नवर—सम्मदिट्ठी वि, मिच्छादिट्ठी वि, नो सम्मामिच्छादिट्ठी। नाणी वि, अण्णाणी वि, दो नाणा दो अण्णाणा नियम। ठिती जहण्णेण पलिग्रोवम, उक्कोसेणं तिण्णि पलिग्रोवमाइं। एव अणुबधो वि । सेसं तहेव। कालादेसेण जहण्णेण दो पलिग्रोवमाइं, उक्कोसेण छप्पलिग्रोवमाइ, एवतिय काल सेवेज्जा, एवतिय काल गतिरागति करेज्जा १ ॥

३३८ सो चेव जहण्णकालट्ठितीएसु उववण्णो, एस चेव वत्तव्वया, नवर—कालादेसेणं जहण्णेण दो पलिओवमाइ, उक्कोसेण चत्तारि पलिग्रोवमाइ, एवतिय काल सेवेज्जा, एवतिय काल गतिरागति करेज्जा २ ॥

३३९ सो चेव उक्कोसकालट्ठितीएसु उववण्णो जहण्णेण तिपलिग्रोवमट्ठितीएसु, उक्कोसेण वि तिपलिग्रोवमट्ठितीएसु, एस चेव वत्तव्वया, नवर—ठिती जहण्णेणं तिण्णि पलिग्रोवमाइ, उक्कोसेण वि तिण्णि पलिग्रोवमाइ। सेस तहेव। कालादेसेण जहण्णेण छप्पलिग्रोवमाइ, उक्कोसेण वि छप्पलिग्रोवमाइं, एवतिय काल सेवेज्जा, एवतिय काल गतिरागति करेज्जा ३ ॥

३४०. सो चेव अप्पणा जहण्णकालट्ठितीग्रो जाग्रो जहण्णेण पलिग्रोवमट्ठितीएसु, उक्कोसेण वि पलिग्रोवमट्ठितीएसु, एस चेव वत्तव्वया, नवरं—ग्रोगाहणा जहण्णेण धणुपुहत्त, उक्कोसेण दो गाउयाइ। ठिती जहण्णेण पलिओवम, उक्कोसेण वि पलिग्रोवम। सेस तहेव। कालादेसेण जहण्णेण दो पलिग्रोवमाइ, उक्कोसेण वि दो पलिग्रोवमाइ, एवतिय काल सेवेज्जा, एवतिय काल गतिरागति करेज्जा ४-६ ॥

३४१ सो चेव अप्पणा उक्कोसकालट्ठितीग्रो जाग्रो, आदिल्लगमगसरिसा तिण्णि गमगा नेयव्वा, नवर—ठिर्ति कालादेस च जाणेज्जा ७-९ ॥

३४२ जइ सखेज्जवासाउयसण्णिपचिंदिय० ? सखेज्जवासाउयस्स जहेव[2] असुरकुमारेसु उववज्जमाणस्स तहेव नव वि गमा, नवर—ठिर्ति सवेह च जाणेज्जा। जाहे य अप्पणा जहण्णकालट्ठितिओ भवति ताहे तिसु वि गमएसु सम्मदिट्ठी वि, मिच्छादिट्ठी वि, नो सम्मामिच्छादिट्ठी। दो नाणा दो अण्णाणा नियम। 'सेस त चेव'[3] १-९ ॥

३४३. जइ मणुस्सेहितो उववज्जति० ? भेदो जहेव जोतिसिएसु उववज्जमाणस्स, जाव[4]—

---

१. भ० २४।३२४।
२. भ० २४।१३१-१३३।
३ तहेव (ता)।
४. भ० २४।३३१।

३५८. से णं भंते ! केवतिकालट्ठितीएसु उववज्जेज्जा ?
गोयमा ! जहण्णेणं तेत्तीससागरोवमट्ठितीएसु, उक्कोसेण वि तेत्तीससागरोवमट्ठितीएसु उववज्जेज्जा। अवसेसा जहा विजयाइसु उववज्जताण, नवर—भवादेसेण तिण्णि भवग्गहणाइं, कालादेसेण जहण्णेण तेत्तीस सागरोवमाइ दोहि वासपुहत्तेहि अब्भहियाइं, उक्कोसेण वि तेत्तीस सागरोवमाइ दोहि पुव्वकोडीहि अब्भहियाइ, एवतिय कालं सेवेज्जा, एवतियं कालं गतिरागति करेज्जा १॥

३५९. सो चेव अप्पणा जहण्णकालट्ठितीओ जाओ, एस चेव वत्तव्वया, नवरं—ओगाहणा-ठितीओ रयणिपुहत्त-वासपुहत्ताणि। सेसं तहेव। सवेह च जाणेज्जा २॥

३६०. सो चेव अप्पणा उक्कोसकालट्ठितीओ जाओ, एस चेव वत्तव्वया, नवरं—ओगाहणा जहण्णेण पच धणुसयाइ, उक्कोस्सेण वि पच धणुसयाइ। ठिती जहण्णेण पुव्वकोडी, उक्कोसेण वि पुव्वकोडी। सेस तहेव जाव भवादेसो त्ति। कालादेसेण जहण्णेण तेत्तीसं सागरोवमाइं दोहि पुव्वकोडीहि अब्भहियाइं, उक्कोसेण वि तेत्तीस सागरोवमाइ दोहि पुव्वकोडीहि अब्भहियाइ, एवतिय काल सेवेज्जा, एवतिय काल गतिरागति करेज्जा ३। एते तिण्णि गमगा सव्वट्ठसिद्धगदेवाण ॥

३६१. सेव भते ! सेव भते ! त्ति भगव गोयमे जाव[1] विहरइ ॥

---

१. भ० १।५१।

पंचवीसइमं सतं

पढमो उद्देसो

१ लेसा य २. दव्व ३. सठाण ४. जुम्म ५. पज्जव ६. नियठ ७. समणा य ।
८. ओहे ६,१०. भवियाभविए, ११ सम्मा १२ मिच्छे य उद्देसा ।।१।।

लेस्सा-पदं

१ तेण कालेण तेणं समएण रायगिहे जाव[1] एव वयासी—कति ण भते । लेस्साओ पण्णत्ताओ ?
गोयमा । छल्लेसाओ पण्णत्ताओ, त जहा—कण्हलेसा जहा पढमसए बितिए उद्देसए तहेव लेस्साविभागो । अप्पाबहुग च जाव[2] चउव्विहाण देवाण चउव्विहाण देवीण मीसग अप्पाबहुगति ।।

जोगस्स अप्पाबहुग-पदं

२ कतिविहा ण भते । ससारसमावन्नगा जीवा पण्णत्ता ?
गोयमा ! चोद्दसविहा ससारसमावन्नगा जीवा पण्णत्ता, त जहा—१. सुहुमा अप्पज्जत्तगा २ सुहुमा पज्जत्तगा ३. बादरा अप्पज्जत्तगा ४ बादरा पज्जत्तगा ५ बेइदिया अप्पज्जत्तगा ६ बेइदिया पज्जत्तगा [3]•७ तेइदिया अप्पज्जत्तगा ८ तेइदिया पज्जत्तगा ६ चउरिंदिया अप्पज्जत्तगा १० चउरिंदिया पज्जत्तगा° ११ असण्णिपचिंदिया अप्पज्जत्तगा १२ असण्णिपचिंदिया पज्जत्तगा १३ सण्णिपचिंदिया अप्पज्जत्तगा १४ सण्णिपचिंदिया पज्जत्तगा ।।

३ एतेसि ण भते ! चोद्दसविहाण ससारसमावण्णगाण जीवाण जहण्णुक्कोसगस्स जोगस्स कयरे कयरेहिंतो[4] •अप्पा वा ? बहुया वा ? तुल्ला वा ?° विसेसाहिया वा ?

---

१. भ० १।४-१० ।

२. भ० १।२०२, प० १७।२ ।

३. स० पा०—एव तेइदिया एव चउरिंदिया ।

४. स० पा० कयरेहिंतो जाव विसेसाहिया ।

गोयमा ! १ सव्वत्थोवे सुहुमस्स अपज्जत्तगस्स जहण्णए जोए २ वादरस्स अपज्जत्तगस्स जहण्णए जोए असखेज्जगुणे ३ वेदियस्स अपज्जत्तगस्स जहण्णए जोए असखेज्जगुणे ४ एव तेइदियस्स ५ एव चउरिदियस्स ६ असण्णिस्स पचिदियस्स अपज्जत्तगस्स जहण्णए जोए असखेज्जगुणे ७ सण्णिस्स पचिदियस्स अपज्जत्तगस्स जहण्णए जोए असखेज्जगुणे ८ सुहुमस्स पज्जत्तगस्स जहण्णए जोए असखेज्जगुणे ९ वादरस्स पज्जत्तगस्स जहण्णए जोए असखेज्जगुणे १० सुहुमस्स अपज्जत्तगस्स उक्कोसए जोए असखेज्जगुणे ११ वादरस्स अपज्जत्त-गस्स उक्कोसए जोए असखेज्जगुणे १२ सुहुमस्स पज्जत्तगस्स उक्कोसए जोए असखेज्जगुणे १३ वादरस्स पज्जत्तगस्स उक्कोसए जोए असखेज्जगुणे १४. बेदियस्स पज्जत्तगस्स जहण्णए जोए असखेज्जगुणे १५ एव तेदियस्स, एव जाव १८ सण्णिपचिदियस्स पज्जत्तगस्स जहण्णए जोए असंखेज्जगुणे १९. वेदियस्स अपज्जत्तगस्स उक्कोसए जोए असखेज्जगुणे २० एव तेदियस्स वि, एव जाव २३ सण्णिपचिदियस्स अपज्जत्तगस्स उक्कोसए जोए असखेज्जगुणे २४ वेदियस्स पज्जत्तगस्स उक्कोसए जोए असखेज्जगुणे २५ एवं तेइदियस्स वि, एव जाव २८ सण्णिपचिदियस्स पज्जत्तगस्स उक्कोसए जोए असखे-ज्जगुणे ॥

समजोगि-विसमजोगि-पदं

४. दो भते ! नेरइया पढमसमयोववन्नगा कि समजोगी ? विसमजोगी[1] ?
गोयमा ! सिय समजोगी, सिय विसमजोगी ॥

५. से केणट्ठेण भते ! एव वुच्चइ—सिय समजोगी, सिय विसमजोगी ?
गोयमा ! आहारयाओ[2] वा से अणाहारए, अणाहारयाओ वा से आहारए सिय हीणे, सिय तुल्ले, सिय अब्भहिए। जइ हीणे असखेज्जइभागहीणे वा, सखेज्ज-इभागहीणे वा, सखेज्जगुणहीणे वा, असखेज्जगुणहीणे वा। अह अब्भहिए असखेज्जइभागमब्भहिए वा, सखेज्जइभागमब्भहिए वा, सखेज्जगुणमब्भहिए वा, असखेज्जगुणमब्भहिए वा। से तेणट्ठेण[3] °गोयमा ! एव वुच्चइ—सिय समजोगी°, सिय विसमजोगी। एव जाव वेमाणियाण ॥

जोग-पदं

६ कतिविहे ण भंते ! जोए पण्णत्ते ?
गोयमा ! पण्णरसविहे जोए पण्णत्ते, तं जहा—१ सच्चमणजोए २ मोसमण-

---

१. किं विसमजोगी (अ,म); असमजोगी (ता)।
२. आहारओ (अ,ख), आहाराओ (क,व,म)।
३. स० पा०—तेणट्ठेण जाव सिय।

जोए[1] ३ सच्चामोसमणजोए ४ असच्चामोसमणजोए ५ सच्चवइजोए ६. मोसवइजोए ७ सच्चामोसवइजोए ८ असच्चामोसवइजोए ९. ओरालिय-सरीरकायजोए १० ओरालियमीसासरीरकायजोए ११ वेउव्वियसरीरकाय-जोए १२ वेउव्वियमीसासरीरकायजोए १३ आहारगसरीरकायजोए १४ आहारगमीसासरीरकायजोए १५ कम्मासरीरकायजोए ॥

७ एयस्स[2] णं भंते ! पण्णरसविहस्स जहण्णुक्कोसगस्स जोगस्स कयरे कयरेहिंतो[3] •अप्पा वा ? बहुया वा ? तुल्ला वा ?° विसेसाहिया वा ?
गोयमा ! १ सव्वत्थोवे कम्मासरीरस्स[4] जहण्णए जोए २ ओरालियमीसगस्स जहण्णए जोए असंखेज्जगुणे ३ वेउव्वियमीसगस्स जहण्णए जोए असंखेज्जगुणे ४ ओरालियसरीरस्स जहण्णए जोए असंखेज्जगुणे ५ वेउव्वियसरीरस्स जहण्णए जोए असंखेज्जगुणे ६ कम्मासरीरस्स उक्कोसए जोए असंखेज्जगुणे ७ आहारगमीसगस्स जहण्णए जोए असंखेज्जगुणे ८. तस्स चेव उक्कोसए जोए असंखेज्जगुणे ९,१० ओरालियमीसगस्स, वेउव्वियमीसगस्स य—एएसि णं उक्कोसए जोए दोण्हवि तुल्ले असंखेज्जगुणे ११ असच्चामोसमणजोगस्स जहण्णए जोए असंखेज्जगुणे १२. आहारासरीरस्स जहण्णए जोए असंखेज्जगुणे १३-१९ तिविहस्स मणजोगस्स चउव्विहस्स वइजोगस्स—एएसि णं सत्तण्ह वि तुल्ले जहण्णए जोए असंखेज्जगुणे २० आहारासरीरस्स उक्कोसए जोए असंखेज्जगुणे २१-३० ओरालियसरीरस्स, वेउव्वियसरीरस्स, चउव्विहस्स य मणजोगस्स, चउव्विहस्स य वइजोगस्स—एएसि णं दसण्ह वि तुल्ले उक्कोसए जोए असंखेज्जगुणे ॥

८ सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति ॥

बीओ उद्देसो

दव्व-पदं

९ कतिविहा णं भंते ! दव्वा पण्णत्ता ?
गोयमा ! दुविहा दव्वा पण्णत्ता, तं जहा—जीवदव्वा य, अजीवदव्वा य ॥

१० अजीवदव्वा णं भंते ! कतिविहा पण्णत्ता ?

---

१. असच्चमणजोए । (अ, क, ब, म) ।
२. तस्स (क) ।
३. सं० पा०—कयरेहिंतो जाव विसेसाहिया ।
४. कम्मग° (क, ख, ब, म), कम्मसरीरगस्स (ता) ।

गोयमा ! दुविहा पण्णत्ता, त जहा—रूविअजीवदव्वा य, अरूविअजीवदव्वा य ।।

११ [1]•अरूविअजीवदव्वा ण भते ! कतिविहा पण्णत्ता ?
गोयमा ! दसविहा पण्णत्ता, त जहा—धम्मत्थिकाए, धम्मत्थिकायस्स देसे, धम्मत्थिकायस्स पदेसा, अधम्मत्थिकाए, अधम्मत्थिकायस्स देसे, अधम्मत्थिकायस्स पदेसा, आगासत्थिकाए, आगासत्थिकायस्स देसे, आगासत्थिकायस्स पदेसा, अद्धासमए ।।

१२ रूविजीवदव्वा ण भते ! कतिविहा पण्णत्ता ?
गोयमा ! चउविहा पण्णत्ता, त जहा—खधा, खधदेसा, खधपदेसा, परमाणु-पोग्गले ।।

१३ ते ण भते ! कि संखेज्जा ? असखेज्जा ? अणता ?
गोयमा ! नो सखेज्जा, नो असखेज्जा, अणता ।।

१४. से केणट्ठेण भते ! एव वुच्चइ—नो सखेज्जा, नो असखेज्जा, अणंता ?
गोयमा ! अणता परमाणुपोग्गला, अणता दुपदेसिया खधा जाव अणता दसपदेसिया खधा, अणता सखेज्जपदेसिया खधा, अणता असखेज्जपदेसिया खधा, अणता अणतपदेसिया खधा ।° से तेणट्ठेण गोयमा ! एव वुच्चइ—ते ण नो सखेज्जा, नो असखेज्जा, अणता ।।

१५. जीवदव्वा ण भते ! कि सखेज्जा ? असखेज्जा ? अणता ?
गोयमा ? नो सखेज्जा, नो असखेज्जा, अणता ।।

१६. से केणट्ठेण भते ! एवं वुच्चइ—जीवदव्वा णं नो सखेज्जा, नो असखेज्जा, अणता ?
गोयमा ! असखेज्जा नेरइया जाव असखेज्जा वाउक्काइया, अणंता वणस्सइ-काइया, असखेज्जा वेदिया, एव जाव वेमाणिया, अणता सिद्धा । से तेणट्ठेणं जाव अणता ।।

जीवाणं अजीवपरिभोग-पदं

१७ जीवदव्वाणं भते ! अजीवदव्वा परिभोगत्ताए हव्वमागच्छति ? अजीवदव्वाण जीवदव्वा परिभोगत्ताए हव्वमागच्छति ?
गोयमा ! जीवदव्वाण अजीवदव्वा परिभोगत्ताए हव्वमागच्छति, नो अजीव-दव्वाण जीवदव्वा परिभोगत्ताए हव्वमागच्छति ।।

१८. से केणट्ठेण भते ! एव वुच्चइ[2]—•जीवदव्वाण अजीवदव्वा परिभोगत्ताए

---

१. स० पा०—एव एएण अभिलावेण जहा अजीवपज्जवा जाव से ।
२ स० पा०—वुच्चइ जाव हव्वमागच्छति ।

हव्वमागच्छति, नो अजीवदव्वाण जीवदव्वा परिभोगत्ताए° हव्वमागच्छति ?
गोयमा ! जीवदव्वा ण अजीवदव्वे परियादियति परियादिइत्ता ओरालिय वेउव्विय आहारग तेयग कम्मग, सोइदिय जाव फासिदिय, मणजोग वइजोग कायजोग, आणापाणुत्त[1] च निव्वत्तयति । से तेणट्ठेण[2] •गोयमा ! एव वुच्चइ —जीवदव्वाण अजीवदव्वा परिभोगत्ताए हव्वमागच्छति, नो अजीवदव्वाण जीवदव्वा परिभोगत्ताए° हव्वमागच्छति ।।

१९ नेरइयाण भते ! अजीवदव्वा परिभोगत्ताए हव्वमागच्छति ? अजीवदव्वाण नेरइया परिभोगत्ताए हव्वमागच्छति ?
गोयमा ! नेरइयाण अजीवदव्वा परिभोगत्ताए[3] हव्वमागच्छति, नो अजीवदव्वाण नेरइया परिभोगत्ताए हव्वमागच्छति ।।

२० से केणट्ठेण ?
गोयमा ! नेरइया अजीवदव्वे परियादियति, परियादिइत्ता वेउव्विय-तेयग-कम्मग, सोइदियं जाव फासिदिय, (मणजोग वइजोग कायजोग ?)[4] आणापाणुत्त च निव्वत्तयति । से तेणट्ठेण गोयमा ! एव वुच्चइ—नेरइयाण अजीवदव्वा परिभोगत्ताए हव्वमागच्छति, नो अजीवदव्वाण नेरइया परिभोगत्ताए हव्वमागच्छति । एव जाव वेमाणिया, नवर—सरीरइदियजोगा भाणियव्वा जस्स जे अत्थि ।

अवगाह-पदं

२१. से नूण भते ! असखेज्जे लोए अणताइ दव्वाइ आगासे भइयव्वाइ ?
हता गोयमा ! असखेज्जे लोए[5] •अणताइ दव्वाइ आगासे° भइयव्वाइ ।।

पोग्गलाण चयादि-पदं

२२ लोगस्स ण भते ! एगम्मि आगासपदेसे कतिदिसि पोग्गला चिज्जति ?
गोयमा ! निव्वाघाएण छद्दिसि, वाघाय पडुच्च सिय तिदिसिं, सिय चउदिसिं, सिय पचदिसिं ।।

२३ लोगस्स ण भते ! एगम्मि आगासपदेसे कतिदिसि पोग्गला छिज्जति ? एव चेव । एव उवचिज्जति, एव अवचिज्जति ।।

---

१. आणापाणत्त (अ) ।
२ स० पा०—तेणट्ठेण जाव हव्वमागच्छति ।
३ जाव (अ, क, ख, ता, व, म, स) ।
४ कोष्ठकवर्ती पाठ आदर्शेषु नोपलभ्यते, किन्तु पूर्वसूत्रानुसारेण असौ युज्यते ।
५. स० पा०—लोए जाव भइयव्वाइ ।

पोग्गलगहण-पदं

२४ जीवे ण भते ! जाइ दव्वाइ ओरालियसरीरत्ताए गेण्हइ ताइ कि ठियाइ गेण्हइ ? अट्ठियाइ गेण्हइ ?
गोयमा ! ठियाइ पि गेण्हइ, अट्ठियाइ पि गेण्हइ ॥

२५ ताइ भते ! किं दव्वओ गेण्हइ ? खेत्तओ गेण्हइ ? कालओ गेण्हइ ? भावओ गेण्हइ ?
गोयमा ! दव्वओ वि गेण्हइ, खेत्तओ वि गेण्हइ, कालओ वि गेण्हइ, भावओ वि गेण्हइ । ताइ दव्वओ अणतपदेसियाइ दव्वाइ, खेत्तओ असखेज्जपदेसोगाढाइ—एव जहा पण्णवणाए पढमे आहारुद्देसए जाव[1] निव्वाघाएण छद्दिसिं, वाघाय पडुच्च सिय तिदिसि, सिय चउदिसि, सिय पचदिसि ॥

२६ जीवे ण भते ! जाइ दव्वाइ वेउव्वियसरीरत्ताए गेण्हइ ताइ कि ठियाइ गेण्हइ ? अट्ठियाइ गेण्हइ ? एव चेव, नवरं—नियम छद्दिसिं । एव आहारगसरीरत्ताए वि ॥

२७. जीवे ण भते ! जाइ दव्वाइ तेयगसरीरत्ताए गेण्हइ—पुच्छा ।
गोयमा ! ठियाइ गेण्हइ, नो अट्ठियाइ गेण्हइ । सेस जहा ओरालियसरीरस्स । कम्मगसरीरे एव चेव । एव जाव भावओ वि गेण्हइ ॥

२८. जाइ दव्वाइ दव्वओ गेण्हइ ताइ किं एगपदेसियाइ गेण्हइ ? दुपदेसियाइं गेण्हइ ? एव जहा भासापदे जाव[2] आणुपुव्वि गेण्हइ, नो अणाणुपुव्वि गेण्हइ ॥

२९ ताइ भते ! कतिदिसि गेण्हइ ?
गोयमा ! निव्वाघाएण जहा ओरालियस्स ॥

३०. जीवे ण भते ! जाइ दव्वाइ सोइदियत्ताए गेण्हइ ०? जहा वेउव्वियसरीर । एव जाव जिब्भिदियत्ताए । फासिदियत्ताए जहा ओरालियसरीर । मणजोगत्ताए जहा कम्मगसरीर, नवर—नियम छद्दिसि । एवं वइजोगत्ताए वि । कायजोगत्ताए[3] जहा ओरालियसरीरस्स ॥

३१. जीवे ण भते ! जाइ दव्वाइं आणापाणुत्ताए गेण्हइ ०? जहेव ओरालियसरीरत्ताए जाव सिय पचदिसिं ॥

३२. सेव भते ! सेव भते ! त्ति ॥[4]

---

१. प० २८।१ ।
२. प० ११ ।
३. कायजोगत्ताए वि (क, स) ।
४. त्ति केइ चउवीसदडएण एताणि पदाणि भणणति जस्स ज अत्थि (अ, क, ख, ता, व, म, स), असौ पाठ. वाचनान्तराभिधायकोस्ति । उद्देशकपूर्तौ लिखितस्यास्य मूले प्रवेशो जात इति सम्भाव्यते ।

तइओ उद्देसो

संठाण-पदं

३३. कति णं भते ! सठाणा पण्णत्ता ?
गोयमा ! छ सठाणा पण्णत्ता, तं जहा—परिमडले, वट्टे, तसे, चउरसे, आयते, अणित्थथे ॥

३४ परिमडला णं भते ! सठाणा दव्वट्ठयाए कि सखेज्जा ? असखेज्जा ? अणता ?
गोयमा ! नो सखेज्जा, नो असखेज्जा, अणता ॥

३५. वट्टा ण भते ! सठाणा ०? एव चेव । एव जाव अणित्थथा । एव पएसट्ठयाए वि । 'एवं दव्वट्ठ-पएसट्ठयाए वि' ॥

३६ एएसि ण भते ! परिमडल-वट्ट-तस-चउरस-आयत-अणित्थथाण सठाणाण दव्वट्ठयाए पएसट्ठयाए दव्वट्ठ-पएसट्ठयाए कयरे कयरेहितो[1] •अप्पा वा ? वहुया वा ? तुल्ला वा ?° विसेसाहिया वा ?
गोयमा ! सव्वत्थोवा परिमडलसठाणा दव्वट्ठयाए, वट्टा सठाणा दव्वट्ठयाए सखेज्जगुणा, चउरसा सठाणा दव्वट्ठयाए सखेज्जगुणा, तसा सठाणा दव्वट्ठयाए सखेज्जगुणा, आयता सठाणा दव्वट्ठयाए सखेज्जगुणा, अणित्थथा सठाणा दव्वट्ठयाए असखेज्जगुणा । पएसट्ठयाए—सव्वत्थोवा परिमडला सठाणा पएसट्ठयाए, वट्टा सठाणा पएसट्ठयाए सखेज्जगुणा, जहा दव्वट्ठयाए तहा पएसट्ठयाए वि जाव अणित्थथा सठाणा पएसट्ठयाए असखेज्जगुणा । दव्वट्ठपएसट्ठयाए —सव्वत्थोवा परिमडला सठाणा दव्वट्ठयाए, सो चेव दव्वट्ठयाए गमओ भाणियव्वो जाव अणित्थथा संठाणा दव्वट्ठयाए असखेज्जगुणा, अणित्थथेहितो सठाणेहितो दव्वट्ठयाए परिमडला सठाणा पएसट्ठयाए असखेज्जगुणा, वट्टा सठाणा पएसट्ठयाए सखेज्जगुणा, सो चेव पएसट्ठयाए गमओ भाणियव्वो जाव अणित्थथा सठाणा पएसट्ठयाए असखेज्जगुणा ॥

रयणप्पभादिसदब्भे संठाण-पद

३७ कति ण भते ! सठाणा पण्णत्ता ?
गोयमा ! पच सठाणा पण्णत्ता, त जहा—परिमडले जाव आयते ॥

३८. परिमडला ण भते ! संठाणा किं सखेज्जा ? असखेज्जा ? अणता ?
गोयमा ! नो सखेज्जा, नो असखेज्जा, अणता ॥

३९ वट्टा ण भते ! सठाणा कि सखेज्जा ०? एव चेव । एव जाव आयता ॥

४० इमीसे णं भते ! रयणप्पभाए पुढवीए परिमडला सठाणा कि सखेज्जा ? असखेज्जा ? अणता ?

---

१ × (अ, क, ता, ब, म, स) । २ स० पा०—कयरेहितो जाव विसेसाहिया ।

गोयमा ! नो सखेज्जा, नो असखेज्जा, अणंता ।।

४१. वट्टा ण भते ! सठाणा कि सखेज्जा ०? एव चेव । एव जाव आयता ।।

४२ सक्करप्पभाए ण भते ! पुढवीए परिमडला सठाणा ०? एव चेव । एव जाव आयता । एव जाव अहेसत्तमाए ।।

४३. सोहम्मे ण भते ! कप्पे परिमडला सठाणा ०? एव जाव अच्चुए ।।

४४. गेवेज्जविमाणे ण भते ! परिमडला सठाणा० ? एव चेव । एव अणुत्तरविमाणेसु वि । एव ईसिपब्भाराए वि ।।

४५. जत्थ ण भते ! एगे परिमडले सठाणे जवमज्झे तत्थ परिमडला सठाणा किं सखेज्जा ? असखेज्जा ? अणता ?

गोयमा ! नो सखेज्जा, नो असखेज्जा, अणता ।।

४६ वट्टा ण भते ! सठाणा कि सखेज्जा० ? एव चेव । एव जाव आयता ।।

४७ जत्थ ण भते ! एगे वट्टे सठाणे जवमज्झे तत्थ परिमडला सठाणा० ? एवं चेव । वट्टा सठाणा एव चेव । एव जाव आयता । एव एक्केक्केणं सठाणेण पच वि चारेयव्वा 'जाव आयतेण'[1] ।।

४८. जत्थ ण भते ! इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए एगे परिमडले सठाणे जवमज्झे तत्थ ण परिमडला सठाणा किं सखेज्जा—पुच्छा ।

गोयमा ! नो सखेज्जा, नो असखेज्जा, अणता ।

४९ वट्टा ण भते ! सठाणा किं सखेज्जा० ? एवं चेव । एव जाव आयता ।।

५०. जत्थ ण भते ! इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए एगे वट्टे सठाणे जवमज्झे तत्थ ण परिमडला सठाणा कि सखेज्जा—पुच्छा ।

गोयमा ! नो सखेज्जा, नो असखेज्जा, अणता । वट्टा सठाणा एव चेव । एव जाव आयता । एव पुणरवि एक्केक्केण सठाणेण पंच वि चारेयव्वा जहेव हेट्ठिल्ला जाव आयतेण । एव जाव अहेसत्तमाए । एव कप्पेसु वि जाव ईसीपब्भाराए पुढवीए ।।

पएसावगाहतो सठाणनिरूवण-पदं

५१ वट्टे ण भते ! सठाणे कतिपदेसिए कतिपदेसोगाढे पण्णत्ते ?

गोयमा ! वट्टे सठाणे दुविहे पण्णत्ते, त जहा—घणवट्टे य, पतरवट्टे य ।

तत्थ ण जे से पतरवट्टे से दुविहे पण्णत्ते, त जहा—ओयपदेसिए य, जुम्मपदेसिए य । तत्थ णं जे से ओयपदेसिए से जहण्णेण पचपदेसिए पंचपदेसोगाढे, उक्कोसेण अणतपदेसिए असखेज्जपदेसोगाढे । तत्थ ण जे से जुम्मपदेसिए से जहण्णेणं बारसपदेसिए बारसपदेसोगाढे, उक्कोसेण अणतपदेसिए असखेज्जपदेसोगाढे ।

---

१. × (अ, क, व, म, स) ।

तत्थ णं जे से घणवट्टे से दुविहे पण्णत्ते, तं जहा--ओयपदेसिए य, जुम्मपदेसिए य। तत्थ ण जे से ओयपदेसिए से जहण्णेण सत्तपदेसिए सत्तपदेसोगाढे पण्णत्ते, उक्कोसेणं अणंतपदेसिए असखेज्जपदेसोगाढे पण्णत्ते। तत्थ ण जे से जुम्मपदेसिए से जहण्णेण वत्तीसपदेसिए वत्तीसपदेसोगाढे पण्णत्ते, उक्कोसेण अणतपदेसिए असखेज्जपदेसोगाढे पण्णत्ते ॥

५२ तसे ण भते! सठाणे कतिपदेसिए कतिपदेसोगाढे पण्णत्ते?
गोयमा! तसे ण सठाणे दुविहे पण्णत्ते, त जहा--घणतसे य, पतरतसे य।
तत्थ ण जे से पतरतसे से दुविहे पण्णत्ते, त जहा--ओयपदेसिए य, जुम्मपदेसिए य। तत्थ णं जे से ओयपदेसिए से जहण्णेण तिपदेसिए तिपदेसोगाढे पण्णत्ते, उक्कोसेण अणतपदेसिए असखेज्जपदेसोगाढे पण्णत्ते। तत्थ ण जे से जुम्मपदेसिए से जहण्णेण छप्पदेसिए छप्पदेसोगाढे पण्णत्ते, उक्कोसेण अणतपदेसिए असखेज्जपदेसोगाढे पण्णत्ते।
तत्थ ण जे से घणतसे से दुविहे पण्णत्ते, त जहा--ओयपदेसिए य, जुम्मपदेसिए य। तत्थ ण जे से ओयपदेसिए से जहण्णेण पणतीसपदेसिए पणतीसपदेसोगाढे, उक्कोसेण अणतपदेसिए असखेज्जपदेसोगाढे[1]। तत्थ ण जे से जुम्मपदेसिए से जहण्णेण चउप्पदेसिए चउप्पदेसोगाढे पण्णत्ते, उक्कोसेण अणतपदेसिए असखेज्जपदेसोगाढे[2] ॥

५३. चउरसे ण भंते! सठाणे कतिपदेसिए--पुच्छा।
गोयमा! चउरसे संठाणे दुविहे पण्णत्ते,[3] °त जहा--घणचउरसे य, पतरचउरसे य।
तत्थ ण जे से पतरचउरसे से दुविहे पण्णत्ते, त जहा--ओयपदेसिए य, जुम्मपदेसिए य°। तत्थ ण जे से ओयपदेसिए से जहण्णेण नवपदेसिए नवपदेसोगाढे पण्णत्ते, उक्कोसेण अणतपदेसिए असखेज्जपदेसोगाढे पण्णत्ते। तत्थ ण जे से जुम्मपदेसिए से जहण्णेण चउपदेसिए चउपदेसोगाढे पण्णत्ते, उक्कोसेण अणतपदेसिए असखेज्जपदेसोगाढे[4]।
तत्थ ण जे से घणचउरसे से दुविहे पण्णत्ते, त जहा--ओयपदेसिए य, जुम्मपदेसिए य। तत्थ ण जे से ओयपदेसिए से जहण्णेण सत्तावीसइपदेसिए सत्तावीसइपदेसोगाढे, उक्कोसेण अणतपदेसिए असखेज्जपदेसोगाढे[5]। तत्थ ण जे से

---

१. त चेव (अ, ख, ता, ब, म, स)।
२. त चेव (अ, ख, ब, म, स), एव चेव (ता)।
३ स० पा०--भेदो जहेव वट्टस्स जाव तत्थ।
४ त चेव (अ, क, ख, ता, ब, म, स)।
५ तहेव (अ, क, ख, ता, ब, म, स)।

जुम्मपदेसिए से जहण्णेण अट्ठपदेसिए अट्ठपदेसोगाढे पण्णत्ते, उक्कोसेण अणत-पदेसिए असखेज्जपदेसोगाढे[1] ॥

५४ आयते ण भते ! सठाणे कतिपदेसिए कतिपदेसोगाढे पण्णत्ते ?
गोयमा ! आयते ण सठाणे तिविहे पण्णत्ते, त जहा—सेढिआयते, पतरायते, घणायते ।
तत्थ ण जे से सेढिआयते से दुविहे पण्णत्ते, त जहा—ओयपदेसिए य, जुम्मपदे-सिए य । तत्थ ण जे से ओयपदेसिए से जहण्णेण तिपदेसिए तिपदेसोगाढे, उक्कोसेण अणतपदेसिए असखेज्जपदेसोगाढे[2] । तत्थ ण जे से जुम्मपदेसिए से जहण्णेण दुपदेसिए दुपदेसोगाढे, उक्कोसेण अणतपदेसिए असखेज्जपदेसोगाढे[3] ।
तत्थ ण जे से पतरायते से दुविहे पण्णत्ते, त जहा—ओयपदेसिए य जुम्मपदे-सिए य । तत्थ ण जे से ओयपदेसिए से जहण्णेण पण्णरसपदेसिए पण्णरसपदे-सोगाढे, उक्कोसेण 'अणतपदेसिए असखेज्जपदेसोगाढे'[4] । तत्थ ण जे से जुम्मप-देसिए से जहण्णेण छप्पदेसिए छप्पदेसोगाढे, उक्कोसेणं 'अणतपदेसिए असखे-ज्जपदेसोगाढे'[5] ।
तत्थ ण जे से घणायते से दुविहे पण्णत्ते, त जहा—ओयपदेसिए य, जुम्मपदेसिए य । तत्थ ण जे से ओयपदेसिए से जहण्णेण पणयालीसपदेसिए पणयालीसपदेसो-गाढे, उक्कोसेण 'अणतपदेसिए असखेज्जपदेसोगाढे'[6] । तत्थ ण जे से जुम्मपदे-सिए से जहण्णेण वारसपदेसिए वारसपदेसोगाढे, उक्कोसेण 'अणंतपदेसिए असखेज्जपदेसोगाढे'[7] ॥

५५. परिमडले ण भते ! सठाणे कतिपदेसिए—पुच्छा ।
गोयमा ! परिमडले ण सठाणे दुविहे पण्णत्ते, त जहा—घणपरिमंडले य, पतरपरिमंडले य ।
तत्थ णं जे से पतरपरिमडले से जहण्णेण वीसइपदेसिए वीसइपदेसोगाढे, उक्कोसेण अणतपदेसिए असखेज्जपदेसोगाढे[8] ।
तत्थ णं जे से घणपरिमडले से जहण्णेण चत्तालीसइपदेसिए चत्तालीसइपदेसो-गाढे पण्णत्ते, उक्कोसेण अणतपदेसिए असखेज्जपदेसोगाढे पण्णत्ते ॥

संठाणाणं कडजुम्मादि-पदं

५६ परिमडले ण भते ! सठाणे दव्वट्ठयाए किं कडजुम्मे ? तेओए ? दावरजुम्मे[9] ? कलिओए ?

---

१. तहेव (अ, क, ख, ता, व, म, स) ।
२ त चेव (अ, क, ख, ता, व, म, स) ।
३ तहेव (अ, क, ख, ता व, म, स) ।
४,५. अणत तहेव (अ, क, ख, ता, व, म, स) ।
६,७. अणत तहेव (अ, क, ख, ता, व, म, स) ।
८ तहेव (अ, क, ख, ता, म, स) ।
९ वादरजुम्मे (अ, क, ख, ता म) सर्वत्र ।

गोयमा ! नो कडजुम्मे, नो तेयोए, नो दावरजुम्मे, कलियोए[1] ।।

५७. वट्टे ण भते ! सठाणे दव्वट्ठयाए० ? एव चेव । एव जाव आयते ।।

५८ परिमडला ण भते ! सठाणा दव्वट्ठयाए कि कडजुम्मा, तेयोया—पुच्छा ।
गोयमा ! ओघादेसेण सिय कडजुम्मा, सिय तेओगा, सिय दावरजुम्मा, सिय कलियोगा, विहाणादेसेण नो कडजुम्मा, नो तेओगा, नो दावरजुम्मा, कलियोगा । एव जाव आयता ।।

५९ परिमडले ण भते ! सठाणे पएसट्ठयाए कि कडजुम्मे—पुच्छा ।
गोयमा ! सिय कडजुम्मे, सिय तेयोगे, सिय दावरजुम्मे, सिय कलियोगे । एव जाव आयते ।।

६० परिमडला ण भते ! सठाणा पदेसट्ठयाए कि कडजुम्मा—पुच्छा ।
गोयमा ! ओघादेसेण सिय कडजुम्मा जाव सिय कलियोगा, विहाणादेसेण कडजुम्मा वि, तेओगा वि, दावरजुम्मा वि, कलियोगा वि । एव जाव आयता ।।

६१. परिमडले ण भते ! सठाणे कि कडजुम्मपदेसोगाढे जाव कलियोगपदेसोगाढे ?
गोयमा ! कडजुम्मपदेसोगाढे, नो तेयोगपदेसोगाढे, नो दावरजुम्मपदेसोगाढे, नो कलियोगपदेसोगाढे ।।

६२ वट्टे ण भते ! सठाणे किं कडजुम्मपदेसोगाढे—पुच्छा ।
गोयमा ! सिय कडजुम्मपदेसोगाढे, सिय तेयोगपदेसोगाढे, नो दावरजुम्मपदेसोगाढे, सिय कलियोगपदेसोगाढे ।।

६३ तसे ण भते ! सठाणे—पुच्छा ।
गोयमा ! सिय कडजुम्मपदेसोगाढे, सिय तेयोगपदेसोगाढे, सिय दावरजुम्मपदेसोगाढे, नो कलियोगपदेसोगाढे ।।

६४. चउरसे ण भते ! सठाणे० ? जहा वट्टे तहा चउरसे वि ।।

६५ आयते ण भते ! पुच्छा ।
गोयमा ! सिय कडजुम्मपदेसोगाढे जाव सिय कलियोगपदेसोगाढे ।।

६६. परिमडला ण भते ! सठाणा कि कडजुम्मपदेसोगाढा—पुच्छा ।
गोयमा ! ओघादेसेण वि विहाणादेसेण वि कडजुम्मपदेसोगाढा, नो तेयोगपदेसोगाढा, नो दावरजुम्मपदेसोगाढा, नो कलियोगपदेसोगाढा ।।

६७. वट्टा ण भते ! सठाणा किं कडजुम्मपदेसोगाढा—पुच्छा ।
गोयमा ! ओघादेसेण कडजुम्मपदेसोगाढा, नो तेयोगपदेसोगाढा, नो दावरजुम्मपदेसोगाढा, नो कलियोगपदेसोगाढा, विहाणादेसेण कडजुम्मपदेसोगाढा वि, तेयोगपदेसोगाढा वि, नो दावरजुम्मपदेसोगाढा, कलियोगपदेसोगाढा वि ।।

---

१. कलिओदे (ता) ।

६८ तसा ण भते ! संठाणा किं कडजुम्मपदेसोगाढा—पुच्छा ।
गोयमा ! ओघादेसेण कडजुम्मपदेसोगाढा, नो तेयगपदेसोगाढा, नो दावरजुम्मपदेसोगाढा, नो कलियोगपदेसोगाढा, विहाणादेसेण कडजुम्मपदेसोगाढा वि, तेयोगपदेसोगाढा वि, नो दावरजुम्मपदेसोगाढा, कलियोगपदेसोगाढा वि ।
चउरसा जहा वट्टा ।।

६९. आयता ण भते ! सठाणा—पुच्छा ।
गोयमा ! ओघादेसेण कडजुम्मपदेसोगाढा, नो तेयोगपदेसोगाढा नो दावरजुम्मपदेसोगाढा, नो कलियोगपदेसोगाढा, विहाणादेसेण कडजुम्मपदेसोगाढा वि जाव कलियोगपदेसोगाढा वि ।।

७०. परिमडले ण भते ! सठाणे किं कडजुम्मसमयठितीए[1] ? तेयोगसमयठितीए ? दावरजुम्मसमयठितीए ? कलियोगसमयठितीए ?
गोयमा ! सिय कडजुम्मसमयठितीए जाव सिय कलियोगसमयठितीए । एवं जाव आयते ।।

७१ परिमडला ण भते ! सठाणा किं कडजुम्मसमयठितीया—पुच्छा ।
गोयमा ! ओघादेसेण सिय कडजुम्मसमयठितीया जाव सिय कलियोगसमयठितीया, विहाणादेसेण कडजुम्मसमययठितीया वि जाव कलियोगसमयठितीया वि । एव जाव आयता ।।

७२. परिमडले ण भते ! सठाणे कालवण्णपज्जवेहिं कि कडजुम्मे जाव कलियोगे ?
गोयमा ! सिय कडजुम्मे । एव एएण अभिलावेण जहेव ठितीए । एव नीलवण्णपज्जवेहिं[2] । एवं पचहिं वण्णेहिं, दोहिं गंधेहि, पचहि रसेहि, अट्ठहि फासेहिं जाव लुक्खफासपज्जवेहिं ।।

सेढि-पद

७३. सेढीओ णं भते ! दव्वट्ठयाए किं सखेज्जाओ ? असखेज्जाओ ? अणंताओ ?
गोयमा ! नो सखेज्जाओ, नो असखेज्जाओ, अणताओ ।।

७४. पाईणपडीणायताओ[3] ण भते ! सेढीओ दव्वट्ठयाए किं संखेज्जाओ० ? एव चेव । एव दाहिणुत्तरायताओ वि । एव उड्ढमहायताओ वि ।।

७५. लोगागाससेढीओ ण भते ! दव्वट्ठयाए किं सखेज्जाओ ? असंखेज्जाओ ? अणताओ ?
गोयमा ! नो सखेज्जाओ, असखेज्जाओ, नो अणताओ ।।

७६ पाईणपडीणायताओ णं भते ! लोगागाससेढीओ दव्वट्ठयाए किं संखेज्जाओ० ? एव चेव । एव दाहिणुत्तरायताओ वि । एवं उड्ढमहायताओ वि ।।

---

१ °ट्ठितिए (अ, व, म) ।
२. नीलावण्ण °(क, ख, व) ।
३ पादीण° (ख), पातीणपडिणताओ (ता) ।

७७ अलोगागाससेढीओ ण भंते ! दव्वट्ठयाए किं संखेज्जाओ ? असंखेज्जाओ ? अणंताओ ?"[1]
गोयमा ! नो संखेज्जाओ, नो असंखेज्जाओ, अणंताओ। एवं पाईणपडीणायताओ वि। एवं दाहिणुत्तरायताओ वि। एवं उड्ढमहायताओ वि ॥

७८ सेढीओ ण भंते ! पएसट्ठयाए किं संखेज्जाओ० ? जहा दव्वट्ठयाए तहा पएसट्ठयाए वि जाव[2] उड्ढमहायताओ वि। सव्वाओ अणंताओ ॥

७९ लोगागाससेढीओ ण भंते ! पएसट्ठयाए किं संखेज्जाओ—पुच्छा।
गोयमा ! सिय संखेज्जाओ, सिय असंखेज्जाओ, नो अणंताओ। एवं पाईणपडीणायताओ वि। दाहिणुत्तरायताओ वि एवं चेव। उड्ढमहायताओ[3] नो संखेज्जाओ, असंखेज्जाओ, नो अणंताओ ॥

८० अलोगागाससेढीओ ण भंते ! पदेसट्ठयाए—पुच्छा।
गोयमा ! सिय संखेज्जाओ, सिय असंखेज्जाओ, सिय अणंताओ ॥

८१ पाईणपडीणायताओ ण भंते ! अलोगागाससेढीओ—पुच्छा।
गोयमा ! नो संखेज्जाओ, नो असंखेज्जाओ, अणंताओ। एवं दाहिणुत्तरायताओ वि ॥

८२. उड्ढमहायताओ—पुच्छा।
गोयमा ! सिय संखेज्जाओ, सिय असंखेज्जाओ, सिय अणंताओ ॥

८३ सेढीओ ण भंते ! किं सादीयाओ सपज्जवसियाओ ? सादीयाओ अपज्जवसियाओ ? अणादीयाओ सपज्जवसियाओ ? अणादीयाओ अपज्जवसियाओ ?
गोयमा ! नो सादीयाओ सपज्जवसियाओ, नो सादीयाओ अपज्जवसियाओ, नो अणादीयाओ सपज्जवसियाओ, अणादीयाओ अपज्जवसियाओ। एवं जाव उड्ढमहायताओ ॥

८४ लोगागाससेढीओ ण भंते ! किं सादीयाओ सपज्जवसियाओ—पुच्छा।
गोयमा ! सादीयाओ सपज्जवसियाओ, नो सादीयाओ अपज्जवसियाओ, नो अणादीयाओ सपज्जवसियाओ, नो अणादीयाओ अपज्जवसियाओ। एवं जाव उड्ढमहायताओ ॥

८५ अलोगागाससेढीओ ण भंते ! किं सादीयाओ सपज्जवसियाओ—पुच्छा।
गोयमा ! सिय सादीयाओ सपज्जवसियाओ, सिय सादीयाओ अपज्जवसियाओ, सिय अणादीयाओ सपज्जवसियाओ, सिय अणादीयाओ अपज्जवसियाओ। पाईणपडीणायताओ दाहिणुत्तरायताओ य एवं चेव, नवरं—नो सादीयाओ

---

१ पुच्छा (क, ता, व, म)।
२. एवं जाव (क, व)।
३. ०ताओ वि (अ, स)।

सपज्जवसियाओ, सिय सादीयाओ अपज्जवसियाओ । सेसं त चेव । उड्ढमहायताओ जहा ओहियाओ तहेव चउभगो ॥

८६. सेढीओ णं भते ! दव्वट्ठयाए किं कडजुम्माओ, तेओयाओ—पुच्छा ।
गोयमा ! कडजुम्माओ, नो तेओयाओ, नो दावरजुम्माओ, नो कलियोगाओ । एव जाव उड्ढमहायताओ । लोगागाससेढीओ एव चेव । एव अलोगागाससेढीओ वि ॥

८७ सेढीओ णं भते ! पदेसट्ठयाए किं कडजुम्माओ ०? एव चेव । एव जाव उड्ढमहायताओ ॥

८८ लोगागाससेढीओ ण भते ! पदेसट्ठयाए—पुच्छा ॥
गोयमा ! सिय कडजुम्माओ, नो तेओयाओ, सिय दावरजुम्माओ, नो कलियोगाओ । एव पाईणपडीणायताओ वि, दाहिणुत्तरायताओ वि ॥

८६. उड्ढमहायताओ ण भते ! पदेसट्ठयाए—पुच्छा ।
गोयमा ! कडजुम्माओ, नो तेयोगाओ, नो दावरजुम्माओ, नो कलियोगाओ ॥

६०. अलोगागाससेढीओ ण भते ! पदेसट्ठयाए—पुच्छा ।
गोयमा ! सिय कडजुम्माओ जाव सिय कलियोगाओ । एव पाईणपडीणायताओ वि । एव दाहिणुत्तरायताओ वि । उड्ढमहायताओ वि एव चेव, नवर—नो कलियोगाओ । सेसं त चेव ॥

६१. कति ण भंते ! सेढीओ पण्णत्ताओ ?
गोयमा ! सत्त सेढीओ पण्णत्ताओ, त जहा—उज्जुआयता, एगओवका, दुहओवका, एगओखहा, दुहओखहा, चक्कवाला, अद्धचक्कवाला ॥

अणुसेढि-विसेढि-गति-पद

६२. परमाणुपोग्गलाण[1] भते ! कि अणुसेढि गती पवत्तति ? विसेढि गती पवत्तति ?
गोयमा ! अणुसेढि गती पवत्तति, नो विसेढि गती पवत्तति ॥

६३. दुपएसियाण भते ! खधाण अणुसेढि गती पवत्तति ? विसेढि गती पवत्तति ?
एव चेव । एव जाव अणतपदेसियाण खधाण ॥

६४. नेरइयाणं भते ! किं अणुसेढि गती पवत्तति ? विसेढि गती पवत्तति ? एव चेव । एव जाव वेमाणियाण ॥

निरयावास-पद

६५. इमीसे ण भते ! रयणप्पभाए पुढवीए केवतिया निरयावाससयसहस्सा पण्णत्ता ?

---

१. ०पुग्गलाण (अ) ।

गोयमा ! तीस निरयावाससयसहस्सा पण्णत्ता, एवं जहा पढमसते पंचमुद्देसए जाव[1] अणुत्तरविमाण[2] त्ति ॥

गणिपिडय-पद

९६. कतिविहे णं भंते ! गणिपिडए पण्णत्ते ?
गोयमा ! दुवालसंगे गणिपिडए पण्णत्ते, तं जहा—आयारो जाव[3] दिट्ठिवाओ ॥

९७ से किं तं आयारो ? आयारे णं समणाणं निग्गंथाणं आयार-गोयर-विणय-वेणइय-सिक्खा-भासा-अभासा-चरण-करण-जाया-माया-वित्तीओ आघविज्जंति, एवं अंगपरूवणा भाणियव्वा जहा नंदीए जाव[4]—

सुत्तत्थो खलु पढमो, बीओ निज्जुत्तिमीसओ भणिओ ।
तइओ य निरवसेसो, एस विही होइ अणुओगे ॥१॥

अप्पाबहुय-पदं

९८. एएसि णं भंते ! नेरइयाणं जाव देवाणं सिद्धाण य पंचगतिसमासेणं कयरे कयरेहिंतो [5]•अप्पा वा ? बहुया वा ? तुल्ला वा ? विसेसाहिया वा ?०
गोयमा ! अप्पाबहुयं जहा[6] बहुवत्तव्वयाए, अट्ठगतिसमासप्पाबहुगं[7] च ॥

९९. एएसि णं भंते ! सइंदियाणं, एगिंदियाणं जाव अणिंदियाण य कयरे कयरेहिंतो अप्पा वा ? बहुया वा ? तुल्ला वा ? विसेसाहिया वा ? एयं पि जहा बहुवत्तव्वयाए तहेव ओहियं पयं भाणियव्वं, सकाइयअप्पाबहुगं[8] तहेव ओहियं भाणियव्वं[9] ॥

१००. एएसि णं भंते ! जीवाणं पोग्गलाणं[10] •अद्धासमयाणं सव्वदव्वाणं सव्वपदेसाणं० सव्वपज्जवाण य कयरे कयरेहिंतो अप्पा वा ? बहुया वा ? तुल्ला वा ? विसेसाहिया वा ? जहा बहुवत्तव्वयाए ॥

१०१ एएसि णं भंते ! जीवाणं, आउयस्स कम्मस्स बंधगाणं अबंधगाण ? जहा बहुवत्तव्वयाए जाव[11] आउयस्स कम्मस्स अबंधगा विसेसाहिया ॥

१०२ सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति ॥

———

१ भ० १।२१२-२१५ ।
२ एगा अणु० (अ) ।
३ भ० २०।७५ ।
४ नंदी सू० ८१-१२७ ।
५. स० पा०—पुच्छा ।
६. प० ३ ।
७. ०समाअप्पा० (ता, व, म) ।
८ सकायअप्पा० (व) ।
९ प० ३ ।
१० स० पा०—पोग्गलाणं जाव सव्वपज्जवाणं । अस्य पूर्ति प्रज्ञापनाया तृतीयपदात् कृता, वृत्तौ किञ्चिद्भेदो लभ्यते—इह यावत्करणादिदं दृश्य—'समयाणं दव्वाणं पएसाणं' ति ।
११ प० ३ ।

चउत्थो उद्देसो

जुम्म-पदं

१०३ कति ण भते ! जुम्मा पण्णत्ता ?
गोयमा ! चत्तारि जुम्मा पण्णत्ता, त जहा—कडजुम्मे जाव[1] कलियोगे ।।

१०४ से केणट्ठेण भते ! एव वुच्चइ—चत्तारि जुम्मा पण्णत्ता—कडजुम्मे जाव कलियोगे ? एवं जहा अट्ठारसमसते चउत्थे उद्देसए तहेव जाव[2] से तेणट्ठेण गोयमा ! एव वुच्चइ ।।

१०५ नेरइयाण भते ! कति जुम्मा पण्णत्ता ?
गोयमा ! चत्तारि जुम्मा पण्णत्ता, त जहा—कडजुम्मे जाव कलियोगे ।।

१०६ से केणट्ठेण भते ! एव वुच्चइ—नेरइयाण चत्तारि जुम्मा पण्णत्ता, त जहा—कडजुम्मे ? अट्ठो तहेव । एव जाव वाउकाइयाण ।।

१०७ वणस्सइकाइयाण भते !—पुच्छा ।
गोयमा ! वणस्सइकाइया सिय कडजुम्मा, सिय तेयोगा, सिय दावरजुम्मा, सिय कलियोगा ।।

१०८. से केणट्ठेण भते ! एवं वुच्चइ—वणस्सइकाइया जाव कलियोगा ?
गोयमा ! उववाय पडुच्च । से तेणट्ठेण त चेव । बेदियाण जहा नेरइयाण । एव जाव वेमाणियाणं । सिद्धाण जहा वणस्सइकाइयाण ।।

१०९ कतिविहा ण भते ! सव्वदव्वा पण्णत्ता ?
गोयमा ! छव्विहा सव्वदव्वा पण्णत्ता, त जहा—धम्मत्थिकाए, अधम्मत्थिकाए जाव अद्धासमए ।।

११० धम्मत्थिकाए णं भते ! दव्वट्ठयाए किं कडजुम्मे जाव कलियोगे ?
गोयमा ! नो कडजुम्मे, नो तेयोगे, नो दावरजुम्मे, कलियोगे । एवं अधम्मत्थिकाए वि । एव आगासत्थिकाए वि ।।

१११. जीवत्थिकाए ण भते !—पुच्छा ।
गोयमा ! कडजुम्मे, नो तेयोगे, नो दावरजुम्मे, नो कलियोगे ।।

११२ पोग्गलत्थिकाए ण भते !—पुच्छा ।
गोयमा ! सिय कडजुम्मे जाव सिय कलियोगे । अद्धासमए जहा जीवत्थिकाए ।।

११३ धम्मत्थिकाए णं भते ! पदेसट्ठयाए किं कडजुम्मे—पुच्छा ।
गोयमा ! कडजुम्मे, नो तेयोगे, नो दावरजुम्मे, नो कलियोगे । एव जाव अद्धासमए ।।

---

१. भ० २५।५४ ।   २ भ० १८।९० ।

११४ एएसि ण भते ! धम्मत्थिकाय-अधम्मत्थिकाय जाव अद्धासमयाण दव्वट्ठ-याए ०? एएसि ण अप्पाबहुग जहा[1] बहुवत्तव्वयाए तहेव निरवसेस ।।

११५ धम्मत्थिकाए ण भते ! कि ओगाढे ? अणोगाढे ?
गोयमा ! ओगाढे, नो अणोगाढे ।।

११६ जइ ओगाढे कि सखेज्जपदेसोगाढे ? असखेज्जपदेसोगाढे ? अणतपदेसोगाढे ?
गोयमा ! नो सखेज्जपदेसोगाढे, असखेज्जपदेसोगाढे, नो अणतपदेसोगाढे ।।

११७ जइ असखेज्जपदेसोगाढे कि कडजुम्मपदेसोगाढे—पुच्छा ।
गोयमा ! कडजुम्मपदेसोगाढे, नो तेयोगपदेसोगाढे, नो दावरजुम्मपदेसोगाढे, नो कलियोगपदेसोगाढे । एव अधम्मत्थिकाए वि । एव आगासत्थिकाए वि । जीवत्थिकाए, पोग्गलत्थिकाए, अद्धासमए एव चेव ।।

११८ इमा ण भते ! रयणप्पभा पुढवी कि ओगाढा ? अणोगाढा ? जहेव धम्म-त्थिकाए । एव जाव अहेसत्तमा । सोहम्मे एव चेव । एव जाव ईसिपब्भारा पुढवी ।।

११९ जीवे ण भते ! दव्वट्ठयाए कि कडजुम्मे—पुच्छा ।
गोयमा ! नो कडजुम्मे, नो तेयोगे, नो दावरजुम्मे, कलियोगे । एव नेरइए वि । एव जाव सिद्धे ।।

१२० जीवा ण भते ! दव्वट्ठयाए कि कडजुम्मा—पुच्छा ।
गोयमा ! ओघादेसेण कडजुम्मा, नो तेयोगा, नो दावरजुम्मा, नो कलियोगा; विहाणादेसेण नो कडजुम्मा, नो तेयोगा, नो दावरजुम्मा, कलियोगा ।।

१२१ नेरइया ण भते ! दव्वट्ठयाए—पुच्छा ।
गोयमा ! ओघादेसेण सिय कडजुम्मा जाव सिय कलियोगा, विहाणादेसेण नो कडजुम्मा, नो तेयोगा, नो दावरजुम्मा, कलियोगा । एव जाव सिद्धा ।।

१२२ जीवे ण भते ! पदेसट्ठयाए कि कडजुम्मे—पुच्छा ।
गोयमा ! जीवपदेसे पडुच्च कडजुम्मे, नो तेयोगे, नो दावरजुम्मे, नो कलि-योगे । सरीरपदेसे पडुच्च सिय कडजुम्मे जाव सिय कलियोगे । एव जाव वेमाणिए ।।

१२३ सिद्धे ण भते ! पदेसट्ठयाए कि कडजुम्मे—पुच्छा ।
गोयमा ! कडजुम्मे, नो तेयोगे, नो दावरजुम्मे, नो कलियोगे ।।

१२४ जीवा ण भते ! पदेसट्ठयाए कि कडजुम्मा—पुच्छा ।
गोयमा ! जीवपदेसे पडुच्च ओघादेसेण वि विहाणादेसेण वि कडजुम्मा, नो तेयोगा, नो दावरजुम्मा, नो कलियोगा । सरीरपदेसे पडुच्च ओघादेसेण सिय

---

१. प० ३ ।

कडजुम्मा जाव सिय कलियोगा; विहाणादेसेण कडजुम्मा वि जाव कलियोगा वि। एव नेरइया वि। एव जाव वेमाणिया ॥

१२५ सिद्धा ण भते!—पुच्छा।
गोयमा! ओघादेसेण वि विहाणादेसेण वि कडजुम्मा, नो तेयोगा, नो दावरजुम्मा, नो कलियोगा ॥

१२६. जीवे ण भते! कि कडजुम्मपदेसोगाढे—पुच्छा।
गोयमा! सिय कडजुम्मपदेसोगाढे जाव सिय कलियोगपदेसोगाढे। एवं जाव सिद्धे ॥

१२७. जीवा ण भते! किं कडजुम्मपदेसोगाढा—पुच्छा।
गोयमा! ओघादेसेण कडजुम्मपदेसोगाढा, नो तेयोगपदेसोगाढा, नो दावरजुम्मपदेसोगाढा, नो कलियोगपदेसोगाढा; विहाणादेसेण कडजुम्मपदेसोगाढा वि जाव कलियोगपदेसोगाढा वि ॥

१२८. नेरइयाण—पुच्छा।
गोयमा! ओघादेसेण सिय कडजुम्मपदेसोगाढा जाव सिय कलियोगपदेसोगाढा, विहाणादेसेण कडजुम्मपदेसोगाढा वि जाव कलियोगपदेसोगाढा वि। एव 'एगिदिय-सिद्धवज्जा सव्वे वि'[1]। सिद्धा एगिदिया य जहा जीवा ॥

१२९. जीवे ण भते! कि कडजुम्मसमयट्ठितीए—पुच्छा।
गोयमा! कडजुम्मसमयट्ठितीए, नो तेयोगसमयट्ठितीए, नो दावरजुम्मसमयट्ठितीए, नो कलियोगसमयट्ठितीए ॥

१३० नेरइए ण भते!—पुच्छा।
गोयमा! सिय कडजुम्मसमयट्ठितीए जाव सिय कलियोगसमयट्ठितीए। एव जाव वेमाणिए। सिद्धे जहा जीवे ॥

१३१. जीवा ण भते!—पुच्छा।
गोयमा! ओघादेसेण वि विहाणादेसेण वि कडजुम्मसमयट्ठितीया, नो तेयोगसमयट्ठितीया, नो दावरजम्मसमयट्ठितीया, नो कलियोगसमयट्ठितीया ॥

१३२. नेरइयाण—पुच्छा।
गोयमा! ओघादेसेण सिय कडजुम्मसमयट्ठितीया जाव सिय कलियोगसमयट्ठितीया वि, विहाणादेसेण कडजुम्मसमयट्ठितीया वि जाव कलियोगसमयट्ठितीया वि। एव जाव वेमाणिया। सिद्धा जहा जीवा ॥

१३३ जीवे ण भते! कालावण्णपज्जवेहिं किं कडजुम्मे—पुच्छा।
गोयमा! जीवपदेसे पडुच्च नो कडजुम्मे जाव नो कलियोगे। सरीरपदेसे

---

१. एगिंदियवज्जा जाव (क, ता, व)।

पडुच्च सिय कडजुम्मे जाव सिय कलियोगे। एव जाव वेमाणिए। सिद्धो ण चेव पुच्छिज्जति ॥

१३४. जीवा ण भते ! कालावण्णपज्जवेहि—पुच्छा।
गोयमा ! जीवपदेसे पडुच्च ओघादेसेण वि विहाणादेसेण वि नो कडजुम्मा जाव नो कलियोगा। सरीरपदेसे पडुच्च ओघादेसेण सिय कडजुम्मा जाव सिय कलियोगा, विहाणादेसेण कडजुम्मा वि जाव कलियोगा वि। एवं जाव वेमाणिया। एव नीलावण्णपज्जवेहि दडओ भाणियव्वो एगत्तपुहत्तेण। एव जाव लुक्खफासपज्जवेहि[1] ॥

१३५ जीवे ण भते ! आभिणिवोहियनाणपज्जवेहि कि कडजुम्मे - पुच्छा।
गोयमा ! सिय कडजुम्मे जाव सिय कलियोगे। एव एगिदियवज्ज जाव वेमाणिए ॥

१३६ जीवा ण भते ! आभिणिवोहियनाणपज्जवेहि—पुच्छा।
गोयमा ! ओघादेसेण सिय कडजुम्मा जाव सिय कलियोगा, विहाणादेसेण कडजुम्मा वि जाव कलियोगा वि। एव एगिदियवज्ज जाव वेमाणिया। एव सुयनाणपज्जवेहि[2] वि। ओहिनाणपज्जवेहि वि एव चेव, नवर—विगलिदियाण नत्थि ओहिनाण। मणपज्जवनाण पि एव चेव, नवर—जीवाण मणुस्साण य, सेसाण नत्थि ॥

१३७ जीवे ण भंते ! केवलनाणपज्जवेहि कि कडजुम्मे—पुच्छा।
गोयमा ! कडजुम्मे, नो तेयोगे, नो दावरजुम्मे, नो कलियोगे। एव मणुस्से वि। एव सिद्धे वि ॥

१३८ जीवा ण भते ! केवलनाणपज्जवेहि कि कडजुम्मा—पुच्छा।
गोयमा ! ओघादेसेण वि विहाणादेसेण वि कडजुम्मा, नो तेयोगा, नो दावरजुम्मा, नो कलियोगा। एव मणुस्सा वि। एव सिद्धा वि ॥

१३९ जीवे ण भते ! मइअण्णाणपज्जवेहि कि कडजुम्मे० ? जहा आभिणिबोहियनाणपज्जवेहि तहेव दो दडगा। एव सुयअण्णाणपज्जवेहि वि। एव विभगनाणपज्जवेहि वि। चक्खुदसण-अचक्खुदसण-ओहिदसणपज्जवेहि वि एव चेव, नवर—जस्स ज अत्थि त भाणियव्व। केवलदसणपज्जवेहि जहा केवलनाणपज्जवेहि ॥

सरीर-पदं

१४० कति ण भते ! सरीरगा पण्णत्ता ?
गोयमा ! पच सरीरगा पण्णत्ता, त जहा—ओरालिए जाव कम्मए। एत्थ सरीरगपद निरवसेस भाणियव्व जहा[3] पण्णवणाए ॥

---

१ लुक्खाफास० (ता)।
२. ०पज्जवेहिं (ता, स)।
३. प० १२।

सेय-निरेय-पदं

१४१. जीवा ण भते ! किं सेया ? निरेया ?
गोयमा ! जीवा सेया वि, निरेया वि ।।

१४२ से केणट्ठेण भते ! एव वुच्चइ—जीवा सेया वि, निरेया वि ?
गोयमा ! जीवा दुविहा पण्णत्ता, त जहा—'ससारसमावण्णगा य, असंसारसमावण्णगा'[1] य । तत्थ ण जे ते असंसारसमावण्णगा ते ण सिद्धा । सिद्धा ण दुविहा पण्णत्ता, त जहा—अणतरसिद्धा य, परपरसिद्धा य । तत्थ ण जे ते परपरसिद्धा ते ण निरेया । तत्थ ण जे ते अणतरसिद्धा ते ण सेया ।।

१४३ ते ण भते ! किं देसेया ? सव्वेया ?
गोयमा ! नो देसेया, सव्वेया । तत्थ ण जे ते ससारसमावण्णगा ते दुविहा पण्णत्ता, त जहा—सेलेसिपडिवण्णगा य, असेलेसिपडिवण्णगा य । तत्थ ण जे ते सेलोसिपडिवण्णगा ते ण निरेया, तत्थ ण जे ते असेलेसीपडिवण्णगा ते ण सेया ।।

१४४. ते ण भते ! कि देसेया ? सव्वेया ?
गोयमा ! देसेया वि, सव्वेया वि । से तेणट्ठेण[2] •गोयमा ! एव वुच्चइ—जीवा सेया वि,° निरेया वि ।।

१४५ नेरइया ण भते ! कि देसेया ? सव्वेया ?
गोयमा ! देसेया वि, सव्वेया वि ।।

१४६. से केणट्ठेण जाव सव्वेया वि ?
गोयमा ! नेरइया दुविहा पण्णत्ता, त जहा—विग्गहगतिसमावण्णगा य, अविग्गहगतिसमावण्णगा य । तत्थ ण जे ते विग्गहगतिसमावण्णगा ते ण सव्वेया, तत्थ ण जे ते अविग्गहगतिसमावण्णगा ते णं देसेया । से तेणट्ठेण जाव सव्वेया वि । एव जाव वेमाणिया ।।

पोग्गल-पदं

१४७. परमाणुपोग्गला ण भते ! कि सखेज्जा ? असखेज्जा ? अणता ?
गोयमा ! नो सखेज्जा, नो असखेज्जा, अणता । एव जाव अणतपदेसिया खधा ।।

१४८. एगपदेसोगाढा ण भते ! पोग्गला किं सखेज्जा ? असखेज्जा ? अणता ? एव चेव । एव जाव असखेज्जपदेसोगाढा ।।

---

१. असंसारसमावण्णगा य ससार° (ता) ।   २. स० पा०—तेणट्ठेण जाव निरेया ।

१४९ एगसमयट्ठितीया ण भते ! पोग्गला कि सखेज्जा० ? एव चेव। एव जाव असखेज्जसमयट्ठितीया ।।

१५०. एगगुणकालगा ण भते ! पोग्गला कि सखेज्जा० ? एव चेव । एव जाव अणत-गुणकालगा। एव अवसेसा वि वण्णगधरसफासा नेयव्वा जाव अणतगुण-लुक्ख त्ति ।।

१५१ एएसि ण भते ! परमाणुपोग्गलाण दुपदेसियाण य खधाण दव्वट्ठयाए कयरे कयरेहितो वहुया[1] ?
गोयमा ! दुपदेसिएहितो खधेहितो परमाणुपोग्गला दव्वट्ठयाए वहुया ।।

१५२ एएसि ण भते ! दुपदेसियाण तिपदेसियाण य खधाण दव्वट्ठयाए कयरे कयरेहितो वहुया ?
गोयमा ! तिपदेसिएहिंतो खधेहितो दुपदेसिया खधा दव्वट्ठयाए बहुया । एव एएणं गमएण जाव दसपदेसिएहिंतो खधेहिंतो नवपदेसिया खधा दव्वट्ठयाए वहुया ।।

१५३ एएसि ण भते ! दसपदेसियाण—पुच्छा ।
गोयमा ! दसपदेसिएहिंतो खधेहिंतो सखेज्जपदेसिया खधा दव्वट्ठयाए वहुया ।।

१५४ एएसि ण भते ! सखेज्जपदेसियाण— पुच्छा ।
गोयमा ! सखेज्जपदेसिएहितो खधेहितो असखेज्जपदेसिया खधा दव्वट्ठयाए वहुया ।।

१५५ एएसि ण भते ! असखेज्जपदेसियाण—पुच्छा ।
गोयमा ! अणतपदेसिएहितो खधेहितो असखेज्जपदेसिया खधा दव्वट्ठयाए वहुया ।।

१५६ एएसि ण भते ! परमाणुपोग्गलाण दुपदेसियाण य खधाण पदेसट्ठयाए कयरे कयरेहितो वहुया ?
गोयमा ! परमाणुपोग्गलेहितो दुपदेसिया खधा पदेसट्ठयाए बहुया । एव एएण गमएण जाव नवपदेसिएहिंतो खधेहितो दसपदेसिया खधा पदेसट्ठयाए बहुया । एव सव्वत्थ[2] पुच्छियव्वं । दसपदेसिएहिंतो खधेहितो सखेज्जपदेसिया खधा पदेसट्ठयाए वहुया । सखेज्जपदेसिएहितो खधेहितो असखेज्जपदेसिया खधा पदेसट्ठयाए वहुया ।।

१५७ एएसि ण भते ! असंखेज्जपदेसियाण—पुच्छा ।
गोयमा ! अणतपदेसिएहिंतो खधेहिंतो असखेज्जपदेसिया खधा पदेसट्ठयाए वहुया ।।

---

१ अप्पा वा वहुया वा (स) ।   २. सव्वत्थ वि (म) ।

१५८. एएसि ण भते ! एगपदेसोगाढाण दुपदेसोगाढाण य पोग्गलाण दव्वट्ठयाए कयरे कयरेहितो[1] विसेसाहिया[2] ?
गोयमा ! दुपदेसोगाढेहितो पोग्गलेहितो एगपदेसोगाढा पोग्गला दव्वट्ठयाए विसेसाहिया । एव एएणं गमएण तिपदेसोगाढेहितो पोग्गलेहितो दुपदेसोगाढा पोग्गला दव्वट्ठयाए विसेसाहिया जाव दसपदेसोगाढेहितो पोग्गलेहितो नवपदेसोगाढा पोग्गला दव्वट्ठयाए विसेसाहिया । दसपदेसोगाढेहितो पोग्गलेहितो सखेज्जपदेसोगाढा पोग्गला दव्वट्ठयाए वहुया । सखेज्जपदेसोगाढेहितो पोग्गलेहितो असखेज्जपदेसोगाढा पोग्गला दव्वट्ठयाए वहुया । पुच्छा सव्वत्थ भाणियव्वा ।।

१५९ एएसि ण भते ! एगपदेसोगाढाण दुपदेसोगाढाण य पोग्गलाण पदेसट्ठयाए कयरे कयरेहितो विसेसाहिया[3] ?
गोयमा ! एगपदेसोगाढेहितो पोग्गलेहितो दुपदेसोगाढा पोग्गला पदेसट्ठयाए विसेसाहिया । एव जाव नवपदेसोगाढेहितो पोग्गलेहितो दसपदेसोगाढा पोग्गला पदेसट्ठयाए विसेसाहिया । दसपदेसोगाढेहितो पोग्गलेहितो सखेज्जपदेसोगाढा पोग्गला पदेसट्ठयाए वहुया । सखेज्जपदेसोगाढेहितो पोग्गलेहितो असखेज्जपदेसोगाढा पोग्गला पदेसट्ठयाए वहुया ।।

१६० एएसि णं भते ! एगसमयट्ठितीयाण दुसमयट्ठितीयाण य पोग्गलाण दव्वट्ठयाए० ?
जहा ओगाहणाए वत्तव्वया एव ठितीए वि ।।

१६१ एएसि ण भते ! एगगुणकालगाण दुगुणकालगाण य पोग्गलाण दव्वट्ठयाए० ?
एएसि ण जहा परमाणुपोग्गलादीण तहेव वत्तव्वया निरवसेसा[4] । एव सव्वेसि वण्ण-गध-रसाण ।।

१६२ एएसि ण भते ! एगगुणकक्खडाण दुगुणकक्खडाण य पोग्गलाण दव्वट्ठयाए कयरे कयरेहितो विसेसाहिया[5] ?
गोयमा ! एगगुणकक्खडेहितो पोग्गलेहितो दुगुणकक्खडा पोग्गला दव्वट्ठयाए विसेसाहिया । एव जाव नवगुणकक्खडेहितो पोग्गलेहितो दसगुणकक्खडा पोग्गला दव्वट्ठयाए विसेसाहिया । दसगुणकक्खडेहितो पोग्गलेहितो सखेज्जगुणकक्खडा पोग्गला दव्वट्ठयाए वहुया । सखेज्जगुणकक्खडेहितो पोग्गलेहितो असखेज्जगुणकक्खडा पोग्गला दव्वट्ठयाए वहुया । असखेज्जगुणकक्खडेहितो पोग्गलेहितो अणतगुणकक्खडा पोग्गला दव्वट्ठयाए वहुया । एव पदेसट्ठयाए वि[6] । सव्वत्थ पुच्छा भाणियव्वा । जहा कक्खडा एव मउय-गरुय-लहुया वि । सीय-उसिण-निद्ध-लुक्खा जहा वण्णा ।

---

१. कयरेहितो जाव (ता, स) ।
२ विसेसाहिया वा (अ, क, ख, ता, व, म, स) ।
३. जाव विसेसाहिया वा (अ, ता, स) ।
४. निरवसेस (अ, ता) ।
५. जाव विसेसाहिया (ता) ।
६. × (अ) ।

१६३ एएसि ण भते ! परमाणुपोग्गलाण, सखेज्जपदेसियाण, असखेज्जपदेसियाण, अणतपदेसियाण य खधाण दव्वट्ठयाए, पदेसट्ठयाए, दव्वट्ठ-पदेसट्ठयाए कयरे कयरेहितो[1] •अप्पा वा ? वहुया वा ? तुल्ला वा ?° विसेसाहिया वा ?
गोयमा ! सव्वत्थोवा अणतपदेसिया खधा दव्वट्ठयाए, परमाणुपोग्गला दव्वट्ठयाए अणतगुणा, सखेज्जपदेसिया खधा दव्वट्ठयाए सखेज्जगुणा, असखेज्जपदेसिया खधा दव्वट्ठयाए असखेज्जगुणा। पदेसट्ठयाए—सव्वत्थोवा अणतपदेसिया खधा पदेसट्ठयाए, परमाणुपोग्गला अपदेसट्ठयाए अणतगुणा, सखेज्जपदेसिया खधा पदेसट्ठयाए सखेज्जगुणा, असखेज्जपदेसिया खधा पदेसट्ठयाए असखेज्जगुणा। दव्वट्ठ-पदेसट्ठयाए—सव्वत्थोवा अणतपदेसिया खधा दव्वट्ठयाए, 'ते चेव'[2] पदेसट्ठयाए अणतगुणा, परमाणुपोग्गला दव्वट्ठ-पदेसट्ठयाए अणतगुणा, सखेज्जपदेसिया खधा दव्वट्ठयाए सखेज्जगुणा, ते चेव पदेसट्ठयाए सखेज्जगुणा, असखेज्जपदेसिया खधा दव्वट्ठयाए असखेज्जगुणा, ते चेव पदेसट्ठयाए असखेज्जगुणा ॥

१६४ एएसि ण भते ! एगपदेसोगाढाण, सखेज्जपदेसोगाढाण, असखेज्जपदेसोगाढाण य पोग्गलाण दव्वट्ठयाए, पदेसट्ठयाए, दव्वट्ठ-पदेसट्ठयाए कयरे कयरेहितो[3] •अप्पा वा ? वहुया वा ? तुल्ला वा ?° विसेसाहिया वा ?
गोयमा ! सव्वत्थोवा एगपदेसोगाढा पोग्गला दव्वट्ठयाए, सखेज्जपदेसोगाढा पोग्गला दव्वट्ठयाए सखेज्जगुणा, असखेज्जपदेसोगाढा पोग्गला दव्वट्ठयाए असखेज्जगुणा। पदेसट्ठयाए—सव्वत्थोवा एगपदेसोगाढा पोग्गला अपदेसट्ठयाए, सखेज्जपदेसोगाढा पोग्गला पदेसट्ठयाए सखेज्जगुणा, असखेज्जपदेसोगाढा पोग्गला पदेसट्ठयाए असखेज्जगुणा। दव्वट्ठ-पदेसट्ठयाए— सव्वत्थोवा एगपदेसोगाढा पोग्गला दव्वट्ठ-अपदेसट्ठयाए, सखेज्जपदेसोगाढा पोग्गला दव्वट्ठयाए सखेज्जगुणा, ते चेव पदेसट्ठयाए सखेज्जगुणा। असखेज्जपदेसोगाढा पोग्गला दव्वट्ठयाए असखेज्जगुणा, ते चेव पदेसट्ठयाए असखेज्जगुणा ॥

१६५ एएसि ण भते ! एगसमयट्ठितीयाण, सखेज्जसमयट्ठितीयाण, असखेज्जसमयट्ठितीयाण य पोग्गलाण° ? जहा ओगाहणाए तहा ठितीए वि भाणियव्व अप्पावहुग ॥

१६६ एएसि ण भते ! एगगुणकालगाण, सखेज्जगुणकालगाण, असखेज्जगुणकालगाण, अणतगुणकालगाण य पोग्गलाण दव्वट्ठयाए, पदेसट्ठयाए, दव्वट्ठ-पदेसट्ठयाए कयरे कयरेहितो अप्पा वा ? वहुया वा ? तुल्ला वा ? विसेसाहिया वा ? एएसिं जहा परमाणुपोग्गलाण अप्पाबहुग तहा एएसिं पि अप्पाबहुग। एव सेसाण वि वण्ण-गध-रसाण ॥

---

१. स० पा०—कयरेहिंतो जाव विसेसाहिया।
२. तेच्चेव (ता)।
३. स० पा०—कयरेहिंतो जाव विसेसाहिया।

१६७ एएसि ण भते ! एगगुणकक्खडाण, सखेज्जगुणकक्खडाण, असखेज्जगुणकक्खडाण, अणतगुणकक्खडाण य पोग्गलाण दव्वट्ठयाए, पदेसट्ठयाए, दव्वट्ठ-पदेसट्ठयाए कयरे कयरेहिंतो[1] °अप्पा वा ? वहुया वा ? तुल्ला वा ?° विसेसाहिया वा ?

गोयमा ! सव्वत्थोवा एगगुणकक्खडा पोग्गला दव्वट्ठयाए, सखेज्जगुणकक्खडा पोग्गला दव्वट्ठयाए सखेज्जगुणा, असखेज्जगुणकक्खडा पोग्गला दव्वट्ठयाए असखेज्जगुणा, अणतगुणकक्खडा पोग्गला दव्वट्ठयाए अणतगुणा। पदेसट्ठयाए एव चेव, नवर—सखेज्जगुणकक्खडा पोग्गला पदेसट्ठयाए असखेज्जगुणा। सेस त चेव। दव्वट्ठ-पदेसट्ठयाए—सव्वत्थोवा एगगुणकक्खडा पोग्गला दव्वट्ठ-पदेसट्ठयाए। सखेज्जगुणकक्खडा पोग्गला दव्वट्ठयाए सखेज्जगुणा, ते चेव पदेसट्ठयाए सखेज्जगुणा। असखेज्जगुणकक्खडा पोग्गला दव्वट्ठयाए असखेज्जगुणा, ते चेव पदेसट्ठयाए असखेज्जगुणा। अणतगुणकक्खडा पोग्गला दव्वट्ठयाए अणतगुणा, ते चेव पदेसट्ठयाए अणतगुणा। एव मउय-गरुय-लहुयाण वि अप्पावहुय। सीय-उसिण-निद्ध-लुक्खाण तहा वण्णाण तहेव ॥

१६८. परमाणुपोग्गले ण भते ! दव्वट्ठयाए कि कडजुम्मे ? तेयोए ? दावरजुम्मे ? कलियोगे ?

गोयमा ! नो कडजुम्मे, नो तेयोगे, नो दावरजुम्मे, कलियोगे। एव जाव अणतपदेसिए खधे ॥

१६९ परमाणुपोग्गला ण भते ! दव्वट्ठयाए कि कडजुम्मा—पुच्छा।

गोयमा ! ओघादेसेण सिय कडजुम्मा जाव सिय कलियोगा, विहाणादेसेण नो कडजुम्मा, नो तेयोगा, नो दावरजुम्मा, कलियोगा। एव जाव अणतपदेसिया खधा ॥

१७० परमाणुपोग्गले ण भते ! पदेसट्ठयाए कि कडजुम्मे—पुच्छा।

गोयमा ! नो कडजुम्मे, नो तेयोगे, नो दावरजुम्मे, कलियोगे ॥

१७१. दुपदेसिय—पुच्छा।

गोयमा ! नो कडजुम्मे, नो तेयोगे, दावरजुम्मे, नो कलियोगे ॥

१७२. तिपदेसिए—पुच्छा।

गोयमा ! नो कडजुम्मे, तेयोगे, नो दावरजुम्मे, नो कलियोगे ॥

१७३. चउप्पदेसिए—पुच्छा।

गोयमा ! कडजुम्मे, नो तेयोगे, नो दावरजुम्मे, नो कलियोगे। पचपदेसिए जहा परमाणुपोग्गले। छप्पदेसिए जहा दुप्पदेसिए। सत्तपदेसिए जहा

---

१. स० पा०—कयरेहिंतो जाव विसेसाहिया।

तिपदेसिए। अट्ठपदेसिए जहा चउप्पदेसिए। नवपदेसिए जहा परमाणुपोग्गले। दसपदेसिए जहा दुप्पदेसिए ॥

१७४ संखेज्जपदेसिए ण भंते ! पोग्गले—पुच्छा।
गोयमा ! सिय कडजुम्मे जाव सिय कलियोगे। एव असखेज्जपदेसिए वि, अणतपदेसिए वि ॥

१७५. परमाणुपोग्गला ण भते ! पदेसट्ठयाए कि कडजुम्मा—पुच्छा।
गोयमा ! ओघादेसेण सिय कडजुम्मा जाव सिय कलियोगा, विहाणादेसेण नो कडजुम्मा, नो तेयोगा, नो दावरजुम्मा, कलियोगा ॥

१७६ दुप्पदेसिया णं—पुच्छा।
गोयमा ! ओघादेसेण सिय कडजुम्मा, नो तेयोगा, सिय दावरजुम्मा, नो कलियोगा, विहाणादेसेण नो कडजुम्मा, नो तेयोगा, दावरजुम्मा, नो कलियोगा ॥

१७७ तिपदेसिया ण—पुच्छा।
गोयमा ! ओघादेसेण सिय कडजुम्मा जाव सिय कलियोगा, विहाणादेसेण नो कडजुम्मा, तेयोगा, नो दावरजुम्मा, नो कलियोगा ॥

१७८ चउप्पदेसिया ण—पुच्छा।
गोयमा ! ओघादेसेण वि विहाणादेसेण वि कडजुम्मा, नो तेयोगा, नो दावरजुम्मा, नो कलियोगा। पचपदेसिया जहा परमाणुपोग्गला। छप्पदेसिया जहा दुप्पदेसिया। सत्तपदेसिया जहा तिपदेसिया। अट्ठपदेसिया जहा चउपदेसिया। नवपदेसिया जहा परमाणुपोग्गला। दसपदेसिया जहा दुपदेसिया ॥

१७९ सखेज्जपदेसिया ण—पुच्छा।
गोयमा ! ओघादेसेण सिय कडजुम्मा जाव सिय कलियोगा, विहाणादेसेण कडजुम्मा वि जाव कलियोगा वि। एव असखेज्जपदेसिया वि, अणतपदेसिया वि ॥

१८०. परमाणुपोग्गले ण भते ! किं कडजुम्मपदेसोगाढे—पुच्छा।
गोयमा ! नो कडजुम्मपदेसोगाढे, नो तेयोगपदेसोगाढे, नो दावरजुम्मपदेसोगाढे, कलियोगपदेसोगाढे ॥

१८१ दुपदेसिए ण—पुच्छा।
गोयमा ! नो कडजुम्मपदेसोगाढे, नो तेयोगपदेसोगाढे, सिय दावरजुम्मपदेसोगाढे, सिय कलियोगपदेसोगाढे ॥

१८२. तिपदेसिए ण—पुच्छा।
गोयमा ! नो कडजुम्मपदेसोगाढे, सिय तेयोगपदेसोगाढे, सिय दावरजुम्मपदेसोगाढे, सिय कलियोगपदेसोगाढे ॥

१८३. चउप्पदेसिए ण—पुच्छा।

गोयमा ! सिय कडजुम्मपदेसोगाढे जाव सिय कलियोगपदेसोगाढे । एवं जाव अणंतपदेसिए ॥

१८४ परमाणुपोग्गला णं भंते ! किं कडजुम्मपदेसोगाढा—पुच्छा ।
गोयमा ! ओघादेसेणं कडजुम्मपदेसोगाढा, नो तेयोगपदेसोगाढा, नो दावरजुम्मपदेसोगाढा, नो कलियोगपदेसोगाढा; विहाणादेसेणं नो कडजुम्मपदेसोगाढा, नो तेयोगपदेसोगाढा, नो दावरजुम्मपदेसोगाढा, कलियोगपदेसोगाढा ॥

१८५ दुप्पदेसिया णं—पुच्छा ।
गोयमा ! ओघादेसेणं कडजुम्मपदेसोगाढा, नो तेयोगपदेसोगाढा, नो दावरजुम्मपदेसोगाढा, नो कलियोगपदेसोगाढा, विहाणादेसेणं नो कडजुम्मपदेसोगाढा, नो तेयोगपदेसोगाढा, दावरजुम्मपदेसोगाढा वि, कलियोगपदेसोगाढा वि ॥

१८६ तिप्पदेसिया णं—पुच्छा ।
गोयमा ! ओघादेसेणं कडजुम्मपदेसोगाढा, नो तेयोगपदेसोगाढा, नो दावरजुम्मपदेसोगाढा, नो कलियोगपदेसोगाढा, विहाणादेसेणं नो कडजुम्मपदेसोगाढा, तेयोगपदेसोगाढा वि, दावरजुम्मपदेसोगाढा वि, कलियोगपदेसोगाढा वि ॥

१८७ चउप्पदेसिया णं—पुच्छा ।
गोयमा ! ओघादेसेणं कडजुम्मपदेसोगाढा, नो तेयोगपदेसोगाढा, नो दावरजुम्मपदेसोगाढा, नो कलियोगपदेसोगाढा, विहाणादेसेणं कडजुम्मपदेसोगाढा वि जाव कलियोगपदेसोगाढा वि । एवं जाव अणंतपदेसिया ॥

१८८. परमाणुपोग्गले णं भंते ! किं कडजुम्मसमयट्ठितीए—पुच्छा ।
गोयमा ! सिय कडजुम्मसमयट्ठितीए जाव सिय कलियोगसमयट्ठितीए । एवं जाव अणंतपदेसिए ॥

१८९ परमाणुपोग्गला णं भंते ! किं कडजुम्म—पुच्छा ।
गोयमा ! ओघादेसेणं सिय कडजुम्मसमयट्ठितीया जाव सिय कलियोगसमयट्ठितीया, विहाणादेसेणं कडजुम्मसमयट्ठितीया वि जाव कलियोगसमयट्ठितीया वि । एवं जाव अणंतपदेसिया ॥

१९० परमाणुपोग्गले णं भंते ! कालवण्णपज्जवेहिं किं कडजुम्मे ? तेयोगे ? जहा ठितीए वत्तव्वया एवं वण्णेसु वि सव्वेसु । गंधेसु वि एवं चेव । रसेसु वि जाव महुरो रसो त्ति ॥

१९१ अणंतपदेसिए णं भंते ! खंधे कक्खडफासपज्जवेहिं किं कडजुम्मे—पुच्छा ।
गोयमा ! सिय कडजुम्मे जाव सिय कलियोगे ॥

१९२ अणंतपदेसिया णं भंते ! खंधा कक्खडफासपज्जवेहिं किं कडजुम्मा—पुच्छा ।
गोयमा ! ओघादेसेणं सिय कडजुम्मा जाव सिय कलियोगा, विहाणादेसेणं कडजुम्मा वि जाव कलियोगा वि । एवं मउय-गरुय-लहुया वि भाणियव्वा । सीय-उसिण-निद्ध-लुक्खा जहा वण्णा ॥

१६३. परमाणुपोग्गले ण भंते ! किं सड्ढे ? अणड्ढे ?
गोयमा नो सड्ढे, अणड्ढे ।।

१६४ दुपदेसिए ण—पुच्छा ।
गोयमा ! सड्ढे, नो अणड्ढे । तिपदेसिए जहा परमाणुपोग्गले । चउपदेसिए जहा दुपदेसिए । पचपदेसिए जहा तिपदेसिए । छप्पदेसिए जहा दुपदेसिए । सत्तपदेसिए जहा तिपदेसिए । अट्ठपदेसिए जहा दुपदेसिए । नवपदेसिए जहा तिपदेसिए । दसपदेसिए जहा दुपदेसिए ।।

१६५. सखेज्जपदेसिए ण भते ! खधे—पुच्छा ।
गोयमा ! सिय सड्ढे, सिय अणड्ढे । एव असखेज्जपदेसिए वि । एव अणतपदेसिए वि ।।

१६६ परमाणुपोग्गला ण भते ! कि सड्ढा[1] ? अणड्ढा ?
गोयमा ! सड्ढा वा, अणड्ढा वा । एव जाव अणतपदेसिया ।।

१६७ परमाणुपोग्गले ण भते ! कि सेए ? निरेए ?
गोयमा ! सिय सेए, सिय निरेए । एव जाव अणतपदेसिए ।।

१६८ परमाणुपोग्गला ण भते ! किं सेया ? निरेया ?
गोयमा ! सेया वि, निरेया वि । एव जाव अणतपदेसिया ।।

१६९ परमाणुपोग्गले ण भते ! सेए कालओ केवच्चिर[2] होइ ?
गोयमा ! जहण्णेण एक्क समय, उक्कोसेण आवलियाए असखेज्जइभागं ।।

२०० परमाणुपोग्गले ण भते ! निरेए कालओ केवच्चिर होइ ?
गोयमा ! जहण्णेण एक्क समय, उक्कोसेण असखेज्ज काल । एव जाव अणतपदेसिए ।।

२०१ परमाणुपोग्गला ण भते ! सेया कालओ केवच्चिर होति ?
गोयमा ! सव्वद्ध ।।

२०२ परमाणुपोग्गला ण भते ! निरेया कालओ केवच्चिर होति ?
गोयमा ! सव्वद्ध । एव जाव अणतपदेसिया ।।

२०३ परमाणुपोग्गलस्स ण भते ! सेयस्स केवतिय काल अतर होइ ?
गोयमा ! सट्ठाणतर पडुच्च जहण्णेण एक्क समय, उक्कोसेण असखेज्ज काल । परट्ठाणतर पडुच्च जहण्णेण एक्क समय, उक्कोसेण असखेज्ज काल ।।

२०४. निरेयस्स केवतिय काल अतर होइ ?
गोयमा ! सट्ठाणतर पडुच्च जहण्णेण एक्क समय, उक्कोसेण आवलियाए असखेज्जइभाग । परट्ठाणतर पडुच्च जहण्णेण एक्क समय, उक्कोसेण असखेज्ज काल ।।

---

१. साढा (ख, ता) । २. केवचिर (अ, क, ख, म) ।

२०५ दुपदेसियस्स ण भंते ! खधस्स सेयस्स—पुच्छा ।
गोयमा ! सट्ठाणतरं पडुच्च जहण्णेण एक्कं समय, उक्कोसेणं असंखेज्ज काल । परट्ठाणतर पडुच्च जहण्णेण एक्क समय, उक्कोसेणं अणतं काल ।।

२०६ निरेयस्स केवतिय काल अतर होइ ?
गोयमा ! सट्ठाणतर पडुच्च जहण्णेण एक्क समय, उक्कोसेण आवलियाए असखेज्जइभाग । परट्ठाणतर पडुच्च जहण्णेणं एक्क समय, उक्कोसेण अणंतं कालं । एव जाव अणतपदेसियस्स ।।

२०७ परमाणुपोग्गलाण भते ! सेयाण केवतिय काल अतर होइ ?
गोयमा ! नत्थि अतर ।।

२०८ निरेयाण केवतिय काल अतर होइ ?
गोयमा ! नत्थि अतर । एवं जाव अणतपदेसियाण खधाण ।।

२०९ एएसि ण भंते ! परमाणुपोग्गलाण सेयाण निरेयाण य कयरे कयरेहिंतो[1] •अप्पा वा ? वहुया वा ? तुल्ला वा ?° विसेसाहिया वा ?
गोयमा ! सव्वत्थोवा परमाणुपोग्गला सेया, निरेया असखेज्जगुणा । एव जाव असखेज्जपदेसियाणं खधाण ।।

२१० एएसि ण भते ! अणतपदेसियाण खधाण सेयाणं निरेयाण य कयरे कयरेहिंतो[2] •अप्पा वा ? वहुया वा ? तुल्ला वा ?° विसेसाहिया वा ?
गोयमा ! सव्वत्थोवा अणतपदेसिया खधा निरेया, सेया अणतगुणा ।।

२११ एएसि ण भते ! परमाणुपोग्गलाण, सखेज्जपदेसियाण, असखेज्जपदेसियाण, अणतपदेसियाण य खधाण सेयाण निरेयाण य दव्वट्ठयाए, पदेसट्ठयाए, दव्वट्ठ-पदेसट्ठयाए कयरे कयरेहितो[3] •अप्पा वा ? वहुया वा ? तुल्ला वा ?° विसेसाहिया वा ?
गोयमा ! १ सव्वत्थोवा अणंतपदेसिया खधा निरेया दव्वट्ठयाए २ अणतपदेसिया खधा सेया दव्वट्ठयाए अणतगुणा ३ परमाणुपोग्गला सेया दव्वट्ठयाए अणत-गुणा ४ सखेज्जपदेसिया खधा सेया दव्वट्ठयाए असखेज्जगुणा ५ असखेज्ज-पदेसिया खधा सेया दव्वट्ठयाए असखेज्जगुणा ६. परमाणुपोग्गला निरेया दव्वट्ठयाए असखेज्जगुणा ७ सखेज्जपदेसिया खधा निरेया दव्वट्ठयाए सखेज्ज-गुणा[4] ८ असंखेज्जपदेसिया खधा निरेया दव्वट्ठयाए असखेज्जगुणा । पदेसट्ठयाए एव चेव, नवर—परमाणुपोग्गला अपदेसट्ठयाए भाणियव्वा । सखेज्जपदेसिया खधा निरेया पदेसट्ठयाए असखेज्जगुणा । सेस त चेव । दव्वट्ठ-पदेसट्ठयाए—
१ सव्वत्थोवा अणतपदेसिया खधा निरेया दव्वट्ठयाए २ ते चेव पदेसट्ठयाए

---

१. स० पा०—कयरेहिंतो जाव विसेसाहिया ।
२ स० पा०—कयरेहिंतो जाव विसेसाहिया ।
३ स० पा०—कयरेहिंतो जाव विसेसाहिया ।
४. असखेज्जगुणा (ख, ता) ।

अणतगुणा ३ अणतपदेसिया खधा सेया दव्वट्ठयाए अणतगुणा ४ ते चेव पदेसट्ठ-याए अणतगुणा ५. परमाणुपोग्गला सेया दव्वट्ठ-अपदेसट्ठयाए अणतगुणा ६ सखेज्जपदेसिया खधा सेया दव्वट्ठयाए असखेज्जगुणा ७ ते चेव पदेसट्ठयाए असखेज्जगुणा ८ असखेज्जपदेसिया खधा सेया दव्वट्ठयाए असखेज्जगुणा ९ ते चेव पदेसट्ठयाए असखेज्जगुणा १० परमाणुपोग्गला निरेया दव्वट्ठ-अपदेसट्ठयाए असखेज्जगुणा ११. सखेज्जपदेसिया खधा निरेया दव्वट्ठयाए असखेज्जगुणा १२ ते चेव पदेसट्ठयाए असखेज्जगुणा १३ असखेज्जपदेसिया खधा निरेया दव्वट्ठयाए असखेज्जगुणा १४. ते चेव पदेसट्ठयाए असखेज्ज-गुणा ।।

२१२. परमाणुपोग्गले ण भते ! किं देसेए ? सव्वेए ? निरेए ?
गोयमा ! नो देसेए, सिय सव्वेए, सिय निरेए ।।

२१३ दुपदेसिए ण भते ! खधे—पुच्छा ।
गोयमा ! सिय देसेए, सिय सव्वेए, सिए निरेए । एव जाव अणतपदेसिए ।।

२१४ परमाणुपोग्गला ण भते ! किं देसेया ? सव्वेया ? निरेया ?
गोयमा ! नो देसेया, सव्वेया वि, निरेया वि ।।

२१५ दुपदेसिया ण भते ! खधा—पुच्छा ।
गोयमा ! देसेया वि, सव्वेया वि, निरेया वि । एव जाव अणतपदेसिया ।।

२१६ परमाणुपोग्गले ण भते ! सव्वेए कालओ केवच्चिर होइ ?
गोयमा ! जहण्णेण एक्क समय, उक्कोसेण आवलियाए असखेज्जइभाग ।।

२१७ निरेए कालओ केवच्चिर होइ ?
गोयमा ! जहण्णेण एक्क समय, उक्कोसेण असखेज्ज काल ।।

२१८ दुपदेसिए ण भते ! खधे देसेए कालओ केवच्चिर होइ ?
गोयमा ! जहण्णेण एक्क समय, उक्कोसेण आवलियाए असखेज्जइभाग ।।

२१९ सव्वेए कालओ केवच्चिर होइ ?
गोयमा ! जहण्णेण एक्क समय, उक्कोसेण आवलियाए असखेज्जइभाग ।।

२२० निरेए कालओ केवच्चिर होइ ?
गोयमा ! जहण्णेण एक्क समय, उक्कोसेण असखेज्ज काल । एव जाव अणत-पदेसिए ।।

२२१ परमाणुपोग्गला ण भते ! सव्वेया कालओ केवच्चिर होति ?
गोयमा ! सव्वद्ध ।।

२२२ निरेया कालओ केवच्चिर होति ? सव्वद्ध ।।

२२३ दुप्पदेसिया ण भते ! खधा देसेया कालओ केवच्चिर होति ? सव्वद्ध ।।

२२४. सव्वेया कालओ केवच्चिर होति ? सव्वद्ध ।।

२२५. निरेया कालओ केवच्चिर होति ? सव्वद्ध । एव जाव अणतपदेसिया ।।

२२६ परमाणुपोग्गलस्स ण भते ! सव्वेयस्स केवतिय काल अतर होइ ?
गोयमा ! सट्ठाणतर पडुच्च जहण्णेण एक्क समय, उक्कोसेण असखेज्ज कालं ।
परट्ठाणतर पडुच्च जहण्णेण एक्क समय, उक्कोसेण एव चेव ।।

२२७ निरेयस्स केवतिय काल अतर होइ ?
सट्ठाणतर पडुच्च जहण्णेण एक्क समय, उक्कोसेणं आवलियाए असखेज्जइ-भाग । परट्ठाणतर पडुच्च जहण्णेण एक्क समयं, उक्कोसेण असखेज्ज काल ।।

२२८ दुपदेसियस्स ण भते ! खधस्स देसेयस्स केवतिय काल अतर होइ ?
सट्ठाणतर पडुच्च जहण्णेण एक्क समय, उक्कोसेण असखेज्ज कालं । परट्ठाणतर पडुच्च जहण्णेण एक्क समय, उक्कोसेण अणत काल ।।

२२९ सव्वेयस्स केवतिय काल अतर होइ ? एव चेव जहा देसेयस्स ।।

२३० निरेयस्स केवतिय काल अतरं होइ ?
सट्ठाणतर पडुच्च जहण्णेण एक्क समय, उक्कोसेण आवलियाए असखेज्जइ-भाग । परट्ठाणतर पडुच्च जहण्णेण एक्क समय, उक्कोसेण अणत काल । एव जाव अणतपदेसियस्स ।।

२३१ परमाणुपोग्गलाण भते ! सव्वेयाण केवतिय काल अंतर होइ ? 'नत्थि अतर'[1] ।।

२३२ निरेयाण केवतिय कालं अतर होइ ? नत्थि अतर ।।

२३३ दुपदेसियाण भते ! खधाण देसेयाण केवतिय काल अतर होइ ? नत्थि अतर ।।

२३४ सव्वेयाण केवतिय काल अतर होइ ? नत्थि अतर ।।

२३५ निरेयाण केवतिय काल अंतर होइ ? नत्थि अतर । एव जाव अणतपदेसि-याण ।।

२३६ एएसि ण भते ! परमाणुपोग्गलाण सव्वेयाण निरेयाण य कयरे कयरेहिंतो[2] •अप्पा वा ? वहुया वा ? तुल्ला वा ?° विसेसाहिया वा ?
गोयमा ! सव्वत्थोवा परमाणुपोग्गला सव्वेया, निरेया असखेज्जगुणा ।।

२३७ एएसि ण भते ! दुपदेसियाण खधाण देसेयाण, सव्वेयाण, निरेयाण य कयरे कयरेहितो[3] •अप्पा वा ? वहुया वा ? तुल्ला वा ?° विसेसाहिया वा ?
गोयमा ! सव्वत्थोवा दुपदेसिया खधा सव्वेया, देसेया असखेज्जगुणा, निरेया असखेज्जगुणा । एव जाव असखेज्जपदेसियाण खधाण ।।

२३८ एएसि ण भते ! अणतपदेसियाण खधाण देसेयाणं, सव्वेयाण, निरेयाण य

---

१ नत्यतर (अ, क, ख, ता, म) ।
२ स० पा०—कयरेहिंतो जाव विसेसाहिया ।
३ स० पा०—कयरेहिंतो जाव विसेसाहिया ।

कयरे कयरेहिंतो[1] •अप्पा वा ? वहुया वा ? तुल्ला वा ?° विसेसाहिया वा ?
गोयमा ! सव्वत्थोवा अणतपदेसिया खधा सव्वेया, निरेया अणतगुणा, देसेया अणतगुणा ।।

२३९ एएसि ण भते ! परमाणुपोग्गलाण, सखेज्जपदेसियाण असखेज्जपदेसियाण अणतपदेसियाण य खधाण देसेयाण, सव्वेयाण, निरेयाण दव्वट्ठयाए, पदेसट्ठयाए, दव्वट्ठ-पदेसट्ठयाए कयरे कयरेहिंतो[2] •अप्पा वा ? वहुया वा ? तुल्ला वा ?° विसेसाहिया वा ?

गोयमा ! १ सव्वत्थोवा अणतपदेसिया खधा सव्वेया दव्वट्ठयाए २ अणतपदेसिया खधा निरेया दव्वट्ठयाए अणतगुणा ३ अणतपदेसिया खधा देसेया दव्वट्ठयाए अणतगुणा ४ असखेज्जपदेसिया खधा सव्वेया दव्वट्ठयाए अणतगुणा ५ सखेज्जपदेसिया खधा सव्वेया दव्वट्ठयाए असखेज्जगुणा ६ परमाणुपोग्गला सव्वेया दव्वट्ठयाए असखेज्जगुणा ७ सखेज्जपदेसिया खधा देसेया दव्वट्ठयाए असखेज्जगुणा ८ असखेज्जपदेसिया खधा देसेया दव्वट्ठयाए असखेज्जगुणा ९ परमाणुपोग्गला निरेया दव्वट्ठयाए असखेज्जगुणा १० सखेज्जपदेसिया खधा निरेया दव्वट्ठयाए सखेज्जगुणा ११ असखेज्जपदेसिया खधा निरेया दव्वट्ठयाए असखेज्जगुणा। पदेसट्ठयाए—सव्वत्थोवा अणतपदेसिया। एव पदेसट्ठयाए वि, नवर—परमाणुपोग्गला अपदेसट्ठयाए भाणियव्वा। सखेज्जपदेसिया खधा निरेया पदेसट्ठयाए असखेज्जगुणा। सेस त चेव। दव्वट्ठ-पदेसट्ठयाए —१ सव्वत्थोवा अणतपदेसिया खधा सव्वेया दव्वट्ठयाए २ ते चेव पदेसट्ठयाए अणतगुणा ३ अणतपदेसिया खधा निरेया दव्वट्ठयाए अणतगुणा ४ ते चेव पदेसट्ठयाए अणतगुणा ५ अणतपदेसिया खधा देसेया दव्वट्ठयाए अणतगुणा ६ ते चेव पदेसट्ठयाए अणतगुणा ७ असखेज्जपदेसिया खधा सव्वेया दव्वट्ठयाए अणतगुणा ८ ते चेव पदेसट्ठयाए असखेज्जगुणा ९ सखेज्जपदेसिया खधा सव्वेया दव्वट्ठयाए असखेज्जगुणा १०. ते चेव पदेसट्ठयाए असखेज्जगुणा[3] ११ परमाणुपोग्गला सव्वेया दव्वट्ठ-अपदेसट्ठयाए असखेज्जगुणा १२ सखेज्जपदेसिया खधा देसेया दव्वट्ठयाए असखेज्जगुणा १३ ते चेव पदेसट्ठयाए असखेज्जगुणा १४ असखेज्जपदेसिया खधा देसेया दव्वट्ठयाए असखेज्जगुणा १५ ते चेव पदेसट्ठयाए असंखेज्जगुणा १६ परमाणुपोग्गला निरेया दव्वट्ठ-अपदेसट्ठयाए असखेज्जगुणा १७ सखेज्जपदेसिया खधा निरेया दव्वट्ठयाए सखेज्जगुणा

---

१ स० पा०—कयरेहिंतो जाव विसेसाहिया । ३ सखेज्जगुणा (ता) ।
२ स० पा०—कयरेहिंतो जाव विसेसाहिया ।

१८ ते चेव पदेसट्ठयाए संखेज्जगुणा १९. असखेज्जपदेसिया निरेया दव्वट्ठयाए असखेज्जगुणा २०. ते चेव पदेसट्ठयाए असखेज्जगुणा ॥

मज्झपदेसा-पदं

२४० कति ण भते ! धम्मत्थिकायस्स मज्झपदेसा पण्णत्ता ?
गोयमा ! अट्ठ धम्मत्थिकायस्स मज्झपदेसा पण्णत्ता ॥

२४१ कति ण भते ! अधम्मत्थिकायस्स मज्झपदेसा पण्णत्ता ? एव चेव ॥

२४२ कति ण भते ! आगासत्थिकायस्स मज्झपदेसा पण्णत्ता ? एव चेव ॥

२४३ कति ण भंते ! जीवत्थिकायस्स मज्झपदेसा पण्णत्ता ?
गोयमा ! अट्ठ जीवत्थिकायस्स मज्झपदेसा पण्णत्ता ॥

२४४. एए णं भते ! अट्ठ जीवत्थिकायस्स मज्झपदेसा कतिसु आगासपदेसेसु ओगाहति ?
गोयमा ! जहण्णेण एक्कसि वा दोहि वा तीहि वा चउहि वा पचहि वा छहि वा, उक्कोसेणं अट्ठसु, नो चेव ण सत्तसु ॥

२४५. सेव भते ! सेवं भते ! त्ति ॥

पंचमो उद्देसो

पज्जव-पदं

२४६. कतिविहा ण भते ! पज्जवा पण्णत्ता ?
गोयमा ! दुविहा पज्जवा पण्णत्ता, तं जहा—जीवपज्जवा य, अजीवपज्जवा य। पज्जवपद[1] निरवसेस भाणियव्व जहा[2] पण्णवणाए ॥

काल-पद

२४७ आवलिया ण भते ! कि सखेज्जा समया ? असखेज्जा समया ? अणता समया ?
गोयमा ! नो सखेज्जा समया, असखेज्जा समया, नो अणता समया ॥

२४८ आणापाणू ण भंते ! कि सखेज्जा० ? एव चेव ॥

---

१ जीवपय (अ)। २. प० ५।

२४९. थोवे ण भते ! कि संखेज्जा० ? एव चेव । एव लवे वि, मुहुत्ते वि, एव अहोरत्ते, एव पक्खे, मासे, उऊ, अयणे, सवच्छरे, जुगे, वाससए, वाससहस्से, वाससयसहस्से, पुव्वगे, पुव्वे, तुडियगे, तुडिए, अडडगे, अडडे, अववगे, अववे, 'हूहूयगे, हूहूए'[1], उप्पलगे, उप्पले, पउमगे, पउमे, नलिणगे, नलिणे, 'अत्थनिपूरगे, अत्थनिपूरे'[2], अउयगे, अउए, नउयगे, नउए, पउयगे, पउए, चूलियगे, चूलिए, सीसपहेलियगे, सीसपहेलिया, पलिओवमे, सागरोवमे, ओसप्पिणी । एव उस्सप्पिणी वि ।।

२५० पोग्गलपरियट्टे ण भते ! कि सखेज्जा समया—पुच्छा ।
गोयमा ! नो सखेज्जा समया, नो असखेज्जा समया, अणता समया । एव तीयद्धा, अणागयद्धा, सव्वद्धा ।।

२५१ आवलियाओ ण भते ! कि सखेज्जा समया—पुच्छा ।
गोयमा ! नो सखेज्जा समया, सिय असखेज्जा समया, सिय अणंता समया ।।

२५२ आणापाणू ण भते ! कि सखेज्जा समया० ? एव चेव ।।

२५३ थोवा ण भते ! कि सखेज्जा समया० ? एव चेव । एव जाव ओसप्पिणीओ त्ति ।।

२५४ पोग्गलपरियट्टा ण भते ! कि सखेज्जा समया—पुच्छा ।
गोयमा ! नो सखेज्जा समया, नो असखेज्जा समया, अणता समया ।।

२५५ आणापाणू ण भते ! कि सखेज्जाओ आवलियाओ—पुच्छा ।
गोयमा ! सखेज्जाओ आवलियाओ, नो असखेज्जाओ आवलियाओ, नो अणताओ आवलियाओ । एव थोवे वि । एव जाव सीसपहेलिय त्ति ।।

२५६ पलिओवमे ण भते ! कि सखेज्जाओ आवलियाओ—पुच्छा ।
गोयमा ! नो सखेज्जाओ आवलियाओ, असखेज्जाओ आवलियाओ, नो अणताओ आवलियाओ । एव सागरोवमे वि । एव ओसप्पिणी वि, उस्सप्पिणी वि ।।

२५७ पोग्गलपरियट्टे—पुच्छा ।
गोयमा ! नो सखेज्जाओ आवलियाओ, नो असखेज्जाओ आवलियाओ, अणताओ आवलियाओ । एव जाव सव्वद्धा ।।

२५८. आणापाणू ण भते ! किं सखेज्जाओ आवलियाओ—पुच्छा ।
गोयमा ! सिय सखेज्जाओ आवलियाओ, सिय असखेज्जाओ, सिय अणताओ । एव जाव सीसपहेलियाओ ।।

२५९ पलिओवमा ण—पुच्छा ।

---

१. हुहुयगे हुहुए (अ), हूहुयगे हूहुए (ता) । २. अत्थिनिभरगे अत्थिनिभरे (अ) ।

गोयमा ! नो सखेज्जाम्रो आवलियाम्रो, सिय असखेज्जाम्रो आवलियाम्रो, सिय अणताम्रो आवलियाम्रो । एव जाव उस्सप्पिणीम्रो ॥

२६०. पोग्गलपरियट्टा णं—पुच्छा ।
गोयमा ! नो सखेज्जाम्रो आवलियाम्रो, नो असखेज्जाम्रो आवलियाम्रो, अणताम्रो आवलियाम्रो ॥

२६१ थोवे ण भते ! कि सखेज्जाम्रो आणापाणूम्रो ? असखेज्जाम्रो० ? जहा आवलियाए वत्तव्वया एव आणापाणूम्रो वि निरवसेसा । एव एतेण गमएण जाव सीसपहेलिया भाणियव्वा ॥

२६२ सागरोवमे ण भते ! कि सखेज्जा पलिओवमा ?—पुच्छा ।
गोयमा ! सखेज्जा पलिओवमा, नो असखेज्जा पलिओवमा, नो अणता पलिओवमा । एव ओसप्पिणी वि, उस्सप्पिणी वि ॥

२६३ पोग्गलपरियट्टे ण—पुच्छा ।
गोयमा ! नो सखेज्जा पलिओवमा, नो असखेज्जा पलिओवमा, अणता पलिओवमा । एव जाव सव्वद्धा ॥

२६४. सागरोवमा ण भते ! कि सखेज्जा पलिओवमा—पुच्छा ।
गोयमा ! सिय सखेज्जा पलिओवमा, सिय असखेज्जा पलिओवमा, सिय अणता पलिओवमा । एव जाव ओसप्पिणी वि, उस्सप्पिणी वि ॥

२६५ पोग्गलपरियट्टा ण—पुच्छा ।
गोयमा ! नो सखेज्जा पलिओवमा, नो असखेज्जा पलिओवमा, अणता पलिओवमा ॥

२६६ ओसप्पिणी ण भते ! कि सखेज्जा सागरोवमा० ? जहा पलिओवमस्स वत्तव्वया तहा सागरोवमस्स वि ॥

२६७ पोग्गलपरियट्टे ण भते ! कि सखेज्जाम्रो ओसप्पिणी-उस्सप्पिणीम्रो—पुच्छा ।
गोयमा ! नो सखेज्जाम्रो ओसप्पिणि-उस्सप्पिणीम्रो, नो सखेज्जाम्रो ओसप्पिणि-उस्सप्पिणीम्रो, अणताम्रो ओसप्पिणि-उस्सप्पिणीम्रो । एवं जाव सव्वद्धा ॥

२६८. पोग्गलपरियट्टा ण भते ! किं सखेज्जाम्रो ओसप्पिणि-उस्सप्पिणीम्रो—पुच्छा ।
गोयमा ! नो सखेज्जाम्रो ओसप्पिणि-उस्सप्पिणीम्रो, नो असखेज्जाम्रो ओसप्पिणि-उस्सप्पिणीम्रो, अणताम्रो ओसप्पिणि-उस्सप्पिणीम्रो ॥

२६९ तीतद्धा ण भते ! कि सखेज्जा पोग्गलपरियट्टा—पुच्छा ।
गोयमा ! नो सखेज्जा पोग्गलपरियट्टा, नो असखेज्जा पोग्गलपरियट्टा, अणता पोग्गलपरियट्टा । एव अणागयद्धा वि । एव सव्वद्धा वि ॥

२७०. अणागयद्धा ण भते ! कि सखेज्जाम्रो तीतद्धाम्रो ? असखेज्जाम्रो० ? अणंताम्रो० ?

गोयमा ! नो सखेज्जाओ तीतद्धाओ, नो असखेज्जाओ तीतद्धाओ, नो अणताओ तीतद्धाओ। अणागयद्धा ण तीतद्धाओ समयाहिया, तीतद्धा ण अणागयद्धाओ समयूणा ॥

२७१. सव्वद्धा ण भते ! कि सखेज्जाओ तीतद्धाओ—पुच्छा।
गोयमा ! नो सखेज्जाओ तीतद्धाओ, नो असखेज्जाओ तीतद्धाओ, नो अणताओ तीतद्धाओ। सव्वद्धा ण तीतद्धाओ सातिरेगदुगुणा, तीतद्धा ण सव्वद्धाओ थोवूणए अद्धे ॥

२७२ सव्वद्धा णं भते ! कि सखेज्जाओ अणागयद्धाओ—पुच्छा।
गोयमा ! नो सखेज्जाओ अणागयद्धाओ, नो असखेज्जाओ अणागयद्धाओ, नो अणताओ अणागयद्धाओ। सव्वद्धा ण अणागयद्धाओ थोवूणगदुगुणा। अणागयद्धा ण सव्वद्धाओ सातिरेगे अद्धे ॥

निगोद-पदं

२७३ कतिविहा ण भते ! निओदा[1] पण्णत्ता ?
गोयमा ! दुविहा निओदा पण्णत्ता, त जहा—निओयगा य, निओयगजीवा य ॥

२७४ निओदा ण भते ! कतिविहा पण्णत्ता ?
गोयमा ! दुविहा पण्णत्ता, त जहा—सुहुमनिगोदा[2] य, बायरनिओदा[3] य। एव निओदा भाणियव्वा जहा[4] जीवाभिगमे तहेव निरवसेस ॥

नाम-पदं

२७५ कतिविहे ण भते ! नामे पण्णत्ते ?
गोयमा ! छव्विहे नामे पण्णत्ते, त जहा—ओदइए जाव[5] सण्णिवाइए ॥

२७६ से कि तं ओदइए नामे ?
ओदइए नामे दुविहे पण्णत्ते, त जहा—उदए य, उदयनिप्फण्णे य—एव जहा सत्तरसमसए पढमे उद्देसए भावो तहेव इह वि, नवर—इम नामनाणत्त,[6] सेस तहेव जाव[7] सण्णिवाइए ॥

२७७ सेव भते ! सेव भते ! त्ति ॥

---

१ नियोया (अ, ता)।
२. सुहुमा नि० (ता)।
३. वातरनि० (क), वादरा नि० (ता)।
४. जी० ५।२।
५ भ १७।१६।
६. नाणत्त (अ, ख, ता, व, म, स)।
७ भ० १७।१७।

छट्ठो उद्देसो

१ पण्णवण २. वेद ३. रागे, ४. कप्प ५. चरित्त ६. पडिसेवणा ७ नाणे।
८ तित्थे ९. लिंग १० सरीरे, ११ खेत्ते १२. काल १३ गइ १४ सजम
१५ निकासे ।।१।।

१६,१७ जोगुवओग १८ कसाए, १९ लेसा २० परिणाम २१ 'बध
२२ वेदे य'[1]।

२३ कम्मोदीरण २४ उवसपजहण्ण, २५. सण्णा य २६ आहारे ।।२।।
२७. भव २८ आगरिसे ,२९,३०. कालतरे य ३१ समुग्घाय ३२ खेत्त
३३ फुसणा य।

३४ भावे ३५ परिमाणे[2] खलु[3], ३६, अप्पाबहुय नियठाण ।।३।।

पण्णवण-पद

२७८ रायगिहे जाव एव वयासी—कति ण भते ! नियठा पण्णत्ता ?
गोयमा ! पच नियठा पण्णत्ता, त जहा—पुलाए, बउसे, कुसीले, नियठे, सिणाए ।।

२७९. पुलाए ण भते ! कतिविहे पण्णत्ते ?
गोयमा ! पचविहे पण्णत्ते, त जहा—नाणपुलाए, दसणपुलाए, चरित्तपुलाए, लिंगपुलाए, अहासुहुमपुलाए नाम पचमे ।।

२८० बउसे ण भते ! कतिविहे पण्णत्ते ?
गोयमा ! पचविहे पण्णत्ते, त जहा—आभोगबउसे, अणाभोगबउसे, सवुडबउसे, असवुडबउसे, अहासुहुमबउसे नामं पचमे ।।

२८१ कुसीले ण भते ! कतिविहे पण्णत्ते ?
गोयमा ! दुविहे पण्णत्ते, त जहा—पडिसेवणाकुसीले य, कसायकुसीले य ।।

२८२ पडिसेवणाकुसीले ण भते ! कतिविहे पण्णत्ते ?
गोयमा ! पचविहे पण्णत्ते, त जहा—नाणपडिसेवणाकुसीले, दसणपडिसेवणा-कुसीले, चरित्तपडिसेवणाकुसीले, लिंगपडिसेवणाकुसीले, अहासुहुमपडिसेवणा-कुसीले नाम पचमे ।।

२८३. कसायकुसीले ण भते ! कतिविहे पण्णत्ते ?
गोयमा ! पचविहे पण्णत्ते, त जहा—नाणकसायकुसीले, दंसणकसायकुसीले, चरित्तकसायकुसीले, लिगकसायकुसीले, अहासुहुमकसायकुसीले नाम पचमे ।।

---

१. बधणे वेदे (ता, ब)।
२. परिणामे (अ, स)।
३. या (ता)।

२८४ नियठे ण भते ! कतिविहे पण्णत्ते ?
गोयमा ! पचविहे पण्णत्ते, त जहा—पढमसमयनियठे, अपढमसमयनियठे, चरिमसमयनियठे[1], अचरिमसमयनियठे, अहासुहुमनियठे नाम पचमे ॥

२८५ सिणाए ण भते ! कतिविहे पण्णत्ते ?
गोयमा ! पचविहे पण्णत्ते, त जहा—अच्छवी, असबले, अकम्मसे, ससुद्धनाण-दसणधरे अरहा जिणे केवली[2], अपरिस्सावी[3] ॥

वेद-पद

२८६ पुलाए ण भते ! कि सवेदए होज्जा ? अवेदए होज्जा ?
गोयमा ! सवेदए होज्जा, नो अवेदए होज्जा ॥

२८७ जइ सवेदए होज्जा कि इत्थिवेदए होज्जा ? पुरिसवेदए होज्जा ? पुरिसनपुसग-वेदए होज्जा ?
गोयमा ! नो इत्थिवेदए होज्जा, पुरिसवेदए होज्जा, पुरिसनपुसगवेदए वा होज्जा ॥

२८८ वउसे ण भते ! किं सवेदए होज्जा ? अवेदए होज्जा ?
गोयमा ! सवेदए होज्जा, नो अवेदए होज्जा ॥

२८९ जइ सवेदए होज्जा कि इत्थिवेदए होज्जा ? पुरिसवेदए होज्जा ? पुरिस-नपुसगवेदए होज्जा ?
गोयमा ! इत्थिवेदए वा होज्जा, पुरिसवेदए वा होज्जा, पुरिसनपुसगवेदए वा होज्जा । एव पडिसेवणाकुसीले वि ॥

२९० कसायकुसीले ण भते ! किं सवेदए—पुच्छा ।
गोयमा ! सवेदए वा होज्जा, अवेदए वा होज्जा ॥

२९१ जइ अवेदए कि उवसतवेदए ? खीणवेदए होज्जा ?
गोयमा ! उवसतवेदए वा होज्जा, खीणवेदए वा होज्जा ॥

२९२ जइ सवेदए होज्जा किं इत्थिवेदए—पुच्छा ।
गोयमा ! तिसु वि जहा वउसो ॥

---

१ चरम° (स) ।

२. उत्तराध्ययनेषु त्वर्हन् जिन केवलीत्यय पञ्चमो भेद उक्त । अपरिश्रावीति तु नाधीतमेव, इह चावस्थाभेदेन भेदो न केनचिद् वृत्तिकृतेहान्यत्र च ग्रन्थे व्याख्यात-स्तत्र चैव सभावयाम —शब्दनयापेक्षयैतेषा भेदो भावनीय शक्रपुरन्दरावदिति (वृ), स्थानाङ्गवृत्तौ भाष्योल्लेखपूर्वकमेतच्चर्चित-मस्ति—निष्क्रियत्वात् सकलयोगनिरोधे अपरिश्रावीति पञ्चम, क्वचित्पुनरर्हन् जिन इति पञ्चम । अत्र भाष्यगाथा— अच्छवि अस्सवले या, अकम्म ससुद्ध अरह-जिणा ।

३ अपरिसाती (ता) ।

२९३ नियंठे णं भंते ! किं सवेदए—पुच्छा।
गोयमा ! नो सवेदए होज्जा, अवेदए होज्जा ॥
२९४. जइ अवेदए होज्जा किं उवसंतवेदए—पुच्छा।
गोयमा ! उवसंतवेदए वा होज्जा, खीणवेदए वा होज्जा ॥
२९५ सिणाए णं भंते ! किं सवेदए होज्जा ०? जहा नियंठे तहा सिणाए वि, नवरं —नो उवसंतवेदए होज्जा, खीणवेदए होज्जा ॥

राग-पदं

२९६ पुलाए णं भंते ! किं सरागे होज्जा ? वीतरागे होज्जा ?
गोयमा ! सरागे होज्जा, नो वीतरागे होज्जा। एवं जाव कसायकुसीले ॥
२९७ नियंठे णं भंते ! किं सरागे होज्जा—पुच्छा।
गोयमा ! नो सरागे होज्जा, वीतरागे होज्जा ॥
२९८ जइ वीतरागे होज्जा किं उवसंतकसायवीतरागे होज्जा ? खीणकसायवीतरागे होज्जा ?
गोयमा ! उवसंतकसायवीतरागे वा होज्जा, खीणकसायवीतरागे वा होज्जा। सिणाए एवं चेव, नवरं—नो उवसंतकसायवीतरागे होज्जा, खीणकसायवीतरागे होज्जा ॥

कप्प-पदं

२९९ पुलाए णं भंते ! किं ठियकप्पे होज्जा ? अट्ठियकप्पे होज्जा ?
गोयमा ! ठियकप्पे वा होज्जा, अट्ठियकप्पे वा होज्जा। एवं जाव सिणाए ॥
३०० पुलाए णं भंते ! किं जिणकप्पे होज्जा ? थेरकप्पे होज्जा ? कप्पातीते होज्जा ?
गोयमा ! नो जिणकप्पे होज्जा, थेरकप्पे होज्जा, नो कप्पातीते होज्जा ॥
३०१ बउसे णं—पुच्छा।
गोयमा ! जिणकप्पे वा होज्जा, थेरकप्पे वा होज्जा, नो कप्पातीते होज्जा। एवं पडिसेवणाकुसीले वि ॥
३०२. कसायकुसीले णं—पुच्छा।
गोयमा ! जिणकप्पे वा होज्जा, थेरकप्पे वा होज्जा, कप्पातीते वा होज्जा ॥
३०३ नियंठे णं—पुच्छा।
गोयमा ! नो जिणकप्पे होज्जा, नो थेरकप्पे होज्जा, कप्पातीते होज्जा। एवं सिणाए वि ॥

चरित्त-पदं

३०४ पुलाए णं भंते ! किं सामाइयसंजमे होज्जा ? छेओवट्ठावणियसंजमे होज्जा ? परिहारविसुद्धियसंजमे होज्जा ? सुहुमसंपरागसंजमे होज्जा ? अहक्खायसंजमे होज्जा ?

गोयमा ! सामाइयसजमे वा होज्जा, छेग्रोवट्ठावणियसजमे वा होज्जा, नो परिहारविसुद्धियसंजमे होज्जा, नो सुहुमसपरागसजमे होज्जा, नो ग्रहक्खाय-सजमे होज्जा । एव बउसे वि । एव पडिसेवणाकुसीले वि ॥

३०५ कसायकुसीले ण—पुच्छा ।
गोयमा ! सामाइयसजमे वा होज्जा जाव सुहुमसपरागसजमे वा होज्जा, नो ग्रहक्खायसजमे होज्जा ॥

३०६ नियठे ण—पुच्छा ।
गोयमा ! नो सामाइयसजमे होज्जा जाव नो सुहुमसपरागसजमे होज्जा, ग्रहक्खायसजमे होज्जा । एव सिणाए वि ॥

पडिसेवणा-पदं

३०७ पुलाए ण भते ! कि पडिसेवए होज्जा ? ग्रपडिसेवए होज्जा ?
गोयमा ! पडिसेवए होज्जा, नो ग्रपडिसेवए होज्जा ॥

३०८ जइ पडिसेवए होज्जा किं मूलगुणपडिसेवए होज्जा ? उत्तरगुणपडिसेवए होज्जा ?
गोयमा ! मूलगुणपडिसेवए वा होज्जा, उत्तरगुणपडिसेवए वा होज्जा । 'मूलगुणे पडिसेवमाणे'[1] पचण्ह ग्रासवाण ग्रण्णयर पडिसेवेज्जा, 'उत्तरगुणे पडिसेवमाणे'[2] दसविहस्स पच्चक्खाणस्स ग्रण्णयर पडिसेवेज्जा ॥

३०९ बउसे ण—पुच्छा ।
गोयमा ! पडिसेवए होज्जा, नो ग्रपडिसेवए होज्जा ॥

३१० जइ पडिसेवए होज्जा कि मूलगुणपडिसेवए होज्जा ? उत्तरगुणपडिसेवए होज्जा ?
गोयमा ! नो मूलगुणपडिसेवए होज्जा, उत्तरगुणपडिसेवए होज्जा । उत्तरगुणे पडिसेवमाणे दसविहस्स पच्चक्खाणस्स ग्रण्णयर पडिसेवेज्जा । पडिसेवणा-कुसीले जहा पुलाए ॥

३११ कसायकुसीले ण—पुच्छा ।
गोयमा ! नो पडिसेवए होज्जा, ग्रपडिसेवए होज्जा । एव नियठे[3] वि । एव सिणाए वि ॥

नाण-पद

३१२ पुलाए ण भते ! कतिसु नाणेसु होज्जा ?
गोयमा ! दोसु वा तिसु वा होज्जा । दोसु होमाणे दोसु आभिणिबोहियनाण-

---

१. मूलगुणपडि० (क, म),
२ उत्तरगुणपडि० (अ, ख, व, म) ।
३ निग्गथे (स) ।

सुयनाणेसु होज्जा, तिसु होमाणे तिसु आभिणिबोहियनाण-सुयनाण-ओहिनाणेसु होज्जा। एव वउसे वि। एवं पडिसेवणाकुसीले वि॥

३१३ कसायकुसीले ण—पुच्छा।
गोयमा! दोसु वा तिसु वा चउसु वा होज्जा। दोसु होमाणे दोसु आभिणिबोहियनाण-सुयनाणेसु होज्जा, तिसु होमाणे तिसु आभिणिबोहियनाण-सुयनाण-ओहिनाणेसु होज्जा, अहवा तिसु होमाणे आभिणिबोहियनाण-सुयनाण-मणपज्जवनाणेसु होज्जा, चउसु होमाणे चउसु आभिणिबोहियनाण-सुयनाण-ओहिनाण-मणपज्जवनाणेसु होज्जा। एव नियठे वि॥

३१४ सिणाए ण—पुच्छा।
गोयमा! एगम्मि केवलनाणे होज्जा॥

३१५ पुलाए ण भते! केवतिय सुय अहिज्जेज्जा?
गोयमा! जहण्णेण नवमस्स पुव्वस्स ततिय आयारवत्थु, उक्कोसेण नव पुव्वाइ अहिज्जेज्जा॥

३१६. वउसे—पुच्छा।
गोयमा! जहण्णेण अट्ठ पवयणमायाओ, उक्कोसेण दस पुव्वाइं अहिज्जेज्जा। एव पडिसेवणाकुसीले वि॥

३१७ कसायकुसीले—पुच्छा।
गोयमा! जहण्णेण अट्ठ पवयणमायाओ, उक्कोसेण चोद्दस पुव्वाइ अहिज्जेज्जा। एव नियठे वि॥

३१८ सिणाए—पुच्छा।
गोयमा! सुयवतिरित्ते होज्जा॥

तित्थ-पद

३१९. पुलाए ण भते! किं तित्थे होज्जा? अतित्थे होज्जा?
गोयमा! तित्थे होज्जा, नो अतित्थे होज्जा। एव वउसे वि। एव पडिसेवणाकुसीले वि॥

३२०. कसायकुसीले—पुच्छा।
गोयमा! तित्थे वा होज्जा, अतित्थे वा होज्जा॥

३२१. जइ अतित्थे होज्जा किं तित्थकरे होज्जा? पत्तेयबुद्धे होज्जा?
गोयमा! तित्थकरे वा होज्जा, पत्तेयबुद्धे वा होज्जा। एवं नियठे वि। एव सिणाए वि॥

लिंग-पदं

३२२. पुलाए ण भते! किं सलिंगे होज्जा? अण्णलिंगे होज्जा? गिहिलिंगे होज्जा?

गोयमा ! दव्वलिंग पडुच्च सलिगे वा होज्जा, अण्णलिंगे वा होज्जा, गिहिलिंगे वा होज्जा । भावलिंगं पडुच्च नियम सलिगे होज्जा । एव जाव सिणाए ।।

सरीर-पदं

३२३ पुलाए ण भते ! कतिसु सरीरेसु होज्जा ?
गोयमा ! तिसु ओरालिय-तेया[1]-कम्मएसु होज्जा ।।

३२४ वउसे ण भते !—पुच्छा ।
गोयमा ! तिसु वा चउसु वा होज्जा । तिसु होमाणे तिसु ओरालिय-तेया-कम्मएसु होज्जा, चउसु होमाणे चउसु ओरालिय-वेउव्विय-तेया-कम्मएसु होज्जा । एव पडिसेवणाकुसीले वि ।।

३२५ कसायकुसीले—पुच्छा ।
गोयमा ! तिसु वा चउसु वा पचसु वा होज्जा । तिसु होमाणे तिसु ओरालिय-तेया-कम्मएसु होज्जा, चउसु होमाणे चउसु ओरालिय-वेउव्विय-तेया-कम्मएसु होज्जा, पचसु होमाणे पचसु ओरालिय-वेउव्विय-आहारग-तेया-कम्मएसु होज्जा । नियठो सिणाओ य जहा पुलाओ ।।

खेत्त-पद

३२६. पुलाए ण भते ! कि कम्मभूमीए होज्जा ? अकम्मभूमीए होज्जा ?
गोयमा ! जम्मण-सतिभाव पडुच्च कम्मभूमीए होज्जा, णो अकम्मभूमीए होज्जा ।।

३२७ वउसे ण—पुच्छा ।
गोयमा ! जम्मण-सतिभाव पडुच्च कम्मभूमीए होज्जा, नो अकम्मभूमीए होज्जा । साहरण पडुच्च कम्मभूमीए वा होज्जा, अकम्मभूमीए वा होज्जा । एव जाव सिणाए ।।

काल-पद

३२८ पुलाए ण भते ! किं ओसप्पिणिकाले होज्जा ? उस्सप्पिणिकाले होज्जा ? नोओसप्पिणि-नोउस्सप्पिणिकाले वा होज्जा ?
गोयमा ! ओसप्पिणिकाले वा होज्जा, उस्सप्पिणिकाले वा होज्जा, नोओस-प्पिणि-नोउस्सप्पिणिकाले वा होज्जा ।।

३२९ जइ ओसप्पिणिकाले होज्जा कि सुसमसुसमाकाले होज्जा ? सुसमाकाले होज्जा ? सुसमदुस्समाकाले[2] होज्जा ? दुस्समसुसमाकाले होज्जा ? दुस्समा-काले होज्जा ? दुस्समदुस्समाकाले होज्जा ?

---

१. तेय (अ) । २ °दुसमाकाले (अ, ता, म) ।

गोयमा ! जम्मण पडुच्च नो सुसमसुसमाकाले होज्जा, नो सुसमाकाले होज्जा, सुसमदुस्समाकाले वा होज्जा, दुस्समसुसमाकाले वा होज्जा, नो दुस्समाकाले होज्जा, नो दुस्समदुस्समाकाले होज्जा। सतिभाव पडुच्च नो सुसमसुसमाकाले होज्जा, नो सुसमाकाले होज्जा, सुसमदुस्समाकाले वा होज्जा, दुस्समसुसमाकाले वा होज्जा, दुस्समाकाले वा होज्जा, नो दुस्समदुस्समाकाले होज्जा ॥

३३० जइ उस्सप्पिणिकाले होज्जा किं दुस्समदुस्समाकाले होज्जा ? दुस्समाकाले होज्जा ? दुस्समसुसमाकाले होज्जा ? सुसमदुस्समाकाले होज्जा ? सुसमाकाले होज्जा ? सुसमसुसमाकाले होज्जा ?

गोयमा ! जम्मण पडुच्च नो दुस्समदुस्समाकाले होज्जा, दुस्समाकाले वा होज्जा, दुस्समसुसमाकाले वा होज्जा, सुसमदुस्समाकाले वा होज्जा, नो सुसमाकाले होज्जा, नो सुसमसुसमाकाले होज्जा। संतिभाव पडुच्च नो दुस्समदुस्समाकाले होज्जा, नो दुस्समाकाले होज्जा, दुस्समसुसमाकाले वा होज्जा, सुसमदुस्समाकाले वा होज्जा, नो सुसमाकाले होज्जा, नो सुसमसुसमाकाले होज्जा ॥

३३१ जइ नोओसप्पिणि-नोउस्सप्पिणिकाले[1] होज्जा कि सुसमसुसमापलिभागे होज्जा ? सुसमापलिभागे होज्जा ? सुसमदुस्समापलिभागे होज्जा ? दुस्समसुसमापलिभागे होज्जा ?

गोयमा ! जम्मण-सतिभाव पडुच्च नो सुसमसुसमापलिभागे होज्जा, नो सुसमापलिभागे होज्जा, नो सुसमदुस्समापलिभागे होज्जा, दुस्समसुसमापलिभागे होज्जा ॥

३३२ वउसे ण—पुच्छा।

गोयमा ! ओसप्पिणिकाले वा होज्जा, उस्सप्पिणिकाले वा होज्जा, नोओसप्पिणि—नोउस्सप्पिणिकाले वा होज्जा ॥

३३३ जइ ओसप्पिणिकाले होज्जा किं सुसमसुसमाकाले होज्जा—पुच्छा।

गोयमा ! जम्मण-सतिभाव पडुच्च नो सुसमसुसमाकाले होज्जा, नो सुसमाकाले होज्जा। सुसमदुस्समाकाले वा होज्जा, दुस्समसुसमाकाले वा होज्जा, दुस्समाकाले वा होज्जा, नो दुस्समदुस्समाकाले होज्जा। साहरण पडुच्च अण्णयरे समाकाले होज्जा ॥

३३४ जइ उस्सप्पिणिकाले होज्जा कि दुस्समदुस्समाकाले होज्जा - पुच्छा।

गोयमा ! जम्मण पडुच्च नो दुस्समदुस्समाकाले होज्जा जहेव पुलाए। सति-

---

१. जम्म० (अ, क, ग, ता, म)।

भाव पडुच्च नो दुस्समदुस्समाकाले होज्जा, नो दुस्समाकाले होज्जा। एव सतिभावेण वि जहा पुलाए जाव नो सुसमसुसमाकाले होज्जा। साहरण पडुच्च अण्णयरे समाकाले होज्जा ।।

३३५ जइ नोओसप्पिणि-नोउस्सप्पिणिकाले होज्जा—पुच्छा।
गोयमा ! जम्मण-सतिभाव पडुच्च नो सुसमसुसमापलिभागे होज्जा जहेव पुलाए जाव दुस्समसुसमापलिभागे होज्जा। साहरण पडुच्च अण्णयरे पलिभागे होज्जा। जहा वउसे। एव पडिसेवणाकुसीले वि। एव कसायकुसीले वि। नियठो सिणाओ य जहा पुलाओ, नवर—एतेसि अब्भहिय साहरण भाणियव्व। सेस तं चेव ।।

गति-पद

३३६ पुलाए ण भते ! कालगए समाणे क[1] गति गच्छति ?
गोयमा ! देवगतिं गच्छति ।।

३३७ देवगतिं गच्छमाणे कि भवणवासीसु उववज्जेज्जा ? वाणमतरेसु उववज्जेज्जा ? जोइसिएसु उववज्जेज्जा ? वेमाणिएसु उववज्जेज्जा ?
गोयमा ! नो भवणवासीसु, नो वाणमतरेसु, नो जोइसिएसु, वेमाणिएसु उववज्जेज्जा। वेमाणिएसु उववज्जमाणे जहण्णेण सोहम्मे कप्पे, उक्कोसेण सहस्सारे कप्पे उववज्जेज्जा। वउसे ण एव चेव, नवर—उक्कोसेण अच्चुए कप्पे। पडिसेवणाकुसीले जहा वउसे। कसायकुसीले जहा पुलाए, नवर-उक्कोसेण अणुत्तरविमाणेसु उववज्जेज्जा। नियठे ण एव चेव जाव वेमाणिएसु उववज्जमाणे अजहण्णमणुक्कोसेण अणुत्तरविमाणेसु उववज्जेज्जा ।।

३३८ सिणाए ण भते ! कालगए समाणे क गतिं गच्छइ ?
गोयमा ! सिद्धिगतिं गच्छइ ।।

३३९ पुलाए ण भते ! देवेसु उववज्जमाणे किं इदत्ताए उववज्जेज्जा ? सामाणियत्ताए उववज्जेज्जा ? तावत्तीसाए[2] उववज्जेज्जा ? लोगपालत्ताए उववज्जेज्जा ? अहमिदत्ताए[3] उववज्जेज्जा ?
गोयमा ! अविराहण पडुच्च इदत्ताए उववज्जेज्जा, सामाणियत्ताए उववज्जेज्जा, तावत्तीसाए उववज्जेज्जा, लोगपालत्ताए उववज्जेज्जा, नो अहमिदत्ताए उववज्जेज्जा। विराहण पडुच्च अण्णयरेसु[4] उववज्जेज्जा। एव बउसे वि। एव पडिसेवणाकुसीले वि ।।

३४० कसायकुसीले—पुच्छा।

---

१ किं (अ, स)।
२ तावत्तीसगत्ताए (ता)।
३ अहमिदत्ताए वा (स)।
४ भवनपत्यादीनामन्यतरेषु देवेषु (वृ)।

गोयमा ! अविराहणं पडुच्च इंदत्ताए वा उववज्जेज्जा जाव अहमिंदत्ताए वा उववज्जेज्जा। विराहणं पडुच्च अण्णयरेसु उववज्जेज्जा ॥

३४१ नियंठे—पुच्छा।
गोयमा ! अविराहणं पडुच्च नो इंदत्ताए उववज्जेज्जा जाव नो लोगपालत्ताए उववज्जेज्जा, अहमिंदत्ताए उववज्जेज्जा। विराहणं पडुच्च अण्णयरेसु उववज्जेज्जा ॥

३४२. पुलायस्स णं भंते ! देवलोगेसु उववज्जमाणस्स केवतियं कालं ठिती पण्णत्ता ?
गोयमा ! जहण्णेणं पलिओवमपुहत्तं, उक्कोसेणं अट्ठारस सागरोवमाइं ॥

३४३ बउसस्स—पुच्छा।
गोयमा ! जहण्णेणं पलिओवमपुहत्तं, उक्कोसेणं बावीसं सागरोवमाइं। एवं पडिसेवणाकुसीलस्स वि ॥

३४४ कसायकुसीलस्स—पुच्छा।
गोयमा ! जहण्णेणं पलिओवमपुहत्तं, उक्कोसेणं तेत्तीसं सागरोवमाइं ॥

३४५. नियंठस्स—पुच्छा।
गोयमा ! अजहण्णमणुक्कोसेणं तेत्तीसं सागरोवमाइं ॥

संजमट्ठाण-पदं

३४६ पुलागस्स णं भंते ! केवतिया संजमट्ठाणा पण्णत्ता ?
गोयमा ! असंखेज्जा संजमट्ठाणा पण्णत्ता। एवं जाव कसायकुसीलस्स ॥

३४७ नियंठस्स णं भंते ! केवतिया संजमट्ठाणा पण्णत्ता ?
गोयमा ! एगे अजहण्णमणुक्कोसए संजमट्ठाणे। एवं सिणायस्स वि ॥

३४८ एतेसि णं भंते ! पुलाग-बउस-पडिसेवणा-कसायकुसील-नियंठ-सिणायाणं संजमट्ठाणाणं कयरे कयरेहितो[1] •अप्पा वा ? बहुया वा ? तुल्ला वा ?॰ विसेसाहिया वा ?
गोयमा ! सव्वत्थोवे नियंठस्स सिणायस्स य एगे अजहण्णमणुक्कोसए संजमट्ठाणे। पुलागस्स णं संजमट्ठाणा असंखेज्जगुणा। बउसस्स संजमट्ठाणा असंखेज्जगुणा। पडिसेवणाकुसीलस्स संजमट्ठाणा असंखेज्जगुणा। कसायकुसीलस्स संजमट्ठाणा असंखेज्जगुणा ॥

निगास-पदं

३४९ पुलागस्स णं भंते ! केवतिया चरित्तपज्जवा पण्णत्ता ?
गोयमा ! अणंता चरित्तपज्जवा पण्णत्ता। एवं जाव सिणायस्स ॥

---

१. म० पा०—कयरेहिंतो जाव विसेसाहिया।

३५०. पुलाए णं भते ! पुलागस्स सट्ठाणसण्णिगासेणं चरित्तपज्जवेहिं किं हीणे ? तुल्ले ? अब्भहिए ?
गोयमा ! सिय हीणे, सिय तुल्ले, सिय अब्भहिए।
जइ हीणे अणतभागहीणे वा, असखेज्जइभागहीणे वा, सखेज्जइभागहीणे वा, सखेज्जगुणहीणे वा, असखेज्जगुणहीणे वा, अणतगुणहीणे वा। अह अब्भहिए अणतभागमब्भहिए वा, असखेज्जइभागमब्भहिए वा, सखेज्जभागमब्भहिए वा, सखेज्जगुणमब्भहिए वा, असखेज्जगुणमब्भहिए वा, अणतगुणमब्भहिए वा[1] ॥

३५१ पुलाए ण भते ! वउसस्स परट्ठाणसण्णिगासेण चरित्तपज्जवेहिं कि हीणे ? तुल्ले ? अब्भहिए ?
गोयमा ! हीणे, नो तुल्ले, नो अब्भहिए, अणतगुणहीणे। एव पडिसेवणाकुसीलस्स वि। कसायकुसीलेण समं छट्ठाणवडिए जहेव सट्ठाणे। नियठस्स जहा वउसस्स। एव सिणायस्स वि ॥

३५२ वउसे ण भते ! पुलागस्स परट्ठाणसण्णिगासेण चरित्तपज्जवेहि किं हीणे ? तुल्ले ? अब्भहिए ?
गोयमा ! नो हीणे, नो तुल्ले, अब्भहिए—अणतगुणमब्भहिए ॥

३५३ वउसे णं भते ! वउसस्स सट्ठाणसण्णिगासेण चरित्तपज्जवेहिं—पुच्छा।
गोयमा ! सिय हीणे, सिय तुल्ने, सिय अब्भहिए। जइ हीणे छट्ठाणवडिए ॥

३५४ वउसे ण भते ! पडिसेवणाकुसीलस्स परट्ठाणसण्णिगासेण चरित्तपज्जवेहिं किं हीणे० ? छट्ठाणवडिए। एव कसायकुसीलस्स वि ॥

३५५ वउसे णं भते ! नियठस्स परट्ठाणसण्णिगासेण चरित्तपज्जवेहिं—पुच्छा।
गोयमा ! हीणे, नो तुल्ले, नो अब्भहिए, अणत गुणहीणे। एव सिणायस्स वि। पडिसेवणाकुसीलस्स एव चेव बउसवत्तव्वया भाणियव्वा। कसायकुसीलस्स एस चेव वउसवत्तव्वया, नवर—पुलाएण वि सम छट्ठाणवडिए ॥

३५६ नियठे ण भते ! पुलागस्स परट्ठाणसण्णिगासेण चरित्तपज्जवेहिं—पुच्छा।

---

१. वृत्तौ असद्भावस्थापनया षट्स्थानपतितमेतद् उदाहृतमस्ति—

	हीन				अधिक		
१	अनन्तभागहीन	१००००	९९००	१	अनन्तभागअधिक	९९००	१००००
२.	असख्यातभागहीन	१००००	९८००	२	असख्यातभागअधिक	९८००	१००००
३	सख्यातभागहीन	१००००	९०००	३	सख्यातभागअधिक	९०००	१००००
४	सख्यातगुणहीन	१००००	१०००	४	सख्यातगुणअधिक	१०००	१००००
५	असख्यातगुणहीन	१००००	२००	५	असख्यातगुणअधिक	२००	१००००
६	अनन्तगुणहीन	१००००	१००	६	अनन्तगुणअधिक	१००	१००००

गोयमा ! नो हीणे, नो तुल्ले, अब्भहिए—अणतगुणमब्भहिए। एव जाव कसायकुसीलस्स ॥

३५७. नियठे ण भते ! नियठस्स सट्ठाणसण्णिगासेणं—पुच्छा।
गोयमा ! नो हीणे, तुल्ले, नो अब्भहिए ॥

३५८ [1]°नियंठस्स ण भते ! सिणायस्स परट्ठाणसण्णिगासेण—पुच्छा।
गोयमा ! नो हीणे, तुल्ले, नो अब्भहिए ॥°

३५९ सिणाए ण भते ! पुलागस्स परट्ठाणसण्णिगासेण [2]°चरित्तपज्जवेहि—पुच्छा।
गोयमा ! नो हीणे, नो तुल्ले, अब्भहिए—अणतगुणमब्भहिए। एव जाव कसायकुसीलस्स ॥

३६० सिणाए ण भते ! नियठस्स परट्ठाणसण्णिगासेणं—पुच्छा।
गोयमा ! नो हीणे, तुल्ले, नो अब्भहिए° ॥

३६१ सिणाए ण भते ! सिणायस्स सट्ठाणसण्णिगासेणं—पुच्छा।
गोयमा ! नो हीणे, तुल्ले, नो अब्भहिए ॥

३६२ एएसि णं भते ! पुलाग-वउस-पडिसेवणाकुसील-कसायकुसील-नियंठ-सिणायाण जहण्णुक्कोसगाण चरित्तपज्जवाण कयरे कयरेहिंतो[3] °अप्पा वा ? वहुया वा ? तुल्ला वा ?° विसेसाहिया वा ?
गोयमा ! १. पुलागस्स कसायकुसीलस्स य एएसि णं जहण्णगा चरित्तपज्जवा दोण्ह वि तुल्ला सव्वत्थोवा २. पुलागस्स उक्कोसगा चरित्तपज्जवा अणंतगुणा ३. वउसस्स पडिसेवणाकुसीलस्स य एएसि ण जहण्णगा चरित्तपज्जवा दोण्ह वि तुल्ला अणतगुणा ४. वउसस्स उक्कोसगा चरित्तपज्जवा अणतगुणा ५ पडिसेवणाकुसीलस्स उक्कोसगा चरित्तपज्जवा अणंतगुणा ६ कसायकुसीलस्स उक्कोसगा चरित्तपज्जवा अणतगुणा ७ नियठस्स सिणायस्स य एतेसि ण अजहण्णमणुक्कोसगा चरित्तपज्जवा दोण्ह वि तुल्ला अणतगुणा ॥

जोग-पद

३६३ पुलाए ण भते ! किं सजोगी होज्जा ? अजोगी होज्जा ?
गोयमा ! सजोगी होज्जा, नो अजोगी होज्जा ॥

३६४ जइ सजोगी होज्जा किं मणजोगी होज्जा ? वइजोगी होज्जा ? कायजोगी होज्जा ?
गोयमा ! मणजोगी वा होज्जा, वइजोगी वा होज्जा, कायजोगी वा होज्जा। एव जाव नियठे ॥

---

१. स० पा०—एव सिणायस्स वि। तहा सिणायस्स वि भाणियव्वा जाव सिणाए।
२. म० पा०—एवं जहा नियंठस्स वत्तव्वया
३. म० पा०—कयरेहिंतो जाव विसेसाहिया।

३६५ सिणाए णं—पुच्छा।
गोयमा! सजोगी वा होज्जा, अजोगी वा होज्जा। जइ सजोगी होज्जा किं मणजोगी होज्जा—सेस जहा पुलागस्स॥

उवओग-पदं

३६६ पुलाए ण भते! किं सागारोवउत्ते होज्जा? अणागारोवउत्ते होज्जा?
गोयमा! सागारोवउत्ते वा होज्जा, अणागारोवउत्ते वा होज्जा। एव जाव सिणाए॥

कसाय-पदं

३६७ पुलाए ण भते। सकसायी होज्जा? अकसायी होज्जा?
गोयमा! सकसायी होज्जा, नो अकसायी होज्जा॥

३६८ जइ सकसायी होज्जा, से ण भते! कतिसु कसाएसु होज्जा?
गोयमा! चउसु कोह-माण-माया-लोभेसु होज्जा। एव बउसे वि। एव पडिसेवणाकुसीले वि॥

३६९ कसायकुसीले ण - पुच्छा।
गोयमा! सकसायी होज्जा, नो अकसायी होज्जा॥

३७० जइ सकसायी होज्जा, से ण भते! कतिसु कसाएसु होज्जा?
गोयमा! चउसु वा तिसु वा दोसु वा एगम्मि वा होज्जा। चउसु होमाणे चउसु सजलणकोह-माण-माया-लोभेसु होज्जा, तिसु होमाणे तिसु सजलणमाण-माया-लोभेसु होज्जा, दोसु होमाणे सजलणमाया-लोभेसु होज्जा, एगम्मि होमाणे सजलणलोभे होज्जा॥

३७१ नियठे ण—पुच्छा।
गोयमा! नो सकसायी होज्जा, अकसायी होज्जा॥

३७२ जइ अकसायी होज्जा किं उवसतकसायी होज्जा? खीणकसायी होज्जा?
गोयमा! उवसतकसायी वा होज्जा, खीणकसायी वा होज्जा। सिणाए एव चेव, नवर—नो उवसतकसायी होज्जा, खीणकसायी होज्जा॥

लेस्सा-पदं

३७३ पुलाए ण भते! किं सलेस्से होज्जा? अलेस्से होज्जा?
गोयमा! सलेस्से होज्जा, नो अलेस्से होज्जा॥

३७४. जइ सलेस्से होज्जा, से ण भते! कतिसु लेस्सासु होज्जा?
गोयमा! तिसु विसुद्धलेस्सासु होज्जा, त जहा—तेउलेस्साए, पम्हलेस्साए, सुक्कलेस्साए। एव बउसस्स वि। एव पडिसेवणाकुसीले वि॥

३७५ कसायकुसीले—पुच्छा।
गोयमा! सलेस्से होज्जा, नो अलेस्से होज्जा॥

३७६. जइ सलेस्से होज्जा, से ण भते ! कतिसु लेस्सासु होज्जा ?
गोयमा ! छसु लेस्सासु होज्जा, त जहा—कण्हलेस्साए जाव सुक्कलेस्साए ॥

३७७ नियठे ण भते !—पुच्छा ।
गोयमा ! सलेस्से होज्जा, नो अलेस्से होज्जा ॥

३७८. जइ सलेस्से होज्जा, से ण भते ! कतिसु लेस्सासु होज्जा ?
गोयमा ! एक्काए सुक्कलेस्साए होज्जा ॥

३७९ सिणाए—पुच्छा ।
गोयमा ! सलेस्से वा होज्जा, अलेस्से वा होज्जा ॥

३८० जइ सलेस्से होज्जा, से ण भते ! कतिसु लेस्सासु होज्जा ?
गोयमा ! एगाए परमसुक्कलेस्साए होज्जा ॥

परिणाम-पदं

३८१ पुलाए ण भते ! किं वड्ढमाणपरिणामे होज्जा ? हायमाणपरिणामे[1] होज्जा ? अवट्ठियपरिणामे होज्जा ?
गोयमा ! वड्ढमाणपरिणामे वा होज्जा, हायमाणपरिणामे वा होज्जा, अवट्ठियपरिणामे वा होज्जा । एव जाव कसायकुसीले ॥

३८२ नियंठे ण—पुच्छा ।
गोयमा ! वड्ढमाणपरिणामे होज्जा, नो हायमाणपरिणामे होज्जा, अवट्ठियपरिणामे वा होज्जा । एव सिणाए वि ॥

३८३. पुलाए ण भते ! केवतिय काल वड्ढमाणपरिणामे होज्जा ?
गोयमा ! जहण्णेण एक्क समय, उक्कोसेण अंतोमुहुत्त ॥

३८४ केवतिय काल हायमाणपरिणामे होज्जा ?
गोयमा ! जहण्णेणं एक्क समय, उक्कोसेण अतोमुहुत्त ॥

३८५ केवतिय काल अवट्ठियपरिणामे होज्जा ?
गोयमा ! जहण्णेण एक्कं समय, उक्कोसेण सत्त समया । एव जाव कसायकुसीले ॥

३८६ नियठे ण भते ! केवतियं काल वड्ढमाणपरिणामे होज्जा ?
गोयमा ! जहण्णेण अतोमुहुत्त, उक्कोसेण वि अतोमुहुत्त ॥

३८७. केवतिय काल अवट्ठियपरिणामे होज्जा ?
गोयमा ! जहण्णेण एक्क समय, उक्कोसेण अतोमुहुत्त ॥

३८८ सिणाए ण भते ! केवतिय काल वड्ढमाणपरिणामे होज्जा ?
गोयमा ! 'जहण्णेण वि'[2] अतोमुहुत्त, उक्कोसेण वि अतोमुहुत्त ॥

---

१. हीयमाण० (म, स) ।
२ जहण्णेण्णं (अ क ख. व, म, स) ।

३८९. केवतियं काल अवट्ठियपरिणामे होज्जा ?
गोयमा ! जहण्णेण अतोमुहुत्त, उक्कोसेण देसूणा पुव्वकोडी ॥

बंध-पदं

३९० पुलाए ण भते ! कति कम्मप्पगडीओ बधति ?
गोयमा ! आउयवज्जाओ सत्त कम्मप्पगडीओ बधति ॥

३९१ वउसे—पुच्छा ।
गोयमा ! सत्तविहबधए वा, अट्ठविहबधए वा । सत्त बधमाणे आउयवज्जाओ सत्त कम्मप्पगडीओ बधति, अट्ठ बधमाणे पडिपुण्णाओ अट्ठ कम्मप्पगडीओ बधति । एव पडिसेवणाकुसीले वि ॥

३९२. कसायकुसीले पुच्छा ।
गोयमा ! सत्तविहबधए वा, अट्ठविहबधए वा, छव्विहबधए वा । सत्त बधमाणे आउयवज्जाओ सत्त कम्मप्पगडीओ बधति, अट्ठ बधमाणे पडिपुण्णाओ अट्ठ कम्मप्पगडीओ बधति, छ बधमाणे आउय-मोहणिज्जवज्जाओ छक्कम्मप्पगडीओ बधति ॥

३९३ नियठे ण—पुच्छा ।
गोयमा ! एग वेयणिज्ज कम्मं बधइ ॥

३९४ सिणाए—पुच्छा ।
गोयमा ! एगविहबधए वा, अबधए वा । एग बधमाणे एग वेयणिज्ज कम्म बधइ ॥

वेदण-पदं

३९५ पुलाए ण भते ! कति कम्मप्पगडीओ वेदेइ ?
गोयमा ! नियम अट्ठ कम्मप्पगडीओ वेदेइ । एव जाव कसायकुसीले ॥

३९६ नियठे ण—पुच्छा ।
गोयमा ! मोहणिज्जवज्जाओ सत्त कम्मप्पगडीओ वेदेइ ॥

३९७ सिणाए ण—पुच्छा ।
गोयमा ! वेयणिज्ज-आउय-नाम-गोयाओ चत्तारि कम्मप्पगडीओ वेदेइ ॥

उदीरणा-पदं

३९८ पुलाए ण भते ! कति कम्मप्पगडीओ उदीरेति ?
गोयमा ! आउय-वेयणिज्जवज्जाओ छ कम्मप्पगडीओ उदीरेति ॥

३९९ वउसे—पुच्छा ।

गोयमा ! सत्तविहउदीरए वा, अट्ठविहउदीरए वा, छव्विहउदीरए वा। सत्त उदीरेमाणे आउयवज्जाओ सत्त कम्मप्पगडीओ उदीरेति, अट्ठ उदीरेमाणे पडिपुण्णाओ अट्ठ कम्मप्पगडीओ उदीरेति, छ उदीरेमाणे आउय-वेयणिज्ज-वज्जाओ छ कम्मप्पगडीओ उदीरेति। पडिसेवणाकुसीले एवं चेव ॥

४०० कसायकुसीले—पुच्छा।
गोयमा ! सत्तविहउदीरए वा, अट्ठविहउदीरए वा, छव्विहउदीरए वा, पच-विहउदीरए वा। सत्त उदीरेमाणे आउयवज्जाओ सत्त कम्मप्पगडीओ उदीरेति, अट्ठ उदीरेमाणे पडिपुण्णाओ अट्ठ कम्मप्पगडीओ उदीरेति, छ उदीरेमाणे आउय-वेयणिज्जवज्जाओ छ कम्मप्पगडीओ उदीरेति, पच उदीरेमाणे आउय-वेयणिज्ज-मोहणिज्जवज्जाओ पच कम्मप्पगडीओ उदीरेति ॥

४०१ नियठे—पुच्छा।
गोयमा ! पचविहउदीरए वा, दुविहउदीरए वा। पच उदीरेमाणे आउय-वेयणिज्ज-मोहणिज्जवज्जाओ पच कम्मप्पगडीओ उदीरेति, दो उदीरेमाणे नाम च गोय च उदीरेति ॥

४०२ सिणाए—पुच्छा।
गोयमा ! दुविहउदीरए वा, अणुदीरए वा। दो उदीरेमाणे नाम च गोयं च उदीरेति ॥

उवसंपज्जहण-पदं

४०३ पुलाए ण भते ! पुलायत्त जहमाणे कि जहति ? कि उवसपज्जति ?
गोयमा ! पुलायत्त जहति। कसायकुसील[1] वा अस्सजमं वा उवसपज्जति ॥

४०४ बउसे णं भते ! बउसत्त जहमाणे किं जहति ? कि उवसंपज्जति ?
गोयमा ! बउसत्तं जहति। पडिसेवणाकुसीलं वा कसायकुसील वा अस्सजम वा सजमासजमं वा उवसपज्जति ॥

४०५. पडिसेवणाकुसीले ण[2]—पुच्छा।
गोयमा ! पडिसेवणाकुसीलत्तं जहति। बउस वा कसायकुसील वा अस्सजम वा सजमासजम वा उवसपज्जति ॥

४०६ कसायकुसीले ण—पुच्छा।
गोयमा ! कसायकुसीलत्त जहति। पुलाय वा बउस वा पडिसेवणाकुसील वा नियठ वा अस्सजम वा सजमासंजमं वा उवसपज्जति ॥

---

१. इह भावप्रत्ययलोपात् कषायकुशीलत्वमित्यादि दृश्यम् (वृ)। २. णं भंते ! पडि (अ, क, ख, ब, म, स)।

४०७. णियठे—पुच्छा ।
गोयमा ! नियठत्त जहति । कसायकुसील वा सिणाय वा अस्सजम वा उवसपज्जति ।।

४०८. सिणाए—पुच्छा ।
गोयमा ! सिणायत्तं जहति । सिद्धिगति उवसपज्जति ।।

सण्णा-पदं

४०९. पुलाए ण भते ! कि सण्णोवउत्ते होज्जा ? नोसण्णोवउत्ते होज्जा ?
गोयमा ! नोसण्णोवउत्ते होज्जा ।।

४१०. वउसे ण भते !—पुच्छा ।
गोयमा ! सण्णोवउत्ते वा होज्जा, नो सण्णोवउत्ते वा होज्जा । एव पडिसेवणाकुसीले वि । एव कसायकुसीले वि । नियठे सिणाए य जहा पुलाए ।।

आहार-पदं

४११ पुलाए ण भते ! कि आहारए होज्जा ? अणाहारए होज्जा ?
गोयमा ! आहारए होज्जा, नो अणाहारए होज्जा । एव जाव नियठे ।।

४१२ सिणाए—पुच्छा ।
गोयमा ! आहारए वा होज्जा, अणाहारए वा होज्जा ।।

भव-पदं

४१३ पुलाए ण भंते ! कति भवग्गहणाइ होज्जा ?
गोयमा ! जहण्णेण एक्क, उक्कोसेण तिण्णि ।।

४१४ वउसे—पुच्छा ।
गोयमा ! जहण्णेण एक्क, उक्कोसेण अट्ठ । एव पडिसेवणाकुसीले वि । एव कसायकुसीले वि । नियठे जहा पुलाए ।।

४१५. सिणाए—पुच्छा ।
गोयमा ! एक्क ।।

आगरिस-पद

४१६ पुलागस्स ण भते ! एगभवग्गहणीया केवतिया आगरिसा पण्णत्ता ?
गोयमा ! जहण्णेण एक्को, उक्कोसेण तिण्णि ।।

४१७ वउसस्स ण—पुच्छा ।
गोयमा ! जहण्णेण एक्को, उक्कोसेण सतग्गसो । एव पडिसेवणाकुसीले वि, कसायकुसीले[1] वि ।।

---

१. एव कसाय° (व) ।

४१८. नियठस्स ण—पुच्छा।
गोयमा ! जहण्णेण एक्को, उक्कोसेण दोण्णि ॥

४१९. सिणायस्स ण—पुच्छा।
गोयमा ! एक्को[1] ॥

४२० पुलागस्स ण भते ! नाणाभवग्गहणीया केवतिया आगरिसा पण्णत्ता ?
गोयमा ! जहण्णेण दोण्णि, उक्कोसेण सत्त ॥

४२१ बउसस्स—पुच्छा।
गोयमा ! जहण्णेण दोण्णि, उक्कोसेण सहस्सग्गसो[2]। एव जाव कसायकुसीलस्स ॥

४२२ नियठस्स ण—पुच्छा।
गोयमा ! जहण्णेण दोण्णि, उक्कोसेण पच ॥

४२३ सिणायस्स—पुच्छा।
गोयमा ! नत्थि एक्को वि ॥

काल-पद

४२४. पुलाए ण भते ! कालग्रो केवच्चिर होइ ?
गोयमा ! जहण्णेणं अतोमुहुत्त, उक्कोसेण वि अतोमुहुत्त ॥

४२५. बउसे—पुच्छा।
गोयमा ! जहण्णेण एक्क समय, उक्कोसेण देसूणा पुव्वकोडी। एव पडिसेवणा-कुसीले वि, कसायकुसीले वि ॥

४२६ नियठे—पुच्छा।
गोयमा ! जहण्णेण एक्क समय, उक्कोसेण अतोमुहुत्त ॥

४२७ सिणाए—पुच्छा।
गोयमा ! जहण्णेण अतोमुहुत्त, उक्कोसेण देसूणा पुव्वकोडी ॥

४२८ पुलाया ण भते ! कालग्रो केवच्चिर होति ?
गोयमा ! जहण्णेण एक्क समय, उक्कोसेण अतोमुहुत्त ॥

४२९ बउसा ण—पुच्छा।
गोयमा ! सव्वद्धं। एव जाव कसालकुसीला। नियठा जहा पुलागा। सिणाया जहा बउसा ॥

अंतर-पदं

४३० पुलागस्स ण भते ! केवतिय काल अतर होइ ?

---

१. एक्को वि नत्थि (म, स)। २ सहस्ससो (अ, क, ख, ता, म)।

गोयमा ! जहण्णेण अतोमुहुत्त, उक्कोसेण अणत काल—अणताओ ओसप्पिणि-उस्सप्पिणीओ कालओ, खेत्तओ अवड्ढ पोग्गलपरियट्ट देसूण। एव जाव नियठस्स।

४३१. सिणायस्स—पुच्छा।
गोयमा ! 'नत्थि अतरं'[1] ॥

४३२ पुलायाण भते ! केवतिय काल अतर होइ ?
गोयमा ! जहण्णेण एक्क समय, उक्कोसेण सखेज्जाइ वासाइ ॥

४३३ वउसाण भते !—पुच्छा।
गोयमा ! नत्थि अतर। एव जाव कसायकुसीलाण ॥

४३४ नियठाण—पुच्छा।
गोयमा ! जहण्णेण एक्क समय, उक्कोसेण छम्मासा। सिणायाण जहा वउसाण ॥

समुग्घाय-पदं

४३५ पुलागस्स ण भते ! कति समुग्घाया पण्णत्ता ?
गोयमा ! तिण्णि समुग्घाया पण्णत्ता, त जहा—वेयणासमुग्घाए, कसाय-समुग्घाए, मारणतियसमुग्घाए ॥

४३६ बउसस्स ण भते !—पुच्छा।
गोयमा ! पच समुग्घाया पण्णत्ता, त जहा—वेयणासमुग्घाए जाव तेया-समुग्घाए। एव पडिसेवणाकुसीले वि ॥

४३७ कसायकुसीलस्स—पुच्छा।
गोयमा ! छ समुग्घाया पण्णत्ता, त जहा—वेयणासमुग्घाए जाव आहार-समुग्घाए[2] ॥

४३८ नियठस्स ण—पुच्छा।
गोयमा ! नत्थि एक्को वि ॥

४३९ सिणायस्स—पुच्छा।
गोयमा ! एगे केवलिसमुग्घाए पण्णत्ते ॥

खेत्त-पदं

४४० पुलाए ण भते ! लोगस्स कि सखेज्जइभागे होज्जा ? असखेज्जइभागे होज्जा ? सखेज्जेसु भागेसु होज्जा ? असखेज्जेसु भागेसु होज्जा ? सव्वलोए होज्जा ?
गोयमा ! नो सखेज्जइभागे होज्जा, असखेज्जइभागे होज्जा, नो सखेज्जेसु

---

१ नत्थतर (अ, क, ख, ता, व, म)। २. आहारगसमुग्घाए (ब, म)।

भागेसु होज्जा, नो असखेज्जेसु भागेसु होज्जा, नो सव्वलोए होज्जा। एवं जाव नियठे ॥

४४१ सिणाए ण—पुच्छा।
गोयमा ! नो सखेज्जइभागे होज्जा, असंखेज्जइभागे होज्जा, नो सखेज्जेसु भागेसु होज्जा, असखेज्जेसु भागेसु होज्जा, सव्वलोए वा होज्जा ॥

फुसणा-पदं

४४२ पुलाए ण भते ! लोगस्स कि सखेज्जइभाग फुसइ ? असखेज्जइभाग फुसइ ? एव जहा ओगाहणा भणिया तहा फुसणा वि भाणियव्वा जाव सिणाए ॥

भाव-पदं

४४३ पुलाए ण भते ! कतरम्मि भावे होज्जा ?
गोयमा ! खओवसमिए भावे होज्जा। एव जाव कसायकुसीले ॥

४४४ नियठे—पुच्छा।
गोयमा ! ओवसमिए वा[1] खइए वा भावे होज्जा ॥

४४५. सिणाए—पुच्छा।
गोयमा ! खइए भावे होज्जा ॥

परिमाण-पदं

४४६ पुलाया ण भते ! एगसमएणं केवतिया होज्जा ?
गोयमा ! पडिवज्जमाणए पडुच्च सिय अत्थि, सिय नत्थि। जइ अत्थि जहण्णेणं एक्को वा दो वा तिण्णि वा, उक्कोसेण सयपुहत्त। पुव्वपडिवण्णए पडुच्च सिय अत्थि, सिय नत्थि। जइ अत्थि जहण्णेण एक्को वा दो वा तिण्णि वा, उक्कोसेण सहस्सपुहत्त ॥

४४७ वउसा ण भते ! एगसमएण—पुच्छा।
गोयमा ! पडिवज्जमाणए पडुच्च सिय अत्थि, सिय नत्थि। जइ अत्थि जहण्णेण एक्को वा दो वा तिण्णि वा, उक्कोसेण सयपुहत्त पुव्वपडिवण्णए पडुच्च जहण्णेण कोडिसयपुहत्त, उक्कोसेण वि कोडिसयपुहत्त। एव पडिसेवणा-कुसीले वि ॥

४४८ कसायकुसीलाण—पुच्छा।
गोयमा ! पडिवज्जमाणए पडुच्च सिय अत्थि, सिय नत्थि। जइ अत्थि जहण्णेण एक्को वा दो वा तिण्णि वा, उक्कोसेण सहस्सपुहत्त। पुव्वपडिवण्णए पडुच्च जहण्णेण कोडिसहस्सपुहत्त, उक्कोसेण वि कोडिसहस्सपुहत्त ॥

४४९ नियंठाण—पुच्छा।

---

१. भावे वा (ता)।

गोयमा ! पडिवज्जमाणए पडुच्च सिय अत्थि, सिय नत्थि । जइ अत्थि जहण्णेण एक्को वा दो वा तिण्णि वा, उक्कोसेण वावट्ठ सत—अट्ठसय खवगाण, चउप्पन्न उवसामगाण[1] । पुव्वपडिवण्णए पडुच्च सिय अत्थि, सिय नत्थि । जइ अत्थि जहण्णेण एक्को वा दो वा तिण्णि वा, उक्कोसेण सयपुहत्त ।।

४५० सिणायाण—पुच्छा ।
गोयमा ! पडिवज्जमाणए पडुच्च सिय अत्थि, सिय नत्थि । जइ अत्थि जहण्णेणं एक्को वा दो वा तिण्णि वा, उक्कोसेण अट्ठसत । पुव्वपडिवण्णए पडुच्च जहण्णेण कोडिपुहत्त, उक्कोसेण वि कोडिपुहत्त ।।

अप्पाबहुयत्त-पदं

४५१. एएसि ण भते ! पुलाग-बउस-पडिसेवणाकुसील-कसायकुसील-नियठ-सिणायाण कयरे कयरेहिंतो[2] •अप्पा वा ? बहुया वा ? तुल्ला वा ?° विसेसाहिया वा ?
गोयमा ! सव्वत्थोवा नियठा, पुलागा सखेज्जगुणा, सिणाया सखेज्जगुणा, वउसा सखेज्जगुणा, पडिसेवणाकुसीला सखेज्जगुणा, कसायकुसीला सखेज्जगुणा ।।

४५२. सेव भते ! सेव भते ! त्ति जाव[3] विहरइ ।।

सत्तमो उद्देसो

पण्णवण-पद

४५३ कति ण भते ! संजया पण्णत्ता ?
गोयमा ! पच सजया पण्णत्ता, त जहा—सामाइयसजए, छेदोवट्ठावणियसजए[4], परिहारविसुद्धियसजए[5], सुहुमसपरायसजए, अहक्खायसजए ।।

४५४ सामाइयसजए ण भते ! कतिविहे पण्णत्ते ?
गोयमा ! दुविहे पण्णत्ते, त जहा—इत्तरिए य, आवकहिए य ।।

४५५ छेदोवट्ठावणियसजए ण—पुच्छा ।
गोयमा ! दुविहे पण्णत्ते, त जहा—सातियारे य, निरतियारे य ।।

४५६. परिहारविसुद्धियसजए—पुच्छा ।

---

१. उवसमगाण (स) ।
२. स० पा०—कयरेहिंतो जाव विसेसाहिया ।
३. भ० १।५१ ।
४. °ट्ठाणिय° (ता) ।
५. °विसुद्धिसजए (ख) ।

गोयमा ! दुविहे पण्णत्ते, त जहा—निव्विसमाणए य, निव्विट्ठकाइए य ॥

४५७ सुहुमसपरायसजए—पुच्छा ।
गोयमा ! दुविहे पण्णत्ते, त जहा—सकिलिस्समाणए य, विसुज्झमाणए[1] य ॥

४५८ अहक्खायसजए—पुच्छा ।
गोयमा ! दुविहे पण्णत्ते, त जहा—छउमत्थे य, केवली य ॥

संगहणी-गाहा

सामाइयम्मि उ कए, चाउज्जाम अणुत्तर धम्म ।
तिविहेण फासयतो, सामाइयसजओ स खलु ॥१॥
छेत्तूण उ परियाग, पोराण जो ठवेइ अप्पाणं ।
धम्मम्मि पचजामे, छेदोवट्ठावणो स खलु ॥२॥
परिहरइ जो विसुद्ध, तु पचयाम अणुत्तर धम्म ।
तिविहेण फासयतो, परिहारियसजओ स खलु ॥३॥
लोभाणू[2] वेदेतो[3], जो खलु उवसामओ व खवओ वा ।
सो सुहुमसंपराओ, अहखाया[4] ऊणओ किंचि ॥४॥
उवसते खीणम्मि व, जो खलु कम्मम्मि मोहणिज्जम्मि ।
छउमत्थो व जिणो वा, अहखाओ सजओ स खलु ॥५॥

वेद-पद

४५९ सामाइयसजए ण भते ! किं सवेदए होज्जा ? अवेदए होज्जा ?
गोयमा ! सवेदए वा होज्जा, अवेदए वा होज्जा । जइ सवेदए—एवं जहा[5] कसायकुसीले तहेव निरवसेस । एव छेदोवट्ठावणियसजए वि । परिहारविसुद्धिय-सजओ जहा[6] पुलाओ । सुहुमसपरायसजओ अहक्खायसजओ य जहा[7] नियठो ॥

राग-पदं

४६० सामाइयसजए ण भते ! किं सरागे होज्जा ? वीयरागे होज्जा ?
गोयमा ! सरागे होज्जा, नो वीयरागे होज्जा । एव जाव सुहुमसपरायसजए । अहक्खायसजए । जहा[8] नियठे ॥

---

१. विसुद्धमाणए (ता) ।
२ लोभमणु (अ, क), लोभाणु (ख, ता, म, स), लोभाणु (व) ।
३. वेदयतो (अ), वेयतो (ता) ।
४. अहक्खाया (अ, क, ख, व, म, स) ।
५. भ० २५।२९१, २९२ ।
६. भ० २५।२८६,२८७ ।
७ भ० २५।२९३,२९४ ।
८. भ० २५।२९७,२९८ ।

कप्प-पदं

४६१. सामाइयसजए ण भते ! कि ठियकप्पे होज्जा ? अट्ठियकप्पे होज्जा ?
गोयमा ! ठियकप्पे वा होज्जा, अट्ठियकप्पे वा होज्जा ॥

४६२. छेदोवट्ठावणियसजए—पुच्छा।
गोयमा ! ठियकप्पे होज्जा, नो अट्ठियकप्पे होज्जा। एव परिहारविसुद्धिय-सजए वि। सेसा जहा सामाइयसजए ॥

४६३ सामाइयसजए ण भते ! किं जिणकप्पे होज्जा ? थेरकप्पे होज्जा ? कप्पातीते होज्जा ?
गोयमा ! जिणकप्पे वा होज्जा, जहा[1] कसायकुसीले तहेव निरवसेस। छेदो-वट्ठावणिओ परिहारविसुद्धिओ य जहा[2] बउसो। सेसा जहा[3] नियठे ॥

नियंठ-पद

४६४ सामाइयसजए ण भते ! किं पुलाए होज्जा ? बउसे जाव सिणाए होज्जा ?
गोयमा ! पुलाए वा होज्जा, बउसे जाव कसायकुसीले वा होज्जा, नो नियठे होज्जा, नो सिणाए होज्जा। एव छेदोवट्ठावणिए वि ॥

४६५. परिहारविसुद्धियसजए ण—पुच्छा।
गोयमा ! नो पुलाए, नो बउसे, नो पडिसेवणाकुसीले होज्जा; कसायकुसीले होज्जा, नो नियठे होज्जा, नो सिणाए होज्जा। एव सुहुमसपराए वि ॥

४६६ अहक्खायसजए—पुच्छा।
गोयमा ! नो पुलाए होज्जा जाव नो कसायकुसीले होज्जा, नियठे वा होज्जा, सिणाए वा होज्जा ॥

पडिसेवणा-पदं

४६७. सामाइयसजए ण भते ! किं पडिसेवए होज्जा? अपडिसेवए होज्जा ?
गोयमा ! पडिसेवए वा होज्जा, अपडिसेवए वा होज्जा। जइ पडिसेवए होज्जा—किं मूलगुणपडिसेवए होज्जा, सेस जहा[4] पुलागस्स। जहा सामाइय-सजए एव छेदोवट्ठावणिए वि ॥

४६८ परिहारविसुद्धियसंजए—पुच्छा।
गोयमा ! नो पडिसेवए होज्जा, अपडिसेवए होज्जा। एव जाव अहक्खाय-सजए ॥

---

१. भ० २५।३०२।
२. भ० २५।३०१।
३ भ० २५।३०३।
४ भ० २५।३०८।

नाण-पदं

४६९. सामाइयसंजए ण भते ! कतिसु नाणेसु होज्जा ?
गोयमा ! दोसु वा तिसु वा चउसु वा नाणेसु होज्जा । एव जहा[1] कसायकुसी-लस्स तहेव चत्तारि नाणाइ भयणाए । एव जाव सुहुमसपराए । अहक्खाय-सजयस्स पच नाणाइ भयणाए जहा[2] नाणुद्देसए ।।

४७० सामाइयसजए ण भते ! केवतिय सुय अहिज्जेज्जा ?
गोयमा ! जहण्णेण अट्ठ पवयणमायाओ, जहा[3] कसायकुसीले । एव छेदोवट्ठाव-णिए वि ।।

४७१ परिहारविसुद्धियसजए—पुच्छा ।
गोयमा ! जहण्णेण नवमस्स पुव्वस्स ततिय आयारवत्थु, उक्कोसेण असपुण्णाइ दस पुव्वाइ अहिज्जेज्जा । सुहुमसपरायसजए जहा सामाइयसजए ।।

४७२ अहक्खायसजए—पुच्छा ।
गोयमा ! जहण्णेण अट्ठ पवयणमायाओ, उक्कोसेणं चोद्दस पुव्वाइ अहिज्जेज्जा, सुयवतिरित्ते वा होज्जा ।।

तित्थ-पदं

४७३ सामाइयसजए ण भते ! कि तित्थे होज्जा ? अतित्थे होज्जा ?
गोयमा ! तित्थे वा होज्जा, अतित्थे वा होज्जा, जहा[4] कसायकुसीले । छेदोवट्ठावणिए परिहारविसुद्धिए य जहा[5] पुलाए । सेसा जहा सामाइयसजए ।।

लिंग-पदं

४७४ सामाइयसजए ण भते ! किं सलिंगे होज्जा ? अण्णलिंगे होज्जा ? गिहिलिंगे होज्जा ? जहा[6] पुलाए । एव छेदोवट्ठावणिए वि ।।

४७५ परिहारविसुद्धियसजए ण भते ! किं—पुच्छा ।
गोयमा ! दव्वलिंग पि भावलिंग पि पडुच्च सलिंगे होज्जा, नो अण्णलिंगे होज्जा, नो गिहिलिंगे होज्जा । सेसा जहा सामाइयसजए ।।

सरीर-पद

४७६ सामाइयसंजए णं भते ! कतिसु सरीरेसु होज्जा ?
गोयमा ! तिसु वा चउसु वा पचसु वा जहा[7] कसायकुसीले । एव छेदोवट्ठाव-णिए वि । सेसा जहा[8] पुलाए ।।

---

१ भ० २५।३१३ ।
२. भ० ८।१०५ ।
३. भ० २५।३१७ ।
४. भ० २५।३२१ ।
५ भ० २५।३१९ ।
६. भ० २५।३२२ ।
७ भ० २५।३२५ ।
८. भ० २५।३२३ ।

खेत्त-पदं

४७७. सामाइयसंजए णं भते ! किं कम्मभूमीए होज्जा ? अकम्मभूमीए होज्जा ?
गोयमा ! जम्मण-सतिभाव पडुच्च जहा[1] बउसे। एव छेदोवट्ठावणिए वि। परिहारविसुद्धिए य जहा[2] पुलाए। सेसा जहा सामाइयसजए ।।

काल-पदं

४७८. सामाइयसजए ण भते ! कि ओसप्पिणिकाले होज्जा ? उस्सप्पिणिकाले होज्जा ? नोओसप्पिणि-नोउस्सप्पिणिकाले होज्जा ?
गोयमा ! ओसप्पिणिकाले जहा[3] वउसे। एव छेदोवट्ठावणिए वि, नवर—जम्मण-सतिभाव पडुच्च चउसु वि पलिभागेसु नत्थि, साहरण पडुच्च अण्णयरे पडिभागे होज्जा, सेस त चेव ।।

४७९ परिहारविसुद्धिए—पुच्छा ।
गोयमा ! ओसप्पिणिकाले वा होज्जा, उस्सप्पिणिकाले वा होज्जा, नोओसप्पिणि-नोउस्सप्पिणिकाले नो होज्जा। जइ ओसप्पिणिकाले होज्जा—जहा[4] पुलाओ। उस्सप्पिणिकाले वि जहा[5] पुलाओ। सुहुमसपराइओ जहा[6] नियठो। एव अहक्खाओ वि ।।

गति-पदं

४८० सामाइयसजए ण भते ! कालगए समाणे क[7] गति गच्छति ?
गोयमा ! देवगति गच्छति ।।

४८१ देवगति गच्छमाणे किं भवणवासीसु उववज्जेज्जा ? वाणमतरेसु उववज्जेज्जा ? जोइसिएसु उववज्जेज्जा ? वेमाणिएसु उववज्जेज्जा ?
गोयमा ! नो भवणवासीसु उववज्जेज्जा—जहा[8] कसायकुसीले। एव छेदोवट्ठावणिए वि। परिहारविसुद्धिए जहा[9] पुलाए। सुहुमसपराए जहा[10] नियठे ।।

४८२. अहक्खाए—पुच्छा ।
गोयमा ! एवं अहक्खायसजए वि जाव अजहण्णमणुक्कोसेण अणुत्तरविमाणेसु उववज्जेज्जा; अत्थेगतिए सिज्झति जाव सव्वदुक्खाण अत करेति ।।

४८३ सामाइयसजए ण भते ! देवलोगेसु उववज्जमाणे कि इदत्ताए उववज्जति—पुच्छा ।

---

१ भ० २५।३२७ ।
२ भ० २५।३२६ ।
३ भ० २५।३३२-३३५ ।
४ भ० २५।३२९ ।
५. भ० २५।३३० ।
६ भ० २५।३३५ ।
७. किं (अ, स) ।
८ भ० २५।३३७ ।
९ भ० २५।३३६,३३७ ।
१० भ० २५।३३७ ।

गोयमा ! अविराहणं पडुच्च एवं जहा[1] कसायकुसीले। एवं छेदोवट्ठावणिए वि। परिहारविसुद्धिए जहा[2] पुलाए। सेसा जहा[3] नियंठे॥

४८४. सामाइयसंजयस्स णं भंते ! देवलोगेसु उववज्जमाणस्स केवतियं कालं ठिती पण्णत्ता ?
गोयमा ! जहण्णेणं दो पलिओवमाइं, उक्कोसेणं तेत्तीसं सागरोवमाइं। एवं छेदोवट्ठावणिए वि॥

४८५. परिहारविसुद्धियस्स—पुच्छा।
गोयमा ! जहण्णेणं दो पलिओवमाइं, उक्कोसेणं अट्ठारस सागरोवमाइं, सेसाणं जहा[4] नियंठस्स॥

संजमट्ठाण-पदं

४८६. सामाइयसंजयस्स णं भंते ! केवतिया संजमट्ठाणा पण्णत्ता ?
गोयमा ! असंखेज्जा संजमट्ठाणा पण्णत्ता। एवं जाव परिहारविसुद्धियस्स॥

४८७. सुहुमसंपरायसंजयस्स—पुच्छा।
गोयमा ! असंखेज्जा अंतोमुहुत्तिया संजमट्ठाणा पण्णत्ता॥

४८८. अहक्खायसंजयस्स—पुच्छा।
गोयमा ! एगे अजहण्णमणुक्कोसए संजमट्ठाणे पण्णत्ते॥

४८९. एएसि णं भंते ! सामाइय-छेदोवट्ठावणिय-परिहारविसुद्धिय-सुहुमसंपराग-अहक्खायसंजयाणं संजमट्ठाणाणं कयरे कयरेहिंतो[5] •अप्पा वा ? बहुया वा ? तुल्ला वा ?° विसेसाहिया वा ?
गोयमा ! सव्वत्थोवे अहक्खायसंजमस्स एगे अजहण्णमणुक्कोसए संजमट्ठाणे, सुहुमसंपरागसंजयस्स अंतोमुहुत्तिया संजमट्ठाणा असंखेज्जगुणा, परिहारविसुद्धियसंजयस्स संजमट्ठाणा असंखेज्जगुणा, सामाइयसंजयस्स छेदोवट्ठावणियसंजयस्स य[6] एएसि णं संजमट्ठाणा दोण्ह वि तुल्ला असंखेज्जगुणा॥

निगास-पदं

४९०. सामाइयसंजयस्स णं भंते ! केवइया चरित्तपज्जवा पण्णत्ता ?
गोयमा ! अणंता चरित्तपज्जवा पण्णत्ता। एवं जाव अहक्खायसंजयस्स॥

४९१. सामाइयसंजए णं भंते ! सामाइयसंजयस्स सट्ठाणसण्णिगासेणं चरित्तपज्जवेहिं किं हीणे ? तुल्ले ? अब्भहिए ?
गोयमा ! सिय हीणे—छट्ठाणवडिए॥

---

१. भ० २५।३४०।
२. भ० २५।३३९।
३. भ० २५।३४१।
४. भ० २५।३४५।
५. सं० पा०—कयरेहिंतो जाव विसेसाहिया।
६. × (अ, क, ख, स)।

४९२ सामाइयसजए ण भते ! छेदोवट्ठावणियसंजयस्स परट्ठाणसण्णिगासेणं चरित्त-पज्जवेहि—पुच्छा।
गोयमा ! सिय हीणे—छट्ठाणवडिए। एव परिहारविसुद्धियस्स वि॥

४९३. सामाइयसजए ण भते ! सुहुमसपरागसजयस्स परट्ठाणसण्णिगासेण चरित्त-पज्जवेहिं—पुच्छा।
गोयमा ! हीणे, नो तुल्ले, नो अब्भहिए, अणतगुणहीणे। एव अहक्खाय-सजयस्स वि। एव छेदोवट्ठावणिए वि हेट्ठिल्लेसु तिसु वि सम छट्ठाणवडिए, उवरिल्लेसु दोसु तहेव हीणे। जहा छेदोवट्ठावणिए तहा परिहारविसुद्धिए वि॥

४९४ सुहुमसपरागसजए ण भते ! सामाइयसजयस्स परट्ठाण—पुच्छा।
गोयमा ! नो हीणे, नो तुल्ले, अब्भहिए—अणतगुणमब्भहिए। एव छेओवट्ठा-वणिय परिहारविसुद्धिएसु वि सम। सट्ठाणे सिय हीणे, नो तुल्ले, सिय अब्भ-हिए। जइ हीणे अणतगुणहीणे, अह अब्भहिए अणतगुणमब्भहिए॥

४९५ सुहुमसपरायसजयस्स अहक्खायसजयस्स परट्ठाण—पुच्छा।
गोयमा ! हीणे, नो तुल्ले, नो अब्भहिए, अणतगुणहीणे। अहक्खाए हेट्ठिल्लाण चउण्ह वि नो हीणे, नो तुल्ले, अब्भहिए—अणतगुणमब्भहिए। सट्ठाणे नो हीणे, तुल्ले, नो अब्भहिए॥

४९६. एएसि ण भते ! सामाइय-छेदोवट्ठावणिय-परिहारविसुद्धिय-सुहुमसपराय-अहक्खायसजयाण जहण्णुक्कोसगाण चरित्तपज्जवाण कयरे कयरेहिंतो[1] °अप्पा वा ? बहुया वा ? तुल्ला वा ?° विसेसाहिया वा ?
गोयमा ! सामाइयसजयस्स छेओवट्ठावणियसजयस्स य एएसि ण जहण्णगा चरित्तपज्जवा दोण्ह वि तुल्ला सव्वत्थोवा, परिहारविसुद्धियसजयस्स जहण्णगा चरित्तपज्जवा अणतगुणा, तस्स चेव उक्कोसगा चरित्तपज्जवा अणतगुणा, सामाइयसजयस्स छेओवट्ठावणियसजयस्स य एएसि ण उक्कोसगा चरित्तपज्जवा दोण्ह वि तुल्ला अणतगुणा, सुहुमसपरायसजयस्स जहण्णगा चरित्तपज्जवा अणतगुणा, तस्स चेव उक्कोसगा चरित्तपज्जवा अणतगुणा, अहक्खायसजयस्स अजहण्णमणुक्कोसगा चरित्तपज्जवा अणतगुणा॥

जोग-पदं

४९७ सामाइयसजए ण भते ! किं सजोगी होज्जा ? अजोगी होज्जा ?
गोयमा ! सजोगी जहा[2] पुलाए। एव जाव सुहुमसपरायसंजए। अहक्खाए जहा[3] सिणाए॥

---

१ स० पा०—कयरेहिंतो जाव विसेसाहिया। ३. भ० २५।३६५।
२. भ० २५।३६३,३६४।

उवओग-पदं

४६८. सामाइयसंजए ण भते ! किं सागारोवउत्ते होज्जा ? अणागारोवउत्ते होज्जा ?
गोयमा ! सागरोवउत्ते जहा[1] पुलाए। एव जाव अहक्खाए, नवर—सुहुमसपराए सागारोवउत्ते होज्जा, नो अणागारोवउत्ते होज्जा ॥

कसाय-पदं

४६६. सामाइयसजए ण भते ! किं सकसायी होज्जा ? अकसायी होज्जा ?
गोयमा ! सकसायी होज्जा, नो अकसायी होज्जा जहा[2] कसायकुसीले। एवं छेदोवट्ठावणिए वि। परिहारविसुद्धिए जहा[3] पुलाए ॥

५००. सुहुमसपरागसजए—पुच्छा।
गोयमा ! सकसायी होज्जा, नो अकसायी होज्जा ॥

५०१ जइ सकसायी होज्जा, से ण भते ! कतिसु कसायेसु होज्जा ?
गोयमा ! एगम्मि संजलणलोभे होज्जा। अहक्खायसंजए जहा[4] नियठे ॥

लेस्सा-पदं

५०२ सामाइयसजए ण भते ! किं सलेस्से होज्जा ? अलेस्से होज्जा ?
गोयमा ! सलेस्से होज्जा जहा[5] कसायकुसीले। एव छेदोवट्ठावणिए वि। परिहारविसुद्धिए जहा[6] पुलाए। सुहुमसपराए जहा[7] नियठे। अहक्खाए जहा[8] सिणाए, नवर—जइ सलेस्से होज्जा, एगाए सुक्कलेस्साए होज्जा ॥

परिणाम-पदं

५०३. सामाइयसजए ण भते ! किं वड्ढमाणपरिणामे होज्जा ? हायमाणपरिणामे[9] ? अवट्ठियपरिणामे ?
गोयमा ! वड्ढमाणपरिणामे जहा[10] पुलाए। एव जाव परिहारविसुद्धिए ॥

५०४. सुहुमसपराए—पुच्छा।
गोयमा ! वड्ढमाणपरिणामे वा होज्जा, हायमाणपरिणामे वा होज्जा, नो अवट्ठियपरिणामे होज्जा। अहक्खाए जहा[11] नियठे ॥

५०५ सामाइयसजए ण भते ! केवइय काल वड्ढमाणपरिणामे होज्जा ?
गोयमा ! जहण्णेण एक्क समयं जहा[12] पुलाए। एव जाव परिहारविसुद्धिए ॥

---

१ भ० २५।३६६।
२. भ० २५।३७०।
३. भ० २५।३६७,३६८।
४. भ० २५।३७१,३७२।
५ भ० २५।३७५,३७६।
६. भ० २५।३७३,३७४।
७ भ० २५।३७७,३७८।
८. भ० २५।३७९,३८०।
९ हीय० (स)।
१० भ० २५।३८१।
११. भ० २५।३८२;
१२ भ० २५।३८३।

५०६ सुहुमसपरागसजए णं भते ! केवतियं काल वड्ढमाणपरिणामे होज्जा ?
गोयमा ! जहण्णेण एक्क समय, उक्कोसेण अतोमुहुत्त ।।

५०७. केवतिय काल हायमाणपरिणामे होज्जा ? एव चेव ।।

५०८ अहक्खायसजए ण भते ! केवतिय काल वड्ढमाणपरिणामे होज्जा ?
गोयमा ! जहण्णेण अतोमुहुत्तं, उक्कोसेण वि अतोमुहुत्त ।।

५०९ केवतिय काल अवट्ठियपरिणामे होज्जा ?
गोयमा ! जहण्णेण एक्कं समय, उक्कोसेण देसूणा पुव्वकोडी ।।

बंध-पदं

५१० सामाइयसजए ण भते ! कइ कम्मप्पगडीओ बधइ ?
गोयमा ! सत्तविहबधए वा, अट्ठविहबधए वा, एव जहा[1] बउसे । एव जाव परिहारविसुद्धिए ।।

५११ सुहुमसपरागसजए—पुच्छा ।
गोयमा ! आउय-मोहणिज्जवज्जाओ छ कम्मप्पगडीओ बधति । अहक्खायसजए जहा[2] सिणाए ।।

वेदण-पद

५१२ सामाइयसजए ण भते ! कति कम्मप्पगडीओ वेदेति ?
गोयमा ! नियम अट्ठ कम्मप्पगडीओ वेदेति । एव जाव सुहुमसपराए ।।

५१३ अहक्खाए—पुच्छा ।
गोयमा ! सत्तविहवेदए वा, चउव्विहवेदए वा । सत्त वेदेमाणे मोहणिज्ज-वज्जाओ सत्त कम्मप्पगडीओ वेदेति, चत्तारि वेदेमाणे वेयणिज्जाउय-नाम-गोयाओ चत्तारि कम्मप्पगडीओ वेदेति ।।

उदीरणा-पदं

५१४ सामाइयसजए ण भते ! कति[3] कम्मप्पगडीओ उदीरेति ?
गोयमा ! सत्तविहउदीरए वा जहा[4] बउसो । एव जाव परिहारविसुद्धिए ।।

५१५ सुहुमसपराए—पुच्छा ।
गोयमा ! छव्विहउदीरए वा, पचविहउदीरए वा । छ उदीरेमाणे आउय-वेयणिज्जवज्जाओ छ कम्मप्पगडीओ उदीरेइ, पच उदीरमाणे आउय-वेयणिज्ज-मोहणिज्जवज्जाओ पच कम्मप्पगडीओ उदीरेइ ।।

५१६ अहक्खायसजए—पुच्छा ।

---

१. भ० २५।३९१ ।
२. भ० २५।३९४ ।
३. केवइ (ता) ।
४. भ० २५।३९६ ।

गोयमा ! पंचविहउदीरए वा दुविहउदीरए वा अणुदीरए वा । पच उदीरेमाणे आउय-वेयणिज्ज-मोहणिज्जवज्जाओ । सेसं जहा[1] नियंठस्स ॥

उवसंपज्जहण-पदं

५१७. सामाइयसजए ण भते ! सामाइयसजयत्त जहमाणे किं जहति ? किं उवसंपज्जति ?
गोयमा ! सामाइयसंजयत्त जहति । छेदोवट्ठावणियसजय[2] वा, सुहुमसपराग-सजय वा, असजम वा, संजमासजम वा उवसपज्जति ॥

५१८ छेओवट्ठावणिए—पुच्छा ।
गोयमा ! छेओवट्ठावणियसजयत्त जहति । सामाइयसजयं वा, परिहारविसुद्धिय-सजयं वा, सुहुमसपरागसजय वा असंजम वा, सजमासजम वा उवसपज्जति ॥

५१९. परिहारविसुद्धिए—पुच्छा ।
गोयमा ! परिहारविसुद्धियसजयत्तं जहति । छेदोवट्ठावणियसजय वा असजमं वा उवसपज्जति ॥

५२०. सुहुमसंपराए—पुच्छा ।
गोयमा ! सुहुमसपरायसजयत्तं जहति । सामाइयसजय वा, छेओवट्ठावणियसजयं वा, अहक्खायसजय वा, असजम वा उवसपज्जइ ॥

५२१. अहक्खायसजए—पुच्छा ।
गोयमा ! अहक्खायसजयत्त जहति । सुहुमसपरागसजय वा, असजम वा, सिद्धिगति वा उवसपज्जइ ॥

सण्णा-पदं

५२२. सामाइयसजए णं भते ! किं सण्णोवउत्ते होज्जा ? नो सण्णोवउत्ते होज्जा ?
गोयमा ! सण्णोवउत्ते जहा[3] बउसो । एवं जाव परिहारविसुद्धिए । सुहुमसपराए अहक्खाए य जहा[4] पुलाए ॥

आहार-पदं

५२३ सामाइयसजए ण भते ! किं आहारए होज्जा ? अणाहारए होज्जा ? जहा[5] पुलाए । एव जाव सुहुमसंपराए । अहक्खायसंजए जहा[6] सिणाए ॥

---

१. भ० २५।४०१ ।
२ उपसपत्तिप्रसङ्गे सर्वत्रापि भावप्रत्ययलोपो दृश्यते ।
३. भ०।४१० ।
४ भ० २५।४०६ ।
५. भ० २५।४११ ।
६. भ० २५।४१२ ।

भव-पदं

५२४. सामाइयसजए ण भते ! कति भवग्गहणाइ होज्जा ?
गोयमा ! जहण्णेण एक्क, उक्कोसेण अट्ठ । एव छेदोवट्ठावणिए वि ॥

५२५ परिहारविसुद्धिए— पुच्छा ।
गोयमा ! जहण्णेण एक्क, उक्कोसेण तिण्णि । एव जाव अहक्खाए ॥

आगरिस-पद

५२६. सामाइयसजयस्स ण भते ! एगभवग्गहणिया केवतिया आगरिसा पण्णत्ता ?
गोयमा ! जहण्णेण जहा[1] बउसस्स ॥

५२७. छेदोवट्ठावणियस्स—पुच्छा ।
गोयमा ! जहण्णेण एक्को[2], उक्कोसेण वीसपुहत्त ॥

५२८ परिहारविसुद्धियस्स—पुच्छा ।
गोयमा ! जहण्णेण एक्को, उक्कोसेण तिण्णि ॥

५२९ सुहुमसपरायस्स— पुच्छा ।
गोयमा ! जहण्णेण एक्को, उक्कोसेण चत्तारि ॥

५३०. अहक्खायस्स—पुच्छा ।
गोयमा ! जहण्णेण एक्को, उक्कोसेण दोण्णि ॥

५३१. सामाइयसजयस्स ण भते ! नाणाभवग्गहणिया केवतिया आगरिसा पण्णत्ता ?
गोयमा ! जहा[3] बउसे ॥

५३२ छेदोवट्ठावणियस्स—पुच्छा ।
गोयमा ! जहण्णेण दोण्णि, उक्कोसेण उवरिं नवण्ह सयाण अतो सहस्सस्स । परिहारविसुद्धियस्स जहण्णेण दोण्णि, उक्कोसेण सत्त । सुहुमसपरागस्स जहण्णेण दोण्णि, उक्कोसेण नव । अहक्खायस्स जहण्णेण दोण्णि, उक्कोसेण पच ॥

काल-पद

५३३. सामाइयसजए ण भते ! कालओ केवच्चिर होइ ?
गोयमा ! जहण्णेण एक्क समय, उक्कोसेण देसूणएहिं नवहिं वासेहि ऊणिया पुव्वकोडी । एव छेदोवट्ठावणिए वि । परिहारविसुद्धिए जहण्णेण एक्क समय, उक्कोसेण देसूणएहि एकूणतीसाए वासेहि ऊणिया पुव्वकोडी । सुहुमसपराए जहा[4] नियठे । अहक्खाए जहा सामाइयसजए ॥

५३४. सामाइयसजया ण भते ! कालओ केवच्चिरं होंति ?
गोयमा ! सव्वद्ध ॥

---

१. भ० २५।४१७ ।
२ एक्क (अ, ख, ता, व, म) ।
३ भ० २५।४२१ ।
४. भ० २५।४२६ ।

५३५. छेदोवट्ठावणियसजया—पुच्छा।
गोयमा ! जहण्णेण अड्ढाइज्जाइ वाससयाइ, उक्कोसेण पण्णास सागरोवम-कोडिसयसहस्साइ ॥

५३६ परिहारविसुद्धीयसजया—पुच्छा।
गोयमा ! जहण्णेण देसूणाइ दो वाससयाइ, उक्कोसेण देसूणाओ दो पुव्व-कोडीओ ॥

५३७ सुहुमसपरागसजया—पुच्छा।
गोयमा ! जहण्णेण एक्क समय, उक्कोसेण अतोमुहुत्त। अहक्खायसजया जहा सामाइयसजया ॥

अंतर-पदं

५३८. सामाइयसजयस्स ण भते ! केवइयं काल अतर होइ?
गोयमा ! जहण्णेण जहा[1] पुलागस्स। एवं जाव अहक्खायसजयस्स ॥

५३९. सामाइयसजयाण भते !—पुच्छा।
गोयमा ! 'नत्थि अतर'[2] ॥

५४०. छेदोवट्ठावणियाण—पुच्छा।
गोयमा ! जहण्णेण तेवट्ठि वाससहस्साइ, उक्कोसेण अट्ठारस सागरोवमकोडा-कोडीओ ॥

५४१. परिहारविसुद्धियाण—पुच्छा।
गोयमा ! जहण्णेण चउरासीइ वाससहस्साइ, उक्कोसेण अट्ठारस सागरोवम-कोडाकोडीओ। सुहुमसपरायाण जहा[3] नियठाण। अहक्खायाण जहा सामाइय-सजयाण ॥

समुग्घाय-पद

५४२ सामाइयसजयस्स ण भते ! कति समुग्घाया पण्णत्ता?
गोयमा ! छ समुग्घाया पण्णत्ता जहा[4] कसायकुसीलस्स। एव छेदोवट्ठावणियस्स वि। परिहारविसुद्धियस्स जहा[5] पुलागस्स। सुहुमसपरागस्स जहा[6] नियठस्स। अहक्खायस्स जहा[7] सिणायस्स ॥

खेत्त-पद

५४३ सामाइयसजए ण भते ! लोगस्स किं सखेज्जइभागे होज्जा, असखेज्जइभागे—पुच्छा।

---

१. भ० २५।४३०।
२ नत्यतर (अ, क, ख, ता, ब, म)।
३. भ० २५।४३४।
४. भ० २५।४३७।
५. भ० २५।४३५।
६ भ० २५।४३८।
७. भ० २५।४३९।

गोयमा ! नो सखेज्जइभागे जहा[1] पुलाए। एव जाव सुहुमसपराए। अहक्खाय-सजए जहा[2] सिणाए॥

फुसणा-पदं

५४४ सामाइयसजए ण भते ! लोगस्स किं सखेज्जइभागं फुसइ० ? जहेव होज्जा तहेव फुसइ॥

भाव-पदं

५४५ सामाइयसजए ण भते ! कयरम्मि भावे होज्जा ?
गोयमा ! खओवसमिए भावे होज्जा। एव जाव सुहुमसपराए॥

५४६ अहक्खायसजए – पुच्छा।
गोयमा ! उवसमिए वा खइए[3] वा भावे होज्जा॥

परिमाण-पदं

५४७ सामाइयसजया ण भते ! एगसमएण केवतिया होज्जा ?
गोयमा ! पडिवज्जमाणए य पडुच्च जहा[4] कसायकुसीला तहेव निरवसेस॥

५४८ छेदोवट्ठावणिया—पुच्छा।
गोयमा ! पडिवज्जमाणए पडुच्च सिय अत्थि सिय नत्थि। जइ अत्थि जहण्णेण एक्को वा दो वा तिण्णि वा, उक्कोसेण सयपुहत्त। पुव्वपडिवण्णए पडुच्च सिय अत्थि सिय नत्थि। जइ अत्थि जहण्णेण कोडिसयपुहत्त, उक्कोसेण वि कोडि-सयपुहत्त। परिहारविसुद्धिया जहा[5] पुलागा। सुहुमसपराया जहा[6] नियठा॥

५४९ अहक्खायसजया ण—पुच्छा।
गोयमा ! पडिवज्जमाणए पडुच्च सिय अत्थि सिय नत्थि। जइ अत्थि जहण्णेण एक्को वा दो वा तिण्णि वा, उक्कोसेण बावट्ठ सय—अट्ठुत्तरसय[7] खवगाण, चउप्पण्ण उवसामगाण। पुव्वपडिवण्णए पडुच्च जहण्णेण कोडिपुहत्त, उक्को-सेण वि कोडिपुहत्त॥

अप्पाबहुयत्त-पदं

५५० एएसि ण भते ! सामाइय-छेओवट्ठावणिय-परिहारविसुद्धिय-सुहुमसपराय-अहक्खायसंजयाण कयरे कयरेहिंतो[8] °अप्पा वा ? बहुया वा ? तुल्ला वा ?° विसेसाहिया वा ?

---

१ भ० २५।४४०।
२. भ० २५।४४१।
३ खतिए (अ,क,ख,ब,म,स), खविए (ता)।
४. भ० २५।४४८।
५. भ० २५।४४६।
६ भ० २५।४४९।
७ अट्ठसय (क, ता, ब)।
८. स० पा०—कयरेहिंतो जाव विसेसाहिया।

गोयमा ! सव्वत्थोवा सुहुमसपरायसजया, परिहारविसुद्धियसजया सखेज्जगुणा, अहक्खायसजया सखेज्जगुणा, छेओवट्ठावणियसजया सखेज्जगुणा, सामाइय-संजया सखेज्जगुणा ।।

संगहणी-गाहा

पडिसेवण दोसालोयणा य, आलोयणारिहे चेव ।
तत्तो सामायारी, पायच्छित्ते तवे चेव ।। १ ।।

पडिसेवणा-पद

५५१. कइविहा ण भते ! पडिसेवणा पण्णत्ता ?
गोयमा ! दसविहा पडिसेवणा पण्णत्ता, त जहा—
दप्पप्पमादणाभोगे, आउरे आवतीति य ।
सकिण्णे[1] सहसक्कारे, भयप्पओसा य वीमसा ।। १ ।।

आलोयणा-पद

५५२. दस आलोयणादोसा पण्णत्ता, त जहा—
आकंपइत्ता अणुमाणइत्ता, ज दिट्ठ वादर व सुहुम वा ।
छन्न सद्दाउलयं, वहुजण अव्वत्त तस्सेवी ।। १ ।।

५५३. दसहि ठाणेहि सपण्णे अणगारे अरिहति अत्तदोस आलोइत्तए, त जहा—जातिसपण्णे, कुलसपण्णे, विणयसपण्णे, नाणसंपण्णे, दसणसपण्णे, चरित्तसपण्णे, खते, दते, अमायी, अपच्छाणुतावी ।।

५५४ अट्ठहि ठाणेहि सपन्ने अणगारे अरिहति आलोयण पडिच्छित्तए, तं जहा—आयारव, आहारव[2], ववहारव, उव्वीलए, पकुव्वए, अपरिस्सावी, निज्जवए, अवायदंसी ।।

सामायारी-पदं

५५५. दसविहा सामायारी पण्णत्ता, त जहा—
इच्छा मिच्छा तहक्कारो, आवस्सिया य निसीहिया ।
आपुच्छणा य पडिपुच्छा, छंदणा य निमतणा ।
उवसपया य काले, सामायारी भवे दसहा ।। १ ।।

पायच्छित्त-पद

५५६. दसविहे पायच्छित्ते पण्णत्ते, तं जहा—आलोयणारिहे, पडिक्कमणारिहे, तदुभयारिहे, विवेगारिहे, विउसग्गारिहे, तवारिहे, छेदारिहे, मूलारिहे, अणवट्ठप्पारिहे, पारंचियारिहे ।।

---

१. नक्किते (अ, क, ख, ता, व, म, वृपा); २. आधारव (अ, क, व), अवधारव (म)। निशीथपाठे तु 'तितिण' इत्यभिधीयते (वृ)।

तव-पदं

५५७ दुविहे तवे पण्णत्ते, त जहा—वाहिरए य, अब्भितरए य ।।

५५८ से कि त वाहिरए तवे ? वाहिरए तवे छविहे पण्णत्ते, त जहा—अणसण, ओमोदरिया, भिक्खायरिया, रसपरिच्चाओ, कायकिलेसो, पडिसलीणता ।।

५५९ से कि त अणसणे ? अणसणे दुविहे पण्णत्ते, त जहा—इत्तरिए य, आवकहिए य ।।

५६० से कि त इत्तरिए ? इत्तरिए अणेगविहे पण्णत्ते, त जहा—चउत्थे भत्ते, छट्ठे भत्ते, अट्ठमे भत्ते, दसमे भत्ते, दुवालसमे भत्ते, चोद्दसमे भत्ते, अद्धमासिए भत्ते, मासिए भत्ते, दोमासिए भत्ते, तेमासिए भत्ते जाव छम्मासिए भत्ते। सेत्त इत्तरिए ।।

५६१ से किं त आवकहिए ? आवकहिए दुविहे पण्णत्ते, त जहा पाओवगमणे[1] य, भत्तपच्चक्खाणे य ।।

५६२ से कि त पाओवगमणे ? पाओवगमणे दुविहे पण्णत्ते, त जहा—नीहारिमे य, अणीहारिमे य। नियम अपडिकम्मे। सेत्त पाओवगमणे ।।

५६३. से कि त भत्तपच्चक्खाणे ? भत्तपच्चक्खाणे दुविहे पण्णत्ते, त जहा—नीहारिमे य, अणीहारिमे य। नियम सपडिकम्मे। सेत्त भत्तपच्चक्खाणे। सेत्त आवकहिए। सेत्त अणसणे ।।

५६४ से किं त ओमोदरिया ? ओमोदरिया दुविहा पण्णत्ता, त जहा—दव्वोमोदरिया य, भावोमोदरिया य ।।

५६५ से किं त दव्वोमोदरिया ? दव्वोमोदरिया दुविहा पण्णत्ता, त जहा—उवगरणदव्वोमोदरिया य, भत्तपाणदव्वोमोदरिया य ।।

५६६ से कि त उवगरणदव्वोमोदरिया ? उवगरणदव्वोमोदरिया तिविहा पण्णत्ता, तं जहा—एगे वत्थे, एगे पाए,[2] चियत्तोवगरणसातिज्जणया। सेत्त उवगरणदव्वोमोदरिया ।।

५६७ से कि त भत्तपाणदव्वोमोदरिया ? भत्तपाणदव्वोमोदरिया अट्ठकुक्कुडिअडगप्पमाणमेत्ते कवले आहारमाहारेमाणे अप्पाहारे, दुवालस [3]•कुक्कुडिअडगपमाणमेत्ते कवले आहारमाहारेमाणे अवड्ढोमोदरिए, सोलस कुक्कुडिअडगपमाणमेत्ते कवले आहारमाहारेमाणे दुभागप्पत्ते, चउव्वीस कुक्कुडिअडगपमाणमेत्ते कवले आहारमाहारेमाणे ओमोदरिए, वत्तीस कुक्कुडिअडगपमाणमेत्ते कवले आहारमाहारेमाणे पमाणमेत्ते, एत्तो एक्केण वि घासेण ऊणग

---

१ पादोव° (ख)।
२ पादे (अ, क, व)।
३. स० पा०—जहा सत्तमसए पढमोद्देसए जाव नो।

आहारमाहारेमाणे समणे निग्गथे° नो पकामरसभोजीति वत्तव्व सिया। सेत्तं भत्तपाणदव्वोमोदरिया। सेत्त दव्वोमोदरिया॥

५६८ से कि त भावोमोदरिया? भावोमोदरिया अणेगविहा पण्णत्ता, त जहा—अप्पकोहे[1], °अप्पमाणे, अप्पमाए,° अप्पलोभे, अप्पसद्दे, अप्पझझे, अप्पतुमतुमे। सेत्त भावोमोदरिया। सेत्त ओमोदरिया॥

५६९ से किं त भिक्खायरिया? भिक्खायरिया अणेगविहा पण्णत्ता, त जहा—दव्वाभिग्गहचरए,[2] °खेत्ताभिग्गहचरए, कालाभिग्गहचरए, भावाभिग्गहचरए, उक्खित्तचरए, णिक्खित्तचरए, उक्खित्तणिक्खित्तचरए, णिक्खित्तउक्खित्तचरए, वट्टिज्जमाणचरए, साहरिज्जमाणचरए, उवणीयचरए, अवणीयचरए, उवणीयअवणीयचरए, अवणीयउवणीयचरए, ससट्ठचरए, असंसट्ठचरए, तज्जायससट्ठचरए, अण्णयचरए, मोणचरए°, सुद्धेसणिए, सखादत्तिए। सेत्त भिक्खायरिया॥

५७० से किं त रसपरिच्चाए? रसपरिच्चाए अणेगविहे पण्णत्ते, त जहा—निव्विगितिए, पणीयरसविवज्जए,[3] °आयविलए, आयामसित्थभोई, अरसाहारे, विरसाहारे, अताहारे, पताहारे°, लूहाहारे। सेत्त रसपरिच्चाए॥

५७१ से कि त कायकिलेसे? कायकिलेसे अणेगविहे पण्णत्ते, त जहा—ठाणादीए, उक्कुडुयासणिए,[4] °पडिमट्ठाई, वीरासणिए, नेसज्जिए, आयावए, अवाउडए, अपडुयए, अणिट्ठुहए°, सव्वगायपरिकम्म-विभूसविप्पमुक्के। सेत्त कायकिलेसे॥

५७२ से कि त पडिसलीणया? पडिसलीणया चउव्विहा पण्णत्ता, त जहा—इदियपडिसलीणया, कसायपडिसलीणया, जोगपडिसलीणया, विवित्तसयणासणसेवणया॥

५७३. से किं त इदियपडिसलीणया? इदियपडिसलीणया पचविहा पण्णत्ता, त जहा—सोइदियविसयप्पयारणिरोहो वा, सोइदियविसयप्पत्तेसु वा अत्थेसु रागदोसविणिग्गहो। चक्खिदियविसयप्पयारणिरोहो वा एव जाव फासिदियविसयप्पयारणिरोहो वा, फासिदियविसयप्पत्तेसु वा अत्थेसु रागदोसविणिग्गहो। सेत्त इंदियपडिसलीणया॥

५७४ से कि त कसायपडिसलीणया? कसायपडिसलीणया चउव्विहा पण्णत्ता, त जहा—कोहोदयनिरोहो वा, उदयप्पत्तस्स वा कोहस्स विफलीकरणं। एव

---

१ स०पा०—अप्पकोहे जाव अप्पलोभे।

२. स०पा०—जहा ओववाइए जाव सुद्धेसणिए।

३. स० पा०—जहा ओववाइए जाव लूहाहारे।

४ स० पा०—जहा ओववाइए जाव सव्वगाय°।

जाव लोभोदयनिरोहो वा, उदयपत्तस्स वा लोभस्स विफलीकरण। सेत्त कसायपडिसलीणया ॥

५७५. से कि त जोगपडिसलीणया ? 'जोगपडिसलीणया तिविहा पण्णत्ता, त जहा—मणजोगपडिसलीणया, वइजोगपडिसलीणया, कायजोगपडिसलीणया ॥

५७६. से कि त मणजोगपडिसलीणया ? मणजोगपडिसलीणया अकुसलमणनिरोहो वा, कुसलमणउदीरण वा, मणस्स वा एगत्तीभावकरण। सेत्त मणजोगपडिसलीणया ॥

५७७. से कि त वइजोगपडिसलीणया ? वइजोगपडिसलीणया अकुसलवइनिरोहो वा, कुसलवइउदीरण वा, वईए वा एगत्तीभावकरण। सेत्त वइजोगपडिसलीणया'[1] ॥

५७८. से कि त कायजोगपडिसलीणया ? कायजोगपडिसलीणया जण्ण सुसमाहिय-पसत-साहरियपाणिपाए कुम्मो इव गुत्तिदिए अल्लीण-पल्लीणे चिट्ठति। सेत्त कायपडिसलीणया। सेत्त जोगपडिसलीणया ॥

५७९ से कि त विवित्तसयणासणसेवणया ? विवित्तसयणासणसेवणया जण्ण आरामेसु वा उज्जाणेसु वा [2]•देवकुलेसु वा सभासु वा पवासु वा इत्थी-पसु-पडगविवज्जियासु वा वसहीसु फासु-एसणिज्ज पीढ-फलग°-सेज्जा-सथारग उवसपज्जित्ताण विहरइ। सेत्त विवित्तसयणासणसेवणया। सेत्त पडिसलीणया। सेत्त बाहिरए तवे ॥

५८०. से कि त अब्भितरए तवे ? अब्भितरए तवे छव्विहे पण्णत्ते, त जहा—पायच्छित्त, विणओ, वेयावच्च, सज्झाओ, झाण, विउसग्गो ॥

५८१ से कि त पायच्छित्ते ? पायच्छित्ते दसविहे पण्णत्ते, त जहा—आलोयणारिहे जाव[3] पारचियारिहे। सेत्त पायच्छित्ते ॥

५८२. से किं त विणए ? विणए सत्तविहे पण्णत्ते, त जहा—नाणविणए, दसणविणए, चरित्तविणए,मणविणए, वइविणए, कायविणए, लोगोवयारविणए ॥

---

१. 'जोगपडिसंलीणया तिविहा पण्णत्ता' इति पाठे सूचिता योगप्रतिसलीनतायास्त्रय. प्रकारा प्रस्तुतप्रकरणे निर्दिष्टा न सन्ति तथा 'से किं त कायपडिसलीणया' इति पाठेनापि 'से किं त मणपडिसलीणया, से किं त वइपडिसलीणया' इति सूत्रयोरपि सकेतो लभ्यते। प्रतीयते लिपिकरणे सक्षेपो जात.। तस्य पूर्तिरौपपातिक (सू० ३७)—वर्ति-पाठानुसारेण कृता। प्रस्तुतपाठस्य सक्षेप एवमस्ति—जोगपडिसलीणया तिविहा पण्णत्ता, त जहा—अकुसलमणनिरोहो वा, कुसलमणउदीरण वा, मणस्स वा एगत्तीभावकरण। अकुसलवइनिरोहो वा, कुसलवइउदीरण वा, वईए वा एगत्तीभावकरण।

२. स० पा०—जहा सोमिलुद्देसए जाव सेज्जा।

३. भ० २५।५५६।

५८३ से किं तं नाणविणए ? नाणविणए पंचविहे पण्णत्ते, तं जहा—आभिणिवोहिय-नाणविणए,[1] •सुयनाणविणए ओहिनाणविणए, मणपज्जवनाणविणए°, केवलनाणविणए । सेत्त नाणविणए ।।

५८४ से किं तं दसणविणए ? दसणविणए दुविहे पण्णत्ते, तं जहा—सुस्सूसणाविणए य, अणच्चासादणाविणए य ।।

५८५ से किं त सुस्सूसणाविणए ? सुस्सूसणाविणए अणेगविहे पण्णत्ते, त जहा—सक्कारे इ वा सम्माणे इ वा [2]•किइकम्मे इ वा अब्भुट्ठाणे इ वा अजलिपग्गहे इ वा आसणाभिग्गहे इ वा आसणाणुप्पदाणे इ वा, एतस्स पच्चुग्गच्छणया, ठियस्स पज्जुवासणया, गच्छतस्स° पडिससाहणया । सेत्त सुस्सूसणाविणए ।।

५८६. से किं त अणच्चासादणाविणए ? अणच्चासादणाविणए पणयालीसइविहे पण्णत्ते, त जहा—अरहताण अणच्चासादणया[3], अरहतपण्णत्तस्स धम्मस्स अणच्चासादणया, आयरियाणं अणच्चासादणया, उवज्झायाणं अणच्चासादणया, थेराण अणच्चासादणया, कुलस्स अणच्चासादणया, गणस्स अणच्चासादणया, सघस्स अणच्चासादणया, किरियाए अणच्चासादणया, संभोगस्स अणच्चासादणया, आभिणिबोहियनाणस्स अणच्चासादणया, जाव केवलनाणस्स अणच्चासादणया, एएसि चेव भत्ति-वहुमाणेण, एएसि चेव वण्णसजलणया । सेत्त अणच्चासादणयाविणए । सेत्त दसणविणए ।।

५८७. से किं त चरित्तविणए ? चरित्तविणए पचविहे पण्णत्ते, त जहा—सामाइय-चरित्तविणए जाव अहक्खायचरित्तविणए । सेत्त चरित्तविणए ।।

५८८. से किं त मणविणए ? मणविणए दुविहे पण्णत्ते, त जहा—पसत्थमणविणए य, अप्पसत्थमणविणए य ।।

५८९ से किं त पसत्थमणविणए ? पसत्थमणविणए[4] सत्तविहे पण्णत्ते, तं जहा—अपावए, असावज्जे, अकिरिए, निरुवक्केसे[5], अणण्हवकरे, अच्छविकरे, अभूयाभिसकणे[6] । सेत्त पसत्थमणविणए ।।

---

१. स० पा०—आभिणिवोहियनाणविणए जाव केवल° ।

२. स० पा०—जहा चोद्दसमसए ततिए उद्देसए जाव पडिससाहणया ।

३. अणच्चासायणया (अ, ख); अणच्चासात-णया (क, ता) ।

४. पसत्थमणविणए—जे य मणे असावज्जे अकिरिए अकक्कसे अकडुए अणिट्ठुरे अफरुसे अणण्हयकरे अछेयकरे अभेयकरे अपरितावणकरे अणुद्दवणकरे अभूओवघाइए तहप्पगार मणो पहारेज्जा (ओ० सू० ४०) ।

५ निरुवक्कोसे (अ, क) ।

६. °संकमणे (क, ता) ।

५९० से किं त अप्पसत्थमणविणए ? अप्पसत्थमणविणए[1] सत्तविहे पण्णत्ते, त जहा—पावए, सावज्जे, सकिरिए, सउवक्केसे[2], अण्हयकरे, छविकरे, भूयाभिसकणे। सेत्त अप्पसत्थमणविणए। सेत्त मणविणए ॥

५९१ से किं त वइविणए ? वइविणए दुविहे पण्णत्ते, त जहा—पसत्थवइविणए य, अप्पसत्थवइविणए य ॥

५९२ से किं त पसत्थवइविणए ? पसत्थवइविणए[3] सत्तविहे पण्णत्ते, त जहा—अपावए, असावज्जे जाव अभूयाभिसकणे। सेत्त पसत्थवइविणए ॥

५९३ से किं तं अप्पसत्थवइविणए ? अप्पसत्थवइविणए सत्तविहे पण्णत्ते, त जहा—पावए, सावज्जे जाव भूयाभिसकणे। सेत्त अप्पसत्थवइविणए। सेत्त वइविणए ॥

५९४ से कि तं कायविणए ? कायविणए दुविहे पण्णत्ते, त जहा—पसत्थकायविणए य, अप्पसत्थकायविणए य ॥

५९५ से कि त पसत्थकायविणए ? पसत्थकायविणए सत्तविहे पण्णत्ते, त जहा—आउत्त गमण, आउत्त ठाणं, आउत्त निसीयण, आउत्त तुयट्टण, आउत्त उल्लघण, आउत्त पल्लघण, आउत्त सव्विदियजोगजुजणया। सेत्त पसत्थकायविणए ॥

५९६ से किं तं अप्पसत्थकायविणए ? अप्पसत्थकायविणए सत्तविहे पण्णत्ते, त जहा—अणाउत्त गमण जाव अणाउत्त सव्विदियजोगजुजणया। सेत्तं अप्पसत्थकायविणए। सेत्त कायविणए ॥

५९७ से किं त लोगोवयारविणए ? लोगोवयारविणए सत्तविहे पण्णत्ते, त जहा—अब्भासवत्तिय[4], परच्छदाणुवत्तिय, कज्जहेउ[5], कयपडिकइया[6], अत्तगवेसणया, देसकालण्णया[7], सव्वत्थेसु अप्पडिलोमया। सेत्त लोगोवयारविणए। सेत्त विणए ॥

५९८. से किं त वेयावच्चे ? वेयावच्चे दसविहे पण्णत्ते, त जहा—आयरियवेयावच्चे, उवज्झायवेयावच्चे, थेरवेयावच्चे, तवस्सिवेयावच्चे, गिलाणवेयावच्चे, सेहवेयावच्चे, कुलवेयावच्चे, गणवेयावच्चे, सघवेयावच्चे, साहम्मियवेयावच्चे। सेत्त वेयावच्चे ॥

---

१ अपसत्थमणविणए—जे य मणे सावज्जे सकिरिए सकक्कसे कडुए णिट्ठुरे फरुसे अण्हयकरे छेयकरे भेयकरे परितावणकरे उद्दवणकरे भूओवघाइए तइप्पगार मणो णो पहारेज्जा (ओ० सू० ४०)।

२ सउवक्कोसे (क, ख)।

३ पूर्ववत् अत्रापि औपपातिकस्य पाठभेदो दृश्य।

४ ०पत्तिय (ता)।

५ ज्ञानादिर्निमित्त भक्तादिदानमिति गम्यम् (वृ)।

६. कइपडिकइयाए (ता)।

७. देसकालण्णुया (ओ० सू० ४०)।

५९९. से किं त सज्झाए ? सज्झाए पंचविहे पण्णत्ते, तं जहा—वायणा, पडिपुच्छणा, परियट्टणा, अणुप्पेहा, धम्मकहा। से त्त सज्झाए॥

६०० से किं त झाणे ? झाणे चउव्विहे पण्णत्ते, त जहा—अट्टे झाणे, रोद्दे झाणे, धम्मे झाणे, सुक्के झाणे॥

६०१ अट्टे झाणे चउव्विहे पण्णत्ते, त जहा अमणुण्णसपयोगसपउत्ते तस्स विप्पयोगसतिसमन्नागए यावि भवइ, मणुण्णसपयोगसपउत्ते तस्स अविप्पयोगसतिसमन्नागए यावि भवइ, आयकसंपयोगसपउत्ते तस्स विप्पयोगसतिसमन्नागए यावि भवइ, परिभुसियकामभोगसंपयोगसपउत्ते[1] तस्स अविप्पयोगसतिसमन्नागए यावि भवइ॥

६०२. अट्टस्स ण झाणस्स चत्तारि लक्खणा पण्णत्ता, तं जहा—कदणया, सोयणया, तिप्पणया, परिदेवणया॥

६०३ रोद्दे झाणे चउव्विहे पण्णत्ते, त जहा—हिंसाणुवधी, मोसाणुवंधी, तेयाणुवधी, सारक्खणाणुवधी॥

६०४. रोद्दस्स ण झाणस्स चत्तारि लक्खणा पण्णत्ता, त जहा—ओस्सन्नदोसे, वहुलदोसे, अण्णाणदोसे, आमरणतदोसे॥

६०५ धम्मे झाणे चउव्विहे चउप्पडोयारे पण्णत्ते, त जहा—आणाविजए, अवायविजए, विवागविजए, सठाणविजए॥

६०६ धम्मस्स ण झाणस्स चत्तारि लक्खणा पण्णत्ता, त जहा—आणारुयी, निसग्गरुयी, सुत्तरुयी, ओगाढरुयी॥

६०७ धम्मस्स ण झाणस्स चत्तारि आलबणा पण्णत्ता, त जहा—वायणा, पडिपुच्छणा, परियट्टणा, धम्मकहा॥

६०८. धम्मस्स ण झाणस्स चत्तारि अणुप्पेहाओ पण्णत्ताओ, त जहा—एगत्ताणुप्पेहा, अणिच्चाणुप्पेहा, असरणाणुप्पेहा, ससाराणुप्पेहा॥

६०९. सुक्के झाणे चउव्विहे चउप्पडोयारे पण्णत्ते, त जहा—पुहत्तवितक्के[2] सवियारी, एगत्तवितक्के अवियारी, सुहुमकिरिए अणियट्टी, समोछिण्णकिरिए[3] अप्पडिवायी॥

६१० सुक्कस्स ण झाणस्स चत्तारि लक्खणा पण्णत्ता, त जहा—खती, मुत्ती, अज्जवे, मद्दवे॥

६११ सुक्कस्स ण झाणस्स चत्तारि आलबणा पण्णत्ता, त जहा—अव्वहे, असमोहे, विवेगे, विउसग्गे॥

---

१. परिज्जुसिय° (ख); परिज्झुसिय° (ता)।
२. °वियक्के (ख)।
३ समोच्छिण्ण° (ख, ता, म); समुच्छिण्ण° (क्व०)।

६१२ सुक्कस्स णं झाणस्स चत्तारि अणुप्पेहाओ पण्णत्ताओ, तं जहा—'अणंतवत्तियाणुप्पेहा, विप्परिणामाणुप्पेहा, असुभाणुप्पेहा, अवायाणुप्पेहा'[1]। सेत्तं झाणे ॥

६१३ से किं तं विउसग्गे? विउसग्गे दुविहे पण्णत्ते, तं जहा—दव्वविउसग्गे य, भावविउसग्गे य ॥

६१४ से किं तं दव्वविउसग्गे? दव्वविउसग्गे चउव्विहे पण्णत्ते, तं जहा—गणविउसग्गे, सरीरविउसग्गे, उवहिविउसग्गे, भत्तपाणविउसग्गे। सेत्तं दव्वविउसग्गे ॥

६१५ से किं तं भावविउसग्गे? भावविउसग्गे तिविहे पण्णत्ते तं जहा—कसायविउसग्गे, संसारविउसग्गे, कम्मविउसग्गे ॥

६१६ से किं तं कसायविउसग्गे? कसायविउसग्गे चउव्विहे पण्णत्ते, तं जहा—कोहविउसग्गे, माणविउसग्गे, मायाविउसग्गे, लोभविउसग्गे। सेत्तं कसायविउसग्गे ॥

६१७ से किं तं संसारविउसग्गे? संसारविउसग्गे चउव्विहे पण्णत्ते, तं जहा—नेरइयसंसारविउसग्गे जाव देवसंसारविउसग्गे। सेत्तं संसारविउसग्गे ॥

६१८ से किं तं कम्मविउसग्गे? कम्मविउसग्गे अट्ठविहे पण्णत्ते, तं जहा—नाणावरणिज्जकम्मविउसग्गे जाव अंतराइयकम्मविउसग्गे। सेत्तं कम्मविउसग्गे। सेत्तं भावविउसग्गे। सेत्तं अब्भिंतरए तवे ॥

६१९ सेवं भंते! सेवं भंते! त्ति ॥

अट्ठमो उद्देसो

नेरइयादीण-पुणब्भव-पदं

६२० रायगिहे जाव एवं वयासी—नेरइया णं भंते! कहं उववज्जंति?
गोयमा! से जहानामए पवए पवमाणे अज्झवसाणनिव्वत्तिएणं करणोवाएणं सेयकाले तं ठाणं विप्पजहित्ता पुरिमं ठाणं उवसंपज्जित्ताणं विहरइ, एवामेव एए वि जीवा पवओ विव पवमाणा अज्झवसाणनिव्वत्तिएणं करणोवाएणं सेयकाले तं भवं विप्पजहित्ता पुरिमं भवं उवसंपज्जित्ताणं विहरंति ॥

---

१. अवायाणुप्पेहा, असुभाणुप्पेहा, अणंतवत्तियाणुप्पेहा, विपरिणामाणुप्पेहा (ओ० सू० ४३)

छवीसइमं सतं

पढमो उद्देसो

नमो सुयदेवयाए भगवईए

१. जीवा य २. लेस्स ३. पक्खिय, ४ दिट्ठि ५ अण्णाण ६ नाण ७ सण्णाओ।
८. वेय ९. कसाए १० उवओग ११ जोग एक्कारस वि ठाणा ॥१॥

जीवाणं लेस्सादिविसेसितजीवाणं च बंधाबंध-पदं

१ तेण कालेणं तेणं समएण रायगिहे जाव[1] एव वयासी—जीवा ण भते ! पावं कम्म किं बधी बधइ बधिस्सइ ? बधी बधइ न बधिस्सइ ? बधी न बधइ बंधिस्सइ ? बधी न बधइ न बधिस्सइ ?
गोयमा ! अत्थेगतिए बधी बधइ बधिस्सइ, अत्थेगतिए बधी बधइ न बधिस्सइ, अत्थेगतिए बधी न बधइ बधिस्सइ, अत्थेगतिए बधी न बधइ न बधिस्सइ ॥

२ सलेस्से ण भते ! जीवे पाव कम्म कि बधी बधइ बधिस्सइ ? बधी बधइ न बधिस्सइ—पुच्छा।
गोयमा ! अत्थेगतिए बधी बधइ बधिस्सइ, अत्थेगतिए एव चउभगो ॥

३ कण्हलेस्से ण भते ! जीवे पाव कम्म किं बधी—पुच्छा।
गोयमा ! अत्थेगतिए बधी बधइ बधिस्सइ, अत्थेगतिए बधी बधइ न बधिस्सइ। एव जाव पम्हलेस्से। सव्वत्थ पढम-बितियभंगा। सुक्कलेस्से जहा सलेस्से तहेव चउभगो ॥

४. अलेस्से ण भते ! जीवे पाव कम्म कि बधी—पुच्छा।
गोयमा ! बधी न बधइ न बधिस्सइ ॥

५ कण्हपक्खिए ण भते ! जीवे पावं कम्म—पुच्छा।
गोयमा ! अत्थेगतिए बधी, पढम-बितिया[2] भगा ॥

---

१. भ० ११४-१०।

२. बीया (ता)।

६. सुक्कपक्खिए णं भते ! जीवे—पुच्छा ।
गोयमा ! चउभगो भाणियव्वो ॥

७. सम्मद्दिट्ठीण चत्तारि भंगा, मिच्छादिट्ठीण पढम-वितिया, सम्मामिच्छादिट्ठीण एवं चेव ॥

८ नाणीण चत्तारि भगा, आभिणिबोहियनाणीण जाव मणपज्जवनाणीणं चत्तारि भंगा, केवलनाणीण चरिमो भगो जहा अलेस्साण ॥

९ अण्णाणीण पढम-वितिया, एव मइअण्णाणीण, सुयअण्णाणीण, विभगनाणीण वि ॥

१० आहारसण्णोवउत्ताण जाव परिग्गहसण्णोवउत्ताण पढम-वितिया, नोसण्णोव-उत्ताण चत्तारि ॥

११ सवेदगाण पढम-वितिया । एव इत्थिवेदगा, पुरिसवेदगा, नपुसगवेदगा वि । अवेदगाण चत्तारि ॥

१२ सकसाईणं चत्तारि, कोहकसाईण पढम-वितिया भगा, एव माणकसायिस्स वि, मायाकसायिस्स वि । लोभकसायिस्स चत्तारि भगा ॥

१३. अकसायी ण भते ! जीवे पाव कम्म किं वधी—पुच्छा ।
गोयमा ! अत्थेगतिए वधी न वधइ वधिस्सइ, अत्थेगतिए बधी न वधइ न वधिस्सइ ॥

१४ सजोगिस्स चउभगो, एव मणजोगिस्स वि, वइजोगिस्स वि, कायजोगिस्स वि । अजोगिस्स चरिमो ॥

१५ सागारोवउत्ते चत्तारि, अणागारोवउत्ते वि चत्तारि भगा ॥

नेरइयादीणं लेस्सादिविसेसितनेरइयादीणं च बंधाबंध-पदं

१६ नेरइए ण भते ! पाव कम्म किं वधी वधइ वधिस्सइ ?
गोयमा ! अत्थेगतिए वधी, पढम-वितिया ॥

१७. सलेस्से ण भते ! नेरइए पाव कम्म० ? एव चेव । एव कण्हलेस्से वि, नील-लेस्से वि, काउलेस्से वि । एव कण्हपक्खिए सुक्कपक्खिए, सम्मदिट्ठी मिच्छा-दिट्ठी सम्मामिच्छादिट्ठी, नाणी आभिणिवोहियनाणी सुयनाणी ओहिनाणी, अण्णाणी मइअण्णाणी सुयअण्णाणी विभगनाणी, आहारसण्णोवउत्ते जाव परिग्गहसण्णोवउत्ते, सवेदए नपुसकवेदए, सकसायी जाव लोभकसायी, सजोगी मणजोगी वइजोगी कायजोगी, सागरोवउत्ते अणागारोवउत्ते—एएसु सव्वेसु पदेसु पढम-वितिया भगा भाणियव्वा । एव असुरकुमारस्स वि वत्तव्वया भाणियव्वा, नवर—तेउलेसा, इत्थिवेदग-पुरिसवेदगा य अब्भहिया, नपुसगवेदगा न भण्णति, सेस त चेव, सव्वत्थ पढम-वितिया भगा । एव जाव थणियकुमारस्स ।

६२१ तेसि ण भते ! जीवाणं कह सीहा गती, कहं सीहे गतिविसए पण्णत्ते ?
गोयमा ! से जहानामए केइ पुरिसे तरुणे बलव एव जहा चोद्दसमसए पढमुद्देसए जाव[1] तिसमएण वा विग्गहेण उववज्जति । तेसि ण जीवाणं तहा सीहा गई, तहा सीहे गतिविसए पण्णत्ते ।।

६२२ ते ण भते ! जीवा कह परभवियाउय पकरेंति ?
गोयमा ! अज्झवसाणजोगनिव्वत्तिएण करणोवाएण, एव खलु ते जीवा परभवियाउयं पकरेंति ।।

६२३ तेसि णं भते ! जीवाण कह गती पवत्तइ ?
गोयमा ! आउक्खएण, भवक्खएण, ठिइक्खएण, एव खलु तेसिं जीवाणं गती पवत्तति ।।

६२४ ते ण भते ! जीवा किं आइड्ढीए[2] उववज्जति ? परिड्ढीए उववज्जति ?
गोयमा ! आइड्ढीए उववज्जंति, नो परिड्ढीए उववज्जति ।।

६२५ ते ण भते ! जीवा किं आयकम्मुणा उववज्जति ? परकम्मुणा उववज्जति ?
गोयमा ! आयकम्मुणा उववज्जति, नो परकम्मुणा उववज्जति ।।

६२६ ते ण भते ! जीवा किं आयप्पयोगेण उववज्जति ? परप्पयोगेण उववज्जंति ?
गोयमा ! आयप्पयोगेण उववज्जति, नो परप्पयोगेण उववज्जति ।।

६२७. असुरकुमारा ण भते ! कह उववज्जति ? जहा नेरइया तहेव निरवसेस जाव नो परप्पयोगेण उववज्जति । एव एगिंदियवज्जा जाव वेमाणिया । एगिंदिया एवं चेव, नवर—चउसमइओ विग्गहो । सेस त चेव ।।

६२८ सेव भते ! सेव भते ! त्ति जाव विहरइ ।।

६-१२ उद्देसा

६२९ भवसिद्धियनेरइया ण भते ! कह उववज्जति ?
गोयमा ! से जहानामए पवए पवमाणे, अवसेस त चेव जाव वेमाणिए ।।

६३० सेव भते ! सेव भते ! त्ति ।।

६३१ अभवसिद्धियनेरइया ण भते ! कह उववज्जति ?
गोयमा ! से जहानामए पवए पवमाणे, अवसेस त चेव । एव जाव वेमाणिए ।।

६३२ सेव भंते ! सेवं भते ! त्ति ।।

---

१. भ० १४।३ ।

२. आयड्ढीए (ता) ।

६३३ सम्मदिट्ठिनेरइया ण भते ! कह उववज्जति ?
गोयमा ! से जहानामए पवए पवमाणे, अवसेस त चेव । एव एगिदियवज्ज जाव वेमाणिए ॥

६३४ सेव भते ! सेव भते ! त्ति ॥

६३५ मिच्छदिट्ठिनेरइया ण भते ! कह उववज्जति ?
गोयमा ! से जहानामए पवए पवमाणे, अवसेस त चेव । एव जाव वेमाणिए ॥

६३६ सेव भते ! सेव भते । त्ति ॥

———

एव पुढविकाइयस्स वि, आउकाइयस्स वि जाव पचिदियतिरिक्खजोणियस्स वि सव्वत्थ वि पढम-वितिया भंगा, नवर—जस्स जा लेस्सा। दिट्ठी, नाण, अण्णाण, वेदो, जोगो य अत्थि त तस्स भाणियव्व, सेस तहेव। मणूसस्स जच्चेव जीवपदे वत्तव्वया सच्चेव निरवसेसा भाणियव्वा। वाणमतरस्स जहा असुरकुमारस्स। जोइसियस्स वेमाणियस्स एव चेव, नवर—लेस्साओ जाणियव्वाओ, सेस तहेव भाणियव्व ॥

जीवादीण नाणावरणादिकम्मं पडुच्च बंधावंध-पदं

१८ जीवे ण भते! नाणावरणिज्ज कम्म कि बधी बधइ बधिस्सइ० ? एवं जहेव पावकम्मस्स वत्तव्वया तहेव नाणावरणिज्जस्स वि भाणियव्वा, नवर—जीव-पदे मणुस्सपदे य सकसाइम्मि जाव लोभकसाइम्मि य पढम-वितिया भगा, अवसेस त चेव जाव वेमाणिया। एव दरिसणावरणिज्जेण वि दडगो भाणियव्वो निरवसेसो ॥

१९ जीवे ण भते! वेयणिज्ज कम्म किं बधी—पुच्छा।
गोयमा! अत्थेगतिए बधी वंधइ बधिस्सइ, अत्थेगतिए बधी वंधइ न वंधिस्सइ, अत्थेगतिए बधी न बधइ न बधिस्सइ। सलेस्से वि एव चेव ततियविहूणा भगा। कण्हलेस्से जाव पम्हलेस्से पढम-वितिया भगा। सुक्कलेस्से ततियविहूणा भगा। अलेस्से चरिमो भगो। कण्हपक्खिए पढम-वितिया। सुक्कपक्खिया ततिय-विहूणा। एव सम्मदिट्ठिस्स वि, मिच्छादिट्ठिस्स सम्मामिच्छादिट्ठिस्स य पढम-वितिया। नाणिस्स ततियविहूणा। आभिणिबोहियनाणी जाव मणपज्जवनाणी पढम-वितिया। केवलनाणी ततियविहूणा। एव नोसण्णोवउत्ते, अवेदए, अकसायी। सागारोवउत्ते अणागारोवउत्ते—एएसु ततियविहूणा। अजोगिम्मि य चरिमो। सेसेसु पढम-बितिया ॥

२० नेरइए णं भते! वेयणिज्ज कम्म कि बंधी बधइ० ? एव नेरइया जाव वेमाणिय त्ति। जस्स ज अत्थि सव्वत्थ वि पढम-वितिया, नवर – मणुस्से जहा जीवे ॥

२१ जीवे ण भते! मोहणिज्ज कम्मं कि बधी बधइ० ? जहेव पावं कम्म तहेव मोहणिज्ज पि निरवसेस जाव वेमाणिए ॥

२२ जीवे ण भते! आउय कम्म कि बधी बधइ—पुच्छा।
गोयमा अत्थेगतिए बधी चउभगो। सलेस्से जाव सुक्कलेस्से चत्तारि भगा। अलेस्से चरिमो भगो ॥

२३ कण्हपक्खिए ण—पुच्छा।
गोयमा! अत्थेगतिए बधी बधइ बंधिस्सइ, अत्थेगतिए बधी न बधइ बधिस्सइ। सुक्कपक्खिए सम्मदिट्ठी मिच्छादिट्ठी चत्तारि भगा ॥

२४ सम्मामिच्छादिट्ठी—पुच्छा ।
गोयमा ! अत्थेगतिए वधी न वधइ वधिस्सइ, अत्थेगतिए वधी न वधइ न वधिस्सइ । नाणी जाव ओहिनाणी चत्तारि भगा ।।

२५ मणपज्जवनाणी—पुच्छा ।
गोयमा ! अत्थेगतिए वधी वधइ वधिस्सइ, अत्थेगतिए वधी न वधइ बधिस्सइ, अत्थेगतिए वधी न वधइ न वधिस्सइ । केवलनाणे चरिमो भगो । एव एएण कमेण नोसण्णोवउत्ते वितियविहूणा जहेव मणपज्जवनाणे । अवेदए अकसाई य ततिय-चउत्था जहेव सम्मामिच्छत्ते । अजोगिम्मि चरिमो, सेसेसु पदेसु चत्तारि भगा जाव अणागारोवउत्ते ।।

२६ नेरइए ण भते ! आउय कम्म किं वधी–पुच्छा ।
गोयमा ! अत्थेगतिए चत्तारि भगा, एव सव्वत्थ वि नेरइयाण चत्तारि भगा, नवर—कण्हलेस्से कण्हपक्खिए य पढम-ततिया भगा, सम्मामिच्छत्ते ततिय-चउत्था । असुरकुमारे एव चेव, नवर—कण्हलेस्से वि चत्तारि भगा भाणियव्वा, सेस जहा नेरइयाणं । एव जाव थणियकुमाराण । पुढविक्काइयाण सव्वत्थ वि चत्तारि भगा, नवर—कण्हपक्खिए पढम-ततिया भगा ।।

२७. तेउलेस्से– पुच्छा ।
गोयमा ! वधी न वधइ वधिस्सइ, सेसेसु सव्वत्थ चत्तारि भगा । एव आउक्काइय-वणस्सइकाइयाण वि निरवसेस । तेउकाइय-वाउक्काइयाण सव्वत्थ वि पढम-ततिया भगा । वेइदिय-तेइदिय-चउरिदियाण पि सव्वत्थ वि पढम-ततिया भगा, नवर– सम्मत्ते, नाणे, आभिणिवोहियनाणे सुयनाणे ततिओ भगो । पचिंदियतिरिक्खजोणियाण कण्हपक्खिए पढम-ततिया भगा, सम्मामिच्छत्ते ततियचउत्थो भगो । सम्मत्ते, नाणे, आभिणिवोहियनाणे, सुयनाणे, ओहिनाणे—एएसु पचसु वि पदेसु वितियविहूणा भगा, सेसेसु चत्तारि भगा । मणुस्साण जहा जीवाण, नवर—सम्मत्ते, ओहिए नाणे, आभिणिवोहियनाणे, सुयनाणे, ओहिनाणे—एएसु वितियविहूणा भगा, सेस त चेव । वाणमतर-जोइसिय-वेमाणिया जहा असुरकुमारा । नाम गोय अतराय च एयाणि जहा नाणावरणिज्ज ।।

२८ सेव भते ! सेवं भते ! त्ति जाव विहरइ ।।

बीओ उद्देसो

विसेसितनेरइयादीण बंधाबंध-पदं

२९ अणतरोववन्नए ण भते ! नेरइए पाव कम्म कि वधी—पुच्छा तहेव ।
गोयमा ! अत्थेगतिए वधी, पढम-बितिया भगा ।।

३० सलेस्से ण भते ! अणतरोववन्नए नेरइए पाव कम्म कि बधी—पुच्छा ।
गोयमा ! पढम-बितिया भगा । एव खलु सव्वत्थ पढम-बितिया भगा, नवर—सम्मामिच्छत्त मणजोगो वइजोगो य न पुच्छिज्जइ । एव जाव थणियकुमाराण । बेइदिय-तेइदिय-चउरिदियाण वइजोगो न भण्णइ । पचिदियतिरिक्खजोणियाण पि सम्मामिच्छत्त, ओहिनाण, विभगनाण, मणजोगो, वइजोगो—एयाणि पच न भण्णति । मणुस्साण अलेस्स-सम्मामिच्छत्त-मणपज्जवनाण-केवलनाण-विभग-नाण-नोसण्णोवउत्त-अवेदग-अकसाय-मणजोग-वइजोग-अजोगि—एयाणि एक्का-रस पदाणि न भण्णति । वाणमतर-जोइसिय-वेमाणियाण जहा नेरइयाण तहेव ते तिण्णि न भण्णति । सव्वेसि जाणि सेसाणि ठाणाणि सव्वत्थ पढम-बितिया भगा । एगिदियाण सव्वत्थ पढम-बितिया भगा । जहा पावे एव नाणा-वरणिज्जेण वि दडओ, एव आउयवज्जेसु जाव अतराइए दडओ ॥

३१ अणतरोववन्नए ण भते ! नेरइए आउय कम्म कि बधी—पुच्छा ।
गोयमा ! बधी न बधइ बधिस्सइ ॥

३२. सलेस्से ण भते ! अणतरोववन्नए नेरइए आउय कम्म कि बधी० ? एव चेव ततिओ भगो । एव जाव अणागारोवउत्ते । सव्वत्थ वि ततिओ भगो । एव मणुस्सवज्ज जाव वेमाणियाण । मणुस्साण सव्वत्थ ततिय-चउत्था भगा, नवर—कण्हपक्खिएसु ततिओ भगो । सव्वेसि नाणत्ताइ ताइ चेव ॥

३३ सेव भते ! सेव भते ! त्ति ॥

३-१० उद्देसा

३४. परपरोववन्नए ण भते ! नेरइए पाव कम्म किं बधी—पुच्छा ।
गोयमा ! अत्थेगतिए पढम-बितिया । एव जहेव पढमो उद्देसओ तहेव परपरो-ववन्नएहि वि उद्देसओ भाणियव्वो नेरइयाईओ तहेव नवदडगसगहिओ । अट्ठण्ह वि कम्मप्पगडीण जा जस्स कम्मस्स वत्तव्वया सा तस्स अहीणमतिरित्ता नेयव्वा जाव वेमाणिया अणागारोवउत्ता ॥

३५ सेव भते ! सेव भते ! त्ति ॥

३६. अणतरोगाढए ण भते ! नेरइए पाव कम्म किं बधी—पुच्छा ।
गोयमा ! अत्थेगतिए एव जहेव अणतरोववन्नएहि नवदडगसगहिओ[1] उद्देसो

---

१. °सहिओ (ता, व) ।

भणिओ तहेव अणतरोगाढएहि वि अहीणमतिरित्तो भाणियव्वो नेरइयादीए जाव वेमाणिए ॥

३७ सेव भते ! सेव भते ! त्ति ॥

३८ परपरोगाढए ण भते ! नेरइए पाव कम्म कि बधी ? जहेव परपरोववन्नएहि उद्देसो सो चेव निरवसेसो भाणियव्वो ॥

३९ सेव भते ! सेव भते ! त्ति ॥

४० अणतराहारए ण भते ! नेरइए पाव कम्म कि बधी—पुच्छा । एव जहेव अणतरोववन्नएहि उद्देसो तहेव निरवसेस ॥

४१ सेवं भते ! सेव भते ! त्ति ॥

४२ परपराहारए ण भते ! नेरइए पाव कम्म कि बधी—पुच्छा ।
गोयमा ! एव जहेव परपरोववन्नएहिं उद्देसो तहेव निरवसेसो भाणियव्वो ॥

४३ सेव भते ! सेव भते ! त्ति ॥

४४ अणतरपज्जत्तए ण भते ! नेरइए पाव कम्म कि बधी—पुच्छा ।
गोयमा ! जहेव अणतरोववन्नएहि उद्देसो तहेव निरवसेस ॥

४५ सेव भते ! सेव भते ! त्ति ॥

४६. परपरपज्जत्तए ण भते ! नेरइए पाव कम्म कि बधी—पुच्छा ।
गोयमा ! एव जहेव परपरोववन्नएहि उद्देसो तहेव निरवसेसो भाणियव्वो ॥

४७ सेव भते ! सेवं भते ! त्ति जाव विहरइ ॥

४८. चरिमे ण भते ! नेरइए पाव कम्म कि बधी—पुच्छा ।
गोयमा ! एव जहेव परपरोववन्नएहिं उद्देसो तहेव चरिमेहिं निरवसेस ॥

४९ सेव भते ! सेव भते ! त्ति जाव[1] विहरइ ॥

एक्कारसमो उद्देसो

५० अचरिमे ण भते ! नेरइए पाव कम्म किं बधी—पुच्छा ।
गोयमा ! अत्थेगइए एव जहेव पढमोद्देसए, पढम-वितिया भगा भाणियव्वा सव्वत्थ जाव पचिंदियतिरिक्खजोणियाण ॥

५१ अचरिमे णं भते ! मणुस्से पाव कम्म किं बधी—पुच्छा ।
गोयमा ! अत्थेगतिए बधी बधइ बधिस्सइ, अत्थेगतिए बधी बंधइ न बधिस्सइ, अत्थेगतिए बधी न बधइ बधिस्सइ ॥

---

१. भ० १।५१ ।

५२ सलेस्से ण भते ! अचरिमे मणुस्से पावं कम्म किं वधी ०? एव चेव तिण्णि भगा चरमविहूणा भाणियव्वा एव जहेव पढमुद्देसे, नवरं—जेसु तत्थ वीससु[1] चत्तारि भगा तेसु इह आदिल्ला तिण्णि भगा भाणियव्वा चरिमभगवज्जा। अलेस्से केवलनाणी य अजोगी य—एए तिण्णि वि न पुच्छिज्जति, सेस तहेव। वाणमतर-जोइसिय-वेमाणिए जहा नेरइए ॥

५३ अचरिमे ण भते ! नेरइए नाणावरणिज्ज कम्म कि वधी—पुच्छा। गोयमा ! एव जहेव पाव, नवर—मणुस्सेसु सकसाईसु[2] लोभकसाईसु य पढम-बितिया भगा, सेसा अट्ठारस चरमविहूणा, सेस तहेव जाव वेमाणियाणं। दरिसणावरणिज्ज पि एव चेव निरवसेस। वेयणिज्जे सव्वत्थ वि पढम-बितिया भगा जाव वेमाणियाण, नवर—मणुस्सेसु अलेस्से केवली अजोगी य नत्थि ॥

५४ अचरिमे ण भते ! नेरइए मोहणिज्ज कम्म कि वधी—पुच्छा। गोयमा ! जहेव पाव तहेव निरवसेस जाव वेमाणिए ॥

५५. अचरिमे ण भते ! नेरइए आउय कम्म कि वधी—पुच्छा। गोयमा ! पढम-बितिया भगा। एव सव्वपदेसु वि। नेरइयाण पढम-ततिया भगा, नवर—सम्मामिच्छत्ते ततिओ भंगो। एव जाव थणियकुमाराण। पुढविक्काइय-आउक्काइय-वणस्सइकाइयाण तेउलेस्साए ततिओ भगो। सेसेसु पदेसु सव्वत्थ पढम-ततिया भंगा। तेउकाइय-वाउक्काइयाण सव्वत्थ पढम-ततिया भगा। वेइदिय-तेइदिय-चउरिदियाण एव चेव, नवर—सम्मत्ते ओहिनाणे आभिणिबोहियनाणे सुयनाणे—एएसु चउसु वि ठाणेसु ततिओ भगो। पचिंदियतिरिक्खजोणियाण सम्मामिच्छत्ते ततिओ भगो। सेसपदेसु[3] सव्वत्थ पढम-ततिया भगा। मणुस्साण सम्मामिच्छत्ते अवेदए अकसाइम्मि य ततिओ भगो, अलेस्स-केवलनाण-अजोगी य न पुच्छिज्जति। सेसपदेसु सव्वत्थ पढम-ततिया भगा। वाणमतर-जोइसिय-वेमाणिया जहा नेरइया। नाम गोय अतराइय च जहेव नाणावरणिज्ज तहेव निरवसेस ॥

५६ सेव भते ! सेव भते ! त्ति जाव विहरइ ॥

---

१ वीसेसु (अ)।
२. कसायीसु (क, म, स)।
३. सेसेसु पदेसु (स)।

सत्तवीसइमं सतं

१-११ उद्देसा

जीवाण पावकम्म-करणाकरण-पद

१ जीवे ण भते ! पाव कम्म कि करिसु करेति करेस्सति ? करिसु करेति न-करेस्सति ? करिसु न करेति करेस्सति ? करिसु न करेति न करेस्सति ?
गोयमा ! अत्थेगतिए करिसु न करेति करेस्सति, अत्थेगतिए करिसु करेति न करेस्सति, अत्थेगतिए करिसु न करेति करेस्सति, अत्थेगतिए करिसु न करेति न करेस्सति ॥

२. सलेस्से ण भते ! जीवे पाव कम्म ०? एव एएण अभिलावेण जच्चेव बधिसए वत्तव्वया सच्चेव निरवसेसा भाणियव्वा, तहेव नवदडगसगहिया एक्कारस उद्देसगा भाणियव्वा ॥

अट्ठावीसइमं सतं

पढमो उद्देसो

जीवाणं पावकम्म-समज्जण-समायरण-पदं

१. जीवा ण भते ! पाव कम्म कहि समज्जिणिसु ? कहि समायरिसु ?
गोयमा ! १ सव्वे वि ताव तिरिक्खजोणिएसु होज्जा २ अहवा तिरिक्ख-जोणिएसु य नेरइएसु य होज्जा ३ अहवा तिरिक्खजोणिएसु य मणुस्सेमु य होज्जा ४. अहवा तिरिक्खजोणिएसु य देवेसु य होज्जा ५ अहवा तिरिक्खजोणिएसु य नेरइएसु य मणुस्सेमु य होज्जा ६ अहवा तिरिक्खजोणिएसु य नेरइएसु य देवेसु य होज्जा ७ अहवा तिरिक्खजोणिएसु य मणुस्सेसु य देवेसु य होज्जा ८ अहवा तिरिक्खजोणिएसु य नेरइएसु य मणुस्सेसु य देवेसु य होज्जा ॥

२. सलेस्सा ण भते ! जीवा पाव कम्म कहिं समज्जिणिसु ? कहि समायरिसु ?
एव चेव । एव कण्हलेस्सा जाव अलेस्सा । कण्हपक्खिया, सुक्कपक्खिया । एव जाव अणागारोवउत्ता ॥

३. नेरइया ण भते ! पाव कम्म कहि समज्जिणिसु ? कहि समायरिसु ?
गोयमा ! सव्वे वि ताव तिरिक्खजोणिएसु होज्जा, एव चेव अट्ठ भगा भाणियव्वा । एव सव्वत्थ अट्ठभगा जाव अणागारोवउत्तत्ति । एव जाव वेमाणि-याण । एव नाणावरणिज्जेण वि दडओ । एव जाव अतराइएण । एवं एए जीवादीया वेमाणियपज्जवसाणा नव दडगा भवति ॥

४ सेव भते ! सेव भते ! त्ति जाव विहरइ ॥

बीओ उद्देसो

५ अणतरोववन्नगा ण भते ! नेरइया पाव कम्म कहि समज्जिणिसु ? कहिं समायरिसु ?

गोयमा ! सव्वे वि ताव तिरिक्खजोणिएसु होज्जा, एव एत्थ[1] वि अट्ठ भगा। एव अणतरोववन्नगाण नेरइयाईण जस्स ज अत्थि लेसादीय अणागारोवओग-पज्जवसाण त सव्व एयाए भयणाए भाणियव्व जाव वेमाणियाण, नवर—अणंतरेसु जे परिहरियव्वा ते जहा बधिसए तहा इह पि। एव नाणावरणिज्जेण वि दडओ। एव जाव अतराइएण निरवसेस। एसो वि नवदडगसगहिओ उद्देसओ भाणियव्वो ॥

६ सेव भते ! सेव भते ! त्ति ॥

३-११ उद्देसा

७ एव एएण कमेण जहेव बधिसए उद्देसगाण परिवाडी तहेव इह पि अट्ठसु भगेसु नेयव्वा, नवर—जाणियव्व ज जस्स अत्थि त तस्स भाणियव्व जाव अचरिमुद्देसो। सव्वे वि एए एक्कारस उद्देसगा ॥

८ सेव भते ! सेव भते ! त्ति जाव विहरइ ॥

---

१. सव्वत्थ (ता)।

एगूणतीसइमं सतं

पढमो उद्देसो

जीवाणं पावकम्म-पट्ठवण-निट्ठवण-पदं

१. जीवा णं भते ! पावं कम्म किं समाय पट्ठविसु समाय निट्ठविंसु ? समाय पट्ठविसु विसमाय निट्ठविसु ? विसमाय पट्ठविसु समाय निट्ठविंसु ? विसमाय पट्ठविसु विसमाय निट्ठविसु ?
गोयमा ! अत्थेगतिया समायं पट्ठविसु समायं निट्ठविसु जाव अत्थेगतिया विसमाय पट्ठविसु विसमाय निट्ठविसु ॥

२ से केणट्ठेण भते ! एव वुच्चइ—अत्थेगतिया समाय पट्ठविसु समाय निट्ठविसु, त चेव ?
गोयमा ! जीवा चउव्विहा पण्णत्ता, त जहा—अत्थेगतिया समाउया समोववन्नगा, अत्थेगतिया समाउया विसमोववन्नगा, अत्थेगतिया विसमाउया समोववन्नगा, अत्थेगतिया विसमाउया विसमोववन्नगा। तत्थ ण जे ते समाउया समोववन्नगा ते ण पावं कम्म समाय पट्ठविसु समाय निट्ठविसु। तत्थ ण जे ते समाउया विसमोववन्नगा ते ण पाव कम्म समाय पट्ठविसु विसमाय निट्ठविसु। तत्थ ण जे ते विसमाउया समोववन्नगा ते ण पाव कम्म विसमाय पट्ठविसु समाय निट्ठविसु। तत्थ ण जे ते विसमाउया विसमोववन्नगा ते ण पाव कम्म विसमाय पट्ठविसु विसमाय निट्ठविसु। से तेणट्ठेण गोयमा ! त चेव ॥

३. सलेस्सा ण भते ! जीवा पाव कम्म० ? एव चेव, एवं सव्वट्ठाणेसु वि जाव अणागारोवउत्ता। एए सव्वे वि पया एयाए वत्तव्वयाए भाणियव्वा ॥

४ नेरइया ण भते ! पाव कम्म कि समाय पट्ठविसु समाय निट्ठविसु—पुच्छा।
गोयमा ! अत्थेगतिया समाय पट्ठविसु, एव जहेव जीवाण तहेव भाणियव्व जाव अणागारोवउत्ता। एव जाव वेमाणियाण जस्स ज अत्थि त एएण चेव

कमेण भाणियव्व । जहा पावेण दडग्रो । एएण कमेण अट्ठसु वि कम्मप्पगडीसु अट्ठ दडगा भाणियव्वा जीवादीया वेमाणियपज्जवसाणा । एसो नवदडगसगहिओ पढमो उद्देसो भाणियव्वो ॥

५ सेव भते ! सेव भते ! त्ति ॥

बीओ उद्देसो

६ अणतरोववन्नगा ण भते ! नेरइया पाव कम्म किं समाय पट्ठविसु समाय निट्ठविसु—पुच्छा ।

गोयमा ! अत्थेगतिया समाय पट्ठविसु समाय निट्ठविसु, अत्थेगतिया समाय पट्ठविसु विसमाय निट्ठविसु ॥

७ से केणट्ठेण भते ! एव वुच्चइ—अत्थेगतिया समाय पट्ठविसु, त चेव ?

गोयमा ! अणतरोववन्नगा नेरइया दुविहा पण्णत्ता, त जहा—अत्थेगतिया समाउया समोववन्नगा, अत्थेगतिया समाउया विसमोववन्नगा । तत्थ ण जे ते समाउया समोववन्नगा ते ण पाव कम्म समाय पट्ठविसु समाय निट्ठविसु । तत्थ ण जे ते समाउया विसमोववन्नगा ते ण पाव कम्म समाय पट्ठविसु विसमाय निट्ठविसु । से तेणट्ठेण त चेव ॥

८ सलेस्सा ण भते ! अणतरोववन्नगा नेरइया पाव० ? एव चेव, एवं जाव अणागारोवउत्ता । एव असुरकुमारा वि । एव जाव वेमाणिया[1], नवर ज जस्स अत्थि त तस्स भाणियव्व । एव नाणावरणिज्जेण वि दडग्रो । एव निरवसेस जाव अतराइएण ॥

९ सेव भते ! सेव भते ! त्ति जाव विहरइ ॥

३-११ उद्देसा

१०. एव एएण गमएण जच्चेव बधिसए उद्देसगपरिवाडी सच्चेव इह वि भाणियव्वा जाव अचरिमो त्ति । अणतरउद्देसगाण चउण्ह वि एक्का वत्तव्वया, सेसाण सत्तण्ह एक्का ॥

---

१ वेमाणियाण (ता) ।

तीसइमं सतं

पढमो उद्देसो

समोसरण-पदं

१. कइ ण भंते ! समोसरणा पण्णत्ता ?
गोयमा ! चत्तारि समोसरणा पण्णत्ता, त जहा—किरियावादी, अकिरिया-वादी, अण्णाणियवादी, वेणइयवादी ॥

२ जीवा ण भते ! किं किरियावादी ? अकिरियावादी ? अण्णाणियवादी ? वेणइयवादी ?
गोयमा ! जीवा किरियावादी वि, अकिरियावादी वि, अण्णाणियवादी वि, वेणइयवादी वि ॥

३ सलेस्सा ण भते ! जीवा कि किरियावादी—पुच्छा ।
गोयमा ! किरियावादी वि, अकिरियावादी वि, अण्णाणियवादी वि, वेणइयवादी वि । एव जाव सुक्कलेस्सा ॥

४ अलेस्सा ण भते ! जीवा—पुच्छा ।
गोयमा ! किरियावादी, नो अकिरियावादी, नो अण्णाणियवादी, नो वेणइय-वादी ॥

५ कण्हपक्खिया ण भते ! जीवा किं किरियावादी—पुच्छा ।
गोयमा ! नो किरियावादी, अकिरियावादी, अण्णाणियवादी वि, वेणइयवादी वि । सुक्कपक्खिया जहा सलेस्सा । सम्मदिट्ठी जहा अलेस्सा । मिच्छादिट्ठी जहा कण्हपक्खिया ।

६ सम्मामिच्छादिट्ठी ण —पुच्छा ।
गोयमा ! नो किरियावादी, नो अकिरियावादी, अण्णाणियवादी वि, वेणइय-वादी वि । नाणी जाव केवलनाणी जहा अलेस्से । अण्णाणी जाव विभग-नाणी जहा कण्हपक्खिया । आहारसण्णोवउत्ता जाव परिग्गहसण्णोवउत्ता

जहा सलेस्सा। नोसण्णोवउत्ता जहा अलेस्सा। सवेदगा जाव नपुसगवेदगा जहा सलेस्सा। अवेदगा जहा अलेस्सा। सकसायी जाव लोभकसायी जहा सलेस्सा। अकसायी जहा अलेस्सा। सजोगी जाव कायजोगी जहा सलेस्सा। अजोगी जहा अलेस्सा। सागारोवउत्ता अणागारोवउत्ता जहा सलेस्सा ।।

७ नेरइया ण भते ! कि किरियावादी—पुच्छा।
गोयमा ! किरियावादी वि जाव वेणइयवादी वि ।।

८ सलेस्सा ण भते ! नेरइया कि किरियावादी ? एव चेव। एव जाव काउलेस्सा। कण्हपक्खिया किरियाविवज्जिया। एव एएण कमेण जच्चेव जीवाण वत्तव्वया सच्चेव नेरइयाण वि जाव अणागारोवउत्ता, नवर—ज अत्थि त भाणियव्व, सेस न भण्णति। जहा नेरइया एव जाव थणियकुमारा ।।

९ पुढविकाइया ण भते ! कि किरियावादी—पुच्छा।
गोयमा ! नो किरियावादी, अकिरियावादी वि, अण्णाणियवादी वि, नो वेणइयवादी। एव पुढविकाइयाण जं अत्थि तत्थ सव्वत्थ वि एयाइ दो मज्झिल्लाइ समोसरणाइ जाव अणागारोवउत्ता वि। एव जाव चउरिंदियाण। सव्वट्ठाणेसु एयाइ चेव मज्झिल्लगाइ दो समोसरणाइ। सम्मत्त-नाणेहि वि एयाणि चेव मज्झिल्लगाइ दो समोसरणाइ। पचिंदियतिरिक्खजोणिया जहा जीवा, नवर—ज अत्थि त भाणियव्व। मणुस्सा जहा जीवा तहेव निरवसेस। वाणमतर-जोइसिय-वेमाणिया जहा असुरकुमारा ।।

१०. किरियावादी ण भते ! जीवा कि नेरइयाउय पकरेति ? तिरिक्खजोणियाउय पकरेति ? मणुस्साउय पकरेति ? देवाउय पकरेति ?
गोयमा ! नो नेरइयाउय पकरेति, नो तिरिक्खजोणियाउय पकरेति, मणुस्साउय पि पकरेति, देवाउय पि पकरेति ।।

११ जइ देवाउय पकरेति कि भवणवासिदेवाउय पकरेति जाव वेमाणिय देवाउय पकरेति ?
गोयमा ! नो भवणवासिदेवाउय पकरेति, नो वाणमतरदेवाउय पकरेति, नो जोइसियदेवाउय पकरेति, वेमाणियदेवाउय पकरेति ।।

१२ अकिरियावादी ण भते ! जीवा कि नेरइयाउय पकरेति, तिरिक्खजोणियाउय—पुच्छा।
गोयमा ! नेरइयाउय पि पकरेति जाव देवाउय पि पकरेति। एव अण्णाणियवादी वि वेणइयवादी वि ।।

१३. सलेस्सा ण भते ! जीवा किरियावादी कि नेरइयाउय पकरेति—पुच्छा।
गोयमा ! नो नेरइयाउय, एव जहेव जीवा तहेव सलेस्सा वि चउहि वि समोसरणेहिं भाणियव्वा ।।

१४ कण्हलेस्सा ण भते ! जीवा किरियावादी किं नेरइयाउयं पकरेंति—पुच्छा ।
गोयमा ! नो नेरइयाउय पकरेति, नो तिरिक्खजोणियाउय पकरेति, मणुस्साउय पकरेति, नो देवाउय पकरेति । अकिरियवादी अण्णाणियवादी वेणइयवादी य चत्तारि वि आउयाइ पकरेति । एव नीललेस्सा वि, काउलेस्सा वि ।।

१५. तेउलेस्सा ण भते ! जीवा किरियावादी किं नेरइयाउय पकरेति—पुच्छा ।
गोयमा ! नो नेरइयाउय पकरेति, नो तिरिक्खजोणियाउय पकरेति, मणुस्साउय पि पकरेति, देवाउय पि पकरेति । जइ देवाउय पकरेति तहेव[1] ।।

१६. तेउलेस्सा ण भते ! जीवा अकिरियावादी किं नेरइयाउयं—पुच्छा ।
गोयमा ! नो नेरइयाउय पकरेति, मणुस्साउय पि पकरेति, तिरिक्खजोणियाउय पि पकरेति, देवाउय पि पकरेति । एव अण्णाणियवादी वि, वेणइयवादी वि । जहा तेउलेस्सा एव पम्हलेस्सा वि सुक्कलेस्सा वि नायव्वा ।।

१७ अलेस्सा ण भते ! जीवा किरियावादी किं नेरइयाउयं—पुच्छा ।
गोयमा ! नो नेरइयाउय पकरेति, नो तिरिक्खजोणियाउय पकरेति, नो मणुस्साउय पकरेति, नो देवाउय पकरेति ।।

१८ कण्हपक्खिया ण भते ! जीवा अकिरियावादी किं नेरइयाउय—पुच्छा ।
गोयमा ! नेरइयाउय पि पकरेति, एव चउविह पि । एवं अण्णाणियवादी वि, वेणइयवादी वि । सुक्कपक्खिया जहा सलेस्सा ।।

१९ सम्मदिट्ठी ण भते ! जीवा किरियावादी किं नेरइयाउय—पुच्छा ।
गोयमा ! नो नेरइयाउय पकरेति, नो तिरिक्खजोणियाउय पकरेति, मणुस्साउय पि पकरेति, देवाउय पि पकरेंति । मिच्छादिट्ठी जहा कण्हपक्खिया ।।

२० सम्मामिच्छादिट्ठी ण भते ! जीवा अण्णाणियवादी किं नेरइयाउय० ? जहा अलेस्सा । एव वेणइयवादी वि । नाणी आभिणिवोहियनाणी य सुयनाणी य ओहिनाणी य जहा सम्मद्दिट्ठी ।।

२१ मणपज्जवनाणी ण भते !—पुच्छा ।
गोयमा ! नो नेरइयाउय पकरेति, नो तिरिक्खजोणियाउय पकरेति, नो मणुस्साउय पकरेति, देवाउय पकरेति ।।

२२. जइ देवाउय पकरेति किं भवणवासि—पुच्छा ।
गोयमा ! नो भवणवासिदेवाउय पकरेति, नो वाणमतरदेवाउय पकरेति, नो जोइसियदेवाउय पकरेति, वेमाणियदेवाउय पकरेति । केवलनाणी जहा अलेस्सा । अण्णाणी जाव विभगनाणी जहा कण्हपक्खिया । सण्णासु चउसु वि

---

१. भ० ३०।११ ।

जहा सलेस्सा । नोसण्णोवउत्ता जहा मणपज्जवनाणी । सवेदगा जाव नपुसग-वेदगा जहा सलेस्सा । अवेदगा जहा अलेस्सा । सकसायी जाव लोभकसायी जहा सलेस्सा । अकसायी जहा अलेस्सा । सजोगी[1] जाव कायजोगी जहा सलेस्सा । अजोगी जहा अलेस्सा । सागारोवउत्ता य अणागारोवउत्ता य जहा सलेस्सा ॥

२३ किरियावादी ण भते ! नेरइया कि नेरइयाउय—पुच्छा ।
गोयमा ! नो नेरइयाउय पकरेति, नो तिरिक्खजोणियाउय पकरेति, मणुस्साउय पकरेति, नो देवाउय पकरेति ॥

२४ अकिरियावादी ण भते ! नेरइया—पुच्छा ।
गोयमा ! नो नेरइयाउय, तिरिक्खजोणियाउय पि पकरेति, मणुस्साउय पि पकरेति, नो देवाउय पकरेति । एव अण्णाणियवादी वि, वेणइयवादी वि ॥

२५ सलेस्सा ण भते ! नेरइया किरियावादो कि नेरइयाउय० ? एव सव्वे वि नेरइया जे किरियावादी ते मणुस्साउय एग पकरेति, जे अकिरियावादी अण्णाणियवादी वेणइयवादी ते सव्वट्ठाणेसु वि नो नेरइयाउय पकरेति, तिरिक्खजोणियाउय पि पकरेति, मणुस्साउय पि पकरेति, नो देवाउय पकरेति, नवर—सम्मामिच्छत्ते उवरिल्लेहिं दोहि वि समोसरणेहि न किचि वि पकरेति जहेव जीवपदे । एव जाव थणियकुमारा जहेव नेरइया ॥

२६ अकिरियावादी ण भते ! पुढविक्काइया—पुच्छा ।
गोयमा ! नो नेरइयाउय पकरेति, तिरिक्खजोणियाउय पकरेति, मणुस्साउय पकरेति, नो देवाउय पकरेति । एव अण्णाणियवादी वि ॥

२७ सलेस्सा ण भते ! एव ज ज पद अत्थि पुढविकाइयाण तहिं तहिं मज्झिमेसु दोसु समोसरणेसु एवं चेव दुविह आउय पकरेति, नवर—तेउलेस्साए न कि पि पकरेति । एव आउक्काइयाण वि, वणस्सइकाइयाण वि । तेउकाइआ वाउकाइआ सव्वट्ठाणेसु मज्झिमेसु दोसु समोसरणेसु नो नेरइयाउय पकरेति, तिरिक्खजोणियाउय पकरेति, नो मणुस्साउय पकरेति, नो देवाउय पकरेति । वेइदिय-तेइदिय-चउरिदियाण जहा पुढविकाइयाण, नवर—सम्मत्त-नाणेसु न एक्क पि आउय पकरेति ॥

२८ किरियावादी ण भते ! पचिदियतिरिक्खजोणिया कि नेरइयाउय पकरेति—पुच्छा ।
गोयमा ! जहा मणपज्जवनाणी । अकिरियावादी अण्णाणियवादी वेणइयवादी य चउव्विह पि पकरेति । जहा ओहिया[2] तहा सलेस्सा वि ॥

---

१ सजोती (ख) । २ ओधिता (ता) ।

२९. कण्हलेस्सा णं भंते ! किरियावादी पंचिंदियतिरिक्खजोणिया किं नेरइयाउयं—पुच्छा।
गोयमा ! नो नेरइयाउयं पकरेति, नो तिरिक्खजोणियाउयं, नो मणुस्साउयं नो देवाउयं पकरेति। अकिरियावादी अण्णाणियवादी वेणइयवादी चउव्विहं पि पकरेति। जहा कण्हलेस्सा एवं नीललेस्सा वि, काउलेस्सा वि। तेउलेस्सा जहा सलेस्सा, नवरं—अकिरियावादी, अण्णाणियवादी, वेणइयवादी य नो नेरइयाउयं पकरेति, तिरिक्खजोणियाउयं पि पकरेति, मणुस्साउयं पि पकरेति, देवाउयं पि पकरेंति। एवं पम्हलेस्सा वि। एवं सुक्कलेस्सा वि भाणियव्वा। कण्हपक्खिया तिहिं समोसरणेहिं चउव्विहं पि आउयं पकरेति। सुक्कपक्खिया जहा सलेस्सा। सम्मदिट्ठी जहा मणपज्जवनाणी तहेव वेमाणियाउयं पकरेति। मिच्छादिट्ठी जहा कण्हपक्खिया। सम्मामिच्छादिट्ठी ण य एक्कं पि पकरेति जहेव नेरइया। नाणी जाव ओहिनाणी जहा सम्मद्दिट्ठी। अण्णाणी जाव विभंगनाणी जहा कण्हपक्खिया। सेसा जाव अणागारोवउत्ता सव्वे जहा सलेस्सा तहा चेव भाणियव्वा। जहा पंचिंदियतिरिक्खजोणियाणं वत्तव्वया भणिया एवं मणुस्साण वि भाणियव्वा, नवरं - मणपज्जवनाणी नोसण्णोवउत्ता य जहा सम्मद्दिट्ठी तिरिक्खजोणिया तहेव भाणियव्वा। अलेस्सा केवलनाणी अवेदगा अकसायी अजोगी य एए न एगं पि आउयं पकरेति। जहा ओहिया जीवा सेसं तहेव। वाणमंतर-जोइसिय-वेमाणिया जहा असुरकुमारा॥

३०. किरियावादी णं भंते ! जीवा किं भवसिद्धीया ? अभवसिद्धीया ?
गोयमा ! भवसिद्धीया, नो अभवसिद्धीया॥

३१. अकिरियावादी णं भंते ! जीवा किं भवसिद्धीया—पुच्छा।
गोयमा ! भवसिद्धीया वि, अभवसिद्धीया वि। एवं अण्णाणियवादी वि, वेणइयवादी वि॥

३२. सलेस्सा णं भंते ! जीवा किरियावादी किं भवसिद्धीया—पुच्छा।
गोयमा ! भवसिद्धीया, नो अभवसिद्धीया॥

३३. सलेस्सा णं भंते ! जीवा अकिरियावादी किं भवसिद्धीया—पुच्छा।
गोयमा ! भवसिद्धीया वि, अभवसिद्धीया वि। एवं अण्णाणियवादी वि, वेणइयवादी वि जहा सलेस्सा। एवं जाव सुक्कलेस्सा॥

३४. अलेस्सा णं भंते ! जीवा किरियावादी किं भवसिद्धीया—पुच्छा।
गोयमा ! भवसिद्धीया, नो अभवसिद्धीया। एवं एएणं अभिलावेणं कण्हपक्खिया तिसु वि समोसरणेसु भयणाए। सुक्कपक्खिया चउसु वि समोसरणेसु भवसिद्धीया, नो अभवसिद्धीया। सम्मदिट्ठी जहा अलेस्सा। मिच्छादिट्ठी जहा कण्ह-

पक्खिया। सम्मामिच्छादिट्ठी दोसु वि समोसरणेसु जहा अलेस्सा। नाणी जाव केवलनाणी भवसिद्धीया, नो अभवसिद्धीया। अण्णाणी जाव विभगनाणी जहा कण्हपक्खिया। सण्णासु चउसु वि जहा सलेस्सा। नोसण्णोवउत्ता जहा सम्मदिट्ठी। सवेदगा जाव नपुसगवेदगा जहा सलेस्सा। अवेदगा जहा सम्मदिट्ठी। सकसायी जाव लोभकसायी जहा सलेस्सा। अकसायी जहा सम्मदिट्ठी। सजोगी जाव कायजोगी जहा सलेस्सा। अजोगी जहा सम्मदिट्ठी। सागारोवउत्ता अणागारोवउत्ता जहा सलेस्सा। एव नेरइया वि भाणियव्वा, नवर—नायव्व[1] जं अत्थि। एव असुरकुमारा वि जाव थणियकुमारा। पुढविक्काइया सव्वट्ठाणेसु वि मज्झिल्लेसु दोसु वि समोसरणेसु भवसिद्धीया वि, अभवसिद्धीया वि। एव जाव वणस्सइकाइया। वेइदिय-तेइदिय-चउरिंदिया एव चेव, नवर—सम्मत्ते ओहिनाणे आभिणिबोहियनाणे सुयनाणे—एएसु चेव दोसु मज्झिमेसु समोसरणेसु भवसिद्धिया, नो अभवसिद्धिया, सेस त चेव। पचिंदियतिरिक्खजोणिया जहा नेरइया, नवर—नायव्व ज अत्थि। मणुस्सा जहा ओहिया जीवा। वाणमतर-जोइसिय-वेमाणिया जहा असुरकुमारा॥

३५ सेव भते! सेव भते! त्ति॥

बीओ उद्देसो

३६. अणतरोववन्नगा ण भंते! नेरइया किं किरियावादी—पुच्छा।
गोयमा! किरियावादी वि जाव वेणइयवादी वि॥

३७. सलेस्सा ण भते! अणतरोववन्नगा नेरइया किं किरियावादी० ? एव चेव। एव जहेव पढमुद्देसे नेरइयाण वत्तव्वया तहेव इह वि भाणियव्वा, नवरं—ज जं[2] अत्थि अणंतरोववन्नगाण नेरइयाण त त[3] भाणियव्व। एव सव्वजीवाण जाव वेमाणियाण, नवर—अणतरोववन्नगाण ज जहिं अत्थि त तहिं भाणियव्वं॥

३८ किरियावादी ण भंते! अणतरोववन्नगा नेरइया किं नेरइयाउयं पकरेति—पुच्छा।
गोयमा! नो नेरइयाउयं पकरेंति, नो तिरिक्खजोणियाउय, नो मणुस्साउय,

---

१. नेयव्व (अ, क)।
२. जस्स (अ, स)।
३. तस्स (अ, स)।

नो देवाउयं पकरेति। एव अकिरियावादी वि अण्णाणियवादी वि वेणइयवादी वि ।।

३९ सलेस्सा ण भते ! किरियावादी अणतरोववन्नगा नेरइया किं नेरइयाउय पकरेति—पुच्छा ।
गोयमा ! नो नेरइयाउयं पकरेति जाव नो देवाउय पकरेति । एव जाव वेमाणिया । एवं सव्वट्ठाणेसु वि अणतरोववन्नगा नेरइया न किंचि वि आउय पकरेति जाव अणागारोवउत्तत्ति । एव जाव वेमाणिया, नवर—ज जस्स अत्थि त तस्स भाणियव्व ।।

४० किरियावादी ण भते ! अणतरोववन्नगा नेरइया कि भवसिद्धीया ? अभवसिद्धीया ?
गोयमा ! भवसिद्धीया, नो अभवसिद्धीया ।।

४१ अकिरियावादी ण—पुच्छा ।
गोयमा ! भवसिद्धीया वि, अभवसिद्धीया वि । एव अण्णाणियवादी वि वेणइयवादी वि ।।

४२ सलेस्सा ण भते ! किरियावादी अणंतरोववन्नगा नेरइया कि भवसिद्धीया ? अभवसिद्धीया ?
गोयमा ! भवसिद्धीया, नो अभवसिद्धीया । एवं एएण अभिलावेण जहेव ओहिए उद्देसए नेरइयाण वत्तव्वया भणिया तहेव इह वि भाणियव्वा जाव अणागारोवउत्तत्ति । एव जाव वेमाणियाण, नवर—ज जस्स अत्थि त तस्स भाणियव्व । इम से लक्खण—जे किरियावादी सुक्कपक्खिया सम्मामिच्छदिट्ठीया एए सव्वे भवसिद्धीया, नो अभवसिद्धीया । सेसा सव्वे भवसिद्धीया वि, अभवसिद्धीया वि ।।

४३ सेव भते ! सेव भते ! त्ति ।।

तइओ उद्देसो

४४. परपरोववन्नगा ण भते ! नेरइया किरियावादी० ? एव जहेव ओहिओ उद्देसओ तहेव परपरोववन्नएसु वि नेरइयादीओ तहेव निरवसेस भाणियव्वं, तहेव तियदंडगसगहिओ ।।

४५. सेव भते ! सेव भते ! त्ति जाव विहरइ ।। ६

४-११ उद्देसा

४६ एव एएण कमेण जच्चेव वधिसए उद्देसगाण परिवाडी सच्चेव इह पि जाव अचरिमो उद्देसो, नवर—अणतरा चत्तारि वि एक्कगमगा, परपरा चत्तारि वि एक्कगमएण। एव चरिमा वि, अचरिमा वि एव चेव, नवर—अलेस्सो केवली अजोगी न भण्णति, सेस तहेव ॥

४७ सेव भते! सेव भते! त्ति। एए एक्कारस वि उद्देसगा ॥

इक्कतीसइमं सतं

पढमो उद्देसो

खुड्डजुम्म-नेरइयादीणं उववाय-पदं

१. रायगिहे जाव एवं वयासी—कति णं भंते ! खुड्डा जुम्मा पण्णत्ता ?
गोयमा ! चत्तारि खुड्डा जुम्मा पण्णत्ता, तं जहा—कडजुम्मे, तेयोए, दावरजुम्मे[1], कलियोगे ॥

२. से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ—चत्तारि खुड्डा जुम्मा पण्णत्ता, तं जहा—कडजुम्मे जाव कलियोगे ?
गोयमा ! जे णं रासी चउक्कएणं अवहारेणं अवहीरमाणे चउपज्जवसिए सेत्तं खुड्डागकडजुम्मे । जे णं रासी चउक्कएणं अवहारेणं अवहीरमाणे तिपज्जवसिए सेत्तं खुड्डागतेयोगे । जे णं रासी चउक्कएणं अवहारेणं अवहीरमाणे दुपज्जवसिए सेत्तं खुड्डागदावरजुम्मे । जे णं रासी चउक्कएणं अवहारेणं अवहीरमाणे एगपज्जवसिए सेत्तं खुड्डागकलियोगे से तेणट्ठेणं जाव कलियोगे ॥

३. खुड्डागकडजुम्मनेरइया णं भंते ! कओ उववज्जंति—किं नेरइएहिंतो उववज्जंति ? तिरिक्खजोणिएहिंतो—पुच्छा ।
गोयमा ! नो नेरइएहिंतो उववज्जंति । एवं नेरइयाणं उववाओ जहा[2] वक्कतीए तहा भाणियव्वो ॥

४. ते णं भंते ! जीवा एगसमएणं केवइया उववज्जंति ?
गोयमा ! चत्तारि वा अट्ठ वा बारस वा सोलस वा संखेज्जा वा असंखेज्जा वा उववज्जंति ॥

५. ते णं भंते ! जीवा कहं उववज्जंति ?
गोयमा ! से जहानामए पवए पवमाणे अज्झवसाणनिव्वत्तिएणं करणोवाएणं,

---

१. वातर° (क); वादर° (ता), वायर° (म) ।

२. प० ६ ।

एव जहा पचविसतिमे सए अट्ठमुद्देसए नेरइयाण वत्तव्वया तहेव इह वि भाणियव्वा जाव[1] आयप्पओगेण उववज्जति नो परप्पयोगेण उववज्जति ।।

६. रयणप्पभापुढविखुड्डागकडजुम्मनेरइया ण भते ! कओ उववज्जति० ? एव जहा ओहियनेरइयाण वत्तव्वया सच्चेव रयणप्पभाए वि भाणियव्वा जाव नो परप्पयोगेण उववज्जति । एव सक्करप्पभाए वि, एव जाव अहेसत्तमाए । एवं उववाओ जहा[2] वक्कतीए ।

> अस्सण्णी खलु पढम, दोच्चं व सरीसवा तइय पक्खी ।
> [3]०सीहा जति चउत्थि, उरगा पुण पचर्मि पुढर्वि ।।१।।
> छट्ठि च इत्थियाओ, मच्छा मणुमा य सत्तर्मि पुढवि ।
> एसो परमुववाओ, बोधव्वो नरयपुढवीण ।।२।।०

सेसं तहेव ।।

७ खुड्डागतेयोगनेरइया ण भते ! कओ उववज्जति—किं नेरइएहिंतो ०? उववाओ जहा वक्कतीए ।।

८ ते ण भते ! जीवा एगसमएण केवइया उववज्जति ?
गोयमा ! तिण्णि वा सत्त वा एक्कारस वा पण्णरस वा सखेज्जा वा असखेज्जा वा उववज्जति । सेस जहा कडजुम्मस्स । एव जाव अहेसत्तमाए ।।

९ खुड्डागदावरजुम्मनेरइया ण भते ! कओ उववज्जति ? एव जहेव खुड्डागकडजुम्मे, नवर—परिमाण दो वा छ वा दस वा चोद्दस वा सखेज्जा वा असखेज्जा वा, सेस त चेव जाव अहेसत्तमाए ।।

१० खुड्डागकलिओगनेरइया ण भते ! कओ उववज्जति ? एवं जहेव खुड्डागकडजुम्मे, नवर—परिमाण एक्को वा पच वा नव वा तेरस वा सखेज्जा वा असखेज्जा वा उववज्जति, सेस त चेव । एव जाव अहेसत्तमाए ।।

११. सेव भते ! सेव भते ! त्ति जाव विहरइ ।।

बीओ उद्देसो

१२. कण्हलेस्सखुड्डागकडजुम्मनेरइया ण भते ! कओ उववज्जति०? एव चेव जहा ओहियगमो जाव नो परप्पयोगेण उववज्जति, नवर—उववाओ जहा वक्कतीए धूमप्पभापुढविनेरइयाण, सेस त चेव ।।

---

१. भ० २५।६२०-६२६ ।
२. प० ६ ।
३. स० पा०—गाहा एव उववाएअव्वा ।

१३ धूमप्पभापुढविकण्हलेस्सखुड्डागकडजुम्मनेरइया णं भते ! कओ उववज्जति ? एव चेव निरवसेस। एवं तमाए वि, अहेसत्तमाए वि, नवर—उववाओ सव्वत्थ जहा वक्कतीए ॥

१४ कण्हलेस्सखुड्डागतेओगनेरइया णं भते ! कओ उववज्जति०? एव चेव, नवर—तिण्णि वा सत्त वा एक्कारस वा पन्नरस वा सखेज्जा वा असखेज्जा वा, सेस त चेव। एव जाव अहेसत्तमाए वि ॥

१५ कण्हलेस्सखुड्डागदावरजुम्मनेरइया ण भते ! कओ उववज्जति०? एव चेव, नवर– दो वा छ वा दस वा चोद्दस वा, सेस त चेव। एव धूमप्पभाए वि जाव अहेसत्तमाए ॥

१६ कण्हलेस्सखुड्डागकलियोगनेरइया ण भते ! कओ उववज्जति०? एव चेव, नवर– एक्को वा पच वा नव वा तेरस वा संखेज्जा वा असखेज्जा वा, सेस त चेव। एव धूम्मप्पभाए वि, तमाए वि, अहेसत्तमाए वि ॥

१७. सेव भते ! सेव भते ! त्ति ॥

तइओ उद्देसो

१८. नीललेस्सखुड्डागकडजुम्मनेरइया ण भते ! कओ उववज्जति ०? एव जहेव कण्हलेस्साखुड्डागकडजुम्मा, नवर—उववाओ जो वालुयप्पभाए, सेस तं चेव। वालुयप्पभापुढविनीललेस्सखुड्डागकडजुम्मनेरइया एव चेव। एव पकप्पभाए वि, एव धूमप्पभाए वि। एव चउसु वि जुम्मेसु, नवरं—परिमाण जाणियव्व। परिमाण जहा कण्हलेस्सउद्देसए। सेस तहेव ॥

१९. सेव भते ! सेव भते ! त्ति ॥

चउत्थो उद्देसो

२०. काउलेस्सखुड्डागकडजुम्मनेरइया ण भते ! कओ उववज्जति ०? एव जहेव कण्हलेस्सखुड्डागकडजुम्मनेरइया, नवरं—उववाओ जो रयणप्पभाए, सेस तं चेव ॥

२१. रयणप्पभापुढविकाउलेस्सखुड्डागकडजुम्मनेरइया णं भते ! कओ उववज्जंति ०?

एव चेव। एवं सक्करप्पभाए वि, एव वालुयप्पभाए वि। एव चउसु वि जुम्मेसु, नवर—परिमाण जाणियव्व जहा कण्हलेस्सउद्देसए, सेस त चेव ॥

२२. सेव भते! सेवं भते! त्ति ॥

पंचमो उद्देसो

२३ भवसिद्धीयखुड्डागकडजुम्मनेरइया ण भते! कओ उववज्जति—किं नेरइएहिंतो०? एव जहेव ओहिओ गमओ तहेव निरवसेस जाव नो परप्पयोगेण उववज्जति ॥

२४. रयणप्पभपुढविभवसिद्धीयखुड्डागकडजुम्मनेरइया ण भते!०? एव चेव निरवसेस। एव जाव अहेसत्तमाए। एव भवसिद्धीयखुड्डागतेयोगनेरइया वि। एव जाव कलियोगत्ति, नवर—परिमाण जाणियव्व, परिमाण पुव्वभणिय जहा पढमुद्देसए ॥

२५. सेव भते! सेव भते! त्ति ॥

छट्ठो उद्देसो

२६ कण्हलेस्सभवसिद्धीयखुड्डागकडजुम्मनेरइया ण भते! कओ उववज्जति०? एव जहेव ओहिओ कण्हलेस्सउद्देसओ तहेव निरवसेस चउसु वि जुम्मेसु भाणियव्वो जाव—

२७ अहेसत्तमपुढविकण्हलेस्सखुड्डागकलियोगनेरइया ण भते! कओ उववज्जति०? तहेव ॥

२८ सेव भते! सेवं भते! त्ति ॥

७-२८ उद्देसा

२९ नीललेस्सभवसिद्धीया चउसु वि जुम्मेसु तहेव भाणियव्वा जहा ओहिए नीललेस्सउद्देसए ॥

३० सेव भते ! सेव भते ! त्ति जाव विहरइ ।।

३१. काउलेस्सभवसिद्धीया चउसु वि जुम्मेसु तहेव उववाएयव्वा जहेव ओहिए काउलेस्सउद्देसए ।।

३२. सेव भते ! सेवं भते ! त्ति जाव विहरइ ।।

३३. जहा भवसिद्धीएहि चत्तारि उद्देसगा भणिया एवं अभवसिद्धीएहि वि चत्तारि उद्देसगा भाणियव्वा जाव काउलेस्सउद्देसओ त्ति ।।

३४. सेव भते ! सेव भते ! त्ति ।।

३५. एव सम्मदिट्ठीहि वि लेस्सासजुत्तेहि चत्तारि उद्देसगा कायव्वा, नवरं—सम्मदिट्ठी पढमवितिएसु दोसु वि उद्देसगेसु अहेसत्तसपुढवीए न उववाएयव्वो, सेस त चेव ।।

३६ सेवं भते ! सेव भते ! त्ति ।।

३७. मिच्छादिट्ठीहि वि चत्तारि उद्देसगा कायव्वा जहा भवसिद्धीयाण ।।

३८ सेव भते ! सेव भते ! त्ति ।।

३९. एव कण्हपक्खिएहि वि लेस्सासजुत्तेहि चत्तारि उद्देसगा कायव्वा जहेव भवसिद्धीएहि ।।

४० सेव भते ! सेव भते ! त्ति ।।

४१ सुक्कपक्खिएहि एव चेव चत्तारि उद्देसगा भाणियव्वा जाव वालुयप्पभपुढवि-काउलेस्ससुक्कपक्खियखुड्डागकलिओगनेरइया ण भते ! कओ उववज्जति ? तहेव जाव नो परप्पयोगेण उववज्जति ।।

४२. सेव भते ! सेव भते ! त्ति । सव्वे वि एए अट्ठावीस उद्देसगा ।।

———

बत्तीसइमं सतं

१-२८ उद्देसा

खुड्डजुम्म-नेरइयादीणं उववट्टण-पदं

१. खुड्डागकडजुम्मनेरइया ण भते ! अणतर उव्वट्टित्ता कहिं गच्छति ? कहिं उववज्जति—कि नेरइएसु उववज्जति ? तिरिक्खजोणिएसु उववज्जति ? उव्वट्टणा जहा[1] वक्कतीए ॥

२. ते ण भते ! जीवा एगसमएण केवइया उव्वट्टति ?
गोयमा ! चत्तारि वा अट्ठ वा बारस वा सोलस वा सखेज्जा वा असखेज्जा वा उव्वट्टति ॥

३ ते ण भते ! जीवा कह उव्वट्टति ?
गोयमा ! से जहानामए पवए, एव तहेव । एव सो चेव गमओ जाव[2] आयप्पयोगेण उव्वट्टति, नो परप्पयोगेण उव्वट्टति ॥

४ रयणप्पभापुढविखुड्डागकडजुम्म० ? एव रयणप्पभाए वि । एव जाव अहेसत्तमाए । एव खुड्डागतेयोग-खुड्डागदावरजुम्म-खुड्डागकलियोगा, नवर—परिमाण जाणियव्व, सेस त चेव ॥

५ सेव भते ! सेव भते ! त्ति ॥

६ कण्हलेस्सकडजुम्मनेरइया० ? एवं एएण कमेण जहेव उववायसए अट्ठावीस उद्देसगा भणिया तहेव उव्वट्टणासए वि अट्ठावीस उद्देसगा भाणियव्वा निरवसेसा, नवर—उव्वट्टति त्ति अभिलावो भाणियव्वो, सेस त चेव ॥

७. सेव भते ! सेव भते ! त्ति जाव विहरइ ॥

---

१. प० ६ ।

२. भ० २५।६२०-६२६ ।

तेत्तीसइमं सतं

पढमं एगिंदियं सतं

पढमो उद्देसो

एगिंदियाण कम्मप्पगडि-पदं

१ कतिविहा ण भते ! एगिंदिया पण्णत्ता ?
गोयमा ! पचविहा एगिंदिया पण्णत्ता, त जहा—पुढविक्काइया जाव वणस्सइकाइया ।।

२. पुढविक्कइया ण भते ! कतिविहा पण्णत्ता ?
गोयमा ! दुविहा पण्णत्ता, त जहा—सुहुमपुढविक्काइया य, बादरपुढविक्काइया य ।।

३. सुहुमपुढविक्काइया णं भते ! कतिविहा पण्णत्ता ?
गोयमा ! दुविहा पण्णत्ता, त जहा—पज्जत्तासुहुमपढविक्काइया य, अप्पज्जत्तासुहुमपुढविक्काइया य ।।

४. वादरपुढविक्काइया ण भते ! कतिविहा पण्णत्ता ? एव चेव । एव आउक्काइया वि चउक्कएण भेदेण भाणियव्वा, एव जाव वणस्सइकाइया ।।

५. अपज्जत्तासुहुमपुढविक्काइयाण भते ! कति कम्मप्पगडीओ पण्णत्ताओ ?
गोयमा ! अट्ठ कम्मप्पगडीओ पण्णत्ताओ, त जहा—नाणावरणिज्ज जाव अतराइयं ।।

६. पज्जत्तासुहुमपुढविक्काइयाण भते ! कति कम्मप्पगडीओ पण्णत्ताओ ?
गोयमा ! अट्ठ कम्मप्पगडीओ पण्णत्ताओ, त जहा—नाणावरणिज्ज जाव अतराइय ।।

७ अपज्जत्तावादरपुढविक्काइयाणं भते ! कति कम्मप्पगडीओ पण्णत्ताओ ? एव चेव ।।

८ पज्जत्तावादरपुढविक्काइयाण भते ! कति कम्मप्पगडीओ पण्णत्ताओ ? एवं

चेव । एव एएणं कमेण जाव वादरवणस्सइकाइयाण पज्जत्तगाण ति' ॥

९ अपज्जत्तासुहुमपुढविक्काइयाण भंते ! कति कम्मप्पगडीओ बंधति ?
गोयमा ! सत्तविहबंधगा वि, अट्ठविहबंधगा वि । सत्त बंधमाणा आउय-वज्जाओ सत्त कम्मप्पगडीओ बंधति, अट्ठ बंधमाणा पडिपुण्णाओ अट्ठ कम्मप्पगडीओ बंधति ॥

१०. पज्जत्तासुहुमपुढविक्काइया ण भंते ! कति कम्मप्पगडीओ बंधति ? एव चेव, एव सव्वे जाव—

११ पज्जत्तावादरवणस्सइकाइया ण भंते ! कति कम्मप्पगडीओ बंधति ? एव चेव ॥

१२ अपज्जत्तासुहुमपुढविक्काइया ण भंते ! कति कम्मप्पगडीओ वेदेति ?
गोयमा ! चोद्दस कम्मप्पगडीओ वेदेति, त जहा—नाणावरणिज्ज जाव अतराइय' सोइंदियवज्भं, चक्खिदियवज्भं, घाणिदियवज्भं, जिब्भिदियवज्भं, इत्थिवेदवज्भं, पुरिसवेदवज्भं । एव चउक्कएण भेदेण जाव—

१३ पज्जत्तावादरवणस्सइकाइया ण भंते ! कति कम्मप्पगडीओ वेदेति ?
गोयमा ! एव चेव चोद्दस कम्मप्पगडीओ वेदेति ॥

१४ सेव भंते ! सेव भंते ! त्ति ॥

—·—

बीओ उद्देसो

१५. कतिविहा ण भंते ! अणतरोववन्नगा एगिंदिया पण्णत्ता ?
गोयमा ! पचविहा अणतरोववन्नगा एगिंदिया पण्णत्ता, त जहा—पुढविक्काइया जाव वणस्सइकाइया ॥

१६ अणंतरोववन्नगा ण भंते ! पुढविक्काइया कतिविहा पण्णत्ता ?
गोयमा ! दुविहा पण्णत्ता, त जहा—सुहुमपुढविक्काइया य, वादरपुढविक्काइया य । एव दुपएण भेदेणं जाव वणस्सइकाइया ॥

१७. अणतरोववन्नगसुहुमपुढविकाइयाण भंते ! कति कम्मप्पगडीओ पण्णत्ताओ ?
गोयमा ! अट्ठ कम्मप्पगडीओ पण्णत्ताओ, त जहा—नाणावरणिज्ज जाव अतराइय ॥

१८ अणतरोववन्नगवादरपुढविक्काइयाण भंते ! कति कम्मप्पगडीओ पण्णत्ताओ ?

---

१ × (अ, क, ख, ता) ।   २. °वज्ज (अ, ख, ता, ब, स) ।

[illegible] इओ पण्णत्ताओ, तं जहा—नाणावरणिज्जं जाव [illegible] दरवणस्सइकाइयाणं ति ॥

[illegible] सुहुमपुढविक्काइया णं भंते ! कति कम्मप्पगडीओ बंधंति ? [illegible] कम्मप्पगडीओ बंधति । एवं जाव अणंतरोव- [illegible] त्ति ॥

[illegible] सुहुमपुढविक्काइया णं भंते ! कति कम्मप्पगडीओ वेदेंति ? [illegible] कम्मप्पगडीओ वेदेति, तं जहा—नाणावरणिज्जं, तहेव जाव [illegible] । एवं जाव अणंतरोववन्नगबादरवणस्सइकाइयत्ति ॥

[illegible] सेवं भंते ! त्ति ॥

तइओ उद्देसो

२२ कतिविहा णं भंते ! परंपरोववन्नगा [illegible] ?
गोयमा ! पचविहा परंपरोववन्नगा [illegible], तं जहा—पुढविक्काइया एवं चउक्कओ भेदो जहा ओहिउद्देसए ॥

२३ परंपरोववन्नगअपज्जत्तासुहुमपुढविक्काइयाणं भंते ! कति कम्मप्पगडीओ पण्णत्ताओ ? एवं एएणं अभिलावेणं जहा ओहिउद्देसए तहेव निरवसेसं भाणियव्वं जाव चोद्दस वेदेंति ॥

२४. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति ॥

४-११ उद्देसा

२५. अणंतरोगाढा जहा अणंतरोववन्नगा ॥
२६. परंपरोगाढा जहा परंपरोववन्नगा ॥
२७. अणंतराहारगा जहा अणंतरोववन्नगा ॥
२८. परंपराहारगा जहा परंपरोववन्नगा ॥
२९. अणंतरपज्जत्तगा जहा अणंतरोववन्नगा ॥
३०. परंपरपज्जत्तगा जहा परंपरोववन्नगा ॥
३१ चरिमा वि जहा परंपरोववन्नगा तहेव ॥
३२. एवं अचरिमा वि । एवं एए एक्कारस उद्देसगा ॥
३३. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति जाव विहरइ ॥

---

१. ०गाणं (अ, ख, व, म, स) ।

बीअं सतं

पढमो उद्देसो

३४. कतिविहा णं भंते ! कण्हलेस्सा एगिंदिया पण्णत्ता ?
गोयमा ! पचविहा कण्हलेस्सा एगिंदिया पण्णत्ता, त जहा—पुढविक्काइया जाव वणस्सइकाइया ॥

३५ कण्हलेस्सा ण भते ! पुढविक्काइया कतिविहा पण्णत्ता ?
गोयमा ! दुविहा पण्णत्ता, त जहा—सुहुमपुढविक्काइया य, वादरपुढविक्काइया य ॥

३६ कण्हलेस्सा ण भते ! सुहुमपुढविक्काइया कतिविहा पण्णत्ता ? एव एएण अभिलावेण चउक्कओ भेदो जहेव ओहिउद्देसए[1] ॥

३७ कण्हलेस्सअपज्जत्तासुहुमपुढविक्काइयाण भते ! कइ कम्मप्पगडीओ पण्णत्ताओ ? एवं एएण अभिलावेण जहेव ओहिउद्देसए तहेव पण्णत्ताओ, तहेव वधति, तहेव वेदेति ॥

३८ सेव भते ! सेव भंते ! त्ति ॥

बीओ उद्देसो

३९ कतिविहा ण भते ! अणंतरोववन्नगकण्हलेस्सएगिंदिया पण्णत्ता ?
गोयमा ! पंचविहा अणंतरोववन्नगा कण्हलेस्सा एगिंदिया एव एएण अभिलावेण तहेव दुयओ भेदो जाव वणस्सइकाइयत्ति ॥

---

१. ०उद्देसए जाव वणस्सइकाइयत्ति (स) ।

४० अणतरोववन्नगकण्हलेस्ससुहुमपुढविक्काइयाण भते ! कइ कम्मप्पगडीओ पण्णत्ताओ ? एव एएण अभिलावेणं जहा ओहिओ अणतरोववन्नगाण उद्देसओ तहेव जाव वेदेति ॥

४१ सेव भते ! सेव भते ! त्ति ॥

३-११ उद्देसा

४२ कतिविहा ण भते ! परपरोववन्नगा कण्हलेस्सा एगिदिया पण्णत्ता ?
गोयमा ! पंचविहा परपरोववन्नगा कण्हलेस्सा एगिदिया पण्णत्ता, त जहा—पुढविक्काइया, एव एएण अभिलावेण तहेव चउक्कओ भेदो जाव वणस्सइ-काइयत्ति ॥

४३. परपरोववन्नगकण्हलेस्सअपज्जत्तासुहुमपुढविकाइयाण भते ! कइ कम्मप्पगडीओ पण्णत्ताओ ? एव एएण अभिलावेण जहेव ओहिओ परपरोववन्नगउद्देसओ तहेव जाव वेदेति । एव एएण अभिलावेण जहेव ओहिएगिदियसए एक्कारस उद्देसगा भणिया तहेव कण्हलेस्ससते वि भाणियव्वा जाव अचरिमचरिमकण्हलेस्सा एगिदिया ॥

३,४ सताइं

४४ जहा कण्हलेस्सेहिं भणिय एव नीललेस्सेहि वि सय भाणियव्व ॥

४५ सेव भते ! सेव भते ! त्ति ॥

४६ एव काउलेस्सेहि वि सय भाणियव्वं, नवर—काउलेस्से ति अभिलावो भाणियव्वो ॥

पंचमं सतं

भवसिद्धीयएगिंदियाणं कम्मप्पगडि-पदं

४७ कतिविहा ण भंते ! भवसिद्धीया एगिंदिया पण्णत्ता ?
गोयमा ! पंचविहा भवसिद्धीया एगिंदिया पण्णत्ता, त जहा—पुढविक्काइया जाव वणस्सइकाइया, भेदो चउक्कओ जाव वणस्सइकाइयत्ति ॥

४८ भवसिद्धीयअपज्जत्तासुहुमपुढविक्काइयाण भते ! कति कम्मप्पगडीओ पण्ण-त्ताओ ? एव एएण अभिलावेण जहेव पढमिल्लगं एगिंदियसय तहेव भवसिद्धीय-सय पि भाणियव्वं । उद्देसगपरिवाडी तहेव जाव अचरिमो[1] त्ति ।

४९ सेव भते ! सेव भते ! त्ति ॥

छट्ठं सतं

५० कतिविहा ण भते ! कण्हलेस्सा भवसिद्धीया एगिंदिया पण्णत्ता ?
गोयमा ! पचविहा कण्हलेस्सा भवसिद्धीया एगिंदिया पण्णत्ता, त जहा—पुढविक्काइया जाव वणस्सइकाइया ॥

५१. कण्हलेस्सभवसिद्धीयपुढविक्काइया ण भते ! कतिविहा पण्णत्ता ?
गोयमा ! दुविहा पण्णत्ता, त जहा—सुहुमपुढविक्काइया य, वादरपुढविक्का-इया य ॥

५२ कण्हलेस्सभवसिद्धीयसुहुमपुढविक्काइया ण भते ! कतिविहा पण्णत्ता ?
गोयमा ! दुविहा पण्णत्ता, त जहा—पज्जत्तगा य, अपज्जत्तगा य । एव बादरा वि । एएण अभिलावेणं तहेव चउक्कओ भेदो भाणियव्वो ॥

५३ कण्हलेस्सभवसिद्धीयअपज्जत्तासुहुमपुढविक्काइयाण भते ! कइ कम्मप्पगडीओ पण्णत्ताओ ? एव एएण अभिलावेण जहेव ओहिउद्देसए तहेव जाव वेदेति ॥

५४ कतिविहा ण भते ! अणतरोववन्नगा कण्हलेस्सा भवसिद्धीया एगिंदिया पण्णत्ता ?
गोयमा ! पचविहा अणतरोववन्नगा जाव वणस्सइकाइया ॥

५५ अणतरोववन्नगकण्हलेस्सभवसिद्धीयपुढविक्काइया ण भते ! कतिविहा पण्णत्ता ?
गोयमा ! दुविहा पण्णत्ता, त जहा—सुहुमपुढविक्काइया, एव दुयओ भेदो ॥

५६ अणतरोववन्नगकण्हलेस्सभवसिद्धीयसुहुमपुढविक्काइयाण भते ! कइ कम्मप्प-गडीओ पण्णत्ताओ ? एव एएण अभिलावेण जहेव ओहिओ अणतरोववन्न-उद्देसओ तहेव जाव वेदेति । एव एएण अभिलावेण एक्कारस वि उद्देसगा तहेव भाणियव्वा जहा ओहियसए जाव अचरिमो त्ति ॥

---

१. अचरिम (ख, ता, ब) ।

७,८ सताइं

५७ जहा कण्हलेस्सभवसिद्धीएहिं सयं भणियं एवं नीललेस्सभवसिद्धीएहिं वि सतं भाणियव्व ॥

५८. एव काउलेस्सभवसिद्धीएहिं वि सतं ॥

९-१२ सताइं

अभवसिद्धीयएगिंदियाणं कम्मप्पगडि-पदं

५९ कइविहा ण भते ! अभवसिद्धीया एगिंदिया पण्णत्ता ?
गोयमा ! पचविहा अभवसिद्धीया एगिंदिया पण्णत्ता, त जहा—पुढविक्काइया जाव वणस्सइकाइया । एव जहेव भवसिद्धीयसत भणिय, नवर—नव उद्देसगा चरिमअचरिमउद्देसगवज्ज, सेस तहेव ॥

६० एव कण्हलेस्सअभवसिद्धीयएगिंदियसतं पि ॥

६१ नीललेस्सअभवसिद्धीयएगिंदिएहिं वि सत ॥

६२. काउलेस्सअभवसिद्धीयसत । एव चत्तारि वि अभवसिद्धीयसताणि, नव-नव उद्देसगा भवति । एव एयाणि बारस एगिंदियसताणि भवति ॥

चोतीसइमं सतं

पढमं एगिंदियसतं

पढमो उद्देसो

एगिंदियाणं विग्गहगइ-पदं

१ कइविहा ण भते ! एगिंदिया पण्णत्ता ?
गोयमा ! पंचविहा एगिंदिया पण्णत्ता, त जहा—पुढविक्काइया जाव वणस्सइ-काइया । एवमेते चउक्कएण भेदेण भाणियव्वा जाव वणस्सइकाइया ॥

२ अपज्जत्तासुहुमपुढविकाइए ण भते ! इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए पुरत्थिमिल्ले चरिमते समोहए, समोहणित्ता जे भविए इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए पच्चत्थि-मिल्ले चरिमते अपज्जत्तासुहुमपुढविकाइयत्ताए उववज्जित्तए, से ण भते ! कइ-समएण विग्गहेण उववज्जेज्जा ?
गोयमा ! एगसमइएण वा दुसमइएण वा तिसमइएण वा विग्गहेण उव-वज्जेज्जा ॥

३ से केणट्ठेण भते ! एव वुच्चइ—एगसमइएण वा दुसमइएण वा जाव उव-वज्जेज्जा ॥
एव खलु गोयमा ! मए सत्त सेढीओ पण्णत्ताओ, त जहा—उज्जुयायता सेढी, एगओवका, दुहओवका, एगओखहा[1], दुहओखहा[2], चक्कवाला, अद्धचक्कवाला । उज्जुआयताए सेढीए उववज्जमाणे एगसमइएण विग्गहेण उववज्जेज्जा । एगओवकाए सेढीए उववज्जमाणे दुसमइएण विग्गहेण उववज्जेज्जा । दुहओ-वकाए सेढीए उववज्जमाणे तिसमइएण विग्गहेण उववज्जेज्जा । से तेणट्ठेण गोयमा ! जाव उववज्जेज्जा ॥

४ अपज्जत्तासुहुमपुढविकाइए ण भते ! इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए पुरत्थिमिल्ले चरिमते समोहए, समोहणित्ता जे भविए इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए पच्चत्थि-

---

१. ०खुहा (अ) ।   २. ०खुहा (अ) ।

मिल्ले चरिमंते पज्जत्तासुहुमपुढविकाइयत्ताए उववज्जित्तए, से ण भंते! कइसमइएण विग्गहेणं उववज्जेज्जा ?

गोयमा! एगसमइएण वा सेसं तं चेव जाव[1] से तेणट्ठेण[2] °गोयमा! एवं वुच्चइ—एगसमइएण वा दुसमइएण वा तिसमइएण वा° विग्गहेण उववज्जेज्जा। एव अपज्जत्तासुहुमपुढविकाइओ पुरत्थिमिल्ले चरिमते समोहणावेत्ता पच्चत्थिमिल्ले चरिमते वादरपुढविकाइएसु अपज्जत्तएसु उववाएयव्वो, ताहे तेसु चेव पज्जत्तएसु। एव आउक्काइएसु चत्तारि आलावगा सुहुमेहिं अपज्जत्त-एहि, ताहे पज्जत्तएहिं, वादरेहिं अपज्जत्तएहि, ताहे पज्जत्तएहि उववाएयव्वो। एव चेव सुहुमतेउकाइएहि वि अपज्जत्तएहिं ताहे पज्जत्तएहिं उववाएयव्वो॥

५ अपज्जत्तासुहुमपुढविक्काइए ण भते! इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए पुरत्थि-मिल्ले चरिमते समोहए, समोहणित्ता जे भविए मणुस्सखेत्ते अपज्जत्तावादर-तेउकाइयत्ताए उववज्जित्तए, से ण भते! कइसमइएण विग्गहेण उववज्जेज्जा ? सेस त चेव। एवं पज्जत्ताबादरतेउक्काइयत्ताए उववाएयव्वो। वाउक्काइएसु सुहुमबादरेसु जहा आउक्काइएसु उववाइओ तहा उववाएयव्वो। एव वणस्सइ-काइएसु वि॥

६ पज्जत्तासुहुमपुढविक्काइए ण भते! इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए० ? एव पज्जत्तासुहुमपुढविक्काइओ वि पुरत्थिमिल्ले चरिमते समोहणावेत्ता एएणं चेव कमेण एएसु चेव वीससु ठाणेसु उववाएयव्वो जाव वादरवणस्सइकाइएसु पज्जत्तएसु वि। एव अपज्जत्तावादरपुढविकाइओ वि। एवं पज्जत्ताबादर-पुढविकाइओ वि। एव आउकाइओ वि चउसु वि गमएसु पुरत्थिमिल्ले चरि-मते समोहए, एयाए चेव वत्तव्वयाए एएसु चेव वीसइठाणेसु उववाएयव्वो। सुहुमतेउकाइओ वि अपज्जत्तओ पज्जत्तओ य एएसु चेव वीसाए ठाणेसु उववाएयव्वो।

७ अपज्जत्तावादरतेउक्काइए ण भंते! मणुस्सखेत्ते समोहए, समोहणित्ता जे भविए इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए पच्चत्थिमिल्ले चरिमते अपज्जत्तासुहुम-पुढविक्काइयत्ताए उववज्जित्तए, से ण भते! कइसमइएण विग्गहेण उववज्जेज्जा ? सेसं तहेव जाव से तेणट्ठेण। एव पुढविक्काइएसु चउविहेसु वि उववाएयव्वो, एव आउकाइएसु चउविहेसु वि, तेउकाइएसु सुहुमेसु अपज्जत्तएसु पज्जत्तएसु य एव चेव उववाएयव्वो॥

८. अपज्जत्तावादरतेउक्काइए ण भते! मणुस्सखेत्ते समोहए, समोहणित्ता जे भविए मणुस्सखेत्ते अपज्जत्तावादरतेउक्काइयत्ताए उववज्जित्तए, से ण भते!

---

१. भ० ३४।२,३।

२. स० पा०—तेणट्ठेण जाव विग्गहेण।

कतिसमइएण० ? सेस त चेव। एव पज्जत्ताबादरतेउक्काइयत्ताए वि उववाएयव्वो। वाउकाइयत्ताए य वणस्सइकाइयत्ताए य जहा पुढविकाइएसु तहेव चउक्कएण भेदेण उववाएयव्वो। एव पज्जत्ताबादरतेउकाइयो वि समयखेत्ते समोहणावेत्ता एएसु चेव वीसाए ठाणेसु उववाएयव्वो। जहेव अपज्जत्तओ उववाइओ, एव सव्वत्थ वि बादरतेउकाइया अपज्जत्तगा य पज्जत्तगा य समयखेत्ते उववाएयव्वा समोहणावेयव्या वि। वाउक्काइया वणस्सकाइया य जहा पुढविक्काइया तहेव चउक्कएण भेदेण उववाएयव्वा जाव—

९ पज्जत्ताबादरवणस्सइकाइए ण भते ! इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए पुरत्थिमिल्ले चरिमते समोहए, समोहणित्ता जे भविए इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए पच्चत्थिमिल्ले चरिमते पज्जत्ताबादरवणस्सइकाइयत्ताए उववज्जित्तए, से ण भते ! कतिसमइएण० ? सेस तहेव जाव से तेणट्ठेण ॥

१० अपज्जत्तासुहुमपुढविक्काइए ण भते ! इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए पच्चत्थिमिल्ले चरिमते समोहए, समोहणित्ता जे भविए इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए पुरत्थिमिल्ले चरिमते अपज्जत्तासुहुमपुढविकाइयत्ताए उववज्जित्तए, से ण भते ! कइसमइएण० ? सेस तहेव निरवसेस। एव जहेव पुरत्थिमिल्ले चरिमते सव्वपदेसु वि समोहया पच्चत्थिमिल्ले चरिमते समयखेत्ते य उववाइया, जे य समयखेत्त समोहया पच्चत्थिमिल्ले चरिमते समयखेत्ते य उववाइया, एव एएण चेव कमेण पच्चत्थिमिल्ले चरिमते समयखेत्ते य समोहया पुरत्थिमिल्ले चरिमते समयखेत्ते य उववाएयव्वा तेणेव गमएणं। एव एएण गमएण दाहिणिल्ले चरिमते समोहयाण उत्तरिल्ले चरिमते समयखेत्ते य उववाओ। एव चेव उत्तरिल्ले चरिमंते समयखेत्ते य समोहया दाहिणिल्ले चरिमते समयखेत्ते य उववाएयव्वा तेणेव गमएणं ॥

११ अपज्जत्तासुहुमपुढविकाइए ण भते ! सक्करप्पभाए पुढवीए पुरत्थिमिल्ले चरिमते समोहए, समोहणित्ता जे भविए सक्करप्पभाए पुढवीए पच्चत्थिमिल्ले चरिमते अपज्जत्तासुहुमपुढविकाइयत्ताए उववज्जित्तए० ? एव जहेव रयणप्पभाए जाव से तेणट्ठेण। एव एएणं कमेण जाव पज्जत्तएसु सुहुमतेउकाइएसु ॥

१२. अपज्जत्तासुहुमपुढविक्काइए ण भते ! सक्करप्पभाए पुढवीए पुरत्थिमिल्ले चरिमंते समोहए, समोहणित्ता जे भविए समयखेत्ते अपज्जत्ताबादरतेउक्काइयत्ताए उववज्जित्तए, से ण भते ! कतिसमइएण—पुच्छा।
गोयमा ! दुसमइएण वा तिसमइएण वा विग्गहेण उववज्जेज्जा ॥

१३ से केणट्ठेण ?
एव खलु गोयमा ! मए सत्त सेढीओ पण्णत्ताओ, तं जहा—उज्जुयायता जाव अद्धचक्कवाला। एगओवकाए सेढीए उववज्जमाणे दुसमइएण विग्गहेण उववज्जेज्जा। दुहओवकाए सेढीए उववज्जमाणे तिसमइएणं विग्गहेणं उववज्जेज्जा।

से तेणट्ठेणं। एवं पज्जत्तएसु वि वादरतेउक्काइएसु। सेसं जहा रयणप्पभाए। जे वि वादरतेउकाइया अपज्जत्तगा य पज्जत्तगा य समयखेत्ते समोहणित्ता दोच्चाए पुढवीए पच्चत्थिमिल्ले चरिमते पुढविकाइएसु चउव्विहेसु, आउक्काइएसु चउव्विहेसु, तेउकाइएसु दुविहेसु, वाउकाइएसु चउव्विहेसु, वणस्सकाइएसु चउव्विहेसु उववज्जति, ते वि एव चेव दुसमइएण वा तिसमइएण वा विग्गहेण उववाएयव्वा। वादरतेउक्काइया अपज्जत्तगा य पज्जत्तगा य जाहे तेसु चेव उववज्जति ताहे जहेव रयणप्पभाए तहेव एगसमइय-दुसमइय-तिसमइयविग्गहा भाणियव्वा, सेस जहेव रयणप्पभाए तहेव निरवसेस। जहा सक्करप्पभाए वत्तव्वया भणिया एव जाव अहेसत्तमाए[1] भाणियव्वा॥

१४. अपज्जत्तासुहुमपुढविक्काइए ण भते! अहेलोयखेत्तनालीए वाहिरिल्ले खेत्ते समोहए, समोहणित्ता जे भविए उड्ढलोयखेत्तनालीए वाहिरिल्ले खेत्ते अपज्जत्तासुहुमपुढविकाइयत्ताए उववज्जित्तए, से ण भते! कइसमइएणं विग्गहेण उववज्जेज्जा?

गोयमा! तिसमइएण वा चउसमइएण वा विग्गहेण उववज्जेज्जा॥

१५ से केणट्ठेण भते! एव वुच्चइ—तिसमइएण वा चउसमइएण वा विग्गहेण उववज्जेज्जा?

गोयमा! अपज्जत्तासुहुमपुढविकाइए ण अहेलोयखेत्तनालीए वाहिरिल्ले खेत्ते समोहए, समोहणित्ता जे भविए उड्ढलोयखेत्तनालीए वाहिरिल्ले खेत्ते अपज्जत्ता-सुहुमपुढविकाइयत्ताए एगपयरसि अणुसेढि[2] उववज्जित्तए से ण तिसमइएणं विग्गहेणं उववज्जेज्जा। जे भविए विसेढि[3] उववज्जित्तए, से णं चउसमइएण विग्गहेण उववज्जेज्जा। से तेणट्ठेण जाव उववज्जेज्जा। एव पज्जत्तासुहुमपुढवि-काइयत्ताए वि, एव जाव पज्जत्तासुहुमतेउकाइयत्ताए॥

१६. अपज्जत्तासुहुमपुढविक्काइए ण भते! अहेलोग[4]°खेत्तनालीए वाहिरिल्ले खेत्ते समोहए,° समोहणित्ता जे भविए समयखेत्ते अपज्जत्तावादरतेउकाइयत्ताए उववज्जित्तए, से णं भते! कइसमइएणं विग्गहेण उववज्जेज्जा?

गोयमा! दुसमइएण वा तिसमइएण वा विग्गहेणं उववज्जेज्जा॥

१७ से केणट्ठेणं?

एव खलु गोयमा! मए सत्त सेढीओ पण्णत्ताओ, त जहा—उज्जुयायता जाव अद्धचक्कवाला। एगओवकाए सेढीए उववज्जमाणे दुसमइएण विग्गहेणं उवव-ज्जेज्जा, दुहओवकाए सेढीए उववज्जमाणे तिसमइएण विग्गहेण उववज्जेज्जा।

---

१. अहेसत्तमाए वि (स)।
२. अणुसेढीए (अ, क, ख, व, म, स)।
३. विसेढीए (अ, क, ख, ता, व, म, स)।
४ स० पा—अहेलोग जाव समोहणित्ता।

से तेणट्ठेण । एव पज्जत्तएसु वि बादरतेउकाइएसु वि उववाएयव्वो । वाउक्का-इय-वणस्सइकाइत्ताए चउक्कएण भेदेण जहा आउक्काइयत्ताए तहेव उववाए-यव्वो । एव जहा अपज्जत्तासुहुमपुढविक्काइयस्स गमश्रो भणिश्रो एव पज्जत्ता-सुहुमपुढविकाइयस्स वि भाणियव्वो, तहेव वीसाए ठाणेसु उववाएव्वो ।।

१८. [अपज्जत्तावादरपुढविक्काइए ण भते ?] अहेलोयखेत्तनालीए वाहिरिल्ले खेत्ते समोहए०? एव बादरपुढविकाइयस्स वि अपज्जत्तगस्स पज्जत्तगस्स य भाणियव्व । एव आउक्काइयस्स चउव्विहस्स वि भाणियव्व । सुहुमतेउक्काइयस्स दुविहस्स वि एव चेव ।।

१९ अपज्जत्तावादरतेउक्काइए ण भते ! समयखेत्ते समोहए, समोहणित्ता जे भविए उड्ढलोगखेत्तनालीए वाहिरिल्ले खेत्ते अपज्जत्तासुहुमपुढविकाइयत्ताए उववज्जित्तए, से ण भते ! कइसमइएण विग्गहेण उववज्जेज्जा ?
गोयमा ! दुसमइएण वा तिसमइएण वा चउसमइएण वा विग्गहेण उवव-ज्जेज्जा ।।

२० से केणट्ठेण ? अट्ठो जहेव रयणप्पभाए तहेव सत्त सेढीओ । एव जाव—

२१. अपज्जत्तावादरतेउकाइए ण भते ! समयखेत्ते समोहए, समोहणित्ता जे भविए उड्ढलोगखेत्तनालीए बाहिरिल्ले खेत्ते पज्जत्तासुहुमतेउकाइयत्ताए उववज्जित्तए, से ण भते ०? सेस त चेव ।।

२२ अपज्जत्तावादरतेउक्काइए ण भते ! समयखेत्ते समोहए, समोहणित्ता जे भविए समयखेत्ते अपज्जत्ताबादरतेउक्काइयत्ताए उववज्जित्तए, से ण भते ! कइसम-इएण विग्गहेण उववज्जेज्जा ?
गोयमा ! एगसमइएण वा दुसमइएण वा तिसमइएण वा विग्गहेण उववज्जेजा ।।

२३. से केणट्ठेण ?
अट्ठो जहेव रयणप्पभाए तहेव सत्त सेढीओ । एवं पज्जत्तावादरतेउकाइयत्ताए वि । वाउकाइएसु वणस्सइकाइएसु य जहा पुढविक्काइएसु उववाइओ तहेव चउक्कएण भेदेण उववाएयव्वो । एव पज्जत्ताबादरतेउकाइओ वि एएसु चेव ठाणेसु उववाएयव्वो । वाउक्काइय-वणस्सइकाइयाण जहेव पुढविकाइयत्ते उववाओ तहेव भाणियव्वो ।।

२४. अपज्जत्तासुहुमपुढविकाइए ण भते ! उड्ढलोगखेत्तनालीए वाहिरिल्ले खेत्ते समोहए, समोहणित्ता जे भविए अहेलोगखेत्तनालीए वाहिरिल्ले खेत्ते अपज्जत्ता-सुहुमपुढविकाइयत्ताए उववज्जित्तए, से ण भते ! कइसमइएण ०? एव उड्ढ-लोगखेत्तनालीए वाहिरिल्ले खेत्ते समोहयाण अहेलोगखेत्तनालीए वाहिरिल्ले खेत्ते उववज्जताण सो चेव गमओ निरवसेसो भाणियव्वो जाव वादरवणस्सइ-काइओ पज्जत्तओ बादरवणस्सइकाइएसु पज्जत्तएसु उववाइओ ।।

२५. अपज्जत्तासुहुमपुढविक्काइए णं भंते ! लोगस्स पुरत्थिमिल्ले चरिमंते समोहए, समोहणित्ता जे भविए लोगस्स पुरत्थिमिल्ले चेव चरिमंते अपज्जत्तासुहुमपुढविकाइयत्ताए उववज्जित्तए, से णं भंते ! कइसमइएणं विग्गहेणं उववज्जेज्जा ?
गोयमा ! एगसमइएण वा दुसमइएण वा तिसमइएण वा चउसमइएण वा विग्गहेणं उववज्जेज्जा ॥

२६. से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ—एगसमइएण वा जाव उववज्जेज्जा ?
एवं खलु गोयमा ! मए सत्त सेढीओ पण्णत्ताओ, तं जहा—उज्जुआयता जाव अद्धचक्कवाला। उज्जुआयताए सेढीए उववज्जमाणे एगसमइएणं विग्गहेणं उववज्जेज्जा। एगओवकाए सेढीए उववज्जमाणे दुसमइएणं विग्गहेणं उववज्जेज्जा। दुहओवकाए सेढीए उववज्जमाणे जे भविए एगपयरंसि अणुसेढि उववज्जित्तए, से णं तिसमइएणं विग्गहेणं उववज्जेज्जा। जे भविए विसेढि उववज्जित्तए, से णं चउसमइएणं विग्गहेणं उववज्जेज्जा। से तेणट्ठेणं जाव उववज्जेज्जा। एवं अपज्जत्तासुहुमपुढविकाइओ लोगस्स पुरत्थिमिल्ले चरिमंते समोहए, समोहणित्ता लोगस्स पुरत्थिमिल्ले चेव चरिमंते अपज्जत्तएसु पज्जत्तएसु सुहुमपुढविकाइएसु, अपज्जत्तएसु पज्जत्तएसु सुहुमआउकाइएसु, अपज्जत्तएसु पज्जत्तएसु सुहुमतेउक्काइएसु, अपज्जत्तएसु पज्जत्तएसु सुहुमवाउकाइएसु, अपज्जत्तएसु पज्जत्तएसु बादरवाउकाइएसु, अपज्जत्तएसु पज्जत्तएसु सुहुमवणस्सइकाइएसु, अपज्जत्तएसु पज्जत्तएसु य बारससु वि ठाणेसु एएणं चेव कमेणं भाणियव्वो। सुहुमपुढविकाइओ पज्जत्तओ एवं चेव निरवसेसो बारससु वि ठाणेसु उववाएयव्वो। एवं एएणं गमएणं जाव सुहुमवणस्सइकाइओ पज्जत्तओ सुहुमवणस्सइकाइएसु पज्जत्तएसु चेव भाणियव्वो ॥

२७. अपज्जत्तासुहुमपुढविकाइए णं भंते ! लोगस्स पुरत्थिमिल्ले चरिमंते समोहए, समोहणित्ता जे भविए लोगस्स दाहिणिल्ले चरिमंते अपज्जत्तासुहुमपुढविकाइएसु उववज्जित्तए, से णं भंते ! कइसमइएणं विग्गहेणं उववज्जेज्जा ?
गोयमा ! दुसमइएण वा तिसमइएण वा चउसमइएण वा विग्गहेणं उववज्जेज्जा ॥

२८. से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ ०?
एवं खलु गोयमा ! मए सत्त सेढीओ पण्णत्ताओ, तं जहा—उज्जुयायता जाव अद्धचक्कवाला। एगओवकाए सेढीए उववज्जमाणे दुसमइएणं विग्गहेणं उववज्जेज्जा, दुहओवकाए सेढीए उववज्जमाणे जे भविए एगपयरंसि अणुसेढिं उववज्जित्तए, से णं तिसमइएणं विग्गहेणं उववज्जेज्जा। जे भविए विसेढिं उववज्जित्तए, से णं चउसमइएणं विग्गहेणं उववज्जेज्जा। से तेणट्ठेणं गोयमा ! एवं एएणं गमएणं पुरत्थिमिल्ले चरिमंते समोहए दाहिणिल्ले चरिमंते

उववाएयव्वो जाव सुहुमवणस्सइकाइओ पज्जत्तग्रो सुहुमवणस्सइकाइएसु पज्जत्तएसु चेव। सव्वेसि दुसमइग्रो तिसमइयो चउसमइग्रो विग्गहो भाणियव्वो ॥

२९ ग्रपज्जत्तासुहुमपुढविकाइए णं भते! लोगस्स पुरत्थिमिल्ले चरिमते समोहए, समोहणित्ता जे भविए लोगस्स पच्चत्थिमिल्ले चरिमते ग्रपज्जत्तासुहुमपुढविकाइयत्ताए उववज्जित्तए, से ण भते! कइसमइएण विग्गहेण उववज्जेज्जा? गोयमा! एगसमइएण वा दुसमइएण वा तिसमइएण वा चउसमइएण वा विग्गहेण उववज्जेज्जा ॥

३० से केणट्ठेण?
एव जहेव पुरत्थिमिल्ले चरिमते समोहया परत्थिमिल्ले चेव चरिमते उववाइया तहेव पुरत्थिमिल्ले चरिमते समोहया पच्चत्थिमिल्ले चरिमते उववाएयव्वा सव्वे ॥

३१. ग्रपज्जत्तासुहुमपुढविक्काइए ण भते! लोगस्स पुरत्थिमिल्ले चरिमते समोहए, समोहणित्ता जे भविए लोगस्स उत्तरिल्ले चरिमते ग्रपज्जत्तासुहुमपुढविकाइयत्ताए उववज्जित्तए, से ण भते? ० एव जहा पुरत्थिमिल्ले चरिमते समोहयग्रो[1] दाहिणिल्ले चरिमते उववाइग्रो तहा पुरत्थिमिल्ले समोहयग्रो उत्तरिल्ले चरिमते उववाएयव्वो ॥

३२ ग्रपज्जत्तासुहुमपुढविक्काइए ण भते! लोगस्स दाहिणिल्ले चरिमते समोहए, समोहणित्ता जे भविए लोगस्स दाहिणिल्ले चेव चरिमते ग्रपज्जत्तासुहुमपुढविकाइयत्ताए उववज्जित्तए० ? एव जहा पुरत्थिमिल्ले समोहयग्रो पुरत्थिमिल्ले चेव उववाइग्रो तहेव दाहिणिल्ले समोहए दाहिणिल्ले चेव उववाएयव्वो, तहेव निरवसेस जाव सुहुमवणस्सइकाइग्रो पज्जत्तग्रो सुहुमवणस्सइकाइएसु चेव पज्जत्तएसु दाहिणिल्ले चरिमते उववाइग्रो, एव दाहिणिल्ले समोहयग्रो पच्चत्थिमिल्ले चरिमते उववाएयव्वो, नवर—दुसमइय-तिसमइय-चउसमइयविग्गहो, सेस तहेव। एव दाहिणिल्ले समोहयग्रो उत्तरिल्ले चरिमते उववाएयव्वो जहेव सट्ठाणे तहेव। एगसमइय-दुसमइय-तिसमइय-चउसमइयविग्गहो। पुरत्थिमिल्ले जहा पच्चत्थिमिल्ले, तहेव दुसमइय-तिसमइय-चउसमइयविग्गहो। पच्चत्थिमिल्ले चरिमते समोहयाण पच्चत्थिमिल्ले चेव उववज्जमाणाण जहा सट्ठाणे। उत्तरिल्ले उववज्जमाणाण एगसमइग्रो विग्गहो नत्थि, सेस तहेव। पुरत्थिमिल्ले जहा सट्ठाणे, दाहिणिल्ले एगसमइग्रो विग्गहो नत्थि, सेस त चेव। उत्तरिल्ले समोहयाण उत्तरिल्ले चेव उववज्जमाणाण जहा सट्ठाणे। उत्तरिल्ले समोहयाण पुरत्थिमिल्ले उववज्जमाणाण एव चेव, नवर—एगसमइग्रो विग्गहो नत्थि।

---

१ समोहताओ (अ, क, ब) समोहतो (स)।

उत्तरिल्ले समोहयाण दाहिणिल्ले उववज्जमाणाण जहा सट्ठाणे, उत्तरिल्ले समोहयाण पच्चत्थिमिल्ले उववज्जमाणाण एगसमइओ विग्गहो नत्थि, सेस तहेव जाव सुहुमवणस्सइकाइओ पज्जत्तओ सुहुमवणस्सइकाइएसु पज्जत्तएसु चेव ॥

एगिंदियाणं ठाण-पदं

३३ कहि णं भते ! बादरपुढविक्काइयाण पज्जत्तगाण ठाणा पण्णत्ता ?
गोयमा ! सट्ठाणेण अट्ठसु पुढवीसु जहा[1] ठाणपदे जाव सुहुमवणस्सइकाइया जे य पज्जत्तगा जे य अपज्जत्तगा ते सव्वे एगविहा अविसेसमणाणत्ता सव्वलोग-परियावन्ना पण्णत्ता समणाउसो !

एगिंदियाणं कम्म-पदं

३४ अपज्जत्तासुहुमपुढविकाइयाण भते ! कति कम्मप्पगडीओ पण्णत्ताओ ?
गोयमा ! अट्ठ कम्मप्पगडीओ पण्णत्ताओ, त जहा—नाणावरणिज्ज जाव अतराइय । एव चउक्कएण भेदेण जहेव एगिंदियसएसु जाव[2] बादरवणस्सइ-काइयाण पज्जत्तगाण ॥

३५ अपज्जत्तासुहुमपुढविक्काइया ण भते ! कति कम्मप्पगडीओ बधति ?
गोयमा ! सत्तविहबधगा वि, अट्ठविहबधगा वि, जहा एगिंदियसएसु जाव[3] पज्जत्ताबादरवणस्सइकाइया ॥

३६ अपज्जत्तासुहुमपुढविक्काइया ण भते ! कति कम्मप्पगडीओ वेदेति ?
गोयमा ! चोद्दस कम्मप्पगडीओ वेदेति, त जहा—नाणावरणिज्जं, जहा एगिं-दियसएसु जाव पुरिसवेदवज्भ । एव जाव[4] बादरवणस्सइकाइयाण पज्जत्त-गाण ॥

एगिंदियाणं उववत्ति-पद

३७ एगिंदिया ण भते ! कओ उववज्जति—कि नेरइएहितो उववज्जति० ? जहा[5] वक्कतीए पुढविक्काइयाण उववाओ ॥

एगिंदियाण समुग्घाय-पद

३८. एगिंदियाण भते ! कइ समुग्घाया पण्णत्ता ?
गोयमा ! चत्तारि समुग्घाया पण्णत्ता, त जहा—वेदणासमुग्घाए जाव वेउव्विय-समुग्घाए ॥

---

१. प० २
२ भ० ३३।६-८ ।
३. भ० ३३।६-११ ।
४ भ० ३३।१२,१३ ।
५. प० ६ ।

एगिंदियाणं तुल्ल-विसेसाहिय-कम्मकरण-पदं

३९. एगिंदिया ण भते ! कि तुल्लट्ठितीया तुल्लविसेसाहिय कम्म पकरेति ? तुल्लट्ठितीया वेमायविसेसाहिय कम्म पकरेति ? वेमायट्ठितीया तुल्लविसेसाहिय कम्म पकरेति ? वेमायट्ठितीया वेमायविसेसाहिय कम्म पकरेति ?
गोयमा ! अत्थेगइया तुल्लट्ठितीया तुल्लविसेसाहिय कम्म पकरेति, अत्थेगइया तुल्लट्ठितीया वेमायविसेसाहिय कम्म पकरेति, अत्थेगइया वेमायट्ठितीया तुल्लविसेसाहिय कम्म पकरेति, अत्थेगइया वेमायट्ठितीया वेमायविसेसाहिय कम्म पकरेति ।।

४० से केणट्ठेण भते ! एव वुच्चइ—अत्थेगइया तुल्लट्ठितीया जाव वेमायविसेसाहिय कम्म पकरेति ?
गोयमा ! एगिदिया चउव्विहा पण्णत्ता, त जहा—अत्थेगइया समाउया समोववन्नगा, अत्थेगइया समाउया विसमोववन्नगा, अत्थेगइया विसमाउया समोववन्नगा, अत्थेगइया विसमाउया विसमोववन्नगा । तत्थ ण जे ते समाउया समोववन्नगा ते ण तुल्लट्ठितीया तुल्लविसेसाहिय कम्म पकरेति । तत्थ ण जे ते समाउया विसमोववन्नगा ते ण तुल्लट्ठितीया वेमायविसेसाहिय कम्म पकरेति । तत्थ ण जे ते विसमाउया समोववन्नगा ते ण वेमायट्ठितीया तुल्लविसेसाहिय कम्म पकरेति । तत्थ ण जे ते विसमाउया विसमोववन्नगा ते ण वेमायविसेसाहिय कम्म पकरेति । से तेणट्ठेण गोयमा ! जाव वेमायविसेसाहिय कम्म पकरेति ।।

४१ सेव भते ! सेव भते ! त्ति जाव विहरति ।।

बीओ उद्देसो

विसेसित-एगिंदियाणं ठाणादि-पदं

४२ कइविहा ण भते ! अणतरोववन्नगा एगिंदिया पण्णत्ता ?
गोयमा ! पचविहा अणतरोववन्नगा एगिदिया पण्णत्ता, त जहा—पुढविक्काइया, दुयाभेदो जहा एगिंदियसएसु जाव बादरवणस्सइकाइया य ।।

४३ कहि ण भते ! अणतरोववन्नगाण बादरपुढविक्काइयाण ठाणा पण्णत्ता ?
गोयमा ! सट्ठाणेण अट्ठसु पुढवीसु, त जहा—रयणप्पभाए जहा ठाणपदे जाव[1]

---

१. प० २ ।

दीवेसु समुद्देसु, एत्थ ण अणतरोववन्नगाण वादरपुढविकाइयाणं ठाणा पण्णत्ता, उववाएण सव्वलोए, समुग्घाएण सव्वलोए, सट्ठाणेण लोगस्स असखेज्जइभागे। अणतोववन्नगसुहुमपुढविक्काइया एगविहा अविसेसमणाणत्ता सव्वलोए परियावन्ना पण्णत्ता समणाउसो! एव एएण कमेण सव्वे एगिदिया भाणियव्वा, सट्ठाणाइ सव्वेसि जहा ठाणपदे। तेसिं पज्जत्तगाण वादराण उववाय-समुग्घाय-सट्ठाणाणि जहा तेसि चेव अपज्जत्तगाण वादराण। सुहुमाण सव्वेसि जहा पुढविकाइयाण भणिया तहेव भाणियव्वा जाव वणस्सइकाइयत्ति॥

४४ अणतरोववन्नगाण सुहुमपुढविक्काइयाण भते! कइ कम्मप्पगडीओ पण्णत्ताओ?
गोयमा! अट्ठ कम्मप्पगडीओ पण्णत्ताओ। एव जहा एगिंदियसएसु अणंतरोववन्नगउद्देसए तहेव पण्णत्ताओ, तहेव वधति, तहेव वेदेति जाव[1] अणतरोववन्नगा वादरवणस्सइकाइया॥

४५ अणंतरोववन्नगएगिंदिया ण भते! कओ उववज्जति०? जहेव ओहिए उद्देसओ भणिओ तहेव॥

४६ अणतरोववन्नगएगिदियाण भते! कति समुग्घाया पण्णत्ता?
गोयमा! दोन्नि[2] समुग्घाया पण्णत्ता त जहा—वेदणासमुग्घाए य कसायसमुग्घाए य॥

४७ अणतरोववन्नगएगिदिया ण भते! कि तुल्लट्ठितीया तुल्लविसेसाहिय कम्म पकरेति—पुच्छा तहेव॥
गोयमा! अत्थेगइया तुल्लट्ठितीया तुल्लविसेसाहिय कम्म पकरेति, अत्थेगइया तुल्लट्ठितीया वेमायविसेसाहिय कम्म पकरेति।

४८. से केणट्ठेणं जाव वेमायविसेसाहिय कम्म पकरेति?
गोयमा! अणतरोववन्नगा एगिंदिया दुविहा पण्णत्ता, त जहा—अत्थेगइया समाउया समोववन्नगा, अत्थेगइया समाउया विसमोववन्नगा। तत्थ ण जे ते समाउया समोववन्नगा ते ण तुल्लट्ठितीया तुल्लविसेसाहियं कम्म पकरेति। तत्थ ण जे ते समाउया विसमोववन्नगा ते ण तुल्लट्ठितीया वेमायविसेसाहिय कम्म पकरेति। से तेणट्ठेण जाव वेमायविसेसाहिय कम्म पकरेति॥

४९ सेवं भते! सेवं भंते! त्ति॥

---

१. भ० ३३।१७-२०।　　२. दो (व, म)।

तइयो उद्देसो

५०. कइविहा ण भंते ! परपरोववन्नगा एगिदिया पण्णत्ता ?
गोयमा ! पचविहा परपरोववन्नगा एगिदिया पण्णत्ता, त जहा—पुढविक्का-इया, भेदो चउक्कग्रो जाव वणस्सइकाइयत्ति ॥

५१ परपरोववन्नगग्रपज्जत्तासुहुमपुढविक्काइए ण भते ! इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए पुरत्थिमिल्ले चरिमते समोहए, समोहणित्ता जे भविए इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए[1] पच्चत्थिमिल्ले चरिमते ग्रपज्जत्तासुहुमपुढविकाइयत्ताए उववज्जित्तए० ? एव एएण ग्रभिलावेण जहेव पढमो उद्देसग्रो जाव[2] लोगचरिमतो त्ति ॥

५२. कहि ण भते ! परपरोववन्नगवादरपुढविक्काइयाण[3] ठाणा पण्णत्ता ?
गोयमा ! सट्ठाणेण ग्रट्ठसु पुढवीसु । एव एएण ग्रभिलावेण जहा पढमे उद्देसए जाव तुल्लट्ठितीयत्ति ॥

५३ सेवं भते ! सेव भते ! त्ति ॥

४-११ उद्देसा

५४. एव सेसा वि ग्रट्ठ उद्देसगा जाव ग्रचरिमो त्ति, नवर—ग्रणतरा अणतरसरिसा, परपरा परपरसरिसा, चरिमा य ग्रचरिमा य एव चेव । एव एते एक्कारस उद्देसगा ॥

---

१. जाव (अ, ता, व); पुढवीए जाव (स) ।
२ भ० ३४।२-३२ ।
३. ०बातर० (क, ब) ।

बिइयं सतं

१-११ उद्देसा

५५. कइविहा णं भंते ! कण्हलेस्सा एगिंदिया पण्णत्ता ?
गोयमा ! पंचविहा कण्हलेस्सा एगिंदिया पण्णत्ता, भेदो चउक्कओ जहा कण्हलेस्सएगिंदियसए जाव वणस्सइकाइयत्ति ॥

५६. कण्हलेस्सअपज्जत्तासुहुमपुढविक्काइए णं भंते ! इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए पुरत्थिमिल्ले० ? एवं एएणं अभिलावेणं जहेव ओहिउद्देसओ जाव लोगचरिमंते त्ति । सव्वत्थ कण्हलेस्सु चेव उववाएयव्वो ॥

५७. कहि णं भंते ! कण्हलेस्सअपज्जत्तावादरपुढविक्काइयाणं ठाणा पण्णत्ता ?
एवं एएणं अभिलावेणं जहा ओहिउद्देसओ जाव तुल्लट्ठिइय त्ति ॥

५८. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति ॥

५९. एवं एएणं अभिलावेणं जहेव पढमं सेढिसयं तहेव एक्कारस उद्देसगा भाणियव्वा ॥

३-५ सताइं

६०. एवं नीललेस्सेहि वि सतं । काउलेस्सेहि वि सतं एवं चेव । भवसिद्धिय-एगिंदिएहिं[1] सतं ॥

---

१. ०एहिं वि (म, स) ।

छट्ठं सतं

६१ कइविहा ण भते कण्हलेस्सा भवसिद्धिया एगिदिया पण्णत्ता ? जहेव[1] ओहिउद्देसओ ॥

६२ कइविहा ण भते ! अणतरोववन्ना कण्हलेस्सा भवसिद्धिया एगिदिया पण्णत्ता ? जहेव अणतरोववन्नाउद्देसओ ओहिओ तहेव ॥

६३ कइविहा ण भते ! परपरोववन्ना कण्हलेस्सा भवसिद्धिया एगिदिया पण्णत्ता ? गोयमा ! पचविहा परपरोववन्ना कण्हलेस्सा भवसिद्धिया एगिदिया पण्णत्ता, भेदो चउक्कओ जाव वणस्सइकाइयत्ति ॥

६४ परपरोववन्नाकण्हलेस्सभवसिद्धियअपज्जत्तासुहुमपुढविकाइए ण भते ! इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए० ? एव एएण अभिलावेण जहेव ओहिओ उद्देसओ जाव लोयचरिमते त्ति । सव्वत्थ कण्हलेस्सेसु भवसिद्धिएसु उववाएयव्वो ॥

६५ कहि ण भते ! परपरोववन्नाकण्हलेस्सभवसिद्धियपज्जत्ताबादरपुढविकाइयाण ठाणा पण्णत्ता ? एव एएण अभिलावेण जहेव ओहिओ उद्देसओ जाव तुल्लट्ठिइयत्ति । एव एएण अभिलावेण कण्हलेस्सभवसिद्धियएगिदिएहि वि तहेव एक्कारसउद्देसगसजुत्त छट्ठ सत ॥

७-१२ सताइं

६६ नीललेस्सभवसिद्धियएगिदिएसु सत। एव काउलेस्सभवसिद्धियएगिदिएहि वि सत। जहा भवसिद्धिएहि चत्तारि सयाणि एव अभवसिद्धिएहि वि चत्तारि सयाणि भाणियव्वाणि, नवर—चरिमअचरिमवज्जा नव उद्देसगा भाणियव्वा, सेस त चेव। एव एयाइ बारस एगिदियसेढीसताइ ॥

६७. सेव भते ! सेव भते ! त्ति जाव विहरइ ॥

---

१. एव जहेव (स) ।

७. ते ण भते ! जीवा नाणावरणिज्जस्स—पुच्छा ।
गोयमा ! वेदगा, नो अवेदगा । एवं सव्वेसि ॥

८ ते ण भते ! जीवा किं सातावेदगा ? असातावेदगा[1] ?
गोयमा ! सातावेदगा वा असातावेदगा वा । एव उप्पलुद्देसगपरिवाडी[2] । सव्वेसि कम्माणं उदई, नो अणुदई । छण्ह कम्माण उदीरगा, नो अणुदीरगा । वेदणिज्जाउयाण उदीरगा वा अणुदीरगा वा ॥

९ ते ण भते ! जीवा कि कण्हलेस्सा—पुच्छा ।
गोयमा ! कण्हलेस्सा वा, नीललेस्सा वा, काउलेस्सा वा, तेउलेस्सा वा । नो सम्मदिट्ठी, नो सम्मामिच्छादिट्ठी, मिच्छादिट्ठी । नो नाणी, अण्णाणी—नियम[3] दुअण्णाणी, त जहा—मइअण्णाणी य सुयअण्णाणी य । नो मणजोगी, नो वइजोगी, कायजोगी । सागारोवउत्ता वा, अणागारोवउत्ता वा ॥

१० तेसि ण भते! जीवाण सरीरगा[4] कतिवण्णा? जहा[5] उप्पलुद्देसए सव्वत्थ—पुच्छा ।
गोयमा ! जहा उप्पलुद्देसए ऊसासगा वा, नीसासगा वा, नो उस्सासनीसासगा वा । आहारगा वा अणाहारगा वा । नो विरया, अविरया, नो विरयाविरया । सकिरिया, नो अकिरिया । सत्तविहबधगा वा अट्ठविहबधगा वा । आहारसण्णोवउत्ता वा जाव परिग्गहसण्णोवउत्ता वा । कोहकसायी वा जाव लोभकसायी वा । नो इत्थिवेदगा, नो पुरिसवेदगा, नपुसगवेदगा । इत्थिवेदबधगा वा पुरिसवेदबधगा वा नपुसगवेदबंधगा वा । नो सण्णी, असण्णी । सइदिया, नो अणिंदिया ॥

११ ते णं भते ! कडजुम्मकडजुम्मएगिंदिया कालओ केवच्चिर[6] होंति ?
गोयमा ! जहण्णेणं एक्क समय, उक्कोसेण अणत काल—अणता ओसप्पिणि-उस्सप्पिणीओ, वणस्सइकाइयकालो । सवेहो न भण्णइ, आहारो जहा[7] उप्पलुद्देसए नवर—निव्वाघाएण छद्दिसिं, वाघायं पडुच्च सिय तिदिसि, सिय चउदिसिं, सिय पचदिसिं, सेस तहेव । ठिती जहण्णेण अतोमुहुत्त, उक्कोसेण बावीस वाससहस्साइ । समुग्घाया आदिल्ला चत्तारि । मारणतियसमुग्घातेण समोहया वि मरति, असमोहया वि मरति । उव्वट्टणा जहा[8] उप्पलुद्देसए ॥

१२. अह भते ! सव्वपाणा जाव सव्वसत्ता कडजुम्मकडजुम्मएगिदियत्ताए उववन्न-पुव्वा ?
हता गोयमा ! असइ अदुवा अणतखुत्तो ॥

---

१. पुच्छा (अ, क, ख, ता, व, म) ।
२. भ० ११।९-११ ।
३ नियमा (अ, व) ।
४. सरीरा (ख, स) ।
५. भ० ११।१७-२८ ।
६. केवचिर (अ, क, ख, ब, म) ।
७. भ० ११।३५ ।
८. भ० ११।३६ ।

१३. कडजुम्मतेओयएगिंदिया ण भते ! कओ उववज्जति० ? उववाओ तहेव[1] ।।

१४ ते ण भते ! जीवा एगसमए—पुच्छा ।
गोयमा ! एकूणवीसा वा सखेज्जा वा असखेज्जा वा अणता वा उववज्जति, सेस जहा कडजुम्मकडजुम्माण जाव अणतखुत्तो ।।

१५ कडजुम्मदावरजुम्मएगिंदिया णं भते! कओहिंतो उववज्जति० ?उववाओ तहेव ।।

१६ ते ण भते ! जीवा एगसमएण—पुच्छा ।
गोयमा ! अट्ठारस वा सखेज्जा वा असखेज्जा वा अणता वा उववज्जति, सेस तहेव जाव अणतखुत्तो ।।

१७ कडजुम्मकलियोगएगिंदिया ण भते ! कओहिंतो उववज्जति० ? उववाओ तहेव परिमाण सत्तरस वा सखेज्जा वा असखेज्जा वा अणता वा, सेस तहेव जाव अणतखुत्तो ।।

१८ तेयोगकडजुम्मएगिदिया ण भते ! कओहिंतो उववज्जति० उववाओ तहेव, परिमाण वारस वा संखेज्जा वा असखेज्जा वा अणता वा उववज्जति, सेस तहेव जाव अणतखुत्तो ।।

१९ तेयोयतेयोयएगिंदिया ण भते ! कओहितो उववज्जति० ? उववाओ तहेव । परिमाण पन्नरस वा संखेज्जा वा असखेज्जा वा अणता वा, सेस तहेव जाव अणतखुत्तो । एव एएसु सोलससु महाजुम्मेसु एक्को गमओ, नवर—परिमाणे नाणत्त—तेयोयदावरजुम्मेसु परिमाण चोद्दस वा सखेज्जा वा असखेज्जा वा अणता वा उवज्जति । तेयोगकलियोगेसु तेरस वा सखेज्जा वा असखेज्जा वा अणता वा उववज्जति । दावरजुम्मकडजुम्मेसु अट्ठ वा सखेज्जा वा असखेज्जा वा अणता वा उववज्जति । दावरजुम्मतेयोगेसु एक्कारस वा सखेज्जा वा असखेज्जा वा अणता वा उववज्जति । दावरजुम्मदावरजुम्मेसु दस वा सखेज्जा वा असंखेज्जा वा अणता वा उववज्जति । दावरजुम्मकलियोगेसु नव वा सखेज्जा वा असखेज्जा वा अणता वा उववज्जति । कलियोगकडजुम्मे चत्तारि वा सखेज्जा वा असखेज्जा वा अणता वा उववज्जति । कलियोगतेयोगेसु सत्त वा सखेज्जा वा असखेज्जा वा अणता वा उववज्जति । कलियोगदावरजुम्मेसु छ वा सखेज्जा वा असखेज्जा वा अणता वा उववज्जंति ।।

२०. कलियोगकलियोगएगिंदिया ण भते ! कओ उववज्जति० ? उववाओ तहेव । परिमाण पच वा सखेज्जा वा असखेज्जा वा अणता वा उववज्जति, सेस तहेव जाव अणतखुत्तो ।।

२१. सेव भते ! सेवं भते ! त्ति ।।

---

१. भ० ३५।३ ।

पणतीसइमं सतं

पढमं एगिंदियमहाजुम्मसतं

पढमो उद्देसो

महाजुम्म-एगिंदियाण उववायादि-पदं

१ कइ ण भंते ! महाजुम्मा पण्णत्ता ?
गोयमा ! सोलस महाजुम्मा पण्णत्ता, तं जहा—१ कडजुम्मकडजुम्मे, २ कडजुम्मतेओगे, ३ कडजुम्मदावरजुम्मे[1], ४ कडजुम्मकलियोगे, ५ तेओगकडजुम्मे, ६ तेओगतेओगे, ७ तेओगदावरजुम्मे, ८ तेओगकलिओगे, ९ दावरजुम्मकडजुम्मे, १० दावरजुम्मतेओगे, ११ दावरजुम्मदावरजुम्मे, १२ दावरजुम्मकलियोगे, १३ कलिओगकडजुम्मे १४ कलियोगतेओगे, १५ कलियोगदावरजुम्मे, १६ कलियोगकलिओगे ॥

२ से कणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ—सोलस महाजुम्मा पण्णत्ता, तं जहा—कडजुम्मकडजुम्मे जाव कलियोगकलियोगे ?
गोयमा ! जे णं रासी चउक्कएणं अवहारेणं अवहीरमाणे[2] चउपज्जवसिए, जे णं तस्स रासिस्स अवहारसमया ते वि कडजुम्मा, सेत्तं कडजुम्मकडजुम्मे १। जे णं रासी चउक्कएणं अवहारेणं अवहीरमाणे तिपज्जवसिए, जे णं तस्स रासिस्स अवहारसमया कडजुम्मा, सेत्तं कडजुम्मतेयोए २। जे णं रासी चउक्कएणं अवहारेणं अवहीरमाणे दुपज्जवसिए, जे णं तस्स रासिस्स अवहारसमया कडजुम्मा, सेत्तं कडजुम्मदावरजुम्मे ३। जे णं रासी चउक्कएणं अवहारेणं अवहीरमाणे एगपज्जवसिए, जे णं तस्स रासिस्स अवहारसमया कडजुम्मा, सेत्तं कडजुम्मकलियोगे ४। जे णं रासी चउक्कएणं अवहारेणं अवहीरमाणे चउपज्जवसिए, जे णं तस्स रासिस्स अवहारसमया तेयोगा, सेत्तं तेओगकडजुम्मे ५। जे णं रासी चउक्कएणं अवहारेणं अवहीरमाणे तिपज्जवसिए,

---

१. °वादरजुम्मे (अ, ख, ता, म); °वातरजुम्मे (क)।
२. अवहारमाणा (अ), अवहारसाणे (म)।

जे णं तस्स रासिस्स अवहारसमया तेओगा, सेत्तं तेओगतेओगे ६। जे ण रासी चउक्कएण अवहारेण अवहीरमाणे दोपज्जवसिए, जे ण तस्स रासिस्स अवहारसमया तेयोगा, सेत्तं तेओगदावरजुम्मे ७। जे ण रासी चउक्कएण अवहारेण अवहीरमाणे एगपज्जवसिए, जे ण तस्स रासिस्स अवहारसमया तेओगा, सेत्त तेओगकलियोगे ८। जे ण रासी चउक्कएण अवहारेण अवहीरमाणे चउपज्जवसिए, जे ण तस्स रासिस्स अवहारसमया दावरजुम्मा, सेत्त दावरजुम्मकडजुम्मे ९। जे ण रासी चउक्कएण अवहारेण अवहीरमाणे तिपज्जवसिए, जे ण तस्स रासिस्स अवहारसमया दावरजुम्मा सेत्त दावरजुम्मतेयोए १०। जे ण रासी चउक्कएण अवहारेण अवहीरमाणे दुपज्जवसिए, जे ण तस्स रासिस्स अवहारसमया दावरजुम्मा, सेत्त दावरजुम्मदावरजुम्मे ११। जे ण रासी चउक्कएण अवहारेण अवहीरमाणे एगपज्जवसिए, जे ण तस्स रासिस्स अवहारसमया दावरजुम्मा, सेत्त दावरजुम्मकलियोए १२। जे ण रासी चउक्कएण अवहारेण अवहीरमाणे चउपज्जवसिए, जे ण तस्स रासिस्स अवहारसमया कलियोगा, सेत्त कलिओगकडजुम्मे १३। जे ण रासी चउक्कएण अवहारेण अवहीरमाणे तिपज्जवसिए, जे ण तस्स रासिस्स अवहारसमया कलियोगा, सेत्त कलियोगतेयोए १४। जे ण रासी चउक्कएण अवहारेण अवहीरमाणे दुपज्जवसिए, जे ण तस्स रासिस्स अवहारसमया कलियोगा, सेत्त कलियोगदावरजुम्मे १५। जे ण रासी चउक्कएण अवहारेण अवहीरमाणे एगपज्जवसिए, जे ण तस्स रासिस्स अवहारसमया कलियोगा, सेत्त कलियोगकलिओगे १६। से तेणट्ठेण जाव कलिओगकलिओगे ॥

३ कडजुम्मकडजुम्मएगिंदिया ण भते ! कओ उववज्जति—किं नेरइएहिंतो० ?
जहा[1] उप्पलुद्देसए तहा उववाओ ॥

४. ते ण भते ! जीवा एगसमएण केवइया उववज्जति ?
गोयमा ! सोलस वा सखेज्जा वा असखेज्जा वा अणता वा उववज्जति ॥

५ ते ण भते ! जीवा समए समए—पुच्छा।
गोयमा ! ते ण अणंता समए समए अवहीरमाणा-अवहीरमाणा अणताहिं ओसप्पिणि-उस्सप्पिणीहिं अवहीरति, णो चेव ण अवहिया[2] सिया। उच्चत्तं जहा[3] उप्पलुद्देसए ॥

६ ते ण भते ! जीवा नाणावरणिज्जस्स कम्मस्स किं बंधगा ? अबधगा ?
गोयमा ! बधगा, नो अबधगा। एव सव्वेसिं आउयवज्जाण। आउयस्स बधगा वा अबधगा वा ॥

---

१. भ० ११।२।
२ अवहरिया (स)।
३. भ० ११।५।

बीओ उद्देसो

२२ पढमसमयकडजुम्मकडजुम्मएगिंदिया ण भते ! कओ उववज्जंति० ? गोयमा ! तहेव, एव जहेव पढमो उद्देसओ तहेव सोलसखुत्तो वितिओ[1] भाणियव्वो, तहेव सव्व, नवर—इमाणि दस नाणत्ताणि—१ ओगाहणा जहण्णेण अंगुलस्स असखेज्जइभागं, उक्कोसेण वि अगुलस्स असंखेज्जइभागं । २ आउयकम्मस्स नो वंधगा, अवंधगा । ३ आउयस्स नो उदीरगा, अणुदीरगा । ४ नो उस्सासगा, नो निस्सासगा, नो उस्सासनिस्सासगा । ५ सत्तविहबधगा, नो अट्ठविहबधगा ।।

२३. ते णं भते ! पढमसमयकडजुम्मकडजुम्मएगिंदियत्ति कालओ केवच्चिर होइ ? गोयमा ! ६ एक्क समय । ७ एवं ठिती वि । ८ समुग्घाया आदिल्ला दोन्नि । ९. समोहया न पुच्छिज्जति । १०. उव्वट्टणा न पुच्छिज्जइ, सेस तहेव सव्व निरवसेस सोलससु वि गमएसु जाव अणतखुत्तो ।।

२४ सेवं भते ! सेव भते ! त्ति ।।

३-११ उद्देसा

२५ अपढमसमयकडजुम्मएगिंदिया णं भते ! कओ उववज्जंति० ? एसो जहा पढमुद्देसो सोलसहि वि जुम्मेसु[2] तहेव नेयव्वो जाव कलियोगकलियोगत्ताए जाव अणतखुत्तो ।।

२६. सेव भंते ! सेवं भते ! त्ति ।।

२७ चरिमसमयकडजुम्मकडजुम्मएगिंदिया णं भते ! कओ उववज्जति० ? एव जहेव पढमसमयउद्देसओ, नवर—देवा न उववज्जति, तेउलेस्सा न पुच्छिज्जति, सेस तहेव ।।

२८. सेवं भंते ! सेव भते ! त्ति ।।

२९ अचरिमसमयकडजुम्मकडजुम्मएगिंदिया ण भंते ! कओ उववज्जति० ? जहा अपढमसमयउद्देसो[3] तहेव निरवसेसो भाणितव्वो ।।

३०. सेव भते ! सेव भते ! त्ति ।।

---

१. वितिओ त्रि (अ, क, ख, ब, म) ।
२. जुम्मेहिंसु (ता) ।
३. पढम० (अ, क, ख, ता, ब) ।

३१ पढमपढमसमयकडजुम्मकडजुम्मएगिदिया ण भते ! कओ उववज्जति ? जहा पढमसमयउद्देसओ तहेव निरवसेस ।।
३२ सेव भते ! सेव भते ! त्ति जाव विहरइ ।।
३३ पढमअपढमसमयकडजुम्मकडजुम्मएगिदिया ण भते ! कओ उववज्जति० ? जहा पढमसमयउद्देसो तहेव भाणियव्वो ।।
३४ सेव भते ! सेव भते ! त्ति ।।
३५ पढमचरिमसमयकडजुम्मकडजुम्मएगिदिया ण भते ! कओ उववज्जति० ? जहा चरिमुद्देसओ तहेव निरवसेस ।।
३६. सेव भंते ! सेव भते ! त्ति ।।
३७ पढमअचरिमसमयकडजुम्मकडजुम्मएगिंदिया ण भते ! कओ उववज्जति० ? जहा 'बीओ उद्देसओ'[1] तहेव निरवसेस ।।
३८ सेव भते ! सेवं भते ! त्ति जाव विहरइ ।।
३९ चरिमचरिमसमयकडजुम्मकडजुम्मएगिदिया ण भते ! कओ उववज्जति० ? जहा चउत्थो उद्देसओ[2] तहेव निरवसेस ।।
४० सेव भते ! सेव भते ! त्ति ।।
४१ चरिमअचरिमसमयकडजुम्मकडजुम्मएगिदिया ण भते ! कओ उववज्जति० ? जहा पढमसमयउद्देसओ तहेव निरवसेस ।।
४२ सेव भते ! सेव भते ! त्ति जाव विहरति ।।
४३ एव एए एक्कारस उद्देसगा। पढमो ततिओ पचमो[3] य सरिसगमा, सेसा अट्ठ सरिसगमा, नवर—चउत्थे[4] अट्ठमे दसमे य देवा न उववज्जति। तेउलेस्सा नत्थि ।।

बितियं एगिंदियमहाजुम्मसतं

४४. कण्णलेस्सकडजुम्मकडजुम्मएगिंदिया ण भते ! कओ उववज्जति० ? गोयमा ! उववाओ तहेव, एव जहा ओहिउद्देसए, नवर इम नाणत्त ।।
४५. ते ण भते ! जीवा कण्हलेस्सा ? हता कण्हलेस्सा ।।

---

१ पढमउ० (अ, क, ख)।
२. चउत्थुद्देसओ (ता)।
३. पचमगो (अ, क, व, म); पचमओ (ख, ता)।
४. चउत्थे छट्ठे (अ, व)।

४६. ते ण भते ! कण्हलेस्सकडजुम्मकडजुम्मएगिंदियत्ति कालओ केवच्चिरं होइ ?
गोयमा ! जहण्णेण एक्कं समय, उक्कोसेणं अतोमुहुत्त । एव ठिती वि । सेस तहेव जाव अणतखुत्तो । एव सोलस वि जुम्मा भाणियव्वा ।।

४७. सेव भते ! सेव भते ! त्ति ।।

४८ पढमसमयकण्हलेस्सकडजुम्मकडजुम्मएगिंदिया ण भते ! कओ उववज्जति० ?
जहा पढमसमयउद्देसओ, नवर—

४९. ते ण भते ! जीवा कण्हलेस्सा ?
हता कण्हलेस्सा, सेस तहेव[1] ।।

५० सेव भते ! सेवं भते ! त्ति ।।

५१. एवं जहा ओहियसए एक्कारस उद्देसगा भणिया तहा कण्हलेस्ससए वि एक्कारस उद्देसगा भाणियव्वा । पढमो तइओ पचमो य सरिसगमा, सेसा अट्ठ वि सरिसगमा, नवर—चउत्थ-अट्ठम-दसमेसु उववाओ नत्थि देवस्स ।।

५२ सेवं भते ! सेवं भते ! त्ति ।।

३-१२ एगिंदियमहाजुम्मसताइं

५३. एव नीललेस्सेहि वि सतं कण्हलेस्ससतसरिसं, एक्कारस उद्देसगा तहेव ।।

५४. सेव भते ! सेवं भते ! त्ति ।।

५५. एवं काउलेस्सेहि वि सत कण्हलेस्ससतसरिसं ।।

५६. सेव भते ! सेव भते ! त्ति ।।

५७ भवसिद्धियकडजुम्मकडजुम्मएगिंदिया ण भते ! कओ उववज्जति० ? जहा ओहियसत तहेव, नवरं—एक्कारससु वि उद्देसएसु ।।

५८ अह भते ! सव्वे पाणा जाव सव्वे सत्ता भवसिद्धियकडजुम्मकडजुम्मएगिंदियत्ताए उववन्नपुव्वा ?
गोयमा ! णो इणट्ठे समट्ठे, सेस तहेव ।।

५९. सेवं भते ! सेव भते ! त्ति ।।

६०. कण्हलेस्सभवसिद्धियकडजुम्मकडजुम्मएगिंदिया ण भते ! कओ उववज्जति० ?
एव कण्हलेस्सभवसिद्धियएगिदिएहि वि सत बितियसतकण्हलेस्ससरिस भाणियव्व ।।

६१. सेवं भते ! सेव भते ! त्ति ।।

---

१. तं चेव (स) ।

६२ एव नीललेस्सभवसिद्धियएगिंदियएहि वि सत ॥

६३ सेव भते ! सेव भते ! त्ति ॥

६४. एव काउलेस्सभवसिद्धियएगिंदिएहि वि तहेव एक्कारसउद्देसगसजुत्त सत । एव एयाणि चत्तारि भवसिद्धिएसु सताणि । चउसु वि सएसु सव्वे पाणा जाव उववन्नपुव्वा ? नो इणट्ठे समट्ठे ॥

६५ सेव भते ! सेव भते ! त्ति ॥

६६ जहा भवसिद्धिएहि चत्तारि सताइ भणियाइ एव अभवसिद्धिएहि वि चत्तारि सताणि लेस्सासजुत्ताणि भाणियव्वाणि । सव्वे पाणा तहेव नो इणट्ठे समट्ठे । एव एयाइ वारस एगिंदियमहाजुम्मसताइ भवति ॥

६७ सेव भते ! सेव भते ! त्ति ॥

छत्तीसइमं सतं

पढमं बेंदियमहाजुम्मसतं

पढमो उद्देसो

महाजुम्म-बेंदियाण उववायादि-पदं

१ कडजुम्मकडजुम्मवेदिया ण भते ! कओ उववज्जति० ? उववाओ जहा[1] वक्कतीए। परिमाण सोलस वा सखेज्जा वा असखेज्जा वा उववज्जति। अवहारो[2] जहा[3] उप्पलुद्देसए। ओगाहणा जहण्णेण अगुलस्स असखेज्जइभाग, उक्कोसेण बारस जोयणाइ। एव जहा एगिदियमहाजुम्माण पढमुद्देसए तहेव, नवर—तिण्णि लेस्साओ, देवा न उववज्जति। सम्मदिट्ठी वा मिच्छदिट्ठी वा, नो सम्मामिच्छादिट्ठी। नाणी वा अण्णाणी वा। नो मणजोगी, वइजोगी वा कायजोगी वा ॥

२ ते ण भते ! कडजुम्मकडजुम्मबेदिया कालओ केवच्चिरं होति ?
गोयमा ! जहण्णेण एक्क समय, उक्कोसेण सखेज्ज काल। ठिती जहण्णेण एक्क समय, उक्कोसेण बारस सवच्छराइ। आहारो नियम छद्दिसि। तिण्णि समुग्घाया, सेस तहेव जाव अणतखुत्तो। एव सोलससु वि जुम्मेसु ॥

३ सेव भते ! सेव भते ! त्ति ॥

२-११ उद्देसा

४ पढमसमयकडजुम्मकडजुम्मवेदिया ण भते ! कओ उववज्जति० ? एवं जहा एगिदियमहाजुम्माण पढमसमयउद्देसए। दस नाणत्ताइ ताइ चेव दस इह वि।

---

१. प० ६।
२. आहारो (अ, क, ता, ब)।
३ भ० ११।४।

एक्कारसमं इम नाणत्त—नो मणजोगी, नो वइजोगी, कायजोगी। सेस जहा बेंदियाणं चेव पढमुद्देसए ॥

५ सेव भते ! सेव भते ! त्ति ॥

६. एव एए वि जहा एगिदियमहाजुम्मेसु एक्कारस उद्देसगा तहेव भाणियव्वा, नवर—चउत्थ-अट्ठम-दसमेसु सम्मत्त-नाणाणि न भण्णति। जहेव एगिदिएसु पढमो तइओ पचमो य एक्कगमा, सेसा अट्ठ एक्कगमा।

२-१२ बेंदियमहाजुम्मसताइं

७ कण्हलेस्सकडजुम्मकडजुम्मवेंदिया ण भते ! कओ उववज्जति० ? एव चेव। कण्हलेस्सेसु वि एक्कारसउद्देसगसजुत्त सत, नवर—लेस्सा, सचिट्ठणा[1] जहा एगिंदियकण्हलेस्साण ॥

८ एव नीललेस्सेहि वि सतं ॥

९. एव काउलेस्सेहि वि ॥

१० भवसिद्धियकडजुम्मकडजुम्मवेदिया ण भते० ? एव भवसिद्धियसता वि चत्तारि तेणेव पुव्वगमएण नेयव्वा, नवर—सव्वे पाणा० ? णो तिणट्ठे समट्ठे। सेस तहेव ओहियसताणि चत्तारि ॥

११. सेव भते ! सेव भते ! त्ति ॥

१२ जहा भवसिद्धियसताणि चत्तारि एव अभवसिद्धियसताणि चत्तारि भाणियव्वाणि, नवर—सम्मत्त-नाणाणि सव्वेहि नत्थि, सेस त चेव। एव एयाणि बारस वेदियमहाजुम्मसताणि भवति ॥

१३. सेव भते ! सेव भते ! त्ति ॥

---

१ सचिट्ठणा ठिती (अ, व, स)

सत्ततीसइमं सतं

महाजुम्म-तेंदियाण उववायादि-पद

१ कडजुम्मकडजुम्मतेदिया ण भते ! कओ उववज्जति० ? एव तेदिएसु वि वारस सता कायव्वा वेदियसतसरिसा, नवर—ओगाहणा जहण्णेण अगुलस्स असखेज्जइभाग, उक्कोसेण तिण्णि गाउयाइ। ठिती जहण्णेण एक्क समयं, उक्कोसेण एकूणवण्ण राइदियाइ, सेस तहेव ॥

२ सेवं भते ! सेव भते ! त्ति ॥

अट्ठतीसइमं सतं

महाजुम्म-चउरिंदियाणं उववायादि-पदं

१ चउरिदिएहि वि एव चेव वारस सता कायव्वा, नवर—ओगाहणा जहण्णेण अगुलस्स असखेज्जइभाग, उक्कोसेण चत्तारि गाउयाइ। ठिति जहण्णेण एक्क समय, उक्कोसेण छम्मासा। सेस जहा वेदियाण ॥

२ सेव भते ! सेव भते ! त्ति ॥

एगूणयालीसइमं सतं

महाजुम्म-असण्णिपंचिदियाणं उववायादि-पद

१. कडजुम्मकडजुम्मअसण्णिपंचिदिया ण भते ! कओ उववज्जति० ? जहा वेदियाण तहेव असण्णिसु वि वारस सता कातव्वा, नवर—ओगाहणा जहण्णेण अगुलस्स असखेज्जइभाग, उक्कोसेणं जोयणसहस्सं। सचिट्ठणा जहण्णेणं एक्कं समय, उक्कोसेण पुव्वकोडीपुहत्त। ठिती जहण्णेण एक्क समयं, उक्कोसेण पुव्वकोडी, सेस जहा वेदियाण ॥

२ सेव भते ! सेव भंते ! त्ति ॥

चत्तालीसतिमं सत

पढमं सण्णिपंचिंदियमहाजुम्मसतं

महाजुम्म-सण्णिपंचिंदियाणं उववायादि-पदं

१ कडजुम्मकडजुम्मसण्णिपंचिंदिया णं भंते ! कओ उववज्जंति०? उववाओ चउसु वि गईसु । संखेज्जवासाउय-असंखेज्जवासाउय-पज्जत्ता-अपज्जत्तएसु य न कओ वि पडिसेहो जाव अणुत्तरविमाणत्ति । परिमाणं अवहारो ओगाहणा य जहा असण्णिपंचिंदियाणं । वेयणिज्जवज्जाणं सत्तण्ह पगडीणं बंधगा वा अबंधगा वा, वेयणिज्जस्स बंधगा, नो अबंधगा । मोहणिज्जस्स वेदगा वा अवेदगा वा, सेसाणं सत्तण्ह वि वेदगा, नो अवेदगा । सायावेदगा वा असायावेदगा वा । मोहणिज्जस्स उदई वा अणुदई वा, सेसाणं सत्तण्ह वि उदई, नो अणुदई । नामस्स गोयस्स य उदीरगा, नो अणुदीरगा, सेसाणं छण्ह वि उदीरगा वा अणुदीरगा वा । कण्हलेस्सा वा जाव सुक्कलेस्सा वा । सम्मदिट्ठी वा मिच्छा-दिट्ठी वा सम्मामिच्छादिट्ठी वा । नाणी वा अण्णाणी वा । मणजोगी वइजोगी कायजोगी । उवओगो, वण्णमादी, उस्सासगा वा नीसासगा वा, आहारगा य जहा एगिंदियाणं । विरया य अविरया य विरयाविरया य । सकिरिया, नो अकिरिया ॥

२ ते णं भंते ! जीवा किं सत्तविहबंधगा ? अट्ठविहबंधगा ? छव्विहबंधगा ? एगविहबंधगा वा ?

गोयमा ! सत्तविहबंधगा वा जाव एगविहबंधगा वा ॥

३. ते णं भंते ! जीवा किं आहारसण्णोवउत्ता जाव परिग्गहसण्णोवउत्ता ? नोसण्णोवउत्ता ?

गोयमा ! आहारसण्णोवउत्ता जाव नोसण्णोवउत्ता वा । सव्वत्थ पुच्छा भाणि-यव्वा – कोहकसायी वा जाव लोभकसायी वा, अकसायी वा । इत्थीवेदगा वा पुरिसवेदगा वा नपुंसगवेदगा वा अवेदगा वा । इत्थिवेदबंधगा वा पुरिसवेद-बंधगा वा नपुंसगवेदबंधगा वा अबंधगा वा । सण्णी, नो असण्णी । सइंदिया,

नो अणिदिया। सचिट्ठणा जहण्णेण एक्क समय, उक्कोसेण सागरोवमसयपुहत्त सातिरेग। आहारो तहेव जाव नियम छद्दिसि। ठिती जहण्णेण एक्क समय, उक्कोसेण तेत्तीस सागरोवमाइ। छ समुग्घाया आदिल्लगा। मारणतियसमुग्घाएण समोहया वि मरति, असमोहया वि मरति। उव्वट्टणा जहेव उववाओ, न कत्थइ पडिसेहो जाव अणुत्तरविमाणत्ति।

४ अह भते! 'सव्वेपाणा'[1] जाव अणतखुत्तो। एव सोलससु वि जुम्मेसु भाणियव्व जाव अणतखुत्तो, नवर—परिमाण जहा बेइदियाण, सेस तहेव।।

५ सेव भते! सेव भते! त्ति।।

२-११ उद्देसा

६ पढमसमयकडजुम्मकडजुम्मसण्णिपंचिदिया ण भते! कओ उववज्जति०? उववाओ, परिमाण आहारो जहा एएसि चेव पढमोद्देसए। ओगाहणा बधो वेदो वेदणा उदयी उदीरगा य जहा बेदियाण पढमसमइयाण, तहेव कण्हलेस्सा वा जाव सुक्कलेस्सा वा। सेस जहा बेदियाण पढमसमइयाण जाव अणतखुत्तो, नवर—इत्थिवेदगा वा पुरिसवेदगा वा नपुसगवेदगा वा, सण्णिणो नो असण्णिणो, सेस तहेव। एव सोलससु वि जुम्मेसु परिमाण तहेव सव्व।

७ सेव भते! सेव भते! त्ति।।

८. एव एत्थ वि एक्कारस उद्देसगा तहेव, पढमो तइओ पंचमो य सरिसगमा, सेसा अट्ठ वि सरिसगमा। चउत्थ-अट्ठम-दसमेसु नत्थि विसेसो कायव्वो।।

९ सेव भते! सेवं भते! त्ति।।

बितियं सण्णिपंचिंदियमहाजुम्मसतं

१० कण्हलेस्सकडजुम्मकडजुम्मसण्णिपचिदिया ण भते! कओ उववज्जति०? तहेव पढमुद्देसओ सण्णीण, नवर—बध-वेद-उदइ-उदीरण-लेस्स-बधग-सण्ण[2]-कसाय-वेदबधगा य एयाणि जहा बेदियाण। कण्हलेस्साण वेदो तिविहो, अवेदगा नत्थि। सचिट्ठणा जहण्णेण एक्कं समय, उक्कोसेण तेत्तीस सागरोवमाइं अतोमुहुत्तमब्भहियाइ। एवं ठिती वि, नवर—ठितीए अतोमुहुत्तमब्भहियाइं न

---

१. सव्वपाणा (अ, क, ख, ता, व, स)। २. सण्णि (ता); सण्णा (म, स)।

भण्णति। सेसं जहा एएसिं चेव पढमे उद्देसए जाव अणंतखुत्तो। एवं सोलससु वि जुम्मेसु ॥

११ सेवं भंते! सेव भंते! त्ति ॥

१२ पढमसमयकण्हलेस्सकडजुम्मकडजुम्मसण्णिपंचिंदिया णं भंते! कओ उववज्जंति०? जहा सण्णिपंचिंदियपढमसमयउद्देसए तहेव निरवसेसं, नवरं—

१३. ते णं भंते! जीवा कण्हलेस्सा?
हंता कण्हलेस्सा, सेसं तं चेव। एवं सोलससु वि जुम्मेसु ॥

१४ सेवं भंते! सेवं भंते! त्ति ॥

१५ एवं एए वि एक्कारस उद्देसगा कण्हलेस्ससए। पढम-ततिय-पंचमा सरिसगमा, सेसा अट्ठ वि सरिसगमा ॥

१६ सेवं भंते! सेवं भंते! त्ति ॥

३-१४ सण्णिमहाजुम्मसताइं

१७ एवं नीललेस्सेसु वि सतं, नवरं—संचिट्ठणा जहण्णेणं एक्कं समयं, उक्कोसेणं दस सागरोवमाइं पलिओवमस्स असंखेज्जइभागमब्भहियाइं। एवं ठिती वि। एवं तिसु उद्देसएसु[1], सेसं तं चेव ॥

१८. सेवं भंते! सेवं भंते! त्ति ॥

१९. एवं काउलेस्ससतं पि, नवरं—संचिट्ठणा जहण्णेणं एक्कं समयं, उक्कोसेणं तिण्णि सागरोवमाइं पलिओवमस्स असंखेज्जइभागमब्भहियाइं। एवं ठितीवि। एवं तिसु वि उद्देसएसु, सेसं तं चेव ॥

२० सेवं भंते! सेवं भंते! त्ति ॥

२१ एवं तेउलेस्सेसु वि सतं, नवरं—संचिट्ठणा जहण्णेणं एक्कं समयं, उक्कोसेणं दो सागरोवमाइं पलिओवमस्स असंखेज्जइभागमब्भहियाइं। एवं ठितीवि, नवरं—नोसण्णोवउत्ता वा। एवं तिसु वि उद्देसएसु[2], सेसं तं चेव ॥

२२ सेवं भंते! सेवं भंते! त्ति ॥

२३ जहा तेउलेस्ससतं तहा पम्हलेस्ससतं पि, नवरं—संचिट्ठणा जहण्णेणं एक्कं, समयं, उक्कोसेणं दस सागरोवमाइं अंतोमुहुत्तमब्भहियाइं। एवं ठितीवि नवरं—अंतोमुहुत्तं न भण्णति, सेसं तं चेव। एवं एएसु पंचसु सतेसु जहा कण्हलेस्ससते गमओ तहा नेयव्वो जाव अणंतखुत्तो ॥

---

१ प्रथम-तृतीय-पञ्चमेषु (वृ)।

२. गमएसु (अ, क, ख, ता, ब, म)।

२४ सेवं भते ! सेव भते ! त्ति ॥

२५. सुक्कलेस्ससत जहा ओहियसत, नवर—सचिट्ठणा ठिती य जहा कण्हलेस्ससते, सेस तहेव जाव अणतखुत्तो ॥

२६ सेव भते ! सेव भते ! त्ति ॥

२७. भवसिद्धीयकडजुम्मकडजुम्मसण्णिपर्चिदिया णं भते ! कओ उववज्जति०? जहा पढम सण्णिसत्तं तहा नेयव्व भवसिद्धीयाभिलावेण, नवर—

२८. सव्वे पाणा[1]०?
नो तिणट्ठे समट्ठे, सेस त चेव ।

२९. सेव भते ! सेव भते ! त्ति ॥

३० कण्हलेस्सभवसिद्धीयकडजुम्मकडजुम्मसण्णिपर्चिदिया ण भते ! कओ उववज्जति०? एव एएण अभिलावेण जहा ओहियकण्हलेस्ससत ॥

३१ सेव भते ! सेव भते ! त्ति ॥

३२. एव नीललेस्सभवसिद्धीए वि सत ॥

३३ सेव भते ! सेव भते ! त्ति ॥

३४ एव जहा ओहियाणि सण्णिपर्चिदियाण सत्त सताणि भणियाणि, एव भवसिद्धीएहि वि सत्त सताणि कायव्वाणि, नवर—सत्तसु वि सतेसु सव्वे पाणा जाव नो तिणट्ठे समट्ठे, सेस त चेव ॥

३५. सेव भते ! सेव भंते ! त्ति ॥

१५-२१ सण्णिमहाजुम्मसताइं

३६. अभवसिद्धीयकडजुम्मकडजुम्मसण्णिपर्चिदिया णं भते ! कओ उववज्जति०? उववाओ तहेव अणुत्तरविमाणवज्जो। परिमाण अवहारो उच्चत्त बंधो वेदो वेदण उदओ उदीरणा य जहा कण्हलेस्ससते। कण्हलेस्सा वा जाव सुक्कलेस्सा वा। नो सम्मदिट्ठी, मिच्छादिट्ठी, नो सम्मामिच्छादिट्ठी। नो नाणी, अण्णाणी, एव जहा कण्हलेस्ससते, नवर—नो विरया, अविरया, नो विरयाविरया। सचिट्ठणा ठिती य जहा ओहिउद्देसए। समुग्घाया आदिल्लगा पच। उव्वट्टणा तहेव अणुत्तरविमाणवज्ज। सव्वे पाणा०? नो तिणट्ठे समट्ठे, सेस जहा कण्हलेस्ससते जाव अणतखुत्तो। एव सोलससु वि जुम्मेसु।

३७. सेवं भंते ! सेव भते ! त्ति ॥

---

१. भ० ४०।४।

३८. पढमसमयअभवसिद्धीयकडजुम्मकडजुम्मसण्णिपचिदिया ण भत ! कओ उववज्जति० ? जहा सण्णीण पढमसमयउद्देसए तहेव, नवरं–सम्मत्त सम्मामिच्छत्त नाण च सव्वत्थ नत्थि, सेस तहेव ॥

३९ सेव भते ! सेवं भते ! त्ति ॥

४० एव एत्थ वि एक्कारस उद्देसगा कायव्वा पढम-तइय-पचमा एक्कगमा, सेसा अट्ठ वि एक्कगमा ॥

४१ सेव भंते ! सेवं भते ! त्ति ॥

४२ कण्हलेस्सअभवसिद्धीयकडजुम्मकडजुम्मसण्णिपंचिदिया ण भते ! कओ उववज्जति०? जहा एएसि चेव ओहियसत तहा कण्हलेस्ससय पि, नवर—

४३ ते ण भते ! जीवा कण्हलेस्सा ?
हता कण्हलेस्सा। ठिती, सचिट्ठणा य जहा कण्हलेस्ससते, सेस त चेव ॥

४४ सेव भते ! सेव भते ! त्ति ॥

४५ एव छहि वि लेस्साहि छ सता कायव्वा जहा कण्हलेस्ससत, नवर—सचिट्ठणा ठिती य जहेव ओहियसते तहेव भाणियव्वा, नवर–सुक्कलेस्साए उक्कोसेण इक्कतीस सागरोवमाइ अतोमुहुत्तम०भहियाइ। ठिती एव चेव, नवर—अतोमुहुत्त नत्थि जहण्णग तहेव सव्वत्थ सम्मत्त-नाणाणि नत्थि। विरई विरयाविरई अणुत्तरविमाणोववत्ति—एयाणि नत्थि। सव्वे पाणा०?नो तिणट्ठे समट्ठे ॥

४६. सेव भते ! सेव भते ! त्ति ॥

४७ एव एयाणि सत्त अभवसिद्धीयमहाजुम्मसताइ भवति।

४८. सेव भते ! सेव भते ! त्ति ॥

४९ एव एयाणि एक्कवीस सण्णिमहाजुम्मसताणि। सव्वाणि वि एकासीतिमहाजुम्मसताइ ॥

———

एगचत्तालीसतिमं सतं

पढमो उद्देसो

रासीजुम्म-नेरइयादीणं उववायादि-पदं

१ कति ण भते ! रासीजुम्मा पण्णत्ता ?
गोयमा ! चत्तारि रासीजुम्मा पण्णत्ता, त जहा—कडजुम्मे जाव कलियोगे ।।

२. से केणट्ठेण भते ! एव वुच्चइ—चत्तारि रासीजुम्मा पण्णत्ता, त जहा—कडजुम्मे जाव कलियोगे ?
गोयमा ! जे णं रासी चउक्कएणं अवहारेण अवहीरमाणे चउपज्जवसिए, सेत्त रासीजुम्मकडजुम्मे । एव जाव जे ण रासी चउक्कएणं अवहारेण एगपज्जवसिए, सेत्त रासीजुम्मकलियोगे । से तेणट्ठेण जाव कलियोगे ।।

३ रासीजुम्मकडजुम्मनेरइया ण भते ! कओ उववज्जति० ? उववाओ जहा[1] वक्कतीए ।।

४ ते ण भते ! जीवा एगसमएण केवइया उववज्जति ?
गोयमा ! चत्तारि वा अट्ठ वा वारस वा सोलस वा सखेज्जा वा असखेज्जा वा उववज्जति ।।

५. ते ण भते ! जीवा किं सतरं[2] उववज्जति ? निरतर उववज्जति ?
गोयमा ! सतर पि उववज्जति, निरतरं पि उववज्जति । संतर उववज्जमाणा जहण्णेण एक्क समय, उक्कोसेण असखेज्जे समए अतर कट्टु उववज्जति । निरतर उववज्जमाणा जहण्णेण दो समया, उक्कोसेण असखेज्जा समया अणुसमय अविरहिय निरंतर उववज्जति ।।

६. ते ण भते ! जीवा ज समय कडजुम्मा त समय तेयोगा ? ज समय तेयोगा त समय कडजुम्मा ?
नो तिणट्ठे समट्ठे ।।

---

१ प० ६ ।

२. सांतर (व, म) ।

७ जं समयं कडजुम्मा तं समयं दावरजुम्मा ? जं समयं दावरजुम्मा तं समयं कडजुम्मा ?
नो तिणट्ठे समट्ठे ॥

८ जं समय कडजुम्मा तं समय कलियोगा ? ज समयं कलियोगा तं समयं कडजुम्मा ?
नो तिणट्ठे समट्ठे ॥

९ ते ण भते ! जीवा कहिं उववज्जति ?
गोयमा ! से जहानामए पवए पवमाणे, एव जहा उववायसते जाव[1] नो परप्पयोगेण उववज्जति ॥

१०. ते ण भते ! जीवा किं आयजमेणं उववज्जंति ? आयअजसेण उववज्जति ?
गोयमा ! नो आयजसेणं उववज्जति, आयअजसेणं उववज्जति ॥

११ जइ आयअजसेणं उववज्जति—किं आयजस उवजीवंति ? आयअजस उवजीवंति ?
गोयमा ! नो आयजस उवजीवति, आयअजस उवजीवति ॥

१२. जइ आयअजस उवजीवति—किं सलेस्सा ? अलेस्सा ?
गोयमा ! सलेस्सा, नो अलेस्सा ॥

१३ जइ सलेस्सा किं सकिरिया ? अकिरिया ?
गोयमा ! सकिरिया, नो अकिरिया ॥

१४ जइ सकिरिया तेणेव भवग्गहणेण सिज्झति जाव सव्वदुक्खाणं अतं करेति ?
नो तिणट्ठे समट्ठे ॥

१५ रासीजुम्मकडजुम्मअसुरकुमारा ण भते ! कओ उववज्जति० ? जहेव नेरतिया तहेव निरवसेस। एव जाव पचिंदियतिरिक्खजोणिया, नवर—वणस्सइकाइया जाव असखेज्जा वा अणता वा उववज्जति, सेस एव चेव। मणुस्सा वि एव चेव जाव नो आयजसेणं उववज्जति, आयअजसेण उववज्जति ॥

१६ जइ आयअजसेणं उववज्जति—किं आयजस उवजीवति ? आयअजसं उवजीवति ?
गोयमा ! आयजस पि उवजीवति, आयअजस पि उवजीवति ॥

१७ जइ आयजस उवजीवति कि सलेस्सा ? अलेस्सा ?
गोयमा ! सलेस्सा वि अलेस्सा वि ॥

१८ जइ अलेस्सा किं सकिरिया ? अकिरिया ?
गोयमा नो सकिरिया, अकिरिया ॥

१९ जइ अकिरिया तेणेव भवग्गहणेणं सिज्झति जाव सव्वदुक्खाणं अत करेंति ?
हता सिज्झति जाव सव्वदुक्खाण अंत करेंति ॥

---

१. भ० ३१।५।

२०. जइ सलेस्सा किं सकिरिया ? अकिरिया ?
गोयमा ! सकिरिया, नो अकिरिया ।।

२१ जइ सकिरिया तेणेव भवग्गहणेण सिज्झति जाव सव्वदुक्खाणं अंतं करेंति ?
गोयमा ! अत्थेगइया तेणेव भवग्गहणेण सिज्झंति जाव सव्वदुक्खाण अंत करेंति, अत्थेगइया नो तेणेव भवग्गहणेण सिज्झति जाव सव्वदुक्खाणं अत करेंति ।।

२२. जइ आयअजस उवजीवति किं सलेस्सा ? अलेस्सा ?
गोयमा ! सलेस्सा, नो अलेस्सा ।।

२३ जइ सलेस्सा किं सकिरिया ? अकिरिया ?
गोयमा ! सकिरिया, नो अकिरिया ।।

२४. जइ सकिरिया तेणेव भवग्गहणेणं सिज्झति जाव सव्वदुक्खाण अंत करेति ?
नो इणट्ठे समट्ठे । वाणमतरजोइसियवेमाणिया जहा नेरइया ।।

२५. सेव भते ! सेव भंते ! त्ति ।।

बीओ उद्देसो

२६. रासीजुम्मतेओयनेरइया ण भते ! कओ उववज्जति० ? एवं चेव उद्देसओ भाणियव्वो, नवर—परिमाण तिण्णि वा सत्त वा एक्कारस वा पन्नरस वा सखेज्जा वा असखेज्जा वा उववज्जति । संतर तहेव ।।

२७ ते ण भते ! जीवा ज समय तेयोगा तं समय कडजुम्मा ? ज समय कडजुम्मा तं समय तेयोगा ?
नो इणट्ठे समट्ठे ।।

२८ जं समयं तेयोया त समय दावरजुम्मा ? ज समय दावरजुम्मा त समय तेयोया ?
नो इणट्ठे समट्ठे । एवं कलियोगेण वि सम, सेस त चेव जाव वेमाणिया नवर—उववाओ सव्वेसि जहा[1] वक्कतीए ।।

२९ सेव भंते ! सेव भते ! त्ति ।।

---

१. प० ६ ।

तइओ उद्देसो

३०. रासीजुम्मदावरजुम्मनेरइया णं भते ! कओ उववज्जति० ? एव चेव उद्देसओ, नवर—परिमाण दो वा छ वा दस वा सखेज्जा वा असखेज्जा वा उववज्जति, सवेहो ॥

३१. ते ण भते ! जीवा ज समय दावरजुम्मा त समय कडजुम्मा ? ज समय कडजुम्मा त समय दावरजुम्मा ?
णो इणट्ठे समट्ठे । एव तेयोएण वि सम, एव कलियोगेण वि समं, सेस जहा पढमुद्देसए जाव वेमाणिया ॥

३२ सेव भते ! सेव भते ! त्ति ॥

चउत्थो उद्देसो

३३ रासीजुम्मकलिओगनेरइया णं भते ! कओ उववज्जति० ? एव चेव, नवर—परिमाणं एक्को वा पच वा नव वा तेरस वा सखेज्जा वा असखेज्जा उववज्जंति, सवेहो ॥

३४ ते ण भते ! जीवा ज समय कलियोगा त समय कडजुम्मा ? ज समय कडजुम्मा त समय कलियोगा ?
नो इणट्ठे समट्ठे । एव तेयोएण वि समं, एव दावरजुम्मेण वि सम, सेस जहा पढमुद्देसए जाव वेमाणिया ॥

३५ सेवं भते ! सेव भते ! त्ति ॥

५-२८ उद्देसा

३६ कण्हलेस्सरासीजुम्मकडजुम्मनेरइया णं भते ! कओ उववज्जति० ? उववाओ जहा धूमप्पभाए, सेस जहा पढमुद्देसए । असुरकुमाराण तहेव, एव जाव वाणमतराण । मणुस्साण वि जहेव नेरइयाण आयअजस उवजीवति । अलेस्सा, अकिरिया तेणेव भवग्गहणेण सिज्झति एव न भाणियव्व, सेसं जहा पढमुद्देसए ॥

३७ सेवं भंते ! सेव भते ! त्ति ॥

३८ कण्हलेस्सतेयोएहि वि एव चेव उद्देसओ ॥

३९ सेव भते ! सेवं भते ! त्ति ॥

४० कण्हलेस्सदावरजुम्मेहिं एवं चेव उद्देसओ ॥

४१. सेव भंते ! सेवं भते ! त्ति ॥

४२. कण्हलेस्सकलिओएहि वि एवं चेव उद्देसओ। परिमाणं संवेहो य जहा ओहिएसु उद्देसएसु ॥

४३. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति ॥

४४. जहा कण्हलेस्सेहिं एवं नीललेस्सेहि वि चत्तारि उद्देसगा भाणियव्वा निरवसेसा, नवरं—नेरइयाणं उववाओ जहा वालुयप्पभाए, सेसं तं चेव ॥

४५. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति ॥

४६. काउलेस्सेहि वि एवं चेव चत्तारि उद्देसगा कायव्वा, नवरं—नेरइयाणं उववाओ जहा रयणप्पभाए, सेसं तं चेव ॥

४७. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति ॥

४८. तेउलेस्सरासीजुम्मकडजुम्मअसुरकुमारा णं भंते ! कओ उववज्जंति० ? एवं चेव, नवरं—जेसु तेउलेस्सा अत्थि तेसु भाणियव्वा[1]। एवं एए वि कण्हलेस्सा-सरिसा चत्तारि उद्देसगा कायव्वा ॥

४९. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति ॥

५०. एवं पम्हलेस्साए वि चत्तारि उद्देसगा कायव्वा। पंचिंदियतिरिक्खजोणियाणं मणुस्साणं वेमाणियाण य एएसिं पम्हलेस्सा, सेसाणं नत्थि ॥

५१. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति ॥

५२. जहा पम्हलेस्साए एवं सुक्कलेस्साए वि चत्तारि उद्देसगा कायव्वा, नवरं—मणुस्साणं गमओ जहा ओहिउद्देसएसु, सेसं तं चेव। एवं एए छसु लेस्सासु चउवीसं उद्देसगा, ओहिया चत्तारि, सव्वे ते अट्ठावीसं उद्देसगा भवंति ॥

५३. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति ॥

२९-५६ उद्देसा

५४. भवसिद्धियरासीजुम्मकडजुम्मनेरइया णं भंते ! कओ उववज्जंति० ? जहा ओहिया पढमगा चत्तारि उद्देसगा तहेव निरवसेसं, एए चत्तारि उद्देसगा ॥

५५. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति ॥

५६. कण्हलेस्सभवसिद्धियरासीजुम्मकडजुम्मनेरइया णं भंते ! कओ उववज्जंति० ? जहा कण्हलेस्साए चत्तारि उद्देसगा भवंति तहा इमे वि भवसिद्धियकण्हलेस्सेहि वि चत्तारि उद्देसगा कायव्वा।

५७. एवं नीललेस्सभवसिद्धिएहि वि चत्तारि उद्देसगा कायव्वा ॥

---

१. भाणियव्व (ख, ता)।

५८. एव काउलेस्सेहि वि चत्तारि उद्देसगा ।।
५९. तेउलेस्सेहि वि चत्तारि उद्देसगा ओहियसरिसा ।।
६०. पम्हलेस्सेहि वि चत्तारि उद्देसगा ।।
६१. सुक्कलेस्सेहि वि चत्तारि उद्देसगा ओहियसरिसा । एव एए वि भवसिद्धिएहि वि अट्ठावीस उद्देसगा भवति ।।
६२ सेव भते ! सेवं भते ! त्ति ।।

५७-८४ उद्देसा

६३. अभवसिद्धियरासीजुम्मकडजुम्मनेरइया ण भते ! कओ उववज्जति० ? जहा पढमो उद्देसगो, नवर—मणुस्सा नेरइया य सरिसा भाणियव्वा, सेस तहेव ।।
६४. सेव भते ! सेव भते ! त्ति ।।
६५. एवं चउसु वि जुम्मेसु चत्तारि उद्देसगा ।।
६६. कण्हलेस्सअभवसिद्धियरासीजुम्मकडजुम्मनेरइया ण भते ! कओ उववज्जति० ? एवं चेव चत्तारि उद्देसगा ।।
६७ एव नीललेस्सअभवसिद्धियरासीजुम्मकडजुम्मनेरइयाण चत्तारि उद्देसगा ।
६८. काउलेस्सेहि वि चत्तारि उद्देसगा ।।
६९ तेउलेस्सेहि वि चत्तारि उद्देसगा ।।
७०. पम्हलेस्सेहि वि चत्तारि उद्देसगा ।।
७१. सुक्कलेस्सअभवसिद्धिएहि वि चत्तारि उद्देसगा । एव एएसु अट्ठावीसाए वि अभवसिद्धियउद्देसएसु मणुस्सा नेरइयगमेण नेयव्वा ।।
७२. सेव भते ! सेव भंते ! त्ति ।।

८५-११२ उद्देसा

७३ सम्मदिट्ठीरासीजुम्मकडजुम्मनेरइया ण भते ! कओ उववजति० ? एव जहा पढमो उद्देसओ । एव चउसु वि जुम्मेसु चत्तारि उद्देसगा भवसिद्धियसरिसा कायव्वा ।।
७४ सेव भते ! सेव भंते ! त्ति ।।
७५ कण्हलेस्ससम्मदिट्ठीरासीजुम्मकडजुम्मनेरइया ण भते ! कओ उववज्जति० ? एए वि कण्हलेस्ससरिसा चत्तारि वि उद्देसगा कायव्वा । एव सम्मदिट्ठीसु वि भव-सिद्धियसरिसा अट्ठावीस उद्देसगा कायव्वा ।।
७६. सेव भते ! सेव भते ! त्ति जाव विहरइ ।।

११३-१४० उद्देसा

७७ मिच्छादिट्ठीरासीजुम्मकडजुम्मनेरइया ण भते ! कओ उववज्जति० ? एव एत्थ वि मिच्छादिट्ठिअभिलावेण अभवसिद्धियसरिसा अट्ठावीसं उद्देसगा कायव्वा।

७८. सेव भते। सेव भते ! त्ति ॥

१४१-१६८ उद्देसा

७९. कण्हपक्खियरासीजुम्मकडजुम्मनेरइयाण भते ! कओ उववज्जति० ? एवं एत्थ वि अभवसिद्धियसरिसा अट्ठावीसं उद्देसगा कायव्वा ॥

८०. सेवं भते ! सेव भंते ! त्ति ॥

१६९-१९६ उद्देसा

८१ सुक्कपक्खियरासीजुम्मकडजुम्मनेरइया ण भंते ! कओ उववज्जति० ? एव एत्थ वि भवसिद्धियसरिसा अट्ठावीस उद्देसगा भवति। एव एए सव्वे वि छन्नउयं उद्देसगसय भवति रासीजुम्मसय जाव सुक्कलेस्ससुक्कपक्खियरासीजुम्मकलियोगवेमाणिया जाव—

८२. जइ सकिरिया तेणेव भवग्गहणेण सिज्झति जाव सव्वदुक्खाण अत करेति ? नो इणट्ठे समट्ठे ॥

८३ सेव भते ! सेव भते ! त्ति ॥

८४. भगव गोयमे समणं भगव महावीर तिक्खुत्तो आयाहिण-पयाहिण करेइ, करेत्ता वदति नमसति, वदित्ता नमसित्ता एव वयासी—एवमेयं भते ! तहमेयं भंते ! अवितहमेय भते ! असदिद्धमेय भते ! इच्छियमेयं भंते ! पडिच्छियमेयं भंते ! इच्छिय-पडिच्छियमेय भते ! सच्चे ण एसमट्ठे, जे ण तुब्भे वदह त्ति कट्टु अपुव्ववयणा[1] खलु अरहता भगवंतो, समण भगव महावीर वंदंति नमंसति, वदित्ता नमसित्ता संजमेण तवसा अप्पाण भावेमाणे विहरइ ॥

॥ इति भगवई समत्ता ॥

ग्रथाग्र

कुलगाथा १६३१६ अक्षर १६

कुल अक्षर ६१८२२४

---

१. अपूतिवयणा (अ, क, ता, व, म)।

परिसेसो

सव्वाए भगवईए अट्ठतीस सत सयाण (१३८), उद्देसगाण एगूणविंसतिसताणी पचविंसइअहियाणी (१९२५)।

सगहणी-गाहा

चुलसीइ सयसहस्सा, पदाण पवरवरनाणदसीहिं।
भावाभावमणता, पण्णत्ता एत्थमंगम्मि ।। १ ।।
तवनियमविणयवेलो, जयति सदा नाणविमलविपुलजलो।
हेतुसतविपुलवेगो, सघसमुद्दो गुणविसालो ।। २ ।।

पोत्थयलेहगकया नमोक्कारा

णमो गोयमाईण गणहराण, णमो भगवईए विवाहपण्णत्तीए, णमो दुवालसगस्स गणिपिडगस्स ।।

कुम्मसुसठियचलणा, अमलियकोरेंटबेटसकासा।
सुयदेवया भगवई, मम मतितिमिर पणासेउ ।।१।।

उद्देस-विधि

पण्णत्तीए आइमाण अट्ठण्ह सयाण दो दो उद्देसगा उद्दिसिज्जति, नवर—चउत्थे सए पढमदिवसे अट्ठ, बितियदिवसे दो उद्देसगा उद्दिसिज्जति। नवमाओ सताओ आरद्ध जावइय-जावइय ठवेति तावतिय-तावतिय[1] उद्दिसिज्जति, उक्कोसेण सत पि एगदिवसेण, मज्झिमेण दोहिं दिवसेहिं सत, जहण्णेणं तिहि दिवसेहिं सत। एव जाव वीसतिम सत, नवर—गोसालो एगदिवसेण उद्दिसिज्जति, जदि ठियो एगेण चेव आयविलेण अणुण्णवति[2]। अहण्ण ठितो आयविलेण छट्ठेण अणुण्णवति। एक्कवीस-बावीस-तेवीसतिमाइ सताइ एक्केक्कदिवसेण उद्दिसिज्जति। चउवीसतिम सत दोहि दिवसेहि छ-छ उद्देसगा। पचवीसतिमं दोहि दिवसेहि छ-छ उद्देसगा। बधिसयाइ अट्ठसयाइ एगेण दिवसेण, सेढिसयाइ बारस एगेण, एगिदियमहाजुम्मसयाइ बारस एगेण, एव बेदियाण बारस, तेदियाण बारस, चउरिंदियाण बारस एगेण, असण्णि-

१. °तिय एगदिवसेण (ख, स)।   २. अणुणच्चति (ता, स), अणुणज्जति (अ, व)

पंचिंदियाण बारस, सण्णिपंचिंदियमहाजुम्मसयाइं एक्कवोसं एगदिवसेणं उद्दिसिज्जंति, रासीजुम्मसतं एगदिवसेणं उद्दिसिज्जति ॥

गाहातिग

केषुचिदादर्शेषु पुस्तकलेखककृता अन्यापि गाथात्रयी लभ्यते—

विग्रसियअरविंदकरा, नासियतिमिरा सुयाहिया देवी ।
मज्झं पि देउ मेहं, बुहविबुहणमंसिया णिच्चं ॥१॥
सुयदेवयाए पणमिमो, जीए पसाएण सिक्खियं नाणं ।
अण्णं पवयणदेविं, संतिकरिं तं नमंसामि ॥२॥
सुयदेवया य जक्खो, कुंभधरो बंभसंतिवेरोट्टा ।
विज्जा य अंतहुंडी, देउ अविग्घं लिहंतस्स ॥३॥

परिशिष्ट :

परिशिष्ट—१

संक्षिप्त-पाठ, पूर्त-स्थल और पूर्ति आधार-स्थल

संक्षिप्त-पाठ	पूर्त-स्थल	पूर्ति आधार-स्थल
अतिय जाव पव्वइत्तए	१८।१४७	६।१६७
अंबकूणगहत्थगयं जाव अंजलिकम्म	१५।१२६	१५।१२०
अकंततरियं जाव अमणामतरियं	१६।३५	१।२२४
अकंता जाव अमणामा	७।११६	१।३५७
अकिट्ठे जाव विहरामि	३।१२६	३।१२६
अगामियाए जाव अडवीए	१५।८७	१५।८६
अगामियाए जाव सव्वओ	१५।८८	१५।८६
अग्गिसामण्णे जाव दाइयसामण्णे	६।१७६	६।१७६
अचलिए जाव निज्जरिज्जमाणे	१।४४२	१।११
अच्चासाइए जाव त	३।१२६	३।१२६
अच्छे जाव पडिरूवे	२।११८	वृत्ति
अजीवदव्वदेसे जाव अणंतभागूणे	११।१०८	११।१०८
अजीवदव्वदेसे जाव सव्वागासस्स	११।१०८	२।१४
अज्झत्थिए जाव समुप्पज्जइ	३।१३१	२।३१
अज्झत्थिए जाव समुप्पज्जित्था	२।६७; ३।३३, ३६, ११२, ११५, ११६, ५।८५; ६।१५८, २२८; ११।५६, ७२, ८५, १८८; १२।६, १३।१०३; १०६, ११६; १५।५३, ७५,१२८, १२६, १४१, १४८	२।३१
अज्झत्थिय जाव समुप्पन्न	१३।१०४	२।३१
अट्ठं जाव जाणाओ	१।४२४	१।४२३
अट्ठ वा जाव वागरण	५।१०४	५।१०४
अट्ठ वा जाव वागरेइ	५।१०५	५।१०४

वि निसिरणयाए वि दहणयाए वि ताव च ण से पुरिसे काइयाए जाव पर्चाहि	१।३६७	१।३६५
एक्केण वा जाव उक्कोसेण	२०।११८	२०।११८
एगरूव जाव हता	७।१६८	७।१६७
एगवण्णाइ आणमति वा पाणमति वा ऊससति वा नीससति वा आहारगमो नेयव्वो जाव पचदिसिं	२।४,५	प० २८।१
°एगिंदिय जाव परिणए	८।५१	८।५१
एगिंदियदेसा जाव अणिंदियदेसा	२।१३९	२।१३९
एगिंदियपदेसा जाव अणिंदियपदेसा	२।१३९	२।१३९
एगिंदियपयोगपरिणया जाव पचिंदिय०	८।२	२।१३९
एतेण अभिलावेण चत्तारि भगा	३।१५६	३।१५४
एत्तो आढत्तं जहा जीवाभिगमे जाव से	६।१५६-१५९	वृत्ति, जी ३
एत्थ वि तह चेव भाणियव्व, नवर अणुदिण्ण उवसामेइ सेसापडिसेहेयव्वा तिण्णि । ज त भते ! अणुदिण्ण उवसामेइ त किं उट्ठाणेण जाव पुरिसक्कारपरक्कमे इ वा । से नूणं भते ! अप्पणा चेव वेदेइ अप्पणा चेव गरहइ एत्थ वि सच्चेव परिवाडी, नवरं उदिण्ण वेदेइ नो अणुदिण्ण वेदेइ एव जाव पुरिसक्कार-परक्कमे इ वा । से नूण भते ! अप्पणा चेव निज्जरेइ अप्प० एत्थ वि, सच्चेव परिवाडी, नवर उदयअण-तरपच्छाकड कम्म निज्जरेइ एव जाव परक्कमेइ वा	१।१५१-१६२	१।१४७-१५०
एमहिड्ढीए जाव एमहाणुभागे	३।४	३।४
एयति जाव अते	३।१४८	३।१४४
एयति जाव त	३।१४३	३।१४३
एयति जाव नो	३।१४६-१४८	३।१४३
एयति जाव परिणमइ	३।१४५	३।१४३
एयाणि वि तहेव नवर सत्त संवच्छराइं सेस त चेव	६।१३१	६।१२९
एव अगणिकायस्स मज्झंमज्झेण तहिं नवर झियाएज्ज भाणियव्व । एव पुक्खलसवट्टगस्स महामेहस्स मज्झंमज्झेण तहिं उल्ले सिया ।		

एवं जहा अट्ठमसए ततिए उद्देसए जाव नो	१८।१४६	८।२२३
एव जहा अट्ठारसमसए छट्ठुद्देसए जाव सिय	२०।२७	१८।११२
एव जहा असोच्चाए तहेव जाव केवल०	६।६६-६८	६।४४-४६
एव जहा आभिणिबोहियनाणस्स वत्तव्वया भणिया तहा सुयनाणस्स वि भाणियव्वा नवर—सुयनाणावरणिज्जाणं कम्माण खओवसमे भाणियव्वा। एवं चेव केवलं ओहिनाणं भाणियव्व, नवर—ओहिनाणावरणिज्जाण कम्माणं खओवसमे भाणियव्वे। एव केवल मणपज्जवनाण उप्पाडेज्जा नवरं—मणपज्जवनाणावरणिज्जाण कम्माण खओवसमे भाणियव्वो	६।२३-२८	६।२१,२२
एवं जहा इदादिसा तहेव निरवसेसं भाणियव्व जाव अद्धासमए	११।१००	१०।५
एवं जहा इदियउद्देसए पढमे जाव वेमाणिया जाव तत्थ य जे ते उवउत्ता ते जाणंति, पासंति, आहारेंति। से तेणट्ठेणं निक्खेवो भाणियव्वो	१८।६६-७१	प० ४
एव जहा उसभदत्तो तहेव पव्वइओ नवरं पचहिं पुरिससएहिं सद्धि तहेव जाव	६।२१४,२१५	६।१५०,१५१
एवं जहा ओववाइए अम्मडस्स वत्तव्वया जाव	१४।११०-११२	ओ० सू० ११८-१२०
एवं जहा ओववाइए कूणिओ जाव निगच्छइ	६।२०६	ओ० सू० ६९
एवं जहा ओववाइए जाव आराहगा	१४।१०७-१०६	ओ० सू० ११५-११७
एवं जहा ओववाइए तहेव भाणियव्व जाव आलोय	६।२०४	ओ० सू० ६४
एवं जहा कालासवेसियपुत्तो तहेव भाणियव्व जाव सव्व०	६।१३३-१३५	१।४३१-४३३
एव जहा कोहवसट्टे तहेव जाव अणुपरियट्टइ	१२।५६	१२।२२
एव जहा खदए जाव जओ	१५।१५७	२।३८
एव जहा खदए जाव् से तेणट्ठेणं जाव नो असरीरी	१६।३,४	२।११,१२
एव जहा खदओ जाव एय	७।२०३	२।६८
एवं जहा छट्ठसए जाव नो	१६।५२	६।४
एव जहा छट्ठसए तहा अयोकवल्ले वि जाव महापज्जवसाणा	१६।५२	६।४
एव जहा जीवाभिगमे तिविहे देवपुरिसे अप्पाबहुयं जाव जोतिसिया	१२।१६८	जी० ३; भ० वृत्ति
एव जहा जीवाभिगमे बितिए नेरइयउद्देसए	१३।४५	जी० ३; भ० वृत्ति

एवं जहा तइयसए चउत्थुद्देसए जाव अत्थि	१३।१६६	३।१६२
एवं जहा तइयसए पचमुद्देसए जाव नो	१३।१५०	३।१६६
एव जहा तामली जाव सक्कारेइ	११।६३	३।३३
एवं जहा तित्थगरमायरो जाव	१६।८७	१६।८६
एव जहा तुगिउद्देसए जाव पज्जुवासति	११।१७८	२।१८७, ओ० सू० ५२
एव जहा तेयगसरीरस्स अतर तहेव	८।४३६	८।४१७
एव जहा तेयगस्स सचिट्ठणा तहेव	८।४३५	८।४१६
एव जहा दवियाया कसायाया भणिया तहा दवियाया जोगाया भाणियव्वा	१२।२०२	१२।२०१
एवं जहा दसमसए जाव नामधेज्जेत्ति	१३।५०,५१	१०।३,४
एव जहा नवमसए उसभदत्तो जाव भविस्सइ	१२।३३	९।१३९
एव जहा नाणावरणिज्ज नवर दंसणनाम घेतव्व जाव दसण०	८।४२१	८।४२०
एव जहा नियंठस्स वत्तव्वया तहा सिणायस्स वि भाणियव्वा जाव सिणाए	२५।३५९,३६०	२५।३५६,३५७
एव जहा नेरइयउद्देसए जाव	१३।४६	जी० ३, भ० वृत्ति
एव जहा पचमसए परमाणुपोग्गलवत्तव्वया जाव अणगारेण	१८।१९२-१९५	५।१५७
एव जहा पढम पारणग नवर	११।६६	११।६४
एव जहा पढमसए असवुडस्स अणगारस्स जाव अणुपरियट्टइ	१२।२२	१।४५
एव जहा पढमसए चउत्थे उद्देसए तहा भाणियव्व जाव अलमत्थु	७।१५६,१५७	१।२००,२०९
एव जहा पढमसए छट्ठुद्देसए जाव नो	१७।५१-५४	१।२७७-२८०
एव जहा पढमसए नवमे उद्देसए तहा भाणियव्व	७।१६५	१।४३६
एव जहा वारसमसए पंचमुद्देसे जाव कम्मओ	२०।२१,२२	१२।११९,१२०
एव जहा वितियसए अत्थिकायउद्देसए जाव उवओग	१३।५९	२।१३७
एव जहा बित्तियसए जाव तिविहाए	९।१४६	२।९७
एव जहा वितियसए नियठुद्देसए जाव अडमाणे	१५।९-१२	२।१०६,१०७
एव जहा रायपसेणइज्जे चित्ते जाव चक्खुभूए	१८।४०	राय०सू०६७५
एव जहा रायपसेणइज्जो चित्तो	१८।२२१	राय०सू०६४५
एवं जहा रायप्पसेणइज्जे जाव अट्ठसएण	९।१८२	राय०सू०२७९
एव जहा रायप्पसेणइज्जे जाव खुड्डिय	७।१५७,१५८	राय०सू०७७२

एव जहा वेयणिज्जेण सम भणिया तहा		
आउएण वि सम भाणियव्व	८।४८८	८।४८६
एव जहा सत्तमसए अण्णउत्थियउद्देसए		
जाव से	१८।१३४,१३५	७।२१२,२१३
एव जहा सत्तमसए दुस्समउद्देसए जाव		
अपरिया०	८।४२२	७।११४
एव जहा सत्तमसए पढमउद्देसए जाव से	१०।१४	७।२१
एवं जहा सद्दुद्देसए जाव निव्वुडे नाणे केवलिस्स	६।१२४	५।६७
एव जहा सुत्तस्स तहा दुब्बलियवत्तव्वया		
भाणियव्वा, वलियस्स जहा जागरस्स तहा		
भाणियव्व जाव सजोएत्तारो	१२।५६	१२।५४
एव जहा सूरियाभस्स अलंकारो तहेव जाव चित्त	६।१६०	राय०सू०२७५
एव जहा सूरियाभो	१६।६०-६३	राय०सू०६२-६५
एवं जहेव नेरइयाण नवर देवे	१४।१६,२०	१४।१७,१८
एव जहेव भासा	१३।१२६	१३।१२४
एव जहेव विजयगाहावई नवरं सव्वकामगुणिएणं		
भोयणेण पडिलाभेइ सेस त चेव जाव चउत्थ	१५।३६-४४	१५।२५-३०
एवं जहेव विजयस्स नवरं मम विउलाए		
खज्जगविहीए पडिलाभेस्सामीति तुट्ठे सेस		
त चेव जाव तच्च	१५।३२-३७	१५।२५-३०
एव जहेव विज्जाचारस्स नवर तिसत्तखुत्तो	२०।८५	२०।८१
एवं जहेव सक्कस्स जाव तए	१४।२५	१४।२२
एव जाव अलोए	११।१०८	११।१०८
एव जाव उत्तर०	११।११०	११।११०
एव जाव भावओ	८।१८८	८।१८८
एव जाव भावओ	८।१६१	८।१६१
एव जाव मणपज्जवनाण	६।३१	६।३१
एवं जाव लोए	११।१०८	११।१०८
एव जाव से	१३।१५६	ओ०सू०१५०
एव जाव हुडे	१४।८१	ठा०६।३१
एवं जोगो, उवओगो, संघयण, सठाण,		
उच्चत्तं, आउयं च एयाणि सव्वाणि जहा		
असोच्चाए तहेव भाणियव्वाणि	६।५८-६३	६।३६-४१

एव तं चेव नवर	११।७०	११।६४
एवं त चेव नवर नियम सपडिक्कमे	१३।१४५	१३।१४४
एव तवे संजमे	१।४२,४३	१।४१
एव तिण्णि वि भाणियव्वा	६।३६	६।३६
एव तिपएसिय वि, नवर सिय एगवण्णे, सिय दुवण्णे सिय तिवण्णे। एवं रसेसु वि, सेस जहा दुपएसियस्स। एव चउपएसिए वि, नवरं—सिय एगवण्णे जाव सिय चउवण्णे। एव रसेसु वि, सेस त चेव। एवं पचपएसिए वि, नवरं—सिय एगवण्णे जाव सिय पचवण्णे, एव रसेसु वि, गंधफासा तहेव।	१८।११३-११५	१८।११२
एव तेइंदिया एव चउरिंदिया	२५।२	२५।२
एव दसणाराहणं पि एव चरित्ताराहण पि	८।४६५,४६६	८।४६४
एवं दरिसणावरणिज्ज पि	६।३४	६।३४
एव धायइसड दीवं जाव हंता	१८।१५३	१८।१५२
एव नाणी आभिणिबोहियनाणी जाव केवलनाणी अण्णाणी मइअण्णाणी सुयअण्णाणी विभंगनाणी एएसि दसण्ह वि [अट्ठण्ह वि (अ)] सचिट्ठणा जहा कायट्ठितीए अतर सव्व जहा जीवाभिगमे अप्पाबहुगाणि तिण्णि जहा बहुवत्तव्वयाए	८।१९३-२०७	प०१८,जी०१०,प०३,भ०वृत्ति।
एव नो आयकम्मुणा, परकम्मुणा। नो आयप्पयोगेण, परप्पयोगेणं। उसिओदय वा गच्छइ, पयोदय वा गच्छइ	३।१७५-१७७	३।१७४
एव पडिउच्चारेतव्व	१।३४	१।३३
एव परउत्थियवत्तव्वया नेयव्वा जाव इत्थिवेद	२।७९	१।४२०
एवं बाहिरए पोग्गले परियाइत्ता पभू	३।२१०	३।२०९
एव बितिओ वि आलावगो नवर बाहिरए पोग्गले परियाइत्ता पभू	३।२४१	३।२४०
एव वीरियायाए वि सम	१२।२०३	१२।२०३
एव वेदणापरिणाम	१४।४१	१४।४०
एव सपत्तेणवि चत्तारि आलावगा भाणियव्वा जहा असपत्तेण	८।२५१	८।२५१
एव सवरेण वि	९।३१	९।३१

जहा ओववाइए जाव अभिनंदंता	९।२०८	ओ०सू० ६८
जहा ओववाइए जाव गगण०	९।२०४	ओ०सू० ६४
जहा ओववाइए जाव गहणयाए	११।८५	ओ०सू० ५२
जहा ओववाइए जाव लूहाहारे	२५।५७१	ओ०सू० ३५
जहा ओववाइए जाव सत्थवाह०	९।१५८	ओ०सू० ५२
जहा ओववाइए जाव सव्वगाय०	२५।५७१	ओ०सू० ३६
जहा ओववाइए जाव सुद्धेसणिए	२५।५६९	ओ०सू० ३४
जहा ओसप्पिणी उद्देसए जाव परस्सरे	१२।१६०	७।१२२
जहा कूणिओ जाव पायच्छित्ते	७।१९६	७।१७६
जहा कोहे तहेव	१२।१०४	१२।१०३
जहा खदए जाव अणंता	११।१०८	२।४५
जहा खदए जाव गद्धपट्ठे	१३।१४२	२।४९
जहा खदए जाव परिक्खेवेण	११।११०	२।४७
जहा खदए जाव सव्वण्णू	१२।२१	२।३८
जहा खदए तहा चत्तारि आलावगा नेयव्वा अणेगसयसहस्स पुट्ठे उद्दाइ ससरीरी निक्खमइ	५।४६-५०	२।८-१२
जहा खदओ जाव अण्णेसु	९।१३७	२।२४
जहा खंदओ जाव से	९।१५०	२।५२
जहा गोयमसामी जाव जेणेव	१५।१५३	२।१०७
जहा चोद्दसमसए ततिए उद्देसए जाव पडिससाहणया	२५।५८५	१४।३२
जहा तामलिस्स जाव पुत्तेहिं	११।५९	३।३३
जहा तामलिस्स वत्तव्वया तहा नेतव्वा, नवर चउप्पुडय दारुमय पडिग्गहय करेत्ता जाव विउलं असणपाणखाइम-साइम जाव सयमेव	३।१०१,१०२	३।३२,३३
जहा तेयनिसग्गे जाव अवकररासि	१६।९८	१५।११६
जहा देवाणदा जाव पडिसुणेइ	१२।३४	९।१४०
जहा नदीए जाव भावओ	८।१८७	नदी सू० २५
जहा नाणावरणिज्ज	६।३४	६।३४
जहा नियठुद्देसए जाव तेण	११।७६	२।११०,११।७३
जहा पचमसए जाव जे	९।१२२	५।२५५
जहा पढमसए कालासवेसियपुत्ते जाव सव्वदुक्ख०	७।२३१	१।४३३

पासादीए जाव पडिरूवे	११।५७	२।८०
पासादीय जाव पडिरूवं	१५।८७	२।८०
पिवामापरीमहे जाव दसण०	८।३१६	वृत्ति
पुच्छा	१।२९७	१।२९०
पुच्छा	३।१८४	३।१८३
पुच्छा	३।२७३, २७५	३।२७२
पुच्छा	८।८९	८।८८
पुच्छा	८।२९८-३००	८।२९५
पुच्छा	८।४२३-४३३	८।४२०
पुच्छा	८।४९२	८।४९२
पुच्छा	८।४९४	८।४९४
पुच्छा	८।४९५	८।४९५
पुच्छा	८।४९६	८।४९६
पुच्छा	८।४९७	८।४९८
पुच्छा	८।४९८	८।४९७
पुच्छा	९।६४	९।४२
पुच्छा	१०।५७,६१	१०।४६
पुच्छा	१२।७२-७६	१२।६९
पुच्छा	१२।११७,११८	१२।१०२
पुच्छा	१२।२२२	१२।२२२
पुच्छा	१३।७,११	१३।२
पुच्छा	१३।६०	१३।५६
पुच्छा	१३।६४	१३।६१
पुच्छा	१३।१२८	१३।१२४
पुच्छा	१३।१२८	१३।१२४
पुच्छा	१४।५६,५९	१४।५४
पुच्छा	१४।९३,९४,९९,१००	१४।९०
पुच्छा	१४।१२८	१४।१२६
पुच्छा	१७।६२	१७।६०
पुच्छा	१८।१०३	१८।१०२
पुच्छा	१८।१०८,११२,११७	१८।१०७
पुच्छा	१८।१७६	१८।१७४
पुच्छा	२०।१६,१८	२०।१४
पुच्छा	२०।४०	२०।३८

परिशिष्ट—२

पूरकपाठ

('नेरइया जाव वेमाणिया' तथा 'नेरइया जाव सिद्धा' का पूरक पाठ)

१. नेरइय
२ असुरकुमार
३ नागकुमार
४. सुवण्णकुमार
५ विज्जुकुमार
६ अग्गिकुमार
७. दीवकुमार
८ उदहिकुमार
९. दिसाकुमार
१० वायुकुमार
११. थणियकुमार
१२ पुढविकाइय
१३. आउकाइय
१४ तेउकाइय
१५. वाउकाइय
१६. वणस्सइकाइय
१७. वेइंदिय
१८ तेइंदिय
१९. चउरिंदिय
२०. पंचिंदिय
२१ मणुस्स
२२. वाणमंतर
२३ जोइसिय
२४. वेमाणिय
२५. सिद्ध

शुद्धि-पत्र

मूलपाठ

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
११	१२	०भय०	०भया०
२०	१७	परिणामेति	परिणामेंति
२१	१७	मस्साणु	मणुस्सा
२३	६	नेरइइ	नेरइए
४०	५	०वउत्ताय	०वउत्ते य
४०	६	वट्टमाण	वट्टमाण
४६	२८	पुट्ट	पुट्ठ
३१	१७	वेदेंति	वेदेंति
४८	२१	उड्डंजाणू	उड्ढंजाणू
५१	१०	०ट्ठिति	०ट्ठिती
७७	७	दुक्तवा	दुक्खा
८९	२८	वलय०	वलय०
९३	५	तोरेइ	तीरेइ
१०३	११	०सुद्दिट्ठ०	०मुद्दिट्ठ०
१०३	१४	०वासेहिं	०वासेहिं
१०४	२४	विउलस्य	विउलस्स
११७	६	घणमत्थि०	धम्मत्थि०
१२८	५	जारिसिया	तारिसिया
१३७	२१	ढिच्चा	ठिच्चा
१४४	२३	जदूदीवे	जवूदीवे
१४७	११	जाव	जाव ४
१४७	१३	न० ४,५, ६	न० ५, ६, ७
१४७	१५	जाव ७	जाव
१५१	४	असुरण्णो	अमुररण्णो
१५७	५	सहत्ण०	सहत्थ०
१६३	१८	गतित्तए	गमित्तए
१७४	२०	उड्ढावाया	उड्ढवाया
१७७	१	पलिअ	पलिओवमं
१८४	३	०जोयसणसय-हस्साइ	०जोयणसय-सहस्साइ
१८५	८	–वग्गणायण०	–वग्गणाठाण०
१९१	६	वि; तया	तया
१९१	९	०समुहस्स	०समुद्दस्स
२०९	२२,२४,२५	न० ६,७,८	न० ७,८,९
२९१	५	दीणस्मरा' अणिट्टस्सरा	दीणस्सरा अणिट्टस्सरा'
३४०	१४	तस्म० भयणाए	यह पक्ति १६३ सूत्र के अत मे है
३४७	१८	अणादिय०	अणादीय०
४३७	१०	माइणे	माहणे
५०३	३	अज्झम्थिए	अज्झत्थिए
५२३	१७	अणुद्वय०	अणुद्घुय०
५२८	१९	सया—	राया—
५७९	१८	उवज्जति	उववज्जंति
७६०	७	०गम्ममण-मागा	०गम्ममाण-मग्गा
७७९	२५	सव्द्धव	सव्वट्ठ
७८७	१३	सजय	सजम
८२१	१४	महिदाण	–माहिंदाण
९२०	१२	सेलोसि०	सेलेसि०

पाठान्तर

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
१९	२	परित्यणो०	परित्थणे०
२६	५	अणू०	अणु
३६	१०	अते	अंत
८६	११	०भोति	०भोती
९३	२	(७१३)	(७१३)
९८	६	मणूस्सा	मणुस्सा
१००	४	अहियजिय	अहियुजिय
१०३	१२	त्रैर्युक्ता	तैर्युक्ता
११२	१	०द्वयोवर्नायो०	द्वयोर्वाचनयो०
११२	९	चउव्वीसाए	चउव्वीसाए
१४४	१२	एतदवर्णन···सन्निभि	एतदवर्णन ·· सन्निभ
१६०	३	टितिय	तितिय
१८६	१	॰मायु	०मायु
२००	४ प०१	हरिणेगमेसि	णेगमेसि
२००	४	वाचनायो:	वाचनयो
२१०	९, १-९	१-१०	९, १-९
४८५	२	प्रमो०	प्रथमो०
५१६	११	पडिवुद्ध	पडिवुद्धा
८९५	३	०षठ	पष्ठ०